श्रीराजचन्द्र जिनागमसंग्रहे

भगवत्सुधर्मस्वामिप्रणीत

श्रीमद् भगवतीसूत्र

(व्याख्याप्रज्ञप्ति.)

मूल अने अनुवादसहित

पंचम अंग–तृतीय खंड

शतक ७–१५

प्रेरक–श्रीयुत पुंजाभाई हीराचंद.

अनुवादक अने संशोधक—

पंडित भगवानदास हरखचंद दोशी

गूजरात विद्यापीठ

अमदावाद.

प्रत संख्या १००० वि० सं० १९८५ मूल्य रू० १०–०–०

संपादकीय निवेदन.

जिनागमप्रकाशननी योजनामां भगवतीसूत्रना प्रथमना बे खंडो प्रकाशित थई गया छे, अने त्यार पछी लगभग चार वर्षे आ तृतीय खंड प्रकाशित थाय छे. प्रथमना बे खंडो मूळ अने टीकाना अनुवाद साथे पं० बेचरदास जीवराज दोशी पासे संशोधन करावी श्रीयुत पुंजाभाई हीराचंद द्वारा संस्थापित जिनागमप्रकाशक सभाना मानद कार्यवाहक महेता मनसुखलाल रवजीभाईए प्रकाशित कर्या हता, परन्तु त्यार पछी पंडित बेचरदास गूजरात पुरातत्त्वमंदिरमां नियोजित थवाथी अने महेता मनसुखलाल रवजीभाई सद्गत थवाथी आ कार्य बन्ध पड्युं. त्यार पछी केटला एक समय गया बाद श्रीयुत पुंजाभाई हीराचंदे गूजरात पुरातत्त्वमंदिरना आचार्य श्रीजिनविजयजी द्वारा आ काम मने सोंप्युं. उपरना बन्ने खंडोमां मूळ अने टीका अनुवाद सहित होवाथी अधिक विस्तार अने टाईपोनी विविधता होवाथी आगळ छपाबानी मुश्केली हती, तेमज टीका अने टीकाना अनुवादनी पण बहु उपयोगिता जणाती नहोती, तेथी आ त्रीजा खंडमां मात्र मूळ अने तेनो अनुवाद सातमा शतकथी आरंभी पंदरमां शतक सुधी आपवामां आवेल छे. मूळ सूत्रमां ज्यां ज्यां बीजा सूत्रोना पाठोनी भलामण करेली छे त्यां ते ते स्थळे ते ते सूत्रोना स्थळोनी पाना–पंक्तीवार सूचना करवामां आवी छे. एक सविस्तर विषयानुक्रम आपवामां आव्यो छे, अने मूळना अनुवादने स्पष्ट करवा माटे स्थळे स्थळे टिप्पनो पण आपवामां आव्यां छे.

आ ग्रन्थना संशोधनमां नीचेनी प्रतोनो उपयोग करवामां आव्यो छे.

क. भगवतीसूत्र मूळ (डहेलाना उपाश्रयनो भंडार) जुनी अने प्रायः शुद्ध.

ख. भगवतीसूत्र सटीक (डहेलाना उपाश्रयनो भंडार) अशुद्ध.

ग. भगवतीसूत्र सटीक (शांतिसागरनो उपाश्रय) नवी अने प्रायः शुद्ध.

घ. भगवतीसूत्र सटीक (आगमोदयसमिति मुद्रित).

ङ. भगवतीसूत्र सटीक (बाबुधनपतसिंगजी प्रकाशित).

ते सिवाय मुनिमहाराज श्रीहंसविजयजीना ज्ञानमंडारमांथी भगवती मूळनी ताडपत्रनी अपूर्ण प्रत शतक १३ थी मळी छे.

उपरनी प्रतोने अनुसरीने दशमा शतक सुधी आवश्यक पाठान्तरो लेवामां आव्या छे, पण पाछळथी आचार्य श्रीजिनविजयजीनी सूचना प्रमाणे पाठान्तर न लेता मूळ पाठने संशोधित करवामां ते प्रतिओनो उपयोग करेलो छे.

अनुवाद मूळ पाठने अनुसरीनेज करवामां आव्यो छे, अने तेने स्पष्ट करवा माटे वधाराना शब्दो [ ] कोष्टकमां आपेला छे.

मूळ पाठमां सूत्रनो विभाग नथी, पण अहिं प्रश्न अने उत्तरनी एक सूत्रमां गणना करी सूत्र विभाग करवामां आव्यो छे. अवान्तर प्रश्नने जूदा सूत्र तरीके न गणतां तेज सूत्रमां तेनी गणना करी लीधी छे. ते सिवाय ज्यां प्रश्न नथी, परन्तु चरित्र के वर्णनात्मक भाग छे त्यां पण सरळताथी समजवा खातर सूत्रनो विभाग कर्यो छे. प्रत्येक उद्देशकमां सूत्रना अंको तेने प्रारंभे मूकवामां आव्या छे अने तेनो अनुवाद पण तेनी नीचे ते सूत्रनो अंक मूकी आपवामां आवेल छे.

विषयविभागनी स्पष्टता खातर दरेक पानानी पाळ उपर (मार्जिनमां) विषय अथवा प्रश्न सूचित करेल छे.

आ पुस्तक पूर्ण थया पछी छेवटे तेनी प्रस्तावना तथा शब्दकोश आपवा धारणा छे. चोथा खंडमां आ ग्रन्थ समाप्त थशे.

आ पुस्तकना संशोधनमां जे जे महाशयोए हस्तलिखित प्रतो आपी सक्रिय सहाय करी छे ते माटे तेओनो कृतज्ञतापूर्वक आभार मानुं छुं.

छेवटे आ ग्रन्थना संशोधनमां के तेना अनुवादमां अज्ञान अने प्रमादथी अशुद्धि के दोषो रह्या होय ते माटे क्षमा याची सुज्ञ वाचकने सूचित करवा प्रार्थना करी विरमुं छुं.

श्रीजैनविद्यार्थिमंदिर
कोचरबरोड–अमदावाद
भाद्रवा शुदि पूर्णिमा.

भगवानदास दोशी.

विषयानुक्रम.

ल्धिक.—दानादिलब्धिक अने अलब्धिक.—बालवीर्य, पंडितवीर्य अने बालपंडितवीर्यलब्धिक अने अलब्धिक.—इन्द्रियलब्धिक अने अलब्धिक.—श्रोत्रेन्द्रियादिलब्धिक अने अलब्धिक—साकारउपयोगवाळा.—आभिनिबोधिकादिसाकारउपयोगवाळा.—मतिअज्ञानादिसाकारोपयोगवाळा जीवो.—अनाकारोपयोगवाळा जीवो.—सयोगी जीवो.—सलेश्य जीवो.—कृष्णादिलेश्यावाळा.—सकषायी जीवो.—अकषायी जीवो.—वेदसहित अने वेदरहित जीवो.—आहारक जीवो.—अनाहारक.—आभिनिबोधिक ज्ञाननो विषय.—श्रुतज्ञाननो विषय.—अवधिज्ञाननो विषय.—मनःपर्यवज्ञाननो विषय.—केवलज्ञाननो विषय.—मतिअज्ञाननो विषय.—श्रुतअज्ञाननो विषय.—विभंगज्ञाननो विषय.—ज्ञानी ज्ञानीपणे क्यां सुधी रहे?—आभिनिबोधिकादि दशनो स्थितिकाळ.—आभिनिबोधिक ज्ञानना पर्यायो.—श्रुतज्ञानादिना पर्यायो.—विभंगज्ञानना पर्यायो.—पांच ज्ञानना पर्यायोनुं अल्पबहुल.—मत्यादि त्रण अज्ञानोना पर्यायोनुं अल्पबहुल.—पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञानना पर्यायोनुं अल्पबहुल.

शतक ८ उद्देशक ३. पृ० ७७—७८.

वृक्षना प्रकार.—संख्यातजीवी वृक्ष.—असंख्यातजीवी वृक्ष.—एकबीजवाळा.—अनन्तजीवी वृक्ष.—कोइ जीवना बे, त्रण के संख्यात खंड कर्या होय तो तेनी वच्चेनो भाग जीवप्रदेशथी स्पृष्ट होय?—जीवप्रदेशोने शस्त्रादिथी पीडा थाय?—पृथिवीओ.

शतक ८ उद्देशक ४. पृ० ७९.

पांच क्रियाओ.

शतक ८ उद्देशक ५. पृ० ८०—८३.

आजीविकना प्रश्नो—जेणे सामायिक करेलुं छे एवा श्रावकना भांड-पात्रादि वस्तु कोई अपहरण करे तो ते भांडने शोधे के अभांडने शोधे?—अपहृत भांड अभांड थाय तो ते पोताना भांडने शोधे छे एम केम कहेवाय?—ममत्वभावनुं प्रत्याख्यान कर्युं नथी माटे एम कहेवाय.—ए प्रमाणे कोई तेनी स्त्रीने सेवे तो ते स्त्रीने सेवे छे के अस्त्रीने सेवे छे?—प्रत्याख्यानथी स्त्री ते अस्त्री थाय?—जो एम थाय तो तेनी स्त्रीने सेवे छे एम केम कहेवाय?—प्रेमबन्धन अविच्छिन्न छे माटे एम कहेवाय?—श्रावक स्थूल प्राणातिपातनुं प्रत्याख्यान केवी रीते करे?—अतीतकालसंबन्धी प्राणातिपातना प्रतिक्रमणना भांगा.—वर्तमान प्राणातिपातना संवरसंबन्धे भांगा.—अनागत प्राणातिपातना प्रत्याख्यान संबन्धे भांगा.—स्थूल मृषावादनुं प्रत्याख्यान अने तेना भांगा.—यावत् स्थूल परिग्रहना भांगा.—आजीविकनो सिद्धान्त.—आजीविकना बार श्रमणोपासको.—श्रावकोने वर्ज्य पंदर कर्मादानो.—देवलोक.

शतक ८ उद्देशक ६. पृ० ८४—८८.

संयतने निर्दोष अशनादिथी प्रतिलाभता शुं फल थाय?—एकान्त निर्जरा थाय.—सदोष अशनादिथी प्रतिलाभता शुं फल थाय?—घणी निर्जरा अने अल्प पापकर्मनो बन्ध थाय.—असंयतने आहारथी प्रतिलाभता शुं फल थाय?—एकान्त पापकर्म थाय.—निर्ग्रन्थने बे पिंड ग्रहण करवा माटे उपनिमन्त्रण-त्रण पिंड, यावत् दश पिंडनुं उपनिमन्त्रण.—बे पात्रनुं उपनिमन्त्रण.—आराधक अने विराधक—(आलोचना जेनी पासे करवानी होय ते) स्थविरो मूक थाय.—(आलोचना करनार) निर्ग्रन्थ मूक थाय.—पछी स्थविरो काळ करे.—निर्ग्रन्थ काळ करे—संप्राप्त निर्ग्रन्थना चार आलापक.—निहारभूमि के विहारभूमि तरफ जता (निर्ग्रन्थ).—ग्रामानुग्राम विहार करता (निर्ग्रन्थ).—आराधक निर्ग्रन्थी.—आराधक होवानुं कारण.—बळता दीपकमां शुं बळे छे?—ज्योति बळे छे.—बळता घरमां शुं बळे छे?—ज्योति बळे छे.—परना एक औदारिक शरीरने आश्रयी जीवने क्रिया.—नारकने क्रिया.—असुरकुमारने क्रिया.—एक जीवनी औदारिक शरीरने आश्रयी क्रिया.—नैरयिक जीवोनी एक औदारिक शरीरने आश्रयी क्रिया.—नैरयिकादिने क्रिया.—जीवोने औदारिक शरीरोने आश्रयी क्रिया.—नैरयिकोने क्रिया.—जीवने वैक्रियशरीरने आश्रयी क्रिया.—नैरयिकने वैक्रिय शरीरने आश्रयी क्रिया.—मनुष्यने जीव पेठे क्रियाओ होय.—वैमानिकोने कार्मण शरीरोने आश्रयी क्रियाओ.

शतक ८ उद्देशक ७. पृ० ८९—९२.

अन्यतीर्थिको अने स्थविरोनो संवाद.—अन्यतीर्थिकोए स्थविरोने कह्युं के तमे असंयत अने एकान्त बाल छो.—स्थविरो पूछे छे के अमे शाथी असंयत अने बाळ छीए?—अन्यतीर्थिको त्रिविधे त्रिविधे असंयत होवानुं कारण कहे छे अने स्थविरो तेनो उत्तर आपे छे—इत्यादि.

शतक ८ उद्देशक ८. पृ० ९३—१००.

गुरुप्रत्यनीक.—गतिप्रत्यनीक.—समूहप्रत्यनीक.—अनुकंपाप्रत्यनीक.—श्रुतप्रत्यनीक.—भावप्रत्यनीक.—व्यवहार.—व्यवहारनुं फल.—ऐर्यापथिक अने सांपरायिकबन्ध.—ऐर्यापथिकबन्धना स्वामी.—ऐर्यापथिक कर्म वेदरहित जीव बांधे.—स्त्रीपश्चात्कृतादि जीव बांधे.—ऐर्यापथिक कर्मसंबन्धे भांगा.—ऐर्यापथिक कर्मसंबन्धे सादि सपर्यवसितादि भंग.—'ऐर्यापथिक कर्म शुं देशथी देशने बांधे' इत्यादि प्रश्न.—उत्तर—सर्वथी सर्वने बांधे छे.—सांपरायिक कर्मबन्धना स्वामी.—स्त्री वगेरे बांधे.—स्त्रीपश्चात्कृतादि बांधे.—सांपरायिक कर्म बांध्युं, बांधे छे अने बांधशे ते संबन्धे भांगा.—सादिसपर्यवसितादि भांगा.—(सांपरायिक कर्म) देशथी देशने बांधे?—कर्मप्रकृतिओ.—परिषहो.—परिषहोनो कर्मप्रकृतिओमां समवतार.—वेदनीय कर्ममां समवतार.—दर्शनमोहनीय कर्ममां समवतार.—चारित्रमोहनीय कर्ममां समवतार.—अन्तराय कर्ममां समवतार.—सप्तविधकर्मबन्धकने परिषहो.—अष्टविधकर्मबन्धकने परिषहो.—षड्विधकर्मबन्धकने परिषहो.—एकविधबन्धक वीतराग छद्मस्थने परिषहो.—एकविधबन्धक सयोगिकेवलीने परिषहो.—कर्मबन्धरहित अयोगिकेवलीने परिषहो.—जंबूद्वीपमां सूर्य दूर छतां पासे केम देखाय छे?—सूर्यो सर्वत्र उंचाइमां सरखा छे?—तेजना प्रतिघातथी दूर छतां पासे देखाय छे.—तेजना अभितापथी पासे छतां दूर देखाय छे.—अतीत क्षेत्र प्रति जाय छे? इत्यादि प्रश्न.—अतीत क्षेत्रने प्रकाशे छे? इत्यादि प्रश्न-वर्तमान क्षेत्रने प्रकाशे छे.—स्पृष्ट क्षेत्रने प्रकाशित करे छे.—अतीत क्षेत्रने उद्द्योतित करे छे? इत्यादि.—सूर्यनी क्रिया वर्तमान क्षेत्रमां कराय छे.—सूर्य स्पृष्ट क्रियाने करे छे.—केटलुं क्षेत्र उंचे तपावे छे?—मनुष्योत्तर पर्वतनी अंदरना चन्द्रादि देवो शुं ऊर्ध्व लोकमां उत्पन्न थयेला छे?—मनुष्योत्तर पर्वतनी बहारना चन्द्रादि देवो ऊर्ध्व लोकमां उत्पन्न थयेला छे?—इन्द्रस्थान केटला काळसुधी उपपातविरहित छे?

शतक ८ उद्देशक ९. पृ० १०१—११७.

बन्ध.—विस्रसाबन्ध.—अनादि विस्रसाबन्ध.—धर्मास्तिकायनो अनादि विस्रसाबन्ध.—अनादि विस्रसाबन्धनो काळ.—सादि विस्रसाबन्ध.—बन्धनप्रत्ययिकबन्ध.—भाजनप्रत्ययिकबन्ध.—परिणामप्रत्ययिकबन्ध.—प्रयोगबन्ध.—आलापनबन्ध.—आलीनबन्ध.—[illegible].—[illegible].—समुच्चयबन्ध.—संहननबन्ध.—देशसंहननबन्ध.—सर्वसंहननबन्ध.—शरीरबन्ध.—पूर्वप्रयोगप्रत्ययिकबन्ध.—प्रत्युत्पन्नप्रयोगप्रत्ययिकबन्ध.—शरीरप्रयोगबन्ध.—औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध.—एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध.—औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे ?—एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध.—पंचेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध.—मनुष्यऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध.—औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध देश के सर्वबन्ध छे ?—एकेन्द्रियऔदारिकप्रयोगबन्ध.—मनुष्यऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध.—औदारिकशरीरप्रयोगबन्धनो काळ.—एकेन्द्रिय.—पृथिवीकायिक.—औदारिक शरीरबन्धना अन्तरनो काळ.—एकेन्द्रिय.—पृथिवीकायिक एकेन्द्रिय.—पंचेन्द्रिय तिर्यंचना औदारिकशरीरबन्धनुं अन्तर.—एकेन्द्रियऔदारिक शरीरना प्रयोगबन्धनुं अन्तर.—पृथिवीकायिकऔदारिकशरीरबन्धनुं अन्तर.—औदारिक शरीरना सर्वबन्धक, देशबन्धक अने अबन्धकनुं अल्पबहुत्व.—वैक्रियशरीरप्रयोगबन्ध.—वायुकायिकएकेन्द्रियशरीरप्रयोगबन्ध के तेथी भिन्न एकेन्द्रियशरीरप्रयोगबन्ध ?—वैक्रियशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे ?—वायुकायिकवैक्रियशरीरप्रयोगबन्ध.—नैरयिकवैक्रियशरीरप्रयोगबन्ध.—तिर्यंचयोनिकवैक्रियशरीरप्रयोगबन्ध.—देशबन्ध अने सर्वबन्ध.—वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धकाळ.—वायुकायिकवैक्रियशरीरप्रयोगबन्धनो काळ.—रत्नप्रभानैरयिकवैक्रियशरीरप्रयोगबन्धकाळ.—वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर.—वायुकायिक वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धान्तर.—तिर्यंचपंचेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर.—वायुकायिक वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर.—रत्नप्रभानारक वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर.—असुरकुमार, नागकुमार, यावत्—सहस्रार देवो.—आनतदेववैक्रियशरीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर.—ग्रैवेयककल्पातीत.—अनुत्तरौपपातिक.—अल्पबहुत्व.—आहारकशरीरप्रयोगबन्ध.—आहारकशरीरप्रयोगबन्ध मनुष्य के ते सिवाय बीजाने होय ?—आहारकशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी होय ?—देशबन्ध अने सर्वबन्ध.—आहारकशरीरप्रयोगबन्धनो काळ.—अन्तर.—देशबन्धक, सर्वबन्धक अने अबन्धकनुं अल्पबहुत्व.—तैजसशरीरप्रयोगबन्ध.—एकेन्द्रिय, यावत् पर्याप्त सर्वार्थसिद्ध.—तैजसशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय ?—देशबन्ध के सर्वबन्ध ?—सर्वबन्ध नथी.—तैजसशरीरप्रयोगबन्धनो काळ.—तैजसशरीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर.—कार्मणशरीरप्रयोगबन्ध.—ज्ञानावरणीय कार्मणशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे ?—दर्शनावरणीय कार्मणशरीरप्रयोगबन्ध.—सातावेदनीय.—असातावेदनीय.—मोहनीय.—नारकायुष.—तिर्यंचयोनिकायुष.—मनुष्यायुष.—देवायुष.—शुभनाम.—अशुभनाम.—उच्चगोत्र.—नीचगोत्र.—अन्तराय.—ज्ञानावरणीयनो देशबन्ध के सर्वबन्ध ?—ज्ञानावरणीय कार्मणशरीरप्रयोगबन्धनो काळ.—ज्ञानावरणीय कार्मणशरीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर.—देशबन्धक अने अबन्धकनुं अल्पबहुत्व.—आयुषकर्मना देशबन्धक अने अबन्धक जीवोनुं अल्पबहुत्व.—औदारिकशरीरना सर्वबन्ध साथे वैक्रियशरीरबन्धनो संबन्ध.—आहारक शरीरबन्धनो संबन्ध.—तैजसशरीरनो संबन्ध.—देशबन्धक के सर्वबन्धक ?—कार्मणशरीरनो संबन्ध.—औदारिक शरीरना देशबन्ध साथे वैक्रिय शरीरनो संबन्ध.—वैक्रिय शरीरना सर्वबन्ध साथे औदारिक शरीरनो संबन्ध.—देशबन्ध साथे औदारिक शरीरबन्धनो संबन्ध.—आहारक शरीरना सर्वबन्ध साथे औदारिक शरीरबन्धनो संबन्ध.—आहारक शरीरना देशबन्ध साथे औदारिक शरीरनो संबन्ध.—तैजस शरीरना देशबन्धक साथे औदारिक शरीरनो संबन्ध.—औदारिक शरीरनो देशबन्धक के सर्वबन्धक ?—वैक्रियशरीरनो बन्धक के अबन्धक ?—कार्मणशरीरनो बन्धक के अबन्धक ?—देशबन्धक के सर्वबन्धक ?—कार्मण शरीरना देशबन्धक साथे औदारिक शरीरबन्धकनो संबन्ध.—शरीरना देशबन्धक, सर्वबन्धक अने अबन्धकनुं अल्पबहुत्व.

शतक ८ उद्देशक १०. पृ० ११८—१२४.

'शील ज श्रेय छे' इत्यादि अन्यतीर्थिकोनुं मन्तव्य.—'शीलसंपन्न छे पण श्रुतसंपन्न नथी' इत्यादि चतुर्भंगी.—देशाराधक, देशविराधक, सर्वाराधक अने सर्वविराधक.—आराधनाना प्रकार.—ज्ञानाराधना.—दर्शनाराधना.—उत्कृष्ट ज्ञानाराधना अने उत्कृष्ट दर्शनाराधनानो संबन्ध.—उत्कृष्ट दर्शनाराधना अने उत्कृष्ट चारित्राराधनानो संबन्ध.—उत्कृष्ट ज्ञानाराधक केटला भव पछी मोक्षे जाय ?—उत्कृष्ट दर्शनाराधक क्यारे मोक्षे जाय ?—उत्कृष्ट चारित्राराधक मोक्षे क्यारे जाय ?—ज्ञाननी मध्यमाराधना आराधक मोक्षे क्यारे जाय ?—दर्शन अने चारित्रनी मध्यमाराधनानो आराधक मोक्षे क्यारे जाय ?—ज्ञाननी जघन्य आराधनानो आराधक क्यारे मोक्षे जाय ?—ए प्रमाणे दर्शनाराधना अने चारित्राराधना.—पुद्गलपरिणामना प्रकार.—वर्णपरिणाम, गन्धपरिणाम, रसपरिणाम अने स्पर्शपरिणाम.—संस्थानपरिणाम.—पुद्गलास्तिकायनो एक प्रदेश, बे प्रदेशो, यावत् अनन्त प्रदेशो शुं द्रव्य छे, द्रव्यदेश छे इत्यादि प्रश्न.—लोकाकाश अने एक जीवना प्रदेशो.—कर्मप्रकृति.—नैरयिक यावत् वैमानिकोने कर्मप्रकृति.—ज्ञानावरणीय कर्मना अविभागपरिच्छेद.—नैरयिक जीवनो एक एक प्रदेश केटला ज्ञानावरणीय कर्मना परिच्छेदोथी आवेष्टित छे ?—एक एक जीवनो एक एक प्रदेश दर्शनावरणीयना केटला अविभाग परिच्छेदथी वेष्टित छे ?—ज्ञानावरणीय अने दर्शनावरणीयनो संबन्ध.—ज्ञानावरणीय अने वेदनीयनो संबन्ध.—ज्ञानावरणीय अने मोहनीय कर्मनो संबन्ध.—ज्ञानावरणीय अने आयुषकर्मनो संबन्ध.—ए प्रमाणे दर्शनावरणीयादिनो वेदनीयादि साथे संबन्ध.—जीव पुद्गली के पुद्गल ?—नैरयिको पुद्गली के पुद्गल ?—सिद्धो पुद्गली के पुद्गल ?

शतक ९ उद्देशक १—३०. पृ० १२५—१२७.

जंबूद्वीप.—जंबूद्वीपमां चन्द्रोनो प्रकाश.—लवणसमुद्रमां चन्द्रोनो प्रकाश.—धातकिखंड, कालोदसमुद्र, पुष्करवरद्वीप, अभ्यन्तर पुष्करार्ध अने पुष्करोदसमुद्रमां केटला चन्द्रो प्रकाशित थाय छे ?—अठ्यावीश अन्तर्द्वीपो.

शतक ९ उद्देशक ३१. पृ० १२८—१३७.

केवल्यादिपासे सांभळ्या सिवाय कोई जीवने धर्मनो बोध थाय के नहि इत्यादि प्रश्न.—बोधि—सम्यग्दर्शननो अनुभव करे के नहि ?—तेनो हेतु.—ए प्रमाणे प्रव्रज्याने स्वीकारे के नहि ?—तेनो हेतु.—ब्रह्मचर्य.—ब्रह्मचर्यावासनो हेतु.—संयम.—संयमनो हेतु.—संवर.—संवरनो हेतु.—आभिनिबोधिकज्ञान.—आभिनिबोधिकज्ञाननो हेतु.—श्रुतज्ञान.—अवधिज्ञान अने मनःपर्यवज्ञान.—केवलज्ञान.—धर्मबोध, [illegible] अनुभव करे.—केवल्यादिनुं वचन सांभळ्या सिवाय कोई धर्मादिनो अनुभव करे तेनो हेतु.—केवल्यादिनां वचन सांभळ्या सिवाय सम्यक्त्वादिने स्वीकारे.—[illegible] उत्पत्ति.—[illegible]-

सम्यग्दर्शननी प्राप्ति.—चारित्रनो स्वीकार.—अवधिज्ञाननी उत्पत्ति.—लेश्या.—ज्ञान.—मनोयोगी इत्यादि.—संघयण.—संस्थान.—उंचाई.—आयुष.—वेद.—पुरुषवेदादि.—कषाय.—संज्वलनक्रोधादि.—अध्यवसायो.—प्रशस्त अध्यवसाय.—नारक, तिर्यंच, देव अने मनुष्यभवोथी मुक्ति.—अनन्तानुबंध्यादिकषायनो क्षय.—असुत्वा केवली धर्मोपदेश न करे.—प्रव्रज्या न आपे.—सिद्ध थाय.—ऊर्ध्व, अधो अने तिर्यग्लोकमां होय.—ऊर्ध्वलोकमां वृत्त वैताढ्यमां होय.—अधोलोक ग्रामादिमां होय.—तिर्यग्लोकमां पंदर कर्मभूमिमां होय.—ते एक समये केटला होय?—केवल्यादि पासेथी धर्म सांभळीने कोई धर्मने पामे अने कोई धर्मने न पामे इत्यादि.—केवल्यादि पासेथी धर्म श्रवण करीने सम्यग्दर्शनादि युक्त जीवने अवधिज्ञानादिनी प्राप्ति.—लेश्या.—ज्ञान.—योग.—वेद.—सवेदक के क्षीणवेद होय?—स्त्रीवेदादि.—सकषायी के अकषायी?—उपशांत के क्षीणकषायी?—केटला कषाय होय?—अध्यवसायो.—धर्मोपदेश.—प्रव्रज्या आपे.—तेना शिष्यो पण प्रव्रज्या आपे.—प्रशिष्यो पण प्रव्रज्या आपे.—सिद्ध थाय.—शिष्यो पण सिद्ध थाय.—प्रशिष्यो पण सिद्ध थाय.—शुं ते ऊर्ध्वलोकमां होय इत्यादि.—एक समयमां संख्या.

शतक ९ उद्देशक ३२. पृ० १३८—१६१.

वाणिज्यग्राम.—गांगेयना प्रश्नो.—नैरयिको सान्तर के निरंतर उत्पन्न थाय छे?—असुरकुमार.—पृथ्वीकायिको.—बेइंद्रियो यावत् वैमानिको.—नैरयिको अने यावत् स्तनितकुमारनुं सान्तर अने निरन्तर च्यवन.—पृथ्वीकायिकादिनुं सान्तर के निरंतर च्यवन.—बेइन्द्रियादि.—ज्योतिषिक.—प्रवेशनक.—नैरयिक प्रवेशनक.—एक नैरयिक.—बे नैरयिक.—त्रण नैरयिको.—एकसंयोगी सात विकल्पो.—द्विकसंयोगी बेंतालीश विकल्पो.—त्रिकसंयोगी पांत्रीश विकल्पो.—चार नैरयिको.—द्विकसंयोगी त्रेसठ विकल्पो.—त्रिकसंयोगी विकल्पो.—चतुःसंयोगी पांत्रीश विकल्पो.—पांच नैरयिक.—द्विकसंयोगी ८५ विकल्पो.—त्रिकसंयोगी २१० विकल्पो.—चतुःसंयोगी १४० विकल्पो.—पंचसंयोगी २१ विकल्पो.—छ नैरयिको.—द्विकसंयोगी १०५ विकल्पो.—त्रिकसंयोगी विकल्पो.—चतुःसंयोग अने पंचसंयोग.—छ संयोगी विकल्पो.—सात नैरयिको.—द्विकसंयोगी विकल्पो.—त्रिकसंयोग, चतुःसंयोग, पंचसंयोग अने छसंयोग.—सप्तसंयोगी विकल्पो.—आठ नैरयिको.—द्विकसंयोगी विकल्पो.—यावत् षट्कसंयोगी विकल्पो.—सप्तसंयोगी विकल्पो.—नव नैरयिको.—द्विकसंयोगी विकल्पो.—दश नैरयिको.—द्विकसंयोगादि विकल्पो.—संख्यात नैरयिको.—द्विकसंयोगी विकल्पो.—त्रिकसंयोगी विकल्पो.—असंख्यात नैरयिको.—द्विकसंयोगादि विकल्पो.—उत्कृष्ट प्रवेशनक.—द्विकसंयोग.—त्रिकसंयोग.—चतुःसंयोग.—पंचसंयोग.—षट्कसंयोग.—सप्तसंयोग.—नैरयिकप्रवेशनकअल्पबहुत्व.—तिर्यंचप्रवेशनक प्रकार.—एक तिर्यंचयोनिक.—बे तिर्यंचयोनिक.—यावत् असंख्याता तिर्यंचो.—उत्कृष्ट तिर्यंचयोनिकप्रवेशनक.—तिर्यंचयोनिकप्रवेशनकाल्पबहुत्व.—एक मनुष्य.—बे मनुष्यो.—दश मनुष्यो.—संख्याता मनुष्यो.—असंख्याता मनुष्यो.—उत्कृष्ट मनुष्यप्रवेशनक.—मनुष्यप्रवेशनकअल्पबहुत्व.—देव प्रवेशनकना प्रकार.—एक देव.—बे देवो.—उत्कृष्ट देवप्रवेशनक.—देवप्रवेशनकनुं अल्पबहुत्व.—सर्व प्रवेशनकनुं अल्पबहुत्व.—नैरयिकोनी सान्तर अने निरन्तर उत्पाद अने उद्वर्तना.—विद्यमान नैरयिको उत्पन्न थाय के अविद्यमान?—सद् नैरयिको उद्वर्ते छे के असद्?—सद् नैरयिकादिना उत्पाद अने उद्वर्तना संबन्धे प्रश्न.—सद् नैरयिकादिना उत्पाद अने उद्वर्तनानो हेतु.—आप स्वयं जाणो छो के अस्वयं जाणो छो?—नैरयिको स्वयं उपजे छे के अस्वयं उपजे छे?—असुरकुमारो.—पृथिवीकायिको.—गांगेय भगवान् महावीरने सर्वज्ञ माने छे, अने दीक्षा ग्रहण करी निर्वाण पामे छे.

शतक ९ उद्देशक ३३. पृ० १६२—१८४.

ब्राह्मणकुंडग्राम.—ऋषभदत्त.—देवानंदा.—महावीरस्वामी समोसर्या.—बहुशालक चैत्य.—देवानंदाना स्तनमांथी दूधनी धार केम छूटी?—पुत्रना स्नेहथी दूधनी धार छूटी.—ऋषभदत्ते प्रव्रज्या लीधी.—देवानंदानी प्रव्रज्या.—क्षत्रियकुंडग्राम.—जमालिनुं वर्णन.—ब्राह्मणकुंडग्राम.—बहुशाल चैत्य.—जमालि भगवंत महावीरनो उपदेश सांभळी दीक्षा ग्रहण करवा इच्छे छे.—मातापिताने पोतानी इच्छानुं निवेदन.—जमालिनी मातानो शोक.—मातापिता अने जमालीनो संवाद.—मातापिता.—जीवित चपल छे, मनुष्य संबंधी काम भोगो अशुचि अने अशाश्वत छे इत्यादि जमालिनुं कथन.—हिरण्यादिनो उपभोग कर इत्यादि मातापितानुं कथन.—हिरण्यादि अनित्य अने अशाश्वत छे एवुं जमालिनुं कथन.—निर्ग्रन्थ प्रवचन सत्य छे पण दुष्कर छे एवुं मातापितानुं कथन.—कायरने दुष्कर छे, पण धीर पुरुषने दुष्कर नथी एवुं जमालिनुं कथन.—दीक्षानी अनुमति.—जमालिनी दीक्षा.—श्रावस्ती नगरी.—कोष्ठक चैत्य.—चंपानगरी.—पूर्णभद्र चैत्य.—निर्ग्रन्थ प्रवचन उपर जमालिनी अश्रद्धा.—क्रियमाण अकृत छे एवो जमालिनो मिथ्यावाद.—भगवान् गौतमना जमालिने प्रश्नो.—लोक शाश्वत छे के अशाश्वत?—जीव शाश्वत छे के अशाश्वत?—उत्तर आपवानुं जमालिनुं असामर्थ्य.—भगवान् महावीरना उत्तरो.—लोक शाश्वत छे.—लोक अशाश्वत छे.—जीव शाश्वत छे.—जीव अशाश्वत छे.—किल्बिषिक देवनी स्थिति.—किल्बिषिक देवोनो निवास.—क्या कर्मोथी किल्बिषिकदेवपणे उपजे?—किल्बिषिक देवो मरीने क्यां उपजे?

शतक ९ उद्देशक ३४. पृ० १८५—१८७.

पुरुषने हणतो पुरुषने हणे के नोपुरुषने हणे?—पुरुष अने नोपुरुषनो घात करे.—अश्वने हणतो अश्वने हणे के नोअश्वोने हणे?—अमुक त्रसने हणतो तेने हणे के बीजा त्रसोने पण हणे?—ऋषिने हणतो ऋषिनेज हणे के बीजाने हणे?—पुरुषने हणनार पुरुषना वैरथी बन्धाय के नोपुरुषना वैरथी पण बन्धाय?—ऋषिना वैरथी के नोऋषिना वैरथी बन्धाय?—पृथिवीकायिक पृथिवीकायिकने श्वासोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे अने मूके?—अप्कायिक पृथिवीकायिकने ग्रहण करे?—अप्कायिक अप्कायिकने ग्रहण करे अने मूके?—तेजःकायिक पृथिवीकायादिकने ग्रहण करे अने मूके?—पृथिवीकायिकादिकने क्रियाओ.—वायुकायिकने क्रिया.

शतक १० उद्देशक १. पृ० १८८—१९०.

पूर्वादि दिशाओ.—दिशाओना प्रकार.—दिशाओना दश नाम.—ऐन्द्री दिशा जीवरूप छे—इत्यादि प्रश्न.—आग्नेयी दिशा.—याम्या दिशा.—शरीरना प्रकार.—औदारिक शरीरना प्रकार.

शतक १० उद्देशक २. पृ० १९१—१९२.

कषायभावमां रहेला साधुने ऐर्यापथिकी क्रिया के सांपरायिकी क्रिया लागे?—अकषायभावमां वर्तता साधुने ऐर्यापथिकी के सांपरायिकी क्रिया?—ऐर्यापथिकी अथवा सांपरायिकी क्रियानो हेतु?—योनि.—वेदनाना प्रकार.—नैरयिकोने वेदना.—भिक्षुप्रतिमा.—आराधना.

शतक १० उद्देशक ३. पृ० १९३—१९५.

राजगृह नगर.—देव आत्मशक्तिथी चार पांच देवावासोने उल्लंघे?—अल्पर्द्धिक देव महर्द्धिक देवनी वच्चे थईने जाय?—समर्द्धिक देव समर्द्धिक देवनी वच्चोवच्च थईने जाय?—मोह पमाडीने जई शके के ते सिवाय जाय?—मोह पमाडीने जाय के जईने मोह पमाडे?—महर्द्धिक देव अल्पर्द्धिक देवनी वच्चे थईने जाय?—महर्द्धिक देव अल्पर्द्धिकने मोह पमाडीने जाय के ते सिवाय जाय?—महर्द्धिक देव मोह पमाडीने जाय के जईने मोह पमाडे?—असुरकुमार देवसंबन्धे पूर्वोक्त प्रश्नो.—अल्पर्द्धिक देव महर्द्धिक देवीनी वचे? थईने जाय?—समर्द्धिक देव समर्द्धिक देवीनी वच्चे थईने जाय?—अल्पर्द्धिक देवी महर्द्धिक देवनी वच्चे थईने जाय?—महर्द्धिक वैमानिक देवी अल्पर्द्धिक वैमानिक देवनी वच्चे थईने जाय?—अल्पर्द्धिक देवी महर्द्धिक देवीनी वच्चे थईने जाय?—एम समर्द्धिक देवीनो समर्द्धिक देवीनी साथे आलापक.—महर्द्धिक वैमानिक देवीनो अल्पर्द्धिक देवीनी साथे आलापक.—महर्द्धिक देवी मोह पमाडीने जाय के ते सिवाय जाय?—दोडता घोडाने 'खु खु' शब्द केम थाय छे?—भाषाना बार प्रकार.

शतक १० उद्देशक ४. पृ० १९६—१९८.

वाणिज्यग्राम.—दूतिपलाश चैत्य.—श्यामहस्ती अनगार.—चमरेन्द्रने त्रायस्त्रिंशक देवो छे?—त्रायस्त्रिंशक देवोनो संबन्ध.—बलीन्द्रने त्रायस्त्रिंशक देवो.—तेनो हेतु.—धरणेन्द्रने त्रायस्त्रिंशक देवो.—शक्रेन्द्रने त्रायस्त्रिंशक देवो.—ईशानेन्द्रने त्रायस्त्रिंशक देवो.—सनत्कुमारने त्रायस्त्रिंशक देवो.

शतक १० उद्देशक ५. पृ० १९९—२०४.

राजगृह नगर.—गुणशील चैत्य.—चमरेन्द्रने अग्रमहिषीओ.—अग्रमहिषीओनो परिवार.—चमरेन्द्र पोतानी सभामां देवीओ साथे भोगो भोगववा समर्थ छे?—हेतु.—चमरेन्द्रना सोमलोकपालने पट्टराज्ञीओ.—सोमलोकपाल पोतानी सभामां देवीओ साथे भोग भोगववा समर्थ छे?—यमने अग्रमहिषीओ.—बलीन्द्रने अग्रमहिषीओ. बलीन्द्रना लोकपाल सोमने अग्रमहिषीओ.—धरणेन्द्रने अग्रमहिषीओ—धरणना लोकपाल कालवालने अग्रमहिषीओ.—भूतानेन्द्रने अग्रमहिषीओ.—भूतानेन्द्रना लोकपालने अग्रमहिषीओ.—कालेन्द्रने अग्रमहिषीओ.—सुरूपेन्द्रने अग्रमहिषीओ.—पूर्णभद्रने अग्रमहिषीओ.—राक्षसना इन्द्र भीमने अग्रमहिषीओ.—ए प्रमाणे किन्नरेन्द्र, सत्पुरुषेन्द्र, अतिकायेन्द्र अने गीतरतीन्द्रने अग्रमहिषीओ.—चन्द्र, अंगारग्रह अने शक्रने अग्रमहिषीओ.—शक्र सुधर्मा सभामां देवीओ साथे भोग भोगववा समर्थ छे?—शक्रना लोकपाल सोम, ईशानेन्द्र अने ईशानना लोकपाल सोमने अग्रमहिषीओ.

शतक १० उद्देशक ६. पृ० २०५.

शक्रनी सुधर्मा सभा क्यां छे?—शक्र केवी ऋद्धि अने केवा सुखवाळो छे?

शतक १० उद्देशक ७—३४. पृ० २०६.

अठ्यावीश अन्तर्द्वीपो.

शतक ११ उद्देशक १. पृ० २०७—२१३.

उत्पल एकजीवी छे के अनेकजीवी छे?—जीवो उत्पलमां क्यांथी आवीने उपजे छे?—एक समयमां केटला उपजे?—प्रतिसमय काढवामां आवे तो क्यारे खाली थाय?—शरीरनी अवगाहना.—ज्ञानावरणीयादि कर्मना बन्धक.—आयुष कर्मना बन्धक.—ज्ञानवरणीयादि कर्मना वेदक.—ज्ञानावरणादि कर्मना उदयवाळा.—उदीरक के अनुदीरक?—कृष्णादिलेश्यावाळा.—सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि के मिश्रदृष्टि?—ज्ञानी के अज्ञानी?—मनोयोगी, वचनयोगी के काययोगी?—साकारउपयोगी के अनाकारउपयोगी?—शरीरना वर्णादि.—उच्छ्वासक निःश्वासक के अनुच्छ्वासकनिःश्वासक?—आहारक के अनाहारक?—सर्वविरति, अविरति के देशविरति?—सक्रिय के अक्रिय?—सप्तविधबन्धक के अष्टविधबन्धक?—आहारादि संज्ञाओ.—कषाय.—वेद.—वेदना बन्धक.—संज्ञी के असंज्ञी?—सेन्द्रिय के अनिन्द्रिय?—उत्पलनो जीव उत्पलपणे क्यांसुधी रहे?—उत्पलनो जीव पृथिवीमां आवी उत्पलमां आवे त्यारे केटलो काल गमनागमन करे?—उत्पलनो जीव वनस्पतिमां जईने पुनः उत्पलमां आवे त्यारे केटलो काळ गमनागमन करे?—उत्पलनो जीव बेइन्द्रियमां जईने उत्पलपणे उपजे त्यारे केटलो काळ जाय?—पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच थईने उत्पलमां आवे त्यारे केटलो काळ जाय?—आहार.—आयुष.—समुद्घात.—च्यवन.—सर्व जीवोनुं उत्पलपणे उपजवुं.

शतक ११ उद्देशक २. पृ० २१४.

शालूक.

शतक ११ उद्देशक ३. पृ० २१५.

पलाश.

शतक ११ उद्देशक ४. पृ० २१६.

कुंभिक.

शतक ११ उद्देशक ५. पृ० २१७.

नाडीक.

शतक ११ उद्देशक ६. पृ० २१८.

पद्म.

शतक ११ उद्देशक ७. पृ० २१९.

वर्णिका.

शतक ११ उद्देशक ८. पृ० २२०.

नलिन.

शतक ११ उद्देशक ९. पृ० २२१—२२७.

हस्तिनापुर.—शिवराजा.—शिवभद्रपुत्र.—शिवराजानो संकल्प.—शिवभद्रनो राज्याभिषेक.—शिवराजनी प्रव्रज्या.—शिवराजर्षिनो अभिग्रह.—शिवराजर्षिने विभंगज्ञान.—शिवराजर्षिनो 'सात द्वीप अने सात समुद्र छे' एवो अध्यवसाय.—शिवराजर्षिसंमत सात द्वीप अने सात समुद्रसंबन्धे प्रश्न.—वर्णादिरहित अने वर्णादिसहित द्रव्यो.—लवणसमुद्रमां द्रव्यो.—धातकिखंडमां द्रव्यो.—शिवराजर्षिनुं कथन यथार्थ नथी.—'असंख्यात द्वीपसमुद्रो छे' एवुं महावीरस्वामीनुं कथन.—शिवराजर्षिनुं शंकित थवुं.—शिवराजर्षिनो महावीर स्वामी पासे आववानो संकल्प.—शिवराजर्षिनुं महावीरस्वामी पासे आगमन.—शिवराजर्षिनी दीक्षा.

शतक ११ उद्देशक १०. पृ० २२८—२३३.

लोकना प्रकार.—क्षेत्रलोकना प्रकार.—अधोलोकक्षेत्रलोकना प्रकार.—तिर्यक्क्षेत्रलोक.—ऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोकना प्रकार.—अधोलोकनुं संस्थान.—तिर्यग्लोकनुं संस्थान.—ऊर्ध्वलोकनुं संस्थान.—लोकनुं संस्थान.—अलोकनुं संस्थान.—शुं अधोलोक जीवरूप छे-इत्यादि प्रश्न.—शुं तिर्यग्लोक जीवरूप छे-इत्यादि प्रश्न.—शुं अलोकाकाश जीवरूप छे-इत्यादि प्रश्न.—शुं अधोलोकना एक आकाशप्रदेशमां जीवो छे-इत्यादि.—तिर्यग्लोकना एक आकाशप्रदेशमां शुं जीवो छे-इत्यादि.—लोकना एक आकाश प्रदेशमां शुं जीवो होय ?—अलोकना एक आकाश प्रदेशमां शुं जीवो होय ?—द्रव्यादिनी अपेक्षाए अधोलोकादिनो विचार.—लोकनो विस्तार.—अलोकनो विस्तार—.लोकना एक आकाशप्रदेशमां जीवना प्रदेशो परस्पर संबद्ध छे अने एक बीजाने पीडा उत्पन्न करे ?—एक आकाशप्रदेशमां जघन्य अने उत्कृष्ट पदे रहेला जीवप्रदेशो तथा सर्वजीवोनुं अल्पबहुत्व.

शतक ११ उद्देशक ११. पृ० २३४—२४७.

वाणिज्यग्राम.—दूतिपलाशक चैत्य.—कालना प्रकार.—प्रमाणकाळ.—हस्तिनागपुर.—बलराजा.—प्रभावती राणी.—वासगृह.—शय्या.—महास्वप्ने जोईं प्रभावतीनुं जागवुं.—सिंहनुं वर्णन.—सिंहने स्वप्नमां जोईने जागी.—बलराजानुं शयनगृहतरफ आववुं.—स्वप्ननुं फल.—प्रभावती देवी स्वप्न फलने स्वीकारे छे.—व्यायामशाळा अने स्नानगृहप्रवेश.—स्वप्नपाठकोने बोलाववानी आज्ञा.—स्वप्नपाठकोने स्वप्नना फलनो प्रश्न.—गर्भनुं रक्षण.—पुत्रजन्म.—वधामणी.—पुत्रजन्ममहोत्सव.—पुत्रनुं नाम पाडवुं.—पांच धाव वडे पुत्रनुं पालन.—महाबल कुमारने भणवा मोकलवो.—महाबलनुं पाणिग्रहण.—प्रीतिदान,—धर्मघोष अनगारनुं आगमन.—महाबलनुं वंदन करवा माटे जवुं.—दीक्षानी रजा मागवी.—महाबलकुमारने राज्याभिषेक अने दीक्षा.—ब्रह्मदेवलोकमां उपजवुं अने त्यांथी च्यवी सुदर्शनश्रेष्ठीपणे उपजवुं.—सुदर्शन श्रेष्ठीने जातिस्मरण.—सुदर्शन श्रेष्ठीनी प्रव्रज्या.

शतक ११ उद्देशक १२. पृ० २४८.

आलभिकानगरी.—शंखवनचैत्य.—ऋषिभद्रप्रमुख श्रमणोपासको.—श्रमणोपासकोनो वार्तालाप.—देवलोकमां देवोनी स्थिति.—जघन्य स्थिति.—उत्कृष्ट स्थिति.—देवोनी स्थिति.—ऋषिभद्रपुत्र अनगारिकपणाने लेवाने समर्थ छे ?—ऋषिभद्र पुत्र देवलोकथी च्यवी क्यां जशे ?—सिद्धिपद पामशे.—दृष्टांत.

शतक १२ उद्देशक १. पृ० २५२—२५६.

श्रावस्तीनगरी.—शंखप्रमुख श्रमणोपासको.—शंखनी उत्पला स्त्री.—पुष्कलि श्रमणोपासक.—शंखनो संकल्प-अशनादिनो आहार करता पाक्षिक पौषध लेवो मने श्रेयस्कर नथी.—भोजन माटे शंखश्रमणोपासकने बोलाववा योग्य छे.—पुष्कलि शंखने बोलाववा जाय छे.—शंखे कह्युं के—आहारनो आस्वाद लेता पोषधनुं पालन करवुं मने योग्य नथी.—शंखनो महावीरस्वामिने वंदन करवानो संकल्प.—शंख भगवंतने वंदन करवा जाय छे.—बीजा श्रमणोपासको पण वांदवा जाय छे.—शंखनी निन्दा न करो.—जागरिकाना प्रकार.—क्रोधथी व्याकुल थयेलो जीव शुं बांधे ?—मानी जीव शुं बांधे ?—शंख प्रव्रज्या ग्रहण करवा समर्थ छे ?

शतक १२ उद्देशक २. पृ० २५७—२६०.

कौशाम्बी नगरी.—उदायन राजा.—जयंती श्रमणोपासिका.—जयंती मृगावतीसहित भगवंतने वंदन करवा जाय छे.—जयंतीना प्रश्नो.—जीवो शाथी भारेपणुं पामे ?—भव्यपणुं स्वाभाविक छे के परिणामजन्य छे ?—सर्व भव्यजीवो मोक्ष जशे ?—तो शुं लोक भव्यरहित थशे ?—सूतापणुं सारुं के जागतापणुं सारुं ?—सबलपणुं सारुं के दुर्बलपणुं सारुं ?—दक्षत्व सारुं के आळसुपणुं सारुं ?—श्रोत्रेन्द्रियवशार्त शुं करे ?—जयंतीए प्रव्रज्या ग्रहण करी.

शतक १२ उद्देशक ३०. पृ० २६१.

पृथिवीओना प्रकार.—प्रथम पृथिवीना नाम अने गोत्र.

शतक १२ उद्देशक ४. पृ० २६२—२७४.

बे परमाणुओ एकरूपे एकठा थईने शुं थाय ?—त्रण परमाणुओ.—चार परमाणुओ.—पांच परमाणुओ.—छ परमाणुओ.—सात परमाणुओ.—आठ परमाणुओ.—नव परमाणुओ.—दस परमाणुओ.—संख्याता परमाणुओ.—असंख्याता परमाणुओ.—अनन्त परमाणुओ.—अनन्तानन्त पुद्गलपरिवर्तो.—पुद्गलपरिवर्तना प्रकार.—नैरयिकोने पुद्गलपरिवर्तो.—एक नैरयिकने औदारिकपुद्गलपरिवर्तो.—असुरकुमारने औदारिकपुद्गलपरिवर्तो.—एक नैरयिकने वैकि-

यपुद्गलपरिवर्त.—नैरयिकोने पुद्गलपरिवर्त.—एक नैरयिकने नैरयिकपणामां औदारिकपुद्गलपरिवर्त.—एक नैरयिकने असुरपणामां औदारिकपुद्गलपरिवर्त.—एक नैरयिकने पृथिवीकायपणामां औदारिकपुद्गलपरिवर्तो.—एक असुरकुमारने नैरयिकपणामां औदारिकपुद्गलपरिवर्त.—एक नैरयिकने नैरयिकपणामां वैक्रियपुद्गलपरिवर्त.—नैरयिकने पृथिवीकायिकपणामां वैक्रियपुद्गलपरिवर्त.—नैरयिकोने नैरयिकपणामां केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्त व्यतीत थया छे?—नैरयिकोने पृथिवीकायिकपणामां औदारिकपुद्गलपरिवर्त.—औदारिकपुद्गलपरिवर्त शा हेतुथी कहेवाय?—औदारिकपुद्गलपरिवर्तनो निष्पत्तिकाळ.—औदारिकादिपुद्गलपरिवर्तकाळनुं अल्पबहुत्व.—पुद्गलपरिवर्तनुं अल्पबहुत्व.

शतक १२ उद्देशक ५. पृ० २७५—२७८.

प्राणातिपात वगेरे केटला वर्णादियुक्त छे?—क्रोधादि केटला वर्णादिसहित छे?—मान वगेरे केटला वर्णादियुक्त छे?—माया.—लोभ.—राग द्वेष वगेरे केटला वर्णादियुक्त छे?—प्राणातिपातविरमणादि केटला वर्णादियुक्त छे?—चार प्रकारनी मति.—अवग्रहादि.—उत्थानादि केटला वर्णादियुक्त छे?—सप्तम अवकाशान्तर.—सप्तम तनुवात.—नैरयिकोने वर्णादि.—पृथिवीकायिको.—मनुष्यो.—वाणव्यन्तरादि.—धर्मास्तिकायादि.—ज्ञानावरणादि.—कृष्णलेश्यादि.—सम्यग्दृष्ट्यादि.—औदारिकादि शरीर.—साकारोपयोग अने अनाकारोपयोग.—सर्वद्रव्यो.—गर्भमां उत्पन्न थतो जीव.—जीव अने जगत् कर्मथी विविधरूपे परिणमे छे?

शतक १२ उद्देशक ६. पृ० २७९—२८१.

राहु चन्द्रने ग्रसे छे?—राहु देवनुं वर्णन.—राहुना नामो.—राहुना विमानो.—राहु आवतो के जतो चन्द्रना प्रकाशने आवरे छे.—राहुना प्रकार.—राहु चन्द्रने अने सूर्यने क्यारे ढांके?—शा हेतुथी चंद्रने सश्री—शोभायुक्त कहेवाय छे?—शा हेतुथी सूर्यने आदित्य कहेवाय छे?—चन्द्रने अग्रमहिषिओ.—सूर्य अने चन्द्र केवा प्रकारना कामभोगो भोगवे छे?

शतक १२ उद्देशक ७. पृ० २८२—२८५.

लोकनुं महत्त्व.—नरकपृथिवी.—आ जीव रत्नप्रभाना एक एक नरकावासमां पृथिवीकायिकादिपणे उत्पन्न थयो छे?—सर्व जीवो.—शर्कराप्रभाना नरकावासमां पृथिवीकायिकादिपणे उत्पन्न थयो छे?—तमा पृथिवी.—सप्तम पृथिवीमां पूर्वे उत्पन्न थयो छे?—असुरकुमार.—पृथिवीकायिकावासमां पूर्वे उत्पन्न थयो छे?—बेइन्द्रियावासमां पूर्वे उत्पन्न थयो छे?—सनत्कुमार कल्पमां.—ग्रैवेयकविमानावासमां.—अनुत्तर विमानावासमां.—आ जीव सर्व जीवोना मातापिता इत्यादि संबन्धरूपे उत्पन्न थयो छे?—सर्व जीवो आ जीवना माता इत्यादि संबन्धरूपे उत्पन्न थया छे?—आ जीव सर्व जीवना शत्रुरूपे उत्पन्न थयो छे?—सर्व जीवो.—आ जीव सर्व जीवना राजा तरीके उत्पन्न थयेल छे?—आ जीव सर्व जीवोना दासरूपे उत्पन्न थयेल छे?—सर्व जीवो.

शतक १२ उद्देशक ८. पृ० २८६—२८७.

महाऋद्धिवाळो देव मरीने मात्र बे शरीरवाळा नागोमां उपजे?—नागना जन्ममां अर्चित—पूजित थाय?—बे शरीरवाळा मणिमां उत्पन्न थाय?—बे शरीरवाळा वृक्षमां उत्पन्न थाय?—वानर वगेरे जीवो रत्नप्रभामां उत्पन्न थाय?—सिंह वगेरे पण नैरयिकपणे उपजे?—काक वगेरे.

शतक १२ उद्देशक ९. पृ० २८८—२९३.

देवोना भव्यदेवादिप्रकार.—भव्यद्रव्यदेवादि कहेवानुं कारण.—नरदेव.—धर्मदेव.—देवाधिदेव.—भावदेव.—भव्यद्रव्यदेवो क्यांथी आवीने उपजे?—नरदेवो क्यांथी आवीने उपजे?—रत्नप्रभादिमांथी कइ नरकपृथिवीथी आवी उपजे?—शुं भवनवासीआदि देवोमांथी क्या देवोथी आवी उपजे?—धर्मदेव क्यांथी आवी उपजे?—देवाधिदेव क्यांथी उपजे?—रत्नप्रभादि नरकपृथिवीमांथी कइ नरकपृथिवीथी आवी उपजे?—देवोमां सर्व वैमानिक देवोथी आवीने उपजे?—भावदेवो क्यांथी आवी उपजे?—भव्यद्रव्यदेवनी स्थिति.—नरदेवनी स्थिति.—धर्मदेवनी स्थिति.—देवाधिदेवनी स्थिति.—भावदेवनी स्थिति.—भव्यद्रव्यदेवनी विकुर्वणाशक्ति.—देवाधिदेवनी विकुर्वणाशक्ति.—भावदेवनी विकुर्वणाशक्ति.—भव्यद्रव्यदेवो मरण पामी क्यां जाय?—नरदेव मरण पामी क्यां उपजे?—धर्मदेव मरण पामी क्यां जाय?—धर्मदेवो क्या देवोमां उत्पन्न थाय?—देवाधिदेवो मरण पामी क्यां जाय?—भावदेव मरण पामी क्यां जाय?—भव्यद्रव्यदेवोनी स्थिति.—भव्यद्रव्यदेवने केटला काळनुं अंतर होय?—नरदेवने परस्पर केटलुं अन्तर होय?—धर्मदेवने परस्पर केटलुं अन्तर होय?—देवाधिदेवनुं अन्तर—भावदेवनुं अन्तर.—भव्यद्रव्यदेवादिनुं परस्पर अल्पबहुत्व.—

शतक १२ उद्देशक १०. पृ० २९४—३००.

आत्माना प्रकार.—द्रव्यात्मा अने कषायात्मानो संबन्ध.—द्रव्यात्मा अने योगात्मानो संबन्ध.—द्रव्यात्मा अने उपयोगात्मानो संबन्ध.—द्रव्यात्मानो ज्ञानात्मानी साथे संबन्ध.—दर्शनात्मा साथे संबन्ध.—चारित्रात्मा साथे संबन्ध.—वीर्यात्मा.—कषायात्मा अने योगात्मानो संबन्ध.—कषायात्मा अने दर्शनात्मानो संबन्ध.—द्रव्यात्मा वगेरेनुं अल्पबहुत्व.—आत्मा ज्ञानस्वरूप छे के अन्यस्वरूप छे?—नैरयिकोनो आत्मा.—पृथिवीकायिकोनो आत्मा.—आत्मा दर्शनरूप छे के तेथी अन्य छे?—नैरयिकोनो आत्मा.—रत्नप्रभा पृथिवी सद्रूप छे के असद्रूप छे?—शर्कराप्रभा.—सौधर्मदेवलोक.—ग्रैवेयकविमान.—एक परमाणु सद्रूप छे के असद्रूप छे?—द्विप्रदेशिक स्कन्ध.—शा हेतुथी सद्रूप छे इत्यादि.—त्रिप्रदेशिक स्कन्धना आत्मा—आदि तेर भांगा.—शा हेतुथी त्रिप्रदेशिकस्कन्धना 'आत्मा' इत्यादि भांगा थाय छे?—चतुष्प्रदेशिकस्कन्धना १९ भांगाओ.—शा हेतुथी 'आत्मा' इत्यादि रूप छे.—पंचप्रदेशिकस्कन्धना २२ भांगाओ.—शा हेतुथी आत्मा इत्यादिरूप छे?

शतक १३ उद्देशक १. पृ० ३०१—३०६.

नरकपृथिवी.—रत्नप्रभाने विषे नरकावासो.—संख्याता योजन विस्तारवाळा नरकावासोमां एक समये नारकादिनो उत्पाद.—एक समये नारकादिनी उद्वर्तना.—रत्नप्रभामां नारक जीवोनी सत्ता.—असंख्ययोजनवाळा नरकावासोमां नारकादिनो उत्पाद.—शर्कराप्रभामां नरकावासो.—वालुकाप्रभामां नरकावासो.—पंकप्रभामां नरकावासो.—धूमप्रभामां नरकावासो.—तमःप्रभामां नरकावासो.—सप्तम नरकमां नरकावासो.—रत्नप्रभामां संख्यात योजनविस्तारवाळा नरकावासोमां सम्यग्दृष्टि वगेरेनो उत्पाद.—सम्यग्दृष्टि वगेरेनी उद्वर्तना.—सम्यग्दृष्टि वगेरेथी अविरहित होय.—सप्तम नरकमां सम्यग्दृष्टि-

क्यारे उपजे ?—कृष्णादिलेश्यावाळो थईने कृष्णलेश्यावाळा नारकोमां उत्पन्न थाय ?—नीललेश्यावाळा नारकोमां उत्पन्न थाय ?—तेनो हेतु.—कापोतलेश्यावाळा नारकोमां उपजे ?

शतक १३ उद्देशक २. पृ० ३०७—३१०.

देवोना प्रकार.—भवनवासी देवोना प्रकार.—असुरकुमारना आवासो.—असुरकुमारमां उत्पाद.—उद्वर्तना.—नागकुमारादिना आवासो.—वानव्यंतर देवोना आवास.—एकसमये वानव्यंतर देवोनो उत्पाद.—ज्योतिषिक देवोना विमानावास.—सौधर्म देवलोकमां विमानावास.—एकसमये सौधर्मथी मांडीने सहस्रार सुधी देवोनो उत्पाद.—आनत अने प्राणत देवलोकमां विमानावास.—ग्रैवेयक.—अनुत्तर विमानो.—पांच अनुत्तरमां एक समये देवोना उत्पादादि.—असुरकुमारावासमां सम्यग्दृष्ट्यादि उपजे ?—कृष्णादिलेश्यावाळा थईने कृष्णलेश्यावाळा देवोमां उत्पन्न थाय ?

शतक १३ उद्देशक ३. पृ० ३११.

नारको अनन्तराहारी होय अने त्यार बाद अनुक्रमे परिचारणा करे ?

शतक १३ उद्देशक ४. पृ० ३१२—३२३.

नरकपृथिवी.—नैरयिकद्वार.—स्पर्शद्वार.—प्रणिधिद्वार.—निरयान्तद्वार.—लोकमध्यद्वार.—अधोलोकमध्य.—ऊर्ध्वलोकमध्य.—तिर्यग्लोकमध्य.—दिशा-विदिशाप्रवहद्वार.—ऐन्द्री दिशा क्यांथी नीकळे छे ?—आग्नेयी.—याम्या-दक्षिण.—नैर्ऋती.—ऊर्ध्वदिशा.—तमादिशा.—लोक.—अस्तिकायप्रवर्तनद्वार.—धर्मास्तिकायवडे जीवोनुं प्रवर्तन.—अधर्मास्तिकायवडे प्रवर्तन.—आकाशास्तिकायवडे प्रवर्तन.—जीवास्तिकायवडे प्रवर्तन.—पुद्गलास्तिकायवडे प्रवर्तन.—अस्तिकायप्रदेशस्पर्शनाद्वार.—धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश धर्मास्तिकायादि द्रव्यना केटला प्रदेशोवडे स्पर्शाय ?—अधर्मास्तिकायनो एक प्रदेश.—आकाशास्तिकायनो एक प्रदेश.—जीवास्तिकायनो एक प्रदेश.—पुद्गलास्तिकायनो एक प्रदेश.—पुद्गलास्तिकायना बे प्रदेशो.—पुद्गलास्तिकायना त्रण प्रदेशो.—पुद्गलास्तिकायना संख्याता प्रदेशो.—पुद्गलास्तिकायना असंख्य प्रदेशो.—पुद्गलास्तिकायना अनन्त प्रदेशो.—काळनो एक समय.—धर्मास्तिकाय द्रव्य.—अधर्मास्तिकाय.—अवगाढद्वार.—ज्यां धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश अवगाढ होय त्यां बीजा धर्मास्तिकायादिना केटला प्रदेश अवगाढ होय ?—अधर्मास्तिकायनो एक प्रदेश.—आकाशास्तिकायनो एक प्रदेश.—जीवास्तिकायनो एक प्रदेश.—पुद्गलास्तिकायनो एक प्रदेश.—पुद्गलास्तिकायना बे प्रदेशो.—पुद्गलास्तिकायना त्रण प्रदेशो.—एक अद्धासमय.—एक धर्मास्तिकाय.—एक अधर्मास्तिकाय.—पृथिवीकायिक.—अप्कायिक.—अस्तिकायनिषदनद्वार.—धर्मास्तिकायादि त्रण द्रव्यमां बेसवाने समर्थ थाय ?—बहुसमद्वार.—लोकनो वक्रभाग.—संस्थानद्वार.

शतक १३ उद्देशक ५. पृ० ३२४.

नैरयिको शुं सचित्ताहारी छे, अचित्ताहारी छे के मिश्राहारी छे ?

शतक १३ उद्देशक ६. पृ० ३२४—३२९.

नारको सांतर के निरन्तर उपजे ?—असुरकुमारना चमरेन्द्रनो चमरचंच नामे आवास.—चमरेन्द्र चमरचंच नामे आवासमां रहे छे ?—चंपानगरी.—पूर्णभद्र चैत्य.—सिन्धुसौवीर देश.—वीतभय.—उदायन राजा.—प्रभावती देवी.—पोताना भाणेज केशीकुमारने राज्याभिषेक करवानो उदायननो संकल्प.—केशीकुमारनो राज्याभिषेक.—उदायननी दीक्षा अने मुक्ति.—अभिचिकुमारनो उदायनने विषे वैरानुबन्ध अने तेनुं वीतभय नगरथी नीकळी जवुं.— अभिचिनो असुरकुमारमां उत्पाद.

शतक १३ उद्देशक ७. पृ० ३३०—३३४.

भाषा.—भाषा आत्मस्वरूप छे के तेथी अन्य छे ?—रूपी के अरूपी ?—सचित्त के अचित्त ?—जीवस्वरूप के अजीवस्वरूप ?—जीवोने भाषा के अजीवोने भाषा होय ?—भाषा क्यारे कहेवाय ?—भाषा क्यारे भेदाय ?—भाषाना प्रकार.—मन.—मन आत्मा छे के तेथी अन्य छे ?—मन क्यारे होय ?—मन क्यारे भेदाय ?—मनना प्रकार.—काय आत्मा छे के तेथी अन्य ?—रूपी के अरूपी ?—काय क्यारे होय ?—काय क्यारे भेदाय ?—कायना प्रकार.—मरणना प्रकार.—आवीचिक मरणना प्रकार.—द्रव्यावीचिक मरणना प्रकार.—नैरयिक द्रव्यावीचिक मरण.—क्षेत्रावीचिक मरण.—नारक क्षेत्रावीचिक मरण.—अवधि मरण.—द्रव्यावधि मरण.—नैरयिक द्रव्यावधि मरण शा हेतुथी कहेवाय छे ?—आत्यन्तिक मरण.—द्रव्यात्यन्तिक मरण.—नैरयिक द्रव्यात्यन्तिक मरण शाथी कहेवाय छे ?—बालमरणना प्रकार.—पंडितमरण.—पादपोपगमन.—भक्तप्रत्याख्यान.

शतक १३ उद्देशक ८. पृ० ३३५.

कर्मप्रकृति.

शतक १३ उद्देशक ९. पृ० ३३५—३३७.

वैक्रिय शक्तिथी कोई दोरडाथी बांधेली घटीका लेईने एवारूपे गमन करे ?—केटला रूपो विकुर्वी शके ?—हिरण्यनी पेटी लेईने गमन करे ?—वडवागुलीनी पेठे गमन करे ?—जळोकानी पेठे गमन करे ?—बीजंबीजक पक्षीनी पेठे गमन करे ?—बिडालक पक्षीनी पेठे गमन करे ?—जीवंजीवक पक्षीनी जेम गमन करे ?—हंस पेठे गति करे ?—समुद्रवायसना आकारे गति करे ?—चक्रहस्त पुरुषनी जेम गति करे ?—रत्नहस्त पुरुषनी पेठे गमन करे ?—बिस.—मृणालिका.—वनखंड.—पुष्करिणीना आकारे आकाशमां गमन करे ?—केटला रूपो विकुर्वे ?—मायासहित के मायारहित विकुर्वे ?

शतक १३ उद्देशक १०. पृ० ३३८.

समुद्घात.

शतक १४ उद्देशक १. पृ० ३३९—३४२.

भावितात्मा अनगार जेणे चरम देवावासनुं उल्लंघन कर्युं छे अने परम देवावासने प्राप्त थयो नथी ते मरीने क्यां उपजे?—असुरकुमारावास.—नारकोनी शीघ्र गति.—नारको अनन्तरोपपन्न, परंपरोपपन्न के अनन्तरपरंपराअनुपपन्न छे?—अनन्तरोपपन्न नारको आश्रयी आयुषनो बन्ध.—परंपरोपपन्न नैरयिकोने आश्रयी आयुषनो बन्ध.—अनन्तरपरंपरानुपपन्न नैरयिको.—अनन्तर निर्गतादि नैरयिको.—नारको अनन्तर निर्गतादि केम कहेवाय छे?—अनन्तर निर्गतादिने आश्रयी आयुषनो बन्ध.—परंपरनिर्गत.—अनन्तरपरंपरानिर्गत.—अनन्तर खेदोपपन्न वगेरे.

शतक १४ उद्देशक २. पृ० ३४३—३४४.

उन्मादना प्रकार.—नारकोनो उन्माद.—नारकोने शा हेतुथी उन्माद होय?—असुरकुमारोनो उन्माद.—इन्द्र वृष्टि करे?—इन्द्र वृष्टि केवी रीते करे?—शुं असुरकुमार देवो वृष्टि करे छे?—ईशानेन्द्रादि तमस्काय करे?—असुरकुमार तमस्काय करे?—शा हेतुथी तमस्काय करे?

शतक १४ उद्देशक ३. पृ० ३४५—३४६.

महाकाय देव भावितात्मा अनगारनी वच्चे थईने जाय?—महाकाय असुरकुमार भावितात्मा अनगारनी वच्चे थईने जाय?—नारकोमां सत्कारादि विनय होय छे?—असुर कुमारोमां सत्कारादि विनय.—पंचेन्द्रिय तिर्यंचोमां सत्कारादि विनय होय छे?—अल्पऋद्धिवाळो महाऋद्धिवाळा देवनी वच्चे थईने जाय?—समानऋद्धिवाळो देव समानऋद्धिवाळा देवनी वच्चे थईने जाय?—वच्चे थईने जनार देव शस्त्र प्रहार करीने जाय के कर्या शिवाय जाय?—प्रथम शस्त्र प्रहार कर्या पछी जाय के गया पछी शस्त्र प्रहार करे?—नारको केवा प्रकारना पुद्गलपरिणामने अनुभवे छे?

शतक १४ उद्देशक ४. पृ० ३४७—३४८.

पुद्गलपरिणाम.—अतीत काळने विषे एक समयमां पुद्गलनो परिणाम.—वर्तमान काळे पुद्गलपरिणाम.—अनागत काल.—पुद्गलस्कन्ध.—अतीत वर्तमान अने अनागतकाळे जीवपरिणाम.—परमाणुपुद्गल शाश्वत के अशाश्वत?—परमाणु चरम के अचरम?—सामान्य परिणाम.

शतक १४ उद्देशक ५. पृ० ३४८—३५१.

नारक अग्निकायना मध्य भागमां गमन करे?—असुरकुमारो.—एकेन्द्रियो.—बेइन्द्रिय.—पंचेन्द्रिय तिर्यंच अग्नि वच्चे थईने जाय?—नारको दश स्थानोनो अनुभव करे छे.—असुरकुमारो.—पृथिवीकायिको.—बेइन्द्रियो.—तेइन्द्रियो.—चतुरिन्द्रिय जीवो.—पंचेन्द्रिय तिर्यंचो.—महर्द्धिक देव बहारना पुद्गलोने ग्रहण कर्या शिवाय पर्वतादिने उल्लंघी शके?—बहारना पुद्गलोने ग्रहण करी पर्वतादिने उल्लंघवा समर्थ छे.

शतक १४ उद्देशक ६. पृ० ३५२—३५३.

नारकोने आहार, परिणाम, योनि, स्थिति वगेरे.—नारको वीचि अने अवीचिद्रव्यनो आहार करे छे.—ज्यारे इंद्र भोग भोगववा इच्छे त्यारे ते शुं करे?—ईशानेन्द्र भोग भोगववा इच्छे त्यारे ते केवी रीते भोगवे?

शतक १४ उद्देशक ७. पृ० ३५४—३५७.

केवलज्ञाननी अप्राप्तिथी खिन्न थयेला गौतमस्वामिने आश्वासन.—अनुत्तरौपपातिक देवो जाणे छे अने जुए छे?—तुल्यता.—द्रव्यतुल्य.—क्षेत्रतुल्य.—कालतुल्य.—भवतुल्य.—भावतुल्य.—औदयिकादिभाववडे तुल्य.—संस्थानतुल्य.—आहारनो त्यागी अनगार मूर्छित थई आहार करे अने पछी मरणसमुद्घात करी अनासक्त थई आहार करे?—शा हेतुथी एम कहेवाय छे?—लवसत्तम देवो.—अनुत्तरौपपातिक देवो.—केटलुं कर्म बाकी रहेवाथी अनुत्तर देवपणे उत्पन्न थाय?

शतक १४ उद्देशक ८. पृ० ३५८—३६१.

रत्नप्रभा अने शर्कराप्रभानुं अन्तर.—शर्कराप्रभा अने वालुकाप्रभानुं अन्तर.—सप्तम नरकपृथिवी अने अलोकनुं अन्तर.—रत्नप्रभा अने ज्योतिषिकनुं अन्तर.—ज्योतिषिक अने सौधर्म-ईशानदेवलोकनुं अन्तर.—सौधर्म-ईशान अने सनत्कुमार-माहेन्द्रनुं अन्तर.—सनत्कुमार-माहेन्द्र अने ब्रह्मदेवलोकनुं अन्तर.—ब्रह्मलोक अने लान्तकनुं अन्तर.—लान्तक अने महाशुक्रनुं अन्तर.—अनुत्तरविमान अने ईषत्प्राग्भारा पृथिवीनुं अन्तर.—ईषत्प्राग्भारा अने अलोकनुं अन्तर.—शालवृक्ष मरीने क्यां जशे?—शालयष्टिका.—उंबरयष्टिका मरण पामी क्यां जशे?—अंबड परिव्राजक.—अव्याबाध देव.—इन्द्र कोइना माथाने तरवारथी कापी कमंडलमां नाखे तो पण तेने जरा पण दुःख न थाय.—जृंभक देवो.—जृंभक देवो शाथी कहेवाय छे?—जृंभक देवोना प्रकार.—जृंभक देवो क्यां रहे छे?—जृंभक देवोनी स्थिति.

शतक १४ उद्देशक ९. पृ० ३६२—३६४.

जे भावितात्मा अनगार पोतानी कर्मलेश्याने जाणतो नथी ते सशरीर जीवने जाणे छे?—रूपी पुद्गल स्कन्धो प्रकाशित थाय छे?—जे पुद्गलो प्रकाशित थाय छे ते केटला छे?—नैरयिकोने आप्त-सुखोत्पादक पुद्गलो होता नथी.—असुरकुमारने आप्त पुद्गलो.—पृथिवीकायिकोने आप्त अने अनाप्त पुद्गलो.—नारकोने इष्ट के अनिष्ट पुद्गलो होय छे?—महर्द्धिक देवनुं हजार रूपो विकुर्वीने हजार भाषा बोलवानुं सामर्थ्य.—एक भाषा के हजार भाषा?—सूर्यनो अर्थ.—सूर्यनी प्रभा ए शुं छे?—श्रमणोना सुखनी तुल्यता.

शतक १४ उद्देशक १०. पृ० ३६५—३६६.

केवलज्ञानी छद्मस्थने जाणे.—सिद्ध पण छद्मस्थने जाणे.—केवली अवधिज्ञानीने जाणे.—केवलज्ञानी बोले?—केवलीनी पेठे सिद्ध बोले के नहि?—केवलज्ञानीनी पेठे सिद्ध केम न बोले?—केवलज्ञानी आंख उघाडे अने मींचे?—केवलज्ञानी रत्नप्रभा पृथिवीने जाणे?—सिद्ध पण रत्नप्रभा पृथिवीने जाणे?—केवली शर्कराप्रभाने जाणे?—केवली सौधर्मादि कल्पने जाणे?—ग्रैवेयकादिने जाणे?—ईषत्प्राग्भारा पृथिवीने जाणे?—परमाणुपुद्गलने जाणे?—

शतक १५. पृ० ३६७—४०२.

श्रावस्तीनगरी.—कोष्ठक चैत्य.—हालाहला कुंभारण.—गोशालकनुं संघसहित हालाहला कुंभारणने घेर आगमन.—गोशालकने छ दिशाचरोनुं आवी मळवुं.—श्रावस्ती नगरीमां घणां माणसो कहे छे के 'गोशालक पोताने जिन कहेतो विचरे छे' ते केम मानी शकाय?—भगवंते कहेलो गोशालकनो वृत्तान्त.—मंखलि पिता.—भद्रा स्त्री.—शरवण ग्राम.—गोबहुल ब्राह्मण.—गोशालक नाम.—भगवान् महावीरे मातापिता देवलोक गया पछी दीक्षा लीधी.—प्रथम वर्षे अस्थिग्राममां चातुर्मास.—बीजा वर्षे राजगृह नगर.—प्रथम मासक्षमणना पारणाने दिवसे विजयगाथापतिना घेर भगवंतनो प्रवेश.—विजय गृहपतिने घेर पांच दिव्यनुं प्रगट थवुं.—गोशालकनुं विजय गृहपतिने घेर आगमन.—बीजुं मासक्षमण.—भगवंतनो बीजा मासक्षमणना पारणाने दिवसे आनंद गृहपतिना घेर प्रवेश.—त्रीजुं मासक्षमण.—त्रीजा मासक्षमणना पारणाने दिवसे सुनन्द गृहपतिना घेर प्रवेश.—कोल्लाक सन्निवेश.—बहुल ब्राह्मण.—चतुर्थ मासक्षमणना पारणाने दिवसे बहुल ब्राह्मणना घेर प्रवेश.—भगवंते करेलो गोशालकनो शिष्यतरीके स्वीकार.—भगवंतनो गोशालक साथे सिद्धार्थ ग्रामथी कूर्मग्राम तरफ विहार अने मार्गमां तलना छोडनुं जोवुं.—गोशालकनो भगवंत महावीरने प्रश्न.—तलनो छोड नीपजशे के नहि?—गोशालकनुं भगवंतनी वातने मिथ्या करवा माटे तलना छोडने उखेडी नांखवुं.—गोशालकने वेश्यायन बालतपस्वीनो समागम, तेमने गोशालकनुं उपहासपूर्वक कथन.—तेमनुं गोशालक उपर तेजोलेश्यानुं मूकवुं.—शीतलेश्या मूकी भगवंते करेलुं गोशालकनुं रक्षण.—भगवंते गोशालकने तेजोलेश्याप्राप्तिनो विधि बताव्यो.—भगवंतनुं गोशालकनी साथे सिद्धार्थग्राम तरफ प्रयाण अने भगवंतना वचनने मिथ्या करवा माटे तलना छोडनी गोशालकनी तपास.—गोशालकनो परिवर्तवादस्वीकार अने भगवंतथी तेनुं जूदा पडवुं.—गोशालकने तेजोलेश्यानी प्राप्ति.—गोशालकना छ दिशाचरो शिष्य थया अने ते हवे जिनतरीके विचरवा लाग्यो.—गोशालक जिन नथी एवुं भगवंतनुं कथन.—उपरनुं कथन सांभळी गोशालकने गुस्सो थयो.—आनंदने गोशालकनो समागम, भगवंतने बाळी भस्म करवानी तेणे आपेली धमकी, ते माटे तेणे कहेलुं वणिकोनुं दृष्टान्त.—गोचरीथी पाछा फरतां आनंदनुं गोशालके आपेली धमकीनुं भगवंतने निवेदन.—गोशालक तपोजन्य तेजोलेश्यावडे बाळी भस्म करवा समर्थ छे ते संबन्धे प्रश्नोत्तर.—भगवंते आनंदने कह्युं के तुं गौतमादि मुनिओने कहे के गोशालकनी साथे कंइ पण वादविवाद न करे.—भगवंत प्रति गोशालकनो उपालंभ.—गोशालकनो गोशालकपणे इनकार.—गोशालकनुं पोतानुं स्वरूपनिवेदन अने ते द्वारा स्वमत प्रदर्शन.—चोराशी लाख महाकल्पनुं प्रमाण.—सात दिव्य भवान्तरित सात मनुष्य भवो.—सात शरीरान्तरप्रवेश.—प्रथम शरीरप्रवेश.—द्वितीय शरीरप्रवेश—तृतीय शरीरप्रवेश.—चतुर्थ शरीरप्रवेश.—पंचम शरीरप्रवेश.—षष्ठ शरीरप्रवेश.—सप्तम शरीरप्रवेश.—भगवन्ते कह्युं के हे गोशालक! तुं तारा आत्माने छुपावे छे.—गोशालकना भगवंतने आक्रोशयुक्त वचनो कहेवां.—सर्वानुभूति अनगारनुं गोशालकने सत्य कथन.—गोशालके सर्वानुभूति अनगारने बाळी भस्म कर्या.—सुनक्षत्र अनगारनुं गोशालकने कथन.—गोशालके सुनक्षत्र अनगारने पण बाळया.—गोशालकनो भगवंत प्रति त्रीजी वारनो आक्रोश.—गोशालके भगवंतनो वध करवा माटे शरीरमांथी तेजोलेश्या बहार काढी.—तेजोलेश्या गोशालकना शरीरमां पेठी.—'तुं तारा तपना तेजथी पराभूत थइ छ मासने अन्ते काळ करीश' एवुं गोशालकने भगवंतनुं कथन.—श्रावस्ती नगरीना जनोनो भगवंत अने गोशालकना सम्यग्वादित्वसंबन्धे प्रवाद.—श्रमणोए गोशालकने प्रश्नो पूछी निरुत्तर कर्यो.—निरुत्तर थवाथी गोशालकनुं गुस्से थवुं अने तेना केटला एक शिष्योनुं भगवंतने आश्रयी रहेवुं.—गोशालकनुं भगवंत पासेथी हालाहला कुंभारणने घेर जवुं.—तेजोलेश्यानुं सामर्थ्य.—चार प्रकारना पानक.—अपानकना चार प्रकार.—स्थालपाणी.—त्वचापाणी.—शींगनुं पाणी.—शुद्धपाणी.—आजीविकोपासक अयंपुलकनो गोशालकनी पासे जवानो संकल्प.—अयंपुलकनुं आगमन, गोशालकनी विचित्र अवस्था जोइ पाछुं जवुं, स्थविरोए अयंपुलने पाछा बोलावी तेना मनना संकल्पनुं निवेदन अने तेना मननुं समाधान.—अयंपुलनुं गोशालक पासे आगमन.—गोशालकवडे अयंपुलना संकल्पनुं निवेदन अने तेना मननुं समाधान.—पोताना मरण बाद देहने उत्सवपूर्वक बहार काढवा संबन्धे गोशालकनी भलामण.—गोशालकने सम्यक्त्व थवुं, 'हुं जिन नथी' एम पोतानी वास्तविक स्थिति प्रकाशित करवी, तेनो पश्चात्ताप अने 'महावीर जिन छे' एवुं निवेदन.—'मने काळधर्म पामेलो जाणी मारा डाबा पगने दोरडावती बांधी घसडजो अने मुखमां थुंकजो तथा हुं जिन नथी एम उद्घोषणा करता मारा शरीरने निंदापूर्वक बहार काढजो' एवी गोशालकनी पोताना शिष्योने भलामण.—आजीविक स्थविरोनुं हालाहला कुंभारणना द्वार बन्ध करी श्रावस्तीने आळेखी गोशालकना कह्या प्रमाणे करवुं.—मेंढिकग्राम.—शालकोष्ठक चैत्य.—मालुकावन.—भगवंत महावीरना शरीरमां पीडाकारी रोगनुं थवुं.—'भगवंत रोगनी पीडाथी छद्मस्थावस्थामां काळधर्म पामशे' एवी सिंह अनगारनी आशंका.—भगवंतनुं सिंह अनगारने बोलाववुं.—भगवंतनुं सिंहना मनोगत भावनुं कथन.—भगवंतनुं रेवती श्राविका पासेथी बीजोरापाकनुं मंगाववुं.—सर्वानुभूति मरण पामी क्यां गया ते संबन्धे प्रश्नोत्तर.—सुनक्षत्र अनगार काळ करी क्यां गया?—गोशालक काळ करी क्यां गयो?—गोशालक देवलोकथी च्यवी क्यां जशे?—महापद्म अने देवसेन नाम पाडवानुं कारण.—महापद्म.—देवसेन.—विमलवाहन नाम पाडवानुं कारण.—विमलवाहननुं श्रमण निर्ग्रन्थोनी साथे अनार्यपणुं.—सुमंगल अनगार.—विमलवाहन सुमंगल अनगार उपर रथ चलावी पाडी नांखशे.—सुमंगल अनगार विमलवाहनने तपना तेजथी भस्म करशे.—सुमंगल अनगार काळ करी क्यां जशे?—विमलवाहन मरण पछी क्यां जशे?—हवे त्यांथी च्यवी मनुष्यदेह धारण करी सम्यग्दर्शन पामशे.—केवलज्ञान-दर्शन उत्पन्न थशे.—दृढप्रतिज्ञ केवली थई घणा वरस सुधी चारित्र पाळी मोक्षे जशे.

भगवत्सुधर्मस्वामिप्रणीत भगवतीसूत्र.

सत्तमं सयं.

१. १ आहार २ विरति ३ थावर ४ जीवा ५ पक्खी य ६ आउ ७ अणगारे ।
८ छउमत्थ ९ असंवुड १० अन्नउत्थि दस सत्तमंमि सए ॥

पढमो उद्देसो.

२. [प्र०] तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव एवं वदासी–जीवे णं भंते ! कं समयमणाहारए भवइ ? [उ०] गोयमा !

सप्तम शतक.

१. [उद्देशसंग्रह–] १ आहार, २ विरति, ३ स्थावर, ४ जीव, ५ पक्षी, ६ आयुष्, ७ अनगार, ८ छद्मस्थ, ९ असंवृत, अने १० अन्यतीर्थिक–ए संबन्धे सातमां शतकमां दश उद्देशको छे.

[प्रथम उद्देशकमां आहार–आहारक अने अनाहारक इत्यादि विषे हकीकत छे, बीजा उद्देशकमां विरति–प्रत्याख्यानसंबंधी वर्णन छे, त्रीजा उद्देशकमां स्थावर–वनस्पति वगेरेनी वक्तव्यता छे, चोथा उद्देशकमां जीव–संसारी जीवनी प्ररूपणा छे, पांचमां उद्देशकमां पक्षी–खेचरजीवोनी हकीकत छे, छठ्ठा उद्देशकमां आयुष् वगेरेनी हकीकत छे, सातमां उद्देशकमां अनगार–साधु वगेरेनी हकीकत छे, आठमां उद्देशकमां छद्मस्थ मनुष्यादिनी हकीकत छे, नवमां उद्देशकमां असंवृत–प्रमत्तसाधुवगेरेनी वक्तव्यता छे, अने दशमां उद्देशकमां कालोदायि-प्रमुख अन्यतीर्थिकसंबन्धी वक्तव्यता छे.]

प्रथम उद्देशक.

आहारक अने अनाहारक.

२. [प्र०] ते काले अने ते समये (गौतम इन्द्रभूति) यावत् ए प्रमाणे बोल्या–हे भगवन् ! जीव (परभवमां जतां) कये समये *अनाहारक (आहार नहि करनार) होय ? [उ०] हे गौतम ! (परभवमां) †प्रथम समये जीव कदाच आहारक होय अने कदाच अना-

---

१. * आहारना बे प्रकार छे–१ आभोगनिर्वर्तित (इच्छापूर्वक ग्रहण करायेलो) आहार अने २ अनाभोगनिर्वर्तित (इच्छासिवाय अनाभोगपणे ग्रहण करायेलो) आहार. तेमां आभोगनिर्वर्तित आहार नियत समये होय छे, परन्तु अनाभोगनिर्वर्तित आहार उत्पत्तिना प्रथमसमयथी प्रारंभी अन्तसमय सुधी प्रतिसमय निरन्तर होय छे, जुओ–(प्रज्ञा. प. २९, प. ४९८.)

† ज्यारे जीव मरण पामी ऋजुगतिथी परभवमां प्रथम समये उत्पन्न थाय छे त्यारे परभवायुषना प्रथम समये ज आहारक होय छे, परन्तु ज्यारे वक्रगति वडे बे समये उत्पन्न थाय छे त्यारे प्रथम समये अनाहारक होय छे अने बीजे समये आहारक होय छे, ज्यारे त्रण समये उत्पन्न थाय छे त्यारे प्रथमना बे

पढमे समए सिय आहारए सिय अणाहारए, बितिए समए सिय आहारए सिय अणाहारए, [1]ततिए समए सिय आहारए सिय अणाहारए, चउत्थे समए नियमा आहारए। एवं दंडओ। जीवा य एगिंदिया य चउत्थे समए, सेसा ततिए समए।

३. [प्र०] जीवे णं भंते! कं समयं सव्वप्पाहारए भवति? [उ०] गोयमा! [2]पढमसमयोववन्नए वा चरमसमए भवत्थे वा, एत्थ णं जीवे सव्वप्पाहारए भवइ। दंडओ भाणिअव्वो जाव वेमाणिआणं।

४. [प्र०] किंसंठिए णं भंते! लोए पन्नत्ते? [उ०] गोयमा! सुपइट्ठगसंठिए लोए पन्नत्ते, हेट्ठा विच्छिन्ने, जाव उप्पिं उड्ढंमुइंगागारसंठिए; [3]तंसि च णं सासयंसि लोगंसि हेट्ठा विच्छिन्नंसि जाव उप्पिं उड्ढंमुइंगागारसंठियंसि उप्पन्ननाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली जीवे वि जाणइ पासइ, अजीवे वि जाणइ पासइ; तओ पच्छा सिज्झति, जाव अंतं करेइ।

५. [प्र०] [4]समणोवासयस्स णं भंते! सामाइयकडस्स समणोवासए अच्छमाणस्स तस्स णं भंते! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ, [5]संपराइया किरिया कज्जइ? [उ०] गोयमा! नो इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जति। [प्र०] से केणट्ठेणं जाव संपराइया? [उ०] गोयमा! समणोवासयस्स णं सामाइयकडस्स समणोवासए अच्छमाणस्स आया अहिगरणी भवइ, आयाऽहिगरणवत्तियं च णं तस्स नो इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ; से तेणट्ठेणं जाव संपराइया।

हारक होय, बीजे समये कदाच आहारक होय अने कदाच अनाहारक होय, त्रीजे समये कदाच आहारक होय अने कदाच अनाहारक होय, परन्तु चोथे समये अवश्य आहारक होय. ए प्रमाणे (*नारक इत्यादि चोवीस) दंडक (पाठ) कहेवा. सामान्य जीवो अने एकेन्द्रियो चोथे समये आहारक होय छे, अने (एकेन्द्रिय शिवाय) बाकीना जीवो †त्रीजे समये आहारक होय छे.

३. [प्र०] हे भगवन्! जीव कये समये सौथी अल्प आहारवाळो होय छे? [उ०] हे गौतम! उत्पन्न थतां प्रथम समये अने भवने (जीवितने) छेल्ले समये; आ समये जीव सौथी अल्प आहारवाळो होय छे. ए प्रमाणे वैमानिक सुधी दंडक कहेवो.

लोकसंस्थान.

४. [प्र०] हे भगवन्! लोकनुं संस्थान (आकार) केवा प्रकारे कह्युं छे? [उ०] हे गौतम! लोक सुप्रतिष्ठक–‡शरावना आकार जेवो कहेलो छे. ते नीचे विस्तीर्ण-पहोळो यावत् उपर ऊर्ध्व (उभा) मृदंगना आकारे संस्थित छे. नीचे विस्तीर्ण यावत् उपर ऊर्ध्व मृदंगना आकारे रहेला ते शाश्वत लोकमां उत्पन्न थयेला ज्ञान अने दर्शनने धारण करनार अरिहंत जिन केवलज्ञानी जीवोने पण जाणे छे अने जुए छे, अजीवोने पण जाणे छे अने जुए छे, त्यार पछी सिद्ध थाय छे, यावत् (सर्व दुःखोनो) अंत करे छे.

ऐर्यापथिकी अने सांपरायिकी क्रिया.

५. [प्र०] हे भगवन्! श्रमणना उपाश्रयमां रहीने सामायिक करनार श्रमणोपासकने (श्रावकने) शुं ऐर्यापथिकी क्रिया लागे के सांपरायिकी क्रिया लागे? [उ०] हे गौतम! ऐर्यापथिकी क्रिया न लागे, पण साम्परायिकी क्रिया लागे. [प्र०] हे भगवन्! शा हेतुथी यावत् सांपरायिकी क्रिया लागे? [उ०] हे गौतम! श्रमणना उपाश्रयमां रही सामायिक करनार श्रावकनो आत्मा अधिकरण (कषायना साधनो) युक्त छे, तेथी तेने आत्माना (पोताना) अधिकरण निमित्ते ऐर्यापथिकी क्रिया न लागे, पण सांपरायिकी क्रिया लागे, ते हेतुथी यावत् सांपरायिकी क्रिया लागे छे.

---

१ तितिए ख। २–समतोववन्नए क; अस्मिन् पुस्तके बहुशः तकारघटितः पाठ उपलभ्यते, यथा—किंसंठिते, सुपतिट्ठग, (७, १, ४) यत्र पूर्वं संस्कृतप्रकृतौ तकारो न विद्यते तत्रापि तकारः; यथा—अयमर्थः, इणट्ठे, तिणट्ठे; सामायिक, सामाइअ, सामातिअ; नैरयिक, नेरइअ, नेरतिअ। ३ तंसिं ग–घ। ४–वासगस्स घ। ५ संपराईआ ख।

समये अनाहारक होय छे, अने त्रीजे समये आहारक होय छे, ज्यारे चार समये परभवमां उत्पन्न थाय छे, त्यारे आदिना त्रण समये अनाहारक होय छे, अने चोथे समये आहारक होय छे. त्रण समयनी विग्रहगति आ प्रमाणे थाय छे–त्रसनाडीनी बहार विदिशामां रहेलो कोइ जीव ज्यारे अधोलोकथी ऊर्ध्वलोकमां त्रसनाडीनी बहार दिशामां उत्पन्न थाय त्यारे ते अवश्य प्रथम समये विश्रेणिथी समश्रेणिमां आवे, बीजे समये त्रसनाडीमां प्रवेश करे, त्रीजे समये ऊर्ध्व लोकमां जाय, अने चोथे समये लोकनाडी बहार जइ उत्पत्तिस्थाने उपजे. अहीं आदिना त्रण समये विग्रह गति होय छे. अन्य आचार्य एम कहे छे के चार समयनी पण विग्रहगति संभवे छे–जेम कोई जीव अधोलोकमां त्रसनाडीनी बहार विदिशामांथी ऊर्ध्वलोकमां त्रसनाडीनी बहार विदिशामां उत्पन्न थाय त्यारे त्रण समय पूर्वनी पेठे जाणवा; चोथे समये त्रसनाडीथी बहार नीकळी समश्रेणिमां आवे, अने पांचमे समये उत्पत्तिस्थाने उत्पन्न थाय. तेमां आदिना चार समये विग्रह गति होय छे, अने तेमां ते अनाहारक होय छे; पण सूत्रमां आ वात बतावी नथी, कारण के प्रायः आवी रीते कोई जीव उपजतो नथी. जुओ–(भ. टी. प. २८७–२).

* २. सात नारकोनो एक दंडक, असुरादि दश भुवनपतिना दश दंडक, पृथ्व्यादि पांच स्थावरना पांच दंडक, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रियना त्रण दंडक, गर्भज तिर्यंच अने गर्भज मनुष्यनो एक एक दंडक, व्यन्तर ज्योतिषिक अने वैमानिकनो एक एक दंडक–ए रीते चोवीश दण्डको जाणवा.

† जे नारकादि त्रस जीवो मरीने त्रसने विषे उत्पन्न थाय, तेनुं त्रसनाडीथी बहार जवुं आववुं न थाय माटे ते त्रीजे समये अवश्य आहारक होय. जेम, कोइ मत्स्यादि जीव भरतक्षेत्रना पूर्वभागथी ऐरवतक्षेत्रना पश्चिमभागनी नीचे नरकमां उत्पन्न थाय, ते एक समये भरतना पूर्वभागथी पश्चिमभाग तरफ जाय, बीजे समये ऐरवतना पश्चिमभाग तरफ जाय अने त्रीजे समये नरकमां जाय. जुओ (भ. टी. प. २८८–२).

‡ अहीं शराव–चपणीआ–ने ऊंधुं वाळी तेना उपर कलश मूकेलो होय तेवुं शराव लेवुं, केमके ते शिवाय केवल शरावनी साथे लोकसंस्थाननुं सादृश्य घटी शकतुं नथी. जुओ–(भ. टी. प. २८९–१).

६. [प्र०] समणोवासगस्स णं भंते ! पुव्वामेव तसपाणसमारंभे पच्चक्खाए भवइ, पुढविसमारंभे अपच्चक्खाए भवइ, से य पुढविं खणमाणे अण्णयरं तसं पाणं विहिंसेज्जा, से णं भंते ! तं वयं अतिचरति ? [उ०] णो तिणट्ठे समट्ठे, नो खलु से तस्स अतिवायाए आउट्टति ।

७. [प्र०] समणोवासयस्स णं भंते ! पुव्वामेव वणस्सइसमारंभे पच्चक्खाए, से य पुढविं खणमाणे अन्नयरस्स रुक्खस्स मूलं छिंदेज्जा, से णं भंते ! तं वयं अतिचरति ? [उ०] णो तिणट्ठे समट्ठे, नो खलु से तस्स अइवायाए आउट्टति ।

८. [प्र०] समणोवासए णं भंते ! तहारूवं समणं वा माहणं वा फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेमाणे किं लब्भइ ? [उ०] गोयमा ! समणोवासए णं तहारूवं समणं वा जाव पडिलाभेमाणे तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा समाहिं उप्पाएति, समाहिकारए णं तमेव समाहिं पडिलभइ ।

९. [प्र०] समणोवासए णं भंते ! तहारूवं समणं वा जाव पडिलाभेमाणे किं चयति ? [उ०] गोयमा ! जीवियं चयति, दुच्चयं चयति, दुक्करं करेति, दुल्लहं लहइ, बोहिं बुज्झइ; तओ पच्छा सिज्झति, जाव अंतं करेति ।

१०. [प्र०] अत्थि णं भंते ! अकम्मस्स गती पन्नायति ? [उ०] हंता, अत्थि ।

११. [प्र०] कहं णं भंते ! अकम्मस्स गती पन्नायति ? [उ०] गोयमा ! निस्संगयाए, निरंगणयाए, गतिपरिणामेणं, बंधणछेयणयाए, निरिंधणयाए, पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गती पन्नायति ।

१२. [प्र०] कहं णं भंते ! निस्संगयाए, निरंगणयाए, गइपरिणामेणं अकम्मस्स गती पन्नायति ? [उ०] से जहानामए केइ पुरिसे सुक्कं तुंबं निच्छिड्डं निरुवहयं आणुपुव्वीए परिकम्मेमाणे परिकम्मेमाणे दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ, वेढेत्ता अट्ठहिं मट्टियालेवेहिं लिंपइ, लिंपित्ता उण्हे दलयति, भूतिं भूतिं सुक्कं समाणं अत्थाहमतारमपोरिसियंसि उदगंसि पक्खिवेज्जा, से

व्रतातिचार.

६. [प्र०] हे भगवन् ! जे श्रमणोपासकने पूर्वे त्रसजीवोना वधनुं प्रत्याख्यान होय अने पृथ्वीकायना वधनुं प्रत्याख्यान न होय, ते पृथ्वीने खोदता जो कोई त्रस जीवनी हिंसा करे तो हे भगवन् ! तेने ते व्रतमां अतिचार लागे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. कारण के ते (श्रावक) तेनो वध करवा प्रवृत्ति करतो नथी.*

७. [प्र०] हे भगवन् ! श्रमणोपासके पूर्वे वनस्पतिना वधनुं प्रत्याख्यान कर्युं होय, ते पृथिवीने खोदता कोई एक वृक्षना मूळने छेदी नांखे तो तेने ते व्रतनो अतिचार लागे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. कारण के ते तेना (वनस्पतिना) वध माटे प्रवृत्ति करतो नथी.

८. [प्र०] हे भगवन् ! तेवा प्रकारना (उत्तम) श्रमण या †ब्राह्मणने प्रासुक (अचित्त—निर्जीव) अने एषणीय (दोषरहित इच्छवा योग्य) अशन, पान, खादिम अने स्वादिम आहार वडे प्रतिलाभता-सत्कार करता श्रमणोपासकने शो लाभ थाय ? [उ०] हे गौतम ! तेवा प्रकारना श्रमण या ब्राह्मणने यावत् प्रतिलाभतो श्रमणोपासक तेवा प्रकारना श्रमण या ब्राह्मणने समाधि उत्पन्न करे छे, अने समाधि करनार (श्रावक) ते समाधिने प्राप्त करे छे.

९. [प्र०] हे भगवन् ! तथारूप श्रमणने यावत् प्रतिलाभतो श्रमणोपासक शेनो त्याग करे ? [उ०] हे गौतम ! जीवितनो (जीवननिर्वाहना कारणभूत अन्नादिनो) त्याग करे, दुस्त्यज वस्तुनो त्याग करे, दुर्लभ वस्तुने प्राप्त करे, बोधि—सम्यग्दर्शननो अनुभव करे, त्यार पछी सिद्ध थाय, यावत् (सर्व दुःखनो) अंत करे.

कर्मरहित जीवनी गति.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! कर्मरहित जीवनी गति स्वीकाराय ? [उ०] हे गौतम ! हा, स्वीकाराय.

११. [प्र०] हे भगवन् ! कर्मरहित जीवनी गति केवी रीते स्वीकाराय ? [उ०] हे गौतम ! निःसंगपणाथी, नीरागपणाथी, गतिना परिणामथी, बंधननो छेद थवाथी, निरिंधन थवाथी—कर्मरूप इन्धनथी मुक्त थवाथी अने पूर्वप्रयोगथी कर्मरहित जीवनी गति स्वीकाराय छे.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! निःसंगपणाथी, नीरागपणाथी अने गतिना परिणामथी कर्मरहित जीवनी गति शी रीते स्वीकाराय ? [उ०] हे गौतम ! जेम कोई एक पुरुष छिद्र विनाना, नहि भांगेला सुका तुंबडाने क्रमपूर्वक अत्यंत संस्कार करीने डाभ अने कुश वडे वींटे, त्यार पछी तेने माटीना आठ लेपथी लींपे, लींपीने तापमां मुकवे, ज्यारे ते तुंबडुं अत्यंत सुकाय त्यारे ताग विनाना अने न तरी शकाय तेवा पुरुष-

१ आवर्तते—प्रवर्तते इत्यर्थः । २ तावेव ख । ३ दुच्चयं ख । ४ 'कहं णं, कहण्णं, कह णं, कहन्नं, कह णं' इत्येवं विकल्पात्मकानि बहुधा रूपाणि उपलभ्यन्ते, परमत्र 'कहं णं' इत्येवमेकमेव पाठो स्वीकृतः । ५ निरंगणयाए क विना अन्यत्र । ६ पन्नत्त क । ७ 'बंधणछेयणयाए निरिंधणयाए पुव्वपओगेणं' इत्यधिकः पाठः क विना अन्यत्र । ८ परिकम्मेमाणे ख । ९ भूइं भूइं ख । १० अपोरसियंसि क विनाऽन्यत्र ।

६. * सामान्यरीते देशविरति श्रावकने संकल्पपूर्वक हिंसानुं प्रत्याख्यान होय छे, तेथी ज्यां सुधी ते जेनी हिंसानुं प्रत्याख्यान कर्युं होय तेनी संकल्पपूर्वक हिंसा करवा प्रवृत्ति न करे त्यां सुधी तेने ते व्रतमां दोष लागतो नथी.

८. † ब्राह्मणनुं लक्षण जुओ—(उत्त० अ. २५. गा. १९-२४).

चूणं गोयमा ! से तुंबे तेसिं अट्ठण्हं मट्टियालेवाणं गुरुयत्ताए, भारियत्ताए, गुरुसंभारियत्ताए सलिलतलमतिवइत्ता अहे धरणितलपइट्ठाणे भवइ ? हंता, भवइ । अहे णं से तुंबे तेसिं अट्ठण्हं मट्टियालेवाणं परिक्खएणं धरणितलमतिवइत्ता उप्पिं सलिलतलपइट्ठाणे भवइ ? हंता, भवइ । एवं खलु गोयमा ! निस्संगयाए, निरंगणयाए, गइपरिणामेणं अकम्मस्स गती पन्नायति ।

१३. [प्र०] कहं णं भंते ! बंधणछेदणयाए अकम्मस्स गई पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! से जहानामए कलसिंबलिया इ वा, मुग्गसिंबलिया इ वा, माससिंबलिया इ वा, सिंबलिसिंबलिया इ वा, एरंडमिंजिया इ वा उण्हे दिन्ना सुक्का समाणी फुडित्ता णं एगंतमंतं गच्छइ, एवं खलु गोयमा ! ।

१४. [प्र०] कहं णं भंते ! निरिंधणयाए अकम्मस्स गती ? [उ०] गोयमा ! से जहानामए धूमस्स इंधणविप्पमुक्कस्स उड्ढं वीससाए निव्वाघाएणं गती पवत्तति, एवं खलु गोयमा ! ।

१५. [प्र०] कहं णं भंते पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गती पंनत्ता ? [उ०] गोयमा ! से जहानामए कंडस्स कोदंडविप्पमुक्कस्स लक्खाभिमुही निव्वाघाएणं गती पवत्तइ, एवं खलु गोयमा ! पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गती पन्नायते, एवं खलु गोयमा ! नीसंगयाए, निरंगणयाए, जाव पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गती पन्नत्ता ।

१६. [प्र०] दुक्खी णं भंते ! दुक्खेणं फुडे, अदुक्खी दुक्खेणं फुडे ? [उ०] गोयमा ! दुक्खी दुक्खेणं फुडे, नो अदुक्खी दुक्खेणं फुडे ।

१७. [प्र०] दुक्खी णं भंते ! नेरतिए दुक्खेणं फुडे, अदुक्खी नेरतिए दुक्खेणं फुडे ? [उ०] गोयमा ! दुक्खी नेरतिए दुक्खेणं फुडे, नो अदुक्खी नेरतिए दुक्खेणं फुडे । एवं दंडओ, जाव वेमाणिआणं । एवं पंच दंडगा नेयव्वा—१ दुक्खी दुक्खेणं फुडे, २ दुक्खी दुक्खं परियायइ, ३ दुक्खी दुक्खं उदीरेइ, ४ दुक्खी दुक्खं वेदेति, ५ दुक्खी दुक्खं निज्जरेति ।

प्रमाणथी अधिक (ऊंडा) पाणीमां तेने नांखे, हे गौतम ! खरेखर ते तुंबडुं माटीना आठ लेप वडे गुरु थयेलुं होवाथी, भारे थवाथी अने अधिक वजन वाळुं होवाथी पाणीना उपरना तळीआने छोडी नीचे पृथिवीने तळीए जइ बेसे ? हा बेसे. हवे ते माटीना आठ लेपनो क्षय थाय त्यारे ते तुंबडुं पृथिवीना तळने छोडी पाणीना तळ उपर आवीने रहे ? हा रहे. ए प्रमाणे हे गौतम ! निःसंगपणाथी, नीरागपणाथी अने गतिना परिणामथी कर्मरहित जीवनी गति स्वीकाराय छे.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! बंधननो छेद थवाथी कर्मरहित जीवनी गति शी रीते स्वीकाराय ? [उ०] हे गौतम ! जेम कोई एक वटाणानी शिंग, मगनी शिंग, अडदनी शिंग, सिंबलिनी (शेमळानी) शिंग अने एरंडानुं फल तडके मुक्या होय अने सुकाय त्यारे ते फुटीने (तेमांना बीज) पृथ्वीनी एक बाजुए जाय; ए प्रमाणे हे गौतम ! बंधननो छेद थवाथी कर्मरहित जीवनी गति स्वीकाराय छे.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! निरिंधन (कर्मरूप इन्धनथी मुक्त) थवाथी कर्मरहित जीवनी गति शी रीते स्वीकाराय ? [उ०] हे गौतम ! इन्धनथी छूटेला धूमनी गति स्वाभाविक रीते प्रतिबन्ध शिवाय उंचे प्रवर्ते छे, ए प्रमाणे हे गौतम ! [निरिंधनपणाथी—कर्मरूप इन्धनथी मुक्त थवाथी कर्मरहित जीवनी गति प्रवर्ते छे.]

१५. [प्र०] हे भगवन् ! पूर्वना प्रयोगथी कर्मरहित जीवनी गति शी रीते स्वीकाराय ? [उ०] हे गौतम ! जेम कोइ एक धनुषथी छूटेला बाणनी गति प्रतिबन्ध शिवाय लक्ष्यना सन्मुख प्रवर्ते छे, तेम हे गौतम ! पूर्वप्रयोगथी कर्मरहित जीवनी गति स्वीकाराय छे, हे गौतम ! ए प्रमाणे निःसंगताथी, नीरागताथी, यावत् पूर्वप्रयोगथी कर्मरहित जीवनी गति स्वीकाराय छे.

दुःखी जीव दुःखथी व्याप्त होय.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! * दुःखी जीव दुःखथी व्याप्त—बद्ध होय के अदुःखी—दुःखरहित जीव दुःखथी व्याप्त होय ? [उ०] हे गौतम ! दुःखी जीव दुःखथी व्याप्त होय, पण दुःखरहित जीव दुःखथी व्याप्त न होय.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! दुःखी नारक दुःखथी व्याप्त होय के अदुःखी नारक दुःखथी व्याप्त होय? [उ०] हे गौतम ! दुःखी नारक दुःखथी व्याप्त होय, पण दुःखरहित नारक दुःखथी व्याप्त न होय. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकने विषे दंडक कहेवो. ए प्रमाणे पांच दंडक जाणवा—१ दुःखी दुःखथी व्याप्त छे, २ दुःखी दुःखने ग्रहण करे छे, ३ दुःखी दुःखने उदीरे छे, ४ दुःखी दुःखने वेदे छे, ५ दुःखी दुःखनी निर्जरा करे छे.

---

१ मट्टियालेवेणं क शिवाऽन्यत्र । २ सुक्का क । ३ निरंगणयाए क शिवा अन्यत्र ।

१६. * दुःखना कारणभूत मिथ्यात्वादिक कर्म पण दुःख कहेवाय छे.—टीका.

१८. [प्र०] अणगारस्स णं भंते ! अणाउत्तं गच्छमाणस्स वा, चिट्ठमाणस्स वा, निसीयमाणस्स वा, तुयट्टमाणस्स वा, अणाउत्तं वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं गेण्हमाणस्स वा, निक्खिवमाणस्स वा तस्स णं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ ? [उ०] गोयमा ! नो इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ। [प्र०] से केणट्ठेणं ? [उ०] गोयमा ! जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा वोच्छिन्ना भवन्ति तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ, नो संपराइया किरिया कज्जइ; जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा अवोच्छिन्ना भवन्ति तस्स णं संपराइया किरिया कज्जइ, नो इरियावहिया किरिया कज्जइ; अहासुत्तं रीयमाणस्स इरियावहिया किरिया कज्जइ, उस्सुत्तं रीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जइ; से णं उस्सुत्तमेव रियति से तेणट्ठेणं।

१९. [प्र०] अह भंते ! सइंगालस्स, सधूमस्स, संजोयणादोसदुट्ठस्स पाण-भोयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! जे णं निग्गंथे वा निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइमं पडिग्गाहेत्ता मुच्छिए, गिद्धे, गढिए, अज्झोववन्ने आहारं आहारेति, एस णं गोयमा ! सइंगाले पाण-भोयणे। जे णं निग्गंथे वा, निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइमं पडिग्गाहित्ता महयाअप्पत्तियं कोहकिलामं करेमाणे आहारं आहारेइ, एस णं गोयमा ! सधूमे पाण-भोयणे। जे णं निग्गंथे वा जाव पडिग्गाहेत्ता गुणुप्पायणहेउं अन्नदव्वेणं सद्धिं संजोएत्ता आहारं आहारेइ, एस णं गोयमा ! संजोयणादोसदुट्ठे पाण-भोयणे। एस णं गोयमा ! सइंगालस्स, सधूमस्स, संजोयणादोसदुट्ठस्स पाण-भोयणस्स अट्ठे पन्नत्ते।

२०. [प्र०] अह भंते ! वीतिंगालस्स, वीयधूमस्स, संजोयणादोसविप्पमुक्कस्स पाण-भोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! जे णं निग्गंथे वा जाव पडिग्गाहेत्ता अमुच्छिए जाव आहारेति, एस णं गोयमा ! वीतिंगाले पाण-भोयणे। जे णं निग्गंथे निग्गंथी वा जाव पडिग्गाहेत्ता णो महयाअप्पत्तियं जाव आहारेइ, एस णं गोयमा ! वीयधूमे पाण-भोयणे। जे णं निग्गंथे निग्गंथी वा जाव पडिग्गाहेत्ता जहा लद्धं तहा आहारं आहारेइ, एस णं गोयमा ! संजोयणादोसविप्पमुक्के पाण-भोयणे। एस णं गोयमा ! वीतिंगालस्स, वीयधूमस्स, संजोयणादोसविप्पमुक्कस्स पाण-भोयणस्स अट्ठे पन्नत्ते।

२१. [प्र०] अह भंते ! खेत्तातिक्कंतस्स, कालातिक्कंतस्स, मग्गातिक्कंतस्स, पमाणातिक्कंतस्स पाण-भोयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! जे णं निग्गंथे वा निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइमं अणुग्गए सूरिए पडिग्गाहेत्ता

ऐर्यापथिकी अने सांपरायिकी क्रिया.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! उपयोग (आत्मजागृति, सावधानता) शिवाय गमन करता, उभा रहेता, बेसता अने सूता, तेमज उपयोग शिवाय वस्त्र, पात्र, कांबल अने पादप्रोंछनक (रजोहरण) ने ग्रहण करता ने मुकता अनगार(साधु)ने हे भगवन् ! ऐर्यापथिकी क्रिया लागे के सांपरायिकी क्रिया लागे ? [उ०] हे गौतम ! ऐर्यापथिकी क्रिया न लागे, पण सांपरायिकी क्रिया लागे. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी ? [उ०] हे गौतम ! जेना क्रोध, मान, माया अने लोभ व्युच्छिन्न—क्षीण थया छे तेने ऐर्यापथिकी क्रिया लागे छे, पण सांपरायिकी क्रिया लागती नथी. जेना क्रोध, मान, माया अने लोभ व्युच्छिन्न थया नथी तेने सांपरायिकी क्रिया लागे छे, पण ऐर्यापथिकी क्रिया लागती नथी. सूत्रने अनुसारे वर्तता साधुने ऐर्यापथिकी क्रिया लागे छे, अने सूत्रविरुद्ध वर्तनारने सांपरायिकी क्रिया लागे छे, ते [उपयोग रहित साधु] सूत्र विरुद्ध वर्ते छे ते माटे हे गौतम ! [तेने सांपरायिकी क्रिया लागे छे.]

सदोष पानभोजन.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! अंगारदोषसहित, धूमदोषसहित अने संयोजनादोष वडे दुष्ट पानभोजननो शो अर्थ कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! कोइ निर्ग्रन्थ—साधु या साध्वी प्रासुक अने एषणीय अशन, पान, खादिम अने स्वादिम आहारने ग्रहण करी मूर्च्छित, गृद्ध, ग्रथित अने आसक्त थइने आहार करे तो हे गौतम ! ए अंगारदोषसहित पानभोजन कहेवाय. वळी जे कोइ साधु या साध्वी प्रासुक एषणीय अशन, पान, खादिम अने स्वादिम आहारने ग्रहण करी अत्यंत अप्रीतिपूर्वक क्रोधथी खिन्न थइने आहार करे तो हे गौतम ! ए धूमदोषसहित पानभोजन कहेवाय. कोइ साधु या साध्वी यावत् [आहारने] ग्रहण करीने गुण (स्वाद) उत्पन्न करवा माटे बीजा पदार्थ साथे संयोग करीने आहार करे तो हे गौतम ! ए संयोजनादोष वडे दुष्ट पानभोजन कहेवाय. हे गौतम ! ए प्रकारे अंगारदोष, धूमदोष अने संयोजनादोषथी दुष्ट पानभोजननो अर्थ कह्यो.

निर्दोष पानभोजन.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! हवे अंगारदोषरहित, धूमदोषरहित अने संयोजनादोषरहित पानभोजननो शो अर्थ कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! जे कोई निर्ग्रन्थ [के निर्ग्रन्थी] यावत् [आहारने] ग्रहण करीने मूर्च्छारहित यावत् आहार करे, ते हे गौतम ! अंगारदोषरहित पानभोजन कहेवाय. वळी जे कोइ निर्ग्रन्थ के निर्ग्रन्थी यावत् ग्रहण करीने अत्यन्त अप्रीतिपूर्वक यावत् आहार न करे, हे गौतम ! ए धूमदोषरहित पानभोजन कहेवाय. जे कोइ निर्ग्रन्थ के निर्ग्रन्थी यावत् ग्रहण करीने जेवो प्राप्त थाय तेवोज आहार करे [परन्तु स्वाद माटे बीजा साथे संयोग न करे], हे गौतम ! ए संयोजनादोषरहित पानभोजन कहेवाय. आ अंगारदोषरहित, धूमदोषरहित अने संयोजनादोषरहित पानभोजननो अर्थ कह्यो छे.

क्षेत्रातिक्रान्तादि पानभोजन.

२१. [प्र०] हे भगवन् ! हवे क्षेत्रातिक्रान्त, कालातिक्रान्त, मार्गातिक्रान्त अने प्रमाणातिक्रान्त पानभोजननो शो अर्थ कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! कोइ साधु या साध्वी प्रासुक अने एषणीय अशन, पान, खादिम अने स्वादिम आहारने सूर्य उग्या पहेला ग्रहण करी सूर्य

---

१ [illegible]। २ [illegible]। ३ संपरायकिरिया घ। ४ 'पडिग्गाहेत्ता, पडिगाहेत्ता, पडिग्गाहित्ता, पडिगाहित्ता, पडिग्गहेत्ता, पडिग्गहित्ता, पडिगहित्ता' इत्येवं [illegible]। ५—अप्पत्तियको—[illegible]। ६—[illegible]।

उग्गए सूरिए आहारं आहारेति, एस णं गोयमा! खित्तातिक्कंते पाण-भोयणे। जे णं निग्गंथो वा जाव साइमं पढमाए पोरिसीए पडिग्गाहेत्ता पच्छिमं पोरिसिं उवायणावेत्ता आहारं आहारेइ, एस णं गोयमा! कालातिक्कंते पाण-भोयणे। जे णं णिग्गंथो वा जाव साइमं पडिग्गाहित्ता परं अद्धजोयणमेराए वीइक्कमावइत्ता आहारमाहारेइ, एस णं गोयमा! मग्गातिक्कंते पाण-भोयणे। जे णं निग्गंथो वा, निग्गंथी वा फासु-एसणिज्जं जाव साइमं पडिग्गाहित्ता परं बत्तीसाए कुक्कुडिअंडगपमाणमेत्ताणं कवलाणं आहारं आहारेइ, एस णं गोयमा! पमाणाइक्कंते पाण-भोयणे। अट्ठ कुक्कुडिअंडगपमाणमेत्ते कवले आहारं आहारेमाणे अप्पाहारे, दुवालस कुक्कुडिअंडगपमाणमेत्ते कवले आहारं आहारेमाणे अवड्ढोमोयरिया, सोलस कुक्कुडिअंडगपमाणमेत्ते कवले आहारं आहारेमाणे दुभागप्पत्ते, [1]चउव्वीसं कुक्कुडिअंडगपमाणे जाव आहारं आहारेमाणे [2]ओमोदरिया, बत्तीसं कुक्कुडिअंडगमेत्ते कवले आहारं आहारेमाणे पमाणपत्ते, एत्तो [3]एकेण वि [4]घासेणं ऊणगं आहारं आहारेमाणे समणे निग्गंथे नो पकामरसभोईत्ति वत्तव्वं सिया। एस णं गोयमा! खेत्तातिक्कंतस्स, कालातिक्कंतस्स, मग्गातिक्कंतस्स, पमाणातिक्कंतस्स पाण-भोयणस्स अट्ठे पन्नत्ते।

२२. [प्र०] अह भंते! सत्थातीयस्स, सत्थपरिणामियस्स, एसियस्स, वेसियस्स, [5]सामुदाणियस्स पाण-भोयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते? [उ०] गोयमा! जेणं निग्गंथे वा निग्गंथी वा निक्खित्तसत्थमुसले ववगयमाला-वन्नग-विलेवणे ववगयचुयचइयचत्तदेहं, जीवविप्पजढं, अकयं, अकारियं, असंकप्पियं, अणाहूयं, अकीयकडं, अणुद्दिट्ठं, नवकोडीपरिसुद्धं, दसदोसविप्पमुक्कं, उग्गमुप्पायणेसणासुपरिसुद्धं, वीतिंगालं, वीतधूमं, संजोयणादोसविप्पमुक्कं, सुरसुरं, अचवचवं, अदुयं, अविलंबियं [6]अपरिसाडिं, अक्खोवंजण–[7]वणाणुलेवणभूयं, संजमजायामायावत्तियं, संजमभारवहणट्ठयाए बिलमिव [8]पन्नगभूएणं अप्पाणेणं आहारं आहारेति, एस णं गोयमा! सत्थातीयस्स, सत्थपरिणामियस्स जाव पाण-भोयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते। सेवं भंते, सेवं भंते! त्ति।

सत्तमसए पढमो उद्देसो समत्तो।

उग्या पछी खाय, हे गौतम! ए क्षेत्रातिक्रान्त पानभोजन कहेवाय. कोइ साधु या साध्वी यावत् खादिम आहारने पहेला पहोरमां ग्रहण करी छेल्ला पहोर सुधी राखीने पछी तेनो आहार करे, हे गौतम! आ कालातिक्रान्त पानभोजन कहेवाय. कोइ साधु या साध्वी यावत् खादिम आहारने ग्रहण करीने अर्धयोजननी मर्यादाने ओळंगी पछी खाय, हे गौतम! ए मार्गातिक्रान्त पानभोजन कहेवाय. कोइ साधु के साध्वी प्रासुक अने एषणीय यावत् खादिम आहारने ग्रहण करीने कुकडीना इंडाप्रमाण बत्रीशथी अधिक कवल खाय, हे गौतम! ए प्रमाणातिक्रान्त पानभोजन कहेवाय. कुकडीना इंडाप्रमाण मात्र आठ कवलनो आहार करनार साधु अल्पाहारी कहेवाय. कुकडीना इंडाप्रमाण मात्र बार कवलनो आहार करनार साधुने कांइक न्यून अर्ध ऊनोदरिका कहेवाय. कुकडीना इंडाप्रमाण मात्र सोल कोळीआनो आहार करनार साधु द्विभागप्राप्त—अर्धाहारी कहेवाय. कुकडीना इंडाप्रमाण मात्र चोवीश कवलना आहार करनार साधुने ऊनोदरिका कहेवाय. कुकडीना इंडाप्रमाण मात्र बत्रीश कवलनो आहार करनार साधु प्रमाणप्राप्त—प्रमाणसर भोजन करनार कहेवाय. तेथी एक पण कवल ओछो आहार करनार साधु 'प्रकामरसभोजी—अत्यन्त मधुरादि रसनो भोक्ता' ए प्रमाणे न कही शकाय. हे गौतम! ए प्रमाणे क्षेत्रातिक्रान्त, कालातिक्रान्त, मार्गातिक्रान्त अने प्रमाणातिक्रान्त पानभोजननो अर्थ कह्यो छे.

शस्त्रातीतादि पानभोजन.

२२. [प्र०] हे भगवन्! शस्त्रातीत (अग्निवगेरे शस्त्रथी उतरेलो), शस्त्रपरिणामित (अग्निवगेरे शस्त्रथी परिणाम पामेलो—अचित्त करायेलो), एषित (एषणा दोषथी रहित), व्येषित (विविध या विशेषतः एषणादोषथी रहित) सामुदायिक—भिक्षारूप पान भोजननो शो अर्थ कह्यो छे? [उ०] हे गौतम! कोइ साधु या साध्वी जे शस्त्र अने मुशलादिरहित छे, तेम पुष्पमाला अने चन्दनना विलेपन रहित छे तेओ कृम्यादि जन्तु रहित, निर्जीव, [साधुने माटे] नहि करेल, नहि करावेल, नहि संकल्पेल, अनाहूत—आमन्त्रण रहित, नहि खरीदेल, औद्देशिक रहित, *नवकोटि विशुद्ध, †शंकितादि दशदोष रहित, ‡उद्गम अने ¶उत्पादनैषणाना दोषथी विशुद्ध, अंगारदोषरहित, धूमदोषरहित, संयोजनादोषरहित, सुरसुरके चपचप शब्द रहित पणे, बहु उतावळथी नहि तेम बहु धीमेथी नहि, [आहारना] कोइ भागने छोड्या शिवाय, गाडानी धरीना मेलनी पेठे के व्रण उपरना लेपनी पेठे, केवळ संयमना निर्वाहने माटे, संयमना भारने वहन करवा अर्थे जेम साप बिलमां पेसे तेम पोते आहार करे, हे गौतम! ए शस्त्रातीत, शस्त्रपरिणामित यावत् पानभोजननो अर्थ कह्यो छे. हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे, [एम कही गौतम! यावत् विचरे छे].

सप्तम शतके प्रथम उद्देशक समाप्त.

---

१ चउवीसं ख। २ ऊनोदरिए ख, ओमोदरिए ग। ३ एकेण ख। ४ गासेणं ग। ५ समुदा-ख-ग। ६ अपरिसाडी ख। ७–वणब्भूयं ख। ८–पन्नभूएणं ख।

२२ * १ हणे २ हणावे ३ हणताने अनुमोदे, ४ रांधे ५ रंधावे, ६ रांधताने अनुमोदे, ७ खरीद करे ८ खरीद करावे अने ९ खरीद करताने अनुमोदे. † जुओ–(पिंडनिर्युक्ति, गा. ५२०.) ‡ उद्गमएषणाना आधाकर्मादि १६ दोष छे, जुओ–(पिंडनिर्युक्ति, गा. ९२–९३). ¶ उत्पादनैषणाना धात्रीपिंडादि १६ दोष छे, जुओ–(पिंडनिर्युक्ति, गा. ४०८–४०९).

बितीओ उद्देसो.

१. [प्र०] से णूणं भंते! सव्वपाणेहिं, सव्वभूएहिं, सव्वजीवेहिं, सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सुपच्चक्खायं भवति, दुपच्चक्खायं भवति? [उ०] गोयमा! सव्वपाणेहिं, जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सिय सुपच्चक्खायं भवति, सिय दुपच्चक्खायं भवति। [प्र०] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं जाव सिय दुपच्चक्खायं भवति? [उ०] गोयमा! जस्स णं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणस्स णो एवं अभिसमन्नागयं भवति–इमे जीवा, इमे अजीवा, इमे तसा, इमे थावरा, तस्स णं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणस्स नो सुपच्चक्खायं भवति, दुपच्चक्खायं भवति। एवं खलु से दुपच्चक्खाई सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणे नो सच्चं भासं भासइ, मोसं भासं भासइ। एवं खलु से मुसावाई सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं तिविहं तिविहेणं असंजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मे, सकिरिए, असंवुडे, एगंतदंडे, एगंतबाले यावि भवति। जस्स णं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणस्स एवं अभिसमन्नागयं भवइ–इमे जीवा इमे अजीवा, इमे तसा इमे थावरा, तस्स णं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सुपच्चक्खायं भवति, नो दुपच्चक्खायं भवति। एवं खलु से सुपच्चक्खाई सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वयमाणे सच्चं भासं भासइ, नो मोसं भासं भासइ। एवं खलु से सच्चवादी सव्वपाणेहिं, जाव सव्वसत्तेहिं तिविहं तिविहेणं संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मे, अकिरिए, संवुडे, एगंतपंडिए यावि भवति, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ–जाव सिय दुपच्चक्खायं भवति।

द्वितीय उद्देशक.

सुप्रत्याख्यान अने दुष्प्रत्याख्यान.

१. [प्र०] हे भगवन्! 'सर्व प्राणोमां, सर्व भूतोमां, सर्व जीवोमां अने सर्व सत्त्वोमां मैं [हिंसानुं] प्रत्याख्यान कर्युं छे' ए प्रमाणे बोलनारने सुप्रत्याख्यान थाय के दुष्प्रत्याख्यान थाय? [उ०] हे गौतम! 'सर्व प्राणोमां यावत् सर्व सत्त्वोमां प्रत्याख्यान कर्युं छे' ए प्रमाणे बोलनारने कदाच सुप्रत्याख्यान थाय अने कदाच दुष्प्रत्याख्यान थाय. [प्र०] हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो के–सर्व प्राणोमां यावत् सर्व सत्त्वोमां यावत् कदाच दुष्प्रत्याख्यान थाय? [उ०] हे गौतम! 'सर्व प्राणोमां यावत् सर्व सत्त्वोमां प्रत्याख्यान कर्युं छे' ए प्रमाणे बोलनार जेने आवा प्रकारनुं ज्ञान न होय के "आ जीवो छे, आ अजीवो छे, आ त्रसो छे, आ स्थावरो छे" तेने–'सर्व प्राणोमां यावत् सर्व सत्त्वोमां प्रत्याख्यान कर्युं छे' ए प्रमाणे कहेनारने–सुप्रत्याख्यान न थाय, पण दुष्प्रत्याख्यान थाय. ए रीते खरेखर ते दुष्प्रत्याख्यानी 'सर्व प्राणिओमां यावत् सर्व सत्त्वोमां प्रत्याख्यान कर्युं छे' एम बोलतो सत्य भाषा बोलतो नथी, असत्य भाषा बोले छे. ए प्रमाणे ते मृषावादी सर्व प्राणोमां यावत् सर्व सत्त्वोमां त्रिविधे त्रिविधे असंयत–संयमरहित, अविरत–विरतिरहित, जेणे पापकर्मनो त्याग के प्रत्याख्यान कर्युं नथी एवो, सक्रिय–कर्मबन्धसहित, संवररहित, एकान्त दण्ड एटले हिंसा करनार अने एकान्त अज्ञ छे. सर्व प्राणोमां यावत् 'सर्व सत्त्वोमां प्रत्याख्यान कर्युं छे' ए प्रमाणे बोलनार जेने आवुं ज्ञान थयुं होय के "आ जीवो छे, आ अजीवो छे, आ त्रसो छे, आ स्थावरो छे," तेने–'सर्व प्राणोमां यावत् सर्व सत्त्वोमां प्रत्याख्यान कर्युं छे' ए प्रमाणे बोलनारने–सुप्रत्याख्यान थाय, दुष्प्रत्याख्यान न थाय. ए प्रमाणे खरेखर ते सुप्रत्याख्यानी 'सर्व प्राणोमां यावत् सर्व सत्त्वोमां प्रत्याख्यान कर्युं छे' एम बोलतो सत्य भाषा बोले छे, मृषा भाषा बोलतो नथी. ए रीते ते सुप्रत्याख्यानी, सत्यभाषी, सर्व प्राणोमां यावत् सर्व सत्त्वोमां त्रिविधे त्रिविधे संयत, विरति युक्त, जेणे पापकर्मनो घात ने प्रत्याख्यान कर्युं छे एवो, अक्रिय–कर्मबंधरहित, संवरयुक्त एकान्त पंडित पण छे. हे गौतम! ते हेतुथी एम कहेवाय छे के यावत् कदाच दुष्प्रत्याख्यान थाय.

दुष्प्रत्याख्यान थाय.

सुप्रत्याख्यान थाय.

---

१ वयमाणो ख।

२. [प्र०] कतिविहे णं भंते ! पञ्चक्खाणे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! दुविहे पच्चक्खाणे पन्नत्ते, तं जहा—मूलगुणपच्चक्खाणे य उत्तरगुणपच्चक्खाणे य ।

३. [प्र०] मूलगुणपच्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते, तं जहा—सव्वमूलगुणपच्चक्खाणे य देसमूलगुणपच्चक्खाणे य ।

४. [प्र०] सव्वमूलगुणपच्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! पंचविहे पन्नत्ते, तं जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, जाव सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ।

५. [प्र०] देसमूलगुणपच्चक्खाणे णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! पंचविहे पन्नत्ते, तं जहा—थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, जाव थूलाओ परिग्गहाओ वेरमणं ।

६. [प्र०] उत्तरगुणपच्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते, तं जहा—सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणे य देसुत्तरगुणपच्चक्खाणे य ।

७. [प्र०] सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! दसविहे पन्नत्ते, तं जहा—

"अणागयमइक्कंतं कोडीसहियं नियंटियं चेव ।
सागारमणागारं परिमाणकडं निरवसेसं ॥
साकेयं चेव अद्धाए पच्चक्खाणं भवे दसहा ।"

प्रत्याख्यान.

२. [प्र.] हे भगवन् ! केटला प्रकारे पच्चक्खाण कह्युं छे ? [उ०] हे गौतम ! बे प्रकारे पच्चक्खाण कह्युं छे. ते आ प्रकारे—मूलगुणपच्चक्खाण अने उत्तरगुणपच्चक्खाण.

मूलगुणप्रत्याख्याना प्रकार.

३. [प्र०] हे भगवन् ! मूलगुणपच्चक्खाण केटला प्रकारनुं कह्युं छे ? [उ०] हे गौतम ! मूलगुण प्रत्याख्यान बे प्रकारनुं कह्युं छे, ते आ प्रकारे—सर्वमूलगुणप्रत्याख्यान अने देशमूलगुणप्रत्याख्यान.

सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानना प्रकार.

४. [प्र०] हे भगवन् ! सर्वमूलगुण प्रत्याख्यान केटला प्रकारे कह्युं छे ? [उ०] हे गौतम ! सर्वमूलगुण प्रत्याख्यान पांच प्रकारे कह्युं छे; ते आ प्रमाणे—सर्व प्राणातिपातथी विराम पामवो, यावत् सर्व मृषावादथी विराम पामवो.

देशमूलगुणप्रत्याख्यानना प्रकार.

५. [प्र०] हे भगवन् ! देशमूलगुणप्रत्याख्यान केटला प्रकारे कह्युं छे ? [उ०] हे गौतम ! देशमूलगुणप्रत्याख्यान पांच प्रकारे कह्युं छे; ते आ प्रमाणे—स्थूलप्राणातिपातथी विरमण, यावत् स्थूलमृषावादथी विरमण.

उत्तरगुणप्रत्याख्याना प्रकार.

६. [प्र०] हे भगवन् ! उत्तरगुणप्रत्याख्यान केटला प्रकारे कह्युं छे ? [उ०] हे गौतम ! [उत्तरगुणप्रत्याख्यान] बे प्रकारे कह्युं छे; ते आ प्रमाणे—सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यान अने देशोत्तरगुणप्रत्याख्यान.

सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यानना प्रकार.

७. [प्र०] हे भगवन् ! सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यान केटला प्रकारे कह्युं छे ? [उ०] हे गौतम ! सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यान [1]दश प्रकारे कह्युं छे; ते आ प्रमाणे—१ अनागत, २ अतिक्रान्त, ३ कोटिसहित, ४ नियन्त्रित, ५ साकार, ६ अनाकार, ७ कृतपरिमाण, ८ निरवशेष, ९ संकेत, १० अद्धा प्रत्याख्यान. ए रीते प्रत्याख्यान दश प्रकारे कह्युं छे.

---

७. [1]सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यानना दश प्रकारनुं स्वरूप—१ भविष्यमां जे तप करवानो छे ते पूर्वे करवो ते अनागत तप. जेम, पर्युषणा पर्व आवशे त्यारे गुर्वादिनी वैयावच्च करवाथी तप करवामां अडचण थशे एम समजी प्रथम तप करवो. २ पूर्वे करवानो तप पछी करवो ते अतिक्रान्त तप. जेम, पर्युषणापर्वमां गुर्वादिनी वैयावच्च करवा निमित्ते तप थइ शक्यो नथी एम धारी ते तप पछी करवो. ३ एक तप जे दिवसे पूरो थाय तेज दिवसे बीजो तप करवो, ए रीते प्रत्याख्याननी आदि अने अन्त कोटी मेळववी ते कोटिसहित तप. ४ नियमित दिवसे विघ्न आव्या छतां अवश्य तप करवो ते नियन्त्रित तप. ५ महत्तराकारादि आकार-अपवाद-पूर्वक तप करवो ते साकार तप. ६ महत्तराकारादि आकार सिवाय तप करवो ते निराकार तप. ७ दत्ति (एक साथे एकवार पात्रमा पडेल अन्नादि), कवल, गृह, भीक्ष इत्यादिनुं परिमाण करवुं ते परिमाण तप. ८ चार प्रकारना आहारनो त्याग करवो ते निरवशेष तप. ९ मुष्टि इत्यादि संकेतपूर्वक तप करवो ते संकेत तप. १० कालनुं प्रमाण करी पौरुष्यादि तप करवो ते अद्धा तप. जुओ-(भ. टी. प. २९१.)

८. देसुत्तरगुणपच्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! सत्तविहे पन्नत्ते, तं जहा—१ दिसिव्वयं, २ उवभोगपरिभोगपरिमाणं, ३ अणत्थदंडवेरमणं, ४ सामाइयं, ५ देसावगासियं, ६ पोसहोववासो, ७ अतिहिसंविभागो, अपच्छिममारणंतियसंलेहणाझूसणाऽऽराहणता ।

९. [प्र०] जीवा णं भंते ! किं मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तरगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी ? [उ०] गोयमा ! जीवा मूलगुणपच्चक्खाणी वि, उत्तरगुणपच्चक्खाणी वि, अपच्चक्खाणी वि ।

१०. [प्र०] नेरइया णं भंते ! किं मूलगुणपच्चक्खाणी ?—पुच्छा [उ०] गोयमा ! नेरइया नो मूलगुणपच्चक्खाणी, नो उत्तरगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी; एवं जाव चउरिंदिया, पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा य जहा जीवा, वाणमंतर—जोइसिय—वेमाणिया जहा नेरइया ।

११. [प्र०] एएसि णं भंते ! जीवाणं मूलगुणपच्चक्खाणीणं, उत्तरगुणपच्चक्खाणीणं, अपच्चक्खाणीण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तरगुणपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी अणंतगुणा ।

१२. [प्र०] एएसि णं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तरगुणपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असंखिज्जगुणा ।

१३. [प्र०] एएसि णं भंते ! मणुस्साणं मूलगुणपच्चक्खाणीणं—पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सा मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तरगुणपच्चक्खाणी संखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा ।

१४. [प्र०] जीवा णं भंते ! किं सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, देसमूलगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी ? [उ०] गोयमा ! जीवा सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, देसमूलगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी वि ।

८. [प्र०] हे भगवन् ! देशोत्तरगुणप्रत्याख्यान केटला प्रकारे कह्युं छे ? [उ०] हे गौतम ! देशोत्तरगुणप्रत्याख्यान *सात प्रकारे कह्युं छे, ते आ प्रमाणे—१ दिग्व्रत, २ उपभोगपरिभोगपरिमाण, ३ अनर्थदंडविरमण, ४ सामायिक, ५ देशावकाशिक, ६ पोषधोपवास, ७ अतिथिसंविभाग अने †अपश्चिममारणान्तिक-संलेखणाजोषणाऽऽराधना.

देशोत्तरगुणप्रत्याख्याननां प्रकार.

९. [प्र०] हे भगवन् ! जीवो शुं मूलगुणप्रत्याख्यानी, उत्तरगुणप्रत्याख्यानी के अप्रत्याख्यानी छे ? [उ०] हे गौतम ! जीवो मूलगुणप्रत्याख्यानी पण छे, उत्तरगुणप्रत्याख्यानी पण छे अने अप्रत्याख्यानी पण छे.

जीवो मूलगुणप्रत्याख्यानी-वगेरे.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! नारकजीवो शुं मूलगुणप्रत्याख्यानी छे ? इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! नारको मूलगुणप्रत्याख्यानी नथी, उत्तरगुणप्रत्याख्यानी नथी, पण अप्रत्याख्यानी छे. ए प्रमाणे यावत् चउरिन्द्रिय जीवो जाणवा. पंचेन्द्रिय तिर्यंच अने मनुष्यो जेम जीवो कह्या तेम जाणवा. वानमंतर, ज्योतिष्क अने वैमानिक देवो जेम नारको कह्या तेम जाणवा.

शुं नारको मूलगुणप्रत्याख्यानी इत्यादि छे?

११. [प्र०] हे भगवन् ! मूलगुणप्रत्याख्यानी, उत्तरगुणप्रत्याख्यानी अने अप्रत्याख्यानी जीवोमां कोण कोनाथी यावत् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! मूलगुणप्रत्याख्यानी जीवो सौथी थोडा छे, उत्तरगुणप्रत्याख्यानी असंख्यगुण छे, अने अप्रत्याख्यानी अनंतगुण छे.

मूलगुणप्रत्याख्यानी वगेरेनुं अल्पबहुत्व.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! ए (पूर्वे कहेला) जीवोमां पंचेन्द्रिय तिर्यंच जीवोनो प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! मूलगुणप्रत्याख्यानी पंचेन्द्रिय तिर्यंच जीवो सर्वथी थोडा छे, उत्तरगुणप्रत्याख्यानी असंख्यगुण छे, अने अप्रत्याख्यानी असंख्यगुण छे.

पंचेन्द्रियतिर्यंचोनुं अल्पबहुत्व.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! ए जीवोमां मूलगुणप्रत्याख्यानी वगेरे मनुष्योनो प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! मूलगुणप्रत्याख्यानी मनुष्यो सर्वथी थोडा छे, उत्तरगुणप्रत्याख्यानी मनुष्यो संख्यातगुण छे, अने अप्रत्याख्यानी मनुष्यो असंख्यगुण छे.

मनुष्यनुं अल्पबहुत्व.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जीवो सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानी छे, देशमूलगुणप्रत्याख्यानी छे के अप्रत्याख्यानी छे ? [उ०] हे गौतम ! जीवो सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानी छे, देशमूलगुणप्रत्याख्यानी छे, अने अप्रत्याख्यानी पण छे.

जीवो सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानी वगेरे.

---

* विशेष माटे जुओ-(उपासक० प. ६-१.)

८. † अपश्चिम—जेना पछी बीजी संलेखना नथी एटले सौथी छेली, मारणान्तिक—मरणकाले, संलेखना—शरीर अने कषायादिने कृश करनार तपविशेष—नो जोषणा—स्वीकारकरवा—वडे आराधन करवुं ते अपश्चिममारणान्तिकसंलेखनाजोषणाऽऽराधना. देशोत्तरगुणमां दिग्व्रतादि सात गुणनी गणना करी, अने आ संलेखनानी गणना न करी तेनुं कारण ए छे के दिग्व्रतादि सात गुणो अवश्य देशोत्तरगुणरूप छे, अने आ संलेखनानो नियम नथी, केमके ते देशोत्तरगुणवाळाने देशोत्तरगुणरूप अने सर्वोत्तरगुणवाळाने सर्वोत्तरगुणरूप छे, तो पण देशोत्तरगुणवाळाने पण अन्ते करवा योग्य छे एम जणाववा आठमी संलेखना कही. जुओ—(भ. टी. प. २९०-१).

१५. [प्र०] नेरइयाणं पुच्छा। [उ०] गोयमा! नेरइया नो सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, नो देसमूलगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी। एवं जाव चउरिंदिया।

१६. [प्र०] पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। [उ०] गोयमा! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया नो सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, देसमूलगुणपच्चक्खाणी वि, अपच्चक्खाणी वि। मणुस्सा जहा जीवा, वाणमंतर–जोइस–वेमाणिया जहा नेरइया।

१७. [प्र०] एएसि णं भंते! जीवाणं सव्वमूलगुणपच्चक्खाणीणं, देसमूलगुणपच्चक्खाणीणं, अपच्चक्खाणीण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा? [उ०] गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, देसमूलगुणपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी अणंतगुणा। एवं अप्पाबहुगाणि तिन्नि वि जहा पढमिल्लए दंडए; नवरं सव्वत्थोवा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया देसमूलगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा।

१८. [प्र०] जीवा णं भंते! किं सव्वउत्तरगुणपच्चक्खाणी, देसुत्तरगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी? [उ०] गोयमा! जीवा सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणी वि तिन्नि वि। पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा य एवं चेव, सेसा अपच्चक्खाणी, जाव वेमाणिया।

१९. [प्र०] एएसि णं भंते! जीवाणं सव्वउत्तरगुणपच्चक्खाणीणं०? [उ०] अप्पाबहुगाणि [2]तिन्नि वि जहा पढमे दंडए, जाव [3]मणुस्साणं।

२०. [प्र०] जीवा णं भंते! किं संजया, असंजया, संजयासंजया? [उ०] गोयमा! जीवा संजया वि, [4]असंजया वि, संजयासंजया वि तिन्नि वि, एवं जहेव पन्नवणाए तहेव भाणियव्वं जाव वेमाणिया, अप्पाबहुगं तहेव तिण्ह वि भाणियव्वं।

२१. [प्र०] जीवा णं भंते! किं पच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी? [उ०] गोयमा! जीवा पच्चक्खाणी [5]वि तिन्नि वि, एवं [6]मणुस्सा वि तिन्नि वि, पंचिंदियतिरिक्खजोणिया आइल्लविरहिया, सेसा सव्वे अपच्चक्खाणी, जाव वेमाणिया।

नारक.

१५. [प्र०] नारकोनो प्रश्न. [उ०] हे गौतम! नारको सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानी नथी, देशमूलगुणप्रत्याख्यानी नथी, पण अप्रत्याख्यानी छे.

पंचेन्द्रियतिर्यंच.

१६. [प्र०] पंचेन्द्रिय तिर्यंच जीवोनो प्रश्न. [उ०] हे गौतम! पंचेन्द्रियतिर्यंचो सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानी नथी, पण देशमूलगुणप्रत्याख्यानी छे अने अप्रत्याख्यानी छे. जेम जीवो कह्या तेम मनुष्यो जाणवा. जेम नारको कह्या तेम वानमंतर, ज्योतिष्क अने वैमानिको जाणवा.

सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानी वगेरेनुं अल्पबहुत्व.

१७. [प्र०] हे भगवन्! सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानी, देशमूलगुणप्रत्याख्यानी अने अप्रत्याख्यानी जीवोमां कोण कोनाथी यावत् विशेषाधिक छे? [उ०] हे गौतम! सर्वमूलगुणप्रत्याख्यानी जीवो सर्वथी थोडा छे, देशमूलगुणप्रत्याख्यानी जीवो असंख्यगुण छे, अने अप्रत्याख्यानी अनंतगुण छे. ए प्रमाणे त्रणे (जीव, पंचेन्द्रियतिर्यंच अने मनुष्यना) अल्पबहुत्वो प्रथम दंडकमां [सू० ११, १२, १३] कह्या-प्रमाणे जाणवा, परंतु सर्वथी थोडा पंचेन्द्रिय तिर्यंचो देशमूलगुणप्रत्याख्यानी छे, अने अप्रत्याख्यानी पंचेन्द्रिय तिर्यंचो असंख्यगुण छे.

सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यानी वगेरे जीवो.

१८. [प्र०] हे भगवन्! शुं जीवो सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यानी छे, देशोत्तरगुणप्रत्याख्यानी छे, के अप्रत्याख्यानी छे? [उ०] हे गौतम! जीवो सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यानी विगेरे त्रणे प्रकारना छे. पंचेन्द्रिय तिर्यंचो अने मनुष्यो ए प्रमाणे छे. बाकीना वैमानिक सुधीना जीवो अप्रत्याख्यानी छे.

सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यानी विगेरेनुं अल्पबहुत्व.

१९. [प्र०] हे भगवन्! सर्वोत्तरगुणप्रत्याख्यानी, देशोत्तरगुणप्रत्याख्यानी अने अप्रत्याख्यानी जीवोमां कोण कोनाथी यावत् विशेषाधिक छे? [उ०] त्रणे अल्पबहुत्वो प्रथम दंडकमां कह्या प्रमाणे यावत् मनुष्योने जाणवा.

संयत, असंयत, अने देशसंयत.

२०. [प्र०] हे भगवन्! शुं जीवो संयत छे, असंयत छे के संयतासंयत (देश संयत) छे? [उ०] हे गौतम! जीवो संयत पण छे, असंयत पण छे, अने संयतासंयत पण छे—ए त्रणे प्रकारना छे. ए प्रमाणे जेम *पन्नवणामां कह्युं छे ते प्रमाणे यावत् वैमानिकोने अहीं कहेवुं, तेम अल्पबहुत्व पण त्रणेनुं कहेवुं.

प्रत्याख्यानी विगेरे.

२१. [प्र०] हे भगवन्! शुं जीवो प्रत्याख्यानी छे, अप्रत्याख्यानी छे, के प्रत्याख्यानाप्रत्याख्यानी (देशप्रत्याख्यानी) छे? [उ०] हे गौतम! जीवो प्रत्याख्यानी विगेरे त्रणे प्रकारना छे. ए प्रमाणे मनुष्यो पण त्रणे प्रकारना छे. पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिको प्रथमभंगरहित छे. बाकीना वैमानिक सुधीना सर्व जीवो अप्रत्याख्यानी छे.

---

१ चक्खाणी अ–घ। २ तिन्हि वि ख। ३ मणूसाणं घ। ४ असंजया घ। ५ वि एवं ति–घ। ६ मणुस्साण वि घ।

२०. * प्रज्ञा० पद. ३, प. १३७–२ सू.७०.

२२. [प्र०] एएसि णं भंते ! जीवाणं पच्चक्खाणीणं जाव विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पच्चक्खाणी, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी अणंतगुणा । पंचिंदियतिरिक्खजोणिया सव्वत्थोवा पच्चक्खाणापच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा । मणुस्सा सव्वत्थोवा पच्चक्खाणी, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी संखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा ।

२३. [प्र०] जीवा णं भंते ! किं सासया, असासया ? [उ०] गोयमा ! जीवा सिय सासया, सिय असासया । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जीवा सिय सासया, सिय असासया ? [उ०] गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासया, भावट्ठयाए असासया, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—जाव सिय असासया ।

२४. [प्र०] नेरइया णं भंते ! किं सासया, असासया ? [उ०] एवं जहा जीवा तहा नेरइया वि, एवं जाव वेमाणिया जाव सिय सासया, सिय असासया । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

सत्तमसए बितीओ उद्देसो समत्तो ।

२२. [प्र०] हे भगवन् ! प्रत्याख्यानी विगेरे जीवोमां यावत् कोण विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! प्रत्याख्यानी जीवो सौथी थोडा छे, प्रत्याख्यानाप्रत्याख्यानी असंख्यगुण छे, अने अप्रत्याख्यानी अनंतगुण छे. देशप्रत्याख्यानी पंचेन्द्रिय तिर्यंचो सर्वथी थोडा छे, अने अप्रत्याख्यानी असंख्यगुण छे. प्रत्याख्यानी मनुष्यो सर्वथी थोडा छे, देशप्रत्याख्यानी संख्यातगुण छे, अने अप्रत्याख्यानी असंख्यगुण छे.

प्रत्याख्यानी विगेरेनुं अल्पबहुत्व.

२३. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जीवो शाश्वत छे के अशाश्वत छे ? [उ०] हे गौतम ! जीवो कथंचित् शाश्वत छे अने कथंचित् अशाश्वत छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के कथंचित् शाश्वत छे अने कथंचित् अशाश्वत छे ? [उ०] द्रव्यनी अपेक्षाए जीवो शाश्वत छे, अने पर्यायनी अपेक्षाए जीवो अशाश्वत छे; ते हेतुथी एम कहुं छुं के यावत् कथंचित् अशाश्वत छे.

शाश्वत, अने अशाश्वत जीवो.

२४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं नारको शाश्वत छे के अशाश्वत छे ? [उ०] जेम जीवो कह्या तेम नारको पण जाणवा. ए प्रमाणे यावत् वैमानिको पण जाणवा; यावत् कथंचित् शाश्वत अने कथंचित् अशाश्वत छे. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे [एम कही गौतम यावत् विचरे छे.]

नारको शाश्वत अने अशाश्वत.

सप्तम शतके द्वितीय उद्देशक समाप्त.

ततिओ उद्देसो

१. [प्र०] वणस्सइकाइया णं भंते ! किं कालं सव्वप्पाहारगा वा, सव्वमहाहारगा वा भवंति ? [उ०] गोयमा ! पाउस-वरिसारत्तेसु णं एत्थ णं वणस्सइकाइया सव्वमहाहारगा भवंति, तदाणंतरं च णं सरए, तयाणंतरं च णं हेमंते, तदाणंतरं च णं वसंते, तदाणंतरं च णं गिम्हे, गिम्हासु णं वणस्सइकाइया सव्वप्पाहारगा भवंति ।

२. [प्र०] जइ णं भंते ! गिम्हासु वणस्सइकाइआ सव्वप्पाहारगा भवंति, कम्हा णं भंते ! गिम्हासु बहवे वणस्सइकाइया पत्तिया, पुप्फिया, फलिया, हरियगरेरिज्जमाणा, सिरीए अईव अईव उवसोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठंति ? [उ०] गोयमा ! गिम्हासु णं बहवे उसिणजोणिया जीवा य, पोग्गला य वणस्सइकाइयत्ताए विउक्कमंति, चयंति, उववज्जंति; एवं खलु गोयमा ! गिम्हासु बहवे वणस्सइकाइया पत्तिया, पुप्फिया, जाव चिट्ठंति ।

३. [प्र०] से णूणं भंते ! मूला मूलजीवफुडा, कंदा कंदजीवफुडा, जाव बीया बीयजीवफुडा ? [उ०] हंता, गोयमा ! मूला मूलजीवफुडा, जाव बीया बीयजीवफुडा ।

४. [प्र०] जइ णं भंते ! मूला मूलजीवफुडा, जाव बीया बीयजीवफुडा, कम्हा णं भंते ! वणस्सतिकाइया आहारेंति, कम्हा परिणामेंति ? [उ०] गोयमा ! मूला मूलजीवफुडा पुढवीजीवपडिबद्धा तम्हा आहारेंति, तम्हा परिणामेंति; कंदा कंद-जीवफुडा मूलजीवपडिबद्धा, तम्हा आहारेंति, तम्हा परिणामेंति, एवं जाव बीया बीयजीवफुडा फलजीवपडिबद्धा तम्हा आहारेंति, तम्हा परिणामेंति ।

तृतीय उद्देशक.

वनस्पतिकाय अल्पाहारी अने महाहारी.

१. [प्र०] हे भगवन् ! वनस्पतिकायिको कया काले सौथी अल्पआहारवाळा होय छे, अने कया काले सौथी महाआहारवाळा होय छे ? [उ०] हे गौतम ! प्रावृड् ऋतुमां–श्रावण भादरवा मासमां, अने वर्षा ऋतुमां–आसो कारतक मासमां वनस्पतिकायिक जीवो सौथी महाआहारवाळा होय छे, त्यार पछी शरद् ऋतुमां, त्यार पछी हेमंत ऋतुमां, त्यार पछी वसंत ऋतुमां अने त्यार बाद ग्रीष्म ऋतुमां [अनुक्रमे] अल्प आहारवाळा होय छे. ग्रीष्म ऋतुमां सर्वथी अल्पआहारवाळा होय छे.

ग्रीष्ममां अल्पाहारी छतां पुष्पित अने फलित केम होय ?

२. [प्र०] हे भगवन् ! जो ग्रीष्म ऋतुमां वनस्पतिकायिक जीवो सौथी अल्प आहारवाळा होय तो ते घणा वनस्पतिकायिको ग्रीष्ममां पांदडावाळा, पुष्पवाळा, फलवाळा, लीला छम दीपता, अने वननी शोभा वडे अत्यंत सुशोभित केम होय छे ? [उ०] हे गौतम ! ग्रीष्म ऋतुमां घणा उष्णयोनिवाळा जीवो अने पुद्गलो वनस्पतिकायपणे उपजे छे, विशेष उपजे छे, वधे छे, विशेष वृद्धि पामे छे; ए कारणथी हे गौतम ! ग्रीष्म ऋतुमां घणा वनस्पतिकायिको पांदडावाळा, पुष्पवाळा यावत् होय छे.

मूलो मूलना जीवथी व्याप्त छे.

३. [प्र०] हे भगवन् ! शुं मूलो मूलना जीवथी व्याप्त छे, कंदो कन्दना जीवथी व्याप्त छे, यावत् बीजो बीजना जीवथी व्याप्त छे ? [उ०] हे गौतम ! मूलो मूलना जीवथी व्याप्त छे, यावत् बीजो बीजना जीवथी व्याप्त छे.

वनस्पति शी रीते आहार करे ?

४. [प्र०] हे भगवन् ! जो मूलो मूलना जीवथी व्याप्त छे, यावत् बीजो बीजना जीवथी व्याप्त छे, तो वनस्पतिकायिक जीवो केवी रीते आहार करे, अने केवी रीते परिणमावे ? [उ०] हे गौतम ! मूलो मूलना जीवथी व्याप्त छे, अने ते पृथिवीना जीव साथे संबद्ध (जोडायेला) छे, माटे वनस्पतिकायिक जीवो आहार करे छे, अने तेने परिणमावे छे. ए प्रमाणे यावत् बीजो बीजना जीवथी व्याप्त छे, अने ते फलना जीव साथे संबद्ध छे, माटे ते आहार करे छे, अने तेने परिणमावे छे.

---

१ पावसवरसा ख, पाओसवरिसा–क । २ उवसोभेमाणा चि–क । ३ जाव बीयजीव–ख ।

५. [प्र०] अह भंते ! आलुए, मूलए, सिंगबेरे, हिरिली, सिरिलि, सिस्सिरिलि, [2]किट्टिया, छिरिया, छीरविरालिया, कण्हकंदे, वज्जकंदे, सूरणकंदे, [3]खेलूडे, [4]अद्दभद्दमुत्था, पिंडहलिद्दा, लोहिणी, हूथीहू, थिरुगा, मुग्गपन्नी, अस्सकन्नी, सीहकन्नी, सीहंडी, मुसुंढी, जेयावन्ने तहप्पगारा सव्वे ते अणंतजीवा विविहसत्ता ? [उ०] हंता, गोयमा ! आलुए, मूलए जाव अणंतजीवा विविहसत्ता ।

६. [प्र०] [5]सिय भंते ! कण्हलेसे नेरइए अप्पकम्मतराए, नीललेसे नेरइए महाकम्मतराए ? [उ०] हंता, सिया । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—कण्हलेसे नेरइए अप्पकम्मतराए, नीललेसे नेरइए महाकम्मतराए ? [उ०] गोयमा ! ठिर्ति पडुच्च, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव महाकम्मतराए ।

७. [प्र०] सिय भंते ! नीललेसे नेरइए अप्पकम्मतराए, काउलेसे नेरइए महाकम्मतराए ? [उ०] हंता, सिया । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नीललेसे अप्पकम्मतराए, काउलेसे नेरइए महाकम्मतराए ? [उ०] गोयमा ! ठिर्ति पडुच्च, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव महाकम्मतराए । एवं असुरकुमारे वि; नवरं तेउलेसा अब्भहिया, एवं जाव वेमाणिया, जस्स जइ लेस्साओ तस्स तत्तिया भाणियव्वाओ, [6]जोइसियस्स न भण्णइ । जाव सिय भंते ! पम्हलेस्से वेमाणिए अप्पकम्मतराए, सुक्कलेस्से वेमाणिए महाकम्मतराए ? हंता, [7]सिया । से केणट्ठेणं ? सेसं जहा नेरइयस्स, जाव महाकम्मतराए ।

८. [प्र०] से नूणं भंते ! जा वेदणा सा निज्जरा, जा निज्जरा सा वेदणा ? [उ०] गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जा वेयणा न सा णिज्जरा, जा निज्जरा न सा वेयणा ? [उ०] गोयमा ! कम्म वेदणा, णोकम्म निज्जरा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव न सा वेदणा ।

अनन्तजीव वनस्पति.

५. [प्र०] हे भगवन् ! आलु (बटाटा) मूला, आदु, हिरिली, सिरिलि, सिस्सिरिलि, किट्टिका, छिरिया, छीरविदारिका, वज्रकंद, सूरणकंद, खेलुडा, आर्द्रभद्रमोथ, पिंडहरिद्रा, रोहिणी, हुथीहु, थिरुगा, मुद्गपर्णी, अश्वकर्णी, सिंहकर्णी, सीहंढी, मुसुंढी अने तेवा प्रकारनी बीजी वनस्पतिओ शुं अनन्त जीववाळी अने भिन्न भिन्न जीववाळी छे ? [उ०] हे गौतम ! आलु (बटाटा) मूला यावत् अनन्त जीववाळी अने भिन्न भिन्न जीववाळी छे.

कृष्णलेश्यावाळो नारक अल्पकर्मवाळो अने नीललेश्यावाळो महाकर्मवाळो होय.

६. [प्र०] हे भगवन् ! कदाच कृष्णलेश्यावाळो नारक अल्पकर्मवाळो अने नीललेश्यावाळो महाकर्मवाळो होय ? [उ०] हा, गौतम ! कदाच होय. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के–कृष्णलेश्यावाळो नारक अल्पकर्मवाळो अने नीललेश्यावाळो नारक महाकर्मवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! *स्थितिनी अपेक्षाए, ते हेतुथी हे गौतम ! एम कहेवाय छे के ते यावत् महाकर्मवाळो होय.

नीललेश्यावाळो महाकर्मवाळो, अने कापोतलेश्यावाळो अल्पकर्मवाळो.

७. [प्र०] हे भगवन् ! कदाच नीललेश्यावाळो नारक अल्पकर्मवाळो अने कापोतलेश्यावाळो नारक महाकर्मवाळो होय ? [उ०] हा, गौतम ! कदाच होय. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी ए प्रमाणे कहो छो के–नीललेश्यावाळो नारक अल्पकर्मवाळो अने कापोतलेश्यावाळो नारक महाकर्मवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! स्थितिनी अपेक्षाए, ते हेतुथी हे गौतम ! ने यावत् महाकर्मवाळो होय. ए प्रमाणे असुरकुमारोने विषे पण जाणवुं, परन्तु तेओने एक तेजोलेश्या अधिक होय छे. ए प्रमाणे वैमानिक देवो पर्यन्त जाणवुं. जेने जेटली लेश्याओ होय तेने तेटली कहेवी, पण †ज्योतिष्क देवोने न कहेवुं, यावत्–[प्र०] हे भगवन् ! कदाच पद्मलेश्यावाळो वैमानिक अल्पकर्मवाळो अने शुक्ललेश्यावाळो वैमानिक महाकर्मवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! हा, कदाच होय. [प्र०] ते शा हेतुथी ? [उ०] बाकीनुं जेम नारकने कह्युं तेम जाणवुं, यावत् महाकर्मवाळो होय.

वेदना ते निर्जरा नथी.

८. [प्र०] हे भगवन् ! खरेखर जे वेदना ते निर्जरा, अने जे निर्जरा ते वेदना कहेवाय ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. [प्र०] हे भगवन्, एम शा हेतुथी कहो छो के–जे वेदना ते निर्जरा अने जे निर्जरा ने वेदना न कहेवाय ? [उ०] हे गौतम ! वेदना ‡कर्म छे, अने निर्जरा नोकर्म छे, ते हेतुथी यावत् ते वेदना न कहेवाय.

---

१ मूलए ख । २ किट्टिया घ । ३ खेलडे क । ४ अद्दए भद्द–घ । ५ सिय ख । ६–सियस्स णं न ख । ७ सिय ख ।

६. *कृष्णलेश्या अत्यन्त अशुभ परिणामरूप होवाथी अने तेनी अपेक्षाए नीललेश्या कंईक शुभ परिणामरूप होवाथी सामान्यतः कृष्णलेश्यावाळो बहुकर्मी अने नीललेश्यावाळो अल्पकर्मवाळो होय, परन्तु कदाच आयुष्नी स्थितिनी अपेक्षाथी कृष्णलेश्यावाळो अल्पकर्मवाळो अने नीललेश्यावाळो महाकर्मवाळो होय. जेम के कृष्णलेश्यावाळो नारक जेणे पोताना आयुष्नी घणी स्थिति क्षय करेली छे तेने घणा कर्मनो क्षय थयो होय, तेनी अपेक्षाए कोइ पांचमी नरकपृथ्वीमां सत्तरसागरोपमना आयुष्यवाळो नीललेश्यावाळो जीव जे हमणांज उत्पन्न थयो होय तेने पोताना आयुष्नी स्थितिनो वधारे क्षय नहि कर्यो होवाथी घणा कर्म बाकी होय, तेथी ते महाकर्मवाळो होय. जुओ–भ. टी. प. ३०१–१.

७. †ज्योतिष्कने तेजो लेश्या सिवाय बीजी अन्य लेश्या नहि होवाथी अन्यलेश्यासापेक्ष ते अल्पकर्मवाळो के महाकर्मवाळो न कहेवाय. जुओ–भ. टी. प. ३०१—१

८. ‡ उदयप्राप्त कर्मनुं वेदवुं–अनुभव करवो ते वेदना, अने वेदित कर्मनो क्षय थवो ते निर्जरा, एटले वेदना कर्मनी थती होवाथी तेने कर्म कह्युं, कर्म वेदित थयुं एटले तेने कर्म न कही शकाय, तेथी नोकर्मनी निर्जरा थाय छे, माटे निर्जराने नोकर्म कह्युं छे. जुओ–(भ. टी. प. ३०१—१.)

९. [प्र०] नेरइयाणं भंते ! जा वेयणा सा निज्जरा, जा निज्जरा सा वेयणा ? [उ०] गोयमा ? णो तिणट्ठे समट्ठे । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइयाणं जा वेयणा न सा निज्जरा, जा निज्जरा न सा वेयणा ? [उ०] गोयमा ! नेरइयाणं कम्म वेदणा, णोकम्म निज्जरा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव न सा वेयणा, एवं जाव वेमाणियाणं ।

१०. [प्र०] से णूणं भंते ! जं वेदेंसु तं निज्जरिंसु, जं निज्जरिंसु तं वेदेंसु ? [उ०] णो तिणट्ठे समट्ठे । [प्र०] से केण-ट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जं वेदेंसु नो तं निज्जरेंसु, जं निज्जरेंसु नो तं वेदेंसु ? [उ०] गोयमा ! कम्मं वेदेंसु, नोकम्मं निज्ज-रिंसु; से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव नो तं वेदेंसु । [प्र०] नेरइयाणं भंते ! जं वेदेंसु तं निज्जरेंसु ? [उ०] एवं नेरइया वि, एवं जाव वेमाणिया ।

११. [प्र०] से णूणं भंते ! जं वेदेंति तं निज्जरेंति, जं निज्जरेंति तं वेदेंति ? [उ०] गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जाव नो तं वेदेंति ? [उ०] गोयमा ! कम्मं वेदेंति, नोकम्मं निज्जरेंति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव नो तं वेदेंति, एवं नेरइया वि, जाव वेमाणिया ।

१२. [प्र०] से णूणं भंते ! जं वेदिस्संति तं निज्जरिस्संति, जं निज्जरिस्संति तं वेदिस्संति ? [उ०] गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे ! [प्र०] से केणट्ठेणं जाव णो तं वेदिस्संति ? [उ०] गोयमा ! कम्मं वेदिस्संति, नोकम्मं निज्जरिस्संति, से तेणट्ठेणं जाव नो तं निज्जरिस्संति, एवं नेरइया वि, जाव वेमाणिया ।

१३. [प्र०] से णूणं भंते ! जे वेदणासमए से निज्जरासमए, जे निज्जरासमए से वेदणासमए ? [उ०] णो तिणट्ठे समट्ठे । [प्र०] से केणट्ठेणं एवं वुच्चइ—जे वेयणासमए न से निज्जरासमए, जे निज्जरासमए न से वेदणासमए ? [उ०] गोयमा ! जं समयं वेदेंति नो तं समयं निज्जरेंति, जं समयं निज्जरेंति नो तं समयं वेदेंति, अन्नम्मि समए वेदेंति, अन्नम्मि समए निज्जरेंति, अन्ने से वेदणासमए, अन्ने से निज्जरासमए; से तेणट्ठेणं जाव न से वेदणासमए, न से निज्जरासमए ।

नारकोने वेदना ते निर्जरा नथी.

९. [प्र०] हे भगवन् ! शुं नारकोने जे वेदना छे ते निर्जरा कहेवाय, अने जे निर्जरा छे ते वेदना कहेवाय ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के नारकोने जे वेदना ते निर्जरा न कहेवाय ? [उ०] हे गौतम ! नारकोने वेदना छे ते कर्म छे, अने निर्जरा छे ते नोकर्म छे, ते हेतुथी एम कहुं छुं के हे गौतम ! यावत् निर्जरा ते वेदना न कहेवाय. ए प्रमाणे यावत् वैमानिको जाणवा.

जे वेद्युं ते निर्जर्युं नथी.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! शुं खरेखर जे वेद्युं ते निर्जर्युं, अने जे निर्जर्युं ते वेद्युं ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहेवाय छे के जे वेद्युं ते निर्जर्युं नथी, जे निर्जर्युं ते वेद्युं नथी ? [उ०] हे गौतम ! कर्म वेद्युं, अने नोकर्म निर्जर्युं; ते हेतुथी हे गौतम ! यावत् ते वेद्युं नथी. [प्र०] हे भगवन् ! नारकोए जे वेद्युं ते निर्जर्युं ? [उ०] पूर्वे कह्या प्रमाणे नारको पण जाणवा, यावत् वैमानिको पण जाणवा.

जेने वेदे छे तेने निर्जरतो नथी.

११. [प्र०] हे भगवन् ! शुं खरेखर जेने वेदे छे तेने निर्जरे छे, अने जेने निर्जरे छे तेने वेदे छे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहेवाय छे के यावत् जेने वेदे छे तेने निर्जरतो नथी, जेने निर्जरे छे तेने वेदतो नथी. [उ०] हे गौतम ! कर्मने वेदे छे अने नोकर्मने निर्जरे छे; ते हेतुथी हे गौतम ! एम कहेवाय छे के यावत् [जेने निर्जरे छे] तेने वेदतो नथी. ए प्रमाणे नारको पण जाणवा, यावत् वैमानिको जाणवा.

जेने वेदशे तेने निर्जरशे नहि.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जेने वेदशे तेने निर्जरशे, अने जेने निर्जरशे तेने वेदशे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के यावत् तेने वेदशे नहि ? [उ०] हे गौतम ! कर्मने वेदशे अने नोकर्मने निर्जरशे, ते हेतुथी यावत् जेने [वेदशे] तेने निर्जरशे नहि.

जे वेदनानो समय छे ते निर्जरानो समय नथी.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जे वेदनानो समय छे ते निर्जरानो समय छे, अने जे निर्जरानो समय छे ते वेदनानो समय छे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी एम कहेवाय छे के जे वेदनानो समय छे ते निर्जरानो समय नथी, अने जे निर्जरानो समय छे ते वेदनानो समय नथी ? [उ०] हे गौतम ! जे समये वेदे छे ते समये निर्जरा करतो नथी, जे समये निर्जरा करे छे ते समये वेदतो नथी, अन्य समये वेदे छे, अन्य समये निर्जरा करे छे, वेदनानो समय भिन्न छे अने निर्जरानो समय भिन्न छे; ते हेतुथी यावत् वेदनानो समय छे ते निर्जरानो समय नथी.

---

१ निज्जरेंसु ख । २ निज्जरिंति घ ।

१४. [प्र०] नेरइयाणं भंते ! जे वेदणासमए से निज्जरासमए, जे निज्जरासमए से वेदणासमए ? [उ०] गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । [प्र०] से केणट्ठेणं एवं वुच्चइ—नेरइयाणं जे वेदणासमए न से निज्जरासमए, जे निज्जरासमए न से वेयणासमए ? [उ०] गोयमा ! नेरइया णं जं समयं वेदेंति णो तं समयं निज्जरेंति, जं समयं निज्जरेंति नो तं समयं वेदेंति, अन्नम्मि समए वेदेंति, अन्नम्मि समए निज्जरेंति, अन्ने से वेदणासमए, अन्ने से निज्जरासमए, से तेणट्ठेणं जाव न से वेदणासमए, एवं जाव वेमाणियाणं ।

१५. [प्र०] नेरइया णं भंते ! किं सासया, असासया ? [उ०] गोयमा ! सिय सासया, सिय असासया । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइया सिय सासया, सिय असासया ? [उ०] गोयमा ! अव्वोच्छित्तिनयट्ठयाए सासया, वोच्छित्तिनयट्ठयाए असासया, से तेणट्ठेणं जाव सिय सासया, सिय असासया; एवं जाव वेमाणिया, जाव सिय असासया । सेवं भंते !, सेवं भंते ! त्ति ।

सत्तमसए ततिओ उद्देसो समत्तो ।

१४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं नारकोने जे वेदनानो समय छे, ते निर्जरानो समय छे, अने निर्जरानो समय छे ते वेदनानो समय छे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा कारणथी कहो छो के नारकोने जे वेदनानो समय छे ते निर्जरानो समय नथी, अने जे निर्जरानो समय छे ते वेदनानो समय नथी ? [उ०] हे गौतम ! नारको जे समये वेदे छे ते समये निर्जरा करता नथी, अने जे समये निर्जरा करे छे ते समये वेदता नथी, अन्य समये वेदे छे अने अन्य समये निर्जरा करे छे, तेओनो वेदनानो समय जूदो छे, अने निर्जरानो समय जूदो छे; ते हेतुथी यावत् निर्जरानो समय ते वेदनानो समय नथी. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोने जाणवुं.

नारकोने वेदना अने निर्जरानो समय भिन्न छे.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! शुं नारको शाश्वत छे के अशाश्वत छे ? [उ०] हे गौतम ! कथंचित् शाश्वत छे, अने कथंचित् अशाश्वत पण छे [प्र०] हे भगवन् ! शा कारणथी एम कहो छो के नारको कथंचित् शाश्वत छे अने कथंचित् अशाश्वत छे ? [उ०] हे गौतम ! अव्युच्छित्तिनय-(द्रव्यार्थिकनय-)नी अपेक्षाए शाश्वत छे, अने व्युच्छित्तिनयनी (पर्यायनयनी) अपेक्षाए अशाश्वत छे; ते हेतुथी यावत् कथंचित् शाश्वत छे अने कथंचित् अशाश्वत छे. ए प्रमाणे यावत् वैमानिको यावत् कथंचित् अशाश्वत छे. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे [एम कही गौतम यावत् विचरे छे.]

नारको शाश्वत अने अशाश्वत.

सप्तमशतके तृतीय उद्देशक समाप्त.

चउत्थो उद्देसो ।

१. [प्र०] रायगिहे नयरे जाव एवं वयासि—कतिविहा णं भंते ! संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! छव्विहा संसारसमावन्नगा जीवा पन्नत्ता, तं जहा—[1]पुढविकाइया, एवं जहा जीवाभिगमे जाव सम्मत्तकिरियं वा, मिच्छत्त-किरियं वा ।

[2] **[जीवा छव्विह पुढवी जीवाण [3]ठिती भवट्ठिती[4] काये ।**
निल्लेवण अणगारे किरिया सम्मत्त-मिच्छत्ता[5] ॥]

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

सत्तमसए चउत्थो उद्देसो समत्तो ।

चतुर्थ उद्देशक.

जीवोना प्रकार.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां [गौतम] यावत् ए प्रमाणे बोल्या—हे भगवन् ! संसारी जीवो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! संसारी जीवो छ प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे—पृथिवीकायिक विगेरे. ए प्रमाणे जेम *जीवाभिगमसूत्रमां कह्युं छे तेम सम्यक्त्वक्रिया अने मिथ्यात्वक्रियासुधी अहीं जाणवुं.

संग्रहगाथा.

†[१ जीवोना छ प्रकार, २ पृथिवीना छ प्रकार, ३ पृथिवीना भेदोनी स्थिति--आयुष्, ४ भवस्थिति, ५ सामान्यकाय स्थिति ६ निर्लेपना—खाली थवानो काळ, ७ अनगारसंबंधी हकीकत, ८ सम्यक्त्वक्रिया अने मिथ्यात्वक्रिया.] हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे [एम कही गौतम यावत् विचरे छे.]

सप्तम शतके चतुर्थ उद्देशक समाप्त.

---

१ पुढविकाईआ ख । २ [ ] एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठो वाचनान्तरे उपलभ्यते, स च टीकाकारेण व्याख्यातः । ३ ठिति भ-ख । ४-तिका-ख । ५-च्छत्तं च्छत्ते क ।

१ * (जीवाभिगम. प. १३९. सू. १००—१०४.)

† वाचनान्तरमां आवेली संग्रह गाथानो अर्थ [ ] आ कोष्ठकमां आप्यो छे.

पंचमो उद्देसो.

१. [प्र०] रायगिहे जाव एवं वयासी–खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! कतिविहे जोणीसंगहे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! तिविहे जोणीसंगहे पण्णत्ते, तं जहा–अंडया, पोयया, समुच्छिमा; एवं जहा जीवाभिगमे, जाव 'नो चेव णं ते विमाणे वीतीवएज्जा, एमहालया णं गोयमा ! ते विमाणा पन्नत्ता' ।

जोणीसंगह-लेसा दिट्ठी नाणे य जोग-उवओगे ।
उववाय-ट्ठिति-समुग्घाय-चवण-जाती-कुल-विहीओ ॥

सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

सत्तमसयस्स पंचमो उद्देसो समत्तो ।

पञ्चम उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां [गौतम] यावत् ए प्रमाणे बोल्या–हे भगवन् ! खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचोनो योनिसंग्रह केटला प्रकारे कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओनो योनिसंग्रह त्रण प्रकारे कह्यो छे; ते आ प्रमाणे–अंडज, पोतज अने संमूर्छिम. जेम *जीवाभिगम सूत्रमां कह्युं छे ते प्रमाणे यावत् 'ते विमानोने उल्लंघी न शके, एटला मोटा ते विमानो कह्या छे' त्यां सुधी सर्व जाणवुं.

खेचरनो योनिसंग्रह.

†[१ योनिसंग्रह, २ लेश्या; ३ दृष्टि–सम्यक्, मिश्र अने मिथ्यात्वदृष्टि, ४ ज्ञान, ५ योग, ६ उपयोग, ७ उपपात–उत्पन्न थवुं, ८ स्थिति–आयुष्, ९ समुद्घात, १० च्यवन, ११ जातिकुलकोटी].

हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे [एम कही गौतम यावत् विचरे छे.]

सप्तम शतके पंचम उद्देशक समाप्त.

---

१ कतिविहे णं ओ- घ । २ [ ] एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठो वाचनान्तरे उपलभ्यते ।

१. * (जीवाभिगम. प. १३२–१३७. सू. ९६–९९)

† वाचनान्तरमां आवेली संग्रहगाथानो अर्थ आ [ ]कोष्टकमां आप्यो छे.

छट्ठो उद्देसो.

१. [प्र०] रायगिहे जाव एवं वयासी–जीवे णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! किं इहगए नेरइयाउयं पकरेति, उववज्जमाणे नेरइयाउयं पकरेइ, उववन्ने नेरइयाउयं पकरेइ ? [उ०] गोयमा ! इहगए नेरइयाउयं पकरेइ, नो उववज्जमाणे नेरइयाउयं पकरेइ, नो उववन्ने नेरइयाउयं पकरेइ । एवं असुरकुमारेसु वि, एवं जाव वेमाणिएसु ।

२. [प्र०] जीवे णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! किं इहगए नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ, उववज्जमाणे नेरइयाउयं पडिसंवेदेति, उववन्ने नेरइयाउयं पडिसंवेदेति ? [उ०] गोयमा ! णो इहगए नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ, उववज्जमाणे नेरइयाउयं पडिसंवेदेइ, उववन्ने वि नेरइयाउयं पडिसंवेदेति । एवं जाव वेमाणिएसु ।

३. [प्र०] जीवे णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए से णं भंते ! किं इहगए महावेयणे, उववज्जमाणे महावेदणे, उववन्ने महावेदणे ? [उ०] गोयमा ! इहगए सिय महावेयणे सिय अप्पवेयणे, उववज्जमाणे सिय महावेदणे सिय अप्पवेयणे; अहे णं भंते ! उववन्ने भवति तओ पच्छा एगंतदुक्खं वेयणं वेयति, आहच्च सायं ।

४. [प्र०] जीवे णं भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए पुच्छा । [उ०] गोयमा ! इहगए सिय महावेयणे सिय अप्पवेयणे, उववज्जमाणे सिय महावेयणे सिय अप्पवेयणे; अहे णं उववन्ने भवइ तओ पच्छा एगंतसातं वेयणं वेदेति, आहच्च असायं । एवं जाव थणियकुमारेसु ।

षष्ठ उद्देशक.

नारकायुषनो बंध.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां [गौतम] यावत् ए प्रमाणे बोल्या–हे भगवन् ! जे जीव नारकने विषे उत्पन्न थवाने योग्य छे, हे भगवन् ! ते जीव शुं आ भवमां रहीने नारकनुं आयुष् बांधे ? त्यां–नारकमां उत्पन्न थतो नारकनुं आयुष् बांधे ? के त्यां उत्पन्न थइने नारकनुं आयुष् बांधे ? [उ०] हे गौतम ! आ भवमां रहीने नारकनुं आयुष् बांधे, पण त्यां उत्पन्न थता नारकनुं आयुष् न बांधे, अने उत्पन्न थइने पण नारकनुं आयुष् न बांधे, ए प्रमाणे असुरकुमारोमां अने यावत् वैमानिकोमां जाणवुं.

नारकायुषनुं वेदन.

२. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीव नारकने विषे उत्पन्न थवाने योग्य छे, हे भगवन् ! ते जीव शुं आ भवमां रही नारकनुं आयुष् वेदे, त्यां उत्पन्न थता नारकनुं आयुष् वेदे, के त्यां उत्पन्न थइने नारकनुं आयुष् वेदे ? [उ०] हे गौतम ! आ भवमां रही नारकनुं आयुष् न वेदे, पण उत्पन्न थता अने उत्पन्न थइने नारकनुं आयुष् वेदे. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोमां पण जाणवुं.

नारकमां महावेदनानुं वेदन.

३. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीव नारकमां उत्पन्न थवाने योग्य छे, हे भगवन् ! ते जीव शुं आ भवमां रहेलो महावेदनावाळो होय, त्यां उत्पन्न थता महावेदनावाळो होय, के उत्पन्न थया पछी महावेदनावाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! कदाच ते आ भवमां रहेलो महावेदनावाळो होय के कदाच अल्पवेदनावाळो होय; कदाच उत्पन्न थता महावेदनावाळो होय के कदाच अल्पवेदनावाळो होय, पण ज्यारे ते उत्पन्न थाय छे, त्यार पछी एकान्त दुःखरूप वेदनाने वेदे छे, अने क्वचित् सुखने वेदे छे.

असुरकुमारमां महावेदनानुं वेदन.

४. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीव असुरकुमारमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते संबन्धी प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ते कदाच आ भवमां रहेलो महावेदनावाळो होय के कदाच अल्पवेदनावाळो होय; उत्पन्न थता कदाच महावेदनावाळो होय के कदाच अल्पवेदनावाळो होय; पण ज्यारे ते उत्पन्न थाय छे त्यार पछी एकान्त सुखरूप वेदनाने वेदे छे, अने कदाच दुःखने वेदे छे. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारने विषे जाणवुं.

---

१ वयासी ख । २ णं ख-घ । ३ वेयति ख ।

५. [प्र०] जीवे णं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए पुच्छा । [उ०] गोयमा ! इहगए सिय महावेयणे सिय अप्पवेयणे; एवं उववज्जमाणे वि, अहे णं उववन्ने भवति तओ पच्छा वेमायाए वेयणं वेदेति । एवं जाव मणुस्सेसु, वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिएसु जहा असुरकुमारेसु ।

६. [प्र०] जीवा णं भंते ! किं आभोगनिव्वत्तियाउया, अणाभोगनिव्वत्तियाउया ? [उ०] गोयमा ! नो आभोगनिव्वत्तियाउया, अणाभोगनिव्वत्तियाउया । एवं नेरइया वि, एवं जाव वेमाणिया ।

७. [प्र०] अत्थि णं भंते ! जीवाणं कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? [उ०] गोयमा ! हंता, अत्थि ।

८. [प्र०] कहं णं भंते ! जीवाणं कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जन्ति ? [उ०] गोयमा ! पाणाइवाएणं, जाव मिच्छादंसणसल्लेणं; एवं खलु गोयमा ! जीवाणं कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ।

९. [प्र०] अत्थि णं भंते ! नेरइयाणं कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? [उ०] एवं चेव, एवं जाव वेमाणियाणं ।

१०. [प्र०] अत्थि णं भंते ! जीवाणं अकक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? [उ०] हंता, अत्थि ।

११. [प्र०] कहं णं भंते ! जीवा अकक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? [उ०] गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेणं, जाव परिग्गहवेरमणेणं, कोहविवेगेणं, जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगेणं; एवं खलु गोयमा ! जीवाणं अकक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ।

१२. [प्र०] अत्थि णं भंते ! नेरइयाणं अकक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? [उ०] गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । एवं जाव वेमाणिया; नवरं मणुस्साणं जहा जीवाणं ।

१३. [प्र०] अत्थि णं भंते ! जीवाणं सायावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? [उ०] हंता, अत्थि ।

१४. [प्र०] कहं णं भंते ! जीवाणं सातावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? [उ०] गोयमा ! पाणाणुकंपयाए, भूयाणुकंपयाए, जीवाणुकंपयाए, सत्ताणुकंपयाए; बहूणं पाणाणं, जाव सत्ताणं अदुक्खणयाए, असोयणयाए, अजूरणयाए, अतिप्पणयाए, अपिट्टणयाए, अपरियावणयाए; एवं खलु गोयमा ! जीवाणं सायावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति; एवं नेरइयाण वि, एवं जाव वेमाणियाणं ।

५. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीव पृथिवीकायमां उत्पन्न थवाने योग्य छे ते संबन्धी प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! आ भवमां रहेलो ते कदाच महावेदनावाळो होय के कदाच अल्पवेदनावाळो होय; ए प्रमाणे उत्पन्न थतां पण महावेदनावाळो होय के अल्पवेदनावाळो होय, पण ज्यारे ते उत्पन्न थाय छे त्यार पछी ते विविध प्रकारे वेदनाने वेदे छे. ए प्रमाणे यावत् मनुष्योमां जाणवुं. जेम असुरकुमारोने विषे [सू. ४] कह्युं तेम वानव्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिक देवो विषे जाणवुं.

पृथिवीकायमां विविध वेदनानुं वेदन.

६. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जीवो आभोगथी—जाणपणे आयुषनो बंध करे के अनाभोगथी—अजाणपणे आयुषनो बंध करे ? [उ०] हे गौतम ! जीवो आभोगथी आयुषनो बन्ध न करे, पण अनाभोगथी आयुषनो बन्ध करे. ए प्रमाणे नारको पण जाणवा, यावत् वैमानिको जाणवा.

आयुषनो बन्ध.

७. [प्र०] हे भगवन् ! शुं एम छे के जीवोने कर्कशवेदनीय—दुःखपूर्वक भोगवया योग्य कर्मो—बंधाय छे ? [उ०] हा, गौतम ! एम छे.

कर्कशवेदनीय कर्म.

८. [प्र०] हे भगवन् ! जीवोने कर्कशवेदनीय कर्मो केम बंधाय ? [उ०] हे गौतम ! प्राणातिपात—जीवहिंसाथी, यावत् मिथ्यादर्शनशल्यथी. ए प्रमाणे हे गौतम ! जीवोने कर्कशवेदनीय कर्मो बंधाय छे.

कर्कशवेदनीय कर्मना हेतुओ.

९. [प्र०] हे भगवन् ! शुं एम छे के नारकोने कर्कशवेदनीय कर्मो बंधाय ? [उ०] हे गौतम ! पूर्वे कह्या प्रमाणे यावत् वैमानिकोने जाणवुं.

नारकने कर्कशवेदनीय कर्म.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! शुं एम छे के जीवोने अकर्कशवेदनीय—सुखपूर्वक भोगववा योग्य कर्मो—बंधाय ? [उ०] हा, गौतम ! एम छे.

अकर्कशवेदनीय कर्म.

११. [प्र०] हे भगवन् ! जीवोने अकर्कशवेदनीय कर्मो केम बंधाय ? [उ०] हे गौतम ! प्राणातिपातविरमणथी, यावत् परिग्रहविरमणथी; क्रोधनो त्याग करवाथी, यावत् मिथ्यादर्शनशल्यनो त्याग करवाथी. ए प्रमाणे हे गौतम ! जीवोने अकर्कशवेदनीय कर्मो बंधाय.

अकर्कशवेदनीय कर्मना हेतुओ.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! शुं नारकोने अकर्कशवेदनीय कर्मो बंधाय ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोने जाणवुं. परंतु मनुष्योने जेम जीवोने [सू. ११.] कह्युं तेम जाणवुं.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! शुं एम छे के जीवोने सातावेदनीय कर्म बंधाय ? [उ०] हा, गौतम ! एम छे.

सातावेदनीय कर्म.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! जीवोने सातावेदनीय कर्म केम बंधाय ? [उ०] हे गौतम ! प्राणोने विषे अनुकंपाथी, भूतोने विषे अनुकंपाथी, जीवोने विषे अनुकंपाथी, सत्त्वोने विषे अनुकंपाथी, घणा प्राणोने यावत् सत्त्वोने दुःख न देवाथी, शोक नहि उपजाववाथी, खेद नहि उत्पन्न करवाथी, वेदना न करवाथी, नहि मारवाथी तेम परिताप नहि उपजाववाथी. ए प्रमाणे हे गौतम ! जीवो सातावेदनीय कर्मो बांधे छे. ए प्रमाणे नारकोने पण जाणवुं; यावत् वैमानिकोने जाणवुं.

सातावेदनीय कर्मना हेतुओ.

१५. [प्र०] अत्थि णं भंते ! जीवाणं असायावेदणिज्जा कम्मा कज्जंति ? [उ०] हंता अत्थि ।

१६. [प्र०] कहं णं भंते ! जीवाणं असायावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति ? [उ०] गोयमा ! परदुक्खणयाए, परसोयणयाए, परजूरणयाए, परतिप्पणयाए, परपिट्टणयाए, परपरियावणयाए; बहूणं पाणाणं, जाव सत्ताणं दुक्खणयाए, सोयणयाए जाव परियावणयाए; एवं खलु गोयमा ! जीवाणं अस्सायावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति । एवं नेरइयाण वि, एवं जाव वेमाणियाणं ।

१७. [प्र०] जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए दुसमदुसमाए समाए उत्तमकट्ठपत्ताए भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सइ ? [उ०] गोयमा ! कालो भविस्सइ हाहाभूए, [6]भंभाभूए, [7]कोलाहलगभूए; समयाणुभावेण य णं खर-फरुस-धूलिमइला, दुव्विसहा, वाउला, भयंकरा, वाया संवट्टगा य वाहिंति; इह अभिक्खं धूमाहिंति य दिसा समंता रओसला, रेणुकलुसतमपडलनिरालोगा; समयलुक्खयाए य णं अहियं चंदा सीयं मोच्छंति, अहियं सूरिया तवइस्संति; अदुत्तरं च णं अभिक्खणं बहवे अरसमेहा, विरसमेहा, खारमेहा, खत्तमेहा, खट्टमेहा, अग्गिमेहा, विज्जुमेहा, विसमेहा, असणिमेहा; अपिवणिज्जोदगा [अजवणिज्जोदया] वाहि-रोग-वेदणोदीरणापरिणामसलिला, अमणुन्नपाणियगा, चंडानिलपहयतिक्खधारानिवायपउरं वासं वासिहिंति; जे णं भारहे वासे गामाऽऽगर-नगर-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणाऽऽसमगयं जणवयं, चउप्पय-गवेलए, खहयरे पक्खिसंघे, गामा-ऽरन्न-पयारनिरए तसे य पाणे, बहुप्पगारे रुक्ख-गुच्छ-गुम्म-लय-वल्लि-तण-पव्वयग-हरितो-सहि पवालं-कुरमादीए य तण-वणस्सइकाइए विद्धंसेहिंति, पव्वय-गिरि-डोंगर-उत्थल-भट्ठिमादीए य वेयड्ढगिरिवज्जे विरावेहिंति, सलिलबिल-गड्ड-दुग्गविसमनिण्णु-न्नयाइं च गंगा-सिंधुवज्जाइं समीकरेहिंति ।

१८. [प्र०] तीसे णं समाए भारहवासस्स भूमीए केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सति ? [उ०] गोयमा ! भूमी भविस्सति इंगालब्भूया, मुम्मुरब्भूया, छारियभूया, तत्तकवेल्लयब्भूया, तत्तसमजोतिभूया, धूलिबहुला, रेणुबहुला, पंकबहुला, पणगबहुला, चलणिबहुला, बहूणं धरणिगोयराणं सत्ताणं दुन्निक्कमा यावि भविस्सति ।

असातावेदनीय कर्म.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! शुं एम छे के जीवोने असातावेदनीय कर्मो बंधाय ? [उ०] हा, गौतम ! एम छे.

असातावेदनीय कर्मना हेतुओ.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! जीवोने असातावेदनीय कर्म केम बंधाय ? [उ०] हे गौतम ! बीजाने दुःख देवाथी, बीजाने शोक उपजाववाथी, बीजाने खेद उत्पन्न करवाथी, बीजाने पीडा करवाथी, बीजाने मारवाथी, बीजाने परिताप उत्पन्न करवाथी, तेम घणां प्राणोने यावत् सत्त्वोने दुःख देवाथी, शोक उपजाववाथी, यावत् परिताप उत्पन्न करवाथी, ए प्रमाणे हे गौतम ! जीवोने असातावेदनीय कर्म बंधाय छे. ए प्रमाणे नारकोने, यावत् वैमानिकोने जाणवुं.

हाहाभूत काळ.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! जंबूद्वीपनामे द्वीपमां भारतवर्षने विषे आ अवसर्पिणीमां दुःषमादुःषमा काळ—छट्ठो आरो ज्यारे अत्यंत उत्कट अवस्थाने प्राप्त थशे त्यारे भारतवर्षनो आकारभावप्रत्यवतार (आकार अने भावोनो आविर्भाव) केवा प्रकारे थशे ? [उ०] हे गौतम ! हाहाभूत (जे काळे दुःखी लोको 'हा हा' शब्द करशे), भंभाभूत (जे काळे दुःखार्त पशुओ 'भां भां' शब्द करशे), अने कोलाहलभूत (ज्यारे दुःखपीडित पक्षीओ कोलाहल करशे) एवो काळ थशे.

भयंकर वात.

काळना प्रभावथी घणा कठोर, धूळथी मेला, असह्य, अनुचित अने भयंकर वायु, तेमज संवर्तक वायु वाशे.

मलिन दिशाओ.

आ काळे वारंवार चारे बाजूए धूळ उडती होवाथी रजथी मलिन अने अंधकारवडे प्रकाशरहित दिशाओ धूमाडा जेवी झांखी देखाशे.

अधिकशीत अने ताप.

काळनी रुक्षताथी चन्द्रो अधिक शीतता आपशे अने सूर्यो अत्यंत तपशे.

अरस विरसादि मेघो.

वळी वारंवार घणा खराब रसवाळा, विरुद्ध रसवाळा, खारा, खातरसमान पाणिवाळा, [खाटा पाणिवाळा] अग्निनी पेठे दाहक पाणिवाळा, विजळी युक्त, अशनिमेघ—करावगेरेने पाडनार (पर्वतने भेदनारा,) विषमेघो—झेरी पाणिवाळा—नहि पीवालायक पाणिवाळा, [निर्वाह न थइ शके तेवा पाणिवाळा], व्याधि, रोग अने वेदना उत्पन्न करनार पाणिवाळा, मनने न रुचे तेवा पाणिवाळा मेघो तीक्ष्ण धाराना पडवा डेत्र पुष्कळ वरसशे.

ग्रामादिमां रहेला मनुष्य पशु पक्षीओनो नाश.

जेथी भारत वर्षमां ग्राम, आकर, नगर, खेट, कर्बट, मडंब, द्रोणमुख, पट्टन अने आश्रममां रहेल मनुष्यो, चोपगा—गायो घेटा—अने आकाशमां गमन करता पक्षिओना टोळाओ; तेमज गाम अने अरण्यमां चालता त्रस जीवो तथा बहु प्रकारना वृक्षो, गुल्मो, लताओ, वेल्डीओ, घास, पर्वगो—शेरडी वगेरे, धरो वगेरे, ओषधी—शालिवगेरे, प्रवालो अने अंकुरादि तृणवनस्पतिओ नाश पामशे.

वनस्पतिओनो नाश.

पर्वतादिनो नाश.

वैताढ्य शिवाय पर्वतो, गिरिओ, डुंगरो, धूळना उंचा स्थळो, रज विनानी भूमिओ नाश पामशे. गंगा अने सिन्धुनदी शिवाय पाणिना झराओ, खाडाओ, दुर्गम अने विषम भूमिमां रहेला उंचा अने नीचा स्थळो सरखा थशे.

भूमिनुं स्वरूप.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! [ते काळे] भारतवर्षनी भूमिनो केवो आकारभावप्रत्यवतार थशे ? [उ०] हे गौतम ! ते काळे अंगार जेवी, मुर्मुर—छाणाना अग्नि जेवी, भस्मीभूत, तपी गयेला कटाह (कडाया) जेवी, ताप वडे अग्निना सरखी, बहुधूळवाळी बहुरजवाळी, बहुकीचडवाळी, बहुसेवाळवाळी, घणाकादववाळी अने पृथ्वी उपर रहेला घणा प्राणिओने चालवुं मुश्केल पडे एवी भूमि थशे.

---

१ अस्सायवे-घ । २-यावियणि-घ । ३ दुदीवे भं-ख । ४ उस्सप्पि-घ । ५ दूसमदूसमाए-घ, दुस्समदुस्समाए क । ६ भंभाब्भूए ख । ७ कोलाहलब्भूए ख । ८ वाइंति कचित्नाऽन्यत्र । ९ धूमाइंति घ । १०-उच्छक-घ । ११-अहिमा-घ । १२-गड्ड-ख । १३ मुम्मुरभूया घ । १४ दोन्निक्कमा य भ घ ।

१९. [प्र०] तीसे णं भंते ! समाए भारहे वासे मणुयाणं केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सइ ? [उ०] गोयमा ! मणुया भविस्संति दुरूवा, दुवण्णा, दुगंधा, दुरसा, दुफासा, अणिट्ठा, अकंता, जाव अमणामा, हीणस्सरा, दीणस्सरा, अणिट्ठस्सरा, जाव अमणामस्सरा, अणादेज्जवयणपच्चायाया, निल्लज्जा, कूड-कवड-कलह-वह-बंध-वेरनिरया, मज्जायातिक्कमप्पहाणा, अकज्जनिच्चुज्जता, गुरुनियोय–विणयरहिया य, विकलरूवा, परूढनह-केस-मंसु-रोमा, काला, खर-फरुस-झामवण्णा, फुट्टसिरा, कविल-पलियकेसा, बहुण्हारुसंपिणद्ध-दुद्दंसणिज्जरूवा, संकुडियवलीतरंगपरिवेढियंगमंगा, जरापरिणतव्व थेरगनरा, पविरलपरिसडियदंतसेढी, उब्भडघड(य)मुहा [उब्भडघाडामुहा,] विसमणयणा, वंकनासा, वंक[ग]-वलीविगय-भेसणमुहा, कच्छू-कसराभिभूया, खर-तिक्खनख-कंडूइयविक्खयतणू, दद्दु-किडिभ-सिज्झ-फुडियफरुसच्छवी, चित्तलंगा, टोलागति-विसमसंधिबंधण-उक्कुडुअट्ठिगविभत्त-दुब्बला कुसंघयण-कुप्पमाण-कुसंठिया, कुरूवा, कुट्ठाणासण-कुसेज्ज-दुब्भोइणो, असुइणो, अणेगवाहिपरिपीलियंगमंगा, खलंत-वेब्भलगती, निरुच्छाहा, सत्तपरिवज्जिया, विगयचेट्ठ—नट्ठतेया, अभिक्खणं सीय-उण्ह-खर-फरुसवायविज्झडियमलिणपंसुरयगुंडियंगमंगा, बहुकोह-माण-माया, बहुलोभा, असुह-दुक्खभागी, ओसन्नं धम्मसण्ण-सम्मत्तपरिभट्ठा, उक्कोसेणं रयणिप्पमाणमेत्ता, सोलस-वीसतिवासपरमाउसो, पुत्त-नत्तुपरियालपणय[परिपालण]बहुला गंगा-सिंधूओ महानदीओ, वेयड्ढं च पव्वयं निस्साए बावत्तरिं [8]निओदा बीयं बीयामेत्ता बिलवासिणो भविस्संति ।

२०. [प्र०] ते णं भंते ! मणुया कं आहारं आहारेहिंति ? [उ०] गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समयेणं गंगा-सिंधूओ महानदीओ रहपहवित्थराओ अक्खसोयप्पमाणमेत्तं जलं [11]वोज्झिहिंति, से वि य णं जले बहुमच्छ—कच्छभाइन्ने, णो चेव णं आउबहुले भविस्सति । तए णं ते मणुया सूरुग्गमणमुहुत्तंसि य सूरत्थमणमुहुत्तंसि य बिलेहिंतो निद्धाहिंति, निद्धाइत्ता बिलेहिंतो मच्छ-कच्छभे थलाइं गाहेहिंति, गाहित्ता सियायवतत्तएहिं मच्छ-कच्छएहिं एक्कवीसं वाससहस्साइं वित्तिं कप्पेमाणा विहरिस्संति ।

१९. [प्र०] हे भगवन् ! ते काळे भारतवर्षमां मनुष्योनो केवो आकारभावप्रत्यवतार थशे ? [उ०] हे गौतम ! खराबरूपवाळा, खराबवर्णवाळा, दुर्गंधवाळा, दुष्टरसवाळा, खराबस्पर्शवाळा, अनिष्ट, अमनोज्ञ, मनने न गमे तेवा, हीनस्वरवाळा, दीनस्वरवाळा, अनिष्टस्वरवाळा, यावत् मनने न गमे तेवा स्वरवाळा, जेना वचन अने जन्म अग्राह्य छे एवा, निर्लज्ज, कूट कपट कलह वध बंध अने वैरमां आसक्त, मर्यादानुं उल्लंघन करवामां मुख्य, अकार्य करवामां नित्य तत्पर, मातपितादिनो अवश्य करवा योग्य विनयरहित, बेडोळ रूपवाळा, जेना नख, केश, दाढी, मूछ अने रोम वधेला छे एवा, काळा, अत्यंत कठोर, श्यामवर्णवाळा, छूटा केशवाळा, धोळा केशवाळा, बहु स्नायुथी बांधेल होवाने लीधे दुर्दर्शनीय रूपवाळा, जेओना प्रत्येक अंग वांका अने वलीतरंगोथी—करचलीओथी व्याप्त छे एवा, जरापरिणत (वृद्धावस्थायुक्त) वृद्धपुरुष जेवा, छुटा अने सडी गयेला दांतनी श्रेणिवाळा, घटना जेवा भयंकर मुखवाळा [भयंकर छे घाटा (डोकनी पाछळनो भाग), अने मुख जेओना एवा] विषमनेत्रवाळा, वांकी नासिकावाळा, वांका अने वलिओथी विकृत थयेला, भयंकर मुखवाळा, खस अने खरजथी व्याप्त, कठण अने तीक्ष्ण नखो वडे खजवाळवाथी विकृत थयेला, दद्रु (दराज) किडिभ (एक जातनो कोढ) अने सिध्म (कुष्ठ विशेष, करोळीआ) वाळा, फाटीगयेल अने कठोर चामडीवाळा, विचित्रअंगवाळा, उष्ट्रादिना जेवी गतिवाळा, [खराब आकृतिवाळा], सांधाना विषम बंधनवाळा, योग्यस्थाने नहि गोठवायेला छूटा देखाता हाडकावाळा, दुर्बल, खराबसंघयणवाळा, खराबप्रमाणवाळा, खराबसंस्थानवाळा, खराबरूपवाळा, खराब स्थान अने आसनवाळा, खराबशय्यावाळा, खराबभोजनवाळा, जेओनां प्रत्येक अंग अनेक व्याधिओथी पीडित छे एवा, स्खलनायुक्त विह्वलगतिवाळा, उत्साहरहित, सत्त्वरहित, विकृतचेष्टावाळा, तेजरहित, वारंवार शीत, उष्ण तीक्ष्ण अने कठोर पवनवडे व्याप्त, जेओना अंग धूळवडे मलिन अने रजवडे व्याप्त छे एवा, बहु क्रोध, मान अने मायावाळा, बहु लोभवाळा, अशुभ दुःखना भागी, प्रायः धर्मसंज्ञा अने सम्यक्त्वथी भ्रष्ट, उत्कृष्ट एक हाथ प्रमाण शरीरवाळा, सोळ अने वीश वरसना परम आयुषवाळा, पुत्र पौत्रादि परिवारमां अत्यंत स्नेहवाळा [घणा पुत्रपौत्रादिनुं पालनकरनारा], बीजना जेवा, बीजमात्र एवा [मनुष्योना] बहोंतेर कुटुंबो गंगा, सिन्धु महानदीओ अने वैताढ्य पर्वतनो आश्रय करीने बिलमां रहेनारा थशे.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! ते मनुष्यो केवा प्रकारनो आहार करशे ? [उ०] हे गौतम ! ते काळे अने ते समये रथना मार्गप्रमाण विस्तारवाळी गंगा अने सिन्धु ए महानदीओ रथनी धरीने पेसवाना छिद्र जेटला भागमां पाणिने वहेशे, ते पाणि घणां मांछलां अने काचबा वगेरेथी भरेलुं हशे, पण तेमां घणुं पाणि नहि होय. त्यारे ते मनुष्यो सूर्य उग्या पछी एक मुहूर्तनी अंदर अने सूर्य आथम्या पछी एक मुहूर्तमां पोतपोताना बिलोथी बाहेर नीकळशे अने मांछलां अने काचबा वगेरेने जमीनमां डाटशे, टाढ अने तडका वडे बफाइ गयेलां मांछलां अने काचबा वगेरेथी एकवीश हजार वर्ष सुधी आजीविका करता तेओ (मनुष्यो) त्यां रहेशे.

मनुष्योनो आहार-

१-वध-घ । २-कसरा-ख । ३-सिज्झ-क । ४ कुभोइणो घ । ५-तवेजमल-घ,-त-विजमल-ख । ६-च चिट्ठा म-घ । ७-उतडिया घ । ८-निउदा ख । ९-हारेंति घ । १० रहपहविस्थारा ख । ११ वोज्झहंते ख । १२-तत्तए म-ख ।

२१. [प्र०] ते णं भंते! मणुया निस्सीला, निग्गुणा, निम्मेरा, निप्पच्चक्खाण-पोसहोववासा [1]ओसण्णं मंसाहारा, मच्छाहारा, खोद्दाहारा, कुणिमाहारा कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिंति, कहिं उववज्जिहिंति? [उ०] गोयमा! ओसन्नं नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववज्जिहिंति।

२२. [प्र०] ते णं भंते! सीहा, वग्घा, वगा, दीविया, अच्छा, तरच्छा, परस्सरा, निस्सीला तहेव जाव कहिं उववज्जिहिंति? [उ०] गोयमा! [2]ओसन्नं नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववज्जिहिंति।

२३. [प्र०] ते णं भंते! ढंका, कंका, [3]विलका, मद्दुगा, सिही, निस्सीला तहेव जाव [4]ओसन्नं नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववज्जिहिंति। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति।

सत्तमस्स सयस्स छट्ठो उद्देसओ समत्तो।

ते मनुष्यो मरीने क्यां जशे?

२१. [प्र०] हे भगवन्! शीलरहित, निर्गुण, मर्यादारहित, प्रत्याख्यान अने पोषधोपवासरहित, प्रायः मांसाहारी, मत्स्याहारी, मधनो आहार करनारा, मृत शरीरनो आहार करनारा ते मनुष्यो मरणसमये काल करीने क्यां जशे? [उ०] हे गौतम! प्रायः नारक अने तिर्यंच योनिमां उत्पन्न थशे.

ते सिंहादि मरीने क्यां जशे?

२२. [प्र०] हे भगवन्! ते सिंहो, वाघो, वृको, दीपडाओ, रिंछो, तरक्षो, शरभो ते प्रमाणे निःशील एवा यावत् क्यां उत्पन्न थशे? [उ०] हे गौतम! प्रायः नारक अने तिर्यंचयोनिमां उत्पन्न थशे.

कागडा वगेरे मरीने क्यां जशे?

२३. [प्र०] हे भगवन्! ते कागडाओ, कंको, विल्को, जलवायसो, मयूरो निःशील एवा ते प्रमाणे यावत् [क्यां उत्पन्न थशे?] [उ०] प्रायः नारक अने तिर्यंच योनिमां उत्पन्न थशे. हे भगवन्! ते ए प्रमाणे छे. हे भगवन्! ते ए प्रमाणे छे [एम कही गौतम यावत् विचरे छे]

सातमां शतकमां छट्ठो उद्देशक समाप्त.

१ उस्सन्नं ख। २ उसन्नं ख। ३ विकला क। ४ उस्सण्णं क।

सत्तमो उद्देसओ.

१. [प्र०] संवुडस्स णं भंते ! अणगारस्स आउत्तं गच्छमाणस्स, जाव आउत्तं तुयट्टमाणस्स, आउत्तं वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं गेण्हमाणस्स वा, निक्खिवमाणस्स वा तस्स णं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ ? [उ०] गोयमा ! संवुडस्स णं अणगारस्स जाव तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ, णो संपराइया । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-संवुडस्स णं जाव नो संपराइआ किरिया कज्जइ ? [उ०] गोयमा ! जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा वोच्छिन्ना भवंति तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ, तहेव जाव उस्सुत्तं रीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जइ; से णं अहासुत्तमेव रीयइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव नो संपराइआ किरिया कज्जइ ।

२. [प्र०] रूवी भंते ! कामा, अरूवी कामा ? [उ०] गोयमा ! रूवी कामा, नो अरूवी कामा ।

३. [प्र०] सचित्ता भंते ! कामा, अचित्ता कामा ? [उ०] गोयमा ! सचित्ता वि कामा, अचित्ता वि कामा ।

४. [प्र०] जीवा भंते ! कामा, अजीवा भंते ! कामा ? [उ०] गोयमा ! जीवा वि कामा, अजीवा वि कामा ।

५. [प्र०] जीवाणं भंते ! कामा, अजीवाणं कामा ? [उ०] गोयमा ! जीवाणं कामा, नो अजीवाणं कामा ।

६. [प्र०] कतिविहा णं भंते ! कामा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! दुविहा कामा पन्नत्ता, तं जहा सद्दा य, रूवा य ।

७. [प्र०] रूवी भंते ! भोगा, अरूवी भोगा ? [उ०] गोयमा ! रूवी भोगा, नो अरूवी भोगा ।

सप्तम उद्देशक.

संवृत अनगारने क्रिया

ऐर्यापथिकी क्रिया लागवानुं कारण.

१. [प्र०] हे भगवन् ! उपयोग(सावधानता)पूर्वक गमन करता, यावत् उपयोगपूर्वक सूता-आळोटता के उपयोगपूर्वक वस्त्र, पात्र, कंबल अने पादप्रोंछनक(रजोहरण)ने ग्रहण करता अने मूकता संवृत-संवरयुक्त साधुने शुं ऐर्यापथिकी क्रिया लागे के सांपरायिकी क्रिया लागे ? [उ०] हे गौतम ! संवरयुक्त यावत् ते अनगारने ऐर्यापथिकी क्रिया लागे, सांपरायिकी क्रिया न लागे. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के संवरयुक्त साधुने यावत् सांपरायिकी क्रिया न लागे ? [उ०] हे गौतम ! जेना क्रोध, मान, माया अने लोभ नष्ट थया होय तेने ऐर्यापथिकी क्रिया लागे, तेमज यावत् सूत्रविरुद्ध चालनारने सांपरायिकी क्रिया लागे; ते संवरयुक्त अनगार सूत्र प्रमाणे वर्ते छे, ते हेतुथी हे गौतम ! तेने यावत् सांपरायिकी क्रिया न लागे.

काम अने भोग.

काम रूपी के अरूपी?

२. [प्र०] हे भगवन् ! कामो रूपी छे के अरूपी छे ? [उ०] हे गौतम ! कामो रूपी छे, पण हे आयुष्मान् श्रमण ! कामो अरूपी नथी.

सचित्त के अचित्त?

३. [प्र०] हे भगवन् ! कामो सचित्त छे के अचित्त छे ? [उ०] हे गौतम ! कामो सचित्त पण छे अने अचित्त पण छे.

जीव के अजीव?

४. [प्र०] हे भगवन् ! कामो जीव छे के अजीव छे ? [उ०] हे गौतम ! कामो जीव पण छे अने अजीव पण छे.

जीवोने के अजीवोने?

५. [प्र०] हे भगवन् ! कामो जीवोने होय छे के अजीवोने होय छे ? [उ०] हे गौतम ! कामो जीवोने होय छे, पण अजीवोने कामो होता नथी.

६. [प्र०] हे भगवन् ! कामो केटला प्रकारे कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! कामो बे प्रकारे कह्या छे, जेमके शब्दो अने रूपो.

भोगो रूपी के अरूपी?

७. [प्र०] हे भगवन् ! भोगो रूपी छे के अरूपी छे ? [उ०] हे गौतम ! भोगो रूपी छे, पण अरूपी नथी.

---

१ कामा, समणाउसो ! नो य । २ रुविं भं क-ख । ३ अरुविं भं- क-ख ।

८. [प्र०] सचित्ता भंते ! भोगा, अचित्ता भोगा ? [उ०] गोयमा ! सचित्ता वि भोगा, अचित्ता वि भोगा ।

९. [प्र०] जीवा णं भंते ! भोगा ?–पुच्छा [उ०] गोयमा ! जीवा वि भोगा, अजीवा वि भोगा ।

१०. [प्र०] जीवाणं भंते ! भोगा, अजीवाणं भोगा ? [उ०] गोयमा ! जीवाणं भोगा, नो अजीवाणं भोगा ।

११. [प्र०] कतिविहा णं भंते ! भोगा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! तिविहा भोगा पन्नत्ता, तं जहा–गंधा, रसा, फासा ।

१२. [प्र०] कतिविहा णं भंते ! कामभोगा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! पंचविहा कामभोगा पन्नत्ता, तं जहा–सद्दा, रूवा, गंधा, रसा, फासा ।

१३. [प्र०] जीवा णं भंते ! किं कामी, भोगी ? [उ०] गोयमा ! जीवा कामी वि, भोगी वि । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–जीवा कामी वि. भोगी वि ? [उ०] गोयमा ! सोइंदिय-चक्खिदियाइं पडुच्च कामी, घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदियाइं पडुच्च भोगी, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव भोगी वि ।

१४. [प्र०] नेरइया णं भंते ! किं कामी, भोगी ? [उ०] एवं चेव, एवं जाव थणियकुमारा ।

१५. [प्र०] पुढविकाइयाणं[1] पुच्छा. [उ०] गोयमा ! पुढविकाइया नो कामी, भोगी । [प्र०] से केणट्ठेणं जाव भोगी ? [उ०] गोयमा ! फासिंदियं पडुच्च, से तेणट्ठेणं जाव भोगी; एवं जाव वणस्सइकाइया; बेइंदिया एवं चेव, नवरं जिब्भिंदिय-फासिंदियाइं पडुच्च[2] भोगी; तेइंदिया वि एवं चेव, नवरं घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदियाइं पडुच्च भोगी ।

१६. [प्र०] चउरिंदियाणं पुच्छा [उ०] गोयमा ! चउरिंदिया कामी वि, भोगी वि । [प्र०] से केणट्ठेणं जाव भोगी वि ? [उ०] गोयमा ! चक्खिदियं पडुच्च कामी, घाणिंदिय–जिब्भिंदिय-फासिंदियाइं पडुच्च भोगी, से तेणट्ठेणं जाव भोगी वि । अवसेसा जहा जीवा, जाव वेमाणिया ।

भोगो सचित्त के अचित्त ?

८. [प्र०] हे भगवन् ! भोगो सचित्त छे के अचित्त छे ? [प्र०] हे गौतम ! भोगो सचित्त पण छे अने अचित्त पण छे.

भोगो जीव के अजीव ?

९. [प्र०] हे भगवन् ! भोगो जीवस्वरूप छे के अजीवस्वरूप छे ? [उ०] हे गौतम ! भोगो जीवस्वरूप पण छे अने अजीवस्वरूप पण छे.

भोगो जीवोने होय के अजीवोने ?

१०. [प्र०] हे भगवन् ! भोगो जीवोने होय के अजीवोने होय ? [उ०] हे गौतम ! भोगो जीवोने होय छे, पण अजीवोने भोगो होता नथी.

भोगोना प्रकार.

११. [प्र०] हे भगवन् ! भोगो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! भोगो त्रण प्रकारना कह्या छे; ते आप्रमाणे–गंध, रस अने स्पर्श.

काम-भोगना प्रकार.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! काम–भोग केटला प्रकारे कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! काम अने भोग [बन्ने मळी] पांच प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे–शब्द, रूप, रस, गंध अने स्पर्श.

जीवो कामी के भोगी ?

१३. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जीवो कामी के भोगी छे ? [उ०] हे गौतम ! जीवो कामी पण छे, अने भोगी पण छे. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के जीवो कामी पण छे अने भोगी पण छे ? [उ०] हे गौतम ! श्रोत्रेंद्रिय अने चक्षुने आश्रयी जीवो कामी कहेवाय छे, तेम घ्राणेन्द्रिय, जिह्वेन्द्रिय अने स्पर्शनेन्द्रियनी अपेक्षाए जीवो भोगी कहेवाय छे; ते हेतुथी हे गौतम ! जीवो यावत् भोगी पण छे.

नारको कामी अने भोगी.

१४. हे भगवन् ! शुं नारको कामी छे के भोगी छे ? [उ०] पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं, ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारोने जाणवुं.

पृथिवीकाय.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिकनो प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! पृथिवीकायिको कामी नथी, पण भोगी छे. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी एम कहो छो के पृथिवीकायिको भोगी छे ? हे गौतम ! स्पर्शनेन्द्रियने आश्रयी; ते हेतुथी तेओ यावत् भोगी छे. ए प्रमाणे यावत् वनस्पतिकायिको जाणवा, बेइन्द्रिय जीवो पण ए प्रमाणे जाणवा, परन्तु तेओ जिह्वा अने स्पर्शनेन्द्रियनी अपेक्षाए भोगी छे. तेइन्द्रिय जीवो पण ए प्रमाणे जाणवा, पण घ्राण, जिह्वा अने स्पर्शनेन्द्रियनी अपेक्षाए तेओ भोगी छे.

बेइन्द्रिय ते इन्द्रिय जीवो.

चउरिन्द्रिय जीवो.

१६. [प्र०] चउरिन्द्रिय जीवोनो प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! चउरिन्द्रिय जीवो कामी पण छे अने भोगी पण छे. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी यावत् भोगी पण छे ? [उ०] ते चउरिन्द्रिय जीवो चक्षुनी अपेक्षाए कामी; घ्राण, जिह्वा अने स्पर्शनेन्द्रियनी अपेक्षाए भोगी छे; ते हेतुथी यावत् भोगी समजवा. बाकीना यावत् वैमानिक सुधीना जीवो जेम सामान्य जीवो कह्या तेम जाणवा.

---

१ पुढवीकाईआ–ख । २ पडुच; ते–ख ।

१७. [प्र०] एएसि णं भंते ! जीवाणं कामभोगीणं, नोकामीणं नोभोगीणं, भोगीण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा कामभोगी, नोकामी नोभोगी अणंतगुणा, भोगी अणंतगुणा ।

१८. [प्र०] छउमत्थे णं भंते ! मणूसे जे भविए अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जित्तए, से णूणं भंते ! से खीणभोगी नो पभू उट्ठाणेणं, कम्मेणं, बलेणं, वीरिएणं, पुरिसक्कार–परक्कमेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ? से णूणं भंते ! एयमट्ठं एवं वयह ? [उ०] गोयमा ! णो [1]तिणट्ठे समट्ठे, पभू णं भंते ! से उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार–परक्कमेण वि अन्नयराइं विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए, तम्हा भोगी, भोगे परिच्चयमाणे महानिज्जरे, महापज्जवसाणे भवइ ।

१९. [प्र०] आहोहिए णं भंते ! [2]मणूसे जे भविए अन्नयरेसु देवलोएसु ? [उ०] एवं चेव, जहा छउमत्थे जाव महापज्जवसाणे भवति ।

२०. [प्र०] परमाहोहिए णं भंते ! मणुस्से जे भविए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झित्तए, जाव अंतं करेत्तए, से णूणं भंते ! से खीणभोगी–? [उ०] सेसं जहा छउमत्थस्स ।

२१. [प्र०] केवली णं भंते ! [3]मणूसे जे भविए तेणेव भवग्गहणेणं ? [उ०] एवं जहा परमाहोहिए, जाव महापज्जवसाणे भवइ ।

२२. [प्र०] जे इमे भंते ! असन्निणो पाणा, तं जहा—पुढविकाइआ जाव वणस्सइकाइआ, छट्ठा य एगतिया तसा; एए णं अंधा, मूढा, तमं पविट्ठा, तमपडल-मोहजालपडि[4]च्छन्ना अकामनिकरणं वेदणं वेदन्तीति वत्तव्वं सिया ? [उ०] हंता, गोयमा ! जे इमे असन्निणो पाणा, जाव पुढविकाइआ जाव वणस्सइकाइआ छट्ठा य जाव वेदणं वेदेंतीति वत्तव्वं सिया ।

१७. [प्र०] हे भगवन् ! कामभोगी, नोकामी नोभोगी अने भोगी जीवोमां कया जीवो कया जीवोथी यावत् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! कामभोगी जीवो सौथी थोडा छे, नोकामी नोभोगी जीवो अनन्तगुण छे, अने भोगी जीवो अनन्तगुण छे. — अल्पबहुत्व.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य जे कोइ पण देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थवाने योग्य छे ते क्षीणभोगी–दुर्बलशरीरवाळो उत्थान वडे, कर्म वडे, बल वडे, वीर्य वडे अने पुरुषकार–पराक्रम वडे विपुल एवा भोग्य भोगोने भोगववा समर्थ छे ? हे भगवन् ! खरेखर आ अर्थने आ प्रमाणे कहो छो ? [उ०] हे गौतम ! आ अर्थ योग्य नथी. ते उत्थान वडे पण, कर्म वडे पण, बलवडे पण, वीर्य वडे पण अने पुरुषकार–पराक्रम वडे पण कोइ पण विपुल एवा भोग्य भोगोने भोगववा समर्थ छे, ते माटे ते भोगी भोगोनो त्याग करतो महानिर्जरावाळो अने महापर्यवसान–महाफलवाळो थाय छे. — छद्मस्थ मनुष्य.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! अधोऽवधिक–नियतक्षेत्रना अवधिज्ञानवाळो–मनुष्य जे कोइ पण देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थवाने योग्य छे ते क्षीणभोगी पुरुषकार–पराक्रमवडे विपुल भोगोने भोगववा समर्थ छे ? [उ०] ए प्रमाणे छद्मस्थनी पेठे यावत् ते महापर्यवसान–महाफलवाळो थाय छे. — अधोवधि ज्ञानी.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! परमावधिज्ञानी मनुष्य जे तेज भवमां सिद्ध थवाने यावत् [सर्व दुःखोनो] अन्त करवाने योग्य छे, हे भगवन् ! खरेखर ते क्षीणभोगी विपुल भोगोने भोगववा समर्थ छे ? [उ०] बाकीनुं सर्व छद्मस्थनी पेठे जाणवुं. — परमावधि ज्ञानी.

२१. [प्र०] केवलज्ञानी मनुष्य जे तेज भवमां सिद्ध थवाने यावत् [दुःखोनो] अन्त करवाने योग्य छे ते–[विपुल भोगोने भोगववा समर्थ छे ?] [उ०] परमावधिज्ञानी पेठे जाणवुं, यावत् ते महापर्यवसान–महाफलवाळो थाय छे. — केवलज्ञानी.

२२. [प्र०] हे भगवन् ! जे आ *असंज्ञी–मनरहित प्राणीओ छे, जेमके, पृथिवीकायिको यावत् वनस्पतिकायिको अने छट्ठा केटला एक (संमूर्छिम) त्रसजीवो, जेओ अंध–अज्ञानी, मूढ, अज्ञानान्धकारमां प्रवेश करेला, अज्ञानरूप आवरण अने मोहजाल वडे ढंकायेला छे तेओ अकामनिकरण–अनिच्छापूर्वक–वेदना वेदे छे एम कहेवाय ? [उ०] हा, गौतम ! जे आ असंज्ञी प्राणीओ पृथिवीकायिको यावत् वनस्पतिकायिको अने छट्ठा [संमूर्छिम त्रसो] अनिच्छापूर्वक वेदना वेदे छे एम कहेवाय. — असंज्ञी जीवो अकामपूर्वक वेदना वेदे ?

१ इणट्ठे घ । २ मणुस्से घ । ३ मणुस्से ख । ४–च्छिन्ना ख ।

२२. * 'जे असंज्ञी–मनरहित प्राणीओ छे, तेओने मन नहि होवाथी इच्छाशक्ति अने ज्ञानशक्तिने अभावे अकामनिकरण–अनिच्छापूर्वक अज्ञानपणे वेदना–सुखदुःखनो अनुभव करे ?' आवो प्रश्ननो भावार्थ छे, तेना उत्तरमां 'हा' अनुभव करे एम कह्युं छे.

२३. [प्र०] अत्थि णं भंते ! पभू वि अकामनिकरणं वेदणं [1]वेदेंति ? [उ०] हंता, गोयमा ! अत्थि ।

२४. [प्र०] कहं णं भंते ! पभू वि अकामनिकरणं वेदणं वेदेंति ? [उ०] गोयमा ! जे णं णो पभू विणा [2]पदीवेणं अंधकारंसि रूवाइं पासित्तए, जे णं नो पभू पुरओ रूवाइं अणिज्झा[3]इत्ता णं पासित्तए, जे णं नो पभू मग्गओ रूवाइं अणवयक्खित्ता णं पासित्तए, जे णं नो पभू पासओ रूवाइं [4]अणवलोइत्ता णं पासित्तए, जे णं नो पभू उड्ढं रूवाइं अणालो[5]एत्ता णं पासित्तए, जे णं नो पभू अहे रूवाइं अण[6]लोइत्ता णं पासित्तए, एस णं गोयमा ! पभू वि अकामनिकरणं वेदणं वेदेंति ।

२५. [प्र०] अत्थि णं भंते ! पभू वि पकामनिकरणं वेदणं वेदेंति ? [उ०] हन्ता, अत्थि ।

२६. [प्र०] कहं णं भंते ! पभू वि पकामनिकरणं वेदणं वेदेंति ? [उ०] गोयमा ! जे णं नो पभू समुद्दस्स पारं गमित्तए, जे णं नो पभू समुद्दस्स पारगयाइं रूवाइं पासित्तए, जे णं नो पभू देवलोगं गमित्तए, जे णं नो पभू देवलोगगयाइं रूवाइं पासित्तए, एस णं गोयमा ! पभू वि पकामनिकरणं वेदणं वेदेंति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

सत्तमस्स सयस्स सत्तमो उद्देसओ समत्तो ।

समर्थ छतां अकाम वेदना वेदे?

२३. [प्र०] *हे भगवन् ! शुं एम छे के समर्थ छतां (संज्ञी छतां) पण जीव अनिच्छापूर्वक वेदनाने वेदे ? [उ०] हे गौतम ! हा एम छे.

समर्थ छतां पण अकामपूर्वक वेदना केम वेदे?

२४. [प्र०] हे भगवन् ! समर्थ छतां पण जीव अनिच्छापूर्वक वेदनाने केम वेदे ? [उ०] हे गौतम ! जे समर्थ छतां अंधकारमां प्रदीप शिवाय रूपो (पदार्थो) जोवाने समर्थ नथी, जे अवलोकन कर्या शिवाय आगळ रहेला रूपो जोवाने समर्थ नथी, जे अवेक्षण कर्या विना पाछळ रहेला रूपो जोवा समर्थ नथी, जे आलोचन कर्या शिवाय उपरना रूपो जोवाने समर्थ नथी, जे आलोचन कर्या शिवाय नीचेना रूपो जोवाने समर्थ नथी; हे गौतम ! ते आ समर्थ छतां पण अनिच्छापूर्वक वेदनाने वेदे छे.

समर्थ तीव्रेच्छापूर्वक वेदना वेदे?

२५. [प्र०] †हे भगवन् ! एम छे के समर्थ पण प्रकामनिकरण–तीव्रेच्छापूर्वक–वेदनाने वेदे ? [उ०] हे गौतम ! हा वेदे.

समर्थ तीव्रेच्छापूर्वक वेदनाने केम वेदे?

२६. [प्र०] हे भगवन् ! समर्थ छतां पण तीव्रेच्छापूर्वक वेदनाने केम वेदे ? [उ०] हे गौतम ! जे समुद्रनो पार पामवा समर्थ नथी, जे समुद्रने पार रहेला रूपो जोवा समर्थ नथी, जे देवलोकमां जवा समर्थ नथी, अने जे देवलोकमां रहेला रूपोने जोवा समर्थ नथी; हे गौतम ! ते समर्थ छतां पण तीव्रेच्छापूर्वक वेदनाने वेदे. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, [एम कही गौतम यावद् विचरे छे.]

सातमां शतकमां सातमो उद्देशक समाप्त.

---

१ वेदेंति ख । २ दीवेणं घ । ३–ज्झाएत्ता ख । ४ अणुलो–घ, अणालोइत्ता ख । ५ –एयत्ता ख । ६ अणालोयत्ता ख ।

२३–२४. * जे संज्ञी–मनसहित–समर्थ छे, तेओ पण अनिच्छापूर्वक अज्ञानपणे सुखदुःखनो अनुभव करे ? हा तेओ पण करे ? हे भगवन् ! जेओ समर्थ–इच्छाशक्ति अने ज्ञानशक्तियुक्त–छतां तेओ अनिच्छापूर्वक अज्ञानपणे शी रीते सुखदुःखनो अनुभव करे ? तेना उत्तरमां कह्युं छे के जे समर्थ (जोवानी शक्तिवाळो) छतां अन्धकारमां रहेला पदार्थोने प्रदीप शिवाय जोइ शकतो नथी, तेम पाछळ, उंचे, नीचे रहेला पदार्थोने उपयोग–ख्याल–शिवाय जोइ शकतो नथी, ते समर्थ छतां–इच्छाशक्ति अने ज्ञानशक्तियुक्त छतां–अज्ञानदशामां सुखदुःखनो अनुभव करे छे. ज्यारे असंज्ञी जीव सामर्थ्यने अभावे इच्छा अने ज्ञानशक्तिरहित होवाथी अनिच्छा अने अज्ञानदशामां सुखदुःख वेदे छे, तेम संज्ञी इच्छा अने ज्ञानशक्ति होवा छतां ते शक्तिनी प्रवृत्तिने अभावे अनिच्छा अने अज्ञानदशामां सुख दुःख वेदे छे.

२५–२६. † संज्ञी मनसहित होवा छतां प्रकामनिकरण–तीव्र अभिलाषपूर्वक–सुख दुःखने वेदे ? हा वेदे. हे भगवन् ! शी रीते वेदे ? तेना उत्तरमां कह्युं छे के जे समुद्रनी पार जवाने समर्थ नथी, तेने पार रहेला रूपो जोवाने समर्थ नथी ते तीव्र अभिलाषपूर्वक सुख–दुःखने वेदे छे. अहीं ते इच्छाशक्ति अने ज्ञानशक्ति संपन्न छे, परन्तु तेने प्राप्त करवानुं सामर्थ्य नथी, मात्र तेनो तीव्र अभिलाष छे, तेथी ते सुखदुःखने वेदे छे. असंज्ञी जीवो इच्छा अने ज्ञानशक्तिने अभावे अनिच्छा अने अज्ञानपूर्वक सुख–दुःख वेदे छे. संज्ञी जीवो इच्छा अने ज्ञानशक्तियुक्त होवा छतां उपयोगने अभावे अनिच्छा अने अज्ञानपूर्वक सुख–दुःख वेदे छे. वळी संज्ञी जीवो समर्थ तेम इच्छायुक्त होवा छतां प्राप्तिना सामर्थ्यने अभावे मात्र तीव्र अभिलाषथी सुख दुःख वेदे छे.

अट्ठमो उद्देसओ ।

१. [प्र०] छउमत्थे णं भंते ! मणूसे तीयमणंतं सासयं समयं केवलेणं संजमेणं–एवं जहा पढमसए चउत्थे उद्देसए तहा भाणियव्वं, जाव अलमत्थु ।

२. [प्र०] से णूणं भंते ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे ? [उ०] हंता, गोयमा ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य एवं जहा 'रायप्पसेणइज्जे' जाव खुड्डियं वा, महालियं वा से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव समे चेव जीवे ।

३. [प्र०] नेरइयाणं भंते ! पावे कम्मे जे य कडे, जे य कज्जइ, जे य कज्जिस्सइ सव्वे से दुक्खे, जे निज्जिण्णे से सुहे ? [उ०] हंता, गोयमा ! नेरइयाणं पावे कम्मे जाव सुहे । एवं जाव वेमाणियाणं ।

४. [प्र०] कति णं भंते ! सन्नाओ पन्नत्ताओ ? [उ०] गोयमा ! दस सन्नाओ पन्नत्ताओ, तं जहा–आहारसन्ना, भयसन्ना, मेहुणसन्ना, परिग्गहसन्ना, कोहसन्ना, माणसन्ना, मायासन्ना, लोभसन्ना, लोगसन्ना, ओहसन्ना । एवं जाव वेमाणियाणं ।

५. नेरइया दसविहं वेयणं पच्चणुभवमाणा[1] विहरंति, तं जहा–सीयं, उसिणं[2], खुहं, पिवासं, कंडुं, परज्झं, जरं, दाहं, भयं, सोगं ।

अष्टम उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य अनंत अने शाश्वत अतीत काळे केवळ संयम वडे * [यावत् सिद्ध थयो ?] [उ०] ए प्रमाणे जेम प्रथम शतकना चोथा उद्देशकमां † कह्युं छे तेम यावत् ‡ 'अलमस्तु' पाठ सुधी कहेवुं.

छद्मस्थ मनुष्य केवळ संयम वडे सिद्ध थयो ?

२. [प्र०] हे भगवन् ! खरेखर हस्ती अने कुंथुनो जीव समान छे ? [उ०] हा गौतम ! हस्ती अने कुंथुनो [जीव समान छे.] जेम 'रायपसेणीय' सूत्रमां कह्युं छे ते प्रमाणे यावत् 'खुड्डियं वा महालियं वा' ए पाठ सुधी जाणवुं.

हस्ती अने कुंथुनो जीव समान.

३. [प्र०] हे भगवन् ! नारको वडे जे पाप कर्म करायेलुं छे, कराय छे अने कराशे ते सघळुं दुःखरूप छे, अने जे निर्जीर्ण (क्षीण) थयुं ते सुखरूप छे ? [उ०] हा, गौतम ! नारको वडे जे पाप कर्म करायुं [ते दुःखरूप छे, अने जे निर्जीर्ण थयुं] ते यावत् सुखरूप छे. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोने जाणवुं.

पाप कर्म दुःखरूप.

४. [प्र०] हे भगवन् ! संज्ञाओ केटली कहेली छे ? [उ०] हे गौतम ! दश संज्ञाओ कही छे. जेम, १ आहारसंज्ञा, २ भयसंज्ञा, ३ मैथुनसंज्ञा, ४ परिग्रहसंज्ञा, ५ क्रोधसंज्ञा, ६ मानसंज्ञा, ७ मायासंज्ञा, ८ लोभसंज्ञा, ९ लोकसंज्ञा, अने १० ओघसंज्ञा. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोने जाणवुं.

दश संज्ञाओ.

५. [प्र०] नारको दश प्रकारनी वेदनानो अनुभव करता होय छे; ते आ प्रमाणे—१ शीत, २ उष्ण, ३ क्षुधा, ४ पिपासा-तरस, ५ कंडू–खरज, ६ परतन्त्रता, ७ ज्वर, ८ दाह, ९ भय, १० शोक.

नारकोने दश प्रकारनी वेदना.

---

[1] –णुब्भव ख । [2] उसीणं ख ।

१. * अवशिष्ट अंश—केवल संवर वडे, केवल ब्रह्मचर्य वडे, केवल अष्ट प्रवचनमाताओना पालन वडे सिद्ध थयो, बोध पाम्यो, यावत् सर्व दुःखोनो अन्त कर्यो ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी.

† जुओ—(पृ. १३७ प्र. १६९–१६१.) ‡ अवशिष्ट अंश—[प्र०] उत्पन्न ज्ञानदर्शनने धारण करनारा अरिहंत, जिन, केवली पूर्ण छे एम कहेवाय ? [उ०] हा, गौतम ! उत्पन्न ज्ञान–दर्शनने धारण करनारा अरिहंत जिन केवली अलमस्तु–पूर्ण छे एम कहेवाय.

६. [प्र०] से णूणं भंते ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया कज्जति ? [उ०] हंता, गोयमा ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य जाव कज्जति। [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जाव कज्जइ ? [उ०] गोयमा ! अविरतिं पडुच्च, से तेणट्ठेणं जाव कज्जइ।

७. [प्र०] आहाकम्मं णं भंते ! भुंजमाणे किं बंधइ, किं पकरेइ, किं चिणाइ, किं उवचिणाइ ? [उ०] एवं जहा पढमे सए नवमे उद्देसए तहा भाणियव्वं, जाव सासए पंडिए, पंडियत्तं असासयं। सेवं भंते !, सेवं भंते ! त्ति।

सत्तमस्स सयस्स अट्ठमो उद्देसो समत्तो।

हाथी अने कुंथुने समान अप्रत्याख्यान क्रिया.

६. [प्र०] हे भगवन् ! खरेखर हाथी अने कुंथुने अप्रत्याख्यान क्रिया समान होय ? [उ०] हा, गौतम ! हाथी अने कुन्थुने यावत् अप्रत्याख्यान क्रिया समान होय छे. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी एम कहो छो के हाथी अने कुन्थुने समान अप्रत्याख्यान क्रिया होय ? [उ०] हे गौतम ! अविरतिने आश्रयी, ते हेतुथी यावत् हाथी अने कुंथुने समान अप्रत्याख्यान क्रिया होय.

आधाकर्म.

७. [प्र०] हे भगवन् ! आधाकर्म आहारने खानार [साधु] शुं बांधे, शुं करे, शेनो चय करे अने शेनो उपचय करे ? [उ०] जेम *प्रथम शतकना नवमां उद्देशकमां कह्युं छे ए प्रमाणे† यावत् ‡'पंडित शाश्वत छे, पण पंडितपणुं अशाश्वत छे' त्यां सुधी कहेवुं. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे [एम कही गौतम यावत् विचरे छे].

सातमां शतकमां आठमो उद्देशक समाप्त.

७. * पृ. २१०. प्र. ३०३-३०९. † अवशिष्ट अंश—हे गौतम ! आधाकर्म आहारने खानार [साधु] आयुषकर्म शिवाय सातकर्मनी प्रकृतिओ शिथिलबंधथी बंधायेली होय तो तेनो गाढ बन्ध करे छे, यावत् संसारमां भ्रमण करे छे.

‡ अवशिष्ट अंश—हे भगवन् ! अस्थिर वस्तु परावर्तन पामे, स्थिर वस्तु परावर्तन न पामे ? अस्थिर वस्तु भांगे, स्थिर न भांगे ? बालक शाश्वत छे, बालकपणुं अशाश्वत छे ? पंडित शाश्वत छे, पंडितपणुं अशाश्वत छे ? [उ०] हे गौतम ! अस्थिर वस्तु परावर्तन पामे, यावत् पंडितपणुं अशाश्वत छे.

नवमो उद्देसओ।

१. [प्र०] असंवुडे णं भंते! अणगारे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगवन्नं एगरूवं विउव्वित्तए? [उ०] णो तिणट्ठे समट्ठे।

२. [प्र०] असंवुडे णं भंते! अणगारे बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू एगवन्नं एगरूवं जाव–[उ०] हंता, पभू।

३. [प्र०] से भंते! किं इहगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति, तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति, अन्नत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ? [उ०] गोयमा! इहगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ, नो तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ, नो अन्नत्थगए पोग्गले जाव विकुव्वति। एवं एगवन्नं अणेगरूवं चउभंगो जहा छट्ठसए नवमे उद्देसए तहा इहा वि भाणियव्वं, नवरं अणगारे इहगयं(ए)इहगए चेव पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ, सेसं तं चेव, जाव लुक्खपोग्गलं निद्धपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए? हन्ता, पभू। से भंते! किं इहगए पोग्गले परियाइत्ता, जाव नो अन्नत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ।

नवमो उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन्! असंवृत–प्रमत्त साधु–बहारना पुद्गलोने ग्रहण कर्या शिवाय एकवर्णवाळुं एक रूप विकुर्ववा समर्थ छे? [उ०] हे गौतम! ए अर्थ योग्य नथी.

असंवृत साधु.

२. [प्र०] हे भगवन्! असंवृत साधु बहारना पुद्गलोने ग्रहण करी एकवर्णवाळुं एक रूप यावत् [विकुर्ववा समर्थ छे?] [उ०] हा, समर्थ छे.

३. [प्र०] हे भगवन्! ते साधु शुं अहीं–मनुष्य लोकमां रहेला–पुद्गलोने ग्रहण करीने विकुर्वे, त्यां रहेला पुद्गलोने ग्रहण करीने विकुर्वे के अन्य स्थळे रहेला पुद्गलोने ग्रहण करीने विकुर्वे? [उ०] हे गौतम! अहीं रहेला पुद्गलोने ग्रहण करी विकुर्वे, पण त्यां रहेला पुद्गलोने ग्रहण करी न विकुर्वे, तेम अन्यत्र रहेला पुद्गलोने ग्रहण करी यावत् न विकुर्वे. ए प्रमाणे एकवर्ण अने अनेकरूप–इत्यादि चतुर्भंगी जेम *छट्ठा शतकना नवमां उद्देशकमां कही छे तेम अहीं पण कहेवी; परन्तु एटलो विशेष छे के अहीं रहेलो साधु अहीं रहेला पुद्गलोने ग्रहण करी विकुर्वे, बाकीनुं ते प्रमाणे यावत् 'रुक्षपुद्गलोने स्निग्धपुद्गलो पणे परिणमाववा समर्थ छे? हा, समर्थ छे; हे भगवन्! शुं अहीं रहेला पुद्गलोने ग्रहण करी, यावत् अन्यत्र रहेला पुद्गलोने ग्रहण कर्या शिवाय विकुर्वे छे' त्यां सुधी जाणवुं.

---

१ बाहिरिए ख। २ परियादितित्ता क। ३ विगुव्वति क। ४ इहइं इह– क।

३. *जुओ (पृ. ३३८ प्र. २–६).

४. [प्र०] णायमेयं अरहया, सुयमेयं अरहया, विन्नायमेयं अरहया–महासिलाकंटए संगामे। महासिलाकंटए णं भंते! संगामे वट्टमाणे के जइत्था, के पराजइत्था? [उ०] गोयमा! वज्जी विदेहपुत्ते जइत्था; नव मल्लई नव लेच्छई कासी-कोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो पराजइत्था। तए णं से कोणिए राया महासिलाकंटकं संगामं उवट्ठियं जाणित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! उदाइं हत्थिरायं पडिकप्पेह, हय-गय-रह-जोह-कलियं चाउरंगिणिं सेणं सन्नाहेह, सन्नाहेत्ता मम एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह। तए णं ते कोडुंबियपुरिसा कोणिएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणा हट्ठ-तुट्ठ- जाव अंजलिं कट्टु 'एवं सामी, तहत्ति' आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति, पडिसुणित्ता खिप्पामेव छेयायरियोवएसमतिकप्पणा–विकप्पेहिं सुनिउणेहिं एवं जहा उववाइए जाव भीमं संगामियं अउज्झं उदाइं हत्थिरायं पडिकप्पेंति, हय-गय- जाव सन्नाहेंति, संनाहित्ता जेणेव कूणिए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता कर-यल- जाव कूणियस्स रन्नो तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति। तए णं से कूणिए राया जेणेव मज्जणघरं तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुप्पविसइ, मज्जणघरं अणुप्पविसित्ता ण्हाए, कयबलिकम्मे, कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते, सव्वालंकारविभूसिए, सन्नद्ध-बद्ध-वम्मियकवए, उप्पीलियसरासणपट्टीए, पिणद्धगेवेज्ज–विमलवरबद्धचिंधपट्टे, गहियाउहप्पहरणे, सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं चउचामरवालवीतियंगे, मंगलजयसद्दकयालोए एवं जहा उववाइए जाव उवागच्छित्ता उदाइं हत्थिरायं दुरूढे। तए णं से कूणिए राया हारोत्थयसुकयरइयवच्छे जहा उववाइए जाव सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं उद्धुव्वमाणीहिं हय-गय-रहपवरजोहकलियाए

महाशिला कंटक संग्राम.

४. [प्र०] अर्हते जाण्युं छे, अर्हते प्रत्यक्ष कर्युं छे, अर्हते विशेषतः जाण्युं छे के महाशिलाकंटक नामे संग्राम छे. हे भगवन्! *महाशिलाकंटक संग्राम थतो हतो त्यारे कोण जीत्या अने कोण हार्या? [उ०] हे गौतम! वज्जी (इन्द्र) अने विदेहपुत्र (कूणिक) जीत्या, नव मल्लकी अने नव लेच्छकी जेओ काशी अने कोशलदेशना अढार गणराजाओ हता तेओ पराजय पाम्या. त्यार पछी–महाशिलाकंटक संग्राम विकुर्व्या पछी–ते कूणिक राजा महाशिला कंटक नामे संग्राम उपस्थित थएलो जाणी पोताना कौटुम्बिक पुरुषोने बोलावे छे, बोलावीने तेओने एम कह्युं के हे देवानुप्रियो! शीघ्र उदायि नामना पट्टहस्तीने तैयार करो, अने घोडा, हाथी, रथ अने योधाओथी युक्त चतुरंग सेनाने तैयार करो, तैयार करी मारी आज्ञा जल्दी पाछी आपो. त्यार बाद ते कूणिकना एम कहेवाथी ते कौटुम्बिक पुरुषो हृष्ट तुष्ट थइ यावत् अंजली करीने हे स्वामिन्! ए प्रमाणे 'जेवी आज्ञा' एम कहीने आज्ञा अने विनय वडे वचनने स्वीकार करे छे. वचनने स्वीकार करीने कुशळ आचार्योना उपदेश वडे तीक्ष्ण मतिकल्पनाना विकल्पोथी †ओपपातिकसूत्रमां कह्या प्रमाणे यावद् भयंकर अने जेनी साथे कोइ युद्ध न करी शके एवा उदायि नामना मुख्य हस्तीने तैयार करे छे; घोडा हाथी इत्यादिथी युक्त यावत् [चतुरंग सेनाने तैयार करे छे.] ते सेनाने सज्ज करीने ज्यां कूणिकराजा छे त्यां तेओ आवे छे, आवीने करतल [जोडीने] कूणिक राजाने ते आज्ञा पाछी आपे छे. त्यार बाद ते कूणिक राजा ज्यां स्नानगृह छे त्यां आवे छे, अने त्यां आवीने स्नानगृहमां प्रवेश करे छे, त्यां प्रवेश करी न्हाइ बलिकर्म (पूजा) करी प्रायश्चित्तरूप (विघ्नोनो नाश करनार) कौतुक (मषीतिलकादि) अने मंगलो करी सर्वालंकारथी विभूषित थइ, सन्नद्ध बद्ध थइ बख्तरने धारण करी वाळेला धनुर्दंडने ग्रहण करी, डोकमा आभूषण पहेरी, उत्तमोत्तम चिह्नपट्ट बांधी, आयुध अने प्रहरणोने धारण करी, माथे धारण कराता कोरंटक पुष्पनी माळावाळा छत्र सहित, जेनु अंग चार चामरोना वाळ वडे वींजायलुं छे, जेना दर्शनथी मंगल अने जयशब्द थाय छे एवो (कूणिक) ‡ओपपातिकसूत्रमां कह्या प्रमाणे यावत् आवीने उदायिनामे प्रधानहस्ती उपर चढ्यो. त्यार बाद हारवडे तेनुं वक्षःस्थळ ढंकायेलुं होवाथी रति उत्पन्न करतो ¶ओपपातिकसूत्रमां कह्या प्रमाणे वारंवार वींजाता श्वेत चामरो वडे यावत् घोडा, हाथी, रथ अने उत्तम योद्धाओथी युक्त चतुरंग सेनानी साथे परिवारयुक्त, महान् सुभटोना विस्तीर्ण समूहथी व्याप्त कूणिकराजा ज्यां महाशिलाकंटक

---

१ जयित्था ख। २ सद्दावेई ख। ३ तेणेव उवागच्छइत्ता घ। ४ गच्छइ घ। ५ तेणेव उवा- घ। ६ अणुपवि-घ। ७ सकोरंट-क।

४. * महाशिलाकंटक संग्रामनो संबन्ध आ प्रमाणे छे—चम्पानगरीमां कूणिक नामे राजा हतो, तेने हल्ल अने विहल्ल नामे बे नाना भाईओ हता, ते बन्ने हमेशा सेचनक गन्धहस्ति उपर बेसी विलास करता, ते जोइने कूणिकराजनी पत्नी पद्मावतीए अदेखाइथी तेनी पासेथी ते हस्ती लइ लेवा माटे कूणिकने कह्युं. कूणिके तेओनी पासे हस्तीनी मागणी करी. ते बन्ने भाइओ कूणिकना भयथी नासीने हस्ती अने परिवारसहित वैशाली नगरीमां पोताना मामा चेटक राजानी पासे गया. कूणिके दूत मोकली ते बन्ने भाईओने सोंपी देवानी मागणी करी, परन्तु चेटकराजाए सोंपवानी ना कही. कूणिके कहेराव्युं के जो तुं ते बन्ने भाईओने न मोकल तो युद्ध करवा तैयार था. चेटकराजाए उत्तर आप्यो हुं तैयार छुं. तेथी कूणिके पोताना कालादि दश भाईओने चेटकराजानी साथे युद्ध करवा बोलाव्या. आ वात जाणीने चेटकराजाए पण अढार गणराजाओने एकठा कर्या. युद्ध शरु थयुं. चेटकराजने एवुं व्रत (नियम) हतुं ते दिवसमां एकवार एक बाण फेंकता, परन्तु तेनुं बाण कदी निष्फळ जतुं नहोतुं. कूणिकना सैन्यनो दंडनायक काल नामे तेनो भाइ हतो, ते युद्ध करता चेटकराजानी पासे गयो. चेटके तेने एक बाण वडे पाड्यो, कूणिकनुं सैन्य नाठुं, बन्ने सैन्यो पोताने स्थाने गया. दश दिवसमां चेटकराजाए कूणिकना कालादि दश भाईओनो नाश कर्यो. अगिआरमे दिवसे कूणिके चेटकने जितवा माटे देवनुं आराधन करवा अष्टम (त्रण उपवास) तप कर्युं तेथी शक्र अने चमरेन्द्र आव्या. शक्रे कह्युं के चेटक परमश्रावक छे तेथी तेने हुं मारीश नहि, पण तारुं रक्षण करीश. तेथी ते शक्रे कूणिकनुं रक्षण करवा सारु वज्रना जेवुं अभेद्य कवच कर्युं अने चमरेन्द्रे बे संग्राम विकुर्व्या—महाशिलाकंटक अने रथमुशल संग्राम. जुओ–(भ. टी. प. ३१६.)

† जुओ (औप. प. ६२–१). ‡ जुओ (औप० प. ६६–२.) ¶ जुओ (औप० प. ७२–१)

चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे, महयाभडचडगरविंदपरिक्खित्ते जेणेव महासिलाकंटए संगामे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता महासिलाकंटयं संगामं ओयाए । पुरओ य से सक्के देविंदे देवराया एगं महं अभेज्जकवयं वइरपडिरूवगं विउव्वित्ता णं [1]चिट्ठइ । एवं खलु दो इंदा संगामं संगामेंति, तं जहा–देविंदे य, मणुइंदे य । एगहत्थिणा वि णं पभू कूणिए राया पराजिणित्तए । तए णं से कूणिए राया महासिलाकंटकं संगामं संगामेमाणे नव मल्लई नव लेच्छई कासी-कोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो हयमहियपवरवीरघाइय-विवडियचिंधद्धयपडागे किच्छपाणगए दिसो दिसिं पडिसेहित्था ।

५. [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ महासिलाकंटए संगामे ? [उ०] गोयमा ! महासिलाकंटए णं संगामे वट्टमाणे जे तत्थ आसे वा, हत्थी वा, जोहे वा, सारही वा तणेण वा, पत्तेण वा, कट्ठेण वा, सक्कराए वा, अभिहम्मति सव्वे से जाणेइ महासिलाए अहं अभिहए, से तेणट्ठेणं गोयमा ! महासिलाकंटए संगामे ।

६. [प्र०] महासिलाकंटए णं भंते ! संगामे वट्टमाणे कति जणसयसाहस्सीओ वहियाओ ? [उ०] गोयमा ! चउरासीइं जणसयसाहस्सीओ वहियाओ ।

७. [प्र०] ते णं भंते ! मणुया निस्सीला, जाव निप्पच्चक्खाणपोसहो-ववासा, रुट्ठा, परिकुविया, समरवहिया, अणुवसंता कालमासे कालं किच्चा कहिं गया, कहिं उववन्ना ? [उ०] गोयमा ! ओसन्नं नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववन्ना ।

८. [प्र०] णायमेयं अरहया, सुयमेयं अरहया, विन्नायमेयं अरहया–रहमुसले संगामे । रहमुसले णं भंते ! संगामे वट्टमाणे के जइत्था, के पराजइत्था ? [उ०] गोयमा ! वज्जी, विदेहपुत्ते, चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया जइत्था; नवमल्लई, नव लेच्छई पराजयित्था । तए णं से कूणिए राया रहमुसलं संगामं उवट्ठियं, सेसं जहा महासिलाकंटए, नवरं भूयाणंदे हत्थिराया जाव रहमुसलं संगामं ओयाए । पुरओ य से सक्के देविंदे देवराया, एवं तहेव जाव चिट्ठंति; मग्गओ य से चमरे असुरे असुरिंदे असुरकुमारराया एगं महं आयासं किढिणपडिरूवगं विउव्वित्ता णं चिट्ठइ । एवं खलु तओ इंदा संगामं संगामेंति, तं जहा–देविंदे य, मणुइंदे य, असुरिंदे य । एग हत्थिणा वि णं पभू कूणिए राया जइत्तए, तहेव जाव दिसोदिसिं पडिसेहित्था ।

संग्राम छे त्यां आवे छे, त्यां आवीने ते महाशिलाकंटक संग्राममां उतर्यो, तेनी आगळ देवनो इन्द्र देवनो राजा शक्र एक मोटुं वज्रना सरखुं अभेद्य कवच (बख्तर) विकुर्वीने उभो छे. ए प्रमाणे बे इन्द्रो संग्राम करे छे, जेमके एक देवेन्द्र अने बीजो मनुजेन्द्र. हवे ते कूणिक राजा एक हाथी वडे पण शत्रुपक्षनो पराजय करवा समर्थ छे. त्यार बाद ते कूणिके महाशिलाकंटक संग्रामने करता नवमल्लकि अने नव-लेच्छकि जेओ काशी अने कोसलाना अढार गणराजाओ हता, तेओना महान् योद्धाओने हण्या, घायल कर्या अने मारी नाख्या, तेओनी चिह्नयुक्त ध्वजा अने पताकाओ पाडी नांखी, अने जेओना प्राण मुश्केलीमां छे एवा तेओने [युद्धमांथी] चारे दिशाए नसाडी मूक्या.

५. [प्र०] हे भगवन् ! शा कारणथी एम कहेवाय छे के ते महाशिलाकंटक संग्राम छे ? [उ०] हे गौतम ! ज्यारे महाशिलाकंटक संग्राम थतो हतो त्यारे ते संग्राममां जे घोडा, हाथी, योधा अने सारथिओ तृण, काष्ठ, पांदडा के कांकरा वती हणाय त्यारे तेओ सघळा एम जाणे के हुं महाशिलाथी हणायो, ते हेतुथी हे गौतम ! ते महाशिलाकंटक संग्राम कहेवाय छे.

महाशिला कंटक शाथी कहेवाय छे ?

६. [प्र०] हे भगवन्! ज्यारे महाशिलाकंटक संग्राम थतो हतो त्यारे तेमां केटला लाख माणसो हणाया ? [उ०] हे गौतम ! चोराशी लाख माणसो हणाया.

महाशिला कंटकमां केटला लाख माणसोनो संहार थयो ? मरीने तेओ क्यां उत्पन्न थया ?

७. [प्र०] हे भगवन् ! निःशील, यावत् प्रत्याख्यान अने पोषधोपवासरहित, रोषे भरायेला, गुस्से थयेला, युद्धमां घायल थयेला, अनुपशांत एवा ते मनुष्यो कालसमये मरण पामीने क्यां गया, क्यां उत्पन्न थया ? [उ०] हे गौतम ! घणे भागे तेओ नारक अने तिर्यंचयोनिमां उत्पन्न थया छे.

८. [प्र०] अर्हते जाण्युं छे, अर्हते प्रत्यक्ष कर्युं छे, अर्हते विशेष प्रकारे जाण्युं छे के रथमुशल नामे संग्राम छे. हे भगवन् ! ज्यारे रथमुशल नामे संग्राम थतो हतो त्यारे कोनो विजय थयो, अने कोनो पराजय थयो ? [उ०] हे गौतम ! वज्जी (इन्द्र), विदेहपुत्र (कूणिक) अने असुरेन्द्र असुर कुमारराजा चमर एओ जीत्या; नव मल्लकि अने नव लेच्छकि राजाओ पराजय पाम्या. त्यार बाद ते कूणिकराजा रथमुशल संग्राम उपस्थित थयेलो जाणी [पोताना कौटुम्बिक पुरुषोने बोलावे छे]. बाकीनुं [सर्व वृत्तान्त] *महाशिलाकंटक संग्रामनी पेठे जाणवुं. परन्तु विशेष ए छे के अहीं भूतानंद नामे प्रधान हस्ती छे; यावत् ते [कूणिक] रथमुशलसंग्राममां उतर्यो. तेनी आगळ देवेन्द्र देवराज शक्र छे. ए प्रमाणे पूर्वनी पेठे यावत् रहे छे. पाछळ असुरेन्द्र असुरकुमारनो राजा चमर एक मोटुं लोढानुं †किठीनना जेवुं कवच विकुर्वीने रहेलो छे. ए प्रमाणे खरेखर त्रण इन्द्रो युद्ध करे छे. जेमके–देवेन्द्र, मनुजेन्द्र अने असुरेन्द्र. हवे ते कूणिक एक हाथीवडे पण शत्रुओनो पराजय करवा समर्थ छे. यावत् तेणे पूर्वे कह्या प्रमाणे [शत्रुओने] चारे दिशाए नसाडी मुक्या.

रथमुशलसंग्राम.

कोनो जय अने कोनो पराजय ?

१ तेणेव उवा- घ । २ चिट्ठति घ । ३ पराजइत्तए क । ४ –मूसले ख । ५ – घ । मूसलं ६ भूयाणिंदे ख । ७ जयत्तए ख ।

* जुओ (सू. ४). ८. † किठिन–वांसनुं बनावेलुं तापसनुं पात्र.–टीका.

९. [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ रहमुसले संगामे ? [उ०] गोयमा ! रहमुसले णं संगामे वट्टमाणे एगे रहे अणासए, असारहिए, अणारोहए, समुसले महया जणक्खयं, जणवहं, जणप्पमद्दं, जणसंवट्टकप्पं रुहिरकद्दमं करेमाणे सव्वओ समंता परिधावित्था, से तेणट्ठेणं जाव रहमुसले संगामे ।

१०. [प्र०] रहमुसले णं भंते ! संगामे वट्टमाणे कति जणसयसाहस्सीओ वहियाओ ? [उ०] गोयमा ! छण्णउतिं जणसयसाहस्सीओ वहियाओ ।

११. [प्र०] ते णं भंते ! मणुया निस्सीला जाव उववन्ना ? [उ०] गोयमा ! तत्थ णं दससाहस्सीओ एगाए मच्छीए कुच्छिंसि उववन्नाओ, एगे देवलोगेसु उववन्ने, एगे सुकुले पच्चायाए; अवसेसा ओसन्नं नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववन्ना ।

१२. [प्र०] कम्हा णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया, चमरे य असुरिंदे असुरकुमारराया कूणियरन्नो साहेज्जं दलयित्था ? [उ०] गोयमा ! सक्के देविंदे देवराया पुव्वसंगतिए, चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया परियायसंगतिए; एवं खलु गोयमा ! सक्के देविंदे देवराया, चमरे य असुरिंदे असुरकुमारराया कूणियस्स रन्नो साहेज्जं दलयित्था ।

१३. [प्र०] बहुजणे णं भंते ! अन्नमन्नस्स एवमाइक्खति, जाव परूवेइ–एवं खलु बहवे मणुस्सा अन्नयरेसु उच्चावएसु संगामेसु अभिमुहा चेव पहया समाणा कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, से कहमेयं भंते ! एवं ? [उ०] गोयमा ! जण्णं से बहुजणो अन्नमन्नस्स एवं आइक्खति–जाव उववत्तारो भवंति; जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु । अहं पुण गोयमा ! एवं आइक्खामि, जाव परूवेमि–एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं, तेणं समएणं वेसाली नामं नगरी होत्था । वन्नओ, तत्थ णं वेसालीए णगरीए वरुणे नामं नागनत्तुए परिवसइ, अड्ढे जाव अपरिभूए, समणोवासए, अभिगयजीवाजीवे, जाव पडिलाभेमाणे छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरति । तए णं से वरुणे णागणत्तुए अन्नया कयाइं रायाभिओगेणं, गणाभिओगेणं, बलाभिओगेणं रहमुसले संगामे आणत्ते समाणे छट्ठभत्तिए अट्ठमभत्तं अणुवट्टेति, अणुवट्टित्ता

रथमुशल संग्राम शाथी कहेवाय छे?

९. [प्र०] हे भगवन् ! शा कारणथी ते रथमुशल संग्राम कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! ज्यारे रथमुशलसंग्राम थतो हतो त्यारे अश्वरहित, सारथिरहित, योधाओ रहित अने मुशलसहित एक रथ घणा जनसंहारने, जनवधने, जनप्रमर्दने, जनप्रलयने, तेम लोहिना कीचडने करतो चारे तरफ चारे बाजुए दोडे छे; ते कारणथी यावत् ते रथमुशलसंग्राम कहेवाय छे.

मनुष्योनो संहार.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यारे रथमुशल संग्राम थतो हतो त्यारे केटला लाख माणसो हणाया ? [उ०] हे गौतम ! छन्नुं लाख माणसो हणाया.

तेओ मरीने क्यां उत्पन्न थया ?

११. [प्र०] हे भगवन् ! शीलरहित ते मनुष्यो यावत् क्यां उत्पन्न थया ? [उ०] हे गौतम ! तेमां दश हजार मनुष्यो एक माछलीना उदरमां उत्पन्न थया, एक देवलोकमां उत्पन्न थयो, एक उत्तम कुलने विषे उत्पन्न थयो, अने बाकीना मनुष्यो घणे भागे नारक अने तिर्यंच योनिमां उत्पन्न थया.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! देवना इन्द्र देवना राजा शक्रे अने असुरना इन्द्र असुरकुमारना राजा चमरे कूणिक राजाने केम सहाय आपी ? [उ०] हे गौतम ! देवनो इन्द्र देवनो राजा शक्र कूणिकराजानो पूर्वसंगतिक–पूर्वभवसंबन्धी मित्र–हतो, अने असुरेन्द्र असुरकुमारनो राजा चमर कूणिक राजानो पर्यायसंगतिक–तापसनी अवस्थामां मित्र–हतो, तेथी हे गौतम ! ए प्रमाणे देवना इन्द्र देवना राजा शक्रे अने असुरेन्द्र असुरकुमारना राजा चमरे कूणिक राजाने सहायता आपी.

शुं युद्धमां हणायेला स्वर्गे जाय ?

१३. [प्र०] हे भगवन् ! घणा माणसो परस्पर ए प्रमाणे कहे छे, यावत् प्ररूपणा करे छे के–अनेक प्रकारना संग्रामोमांना कोइ पण संग्राममां सामा (युद्ध करता) हणायेला घायल थयेला घणा मनुष्यो मरणसमये काळ करीने कोइ पण देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थाय *छे, हे भगवन् ! ए प्रमाणे केम होय ? [उ०] हे गौतम ! ते बहु मनुष्यो परस्पर जे ए प्रमाणे कहे छे के–यावत् तेओ देवपणे उत्पन्न थाय छे; पण जेओए ए प्रमाणे कह्युं छे तेओए ए प्रमाणे मिथ्या कह्युं छे. हे गौतम ! हुं तो आ प्रमाणे कहुं छुं, यावत् प्ररूपणा करुं छुं. हे गौतम ! ते आ प्रमाणे–ते काळे अने ते समये वैशाली नामे नगरी हती. वर्णन. ते वैशाली नगरीमां वरुणनामे नागनो पौत्र रहेतो हतो, ते धनवान्, यावत् जेनो पराभव न थइ शके एवो (समर्थ) हतो. ते श्रमणोनो उपासक, जीवाजीव तत्त्वने जाणनार, यावत् [आहारादिवडे] प्रतिलाभतो–सत्कार करतो–निरन्तर छट्ठ छट्ठना तप करवा वडे आत्माने वासित करतो विचरे छे. त्यार बाद ज्यारे ते नागना पौत्र वरुणने राजाना अभियोगथी (आदेशथी), गणना अभियोगथी, बलना अभियोगथी रथमुशल संग्राममां जवा माटे आज्ञा थइ त्यारे षष्ठभक्त करनार

ते मिथ्या छे.

नागनो पौत्र वरुण.

रथमुशल संग्राममां जवानी तैयारी.

---

१ छण्णउतिं क विनाऽन्यत्र । २ मच्छियाए क । ३ दलियरथा ख । ४ –आइक्खंति ख-घ । ५ परूवेंति घ । ६–माहिंसु ख ।

१३. * जुओ (गीता अ. २ श्लो. ३७).

कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठावेह, हय-गय-रह० जाव सन्नाहेत्ता मम एयं आणत्तियं पच्चप्पिणह। तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सच्छत्तं सज्झयं जाव उवट्ठावेंति, हय-गय-रह० जाव सन्नाहेंति, सन्नाहित्ता जेणेव वरुणे नागनत्तुए, जाव पच्चप्पिणंति। तए णं से वरुणे नागनत्तुए जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छति, जहा कूणिओ, जाव -पायच्छित्ते, सव्वालंकारविभूसिए, सन्नद्ध-बद्धे सकोरंटमल्लदामेणं जाव धरिज्जमाणेणं; अणेगगणनायक० जाव दूय-संधिपालसद्धिं संपरिवुडे मज्जणघराओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ, दुरुहित्ता हय-गय-रह- जाव संपरिवुडे, महयाभडचडगर- जाव परिक्खित्ते जेणेव रहमुसले संगामे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रहमुसलं संगामं ओयाओ। तए णं से वरुणे णागणत्तुए रहमुसलं संगामं ओयाए समाणे अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हइ– कप्पति मे रहमुसलं संगामं संगामेमाणस्स जे पुव्विं पहणइ से पडिहणित्तए, अवसेसे नो कप्पतीति; अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हइ, अभिगेण्हेत्ता रहमुसलं संगामं संगामेति। तए णं तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स रहमुसलं संगामं संगामेमाणस्स एगे पुरिसे सरिसए, सरिसत्तए, सरिसव्वए, सरिसभंडमत्तोवगरणे रहेणं पडिरहं हव्वं आगए। तए णं से पुरिसे वरुणं णागनत्तुयं एवं वयासी–पहण भो वरुणा! णागणत्तुया। तए णं से वरुणे णागणत्तुए तं पुरिसं एवं वयासी–नो खलु मे कप्पइ देवाणुप्पिया! पुव्विं अहयस्स पहणित्तए, तुमं चेव णं पुव्विं पहणाहि। तए णं से पुरिसे वरुणे णागणत्तुएणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसिमाणे धणुं परामुसइ, धणुं परामुसित्ता उसुं परामुसइ, उसुं परामुसित्ता ठाणं ठाति, ठाणं ठिच्चा आययकन्नाययं उसुं करेइ, आययकन्नाययं उसुं करित्ता वरुणं णागणत्तुयं गाढप्पहारीकरेइ। तए णं से वरुणे णागणत्तुए तेणं पुरिसेणं गाढप्पहारीकए समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे धणुं परामुसइ, धणुं परामुसित्ता, उसुं परामुसइ, उसुं परामुसित्ता आययकन्नाययं उसुं करेइ, आययकन्नाययं उसुं करेत्ता तं पुरिसं एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोवइ। तए णं से वरुणे णागणत्तुए तेणं पुरिसेणं गाढप्पहारीकए समाणे अत्थामे, अबले, अवीरिए, अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमिति कट्टु तुरए निगिण्हइ, तुरए निगिण्हित्ता रहं परावत्तेइ, रहं परावत्तित्ता रहमुसलाओ संगामाओ पडिणिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता एगंतमंतं अवक्कमइ, एगंतमंतं अवक्क-

ते [वरुण] अष्टमभक्तने वधारे छे, अने अष्टमभक्तने वधारीने कौटुंबिक पुरुषोने बोलावे छे. बोलावीने तेणे ए प्रमाणे कह्युं के हे देवानुप्रियो! चारघंटावाळा अश्वरथने सामग्रीसहित हाजर करो; अने घोडा, हाथी, रथ अने प्रवर–[योद्धाओथी युक्त चतुरंग सेनाने तैयार करो], यावत् तैयार करीने ए मारी आज्ञा पाछी आपो. त्यार पछी ते कौटुम्बिक पुरुषो यावत् तेनो स्वीकार करीने छत्रसहित, ध्वजासहित [रथने] शीघ्र हाजर करे छे; घोडा, हाथी, रथ–[अने प्रवर योद्धाओ सहित सेनाने] यावत् तैयार करे छे; तैयार करी ज्यां नागनो पौत्र वरुण छे [त्यां आवी] आज्ञा पाछी आपे छे. त्यार पछी ते नागनो पौत्र वरुण ज्यां स्नानगृह छे त्यां आवे छे, आवीने कूणिकनी पेठे यावत् कौतुक (मषीतिलकादि) अने मंगलरूप प्रायश्चित्त करीने सर्वालंकारथी विभूषित थयेलो कवचने पहेरी बांधी, कोरंटनी माळ्युक्त धारणकराता छत्र वडे सहित अनेक गणनायको यावत् दूत अने संधिपालनी साथे परिवरेलो स्नानगृहथी बहार नीकळे छे. बहार नीकळीने, ज्यां बहारनी उपस्थानशाळा छे, ज्यां चारघंटावाळो अश्वरथ छे त्यां आवे छे, त्यां आवीने चारघंटावाळा अश्वरथ उपर चडे छे, चडीने घोडा, हाथी, रथ–[अने प्रवर योधावाळी सेना] साथे महान् सुभटोना समूह वडे यावत् विंटायेलो ज्यां रथमुशल संग्राम छे त्यां आवे छे, अने त्यां आवी ते रथमुशल संग्राममां उतर्यो. ज्यारे नागनो पौत्र वरुण रथमुशल संग्राममां उतर्यो त्यारे ते आवा प्रकारना आ अभिग्रहने ग्रहण करे छे–'रथमुशल संग्राममां युद्ध करता मने जे पहेला मारे तेने मारवो कल्पे, बीजाने मारवा कल्पे नहिं'. आवा प्रकारना आ अभिग्रहने धारण करी ते रथमुशल संग्राम करे छे. त्यार बाद रथमुशल संग्राम करता नागना पौत्र वरुणना रथनी सामे तेना जेवो समानवयवाळो, समानत्वचावाळो अने समान अस्त्रशस्त्रादिउपकरणवाळो एक पुरुष रथमां बेसीने शीघ्र आव्यो. त्यार बाद ते पुरुषे नागना पौत्र वरुणने एम कह्युं के 'हे नागना पौत्र वरुण! तुं मने प्रहार कर'. त्यारे ते नागना पौत्र वरुणे ते पुरुषने एम कह्युं के 'हे देवानुप्रिय! ज्यां सुधी हुं प्रथम न हणाउं त्यां सुधी मारे प्रहार करवो न कल्पे, माटे पहेलां तुंज प्रहार कर'. ज्यारे ते नागना पौत्र वरुणे ते पुरुषने एम कह्युं त्यारे ते कुपित थयेलो क्रोधाग्निथी दीपतो धनुषने ग्रहण करे छे, धनुषने ग्रहण करी बाणने ग्रहण करे छे, बाणने ग्रहण करी अमुक स्थाने रहीने तेने कानपर्यंत लांबुं खेंचे छे; लांबुं खेंचीने ते नागना पौत्र वरुणने सख्त प्रहार करे छे. त्यारबाद ते पुरुषथी सख्त घवायेल नागनो पौत्र वरुण कुपित थइ यावत् क्रोधाग्निथी दीपतो धनुषने ग्रहण करे छे, धनुषने ग्रहण करी बाणने ग्रहण करे छे, बाणने ग्रहण करी तेने कानपर्यंत लांबुं खेंचे छे, खेंचीने ते पुरुषने एक घाए पत्थरना टुकडा थाय तेम जीवितथी जूदो करे छे. हवे ते पुरुषथी सख्त घवायेल ते नागनो पौत्र वरुण शक्तिरहित, निर्बळ, वीर्यरहित, पुरुषार्थ अने पराक्रमरहित थयेलो पोते 'टकी नहि शके' एम समजी घोडाओने थोभावे छे, थोभावीने रथने पाछो फेरवे छे, रथने पाछो फेरवीने रथमुशल संग्रामथी बहार नीकळे छे, बहार नीकळी एकान्त

वरुणनो अभिग्रह.

युद्धमां वरुणने सख्त प्रहार.

वरुणनुं युद्धमांथी पाछा फरवुं.

१ रहपवर- घ। २ से ख। ३ दाम का- ग। ४ दुरूढ- ख। ५ रहमुस- ख। ६ सरिसए ख। ७ सरित्तए ख।

मित्ता तुरए निगिण्हइ, तुरए निगिण्हित्ता रहं ठवेइ, रहं ठवेत्ता, रहाओ पंचोरुहइ, रहाओ पचोरुहित्ता तुरए मोयइ, तुरए मोएत्ता तुरए विसज्जेइ, तुरए विसज्जित्ता दब्भसंथारगं संथरइ, संथरित्ता दब्भसंथारगं दुरुहइ, दब्भसंथारगं दुरुहित्ता, पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसन्ने करयल- जाव कट्टु एवं वयासी– नमोत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं, जाव संपत्ताणं; नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स, आइगरस्स, जाव संपाविउकामस्स, मम धम्मायरियस्स, धम्मोवदेसगस्स; वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए, पासउ मे से भगवं तत्थगए, जाव वंदति, नमंसति, वंदित्ता, नमंसित्ता एवं वयासी–पुव्विं पि मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए, एवं जाव थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए जावज्जीवाए; इयाणिं पि णं अहं तस्सेव भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वं पाणातिवायं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, एवं जहा खंदओ, जाव एयं पि णं चरमेहिं ऊसास-नीसासेहिं वोसिरिस्सामि त्ति कट्टु सन्नाहपट्टं मुयइ, मुइत्ता सल्लुद्धरणं करेति, सल्लुद्धरणं करेत्ता आलोइयपडिक्कंते, समाहिपत्ते, आणुपुव्वीए कालगए। तए णं तस्स वरुणस्स णागणत्तुयस्स एगे पियबालवयंसए रहमुसलं संगामं संगामेमाणे एगेणं पुरिसेणं गाढप्पहारीकए समाणे अत्थामे अबले जाव अधारणिज्जमिति कट्टु वरुणं णागणत्तुयं रहमुसलाओ संगामाओ पडिणिक्खममाणं पासइ, पासित्ता तुरए निगेण्हइ, तुरए निगेण्हित्ता जहा वरुणे जाव तुरए विसज्जेति, पडसंथारगं दुरुहइ, पडसंथारगं दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहे जाव अंजलिं कट्टु एवं वयासी– जाइं णं भंते! मम पियबालवयंसस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स सीलाइं, वयाइं, गुणाइं, वेरमणाइं, पच्चक्खाण-पोसहोववासाइं, ताइं णं ममं पि भवंतु त्ति कट्टु सन्नाहपट्टं मुयइ, मुइत्ता सल्लुद्धरणं करेति, सल्लुद्धरणं करेत्ता आणुपुव्वीए कालगए। तए णं तं वरुणं णागणत्तुयं कालगयं जाणित्ता अहासन्निहिएहिं वाणमंतरेहिं देवेहिं दिव्वे सुरभिगंधो-दगवासे वुट्ठे, दसद्धवन्ने कुसुमे निवाडिए, दिव्वे य गीय-गंधव्वनिनादे कए या वि होत्था। तए णं तस्स वरुणस्स णागनत्तुयस्स तं दिव्वं देविड्ढिं, दिव्वं देवज्जुतिं, दिव्वं देवाणुभागं सुणित्ता य पासित्ता य बहुजणो अन्नमन्नस्स एवं आइक्खइ, जाव परूवेति–एवं खलु देवाणुप्पिया! बहवे मणुस्सा जाव उववत्तारो भवंति।

भागमां आवे छे, एकान्त भागमां आवी घोडाओने थोभावे छे, थोभावी रथने उभो राखे छे, उभो राखी रथथी उतरे छे, उतरीने रथथी घोडाओने छुटा करे छे, छुटा करी घोडाओने विसर्जित करे छे; विसर्जित करी डाभनो संथारो पाथरे छे, डाभनो संथारो पाथरी पूर्वदिशा सन्मुख ते डाभना संथारा उपर बेसे छे. पूर्वाभिमुख पर्यंकासने डाभना संथारा उपर बेसी हाथ जोडी यावत् ते नागनो पौत्र वरुण आ प्रमाणे बोल्यो–पूज्य अर्हतोने नमस्कार थाओ, यावत् जेओ [सिद्धिगतिने] प्राप्त थया छे. श्रमण भगवान् महावीरने नमस्कार थाओ, जे तीर्थनी आदि करनारा छे, यावत् [सिद्धिने] प्राप्त करवानी इच्छावाळा छे; जे मारा धर्माचार्य अने धर्मना उपदेशक छे. त्यां रहेला भगवानने अहीं रहेलो हुं वांदुं छुं. त्यां रहेला भगवान् मने जुओ. यावत् वंदन नमस्कार करे छे. वंदन नमस्कार करीने ते [वरुण] आ प्रमाणे बोल्यो– पहेलां में श्रमण भगवान् महावीरनी पासे जीवनपर्यंत स्थूलप्राणातिपातनुं प्रत्याख्यान कर्युं हतुं, ए प्रमाणे यावत् स्थूल परिग्रहनुं प्रत्याख्यान जीवनपर्यंत कर्युं हतुं, अत्यारे अरिहंत भगवान् महावीरनी पासे सर्व प्राणातिपातनुं प्रत्याख्यान यावज्जीव करूं छुं. ए प्रमाणे *स्कन्दकनी पेठे सर्व जाणवुं. आ शरीरनो पण छेल्ला श्वासोच्छ्वासनी साथे त्याग करीश, एम धारी सन्नाहपट्ट–बख्तरने छोडे छे, बख्तरने छोडीने [बाणादिना] शल्यने बहार काढे छे, बहार काढीने आलोचना लइ प्रतिक्रान्त थइ–पडिक्कमी समाधिने प्राप्त थयेलो ते कालधर्म पाम्यो. हवे ते नागना पौत्र वरुणनो एक प्रिय बालमित्र रथमुशल संग्राम करतो हतो, ज्यारे ते एक पुरुषथी सख्त घायल थयो, त्यारे ते शक्तिरहित, बलरहित यावत् पोते 'टकी नहि शके' एम समजी नागना पौत्र वरुणने रथमुशल संग्रामथी बहार नीकळता जुए छे, जोइने ते घोडाओने थोभावे छे, थोभावीने वरुणनी पेठे यावत् घोडाओने विसर्जित करे छे, अने पटना (वस्त्रना) संथारा उपर बेसे छे. संथारा उपर पूर्वदिशा सन्मुख बेसीने यावत् अंजली करीने आ प्रमाणे बोल्यो—हे भगवन्! मारा प्रिय बालमित्र नागना पौत्र वरुणना जे शीलव्रतो, गुणव्रतो, विरमणव्रतो, प्रत्याख्यान अने पोषधोपवास होय ते मने पण हो, एम कही बख्तरने छोडे छे, छोडीने शल्यने काढे छे, शल्यने काढीने ते अनुक्रमे कालधर्म पाम्यो. हवे ते नागना पौत्र वरुणने मरण पामेलो जाणीने पासे रहेला वानव्यंतर देवोए तेना उपर दिव्य अने सुगंधी गंधोदकनी वृष्टि करी, पांच वर्णना फुलो तेना उपर नांख्या, तथा दिव्य गीत गान्धर्वनो शब्द पण कर्यो. त्यार बाद ते नागना पौत्र वरुणनी दिव्य देवर्द्धि, दिव्य देवद्युति अने दिव्य देवप्रभाव सांभळीने अने जोइने घणा माणसो परस्पर एम कहे छे, यावत् प्ररूपणा करे छे के–हे देवानुप्रिय! ए प्रमाणे घणा मनुष्यो यावत् देवलोकमां उत्पन्न थाय छे.

सर्व प्राणातिपातादिविरमण.

गंधोदक तथा पुष्पवृष्टि.

---

१ पच्चोरुभति क। २ पुरच्छाभि– घ। ३ ममं ख। ४ णं तस्सेव घ। ५ अरिहंततस्सेव घ। ६ अतियं घ। ७ पडिसे–कर विनाऽन्यत्र। ८ दुरुहइ ज, दुरुहइ घ। ९ दुरुहि–ख, दुरूहि–घ। १० जयणं–ख। ११ प्पिय–ख। १२ आणुपुव्विए ग।

१३. *जुओ (भ. श. २. उ० १ पृ. २४४)

१४. [प्र०] वरुणे णं भंते ! नागनत्तुए कालमासे कालं किच्चा कहिं गए, कहिं उववन्ने ? [उ०] गोयमा ! सोहम्मे कप्पे, अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववन्ने, तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाणि ठिती पण्णत्ता, तत्थ णं वरुणस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पन्नत्ता । से णं भंते ! वरुणे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं, भवक्खएणं, ठिइक्खएणं जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति, जाव अंतं करेहिति ।

१५. [प्र०] वरुणस्स णं भंते ! णागणत्तुयस्स पियबालवयंसए कालमासे कालं किच्चा कहिं गए, कहिं उववन्ने ? [उ०] गोयमा ! सुकुले पच्चायाते ।

१६. [प्र०] से णं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिति, कहिं उववज्जिहिति ? [उ०] गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति, जाव अंतं काहिति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

सत्तमसयस्स नवमओ उद्देसओ समत्तो ।

१४ [प्र०] हे भगवन् ! नागनो पौत्र वरुण मरणसमये मरीने क्यां गयो, क्यां उत्पन्न थयो ? [उ०] हे गौतम ! सौधर्म देवलोकने विषे अरुणाभनामे विमानमां देवपणे उत्पन्न थयो छे. त्यां केटलाक देवोनी आयुष्नी स्थिति चार पल्योपमनी कही छे. त्यां वरुणदेवनी पण चार पल्योपमनी स्थिति कही छे. [प्र०] हे भगवन् ! ते वरुणदेव देवलोकथी आयुष्नो क्षय थवाथी, भवनो क्षय थवाथी, स्थितिनो क्षय थवाथी—[क्यां जशे ?] [उ०] यावत् महाविदेह क्षेत्रने विषे सिद्धिने पामशे, यावत् [सर्व दुःखोनो] अन्त करशे.

वरुण मरीने क्यां गयो ?

वरुण देवलोकथी चवी मोक्ष जशे.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! नागना पौत्र वरुणनो प्रिय बालमित्र मरणसमये मरण पामीने क्यां गयो, क्यां उत्पन्न थयो ? [उ०] हे गौतम ! ते कोइ सुकुलमां उत्पन्न थयो छे.

वरुणनो मित्र मरीने क्यां गयो ?

१६. [प्र०] हे भगवन् ! त्यांथी मरीने तुरत ते [वरुणनो बाल मित्र] क्यां जशे ? [उ०] हे गौतम ! ते महाविदेह क्षेत्रमां सिद्धिने पामशे, यावत् [सर्व दुःखोनो] अन्त करशे. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, [एम कही गौतम यावत् विचरे छे]

वरुणनो मित्र त्यांथी क्यां जशे ?

सातमा शतकनो नवमो उद्देशक समाप्त.

---

१ ...ज्जिहिति क, गच्छीहिति घ । २ उववज्जिहि–घ ।

दसमो उद्देसो.

१. तेणं कालेणं, तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे होत्था, वन्नओ । गुणसिलए चेइए, वन्नओ । जाव पुढविसिलापट्टओ, वन्नओ । तस्स णं गुणसिलयस्स चेइयस्स अदूरसामंते बहवे अन्नउत्थिया परिवसंति, तं जहा–कालोदाई, सेलोदाई, सेवालोदाई, उदए, नामुदए, नम्मुदए, अन्नवालए, सेलवालए, संखवालए, सुहत्थी गाहावई । तए णं तेसिं अन्नउत्थियाणं अन्नया कयाइं एगयओ समुवागयाणं, सन्निविट्ठाणं, सन्निसन्नाणं अयमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था–एवं खलु समणे नायपुत्ते पंच अत्थिकाए पन्नवेति, तं जहा–धम्मत्थिकायं, जाव आगासत्थिकायं । तत्थ णं समणे नायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अजीवकाए पन्नवेति, तं जहा–धम्मत्थिकायं, अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं पोग्गलत्थिकायं; एगं च णं समणे णायपुत्ते जीवत्थिकायं अरूविकायं जीवकायं पन्नवेति । तत्थ णं समणे णायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अरूविकाए पन्नवेति, तं जहा–धम्मत्थिकायं, अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकायं, जीवत्थिकायं; एगं च णं समणे णायपुत्ते पोग्गलत्थिकायं रूविकायं अजीवकायं पन्नवेति । से कहमेयं मन्ने एवं? तेणं कालेणं, तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव गुणसिलए चेइए समोसढे । जाव परिसा पडिगया । तेणं कालेणं, तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई णामं अणगारे गोयमगोत्ते णं, एवं जहा बितियसए नियंठुद्देसए जाव भिक्खायरियाए अडमाणे अहापज्जत्तं भत्त-पाणं पडिग्गाहित्ता रायगिहाओ णगराओ जाव अतुरियं, अचवलं, असंभंतं जाव रियं सोहेमाणे सोहेमाणे तेसिं अन्नउत्थियाणं अदूरसामंतेणं वीईवयति । तए णं ते अन्नउत्थिया भगवं गोयमं अदूरसामंतेणं वीइवयमाणं पासंति, पासेत्ता अन्नमन्नं सद्दावेंति, अन्नमन्नं सद्दावित्ता

दसमो उद्देशक.

अन्यतीर्थिको.

पंचास्तिकाय विषे संदेह.

१. ते काले ते समये राजगृह नामे नगर हतुं. वर्णन. गुणशील चैत्य हतुं. वर्णन. यावत् पृथिवीशिलापट्ट हतो. ते गुणशील चैत्यनी पासे थोडे दूर घणा अन्यतीर्थिको रहे छे. ते आ प्रमाणे—कालोदायी, शैलोदायी, सेवालोदायी, उदय, नामोदय, नर्मोदय, अन्यपालक, शैलपालक, शंखपालक अने सुहस्ती गृहपति. त्यार पछी अन्य कोइ समये एकत्र आवेला, बेठेला, सुखपूर्वक बेठेला ते अन्यतीर्थिकोनो आवा प्रकारनो आ वार्तालाप थयो–'श्रमण ज्ञातपुत्र (महावीर) पांच अस्तिकायोने प्ररूपे छे. जेमके, धर्मास्तिकाय, यावत् आकाशास्तिकाय. तेमां श्रमण ज्ञातपुत्र चार अस्तिकाय अजीवकाय छे एम जणावे छे. जेम, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय अने पुद्गलास्तिकाय. एक जीवास्तिकायने श्रमण ज्ञातपुत्र अरूपी जीवकाय जणावे छे. ते पांच अस्तिकायमां श्रमण ज्ञातपुत्र चार अस्तिकायने अरूपिकाय जणावे छे. जेम, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय अने जीवास्तिकाय. एक पुद्गलास्तिकायने श्रमण ज्ञातपुत्र रूपिकाय अने अजीवकाय जणावे छे'. ए प्रमाणे आ केम मानी शकाय? ते काले अने ते समये श्रमण भगवान् महावीर यावत् गुणशिल चैत्यमां समोसर्या. यावत् परिषत् [वंदन करीने] पाछी गइ. ते काले अने ते समये श्रमण भगवान् महावीरना मोटा शिष्य गौतमगोत्री इन्द्रभूति नामे अनगार बीजा शतकना निर्ग्रन्थोद्देशकमां कह्या प्रमाणे भिक्षाचर्याए भमता यथापर्याप्त भक्त पानने ग्रहण करीने राजगृहनगर थकी यावत् त्वरारहितपणे, अचपलपणे, असंभ्रान्तपणे ईर्या समितिने वारंवार शोधता ते अन्यतीर्थिकोनी थोडे दूर जाय छे. त्यारे ते अन्यतीर्थिको भगवान् गौतमने थोडे दूर जतां जुए छे, जोइने एक बीजाने बोलावे छे; एक बीजाने बोलावीने तेओए आ प्रमाणे कह्युं–

---

१ पइए घ । २ खपुस्तके नास्ति । ३ खपुस्तके नास्ति । ४ –याण भंते! क–घ । ५ पंचत्थि–क । ६ [illegible]
७ असंभंते ख । ८ वीईव-ख ।

एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमा कहा अविप्पकडा, अयं च णं गोयमे अम्हं अदूरसामंतेणं [1]वीईवयइ, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं गोयमं एयमट्ठं पुच्छित्तए त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणंति, एयं अट्ठं पडिसुणित्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता भगवं गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गोयमा ! तव धम्मायरिए, धम्मोवदेसए, समणे णायपुत्ते पंचे अत्थिकाए पन्नवेति, तं जहा—धम्मत्थिकायं, जाव आगासत्थिकायं; तं चेव जाव रूविकायं अजीवकायं पन्नवेति; से कहमेयं गोयमा ! एवं ? [उ०] तए णं से भगवं गोयमे ते अन्नउत्थिए एवं वयासी—नो खलु वयं देवाणुप्पिया ! अत्थिभावं नत्थि त्ति वदामो, नत्थिभावं अत्थि त्ति वदामो; अम्हे णं देवाणुप्पिया ! सव्वं अत्थिभावं अत्थि त्ति वयामो, सव्वं नत्थिभावं नत्थि त्ति वयामो; तं चेयसा [वेदसा] खलु तुब्भे देवाणुप्पिया ! एयमट्ठं सयमेव पच्चुवेक्खह त्ति कट्टु ते अन्नउत्थिए एवं वयासी—एवं, एवं । जेणेव गुणसिलए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, एवं जहा नियंठुद्देसए जाव भत्त–पाणं पडिदंसेति, भत्त–पाणं पडिदंसेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ, नमंसइ; वंदित्ता, नमंसित्ता नच्चासन्ने जाव पज्जुवासति ।

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे महाकहापडिवन्ने या वि होत्था, कालोदाई य तं देसं हव्वं आगए । 'कालोदाइ'त्ति समणे भगवं महावीरे कालोदाइं एवं वयासी—से णूणं ते कालोदाई ! अन्नया कयाइ एगयओ सहियाणं, समुवागयाणं, संनिविट्ठाणं तहेव जाव से कहमेयं मन्ने एवं ? से णूणं कालोदाई ! अत्थे समट्ठे ? हंता अत्थि । तं सच्चे णं एसमट्ठे कालोदाई !, अहं पंचत्थिकायं पन्नवेमि, तं जहा—धम्मत्थिकायं, जाव पोग्गलत्थिकायं; तत्थ णं अहं चत्तारि अत्थिकाए अजीवत्थिकाए अजीवतया पन्नवेमि, तहेव जाव एगं च णं अहं पोग्गलत्थिकायं रूविकायं पन्नवेमि ।

३. [प्र०] तए णं से कालोदाई समणं भगवं महावीरं एवं वदासी—एयंसि णं भंते ! धम्मत्थिकायंसि, अधम्मत्थिकायंसि, आगासत्थिकायंसि अरूविकायंसि अजीवकायंसि चक्किया केई आसइत्तए वा, सइत्तए वा, चिट्ठइत्तए वा, निसीइत्तए वा, तुयट्टित्तए वा ? [उ०] णो तिणट्ठे समट्ठे कालोदाई !, एगंसि णं पोग्गलत्थिकायंसि रूविकायंसि अजीवकायंसि चक्किया केई आसइत्तए वा, सइत्तए वा, जाव तुयट्टित्तए वा ।

हे देवानुप्रियो ! आपणने आ कथा (पंचास्तिकायनी वात) अप्रकट—अज्ञात छे; अने आ गौतम आपणाथी थोडे दूर जाय छे, माटे हे देवानुप्रियो ! आपणे आ अर्थ गौतमने पुछवो श्रेयस्कर छे. एम कही तेओ एक बीजानी पासे ए वातनो स्वीकार करे छे; स्वीकार करीने ज्यां भगवान् गौतम छे त्यां आवे छे, त्यां आवीने तेओए भगवान् गौतमने ए प्रमाणे कह्युं—हे गौतम ! तमारा धर्माचार्य, धर्मोपदेशक श्रमण ज्ञातपुत्र पांच अस्तिकाय प्ररूपे छे, ते आ प्रमाणे—धर्मास्तिकाय, यावत् आकाशास्तिकाय, यावत् रूपिकाय अजीवकायने जणावे छे. हे पूज्य गौतम ! ए प्रमाणे शी रीते होय ? त्यारे ते भगवान् गौतमे ते अन्यतीर्थिकोने ए प्रमाणे कह्युं—हे देवानुप्रियो ! अमे अस्तिभावने नास्ति (अविद्यमान) कहेता नथी, तेम नास्तिभावने अस्ति (विद्यमान) कहेता नथी. हे देवानुप्रियो ! सर्व अस्तिभावने अस्ति कहीए छीए, अने नास्तिभावने नास्ति कहीए छीए. माटे हे देवानुप्रियो ! ज्ञान वडे तमे स्वयमेव ए अर्थनो विचार करो. एम कहीने [गौतमे] ते अन्यतीर्थिकोने ए प्रमाणे कह्युं के ए प्रमाणे छे, ए प्रमाणे छे. हवे भगवान् गौतम ज्यां गुणशिल चैत्य छे, ज्यां श्रमण भगवान् महावीर छे—[त्यां आवीने] *निर्ग्रन्थोद्देशकमां कह्या प्रमाणे यावत् भक्त—पानने देखाडे छे. भक्त—पानने देखाडीने श्रमण भगवान् महावीरने वंदन करे छे, नमस्कार करे छे, वांदी, नमस्कार करी बहु दूर नहि तेम बहु पासे नहि ए प्रमाणे उपासना करे छे.

गौतमने प्रश्न.

गौतमनो उत्तर.

२. ते काले, ते समये श्रमण भगवान् महावीर महाकथा प्रतिपन्न—(घणा माणसोने धर्मोपदेश करवामां प्रवृत्त) हता. कालोदायी ते स्थळे शीघ्र आव्यो. हे कालोदायि ! ए प्रमाणे [बोलावीने] श्रमण भगवान् महावीरे कालोदायीने आ प्रमाणे कह्युं—हे कालोदायि ! अन्यदा कोई दिवसे एकत्र एकठा थयेला, आवेला, बेठेला एवा तमने पूर्वे कह्या प्रमाणे [पंचास्तिकायसंबन्धे विचार थयो हतो ?] यावत् ए वात ए प्रमाणे केम मानी शकाय ? [एवो विचार थयो हतो ?] हे कालोदायि ! खरेखर आ वात यथार्थ छे ? हा, यथार्थ छे. हे कालोदायि ! ए वात सत्य छे. हुं पांच अस्तिकायनी प्ररूपणा करूं छुं; जेमके, धर्मास्तिकाय, यावत् पुद्गलास्तिकाय. तेमां चार अस्तिकाय अजीवास्तिकायने अजीवरूपे कहुं छुं. पूर्वे कह्या प्रमाणे यावत् एक पुद्गलास्तिकायने रूपिकाय जणावुं छुं. त्यारे ते कालोदायिए श्रमण भगवान् महावीरने आ प्रमाणे कह्युं—

कालोदायीनुं आगमन.

३. [प्र०] हे भगवन् ! ए अरूपी अजीवकाय धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकायमां बेसवाने, सुवाने, उभो रहेवाने, नीचे बेसवाने, आळोटवाने कोइ पण शक्तिमान् छे ? [उ०] आ अर्थ योग्य नथी. परन्तु हे कालोदायि ! एक रूपी अजीवकाय पुद्गलास्तिकायमां बेसवाने, सुवाने, यावत् आळोटवाने कोइपण शक्तिमान् छे.

कालोदायिना प्रश्नो.

---

१ वीईवयेति क । २-सुणेंति घ । ३ पंचत्थि-क । ४ कहमेयं भंते ! गो-घ । ५ नत्थि त्ति भा-श । ६-ए एवं वदति क । ७ कालोदाईति घ । [illegible] कयाई घ । ९ वा चिट्ठइत्तए ख । १० वा सइत्तए ख ।

* [illegible] (भ. श. २. उ० ५ पृ. २८१).

४. [प्र०] एयंसि णं भंते ! पोग्गलत्थिकायंसि, रूविकायंसि, अजीवकायंसि जीवाणं पावा णं कम्मा णं पावफलवि-वागसंजुत्ता कज्जंति ? [उ०] णो तिणट्ठे समट्ठे, कालोदाई ! । एयंसि णं जीवत्थिकायंसि अरूविकायंसि जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसंजुत्ता कज्जंति । एत्थ णं से कालोदाई संबुद्धे, समणं भगवं महावीरं वंदइ, नमंसइ; वंदित्ता, नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतियं धम्मं निसामेत्तए, एवं जहा खंदए तहेव पव्वइए, तहेव एक्कारस अंगाइं जाव विहरइ ।

५. तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ रायगिहाओ णयराओ, गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनि-क्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ । तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे गुणसिलए चेइए होत्था । तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ जाव समोसढे, परिसा जाव पडिगया । तए णं से कालोदाई अणगारे अन्नया कयाइ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—[प्र०] अत्थि णं भंते ! जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसंजुत्ता कज्जंति ? [उ०] हंता, अत्थि ।

६. [प्र०] कहं णं भंते ! जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसंजुत्ता कज्जंति ? [उ०] कालोदाई ! से जहानामए केइ पुरिसे मणुन्नं थालीपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाकुलं विससंमिस्सं भोयणं भुंजेज्जा, तस्स णं भोयणस्स आवाए भद्दए भवति, तओ पच्छा परिणममाणे परिणममाणे दुरूवत्ताए, दुगंधत्ताए जहा महासवए, जाव भुज्जो भुज्जो परिणमति; एवामेव कालोदाई ! जीवाणं पाणाइवाए, जाव मिच्छादंसणसल्ले, तस्स णं आवाए भद्दए भवइ, तओ पच्छा विपरिणममाणे विपरिणममाणे दुरूव-त्ताए जाव भुज्जो भुज्जो परिणमति; एवं खलु कालोदाई ! जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवाग० जाव कज्जंति ।

७. [प्र०] अत्थि णं भंते ! जीवाणं कल्लाणा कम्मा कल्लाणफलविवागसंजुत्ता कज्जंति ? [उ०] हंता, अत्थि ।

८. [प्र०] कहं णं भंते ! जीवाणं कल्लाणा कम्मा जाव कज्जन्ति ? [उ०] कालोदाई ! से जहानामए केई पुरिसे मणुण्णं थालीपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाकुलं ओसहमिस्सं भोजणं भुंजेज्जा, तस्स णं भोयणस्स आवाए नो भद्दए भवइ, तओ पच्छा

पुद्गलास्तिकायने विषे कर्म लागे?

४. [प्र०] हे भगवन् ! ए रूपी अजीवकाय पुद्गलास्तिकायने विषे जीवोना पाप—अशुभ फल—विपाकसहित पाप कर्मो लागे ? [उ०] हे कालोदायि ! ए अर्थ योग्य नथी. परन्तु ए अरूपी जीवकायने विषे पाप फल—विपाकसहित पापकर्मो लागे छे. अहीं कालोदायी बोध पाम्यो, ते श्रमण भगवान् महावीरने वंदन करे छे, नमस्कार करे छे; वांदीने, नमस्कार करीने तेणे आ प्रमाणे कह्युं—हे भगवन् ! हुं तमारी पासे धर्म सांभळवा इच्छुं छुं. ए प्रमाणे *स्कन्दकनी पेठे तेणे प्रव्रज्या अंगीकार करी, अने ते प्रमाणे अगीयार अंगने [भणीने] यावत् विचरे छे.

५. त्यार पछी अन्यदा कोइ दिवसे श्रमण भगवान् महावीर राजगृहनगरथी अने गुणशिल चैत्यथी नीकळी बहार देशोमां विहार करे छे. ते काळे ते समये राजगृहनामना नगरमां गुणशिल नामनुं चैत्य हतुं. त्यां अन्यदा कोई दिवस श्रमण भगवान् महावीर यावद् समोसर्या. यावत् परिषद् पाछी गइ. त्यार पछी ते कालोदायी अनगार अन्य कोइ दिवसे ज्यां भगवान् महावीर छे त्यां आवे छे, त्यां आवीने श्रमण भगवान् महावीरने वंदन करे छे—नमस्कार करे छे. वंदन नमस्कार करी तेणे आ प्रमाणे कह्युं—[प्र०] हे भगवन् ! जीवोने पापकर्मो पाप—अशुभ फल—विपाक सहित होय ? [उ०] हा होय.

पापकर्मो अशुभ विपाकसहित होय?

६. [प्र०] हे भगवन् ! पापकर्मो पाप—अशुभ फलविपाकसहित केम होय ? [उ०] हे कालोदायि ! जेम कोइ एक पुरुष सुन्दर, स्थालीमां रांधवा वडे शुद्ध (परिपक्व), अढार प्रकारना दाळ शाकादि व्यंजनोथी युक्त, विषमिश्रित भोजन करे, ते भोजन शरुआतमां सारूं लागे, पण त्यार पछी ते परिणाम पामतां खराबरूपपणे, दुर्गंधपणे †'महास्रव' उद्देशकमां कह्या प्रमाणे वारंवार परिणाम पामे छे. ए प्रमाणे हे कालोदायि ! जीवोने पापकर्मो अशुभफलविपाक संयुक्त होय छे.

पापकर्मो अशुभ विपाकसंयुक्त केम होय?

७. [प्र०] हे भगवन् ! जीवोना कल्याण (शुभ) कर्मो कल्याणफलविपाक संयुक्त होय ? [उ०] हा, कालोदायि ! होय.

कल्याणकर्मो कल्याणफलयुक्त होय.

८. [प्र०] हे भगवन् ! जीवोना कल्याण कर्मो कल्याणफलविपाकसहित केम होय ? [उ०] हे कालोदायि ! जेम कोइ एक पुरुष सुन्दर, स्थालीमां रांधवा वडे शुद्ध—परिपक्व, अढार प्रकारना [दाळ शाकादि] व्यंजनोथी युक्त औषधमिश्रित भोजन करे, ते

कल्याण कर्मो कल्याण फलविपाकसहित केम होय?

---

१ पावा णं कम्मा णं घ । २ कज्जंति ? हंता, कज्जंति । एत्थ णं घ । ३ पव्वईए ख । ४ कयाई ख । ५ रायगिहे अ—, ६ गुणसिले चेइए, तए—ख । ७ कयाइं ख । ८ -वंजणाउलं घ । ९ महस्सवए क । १० अहाणाम घ । ११ केई ख ।

४. * जुओ (भ. श. २ उ. १ पृ. २१९). ६ † जुओ (भ. श. ६. उ. ३. पृ. २७०).

परिणममाणे परिणममाणे सुरूवत्ताए, सुवन्नत्ताए, जाव सुहत्ताए, नो दुक्खत्ताए, भुज्जो भुज्जो परिणमति, एवामेव कालोदाई ! जीवाणं पाणाइवायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे, कोहविवेगे, जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे, तस्स णं आवाए नो भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणे परिणममाणे सुरूवत्ताए, जाव नो दुक्खत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमइ, एवं खलु कालोदाई ! जीवाणं कल्लाणा कम्मा जाव कज्जंति ।

९. [प्र०] दो भंते ! पुरिसा सरिसया जाव सरिसभंडमत्तोवगरणा अन्नमन्नेणं सद्धिं अगणिकायं समारंभंति, तत्थ णं एगे पुरिसे अगणिकायं उज्जालेति, एगे पुरिसे अगणिकायं निव्वावेति, एएसि णं भंते ! दोण्हं पुरिसाणं कयरे पुरिसे महाकम्मतराए चेव, महाकिरियतराए चेव, महासवतराए चेव, महावेयणतराए चेव ? कयरे वा पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव, जाव अप्पवेयणतराए चेव ? जे वा से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ, जे वा से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेति ? [उ०] कालोदाई ! तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ से णं पुरिसे महाकम्मतराए चेव, जाव महावेयणतराए चेव । तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ से णं पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव जाव अप्पवेयणतराए चेव । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—तत्थ णं जे से पुरिसे जाव अप्पवेयणतराए चेव ? [उ०] कालोदाई ! तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ से णं पुरिसे बहुतरागं पुढविकायं समारंभति, बहुतरागं आउक्कायं समारंभति, अप्पतरायं तेउकायं समारंभति, बहुतरागं वाउकायं समारंभति, बहुतरायं वणस्सइकायं समारंभति, बहुतरागं तसकायं समारंभति । तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेति, से णं पुरिसे अप्पतरायं पुढविकायं समारंभइ, अप्पतरागं आउक्कायं समारंभइ, बहुतरागं तेउक्कायं समारंभति, अप्पतरागं वाउकायं समारंभति, अप्पतरागं वणस्सइकायं समारंभति, अप्पतरागं तसकायं समारंभति, से तेणट्ठेणं कालोदायी ! जाव अप्पवेयणतराए चेव ।

१०. [प्र०] अत्थि णं भंते ! अचित्ता वि पोग्गला ओभासंति, उज्जोवेंति, तवेंति, पभासेंति ? [उ०] हंता, अत्थि.

भोजन प्रारंभमां सारुं न लागे, त्यार पछी ज्यारे ते अत्यंत परिणाम पामे त्यारे ते सुरूपपणे, सुवर्णपणे, यावत् सुखपणे वारंवार परिणमे छे, दुःखपणे परिणाम पामतुं नथी. ए प्रमाणे हे कालोदायि ! जीवोने प्राणातिपातविरमण, यावत् परिग्रहविरमण, क्रोधनो त्याग यावत् मिथ्यादर्शनशल्यनो त्याग प्रारंभमां सारो न लागे, पण पछी ज्यारे ते परिणाम पामे त्यारे ते सुरूपपणे यावत् वारंवार परिणमे छे, पण दुःखरूपे परिणत थतो नथी. ए प्रमाणे हे कालोदायि ! जीवोना कल्याण कर्मो कल्याण फलविपाकसंयुक्त होय छे.

अग्निकायनो समारंभ करनार बे पुरुषमां कोण महाकर्मवालो ?

९. [प्र०] हे भगवन् ! सरखा बे पुरुषो यावत् समान भांड—पात्रादिउपकरणवाळा होय, तेओ परस्पर साथे अग्निकायनो समारंभ—हिंसा करे, तेमां एक पुरुष अग्निकायने प्रकट करे, अने एक पुरुष तेने ओलवे, हे भगवन् ! आ बे पुरुषोमां कयो पुरुष महाकर्मवाळो, महाक्रियावाळो, महाआस्रववाळो अने महावेदनावाळो होय, अने कयो पुरुष अल्पकर्मवाळो यावत् अल्पवेदनावाळो होय के जे पुरुष अग्निकायने प्रकटावे छे ते, के जे पुरुष अग्निकायने ओलवी नांखे ते ? [उ०] हे कालोदायि ! ते बे पुरुषमां जे पुरुष अग्निकायने प्रकटावे छे, ते पुरुष महाकर्मवाळो यावत् महावेदनावाळो होय, अने जे पुरुष अग्निकायने ओलवी नांखे छे ते पुरुष अल्पकर्मवाळो यावत् अल्पवेदनावाळो होय. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शाथी कहो छो के ते बे पुरुषोमां जे पुरुष [अग्निने प्रदीप्त करे छे ते महावेदनावाळो अने जे ओलवे छे ते] यावत् अल्पवेदनावाळो होय ? [उ०] हे कालोदायि ! ते बेमां जे पुरुष अग्निकायने प्रदीप्त करे छे, ते पुरुष घणा पृथिवीकायनो समारंभ करे छे, थोडा अग्निकायनो समारंभ करे छे, घणा वायुकायनो समारंभ करे छे, घणा वनस्पतिकायनो समारंभ करे छे अने घणा त्रसकायनो समारंभ करे छे. तेमां जे पुरुष अग्निकायने ओलवी नांखे छे ते पुरुष थोडा पृथिवीकायनो, थोडा अप्कायनो, थोडा वायुकायनो, थोडा वनस्पतिकायनो, थोडा त्रसकायनो अने वधारे अग्निकायनो समारंभ करे छे. ते हेतुथी हे कालोदायि ! यावत् अल्पवेदनावाळो होय.

अचित्त पुद्गलो प्रकाश करे ?

१०. हे भगवन् ! एम छे के अचित्त पण पुद्गलो अवभास करे, उद्योत करे, तपे, प्रकाश करे ? [उ०] हे कालोदायि ! हा एम छे.

---

१ [illegible] । २ वाउका—घ । ३ वाउका— घ ।

११. [प्र०] कयरे णं भंते ! अचित्ता वि पोग्गला ओभासंति, जाव पभासेंति ? [उ०] कालोदाई ! कुद्धस्स अणगारस्स तेय–लेस्सा निसट्ठा समाणी दूरं गता, दूरं निपतइ, देसं गता देसं निपतति, जहिं जहिं च णं सा निपतइ, तहिं तहिं णं ते अचित्ता वि पोग्गला ओभासंति, जाव [1]पभासेंति, एतेणं कालोदाई ! ते अचित्ता वि पोग्गला ओभासंति, जाव पभासंति । तए णं से कालोदाई अणगा समणं भगवं महावीरे वंदति, नमंसति, वंदित्ता, नमंसित्ता बहूहिं चउत्थ–छट्ठ–ऽट्ठम– जाव अप्पाणं भावेमाणे जहा पढमसए कालासवेसियपुत्ते जाव सव्वदुक्खप्पहीणे । सेवं भंते !, सेवं भंते ! त्ति ।

सत्तमसतस्स दसमो उद्देसओ समत्तो.

सत्तमं सयं समत्तं ।

कया पुद्गलो प्रकाश करे ?

११. [प्र०] हे भगवन् ! अचित्त छतां पण कया पुद्गलो अवभास करे, यावत् प्रकाश करे ? [उ०] हे कालोदायि ! क्रोधायमान थयेला साधुनी तेजोलेश्या नीकळीने दूर जइने दूर पडे छे. देशमां (जवा योग्य स्थाने) जइने ते देशमां–स्थानमां पडे छे. ज्यां ज्यां ते पडे छे त्यां त्यां अचित्त पुद्गलो पण अवभास करे छे, यावत् प्रकाश करे छे. ते कारणथी हे कालोदायि ! ए अचित्त पुद्गलो पण अवभास करे छे, यावत् प्रकाश करे छे. त्यार बाद ते कालोदायी अनगार श्रमण भगवान् महावीरने वंदन करे छे, नमस्कार करे छे अने घणा चतुर्थ (उपवास), षष्ठ (बे उपवास), अष्टम (त्रण उपवास) (इत्यादि तप वडे) यावत् आत्माने वासित करता ते प्रथम शतकमां *कालासवेसियपुत्तनी पेठे यावद् सर्वदुःखथी रहित थया. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे [एम कही गौतम यावत् विचरे छे]

सातमा शतकनो दसमो उद्देशक समाप्त.

---

१ पभासंति ख । 　 ११. * जुओ (श. १. उ. ९ पृ. २०७)

अट्ठमं सयं.

१. १ पोग्गल २ आसीविस ३ रुक्ख ४ किरिय ५ आजीव ६ फासुक-७ मदत्ते ।
८ पडिणीय ९ बंध १० आराहणा य दस अट्ठमंमि सते ॥

पढमो उद्देसो.

२. [प्र०] रायगिहे जाव एवं वदासी-कइविहा णं भंते ! पोग्गला पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! तिविहा पोग्गला पन्नत्ता, तं जहा-पओगपरिणया, मीससापरिणया, वीससापरिणया य ।

अष्टम शतक.

१. [उद्देश संग्रह-] १ पुद्गल, २ आशीविष, ३ वृक्ष, ४ क्रिया, ५ आजीव, ६ प्रासुक, ७ अदत्त, ८ प्रत्यनीक, ९ बन्ध अने १० आराधना---ए संबंधे दश उद्देशको आठमां शतकमां छे.

[१ पुद्गलना परिणाम विषे प्रथम उद्देशक छे, २ आशीविषादि संबंधे बीजो उद्देशक छे, ३ वृक्षादि विषे त्रीजो उद्देशक छे, ४ कायिकीआदि क्रिया विषे चोथो उद्देशक छे, ५ आजीवक विषे पांचमो उद्देशक छे, ६ प्रासुकदानादि विषे छट्ठो उद्देशक छे, ७ अदत्तादान विषे सातमो उद्देशक छे, ८ प्रत्यनीक (गुर्वादिना विद्वेषी) विषे आठमो उद्देशक छे, ९ प्रयोगबन्धादिने विषे नवमो उद्देशक छे, अने १० आराधना इत्यादिने विषे दशमो उद्देशक छे.]

प्रथम उद्देशक.

पुद्गलनो परिणाम.

२. [प्र०] राजगृह नगरमां यावत् [गौतम] ए प्रमाणे बोल्या---हे भगवन् ! केटला प्रकारना पुद्गलो कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रकारना पुद्गलो कह्या छे. ते आ प्रमाणे-१ प्रयोगपरिणत (प्रयोग एटले जीवना व्यापारथी शरीरादिरूपे परिणाम पामेला), २ *मिश्रपरिणत (मिश्र-प्रयोग अने स्वभाव बन्नेना संबन्ध-थी परिणाम पामेला), अने ३ विस्रसापरिणत (विस्रसा-स्वभाव-थी परिणमेला)

---

१ फासुग घ । २ अट्ठमंसि सए क-ग ।

२. * प्रयोगपरिणामनो त्याग कर्या सिवाय विस्रसा-स्वभाव-थी परिणामान्तरने प्राप्त थयेला मृतकलेवरादि पुद्गलो ते मिश्रपरिणत कहेवाय छे; अथवा विस्रसाथी परिणत थयेली औदारिकादि वर्गणाओ जीवना प्रयोगथी ज्यारे औदारिकादिशरीर वगेरे रूपे परिणत थाय त्यारे ते पण मिश्रपरिणत कहेवाय छे. यद्यपि औदारिकादिशरीरपणे परिणाम पामेल औदारिकादि वर्गणाओ प्रयोगपरिणत कहेवाय छे, कारण के त्यां विस्रसापरिणामनी विवक्षा नथी, पण जो विस्रसा अने प्रयोग ए उभयपरिणामनी विवक्षा करवामां आवे तो ते मिश्रपरिणत कहेवाय छे.-टीकाकार.

३. [प्र०] पओगपरिणया णं भंते ! पोग्गला कइविहा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! पंचविहा पन्नत्ता, तं जहा–एगिंदियपओगपरिणया, बेइंदियपओगपरिणया, जाव पंचिंदियपओगपरिणया ।

४. [प्र०] एगिंदियपओगपरिणया णं भंते ! पोग्गला कइविहा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! पंचविहा पन्नत्ता, तं जहा–पुढविकाइअएगिंदियपओगपरिणया, जाव वणस्सइकाइअएगिंदिअपओगपरिणया ।

५. [प्र०] पुढविकाइअएगिंदिअपओगपरिणया णं भंते ! पोग्गला कइविहा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा–सुहुमपुढविकाइअएगिंदिअपओगपरिणया, बादरपुढविकाइअएगिंदियपओगपरिणया य । आउकाइअएगिंदिअपयोगपरिणया एवं चेव, एवं दुयओ भेदो जाव [1]वणस्सइकाइआ य ।

६. [प्र०] बेइंदियपओगपरिणयाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! अणेगविहा पन्नत्ता, एवं तेइंदियपयोगपरिणया, चउरिंदियपयोगपरिणया वि ।

७. [प्र०] पंचिंदियपयोगपरिणयाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! चउव्विहा पन्नत्ता । तं जहा—नेरइयपंचिंदियपयोगपरिणया, [2]तिरिक्खपंचिंदियपयोगपरिणता, एवं मणुस्स०, देवपंचिंदियपरिणया य ।

८. [प्र०] नेरइयपंचिंदियपओगपरिणयाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सत्तविहा पन्नत्ता, तं जहा—रयणप्पभापुढविनेरइअपंचिंदियपयोगपरिणता वि, जाव अहेसत्तमपुढविनेरइअपयोगपरिणता वि ।

९. [प्र०] तिरिक्खजोणियपंचिंदियपयोगपरिणयाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! तिविहा पन्नत्ता, तं जहा–[3]जलचरपंचिंदियतिरिक्खजोणियपयोगपरिणया, थलचरपंचिंदिय०, खहचरपंचिंदिय० ।

प्रयोगपरिणत पुद्गलो. प्रथम दंडक.

३. [प्र०] [1]हे भगवन् ! प्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! पांच प्रकारना कह्या छे; ते आ प्रमाणे–एकेन्द्रियप्रयोगपरिणत (एकेन्द्रिय जीवना व्यापार वडे परिणाम पामेला), बेइन्द्रियप्रयोगपरिणत, यावत् पंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो.

एकेन्द्रियप्रयोगपरिणत.

४. [प्र०] हे भगवन् ! एकेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! पांच प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—पृथिवीकायिकएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो, यावत् वनस्पतिकायिकएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो.

५. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिकएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! बे प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे–सूक्ष्मपृथिवीकायिकएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो, अने बादरपृथिवीकायिकएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो. ए प्रमाणे अप्कायिकएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो (बे प्रकारे) जाणवा, ए प्रमाणे यावत् वनस्पतिकायिकप्रयोगपरिणत पुद्गलो पण बे प्रकारना जाणवा.

बेइन्द्रियप्रयोगपरिणत.

६. [प्र०] हे भगवन् ! बेइन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना छे ? [उ०] हे गौतम ! ते अनेक प्रकारना कह्या छे. ए प्रमाणे तेइन्द्रिय अने चउरिन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो पण जाणवा.

पंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत.

७. [प्र०] हे भगवन् ! पंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! ते चार प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे–नारकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत, तिर्यंचपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत, ए प्रमाणे मनुष्यपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत अने देवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत.

नैरयिकप्रयोगपरिणत.

८. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! नैरयिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो सात प्रकारना कह्या छे; ते आ प्रमाणे—रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत, अने यावत् नीचे सप्तमनरकपृथिवीनैरयिकप्रयोगपरिणत पुद्गलो.

तिर्यंचपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत.

९. [प्र०] हे भगवन् ! तिर्यंचयोनिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! तिर्यंचयोनिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो त्रण प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे—जलचरतिर्यंचयोनिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत, स्थलचरतिर्यंचयोनिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत अने खेचरतिर्यंचयोनिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो.

---

१ वणस्सइकाइयाण पुच्छा, गोयमा ! अणेगविहा पन्नत्ता क । २ तिरिक्ख एवं म– क । ३ –चरतिरिक्खपंचिंदियजोणिय– क ।

३. [1]हवे नव दंडकद्वारा (सू० ३–२४) प्रयोगपरिणत पुद्गलोनुं निरूपण करे छे–१ सूक्ष्म एकेन्द्रियथी आरंभी सर्वार्थसिद्धदेवो पर्यन्त जीवोनी विशेषताथी प्रयोगपरिणत पुद्गलनो प्रथम दंडक, २ तेवी रीते सूक्ष्म पृथिवीकायिकथी प्रारंभी सर्वार्थसिद्धदेवो सुधी पर्याप्त अने अपर्याप्तना भेदथी बीजो दंडक, ३ औदारिकादि पांच शरीरनी विशेषताथी त्रीजो दंडक, ४ पांच इन्द्रियोनी विशेषताथी चोथो दंडक, ५ औदारिकादि पांच शरीर अने स्पर्शादि पांच इन्द्रियोनी विशेषताथी पांचमो दंडक, ६ वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श अने संस्थाननी विशेषताथी छट्ठो दंडक, ७ औदारिकादिशरीर अने वर्णादिनी विशेषताथी सातमो दंडक, ८ इन्द्रियो अने वर्णादिनी विशेषताथी आठमो दंडक, अने ९ शरीर, इन्द्रिय अने वर्णादिनी विशेषताथी नवमो दंडक. ए प्रमाणे नव दंडक जाणवा–टीका.

१०. [प्र०] जलयरतिरिक्खजोणियपयोगपरिणयाणं पुच्छा। [उ०] गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—संमुच्छिमजलयर०, गब्भवक्कंतियजलयर०।

११. [प्र०] थलयरतिरिक्ख० पुच्छा। [उ०] गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—चउप्पयथलयर०, परिसप्पथलयर०।

१२. [प्र०] चउप्पयथलयर० पुच्छा। [उ०] गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—संमुच्छिमचउप्पयथलयर०, गब्भवक्कंतियचउप्पयथलयर०। एवं एएणं अभिलावेणं परिसप्पा दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—उरपरिसप्पा य भुयपरिसप्पा य। उरपरिसप्पा दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—संमुच्छिमा य गब्भवक्कंतिया य। एवं भुयपरिसप्पा वि, एवं खहयरा वि।

१३. [प्र०] मणुस्सपंचिंदियपओग० पुच्छा। [उ०] गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—संमुच्छिममणुस्स०, गब्भवक्कंतियमणुस्स०।

१४. [प्र०] देवपंचिंदियपओग० पुच्छा। [उ०] गोयमा ! चउव्विहा पन्नत्ता, तं जहा—भवणवासिदेवपंचिंदियपओग०, एवं जाव वेमाणिया।

१५. [प्र०] भवणवासिदेवपंचिंदिय० पुच्छा। [उ०] गोयमा ! दसविहा पन्नत्ता, तं जहा—असुरकुमार०, जाव थणियकुमार०। एवं एतेणं अभिलावेणं अट्ठविहा वाणमंतरा, पिसाया जाव गंधव्वा। जोतिसिया पंचविहा पन्नत्ता, तं जहा—चंदविमाणजोतिसियाँ, जाव ताराविमाणजोइसिओ देवा। वेमाणिआ दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—कप्पोवर्गे० कप्पातीतगवेमाणिआ। कप्पोवगा दुवालसविहा पन्नत्ता, तं जहा—सोहम्मकप्पोवग० जाव अच्चुयकप्पोवगवेमाणिआ। कप्पातीतर्गे० दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—गेवेज्जगकप्पातीतग० अणुत्तरोववातीयकप्पातीतग०। गेवेज्जगकप्पातीतर्गे० नवविहा पन्नत्ता, तं जहा—हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जगकप्पातीतग०, जाव उवरिमउवरिमगेवेज्जगकप्पातीतग०।

१०. [प्र०] हे भगवन् ! जलचरतिर्यंचयोनिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! जलचरतिर्यंचयोनिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो बे प्रकारना कह्या छे; ते आ प्रमाणे—संमूर्छिमजलचरतिर्यंचपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत अने गर्भजजलचरतिर्यंचपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत.

जलचरादिप्रयोगपरिणत.

११. [प्र०] हे भगवन् ! स्थलचरतिर्यंचयोनिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! स्थलचरतिर्यंचयोनिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो बे प्रकारना कह्या छे; ते आ प्रमाणे—चतुष्पदस्थलचरपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत अने परिसर्पस्थलचरतिर्यंचपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! चतुष्पदस्थलचरतिर्यंचयोनिकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! चतुष्पदस्थलचरतिर्यंचपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो बे प्रकारना कह्या छे; ते आ प्रमाणे—संमूर्छिमचतुष्पदस्थलचरतिर्यंचपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत अने गर्भजचतुष्पदस्थलचरतिर्यंचपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत. ए प्रमाणे ए अभिलाप (पाठ) वडे परिसर्पो बे प्रकारना कह्या छे—उरपरिसर्प अने भुजपरिसर्प. उरपरिसर्पो बे प्रकारना कह्या छे—संमूर्छिम अने गर्भज. ए प्रमाणे भुजपरिसर्पो अने खेचरो (पक्षीओ) पण बे प्रकारना कह्या छे.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! मनुष्यपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! मनुष्यपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—संमूर्छिममनुष्यप्रयोगपरिणत अने गर्भजमनुष्यपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत.

मनुष्यप्रयोगपरिणत.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! देवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! देवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो चार प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे—भवनवासिदेवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत, अने यावत् वैमानिकदेवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो.

देवप्रयोगपरिणत.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! भवनवासिदेवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! दश प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे—असुरकुमारप्रयोगपरिणत, यावत् स्तनितकुमारप्रयोगपरिणत. ए प्रमाणे ए अभिलाप वडे आठ प्रकारना वानव्यंतरो, पिशाचो यावत् गान्धर्वो कहेवा, ज्योतिषिको पांच प्रकारना कह्या छे; ते आ प्रमाणे—चन्द्रविमानज्योतिषिकदेव, यावत् ताराविमानज्योतिषिकदेव. वैमानिक देवो बे प्रकारना कह्या छे; ते आ प्रमाणे—कल्पोपपन्नकवैमानिकदेव अने कल्पातीतवैमानिक देव. कल्पोपपन्नकवैमानिक बार प्रकारना कह्या छे; सौधर्मकल्पोपन्नक, यावत् अच्युतकल्पोपन्नक. कल्पातीतवैमानिको हे गौतम ! बे प्रकारे कह्या छे; ते आ प्रमाणे—ग्रैवेयककल्पातीतवैमानिक देव अने अनुत्तरौपपातिककल्पातीत वैमानिक देव. ग्रैवेयककल्पातीत वैमानिक देवो नव प्रकारे कह्या छे; ते आ प्रमाणे—अधस्तन अधस्तन (नीचेनी त्रिकमां नीचे रहेला) ग्रैवेयककल्पातीत वैमानिक देवो, यावत् उपर उपर (उपरनी त्रिकमां उपरना) ग्रैवेयक कल्पातीत देवो.

भवनवासि, व्यन्तर, ज्योतिषिक अने वैमानिकप्रयोगपरिणत.

१–सिय–क। २–सिअदेव–घ। ३ कप्पोववग–घ। ४–तग गो० दुवि–घ। ५–तगा न–क।

१६. [प्र०] अणुत्तरोववाइअकप्पातीतगवेमाणिअदेवपंचिंदियपयोगपरिणया णं भंते ! पोग्गला कइविहा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! पंचविहा पन्नत्ता, तं जहा–विजयअणुत्तरोववाइअ० जाव परिणया, जाव सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयदेवपंचिंदिय० जाव परिणया । (दं. १.)

१७. [प्र०] सुहुमपुढविक्काइअएगिंदिअपयोगपरिणता णं भंते ! पोग्गला कइविहा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा–केति अपज्जत्तगं पढमं भणंति पच्छा पज्जत्तगं । पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइअ० जाव परिणता य अपज्जत्तासुहुम-पुढविक्काइअ० जाव परिणता य । बादरपुढविक्काइअएगिंदिय० एवं चेव, एवं जाव वणस्सइकाइआ । एक्केका दुविहा सुहुमा य बादरा य पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य भाणिअव्वा ।

१८. [प्र०] बेइंदियपओगपरिणताणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा–पज्जत्तगबेइंदियपओगपरिणता य अपज्जत्तग० जाव परिणया य । एवं तेइंदिया वि, एवं चउरिंदिया वि ।

१९. [प्र०] रयणप्पभापुढविनेरइअ० पुच्छा । [उ०] गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा–पज्जत्तगरयणप्पभा० जाव परि-णता य अपज्जत्तग० जाव परिणता य, एवं जाव अहेसत्तमा ।

२०. [प्र०] संमुच्छिमजलयरतिरिक्ख० पुच्छा । [उ०] गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा–पज्जत्तग० अपज्जत्तग० । एवं गब्भवक्कंतिया वि । संमुच्छिमचउप्पयथलयरा एवं चेव, एवं गब्भवक्कंतिया वि । एवं जाव संमुच्छिमखहयर० गब्भवक्कंतिया य, एक्केक्के पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य भाणिअव्वा ।

२१. [प्र०] संमुच्छिममणुस्सपंचिंदिय० पुच्छा । [उ०] गोयमा ! एगविहा पन्नत्ता, अपज्जत्तगा चेव ।

२२. [प्र०] गब्भवक्कंतियमणुस्सपंचिंदिय० पुच्छा । [उ०] गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा–पज्जत्तगगब्भवक्कंतिया वि, अपज्जत्तगगब्भवक्कंतिया वि ।

१६. [प्र०] अनुत्तरौपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! पांच प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे— विजयअनुत्तरौपपातिकदेवप्रयोगपरिणत, यावत् सर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिकदेवपंचेन्द्रियप्रयोग-परिणत (दं. १.)

द्वितीय दंडक. सूक्ष्मपृथिवीकायिकादिप्रयोगपरिणत.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! सूक्ष्मपृथिवीकायिकएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कह्या छे, ? [उ०] हे गौतम ! बे प्रकारना कह्या छे; ते आ प्रमाणे—पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत अने अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकएकेन्द्रियप्रयोग-परिणत. आ स्थळे (बीजी वाचनामां) कोइ अपर्याप्तने प्रथम कहे छे, अने पछी पर्याप्तने कहे छे. ए प्रमाणे बादरपृथिवीकायिकएकेन्द्रिय, यावत् वनस्पतिकायिक कहेवा. ते बधा बबे प्रकारे छे—सूक्ष्म अने बादर, तथा पर्याप्त अने अपर्याप्त.

बेइन्द्रियादिप्रयोगपरिणत.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! बेइन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! बे प्रकारना कह्या छे; ते आ प्रमाणे—पर्याप्तबेइन्द्रियप्रयोगपरिणत अने अपर्याप्तबेइन्द्रियप्रयोगपरिणत. ए प्रमाणे त्रीन्द्रियो अने चउरिन्द्रियो पण जाणवा.

रत्नप्रभादिनैरयिकप्रयोगपरिणत.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! बे प्रकारना कह्या छे; ते आ प्रमाणे–पर्याप्तरत्नप्रभापृथिवीनैरयिकप्रयोगपरिणत अने अपर्याप्तरत्नप्रभापृथिवीनैरयिकप्रयोगपरिणत. ए प्रमाणे यावत् नीचे सातमी नरकपृथ्वी सुधी जाणवुं.

संमूर्छिमजलचरादिप्रयोगपरिणत.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! संमूर्छिमजलचरतिर्यंचयोनिकप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! बे प्रका-रना कह्या छे; ते आ प्रमाणे–पर्याप्तसंमूर्छिमजलचरप्रयोगपरिणत अने अपर्याप्तसंमूर्छिमजलचरप्रयोगपरिणत. ए प्रमाणे गर्भज जलचरो पण जाणवा. ए प्रमाणे संमूर्छिम तथा गर्भज चतुष्पदस्थलचर जीवो जाणवा, ए प्रमाणे यावत् संमूर्छिम तथा गर्भज खेचरो पण जाणवा; ते दरेकना पर्याप्त अने अपर्याप्त बे भेदो कहेवा.

संमूर्छिममनुष्यादिप्रयोगपरिणत.

२१. [प्र०] हे भगवन् ! संमूर्छिममनुष्यपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! ते एक प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे–अपर्याप्तसंमूर्छिममनुष्यपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत.

२२. [प्र०] हे भगवन् ! गर्भजमनुष्यपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! बे प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे—पर्याप्तगर्भजप्रयोगपरिणत अने अपर्याप्तगर्भजप्रयोगपरिणत.

---

१ बेंदिय–घ । २–पओग जाव प–क । ३ गब्भवक्कंतिया य एवं क ।

२३. [प्र०] असुरकुमारभवणवासिदेवाणं पुच्छा। [उ०] गोयमा! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—पज्जत्तगअसुरकुमार०, अपज्जत्तगअसुरकुमार०; एवं जाव थणियकुमारा पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य। एवं एतेणं अभिलावेणं दुयएणं भेदेणं पिसाया, जाव गंधव्वा; चंदा, जाव ताराविमाणा; सोहम्मकप्पोवगा, जावच्चुतो; हेट्ठिमहेट्ठिमगेविज्जकप्पातीत० जाव उवरिमउवरिमगेविज्ज०; विजयअणुत्तरोववाइअ०, जाव अपराजिअ०।

२४. [प्र०] सव्वट्ठसिद्धकप्पातीत० पुच्छा। [उ०] गोयमा! दुविहा पन्नत्ता, तं जहा—पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइअ०, अपज्जत्तासव्वट्ठ० जाव परिणता वि (दं. २.).

जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइअएगिंदिअपयोगपरिणया ते ओरालिय–तेया–कम्मगसरीरप्पयोगपरिणया। जे पज्जत्तसुहुम० जाव परिणया ते ओरालिय-तेया–कम्मगसरीरप्पयोगपरिणया, एवं जाव चउरिंदिया पज्जत्ता; णवरं जे पज्जत्ताबादरवाउकाइअएगिंदियप्पयोगपरिणया ते ओरालिय–वेउव्विय–तेया–कम्मसरीर० जाव परिणता; सेसं तं चेव। जे अपज्जत्तरयणप्पभापुढविनेरइयपंचिंदियपयोगपरिणया ते [1]वेउव्विय–तेया–कम्मसरीरप्पयोगपरिणया; एवं पज्जत्तगा वि, एवं जाव अहेसत्तमा। जे [2]अपज्जत्तासंमुच्छिमजलयर० जाव परिणया ते ओरालिय–तेया–कम्मासरीर० जाव परिणया, एवं पज्जत्तगा वि। गब्भवक्कंतियअपज्जत्तगा एवं चेव; पज्जत्तगा णं एवं चेव। नवरं सरीरगाणि चत्तारि जहा बादरवाउकाइआणं पज्जत्तगाणं; एवं जहा जलचरेसु चत्तारि आलावगा भणिआ [3]एवं चतुप्पद–उरपरिसप्प–भुयपरिसप्प–खहयरेसु वि चत्तारि आलावगा भाणिअव्वा। जे संमुच्छिममणुस्सपंचिंदियपयोगपरिणया ते ओरालिय–तेया–कम्मसरीर० [4]जाव परिणया। एवं गब्भवक्कंतिया वि; अपज्जत्तग-पज्जत्तगा वि एवं चेव, नवरं सरीरगाणि पंच भाणियव्वाणि। जे अपज्जत्ताअसुरकुमारभवणवासि० जहा नेरइया तहेव, एवं पज्जत्तगा वि, एवं [5]दुयएणं भेदेणं जाव थणियकुमारा। एवं पिसाया, जाव गंधव्वा, चंदा, जाव ताराविमाणा, सोहम्मकप्पो०, जावच्चुओ; हेट्ठिमहिट्ठिमगेवेज्जग०, जाव उवरिमउवरिमगेवेज्जग०, विजयअणुत्तरोववाइए, जाव सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइए; एक्केके णं [6]दुयओ

२३. [प्र०] हे भगवन्! असुरकुमारभवनवासिदेवप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कह्या छे? [उ०] हे गौतम! बे प्रकारना कह्या छे; ते आ प्रमाणे—पर्याप्तअसुरकुमारप्रयोगपरिणत अने अपर्याप्तअसुरकुमारप्रयोगपरिणत; ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारो पर्याप्त अने अपर्याप्त जाणवा. ए प्रमाणे ए अभिलाप वडे बे भेदो पिशाचो यावद् गांधर्वोना जाणवा. तेमज चन्द्रो यावत् ताराविमानो, सौधर्मकल्पोपपन्नक, यावत् अच्युत कल्पोपपन्नक, तथा नीचे नीचेनी ग्रैवेयक कल्पातीत यावत् उपर उपरना ग्रैवेयककल्पातीतदेवप्रयोगपरिणत, विजयअनुत्तरौपपातिक, यावत् अपराजितअनुत्तरौपपातिक.

असुरकुमारादिप्रयोगपरिणत.

२४. [प्र०] हे भगवन्! सर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिककल्पातीतदेवप्रयोगपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कह्या छे? [उ०] हे गौतम! ते बे प्रकारना कह्या छे; ते आ प्रमाणे—पर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिक; यावत् अपर्याप्तसर्वार्थसिद्धप्रयोगपरिणत. ए [प्रमाणे बे दंडको जाणवा.]

सर्वार्थसिद्धदेवप्रयोगपरिणत.

जे पुद्गलो अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते औदारिक, तैजस अने कार्मणशरीरप्रयोगपरिणत छे; अने जे पुद्गलो पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते औदारिक, तैजस अने कार्मणशरीरप्रयोगपरिणत छे. ए प्रमाणे यावत् चउरिन्द्रिय पर्याप्ता जाणवा. परन्तु विशेष ए छे के जे पुद्गलो पर्याप्तबादरवायुकायिकएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते औदारिक, वैक्रिय, तैजस अने कार्मणशरीरप्रयोगपरिणत छे, बाकीनुं सर्व पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. जे पुद्गलो अपर्याप्तरत्नप्रभापृथिवीनारकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते वैक्रिय, तैजस अने कार्मणशरीरप्रयोगपरिणत छे. ए प्रमाणे पर्याप्तनारको पण जाणवा. ए प्रमाणे यावत् सप्तम पृथिवी सुधी जाणवुं. जे पुद्गलो अपर्याप्तसंमूर्छिमजलचरप्रयोगपरिणत छे ते औदारिक, तैजस, अने कार्मणशरीर यावत् परिणत छे. ए प्रमाणे पर्याप्ता [संमूर्छिम जलचर] पण जाणवा. गर्भजअपर्याप्त अने गर्भजपर्याप्त पण एमज जाणवा. परन्तु विशेष ए छे के पर्याप्तबादरवायुकायिकना पेठे तेओने चार शरीर होय छे. ए प्रमाणे जेम जलचरोमां चार आलापक कहेला छे तेम चतुष्पद, उरपरिसर्प, भुजपरिसर्प अने खेचरोमां पण चार आलापक कहेवा, जे पुद्गलो संमूर्छिममनुष्यपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे, ते औदारिक, तैजस अने कार्मणशरीरप्रयोगपरिणत छे; ए प्रमाणे गर्भज अपर्याप्ता जाणवा, पर्याप्ता पण एमज जाणवा. परन्तु विशेष ए के तेओने पांच शरीर कहेवां. जेम नैरयिको संबन्धे कह्युं, तेम अपर्याप्त असुरकुमारभवनवासि देवो संबन्धे पण जाणवुं, तेम पर्याप्ता संबन्धे पण जाणवुं, ए प्रकारे ए बे भेदवडे यावत् स्तनितकुमारो पण जाणवा. ए प्रमाणे पिशाचो अने यावत् गांधर्वो जाणवा. चंद्रो यावत् तारा विमानो, सौधर्मकल्प यावत् अच्युतकल्प, नीचेनी त्रिकमां नीचेना ग्रैवेयक यावत् उपरनी त्रिकमां उपरना ग्रैवेयक अने विजयअनुत्तरौपपातिक यावत् सर्वार्थसिद्ध. अनुत्तरौपपातिकना प्रत्येके बब्बे भेद कहेवा; यावत् जे

तृतीयदंडक. सूक्ष्मपृथिवीकायिकादिप्रयोगपरिणत.

रत्नप्रभादि नैरयिक प्रयोगपरिणत.

जलचरादितिर्यंचप्रयोगपरिणत.

मनुष्यप्रयोगपरिणत.

असुरकुमारादिदेवप्रयोगपरिणत.

१–तेयाकम्मास- क। २ अपज्जत्तगसं- घ। ३ तहा च- क। ४ पयोगप- क। ५ दुपएणं क। ६ दुयभेया क–ग।

भेदो भाणिअव्वो, जाव जे य पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइअ०, जाव परिणता ते वेउव्विय–तेआ–कम्मासरीरपओग-परिणया (दं. ३.).

जे अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइअएगिंदिअपयोगपरिणता ते फासिंदिअपयोगपरिणया । जे पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइअ० एवं चेव । जे अपज्जत्ताबादरपुढविक्काइअ० एवं चेव, एवं पज्जत्तगा वि । एवं चउक्कएणं भेदेण जाव वणस्सतिकाइआ । जे अपज्जत्ताबेइंदियपयोगपरिणया ते जिब्भिंदिय–फासिंदियपयोगपरिणया, जे पज्जत्ताबेइंदिय० एवं चेव, एवं जाव चतुरिंदिया; नवरं एक्केक्कं इंदियं वड्ढेयव्वं, जाव अपज्जत्तरयणप्पभापुढविनेरइयपंचिंदियपयोगपरिणता ते सोइंदिय–चक्खिंदिय–घाणिंदिय–जिब्भिंदिय–फासिंदियपओगपरिणया । एवं पज्जत्तगा वि, एवं सव्वे भाणिअव्वा तिरिक्खजोणिय–मणुस्स–देवा, जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइअ० जाव परिणया ते सोइंदिय–चक्खिंदिय० जाव परिणया । (दं. ४.).

जे अप्पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइअएगिंदियओरालिय–तेया–कम्मसरीरपयोगपरिणया ते फासिंदियप्पओगपरिणया । जे पज्जत्तासुहुम० एवं चेव, बादरअपज्जत्ता एवं चेव, एवं पज्जत्तगा वि । एवं एतेणं अभिलावेणं जस्स जंति इंदियाणि सरीराणि य ताणि भाणिअव्वाणि, जाव [6]जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइअ०जाव देवपंचिंदियवेउव्विय–तेया–कम्मासरीरप्पओगपरिणया ते सोइंदिय–चक्खिंदिय–जाव फासिंदियप्पयोगपरिणता । (दं. ५.).

जे अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइअएगिंदियपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि, नील–लोहिय–हालिद्द–सुक्किल०; गंधओ सुब्भिगंधपरिणया वि, दुब्भिगंधपरिणया वि; रसओ तित्तरसपरिणया वि, कडुयरसपरिणया वि, कसायरसपरिणया वि, अंबिलरसपरिणया वि, महुररसपरिणया वि; फासओ कक्खडफासपरिणया वि, जाव लुक्खफासपरिणया वि; संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणया वि, वट्ट–तंस–चउरंस–आयत–संठाणपरिणया वि । जे पज्जत्तसुहुमपुढवि० एवं चेव; एवं जहाणुपुव्वीए नेयव्वं, जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइअ० जाव परिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि, जाव आयतसंठाणपरिणया वि । (दं०. ६.).

पुद्गलो अपर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिक यावत् [पर्याप्त सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरौपपातिक—] प्रयोगपरिणत छे, ते वैक्रिय, तैजस अने कार्मणशरीरप्रयोगपरिणत छे. ए प्रमाणे त्रण दंडक कह्या.

चतुर्थ दंडक. जे पुद्गलो अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे, जे पुद्गलो पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते ए प्रमाणे [स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणत] छे. जे पुद्गलो अपर्याप्तबादरपृथिवीकायिकप्रयोगपरिणत छे ते पण एज प्रकारे छे. जे पुद्गलो पर्याप्तबादरपृथिवीकायिकप्रयोगपरिणत छे ते पण एवाज छे. ए प्रमाणे चार भेदो यावद् वनस्पतिकायिकोना जाणवा. जे पुद्गलो अपर्याप्तबेइन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते जिह्वाइन्द्रिय अने स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे. जे पर्याप्तबेइन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते ए प्रमाणे जाणवा. ए प्रकारे यावत् चउरिन्द्रिय जीवो जाणवा; परन्तु एक एक इन्द्रिय वधारवी [अर्थात् त्रीन्द्रियजीवोने स्पर्शेन्द्रिय, रसेन्द्रिय अने घ्राणेन्द्रिय कहेवी, अने चउरिन्द्रियजीवोने एक चक्षुरिन्द्रिय वधारवी.] यावत् जे पुद्गलो अपर्याप्तरत्नप्रभापृथिवीनारकपंचेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, जिह्वेन्द्रिय अने स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे. ए प्रमाणे पर्याप्तनारकप्रयोगपरिणत पुद्गलो पण जाणवा. सर्व तिर्यंचयोनिको, मनुष्यो अने देवो पण ए प्रकारे कहेवा. यावत् जे पुद्गलो पर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिकदेवप्रयोगपरिणत छे ते श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय इत्यादि यावत् परिणत छे. [दं. ४]

पंचम दंडक. जे पुद्गलो अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकएकेन्द्रिय औदारिक, तैजस अने कार्मणशरीरप्रयोगपरिणत छे ते स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे. जे पुद्गलो पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकप्रयोगपरिणत छे ते ए प्रमाणे [स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणत] छे. अपर्याप्तबादरपृथिवीकायिक अने पर्याप्तबादरपृथिवीकायिक पण ए प्रमाणे जाणवा. ए प्रकारे ए अभिलाप (पाठ) वडे जेने जेटली इन्द्रियो अने शरीरो होय तेने तेटलां कहेवां. यावत् जे पुद्गलो पर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिकदेवपञ्चेन्द्रिय वैक्रिय, तैजस अने कार्मणशरीरप्रयोगपरिणत छे ते श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे. [दं. ५]

षष्ठ दंडक. जे पुद्गलो अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते वर्णथी कालावर्णे, नीलवर्णे, रक्तवर्णे, पीतवर्णे अने शुक्लवर्णे पण परिणत छे; गन्धथी सुरभिगन्ध अने दुरभिगन्धपणे पण परिणत छे. रसथी तिक्तरस, कटुकरस, कषायरस, अम्लरस अने मधुररसरूपे पण परिणत छे; स्पर्शथी कर्कशस्पर्श, यावत् रूक्षस्पर्शरूपे पण परिणत छे, अने संस्थानथी परिमंडलसंस्थान, वृत्तसंस्थान, त्र्यस्रसंस्थान, चतुरस्र (चोरस) संस्थान अने आयतसंस्थानरूपे पण परिणत छे. जे पुद्गलो पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकएकेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे, ते ए प्रमाणे जाणवा. अने ए प्रकारे सर्व क्रमपूर्वक जाणवुं, यावत् जे पुद्गलो पर्याप्त सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरौपपातिक–यावत् प्रयोगपरिणत छे ते वर्णथी कालावर्णे परिणत पण छे, यावत् आयतसंस्थान रूपे पण परिणत छे. [दं. ६]

---

१ भाणिअव्वा क । २ अपज्जत्ता–घ । ३ कम्मास–क । ४ जइ घ । ५ इंदियाइं क । ६ जे य प–घ । ७ –णया वि ते क । ८ सुक्किल्ला क ।

जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियओरालिय–तेया–कम्मासरीरप्पओगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि, जाव आयतसंठाणपरिणया वि । जे पज्जत्तासुहुमपुढविकाइय० एवं चेव । एवं जहाणुपुव्वीए नेयव्वं, जस्स जइ सरीराणि, जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयदेवपंचिंदियवेउव्विय–तेया–कम्मासरीर– जाव परिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणता वि, जाव आयतसंठाणपरिणता वि (दं. ७)

जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियफासिंदियपयोगपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणया, जाव आयतसंठाणपरिणया वि । जे पज्जत्तासुहुमपुढविकाइय० एवं चेव । एवं जहाणुपुव्वीए जस्स जति इंदियाणि तस्स तति भाणियव्वाणि, जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइअ- जाव देवपंचिंदियसोतिंदिय– जाव फासिंदियपयोगपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणया, जाव आयतसंठाणपरिणता वि । (दं. ८)

जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियओरालिय–तेया–कम्मा–फासिंदियपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि, जाव आयतसंठाणपरिणया वि । जे पज्जत्तासुहुमपुढविकाइय० एवं चेव । एवं जहाणुपुव्वीए जस्स जति सरीराणि इंदियाणि य तस्स तति भाणियव्वाणि, जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयदेवपंचिंदियवेउव्विय–तेया–कम्मा–सोइंदिय–जाव फासिंदियपओगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया, जाव आयतसंठाणपरिणता वि । एवं एते नव दंडगा ।

२५. [प्र०] मीसापरिणया णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! पंचविहा पन्नत्ता, तं जहा—एगिंदियमीसापरिणया, जाव पंचिंदियमीसापरिणया ।

२६. [प्र०] एगिंदियमीसापरिणया णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! एवं जहा पओगपरिणतेहिं नव दंडगा भणिया, एवं मीसापरिणएहिं वि नव दंडगा भाणियव्वा, तहेव सव्वं निरवसेसं, नवरं अभिलावो 'मीसापरिणया' भाणियव्वं, सेसं तं चेव, जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्ध-अणुत्तरोववाइअ– जाव आयतसंठाणपरिणया वि ।

सप्तम दंडक.

जे पुद्गलो अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकएकेन्द्रियऔदारिक, तैजस अने कार्मणशरीरप्रयोगपरिणत छे, ते वर्णथी कालावर्णे पण परिणत छे, यावत् आयतसंस्थानरूपे पण परिणत छे. ए प्रमाणे पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकप्रयोगपरिणत पुद्गलो पण जाणवा. ए प्रकारे यथानुक्रमे जाणवुं. जेने जेटलां शरीर होय [तेने तेटलां कहेवां] यावत् जे पुद्गलो पर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिकदेवपंचेन्द्रिय वैक्रिय, तैजस अने कार्मणशरीरप्रयोगपरिणत छे ते वर्णथी कालावर्णे पण परिणत छे, अने संस्थानथी यावत् आयतसंस्थानरूपे पण परिणत छे [दं. ७]

अष्टम दंडक.

जे पुद्गलो अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकएकेन्द्रियस्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते वर्णथी कालावर्णे परिणत छे, यावत् आयतसंस्थानरूपे पण परिणत छे. जे पुद्गलो पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिक एकेन्द्रियस्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते पण ए प्रमाणे जाणवा. ए प्रकारे सर्व अनुक्रमे जाणवुं, जेने जेटली इन्द्रियो होय तेने तेटली कहेवी; यावत् जे पुद्गलो पर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिकदेवपंचेन्द्रिय श्रोत्रेन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते वर्णथी कालावर्णे परिणत छे, यावत् आयतसंस्थानपणे परिणत छे [दं. ८]

नवम दंडक.

जे पुद्गलो अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकएकेन्द्रिय औदारिक, तैजस अने कार्मण, अने स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते वर्णथी कालावर्णे पण परिणत छे, यावत् आयतसंस्थानपणे पण परिणत छे. जे पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिक–[एकेन्द्रिय औदारिक, तैजस अने कार्मण तथा स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते पण] ए प्रमाणे जाणवा. ए प्रकारे अनुक्रमे सर्व जाणवुं. जेने जेटलां शरीर अने इन्द्रियो होय तेने तेटलां कहेवां, यावत् जे पुद्गलो पर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिकदेवपंचेन्द्रिय–वैक्रिय, तैजस अने कार्मण तथा श्रोत्रेन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रियप्रयोगपरिणत छे ते वर्णथी कालावर्णे अने यावत् आयतसंस्थानपणे पण परिणत छे. ए प्रमाणे ए नव दंडको कह्या.

मिश्रपरिणत पुद्गलो

२५. [प्र०] हे भगवन् ! मिश्रपरिणत पुद्गलो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! पांच प्रकारना कह्या छे; ते आ प्रमाणे—एकेन्द्रियमिश्रपरिणत अने यावत् पंचेन्द्रियमिश्रपरिणत.

मिश्रपरिणत पुद्गलोने विषे नव दंडक.

२६. [प्र०] हे भगवन् ! एकेन्द्रियमिश्रपरिणतपुद्गलो केटला प्रकारना छे ? [उ०] हे गौतम ! जेम प्रयोगपरिणतपुद्गलो संबन्धे नव दंडक कह्या तेम मिश्रपरिणतपुद्गलो संबन्धे पण नव दंडक कहेवा, तेम बाकीनुं सर्व कहेवुं, परन्तु विशेष ए छे के [प्रयोगपरिणतने स्थाने] 'मिश्रपरिणत' एवो पाठ कहेवो. बाकी बधुं ते प्रमाणे जाणवुं. यावत् जे पुद्गलो पर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिकप्रयोगपरिणत छे ते यावत् आयतसंस्थानरूपे पण परिणत छे.

१–२–जत्ता वि क । ३–एए हिं ग– क ।

२७. [प्र०] वीससापरिणता णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! पंचविहा पन्नत्ता, तं जहा–वन्नपरिणता, गंधपरिणता, रसपरिणता, फासपरिणता, संठाणपरिणता । जे वन्नपरिणता ते पंचविहा पन्नत्ता, तं जहा–कालवन्नपरिणता, जाव सुक्किलवन्नपरिणता । जे गंधपरिणता ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–सुब्भिगंधपरिणया वि, दुब्भिगंधपरिणया वि; एवं जहा पन्नवणाए तहेव निरवसेसं जाव जे संठाणतो आयतसंठाणपरिणता ते वन्नओ कालवन्नपरिणया वि, जाव लुक्खफासपरिणया वि ।

२८. [प्र०] एगे भंते ! दव्वे किं पयोगपरिणए, मीसापरिणए, वीससापरिणए ? [उ०] गोयमा ! पयोगपरिणए वा, मीसापरिणए वा, वीससापरिणए वा ।

२९. [प्र०] जदि पयोगपरिणते किं मणप्पयोगपरिणए, वयप्पयोगपरिणए, कायप्पयोगपरिणए ? [उ०] गोयमा ! मणप्पओगपरिणए वा, वयप्पयोगपरिणए वा, कायप्पओगपरिणए वा ।

३०. [प्र०] जदि मणप्पओगपरिणते किं सच्चमणप्पयोगपरिणते, मोसमणप्पयोगपरिणते, सच्चामोसमणप्पयोगपरिणते, असच्चामोसमणप्पओगपरिणते ? [उ०] गोयमा ! सच्चमणप्पयोगपरिणते वा, मोसमणप्पयोगपरिणते वा, सच्चामोसमणप्पयोगपरिणते वा, असच्चामोसमणप्पओगपरिणते वा ।

३१. [प्र०] जदि सच्चमणप्पओगपरिणते किं आरंभसच्चमणप्पयोगपरिणए, अणारंभसच्चमणप्पयोगपरिणए, सारंभसच्चमणप्पयोगपरिणए, असारंभसच्चमणप्पयोगपरिणए, समारंभसच्चमणप्पयोगपरिणए, असमारंभसच्चमणप्पयोगपरिणए ? [उ०] गोयमा ! आरंभसच्चमणप्पयोगपरिणते वा, जाव असमारंभसच्चमणप्पयोगपरिणए वा ।

विससापरिणतपुद्गलो.

२७. [प्र०] हे भगवन् ! विससापरिणत (स्वभावथी परिणामने प्राप्त थयेला) पुद्गलो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! पांच प्रकारना कह्या छे; ते आ प्रमाणे—वर्णपरिणत, गंधपरिणत, रसपरिणत, स्पर्शपरिणत अने संस्थानपरिणत. जे वर्णपरिणत पुद्गलो छे ते पांच प्रकारना कह्या छे; ते आ प्रमाणे–काळावर्णरूपे परिणत, यावत् शुक्लवर्णरूपे परिणत. जे गंधपरिणत छे ते बे प्रकारना छे; ते आ प्रमाणे—सुगंधपरिणत अने दुर्गंधपरिणत. ए प्रमाणे जेम *प्रज्ञापना पदमां कह्युं छे तेम सर्व जाणवुं. यावत् जे (पुद्गलो) संस्थानथी आयतसंस्थानरूपे परिणत छे ते वर्णथी काळावर्णरूपे पण परिणत छे, यावत् रूक्षस्पर्शरूपे पण परिणत छे.

एकद्रव्यपरिणाम.

२८. [प्र०] हे भगवन् ! एक द्रव्य शुं प्रयोगपरिणत होय, मिश्रपरिणत होय के विस्रसापरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! एक द्रव्य प्रयोगपरिणत होय, मिश्रपरिणत होय के विस्रसापरिणत पण होय.

मनःप्रयोगादिपरिणत.

२९. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते [एकद्रव्य] प्रयोगपरिणत होय तो शुं †मनःप्रयोगपरिणत होय, वाक्प्रयोगपरिणत होय, के कायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते मनःप्रयोगपरिणत होय, वाक्प्रयोगपरिणत होय के कायप्रयोगपरिणत होय.

३०. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एकद्रव्य मनःप्रयोगपरिणत होय तो शुं ‡सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, मृषामनःप्रयोगपरिणत होय; सत्यमृषामनःप्रयोगपरिणत होय के असत्यामृषामनःप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, मृषामनःप्रयोगपरिणत होय, सत्यमृषामनःप्रयोगपरिणत होय के असत्यामृषामनःप्रयोगपरिणत होय.

आरंभसत्यमनःप्रयोगादिपरिणत.

३१. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एकद्रव्य सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय तो शुं ¶आरंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, अनारंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, संरंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, असंरंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, समारंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय के असमारंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते आरंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, यावत् असमारंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत पण होय.

---

१ कालावन्न- क । २ -वणए क । ३ मीसए-क । ४ जइ घ । ५ वइप्प-घ । ६ सच्चामण- क ।

२७. * प्रज्ञा० पद १ प–१०–१

२९. † औदारिकादिकाययोगवडे मनोवर्गणा द्रव्यने ग्रहण करी तेने मनोयोग वडे मनपणे परिणमाव्या जे पुद्गलो ते मनःप्रयोगपरिणत कहेवाय छे, औदारिकादिकाययोग वडे भाषाद्रव्यने ग्रहणकरी वचनयोग वडे भाषारूपे परिणमावी बहार कढाता जे पुद्गलो ते वाक्प्रयोगपरिणत कहेवाय छे, अने काययोग वडे ग्रहण करीने औदारिकादिशरीररूपे परिणमाव्या जे पुद्गलो ते कायप्रयोगपरिणत कहेवाय छे—टीकाकार.

३०. ‡ सत्यपदार्थना चिन्तनकरवारूप मननो व्यापार ते सत्यमनःप्रयोग कहेवाय छे. कंइक सत्य अने कंइक असत्य एम मिश्रित थयेल होय ते सत्यमृषा कहेवाय छे, अने सत्य ने असत्य बन्नेथी रहित ते असत्यमृषा कहेवाय छे.

३१. ¶ आरम्भ—जीवहिंसा, तेने विषे मनःप्रयोग एटले मननो व्यापार, ते वडे परिणाम पामेल जे पुद्गलो ते आरंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत कहेवाय छे, ए प्रमाणे बीजा पण आणी लेवा; परन्तु विशेष ए छे के अनारंभ—जीवहिंसानो अभाव, संरंभ—वधनो संकल्प अने समारंभ—परिताप उपजाववो.—टीकाकार.

३२. [प्र०] जदि मोसमणप्पयोगपरिणते किं आरंभमोसमणप्पओगपरिणए वा ? [उ०] एवं जहा सच्चेणं तहा मोसेण वि, एवं सच्चामोसमणप्पयोगेण वि, एवं असच्चामोसमणप्पयोगेण वि।

३३. [प्र०] जदि वइप्पयोगपरिणते किं सच्चवइप्पयोगपरिणते, मोसवइप्पयोगपरिणते ? [उ०] एवं जहा मणप्पयोगपरिणए तहा वयप्पयोगपरिणए वि, जाव असमारंभवइप्पयोगपरिणते वा।

३४. [प्र०] जदि कायप्पयोगपरिणते किं ओरालियसरीरकायप्पयोगपरिणते, ओरालियमीसासरीरकायप्पयोगपरिणते, वेउव्वियसरीरकायप्पयोगपरिणए, वेउव्वियमीसासरीरकायप्पयोगपरिणए, आहारगसरीरकायप्पयोगपरिणते, आहारगमीसासरीरकायप्पयोगपरिणते, कम्मासरीरकायप्पयोगपरिणते ? [उ०] गोयमा ! ओरालियसरीरकायप्पयोगपरिणते वा, जाव कम्मासरीरकायप्पयोगपरिणते वा।

३५. [प्र०] जदि ओरालियसरीरकायप्पयोगपरिणते किं एगिंदियओरालियसरीरकायप्पयोगपरिणते, एवं जाव पंचिंदियओरालिय- जाव परिणते ? [उ०] गोयमा ! एगिंदियओरालियसरीरकायप्पयोगपरिणते वा, बेइंदिय- जाव परिणते वा, जाव पंचिंदियओरालियकायप्पयोगपरिणए वा।

३२. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य मृषामनःप्रयोगपरिणत होय तो शुं आरंभमृषामनःप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] ए प्रमाणे जेम सत्यमनःप्रयोगपरिणतने विषे कह्युं तेम मृषामनःप्रयोगपरिणत विषे जाणवुं. ए प्रमाणे सत्यमृषामनःप्रयोगने विषे अने असत्यामृषामनः-प्रयोगने विषे पण जाणवुं.

३३. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य वाक्प्रयोगपरिणत होय तो शुं सत्यवाक्प्रयोगपरिणत होय ? [उ०] ए प्रमाणे जेम मनः-प्रयोगपरिणतने विषे कह्युं, तेम वचनप्रयोगपरिणतने विषे पण जाणवुं, यावत् असमारंभवचनप्रयोगपरिणत होय.

औदारिककायप्रयोगपरिणत.

३४. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य कायप्रयोगपरिणत होय तो शुं १ *औदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय, २ औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत होय, ३ वैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणत होय, ४ †वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत होय, ५ आहारकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय, ६ ‡आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत होय के ७ ¶कार्मणशरीरकायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते एक द्रव्य औदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत पण होय, यावत् कार्मणशरीरकायप्रयोगपरिणत पण होय.

औदारिककायप्रयोगपरिणत.

३५. [प्र०] जो ते (एक द्रव्य) औदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं एकेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय, बेइन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय, के यावत् पंचेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते एक द्रव्य एकेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय, बेइन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय, यावत् पंचेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय.

---

१ -प्पयोगपरिणए वि ग। २ मोसवय- क।

३४. * औदारिककायप्रयोग पर्याप्तने ज होय छे, ते वडे परिणत जे पुद्गल द्रव्य ते औदारिककायप्रयोगपरिणत कहेवाय छे. ज्यारे औदारिकशरीर उत्पत्तिसमये अपूर्णावस्थामां कार्मण साथे मिश्र थाय छे त्यारे ते औदारिकमिश्र कहेवाय छे, ते कायप्रयोगथी परिणत जे द्रव्य ते औदारिकमिश्रकायप्रयोगपरिणत कहेवाय छे. आ औदारिकमिश्रकायप्रयोग अपर्याप्त जीवने ज होय छे. परभवमां उत्पत्तिसमये जीव प्रथम कार्मणयोग वडे आहार करे छे, त्यार पछी ज्यांसुधी शरीर (शरीरपर्याप्ति) निष्पन्न न थाय त्यांसुधी औदारिकमिश्रयोगवडे आहार करे छे. ए प्रकारे कार्मण साथे औदारिकशरीरनी मिश्रता होवाथी त्यां औदारिकमिश्रकायप्रयोग जाणवो; केमके उत्पत्तिने लीधे औदारिकशरीरनी प्रधानता छे. वळी औदारिकशरीरवाळो मनुष्य, तिर्यंच के बादरवायुकायिक ज्यारे वैक्रियशरीर करे त्यारे ते औदारिककाययोगने विषे वर्ततो आत्मप्रदेशोने विस्तारी वैक्रियशरीरयोग्य पुद्गलोने ग्रहण करे, अने ज्यांसुधी ते वैक्रियशरीरपर्याप्ति पूर्ण न करे त्यांसुधी वैक्रियनी साथे औदारिकशरीरनी मिश्रता होवाथी तेने औदारिकमिश्रकायप्रयोग जाणवो, केमके ते प्रारंभक होवाथी तेनी (औदारिककायप्रयोगनी) प्रधानता छे. एवी रीते आहारकनी साथे औदारिकनी मिश्रता जाणवी.

† वैक्रियमिश्रकायप्रयोग देव अने नारकमां उत्पन्न थता अपर्याप्तने होय छे; अहीं वैक्रियशरीरनी मिश्रता कार्मणनी साथे छे. वळी लब्धिजन्य वैक्रियशरीरनो त्याग करता अने औदारिकने ग्रहण करता औदारिकशरीरवाळाने वैक्रियनी प्रधानता होवाथी त्यां औदारिकनी साथे वैक्रियनी मिश्रता छे तेथी त्यां वैक्रियमिश्रकायप्रयोग जाणवो.

‡ आहारकमिश्रकायप्रयोग औदारिकनी साथे आहारकनी मिश्रता थाय त्यारे होय छे, अने ते आहारकशरीरने त्याग करतां अने औदारिकशरीरने ग्रहण करतां होय छे. अर्थात्—ज्यारे आहारकशरीरी पोतानुं कार्य समाप्त करीने पुनः औदारिकशरीरने धारण करे त्यारे आहारकनुं प्राधान्य होवाथी अने तेथी औदारिकशरीरने ग्रहण करवामां व्यापार होवाथी ज्यांसुधी तेनो सर्वथा त्याग न करे त्यांसुधी तेनी (आहारकशरीरनी) औदारिकनी साथे मिश्रता होय छे, तेथी त्यां आहारकमिश्रकायप्रयोग जाणवो.

¶ अहीं कार्मणशरीरकायप्रयोग विग्रहगतिमां सर्व संसारी जीवोने, अने समुद्घात करता केवलज्ञानीने त्रीजा, चोथा अने पांचमा समये होय छे.

३६. [प्र०] जदि एगिंदियओरालियसरीरकायप्पओगपरिणते किं पुढविक्काइयएगिंदिय- जाव परिणते वा, जाव वणस्सइकाइयएगिंदियओरालियकायप्पओगपरिणते वा? [उ०] गोयमा! पुढविक्काइयएगिंदिय- जाव परिणए वा, जाव वणस्सइकाइयएगिंदिय- जाव परिणए वा।

३७. [प्र०] जदि पुढविक्काइयएगिंदियओरालियसरीर- जाव परिणते किं सुहुमपुढविकाइय- जाव परिणए, बायरपुढविकाइय- जाव परिणते? [उ०] गोयमा! सुहुमपुढविकाइयएगिंदिय- जाव परिणते वा, बायरपुढविकाइय- जाव परिणते वा।

३८. [प्र०] जदि सुहुमपुढविकाइय- जाव परिणते किं पज्जत्तसुहुमपुढविकाइय- जाव परिणते, अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइअ- जाव परिणते? [उ०] गोयमा! पज्जत्तसुहुमपुढविकाइय- जाव परिणते वा, अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइय- जाव परिणते वा; एवं बादरा वि, एवं जाव वणस्सइकाइयाणं चउक्कओ भेदो, बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाणं दुयओ भेदो- पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य।

३९. [प्र०] जदि पंचिंदियओरालियसरीरकायप्पयोगपरिणते किं तिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरकायप्पयोगपरिणते, मणुस्सपंचिंदिय- जाव परिणते? [उ०] गोयमा! तिरिक्खजोणिय- जाव परिणए वा, मणुस्सपंचिंदिय- जाव परिणए वा।

४०. [प्र०] जइ तिरिक्खजोणिय- जाव परिणए किं जलयरतिरिक्खजोणिय- जाव परिणए वा, थलयर-खहचर- जाव परिणए वा? [उ०] एवं चउक्कओ भेदो, जाव खहचराणं।

४१. [प्र०] जइ मणुस्सपंचिंदिय- जाव परिणए किं संमुच्छिममणुस्सपंचिंदिय- जाव परिणए, गब्भवक्कंतियमणुस्स- जाव परिणए? [उ०] गोयमा! दोसु वि।

४२. [प्र०] जइ गब्भवक्कंतियमणुस्स- जाव परिणए किं पज्जत्तगब्भवक्कंतिय- जाव परिणए, अप्पज्जत्तगब्भवक्कंतियमणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरकायप्पयोगपरिणए? [उ०] गोयमा! पज्जत्तगब्भवक्कंतिय- जाव परिणए वा, अपज्जत्तगब्भवक्कंतिय- जाव परिणए वा।

३६. [प्र०] हे भगवन्! जो ते एक द्रव्य एकेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं पृथिवीकायिकएकेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय के यावत् वनस्पतिकायिकएकेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय? [उ०] हे गौतम! पृथिवीकायिकएकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय के यावत् वनस्पतिकायिकएकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय.

३७. [प्र०] हे भगवन्! जो ते एक द्रव्य पृथिवीकायिकएकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगपरिणत होय तो शुं सूक्ष्मपृथिवीकायिकएकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय के बादरपृथिवीकायिकएकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय? [उ०] हे गौतम! सूक्ष्मपृथिवीकायिकएकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय के बादरपृथिवीकायिकएकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय.

३८. [प्र०] हे भगवन्! जो एक द्रव्य सूक्ष्मपृथिवीकायिककायप्रयोगपरिणत होय तो शुं पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिककायप्रयोगपरिणत होय, के अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिककायप्रयोगपरिणत होय? [उ०] हे गौतम! पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिककायप्रयोगपरिणत होय के अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिककायप्रयोगपरिणत होय. ए प्रमाणे बादरपृथिवीकायिको जाणवा. ए प्रमाणे यावद् वनस्पतिकायिकना चार भेद (सूक्ष्म, बादर, पर्याप्त अने अपर्याप्त) अने बेइन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, अने चउरिन्द्रिय जीवोना बे भेद पर्याप्त अने अपर्याप्त जाणवा.

३९. [प्र०] हे भगवन्! जो ते एक द्रव्य पंचेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं तिर्यंचयोनिकपंचेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय के मनुष्यपंचेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय? [उ०] हे गौतम! तिर्यंचयोनिकऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय के मनुष्यपंचेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय.

४०. [प्र०] हे भगवन्! जो ते एक द्रव्य तिर्यंचयोनिककायप्रयोगपरिणत होय तो शुं जलचरतिर्यंचयोनिककायप्रयोगपरिणत होय के स्थलचर अने खेचरयोनिककायप्रयोगपरिणत होय? [उ०] पूर्व प्रमाणे यावत् खेचरोना [संमूर्छिम, गर्भज, पर्याप्त अने अपर्याप्त] चार भेदो जाणवा.

४१. [प्र०] हे भगवन्! जो ते एक द्रव्य मनुष्यपंचेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं संमूर्छिममनुष्यपंचेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय के गर्भजमनुष्यपंचेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय? [उ०] हे गौतम! ते (एक द्रव्य) [संमूर्छिम अने गर्भज] मनुष्यकायप्रयोगपरिणत होय.

४२. [प्र०] हे भगवन्! जो ते एक द्रव्य गर्भजमनुष्यकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं पर्याप्तगर्भजमनुष्यकायप्रयोगपरिणत होय के अपर्याप्तगर्भजमनुष्यपंचेन्द्रियऔदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय? [उ०] हे गौतम! पर्याप्तगर्भजमनुष्यकायप्रयोगपरिणत होय के अपर्याप्तगर्भजमनुष्यकायप्रयोगपरिणत होय.

४३. [प्र०] जइ ओरालियमीसासरीरकायप्पओगपरिणए किं एगिंदियओरालियमीसासरीरकायप्पओगपरिणए, बेइंदिय– जाव परिणए, जाव पंचिंदियओरालिय– जाव परिणए? [उ०] गोयमा! एगिंदियओरालिय– एवं जहा ओरालियसरीरकायप्पओगपरिणएणं आलावगो भणिओ, तहा ओरालियमीसासरीरकायप्पयोगपरिणएण वि आलावगो भाणियव्वो; नवरं बायरवाउक्काइय-गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणिय–गब्भवक्कंतियमणुस्साणं एएसिणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं, सेसाणं अपज्जत्तगाणं।

४४. [प्र०] जइ वेउव्वियसरीरकायप्पयोगपरिणए किं एगिंदियवेउव्वियसरीरकायप्पयोगपरिणए, जाव पंचिंदियवेउव्वियसरीर– जाव परिणए? [उ०] गोयमा! एगिंदिय– जाव परिणए वा, पंचिंदिय– जाव परिणए वा।

४५. [प्र०] जइ एगिंदिय– जाव परिणए, किं वाउक्काइयएगिंदिय– जाव परिणए, अवाउक्काइयएगिंदिय– जाव परिणए? [उ०] गोयमा! वाउक्काइयएगिंदिय– जाव परिणए, नो अवाउक्काइय– जाव परिणए; एवं एएणं अभिलावेणं जहा 'ओगाहणसंठाणे' वेउव्वियसरीरं भणियं तहा इह वि भाणियव्वं, जाव पज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववातियकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरकायप्पओगपरिणए वा, अपज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइअ–जाव परिणए वा।

४६. [प्र०] जइ वेउव्वियमीसासरीरकायप्पयोगपरिणए किं एगिंदियमीसासरीरकायप्पयोगपरिणए जाव पंचिंदियमीसासरीरकायप्पयोगपरिणए? [उ०] एवं जहा वेउव्वियं [1]तहा वेउव्वियमीसगं पि, नवरं देव–नेरइयाणं अपज्जत्तगाणं, सेसाणं पज्जत्तगाणं तहेव, [2]जाव नो पज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइअ– जाव परिणए, अपज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववातियदेवपंचिंदियवेउव्वियमीसासरीरकायप्पयोगपरिणए।

४७. [प्र०] जइ आहारगसरीरकायप्पयोगपरिणए किं मणुस्साहारगसरीरकायप्पयोगपरिणए, अमणुस्साहारग– जाव परिणए? [उ०] एवं जहा 'ओगाहणसंठाणे' जाव इड्ढिपत्तपमत्तसंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउय– जाव परिणए, नो अणिड्ढिपत्तपमत्तसंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तसंखेज्जवासाउय– जाव परिणए।

औदारिकमिश्रकाय-प्रयोगपरिणत.

४३. [प्र०] हे भगवन्! जो एक द्रव्य औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं एकेन्द्रियऔदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत होय, बेइन्द्रियऔदारिकमिश्रकायप्रयोगपरिणत होय के यावत् पंचेन्द्रियऔदारिकमिश्रकायप्रयोगपरिणत होय? [उ०] हे गौतम! एकेन्द्रियऔदारिकमिश्रकायप्रयोगपरिणत होय. जेम 'औदारिकशरीरकायप्रयोगपरिणत'नो आलापक कह्यो तेम 'औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत'नो पण आलापक कहेवो. परन्तु विशेष ए छे के 'औदारिकमिश्रकायप्रयोगपरिणत'नो आलापक बादरवायुकायिक, गर्भजपंचेन्द्रियतिर्यंच अने गर्भजमनुष्य पर्याप्ता अपर्याप्ता एओने, अने ते शिवाय बाकीना अपर्याप्ता जीवोने कहेवो.

वैक्रियशरीरकाय-प्रयोगपरिणत.

४४. हे भगवन्! जो एक द्रव्य वैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं एकेन्द्रियवैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणत होय के यावत् पंचेन्द्रियवैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणत होय? [उ०] हे गौतम! ते एकेन्द्रियवैक्रियकायप्रयोगपरिणत होय के पंचेन्द्रियवैक्रियकायप्रयोगपरिणत होय.

४५. [प्र०] हे भगवन्! जो ते एक द्रव्य एकेन्द्रियवैक्रियकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं वायुकायिकएकेन्द्रियवैक्रियकायप्रयोगपरिणत होय के वायुकायिक शिवाय एकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय? [उ०] हे गौतम! ते एक द्रव्य वायुकायिकएकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत होय, पण वायुकायिक शिवाय एकेन्द्रियकायप्रयोगपरिणत न होय. ए प्रमाणे ए अभिलाप(पाठ)थी *प्रज्ञापना सूत्रना 'अवगाहनासंस्थान' पदने विषे वैक्रियशरीरसंबन्धे कह्युं छे तेम अहीं पण कहेवुं; यावत् पर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिककल्पातीतवैमानिकदेवपंचेन्द्रियवैक्रियशरीरकायप्रयोगपरिणत होय के अपर्याप्तसर्वार्थसिद्धवैक्रियकायप्रयोगपरिणत होय.

वैक्रियमिश्रकाय-प्रयोगपरिणत.

४६. [प्र०] हे भगवन्! जो ते एक द्रव्य वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं एकेन्द्रियवैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत होय के यावत् पंचेन्द्रियवैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत होय? [उ०] हे गौतम! जेम वैक्रियशरीरप्रयोगसंबन्धे कह्युं, तेम वैक्रियमिश्रकायप्रयोगसंबन्धे पण कहेवुं; परन्तु विशेष ए छे के वैक्रियमिश्रकायप्रयोग देव अने नैरयिक अपर्याप्ताने अने बाकीना बधा पर्याप्ताने कहेवो; यावत् पर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिकवैक्रियमिश्रकायप्रयोगपरिणत न होय, पण अपर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिकदेवपंचेन्द्रियवैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत होय. (४.)

आहारकशरीरकाय-प्रयोगपरिणत.

४७. [प्र०] हे भगवन्! जो ते एक द्रव्य आहारकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं मनुष्याहारकशरीरकायप्रयोगपरिणत होय के अमनुष्याहारककायप्रयोगपरिणत होय? [उ०] हे गौतम! ए प्रमाणे जेम †प्रज्ञापनासूत्रना 'अवगाहनासंस्थान' पदने विषे कह्युं छे तेम जाणवुं; यावत् ऋद्धिप्राप्त–आहारकलब्धिमान् प्रमत्त साधु सम्यग्दृष्टि पर्याप्त संख्येयवर्षायुष्वाळा मनुष्याहारककायप्रयोगपरिणत होय, पण ऋद्धिने–आहारकलब्धिने–अप्राप्त प्रमत्त संयत सम्यग्दृष्टि संख्यातवर्षायुष्वाळा मनुष्याहारककायप्रयोगपरिणत न होय. (५.)

---

१ तहा मीसगंपि ख। २ जाव पयोगप–ख।

४५. * प्रज्ञा० पद २१. प. ४१४–२. पं. ४. ४७. † प्रज्ञा. पद २१. प. ४२३–१. पं. १०.

४८. [प्र०] जइ आहारगमीसासरीरकायप्पयोगपरिणए किं मणुस्साहारगमीसासरीर० ? [उ०] एवं जहा आहारगं तहेव मीसगं पि निरवसेसं भाणियव्वं ।

४९. [प्र०] जइ कम्मासरीरकायप्पओगपरिणए किं एगिंदियकम्मासरीरकायप्पयोगपरिणए, जाव पंचिंदियकम्मासरीर– जाव परिणए ? [उ०] गोयमा ! एगिंदियकम्मासरीरकायप्पयोगपरिणए, एवं जहा 'ओगाहणसंठाणे' कम्मगस्स भेदो तहेव इहावि, जाव पज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय– जाव देवपंचिंदियकम्मासरीरकायप्पयोगपरिणए, अपज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरो– जाव परिणए वा ।

५०. [प्र०] जइ मीसापरिणए किं मणमीसापरिणए, वयमीसापरिणए, कायमीसापरिणए ? [उ०] गोयमा ! मणमीसा-परिणए वा, वयमीसा०, कायमीसापरिणए वा ।

५१. [प्र०] जइ मणमीसापरिणए किं सच्चमणमीसापरिणए वा, मोसमणमीसापरिणए वा ? [उ०] जहा पओगपरिणए तहा मीसापरिणए वि भाणियव्वं निरवसेसं, जाव पज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय– जाव देवपंचिंदियकम्मासरीरगमीसापरिणए वा, अपज्जत्तसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय– जाव कम्मासरीरमीसापरिणए वा ।

५२. [प्र०] जइ वीससापरिणए किं वण्णपरिणए, गंधपरिणए, रसपरिणए, फासपरिणए, संठाणपरिणए ? [उ०] गोयमा ! वण्णपरिणए वा, गंधपरिणए वा, रसपरिणए वा, फासपरिणए वा, संठाणपरिणए वा ।

५३. [प्र०] जइ वण्णपरिणए किं कालवण्णपरिणए, नील– जाव सुक्किलवण्णपरिणए ? [उ०] गोयमा ! कालवण्णपरिणए, जाव सुक्किलवण्णपरिणए ।

५४. [प्र०] जइ गंधपरिणए किं सुब्भिगंधपरिणए, दुब्भिगंधपरिणए ? [उ०] गोयमा ! सुब्भिगंधपरिणए, दुब्भिगंध-परिणए ।

५५. [प्र०] जइ रसपरिणए किं तित्तरसपरिणए ?–पुच्छा [उ०] गोयमा ! तित्तरसपरिणए, जाव महुररसपरिणए ।

आहारकमिश्रकाय-प्रयोगपरिणत.

४८. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य आहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगपरिणत होय तो शुं मनुष्याहारकमिश्रशरीरकायप्रयोग-परिणत होय ? इत्यादि. [उ०] हे गौतम ! जेम आहारकशरीरसंबन्धे कह्युं तेम आहारकमिश्रसंबन्धे पण कहेवुं. (६)

कार्मणशरीरकाय-प्रयोगपरिणत.

४९. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य कार्मणशरीरप्रयोगपरिणत होय तो शुं एकेन्द्रियकार्मणशरीरकायप्रयोगपरिणत होय के यावत् पंचेन्द्रियकार्मणशरीरकायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते एक द्रव्य एकेन्द्रियकार्मणशरीरकायप्रयोगपरिणत होय. ए प्रमाणे जेम *प्रज्ञापना सूत्रना 'अवगाहनासंस्थान' पदने विषे कह्युं छे तेम अहीं पण जाणवुं, यावत् पर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिकदेव-पंचेन्द्रियकार्मणशरीरकायप्रयोगपरिणत होय, के अपर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिककार्मणकायप्रयोगपरिणत होय.

मिश्रपरिणत.

५०. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य मिश्रपरिणत होय तो शुं मनोमिश्रपरिणत होय, वचनमिश्रपरिणत होय, के कायमिश्र-परिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते मनोमिश्रपरिणत होय, वचनमिश्रपरिणत होय, के कायमिश्रपरिणत होय.

सत्यमनोमिश्र-परिणत.

५१. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य मनोमिश्रपरिणत होय तो शुं सत्यमनोमिश्रपरिणत होय, मृषामनोमिश्रपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! जेम प्रयोगपरिणत पुद्गलो संबन्धे कह्युं तेम मिश्रपरिणतसंबन्धे सर्व कहेवुं, यावत् पर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिक-देवपंचेन्द्रियकार्मणशरीरमिश्रपरिणत होय, के अपर्याप्तसर्वार्थसिद्धअनुत्तरौपपातिककार्मणशरीरमिश्रपरिणत होय.

विस्रसापरिणत.

५२. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य विस्रसापरिणत–स्वभावपरिणत होय तो शुं ते वर्णपरिणत होय, गंधपरिणत होय, रस-परिणत होय, स्पर्शपरिणत होय के संस्थानपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते वर्णपरिणत होय, गंधपरिणत होय, रसपरिणत होय, स्पर्शपरिणत होय, अने संस्थानपरिणत पण होय.

५३. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य वर्णपरिणत होय तो शुं काळावर्णपणे परिणत होय, नीलवर्णपणे परिणत होय के यावत् शुक्लवर्णपणे परिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते काळावर्णपणे परिणत होय, यावत् शुक्लवर्णपणे पण परिणत होय.

५४. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते एक द्रव्य गंधपणे परिणत होय तो शुं सुगंधपणे परिणत होय के दुर्गंधपणे परिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते सुगंधपणे परिणत होय अने दुर्गंधपणे पण परिणत होय.

५५. [प्र०] जो ते एक द्रव्य रसपरिणत होय तो शुं तिक्तरसपरिणत होय ? इत्यादि [उ०] हे गौतम ! ते तिक्तरसपरिणत होय यावत् मधुररसपणे परिणत होय.

४९. * प्रज्ञा० पद २१. प. ४२७–१. पं. ६.

५६. [प्र०] जइ फासपरिणए किं कक्खडफासपरिणए, जाव लुक्खफासपरिणए? [उ०] गोयमा! कक्खडफासपरिणए, जाव लुक्खफासपरिणए।

५७. [प्र०] जइ संठाणपरिणए– पुच्छा। [उ०] गोयमा! परिमंडलसंठाणपरिणए वा, जाव आययसंठाणपरिणए वा।

५८. [प्र०] दो भंते! दव्वा किं पयोगपरिणया, मीसापरिणया, वीससापरिणया? [उ०] गोयमा! पओगपरिणया वा, मीसापरिणया वा, वीससापरिणया वा; अहवा एगे पओगपरिणए एगे मीसापरिणए; अहवा एगे पओगपरिणए एगे वीससापरिणए; अहवा एगे मीसापरिणए एगे वीससापरिणए एवं (६)।

५९. [प्र०] जइ पओगपरिणया किं मणप्पयोगपरिणया, वइप्पयोगपरिणया, कायप्पयोगपरिणया? [उ०] गोयमा! मणप्पयोगपरिणया, वइप्पयोगपरिणया, कायप्पओगपरिणया वा; अहवा एगे मणप्पयोगपरिणए एगे वयप्पयोगपरिणए; अहवा एगे मणप्पयोगपरिणए एगे कायप्पयोगपरिणए; अहवा एगे वयप्पयोगपरिणते एगे कायप्पयोगपरिणते।

६०. [प्र०] जइ मणप्पओगपरिणया किं सच्चमणप्पयोगपरिणया, असच्चामणप्पयोगपरिणया, सच्चामोसमणप्पयोगपरिणया, असच्चामोसमणप्पयोगपरिणया? [उ०] गोयमा! सच्चमणप्पओगपरिणया वा, जाव असच्चामोसमणप्पओगपरिणया; अहवा एगे सच्चमणप्पओगपरिणए एगे मोसमणप्पयोगपरिणए, अहवा एगे सच्चमणप्पओगपरिणए एगे सच्चामोसमणप्पओगपरिणए, अहवा एगे सच्चमणप्पयोगपरिणए एगे असच्चामोसमणप्पयोगपरिणए; अहवा एगे मोसमणप्पयोगपरिणए एगे सच्चामोसमणप्पयोगपरिणए; अहवा एगे मोसमणप्पयोगपरिणए एगे असच्चामोसमणप्पयोगपरिणए; अहवा एगे सच्चामोसमणप्पयोगपरिणए एगे असच्चामोसमणप्पओगपरिणए।

६१. [प्र०] जइ सच्चमणप्पयोगपरिणया किं आरंभसच्चमणप्पओगपरिणया, जाव असमारंभसच्चमणप्पयोगपरिणया? [उ०] गोयमा! आरंभसच्चमणप्पयोगपरिणया वा, जाव असमारंभसच्चमणप्पओगपरिणया वा; अहवा एगे आरंभसच्चमणप्पयोग-

५६. [प्र०] हे भगवन्! जो एक द्रव्य स्पर्शपरिणत होय तो ते शुं कर्कशस्पर्शपरिणत होय के यावत् रूक्षस्पर्शपरिणत होय? [उ०] हे गौतम! ते कर्कशस्पर्शपणे परिणत होय, यावत् रूक्षस्पर्शपणे पण परिणत होय.

५७. [प्र०] हे भगवन्! एक द्रव्य संस्थानपरिणत होय तो शुं ते परिमंडलसंस्थानपणे परिणत होय के यावत् आयतसंस्थानपणे परिणत होय? [उ०] हे गौतम! ते परिमंडलसंस्थानपणे परिणत होय के यावत् आयतसंस्थानपणे पण परिणत होय.

बे द्रव्योनो परिणाम.

५८. [प्र०] हे भगवन्! बे द्रव्यो शुं प्रयोगपरिणत होय, मिश्रपरिणत होय के विस्रसापरिणत होय? [उ०] हे गौतम! ते प्रयोगपरिणत होय, मिश्रपरिणत होय के विस्रसापरिणत पण होय. १ अथवा एक द्रव्य प्रयोगपरिणत होय अने बीजुं मिश्रपरिणत होय. २ अथवा एक द्रव्य प्रयोगपरिणत होय अने बीजुं विस्रसापरिणत होय. ३ अथवा एक द्रव्य मिश्रपरिणत होय अने बीजुं विस्रसापरिणत होय.

मनःप्रयोगादि परिणत.

५९. [प्र०] हे भगवन्! जो ते बे द्रव्यो प्रयोगपरिणत होय तो ते शुं मनःप्रयोगपरिणत होय, वचनप्रयोगपरिणत होय के कायप्रयोगपरिणत होय? [उ०] हे गौतम! ते बे द्रव्यो मनःप्रयोगपरिणत होय, वचनप्रयोगपरिणत होय अने कायप्रयोगपरिणत होय. १ अथवा एक द्रव्य मनःप्रयोगपरिणत होय अने बीजुं वचनप्रयोगपरिणत होय. २ अथवा एक मनःप्रयोगपरिणत होय अने बीजुं कायप्रयोगपरिणत होय. ३ अथवा एक वचनप्रयोगपरिणत होय अने बीजुं कायप्रयोगपरिणत होय.

६०. [प्र०] हे भगवन्! जो ते बे द्रव्यो मनःप्रयोगपरिणत होय तो शुं सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, असत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, सत्यमृषामनःप्रयोगपरिणत होय के असत्यामृषामनःप्रयोगपरिणत होय? [उ०] हे गौतम! सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय के यावत् असत्यामृषामनःप्रयोगपरिणत होय. १ अथवा एक सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय अने बीजुं मृषामनःप्रयोगपरिणत होय. २ अथवा एक सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय अने बीजुं सत्यमृषामनःप्रयोगपरिणत होय. ३ अथवा एक सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय अने बीजुं असत्यामृषामनःप्रयोगपरिणत होय. ४ अथवा एक मृषामनःप्रयोगपरिणत होय अने बीजुं सत्यमृषामनःप्रयोगपरिणत होय. ५ अथवा एक मृषामनःप्रयोगपरिणत होय अने बीजुं असत्यामृषामनःप्रयोगपरिणत होय. ६ अथवा एक सत्यमृषामनःप्रयोगपरिणत होय अने बीजुं असत्यामृषामनःप्रयोगपरिणत होय.

६१. [प्र०] हे भगवन्! जो बे द्रव्यो सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय तो शुं १ आरंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, २ अनारंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, ३ संरंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, ४ असंरंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, ५ समारंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय के ६ असमारंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय? [उ०] हे गौतम! ते बे द्रव्यो आरंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, यावत् असमारंभसत्यमनः-

परिणए एगे अणारंभसच्चमणप्पयोगपरिणए। एवं एएणं गमेणं दुयासंजोएणं नेयव्वं, सव्वे संजोगा जत्थ जत्तिया उट्ठेंति ते भाणियव्वा, जाव सव्वट्ठसिद्धगत्ति ।

६२. [प्र०] जति मीसापरिणया किं मणमीसापरिणया ? [उ०] एवं मीसापरिणया वि ।

६३. [प्र०] जइ वीससापरिणया किं वन्नपरिणया, गंधपरिणया० ? [उ०] एवं वीससापरिणया वि, जाव अहवा एगे चउरंससंठाणपरिणए, एगे आयतसंठाणपरिणए वा ।

६४. [प्र०] तिन्नि भंते ! दव्वा किं पयोगपरिणया, मीसापरिणया, वीससापरिणया ? [उ०] गोयमा ! पयोगपरिणया वा, मीसापरिणया वा, वीससापरिणया वा; अहवा एगे पयोगपरिणए दो मीसापरिणया; अहवा एगे पयोगपरिणए दो वीससापरिणया; अहवा दो पयोगपरिणया एगे मीससापरिणए; अहवा दो पयोगपरिणया एगे विससापरिणए; अहवा एगे मीसापरिणए दो वीससापरिणया; अहवा दो मीससापरिणया एगे वीससापरिणए; अहवा एगे पओगपरिणए एगे मीसापरिणए एगे वीससापरिणए ।

६५. [प्र०] जइ पयोगपरिणया किं मणप्पयोगपरिणया, वयप्पयोगपरिणया, कायप्पयोगपरिणया ? [उ०] गोयमा ! मणप्पयोगपरिणया वा, एवं एक्कगसंयोगो, दुयासंयोगो, तियासंयोगो भाणियव्वो ।

६६. [प्र०] जइ मणप्पयोगपरिणया किं सच्चमणप्पयोगपरिणया, असच्चमणप्पयोगपरिणया, सच्चामोसमणप्पयोगपरिणया, असच्चामोसमणप्पयोगपरिणया ? [उ०] गोयमा ! सच्चमणप्पयोगपरिणया वा, जाव असच्चामोसमणप्पयोगपरिणया वा; अहवा एगे सच्चमणप्पओगपरिणए दो मोसमणप्पयोगपरिणया वा । एवं दुयासंयोगो, तियासंयोगो भाणियव्वो एत्थ वि तहेव, जाव अहवा एगे तंससंठाणपरिणए एगे चउरंससंठाणपरिणए एगे आयतसंठाणपरिणए वा ।

६७. [प्र०] चत्तारि भंते ! दव्वा किं पओगपरिणया, मीसापरिणया, वीससापरिणया ? [उ०] गोयमा ! पयोगपरिणया वा, मीसापरिणया वा, वीससापरिणया वा, । अहवा एगे पओगपरिणए तिन्नि मीसा परिणया; अहवा एगे पओगपरिणए

प्रयोगपरिणत होय. १ अथवा एक द्रव्य आरंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय अने बीजुं अनारंभसत्यमनःप्रयोगपरिणत होय. ए प्रमाणे ए रीते द्विक संयोगो करवा. ज्यां जेटला द्विकसंयोगो थाय त्यां ते सघळा कहेवा; यावत् सर्वार्थसिद्धवैमानिकदेव सुधी कहेवुं.

मिश्रपरिणत बे द्रव्यो.

६२. [प्र०] हे भगवन् ! जो बे द्रव्यो मिश्रपरिणत होय तो शुं ते मनोमिश्रपरिणत होय ? इत्यादि. [उ०] हे गौतम ! प्रयोगपरिणत संबंधे कह्युं तेम मिश्रपरिणतसंबंधे कहेवुं.

विस्रसापरिणत बे द्रव्यो.

६३. [प्र०] हे भगवन् ! जो बे द्रव्यो विस्रसापरिणत होय तो शुं ते वर्णपणे परिणत होय, गन्धपणे परिणत होय ? इत्यादि [उ०] हे गौतम ! ए रीते पूर्वे कह्या प्रमाणे विस्रसापरिणतसंबन्धे पण जाणवुं, यावत् एक द्रव्य समचतुरस्रसंस्थानपणे परिणत होय अने बीजुं आयतसंस्थानपणे पण परिणत होय.

त्रण द्रव्यनो परिणाम.

६४. [प्र०] हे भगवन् ! त्रण द्रव्यो शुं प्रयोगपरिणत होय, मिश्रपरिणत होय, के विस्रसापरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते (त्रणे द्रव्यो) प्रयोगपरिणत होय, मिश्रपरिणत होय अने विस्रसापरिणत पण होय. १ अथवा एक द्रव्य प्रयोगपरिणत होय अने बे मिश्रपरिणत होय, २ अथवा एक प्रयोगपरिणत होय अने बे विस्रसापरिणत होय, ३ अथवा बे प्रयोगपरिणत होय अने एक मिश्रपरिणत होय, ४ अथवा बे प्रयोगपरिणत होय अने एक विस्रसापरिणत होय, ५ अथवा एक मिश्रपरिणत होय अने बे विस्रसापरिणत होय. ६ अथवा बे मिश्रपरिणत होय अने एक विस्रसापरिणत होय. ७ अथवा एक प्रयोगपरिणत एक मिश्रपरिणत अने एक विस्रसापरिणत होय.

मनःप्रयोगादिपरिणत त्रण द्रव्यो.

६५. [प्र०] जो ते त्रणे द्रव्यो प्रयोगपरिणत होय तो शुं मनःप्रयोगपरिणत होय, वचनप्रयोगपरिणत होय के कायप्रयोगपरिणत होय ? [उ०] हे गौतम ! ते मनःप्रयोगपरिणत पण होय. ए प्रमाणे एकसंयोग, द्विकसंयोग अने त्रिकसंयोग कहेवो.

६६. [प्र०] जो ते त्रणे द्रव्यो मनःप्रयोगपरिणत होय तो शुं सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय ? (इत्यादि ४ प्रश्न). [उ०] हे गौतम ! सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय, अथवा यावत् असत्यामृषामनःप्रयोगपरिणत होय. अथवा एक सत्यमनःप्रयोगपरिणत होय अने बे मृषामनःप्रयोगपरिणत होय. ए प्रमाणे अहीं पण द्विकसंयोग अने त्रिकसंयोग कहेवो. यावत् अथवा एक त्र्यस्र(त्रिकोण)संस्थानपणे परिणत होय, एक समचतुरस्र (चोरस) संस्थानपणे परिणत होय अने एक आयतसंस्थानपणे परिणत होय.

चार द्रव्यनो परिणाम.

६७. [प्र०] हे भगवन् ! चार द्रव्यो शुं प्रयोगपरिणत होय, मिश्रपरिणत होय के विस्रसापरिणत होय? [उ०] हे गौतम ! ते (चारे द्रव्यो) प्रयोगपरिणत होय, मिश्रपरिणत होय के विश्रसापरिणत होय. १ अथवा एक प्रयोगपरिणत होय अने त्रण मिश्रपरिणत होय.

---

१ गमएणं ख । २ दुयसं– ख । ३ मीससाप–ख ।

तिन्नि वीससापरिणया; अहवा दो पयोगपरिणया दो मीसापरिणया; अहवा दो पयोगपरिणया दो वीससापरिणया; अहवा तिन्नि पओगपरिणया एगे मीसापरिणए; अहवा तिन्नि पओगपरिणया एगे वीससापरिणए; अहवा एगे मीससापरिणए तिन्नि वीससापरिणया; अहवा दो मीसंसापरिणया दो वीससापरिणया; अहवा तिन्नि मीसापरिणया एगे वीससापरिणए; अहवा एगे पओगपरिणए एगे मीसापरिणए दो वीससापरिणया; अहवा एगे पयोगपरिणए दो मीसापरिणया एगे वीससापरिणए; अहवा दो पयोगपरिणया एगे मीसापरिणए एगे वीससापरिणए।

६८. [प्र०] जइ पयोगपरिणया किं मणप्पयोगपरिणया, वयप्पयोगपरिणया, कायप्पयोगपरिणया? [उ०] एवं एएणं कमेणं पंच छ सत्त जाव दस संखेज्जा असंखेज्जा अणंता य दव्वा भाणियव्वा दुयासंजोएणं, तियासंजोएणं, जाव दससंजोएणं, बारससंजोएणं उवजुंजिऊणं जत्थ जत्तिया संजोगा उट्ठेति ते सव्वे भाणियव्वा; एए पुण जहा नवमसए पवेसणए भणिहामो तहा उवजुंजिऊण भाणियव्वा, जाव असंखेज्जा अणंता एवं चेव, नवरं एकं पदं अब्भहियं, जाव अहवा अणंता परिमंडलसंठाणपरिणया, जाव अणंता आयतसंठाणपरिणया।

६९. [प्र०] एएसिणं भंते! पोग्गलाणं पयोगपरिणयाणं, मीसापरिणयाणं, वीससापरिणयाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा? [उ०] गोयमा! सव्वत्थोवा पोग्गला पयोगपरिणया, मीसापरिणया अणंतगुणा, वीससापरिणया अणंतगुणा। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति।

अट्ठमसए पढमो उद्देसो समत्तो।

२ अथवा एक प्रयोगपरिणत होय अने त्रण विस्रसापरिणत होय. ३ अथवा बे प्रयोगपरिणत होय अने बे मिश्रपरिणत होय. ४ अथवा बे प्रयोगपरिणत होय अने बे विस्रसापरिणत होय. ५ अथवा त्रण प्रयोगपरिणत होय अने एक मिश्रपरिणत होय. ६ अथवा त्रण प्रयोगपरिणत होय अने एक विस्रसापरिणत होय. ७ अथवा एक मिश्रपरिणत होय अने त्रण विस्रसापरिणत होय. ८ अथवा बे मिश्रपरिणत होय अने बे विस्रसापरिणत होय. ९. अथवा त्रण मिश्रपरिणत होय अने एक विस्रसापरिणत होय. १० अथवा एक प्रयोगपरिणत होय एक मिश्रपरिणत होय अने बे विस्रसापरिणत होय. ११ अथवा एक प्रयोगपरिणत होय बे मिश्रपरिणत होय अने एक विस्रसापरिणत होय. १२ अथवा बे प्रयोगपरिणत होय एक मिश्रपरिणत होय अने एक विस्रसापरिणत होय.

मनःप्रयोगादिपरिणत चार द्रव्यो. पांच, छ, यावद् अनन्त द्रव्योनो परिणाम.

६८. [प्र०] हे भगवन्! जो ते चार द्रव्यो प्रयोगपरिणत होय तो शुं मनःप्रयोगपरिणत होय? (वचनप्रयोगपरिणत होय के कायप्रयोगपरिणत होय?) [उ०] हे गौतम! सर्व पूर्वनी पेठे जाणवुं; ए क्रमवडे पांच, छ, सात यावत् दश, संख्याता, असंख्याता, अने अनंत द्रव्योना द्विकसंयोग त्रिकसंयोग, यावत् दशसंयोग, बारसंयोग उपयोगपूर्वक कहेवां अने ज्यां जेटला संयोगो थाय त्यां ते सर्व कहेवा. ए बधा संयोगो *नवम शतकना प्रवेशनकमां जे प्रकारे कहीशुं तेम उपयोगपूर्वक विचारीने कहेवा, यावत् असंख्येय अने अनंत द्रव्योनो परिणाम ए प्रमाणे जाणवो, परन्तु एक पद अधिक करीने कहेवुं; यावत् अथवा अनंत द्रव्यो परिमंडलसंस्थानपणे परिणत होय, यावत् अनंत द्रव्यो आयतसंस्थानपणे परिणत होय.

अल्पबहुत्व.

६९. [प्र०] हे भगवन्! प्रयोगपरिणत, मिश्रपरिणत अने विस्रसापरिणत ए पुद्गलोमां कया पुद्गलो कोनाथी यावद् विशेषाधिक होय छे? [उ०] हे गौतम! सर्वथी थोडा पुद्गलो प्रयोगपरिणत छे, तेथी मिश्रपरिणत अनंतगुण छे, अने तेथी विस्रसापरिणत अनंतगुण छे. हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे. [एम कही भगवान् गौतम यावत् विहरे छे]

अष्टमशतके प्रथम उद्देशक समाप्त.

---

१ मीसाप-घ। २-बव्वं (दुयासंजोगेणं) दु-छ।

६८. * भग. श. ९. उ० ३२.

बीओ उद्देसो.

१. [प्र०] कतिविहा णं भंते! आसीविसा पण्णत्ता? [उ०] गोयमा! दुविहा आसीविसा पण्णत्ता, तं जहा– जातिआसीविसा य कम्मआसीविसा य।

२. [प्र०] जाइआसीविसा णं भंते! कतिविहा पण्णत्ता? [उ०] गोयमा! चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा– विच्छुयजातिआसीविसे, मंडुक्कजाइआसीविसे, उरगजातिआसीविसे, मणुस्सजातिआसीविसे।

३. [प्र०] विच्छुयजातिआसीविसस्स णं भंते! केवतिए विसए पण्णत्ते? [उ०] गोयमा! पभू णं विच्छुयजातिआसीविसे अद्धभरहप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिगयं विसट्टमाणं पकरेत्तए, विसए से विसट्ठयाए, नो चेव णं संपत्तीए करेंसु वा, करेंति वा, करिस्संति वा।

४. [प्र०] मंडुक्कजातिआसीविस–पुच्छा। [उ०] गोयमा! पभू णं मंडुक्कजातिआसीविसे भरहप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिगयं, सेसं तं चेव जाव करिस्संति वा। एवं उरगजातिआसीविसस्स वि, नवरं जंबुद्दीवप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिगयं, सेसं तं चेव जाव करिस्संति वा। मणुस्सजातिआसीविसस्स वि एवं चेव, नवरं समयखेत्तप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिगयं, सेसं तं चेव जाव करिस्संति वा।

द्वितीय उद्देशक.

आशीविष.

१. [प्र०] हे भगवन्! *आशीविषो केटला प्रकारना कह्या छे? [उ०] हे गौतम! आशीविषो बे प्रकारना कह्या छे; ते आ प्रमाणे– जातिआशीविष अने कर्माशीविष.

जाति-आशीविष.

२. [प्र०] हे भगवन्! जातिआशीविषो केटला प्रकारना कह्या छे? [उ०] हे गौतम! ते चार प्रकारना कह्या छे; ते आप्रमाणे– १ वृश्चिकजातिआशीविष, २ मंडूकजातिआशीविष, ३ उरगजातिआशीविष अने ४ मनुष्यजातिआशीविष.

वृश्चिक-आशीविषना विषनो विषय.

३. [प्र०] हे भगवन्! वृश्चिकजातिआशीविषना विषनो केटलो विषय कह्यो छे?–अर्थात् वृश्चिकजातिआशीविषोना विषनुं सामर्थ्य केटलुं छे? [उ०] हे गौतम! वृश्चिकजातिआशीविष अर्धभरतक्षेत्र प्रमाण शरीरने विषवडे विदलित–नाश–करवा विषयी व्याप्त करवा समर्थ छे. एटलुं तेना विषनुं सामर्थ्य छे, पण संप्राप्ति–संबन्ध वडे तेओए तेम कर्युं नथी, तेओ करता नथी, अने करशे पण नहि.

मंडूक-आशीविषना विषनो विषय. उरगना विषनो विषय. मनुष्यजातिआशीविषना विषनो विषय.

४. [प्र०] मंडूकजातिआशीविषना विषनो केटलो विषय छे? [उ०] हे गौतम! मंडूकजातिआशीविष पोताना विषथी भरतक्षेत्रप्रमाण शरीरने व्याप्त करवा समर्थ छे. बाकी सर्व पूर्वनी पेठे जाणवुं, यावत् संप्राप्तिवडे तेम करशे नहि. ए प्रमाणे उरगजातिआशीविष संबन्धे पण जाणवुं, परन्तु विशेष ए छे के ते उरगजातिआशीविष जंबूद्वीपप्रमाण शरीरने पोताना विषथी व्याप्त करवा समर्थ छे; बाकी सर्व पूर्ववत् जाणवुं; यावत् संप्राप्तिथी तेम करशे नहि. ए प्रमाणे मनुष्यजातिआशीविष संबन्धे पण जाणवुं, परन्तु एटलो विशेष छे के ते मनुष्यक्षेत्रप्रमाण शरीरने पोताना विषथी व्याप्त करवा समर्थ छे. बाकी सर्व पूर्ववत् जाणवुं; यावत् संप्राप्तिथी तेम करशे नहि.

---

१ विसट्टमाणिं क।

१. * आशी एटले दाढा, तेमां जेओने विष होय ते प्राणीओ आशीविष कहेवाय छे. तेना बे प्रकार छे–जातिआशीविष अने कर्माशीविष. साप वींछी वगेरे जाति एटले जन्मथी आशीविष छे. कर्म एटले शापादिकथी बीजाने उपघात करनारा ते कर्माशीविष कहेवाय छे. पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंच अने मनुष्यने तपश्चर्यादिकथी अथवा बीजा कोई कारणथी आशीविषलब्धि उत्पन्न थाय छे, अने तेथी तेओ शापादिकथी बीजाओनो नाशकरवानी शक्तिवाळा होय छे. तेओ आशीविषलब्धिना स्वभावथी सहस्रार देवलोक सुधीना देवोमां उत्पन्न थाय छे, अने देवो अपर्याप्त अवस्थामां पूर्वे तेणे आशीविषभावनो अनुभव करेलो होवाथी कर्माशीविषलब्धिवाळा होय छे. –टीका.

५. [प्र०] जइ कम्मआसीविसे किं नेरइयकम्मआसीविसे, तिरिक्खजोणियकम्मआसीविसे, मणुस्सकम्मआसीविसे, देवकम्मासीविसे? [उ०] गोयमा! नो नेरइयकम्मासीविसे, तिरिक्खजोणियकम्मासीविसे वि, मणुस्सकम्मासीविसे वि, देवकम्मासीविसे वि।

६. [प्र०] जइ तिरिक्खजोणियकम्मासीविसे किं एगिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे, जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे? [उ०] गोयमा! नो एगिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे, जाव नो चउरिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे; पंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे।

७. [प्र०] जइ पंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे किं संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे, गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे? [उ०] एवं जहा वेउव्वियसरीरस्स भेदो, जाव पज्जत्तसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे, नो अपज्जत्तासंखेज्जवासाउय– जाव कम्मासीविसे।

८. [प्र०] जवि मणुस्सकम्मासीविसे किं संमुच्छिममणुस्सकम्मासीविसे, गब्भवक्कंतियमणुस्सकम्मासीविसे? [उ०] गोयमा! णो संमुच्छिममणुस्सकम्मासीविसे, गब्भवक्कंतियमणुस्सकम्मासीविसे; एवं जहा वेउव्वियसरीरं, जाव पज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्सकम्मासीविसे, नो अपज्जत्ता– जाव कम्मासीविसे।

९. [प्र०] जवि देवकम्मासीविसे किं भवणवासिदेवकम्मासीविसे, जाव वेमाणियदेवकम्मासीविसे? [उ०] गोयमा! भवणवासिदेवकम्मासीविसे, वाणमंतर–जोतिसिय–वेमाणियदेवकम्मासीविसे वि।

१०. [प्र०] जदि भवणवासिदेवकम्मासीविसे किं असुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे, जाव थणियकुमार– जाव कम्मासीविसे? [उ०] गोयमा! असुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे वि, जाव थणियकुमार– जाव कम्मासीविसे वि।

कर्माशीविष.

५. [प्र०] हे भगवन्! जो कर्माशीविष छे तो शुं नैरयिक कर्माशीविष छे, तिर्यंचयोनिक कर्माशीविष छे, मनुष्य कर्माशीविष छे के देव कर्माशीविष छे? [उ०] हे गौतम! नैरयिक कर्माशीविष नथी, पण तिर्यंचयोनिक कर्माशीविष छे, मनुष्य कर्माशीविष छे अने देवकर्माशीविष छे.

६. [प्र०] हे भगवन्! जो तिर्यंचयोनिक कर्माशीविष छे तो शुं एकेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक कर्माशीविष छे के यावत् पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक कर्माशीविष छे? [उ०] हे गौतम! एकेन्द्रिय तिर्यंचयोनिकथी आरंभी यावत् चतुरिन्द्रिय तिर्यंचयोनिकपर्यन्त कर्माशीविष नथी, पण पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक कर्माशीविष छे.

गर्भजपंचेन्द्रियतिर्यंच कर्माशीविष.

७. [प्र०] हे भगवन्! जो पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक कर्माशीविष छे तो शुं संमूर्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक कर्माशीविष छे के गर्भजपंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक कर्माशीविष छे? [उ०] हे गौतम! जेम *वैक्रियशरीरसंबंधे जीव भेद कह्यो छे तेम यावत् पर्याप्त संख्यातवर्षना आयुष्यवाळा गर्भज कर्मभूमिमां उत्पन्न थयेला पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक कर्माशीविष होय छे, पण अपर्याप्त असंख्यातवर्षना आयुष्यवाळा यावत् कर्माशीविष नथी.

गर्भज मनुष्य कर्माशीविष.

८. [प्र०] हे भगवन्! जो मनुष्य कर्माशीविष छे, तो शुं संमूर्छिम मनुष्य कर्माशीविष छे के गर्भज मनुष्य कर्माशीविष छे? [उ०] हे गौतम! संमूर्छिम मनुष्य कर्माशीविष नथी, पण गर्भज मनुष्य कर्माशीविष छे. जेम †वैक्रियशरीरसंबन्धे जीवभेद कह्यो छे ते प्रमाणे यावत् पर्याप्त संख्यातवर्षना आयुष्यवाळा कर्मभूमिमां उत्पन्न थयेला गर्भज मनुष्य कर्माशीविष छे पण अपर्याप्त असंख्यात वर्षना आयुष्यवाळा कर्माशीविष नथी.

९. [प्र०] हे भगवन्! जो देव कर्माशीविष छे तो शुं भवनवासी देव कर्माशीविष छे के यावत् वैमानिकदेव कर्माशीविष छे? [उ०] हे गौतम! भवनवासी देव कर्माशीविष छे, वानव्यंतर देव, ज्योतिष्क देव, अने वैमानिकदेव पण कर्माशीविष छे.

भवनवासी कर्माशीविष.

१०. [प्र०] हे भगवन्! जो भवनवासी देव कर्माशीविष छे तो शुं असुरकुमार भवनवासी देव कर्माशीविष छे के यावत् स्तनितकुमार भवनवासी देव कर्माशीविष छे? [उ०] हे गौतम! असुरकुमार भवनवासी देव पण कर्माशीविष छे, यावत् स्तनितकुमार भवनवासी देव पण यावत् कर्माशीविष छे.

---

१ –सिव जाव क– क। २ –भूमगगब्भ– क। ३ –मंतरदेवओ– क।

७. * प्रज्ञा० २१ शरीरपद. प. ४१५–१. पं. २. ८. † प्रज्ञा० २१ शरीरपद. प. ४१५–१. पं. १२.

११. [प्र०] जदि असुरकुमार– जाव कम्मासीविसे किं पज्जत्तअसुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे, अपज्जत्ताअसुरकुमार– जाव कम्मासीविसे ? [उ०] गोयमा ! नो पज्जत्ताअसुरकुमार– जाव कम्मासीविसे, अपज्जत्ताअसुरकुमार– जाव कम्मासीविसे; एवं जाव थणियकुमाराणं ।

१२. [प्र०] जदि वाणमंतरदेवकम्मासीविसे किं पिसायवाणमंतरदेवकम्मासीविसे ? [उ०] एवं सव्वेसिं अपज्जत्तगाणं, जोइसियाणं सव्वेसिं अपज्जत्तगाणं ।

१३. [प्र०] जदि वेमाणियदेवकम्मासीविसे किं कप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे, कप्पातीयवेमाणियदेवकम्मासीविसे ? [उ०] गोयमा ! कप्पोपगवेमाणियदेवकम्मासीविसे, नो कप्पातीयवेमाणियदेवकम्मासीविसे ।

१४. [प्र०] जइ कप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे किं सोहम्मकप्पोवग– जाव कम्मासीविसे, जाव अच्चुयकप्पोवग– जाव कम्मासीविसे ? [उ०] गोयमा ! सोहम्मकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे वि, जाव सहस्सारकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे वि, नो आणयकप्पोवग–, जाव नो अच्चुयकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे ।

१५. [प्र०] जइ सोहम्मकप्पोवग– जाव कम्मासीविसे किं पज्जत्तासोहम्मकप्पोवगवेमाणिय–, अपज्जत्तासोहम्मकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे ? [उ०] गोयमा ! नो पज्जत्तासोहम्मकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे, अपज्जत्तासोहम्मकप्पोवगवेमाणियदेवकम्मासीविसे, एवं जाव नो पज्जत्तासहस्सारकप्पोवगवेमाणिय– जाव कम्मासीविसे, अपज्जत्तासहस्सारकप्पोवग– जाव कम्मासीविसे ।

१६. दस ठाणाइं छउमत्थे सव्वभावेणं न जाणति न पासति, तं जहा– १ धम्मत्थिकायं, २ अधम्मत्थिकायं, ३ आगासत्थिकायं, ४ जीवं असरीरपडिबद्धं, ५ परमाणुपोग्गलं, ६ सद्दं, ७ गंधं, ८ वातं, ९ अयं जिणे भविस्सइ वा णवा भविस्सइ,

अपर्याप्तदेवो कर्माशीविष.

११. [प्र०] हे भगवन् ! जो असुरकुमार यावत् कर्माशीविष छे तो शुं पर्याप्त असुरकुमार भवनवासी देव कर्माशीविष छे के अपर्याप्त असुरकुमार भवनवासी देव कर्माशीविष छे ? [उ०] हे गौतम ! पर्याप्त असुरकुमार भवनवासी देव कर्माशीविष नथी, पण अपर्याप्त असुरकुमार भवनवासी देव कर्माशीविष छे, ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं.

वानव्यन्तर.

१२. [प्र०] जो वानव्यंतर देवो कर्माशीविष छे तो शुं पिशाच वानव्यंतर देवो कर्माशीविष छे ? इत्यादि. [उ०] हे गौतम ! तेओ बधा अपर्याप्तावस्थामां कर्माशीविष छे, तेम सघळा ज्योतिष्को पण अपर्याप्तावस्थामां कर्माशीविष छे.

वैमानिक.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! जो वैमानिक देव कर्माशीविष छे तो शुं कल्पोपपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविष छे के कल्पातीत वैमानिक देव कर्माशीविष छे ? [उ०] हे गौतम ! कल्पोपपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविष छे, पण कल्पातीत वैमानिक देव कर्माशीविष नथी.

कल्पोपपन्नक.

यावत् सहस्रारपर्यन्त कर्माशीविष.

१४. [प्र०] जो कल्पोपपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविष छे, तो शुं सौधर्मकल्पोपपन्नक यावत् कर्माशीविष छे के यावत् अच्युतकल्पोपपन्नक देव कर्माशीविष छे ? [उ०] हे गौतम ! सौधर्मकल्पोपपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविष छे, यावत् सहस्रारकल्पोपपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविष छे; पण आनतकल्पोपपन्नक, यावद् अच्युतकल्पोपपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविष नथी.

अपर्याप्त सौधर्मादि देवो कर्माशीविष.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! जो सौधर्मकल्पोपपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविष छे, तो शुं पर्याप्त सौधर्मकल्पोपपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविष छे के अपर्याप्त सौधर्मकल्पोपपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविष छे ? [उ०] हे गौतम ! पर्याप्त सौधर्मकल्पोपपन्नक वैमानिक देव कर्माशीविष नथी, पण अपर्याप्त सौधर्मकल्पोपपन्नक वैमानिक देव यावत् कर्माशीविष छे; ए प्रमाणे यावत् पर्याप्त सहस्रारकल्पोपपन्नक देव यावत् कर्माशीविष नथी, पण अपर्याप्त सहस्रारकल्पोपपन्नक देव यावत् कर्माशीविष छे.

छद्मस्थ दशस्थानकोने न जाणे.

१६. *छद्मस्थ (ज्ञानी) सर्वभावथी–प्रत्यक्ष ज्ञानथी आ दश वस्तुओने जाणतो नथी, तेम जोतो नथी, ते आ प्रमाणे–धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, शरीररहित (मुक्त) जीव, परमाणुपुद्गल, शब्द, गंध, वायु, आ जीव जिन थशे के नहि ?, अने आ जीव

---

१ –कुमार जाव क- घ । २ कुमारभवणवासीक- घ । ३ एवं थणिय–घ । ४ जाव क– ख–ग । ५ –यदेव जाव क- क । ६ सोधम्म–क ।

१६. * छद्मस्थ एटले संपूर्णज्ञान (केवलज्ञान) रहित, परन्तु आ स्थळे तेनो अर्थ 'अवध्यादिविशिष्टज्ञान रहित' एवो जाणवो, केमके विशिष्ट अवधिज्ञानी अमूर्त होवाथी धर्मास्तिकायादिने जाणतो नथी, पण मूर्त होवाथी परमाण्वादिकने जाणे छे. कारण के विशिष्ट अवधिज्ञाननो विषय सर्व मूर्त द्रव्यो छे. अहीं कोइ शंका करे के छद्मस्थ परमाण्वादिने कथंचित् जाणे, पण सर्व पर्यायथी न जाणे, ते माटे सूत्रमां 'सर्वभावथी न जाणे' एम कह्युं छे. तेनो उत्तर आ प्रमाणे छे– एम अर्थ करवाथी दश संख्यानो नियम नहि रहे, केमके घटादि घणा पदार्थो अनन्त पर्यायरूपे छद्मस्थने जाणवा अशक्य छे, माटे सर्वभावनो अर्थ साक्षात्–प्रत्यक्ष एवो करवो. एटले अवध्यादि विशिष्टज्ञानरहित छद्मस्थ धर्मास्तिकायादि दशवस्तुने प्रत्यक्षरूपे न जाणे अने न देखे.—टीका.

१० अयं सव्वदुक्खाणं अंतं करेस्सति वा नवा करेस्सइ । एयाणि चेव उप्पन्ननाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेणं जाणइ पासइ, तं जहा—धम्मत्थिकायं, जाव करेस्सति वा नवा करेस्सति ।

१७. [प्र०] कतिविहे णं भंते ! णाणे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! पंचविहे णाणे पण्णत्ते, तं जहा— आभिणिबोहियणाणे, सुयणाणे, ओहिणाणे, मणपज्जवनाणे, केवलणाणे ।

१८. [प्र०] से किं तं आभिणिबोहियणाणे ? [उ०] आभिणिबोहियणाणे चउव्विहे पन्नत्ते, तं जहा—उग्गहो, ईहा, अवाओ, धारणा; एवं जहा 'रायप्पसेणइज्जे' णाणाणं भेदो तहेव इह भाणियव्वो, जाव सेत्तं केवलनाणे ।

१९. [प्र०] अन्नाणे णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! तिविहे पन्नत्ते, तं जहा— मइअन्नाणे, सुयअन्नाणे, विभंगणाणे ।

२०. [प्र०] से किं तं मइअन्नाणे ? [उ०] मइअन्नाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा— उग्गहे, जाव धारणा ।

२१. [प्र०] से किं तं उग्गहे ? [उ०] उग्गहे दुविहे पन्नत्ते, तं जहा—अत्थोग्गहे य वंजणोग्गहे य, एवं जहेव आभिणिबोहियनाणं तहेव, नवरं एगट्ठियवज्जं जाव नोइंदियधारणा । सेत्तं धारणा, सेत्तं मइअन्नाणे ।

२२. [प्र०] से किं तं सुयअन्नाणे ? [उ०] जं इमं अन्नाणिएहिं मिच्छादिट्ठिएहिं जहा नंदीए, जाव चत्तारि वेदा संगोवंगा, सेत्तं सुयअन्नाणे ।

सर्व दुःखोनो अन्त करशे के नहि ?—ए दश स्थानोने उत्पन्न ज्ञान—दर्शनने धारण करनार अर्हन्, जिन, केवली सर्वभावथी—साक्षात् ज्ञानथी जाणे छे अने जुए छे. जेमके धर्मास्तिकाय, यावत् आ जीव सर्वदुःखोनो अंत करशे के नहि.

ज्ञान.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञान केटला प्रकारे कह्युं छे ? [उ०] हे गौतम ! ज्ञान पांच प्रकारे कह्युं छे. ते आ प्रमाणे—*आभिनिबोधिकज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान अने केवलज्ञान. ज्ञानना प्रकार.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! आभिनिबोधिक ज्ञान केटला प्रकारे छे ? [उ०] हे गौतम ! आभिनिबोधिक ज्ञान चार प्रकारे छे, ते आ प्रमाणे— †अवग्रह, ईहा, अपाय अने धारणा. जेम ‡'राजप्रश्नीय' सूत्रमां ज्ञानोना प्रकार कह्या छे तेम अहीं पण कहेवा; यावत् 'ए प्रमाणे केवलज्ञान कह्युं' त्यां सुधी कहेवुं. आभिनिबोधिक ज्ञानना प्रकार.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! ¶अज्ञान केटला प्रकारे कह्युं छे ? [उ०] हे गौतम ! अज्ञान त्रण प्रकारे कह्युं छे, ते आ प्रमाणे—मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान अने विभंगज्ञान.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! मतिअज्ञान केटला प्रकारे कह्युं छे ? [उ०] हे गौतम ! मतिअज्ञान चार प्रकारनुं छे. ते आप्रमाणे—अवग्रह, यावद् धारणा. मति-अज्ञान.

२१. [प्र०] अवग्रह केटला प्रकारे छे ? [उ०] अवग्रह बे प्रकारनो कह्यो छे. ते आ प्रमाणे—अर्थावग्रह अने §व्यंजनावग्रह—ए प्रमाणे जेम ‡नंदीसूत्रमां आभिनिबोधिकज्ञान संबंधे कह्युं छे तेम अहीं जाणवुं. परन्तु त्यां आभिनिबोधिकज्ञान प्रसंगे अवग्रहादिना ‖एकार्थिक—समानार्थक शब्दो कहेला छे ते शिवाय यावत् नोइन्द्रियधारणा सुधी कहेवुं, ए प्रमाणे धारणा कही. ए प्रमाणे मतिअज्ञान कह्युं. अवग्रह.

२२. [प्र०] श्रुतअज्ञान केवा प्रकारनुं छे ? [उ०] 'जे अज्ञानी एवा मिथ्यादृष्टिओए प्ररुप्युं छे'—इत्यादि **नंदीसूत्रमां कह्या प्रमाणे यावत् सांगोपांग चार वेद ते श्रुतअज्ञान, ए प्रमाणे श्रुतअज्ञान कह्युं. श्रुत-अज्ञान.

---

१७. * अभि-अर्थाभिमुख एटले यथार्थ, नि-निश्चित, बोध ते आभिनिबोधिक, अर्थात् इन्द्रिय अने अनिन्द्रियनिमित्तक यथार्थ अने निश्चित बोध ते आभिनिबोधिकज्ञान. श्रुत एटले श्रवण करवुं ते द्वारा जे ज्ञान थाय ते श्रुतज्ञान, इन्द्रिय अने मनथी श्रुतग्रन्थानुसारे जे बोध थाय ते श्रुतज्ञान. अवधि-सर्व मूर्तद्रव्योनी मर्यादा-थी जे प्रत्यक्ष ज्ञान थाय ते अवधिज्ञान. मनोद्रव्यना पर्याय-आकारविशेष-नुं जे ज्ञान ते मनःपर्यवज्ञान. सर्व द्रव्य पर्यायनुं संपूर्ण ज्ञान ते केवलज्ञान.

१८. † रूपादि अर्थनो विशेषरहित सामान्य बोध ते अवग्रह, विद्यमान अर्थना विशेष धर्मनी विचारणा करवी ते ईहा, अर्थनो निश्चय करवो ते अपाय, निश्चित अर्थने स्मृति इत्यादि रूपे धारण करवो ते धारणा. ‡ राजप्रश्नीय प. १३०-१. पं. ४.

१९. ¶ विपरीत अथवा मिथ्या ज्ञानने अज्ञान कहे छे.

२१. § व्यंजनावग्रह-जे वडे अर्थ प्रकट कराय ते व्यञ्जन, एटले उपकरणेन्द्रिय अने शब्दादिरूपे परिणाम पामेल द्रव्यनो समूह. उपकरणेन्द्रिय वडे प्राप्त थयेल शब्दादि विषयोनुं अव्यक्त ज्ञान ते व्यंजनावग्रह, त्यारपछी 'आ कांइक छे' एवो सामान्य अवबोध ते अर्थावग्रह. ‡ नन्दीसूत्र. प. १६८-२. पं. ४.

‖ अवग्रहणता, अवधारणता, श्रवणता, अवलंबनता अने मेधा-आ पांच अवग्रहना एकार्थक शब्दो कह्या छे अने ईहादिना पण एकार्थक शब्दो कह्या छे ते अहीं मतिअज्ञानने विषे कहेवा.

२२. ** नंदीसूत्र. प. १९४-१. पं. ४.

२३. [प्र०] से किं तं विभंगनाणे ? [उ०] विभंगनाणे अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा–गामसंठिए, नगरसंठिए, जाव सन्निवेससंठिए, दीवसंठिए, समुद्दसंठिए, वाससंठिए, वासहरसंठिए, पव्वयसंठिए, रुक्खसंठिए, थूभसंठिए, हयसंठिए, गयसंठिए, नरसंठिए, किन्नरसंठिए, किंपुरिससंठिए, [1]महोरगसंठिए, गंधव्वसंठिए, उसभसंठिए, पसु–पसय–विहग–वानरणाणासंठाणसंठिए पण्णत्ते ।

२४. [प्र०] जीवाणं भंते ! किं नाणी अन्नाणी ? [उ०] गोयमा ! जीवा नाणी वि अन्नाणी वि; जे नाणी ते अत्थेगतिया दुन्नाणी, अन्थेगतिया तिन्नाणी, अत्थेगतिया चउनाणी, अत्थेगतिया एगनाणी । जे [2]दुन्नाणी ते आभिणिबोहियनाणी य सुयनाणी य । जे तिन्नाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी; अहवा आभिणिबोहियनाणी, सुयणाणी, मणपज्जवनाणी । जे चउनाणी ते आभिणियोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी, मणपज्जवनाणी । जे एगनाणी ते नियमा केवलनाणी । जे अन्नाणी ते अत्थेगतिया दुअन्नाणी, अत्थेगतिया तिअन्नाणी । जे दुअन्नाणी ते मइअन्नाणी सुयअन्नाणी य । जे तिअन्नाणी ते मइअन्नाणी, सुयअन्नाणी, विभंगनाणी ।

२५. [प्र०] नेरइया णं भंते ! किं णाणी, अन्नाणी ? [उ०] गोयमा ! नाणी वि, अन्नाणी वि । जे नाणी ते नियमा तिन्नाणी, तं जहा–आभिणिबोहियणाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी । जे अन्नाणी ते अत्थेगतिया दुअन्नाणी, अत्थेगतिया तिअन्नाणी; एवं तिन्नि अन्नाणाणि भयणाए ।

२६. [प्र०] असुरकुमारा णं भंते ! किं नाणी, अन्नाणी ? [उ०] जहेव नेरइया तहेव, तिन्नि नाणाणि नियमा, तिन्नि य अन्नाणाणि भयणाए. एवं जाव थणियकुमारा ।

२७. [प्र०] पुढविकाइया णं भंते ! किं नाणी, अन्नाणी ? [उ०] गोयमा ! नो नाणी, अन्नाणी । जे अन्नाणी ते नियमा दुअन्नाणी–मइअन्नाणी य सुयअन्नाणी य । एवं जाव वणस्सइकाइया ।

विभंगज्ञान.

२३. [प्र०] हे भगवन् ! विभंगज्ञान केटला प्रकारनुं कह्युं छे ? [उ०] *विभंगज्ञान अनेक प्रकारनुं कह्युं छे, ते आ प्रमाणे- ग्रामने आकारे, वर्ष (भारतादिक्षेत्र)ने आकारे, वर्षधरपर्वतने आकारे, पर्वतने आकारे, वृक्षना आकारे, स्तूपना आकारे, घोडाना आकारे, हाथीना आकारे, मनुष्यना आकारे, किंनरना आकारे, किंपुरुषना आकारे, महोरगना आकारे, गंधर्वना आकारे, वृषभना आकारे, पशु, †पसय, पक्षी अने वानरना आकारे–ए प्रमाणे अनेक आकारे विभंगज्ञान कहेलुं छे.

ज्ञानी अने अज्ञानी.

२४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जीवो ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! जीवो ज्ञानी पण छे अने अज्ञानी पण छे. जे जीवो ज्ञानी छे तेमां केटलाएक बे ज्ञानवाळा, केटलाएक त्रण ज्ञानवाळा, केटलाक चार ज्ञानवाळा अने केटलाक एक ज्ञानवाळा छे. जे बे ज्ञानवाळा छे ते मतिज्ञान अने श्रुतज्ञानवाळा छे. जे त्रण ज्ञानवाळा छे ते मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अने अवधिज्ञानवाळा छे, अथवा मतिज्ञान, श्रुतज्ञान अने मनःपर्यवज्ञानवाळा छे. जे चारज्ञानवाळा छे ते मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान अने मनःपर्यवज्ञानवाळा छे. जे एक ज्ञानवाळा छे ते अवश्य एक केवलज्ञानवाळा छे. जे जीवो अज्ञानी छे तेमां केटलाक बे अज्ञानवाळा अने केटलाक त्रण अज्ञानवाळा छे. जे बे अज्ञानवाळा छे ते मतिअज्ञान, अने श्रुतअज्ञानवाळा छे, अने जेओ त्रण अज्ञानवाळा छे तेओ मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, अने विभंगज्ञानवाळा छे.

नैरयिको.

२५. [प्र०] हे भगवन् ! नारको शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी ? [उ०] हे गौतम ! नारको ज्ञानी पण छे अने अज्ञानी पण छे. तेमां जे ज्ञानी छे ते अवश्य ‡त्रण ज्ञानवाळा होय छे, ते आ प्रमाणे–मतिज्ञान, श्रुतज्ञान अने अवधिज्ञानवाळा. जे अज्ञानी छे तेमां केटलाक ¶बे अज्ञानवाळा छे अने केटलाएक त्रण अज्ञानवाळा छे. ए प्रमाणे त्रण अज्ञानो भजनाए (विकल्पे) होय छे.

असुरकुमारो.

२६. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमारो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] जेम नैरयिको कह्या तेम असुरकुमारो जाणवा. अर्थात् जेओ ज्ञानी छे तेओ अवश्य त्रण ज्ञानवाळा होय छे, अने जेओ अज्ञानी छे तेओ भजनाए त्रण अज्ञानवाळा होय छे. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं.

पृथिवीकायिक.

२७. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिको शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी नथी पण अज्ञानी छे, अने ते अवश्य बे अज्ञानवाळा छे, मतिअज्ञानी अने श्रुतअज्ञानी. ए प्रमाणे यावत् वनस्पतिकायिक सुधी जाणवुं.

---

१ महोरगगंधव्व संठिए ग । २ दुयनाणी क-ङ ।

२३. * मिथ्यादर्शन मोहनीय कर्मना उदयथी विपरीत एवुं अवधिज्ञान ते विभंगज्ञान; तेनो ग्राम मात्र विषय होवाथी ते ग्रामाकारे कहेवाय छे. ए प्रमाणे बीजा भेदो पण जाणी लेवा. † पसय बे खरीवाळुं जंगली चोपगुं प्राणी विशेष.—टीकाकार.

२५. ‡ सम्यग्दृष्टि नारकोने भवप्रत्यय अवधिज्ञान होय छे, तेथी तेओ अवश्य त्रणज्ञानवाळा होय छे. ¶ जे अज्ञानी छे तेमां केटलाक बे अज्ञानवाळा छे, कमके कोइ असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच नरकमां उत्पन्न थाय त्यारे तेओने अपर्याप्तावस्थामां विभंग न होवाथी बे अज्ञान होय छे, अने जो मिथ्यादृष्टि संज्ञी पंचेन्द्रिय नरकमां उत्पन्न थाय तो तेओने अपर्याप्तावस्थामां पण विभंगज्ञान होय छे तेथी त्रण अज्ञान कह्या छे–टीकाकार.

२८. [प्र०] बेइंदियाणं पुच्छा। [उ०] गोयमा! णाणी वि अन्नाणी वि। जे नाणी ते नियमा दुन्नाणी, तं जहा—आभिणिबोहियनाणी य सुयनाणी य। जे अन्नाणी ते नियमा दुअन्नाणी, तं जहा—मइअन्नाणी य सुयअन्नाणी य। एवं तेइंदिय—चउरिंदिया वि।

२९. [प्र०] पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा। [उ०] गोयमा! नाणी वि अन्नाणी वि। जे नाणी ते अत्थेगइया दुन्नाणी, अत्थेगतिया तिन्नाणी। एवं तिण्णि नाणाणि तिन्नि अन्नाणाणि य भयणाए। मणुस्सा जहा जीवा, तहेव पंच नाणाइं तिन्नि अन्नाणाणि य भयणाए। वाणमंतरा जहा नेरइया। जोइसिय-वेमाणियाणं तिन्नि [1]नाणाणि तिन्नि [2]अन्नाणाणि नियमा।

३०. [प्र०] सिद्धाणं भंते! पुच्छा। [उ०] गोयमा! नाणी, नो अन्नाणी; नियमा एगनाणी केवलणाणी।

३१. [प्र०] निरयगतियाणं भंते! जीवा किं नाणी, अन्नाणी? [उ०] गोयमा! नाणी वि अन्नाणी वि; तिन्नि नाणाइं नियमा, तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए।

३२. [प्र०] तिरियगतियाणं भंते! जीवा किं नाणी अन्नाणी? [उ०] गोयमा! दो नाणा, दो अन्नाणा नियमा।

२८. [प्र०] *बेइन्द्रिय जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ०] हे गौतम! तेओ ज्ञानी पण छे अने अज्ञानी पण छे. जेओ ज्ञानी छे तेओ अवश्य बे ज्ञानवाळा छे, ते आ प्रमाणे—मतिज्ञानी अने श्रुतज्ञानी. जेओ अज्ञानी छे ते अवश्य बे अज्ञानवाळा छे; ते आ प्रमाणे—मतिअज्ञानी अने श्रुतअज्ञानी. ए प्रमाणे त्रीन्द्रिय अने चउरिन्द्रिय जीवो संबन्धे पण जाणवुं.

बेइन्द्रिय, त्रीन्द्रिय अने चउरिन्द्रिय.

२९. [प्र०] पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिको शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ०] हे गौतम! तेओ ज्ञानी छे अने अज्ञानी पण छे, जेओ ज्ञानी छे तेमां केटलाक बे ज्ञानवाळा, अने केटलाक त्रण ज्ञानवाळा छे, ए प्रमाणे त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए (विकल्पे) जाणवां. जीवोनी पेठे मनुष्योने पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. नैरयिकोने कह्युं (सू. २५.) तेम वानव्यंतरोने जाणवुं. ज्योतिषिको अने वैमानिकोने अवश्य त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान होय छे.

पंचेन्द्रियतिर्यंचो. मनुष्यो जीवोनी पेठे. वानव्यन्तर, ज्योतिषिको अने वैमानिको.

३०. [प्र०] हे भगवन्! सिद्धो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ०] हे गौतम! सिद्धो ज्ञानी छे पण अज्ञानी नथी, तेओ अवश्य एक केवलज्ञानवाळा छे.

सिद्धो.

३१. [प्र०] हे भगवन्! †निरयगतिक—नरकगतिमां जता जीवो शुं ज्ञानी होय छे के अज्ञानी होय छे? [उ०] हे गौतम! ते ज्ञानी पण होय छे अने अज्ञानी पण होय छे, [जेओ ज्ञानी छे]तेओने अवश्य त्रण ज्ञान होय छे अने [जे अज्ञानी छे तेओने]त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

निरयगतिक.

३२. [प्र०] हे भगवन्! ‡तिर्यंचगतिक—तिर्यंचगतिमां जता जीवो—शुं ज्ञानी होय छे के अज्ञानी होय छे? [उ०] हे गौतम! तेओने अवश्य बे ज्ञान अने बे अज्ञान होय छे.

तिर्यंचगतिक.

---

१ नाणा घ। २ अन्नाणा घ।

२८. * बेइन्द्रियादि जीवोमां पूर्वबद्धायुष् मनुष्य के तिर्यंच औपशमिकसम्यग्दृष्टि उपशम सम्यक्त्व वमतो उत्पन्न थाय त्यारे तेने अपर्याप्तावस्थाए सास्वादन सम्यग्दर्शन होय छे. ते जघन्यथी एक समय, अने उत्कृष्ट छ आवलिका सुधी रहे छे, त्यां सुधी ते ज्ञानी कहेवाय छे. त्यार पछी ते मिथ्यात्वने प्राप्त थाय छे त्यारे ते अज्ञानी कहेवाय छे.

३१. † १ गति, २ इन्द्रिय, ३ काय, ४ सूक्ष्म, ५ पर्याप्त, ६ भवस्थ, ७ भवसिद्धिक, ८ संज्ञी, ९ लब्धि, १० उपयोग, ११ लेश्या, १२ कषाय, १३ वेद, १४ आहार, १५ ज्ञान, १६ गोचर (विषय), १७ काल, १८ अंतर, १९ अल्पबहुत्व अने २० पर्याय—ए वीश द्वारो अहीं विवक्षित छे. तेमां प्रथम गतिद्वारने विषे निरयगति द्वार कहे छे. निरय—नरकने विषे गति—गमन जेओनुं छे तेओ निरयगतिक कहेवाय छे एटले सम्यग्दृष्टि के मिथ्यादृष्टि, ज्ञानी के अज्ञानी पंचेन्द्रिय तिर्यंच अने मनुष्य नरकमां उत्पन्न थवा वाळा अन्तर गतिमां वर्तता होय ते निरयगतिक समजवा, ते माटे अहीं निरयशब्दनी साथे गतिग्रहण करेल छे. निरयगतिकने—जो ते ज्ञानी होय तो तेने—त्रण ज्ञान अवश्य होय छे, केमके तेने अवधिज्ञान भवप्रत्यय होवाथी ते अन्तर गतिमां पण होय छे, अने तेओने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे, केमके असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच नरकमां जाय त्यारे अपर्याप्तावस्थाए विभंगज्ञान न होवाथी तेने बे अज्ञान होय छे, अने मिथ्यादृष्टि संज्ञीने त्रण अज्ञान होय छे, कारणके तेने भवप्रत्यय विभंगज्ञान होय छे. —टीका.

३२. ‡ तिर्यंचगतिमां जतां वच्चे अन्तराल गतिमां वर्तता होय ते तिर्यंचगतिक जीवो जाणवा; तेने बे ज्ञान अने बे अज्ञान होय छे, केमके सम्यग्दृष्टि जीवो अवधिज्ञानथी पडया पछी मतिश्रुतज्ञानसहित तिर्यंचगतिमां जाय छे, तेथी तेने बे ज्ञान होय छे, अने मिथ्यादृष्टि जीवो विभंगज्ञानथी पडया पछी तिर्यंचगतिमां जाय छे माटे तेने बे अज्ञान होय छे.—टीका.

३३. [प्र०] मणुस्सगइया णं भंते ! जीवा किं नाणी, अन्नाणी ? [उ०] गोयमा ! तिन्नि नाणाइं भयणाए, दो अन्नाणाइं नियमा । देवगतिया जहा निरयगतिया ।

३४. [प्र०] सिद्धगतिया णं भंते० ? [उ०] जहा सिद्धा ।

३५. [प्र०] सइंदिया णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ? [उ०] गोयमा ! चत्तारि नाणाइं, तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए ।

३६. [प्र०] एगिंदिया णं भंते ! जीवा किं नाणी० ? [उ०] जहा पुढविकाइया, बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाणं दो नाणा, दो अन्नाणा नियमा । पंचिंदिया जहा सइंदिया ।

३७. [प्र०] अणिंदिया णं भंते ! जीवा किं नाणी० ? । [उ०] जहा सिद्धा ।

३८. [प्र०] सकाइया णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ? [उ०] गोयमा ! पंच नाणाणि तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया नो नाणी, अन्नाणी, नियमा दुअन्नाणी, तं जहा-मतिअन्नाणी य सुयअन्नाणी य । तसकाइया जहा सकाइया ।

मनुष्यगतिक.

३३. [प्र०] हे भगवन् ! *मनुष्यगतिक-मनुष्यगतिमां जता जीवो-शुं ज्ञानी होय के अज्ञानी होय ? [उ०] हे गौतम ! तेओने भजनाए (विकल्पे) त्रण ज्ञान होय छे अने अवश्य बे अज्ञान होय छे. †देवगतिक-देवगतिमां जता जीवो-निरयगतिकनी पेठे (सू० ३१.) जाणवा.

सिद्धिगतिक.

३४. [प्र०] हे भगवन् ! ‡सिद्धिगतिमां जता जीवो शुं ज्ञानी होय के अज्ञानी होय ? [उ०] तेओ सिद्धोनी पेठे (सू० ३०.) जाणवा.

सेन्द्रिय.

३५. [प्र०] हे भगवन् ! ¶सेन्द्रिय-इन्द्रियवाळा-जीवो शुं ज्ञानी होय के अज्ञानी होय ? [उ०] हे गौतम ! तेओने भजनाए चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान होय छे.

एकेन्द्रियादि.

३६. [प्र०] हे भगवन् ! एकेन्द्रिय जीवो शुं ज्ञानी होय के अज्ञानी होय ? [उ०] हे गौतम ! §पृथिवीकायिकनी पेठे (सू० २७.) [एकेन्द्रियजीवो] जाणवा. बेइन्द्रिय, त्रीन्द्रिय अने चउरिंद्रिय जीवोने अवश्य बे ज्ञान अने बे अज्ञान होय छे. पंचेंद्रिय जीवो सेन्द्रियजीवोनी पेठे (सू० ३५.) जाणवा.

अनिन्द्रिय.

३७. [प्र०] हे भगवन् ! ‖अनिन्द्रिय-इंद्रियरहित-जीवो शुं ज्ञानी होय के अज्ञानी होय ? [उ०] तेओ सिद्धनी पेठे (सू० ३०.) जाणवा.

सकायिक जीवो. पृथिवीकायिकादि. त्रसकायिक.

३८. [प्र०] हे भगवन् ! सकायिक जीवो शुं ज्ञानी होय के अज्ञानी होय ? [उ०] हे गौतम ! तेओने पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. पृथिवीकायिक यावत् वनस्पतिकायिक ‖जीवो ज्ञानी नथी पण अज्ञानी होय छे, अने ते अवश्य बे अज्ञानवाळा होय छे, ते आ प्रमाणे—मतिअज्ञानवाळा अने श्रुतअज्ञानवाळा. त्रसकायिक जीवो सकायिक जीवोनी पेठे जाणवा.

---

३३. * मनुष्यगतिमां जतां अंतराल गतिए वर्तता होय ते अहीं मनुष्यगतिक जाणवा, तेमांना केटलाक जीवो जे ज्ञानी छे ते तीर्थकरनी पेठे अवधिज्ञान साथे ज मनुष्यगतिमां जाय छे, अने केटलाक तेने छोडीने जाय छे, माटे तेओने त्रण अथवा बे ज्ञान होय छे. जे अज्ञानी छे तेओ विभंगज्ञानथी पडचा पछी मनुष्यगतिमां उत्पन्न थाय छे; माटे अवश्य तेने बे अज्ञान होय छे. † देवगतिमां जतां अन्तराल गतिए वर्तता जीवो नरकगतिकनी पेठे जाणवा. केमके जे ज्ञानी देवगतिमां जाय छे, तेओने भवप्रत्यय अवधिज्ञान देवायुषने प्रथम समये ज उत्पन्न थाय छे, तेथी नारकोनी पेठे तेओने त्रण ज्ञान अवश्य होय छे. जेओ अज्ञानी छे अने असंज्ञी थकी देवगतिमां उत्पन्न थाय छे, तेओने अपर्याप्तावस्थामां विभंगज्ञाननो अभाव होवाथी बे अज्ञान होय छे. जे अज्ञानी संज्ञी थकी आवी देवगतिमां उत्पन्न थाय छे तेने भवप्रत्यय विभंगज्ञान होवाथी त्रण अज्ञान होय छे.—टीका.

३४. ‡ अहीं अन्तरगतिना अभावथी सिद्ध अने सिद्धिगतिकनो भेद नथी, पण गतिद्वारना क्रमने लीधे तेनो जुदो निर्देश कर्यो छे.—टीका.

३५. ¶ इन्द्रियद्वारने विषे सेन्द्रिय एटले इन्द्रियना उपयोगवाळा, ते ज्ञानी अने अज्ञानी बन्ने प्रकारना छे. तेमां ज्ञानीने चार ज्ञान भजनाए होय छे, एटले बे, त्रण के चार ज्ञान होय छे; पण तेओने केवलज्ञान होतुं नथी, केमके ते अतीन्द्रियज्ञान छे. अहीं बे इत्यादि ज्ञानो कहेला छे ते लब्धिनी अपेक्षाए जाणवा, उपयोगनी अपेक्षाए सर्वने एकज ज्ञान होय छे. अज्ञानीने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे-एटले कदाचित् बे के त्रण अज्ञान होय छे.—टीका.

३६. § पृथिवीकायिकनी पेठे एकेन्द्रियजीवो मिथ्यादृष्टि होवाथी अज्ञानी छे अने ते बे अज्ञानवाळा छे. बेइन्द्रियादिक जीवोने बे ज्ञान होय छे, केमके तेमां सास्वादन गुणस्थानकनो संभव छे. ते सिवाय बीजाने बे अज्ञान होय छे.—टीका.

३७. ‖ अनिन्द्रिय एटले इन्द्रियना उपयोगरहित केवलज्ञानी, तेओने सिद्धनी पेठे एक केवल ज्ञान होय छे.—टीका.

३८. ‖ काय एटले औदारिकादिशरीर अथवा पृथिव्यादि छ काय, ते वडे सहित ते सकायिक, तेओ केवली पण होय, तेथी सकायिक सम्यग्दृष्टिने पांच ज्ञान अने मिथ्यादृष्टिने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.—टीका.

३९. [प्र०] अकाइया णं भंते ! जीवा किं नाणी० ? [उ०] जहा सिद्धा ।

४०. [प्र०] सुहुमा णं भंते ! जीवा किं नाणी० ? [उ०] जहा पुढविकाइया ।

४१. [प्र०] बादरा णं भंते ! जीवा किं नाणी० ? [उ०] जहा सकाइया ।

४२. [प्र०] नोसुहुमा नोबादरा णं भंते ! जीवा० ? [उ०] जहा सिद्धा ।

४३. [प्र०] पज्जत्ता णं भंते ! जीवा किं नाणी० ? [उ०] जहा सकाइया ।

४४. [प्र०] पज्जत्ता णं भंते ! नेरइया किं नाणी ? [उ०] तिन्नि नाणा, तिन्नि अन्नाणा नियमा, जहा नेरइआ, एवं जाव थणियकुमारा । पुढविकाइया जहा एगिंदिया । एवं जाव चउरिंदिया ।

४५. [प्र०] पज्जत्ता णं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया किं नाणी अन्नाणी ? [उ०] तिन्नि नाणा, तिन्नि अन्नाणा भयणाए । मणुस्सा जहा सकाइया । वाणमंतर–जोइसिय–वेमाणिया जहा नेरइया ।

४६. [प्र०] अपज्जत्ता णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ? [उ०] तिन्नि नाणा, तिन्नि अन्नाणा भयणाए ।

४७. [प्र०] अपज्जत्ता णं भंते ! नेरतिया किं नाणी अन्नाणी ? [उ०] तिन्नि नाणा नियमा, तिण्णि अन्नाणा भयणाए । एवं जाव थणियकुमारा । पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया जहा एगिंदिया ।

३९. [प्र०] हे भगवन् ! *कायरहित जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ०] हे गौतम ! सिद्धोनी पेठे (सू० ३०.) तेओ जाणवा.	कायरहित जीवो.

४०. [प्र०] हे भगवन् ! †सूक्ष्म जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ०] पृथिवीकायिकोनी पेठे (सू० २७.) जाणवा.	सूक्ष्म जीवो.

४१. [प्र०] हे भगवन् ! बादरजीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ०] ‡सकायिक जीवोनी पेठे (सू० ३८.) जाणवा.	बादर जीवो.

४२. [प्र०] हे भगवन् ! नोसूक्ष्म नोबादर जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ०] सिद्धोनी पेठे (सू० ३०.) जाणवा.

४३. [प्र०] हे भगवन् ! पर्याप्त जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ०] ¶सकायिक जीवोनी पेठे (सू० ३८.) जाणवा.	पर्याप्त जीवो.

४४. [प्र०] हे भगवन् ! पर्याप्त §नैरयिको शुं ज्ञानी छे? के अज्ञानी छे? [उ०] हे गौतम ! तेओने त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान अवश्य होय छे. जेम नैरयिको माटे कह्युं तेम यावत् स्तनितकुमार देवो माटे जाणवुं. पृथिवीकायिको एकेन्द्रियनी पेठे (सू० ३६.) जाणवा. ए प्रमाणे यावत् चउरिंद्रियजीवो जाणवा.	पर्याप्तनैरयिकादि.

४५. [प्र०] हे भगवन् ! पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिको शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ०] हे गौतम ! तेओने त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान ‖भजनाए होय छे, मनुष्यो सकायिकनी पेठे (सू० ३८.) जाणवा. वानव्यंतरो, ज्योतिषिको अने वैमानिको नैरयिकनी पेठे (सू० २५.) जाणवा.	पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक. पर्याप्त मनुष्यो.

४६. [प्र०] हे भगवन् ! अपर्याप्त जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ०] हे गौतम ! तेओने त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए छे.	अपर्याप्त जीवो.

४७. [प्र०] हे भगवन् ! अपर्याप्त नैरयिको शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ०] हे गौतम ! तेओने अवश्य त्रण ज्ञान छे अने भजनाए त्रण अज्ञान छे, ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमार देवो जाणवा. जेम एकेन्द्रियो संबन्धे (सू० ३६.) कह्युं तेम अपर्याप्त पृथ्वीकायिकथी आरंभी वनस्पतिकायिक पर्यन्त कहेवुं.	अपर्याप्तनैरयिकादि. अपर्याप्त पृथिवीकायिकादि.

---

३९. * जेओने पूर्वे कहेल काय एटले औदारिकादि शरीर अथवा पृथिव्यादिकाय नथी ते अकायिक एटले सिद्ध कहेवाय छे.—टीका.

४०. † सूक्ष्मद्वारने विषे सूक्ष्म जीवो पृथिवीकायिकनी पेठे मिथ्यादृष्टि होवाथी तेओने बे अज्ञान होय छे.

४१. ‡ सकायिक जीवोनी पेठे बादर जीवो केवलज्ञानी पण होय छे, माटे तेओने भजनाए पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान होय छे.

४३. ¶ पर्याप्तद्वारने विषे पर्याप्त जीवो केवलज्ञानी पण होय छे, माटे ते सकायिकनी जेम पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवा.—टीका.

४४. § असंज्ञी थकी आवेला नारकोने अपर्याप्तावस्थामां विभंगनो अभाव होय छे अने पर्याप्त अवस्थामां तेओने त्रण अज्ञान अवश्य होय छे.—टीका.

४५. ‖ पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंचमां अवधिज्ञान के विभंग ज्ञान केटलाकने होय अने केटलाकने न होय माटे त्रण ज्ञान के त्रण अज्ञान, अथवा बे ज्ञान के बे अज्ञान तेओने होय छे.—टीका.

४८. [प्र०] बेइंदियाणं पुच्छा। [उ०] दो नाणा, दो अन्नाणा नियमा। एवं जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं।

४९. [प्र०] अपज्जत्तगा णं भंते! मणुस्सा किं नाणी अन्नाणी? [उ०] तिन्नि नाणाइं भयणाए, दो अन्नाणाइं नियमा। वाणमंतरा जहा नेरइया। अपज्जत्तगाणं जोइसिय-वेमाणियाणं तिन्नि नाणा, तिन्नि अन्नाणा नियमा।

५०. [प्र०] नोपज्जत्तगा नोअपज्जत्तगा णं भंते! जीवा किं नाणी० ? [उ०] जहा सिद्धा।

५१. [प्र०] निरयभवत्था णं भंते! जीवा किं नाणी अन्नाणी? [उ०] जहा निरयगतिया।

५२. [प्र०] तिरियभवत्था णं भंते! जीवा किं नाणी अन्नाणी? [उ०] तिन्नि नाणा, तिन्नि अन्नाणा भयणाए।

५३. [प्र०] मणुस्सभवत्था णं० ? [उ०] जहा सकाइया।

५४. [प्र०] देवभवत्था णं भंते! ० ? [उ०] जहा निरयभवत्था। अभवत्था जहा सिद्धा।

५५. [प्र०] भवसिद्धियाणं भंते! जीवा किं नाणी० ? [उ०] जहा सकाइया।

अपर्याप्त बेइन्द्रियादि.

४८. [प्र०] अपर्याप्त बेइन्द्रिय जीवो ज्ञानी छे के अज्ञानी? [उ०] तेओने *बे ज्ञान अने बे अज्ञान अवश्य होय छे. ए प्रमाणे यावत् पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक सुधी जाणवुं.

अपर्याप्त मनुष्य.

४९. [प्र०] हे भगवन्! अपर्याप्त मनुष्य शुं ज्ञानी होय छे के अज्ञानी होय छे? [उ०] हे गौतम! तेओने †त्रण ज्ञान भजनाए होय छे अने अवश्य बे अज्ञान होय छे. नैरयिकोनी पेठे (सू० ४७.) ‡वानव्यंतरोने जाणवुं. तथा ¶अपर्याप्त ज्योतिषिको अने वैमानिकोने त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान अवश्य होय छे.

अपर्याप्त वानव्यंतर ज्योतिषिक अने वैमानिक.

नोपर्याप्त नोअपर्याप्त जीवो.

५०. [प्र०] हे भगवन्! §नोपर्याप्त अने नोअपर्याप्त जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ०] हे गौतम! तेओ सिद्धनी पेठे (सू० ३०.) जाणवा.

निरयभवस्थ.

५१. [प्र०] हे भगवन्! $निरयभवस्थ जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ०] हे गौतम! तेओ निरयगतिकनी पेठे (सू० ३१.) जाणवा.

तिर्यग्भवस्थ.

५२. [प्र०] हे भगवन्! तिर्यग्भवस्थ जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ०] हे गौतम! तेओने त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए छे.

मनुष्यभवस्थ.

५३. [प्र०] हे भगवन्! मनुष्यभवस्थ जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ०] हे गौतम! तेओ सकायिकनी पेठे (सू० ३८.) जाणवा.

देवभवस्थ.

अभवस्थ.

५४. [प्र०] हे भगवन्! देवभवस्थ जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ०] हे गौतम! तेओ निरयभवस्थनी पेठे (सू० ५१.) जाणवा. अभवस्थ—भवमां नहि रहेनारा [शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ०] हे गौतम! तेओ] सिद्धोनी पेठे (सू० ३०.) जाणवा.

भवसिद्धिक.

५५. [प्र०] हे भगवन्! भवसिद्धिक—भव्य जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ०] हे गौतम! तेओ ||सकायिकनी पेठे (सू० ३८.) जाणवा.

---

४८. * अपर्याप्त बेइन्द्रियादिकोमांना कोइकने सास्वादन सम्यग्दर्शननो संभव होवाथी बे ज्ञान अने बाकीनाने बे अज्ञान होय छे.

४९. † सम्यग्दृष्टि मनुष्यने अपर्याप्तावस्थामां तीर्थंकरादिनी पेठे अवधिज्ञाननो संभव छे तेथी त्रण ज्ञान भजनाए होय छे, पण मिथ्यादृष्टिने विभंग होतुं नथी माटे अवश्य बे अज्ञान होय छे.

‡ अपर्याप्त व्यन्तरो नारकोनी पेठे अवश्य त्रण ज्ञानवाळा, बे अज्ञानवाळा के त्रण अज्ञानवाळा जाणवा, केमके असंज्ञी थकी उत्पन्न थयेला तेओ विषे अपर्याप्तावस्थाए विभंगज्ञाननो अभाव छे.

¶ ज्योतिषिक अने वैमानिकने विषे संज्ञीथी ज आवीने उत्पन्न थाय छे, माटे तेओने अपर्याप्तावस्थामां पण भवप्रत्यय अवधि के विभंगनो अवश्य सद्भाव होवाथी त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान होय छे.—टीका.

५०. § नोपर्याप्त अने नोअपर्याप्त एटले पर्याप्तभाव अने अपर्याप्तभावना अभावथी सिद्ध जीवो जाणवा, केमके तेओ पर्याप्त अने अपर्याप्तनाम कर्मथी रहित छे.—टीका.

५१. $ निरयभवस्थ एटले नरकगतिने विषे उत्पत्तिस्थानने प्राप्त थयेला, अने निरयगतिक एटले नरकगतिमां जतां अंतरालगतिमां वर्तता, पण उत्पत्तिस्थानने नहि प्राप्त थयेला—एटलो तफावत छे. तेओ निरयगतिकनी पेठे त्रण ज्ञानवाळा अने बे के त्रण अज्ञानवाळा जाणवा.—टीका.

५५. || भव्य जीवो सकायिकनी पेठे पांच ज्ञानवाळा के त्रण अज्ञानवाळा भजनाए होय छे.

५६. [प्र०] अभवसिद्धियाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नो नाणी, अन्नाणी, तिन्नि अन्नाणाई भयणाए ।

५७. [प्र०] नोभवसिद्धिया नोअभवसिद्धिया णं भंते ! जीवा० ? [उ०] जहा सिद्धा ।

५८. [प्र०] सन्नीणं पुच्छा । [उ०] जहा सइंदिया । असन्नी जहा बेइंदिया । नोसन्नी नोअसन्नी जहा सिद्धा ।

५९. [प्र०] कतिविहा णं भंते ! लद्धी पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! दसविहा लद्धी पण्णत्ता, तं जहा– १ नाणलद्धी, २ दंसणलद्धी, ३ चरित्तलद्धी, ४ चरित्ताचरित्तलद्धी, ५ दाणलद्धी, ६ लाभलद्धी, ७ भोगलद्धी, ८ उवभोगलद्धी, ९ वीरियलद्धी, १० इंदियलद्धी ।

६०. [प्र०] णाणलद्धी णं भंते ! कइविहा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा– आभिणिबोहियणाणलद्धी, जाव केवलणाणलद्धी ।

६१. [प्र०] अन्नाणलद्धी णं भंते ! कतिविहा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! तिविहा पन्नत्ता, तं जहा–मइअन्नाणलद्धी, सुयअन्नाणलद्धी, विभंगनाणलद्धी ।

६२. [प्र०] दंसणलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! तिविहा पन्नत्ता, तं जहा–सम्मदंसणलद्धी, मिच्छादंसणलद्धी, सम्मामिच्छादंसणलद्धी ।

५६. [प्र०] हे भगवन् ! अभवसिद्धिक–अभव्य जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी नथी पण अज्ञानी छे, अने तेओने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

अभवसिद्धिक.

५७. [प्र०] हे भगवन् ! नोभवसिद्धिक नोअभवसिद्धिक जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ सिद्धोनी पेठे (सू० ३०.) जाणवा.

नोभवसिद्धिक नोअभवसिद्धिक.

५८. [प्र०] हे भगवन् ! संज्ञिजीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ सेन्द्रियनी पेठे (सू० ३५.) जाणवा. असंज्ञिजीवो बेइन्द्रियनी पेठे (सू० २८.) जाणवा. नोसंज्ञि–नोअसंज्ञिजीवो सिद्धोनी पेठे (सू० ३०.) जाणवा.

संज्ञिजीवो. असंज्ञी जीवो. नोसंज्ञी नोअसंज्ञी जीवो.

५९. [प्र०] हे भगवन् ! लब्धि केटला प्रकारे कही छे ? [उ०] हे गौतम ! *लब्धि दश प्रकारे कही छे, ते आ प्रमाणे—१ ज्ञानलब्धि, २ दर्शनलब्धि, ३ चारित्रलब्धि, ४ चारित्राचारित्रलब्धि, ५ दानलब्धि, ६ लाभलब्धि, ७ भोगलब्धि, ८ उपभोगलब्धि, ९ वीर्यलब्धि अने १० इन्द्रियलब्धि.

लब्धिना प्रकार.

६०. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानलब्धि केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! ज्ञानलब्धि पांच प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे– आभिनिबोधिकज्ञानलब्धि, यावत् केवलज्ञानलब्धि.

ज्ञानलब्धि.

६१. [प्र०] हे भगवन् ! अज्ञानलब्धि केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! अज्ञानलब्धि त्रण प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे– मतिअज्ञानलब्धि, श्रुतअज्ञानलब्धि अने विभंगज्ञानलब्धि.

अज्ञानलब्धि.

६२. [प्र०] हे भगवन् ! दर्शनलब्धि केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! दर्शनलब्धि त्रण प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे–†सम्यग्दर्शनलब्धि, मिथ्यादर्शनलब्धि अने सम्यग्मिथ्यादर्शनलब्धि.

दर्शनलब्धि.

---

१ णाणुक– क ।

५९. * लब्धि–ते ते प्रतिबन्धक कर्मना क्षयादिकथी आत्माने ज्ञानादिगुणनो लाभ थवो, तेना दश प्रकार छे—१ तथाविध ज्ञानावरण कर्मना क्षय के क्षयोपशमथी यथासंभव पांच प्रकारना ज्ञाननो लाभ थवो ते ज्ञानलब्धि. २ सम्यक्, मिश्र के मिथ्याश्रद्धानरूप आत्मानो परिणाम ते दर्शनलब्धि. ३ चारित्रमोहनीय कर्मना क्षय, उपशम के क्षयोपशमथी थयेलो आत्मपरिणाम ते चारित्रलब्धि. ४ अप्रत्याख्यानावरण कषायना क्षयोपशमथी थयेलो देशविरतिरूप आत्मपरिणाम ते चारित्राचारित्रलब्धि. ९ अन्तराय कर्मना क्षय के क्षयोपशमथी उत्पन्न थयेली दानादि ५ लब्धिओ. अहीं भोग अने उपभोगमां एटलो विशेष छे के एकवार मात्र जेनो उपयोग थइ शके एवा आहारादिने भोग कहेवाय छे अने वारंवार जेनो उपयोग थइ शके एवा वस्त्र–भवनादि पदार्थने उपभोग कहेवाय छे. १० मतिज्ञानावरणकर्मना क्षयोपशमथी प्राप्त थयेल भावेन्द्रियोनो तथा एकेन्द्रियादि जातिनामकर्म अने पर्याप्तनामकर्मना उदयथी द्रव्येन्द्रियोनो लाभ थवो ते इन्द्रियलब्धि.—टीका.

६२. † १ मिथ्यात्वमोहनीयकर्मना उपशम, क्षय के क्षयोपशमथी थएल श्रद्धानरूप आत्मपरिणाम ते सम्यग्दर्शनलब्धि, २ अशुद्ध मिथ्यात्वपुद्गलना वेदनथी थएल विपर्यासरूप जीवपरिणाम ते मिथ्यादर्शनलब्धि, अने ३ अर्ध विशुद्ध मिथ्यात्व पुद्गलना वेदनथी उत्पन्न थएल मिश्ररुचिरूप जीवपरिणाम ते सम्यग्मिथ्यादर्शनलब्धि.

६३. [प्र०] चरित्तलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा– सामाइयचरित्तलद्धी, छेदोवट्ठावणियलद्धी, परिहारविसुद्धिलद्धी, सुहुमसंपरायलद्धी, अहक्खायचरित्तलद्धी ।

६४. [प्र०] चरित्ताचरित्तलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! एगागारा पन्नत्ता, एवं जाव उवभोगलद्धी एगागारा पन्नत्ता ।

६५. [प्र०] वीरियलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! तिविहा पन्नत्ता, तं जहा–बालवीरियलद्धी, पंडियवीरियलद्धी, बालपंडियवीरियलद्धी ।

६६. [प्र०] इंदियलद्धी णं भंते ! कतिविहा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा–सोइंदियलद्धी, जाव फासिंदियलद्धी ।

६७. [प्र०] नाणलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ? [उ०] गोयमा ! नाणी, नो अन्नाणी । अत्थेगतिया दुन्नाणी एवं पंच नाणाइं भयणाए ।

चारित्रलब्धि.

६३. [प्र०] हे भगवन् ! चारित्रलब्धि केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! चारित्रलब्धि पांच प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे–१* सामायिकचारित्रलब्धि, २ छेदोपस्थापनीयचारित्रलब्धि, ३ परिहारविशुद्धिकचारित्रलब्धि, ४ सूक्ष्मसंपरायचारित्रलब्धि अने ५ यथाख्यातचारित्रलब्धि.

चारित्राचारित्र-लब्धि.

६४. [प्र०] हे भगवन् ! †चारित्राचारित्रलब्धि केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! एक प्रकारनी कही छे, ए प्रमाणे [दान लब्धि], यावत् उपभोगलब्धि पण एक प्रकारनी कही छे.

वीर्यलब्धि.

६५. [प्र०] हे भगवन् ! वीर्यलब्धि केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! वीर्यलब्धि त्रण प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे–‡बालवीर्यलब्धि, पंडितवीर्यलब्धि अने बालपंडितवीर्यलब्धि.

इन्द्रियलब्धि.

६६. [प्र०] हे भगवन् ! इंद्रियलब्धि केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! इंद्रियलब्धि पांच प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे– श्रोत्रेन्द्रियलब्धि यावत् स्पर्शेन्द्रियलब्धि.

ज्ञानलब्धिवाळा ज्ञानी के अज्ञानी ?

६७. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानलब्धिवाळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी छे पण अज्ञानी नथी. केटला एक बेज्ञानवाळा छे; ए प्रमाणे तेओने पांच ज्ञान भजनाए होय छे.

१–विसुद्धक–घ । २–संपरागक–क ।

६३. * (१) हिंसादि सावद्य योगथी विरति ते सामायिकचारित्र, तेना बे प्रकार छे–इत्वर अने यावत्कथिक. इत्वर एटले अल्पकालिन, ते इत्वर सामायिक पहेला अने छेल्ला तीर्थंकरना तीर्थने विषे प्रथम दीक्षा लेनारने होय छे. यावत्कथिक एटले यावज्जीव, ते चारित्र मध्यम बावीश तीर्थंकरना तीर्थने विषे वर्तमान साधुओने होय छे; केमके तेओ ऋजु अने प्राज्ञ होवाथी तेओने चारित्रमां दोषनो संभव नथी तेथी तेओने प्रथमथी ज यावत्कथिक सामायिकचारित्र होय छे. अहीं कोइ शंका करे के इत्वरसामायिकवाळा साधुए यावज्जीव सावद्य योगनी प्रतिज्ञा लीधेली होवाथी अने फरीथी छेदोपस्थापनीय चारित्र लेवामां पूर्वना चारित्रनो त्याग थतो होवाथी प्रतिज्ञानो भंग केम न थाय ? तेनुं उत्तर ए छे के छेदोपस्थापनीय चारित्रमां पण सावद्ययोगनो त्याग होवाथी प्रतिज्ञानो भंग थतो नथी, पण ते चारित्रनी विशेष शुद्धि थवाथी नाममात्रनो भेद थाय छे. (२) छेदोपस्थानीय–पूर्वना चारित्रपर्यायनो छेद करीने पुनः महाव्रतोने अंगीकार करवा ते, तेना बे प्रकार छे–सातिचार अने निरतिचार. इत्वरसामायिकवाळा प्रथम दीक्षितने पुनः महाव्रतोनुं आरोपण करे, अथवा बीजा तीर्थंकरना साधुओ बीजा तीर्थंकरना तीर्थमां प्रवेश करे त्यारे तेने निरतिचार चारित्र होय छे, जेम श्रीपार्श्वनाथना साधुओ महावीर स्वामीना तीर्थमां आवी पंच महाव्रत धर्मनो स्वीकार करे. महाव्रतोनो मूलथी भंग करनार साधु पुनः महाव्रतनो स्वीकार करे ते सातिचार. (३) परिहारविशुद्धिचारित्र—जेमां तपो विशेषथी आत्मानी विशुद्धि थाय ते. तेना बे प्रकार छे—निर्विशमानक अने निर्विष्टकायिक. जेम के–नव साधुनो एक गच्छ होय छे, तेमां चार तप करनारा, चार वैयावृत्त्य (सेवा) करनारा अने एक वाचनाचार्य (गुरु) होय छे. चार तप करनारा साधुओ निर्विशमानक अने चार वैयावृत्त्य करनारा अने वाचनाचार्यने निर्विष्टकायिक कहेवाय छे. तेमां निर्विशमानकोनो जघन्य तप आ प्रमाणे छे—ग्रीष्म ऋतुमां जघन्य एक उपवास, मध्यम बे उपवास, अने उत्कृष्ट त्रण उपवास, शिशिर ऋतुमां जघन्य बे उपवास, मध्यम त्रण उपवास अने उत्कृष्ट चार उपवास, अने वर्षाऋतुमां जघन्य त्रण उपवास, मध्यम चार उपवास अने उत्कृष्ट पांच उपवास अने पारणे आयंबील करवानुं होय छे. कल्पस्थितो (चार वैयावृत्त्य करनारा अने एक वाचनाचार्य) प्रति दिवस आयंबील करे छे. आ प्रमाणे छ मास सुधी तप कर्या पछी तप करनारा वैयावृत्त्य करे छे अने वैयावृत्त्य करनारा छ मास पर्यन्त तप करे छे. त्यारपछी वाचनार्य पण ए प्रमाणे छ मास सुधी तप करे छे अने तेमांथी एक गुरु थाय छे, बाकीना सर्वे साधुओ तेनुं वैयावृत्त्य करे छे. ए प्रमाणे अढार मासनो कल्प पूरो थया पछी तेओ गच्छमां आवे छे के जिन कल्पनो स्वीकार करे छे. परिहारविशुद्धि चारित्रने ग्रहण करवानी इच्छावाळा तीर्थंकर के केवलज्ञानी पासे ते चारित्रने ग्रहण करी शके छे, अथवा जेणे तीर्थंकर के केवलज्ञानीनी पासे पूर्वे चारित्र ग्रहण कर्युं होय एवा साधुनी पासे पण ग्रहण करे छे. (४) सूक्ष्मसंपराय—ज्यां मात्र सूक्ष्म–स्वल्प, संपराय–कषाय, लोभांशनो उदय छे ते सूक्ष्मसंपराय. तेना बे प्रकार छे–विशुध्यमानक अने संक्लिश्यमानक. तेमां विशुध्यमानकचारित्र क्षपकश्रेणी अने उपशमश्रेणिए चडनारने होय छे, अने संक्लिश्यमानक उपशमश्रेणीथी पडनारने होय छे. (५) यथाख्यात–सर्वथा कषायोदयनो अभाव जे चारित्रने विषे होय ते यथाख्यात. तेना बे प्रकार छे. उपशामक–कषायोनो उपशम करनार अने क्षपक—कषायोनो क्षय करनार.—टीका.

६४. † चारित्राचारित्रलब्धि एटले देशविरतिलब्धि, अहीं मूलगुण, उत्तरगुण अने तेना भेदोनी विवक्षा कर्या शिवाय बीजा अप्रत्याख्यानावरणकषायना क्षयोपशमजन्य परिणाममात्रनी विवक्षा करेली होवाथी आ लब्धि एक प्रकारे कही छे—टीका.

६५. ‡ १ जेथी बाल–संयमरहित अज्ञानी–नी असंयम–अज्ञानपूर्वक कष्टानुष्ठानमां प्रवृत्ति थाय ते बालवीर्यलब्धि; ते चारित्रमोहना उदयथी अने वीर्यान्तरायना क्षयोपशमथी प्रकट थाय छे. २ जेमां संयमने विषे प्रवृत्ति थाय ते पंडितवीर्यलब्धि, अने जेथी देशविरतिमां प्रवृत्ति थाय ते बालपंडितवीर्यलब्धि.—टीका.

६८. [प्र०] तस्स अलद्धीया णं भंते! जीवा किं नाणी अन्नाणी? [उ०] गोयमा! नो नाणी, अन्नाणी। अत्थेगतिया दुअन्नाणी, तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए।

६९. [प्र०] आभिणिबोहियणाणलद्धीया णं भंते! जीवा किं नाणी अन्नाणी? [उ०] गोयमा! नाणी, नो अन्नाणी। अत्थेगतिया दुन्नाणी, चत्तारि नाणाइं भयणाए।

७०. [प्र०] तस्स अलद्धिया णं भंते! जीवा किं नाणी, अन्नाणी? [उ०] गोयमा! नाणी वि अन्नाणी वि। जे नाणी ते नियमा एगनाणी—केवलनाणी। जे अन्नाणी ते अत्थेगतिया दुअन्नाणी, तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए। एवं सुयनाणलद्धीया वि। तस्स अलद्धीया वि जहा आभिणिबोहियनाणस्स अलद्धीया।

७१. [प्र०] ओहिनाणलद्धीयाणं पुच्छा। [उ०] गोयमा! नाणी, नो अन्नाणी। अत्थेगतिया तिन्नाणी, अत्थेगतिया चउनाणी। जे तिन्नाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी। जे चउनाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी, मणपज्जवनाणी।

७२. [प्र०] तस्स अलद्धियाणं पुच्छा। [उ०] गोयमा! नाणी वि अन्नाणी वि। एवं ओहिनाणवज्जाइं चत्तारि नाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए।

७३. [प्र०] मणपज्जवनाणलद्धियाणं पुच्छा। [उ०] गोयमा! णाणी, णो अन्नाणी। अत्थेगतिया तिन्नाणी, अत्थेगतिया चउनाणी। जे तिन्नाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयणाणी, मणपज्जवनाणी। जे चउनाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी, मणपज्जवनाणी।

७४. [प्र०] तस्स अलद्धीयाणं पुच्छा। [उ०] गोयमा! णाणी वि, अन्नाणी वि; मणपज्जवनाणवज्जाइं चत्तारि णाणाइं, तिण्णि अन्नाणाइं भयणाए।

७५. [प्र०] केवलणाणलद्धिया णं भंते! जीवा किं नाणी अन्नाणी? [उ०] गोयमा! नाणी, नो अन्नाणी। नियमा एगणाणी—केवलणाणी।

ज्ञानलब्धिरहित.

६८. [प्र०] हे भगवन्! ज्ञानलब्धिरहित जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ०] हे गौतम! तेओ ज्ञानी नथी पण अज्ञानी छे. केटला एक बेअज्ञानवाळा छे, अने तेओने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

आभिनिबोधिकज्ञानलब्धि.

६९. [प्र०] हे भगवन्! आभिनिबोधिकज्ञानलब्धिवाळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ०] हे गौतम! तेओ ज्ञानी होय छे, पण अज्ञानी नथी. केटलाएक बेज्ञानवाळा छे, तेओने चार ज्ञान भजनाए होय छे. [एटले केटलाएक त्रणज्ञानवाळा अने केटलाएक चारज्ञानवाळा होय छे.]

आभिनिबोधिकलब्धिरहित.

७०. [प्र०] हे भगवन्! आभिनिबोधिकज्ञानलब्धिरहित जीवो ज्ञानी छे के अज्ञानी? [उ०] हे गौतम! तेओ ज्ञानी पण छे अने अज्ञानी पण छे. जेओ ज्ञानी छे तेओ अवश्य एक केवलज्ञानी छे; जेओ अज्ञानी छे तेमां केटलाक बेअज्ञानवाळा छे अने केटलाक त्रण अज्ञानवाळा छे; एटले तेओने भजनाए त्रण अज्ञान होय छे. ए प्रमाणे *श्रुतज्ञानलब्धिवाळा पण जाणवा. श्रुतज्ञानलब्धिरहित जीवो आभिनिबोधिकलब्धिरहित जीवोनी पेठे जाणवा.

अवधिज्ञानलब्धिक जीवो.

७१. [प्र०] हे भगवन्! अवधिज्ञानलब्धिवाळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ०] हे गौतम! तेओ ज्ञानी छे, पण अज्ञानी नथी. तेओमां केटलाक त्रणज्ञानवाळा छे अने केटलाक चारज्ञानवाळा छे; जेओ त्रणज्ञानवाळा छे तेओ आभिनिबोधिकज्ञान, श्रुतज्ञान अने अवधिज्ञानवाळा छे. जेओ चारज्ञानवाळा छे तेओ आभिनिबोधिकज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान अने मनःपर्यवज्ञानवाळा छे.

अवधिज्ञानलब्धिरहित.

७२. [प्र०] हे भगवन्! अवधिज्ञानलब्धिरहित जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ०] हे गौतम! तेओ ज्ञानी पण छे अने अज्ञानी पण छे, ए प्रमाणे तेओने अवधिज्ञान शिवाय चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

मनःपर्यवज्ञानलब्धिक.

७३. [प्र०] हे भगवन्! मनःपर्यवज्ञानलब्धिवाळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ०] हे गौतम! तेओ ज्ञानी छे, पण अज्ञानी नथी; तेमां केटलाक त्रणज्ञानवाळा छे अने केटलाक चारज्ञानवाळा छे. जे त्रण ज्ञानवाळा छे तेओ आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी अने मनःपर्यवज्ञानी छे, अने जेओ चार ज्ञानवाळा छे तेओ आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी अने मनःपर्यवज्ञानी छे.

मनःपर्यवज्ञानलब्धिरहित.

७४. [प्र०] मनःपर्यवज्ञानलब्धिरहित जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ०] हे गौतम! तेओ ज्ञानी पण छे अने अज्ञानी पण छे, तेओने मनःपर्यवज्ञान शिवाय चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए छे.

केवलज्ञानलब्धिक.

७५. [प्र०] हे भगवन्! केवलज्ञानलब्धिवाळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? [उ०] हे गौतम! तेओ ज्ञानी छे पण अज्ञानी नथी. तेओ अवश्य एककेवलज्ञानवाळा छे.

---

७०. * आभिनिबोधिकलब्धिवाळानी पेठे (सू० ६९) श्रुतज्ञानलब्धिवाळा जाणवा, एटले तेओ ज्ञानी ज होय छे, अने तेओने चार ज्ञान भजनाए होय छे. श्रुतज्ञानलब्धिरहित जीवो आभिनिबोधिकलब्धिरहित जीवोनी पेठे (सू० ७०) जाणवा, एटले तेओ ज्ञानी अथवा अज्ञानी होय छे, जो ज्ञानी होय तो तेने मात्र एक केवलज्ञान होय छे अने अज्ञानी होय तो त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. परन्तु ग–घ–ङ प्रतिमा "तस्स अलद्धिया जहा आभिणिबोहियनाणस्स लद्धिया" एवो पाठ छे, (श्रुतज्ञानलब्धिरहित जीवो आभिनिबोधिकलब्धिवाळानी पेठे जाणवा) पण ए पाठ अर्थनी दृष्टिथी संगत लागतो नथी. क प्रतिमां आ पाठ नथी, मात्र ख प्रतिमां 'अलद्धिया' ए पाठ छे, अने ते अर्थनी साथे संगत लागतो होवाथी ते पाठ कायम राखी तेने अनुसारे अनुवाद करेलो छे—संशोधक.

७६. [प्र०] तस्स अलद्धियाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नाणी वि, अन्नाणी वि । केवलनाणवज्जाइं चत्तारि णाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए ।

७७. [प्र०] अन्नाणलद्धियाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नो नाणी, अन्नाणी । तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए ।

७८. [प्र०] तस्स अलद्धियाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नाणी, नो अन्नाणी । पंच नाणाइं भयणाए, जहा अन्नाणस्स लद्धिया अलद्धिया य भणिया एवं मइअन्नाणस्स सुयअन्नाणस्स य लद्धिया अलद्धिया य भाणियव्वा । विभंगनाणलद्धीयाणं तिन्नि अन्नाणाइं नियमा । तस्स अलद्धीयाणं पंच नाणाइं भयणाए, दो अन्नाणाइं नियमा ।

७९. [प्र०] दंसणलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ? [उ०] गोयमा ! नाणी वि, अन्नाणी वि; पंच नाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए ।

८०. [प्र०] तस्स अलद्धीया णं भंते ! जीवा किं नाणी, अन्नाणी ? [उ०] गोयमा ! तस्स अलद्धिया नत्थि । सम्मा-[1]दंसणलद्धियाणं पंच नाणाइं भयणाए । तस्स अलद्धियाणं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए ।

८१. [प्र०] मिच्छादंसणलद्धीया णं भंते ! पुच्छा । [उ०] तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । तस्स अलद्धीयाणं पंच नाणाइं, तिन्नि य अन्नाणाइं भयणाए । सम्मामिच्छादंसणलद्धिया, अलद्धिया य जहा मिच्छादंसणलद्धीया[2] अलद्धीया तहेव भाणियव्वं ।

८२. [प्र०] चरित्तलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी, अन्नाणी ? [उ०] गोयमा ! पंच नाणाइं भयणाए । तस्स अलद्धीयाणं मणपज्जवनाणवज्जाइं चत्तारि नाणाइं, तिन्नि य अन्नाणाइं भयणाए ।

केवलज्ञानलब्धिरहित.

७६. [प्र०] केवलज्ञानलब्धिरहित जीवो ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी पण छे अने अज्ञानी पण छे. तेओने केवलज्ञान शिवाय चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

अज्ञानलब्धिक.

७७. [प्र०] हे भगवन् ! अज्ञानलब्धिवाळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी नथी, पण अज्ञानी छे. तेओने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

अज्ञानलब्धिरहित. मत्यज्ञान अने श्रुताज्ञान लब्धिरहित. विभंगज्ञानलब्धिक अने विभंगज्ञानलब्धिरहित.

७८. [प्र०] हे भगवन् ! अज्ञानलब्धिरहित जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी छे, पण अज्ञानी नथी; तेओने पांच ज्ञान भजनाए होय छे. जेम अज्ञानलब्धिवाळा अने अज्ञानलब्धिरहित जीवो कह्या तेम मतिअज्ञान अने श्रुतअज्ञानलब्धिवाळा अने ते लब्धिथी रहित जीवो कहेवा. [एटले अज्ञानलब्धिवाळानी पेठे (सू० ७७) मतिअज्ञान अने श्रुतअज्ञानलब्धिवाळा जीवो जाणवा, अने अज्ञानलब्धिरहित जीवोनी पेठे (सू० ७८) मत्यज्ञान अने श्रुताज्ञानलब्धिरहित जीवो जाणवा.] विभंगज्ञानलब्धिवाळा जीवोने अवश्य त्रण अज्ञान होय छे, अने विभंगज्ञानलब्धिरहित जीवोने भजनाए पांच ज्ञान के अवश्य बे अज्ञान होय छे.

दर्शनलब्धिक.

७९. [प्र०] हे भगवन् ! *दर्शनलब्धिवाळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी पण छे अने अज्ञानी पण छे. [जेओ ज्ञानी छे] तेओने पांच ज्ञान, अने [जेओ अज्ञानी छे तेओने] त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

दर्शनलब्धिरहित.

८०. [प्र०] हे भगवन् ! दर्शनलब्धिरहित जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! दर्शनलब्धिरहित† जीवो होता नथी. सम्यग्दर्शनलब्धिवाळा जीवोने भजनाए पांच ज्ञान होय छे, अने सम्यग्दर्शनलब्धिरहित जीवोने भजनाए त्रण अज्ञान होय छे.

मिथ्यादर्शनलब्धिक. मिश्रदृष्टिलब्धिक.

८१. [प्र०] हे भगवन् ! मिथ्यादर्शनलब्धिवाळा जीवो ज्ञानी होय के अज्ञानी ? [उ०] तेओने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. मिथ्यादर्शनलब्धिरहित (सम्यग्दृष्टि अने मिश्रदृष्टि) जीवोने पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. सम्यग्मिथ्यादर्शनलब्धिवाळा (मिश्रदृष्टि)जीवो मिथ्यादर्शनलब्धिवाळानी पेठे जाणवा. सम्यग्मिथ्यादर्शनलब्धिरहित जीवो जेम मिथ्यादर्शनलब्धिरहित जीवो कह्या ते प्रमाणे जाणवा.

चारित्रलब्धिक.

८२. [प्र०] हे भगवन् ! ‡चारित्रलब्धिवाळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने पांच ज्ञान भजनाए होय छे. चारित्रलब्धिरहित जीवोने मनःपर्यवज्ञान शिवाय चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

---

१ सम्मद्दं– घ । २ –लद्धी अलद्धी त–घ ।

७९. * दर्शन–श्रद्धान, तेमां जे ज्ञानपूर्वक होय ते सम्यक्श्रद्धान अने अज्ञानपूर्वक होय ते मिथ्याश्रद्धान. सम्यक्श्रद्धावाळा ते ज्ञानी अने मिथ्याश्रद्धावाळा ते अज्ञानी कहेवाय छे.

८०. † दर्शनलब्धिरहित जीवो नथी, केमके सर्व जीवने सम्यक् मिथ्या के मिश्र श्रद्धानमांथी एक श्रद्धान अवश्य होय छे.

८२. ‡ चारित्रलब्धिरहित जे ज्ञानी छे, तेओने मनःपर्यवज्ञान शिवाय चार ज्ञान भजनाए होय छे, केमके अविरतिपणामां आदिना बे के त्रण ज्ञान होय छे, अने सिद्धपणामां एक केवलज्ञान होय छे. सिद्ध नोचारित्री नोअचारित्री होवाथी चारित्रलब्धिरहित छे. जे अज्ञानी छे तेओने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

८३. [प्र०] सामाइअचरित्तलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी, अन्नाणी ? [उ०] गोयमा ! नाणी, केवलवज्जाइं चत्तारि नाणाइं भयणाए । तस्स अलद्धियाणं पंच नाणाइं, तिन्नि य अन्नाणाइं भयणाए । एवं जहा सामाइयचरित्तलद्धीया अलद्धीया य भणिया, एवं जाव अहक्खायचरित्तलद्धीया अलद्धीया य भाणियव्वा, नवरं अहक्खायचरित्तलद्धीयाणं पंच नाणाइं भयणाए ।

८४. [प्र०] चरित्ताचरित्तलद्धीया णं भंते ! जीवा किं नाणी, अन्नाणी ? [उ०] गोयमा ! नाणी, नो अन्नाणी । अत्थेगतिया दुन्नाणी, अत्थेगतिया तिन्नाणी । जे दुन्नाणी ते आभिणिबोहियनाणी य सुयनाणी य । जे तिन्नाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी । दाणलद्धियाणं पंच नाणाइं, तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए ।

८५. [प्र०] तस्स अलद्धीयाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नाणी, नो अन्नाणी । नियमा एगनाणी केवलनाणी । एवं जाव वीरियस्स लद्धी अलद्धी य भाणियव्वा । बालवीरियलद्धियाणं तिन्नि नाणाइं, तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । तस्स अलद्धियाणं पंच नाणाइं भयणाए । पंडियवीरियलद्धीयाणं पंच नाणाइं भयणाए । तस्स अलद्धीयाणं मणपज्जवनाणवज्जाइं णाणाइं, अन्नाणाणि तिन्नि य भयणाए । बालपंडियवीरियलद्धियाणं तिन्नि नाणाइं भयणाए । तस्स अलद्धीयाणं पंच नाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए ।

८३. [प्र०] हे भगवन् ! *सामायिकचारित्रलब्धिवाळा जीवो शुं ज्ञानी होय छे के अज्ञानी होय छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी होय छे, तेओने केवलज्ञान शिवाय चार ज्ञान भजनाए होय छे. सामायिकचारित्रलब्धिरहित जीवोने पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. ए प्रमाणे जेवी रीते सामायिकचारित्रलब्धिवाळा अने सामायिकचारित्रलब्धिरहित जीवो कह्या तेम यावत् यथाख्यातचारित्रलब्धिवाळा अने यथाख्यातचारित्रलब्धिरहित जीवो कहेवा. परन्तु यथाख्यातचारित्रलब्धिवाळाने पांच ज्ञान भजनाए जाणवा.

सामायिकचारित्रलब्धिक.

यथाख्यातचारित्रलब्धिक अने अलब्धिक.

८४. [प्र०] हे भगवन् ! चारित्राचारित्र (देशचारित्र) लब्धिवाळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी छे पण अज्ञानी नथी; तेमां केटलाक बेज्ञानवाळा अने केटलाक त्रणज्ञानवाळा छे. जेओ बेज्ञानवाळा छे तेओ आभिनिबोधिक ज्ञान अने श्रुतज्ञानवाळा छे, जेओ त्रणज्ञानवाळा छे तेओ आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी अने अवधिज्ञानी छे. †चारित्राचारित्र (देशचारित्र) लब्धिरहित जीवोने भजनाए पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान होय छे. ‡दानलब्धिवाळाने पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

चारित्राचारित्रलब्धिक.

चारित्राचारित्रलब्धिरहित. दानलब्धिक.

८५. [प्र०] ¶दानलब्धिरहित जीवो ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी छे, अने तेओ अवश्य एककेवलज्ञानवाळा छे. ए प्रमाणे यावत् वीर्यलब्धिवाळा अने वीर्यलब्धिरहित जीवो कहेवा. §बालवीर्यलब्धिवाळा जीवोने त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. बालवीर्यलब्धिरहित जीवोने भजनाए पांच ज्ञान होय छे. पंडितवीर्यलब्धिवाळा जीवोने पण भजनाए पांच ज्ञान होय छे. पंडितवीर्यलब्धिरहितने मनःपर्यवज्ञान शिवाय चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. बालपंडितवीर्यलब्धिवाळाने भजनाए त्रण ज्ञान होय छे, अने बालपंडितवीर्यलब्धिरहित जीवोने पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

दानलब्धिरहित. वीर्यलब्धिक अने वीर्यलब्धिरहित. बालवीर्यलब्धिक, पंडितवीर्यलब्धिक अने तदलब्धिक. बालपंडितवीर्यलब्धिक अने अलब्धिक.

---

१ एवं जहा जाव च ।

८३. * सामायिकचारित्रलब्धिवाळा जीवो ज्ञानी ज होय छे, तेथी तेओने केवलज्ञान शिवाय बाकीना चार ज्ञान भजनाए होय छे, केमके यथाख्यातचारित्रीने ज केवलज्ञान होय छे. सामायिकचारित्रनी लब्धिरहित जे ज्ञानी छे तेओने छेदोपस्थापनीयभावे अने सिद्धभावे पांच ज्ञान भजनाए छे, जे अज्ञानी छे तेओने त्रण अज्ञान भजनाए छे. परन्तु यथाख्यातचारित्रवाळाने छद्मस्थपणे अने केवलीपणे पांच ज्ञान भजनाए होय छे.

८४. † चारित्राचारित्रलब्धिरहित जीवो देशविरति श्रावकथी अन्य जाणवा, तेमां जे ज्ञानी छे तेने पांच ज्ञान भजनाए होय छे, अने जे अज्ञानी छे तेओने त्रण अज्ञान भजनाए छे.

‡ दानान्तरायना क्षय के क्षयोपशमथी प्रकट थयेल दानलब्धिवाळा ज्ञानी अने अज्ञानी होय छे. तेमां जेओ ज्ञानी छे तेओने पांच ज्ञान भजनाए छे, केमके केवलज्ञानी पण दानलब्धियुक्त छे. जेओ अज्ञानी छे तेओने त्रण अज्ञान भजनाए छे.

८५. ¶ दानलब्धिरहित सिद्धो छे, तेओने दानान्तरायना क्षय थया छतां देवा लायक वस्तुना अभावथी, पात्रना अभावथी अने दानना प्रयोजनना अभावथी दानलब्धिरहित कह्या छे, तेओ अवश्य एककेवलज्ञानसहित छे. ए प्रमाणे लाभ, भोग, उपभोग अने वीर्यलब्धिवाळा अने तेथी इतर जीवो जाणवा. अहीं पूर्वे कह्या प्रमाणे लब्धिरहित सिद्धो जाणवा. यद्यपि दानान्तरायनो क्षय होवाथी केवलज्ञानीने दानादि लब्धिओ प्रकट थाय छे अने तेथी तेमनी पण दानादिकमां प्रवृत्ति थवी जोइए, तो पण तेओ कृतकृत्य थयेला होवाथी अने प्रयोजनना अभावथी तेओनी दानादिमां प्रवृत्ति थती नथी.—टीका.

§ बालवीर्यलब्धिवाळा असंयत (अविरति) कहेवाय छे, तेमां ज्ञानीने त्रण ज्ञान अने अज्ञानीने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. बालवीर्यलब्धिरहित जीवो सर्वविरति, देशविरति अने सिद्धो जाणवा, तेओने पांच ज्ञान भजनाए होय छे. पंडितवीर्यलब्धिरहित असंयत, देशसंयत अने सिद्धो छे. तेमां असंयतने आदिना त्रण ज्ञान के त्रण अज्ञान भजनाए होय छे, देशसंयतने त्रण ज्ञान भजनाए होय छे, अने सिद्धने एक केवलज्ञान होय छे. मनःपर्यवज्ञान मात्र पंडितवीर्यलब्धिवाळानेज होय छे. सिद्धो पंडितवीर्यलब्धिरहित छे, केमके अहिंसादि धर्मव्यापारमां सर्वथा प्रवृत्ति करवी ते पंडितवीर्य छे अने ते तेओने नथी.—टीका.

८६. [प्र०] इंदियलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी, अन्नाणी ? [उ०] गोयमा ! चत्तारि णाणाइं, तिन्नि य अन्नाणाइं भयणाए ।

८७. [प्र०] तस्स अलद्धीयाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नाणी, नो अन्नाणी । नियमा एगनाणी-केवलणाणी । सोइं-दियलद्धिया णं जहा इंदियलद्धिया ।

८८. [प्र०] तस्स अलद्धीयाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नाणी वि अन्नाणी वि । जे नाणी ते अत्थेगतिया दुन्नाणी, अत्थेगतिया एगनाणी । जे दुन्नाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी । जे एगनाणी ते केवलनाणी । जे अन्नाणी ते नियमा दुअन्नाणी, तं जहा-मइअन्नाणी य सुयअन्नाणी य । चक्खिंदिय-घाणिंदियाणं लद्धी अलद्धी य जहेव सोइंदियस्स । जिब्भिं-दियलद्धियाणं चत्तारि णाणाइं, तिन्नि य अन्नाणाणि भयणाए ।

८९. [प्र०] तस्स अलद्धीयाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा नाणी वि, अन्नाणी वि । जे नाणी ते नियमा एगनाणी-केवल-णाणी । जे अन्नाणी ते नियमा दुअन्नाणी, तं जहा-मइअन्नाणी य सुयअन्नाणी य । फासिंदियलद्धीया णं अलद्धीया णं जहा इंदियलद्धिया य अलद्धीया य ।

९०. [प्र०] सागारोवउत्ता णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ? [उ०] पंच नाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए ।

९१. [प्र०] आभिणिबोहियनाणसागारोवउत्ता णं भंते० ? [उ०] चत्तारि णाणाइं भयणाए । एवं सुयनाणसागारोवउत्ता वि । ओहिणाणसागारोवउत्ता जहा ओहिनाणलद्धीया । मणपज्जवनाणसागारोवउत्ता जहा मणपज्जवनाणलद्धीया । केवलना-

इन्द्रियलब्धिक.

८६. [प्र०] हे भगवन् ! इन्द्रियलब्धिवाळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! *तेओने भजनाए चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान होय छे.

इन्द्रियलब्धिरहित.

८७. [प्र०] इन्द्रियलब्धिरहित जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी छे, पण अज्ञानी नथी. ते अवश्य एक केवळज्ञानवाळा छे. श्रोत्रेन्द्रियलब्धिवाळा इन्द्रियलब्धिवाळानी पेठे (सू० ८६.) जाणवा.

श्रोत्रेन्द्रियलब्धिरहित.

८८. [प्र०] श्रोत्रेन्द्रियलब्धिरहित जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी पण छे, अने अज्ञानी पण छे. जेओ ज्ञानी छे तेओमां केटलाक बेज्ञानवाळा अने केटलाक एकज्ञानवाळा छे. जेओ बेज्ञानवाळा छे तेओ †आभिनिबोधिकज्ञानी अने श्रुतज्ञानी छे; अने जेओ एकज्ञानी छे तेओ एक-केवलज्ञानी छे, जेओ अज्ञानी छे तेओ अवश्य बेअज्ञानवाळा छे. जेम के मतिअज्ञानी अने श्रुतअज्ञानी. नेत्रेन्द्रिय अने घ्राणेन्द्रियलब्धिवाळाने श्रोत्रेन्द्रियलब्धिवाळानी पेठे (सू० ८७.) चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान जाणवा; नेत्रेन्द्रिय अने घ्राणेन्द्रियलब्धिरहित जीवोने श्रोत्रेन्द्रियलब्धिरहित जीवोनी पेठे बे ज्ञान, बे अज्ञान अने एक केवलज्ञान होय छे. जिह्वेन्द्रियलब्धिवाळाने चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

चक्षुरिन्द्रियने घ्राणेन्द्रियलब्धिवाळा अने लब्धिरहित. जिह्वेन्द्रियलब्धिक.

जिह्वेन्द्रियलब्धिरहित.

८९. [प्र०] ‡जिह्वेन्द्रियलब्धिरहित जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी पण छे, अने अज्ञानी पण छे. जेओ ज्ञानी छे तेओ अवश्य एक केवलज्ञानी छे, जेओ अज्ञानी छे तेओ अवश्य बे अज्ञानवाळा छे; ते आ प्रमाणे- मतिअज्ञानी अने श्रुतअज्ञानी. स्पर्शेन्द्रियलब्धिवाळाने इन्द्रियलब्धिवाळानी पेठे (सू० ८६.) भजनाए चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान जाणवा. स्पर्शेन्द्रिय लब्धिरहित जीवोने इन्द्रियलब्धिरहित जीवोनी पेठे (सू० ८७.) एक केवलज्ञान होय छे.

स्पर्शेन्द्रियलब्धिक.

साकार उपयोगवाळा.

९०. [प्र०] हे भगवन् ! ¶साकारउपयोगवाळा जीवो शुं ज्ञानी होय के अज्ञानी होय ? [उ०] हे गौतम ! तेओने पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए (विकल्पे) होय छे.

आभिनिबोधिक अने श्रुतज्ञानोपयोग.

९१. [प्र०] हे भगवन् ! आभिनिबोधिकसाकारोपयोगवाळा जीवो शुं ज्ञानी होय के अज्ञानी होय ? [उ०] हे गौतम ! तेओने भजनाए चार ज्ञान होय छे. ए प्रमाणे श्रुतज्ञानसाकारउपयोगवाळा जीवो पण जाणवा. अवधिज्ञानसाकारउपयोगवाळा जीवोने अवधिज्ञान-

---

१ -णिंदियलद्धीया णं अलद्धीया ण य-घ । २ -इंदियलद्धिया अलद्धिया क ।

८६. * इन्द्रियलब्धिवाळा जीवो जेओ ज्ञानी छे, तेओने चार ज्ञान होय छे, पण केवलज्ञान होतुं नथी; केमके केवलज्ञानीने इन्द्रियनो उपयोग नथी. जेओ अज्ञानी छे तेओने त्रण अज्ञान भजनाए छे.—टीका.

८८. † श्रोत्रेन्द्रियलब्धिरहित जीवोमां जेओ ज्ञानी छे ते आदिना बेज्ञानवाळा छे, अने ते अपर्याप्तावस्थामां सास्वादनसम्यग्दृष्टि विकलेन्द्रिय जीवो छे, एकज्ञानी ते केवलज्ञानवाळा छे, तेओ इन्द्रियोपयोगरहित होवाथी श्रोत्रेन्द्रियलब्धिरहित छे. जे अज्ञानी छे ते आदिना बेअज्ञानवाळा छे.

८९. ‡ जिह्वेन्द्रियलब्धिरहित केवलज्ञानी अने एकेन्द्रिय जीवो छे, तेथी जेओ ज्ञानी छे ते एक केवळज्ञानवाळा छे, अने जेओ अज्ञानी छे तेओ अवश्य बेअज्ञानवाळा छे, केमके एकेन्द्रिय जीवोमां सास्वादन नहि होवाथी ज्ञाननो अभाव छे, तेम विभंगनो पण अभाव छे.

९०. ¶ आकार-विशेष, ते सहित जे बोध ते साकार बोध एटले विशेषग्राहक बोध, तेना उपयोगसहित ते साकारोपयुक्त कहेवाय छे. ते ज्ञानी अने अज्ञानी बन्ने होय छे. तेमां ज्ञानीने पांच ज्ञान भजनाए होय छे, एटले कदाचित् बे, त्रण, चार अने एक पण ज्ञान होय छे. आ बधा ज्ञान लब्धिने आश्रयी जाणवा. उपयोगनी अपेक्षाए तो एक काळे एकज ज्ञान के एक अज्ञान होय छे. अज्ञानीने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.—टीका.

णसागारोवउत्ता जहा केवलनाणलद्धीया । मइअन्नाणसागारोवउत्ताणं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । एवं सुयअन्नाणसागारोवउत्ता वि । विभंगणाणसागारोवउत्ताणं तिन्नि अन्नाणाइं नियमा ।

९२. [प्र०] अणागारोवउत्ता णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ? [उ०] पंच नाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए । एवं चक्खुदंसण–अचक्खुदंसणअणागारोवउत्ता वि; नवरं चत्तारि णाणाइं तिन्नि अन्नाणाइं भयणाए ।

९३. [प्र०] ओहिदंसणअणागारोवउत्ताणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नाणी वि अन्नाणी वि । जे नाणी ते अत्थेगतिया तिन्नाणी अत्थेगतिया चउनाणी । जे तिन्नाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहीनाणी । जे चउनाणी ते आभिणिबोहियनाणी, जाव मणपज्जवनाणी । जे अन्नाणी ते नियमा तिअन्नाणी, तं जहा–मइअन्नाणी, सुयअन्नाणी, विभंगनाणी । केवलदंसणअणागारोवउत्ता जहा केवलणाणलद्धीया ।

९४. [प्र०] सजोगी णं भंते ! जीवा किं नाणी० ? [उ०] जहा सकाइया । एवं मणजोगी, वइजोगी, कायजोगी वि । अजोगी जहा सिद्धा ।

९५. [प्र०] सलेस्सा णं भंते !० ? [उ०] जहा सकाइया ।

९६. [प्र०] कण्हलेस्सा णं भंते ! ० ? [उ०] जहा सइंदिया । एवं जाव पम्हलेस्सा, सुक्कलेस्सा जहा सलेस्सा । अलेस्सा जहा सिद्धा ।

अवधिज्ञान अने मनःपर्यवज्ञान साकार उपयोग. मतिज्ञानादि साकारोपयोग.

लब्धिवाळानी पेठे (सू. ७१.) [त्रण के चार ज्ञान] जाणवा. मनःपर्यवज्ञानसाकारउपयोगवाळा जीवोने मनःपर्यवज्ञानलब्धिवाळानी पेठे (सू. ७३.) मति, श्रुत अने मनःपर्यव ए त्रण ज्ञान, के अवधिसहित चार ज्ञान जाणवा. केवलज्ञानसाकारउपयोगवाळा जीवो केवलज्ञानलब्धिवाळानी पेठे (सू. ७५.) एक केवलज्ञान सहित जाणवा. मतिअज्ञानसाकारोपयोगवाळा जीवोने भजनाए त्रण अज्ञान होय छे. ए प्रमाणे श्रुतअज्ञानसाकारोपयोगवाळा जीवो पण जाणवा. विभंगज्ञानसाकारोपयुक्त जीवोने अवश्य त्रण अज्ञान होय छे.

अनाकारोपयोगवाळा जीवो. चक्षुदर्शन अने अचक्षुदर्शनअनाकारोपयोग.

९२. [प्र०] हे भगवन् ! *अनाकारोपयोगवाळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे. ए प्रमाणे चक्षुदर्शन अने अचक्षुदर्शनअनाकारोपयोगवाळा जीवो पण जाणवा. परन्तु तेओने चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

अवधिदर्शन अनाकारोपयोग.

९३. [प्र०] †अवधिदर्शनअनाकारोपयोगवाळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानी पण छे अने अज्ञानी पण छे, जेओ ज्ञानी छे तेओमां केटलाक त्रण ज्ञानवाळा अने केटलाक चार ज्ञानवाळा छे. जेओ त्रण ज्ञानवाळा छे तेओ आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी अने अवधिज्ञानी छे; जेओ चार ज्ञानवाळा छे तेओ आभिनिबोधिकज्ञानी, यावत् मनःपर्यायज्ञानी छे. जेओ अज्ञानी छे तेओ अवश्य त्रणअज्ञानवाळा छे. ते आ प्रमाणे–मतिअज्ञानी, श्रुतअज्ञानी, अने विभंगज्ञानी. केवलदर्शनअनाकारोपयोगवाळा जीवो केवलज्ञानलब्धिवाळा पेठे (सू. ७५.) एक केवलज्ञानयुक्त जाणवा.

सयोगी जीवो.

९४. [प्र०] हे भगवन् ! ‡सयोगी जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] तेओ सकायिकनी पेठे (सू. ३८.) जाणवा. ए प्रमाणे मनयोगी, वचनयोगी अने काययोगी पण जाणवा. अयोगी–योगरहित जीवो सिद्धोनी पेठे (सू. ३०.) जाणवा.

सलेश्य जीवो.

९५. [प्र०] हे भगवन् ! ¶लेश्यावाळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ सकायिकनी पेठे (सू. ३८.) जाणवा.

कृष्णादिलेश्यावाळा.

९६. [प्र०] §कृष्णलेश्यावाळा जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] तेओ सेन्द्रिय जीवोनी पेठे (सू. ३५.) जाणवा. ए प्रमाणे यावत् पद्मलेश्यावाळा जीवो पण जाणवा. शुक्ललेश्यावाळा सलेश्यनी पेठे (सू. ९५.) जाणवा अने अलेश्य–लेश्याविनाना–जीवो सिद्धोनी पेठे (सू. ३०.) जाणवा.

---

९२. * जे ज्ञानने विषे आकार–जाति, गुण, क्रियादि स्वरूप विशेष–प्रतिभासित न थाय ते अनाकारोपयोग एटले दर्शन, अनाकारोपयोगवाळा ज्ञानी अने अज्ञानी बे प्रकारना छे. ज्ञानीने लब्धिनी अपेक्षाए पांच ज्ञान भजनाए होय छे अने अज्ञानीने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

९३. † अवधिदर्शनअनाकारउपयोगवाळा ज्ञानी अने अज्ञानी बन्ने छे, कारण के दर्शननो विषय सामान्य होवाथी अने सामान्य अभिलरूप होवाथी ज्ञानी अने अज्ञानीना दर्शनमां भेद होतो नथी.

९४. ‡ योगद्वारमां सयोगीने सकायिकनी पेठे भजनाए पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान जाणवा. ए प्रमाणे मनयोगसहित, वचनयोगसहित अने काययोगसहित जीवो पण जाणवा, केमके केवलीने पण मनोयोगादि होय छे. सयोगी मिथ्यादृष्टिने त्रण अज्ञान होय छे अने अयोगीने एक केवलज्ञान होय छे.—टीका.

९५. ¶ लेश्याद्वारमां जेम सकायिकने भजनाए पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञान कह्या तेम लेश्यावाळाने पण जाणवा, केमके केवलीने पण शुक्ललेश्या होवाथी ते लेश्यासहित छे. योगान्तर्गत कृष्णादि द्रव्यना संबन्धथी आत्मानो परिणाम ते लेश्या. विशेष माटे जुओ–(प्रज्ञापनाटीका. पद १७ प. ३३०–१.)

९६. § कृष्णलेश्या इन्द्रियोपयोगनी पेठे चारज्ञानवाळा अने त्रण अज्ञानवाळाने होय छे.

९७. [प्र०] सकसाई णं भंते ! ० ? [उ०] जहा सइंदिया । एवं जाव लोभकसाई ।

९८. [प्र०] अकसाई णं भंते ! किं णाणी० ? [उ०] पंच नाणाइं भयणाए ।

९९. [प्र०] सवेदगा णं भंते ! ० ? [उ०] जहा सइंदिया । एवं इत्थिवेदगा वि, एवं पुरिसवेदगा वि, एवं नपुंसगवेदगा वि । अवेदगा जहा अकसाई ।

१००. [प्र०] आहारगा णं भंते ! जीवा० ? [उ०] जहा सकसाई, नवरं केवलनाणं पि ।

१०१. [प्र०] अणाहारगा णं भंते ! जीवा किं नाणी, अन्नाणी ? [उ०] मणपज्जवनाणवज्जाइं नाणाइं, अन्नाणाणि य तिन्नि भयणाए ।

१०२. [प्र०] आभिणिबोहियनाणस्स णं भंते ! केवतिए विसए पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पन्नत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ । दव्वओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वदव्वाइं जाणइ पासति, खेत्तओ णं आभिणिबोहियनाणी आएसेणं सव्वखेत्तं जाणइ पासति, एवं कालओ वि, एवं भावओ वि ।

१०३. [प्र०] सुयनाणस्स णं भंते ! केवतिए विसए पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पन्नत्ते; तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ । दव्वओ णं सुयनाणी उवउत्ते सव्वदव्वाइं जाणति पासति, एवं खेत्तओ वि, कालओ वि । भावओ णं सुयनाणी उवउत्ते सव्वभावे जाणति, पासति ।

सकषायी जीवो.

९७. [प्र०] हे भगवन् ! सकषायी ! जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] सेंद्रिय जीवोनी पेठे (सू. ३५.) जाणवा; ए प्रमाणे यावत् लोभकषायी जीवो जाणवा.

अकषायी जीवो.

९८. [प्र०] हे भगवन् अकषायी ! जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] तेओने पांच ज्ञान भजनाए होय छे.

वेदसहित अने वेदरहित जीवो.

९९. [प्र०] हे भगवन् ! *वेदसहित जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] तेओ सइन्द्रिय जीवोनी पेठे (सू. ३५.) जाणवा. ए प्रमाणे स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी अने नपुंसकवेदी जीवो जाणवा, तथा वेदरहित जीवो अकषायी जीवोनी पेठे (सू. ९८.) जाणवा.

आहारक जीवो.

१००. [प्र०] हे भगवन् ! आहारकजीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] तेओ †सकषायी जीवोनी पेठे (सू. ९७.) जाणवा, परन्तु विशेष ए छे के तेओने केवलज्ञान (अधिक) होय छे.

अनाहारक.

१०१. [प्र०] हे भगवन् ! ‡अनाहारक जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने मनःपर्ययज्ञान सिवायना चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान भजनाए होय छे.

आभिनिबोधिक ज्ञाननो विषय.

१०२. [प्र०] हे भगवन् ! ¶आभिनिबोधिक ज्ञाननो विषय केटलो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! आभिनिबोधिक ज्ञाननो विषय संक्षेपथी चार प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—द्रव्यथी, क्षेत्रथी, कालथी अने भावथी. द्रव्यथी आभिनिबोधिक ज्ञानी आदेशवडे (सामान्यरूपे) सर्व द्रव्योने जाणे अने जुए, क्षेत्रथी आभिनिबोधिकज्ञानी आदेशवडे सर्व क्षेत्रने जाणे अने जुए; ए प्रमाणे कालथी अने भावथी पण जाणवुं.

श्रुतज्ञाननो विषय.

१०३. [प्र०] हे भगवन् ! श्रुतज्ञाननो विषय केटलो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! ते संक्षेपथी चार प्रकारनो कह्यो छे. ते आ प्रमाणे—द्रव्यथी, क्षेत्रथी, कालथी अने भावथी. द्रव्यथी §उपयुक्त (उपयोग सहित) श्रुतज्ञानी सर्व द्रव्योने जाणे अने जुए छे. ए प्रमाणे क्षेत्रथी अने कालथी पण जाणवुं, भावथी उपयुक्त श्रुतज्ञानी सर्व भावोने जाणे छे अने जुए छे.

---

९९. * वेदद्वारमां सवेदकने सेन्द्रियनी पेठे भजनाए केवलज्ञान शिवाय चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान होय छे, अवेदक-वेदरहित जीवोने अकषायीने पेठे भजनाए पांच ज्ञान होय छे, केमके अनिवृत्तिबादरादिगुणस्थानके अवेदक होय छे, त्यां छद्मस्थने चार ज्ञान भजनाए होय छे, अने केवलज्ञानीने पांचमुं केवलज्ञान होय छे.—टीका.

१००. † आहारकद्वारमां जेम सकषायी चारज्ञानवाळा अने त्रणअज्ञानवाळा कह्या, तेम आहारको पण ए प्रमाणे जाणवा, परंतु आहारकोने केवलज्ञान पण होय छे, केमके केवलज्ञानी आहारक छे.—टीका.

१०१. ‡ विग्रहगति, केवलिसमुद्घात अने अयोगिपणामां जीवो अनाहारक होय छे अने बाकीनी अवस्थामां आहारक होय छे. मनःपर्यवज्ञान आहारकने ज होय छे, अने अनाहारकने आदिना त्रण ज्ञान अने त्रण अज्ञान विग्रहगतिमां, अने केवलज्ञानीने एक केवलज्ञान केवलिसमुद्घात, अने अयोगिअवस्थामां होय छे; ए माटे अनाहारक जीवोने मनःपर्यवज्ञान शिवाय चार ज्ञान अने त्रण अज्ञान कह्या छे.

१०२. ¶ ज्ञानविषयद्वारमां आभिनिबोधिक ज्ञाननो विषय द्रव्य—धर्मास्तिकायादि द्रव्य—ने आश्रयी, क्षेत्र—द्रव्योना आधारभूत आकाश—ने आश्रयी, काल—द्रव्यना पर्यायनी अवस्थिति—ने आश्रयी, अने भाव—औदयिकादि भाव अथवा द्रव्यना पर्यायो—ने आश्रयी चार प्रकारनो कह्यो छे. तेमां द्रव्यने आश्रयी जे आभिनिबोधिक ज्ञान थाय छे, ते धर्मास्तिकायादि द्रव्योने आदेश—सामान्यविशेषरूप प्रकार—थी, अथवा ओघथकी द्रव्यमात्ररूपे जाणे छे, परन्तु तेमां रहेला सर्वविशेषनी अपेक्षाए जाणतो नथी, अथवा आदेश—श्रुतज्ञान जनित संस्कारवडे अपाय अने धारणानी अपेक्षाए जाणे छे, केमके अपाय ने धारणा ज्ञानस्वरूप छे, अने अवग्रह ने ईहानी अपेक्षाए जुए छे, कारणके अवग्रह ने ईहा दर्शनरूप छे. श्रुतज्ञानजन्य संस्कारवडे लोकालोकरूप सर्व क्षेत्रने जाणे छे. ए प्रमाणे कालथी सर्व कालने अने भावथी औदयिकादि पांच भावोने जाणे छे.—टीका

१०३. § उपयोगसहित श्रुतज्ञानी—संपूर्णदशपूर्वधरादि श्रुतकेवली सर्व धर्मास्तिकायादि द्रव्यने विशेषथी जाणे छे, अने श्रुतानुसारी मानस अचक्षुदर्शनवडे सर्व अभिलाप्य द्रव्यने जुए छे. ए प्रमाणे क्षेत्रादिने विषे पण जाणी लेवुं. भावथी उपयुक्त श्रुतज्ञानी औदयिकादि सर्व भावोने, अथवा सर्व अभिलाप्य भावोने जाणे छे, यद्यपि अभिलाप्य भावोनो अनन्तमो भाग ज श्रुतप्रतिपादित छे, तो पण प्रसंगानुप्रसंगथी सर्व अभिलाप्य भाव श्रुतज्ञाननो विषय छे, माटे तेनी अपेक्षाए 'सर्व भावोने जाणे छे' एम कह्युं छे.—टीका.

१०४. [प्र०] ओहिनाणस्स णं भंते ! केवतिए विसए पन्नत्ते ? गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पन्नत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ । दव्वओ णं ओहिनाणी रूविदव्वाइं जाणइ पासइ, जहा नंदीए, जाव भावओ ।

१०५. [प्र०] मणपज्जवनाणस्स णं भंते ! केवतिए विसए पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पन्नत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ । दव्वओ णं उज्जुमती अणंते अणंतपदेसिए, जहा नंदीए, जाव भावओ ।

१०६. [प्र०] केवलनाणस्स णं भंते ! केवतिए विसए पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पन्नत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ । दव्वओ णं केवलनाणी सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ । एवं जाव भावओ ।

१०७. [प्र०] मइअन्नाणस्स णं भंते ! केवतिए विसए पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पन्नत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ । दव्वओ णं मइअन्नाणी मइअन्नाणपरिगयाइं दव्वाइं जाणइ पासइ, एवं जाव भावओ मइअन्नाणी मइअन्नाणपरिगए भावे जाणइ पासइ ।

१०८. [प्र०] सुयअन्नाणस्स णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पन्नत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ । दव्वओ णं सुयअन्नाणी सुयअन्नाणपरिगयाइं दव्वाइं आघवेति, पन्नवेइ, परूवेइ । एवं खेत्तओ, कालओ । भावओ णं सुयअन्नाणी सुयअन्नाणपरिगए भावे आघवेति तं चेव ।

अवधिज्ञाननो विषय.

१०४. [प्र०] हे भगवन् ! अवधिज्ञाननो विषय केटलो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! संक्षेपथी चार प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—द्रव्यथी, क्षेत्रथी, कालथी अने भावथी; द्रव्यथी अवधिज्ञानी रूपिद्रव्योने जाणे छे अने देखे छे—इत्यादि जेम *नंदीसूत्रमां कह्युं छे तेम यावत् भाव सुधी जाणवुं.

मनःपर्यवज्ञाननो विषय.

१०५. [प्र०] हे भगवन् ! मनःपर्यवज्ञाननो विषय केटलो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! संक्षेपथी चार प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—द्रव्यथी, क्षेत्रथी, कालथी अने भावथी. द्रव्यथी †ऋजुमतिमनःपर्यवज्ञानी [मनपणे परिणत] अनंतप्रदेशिक अनन्त स्कंधोने जाणे अने देखे—इत्यादि जेम नंदीसूत्रमां कह्युं छे तेम अहीं जाणवुं, यावत् भावथी जाणे छे.

केवलज्ञाननो विषय.

१०६. [प्र०] हे भगवन् ! केवलज्ञाननो विषय केटलो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! ते संक्षेपथी चार प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—द्रव्यथी, क्षेत्रथी, कालथी अने भावथी. द्रव्यथी केवलज्ञानी सर्व द्रव्योने जाणे छे अने जुए छे, ए प्रमाणे यावद् भावथी [केवलज्ञानी सर्व भावोने जाणे छे अने जुए छे.]

मतिअज्ञाननो विषय.

१०७. [प्र०] हे भगवन् ! मतिअज्ञाननो विषय केटलो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! ते चार प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—द्रव्यथी, क्षेत्रथी, कालथी अने भावथी. द्रव्यथी मतिअज्ञानी मतिअज्ञानना विषयने प्राप्त द्रव्योने जाणे छे अने जुए छे; ए प्रमाणे यावद् भावथी मतिअज्ञानी मतिअज्ञानना विषयभूत भावोने जाणे छे अने जुए छे.

श्रुतअज्ञाननो विषय.

१०८. [प्र०] हे भगवन् ! श्रुतअज्ञाननो विषय केटलो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! ते संक्षेपथी चार प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—द्रव्यथी, क्षेत्रथी, कालथी अने भावथी. द्रव्यथी श्रुतअज्ञानी श्रुतअज्ञानना विषयभूत द्रव्योने कहे छे, जणावे छे अने प्ररूपे छे; ए प्रमाणे क्षेत्रथी अने कालथी जाणवुं. भावथी श्रुतअज्ञानी श्रुतअज्ञानना विषयभूत भावोने कहे छे, जणावे छे अने प्ररूपे छे.

---

१०४. * द्रव्यथी अवधिज्ञानी जघन्यथी तैजस अने भाषाद्रव्योनी अंतरे रहेला एवा सूक्ष्म अनन्त पुद्गलद्रव्योने जाणे, उत्कृष्टथी बादर अने सूक्ष्म सर्व द्रव्योने जाणे, अने अवधिदर्शनथी देखे. क्षेत्रथी अवधिज्ञानी जघन्य अंगुलना असंख्यातमा भागने अने उत्कृष्टथी शक्तिनी अपेक्षाए अलोकने विषे असंख्य लोकप्रमाण खंडने जाणे अने जुए, कालथी अवधिज्ञानी जघन्य आवलिकाना असंख्यातमा भागने अने उत्कृष्टथी असंख्यात उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी अतीत अनागत कालने जाणे अने जुए—एटले तेटला कालमां रहेला रूपी द्रव्यने जाणे. यावत् भावथी अवधिज्ञानी जघन्य अनन्त भावोने जाणे अने जुए, पण दरेक द्रव्य दीठ अनन्त भावोने न जाणे. उत्कृष्टथी पण अनन्त भावोने जाणे अने जुए. ते भावो सर्व पर्यायनो अनन्तमो भाग जाणवो. जुओ—नंदी. प. ९७–१ पं. १०.

१०५. † ऋजु—सामान्यग्राही मति ते ऋजुमतिमनःपर्यव, जेम 'एणे घट चिन्तव्यो' एवुं सामान्य केटलाक पर्यायविशिष्ट मनोद्रव्यनुं ज्ञान. द्रव्यथी ऋजुमतिमनःपर्यायज्ञानी अढी द्वीपमां रहेला संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोए मनरूपे परिणमावेला मनोवर्गणाना अनन्त स्कंधोने साक्षात् जाणे, परन्तु तेणे चिन्तवेल घटादिरूप अर्थने [आवा आकारवाळो मनोद्रव्यनो परिणाम आवा प्रकारना चिन्तन सिवाय न घटे' एवा] अनुमानथी जाणे; माटे 'देखे' एम कह्युं. विपुल—अनेकविशेषग्राही मति—ज्ञान, अर्थात् पुष्कळविशेषविशिष्ट मनोद्रव्यनुं ज्ञान ते विपुलमति मनःपर्यवज्ञान; जेम 'एणे द्रव्यथी माटीनो, क्षेत्रथी पाटलिपुत्रनो, कालथी वसंतकाळनो, अने भावथी पीतवर्णनो घट चिन्तव्यो.' क्षेत्रथी ऋजुमति जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्टथी तिर्यक् मनुष्यलोकमां रहेला संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्ताना मनोगत भावोने जाणे देखे, अने विपुलमति अढी आंगुल अधिक ते क्षेत्रमां रहेला मनोगत भावने जाणे देखे, कालथी ऋजुमति जघन्य पल्योपमना असंख्यातमा भागने अने उत्कृष्टपणे पल्योपमना असंख्यातमा भाग जेटला अतीत अनागत काळने जाणे अने जुए, तेने ज विपुलमति वधारे स्पष्टपणे जाणे. भावथी ऋजुमति सर्व भावोना अनन्तमा भागे रहेला अनन्त भावने जाणे अने जुए. तेने विपुलमति विशुद्ध अने स्पष्टपणे जाणे अने जुए. जुओ—नंदी० प. १०७–२. पं. ११.

१०९. [प्र०] विभंगणाणस्स णं भंते! केवतिए विसए पण्णत्ते? [उ०] गोयमा! से समासओ चउव्विहे पन्नत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ। दव्वओ णं विभंगनाणी विभंगनाणपरिगयाइं दव्वाइं जाणइ पासइ; एवं जाव भावओ णं विभंगनाणी विभंगनाणपरिगए भावे जाणइ पासइ।

११०. [प्र०] णाणी णं भंते! 'णाणि'त्ति कालओ केवच्चिरं होइ? [उ०] गोयमा! नाणी दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—साइए वा अपज्जवसिए, साइए वा सपज्जवसिए। तत्थ णं जे से साइए सपज्जवसिए से जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं सातिरेगाइं।

१११. [प्र०] आभिणिबोहियणाणी णं भंते! आभिणिबोहिय० एवं नाणी, आभिणिबोहियनाणी, जाव केवलनाणी, अन्नाणी, मइअन्नाणी, सुयअन्नाणी, विभंगनाणी—एएसिं दसण्हवि वि संचिट्ठणा जहा कायट्ठिईए। अंतरं सव्वं जहा जीवाभिगमे। अप्पाबहुगाणि तिन्नि जहा बहुवत्तव्वयाए।

विभंगज्ञाननो विषय.

१०९. [प्र०] हे भगवन्! विभंगज्ञाननो विषय केटलो कह्यो छे? [उ०] हे गौतम! ते संक्षेपथी चार प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—द्रव्यथी, क्षेत्रथी, कालथी अने भावथी; द्रव्यथी विभंगज्ञानी विभंगज्ञानना विषयभूत द्रव्योने जाणे छे अने जुए छे, ए प्रमाणे यावद् भावथी विभंगज्ञानी विभंगज्ञानना विषयभूत भावोने जाणे छे अने जुए छे.

ज्ञानी ज्ञानीपणे क्यांसुधी रहे?

११०. [प्र०] हे भगवन्! ज्ञानी ज्ञानीपणे कालथी क्यांसुधी रहे? [उ०] हे गौतम! ज्ञानी बे प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे—*सादि सपर्यवसित अने सादिअपर्यवसित. तेमां जे ज्ञानी सादिसपर्यवसित छे ते जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त सुधी अने उत्कृष्टथी कांइक अधिक छासठ सागरोपम सुधी ज्ञानीपणे रहे छे.

आभिनिबोधिकादि दशनो स्थितिकाल.

१११. [प्र०] हे भगवन्! आभिनिबोधिकज्ञानी, आभिनिबोधिकज्ञानीपणे कालथी केटला काल सुधी रहे? [उ०] ए प्रमाणे ज्ञानी, आभिनिबोधिकज्ञानी, यावत् केवलज्ञानी, अज्ञानी, मतिअज्ञानी, श्रुतअज्ञानी अने विभंगज्ञानी—ए दशनो ज्ञानी पणे स्थितिकाल प्रज्ञापनासूत्रना अढारमां †कायस्थितिपदमां कह्या प्रमाणे जाणवो; अने ‡जीवाभिगम सूत्रमां कह्या प्रमाणे ए दशनुं परस्पर अन्तर जाणवुं. तेमज प्रज्ञापना सूत्रनां ¶बहुवक्तव्यता पदमां कह्या प्रमाणे त्रणे ज्ञानी, अज्ञानी अने उभयना अल्पबहुत्वो जाणवा.

---

१ अहण्ह वि छ।

११०. * कालद्वारमां सादि अपर्यवसित (जेनी आदि छे पण अन्त नथी ते) केवलज्ञानी, अने सादि सपर्यवसित (जेनी आदि अने अन्त बन्ने छे ते) मत्यादिज्ञानवाळो. तेमां केवलज्ञाननो सादिअपर्यवसित काल छे, अने बीजा मत्यादिज्ञाननो सादिसपर्यवसित काल छे. तेमां आदिना बे ज्ञाननी अपेक्षाए जघन्य अन्तर्मुहूर्त काल कह्यो छे, अन्यथा अवधि अने मनःपर्यवनो जघन्य काल एक समय छे, अने उत्कृष्ट कंइक अधिक छासठ सागरोपम काल आदिना त्रण ज्ञानने आश्रयी कह्यो छे.—टीका.

१११. † ज्ञानी, आभिनिबोधिकज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, मनःपर्यवज्ञानी, केवलज्ञानी, अज्ञानी, मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी अने विभंगज्ञानीनो स्थितिकाल 'पन्नवणासूत्र'ना अढारमां कायस्थिति पदमां कह्या प्रमाणे जाणवो. तेमां ज्ञानीनो अवस्थितिकाल पूर्वे (सू. ११०.) कहेलो छे, छतां अहीं पण कह्यो ते एक प्रकरणना संबंधने लीधे कह्यो छे. आभिनिबोधिकज्ञान अने श्रुतज्ञाननो काल जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त, अने उत्कृष्टथी कंइक अधिक छासठ सागरोपम छे. अवधिज्ञाननो उत्कृष्ट स्थितिकाल पण ए प्रकारे छे, पण जघन्यथी एक समय छे. जेमके, ज्यारे कोई विभंगज्ञानी सम्यग्दर्शन पामे त्यारे तेना प्रथम समयेज विभंगज्ञान अवधिज्ञानरूपे परिणत थाय छे, त्यार पछी तरतज बीजे समये पडे त्यारे मात्र एक समय अवधिज्ञान रहे छे. मनःपर्यवज्ञानीनो अवस्थितिकाळ जघन्यथी एक समय अने उत्कृष्टथी कंइक न्यून पूर्वकोटी वर्ष होय छे; जेम अप्रमत्त गुणस्थानके वर्तमान कोइ संयतने मनःपर्यवज्ञान उत्पन्न थाय, अने तरतज बीजे समये नष्ट थाय त्यारे तेने जघन्य एक समय थाय छे अने उत्कृष्टथी कंइक न्यून पूर्वकोटी वर्ष छे; पूर्वकोटी वर्षना आयुषवाळा कोई मनुष्यने चारित्र अंगीकार कर्या पछी तरतज मनःपर्यवज्ञान उत्पन्न थाय अने यावज्जीव रहे त्यारे तेनो स्थितिकाल उत्कृष्टथी कंइक न्यून पूर्वकोटी वर्ष थाय छे. केवलज्ञाननो स्थितिकाल सादि अनन्त छे. अज्ञान, मत्यज्ञान अने श्रुतअज्ञाननो स्थितिकाल त्रण प्रकारनो छे–१ अनादि अनन्त अभव्योने आश्रयी, २ अनादि सान्त भव्योने आश्रयी, अने ३ सादि सान्त सम्यग्दर्शनथी पडेलाने आश्रयी. तेमां सादि सान्त काल जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त होय छे, केमके कोइ जीव सम्यग्दर्शनथी पडे अने पुनः अन्तर्मुहूर्त पछी सम्यग्दर्शन पामे. उत्कृष्टथी अनन्त काल जाणवो. केमके कोइ जीव सम्यक्त्वथी पडी अनंतकाले पुनः सम्यक्त्व पामे. विभंगज्ञाननो स्थितिकाल जघन्यथी एक समय छे, केमके ते उत्पन्न थया पछी बीजे समये तेनो नाश थाय, अने उत्कृष्टथी कंइक न्यून पूर्वकोटी अधिक तेत्रीश सागरोपम छे. जेम कोइ मनुष्यमां कंइक न्यून पूर्वकोटि वर्ष विभंगज्ञानिपणे रहीने सातमी नरक पृथिवीमां उत्पन्न थाय. जुओ–प्रज्ञा० पद. १८. प. ३८९–१ पं. ३.

‡ अन्तरद्वारने विषे पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञाननुं अन्तर जेम जीवाभिगमसूत्रमां कह्युं छे ते प्रमाणे जाणवुं. आभिनिबोधिक ज्ञाननुं परस्पर अन्तर जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्टथी कंइक न्यून अर्ध पुद्गलपरावर्त काल छे. ए प्रमाणे श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी अने मनःपर्यवज्ञानीने पण जाणवुं. केवलज्ञानीने परस्पर अन्तर नथी. मतिअज्ञानी अने श्रुतअज्ञानीनुं अन्तर जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्टथी कंइक अधिक छासठ सागरोपम होय छे. विभंगज्ञानीनुं जघन्यथी अन्तर अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्टथी (वनस्पतिना काल जेटलो) अनन्तकाल छे. जुओ—(जीवाभि० प. ४५९–१ पं. ५.)

¶ पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञाननुं अल्पबहुत्व–सौथी थोडा जीवो मनःपर्यवज्ञानी छे, तेथी अवधिज्ञानी असंख्यात गुणा छे, तेथी आभिनिबोधिक ज्ञानी अने श्रुतज्ञानी बन्ने विशेषाधिक छे अने परस्पर तुल्य छे, तेथी केवलज्ञानी अनन्तगुण छे. सौथी थोडा विभंगज्ञानी छे, तेथी मतिअज्ञानी अने श्रुतअज्ञानी अनन्तगुण छे अने परस्पर सरखा छे. तेमां प्रथम ज्ञानीना अल्पबहुत्वमां मनःपर्यवज्ञानी सौथी थोडा छे, कारण के संयतने ज मनःपर्यवज्ञान होय छे. अवधिज्ञानी नारे

११२. [प्र०] केवतिया णं भंते ! आभिणिबोहियणाणपज्जवा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! अणंता आभिणिबोहियनाणपज्जवा पन्नत्ता ।

११३. [प्र०] केवतिया णं भंते ! सुयनाणपज्जवा पण्णत्ता ? [उ०] एवं चेव, एवं जाव केवलणाणस्स । एवं मइअन्नाणस्स सुयअन्नाणस्स य ।

११४. [प्र०] केवतिया णं भंते ! विभंगनाणपज्जवा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! अणंता विभंगनाणपज्जवा पण्णत्ता ।

११५. [प्र०] एएसिणं भंते ! आभिणिबोहियणाणपज्जवाणं, सुयनाणपज्जवाणं ओहिनाणपज्जवाणं मणपज्जवनाणपज्जवाणं केवलनाणपज्जवाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सव्वत्थोवा मणपज्जवनाणपज्जवा, ओहिनाणपज्जवा अणंतगुणा, सुयनाणपज्जवा अणंतगुणा, आभिणिबोहियनाणपज्जवा अणंतगुणा, केवलनाणपज्जवा अणंतगुणा ।

आभिनिबोधिकज्ञानना पर्यायो.

११२. [प्र०] हे भगवन् ! आभिनिबोधिकज्ञानना केटला *पर्यायो कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! आभिनिबोधिकज्ञानना अनन्त पर्यायो कह्या छे.

श्रुतज्ञानादिना पर्यायो.

११३. [प्र०] हे भगवन् ! †श्रुतज्ञानना केटला पर्यायो कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! पूर्वप्रमाणे [अनन्त पर्यायो] जाणवा. ए प्रमाणे यावत् केवलज्ञानना पर्यायो जाणवा, तेम मतिअज्ञान अने श्रुतअज्ञानना पण पर्यायो जाणवा.

विभंगज्ञानना पर्यायो.

११४. [प्र०] हे भगवन् ! विभंगज्ञानना केटला पर्यायो कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! विभंगज्ञानना अनन्त पर्यायो कह्या छे.

पांच ज्ञानना पर्यायोनुं अल्पबहुत्व.

११५. [प्र०] हे भगवन् ! ए (पूर्वे कहेला) आभिनिबोधिकज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान अने केवलज्ञानना पर्यायोमां कोना पर्यायो कोनाथी यावद् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! ‡मनःपर्यवज्ञानना पर्यायो सौथी थोडा छे, तेथी अवधिज्ञानना पर्यायो अनंतगुण छे, तेथी श्रुतज्ञानना पर्यायो अनन्त छे, तेथी अनंतगुण आभिनिबोधिकज्ञानना पर्यायो छे, अने तेथी अनंतगुण केवलज्ञानना पर्यायो छे.

गतिमां होय छे माटे तेथी असंख्यात गुणा छे. तेथी आभिनिबोधिकज्ञानी अने श्रुतज्ञानी विशेषाधिक होवानुं कारण अवध्यादिज्ञानरहित छतां पण केटलाक पंचेन्द्रियजीवो अने केटलाक विकलेन्द्रियो पण (सास्वादनसम्यग्दर्शननो संभव होवाथी) मति–श्रुतज्ञानी होय छे. अज्ञानिना अल्पबहुत्वमां पंचेन्द्रियोनेज विभंगज्ञान संभवे छे माटे ते सौथी थोडा छे, मत्यज्ञानी अने श्रुताज्ञानी एकेन्द्रियो पण होय छे; माटे तेथी तेओ अनन्तगुण छे अने परस्पर तुल्य छे. ज्ञानी अने अज्ञानिना मिश्र अल्पबहुत्वमां सौथी थोडा मनःपर्यवज्ञानी छे, तेथी असंख्यात गुणा अवधिज्ञानी, तेथी आभिनिबोधिकज्ञानी अने श्रुतज्ञानी विशेषाधिक छे अने परस्पर तुल्य छे. तेथी विभंगज्ञानी असंख्यात गुणा छे, केमके सम्यग्दृष्टि देव अने नारक करतां मिथ्यादृष्टि असंख्यात गुणा छे. तेथी केवलज्ञानी अनन्तगुणा छे, केमके एकेन्द्रिय सिवाय बाकीना सर्व जीवोथी सिद्धो अनन्तगुणा छे, तेथी मत्यज्ञानी अने श्रुताज्ञानी अनन्तगुण छे अने परस्पर तुल्य छे, केमके साधारण वनस्पतिजीवो मतिअज्ञानी अने श्रुतअज्ञानी होय छे अने तेओ सिद्ध थकी अनन्तगुण छे. जुओ—प्रज्ञा० पद. ३ प. १३६–२ पं. १०.

११२. * पर्याय एटले भिन्न भिन्न अवस्थाओ के भेदो. तेना बे प्रकार छे—स्वपर्याय अने परपर्याय. क्षयोपशमनी विचित्रताथी मतिज्ञानना अवग्रहादि अनन्त भेदो थाय छे ते स्वपर्याय कहेवाय छे, अथवा मतिज्ञानना विषयभूत ज्ञेय पदार्थो अनन्त छे, अने ज्ञेयना भेदथी ज्ञानना पण अनन्त भेदो थाय छे, माटे ते रीते पण तेना अनन्त पर्यायो छे. अथवा केवलज्ञान वडे मतिज्ञानना अंश करता अनन्ता अंश थाय ते मतिज्ञानना अनन्त पर्यायो कहेवाय छे. मतिज्ञान सिवाय बीजा पदार्थोना पर्यायो छे ते तेना परपर्यायो छे अने ते स्वपर्यायथी अनन्तगुण छे. अहिं कोइ शंका करे के जो ते परपर्यायो छे तो ते मतिज्ञानना छे एम केम कहेवाय, अने जो ते मतिज्ञानना छे तो परपर्यायो केम कहेवाय ? तेनो उत्तर आ प्रमाणे छे—परपदार्थोना पर्यायोनो मतिज्ञानने विषे संबन्ध नथी माटे ते परपर्याय कहेवाय छे, परन्तु मतिज्ञानना स्वपर्यायोने जाणवामां, अने तेनाथी जूदा पाडवामां प्रतियोगि–संबन्धी तरीके तेनो उपयोग छे माटे ते मतिज्ञानना परपर्यायो कहेवाय छे.—टीका.

११३. † श्रुतज्ञानना पण स्वपर्यायो अने परपर्यायो अनन्त छे. तेमां स्वपर्यायो जे श्रुतज्ञानना अक्षरश्रुतादि भेदो छे ते जाणवा, ते अनन्त छे, केमके तेनो क्षयोपशम विचित्र होवाथी अने विषय अनन्त होवाथी श्रुतानुसारी बोधना अनन्त प्रकार थाय छे. अथवा केवलज्ञान वडे श्रुतज्ञानना अनन्त अंशो थाय ते तेना स्वपर्याय कहेवाय छे, तेथी भिन्न पदार्थोना विशेष धर्मो ते श्रुतज्ञानना परपर्यायो छे. अवधिज्ञानना अनन्त स्वपर्यायो छे, कारणके तेना भवप्रत्यय अने क्षायोपशमिक भेदथी, नारक तिर्यंच मनुष्य अने देवरूप स्वामीना भेदथी, असंख्य क्षेत्र अने कालना भेदथी, अनन्त द्रव्य पर्यायना भेदथी, अने तेना अनन्त अंशो थता होवाथी तेना अनन्त भेदो थाय छे. ए प्रमाणे मनःपर्यवज्ञानना अने केवलज्ञानना विषयना अनन्त भेदथी तेम अनन्त अंशोनी कल्पनाथी अनन्त पर्यायो थाय छे.—टीका.

११५. ‡ अहीं स्वपर्यायनी अपेक्षाए अल्पबहुत्व समजवुं, केमके स्व अने परपर्यायनी अपेक्षाए सर्व ज्ञानोना सरखा पर्यायो छे. तेमां सौथी थोडा मनःपर्यवज्ञानना पर्यायो छे, केमके तेनो विषय मात्र मन छे. तेथी अवधिज्ञानना पर्यायो अनन्तगुण छे, केमके मनःपर्यवज्ञाननी अपेक्षाए अवधिज्ञाननो विषय द्रव्य अने पर्यायोथी अनन्तगुण छे. तेथी श्रुतज्ञानना पर्यायो अनन्तगुण छे, केमके तेनो विषय रूपी अने अरूपी द्रव्यो होवाथी तेनाथी अनन्तगुण छे. तेथी आभिनिबोधिकज्ञानना पर्यायो अनन्तगुण छे, कारणके तेनो विषय अभिलाप्य अने अनभिलाप्य पदार्थो होवाथी तेथी अनन्तगुण छे. तेथी केवलज्ञानना पर्यायो अनन्तगुण छे, केमके तेनो विषय सर्व द्रव्यो अने सर्व पर्यायो होवाथी तेथी अनन्तगुण छे. ए प्रमाणे अज्ञानोना अल्पबहुत्वनुं कारण जाणी लेवुं.—टीका.

११६. [प्र०] एएसि णं भंते! मइअन्नाणपज्जवाणं, सुयअन्नाणपज्जवाणं विभंगनाणपज्जवाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा? [उ०] गोयमा! सव्वत्थोवा विभंगनाणपज्जवा, सुयअन्नाणपज्जवा अणंतगुणा, मइअन्नाणपज्जवा अणंतगुणा।

११७. [प्र०] एएसि णं भंते! आभिणिबोहियणाणपज्जवाणं, जाव केवलनाणपज्जवाणं, मइअन्नाणपज्जवाणं, सुयअन्नाणपज्जवाणं, विभंगनाणपज्जवाणं कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा? [उ०] गोयमा! सव्वत्थोवा मणपज्जवनाणपज्जवा, विभंगनाणपज्जवा अणंतगुणा, ओहिणाणपज्जवा अणंतगुणा, सुयअन्नाणपज्जवा अणंतगुणा, सुयनाणपज्जवा विसेसाहिया, मइअन्नाणपज्जवा अणंतगुणा, आभिणिबोहियनाणपज्जवा विसेसाहिया, केवलनाणपज्जवा अणंतगुणा। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति।

अट्ठमसए बीओ उद्देसो समत्तो।

मत्यादि त्रण अज्ञानोना पर्यायोनुं अल्पबहुत्व.

११६. [प्र०] हे भगवन्! ए मतिअज्ञान श्रुतअज्ञान अने विभंगज्ञानना पर्यायोमां कोना पर्यायो कोना पर्यायोथी यावद् विशेषाधिक छे? [उ०] हे गौतम! सर्वथी थोडा विभंगज्ञानना पर्यायो छे, तेथी अनंतगुण श्रुतअज्ञानना पर्यायो छे, अने तेथी अनंतगुण मतिअज्ञानना पर्यायो छे.

पांच ज्ञान अने त्रण अज्ञानना पर्यायोनुं अल्पबहुत्व.

११७. [प्र०] हे भगवन्! ए आभिनिबोधिकज्ञानना यावत् केवलज्ञानना तथा मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, अने विभंगज्ञानना पर्यायोमां कोना पर्यायो कोना पर्यायोथी यावद् विशेषाधिक छे? [उ०] हे गौतम! *सौथी थोडा मनःपर्यायज्ञानना पर्यायो छे, तेथी अनंतगुण विभंगज्ञानना पर्यायो छे, तेथी अनंतगुण अवधिज्ञानना पर्यायो छे, तेथी अनंतगुण श्रुतअज्ञानना पर्यायो छे, तेना करतां श्रुतज्ञानना पर्यायो विशेषाधिक छे, तेथी मतिअज्ञानना पर्यायो अनंतगुण छे, तेथी मतिज्ञानना पर्यायो विशेषाधिक छे अने तेना करतां केवलज्ञानना पर्यायो अनन्तगुण छे. हे भगवन्! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन्! ते ए प्रमाणे छे. [एम कही भगवान् गौतम यावद् विहरे छे.]

अष्टमशते द्वितीय उद्देशक समाप्त.

---

११७. * ज्ञान अने अज्ञानना मिश्रसूत्रने विषे सौथी थोडा मनःपर्यवज्ञानना पर्यायो छे, तेथी विभंगज्ञानना पर्यायो अनन्तगुण छे, केमके उपरना ग्रैवेयकथी आरंभी सातमी नरक पृथिवीमां अने तिर्यक् असंख्यात द्वीप समुद्रमां रहेला केटलाक रूपी द्रव्यो अने तेना केटलाएक पर्यायो विभंगज्ञाननो विषय छे, अने ते मनःपर्यवज्ञानना विषयनी अपेक्षाए अनन्तगुण छे. विभंगज्ञानथी अवधिज्ञानना पर्यायो अनन्तगुण छे, केमके अवधिज्ञाननो विषय सकल रूपिद्रव्यो अने प्रत्येक द्रव्यना असंख्यात पर्यायो छे, अने ते विभंगज्ञाननी अपेक्षाए अनन्तगुण छे. तेथी श्रुताज्ञानना पर्यायो अनन्त गुण छे, केमके श्रुताज्ञाननो विषय श्रुतज्ञाननी पेठे सामान्यादेशे करीने सर्व मूर्तामूर्त द्रव्यो अने सर्व पर्यायो होवाथी अवधिज्ञाननी अपेक्षाए अनन्त गुण छे. तेथी श्रुतज्ञानना पर्यायो विशेषाधिक छे, केमके श्रुतअज्ञानने अगोचर केटलाक पर्यायने श्रुतज्ञान जाणे छे. तेथी मत्यज्ञानना पर्यायो अनन्तगुण छे, केमके श्रुतज्ञान अभिलाप्यवस्तुविषयक होय छे, अने मत्यज्ञान तेनाथी अनन्तगुण अनभिलाप्यवस्तुविषयक पण होय छे, तेथी मतिज्ञानना पर्यायो विशेषाधिक छे. तेथी केवलज्ञानना पर्यायो अनन्तगुण छे, केमके ते सर्व कालमां रहेला सर्व द्रव्यो अने सर्व पर्यायोने जाणे छे.—टीका.

ततिओ उद्देसो ।

१. [प्र०] कइविहा णं भंते ! रुक्खा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! तिविहा रुक्खा पण्णत्ता, तं जहा–संखेज्जजीविया, असंखेज्जजीविया, अणंतजीविया ।

२. [प्र०] से किं तं संखेज्जजीविया ? [उ०] संखेज्जजीविया अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा–ताले, तमाले, तक्कलि, तेतलि–जहा पन्नवणाए जाव नालिएरी । जे यावन्ने तहप्पगारा । सेत्तं संखेज्जजीविया ।

३. [प्र०] से किं तं असंखेज्जजीविया ? [उ०] असंखेज्जजीविया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–एगट्ठिया य बहुबीयगा य ।

४. [प्र०] से किं तं एगट्ठिया ? [उ०] एगट्ठिया अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा निंब-ब-जंबु०–एवं जहा पन्नवणापए जाव फला बहुबीयगा । सेत्तं बहुबीयगा । सेत्तं असंखेज्जजीविया ।

५. [प्र०] से किं तं अणंतजीविया ? [उ०] अणंतजीविया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा–आलुए, मूलए, सिंगबेरे–एवं जहा सत्तमसए जाव सिउंढी, मुसुंढी, जेयावन्ने तहप्पगारा । सेत्तं अणंतजीविया ।

तृतीय उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! वृक्षो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! वृक्षो त्रण प्रकारना कह्या छे; ते आ प्रमाणे–संख्यातजीववाळा, असंख्यातजीववाळा अने अनंतजीववाळा.

वृक्षना प्रकार.

२. [प्र०] हे भगवन् ! संख्यातजीववाळा वृक्षो केटला प्रकारे छे ? [उ०] हे गौतम ! संख्यातजीववाळा वृक्षो अनेक प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे–ताड, तमाल, तक्कलि, तेतलि–इत्यादि *'प्रज्ञापना' सूत्रमां कह्या प्रमाणे यावत् नालियेरी पर्यन्त जाणवा. ए सिवाय तेवा प्रकारना बीजा वृक्षो पण संख्यातजीववाळा जाणवा. ए प्रमाणे संख्यातजीवी वृक्षो कह्या.

संख्यातजीवी.

३. [प्र०] हे भगवन् ! असंख्यातजीववाळा वृक्षो केटला प्रकारना छे ? [उ०] हे गौतम ! असंख्यातजीववाळा वृक्षो बे प्रकारना कह्या छे; ते आ प्रमाणे–एकबीजवाळा अने बहुबीजवाळा.

असंख्यातजीवी.

४. [प्र०] हे भगवन् ! एकबीजवाळा वृक्षो केटला प्रकारे छे ? [उ०] हे गौतम ! एकबीजवाळा वृक्षो अनेक प्रकारना कह्या छे; ते आ प्रमाणे–'निंब, आम्र, जांबु'–इत्यादि †प्रज्ञापनासूत्रना 'प्रज्ञापना' नामे प्रथमपदमां कह्या प्रमाणे यावत् बहुबीजवाळा फलो सुधी जाणवां. ए प्रमाणे असंख्यातजीवी वृक्षो कह्या.

एकबीजवाळा.

५. [प्र०] हे भगवन् ! अनंतजीववाळा वृक्षो केटला प्रकारे छे ? [उ०] हे गौतम ! अनन्तजीववाळा वृक्षो अनेकप्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे–'आलु (बटाटा), शृंगबेर (आदु)'–इत्यादि ‡सप्तम शतकमां कह्या प्रमाणे यावत् सिउंढी मुसुंढी सुधी जाणवा. जे बीजा पण तेवा प्रकारना वृक्षो छे तेओ पण (अनन्तजीववाळा) जाणवा. ए प्रमाणे अनन्तजीववाळा वृक्षो क[illegible].

अनन्तजीवी.

---

१ मूलए ग–क । २ जाव सीओ कण्हे सि–ग, जाव सीउण्हे घ, जाव सीउण्हे मु–क ।

१. * प्रज्ञा० पद. १. प. ३३–१. पं. ६. । २. † प्रज्ञा० पद. १. प. ३१–१ पं. ५. । ५. ‡ भग० गु. खं. श. ७. उ. ३. सू. ५.

६. [प्र०] अह भंते! कुम्मे, कुम्मावलिया, गोहा, गोहावलिया, गोणा, गोणावलिया, मणुस्से, मणुस्सावलिया, महिसे, महिसावलिया–एएसिणं भंते! दुहा वा तिहा वा संखेज्जहा वा छिन्नाणं जे [1]अंतरा ते वि णं तेहिं जीवपएसेहिं फुडा? [उ०] हंता फुडा।

७. [प्र०] पुरिसे णं भंते! अंतरे हत्थेण वा, पादेण वा, अंगुलियाए वा, सलागाए वा, कट्ठेण वा, [2]किलिंचेण वा, आमुसमाणे वा, संमुसमाणे वा, आलिहमाणे वा, विलिहमाणे वा, अन्नयरेण वा तिक्खेणं सत्थजाएणं आछिंदमाणे वा, विछिंदमाणे वा, अगणिकाएणं वा समोडहमाणे तेसिं जीवपएसाणं किंचि आबाहं वा विबाहं वा उप्पाएइ, छविच्छेदं वा करेइ? [उ०] णो तिणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं [3]कमइ।

८. [प्र०] कइ णं भंते! पुढवीओ पण्णत्ताओ? [उ०] गोयमा! अट्ठ पुढवीओ पन्नत्ताओ, तं जहा–रयणप्पभा, जाव अहे सत्तमा, ईसीपब्भारा।

९. [प्र०] इमा णं भंते! रयणप्पभापुढवी किं चरिमा अचरिमा? [उ०] चरिमपदं निरवसेसं भाणियव्वं। जाव वेमाणिया णं भंते! फासचरिमेणं किं चरिमा, अचरिमा? गोयमा! चरिमा वि अचरिमा वि। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति।

अट्ठमसए ततिओ उद्देसो समत्तो।

जीवप्रदेशोथी स्पृष्ट.

६. [प्र०] हे भगवन्! काचवो, काचबानी श्रेणि, गोधा (घो), गोधानी श्रेणी, गाय, गायनी श्रेणि, मनुष्य, मनुष्यनी श्रेणि, महिष (पाडो), महिषनी श्रेणि–ए बधाना बे, त्रण के संख्याता खंड कर्या होय तो तेओनी वच्चेनो भाग शुं जीवप्रदेशथी स्पृष्ट–स्पर्शायेलो होय? [उ०] हे गौतम! हा, स्पृष्ट होय.

जीवप्रदेशोने शस्त्रादिकथी पीडा थाय?

७. [प्र०] हे भगवन्! कोइ पुरुष [ते काचबादिना खंडोना] अन्तराल–वच्चेना भागने हाथथी, पगथी, आंगळीथी, सळीथी, काष्ठथी अने नाना लाकडाथी स्पर्श करतो, विशेष स्पर्श करतो, थोडुं विशेष आकर्षण करतो, अथवा कोइ पण तीक्ष्ण शस्त्रना समूहथी छेदतो, अधिक छेदतो, अग्नि वडे बाळतो, ते जीवप्रदेशोने थोडी के अधिक पीडा उत्पन्न करे, या तेना कोइ अवयवोनो छेद करे? [उ०] हे गौतम! ए अर्थ यथार्थ नथी, केमके जीव प्रदेशोने शस्त्र असर करतुं नथी.

पृथ्वीओ.

८. [प्र०] हे भगवन्! केटली पृथ्वीओ कही छे? [उ०] हे गौतम! आठ पृथिवीओ कही छे, ते आ प्रमाणे–रत्नप्रभा, यावत् अधःसप्तमपृथिवी अने ईषत् प्राग्भारा (सिद्धशिला).

९. [प्र०] हे भगवन्! आ रत्नप्रभा पृथिवी शुं *चरम–प्रान्तवर्ती–छे के अचरम–मध्यवर्ती–छे? इत्यादि. [उ०] अहीं (प्रज्ञापना सूत्रनुं) 'चरम' पद सघळुं कहेवुं. यावत्–[प्र०] *'हे भगवन्! वैमानिको स्पर्श चरम वडे शुं चरम छे के अचरम छे? [उ०] हे गौतम!* तेओ चरम पण छे अने अचरम पण छे.' हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे. [एम कही भगवान् गौतम यावत् विचरे छे.]

अष्टमशते तृतीय उद्देशक समाप्त.

---

1 अंतरा ङ, (जं अंतरं) ते अंतरे घ। 2 कलिंचेण घ। 3 संकमइ ग-घ।

९. * रत्नप्रभा पृथिवी संबन्धे एकवचनान्त अने बहुवचनान्त चरम अने अचरमना चार प्रश्नो, तेमज चरमान्तप्रदेश अने अचरमान्तप्रदेशना बे प्रश्नो मळी छ प्रश्नो छे, भगवान् तेनो उत्तर आपे छे–हे गौतम! रत्नप्रभा चरम पण नथी, तेम अचरम पण नथी–इत्यादि. चरम एटले पर्यन्तवर्ती अने अचरम एटले मध्यवर्ती. चरमपणुं अने अचरमपणुं अन्यवस्तु सापेक्ष छे ते अन्य वस्तुनुं अहीं कथन नहि होवाथी रत्नप्रभा पृथिवी चरम के अचरम कही शकाय नहि, एज कारणथी बहुवचनान्त चरम, अचरम, चरमान्तप्रदेश अने अचरमान्तप्रदेश पण कही शकाय नहि. परन्तु जो रत्नप्रभा पृथिवी असंख्यात प्रदेशावगाढ होवाथी तेना अनेक अवयवनी विवक्षा करीए तो ते अचरमरूप, तेम बहुवचनान्त चरमरूप, चरमान्तप्रदेशरूप अने अचरमान्तप्रदेशरूप कही शकाय, कारण के रत्नप्रभाना प्रान्त भागमां अवस्थित खंडो अनेकपणे विवक्षित करीए त्यारे बहुवचनान्त 'चरम' कही शकाय अने मध्यभागवर्ती खंड एकपणे विवक्षित करीए त्यारे एकवचनान्त 'अचरम' कहेवाय. ए प्रमाणे प्रदेशदृष्टिथी चरमान्तप्रदेश अने अचरमान्तप्रदेशरूप पण कही शकाय.—विशेष माटे जुओ–प्रज्ञा० चरमपद० १०. प. १५४-१.

चउत्थो उद्देसो ।

१. [प्र०] रायगिहे जाव एवं वयासी--कति णं भंते ! किरियाओ पण्णत्ताओ ? [उ०] गोयमा ! पंच किरियाओ पन्नत्ताओ, तंजहा--काइया, अहिगरणिया; एवं किरियापदं निरवसेसं भाणियव्वं, जाव मायावत्तियाओ किरियाओ विसेसाहियाओ। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

अट्ठमसए चउत्थो उद्देसो समत्तो ।

चतुर्थ उद्देशक.

पांच क्रियाओ.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां यावत् [गौतम] ए प्रमाणे बोल्या के हे भगवन् ! केटली क्रियाओ कही छे ? [उ०] हे गौतम ! पांच क्रियाओ कही छे, ते आ प्रमाणे--कायिकी, अधिकरणिकी--ए प्रमाणे अहीं [प्रज्ञापना सूत्रनुं बावीशमुं] सघळुं *क्रियापद यावत् 'मायाप्रत्ययिक क्रियाओ विशेषाधिक छे' त्यां सुधी कहेवुं. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे [एम कही भगवान् गौतम यावत् विहरे छे]

अष्टमशते चतुर्थ उद्देशक समाप्त.

---

१. * कायिकी, अधिकरणिकी, प्राद्वेषिकी, पारितापनिकी अने प्राणातिपातिकी--ए पांच क्रियाओ छे. तेमां कायिकी क्रिया बे प्रकारे छे--अनुपरतकायिकी अने दुष्प्रयुक्तकायिकी. हिंसादि सावद्य योगथी देशथी के सर्वदा अनिवृत्त थयेलाने अनुपरतकायिकी क्रिया होय छे. आ क्रिया मात्र अविरतिने होय छे. कायादीना दुष्प्रयोग वडे थयेली जे क्रिया ते दुष्प्रयुक्तकायिकी कहेवाय छे. आ क्रिया प्रमत्त साधुने पण होय छे. अधिकरणिकी क्रिया बे प्रकारे छे--संयोजनाधिकरणिकी अने निर्वर्तनाधिकरणिकी. संयोजन--पूर्वे बनावेला अस्त्रशस्त्रादि हिंसाना साधनोने मेळवी तैयार राखवा ते संयोजनाधिकरणिकी, अने नवा बनाववा ते निर्वर्तनाधिकरणिकी. पोतानुं, परनुं अथवा बन्नेनुं अशुभ चिंतववुं ते प्राद्वेषिकी. जे पोताने परने अथवा उभयने दुःख आपे ते पारितापनिकी. जे पोताने, परने अथवा बन्नेने जीवितथी रहित करे ते प्राणातिपातिकी.--विशेषमाटे जुओ--प्रज्ञा० पद. २२ प. ४३५-२.

पंचमओ उद्देसो ।

१. [प्र०] रायगिहे जाव एवं वयासी—आजीविया णं भंते ! थेरे भगवंते एवं वयासी—समणोवासगस्स णं भंते ! सामाइयकडस्स समणोवस्सए अच्छमाणस्स केइ [1]भंडं अवहरेज्जा, सेणं भंते ! तं भंडं अणुगवेसमाणे किं सयं भंडं अणुगवेसइ, परायगं भंडं अणुगवेसइ ? [उ०] गोयमा ! सयं भंडं अणुगवेसति, नो परायगं भंडं अणुगवेसइ ।

२. [प्र०] तस्स णं भंते ! तेहिं सीलव्वय–गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं से भंडे अभंडे भवइ ? [उ०] हंता भवइ । [प्र०] से केण खाइ णं अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सयं भंडं अणुगवेसइ, नो परायगं भंडं अणुगवेसइ ? [उ०] गोयमा ! तस्स णं एवं भवइ—णो मे हिरण्णे, णो मे सुवण्णे, नो मे कंसे, नो मे दूसे, नो मे विपुलधण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयणमादीए संतसारसावदेज्जे, ममत्तभावे पुण से अपरिण्णाए भवइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ सयं भंडं अणुगवेसइ, नो परायगं भंडं अणुगवेसइ ।

३. [प्र०] समणोवासगस्स णं भंते ! सामाइयकडस्स समणोवस्सए अच्छमाणस्स केइ जायं चरेज्जा, से णं भंते ! किं जायं चरइ, अजायं चरइ ? [उ०] गोयमा ! जायं चरइ, नो अजायं चरइ ।

पंचम उद्देशक.

आजीविकना प्रश्नो. सामायिक करनार श्रावकना भांडने कोई अपहरण करे तो ते भांडने शोधे के अभांडने शोधे ?

१. [प्र०] राजगृह नगरमां यावत् [गौतमे] ए प्रमाणे कह्युं के–हे भगवन् ! आजीविकोए (गोशालकना शिष्योए) स्थविर भगवन्तोने आ प्रमाणे कह्युं हतुं–हे भगवन् ! जेणे सामायिक कर्युं छे एवा श्रमणना उपाश्रयमां बेठेला श्रमणोपासकना भांड–वस्त्रादि वस्तुनुं कोइ अपहरण करे, तो हे भगवन् ! [सामायिक समाप्त थया पछी] ते वस्तुनुं अन्वेषण करतो ते श्रावक शुं पोताना भांडने शोधे छे के पारका भांडने शोधे ? [उ०] हे गौतम ! ते श्रावक पोताना भांडने शोधे छे, पण पारका भांडने शोधतो नथी.

अपहृत भांड ते अभांड थाय तो 'पोताना भांडने शोधे छे' एम केम कहेवाय ? ममत्वभावनुं प्रत्याख्यान कर्युं नथी माटे एम कहेवाय के पोताना भांडने शोधे छे.

२. [प्र०] हे भगवन् ! ते शीलव्रत, गुणव्रत, विरमणव्रत, प्रत्याख्यान अने पौषधोपवासवडे ते श्रावकनुं [अपहृत] भांड ते अभांड थाय ? [उ०] हे गौतम ! हा, अभांड थाय. [प्र०] हे भगवन् ! [जो अभांड थाय तो] एम शा हेतुथी कहो छो के–[ते श्रमणोपासक] पोताना भांडने शोधे छे, पण पारका भांडने शोधतो नथी ? [उ०] हे गौतम ! [सामायिक करनार] ते श्रावकना मनमां एवो परिणाम होय छे के–'मारे हिरण्य नथी, मारे सुवर्ण नथी, मारे कांसुं नथी, मारे वस्त्र नथी, अने मारे विपुल धन, कनक, रत्न, मणि, मोती, शंख, परवाला, रक्त रत्नो–इत्यादि विद्यमान सारभूत द्रव्य नथी,' परन्तु तेणे ममत्व भावनुं प्रत्याख्यान कर्युं नथी, ते हेतुथी हे गौतम ! एम कहेवाय छे के ते पोताना भांडने गवेषे छे, पण पारका भांडने गवेषतो नथी.

एम स्त्रीने सेवे के अस्त्रीने सेवे ?

३. [प्र०] हे भगवन् ! जेणे सामायिक कर्युं छे एवा, श्रमणना उपाश्रयमां रहेला श्रमणोपासकनी स्त्रीने कोइ पुरुष सेवे तो शुं ते तेनी स्त्री सेवे छे के अस्त्रीने–अन्यनी स्त्रीने–सेवे ? [उ०] हे गौतम ! ते पुरुष तेनी स्त्रीने सेवे छे पण अन्यनी स्त्रीने सेवतो नथी.

---

1 भंडे क, हुंडं भंडे ग ।

४. [प्र०] तस्स णं भंते ! तेहिं सीलव्वय–गुण–वेरमण–पच्चक्खाण–पोसहोववासेहिं सा जाया अजाया भवइ ? [उ०] हंता भवइ । [प्र०] से केणं खाइ णं अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–जायं चरइ नो अजायं चरइ ? [उ०] गोयमा ! तस्स णं एवं भवइ–नो मे माता, नो मे पिता, णो मे माया, नो मे भगिणी, णो मे भज्जा, णो मे पुत्ता, णो मे धूया, नो मे सुण्हा; पेज्जबंधणे पुण से अवोच्छिन्ने भवइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव नो अजायं चरइ ।

५. [प्र०] समणोवासगस्स णं भंते ! पुव्वामेव थूलए पाणाइवाए अपच्चक्खाए भवइ, से णं भंते ! पच्छा पच्चाइक्खमाणे किं करेइ ? [उ०] गोयमा ! तीयं पडिक्कमति, पडुप्पन्नं संवरेति, अणागयं पच्चक्खाति ।

६. [प्र०] तीयं पडिक्कममाणे किं १ तिविहं तिविहेणं पडिक्कमति, २ तिविहं दुविहेणं पडिक्कमति, ३ तिविहं एगविहेणं पडिक्कमति; ४ दुविहं तिविहेणं पडिक्कमति, ५ दुविहं दुविहेणं पडिक्कमति, ६ दुविहं एगविहेणं पडिक्कमइ; ७ एगविहं तिविहेणं पडिक्कमति, ८ एगविहं दुविहेणं पडिक्कमति, ९ एक्कविहं एक्कविहेणं पडिक्कमति ? [उ०] गोयमा ! तिविहं तिविहेणं पडिक्कमति; तिविहं दुविहेणं वा पडिक्कमइ, एवं चेव जाव एक्कविहं वा एक्कविहेणं पडिक्कमति । १ तिविहं तिविहेणं पडिक्कममाणे न करेति, न कारवेति, करंतं णाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा । २ तिविहं दुविहेणं पडिक्कममाणे न करेति, न कारवेति, करंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा; ३ अहवा न करेति न कारवेति, करतं नाणुजाणइ मणसा कायसा; ४ अहवा न करेइ, न कारवेइ, करंतं नाणुजाणइ वयसा कायसा । तिविहं एगविहेणं पडिक्कममाणे ५ न करेति, न कारवेति, करंतं नाणुजाणइ मणसा; ६ अहवा न करेइ, न कारवेइ, करंतं नाणुजाणइ वयसा; ७ अहवा न करेइ, न कारवेइ, करंतं नाणुजाणइ कायसा । दुविहं तिविहेणं पडिक्कममाणे ८ न करेइ, न कारवेइ मणसा वयसा कायसा; ९ अहवा न करेइ, करंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा; १० अहवा न कारवेइ, करंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा । दुविहं दुविहेणं पडिक्कममाणे ११ न करेइ, न कारवेइ मणसा वयसा; १२ अहवा न करेइ, न कारवेइ मणसा कायसा; १३ अहवा न करेइ, न कारवेइ वयसा कायसा; १४ अहवा न करेइ, करंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा; १५ अहवा न करेति, करेंतं नाणु-

४. [प्र०] हे भगवन् ! ते शीलव्रत, गुणव्रत, विरमणव्रत, प्रत्याख्यान अने पौषधोपवास वडे [ते श्रावकनी] स्त्री अस्त्री (अन्यस्त्री) थाय ? [उ०] हा, थाय. [प्र०] हे भगवन् ! तो एम शा हेतुथी कहो छो के तेनी स्त्रीने सेवे छे पण अस्त्री (अन्यस्त्री)ने सेवतो नथी ? [उ०] हे गौतम ! [शीलव्रतादि वडे] ते श्रावकना मनमां एवुं होय छे के–'मारे माता नथी, पिता नथी, भाइ नथी, बहेन नथी, स्त्री नथी, पुत्रो नथी, पुत्री नथी, अने स्नुषा (पुत्रवधू) नथी, परन्तु तेने प्रेमबन्धन त्रुट्युं नथी, ते हेतुथी हे गौतम ! ते पुरुष तेनी स्त्रीने सेवे छे, पण अन्यस्त्रीने सेवतो नथी.

प्रत्याख्यानथी स्त्री ते अस्त्री थाय ? जो एम थाय तो तेनी स्त्रीने सेवे छे एम केम कहेवाय ? प्रेमबन्धन अविच्छिन्न छे माटे एम कहेवाय.

५. [प्र०] हे भगवन् ! जे श्रमणोपासकने पूर्वे स्थूल प्राणातिपातनुं प्रत्याख्यान होतुं नथी, ते पछीथी तेनुं प्रत्याख्यान करतो शुं करे ? [उ०] हे गौतम ! अतीत काळे करेल प्राणातिपातने प्रतिक्रमे–निन्दे, प्रत्युत्पन्न (वर्तमान) प्राणातिपातनो संवर–रोध करे, अने अनागत (भविष्य) प्राणातिपातनुं ‡प्रत्याख्यान करे.

स्थूलप्राणातिपातनुं प्रत्याख्यान केवी रीते करे ?

६. [प्र०] हे भगवन् ! अतीत काळना प्राणातिपातने प्रतिक्रमतो ते श्रमणोपासक शुं १ त्रिविध त्रिविधे प्रतिक्रमे, २ त्रिविध द्विविधे ३ त्रिविध एकविधे, ४ द्विविध त्रिविधे, ५ द्विविध द्विविधे, ६ द्विविध एकविधे, ७ एकविध त्रिविधे, ८ एकविध द्विविधे, के ९ एकविध एकविधे प्रतिक्रमे ? [उ०] हे गौतम ! १ त्रिविध त्रिविधे प्रतिक्रमे, २ त्रिविध द्विविधे प्रतिक्रमे–इत्यादि पूर्वे कह्या प्रमाणे यावत् ९ एकविध एकविधे प्रतिक्रमे. त्रिविध त्रिविधे प्रतिक्रमतो मन, वचन अने कायाथी करतो नथी, करावतो नथी अने करताने अनुमोदन आपतो नथी; २ द्विविध त्रिविधे प्रतिक्रमतो मन अने वचनथी करतो नथी, करावतो नथी अने करनारने अनुमोदन आपतो नथी; ३ अथवा मन अने काययी करतो नथी, करावतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी; ४ अथवा वचन अने कायथी करतो नथी, करावतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी; ५ त्रिविध एकविधे प्रतिक्रमतो मनथी करतो नथी, करावतो नथी, अने करनारने अनुमति आपतो नथी; ६ अथवा वचनथी करतो नथी, करावतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी; ७ अथवा कायथी करतो नथी, करावतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी; ८ द्विविध त्रिविधे प्रतिक्रमतो मन, वचन अने कायथी करतो नथी अने करावतो नथी; ९ अथवा मन, वचन अने काययी करतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी; १० अथवा मन, वचन अने काययी करावतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी; ११ द्विविध द्विविधे प्रतिक्रमतो मन अने वचनयी करतो नथी अने करावतो नथी, १२ अथवा मन अने काययी करतो नथी अने करावतो नथी, १३ अथवा वचन अने काययी करतो नथी अने करावतो नथी, १४ अथवा मन अने वचनयी करतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी, १५ अथवा मन अने कायथी करतो नथी अने करनारने

अतीतकाळे प्राणातिपातना प्रतिक्रमणना भांगा.

‡ ५. प्रत्याख्यान एटले 'नहि करुं' एवी प्रतिज्ञा.

जाणइ मणसा कायसा; १६ अहवा न करेइ, करेंतं नाणुजाणइ वयसा कायसा; १७ अहवा न कारवेति, करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा; १८ अहवा न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणति मणसा कायसा; १९ अहवा न कारवेति, करेंतं नाणुजाणइ वयसा कायसा। दुविहं एक्कविहेणं पडिक्कममाणे २० न करेति, न कारवेति मणसा; २१ अहवा न करेति न कारवेति वयसा; २२ अहवा न करेति, न कारवेति कायसा; २३ अहवा न करेति, करेंतं नाणुजाणइ मणसा; २४ अहवा न करेइ, करेंतं नाणुजाणइ वयसा; २५ अहवा न करेइ, करेंतं नाणुजाणइ कायसा; २६ अहवा न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ मणसा; २७ अहवा न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ वयसा; २८ अहवा न कारवेइ, करेंतं नाणुजाणइ कायसा। एगविहं तिविहेणं पडिक्कममाणे २९ न करेइ मणसा वयसा कायसा; ३० अहवा न कारवेइ मणसा वयसा कायसा; ३१ अहवा करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा। एक्कविहं दुविहेणं पडिक्कममाणे ३२ न करेइ मणसा वयसा; ३३ अहवा न करेइ मणसा कायसा; ३४ अहवा न करेइ वयसा कायसा; ३५ अहवा न कारवेति मणसा वयसा; ३६ अहवा न कारवेति मणसा कायसा; ३७ अहवा न कारवेइ वयसा कायसा; ३८ अहवा करेंतं नाणुजाणइ मणसा वयसा; ३९ अहवा करेंतं नाणुजाणइ मणसा कायसा; ४० अहवा करेंतं नाणुजाणइ वयसा कायसा। एगविहं एगविहेणं पडिक्कममाणे ४१ न करेइ मणसा, ४२ अहवा न करेइ वयसा, ४३ अहवा न करेइ कायसा; ४४ अहवा न कारवेति मणसा; ४५ अहवा न कारवेति वयसा, ४६ अहवा न कारवेति कायसा; ४७ अहवा करेंतं नाणुजाणइ मणसा; ४८ अहवा करेंतं नाणुजाणइ वयसा; ४९ अहवा करेंतं नाणुजाणइ कायसा।

७. [प्र०] पडुप्पन्नं संवरेमाणे किं तिविहं तिविहेणं संवरेइ? [उ०] एवं जहा पडिक्कममाणेणं एगूणपन्नं भंगा भणिया एवं संवरमाणेण वि एगूणपन्नं भंगा भाणियव्वा।

८. [प्र०] अणागयं पच्चक्खमाणे किं तिविहं तिविहेणं पच्चक्खाइ? [उ०] एवं ते चेव भंगा एगूणपन्नं भाणियव्वा जाव अहवा करेंतं नाणुजाणइ कायसा।

९. [प्र०] समणोवासगस्स णं भंते! पुव्वामेव थूलमुसावाए अपच्चक्खाए भवइ, से णं भंते! पच्छा पच्चाइक्खमाणे०? [उ०] एवं जहा पाणाइवायस्स सीयालं भंगसयं भणियं, तहा मुसावायस्स वि भाणियव्वं। एवं अदिन्नादाणस्स वि, एवं थूल-

अनुमति आपतो नथी, १६ अथवा वचन अने कायथी करतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी, १७ अथवा मन अने वचनथी करावतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी, १८ अथवा मन अने कायथी करावतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी, १९ अथवा वचन अने कायथी करावतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी; २० द्विविध एकविधे प्रतिक्रमतो मनथी करतो नथी अने करावतो नथी, २१ अथवा वचनथी करतो नथी अने करावतो नथी, २२ अथवा कायवडे करतो नथी अने करावतो नथी, २३ अथवा मनवडे करतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी, २४ अथवा वचनवडे करतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी, २५ अथवा कायवडे करतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी, २६ अथवा मनवडे करावतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी, २७ अथवा वचनथी करावतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी २८ अथवा कायवडे करावतो नथी अने करनारने अनुमति आपतो नथी; २९ एकविध त्रिविधे प्रतिक्रमतो मन, वचन अने कायथी करतो नथी, ३० अथवा मन, वचन अने कायथी करावतो नथी, ३१ अथवा मन, वचन अने कायथी करनारने अनुमति आपतो नथी; ३२ एकविध द्विविधे प्रतिक्रमतो मन अने वचनथी करतो नथी, ३३ अथवा मन अने कायथी करतो नथी, ३४ अथवा वचन अने कायथी करतो नथी, ३५ अथवा मन अने वचनथी करावतो नथी, ३६ अथवा मन अने कायथी करावतो नथी, ३७ अथवा वचन अने कायथी करावतो नथी, ३८ अथवा मन अने वचनथी करनारने अनुमति आपतो नथी, ३९ अथवा मन अने कायथी करनारने अनुमति आपतो नथी, ४० अथवा वचन अने कायथी करनारने अनुमति आपतो नथी; ४१ एकविध एकविधे प्रतिक्रमतो मनथी करतो नथी, ४२ अथवा वचनथी करतो नथी, ४३ अथवा कायथी करतो नथी; ४४ अथवा मनथी करावतो नथी, ४५ अथवा वचनथी करावतो नथी, ४६ अथवा कायथी करावतो नथी, ४७ अथवा मनथी करनारने अनुमति आपतो नथी, ४८ अथवा वचनथी करनारने अनुमति आपतो नथी, ४९ अथवा कायथी करनारने अनुमति आपतो नथी.

वर्तमानप्राणातिपातना संवरसंबन्धे भांगा.

७. [प्र०] प्रत्युत्पन्न (वर्तमान) प्राणातिपातनो संवर (रोध) करतो [श्रमणोपासक] शुं त्रिविध त्रिविधे संवर करे?–इत्यादि. [उ०] जेम प्रतिक्रमना ओगणपचास भांगा कह्या, तेम संवर करतां पण ओगणपचास भांगा कहेवा.

अनागत प्राणातिपातना प्रत्याख्यान संबन्धे भांगा.

८. [प्र०] अनागत प्राणातिपातनुं प्रत्याख्यान करतो [श्रमणोपासक] शुं त्रिविध त्रिविधे प्रत्याख्यान करे?–इत्यादि. [उ०] पूर्वे कह्या प्रमाणे ओगणपचास भांगा यावत् 'अथवा कायवडे करनारने अनुमति आपतो नथी' त्यां सुधी कहेवा.

स्थूलमृषावादनुं प्रत्याख्यान अने तेना भांगा, यावत् स्थूलपरिग्रहना भांगा.

९. [प्र०] हे भगवन्! जे श्रमणोपासके पहेलां स्थूल मृषावादनुं प्रत्याख्यान कर्युं नथी, पछीथी हे भगवन्! ते [स्थूल मृषावादनुं] प्रत्याख्यान करतो शुं करे? [उ०] जेम प्राणातिपातना एकसो सुडतालीश भांगा कह्या, तेम मृषावादना पण एकसो सुडतालीश भांगा कहेवा, ए प्रमाणे [स्थूल] अदत्तादानना, स्थूल मैथुनना अने स्थूल परिग्रहना पण भांगाओ यावत् 'अथवा कायथी करनारने अनुमति

गस्स मेहुणस्स वि, थूलगस्स परिग्गहस्स वि, जाव अहवा करेंतं नाणुजाणइ कायसा। एवं खलु एरिसगा समणोवासगा भवंति, नो खलु एरिसगा आजीवियोवासगा भवंति।

१०. आजीवियसमयस्स णं अयमट्ठे—अक्खीणपडिभोइणो सव्वे सत्ता; से हंता, छेत्ता, भेत्ता, लुंपित्ता, विलुंपित्ता, उद्दवइत्ता आहारं आहारेंति। तत्थ खलु इमे दुवालस आजीवियोवासगा भवंति; तं जहा—१ ताले, २ तालपलंबे, ३ उव्विहे, ४ संविहे, ५ अवविहे, ६ उदए, ७ नामुदए, ८ णम्मुदए, ९ अणुवालए, १० संखवालए, ११ अयंबुले, १२ कायरए–इच्चेते दुवालसं आजीवियोवासगा अरिहंतदेवतागा, अम्मा–पिउसुस्सूसगा, पंचफलपडिक्कंता, तं जहा–उंबरेहिं, वडेहिं, बोरेहिं, सतरेहिं, पिलक्खूहिं; पलंडु–ल्हसुणकंदमूलविवज्जगा, अणिल्लंछिएहिं अणक्कभिन्नेहिं गोणेहिं तसपाणविवज्जिएहिं वित्तेहिं वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति। एए वि ताव एवं इच्छंति किमंग! पुण जे इमे समणोवासगा भवंति, जेसिं नो कप्पंति इमाइं पन्नरस कम्मादाणाइं सयं करेत्तए वा, कारवेत्तए वा, करेंतं वा अन्नं न समणुजाणेत्तए। तं जहा–इंगालकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे, दंतवाणिज्जे, लक्खवाणिज्जे, केसवाणिज्जे, रसवाणिज्जे, विसवाणिज्जे, जंतपीलणकम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गिदावणया, सर–दह–तलागपरिसोसणया, असतीपोसणया। इच्चेते समणोवासगा सुक्का, सुक्काभिजातीया भवित्ता कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति।

११. [प्र०] कतिविहा णं भंते! देवलोगा पण्णत्ता? [उ०] गोयमा! चउव्विहा देवलोगा पण्णत्ता, तं जहा–भवणवासी, वाणमंतरा, जोइसिया, वेमाणिया। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति।

अट्ठमसए पंचमओ उद्देसओ समत्तो।

आपतो नथी' त्यां सुधी जाणवा. आ आवा प्रकारना श्रमणोपासको होय छे, पण आवा प्रकारना आजीविकना (गोशालना) उपासको होता नथी.

१०. आजीविक (गोशालक)ना सिद्धांतनो आ अर्थ छे—'दरेक जीवो अक्षीणपरिभोगी—सचित्ताहारी छे, तेथी तेओ [लाकडी वगेरेथी] हणीने [तरवार वगेरेथी] छेदीने, [शूलादिथी] भेदीने, [पांख वगेरेना कापवा वडे] लोप करीने [चामडी उतारवाथी] विलोपीने अने विनाश करीने खाय छे. [अर्थात् बीजा जीवो हननादिमां तत्पर छे] पण आजीवकना मतमां आ बार आजीविकोपासको कह्या छे, ते आ प्रमाणे—१ ताल, २ तालप्रलंब, ३ उद्विध, ४ संविध, ५ अवविध, ६ उदय, ७ नामोदय, ८ नर्मोदय, ९ अनुपालक, १० शंखपालक, ११ अयंबुल अने १२ कातर—ए बार आजीविकना उपासको छे, तेओनो देव अर्हत् (गोशालक) छे, मातापितानी सेवा करनारा तेओ आ पांच प्रकारना फलने खाता नथी. ते आ प्रमाणे—१ उंबराना फल, २ वडना फल, ३ बोर, ४ सतरनां फल अने ५ पींपळाना फल. तेओ डुंगळी, लसण अने कंदमूलना विवर्जक (त्यागी) छे. तेओ अनिर्लांछित (खसी नहि करायला), नहि नाथेला (नाक विंधेला) एवा बळदो वडे त्रसप्राणीनी हिंसा विवर्जित व्यापार वडे आजीविका करे छे. ज्यारे ए गोशालकना श्रावको पण ए प्रकारे धर्मने इच्छे छे, तो पछी जे आ श्रमणोपासको छे तेओने माटे शुं कहेवुं? जेओने आ पंदर कर्मादानो स्वयं करवाने, बीजा पासे कराववाने अने अन्य करनारने अनुमति आपवाने कल्पतां नथी. ते कर्मादानो आ प्रमाणे छे—१ अंगारकर्म, २ वनकर्म, ३ शकटकर्म, ४ भाटककर्म, ५ स्फोटककर्म, ६ दंतवाणिज्य, ७ लाक्षावाणिज्य, ८ केशवाणिज्य, ९ रसवाणिज्य, १० विषवाणिज्य, ११ यंत्रपीलनकर्म, १२ निर्लांछनकर्म, १३ दवाग्निदापन, १४ सरोवर, द्रह अने तलावनुं शोषण अने १५ असतीपोषण. ए श्रमणोपासको शुक्ल—पवित्र, अने पवित्रताप्रधान थइने मरणसमये काल करीने कोइ पण देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थाय छे.

आजीविकनो सिद्धान्त.

आजीवकना बार श्रमणोपासको.

श्रावकोने वर्ज्य पंदर कर्मादानो.

११. [प्र०] हे भगवन्! केटला प्रकारना देवलोको कह्या छे? [उ०] हे गौतम! चार प्रकारना देवलोको कह्या छे. ते आ प्रमाणे—भवनवासी, वानव्यंतर, ज्योतिष्क अने वैमानिक. हे भगवन्! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन्! ते ए प्रमाणे छे. [एम कहीने यावद् भगवान् गौतम विहरे छे.]

देवलोक.

अष्टम शतके पंचम उद्देशक समाप्त.

---

१ -मट्ठे पन्नत्ते क। २ -परिभोइ- क। ३ नम्मुदए क। ४ केलेहिं क।

छट्ठो उद्देसओ.

१. [प्र०] समणोवासगस्स णं भंते ! तहारूवं समणं वा माहणं वा फासु–एसणिज्जेणं असण–पाण–खाइम–साइमेणं पडिलाभेमाणस्स किं कज्जति ? [उ०] गोयमा ! एगंतसो निज्जरा कज्जइ, नत्थि य से पावे कम्मे कज्जति ।

२. [प्र०] समणोवासगस्स णं भंते ! तहारूवं समणं वा माहणं वा अफासुएणं अणेसणिज्जेणं असण–पाण० जाव पडिलाभेमाणस्स किं कज्जइ ? [उ०] गोयमा ! बहुतरिया से निज्जरा कज्जइ, अप्पतराए से पावे कम्मे कज्जइ ।

३. [प्र०] समणोवासगस्स णं भंते ! तहारूवं असंजयं अविरय–पडिहय–पच्चक्खायपावकम्मं फासुएण वा, अफासुएण वा, एसणिज्जेण वा, अणेसणिज्जेण वा असण–पाण० जाव किं कज्जइ ? [उ०] गोयमा ! एगंतसो से पावे कम्मे कज्जइ, नत्थि से कावि निज्जरा कज्जइ ।

४. निग्गंथं च णं गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुप्पविट्ठं केइ दोहिं पिंडेहिं उवनिमंतेज्जा–एगं आउसो ! अप्पणा भुंजाहि, एगं थेराणं दलयाहि, से य तं पडिग्गहेज्जा, थेरा य से अणुगवेसियव्वा सिया, जत्थेव अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा तत्थेव अणुप्पदायव्वे सिया, नो चेव णं अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा तं नो अप्पणा भुंजेज्जा, नो अन्नेसिं दावए; एगंते अणावाए अचित्ते बहुफासुए थंडिल्ले पडिलेहेत्ता पमज्जित्ता परिट्ठावेयव्वे सिया ।

षष्ठ उद्देशक.

संयतने निर्दोष अशनादिथी प्रतिलाभता शुं फल थाय? एकांत निर्जरा थाय.

१. [प्र०] हे भगवन् ! तेवा प्रकारना (उत्तम) श्रमण या ब्राह्मणने प्रासुक (अचित्त) अने एषणीय (निर्दोष) अशन, पान, खादिम तथा स्वादिम आहार वडे प्रतिलाभता–सत्कार करता–श्रमणोपासकने शुं [फल] थाय ? [उ०] हे गौतम ! एकांत निर्जरा थाय, पण तेने पाप कर्म न थाय.

सदोष अशनादिथी प्रतिलाभता शुं फल थाय? घणी निर्जरा अने अल्प पाप कर्मनो बंध थाय.

२. [प्र०] हे भगवन् ! तेवा प्रकारना श्रमण या ब्राह्मणने अप्रासुक (सचित्त) अने अनेषणीय (सदोष) अशनादि वडे प्रतिलाभता श्रमणोपासकने शुं [फल] थाय ? [उ०] हे गौतम ! घणी निर्जरा थाय, अने अत्यन्त अल्प पाप कर्म थाय.

असंयतने आहारथी प्रतिलाभतां शुं फल थाय? एकान्त पाप कर्म थाय.

३. [प्र०] हे भगवन् ! तेवा प्रकारना विरतिरहित, अप्रतिहत अने अप्रत्याख्यात पापकर्मवाळा असंयतने प्रासुक अथवा अप्रासुक, एषणीय अथवा अनेषणीय अशनादि वडे प्रतिलाभता श्रमणोपासकने शुं [फल] थाय ? [उ०] हे गौतम ! एकांत पापकर्म थाय, पण कांइ निर्जरा न थाय.

निर्ग्रन्थने बे पिंड ग्रहण करवा माटे उपनिमंत्रण.

४. गृहस्थना घरे आहार ग्रहण करवानी इच्छाथी प्रवेश करेला निर्ग्रन्थने कोइ गृहस्थ बे पिंड (आहार) ग्रहण करवा माटे उपनिमंत्रण करे के–हे आयुष्मान् ! एक पिंड तमे खाजो, अने बीजो पिंड स्थविरोने आपजो. पछी ते निर्ग्रंथ ते (बन्ने) पिंडने ग्रहण करे अने ते स्थविरोनी शोध करे; तपास करता ज्यां स्थविरोने जुए त्यांज ते पिंड तेने आपे, जो कदाच शोधतां स्थविरोने न जुए तो ते पिंड पोते खाय नहीं अने बीजाने आपे नहीं, पण एकान्त, अनापात–ज्यां कोइ आवे नहि एवी अचित्त अने बहु प्रासुक स्थंडिल (भूमि)ने जोइने, प्रमार्जीने त्यां परठवे.

५. [प्र०] निग्गंथं च णं गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुप्पविट्ठं केइ तीहिं पिंडेहिं उवनिमंतेज्जा–एगं आउसो! अप्पणा भुंजाहि, दो थेराणं दलयाहि; से य ते पडिग्गहेज्जा, थेरा य से अणुगवेसेयव्वा, सेसं तं चेव जाव परिट्ठावेयव्वे सिया, एवं जाव दसहिं पिंडेहिं उवनिमंतेज्जा; नवरं एगं आउसो! अप्पणा भुंजाहि, नव थेराणं दलयाहि; सेसं तं चेव जाव परिट्ठावेयव्वे सिया।

६. [प्र०] निग्गंथं च णं गाहावइ० जाव केइ दोहिं पडिग्गहेहिं उवनिमंतेज्जा–एगं आउसो! अप्पणा पडिभुंजाहि, एगं थेराणं दलयाहि। से य तं पडिग्गहेज्जा, तहेव जाव तं नो अप्पणा परिभुंजेज्जा, नो अन्नेसिं दावए; सेसं तं चेव, जाव परिट्ठवेयव्वे सिया। एवं जाव दसहिं पडिग्गहेहिं, एवं जहा पडिग्गहेहिं, एवं जहा पडिग्गहवत्तव्वया भणिया, एवं गोच्छय–रयहरण–चोलपट्टग–कंबल–लट्ठि–संथारगवत्तव्वया य भाणियव्वा, जाव दसहिं संथारएहिं उवनिमंतेज्जा, जाव परिट्ठावेयव्वे सिया।

७. [प्र०] निग्गंथेण य गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविट्ठेणं अन्नयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए, तस्स णं एवं भवति–इहेव ताव अहं एयस्स ठाणस्स आलोएमि, पडिक्कमामि, निन्दामि, गरिहामि, विउट्टामि, विसोहेमि, अकरणयाए अब्भुट्ठेमि, अहारियं पायच्छित्तं तवोकम्मं पडिवज्जामि; तओ पच्छा थेराणं अंतियं आलोएस्सामि, जाव तवोकम्मं पडिवज्जिस्सामि। से य संपट्ठिए, असंपत्ते थेरा य पुव्वामेव अमुहा सिया, से णं भंते! किं आराहए, विराहए? [उ०] गोयमा! आराहए, नो विराहए।

८. [प्र०] से य संपट्ठिए असंपत्ते अप्पणा य पुव्वामेव अमुहे सिया, से णं भंते! किं आराहए, विराहए? [उ०] गोयमा! आराहए, नो विराहए।

९. [प्र०] से य संपट्ठिए असंपत्ते थेरा य कालं करेज्जा, से णं भंते! किं आराहए, विराहए? [उ०] गोयमा! आराहए, नो विराहए।

५. [प्र०] गृहस्थना घरे आहार ग्रहण करवाना इरादाथी प्रवेश करेला निर्ग्रन्थने कोइ गृहस्थ त्रण पिंड ग्रहण करवाने उपनिमंत्रण करे के–हे आयुष्मन्! एक पिंड तमे खाजो अने बीजा बे पिंड स्थविरोने आपजो. पछी ते निर्ग्रंथ ते पिंडोने ग्रहण करे, अने स्थविरोनी तपास करे. बाकीनुं पूर्वसूत्रनी पेठे जाणवुं, यावत् परठवे, ए प्रमाणे यावद् दश पिंडोने ग्रहण करवाने उपनिमंत्रण करे, परन्तु एम कहे के हे आयुष्मन्! एक पिंड तमे खाजो अने बाकीना नव पिंड स्थविरोने आपजो, बाकी बधुं पूर्वनी पेठे जाणवुं, यावत् परठवे.

त्रण पिंड या पिंडनुं उपनि

६. [प्र०] निर्ग्रंथ यावत् गृहपतिना कुलमां प्रवेश करे अने कोइ गृहस्थ बे पात्र वडे तेने उपनिमंत्रण करे के–हे आयुष्मन्! एक पात्रनो तमे उपभोग करजो अने बीजुं पात्र स्थविरोने आपजो. ते बन्ने पात्रोने ग्रहण करे, बाकीनुं ते प्रमाणे जाणवुं, यावत् पोते ते पात्रनो उपयोग न करे अने बीजाने आपे पण नहीं, बाकीनुं पूर्वनी पेठे जाणवुं, यावत् ते पात्रने परठवे. ए प्रमाणे यावत् दस पात्र सुधी कहेवुं, जे प्रमाणे पात्रनी वक्तव्यता कही छे तेम गुच्छा, रजोहरण, चोलपट्ट, कंबल, दंड अने संस्तारकनी वक्तव्यता कहेवी, यावत् दश संस्तारकवडे उपनिमंत्रण करे, यावत् तेने परठवे.

बे पात्रोनुं मंत्रण

७. [प्र०] कोई निर्ग्रन्थे गृहपतिना घरे आहार ग्रहण करवाना इरादाथी प्रवेश करता कोइ अकृत्य स्थाननुं प्रतिसेवन कर्युं होय, पछी ते निर्ग्रन्थना मनमां एम थाय के–"प्रथम हुं अहींज आ अकार्य स्थाननुं आलोचन, प्रतिक्रमण, निन्दा अने गर्हा करुं, [तेना अनुबन्धने] छेदुं, विशुद्ध करुं, पुनः न करवा माटे तैयार थाउं, अने यथायोग्य प्रायश्चित्तरूप तप कर्मनो स्वीकार करुं. त्यार पछी स्थविरोनी पासे जइने आलोचना करीश, यावत् तपकर्मनो स्वीकार करीश." [एम विचारी] ते निर्ग्रन्थ स्थविरोनी पासे जवा नीकळे अने त्यां पहोंच्या पहेला ते स्थविरो [वातादि दोषना प्रकोपथी] मूक थइ जाय–बोली न शके–अर्थात् प्रायश्चित्त न आपी शके तो हे भगवन्! शुं ते निर्ग्रन्थ आराधक छे के विराधक छे? [उ०] हे गौतम! ते निर्ग्रन्थ आराधक छे पण विराधक नथी. (१)

आराधक विराधक

स्थविरो मूक

८. [प्र०] हवे ते निर्ग्रन्थ स्थविरोनी पासे जाय अने त्यां पहोंच्या पहेला ते (निर्ग्रन्थ) मूक थइ जाय तो हे भगवन्! शुं ते निर्ग्रन्थ आराधक छे के विराधक छे? [उ०] हे गौतम! ते निर्ग्रन्थ आराधक छे पण विराधक नथी. (२)

निर्ग्रन्थ मूक

९. [प्र०] ते निर्ग्रन्थ स्थविरोनी पासे जवा नीकळे अने ते पहोंच्या पहेलां ते स्थविरो काळ करे तो हे भगवन्! ते निर्ग्रन्थ आराधक छे के विराधक छे? [उ०] हे गौतम! ते निर्ग्रन्थ आराधक छे पण विराधक नथी. (३)

स्थविरो का

---

१ गोच्छग–घ। २ परिट्ठवेयव्वे क। ३ अमुहा ग।

१०. [प्र०] से य संपट्ठिए असंपत्ते अप्पणा य पुव्वामेव कालं करेज्जा, से णं भंते ! किं आराहए, विराहए ? [उ०] गोयमा ! आराहए, नो विराहए।

११. [प्र०] से य संपट्ठिए, संपत्ते, थेरा य अमुहा सिया, से णं भंते ! किं आराहए, विराहए ? [उ०] गोयमा ! आराहए, नो विराहए। से य संपट्ठिए संपत्ते, अप्पणा य०—एवं संपत्तेण वि चत्तारि आलावगा भाणियव्वा जहेव असंपत्तेणं।

१२. [प्र०] निग्गंथेण य बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा निक्खंतेणं अन्नयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए, तस्स णं एवं भवति—इहेव ताव अहं०—एवं एत्थ वि ते चेव अट्ठ आलावगा भाणियव्वा; जाव नो विराहए। निग्गंथेण य गामाणुगामं दुइज्जमाणेणं अन्नयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए, तस्स णं एवं भवइ—इहेव ताव अहं०, एत्थ वि ते चेव अट्ठ आलावगा भाणियव्वा, जाव नो विराहए।

१३. [प्र०] निग्गंथीए य गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुपविट्ठाए अन्नयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए; तीसे णं एवं भवइ—इहेव ताव अहं एयस्स ठाणस्स आलोएमि, जाव तवोकम्मं पडिवज्जामि, तओ पच्छा पवत्तिणीए अंतियं आलोएस्सामि, जाव पडिवज्जिस्सामि। सा य संपट्ठिया असंपत्ता पवत्तिणी य अमुहा सिया; सा णं भंते ! किं आराहिया, विराहिया ? [उ०] गोयमा ! आराहिया, नो विराहिया। सा य संपट्ठिया जहा निग्गंथस्स तिन्नि गमा भणिया एवं निग्गंथीए वि तिन्नि आलावगा भाणियव्वा, जाव आराहिया, नो विराहिया।

१४. [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—आराहए, नो विराहए ? [उ०] गोयमा ! से जहा नामए केइ पुरिसे एगं महं उण्णालोमं वा, गयलोमं वा, सणलोमं वा, कप्पासलोमं वा, तणसूयं वा दुहा वा तिहा वा संखेज्जहा वा छिंदित्ता अगणिकायंसि पक्खिवेज्जा, से णूणं गोयमा ! छिज्जमाणे छिन्ने, पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते, डज्झमाणे दड्ढेत्ति वत्तव्वं सिया ? हंता भगवं ! छिज्जमाणे छिन्ने, जाव दड्ढेत्ति वत्तव्वं सिया। से जहा वा केइ पुरिसे वत्थं अहतं वा, धोतं वा, तंतुग्गयं वा मंजिट्ठा-

निर्ग्रन्थ काळ करे.

१०. [प्र०] हवे स्थविरोनी पासे जवा निकळेलो ते निर्ग्रन्थ स्थविरोनी पासे पहोंच्या पहेला पोते काळ करी जाय तो हे भगवन् ! शुं ते आराधक छे के विराधक छे ? [उ०] हे गौतम ! ते निर्ग्रन्थ आराधक छे पण विराधक नथी. (४)

जीवता निर्ग्रन्थना चार आलापक.

११. [प्र०] ते निर्ग्रन्थ स्थविरोनी पासे जवा नीकळे अने पहोंचता वार ते स्थविरो मूक थई जाय, तो हे भगवन् ! शुं ते निर्ग्रन्थ आराधक छे के विराधक छे ? [उ०] हे गौतम ! ते निर्ग्रन्थ आराधक छे पण विराधक नथी. हवे ते निर्ग्रन्थ स्थविरोनी पासे जाय अने त्यां पहोंचता वार ते (निर्ग्रन्थ) मूक थइ जाय तो शुं ते निर्ग्रन्थ आराधक छे के विराधक छे ?—इत्यादि संप्राप्त (पहोंचेला) निर्ग्रन्थना चार आलापक असंप्राप्त (नहि पहोंचेला) निर्ग्रन्थनी पेठे कहेवा.

निहारभूमि के विहारभूमि तरफ जता.

१२. कोई निर्ग्रन्थे बहार निहारभूमि के विहारभूमि तरफ जतां कोइ एक अकृत्यस्थाननुं प्रतिसेवन कर्युं होय, पछी तेने एम थाय के 'हुं प्रथम अही तेनुं आलोचनादि करुं'—इत्यादि पूर्वनी पेठे अहीं पण तेज आठ आलापक कहेवा, यावत् ते निर्ग्रंथ विराधक नथी.

ग्रामानुग्राम विहार करतां.

निर्ग्रन्थे ग्रामानुग्रामविहार करतां कोई एक अकृत्यस्थाननुं प्रतिसेवन कर्युं होय, पछी तेने एम थाय के, हुं प्रथम तेनुं आलोचनादि करुं—इत्यादि पूर्ववत् अहीं पण तेज आठ आलापक कहेवा, यावत् 'ते निर्ग्रंथ विराधक नथी.'

आराधक निर्ग्रन्थी.

१३. [प्र०] कोई साध्वीए आहार ग्रहण करवाना इरादाथी गृहपतिना घरे प्रवेश करता कोइ एक अकृत्यस्थाननुं प्रतिसेवन कर्युं, पछी तेने एम थाय के—हुं प्रथम आ अकृत्यस्थाननुं आलोचन करुं, यावत् तप कर्मनो स्वीकार करुं. त्यार पछी प्रवर्तिनी (वृद्ध साध्वी)नी पासे आलोचना करीश, यावत् तप कर्मनो स्वीकार करीश, [एम विचारी] ते साध्वी ते प्रवर्तिनीनी पासे जवा निकळे, अने त्यां पहोंच्या पहेलां ते प्रवर्त्तिनी मूंगी थइ जाय, तो हे भगवन् ! शुं ते साध्वी आराधक छे के विराधक छे ? [उ०] हे गौतम ! ते साध्वी आराधक छे पण विराधक नथी, जेम निर्ग्रंथने त्रण आलापको कह्या छे तेम 'ते साध्वी जवा नीकळे'—इत्यादि त्रण आलापको साध्वीने कहेवा. यावत् 'ते आराधक छे पण विराधक नथी.'

आराधक होवानुं कारण.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के तेओ आराधक छे पण विराधक नथी ? [उ०] हे गौतम ! जेम कोइ एक पुरुष एक मोटा ऊनना, गजना लोमना, शणना रेसाना, कपासना रेसाना, तृणना अग्रभागना बे, त्रण के संख्यात छेद—ककडा—करी तेने अग्निमां नाखे तो हे गौतम ! ते छेदातां छेदायेलुं, अग्निमां नंखाता नंखायेलुं, बळतां बळेलुं एम कहेवाय ? हे भगवन् ! हा, छेदातां छेदायेलुं, यावद् बळतां बळेलुं कहेवाय, अथवा कोइ पुरुष नवुं, धोएलुं के तन्त्र—साळथी तरत उतरेलुं कपडुं मजीठना रंगनी

१ दुज्ज-ग। २ जहानामए क।

कुंडीए पक्खिवेज्जा, से णूणं गोयमा! उक्खिप्पमाणे उक्खित्ते, पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते, रज्जमाणे रत्तेत्ति वत्तव्वं सिया? हंता भगवं! उक्खिप्पमाणे उक्खित्ते जाव रत्तेत्ति वत्तव्वं सिया। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ–आराहए नो विराहए।

१५. [प्र०] पदीवस्स णं भंते! झियायमाणस्स किं पदीवे झियाति, लट्ठी झियाइ, वत्ती झियाति, तेल्ले झियाइ, पदीवचंपए झियाइ, जोई झियाइ? [उ०] गोयमा! नो पदीवे झियाइ, जाव नो पदीवचंपए झियाइ, जोई झियाइ।

१६. [प्र०] अगारस्स णं भंते। झियायमाणस्स किं अगारे झियाइ, कुड्डा झियाइ, कडणा झियाइ, धारणा झियाइ, बलहरणे झियाइ, वंसा झियाइ, मल्ला झियाइ, वग्गा झियाइ, छित्तरा झियाइ, छाणे झियाति, जोती झियाति? [उ०] गोयमा! नो अगारे झियाति, नो कुड्डा झियाति, जाव नो छाणे झियाति, जोती झियाति।

१७. [प्र०] जीवे णं भंते! ओरालियसरीराओ कतिकिरिए? [उ०] गोयमा! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए, सिय अकिरिए।

१८. [प्र०] नेरइए णं भंते! ओरालियसरीराओ कतिकिरिए? [उ०] गोयमा! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए।

१९. [प्र०] असुरकुमारे णं भंते? ओरालियसरीराओ कतिकिरिए? [उ०] एवं चेव, एवं जाव वेमाणिए; नवरं मणुस्से जहा जीवे।

२०. [प्र०] जीवे णं भंते! ओरालियसरीरेहिंतो कतिकिरिए? [उ०] गोयमा! सिय तिकिरिए, जाव सिय अकिरिए।

कुंडीमां नांखे तो हे गौतम! ते उंचेथी नांखता उंचेथी नंखायेलुं, नांखतां नंखायेलुं, रंगातां रंगायेलुं एम कहेवाय? हा भगवन्! ते उंचेथी नांखतां उंचेथी नंखायेलुं, यावत् रंगातां रंगायेलुं कहेवाय; ते हेतुथी हे गौतम! एम कहेवाय छे के [आराधना माटे तैयार थएलो] ते आराधक छे पण विराधक नथी.

बळता दीपकमां शुं बळे छे? ज्योति बळे छे.

१५. [प्र०] हे भगवन्! बळता दीवामां शुं बळे छे? शुं दीवो बळे छे, दीपयष्टि–दीवी बळे छे, वाट बळे छे, तेल बळे छे, दीवानुं ढांकणुं बळे छे, के ज्योति–दीपशिखा बळे छे? [उ०] हे गौतम! दीवो बळतो नथी, यावत् दीवानुं ढांकणुं बळतुं नथी, पण ज्योति बळे छे.

बळता घरमां शुं बळे छे? ज्योति बळे छे.

१६. [प्र०] हे भगवन्! बळता घरमां शुं बळे छे? शुं घर बळे छे, भींतो बळे छे, त्राटी बळे छे, धारण (मोभनी नीचेना थांभो) बळे छे, मोभ बळे छे, वांसो बळे छे, मल्लो (भींतोना आधार थांभला) बळे छे, छींदरीओ बळे छे, छापरुं बळे छे, छादन–डाभवगेरेनुं ढांकण बळे छे के ज्योति–अग्नि बळे छे? [उ०] हे गौतम! घर बळतुं नथी, भींतो बळती नथी, यावत् डाभ वगेरेनुं छादन बळतुं नथी, पण ज्योति बळे छे.

परना एक औदारिक शरीरने आश्रयी जीवने क्रिया.

१७. [प्र०] हे भगवन्! एक जीव [परकीय] एक औदारिक शरीरने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय? [उ०] हे गौतम! कदाच *त्रणक्रियावाळो, कदाच चारक्रियावाळो, कदाच पांचक्रियावाळो, अने कदाच अक्रिय (क्रिया रहित) होय.

नारकने क्रिया.

१८. [प्र०] हे भगवन्! एक नारक [परकीय] एक औदारिक शरीरने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय? [उ०] हे गौतम! कदाच त्रणक्रियावाळो, कदाच चारक्रियावाळो अने कदाच पांचक्रियावाळो होय.

असुरकुमारने क्रिया.

१९. [प्र०] हे भगवन्! एक असुरकुमार [परकीय] एक औदारिक शरीरने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय? [उ०] हे गौतम! पूर्वनी पेठे [त्रण, चार के पांच क्रियावाळो होय] ए प्रमाणे यावद् वैमानिको जाणवा. परन्तु मनुष्यो जीवोनी पेठे जाणवा.

एक जीवनी औदारिक शरीरोने आश्रयी क्रिया.

२०. [प्र०] हे भगवन्! एक जीव [परकीय] औदारिक शरीरोने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय? [उ०] हे गौतम! ते कदाच त्रणक्रियावाळो होय, यावत् कदाच अक्रिय होय.

---

१ जोति झि–घ। २ आगारे ग।

१७ *कायिकी, अधिकरणिकी, प्राद्वेषिकी, पारितापनिकी अने प्राणातिपातिनी–ए पांच क्रियाओ छे. तेमां एक जीव ज्यारे अन्य पृथिव्यादिक जीवना शरीरने आश्रयी कायानो व्यापार करे त्यारे तेने कायिकी, अधिकरणिकी अने प्राद्वेषिकी ए त्रण क्रियाओ होय, केमके अवीतरागने कायिकी क्रियाना सद्भावमां अधिकरणिकी अने प्राद्वेषिकी क्रिया अवश्य होय छे, अने बीजी बे क्रियाओ भजनाए होय छे. एटले ज्यारे ते बीजाने परिताप उत्पन्न करे के घात करे त्यारे तेने पारितापनिकी के प्राणातिपातिनी क्रिया होय छे—टीका.

२१. [प्र०] नेरइए णं भंते! ओरालियसरीरेहिंतो कतिकिरिए? [उ०] एवं एसो जहा पढमो दंडओ तहा इमो वि अपरिसेसो भाणियव्वो जाव वेमाणिए, नवरं मणुस्से जहा जीवे।

२२. [प्र०] जीवा णं भंते! ओरालियसरीराओ कतिकिरिया? [उ०] गोयमा! सिय तिकिरिया, जाव सिय अकिरिया।

२३. [प्र०] नेरइया णं भंते! ओरालियसरीराओ कतिकिरिया? [उ०] एवं एसो वि जहा पढमो दंडओ तहा भाणियव्वो, जाव वेमाणिया, नवरं मणुस्सा जहा जीवा।

२४. [प्र०] जीवा णं भंते! ओरालियसरीरेहिंतो कतिकिरिया? [उ०] गोयमा! तिकिरिया वि, चउकिरिया वि, पंचकिरिया वि, अकिरिया वि।

२५. [प्र०] नेरइया णं भंते! ओरालियसरीरेहिंतो कतिकिरिया? [उ०] गोयमा! तिकिरिया वि, चउकिरिया वि, पंचकिरिया वि। एवं जाव वेमाणिया, नवरं मणुस्सा जहा जीवा।

२६. [प्र०] जीवे णं भंते! वेउव्वियसरीराओ कतिकिरिए? [उ०] गोयमा! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए सिय अकिरिए।

२७. [प्र०] नेरइए णं भंते! वेउव्वियसरीराओ कतिकिरिए? [उ०] गोयमा! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए; एवं जाव वेमाणिए, नवरं मणुस्से जहा जीवे। एवं जहा ओरालियसरीरेणं चत्तारि दंडगा भणिता तहा वेउव्वियसरीरेण वि चत्तारि दंडगा भाणियव्वा, नवरं पंचमकिरिया न भन्नइ, सेसं तं चेव। एवं जहा वेउव्वियं तहा आहारगं पि, तेयगं पि, कम्मगं पि भाणियव्वं; एक्केके चत्तारि दंडगा भाणियव्वा, जाव वेमाणिया णं भंते! कम्मगसरीरेहिंतो कतिकिरिया? गोयमा! तिकिरिया वि, चउकिरिया वि। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति।

अट्ठमसए छट्ठो उद्देसो समत्तो।

नैरयिक.

२१. [प्र०] हे भगवन्! एक नैरयिक [पर संबन्धी] औदारिक शरीरोने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय? [उ०] हे गौतम! जेम आ प्रथम दंडक [सू. १८] कह्यो छे तेम आ सघळा दंडको पण यावद् वैमानिक सुधी कहेवा, परन्तु मनुष्यो जीवोनी पेठे जाणवा.

जीवोने एक औदारिक शरीरने आश्रयी क्रिया.

२२. [प्र०] हे भगवन्! जीवो [पर संबन्धी] एक औदारिक शरीरने आश्रयी केटली क्रियावाळा होय? [उ०] हे गौतम! कदाच त्रणक्रियावाळा होय, यावत् कदाच क्रियारहित होय.

नैरयिकादिने क्रिया.

२३. [प्र०] हे भगवन्! नैरयिको [पर संबन्धी] औदारिक शरीरने आश्रयी केटली क्रियावाळा होय? [उ०] हे गौतम! जेम प्रथम दंडक [सू. १८.] कह्यो छे तेनी पेठे यावद् वैमानिक सुधी आ दंडक पण कहेवो, पण मनुष्यो जीवोनी पेठे कहेवा.

जीवोने औदारिक शरीरोने आश्रयी क्रिया.

२४. [प्र०] हे भगवन्! जीवो औदारिक शरीरोने आश्रयी केटली क्रियावाळा होय? [उ०] हे गौतम! कदाच त्रणक्रियावाळा पण होय, चारक्रियावाळा पण होय, पांचक्रियावाळा पण होय अने क्रिया रहित पण होय.

नैरयिकोने क्रिया.

२५. [प्र०] हे भगवन्! नैरयिको [परकीय] औदारिक शरीरोने आश्रयी केटली क्रियावाळा होय? [उ०] हे गौतम! त्रणक्रियावाळा पण होय, चारक्रियावाळा पण होय, अने पांचक्रियावाळा पण होय. ए प्रमाणे यावत् वैमानिको जाणवा. पण मनुष्यो जीवोनी पेठे जाणवा.

जीवने वैक्रिय शरीरने आश्रयी क्रिया.

२६. [प्र०] हे भगवन्! जीव [परकीय] वैक्रियशरीरने आश्रयी केटली क्रियावाळो होय? [उ०] हे गौतम! कदाच त्रणक्रियावाळो, कदाच चारक्रियावाळो *अने कदाच अक्रिय होय.

नैरयिकने वैक्रिय शरीरने आश्रयी क्रिया. मनुष्यने जीवनी पेठे क्रियाओ होय.

२७. [प्र०] हे भगवन्! नैरयिक [पर संबन्धी] वैक्रिय शरीरने आश्रयीने केटली क्रियावाळो होय? [उ०] हे गौतम! कदाच त्रणक्रियावाळो अने कदाच चारक्रियावाळो होय. ए प्रमाणे यावद् वैमानिक सुधी जाणवुं, पण मनुष्यने जीवनी पेठे जाणवो. ए प्रमाणे जेम औदारिक शरीरना चार दंडक कह्या, तेम वैक्रिय शरीरना पण चार दंडक कहेवा, परन्तु तेमां पांचमी क्रिया न कहेवी. बाकीनुं पूर्वनी पेठे जाणवुं. ए प्रमाणे जेम वैक्रियशरीर संबंधे कह्युं, तेम आहारक, तैजस अने कार्मण शरीर संबंधे पण कहेवुं. एक एकना चार दंडक कहेवा, यावत्–[प्र०] हे भगवन्! वैमानिको कार्मण शरीरोने आश्रयी केटली क्रियावाळा होय? [उ०] हे गौतम! त्रणक्रियावाळा पण होय अने चारक्रियावाळा पण होय. हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे. [एम कही यावद् भगवान् गौतम विहरे छे.]

वैमानिकोने कार्मण शरीरोने आश्रयी क्रियाओ.

अष्टमशतके षष्ठ उद्देशक समाप्त.

---

२६. * जीवने वैक्रिय शरीरने आश्रयी चार क्रियाओ होय छे, पांच क्रियाओ होती नथी. केमके वैक्रिय शरीरनो घात करवो अशक्य छे—टीका.

सत्तमो उद्देसो ।

१. तेणं कालेणं, तेणं समयेणं रायगिहे नयरे, वन्नओ, गुणसिलए चेइए, वन्नओ, जाव पुढविसिलावट्टओ । तस्स णं गुणसिलस्स चेइयस्स अदूरसामंते बहवे अन्नउत्थिया परिवसंति । तेणं कालेणं, तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे आदिगरे जाव समोसढे; जाव परिसा पडिगया । तेणं कालेणं, तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे अंतेवासी थेरा भगवंतो जातिसंपन्ना, कुलसंपन्ना, जहा बितियसए जाव जीवियास–मरणभयविप्पमुक्का, समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू, अहोसिरा, झाणकोट्ठोवगया संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा जाव विहरंति ।

२. तए णं ते अन्नउत्थिया जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता ते थेरे भगवंते एवं वयासी–तुम्भे णं अज्जो तिविहं तिविहेणं असंजय–विरय–प्पडिहय० जहा सत्तमसए बीतिए उद्देसए जाव एगंतबाला या वि भवह ।

३. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी–केण कारणेणं अज्जो ! अम्हे तिविहं तिविहेणं अस्संजय–विरय० जाव एगंतबाला यावि भवामो ?

४. तए णं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी–तुम्भे णं अज्जो ! अदिन्नं गेण्हह, अदिन्नं भुंजह, अदिन्नं सातिज्जह; तए णं ते तुम्भे अदिन्नं गेण्हमाणा, अदिन्नं भुंजमाणा, अदिन्नं सातिज्जमाणा तिविहं तिविहेणं असंजय–विरय० जाव एगंतबाला यावि भवह ।

सप्तम उद्देशक.

१. ते काले अने ते समये राजगृह नामे नगर हतुं. वर्णन. गुणसिलक चैत्य हतुं. वर्णन. यावत् पृथिवीशिलापट्टक हतो. ते गुणसिलक चैत्यनी आसपास थोडे दूर घणा अन्यतीर्थिको रहे छे. ते काले–ते समये श्रमण भगवान् महावीर, तीर्थना आदिना करनारा यावत् समोसर्या, यावत् परिषद् विसर्जित थइ. ते काले–ते समये श्रमण भगवंत महावीरना घणा शिष्यो, स्थविर भगवंतो जातिसंपन्न, कुलसंपन्न–इत्यादि जेम बीजा *शतकमां वर्णव्या छे तेवा, यावद् जीवितनी आशा अने मरणना भयथी रहित हता, अने श्रमण भगवंत महावीरनी आसपास उंचा ढींचण करी नीचे मस्तक नमावी, ध्यानरूप कोष्ठने प्राप्त थयेला, तेओ संयम अने तप वडे आत्माने भावित करता यावत् विहरे छे.

अन्यतीर्थिको अने स्थविरोनो संवाद.

२. त्यार पछी ते अन्यतीर्थिको ज्यां स्थविर भगवंतो छे त्यां आवे छे, अने त्यां आवीने तेओए ते स्थविर भगवंतोने एम कह्युं के— 'हे आर्यो ! तमे त्रिविधे त्रिविधे असंयत, अविरत अने अप्रतिहत पापकर्मवाळा छो'–इत्यादि जेम †सातमा शतकना बीजा उद्देशकमां कह्या प्रमाणे यावत् एकांत बाल–अज्ञ छो.

अन्यतीर्थिको. त्रिविधे त्रिविधे असंयत.

३. त्यार बाद ते स्थविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने एम कह्युं के, हे आर्यो ! अमे क्या कारणथी त्रिविधे त्रिविधे असंयत, अविरत यावद् एकांत बाल छीए.

स्थविरो.

४. त्यार बाद ते अन्यतीर्थिकोए ते स्थविर भगवंतोने एम कह्युं के, हे आर्यो ! तमे अदत्त (कोइए नहीं आपेल) पदार्थनुं ग्रहण करो छो, अदत्त पदार्थने खाओ छो अने अदत्तनो स्वाद लो छो–अर्थात् [ग्रहणादिकनी] अनुमति आपो छो, तेथी अदत्तनुं ग्रहण करता, अदत्तने जमता अने अदत्तनी अनुमति आपता तमे त्रिविध त्रिविधे असंयत, अने अविरत यावद् एकांत बाल पण छो.

अन्यतीर्थिको. त्रिविधे त्रिविधे असंयत होवानुं कारण.

---

१ तुब्भे णं क, तुब्भे णं ख । २ तुब्भे क ।

१. * भग० प्र. खं. पृ. २७८. श. २. उ. ५. पं. २. † भग. तु. खं. श. ७. उ. २. सू. १. पं ८.

५. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी–केण कारणेणं अज्जो ! अम्हे अदिण्णं गेण्हामो, अदिन्नं भुंजामो, अदिन्नं सातिज्जामो ? जए णं अम्हे अदिन्नं गेण्हमाणा, जाव अदिन्नं सातिज्जमाणा तिविहं तिविहेणं असंजय० जाव एगंतबाला यावि भवामो ?

६. तए णं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी–तुम्हाणं अज्जो ! दिज्जमाणे अदिन्ने, पडिग्गहेज्जमाणे अपडिग्गहिए, निस्सरिज्जमाणे अणिसिट्ठे; तुब्भं णं अज्जो ! दिज्जमाणं पडिग्गहगं असंपत्तं एत्थ णं अंतरा केइ अवहरिज्जा, गाहावइस्स णं तं, नो खलु तं तुब्भं; तए णं तुब्भे अदिन्नं गेण्हह, जाव अदिन्नं सातिज्जह; तए णं तुब्भे अदिन्नं गेण्हमाणा जाव एगंतबाला यावि भवह ।

७. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी–नो खलु अज्जो ! अम्हे अदिन्नं गेण्हामो, अदिन्नं भुंजामो, अदिन्नं सातिज्जामो; अम्हे णं अज्जो ! दिन्नं गेण्हामो, दिन्नं भुंजामो, दिन्नं सातिज्जामो । तए णं अम्हे दिन्नं गेण्हमाणा, दिन्नं भुंजमाणा दिन्नं सातिज्जमाणा तिविहं तिविहेणं संजय–विरय–पडिहय० जहा सत्तमसए जाव एगंतपंडिया यावि भवामो ।

८. तए णं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी–केण कारणेणं अज्जो ! तुम्हे दिन्नं गेण्हह, जाव दिन्नं सातिज्जह, जए णं तुब्भे दिन्नं गेण्हमाणा, जाव एगंतपंडिया यावि भवह ?

९. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी–अम्हे (म्हं) णं अज्जो ! दिज्जमाणे दिन्ने, पडिग्गाहिज्जमाणे पडिग्गहिए, निस्सरिज्जमाणे निसिट्ठे; अम्हं णं अज्जो ! दिज्जमाणं पडिग्गहगं असंपत्तं एत्थ णं अंतरा केइ अवहरेज्जा, अम्हं णं तं, नो खलु तं गाहावइस्स; तए णं अम्हे दिन्नं गेण्हामो, दिन्नं भुंजामो, दिन्नं सातिज्जामो, तए णं अम्हे दिन्नं गेण्हमाणा, जाव दिन्नं सातिज्जमाणा तिविहं तिविहेणं संजय० जाव एगंतपंडिया वि भवामो । तुब्भे णं अज्जो ! अप्पणा चेव तिविहं तिविहेणं अस्संजय० जाव एगंतबाला यावि भवह ।

स्थविरो. क्या कारणथी अमे अदत्त ग्रहण करीए छीए?

५. त्यार बाद ते स्थविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने एम कह्युं के, हे आर्यो ! क्या कारणथी अमे अदत्तनुं ग्रहण करीए छीए, अदत्तनुं भोजन करीए छीए अने अदत्तनी अनुमति आपीए छीए के जेथी अदत्तने ग्रहण करता, यावत् अदत्तनी अनुमति आपता अमे त्रिविध त्रिविधे असंयत, यावत् एकांत बाल छीए ?

अन्यतीर्थिको.

६. त्यार बाद ते अन्यतीर्थिकोए ते स्थविर भगवंतोने एम कह्युं के, हे आर्यो ! तमारा मतमां अपातुं होय ते आपेलुं नथी, ग्रहण करातुं होय ते ग्रहण करायेलुं नथी, [पात्रमां] नंखातुं होय ते नंखायेलुं नथी. हे आर्यो ! तमने आपवामां आवतो पदार्थ ज्यां सुधी पात्रमां पड्यो नथी, तेवामां वचमांथीज ते पदार्थने कोइ अपहरण करे तो ते गृहपतिना पदार्थनुं अपहरण थयुं एम कहेवाय, पण तमारा पदार्थनुं अपहरण थयुं एम न कहेवाय, तेथी तमे अदत्तनुं ग्रहण करो छो, यावद् अदत्तनी अनुमति आपो छो, माटे अदत्तनुं ग्रहण करता तमे यावत् एकांत अज्ञ छो.

स्थविरो.

७. त्यार पछी ते स्थविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने एम कह्युं के हे आर्यो ! अमे अदत्तनुं ग्रहण करता नथी, अदत्तनुं भोजन करता नथी अने अदत्तनी अनुमति पण आपता नथी, हे आर्यो ! अमे दत्तनुं–आपेल पदार्थनुं ग्रहण करीए छीए, दत्तनुं भोजन करीए छीए, अने दत्तनी अनुमति आपीए छीए, माटे दत्तनुं ग्रहण करता, दत्तनुं भोजन करता अने दत्तनी अनुमति आपता अमे त्रिविध त्रिविधे संयत, विरत अने पापकर्मनो नाश करवावाळा *सप्तम शतकमां कह्या प्रमाणे यावत् एकांत पंडित छीए.

अन्यतीर्थिको.

८. त्यार बाद ते अन्यतीर्थिकोए ते स्थविर भगवंतोने एम कह्युं के, हे आर्यो ! तमे क्या कारणथी दत्तनुं ग्रहण करो छो, यावत् दत्तनी अनुमति आपो छो, जेथी दत्तनुं ग्रहण करता तमे यावद् एकांत पंडित छो ?

स्थविरो.

९. ते पछी ते स्थविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने ए प्रमाणे कह्युं के हे आर्यो ! अमारा मतमां अपातुं ते अपायेलुं, ग्रहण करातुं ते ग्रहण करायलुं, अने [पात्रमां] नंखातुं ते नंखायेलुं छे, जेथी हे आर्यो ! अमने देवातो पदार्थ ज्यांसुधी पात्रमां नथी पड्यो तेवामां वचमां कोइ ते पदार्थनो अपहार करे तो ते अमारा पदार्थनो अपहार थयो एम कहेवाय, पण ते गृहपतिना पदार्थनो अपहार थयो एम न कहेवाय, माटे अमे दत्तनुं ग्रहण करीए छीए, दत्तनुं भोजन करीए छीए, अने दत्तनी अनुमति आपीए छीए, तेथी दत्तनुं ग्रहण करता, यावत् दत्तनी अनुमति आपता अमे त्रिविध त्रिविधे संयत, यावद् एकांत पंडित पण छीए. हे आर्यो ! तमे पोतेज त्रिविध त्रिविधे असंयत यावद् एकांत बाल छो.

---

१ तए णं क । २ जए णं ख । ३ तुज्झे णं ख ।

५. * भग. गु. खं. पृ. ७ श. ७. उ. २. सू. १.

१०. तए णं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी—केण कारणेणं अज्जो ! अम्हे तिविहं जाव एगंतबाला यावि भवामो ?

११. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी—तुब्भे णं अज्जो ! अदिन्नं गेण्हह, अदिन्नं भुंजह, अदिन्नं सातिज्जह; तए णं तुब्भे अदिन्नं गेण्हमाणा, जाव एगंतबाला यावि भवह ।

१२. तए णं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी—केण कारणेणं अज्जो ! अम्हे अदिन्नं गेण्हामो, जाव एगंतबाला या वि भवामो ?

१३. तए णं ते [3]थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी—तुब्भे (ब्भं) णं अज्जो ! दिज्जमाणे अदिन्ने, तं चेव जाव गाहावइस्स णं तं, णो खलु तं तुब्भं; तए णं तुज्झे अदिन्नं गेण्हह, तं चेव जाव एगंतबाला यावि भवह ।

१४. तए णं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी—तुब्भे णं अज्जो ! तिविहं तिविहेणं अस्संजय० जाव एगंतबाला यावि भवह ।

१५. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी—केण कारणेणं अज्जो ! अम्हे तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबाला यावि भवामो ?

१६. तए णं ते अन्नउत्थिया ते थेरे भगवंते एवं वयासी—तुब्भे णं अज्जो ! रीयं रीयमाणा पुढविं पेच्चेह, अभिहणह, वत्तेह, लेसेह, संघाएह संघट्टेह परितावेह, किलामेह, उद्दवेह; तए णं तुब्भे पुढविं पेच्चेमाणा, अभिहणमाणा जाव उद्दवेमाणा तिविहं तिविहेणं असंजय-विरय० जाव एगंतबाला यावि भवह ।

१७. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी—नो खलु अज्जो ! अम्हे रीयं रीयमाणा पुढविं पेच्चामो, अभिहणामो, जाव उवद्दवेमो; अम्हे णं अज्जो ! रीयं रीयमाणा कायं वा, जोयं वा, रियं वा पडुच्च देसं देसेणं वयामो, पएसं पएसेणं वयामो; तेणं अम्हे देसं देसेणं वयमाणा पएसं पएसेणं वयमाणा नो पुढविं पेच्चेमो, अभिहणामो, जाव उवद्दवेमो; तए णं अम्हे पुढविं अपेच्चेमाणा, अणभिहणेमाणा, जाव अणुवद्दवेमाणा तिविहं तिविहेणं संजय० जाव एगंतपंडिया यावि भवामो । तुब्भे णं अज्जो ! अप्पणा चेव तिविहं तिविहेणं अस्संजय० जाव बाला यावि भवह ।

१०. त्यार बाद ते अन्यतीर्थिकोए ते स्थविर भगवंतोने एम कह्युं के, हे आर्यो ! क्या कारणथी अमे त्रिविध त्रिविधे यावद् एकांत बाल छीए ? **अन्यतीर्थिको.**

११. त्यार बाद ते स्थविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने एम कह्युं के, हे आर्यो ! तमे अदत्तनुं ग्रहण करो छो, अदत्तनुं भोजन करो छो अने अदत्तनी अनुमति आपो छो माटे अदत्तनुं ग्रहण करता तमे यावद् एकांत बाल छो. **स्थविरो.**

१२. त्यार पछी ते अन्यतीर्थिकोए ते स्थविर भगवंतोने एम कह्युं के, हे आर्यो ! अमे क्या कारणथी अदत्तनुं ग्रहण करीए छीए, यावद् एकांत बाल छीए ? **अन्यतीर्थिको.**

१३. त्यार बाद ते स्थविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने एम कह्युं के, हे आर्यो ! तमारा मतमां अपातुं ते अपायेलुं नथी—इत्यादि पूर्वनी पेठे कहेवुं. यावद् ते वस्तु गृहपतिनी छे, पण तमारी नथी, माटे तमे अदत्तनुं ग्रहण करो छो, यावद् पूर्व प्रमाणे तमे एकांत बाल छो. **स्थविरो.**

१४. त्यार पछी ते अन्यतीर्थिकोए ते स्थविर भगवंतोने एम कह्युं के, हे आर्यो ! तमे त्रिविध त्रिविधे असंयत यावद् एकांत बाल छो. **अन्यतीर्थिको.**

१५. त्यार बाद ते स्थविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने एम कह्युं के, हे आर्यो ! अमे क्या कारणथी त्रिविध त्रिविधे यावद् एकांत बाल छीए ? **स्थविरो.**

१६. त्यार पछी ते अन्यतीर्थिकोए ते स्थविर भगवंतोने एम कह्युं के, हे आर्यो ! तमे गति करता पृथिवीना जीवने दबावो छो, हणो छो, पादाभिघात करो छो, श्लिष्ट (संघर्षित) करो छो, संहत—एकठा करो छो, संघट्टित—स्पर्शित करो छो, परितापित करो छो, क्लांत करो छो अने तेओने मारो छो; तेथी पृथिवीना जीवने दबावता, यावत् मारता तमे त्रिविध त्रिविधे असंयत, अविरत अने यावद् एकांत बाल पण छो. **अन्यतीर्थिको.**

१७. त्यार बाद ते स्थविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने एम कह्युं के, हे आर्यो ! गति करता अमे पृथिवीना जीवने दबावता नथी, हणता नथी, यावत् तेओने मारता नथी, हे आर्यो ! गति करता अमे कायना (शरीरना) कार्यने आश्रयी, योगने (ग्लानादिनी सेवाने) आश्रयी अने सत्यने (जीवरक्षणरूप संयमने) आश्रयी एक स्थळेथी बीजे स्थळे जइए छीए, एक प्रदेशथी बीजे प्रदेशे जइए छीए, तो एक स्थळेथी बीजे स्थळे जता अने एक प्रदेशथी बीजे प्रदेशे जता अमे पृथिवीना जीवने दबावता नथी, तेओने हणता नथी, यावत् तेओने मारता नथी; तेथी पृथिवीना जीवोने नहि दबावता, नहीं हणता, यावत् नहीं मारता अमे त्रिविध त्रिविधे संयत, यावद् एकांत पंडित छीए. हे आर्यो ! तमे पोतेज त्रिविध त्रिविधे असंयत यावद् एकांत बाल पण छो. **स्थविरो.**

---

१ तुज्झे णं ख । २ तुज्झे ख । ३ थेरे भगवंते ते ख ।

१८. तए णं ते अन्नउत्थिया थेरे भगवंते एवं वयासी–केण कारणेणं अज्जो ! अम्हे तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबाला यावि भवामो ?

१९. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी–तुब्भे णं अज्जो ! रीयं रीयमाणा पुढविं पेच्चेह, जाव उवद्दवेह; तए णं तुब्भे पुढविं पेच्चेमाणा, जाव उवद्दवेमाणा तिविहं तिविहेणं जाव एगंतबाला यावि भवह ।

२०. तए णं ते अन्नउत्थिया थेरे भगवंते एवं वयासी–तुब्भे (ब्भं) णं अज्जो ! गम्ममाणे अगते, वीतिक्कमिज्जमाणे अवीतिक्कंते, रायगिहं नगरं संपाविउकामे असंपत्ते ।

२१. तए णं ते थेरा भगवंतो ते अन्नउत्थिए एवं वयासी–नो खलु अज्जो ! अम्हं गम्ममाणे अगए, वीतिक्कमिज्जमाणे अवीतिक्कंते, रायगिहं नगरं जाव असंपत्ते; अम्हं णं अज्जो ! गम्ममाणे गए, वीतिक्कमिज्जमाणे वीतिक्कंते, रायगिहं नगरं संपाविउकामे संपत्ते; तुब्भं णं अप्पणा चेव गम्ममाणे अगए, वीतिक्कमिज्जमाणे अवीतिक्कंते, रायगिहं नगरं जाव असंपत्ते । तए णं ते थेरा भगवंतो अन्नउत्थिए एवं पडिहणंति, पडिहणित्ता गइप्पवायं नाम अज्झयणं पन्नवइंसु ।

२२. [प्र०] कइविहे णं भंते ! गइप्पवाए पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! पंचविहे गइप्पवाए पन्नत्ते, तं जहा–पयोगगई, ततगई, बंधण–छेयणगई, उववायगई, विहायगती; एत्तो आरम्भ पयोगपयं निरवसेसं भाणियव्वं, जाव सेत्तं विहायगई । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

अट्ठमसए सत्तमो उद्देसो समत्तो ।

अन्यतीर्थिको. १८. त्यार पछी ते अन्यतीर्थिकोए ते स्थविर भगवंतोने एम कह्युं के, हे आर्यो ! क्या कारणथी अमे त्रिविध त्रिविधे यावद् एकांत बाल पण छीए ?

स्थविरो. १९. त्यार बाद ते स्थविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने एम कह्युं के, हे आर्यो ! गति करता तमे पृथिवीना जीवने दबावो छो, यावत् मारो छो, माटे पृथिवीना जीवने दबावता, यावत् मारता तमे त्रिविध त्रिविधे [असंयत] यावद् एकांत बाल छो.

अन्यतीर्थिको. २०. त्यार पछी ते अन्यतीर्थिकोए ते स्थविर भगवंतोने एम कह्युं के, हे आर्यो ! तमारा (मते) गम्यमान–जे स्थळे जवातुं होय ते अगत–न जवायेलुं कहेवाय, जे उल्लंघन करातुं होय ते न उल्लंघन करायेलुं एम कहेवाय, अने राजगृह नगरने प्राप्त करवानी इच्छावाळाने न प्राप्त थयुं एम कहेवाय.

स्थविरो. २१. ते पछी ते स्थविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने एम कह्युं के, हे आर्यो ! अमारा (मते) गम्यमान–जे स्थळे जवातुं होय ते अगत–न जवायेलुं, व्यतिक्रम्यमाण–उल्लंघन करातुं ते अव्यतिक्रांत–उल्लंघन न करायेलुं, अने राजगृहनगरने प्राप्त करवानी इच्छावाळाने असंप्राप्त–न प्राप्त थयेलुं न कहेवाय, पण हे आर्यो ! अमारा (मते) गम्यमान ते गत, व्यतिक्रम्यमाण ते व्यतिक्रांत अने राजगृह नगरने प्राप्त करवानी इच्छावाळाने ते संप्राप्त कहेवाय छे. तमारे मते गम्यमान ते अगत, व्यतिक्रम्यमाण ते अव्यतिक्रांत अने राजगृह नगरने यावत् प्राप्त करवानी इच्छावाळाने ते असंप्राप्त छे. ते पछी ते स्थविर भगवंतोए ते अन्यतीर्थिकोने ए प्रमाणे निरुत्तर कर्या, अने निरुत्तर करीने तेओए गतिप्रपात नामे अध्ययन प्ररूप्युं.

गतिप्रपात. २२. [प्र०] हे भगवन् ! गतिप्रपातो केटला प्रकारे कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! गतिप्रपातो पांच प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे–*१ प्रयोगगति, २ ततगति, ३ बंधनछेदनगति, ४ उपपातगति अने ५ विहायोगति. अहींथी आरंभीने सघळुं †प्रयोगपद अहीं कहेवुं. यावत् ए प्रमाणे विहायोगति छे. हे भगवन् ! ते एमज छे. हे भगवन् ! ते एमज छे. [एम कहीने भगवान् गौतम यावद् विहरे छे.]

अष्टम शतके सप्तम उद्देशक समाप्त.

---

२२. * १ प्रयोग–सत्यमनोयोगादि व्यापार पंदर प्रकारनो छे, ते वडे मन वगेरेना पुद्गलोनी गति ते प्रयोगगति. २ तत—विस्तीर्ण गति. जेम देवदत्त गाम जाय छे, केमके आ गति विस्तारवाळी छे, माटे एटला विशेषथी प्रयोगगतिथी जूदी कही छे. ३ बन्धनना छेद वडे जे गति थाय ते बन्धनछेदगति; ते जीवमुक्त शरीरनी के शरीरमुक्त जीवनी जाणवी. ४ क्षेत्रादिकमां जे गति ते उपपात गति. आकाशादिकमां नारकादि, सिद्ध जीवो, अथवा पुद्गलोनी गति. ५ आकाशमां गमन करवुं ते विहायोगति. जेमके परमाणुनी लोकान्त सुधी गति थाय छे. † प्रज्ञा. पद. १६–प. ३२५—२

अट्ठमो उद्देसो।

१. [प्र०] रायगिहे जाव एवं वयासी–गुरू णं भंते! पडुच्च कति पडिणीया पन्नत्ता? [उ०] गोयमा! तओ पडिणीया पन्नत्ता, तं जहा–आयरियपडिणीए, उवज्झायपडिणीए, थेरपडिणीए।

२. [प्र०] गतिं णं भंते! पडुच्च कति पडिणीया पन्नत्ता? [उ०] गोयमा! तओ पडिणीया पन्नत्ता, तं जहा–इहलोगपडिणीए, परलोगपडिणीए, दुहओलोगपडिणीए।

३. [प्र०] समूहं णं भंते! पडुच्च कति पडिणीया पन्नत्ता? [उ०] गोयमा! तओ पडिणीया पन्नत्ता, तं जहा–कुलपडिणीए, गणपडिणीए, संघपडिणीए।

४. [प्र०] अणुकंपं पडुच्च पुच्छा। [उ०] गोयमा! तओ पडिणीया पन्नत्ता, तं जहा–तवस्सिपडिणीए, गिलाणपडिणीए, सेहपडिणीए।

५. [प्र०] सुयं णं भंते! पडुच्च पुच्छा। [उ०] गोयमा! तओ पडिणीया पन्नत्ता, तं जहा–सुत्तपडिणीए, अत्थपडिणीए, तदुभयपडिणीए।

६. [प्र०] भावं णं भंते! पडुच्च पुच्छा। [उ०] गोयमा! तओ पडिणीया पन्नत्ता, तं जहा–नाणपडिणीए, दंसणपडिणीए, चरित्तपडिणीए।

अष्टम उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां [गौतमे] यावद् ए प्रमाणे कह्युं के हे भगवन्! गुरुओने आश्रयी केटला प्रत्यनीको (द्वेषी) कह्या छे? [उ०] हे गौतम! त्रण *प्रत्यनीको कह्या छे, ते आ प्रमाणे—आचार्यप्रत्यनीक, उपाध्यायप्रत्यनीक अने स्थविरप्रत्यनीक.

गुरुप्रत्यनीक.

२. [प्र०] हे भगवन्! †गतिने आश्रयी केटला प्रत्यनीको कह्या छे? [उ०] हे गौतम! त्रण प्रत्यनीको कह्या छे, ते आ प्रमाणे—इहलोकप्रत्यनीक, परलोकप्रत्यनीक अने उभयलोकप्रत्यनीक.

गतिप्रत्यनीक.

३. [प्र०] हे भगवन्! समूहने आश्रयी केटला प्रत्यनीको कह्या छे? [उ०] हे गौतम! त्रण प्रत्यनीको कह्या छे, ते आ प्रमाणे—कुलप्रत्यनीक, गणप्रत्यनीक अने संघप्रत्यनीक.

समूहप्रत्यनीक.

४. [प्र०] हे भगवन्! अनुकंपाने आश्रयी प्रश्न; अर्थात् केटला प्रत्यनीको कह्या छे? [उ०] हे गौतम! अनुकंपाने आश्रयी त्रण प्रत्यनीको कह्या छे, ते आ प्रमाणे—तपस्विप्रत्यनीक, ग्लानप्रत्यनीक अने शैक्षप्रत्यनीक.

अनुकंपाप्रत्यनीक.

५. [प्र०] हे भगवन्! श्रुतने आश्रयी प्रश्न. [उ०] हे गौतम! त्रण प्रत्यनीको कह्या छे, ते आ प्रमाणे—सूत्रप्रत्यनीक, अर्थप्रत्यनीक अने तदुभयप्रत्यनीक.

श्रुतप्रत्यनीक.

६. [प्र०] हे भगवन् भावने आश्रयी प्रश्न. [उ०] हे गौतम! त्रण प्रत्यनीको कह्या छे, ते आ प्रमाणे—ज्ञानप्रत्यनीक, दर्शनप्रत्यनीक अने चारित्रप्रत्यनीक.

भावप्रत्यनीक.

---

१. * प्रत्यनीक–विरोधी अथवा द्वेषी. आचार्य, उपाध्याय अने स्थविरनो द्वेषी होय. स्थविर–उम्मर, श्रुत अथवा दीक्षा पर्याये जे साधु मोटो होय ते.–टीका.

२. † मनुष्यत्वादि गतिने आश्रयी त्रण प्रत्यनीको छे, १ तेमां इन्द्रियादिकनी प्रतिकूल अज्ञानकष्टाचरण करनार इहलोकप्रत्यनीक कहेवाय छे, २ इन्द्रियना विषयमां तत्पर ते परलोकप्रत्यनीक अने चौर्यादिकवडे इन्द्रियना विषयोमां तत्पर ते उभयलोकप्रत्यनीक.—टीका.

७. [प्र०] कइविहे णं भंते ! ववहारे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! पंचविहे ववहारे पन्नत्ते, तं जहा—आगमे, सुतं, आणा, धारणा, जीए । जहा से तत्थ आगमे सिया आगमेणं ववहारं पट्ठवेज्जा; णो य से तत्थ आगमे सिया, जहा से तत्थ सुते सिया, सुएणं ववहारं पट्ठवेज्जा । णो य से तत्थ सुए सिया, जहा से तत्थ आणा सिया, आणाए ववहारं पट्ठवेज्जा; णो य से तत्थ आणा सिया, जहा से तत्थ धारणा सिया, धारणाए ववहारं पट्ठवेज्जा; णो य से तत्थ धारणा सिया, जहा से तत्थ जीए सिया, जीएणं ववहारं पट्ठवेज्जा; इच्चेएहिं पंचहिं ववहारं पट्ठवेज्जा, तं जहा—आगमेणं, सुएणं, आणाए, धारणाए, जीएणं; जहा जहा से आगमे सुए आणा धारणा जीए तहा तहा ववहारं पट्ठवेज्जा ।

८. [प्र०] से किमाहु भंते ! आगमबलिया समणा णिग्गंथा ? [उ०] इच्चेतं पंचविहं ववहारं जया जया जहिं जहिं तहा तहा तहिं तहिं अणिस्सिओवस्सितं सम्मं ववहरमाणे समणे निग्गंथे आणाए आराहए भवइ ।

९. [प्र०] कइविहे णं भंते ! बंधे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! दुविहे बंधे पन्नत्ते, तं जहा—इरियावहियाबंधे य संपराइयबंधे य ।

१०. [प्र०] इरियावहियं णं भंते ! कम्मं किं नेरइओ बंधइ, तिरिक्खजोणिओ बंधइ, तिरिक्खजोणिणी बंधइ, मणुस्सो बंधइ, मणुस्सी बंधइ, देवो बंधइ, देवी बंधइ ? [उ०] गोयमा ! नो नेरइओ बंधइ, नो तिरिक्खजोणिओ बंधइ, नो देवो बंधइ, नो देवी बंधइ । पुव्वपडिवन्नए पडुच्च मणुस्सा य मणुस्सीओ य बंधंति, पडिवज्जमाणए पडुच्च १ मणुस्सो वा बंधइ, २ मणुस्सी वा बंधइ, ३ मणुस्सा वा बंधंति, ४ मणुस्सीओ वा बंधंति, ५ अहवा मणुस्सो य मणुस्सी य बंधइ, ६ अहवा मणुस्सो य मणुस्सीओ य बंधंति, ७ अहवा मणुस्सा य मणुस्सी य बंधंति, ८ अहवा मणुस्सा य मणुस्सीओ य बंधंति ।

व्यवहार.

७. [प्र०] हे भगवन् ! व्यवहार केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! व्यवहार पांच प्रकारे कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—१ *आगमव्यवहार, २ श्रुतव्यवहार, ३ आज्ञाव्यवहार, ४ धारणाव्यवहार अने ५ जीतव्यवहार. ते पांच प्रकारना व्यवहारमां तेनी पासे जे प्रकारे आगम होय ते प्रकारे तेणे आगमथी व्यवहार चलाववो, तेमां जो आगम न होय तो जे प्रकारे तेनी पासे श्रुत होय ते श्रुत वडे व्यवहार चलाववो, अथवा जो तेमां श्रुत न होय तो जे प्रकारे तेनी पासे आज्ञा होय ते प्रकारे तेणे आज्ञावडे व्यवहार चलाववो. जो तेमां आज्ञा न होय तो जे प्रकारे तेनी पासे धारणा होय ते प्रकारे धारणा वडे तेणे व्यवहार चलाववो. जो तेमां धारणा न होय तो जे प्रकारे तेनी पासे जीत होय ते प्रकारे तेणे जीत वडे व्यवहार चलाववो. ए प्रमाणे ए पांच व्यवहारो वडे व्यवहार चलाववो, ते आ प्रमाणे—आगम, श्रुत, आज्ञा, धारणा अने जीत वडे जे जे प्रकारे तेनी पासे आगम, श्रुत, आज्ञा, धारणा अने जीत होय ते ते प्रकारे तेणे व्यवहार चलाववो.

व्यवहारनुं फळ.

८. [प्र०] हे भगवन् ! आगमना बलवाळा श्रमण निर्ग्रंथो शुं कहे छे ? अर्थात् पंचविध व्यवहारनुं फल शुं कहे छे ? [उ०] ए प्रकारे आ पांच प्रकारना व्यवहारने ज्यारे ज्यारे अने ज्यां ज्यां (उचित होय) त्यारे त्यारे त्यां त्यां अनिश्रोपश्रित–राग द्वेषना त्यागपूर्वक सारी-रीते व्यवहरतो श्रमण निर्ग्रंथ आज्ञानो आराधक थाय छे.

ऐर्यापथिक अने सांपरायिक बंध.

९. [प्र०] हे भगवन् ! बन्ध केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! बन्ध बे प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—ऐर्यापथिकबन्ध अने सांपरायिक बन्ध.

ऐर्यापथिक बंधना स्वामी.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! ऐर्यापथिक कर्म शुं १ नारक बांधे, २ तिर्यंच बांधे, ३ तिर्यंच स्त्री बांधे, ४ मनुष्य बांधे, ५ मनुष्यस्त्री बांधे, ६ देव बांधे के ७ देवी बांधे ? [उ०] हे गौतम ! १ नारक बांधतो नथी, २ तिर्यंच बांधतो नथी, ३ तिर्यंचस्त्री बांधती नथी, ४ देव बांधतो नथी अने ५ देवी बांधती नथी; पण †पूर्वप्रतिपन्नने आश्रयी मनुष्यो अने मनुष्य स्त्रीओ बांधे छे. प्रतिपद्यमानने आश्रयी १ मनुष्य बांधे छे. २ अथवा मनुष्यस्त्री बांधे छे. ३ अथवा मनुष्यो बांधे छे. ४ अथवा मनुष्यस्त्रीओ बांधे छे; ५ अथवा मनुष्य अने मनुष्यस्त्री बांधे छे. ६ अथवा मनुष्य अने मनुष्यस्त्रीओ बांधे छे. ७ अथवा मनुष्यो अने मनुष्यस्त्री बांधे छे. ८ अथवा मनुष्यो अने मनुष्यस्त्रीओ बांधे छे.

---

७. * व्यवहार एटले मुमुक्षुनी प्रवृत्ति, तेनुं कारण जे ज्ञान ते पण व्यवहार कहेवाय छे. १ आगम–केवलज्ञान, मनःपर्यव, अवधिज्ञान, चउद पूर्व, दश पूर्व अने नव पूर्व. २ श्रुत–आचारकल्पादि, ३ आज्ञा–अगीतार्थनी पासे गूढअर्थवाळा पदो वडे बीजा देशमां रहेला गीतार्थने निवेदन करवा माटे अतीचारनी आलोचना लेवी अने ते प्रमाणे बीजाना दोषनी पण शुद्धि करवी. ४ धारणा–गीतार्थे द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावनो विचार करी जे दोषनी जे शुद्धि करी होय तेने अवधारीने वैयावच्च करनारा वगेरेने प्रायश्चित्त आपवुं. ५ जीत–द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावादिनी अपेक्षाए शारीरिक बल, धैर्य वगेरेनी हानिनो विचार करी प्रायश्चित्त आपवुं. विशेष माटे जुओ भ. टी. प. ३८४–२.

१०. † जेणे पूर्वे ऐर्यापथिक बन्ध कर्यो होय ते पूर्वप्रतिपन्न कहेवाय छे, अर्थात् ऐर्यापथिक बन्धना बीजा, त्रीजा वगेरे समयमां वर्तमान होय ते. तेवा घणा पुरुषो अने स्त्रीओ होय छे. केमके बन्ने प्रकारना केवलिओ हमेशां होय छे, ऐर्यापथिक कर्मना बन्धक वीतराग—उपशान्त मोह, क्षीणमोह, अने सयोगि केवली गुणस्थानके वर्तता होय छे. ऐर्यापथिकबन्धना प्रथम समये जेओ वर्तता होय ते प्रतिपद्यमान कहेवाय छे, अने तेओनो विरह संभवित होवाथी मनुष्य अने मनुष्यस्त्री एक एकना संयोगे अने एक ने बहुना योगे चार विकल्प थाय छे. द्विकसंयोगे पण चार विकल्पो थाय छे. ए प्रमाणे सर्व मळीने आठ विकल्पो थाय छे.—टीका.

११. [प्र०] तं भंते ! किं इत्थी बंधइ, पुरिसो बंधइ, नपुंसगो बंधइ; इत्थीओ बंधंति, पुरिसा बंधंति, नपुंसगा बंधंति; नोइत्थी, नोपुरिसो, नोनपुंसगो बंधइ ? [उ०] गोयमा नोइत्थी बंधइ, नोपुरिसो बंधइ, जाव नोनपुंसगो बंधइ; पुव्वपडिवन्नए पडुच्च अवगयवेदा वा बंधंति, पडिवज्जमाणए पडुच्च अवगयवेदो वा बंधति अवगयवेदा वा बंधंति ।

१२. [प्र०] जइ भंते ! अवगयवेदो वा बंधइ, अवगयवेदा वा बंधंति तं भंते ! किं १ इत्थीपच्छाकडो बंधइ, २ पुरिसपच्छाकडो बंधइ, ३ नपुंसगपच्छाकडो बंधइ, ४ इत्थीपच्छाकडा बंधंति ५ पुरिसपच्छाकडा बंधंति, ६ नपुंसगपच्छाकडा बंधंति; उदाहु इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य बंधंति, इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडा य बंधंति ४, उदाहु इत्थीपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडो य बंधइ ४, उदाहु पुरिसपच्छाकडो य नपुंसगपच्छाकडो य बंधइ ४, उदाहु इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य णपुंसगपच्छाकडो य बंधइ ८; एवं एते छव्वीसं भंगा, जाव उदाहु इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडा य बंधंति ? [उ०] गोयमा ! १ इत्थीपच्छाकडो वि बंधइ, २ पुरिसपच्छाकडो वि बंधइ, ३ नपुंसगपच्छाकडो वि बंधइ; ४ इत्थीपच्छाकडा वि बंधंति, ५ पुरिसपच्छाकडा वि बंधंति, ६ नपुंसगपच्छाकडा वि बंधंति; ७ अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य बंधइ, एवं एए चेव छव्वीसं भंगा भाणियव्वा, जाव अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य नपुंसकपच्छाकडा य बंधंति ।

१३. [प्र०] तं भंते ! किं १ बंधी बंधइ बंधिस्सइ, २ बंधी बंधइ न बंधिस्सइ, ३ बंधी न बंधइ बंधिस्सइ, ४ बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ, ५ न बंधी बंधइ बंधिस्सइ, ६ न बंधी बंधइ न बंधिस्सइ, ७ न बंधी न बंधइ बंधिस्सइ, ८ न बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ? [उ०] गोयमा ! भवागरिसं पडुच्च अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बंधी बंधइ न बंधिस्सइ, एवं तं चेव सव्वं जाव अत्थेगतिए न बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ । गहणागरिसं पडुच्च अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ, एवं जाव अत्थेगतिए न बंधी बंधइ बंधिस्सइ, णो चेव णं न बंधी बंधइ न बंधिस्सइ, अत्थेगतिए न बंधी न बंधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए न बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ।

११. [प्र०] हे भगवन् ! ते ऐर्यापथिक कर्मने शुं १ स्त्री बांधे, २ पुरुष बांधे, ३ नपुंसक बांधे, ४ स्त्रीओ बांधे, ५ पुरुषो बांधे, ६ नपुंसको बांधे, ७ नोस्त्री, नोपुरुष, के नोनपुंसक बांधे ? [उ०] हे गौतम ! स्त्री न बांधे, पुरुष न बांधे, यावद् नपुंसको न बांधे; अथवा पूर्वप्रतिपन्नने आश्रयी वेदरहित जीवो बांधे, अथवा प्रतिपद्यमानने आश्रयी वेदरहित जीव अथवा वेदरहित जीवो बांधे.

ऐर्यापथिकने वेद रहित बांधे.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! जो वेदरहित जीव या वेदरहित जीवो ऐर्यापथिक कर्मने बांधे तो शुं १ स्त्रीपश्चात्कृत (जेने पूर्वे स्त्रीवेद होय एवो) जीव बांधे, २ पुरुषपश्चात्कृत (जेने पूर्वे पुरुषवेद होय एवो) जीव बांधे, ३ नपुंसकपश्चात्कृत (जेने पूर्वे नपुंसक वेद होय एवो) जीव बांधे, ४ स्त्रीपश्चात्कृत जीवो बांधे, ५ पुरुषपश्चात्कृत जीवो बांधे, के ६ नपुंसकपश्चात्कृत जीवो बांधे ?; ४ अथवा स्त्रीपश्चात्कृत अने पुरुषपश्चात्कृत जीव बांधे ? स्त्रीपश्चात्कृत अने पुरुषपश्चात्कृत जीवो बांधे ? ४ अथवा स्त्रीपश्चात्कृत अने नपुंसकपश्चात्कृत बांधे ? ४ अथवा पुरुषपश्चात्कृत अने नपुंसकपश्चात्कृत बांधे ? ८ अथवा स्त्रीपश्चात्कृत, पुरुषपश्चात्कृत अने नपुंसकपश्चात्कृत पण कहेवा. ए प्रमाणे ए छव्वीश भंगो जाणवा, यावत् अथवा स्त्रीपश्चात्कृतो, पुरुषपश्चात्कृतो अने नपुंसकपश्चात्कृतो बांधे ? [उ०] हे गौतम ! १ स्त्रीपश्चात्कृत पण बांधे. २ पुरुषपश्चात्कृत पण बांधे अने ३ नपुंसकपश्चात्कृत पण बांधे ४ स्त्रीपश्चात्कृतो बांधे, ५ पुरुषपश्चात्कृतो बांधे अने ६ नपुंसकपश्चात्कृतो पण बांधे, अथवा ७ स्त्रीपश्चात्कृतो अने पुरुषपश्चात्कृतो बांधे, ए प्रमाणे ए छव्वीश भांगा कहेवा. यावत् अथवा स्त्रीपश्चात्कृतो, पुरुषपश्चात्कृतो अने नपुंसकपश्चात्कृतो बांधे.

स्त्रीपश्चात्कृतादि बांधे.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! ते (ऐर्यापथिक कर्मने) कोइए शुं बांध्युं छे, बांधे छे, अने बांधशे; २ बांध्युं छे, बांधे छे अने नहीं बांधे; ३ बांध्युं छे, बांधतो नथी अने बांधशे; ४ बांध्युं छे, बांधतो नथी अने नहि बांधे; ५ बांध्युं नथी बांधे छे अने बांधशे; ६ बांध्युं नथी, बांधे छे अने नहि बांधे; ७ बांध्युं नथी, बांधतो नथी अने बांधशे; ८ बांध्युं नथी, बांधतो नथी अने बांधशे नही ? [उ०] हे गौतम ! *भवाकर्षने आश्रयी कोइ एके बांध्युं छे, बांधे छे अने बांधशे; कोइ एके बांध्युं छे, बांधे छे अने बांधशे नहीं; ए रीते बधुं ते प्रमाणे ज जाणवुं, यावत् कोइ एके बांध्युं नथी, बांधतो नथी अने बांधशे नहीं. ग्रहणाकर्षने आश्रयी कोइ एके बांध्युं छे, बांधे छे अने बांधशे. ए प्रमाणे यावत् कोइ एके बांध्युं नथी, बांधे छे अने बांधशे; पण 'बांध्युं नथी, बांधे छे अने बांधशे नहीं' ए भांगो नथी. कोइ एके बांध्युं नथी, बांधतो नथी अने बांधशे; कोइ एके बांध्युं नथी, बांधतो नथी अने बांधशे नहीं.

ऐर्यापथिक कर्म संबंधे भांगा.

---

१३. * अनेक भवने विषे उपशमश्रेण्यादिनी प्राप्तिथी ऐर्यापथिक कर्मपुद्गलोनुं आकर्ष-ग्रहण करवुं ते भवाकर्ष, अने एक भवने विषे ऐर्यापथिक कर्मपुद्गलोनुं ग्रहण करवुं ते ग्रहणाकर्ष—टीका.

१४. [प्र०] तं भंते ! किं साइयं सपज्जवसियं बंधइ, साइयं अपज्जवसियं बंधइ, अणाइयं सपज्जवसियं बंधइ, अणाइयं अपज्जवसियं बंधइ ? [उ०] गोयमा ! साइयं सपज्जवसियं बंधइ, नो साइयं अपज्जवसियं बंधइ, नो अणाइयं सपज्जवसियं बंधइ, नो अणाइअं अपज्जवसियं बंधइ ।

१५. [प्र०] तं भंते ! किं देसेणं देसं बंधइ, देसेणं सव्वं बंधइ, सव्वेणं देसं बंधइ, सव्वेणं सव्वं बंधइ ? [उ०] गोयमा ! नो देसेणं देसं बंधइ, नो देसेणं सव्वं बंधइ, नो सव्वेणं देसं बंधइ, सव्वेणं सव्वं बंधइ ।

१६. [प्र०] संपराइयं णं भंते ! कम्मं किं नेरइओ बंधइ, तिरिक्खजोणिओ बंधइ, जाव देवी बंधइ ? [उ०] गोयमा ! नेरइओ वि बंधइ, तिरिक्खजोणिओ वि बंधइ, तिरिक्खजोणिणी वि बंधइ मणुस्सो वि बंधइ, मणुस्सी वि बंधइ, देवो वि बंधइ, देवी वि बंधइ ।

१७. [प्र०] तं भंते ! किं इत्थी बंधइ, पुरिसो बंधइ; तहेव जाव नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुंसगो बंधइ ? [उ०] गोयमा ! इत्थी वि बंधइ, पुरिसो वि बंधइ, जाव नपुंसगो वि बंधइ; अहवेए य अवगयवेदो य बंधइ, अहवेए य अवगयवेया य बंधंति ।

१८. [प्र०] जइ भंते ! अवगयवेदो य बंधइ, अवगयवेदा य बंधंति तं भंते ! किं इत्थीपच्छाकडो बंधइ, पुरिसपच्छाकडो बंधइ० ? [उ०] एवं जहेव इरियावहियाबंधगस्स तहेव निरवसेसं, जाव अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य नपुंसगपच्छाकडा य बंधंति ।

१९. [प्र०] तं भंते ! किं १ बंधी बंधइ बंधिस्सइ, २ बंधी बंधइ न बंधिस्सइ, ३ बंधी न बंधइ बंधिस्सइ, ४ बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ? [उ०] गोयमा ! १ अत्थेगतिए बंधी बंधइ बंधिस्सइ, २ अत्थेगतिए बंधी बंधइ न बंधिस्सइ, ३ अत्थेगतिए बंधी न बंधइ बंधिस्सइ, ४ अत्थेगतिए बंधी न बंधइ न बंधिस्सइ ।

ऐर्यापथिक कर्मसंबंधे सादिसपर्यवसितादि भंग.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! ते (ऐर्यापथिक कर्म) शुं १ सादि सपर्यवसित बांधे, २ सादि अपर्यवसित बांधे, ३ अनादि सपर्यवसित बांधे के ४ अनादि अपर्यवसित बांधे ? [उ०] हे गौतम ! सादि सपर्यवसित बांधे पण सादि अपर्यवसित न बांधे, तेम अनादि सपर्यवसित अने अनादि अपर्यवसित न बांधे.

देशथी देशने बांधे ? इत्यादि प्रश्न. सर्वथी सर्वने बांधे छे.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! ते (ऐर्यापथिक) कर्मने शुं *देशथी देशने बांधे, देशथी सर्वने बांधे, सर्वथी देशने बांधे, के सर्वथी सर्वने बांधे ? [उ०] हे गौतम ! देशथी देशने बांधतो नथी, देशथी सर्वने बांधतो नथी, सर्वथी देशने बांधतो नथी, पण सर्वथी सर्वने बांधे छे.

सांपरायिककर्मबंधन स्वामी.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! सांपरायिक कर्म शुं नारक बांधे, तिर्यंच बांधे, यावद् देवी बांधे ? [उ०] हे गौतम ! नैरयिक पण बांधे, तिर्यंच पण बांधे, तिर्यंचस्त्री पण बांधे, मनुष्य पण बांधे, मनुष्यस्त्री पण बांधे, देव पण बांधे अने देवी पण बांधे.

स्त्रीवगेरे बांधे.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! शुं सांपरायिक कर्मने स्त्री बांधे, पुरुष बांधे, तेमज यावत् नोस्त्री, नोपुरुष अने नोनपुंसक बांधे ? [उ०] हे गौतम ! स्त्री पण बांधे, पुरुष पण बांधे, यावद् नपुंसक पण बांधे; अथवा एओ अने वेदरहित स्त्री वगेरे एक जीव पण बांधे, अथवा एओ अने वेदरहित अनेक जीवो पण बांधे.

स्त्रीपश्चात्कृतादि बांधे

१८. [प्र०] हे भगवन् ! (सांपरायिक कर्मने) जो वेदरहितजीव अने वेदरहितजीवो बांधे तो शुं स्त्रीपश्चात्कृत बांधे के पुरुषपश्चात्कृत बांधे ? इत्यादि. [उ०] ए प्रमाणे जेम ऐर्यापथिकना बंधकने कह्युं (सू. १२.) तेम अहीं सर्व जाणवुं, अथवा स्त्रीपश्चात्कृत जीवो, पुरुषपश्चात्कृत जीवो अने नपुंसकपश्चात्कृत जीवो बांधे छे.

सांपरायिक कर्म बांध्युं, बांधे छे अने बांधशे-ते संबन्धे भंगो.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! शुं कोइए सांपरायिक कर्मने १ बांध्युं, बांधे छे अने बांधशे; २ बांध्युं, बांधे छे अने बांधशे नहीं, ३ बांध्युं, बांधतो नथी अने बांधशे नहीं; ४ बांध्युं, बांधतो नथी अने बांधशे नहीं ? [उ०] हे गौतम ! १ केटला एके बांध्युं छे, बांधे छे अने बांधशे; २ केटला एके बांध्युं छे, बांधे छे अने बांधशे नहीं; ३ केटला एके बांध्युं, बांधता नथी अने बांधशे; ४ केटला एके बांध्युं, बांधता नथी अने बांधशे नहीं.

---

१५. * जीवना देशथी-अमुक अंशथी, कर्मना देशने-अमुक अंशने बांधे ? इत्यादि प्रश्न—टीका.

२०. [प्र०] तं भंते ! किं साइयं सपज्जवसियं बंधइ ?–पुच्छा तहेव । [उ०] गोयमा ! साइयं वा सपज्जवसियं बंधइ, अणाइयं वा सपज्जवसियं बंधइ, अणाइयं वा अपज्जवसियं बंधइ, णो चेव णं साइयं अपज्जवसियं बंधइ ।

२१. [प्र०] तं भंते ! किं देसेणं देसं बंधइ ? [उ०] एवं जहेव इरियावहियाबंधगस्स, जाव सव्वेणं सव्वं बंधइ ।

२२. [प्र०] कइ णं भंते ! कम्मप्पगडीओ पन्नत्ताओ ? [उ०] गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पन्नत्ताओ, तं जहा–णाणावरणिज्जं, जाव अंतराइयं ।

२३. [प्र०] कइ णं भंते ! परिसहा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! बावीसं परिसहा पन्नत्ता, तं जहा–दिगिंछापरिसहे, पिवासापरिसहे, जाव दंसणपरिसहे ।

२४. [प्र०] एए णं भंते ! बावीसं परिसहा कतिसु कम्मपगडीसु समोयरंति ? [उ०] गोयमा ! चउसु कम्मपयडीसु समोयरंति, तं जहा नाणावरणिज्जे, वेयणिज्जे, मोहणिज्जे, अंतराइए ।

२५. [प्र०] नाणावरणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परिसहा समोयरंति ? [उ०] गोयमा ! दो परिसहा समोयरंति, तं जहा–पन्नापरिसहे नाणपरिसहे य ।

२६. [प्र०] वेयणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परिसहा समोयरंति ? [उ०] गोयमा ! एक्कारस परिसहा समोयरंति, तं जहा–

"पंचेव आणुपुव्वी चरिया सेज्जा वहे य रोगे य । तणफास–जल्लमेव य एक्कारस वेदणिज्जम्मि" ॥

२७. [प्र०] दंसणमोहणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परिसहा समोयरंति ? [उ०] गोयमा ! एगे दंसणपरिसहे समोयरइ ।

सादिसपर्यवसितादि भांगा.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! ते (सांपरायिक कर्मने) शुं सादे सपर्यवसित बांधे छे ?–इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! १ सादि सपर्यवसित बांधे छे; २ अनादि सपर्यवसित बांधे छे, ३ अनादि अपर्यवसित बांधे छे; पण सादि अपर्यवसित बांधतो नथी.

देशथी देशने बांधे ?

२१. [प्र०] हे भगवन् (सांपरायिक कर्मने) शुं देशथी (जीवना देशथी) देशने (कर्मना देशने) बांधे छे ? इत्यादि. [उ०] जेम ऐर्यापथिकबंधक संबन्धे कह्युं [सू. १५.] तेम जाणवुं, यावत् 'सर्वथी सर्वने बांधे छे.'

कर्मप्रकृतिओ.

२२. [प्र०] हे भगवन् ! कर्मप्रकृतिओ केटला प्रकारे कही छे ? [उ०] हे गौतम ! आठ कर्मप्रकृतिओ कही छे, ते आ प्रमाणे–ज्ञानावरणीय, यावद् अंतराय.

परिषहो.

२३. [प्र०] हे भगवन् ! केटला परीषहो कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! बावीश परीषहो कह्या छे, ते आ प्रमाणे–क्षुधापरीषह, पिपासापरीषह, यावद् दर्शनपरीषह.

परिषहोनो कर्मप्रकृतिओमां समवतार.

२४. [प्र०] हे भगवन् ! बावीश परीषहोनो केटली कर्मप्रकृतिओमां समवतार थाय ? [उ०] हे गौतम ! ते बावीश परीषहोनो चार कर्मप्रकृतिमां समवतार थाय छे, ते आ प्रमाणे–ज्ञानावरणीय, वेदनीय, मोहनीय अने अंतराय.

ज्ञानावरणीय कर्ममां समवतार.

२५. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानावरणीयकर्ममां केटला परीषहोनो समवतार थाय ? [उ०] हे गौतम ! बे परीषहोनो समवतार थाय छे; ते आ प्रमाणे–प्रज्ञापरीषह अने *ज्ञानपरीषह.

वेदनीय कर्ममां समवतार.

२६. [प्र०] हे भगवन् ! वेदनीयकर्ममां केटला परीषहोनो समवतार थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! वेदनीयकर्ममां अग्यार परीषहो समवतरे छे, ते आ प्रमाणे–अनुक्रमे पहेला पांच परीषहो–(क्षुधा, पिपासा, शीत, उष्ण, अने दंशमशक.) चर्या, शय्या, वध, रोग, तृणस्पर्श अने मलपरिषह–ए अग्यार परिषहोनो वेदनीयकर्ममां समवतार थाय छे.

दर्शनमोहनीय कर्ममां समवतार.

२७. [प्र०] हे भगवन् ! दर्शनमोहनीयकर्ममां केटला परीषहोनो समवतार थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! तेमां एक दर्शन परीषहनो समवतार थाय छे.

---

२५. * विशिष्ट मत्यादि ज्ञानना सद्भावे मद न करवो अने तेना अभावे दीनता न करवी ते ज्ञानपरीषह. बीजा ग्रन्थोमां आ परिषहने बदले अज्ञानपरीषह कहेलो छे–टीका.

२८. [प्र०] चरित्तमोहणिज्जे णं भंते ! कम्मे कति परिसहा समोयरंति ? [उ०] गोयमा ! सत्त परिसहा समोयरंति, तं जहा–

"अरती अचेल–इत्थी निसीहिया जायणा य अक्कोसे । सक्कार–पुरक्कारे चरित्तमोहम्मि सत्तेते" ॥

२९. [प्र०] अंतराइए णं भंते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ? [उ०] गोयमा ! एगे अलाभपरिसहे समोयरइ ।

३०. [प्र०] सत्तविहबंधगस्स णं भंते ! कति परिसहा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! बावीसं परिसहा पन्नत्ता, वीसं पुण वेदेइ । जं समयं सीयपरीसहं वेदेति णो तं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ, जं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ णो तं समयं सीयपरीसहं वेदेइ, जं समयं चरियापरिसहं वेदेति णो तं समयं निसीहियापरिसहं वेदेति, जं समयं निसीहियापरीसहं वेदेइ णो तं समयं चरियापरिसहं वेदेइ ।

३१. [प्र०] अट्ठविहबंधगस्स णं भंते ! कति परिसहा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! बावीसं परिसहा पण्णत्ता, तं जहा–छुहापरीसहे, पिवासापरीसहे, सीयपरीसहे, [1]दंस–मसगपरीसहे, जाव अलाभपरीसहे । एवं अट्ठविहबंधगस्स[2] वि ।

३२. [प्र०] छव्विहबंधगस्स णं भंते ! सरागछउमत्थस्स कति परिसहा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! चोद्दस परिसहा पन्नत्ता, बारस पुण वेदेइ; जं समयं सीयपरीसहं वेदेइ णो तं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ, जं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ नो तं समयं सीयपरीसहं वेदेइ; जं समयं चरियापरीसहं वेदेति णो तं समयं सेज्जापरिसहं वेदेइ, जं समयं सेज्जापरीसहं वेदेति णो तं समयं चरियापरीसहं वेदेइ ।

३३. [प्र०] एक्कविहबंधगस्स णं भंते ! वीयरागछउमत्थस्स कति परीसहा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! एवं चेव जहेव छव्विहबंधगस्स ।

३४. [प्र०] एगविहबंधगस्स णं भंते ! सजोगिभवत्थकेवलिस्स कति परीसहा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! एक्कारस परीसहा पन्नत्ता, नव पुण वेदेइ, सेसं जहा छव्विहबंधगस्स ।

चारित्रमोहनीयमां समवतार.

२८. [प्र०] हे भगवन् ! चारित्रमोहनीयकर्ममां केटला परीषहो समवतरे छे ? [उ०] हे गौतम ! तेमां सात परीषहो समवतरे छे, ते आ प्रमाणे–अरति, अचेल, स्त्री, *नैषेधिकी, याचना, आक्रोश अने सत्कारपुरस्कार परीषह. ए सात परीषहो चारित्रमोहमां समवतरे छे.

अन्तरायकर्ममां समवतार.

२९. [प्र०] हे भगवन् ! अंतरायकर्ममां केटला परीषहो समवतरे छे ? [उ०] हे गौतम ! तेमां एक अलाभ परीषह समवतरे छे.

सप्तविधकर्मबंधकने परिषहो.

३०. [प्र०] हे भगवन् ! सात प्रकारना कर्मना बांधनारने केटला परीषहो कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! बावीश परीषहो कह्या छे. पण एक साथे वीश परीषहोने वेदे छे, कारण के जे समये शीतपरीषहने वेदे छे ते समये उष्णपरीषहने वेदतो नथी, अने जे समये उष्णपरीषहने वेदे छे ते समये शीतपरीषहने वेदतो नथी. तथा जे समये चर्यापरिषहने वेदे छे ते समये नैषेधिकीपरीषहने वेदतो नथी, अने जे समये नैषेधिकीपरीषहने वेदे छे ते समये चर्यापरीषहने वेदतो नथी.

अष्टविधकर्मबन्धकने परिषहो.

३१. [प्र०] हे भगवन् ! आठ प्रकारना कर्मना बांधनारने केटला परीषहो कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! तेने बावीश परीषहो कह्या छे, ते आ प्रमाणे–क्षुधापरीषह, पिपासापरीषह, शीतपरीषह, दंशमशकपरीषह, यावत् अलाभपरीषह. ए प्रमाणे अष्टविधबंधकने पण सप्तविधबन्धकनी जेम जाणवुं. [तेने बावीश परीषहो होय छे, अने ते एक साथे वीश परिषहोने वेदे छे.]

षड्विधकर्मबन्धकने परिषहो.

३२. [प्र०] हे भगवन् ! छ प्रकारना कर्मना बन्धक सरागछद्मस्थने केटला परीषहो कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! चौद परीषहो कह्या छे, पण ते एक साथे बार परीषहोने अनुभवे छे; कारण के जे समये शीतपरीषहने वेदे छे, ते समये उष्णपरीषहने वेदतो नथी, अने जे समये उष्णपरीषहने वेदे छे ते समये शीतपरीषहने वेदतो नथी. तथा जे समये चर्यापरिषहने वेदे छे ते समये शय्यापरीषहने वेदतो नथी, अने जे समये शय्यापरीषहने वेदे छे ते समये चर्यापरीषहने वेदतो नथी.

एकविधबन्धक वीतराग छद्मस्थने परिषह.

३३. [प्र०] हे भगवन् ! एक प्रकारना कर्मना बांधनार वीतराग छद्मस्थने केटला परीषहो कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! जेम छ प्रकारना कर्मना बांधनारने परिषहो कह्या छे तेम एकविधकर्मबन्धकने पण जाणवा.

एकविधबन्धक सयोगी केवलीने परिषहो.

३४. [प्र०] हे भगवन् ! एकविधबंधक सयोगी भवस्थ केवलज्ञानीने केटला परीषहो कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! अग्यार परीषहो कह्या छे, तेमां साथे नव परीषहोने वेदे छे. बाकीनुं बधुं छ प्रकारना कर्मबन्धकनी पेठे जाणवुं.

---

१ दंसपरिसहे मसग–क । २ –स्स वि सत्तविहबंधगस्स वि ग–घ ।

२८. * नैषेधिकी–शून्य गृहादिरूप स्वाध्यायभूमि, त्यां जे परिषह–उपद्रवो थाय तेथी भय न पामवो ते नैषेधिकी परिषह—टीका.

३५. [प्र०] अबंधगस्स णं भंते! अयोगिभवत्थकेवलिस्स कति परीसहा पण्णत्ता? [उ०] गोयमा! एक्कारस परीसहा पण्णत्ता, नव पुण वेदेइ। जं समयं सीयपरीसहं वेदेति नो तं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ, जं समयं उसिणपरीसहं वेदेति नो तं समयं सीयपरीसहं वेदेइ; जं समयं चरियापरिसहं वेदेइ नो तं समयं सेज्जापरीसहं वेदेति, जं समयं सेज्जापरीसहं वेदेइ नो तं समयं चरियापरीसहं वेदेइ।

३६. [प्र०] जंबुद्दीवे णं भंते! दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति, मज्झंतियमुहुत्तंसि मूले य दूरे य दीसंति, अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति? [उ०] हंता, गोयमा! जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य, तं चेव जाव अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति।

३७. [प्र०] जंबुद्दीवे णं भंते! दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि मज्झंतियमुहुत्तंसि य अत्थमणमुहुत्तंसि य सव्वत्थ समा उच्चत्तेणं? [उ०] हंता, गोयमा! जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया उग्गमण० जाव उच्चत्तेणं।

३८. [प्र०] जइ णं भंते! जंबुद्दीवे दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि, मज्झंतियमुहुत्तंसि, अत्थमणमुहुत्तंसि य मूले जाव उच्चत्तेणं, से केणं खाइ अट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति, जाव अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति? [उ०] गोयमा! लेसापडिघाएणं उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति, लेसाभितावेणं मज्झंतियमुहुत्तंसि मूले य दूरे य दीसंति, लेस्सापडिघाएणं अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति; से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ–जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति; जाव अत्थमण– जाव दीसंति।

३९. [प्र०] जंबुद्दीवे णं भंते! दीवे सूरिया किं तीयं खेत्तं गच्छंति, पडुप्पन्नं खेत्तं गच्छंति, अणागयं खेत्तं गच्छंति? [उ०] गोयमा! णो तीयं खेत्तं गच्छंति, पडुप्पन्नं खेत्तं गच्छंति, नो अणागयं खेत्तं गच्छंति।

४०. [प्र०] जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया किं तीयं खेत्तं ओभासंति, पडुप्पन्नं खेत्तं ओभासंति, अणागयं खेत्तं ओभासंति? [उ०] गोयमा! नो तीयं खेत्तं ओभासंति, पडुप्पन्नं खेत्तं ओभासंति, नो अणागयं खेत्तं ओभासंति।

कर्मबन्धरहित अयोगी केवलीने परिषहो.

३५. [प्र०] हे भगवन्! कर्मबन्धरहित अयोगी भवस्थ केवलज्ञानीने केटला परीषहो कह्या छे? [उ०] हे गौतम! अगीयार परीषहो कह्या छे; तेमां साथे नव परीषहोने वेदे छे; कारण के जे समये शीतपरीषहने वेदे छे ते समये उष्णपरीषहने वेदता नथी, अने जे समये उष्णपरीषहने वेदे छे ते समये शीतपरीषहने वेदता नथी. तथा जे समये चर्यापरिषहने वेदे छे ते समये शय्यापरीषहने वेदता नथी, अने जे समये शय्यापरीषहने वेदे छे ते समये चर्यापरीषहने वेदता नथी.

जंबूद्वीपमां सूर्यो दूर छतां केम पासे देखाय छे?

३६. [प्र०] हे भगवन्! जंबूद्वीपनामे द्वीपमां बे सूर्यो उगवाना समये *दूर छतां पासे देखाय छे, मध्याह्नसमये पासे छतां दूर देखाय छे, अने आथमवाने समये दूर छतां पासे देखाय छे? [उ०] हा, गौतम! जंबूद्वीपमां बे सूर्यो उगवाना समये दूर छतां पासे देखाय छे–इत्यादि, यावद् आथमवाना समये दूर छतां पासे देखाय छे.

सूर्यो सर्वत्र उंचाइमां सरखा छे?

३७. [प्र०] हे भगवन्! जंबूद्वीपमां बे सूर्यो उगवाना समये, मध्याह्नसमये अने आथमवाना समये सर्व स्थळे उंचाइमां सरखा छे? [उ०] हा, गौतम! जंबूद्वीपमां रहेला बे सूर्यो उगवाना समये यावत् सर्वस्थळे उंचाइमां †सरखा छे.

तेजना प्रतिघातथी दूर छतां पासे देखाय छे. तेजना अभितापथी पासे छतां दूर देखाय छे.

३८. [प्र०] हे भगवन्! जो जंबूद्वीपमां बे सूर्यो उगवाना समये, मध्याह्नसमये अने आथमवाना समये यावद् उंचाइमां सरखा छे तो हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो के जंबूद्वीपमां बे सूर्यो उगवाना समये दूर छतां पासे देखाय छे, यावद् आथमवाना समये दूर छतां पासे देखाय छे? [उ०] हे गौतम! लेश्याना (तेजना) प्रतिघातथी उगवाना समये दूर छतां पासे देखाय छे, लेश्याना–तेजना अभितापथी मध्याह्न समये पासे छतां दूर देखाय छे, तथा लेश्याना प्रतिघातथी आथमवाना समये दूर छतां पासे देखाय छे, माटे हे गौतम! ते हेतुथी एम कहेवाय छे के जंबूद्वीपमां बे सूर्यो उगवाना समये दूर छतां पासे देखाय छे, यावद् आथमवाना समये दूर छतां पासे देखाय छे.

अतीत क्षेत्र प्रति जाय छे?–इत्यादि प्रश्न.

३९. [प्र०] हे भगवन्! जंबूद्वीपमां बे सूर्यो शुं अतीत क्षेत्र प्रति जाय छे, वर्तमान क्षेत्र प्रति जाय छे, के अनागत क्षेत्र प्रति जाय छे? [उ०] हे गौतम! ‡अतीत क्षेत्र प्रति जता नथी, वर्तमान क्षेत्र प्रति जाय छे, पण अनागत क्षेत्र प्रति जता नथी.

अतीतक्षेत्रने प्रकाशे छे?–इत्यादि प्रश्न. वर्तमान क्षेत्रने प्रकाशे छे.

४०. [प्र०] हे भगवन्! जंबूद्वीपमां बे सूर्यो शुं अतीत क्षेत्रने प्रकाशे छे, वर्तमान क्षेत्रने प्रकाशे छे के अनागत क्षेत्रने प्रकाशे छे? [उ०] हे गौतम! अतीत क्षेत्रने प्रकाशता नथी, वर्तमान क्षेत्रने प्रकाशे छे, अने अनागत क्षेत्रने प्रकाशता नथी.

---

३६. * उगवाना अने आथमवाना समये द्रष्टाना स्थाननी अपेक्षाए सूर्य दूर छे पण द्रष्टाने 'नजीक छे' एम प्रतीति थाय छे, द्रष्टा उगवा अने आथमवाना समये हजारो योजन दूर सूर्यने जुए छे, अने नजीकमां होय एम तेने लागे छे, पण मध्याह्नसमये द्रष्टाना स्थाननी अपेक्षाए सूर्य नजीक छतां पण तेने दूर होय एम लागे छे. द्रष्टा उदय अने अस्त समयनी अपेक्षाए मध्याह्नसमये नजीक सूर्यने जुए छे, केमके ते वखते मात्र आठसो योजननुं अन्तर छे, पण तेने उदय अने अस्तसमयनी अपेक्षाए दूर माने छे. तेनुं कारण (सू. ३८ मां) बताव्युं छे.—टीका.

३७. † समभूतल पृथिवीनी अपेक्षाए सूर्यो सर्वत्र आठसो योजन उंचा छे—टीका.

३९. ‡ अतीत क्षेत्र अतिक्रान्त करेलुं होवाथी ते तरफ जतो नथी, पण वर्तमान एटले ज्यां जवानुं छे ते क्षेत्र तरफ जाय छे. वळी अनागत एटले ज्यां जवाशे ए क्षेत्र तरफ पण जतो नथी.—टीका.

४१. [प्र०] तं भंते ! किं पुट्ठं ओभासंति, अपुट्ठं ओभासंति ? [उ०] गोयमा ! पुट्ठं ओभासंति, नो अपुट्ठं ओभासंति, जाव नियमा छद्दिसिं ।

४२. [प्र०] जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया किं तीयं खेत्तं उज्जोवेंति ? [उ०] एवं चेव, जाव नियमा छद्दिसिं, एवं तवेंति, एवं ओभासंति, जाव नियमा छद्दिसिं ।

४३. [प्र०] जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरियाणं किं तीए खेत्ते किरिया कज्जइ, पडुप्पन्ने खेत्ते किरिया कज्जइ, अणागए खेत्ते किरिया कज्जइ ? [उ०] गोयमा ! नो तीए खेत्ते किरिया कज्जइ, पडुप्पन्ने खेत्ते किरिया कज्जइ, नो अणागए खेत्ते किरिया कज्जइ ।

४४. [प्र०] सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ, अपुट्ठा कज्जइ ? [उ०] गोयमा ! पुट्ठा कज्जइ, नो अपुट्ठा कज्जइ, जाव नियमा छद्दिसिं ।

४५. [प्र०] जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया केवतियं खेत्तं उड्ढं तवंति, केवतियं खेत्तं अहो तवंति, केवतियं खेत्तं तिरियं तवंति ? [उ०] गोयमा ! एगं जोयणसयं उड्ढं तवंति; अट्ठारस जोयणसयाइं अहे तवंति, सीयालीसं जोयणसहस्साइं दोण्णि तेवट्ठे जोयणसए एकवीसं च सट्ठिभाए जोयणस्स तिरियं तवंति ।

४६. [प्र०] अंतो णं भंते ! माणुसुत्तरपव्वयस्स जे चंदिम–सूरिय–गहगण–णक्खत्त–तारारूवा ते णं भंते ! देवा किं उड्ढोववन्नगा ? [उ०] जहा जीवाभिगमे तहेव निरवसेसं जाव उक्कोसेणं छम्मासा ।

४७. [प्र०] बाहिया णं भंते ! माणुसुत्तरस्स० ? [उ०] जहा जीवाभिगमे, जाव इंदट्ठाणे णं भंते ! केवतियं कालं उववाएणं विरहिए पण्णत्ते ? गोयमा ! जहन्नेणं एकं समयं, उक्कोसेण छम्मासा' । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

अट्ठमसए अट्ठमो उद्देसो समत्तो ।

स्पृष्ट क्षेत्रोने प्रकाशित करे छे.

४१. [प्र०] हे भगवन् ! [ते सूर्यो] स्पर्शेलां क्षेत्रने प्रकाशित करे छे के अस्पर्शेला क्षेत्रने प्रकाशित करे छे ? [उ०] हे गौतम ! स्पर्शेलां क्षेत्रने प्रकाशे छे पण अस्पर्शेलां क्षेत्रने प्रकाशित करता नथी; यावत् अवश्य छ दिशाने प्रकाशे छे.

अतीत क्षेत्रने उद्द्योतित करे छे?–इत्यादि.

४२. [प्र०] हे भगवन् ! जंबूद्वीपमां बे सूर्यो शुं अतीत क्षेत्रने उद्द्योतित करे छे ? इत्यादि. [उ०] पूर्वनी पेठे जाणवुं, यावद् अवश्य छ दिशाने उद्द्योतित करे छे, ए प्रमाणे तपावे छे, यावद् अवश्य छ दिशाने प्रकाशे छे.

सूर्यनी क्रिया वर्तमान क्षेत्रमां कराय छे.

४३. [प्र०] हे भगवन् ! जंबूद्वीपमां सूर्योनी क्रिया शुं अतीत क्षेत्रमां कराय छे, वर्तमान क्षेत्रमां कराय छे के अनागत क्षेत्रमां कराय छे ? [उ०] हे गौतम ! अतीत क्षेत्रमां क्रिया कराती नथी, वर्तमान क्षेत्रमां क्रिया कराय छे, पण अनागत क्षेत्रमां क्रिया कराती नथी.

सूर्य स्पृष्ट क्रियाने करे छे.

४४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं [ते सूर्यो] स्पृष्ट क्रियाने करे छे के अस्पृष्ट क्रियाने करे छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ स्पृष्ट क्रियाने करे छे, पण अस्पृष्ट क्रियाने नथी करता, यावद् अवश्य छ दिशामां स्पृष्ट क्रियाने करे छे.

केटलुं क्षेत्र उंचे तपावे छे ?

४५. [प्र०] हे भगवन् ! जंबूद्वीपमां सूर्यो केटलुं क्षेत्र उंचे तपावे छे, केटलुं क्षेत्र नीचे तपावे छे अने केटलुं क्षेत्र तिर्यग् तपावे छे ? [उ०] हे गौतम ! सो योजन क्षेत्र उंचे तपावे छे, अढारसो योजन क्षेत्र नीचे तपावे छे. अने सूडताळीश हजार बसे त्रेसठ योजन तथा एक योजनना साठीया एकवीश भाग जेटलुं क्षेत्र तिर्यग् (तिरछुं) तपावे छे.

मनुष्योत्तर पर्वतनी अंदरना चन्द्रादि देवो शुं ऊर्ध्व लोकमां उत्पन्न थयेला छे ?

४६. [प्र०] हे भगवन् ! मनुष्योत्तर पर्वतनी अंदर जे चंद्रो, सूर्यो, ग्रहगण, नक्षत्र अने तारारूप देवो छे, हे भगवन् ! ते शुं ऊर्ध्वलोकमां उत्पन्न थयेला छे ? [उ०] जे प्रमाणे *'जीवाभिगमसूत्रमां कह्युं छे तेम यावद् [तेओनो उपपातविरहकाल–उपजवानुं अन्तर जघन्य एक समय अने] यावद् उत्कृष्ट छ मास छे'–त्यां सुधी बधुं जाणवुं.

मनुष्योत्तर पर्वतनी बहारना चंद्रादि देवो.

४७. [प्र०] हे भगवन् ! मनुष्योत्तर पर्वतनी बहार जे चंद्रादि देवो छे तेओ शुं ऊर्ध्वलोकमां उत्पन्न थयेला छे ? [उ०] जेम †जीवाभिगमसूत्रमां कह्युं छे तेम जाणवुं, यावत्–[प्र०] 'हे भगवन् ! इन्द्रस्थान केटला काल सुधी उपपात वडे विरहित कह्युं छे ? [उ०] हे गौतम ! जघन्यथी एक समय, अने उत्कृष्टथी छ मास, [अर्थात् एक इन्द्रना मरण पछी जघन्यथी एक समये अने उत्कृष्टथी छ मासे तेने स्थाने बीजो इन्द्र उत्पन्न थाय छे तेथी तेटलो काळ इन्द्रस्थान उपपात विरहित होय छे',] हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे. [एम कही भगवान् गौतम यावद् विहरे छे].

अष्टम शतके अष्टम उद्देशक समाप्त.

---

४६. * जीवा० प. ३४५–१ प्रति. ३ सू. १७९. ४७. † जीवा. प. ३४५–२ प्रति. ३ सू. १७९.

नवमो उद्देसो।

१. [प्र०] कइविहे णं भंते! बंधे पण्णत्ते? [उ०] गोयमा! दुविहे बंधे पण्णत्ते, तं जहा—पयोगबंधे य वीससाबंधे य।

२. [प्र०] वीससाबंधे णं भंते! कतिविहे पण्णत्ते? [उ०] गोयमा! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सादीयवीससाबंधे अणादीयवीससाबंधे य।

३. [प्र०] अणादीयवीससाबंधे णं भंते! कतिविहे पण्णत्ते? [उ०] गोयमा! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—धम्मत्थिकायअन्नमन्नअणाइयवीससाबंधे, अधम्मत्थिकायअन्नमन्नअणाइयवीससाबंधे, आगासत्थिकायअन्नमन्नअणाईयवीससाबंधे।

४. [प्र०] धम्मत्थिकायअन्नमन्नअणादीयवीससाबंधे णं भंते! किं देसबंधे, सव्वबंधे? [उ०] गोयमा! देसबंधे, नो सव्वबंधे। एवं अधम्मत्थिकायअन्नमन्नअणादीयवीससाबंधे वि, एवं आगासत्थिकायअन्नमन्नअणादीयवीससाबंधे वि।

५. [प्र०] धम्मत्थिकायअन्नमन्नअणादीयवीससाबंधे णं भंते! कालओ केवच्चिरं होइ? [उ०] गोयमा! सव्वद्धं। एवं अधम्मत्थिकाए, एवं आगासत्थिकाए वि।

नवमो उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन्! बन्ध केटला प्रकारनो कह्यो छे? [उ०] हे गौतम! बन्ध बे प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—प्रयोगबन्ध अने विस्रसाबन्ध.

बन्ध.

२. [प्र०] हे भगवन्! विस्रसाबन्ध केटला प्रकारनो कह्यो छे? [उ०] हे गौतम! बे प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—सादि विस्रसाबन्ध अने अनादि विस्रसाबन्ध.

विस्रसाबन्ध.

३. [प्र०] हे भगवन्! अनादि विस्रसाबन्ध केटला प्रकारनो कह्यो छे? [उ०] हे गौतम! त्रण प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—धर्मास्तिकायनो अन्योन्य अनादि विस्रसाबन्ध, अधर्मास्तिकायनो अन्योन्य अनादि विस्रसाबन्ध अने आकाशास्तिकायनो पण अन्योन्य अनादि विस्रसाबन्ध.

अनादि विस्रसाबन्ध.

४. [प्र०] हे भगवन्! धर्मास्तिकायनो अन्योन्य अनादि विस्रसाबन्ध देशबन्ध छे के सर्वबन्ध छे? [उ०] हे गौतम! *देशबन्ध छे, पण सर्वबन्ध नथी. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकायनो अन्योन्य अनादि विस्रसाबन्ध जाणवो. एवी रीते आकाशास्तिकायनो अन्योन्य अनादि विस्रसाबन्ध जाणवो.

धर्मास्तिकायनो अनादि विस्रसा देशबन्ध.

५. [प्र०] हे भगवन्! धर्मास्तिकायनो अन्योन्य अनादि विस्रसाबन्ध काळथी क्यां सुधी होय? [उ०] हे गौतम! सर्व काल सुधी होय छे. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकायनो अन्योन्य अनादि विस्रसाबन्ध जाणवो.

अनादि विस्रसा बन्धनो काल.

---

४. * धर्मास्तिकायना प्रदेशोनो बीजा प्रदेशो साथे परस्पर संबन्ध ते देशबन्ध, परन्तु तेनो सर्वबन्ध नथी; जो तेनो सर्वबन्ध होय तो एक प्रदेशमां बीजा सर्व प्रदेशोनो अन्तर्भाव थाय अने तेथी धर्मास्तिकाय एक प्रदेशरूप थाय—टीका.

६. [प्र०] सादीयवीससाबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा–बंधणपच्चइए, भायणपच्चइए, परिणामपच्चइए ।

७. [प्र०] से किं तं बंधणपच्चइए ? [उ०] बंधणपच्चइए जं णं परमाणुपुग्गलादुप्पएसिया–तिप्पएसिया–जाव दसपएसिया–संखेज्जपएसिया–असंखेज्जपएसिया–अणंतपएसियाणं खंधाणं वेमायनिद्धयाए, वेमायलुक्खयाए, वेमायनिद्धलुक्खयाए बंधणपच्चइए णं बंधे समुप्पज्जइ, जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं । सेत्तं बंधणपच्चइए ।

८. [प्र०] से किं तं भायणपच्चइए ? [उ०] भायणपच्चइए जं णं जुन्नसुरा–जुन्नगुल–जुन्नतंदुलाणं भायणपच्चइए णं बंधे समुप्पज्जइ, जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं । सेत्तं भायणपच्चइए ।

९. [प्र०] से किं तं परिणामपच्चइए ? [उ०] परिणामपच्चइए जं णं अब्भाणं, अब्भरुक्खाणं जहा ततियसए जाव अमोहाणं परिणामपच्चइए णं बंधे समुप्पज्जइ, जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं छम्मासा । सेत्तं परिणामपच्चइए । सेत्तं सादीयवीससाबंधे । सेत्तं वीससाबंधे ।

१०. [प्र०] से किं तं पयोगबंधे ? [उ०] पयोगबंधे तिविहे पन्नत्ते, तं जहा–अणाईए वा अपज्जवसिए, साईए वा अपज्जवसिए, साईए वा सपज्जवसिए । तत्थ णं जे से अणाईए अपज्जवसिए से णं अट्ठण्हं जीवमज्झपएसाणं, तत्थ वि णं तिण्हं तिण्हं अणाईए अपज्जवसिए, सेसाणं साईए । तत्थ णं जे से साइए अपज्जवसिए से णं सिद्धाणं । तत्थ णं जे से साईए सपज्जवसिए से णं चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा–आलावणबंधे, अल्लियावणबंधे, सरीरबंधे, सरीरप्पओगबंधे ।

सादि विस्रसाबन्ध.

६. [प्र०] हे भगवन् ! सादिविस्रसाबन्ध केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रकारनो कह्यो छे; ते आ प्रमाणे– १ *बंधनप्रत्ययिक, २ भाजनप्रत्ययिक अने ३ परिणामप्रत्ययिक.

बन्धनप्रत्ययिक बन्ध.

७. [प्र०] हे भगवन् ! बंधनप्रत्ययिक [सादि बन्ध] केवा प्रकारे छे ? [उ०] द्विप्रदेशिक, त्रिप्रदेशिक, यावद् दशप्रदेशिक, संख्यातप्रदेशिक, असंख्यातप्रदेशिक अने अनंतप्रदेशिक परमाणु पुद्गलस्कंधोनो विषम स्निग्धता (चिकाश) वडे, विषम रूक्षता वडे अने विषम स्निग्ध–रूक्षता वडे बन्धनप्रत्ययिक बन्ध थाय छे. ते जघन्यथी एक समय, अने उत्कृष्टथी असंख्य काल सुधी रहे छे. ए प्रमाणे बंधनप्रत्ययिक बन्ध कह्यो.

भाजनप्रत्ययिक बन्ध.

८. [प्र०] हे भगवन् ! भाजनप्रत्ययिक बन्ध केवा प्रकारे होय ? [उ०] †जूनी मदिरानो, जूना गोळनो अने जुना चोखानो भाजन प्रत्ययिक बन्ध थाय छे. ते जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट संख्यात काल सुधी रहे छे. ए प्रमाणे भाजनप्रत्ययिक बन्ध कह्यो.

परिणामप्रत्ययिक बन्ध.

९. [प्र०] हे भगवन् ! परिणामप्रत्ययिक बन्ध केवा प्रकारे छे ? [उ०] वादळाओनो, अभ्रवृक्षोनो जेम ‡तृतीय शतकमां कह्युं छे तेम यावद् अमोघोनो परिणामप्रत्ययिक बन्ध उत्पन्न थाय छे. ते जघन्यथी एक समय अने उत्कृष्टथी छ मास सुधी रहे छे, ए प्रमाणे परिणामप्रत्ययिकबन्ध, सादि विस्रसाबन्ध अने विस्रसाबन्ध कह्यो.

प्रयोगबन्ध.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! प्रयोगबन्ध केवा प्रकारे छे ? [उ०] ¶प्रयोगबन्ध त्रण प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे– १ अनादि अपर्यवसित, २ सादि अपर्यवसित अने ३ सादि सपर्यवसित प्रयोगबन्ध. तेमां जे अनादि अपर्यवसितबन्ध छे ते जीवना आठ मध्यप्रदेशोनो होय छे, ते आठ प्रदेशोमां पण त्रण त्रण प्रदेशोनो जे बन्ध ते अनादि अपर्यवसित बन्ध छे. बाकीना सर्वप्रदेशोनो सादि सपर्यवसित (सान्त) बन्ध छे. तेमां सादि अपर्यवसित बन्ध सिद्धना जीव प्रदेशोनो छे. सादिक सपर्यवसित बन्ध चार प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे– १ §आलापनबन्ध, २ आलीनबन्ध, ३ शरीरबन्ध अने ४ शरीरप्रयोगबन्ध.

---

६. * १ स्निग्धत्वादि गुणद्वारा द्विप्रदेशिक, यावत् अनन्तप्रदेशिक परमाणुओनो बन्ध थाय ते बन्धनप्रत्ययिक. २ भाजन एटले आधार, ते निमित्ते जे बन्ध थाय ते भाजनप्रत्ययिक. ३ परिणाम एटले रूपान्तर, ते निमित्ते जे बन्ध थाय ते परिणामप्रत्ययिक.

८. † एक भाजनमां रहेली जुनी मदिरा घट्ट थाय छे अने जूना गोळ तथा जूना चोखानो पिंड थाय छे ते भाजनप्रत्ययिक बन्ध जाणवो—टीका.

९. ‡ भग. द्वि. खं. श. ३ उ. ७ पृ. ११२ सू. ३.

१०. ¶ प्रयोगबन्ध एटले जीवना व्यापार वडे जीव प्रदेशोनो अने औदारिकादि शरीरना पुद्गलोनो जे बन्ध थाय ते. तेना चार भांगा थाय छे. तेमां अहीं बीजा भांगाने छोडीने त्रण भांगा लागु पडे छे. तेमां असंख्यातप्रदेशिक जीवना जे मध्य प्रदेशो छे तेनो अनादि अपर्यवसित बन्ध छे. कारण के ज्यारे जीव केवलि समुद्घात वखते समग्र लोकने व्यापीने रहे छे त्यारे पण ते तेवीज स्थितिमां रहे छे, पण बीजा जीव प्रदेशोमां विपरिवर्तन थतुं होवाथी तेओनो अनादि अनन्त बन्ध नथी. तेनी स्थापनाः–[::] आ चार प्रदेशोनी उपर बीजा चार प्रदेशो आवेला छे. एवी रीते समुदायथी आठ प्रदेशोनो बन्ध कहेलो छे. ते आठ प्रदेशोमां पण कोइ पण एक प्रदेशनो तेनी पासे रहेला बे प्रदेशो अने उपर के नीचे रहेला एक प्रदेश साथे एम त्रण त्रण प्रदेश साथे अनादि अपर्यवसित बन्ध छे—टीका.

§ १ रज्जु वगेरेथी तृणादिनो बन्ध ते आलापन बन्ध. २ एक पदार्थनो बीजा पदार्थनी साथे लाख वगेरेथी बन्ध थवो ते आलीनबन्ध. ३ समुद्घात करवामां विस्तारित अने संकोचित जीवप्रदेशोना संबन्धथी तैजसादि शरीर प्रदेशोनो संबन्ध ते शरीरबन्ध. अथवा समुद्घात करवामां 'संकुचित थयेला आत्मप्रदेशोनो संबन्ध ते शरीरबन्ध' एम अन्य आचार्य माने छे. ४ औदारिकादि शरीरना व्यापारथी शरीरना पुद्गलोने ग्रहण करवारूप बन्ध ते शरीरप्रयोगबन्ध—टीका.

११. [प्र०] से किं तं आलावणबंधे ? [उ०] आलावणबंधे जं णं तणभाराण वा, कट्ठभाराण वा, पत्तभाराण वा, पलालभाराण वा, वेल्लभाराण वा वेत्तलता–वाग–वरत्त–रज्जु–वल्लि–कुस–दब्भमादीएहिं आलावणबंधे समुप्पज्जइ, जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं, सेत्तं आलावणबंधे ।

१२. [प्र०] से किं तं अल्लियावणबंधे ? [उ०] अल्लियावणबंधे चउव्विहे पन्नत्ते, तं जहा–लेसणाबंधे, उच्चयबंधे, समुच्चयबंधे, साहणणाबंधे ।

१३. [प्र०] से किं तं लेसणाबंधे ? [उ०] लेसणाबंधे जं णं कुड्डाणं, कोट्टिमाणं, खंभाणं, पासायाणं, कट्ठाणं, चम्माणं, घडाणं, पडाणं, कडाणं छुहा–चिक्खल्ल–सिलेस–लक्ख–महुसित्थमाईएहिं लेसणएहिं बंधे समुप्पज्जइ, जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जं कालं । सेत्तं लेसणाबंधे ।

१४. [प्र०] से किं तं उच्चयबंधे ? [उ०] उच्चयबंधे जं णं तणरासीण वा, कट्ठरासीण वा, पत्तरासीण वा, तुसरासीण वा, भुसरासीण वा, गोमयरासीण वा, अवगररासीण वा उच्चत्तेणं बंधे समुप्पज्जइ, जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जं कालं, सेत्तं उच्चयबंधे ।

१५. [प्र०] से किं तं समुच्चयबंधे ? [उ०] समुच्चयबंधे जं णं अगड-तडाग-नदी-दह-वावी-पुक्खरिणी-दीहियाणं गुंजालियाणं, सराणं, सरपंतियाणं सरसरपंतियाणं, बिलपंतियाणं; देवकुल-सभ-प्पव-थूभ-खाइयाणं, परिहाणं, पागार-ट्टालग-चरिय-दार-गोपुर-तोरणाणं, पासाय-घर-सरण-लेण-आवणाणं, सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउमुह-महापहमादीणं, छुहा-चिक्खल्ल-सिलेस-समुच्चएणं बंधे समुप्पज्जइ, जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जं कालं । सेत्तं समुच्चयबंधे ।

१६. [प्र०] से किं तं साहणणाबंधे ? [उ०] साहणणाबंधे दुविहे पन्नत्ते, तं जहा–देससाहणणाबंधे य सव्वसाहणणाबंधे य ।

११. [प्र०] आलापन बन्ध केवा प्रकारनो छे ? [उ०] आलापन बन्ध घासना भाराओनो, लाकडाना भाराओनो, पांदडाना भाराओनो, पलालना भाराओनो अने वेलाना भाराओनो नेतरनी वेल, छाल, वाधरी, दोरडा, वेल, कुश अने डाभ आदिथी आलापनबन्ध थाय छे. ते जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्टथी संख्यात काळ सुधी रहे छे. ए प्रमाणे आलापनबन्ध कह्यो. **आलापनबन्ध.**

१२. [प्र०] आलीनबन्ध केवा प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] आलीनबन्ध चार प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे–१ श्लेषणाबन्ध, २ उच्चयबन्ध, ३ समुच्चयबन्ध अने ४ संहननबन्ध. **आलीनबन्ध.**

१३. [प्र०] श्लेषणाबन्ध केवा प्रकारनो होय ? [उ०] शिखरोनो, कुट्टिमोनो (फरस बंधीनो) स्तंभोनो, प्रासादोनो, लाकडाओनो, चामडानो, घडाओनो, कपडाओनो अने सादडीओनो चूनावडे, कचरावडे, श्लेष–वज्रलेप–वडे, लाखवडे, मीण–इत्यादि श्लेषण द्रव्योवडे श्लेषणाबन्ध थाय छे. ते जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त, अने उत्कृष्टथी संख्यानकाळ सुधी रहे छे. ए प्रमाणे श्लेषणाबन्ध कह्यो. **श्लेषणाबन्ध.**

१४. [प्र०] उच्चयबन्ध केवा प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] तृणराशिनो, काष्ठराशिनो, पत्रराशिनो, तुषराशिनो, भुसानी राशिनो, छाणना ढगलानो अने कचराना ढगलानो उच्चपणे जे बन्ध थाय छे ते उच्चयबन्ध छे. ते जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त, अने उत्कृष्टथी संख्येयकाल सुधी रहे छे. ए प्रमाणे उच्चयबन्ध कह्यो. **उच्चयबन्ध.**

१५. [प्र०] समुच्चयबन्ध केवा प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] कुवा, तळाव, नदी, द्रह, वापी, पुष्करिणी, दीर्घिका, गुंजालिका, सरोवरो, सरोवरनी श्रेणि, मोटा सरोवरनी पंक्ति, बिलनी श्रेणि, देवकुळ, सभा, परब, स्तूप, खाइओ, परिघो, किल्लाओ, कांगराओ, चरिको, द्वार, गोपुर, तोरण, प्रासाद, घर, शरण, लेण (गृहविशेष) हाटो, शृंगाटकाकारमार्ग, त्रिकमार्ग, चतुष्कमार्ग, चत्वरमार्ग, चतुर्मुखमार्ग अने राजमार्गादिनो चुनाद्वारा, कचराद्वारा अने श्लेषना (वज्रलेपना) समुच्चय वडे जे बंध थाय छे ते समुच्चयबन्ध. ते जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त, अने उत्कृष्टथी संख्येयकाल सुधी रहे छे. ए प्रमाणे समुच्चयबन्ध कह्यो. **समुच्चयबन्ध.**

१६. [प्र०] संहननबन्ध केवा प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] संहननबन्ध बे प्रकारनो कह्यो छे; ते आ प्रमाणे–*देश संहनन बन्ध अने सर्वसंहनन बन्ध. **संहननबन्ध.**

---

१ सभा–पव–थू–ग, सभा–पव्वय–थू–रू ।

१६. * १ कोइ वस्तुना देशथी–अंशथी कोइ वस्तुना देशनो–अंशनो शकटादिना अवयवोनी पेठे संहनन एटले परस्पर संबन्धरूप बन्ध ते देशसंहननबन्ध. २ क्षीरनीरादिनी पेठे सर्वात्मसंबन्धरूप बंध ते सर्वसंहननबंध—टीका.

१७. से किं तं देससाहणणाबंधे ? [उ०] देससाहणणाबंधे जं णं सगड-रह-जाण-जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सीय-संदमाणी-लोही-लोहकडाह-कडुच्छय-आसण-सयण-खंभ-भंडमत्तोवगरणमाईणं देससाहणणाबंधे समुप्पज्जइ, जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जं कालं। सेत्तं देससाहणणाबंधे।

१८. [प्र०] से किं तं सव्वसाहणणाबंधे ? [उ०] सव्वसाहणणाबंधे से णं खीरोदगमाईणं। सेत्तं सव्वसाहणणाबंधे, सेत्तं साहणणाबंधे, सेत्तं अल्लियावणबंधे।

१९. [प्र०] से किं तं सरीरबंधे ? [उ०] सरीरबंधे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा–पुव्वपओगपच्चइए य पडुप्पन्नपओगपच्चइए य।

२०. [प्र०] से किं तं पुव्वपओगपच्चइए ? [उ०] पुव्वपओगपच्चइए जं णं नेरइयाणं संसारवत्थाणं सव्वजीवाणं तत्थ तत्थ तेसु तेसु कारणेसु समोहणमाणाणं जीवप्पएसाणं बंधे समुप्पज्जइ। सेत्तं पुव्वपयोगपच्चइए।

२१. [प्र०] से किं तं पडुप्पन्नपओगपच्चइए ? [उ०] पडुप्पन्नपओगपच्चइए जं णं केवलनाणिस्स अणगारस्स केवलिसमुग्घाएणं समोहयस्स ताओ समुग्घायाओ पडिनियत्तमाणस्स अंतरा मंथे वट्टमाणस्स तेयाकम्माणं बंधे समुप्पज्जइ, किं कारणं ? ताहे से पएसा एगत्तीगया य भवंति। सेत्तं पडुप्पन्नपओगपच्चइए। सेत्तं सरीरबंधे।

२२. [प्र०] से किं तं सरीरप्पओगबंधे ? [उ०] सरीरप्पओगबंधे पंचविहे पन्नत्ते, तं जहा–ओरालियसरीरप्पओगबंधे, वेउव्वियसरीरप्पओगबंधे, आहारगसरीरप्पओगबंधे, तेयासरीरप्पओगबंधे, कम्मासरीरप्पओगबंधे।

२३. [प्र०] ओरालियसरीरप्पओगबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा–एगिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधे, बेइंदियओरालियसरीरप्पओगबंधे, जाव पंचिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधे।

देशसंहननबन्ध.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! देशसंहनन बन्ध केवा प्रकारनो छे ? [उ०] हे गौतम ! गाडा, रथ, यान (नाना गाडा) *युग्यवाहन गिल्लि (हाथीनी अंबाडी), थिल्लि (पलाण), शिबिका, अने स्यन्दमानी (पुरुषप्रमाण वाहनविशेष), तेमज लोढी, लोढाना कडाया, कडछा, आसन, शयन, स्तंभो, भांड (माटीना वासण) पात्र अने नानाप्रकारना उपकरण–इत्यादि पदार्थोनो जे संबन्ध थाय छे ते देश संहननबन्ध छे. ते जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त, अने उत्कृष्टथी संख्येय काल सुधी रहे छे. ए प्रमाणे देशसंहनन बन्ध कह्यो.

सर्वसंहननबन्ध.

१८. [प्र०] सर्वसंहनन बन्ध केवा प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! दूध अने पाणी इत्यादिनो सर्वसंहनन बन्ध कह्यो छे. ए प्रमाणे सर्वसंहनन बन्ध कह्यो. ए रीते आलीनबंध पण कह्यो.

शरीरबन्ध.

१९. [प्र०] शरीरबन्ध केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] शरीरबन्ध बे प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे–१ †पूर्वप्रयोगप्रत्ययिक अने २ प्रत्युत्पन्नप्रयोगप्रत्ययिक.

पूर्वप्रयोगप्रत्ययिक बन्ध.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! पूर्वप्रयोगप्रत्ययिक शरीरबन्ध केवा प्रकारनो छे ? [उ०] ते ते स्थळे ते ते कारणोने लीधे समुद्घात करता नैरयिको अने संसारावस्थावाळा सर्व जीवोना जीवप्रदेशोनो जे बंध थाय छे ते पूर्वप्रयोगप्रत्ययिक बन्ध छे. ए प्रमाणे पूर्वप्रयोगप्रत्ययिक बन्ध कह्यो.

प्रत्युत्पन्नप्रयोगप्रत्ययिकबन्ध.

२१. [प्र०] प्रत्युत्पन्नप्रयोगप्रत्ययिक बन्ध केवा प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] केवलिसमुद्घात वडे समुद्घात करता अने ते समुद्घातथी पाछा फरता, वच्चे मंथानमां वर्तता केवलज्ञानी अनगारना तैजस अने कार्मण शरीरनो जे बन्ध थाय ते प्रत्युत्पन्नप्रयोगप्रत्ययिक बन्ध कहेवाय छे. तैजस अने कार्मण शरीरनो बन्ध शाथी थाय छे ? ते वखते ते आत्मप्रदेशो संघातने पामे छे. [अने ते प्रदेशोने अनुसरीने तैजस अने कार्मणनो पण बन्ध थाय छे.] ए प्रमाणे प्रत्युत्पन्नप्रयोगप्रत्ययिक बन्ध कह्यो, ए प्रमाणे शरीरबन्ध कह्यो.

शरीरप्रयोगबन्ध.

२२. [प्र०] शरीरप्रयोग बन्ध केवा प्रकारे कह्यो छे ? [उ०] शरीरप्रयोग बन्ध पांच प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे–१ औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध, २ वैक्रियशरीरप्रयोगबन्ध, ३ आहारकशरीरप्रयोगबन्ध, ४ तैजसशरीरप्रयोगबन्ध अने ५ कार्मणशरीरप्रयोगबन्ध.

औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध.

२३. [प्र०] हे भगवन् ! औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध पांच प्रकारनो कह्यो छे. ते आ प्रमाणे–एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध, द्वीन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध, यावत् पंचेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध.

---

१ –माणिया–को–ग, ङ। २ –रयाणं क। ३ –नियत्तेमा– घ। ४ भवंतित्ति ग। ५ तेइंदिय०, चउरिंदिय०, पंचिंदिय० ओरालिय० क।

१७. * युग्य एटले गोल्लदेशमां प्रसिद्ध बे हाथ प्रमाण वेदिकायुक्त जंपान—टीका.

१९. † १ पूर्वप्रयुक्त प्रयोग–वेदना कषायादि समुद्घातरूप जीवनो व्यापार, ते निमित्ते थयेलो जीवप्रदेशोनो के तदाश्रित तैजस–कार्मण शरीरनो बन्ध ते पूर्वप्रयोगप्रत्ययिक बन्ध. २ वर्तमान काळे केवली समुद्घातरूप जीवव्यापारथी थयेलो तैजस–कार्मणनो शरीरनो बन्ध ते प्रत्युत्पन्नप्रयोगप्रत्ययिक बन्ध.

२४. [प्र०] एगिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधे णं भंते! कतिविहे पण्णत्ते? [उ०] गोयमा! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा–पुढविक्काइयएगिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधे, एवं एएणं अभिलावेणं भेदो जहा ओगाहणसंठाणे ओरालियसरीरस्स तहा भाणियव्वो, जाव पज्जत्तागब्भवक्कंतियमणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधे य, अपज्जत्तागब्भवक्कंतियमणुस्स– जाव बंधे य।

२५. [प्र०] ओरालियसरीरप्पओगबंधे णं भंते! कस्स कम्मस्स उदएणं? [उ०] गोयमा! वीरिय–सजोग–सद्दव्वयाए पमादपच्चया कम्मं च जोगं च भवं च आउयं च पडुच्च ओरालियसरीरप्पओगनामकम्मस्स उदएणं ओरालियसरीरप्पओगबंधे।

२६. [प्र०] एगिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधे णं भंते! कस्स कम्मस्स उदएणं? [उ०] एवं चेव, पुढविक्काइयएगिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधे एवं चेव, एवं जाव वणस्सइकाइया, एवं बेइंदिया, एवं तेइंदिया, एवं चउरिंदिया।

२७. [प्र०] तिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधे णं भंते! कस्स कम्मस्स उदएणं? [उ०] एवं चेव।

२८. [प्र०] मणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधे णं भंते! कस्स कम्मस्स उदएणं? [उ०] गोयमा! वीरिय–सजोग–सद्दव्वयाए पमादपच्चया जाव आउयं च पडुच्च मणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरप्पओगनामकम्मस्स उदएणं।

२९. [प्र०] ओरालियसरीरप्पओगबंधे णं भंते! किं देसबंधे, सव्वबंधे? [उ०] गोयमा! देसबंधे वि, सव्वबंधे वि।

३०. [प्र०] एगिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधे णं भंते! किं देसबंधे, सव्वबंधे? [उ०] एवं चेव, एवं पुढविक्काइया, एवं जाव– [प्र०] मणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधे णं भंते! किं देसबंधे, सव्वबंधे? [उ०] गोयमा! देसबंधे वि, सव्वबंधे वि।

एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध.

२४. [प्र०] हे भगवन्! एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध केटला प्रकारनो कह्यो छे? [उ०] हे गौतम! पांच प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे–पृथिवीकायिकएकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध; ए प्रमाणे ए अभिलापथी जेम *'अवगाहनासंस्थान' पदमां औदारिक शरीरनो भेद कह्यो छे तेम अहीं कहेवो; यावत् पर्याप्तगर्भजमनुष्यपंचेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध अने अपर्याप्तगर्भजमनुष्यपंचेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध.

औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे?

२५. [प्र०] हे भगवन्! औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे? [उ०] हे गौतम! जीवनी †सवीर्यता, सयोगता अने सद्द्रव्यताथी, प्रमादहेतुथी, कर्म, योग, (काययोग) भव अने आयुष्यने आश्रयी औदारिकशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.

एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध.

२६. [प्र०] हे भगवन्! एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे? [उ०] पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. पृथिवीकायिकएकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध ए प्रमाणे जाणवो. ए प्रमाणे यावद् वनस्पतिकायिक एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध, तथा बेइन्द्रिय, त्रींद्रिय अने चउरिन्द्रिय औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध जाणवो.

पंचेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध. मनुष्यऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध.

२७. [प्र०] हे भगवन्! पंचेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे? [उ०] पूर्व प्रमाणे जाणवुं.

२८. [प्र०] हे भगवन्! मनुष्यपंचेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे? [उ०] हे गौतम! सवीर्यता, सयोगता अने सद्द्रव्यताथी, तेम प्रमादहेतुथी, यावत् आयुष्यने आश्रयी मनुष्यपंचेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी मनुष्यपंचेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.

औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध देश के सर्वबन्ध छे?

२९. [प्र०] हे भगवन्! औदारिकशरीरप्रयोगबन्धनो शुं देशबन्ध छे के सर्वबन्ध छे? [उ०] हे गौतम! ‡देशबन्ध पण छे अने सर्वबन्ध पण छे.

एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध. मनुष्य औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध.

३०. [प्र०] हे भगवन्! एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध शुं देशबन्ध छे के सर्वबन्ध छे? [उ०] पूर्वनी पेठे जाणवुं. ए प्रमाणे यावत्–[प्र०] हे भगवन्! मनुष्यपंचेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्धनो शुं देशबन्ध छे के सर्वबन्ध छे? [उ०] हे गौतम! देशबन्ध पण छे अने सर्वबन्ध पण छे.

---

१ –नामाकम्म– क, –नामाए कम्म– ङ। २ –प्पयोग एवं क, प्पयोगबंधे वि एवं ङ। ३ पमाद–जाव क। ४ नामाए ङ।

२४. * प्रज्ञा० पद २१. प. ४०८–१. पं. १.

२५. † वीर्यान्तराय कर्मना क्षयोपशम वडे उत्पन्न थयेली शक्ति ते सवीर्यता, मनोयोगादिनो व्यापार ते सयोगता, तथाविध पुद्गलादि द्रव्य ते सद्द्रव्यता, प्रमाद, एकेन्द्रियजातिनाम वगेरे कर्म, योग–काययोगादि, तिर्यंचादि भव अने तिर्यंचादिकना आयुषना लीधे उदयप्राप्त औदारिकशरीरप्रयोगनामकर्मथी औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.—टीका.

२९. ‡ जेम घृतादिकथी भरेली अने तपी गयेली कडाईमां नांखेलो अपूप (पुडो) प्रथम समये घृतादिकने केवळ ग्रहण करे, अने बाकीना समये ग्रहण करे अने छोडे, तेम आ जीव ज्यारे पूर्वना शरीरने छोडीने बीजुं शरीर ग्रहण करे त्यारे प्रथम समये उत्पत्तिस्थानके रहेला शरीरयोग्य पुद्गलोने केवळ ग्रहण करे छे, माटे आ सर्वबंध छे; त्यार पछी द्वितीयादि समये (शरीरप्रायोग्य पुद्गलोने) ग्रहण करे छे अने छोडे छे माटे ते देशबन्ध छे, तेथी औदारिकशरीरनो देशबंध पण होय छे अने सर्वबन्ध पण होय छे.—टीका.

३१. [प्र०] ओरालियसरीरप्पओगबंधे णं भंते! कालओ केवच्चिरं होइ? [उ०] गोयमा! सव्वबंधे एक्कं समयं, देसबंधे जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं समयऊणाइं।

३२. एगिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधे णं भंते! कालओ केवच्चिरं होइ? [उ०] गोयमा! सव्वबंधे एक्कं समयं, देसबंधे जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं समयऊणाइं।

३३. [प्र०] पुढविक्काइयएगिंदियपुच्छा। [उ०] गोयमा! सव्वबंधे एक्कं समयं, देसबंधे जहन्नेणं खुड्डागभवग्गहणं तिसमयऊणं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं समयूणाइं; एवं सव्वेसिं सव्वबंधो एक्कं समयं, देसबंधो जेसिं नत्थि वेउव्वियसरीरं तेसिं जहन्नेणं खुड्डागभवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं जा जस्स ठिती सा समयूणा कायव्वा। जेसिं पुण अत्थि वेउव्वियसरीरं तेसिं देसबंधो जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं जा जस्स ठिती सा समयूणा कायव्वा, जाव मणुस्साणं देसबंधे जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं समयूणाइं।

३४. [प्र०] ओरालियसरीरबंधंतरं णं भंते! कालओ केवच्चिरं होइ? [उ०] गोयमा! सव्वबन्धन्तरं जहन्नेणं खुड्डागभवग्गहणं तिसमयऊणं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडिसमयाहियाइं; देसबंधंतरं जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं तिसमयाहियाइं।

३५. [प्र०] एगिंदियओरालियपुच्छा। [उ०] गोयमा! सव्वबंधंतरं जहण्णेणं खुड्डागभवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं समयाहियाइं; देसबंधंतरं जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं।

औदारिक शरीरप्रयोगबन्धनो काल.

३१. [प्र०] हे भगवन्! औदारिकशरीरप्रयोगबन्ध कालथी क्यां सुधी होय? [उ०] हे गौतम! *सर्वबन्ध एक समय, अने देशबन्ध जघन्यथी एक समय, अने उत्कृष्ट एक समय न्यून त्रण पल्योपम सुधी होय छे.

एकेन्द्रिय.

३२. [प्र०] हे भगवन्! एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध कालथी क्यां सुधी होय? [उ०] हे गौतम! सर्वबन्ध एकसमय, अने देशबन्ध जघन्यथी एक समय, अने उत्कृष्ट एक समय न्यून बावीश हजार वर्ष सुधी होय छे.

पृथिवीकायिक.

३३. [प्र०] हे भगवन्! पृथिवीकायिकएकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्ध संबंधे प्रश्न. [उ०] हे गौतम! सर्वबन्ध एक समय, अने देशबन्ध जघन्यथी †त्रण समय न्यून क्षुल्लक भव पर्यन्त, अने उत्कृष्ट एक समय न्यून बावीश हजार वर्ष सुधी होय छे. ए प्रमाणे सर्वजीवोनो सर्वबन्ध एक समय छे, अने देशबन्ध जेओने वैक्रियशरीर नथी तेओने जघन्यथी त्रण समय न्यून क्षुल्लक भव पर्यन्त होय छे, अने उत्कृष्टथी जेटली जेनी आयुष्यस्थिति छे, तेथी एक समय न्यून करवो. जेओने वैक्रियशरीर छे तेओने देशबन्ध जघन्यथी एक समय, अने उत्कृष्टथी जेटलुं जेनुं आयुष्य छे तेटलामांथी एक समय न्यून जाणवो, ए प्रमाणे यावद् मनुष्योनो देशबन्ध जघन्यथी एक समय, अने उत्कृष्टथी एक समय न्यून त्रण पल्योपम सुधी जाणवो.

औदारिक शरीरबन्धना अन्तरनो काल.

३४. [प्र०] हे भगवन्! औदारिक शरीरना बन्धनुं अन्तर कालथी क्यां सुधी होय? [उ०] हे गौतम! सर्वबन्धनुं अन्तर जघन्यथी त्रण समय न्यून क्षुल्लक भवग्रहण पर्यन्त छे, अने उत्कृष्टथी ‡समयाधिक पूर्वकोटी अने तेत्रीश सागरोपम छे. अने देशबन्धनुं अन्तर जघन्यथी एक समय, अने उत्कृष्टथी त्रण समय अधिक तेत्रीश सागरोपम छे.

एकेन्द्रिय.

३५. [प्र०] एकेन्द्रियऔदारिकशरीरबन्धसंबंधे प्रश्न. [उ०] हे गौतम! तेओना सर्वबन्धनुं अन्तर जघन्यथी त्रण समय न्यून क्षुल्लक भव पर्यन्त, अने उत्कृष्टथी समयाधिक बावीश हजार वर्ष सुधी होय छे. देशबन्धनुं अन्तर जघन्यथी एक समय, अने उत्कृष्टथी अंतर्मुहूर्त सुधीनुं छे.

---

१ समयूणाइं क। २ जस्स उक्कोसिया ठि–क–घ विनाऽन्यत्र। ३ –बंधंतरे णं क विनाऽन्यत्र। ४ ति उक्को–क। ५ समऊणं क।

३१. * पुद्गलना दृष्टान्तथी सर्वबन्ध एकसमय छे. अने ज्यारे वायुकायिक के मनुष्यादि वैक्रिय शरीर करीने अने तेने छोडीने औदारिक शरीरनो एक समय सर्वबन्ध करे अने पुनः तेनो देशबन्ध करी एक समय पछी तुरतज मरण पामे त्यारे जघन्यथी एक समय देशबन्ध होय छे. औदारिकशरीरवाळानी त्रण पल्योपम उत्कृष्ट स्थिति छे, तेमां प्रथम समये तेओ सर्वबन्धक छे, अने पछी एक समय न्यून त्रण पल्योपम सुधी देशबन्धक छे.–टीका.

३३. † जे पृथिवीकायिक जीव त्रण समयनी विग्रहगतिए उत्पन्न थयो छे ते त्रीजे समये सर्वबन्धक छे, अने बाकीना समये क्षुल्लकभवप्रमाण पोताना जघन्य आयुषपर्यन्त देशबन्धक होय छे. माटे 'ते त्रणसमयन्यून क्षुल्लकभवपर्यन्त जघन्यथी देशबन्धक होय' एम कह्युं छे.–टीका.

३४. ‡ कोइ जीव मनुष्यादिगतिमां अविग्रहगतिए आवी अने त्यां प्रथम समये सर्वबन्धक थईने पूर्वकोटि वर्ष पर्यन्त त्यां रही तेत्रीश सागरोपमनी स्थितिवाळो नारक के सर्वार्थसिद्ध देव थाय, अने पछी ते त्रण समयनी विग्रहगतिए औदारिकशरीरधारी थाय, त्यां विग्रहगतिना बे समय अनाहारक होय अने त्रीजे समये ते औदारिक शरीरनो सर्वबन्धक थाय, हवे तेमां विग्रहगतिना बे समय अनाहारक छे तेमांथी एक समय पूर्वकोटीना सर्वबन्धस्थाने प्रक्षिप्त करीए तेथी पूर्वकोटी पूर्ण थइ अने एक समय अधिक थयो. ए रीते सर्वबन्धनुं उत्कृष्ट अन्तर समयाधिक पूर्वकोटि अने तेत्रीश सागरोपम थाय छे.–टीका.

३६. [प्र०] पुढविकाइयएगिंदियपुच्छा। [उ०] सव्वबंधंतरं जहेव एगिंदियस्स तहेव भाणियव्वं, देसबंधंतरं जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तिन्नि समया। जहा पुढविकाइयाणं एवं जाव चउरिंदियाणं वाउकाइयवज्जाणं, नवरं सव्वबंधंतरं उक्कोसेणं जा जस्स ठिती सा समयाहिया कायव्वा। वाउकाइयाणं सव्वबंधंतरं जहण्णेणं खुड्डागभवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं तिन्नि वाससहस्साइं समयाहियाइं। देसबंधंतरं जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं।

३७. [प्र०] पंचिंदियतिरिक्खजोणियओरालियपुच्छा। [उ०] सव्वबंधंतरं जहण्णेणं खुड्डागभवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी समयाहिया। देसबंधंतरं जहा एगिंदियाणं तहा पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं, एवं मणुस्साण वि निरवसेसं भाणियव्वं जाव उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं।

३८. [प्र०] जीवस्स णं भंते! एगिंदियत्ते, नोएगिंदियत्ते, पुणरवि एगिंदियत्ते एगिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधंतरं कालओ केवच्चिरं होइ? [उ०] गोयमा! सव्वबंधंतरं जहण्णेणं दो खुड्डाइं भवग्गहणाइं तिसमयूणाइं, उक्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साइं संखेज्जवासमब्भहियाइं। देसबंधंतरं जहन्नेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयाहियं, उक्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साइं संखेज्जवासमब्भहियाइं।

३९. [प्र०] जीवस्स णं भंते! पुढविकाइयत्ते, नोपुढविकाइयत्ते, पुणरवि पुढविकाइयत्ते पुढविकाइयएगिंदियओरालियसरीरप्पओगबंधंतरं कालओ केवच्चिरं होइ? [उ०] गोयमा! सव्वबंधंतरं जहण्णेणं दो [1]खुड्डाइं भवग्गहणाइं ति[2]समयऊणाइं एवं चेव, उक्कोसेणं अणंतं कालं—अणंता [3]उस्सप्पिणी—ओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अणंता लोगा—असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, ते णं

३६. [प्र०] पृथिवीकायिक एकेन्द्रियना औदारिकशरीरबन्धसंबंधे प्रश्न. [उ०] हे गौतम! तेओना सर्वबन्धनुं अन्तर जेम एकेन्द्रियोने कह्युं तेम कहेवुं; अने देशबन्धनुं अन्तर जघन्यथी एक समय, अने उत्कृष्टथी त्रण समय सुधीनुं होय छे. जेम पृथ्वीकायिकने कह्युं तेम वायुकायिक सिवाय यावत् चउरिन्द्रिय सुधीना जीवोने जाणवुं, पण उत्कृष्टथी सर्वबन्धनुं अन्तर जेटली जेनी आयुष्य स्थिति होय तेटली एक समय अधिक करवी. (अर्थात् सर्वबन्धनुं अन्तर समयाधिक आयुष्यनी स्थिति प्रमाणे जाणवुं.) वायुकायिकना सर्वबन्धनुं अन्तर जघन्यथी त्रण समय न्यून क्षुल्लक भव, अने उत्कृष्टथी समयाधिक त्रण हजार वर्ष सुधी जाणवुं. तेओना देशबन्धनुं अन्तर जघन्यथी एक समय, अने उत्कृष्टथी अंतर्मुहूर्त पर्यन्त जाणवुं.

३७. [प्र०] पंचेन्द्रियतिर्यंचना औदारिक शरीरबन्धना अन्तर संबन्धे प्रश्न [उ०] हे गौतम! तेओना सर्वबन्धनुं अन्तर जघन्यथी त्रण समय न्यून क्षुल्लक भवपर्यन्त, अने उत्कृष्टथी समयाधिक पूर्व कोटि होय छे. देशबन्धनुं अन्तर जेम एकेन्द्रियोने कह्युं छे ते प्रकारे सर्व पंचेन्द्रिय तिर्यंचोने जाणवुं. ए प्रमाणे मनुष्योने पण समग्र जाणवुं, यावत् उत्कृष्टथी अंतर्मुहूर्त छे.

पंचेन्द्रिय तिर्यंचना औदारिक शरीरबन्धनुं अन्तर.

३८. [प्र०] हे भगवन्! कोइ जीव एकेन्द्रियपणामां होय, अने पछी ते एकेन्द्रिय सिवाय बीजी कोइ जातिमां जाय, अने पुनः एकेन्द्रियपणामां आवे तो एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर काळथी केटलुं होय? [उ०] हे गौतम! जघन्यथी सर्वबन्धनुं अन्तर *त्रण समय न्यून बे क्षुल्लक भव, अने उत्कृष्टथी संख्याता वर्ष अधिक बे हजार सागरोपम छे. तथा देशबन्धनुं अन्तर जघन्यथी एक समय अधिक क्षुल्लक भव, अने उत्कृष्टथी संख्यात वर्ष अधिक बे हजार सागरोपम छे.

एकेन्द्रियऔदारिक शरीरना प्रयोग बन्धनुं अन्तर.

३९. [प्र०] हे भगवन्! कोइ जीव पृथिवीकायपणामां होय, त्यांथी पृथिवीकाय सिवायना बीजा जीवोमां उत्पन्न थाय अने पुनः ते पृथिवीकायमां आवे तो पृथिवीकायिक एकेन्द्रियऔदारिकशरीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर केटलुं होय? [उ०] हे गौतम! सर्वबन्धनुं अन्तर जघन्यथी ए रीते त्रण समय न्यून बे क्षुल्लक भव पर्यन्त छे, अने उत्कृष्टथी काळनी अपेक्षाए †अनन्तकाल—अनन्त

पृथिवीकायिक-औदारिक शरीर-बन्धनुं अन्तर.

---

१ खुड्डाग—क। २ एवं चेव क। ३ ओसप्पिणी ओ का—क।

३८. * कोइ एकेन्द्रिय जीव त्रण समयनी विग्रहगतिवडे उत्पन्न थाय, त्यां बे समय अनाहारक रहे अने त्रीजे समये सर्वबन्ध करे, पछी त्रण समय न्यून क्षुल्लक भव प्रमाण आयुष् पूर्ण करी एकेन्द्रिय शिवाय बीजी जातिमां उत्पन्न थाय, त्यां पण क्षुल्लक भवनी स्थिति पूर्ण करी पुनः अविग्रह गति वडे एकेन्द्रिय जातिमां उपजे अने प्रथम समये सर्वबन्धक थाय, त्यारे त्रण समय न्यून बे क्षुल्लक भव सर्वबन्धनुं जघन्य अन्तर होय. कोइ पृथिवीकायिक एकेन्द्रिय जीव ऋजुगतिथी उत्पन्न थाय अने प्रथम समये सर्वबन्धक थाय त्यां बावीश हजार वर्षनुं आयुष् पूर्ण करी मरीने त्रसकायिकमां उत्पन्न थाय, त्यां पण संख्यातवर्षाधिक बे हजार सागरोपमनी उत्कृष्ट कायस्थितिने पूरी करी पुनः एकेन्द्रियपणे उत्पन्न थईने सर्वबन्धक थाय त्यारे उपर कहेलुं सर्वबन्धनुं उत्कृष्ट अन्तर थाय. अहीं सर्वबन्धना समय हीन एकेन्द्रियनी उत्कृष्ट भवस्थितिनो त्रसकायनी कायस्थितिमां प्रक्षेप करीए तो पण संख्याता वर्ष ज थाय, केमके संख्याताना संख्यात भेद छे.—टीका.

३९. † काळनी अपेक्षाए अनन्त काल छे—एटले अनन्त काळना समयोने उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीना समयोथी अपहारता अनन्त उत्सर्पिणी अवसर्पिणी थाय. क्षेत्रनी अपेक्षाए अनन्त लोक—एटले अनन्तकाळना समयोने लोकाकाशना प्रदेशो वडे अपहारता अनन्त लोक थाय. अहीं वनस्पतिनी कायस्थिति अनन्तकाळनी होवाथी ते अपेक्षाए सर्वबन्धनुं उत्कृष्ट अन्तर अनन्त काल छे.—टीका.

पोग्गलपरियट्टा आवलियाए असंखेज्जइभागो । देसबंधंतरं जहन्नेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयाहियं, उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव आवलियाए असंखेज्जइभागो । जहा पुढविकाइयाणं एवं वणस्सइकाइयवज्जाणं जाव मणुस्साणं । वणस्सइकाइयाणं दोन्नि खुड्डाइं एवं चेव, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं–असंखेज्जाओ उस्सप्पिणी–ओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ असंखेज्जा लोगा, एवं देसबंधंतरं पि उक्कोसेणं पुढविकालो ।

४०. [प्र०] एएसि णं भंते ! जीवाणं ओरालियसरीरस्स देसबंधगाणं, सव्वबंधगाणं, अबंधगाण य कयरे कयरे– जाव विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा ओरालियसरीरस्स सव्वबंधगा, अबंधगा विसेसाहिया, देसबंधगा असंखेज्जगुणा ।

४१. [प्र०] वेउव्वियसरीरप्पओगबंधे णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा–एगिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगबंधे य पंचेंदियवेउव्वियसरीरप्पओगबंधे य ।

४२. [प्र०] जइ एगिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगबंधे किं वाउक्काइयएगिंदियसरीरप्पओगबंधे य, अवाउक्काइयएगिंदियसरीरप्पओगबंधे ? [उ०] एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओगाहणसंठाणे वेउव्वियसरीरभेदो तहा भाणियव्वो, जाव पज्जत्तासव्वट्ठसिद्ध-अणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगबंधे य, अपज्जत्तसव्वट्ठसिद्ध– जाव पओगबंधे य ।

४३. [प्र०] वेउव्वियसरीरप्पओगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? [उ०] गोयमा ! वीरिय–सजोग–सद्दव्वयाए जाव आउयं वा लद्धिं वा पडुच्च वेउव्वियसरीरप्पओगनामाए कम्मस्स उदएणं वेउव्वियसरीरप्पओगबंधे ।

४४. [प्र०] वाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगपुच्छा । [उ०] गोयमा ! वीरिय–सजोग–सद्दव्वयाए एवं चेव[1] जाव लद्धिं पडुच्च वाउक्काइयएगिंदियवेउव्विय– जाव बंधे ।

४५. [प्र०] रयणप्पभापुढविनेरइयपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पओगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? [उ०] गोयमा ! वीरिय–सजोग–सद्दव्वयाए जाव आउयं वा पडुच्च रयणप्पभापुढवि[2-3]– जाव बंधे, एवं जाव अहे सत्तमाए ।

उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी छे, क्षेत्रथी अनन्तलोक–असंख्य पुद्गलपरावर्त छे, अने ते पुद्गलपरावर्त आवलिकाना असंख्यातमा भागना (समय) तुल्य छे. तथा देशबन्धनुं अन्तर जघन्यथी समयाधिक क्षुल्लक भव, अने उत्कृष्टथी अनन्त काल, यावत् आवलिकाना असंख्यातमा भागना समय तुल्य असंख्य पुद्गलपरावर्त छे. जेम पृथिवीकायिकोने कह्युं तेम वनस्पतिकायिक सिवाय बाकीना यावद् मनुष्य सुधीना जीवो माटे जाणवुं. वनस्पतिकायिकोने सर्वबन्धनुं अन्तर जघन्यथी कालनी अपेक्षाए ए प्रमाणे [त्रण समय न्यून] बे क्षुल्लक भव, अने उत्कृष्टथी असंख्यकाल–असंख्य उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी सुधी छे, क्षेत्रथी असंख्य लोक छे; देशबन्धनुं अन्तर जघन्यथी ए प्रमाणे (समयाधिक क्षुल्लक भव) जाणवुं. अने उत्कृष्टथी पृथिवीकायना स्थितिकाल (असंख्य उत्सर्पिणी अवसर्पिणी) सुधी जाणवुं.

औदारिक शरीरना सर्वबन्धक, देशबन्धक अने अबन्धकनुं अल्पबहुत्व.

४०. [प्र०] हे भगवन् ! ए औदारिक शरीरना देशबन्धक, सर्वबन्धक अने अबन्धक जीवोमां कया जीवो कोनाथी यावद् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! सौथी थोडा जीवो औदारिक शरीरना सर्वबन्धक छे, तेथी अबन्धक जीवो विशेषाधिक छे, अने तेथी देशबन्धक जीवो असंख्यात गुण छे.

वैक्रियशरीरप्रयोग बन्ध.

४१. [प्र०] हे भगवन् ! वैक्रियशरीरनो प्रयोगबन्ध केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! बे प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे–एकेन्द्रिय वैक्रियशरीरप्रयोगबन्ध अने पंचेन्द्रिय वैक्रियशरीरप्रयोगबन्ध.

४२. [प्र०] जो एकेन्द्रिय वैक्रियशरीरप्रयोगबन्ध छे तो शुं वायुकायिक एकेन्द्रियशरीरप्रयोगबन्ध छे के वायुकायिक भिन्न एकेन्द्रिय शरीरप्रयोगबन्ध छे ? [उ०] ए प्रमाणे ए अभिलापथी जेम *'अवगाहनासंस्थान'पदमां वैक्रिय शरीरनो भेद कह्यो छे तेम कहेवो; यावत् पर्याप्तसर्वार्थसिद्ध अनुत्तरौपपातिक कल्पातीत वैमानिकदेव पंचेन्द्रिय वैक्रियशरीरप्रयोगबन्ध अने अपर्याप्त सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरौपपातिक– यावद् वैक्रियशरीरप्रयोगबन्ध.

वैक्रियशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे ?

४३. [प्र०] हे भगवन् ! वैक्रियशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! सवीर्यता, सयोगता अने सद्रव्यताथी यावद् आयुष् अने लब्धिने आश्रयी वैक्रियशरीरप्रयोग नामकर्मना उदयथी वैक्रियशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.

वायुकायिकवैक्रिय शरीरप्रयोगबन्ध.

४४. [प्र०] वायुकायिकएकेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगबन्ध संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सवीर्यता, सयोगता अने सद्रव्यताथी पूर्वनी पेठे यावद् लब्धिने आश्रयी वायुकायिकएकेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोग नामकर्मना उदयथी यावद् वैक्रियशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.

नैरयिकवैक्रिय शरीरप्रयोगबन्ध.

४५. [प्र०] हे भगवन् ! रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकपंचेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! सवीर्यता, सयोगता अने सद्रव्यताथी यावद् आयुष्यने आश्रयी रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकपंचेन्द्रियशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी यावद् वैक्रिय शरीरप्रयोगबन्ध थाय छे. ए प्रमाणे यावत् नीचे सातमी नरकपृथ्वी सुधी जाणवुं.

---

१ तं चेव क । २-३–प्पभपुढवि– क ।

* ४२. प्रज्ञा० पद. २१. प. ४१४–२. पं. ५.

४६. [प्र०] तिरिक्खजोणियपंचिंदियवेउव्वियसरीरपुच्छा। [उ०] गोयमा! वीरिय० जहा वाउक्काइयाणं, मणुस्सपंचिंदियवेउव्विय० एवं चेव। असुरकुमारभवणवासिदेवपंचेंदियवेउव्विय० जहा [1]रयणप्पभापुढविनेरइयाणं, एवं जाव थणियकुमारा, एवं वाणमंतरा, एवं जोइसिया, एवं सोहम्मकप्पोवया वेमाणिया, एवं जाव अच्चुयगेवेज्जकप्पातीया वेमाणिया[2], [3]अणुत्तरोववाइयकप्पातीया वेमाणिया एवं चेव।

४७. [प्र०] वेउव्वियसरीरप्पओगबंधे णं भंते! किं देसबंधे, सव्वबंधे? [उ०] गोयमा! देसबंधे वि, सव्वबंधे वि। वाउक्काइयएगिंदिय० एवं चेव, रयणप्पभापुढविनेरइया एवं चेव, एवं जाव अणुत्तरोववाइया।

४८. [प्र०] वेउव्वियसरीरप्पयोगबंधे णं भंते! कालओ केवच्चिरं होइ? [उ०] गोयमा! सव्वबंधे जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं दो समया। देसबंधे जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं समयूणाइं।

४९. [प्र०] वाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियपुच्छा। [उ०] गोयमा! सव्वबंधे एक्कं समयं, देसबंधे जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं।

५०. [प्र०] रयणप्पभापुढविणेरइयपुच्छा। [उ०] गोयमा! सव्वबंधे एक्कं समयं, देसबंधे जहण्णेणं दसवाससहस्साइं तिसमयऊणाइं, उक्कोसेणं सागरोवमं समयूणं, एवं जाव अहे [4]सत्तमा, नवरं देसबंधे जस्स जा जहन्निया ठिती सा तिसम[5]यूणा कायव्वा, [6]जाव उक्कोसिआ सा समयूणा। पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं मणुस्साण य जहा वाउक्काइयाणं, असुरकुमार—नागकुमार० जाव अणुत्तरोववाइयाणं जहा नेरइयाणं; नवरं जस्स जा ठिती सा भाणियव्वा, जाव अणुत्तरोववाइयाणं सव्वबंधे एक्कं समयं, देसबंधे जहन्नेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं तिसमऊणाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं समयूणाइं।

५१. [प्र०] वेउव्वियसरीरप्पओग[7]बंधंतरं णं भंते! कालओ केवच्चिरं होइ? [उ०] गोयमा! सव्वबंधंतरं जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—अणंताओ— जाव आवलियाए असंखेज्जइभागो; एवं देसबंधंतरं पि।

तिर्यंचयोनिकवैक्रिय शरीरप्रयोगबन्ध.

४६. [प्र०] तिर्यंचयोनिक पंचेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगबन्धसंबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम! सवीर्यता, सयोगता अने सद्द्रव्यतायी पूर्ववत् जेम वायुकायिकोने कह्युं तेम जाणवुं. मनुष्य पंचेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगबन्ध पण ए प्रमाणे जाणवो. असुरकुमार भवनवासीदेव पंचेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगबन्ध रत्नप्रभापृथिवीना नैरयिकनी पेठे जाणवो. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. ए रीते वानव्यंतर, ज्योतिषिक, सौधर्मकल्पोपपन्नक वैमानिक यावद् अच्युत, अने ग्रैवेयक कल्पातीत वैमानिकोने जाणवुं. तथा अनुत्तरौपपातिककल्पातीत वैमानिकोने पण ए प्रमाणे जाणवा.

देशबन्ध अने सर्वबन्ध.

४७. [प्र०] हे भगवन्! वैक्रियशरीरप्रयोगबन्ध शुं देशबन्ध छे के सर्वबन्ध छे? [उ०] हे गौतम! ते देशबन्ध पण छे अने सर्वबन्ध पण छे. ए प्रमाणे वायुकायिकएकेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगबन्ध तथा रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकवैक्रियशरीरप्रयोगबन्ध जाणवो. ए प्रमाणे यावद् अनुत्तरौपपातिक देवो सुधी जाणवुं.

वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धकाल.

४८. [प्र०] हे भगवन्! वैक्रियशरीरप्रयोगबन्ध कालथी क्यां सुधी होय? [उ०] हे गौतम! सर्वबन्ध जघन्यथी एक समय, अने उत्कृष्टथी *बे समय सुधी होय. तथा देशबन्ध जघन्यथी एक समय, अने उत्कृष्टथी एक समय न्यून तेत्रीश सागरोपम सुधी होय.

वायुकायिक वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धनो काल.

४९. [प्र०] वायुकायिकएकेन्द्रियवैक्रियशरीरप्रयोगबन्धसंबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम! सर्वबन्ध एक समय, अने देशबन्ध जघन्यथी एक समय अने उत्कृष्टथी अन्तर्मुहूर्त सुधी होय छे.

रत्नप्रभा नैरयिकवैक्रियशरीरप्रयोगबन्धकाल.

५०. [प्र०] रत्नप्रभानैरयिकवैक्रियशरीरप्रयोगबन्धसंबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम! सर्वबन्ध एक समय, अने देशबन्ध जघन्यथी त्रण समय उणा दशहजार वर्ष सुधी होय, तथा उत्कृष्टथी एक समय न्यून एक सागरोपम सुधी होय. ए प्रमाणे यावत् नीचे सातमी नरकपृथ्वी सुधी जाणवुं. परन्तु देशबन्धने विषे जेनी जे जघन्य स्थिति होय तेने एक समय न्यून करवी, अने यावत् जेनी उत्कृष्ट स्थिति होय ते पण समय न्यून करवी. पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच अने मनुष्यने वायुकायिकनी पेठे जाणवुं. असुरकुमार, नागकुमार, यावद् अनुत्तरौपपातिक देवोने नारकनी पेठे जाणवा; परन्तु जेनी जे स्थिति (आयुष्य) होय ते कहेवी, यावद् अनुत्तरौपपातिकोनो सर्वबन्ध एक समय, अने देशबन्ध जघन्यथी त्रण समय न्यून एकत्रीश सागरोपम सुधीनो होय छे; तथा उत्कृष्टथी एक समय न्यून तेत्रीश सागरोपम सुधीनो छे.

वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर.

५१. [प्र०] हे भगवन्! वैक्रियशरीरना प्रयोगबन्धनुं अन्तर कालथी क्यां सुधी होय? [उ०] हे गौतम! सर्वबन्धनुं अन्तर जघन्यथी एक समय, अने उत्कृष्टथी अनंतकाल—अनन्त उत्सर्पिणी अवसर्पिणी, यावद् आवलिकाना असंख्यातमा भागना समय तुल्य असंख्य पुद्गल परावर्त सुधी होय छे. ए प्रमाणे देशबन्धनुं अन्तर पण जाणवुं.

---

१ -नेरइया एवं क विनाऽन्यत्र। २ -या णेयव्वा छ। ३ एवं चेव अणु- छ विनाऽन्यत्र। ४ सत्तमाए क-घ विना। ५ समऊणा घ। ६ जस्स जा उक्कोसा क-छ विनाऽन्यत्र। ७ -बंधंतरे णं क विनाऽन्यत्र।

४८. * औदारिकशरीरी वैक्रियशरीर करतो प्रथम समये सर्वबन्धक थईने मरण पामी देव के नारक थाय त्यारे प्रथम समये सर्वबन्ध करे, माटे वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धनो सर्वबन्ध उत्कृष्टथी बे समय होय. तथा औदारिकशरीरी वैक्रिय शरीर करतो प्रथम समये सर्वबन्ध करी बीजे समये देशबन्धक थाय अने तरत ज मरण पामे माटे देशबन्ध जघन्यथी एक समय होय छे.—टीका.

५२. [प्र०] वाउक्काइयवेउव्वियसरीरपुच्छा । [उ०] गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं; एवं देसबंधंतरं पि ।

५३. [प्र०] तिरिक्खजोणियपंचिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगबंधंतरं–पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडिपुहुत्तं; एवं देसबंधंतरं पि, एवं मणुसस्स[1] वि ।

५४. [प्र०] जीवस्स णं भंते ! वाउक्काइयत्ते, नोवाउकाइयत्ते, पुणरवि वाउकाइयत्ते वाउक्काइयएगिंदियवेउव्वियपुच्छा । [उ०] गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहन्नेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं–वणस्सइकालो, एवं देसबंधंतरं पि ।

५५. [प्र०] जीवस्स णं भंते ! रयणप्पभापुढविनेरइयत्ते, णोरयणप्पभापुढवि०–पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो; देसबंधंतरं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं–वणस्सइकालो; एवं जाव अहे सत्तमाए, नवरं जा जस्स ठिती जहन्निया सा सव्वबंधंतरे[2] जहन्नेणं अंतोमुहुत्तमब्भहिया कायव्वा, सेसं तं चेव । पंचिंदियतिरिक्खजोणिय–मणुस्साण य जहा वाउक्काइयाणं; असुरकुमार–नागकुमार० जाव सहस्सार-देवाणं एएसिं जहा रयणप्पभापुढविनेरइयाणं[3], नवरं सव्वबंधंतरे जस्स जा ठिती जहन्निया सा अंतोमुहुत्तमब्भहिया कायव्वा, सेसं तं चेव ।

५६. [प्र०] जीवस्स णं भंते ! आणयदेवत्ते, नोआणय–पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहन्नेण अट्ठारस सागरो-

वायुकायिक वैक्रिय-शरीरप्रयोगबन्धा-न्तर.

५२. [प्र०] वायुकायिकना वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धना अन्तर संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! *सर्वबन्धनुं अन्तर जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त, अने उत्कृष्टथी पल्योपमनो असंख्यातमो भाग. ए प्रमाणे देशबन्धनुं अन्तर पण जाणवुं.

तिर्यंचपंचेन्द्रिय-वैक्रियशरीर प्रयो-गबन्धनुं अन्तर.

५३. [प्र०] तिर्यंचयोनिक पंचेन्द्रियना वैक्रियशरीरना प्रयोगबन्धना अन्तर संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सर्वबन्धनुं अन्तर जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त, अने उत्कृष्टथी पूर्वकोटिपृथक्त्व (बेथी नव पूर्वकोटी) सुधी होय छे. ए प्रमाणे देशबन्धनुं अन्तर पण जाणवुं. ए रीते मनुष्यने पण जाणवुं.

वायुकायिक वैक्रिय-शरीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर.

५४. [प्र०] हे भगवन् ! कोइ जीव वायुकायिकपणामां होय अने [मरीने] वायुकाय सिवाय बीजा जीवोमां आवीने उपजे, अने ते पुनः वायुकायपणामां आवे ते वायुकायिक एकेन्द्रिय वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धना अन्तर संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेना सर्व-बन्धनुं अन्तर जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त, अने उत्कृष्टथी अनन्तकाल–वनस्पतिकाल होय. ए प्रमाणे देशबन्धनुं पण अन्तर जाणवुं.

रत्नप्रभा नारकवैक्रिय शरीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर.

५५. [प्र०] हे भगवन् ! कोई जीव रत्नप्रभापृथिवीमां नारकपणे उत्पन्न थाय अने पछी रत्नप्रभापृथिवी शिवायना जीवोमां जाय, अने पुनः रत्नप्रभा नरकमां आवे ते रत्नप्रभानैरयिकना वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धना अन्तर संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सर्वबन्धनुं अन्तर जघन्यथी †अंतर्मुहूर्त अधिक दश हजार वर्ष, अने उत्कृष्टथी वनस्पतिकालपर्यन्त होय. तथा देशबन्धनुं अन्तर जघन्यथी अंतर्मुहूर्त, अने उत्कृष्टथी अनन्तकाल–वनस्पतिकाल सुधी होय. ए प्रमाणे यावत् नीचे सातमी नरकपृथ्वी पर्यन्त जाणवुं. परन्तु विशेष ए छे के जघन्यथी सर्वबन्धनुं अन्तर जे नारकनी जेटली जघन्य स्थिति होय तेटली स्थिति अन्तर्मुहूर्त अधिक जाणवी. बाकीनुं पूर्वनी पेठे जाणवुं. पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक अने मनुष्योने सर्वबन्धनुं अन्तर वायुकायिकनी पेठे जाणवुं. जेम रत्नप्रभाना नैरयिकोने कह्युं तेम असुर-

असुरकुमार, नाग-कुमार, यावत् सह-स्रार देवो.

कुमार, नागकुमार, यावत् सहस्रार देवोने पण जाणवुं, परन्तु विशेष ए छे के तेना सर्वबन्धनुं अन्तर जेनी जे जघन्य स्थिति होय तेने अन्तर्मुहूर्त अधिक करवी, बाकी सर्व पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं.

आनतदेववैक्रियश-रीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर.

५६. [प्र०] हे भगवन् ! आनतदेवलोकमां देवपणे उत्पन्न थयेलो कोइ जीव त्यांथी [च्यवी] आनत देवलोक सिवायना जीवोमां उत्पन्न थाय अने पाछो फरीने त्यां आनत देवलोकमां उत्पन्न थाय ते आनतदेव वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धना अन्तर संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे

---

१ मणुस्साण वि क । २– बंधंतरं ज– क विनाऽन्यत्र । ३ प्पभगाणं क ।

५२. * औदारिकशरीरी वायुकायिक वैक्रियशरीरनो प्रारंभ करे अने प्रथम समये सर्वबन्धक थइ मरण पामी पुनः वायुकायिक थाय, तेने अपर्याप्ता-वस्थामां वैक्रिय शक्ति उत्पन्न थती नथी, तेथी ते अन्तर्मुहूर्तमां पर्याप्त थईने वैक्रियशरीर करे त्यारे सर्वबन्धक थाय माटे सर्वबन्धनुं जघन्य अन्तर अन्तर्मु-हूर्त होय. तथा औदारिकशरीरी वायुकायिक वैक्रिय शरीर करे तेना प्रथम समये सर्वबन्धक थाय, त्यार पछी देशबन्धक थईने मरण पामी औदारिकशरीरी वायुकायिकमां पल्योपमनो असंख्यातमो भाग निर्गमन करी अवश्य वैक्रिय शरीर करे, त्यां प्रथम समये सर्वबन्धक थाय, माटे सर्वबन्धनुं यथोक्त अन्तर जाणवुं.–टीका.

५५. † रत्नप्रभापृथिवीनो नारक दश हजार वर्षनी स्थितिवाळो उत्पत्तिने प्रथम समये सर्वबन्धक होय छे, त्यार पछी त्यांथी च्यवीने गर्भज पंचेन्द्रियने विषे अन्तर्मुहूर्त रहीने पुनः रत्नप्रभा नरकमां उत्पन्न थाय, त्यां प्रथम समये सर्वबन्धक होय, तेथी सर्वबन्धनुं सूत्रोक्त जघन्य अन्तर होय.–टीका.

यमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अणंतं कालं–वणस्सइकालो; देसबंधंतरं जहण्णेणं वासपुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं–वणस्सइकालो; एवं जाव अच्चुए । नवरं जस्स जा ठिती सा सव्वबंधंतरं जहण्णेण वासपुहत्तमब्भहिया कायव्वा, सेसं तं चेव ।

५७. [प्र०] गेवेज्जकप्पातीय–पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहन्नेण बावीसं सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अणंतं कालं–वणस्सइकालो । देसबंधंतरं जहण्णेणं वासपुहत्तं, उक्कोसेणं वणस्सइकालो ।

५८. [प्र०] जीवस्स णं भंते ! अणुत्तरोववाइय–पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहन्नेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं सागरोवमाइं । देसबंधंतरं जहण्णेणं वासपुहत्तं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं सागरोवमाइं ।

५९. [प्र०] एएसि णं भंते ! जीवाणं वेउव्वियसरीरस्स देसबंधगाणं, सव्वबंधगाणं, अबंधगाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा वेउव्वियसरीरस्स सव्वबंधगा, देसबंधगा असंखेज्जगुणा, अबंधगा अणंतगुणा ।

६०. [प्र०] आहारगसरीरप्पओगबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! एगागारे पण्णत्ते ।

६१. [प्र०] जइ एगागारे पण्णत्ते किं मणुस्साहारगसरीरप्पओगबंधे, अमणुस्साहारगसरीरप्पयोगबंधे ? [उ०] गोयमा ! मणुस्साहारगसरीरप्पओगबंधे, नो अमणुस्साहारगसरीरप्पयोगबंधे। एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओगाहणसंठाणे जाव इड्ढिपत्तपमत्तसंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साहारगसरीरप्पओगबंधे, णो अणिड्ढिपत्तपमत्त० जाव आहारगसरीरप्पओगबंधे ।

६२. [प्र०] आहारगसरीरप्पओगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? [उ०] गोयमा ! वीरिय–सजोग–सद्दव्वयाए जाव लद्धिं च पडुच्च आहारगसरीरप्पओगणामाए कम्मस्स उदएणं आहारगसरीरप्पओगबंधे ।

गौतम ! सर्वबन्धनुं अन्तर जघन्यथी *वर्षपृथक्त्व अधिक अढार सागरोपम, अने उत्कृष्ट अनंतकाल–वनस्पतिकालपर्यन्त होय. तथा देशबन्धनुं अन्तर जघन्यथी वर्षपृथक्त्व, अने उत्कृष्ट अनंतकाल–वनस्पतिकाल होय. ए प्रमाणे यावद् अच्युत देवलोकपर्यन्त जाणवुं, परन्तु सर्वबन्धनुं अन्तर जघन्यथी जेनी जे स्थिति होय ते वर्षपृथक्त्व अधिक करवी. बाकी बधुं पूर्वनी पेठे जाणवुं.

ग्रैवेयककल्पातीत.

५७. [प्र०] ग्रैवेयक कल्पातीत वैक्रियशरीरप्रयोगबन्धना अन्तर संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सर्वबन्धनुं अन्तर जघन्यथी वर्षपृथक्त्व अधिक बावीश सागरोपम, अने उत्कृष्टथी अनंतकाल–वनस्पतिकाल सुधी होय. तथा देशबन्धनुं अन्तर जघन्यथी वर्षपृथक्त्व अने उत्कृष्टथी वनस्पतिकाल जाणवो.

अनुत्तरौपपातिक.

५८. [प्र०] हे भगवन् ! अनुत्तरौपपातिकदेवसंबंधे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सर्वबन्धनुं अन्तर जघन्यथी वर्षपृथक्त्व अधिक एकत्रीश सागरोपम, अने उत्कृष्टथी †संख्यात सागरोपम छे. तथा देशबन्धनुं अन्तर जघन्यथी वर्षपृथक्त्व, अने उत्कृष्टथी संख्यात सागरोपम होय छे.

अल्पबहुत्व.

५९. [प्र०] हे भगवन् ! ए वैक्रियशरीरना देशबंधक, सर्वबंधक अने अबंधक जीवोमां कया जीवो कया जीवोथी यावद् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! वैक्रियशरीरना सर्वबन्धक जीवो सौथी थोडा छे, तेथी देशबन्धको असंख्यातगुणा छे, अने तेथी अबन्धको अनन्तगुणा छे.

आहारकशरीरप्रयोगबन्ध.

६०. [प्र०] हे भगवन् ! आहारकशरीरनो प्रयोगबन्ध केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! एक प्रकारनो कह्यो छे.

आहारकशरीरप्रयोगबन्ध मनुष्य के ते शिवाय बीजाने होय?

६१. [प्र०] जो (आहारकशरीरप्रयोगबन्ध) एक प्रकारनो कह्यो छे तो शुं ते मनुष्योने आहारकशरीरप्रयोगबन्ध छे के मनुष्यशिवाय बीजा जीवोने आहारकशरीरप्रयोगबन्ध छे ? [उ०] हे गौतम ! मनुष्योने आहारकशरीरप्रयोगबन्ध होय छे, पण मनुष्य शिवाय बीजा जीवोने आहारकशरीरप्रयोगबन्ध होतो नथी. ए प्रमाणे ए अभिलापथी '‡अवगाहनासंस्थान' पदमां कह्या प्रमाणे यावद् ऋद्धिप्राप्त प्रमत्तसंयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्त संख्यात वर्षना आयुष्वाळा कर्मभूमिमां उत्पन्न थएला गर्भज मनुष्यने आहारकशरीरप्रयोगबन्ध होय छे, पण ऋद्धिने अप्राप्त प्रमत्तसंयतने यावद् आहारकशरीरप्रयोगबन्ध होतो नथी.

आहारक शरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी होय ?

६२. [प्र०] हे भगवन् ! आहारकशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी होय छे ? [उ०] हे गौतम ! सवीर्यता, सयोगता अने सद्द्रव्यताथी यावद् लब्धिने आश्रयी आहारकशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी आहारकशरीरप्रयोगबन्ध होय छे.

---

१ –पुहुत्तम– ग । २ अच्चुया क । ३– बंधंतरे क । ४ –पुहुत्त ग–ङ । ५ –भूमिगगब्भ –ग, भूमिगब्भ –ङ । ६ लद्धिं वा ङ ।

५६. * आनतकल्पनो कोई देव अढार सागरोपमना आयुषवाळो उत्पत्तिने प्रथम समये सर्वबन्धक होय, अने त्यांथी च्यवीने वर्षपृथक्त्व आयुषपर्यन्त मनुष्यमां रहीने पुनः तेज आनत कल्पमां उत्पन्न थईने प्रथम समये सर्वबन्धक थाय, तेथी सर्वबन्धनुं जघन्य अन्तर वर्षपृथक्त्व अधिक अढार सागरोपम जाणवुं–टीका.

५८. † अनुत्तरौपपातिकने विषे उत्कृष्ट सर्वबंधान्तर अने देशबंधान्तर संख्याता सागरोपम छे, कारण के त्यांथी च्यवीने अनन्तकाल संसारमां भ्रमण करतो नथी–टीका.

६१. ‡ प्रज्ञा० पद. २१ प. ४२३–१. पं–११.

६३. [प्र०] आहारगसरीरप्पओगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे सव्वबंधे ? [उ०] गोयमा ! देसबंधे वि सव्वबंधे वि ।

६४. [प्र०] आहारगसरीरप्पओगबंधे णं भंते ! कालओ केवचिरं होइ ? [उ०] गोयमा ! सव्वबंधे एक्कं समयं, देसबंधे जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ।

६५. [प्र०] आहारगसरीरप्पओगबंधंतरं[1] णं भंते ! कालओ केवचिरं होइ ? [उ०] गोयमा ! सव्वबंधंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं—अणंताओ उस्सप्पिणी–ओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अणंता लोया—अवड्ढपोग्गलपरियट्टं देसूणं । एवं देसबंधंतरं पि ।

६६. [प्र०] एएसि णं भंते ! जीवाणं आहारगसरीरस्स देसबंधगाणं, सव्वबंधगाणं, अबंधगाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा आहारगसरीरस्स सव्वबंधगा, देसबंधगा संखेज्जगुणा, अबंधगा अणंतगुणा ।

६७. [प्र०] तेयासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? [उ०] ! गोयमा पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—एगिंदियतेयासरीरप्पयोगबंधे, बेइंदियतेयासरीरप्पयोगबंधे, जाव पंचिंदियतेयासरीरप्पओगबंधे ।

६८. [प्र०] एगिंदियतेयासरीरप्पओगबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? [उ०] एवं एएणं अभिलावेणं भेदो जहा ओगाहणसंठाणे, जाव पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीतवेमाणियदेवपंचिंदियतेयासरीरप्पओगबंधे य, अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्ध–अणुत्तरोववाइय० जाव बंधे य ।

६९. [प्र०] तेयासरीरप्पओगबंधे णं भंते कस्स कम्मस्स उदएणं ? [उ०] गोयमा ! वीरिय–सजोग–सद्दव्वयाए जाव आउयं च पडुच्च तेयासरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं तेयासरीरप्पयोगबंधे ।

७०. [प्र०] तेयासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! किं देसबंधे, सव्वबंधे ? [उ०] गोयमा ! देसबंधे, नो सव्वबंधे ।

देशबन्ध अने सर्वबन्ध.

६३. [प्र०] हे भगवन् ! आहारकशरीरप्रयोगबन्ध शुं देशबन्ध छे के सर्वबन्ध छे ? [उ०] हे गौतम ! देशबन्ध पण छे, अने सर्वबन्ध पण छे.

आहारक शरीरप्रयोगबन्धनो काळ.

६४. [प्र०] हे भगवन् ! आहारकशरीरप्रयोगबन्ध काळथी क्यां सुधी होय ? [उ०] हे गौतम ! तेनो सर्वबन्ध एक समय, अने देशबन्ध जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त अने उत्कृष्टथी पण अंतर्मुहूर्त सुधी होय छे.

अन्तर.

६५. [प्र०] हे भगवन् ! आहारकशरीरना प्रयोगबन्धनुं अंतर काळथी केटलुं होय छे ? [उ०] हे गौतम ! तेना सर्वबन्धनुं अन्तर जघन्यथी अंतर्मुहूर्त, अने उत्कृष्टथी काळनी अपेक्षाए अनंतकाल—अनंत उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी होय छे. क्षेत्रथी अनंतलोक–कांइक न्यून अर्धपुद्गल परावर्त छे. ए प्रमाणे देशबन्धनुं अन्तर पण जाणवुं.

देशबन्धक, सर्वबन्धक अने अबन्धकनुं अल्पबहुत्व.

६६. [प्र०] हे भगवन् ! आहारकशरीरना देशबन्धक, सर्वबन्धक अने अबंधक जीवोमां कया जीवो कया जीवोथी यावद् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! सौथी थोडा जीवो आहारकशरीरना सर्वबंधक छे, तेथी देशबंधक संख्यात गुणा छे, अने तेथी अबन्धक जीवो अनन्तगुणा छे.

तैजसशरीरप्रयोगबन्ध.

६७. [प्र०] हे भगवन् ! तैजसशरीरप्रयोगबंध केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! पांच प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—१ एकेन्द्रिय तैजसशरीरप्रयोगबन्ध, २ द्वीन्द्रिय तैजसशरीरप्रयोगबन्ध, ३ त्रीन्द्रिय तैजसशरीरप्रयोगबन्ध, यावत् ५ पंचेन्द्रिय तैजसशरीरप्रयोगबन्ध.

एकेन्द्रिय.

यावत् पर्याप्तसर्वार्थसिद्ध.

६८. [प्र०] हे भगवन् ! एकेन्द्रियतैजसशरीरप्रयोगबन्ध केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] ए अभिलापथी ए प्रमाणे जेम *'अवगाहनासंस्थान'मां भेद कह्यो छे तेम अहीं पण कहेवो, यावद् पर्याप्त सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरौपपातिक कल्पातीत वैमानिक देवपंचेन्द्रिय तैजसशरीरप्रयोगबन्ध अने अपर्याप्तसर्वार्थसिद्ध अनुत्तरौपपातिक यावद् तैजसशरीरप्रयोगबन्ध छे.

तैजस शरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी ?

६९. [प्र०] हे भगवन् ! तैजसशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! सवीर्यता, सयोगता अने सद्द्रव्यताथी यावद् आयुष्यने आश्रयी तैजसशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी तैजसशरीरनो प्रयोगबन्ध थाय छे.

देशबन्ध के सर्वबन्ध ? सर्वबन्ध नथी.

७०. [प्र०] हे भगवन् ! तैजसशरीरप्रयोगबन्ध शुं देशबन्ध छे के सर्वबन्ध छे ? [उ०] हे गौतम ! देशबन्ध छे पण सर्वबन्ध नथी.

---

१ –प्पओगबंधंतरे ग–घ–ङ ।

६८. * प्रज्ञा० पद. २१. प. ४२६–१. पं. ३.

७१. [प्र०] तेयासरीरप्पओगबंधे णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? [उ०] गोयमा ! दुविहे पन्नत्ते, तं जहा–अणाइए वा अपज्जवसिए, अणाइए वा सपज्जवसिए ।

७२. [प्र०] तेयासरीरप्पओगबंधंतरं णं भंते ! कालओ केवच्चिरं होइ ? [उ०] गोयमा ! अणाइयस्स अपज्जवसियस्स नत्थि अंतरं, अणाइयस्स सपज्जवसियस्स नत्थि अंतरं ।

७३. [प्र०] एएसि णं भंते ! जीवाणं तेयासरीरस्स देसबंधगाणं, अबंधगाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा तेयासरीरस्स अबंधगा, देसबंधगा अणंतगुणा ।

७४. [प्र०] कम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! अट्ठविहे पण्णत्ते, तं जहा–नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंधे, जाव अंतराइयकम्मासरीरप्पओगबंधे ।

७५. [प्र०] णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? [उ०] गोयमा ! नाणपडिणीययाए णाणणिण्हवणयाए, णाणंतराएणं, णाणप्पदोसेणं, णाणच्चासायणयाए, णाणविसंवादणाजोगेणं णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगनामाए कम्मस्स उदएणं णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंधे ।

७६. [प्र०] दरिसणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? [उ०] गोयमा ! दंसणपडिणीययाए, एवं जहा णाणावरणिज्जं, नवरं दंसणनामं घेत्तव्वं, जाव दंसणविसंवादणाजोगेणं दंसणावरणिज्जकम्मासरीरप्पओगनामाए कम्मस्स उदएणं जाव पओगबंधे ।

७७. [प्र०] सायावेयणिज्जकम्मासरीरप्पओगबंधे णं भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? [उ०] गोयमा ! पाणाणुकंपयाए, भूयाणुकंपयाए, एवं जहा सत्तमसए दुस्समाउद्देसए जाव अपरियावणयाए सायावेयणिज्जकम्मासरीरप्पओगनामाए कम्मस्स उदएणं सायावेयणिज्जकम्मा० जाव बंधे ।

७१. [प्र०] हे भगवन् ! तैजसशरीरप्रयोगबन्ध कालथी क्यां सुधी होय ? [उ०] हे गौतम ! तैजसशरीरप्रयोगबन्ध बे प्रकारनो कह्यो छे. ते आ प्रमाणे–१ अनादि अपर्यवसित अने २ अनादि सपर्यवसित.

तैजसशरीरप्रयोगबन्धनो काळ.

७२. [प्र०] हे भगवन् ! तैजसशरीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर कालथी क्यां सुधी होय ? [उ०] हे गौतम ! अनादि अपर्यवसित अने अनादि सपर्यवसित ए बन्ने प्रकारना तैजसशरीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर नथी.

तैजसशरीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर.

७३. [प्र०] हे भगवन् ! ए तैजसशरीरना देशबन्धक अने अबन्धक जीवोमां कया जीवो कया जीवोथी यावद् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! तैजसशरीरना अबन्धक जीवो सौथी थोडा छे, तेथी देशबन्धक जीवो अनन्तगुण छे.

७४. [प्र०] हे भगवन् ! कार्मणशरीरप्रयोगबन्ध केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! आठ प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—ज्ञानावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगबन्ध, यावद् अन्तरायकार्मणशरीरप्रयोगबन्ध.

कार्मणशरीर प्रयोगबन्ध.

७५. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! ज्ञाननी प्रत्यनीकताथी, ज्ञाननो अपलाप करवाथी, ज्ञाननो अन्तराय–विघ्न करवाथी, ज्ञाननो प्रद्वेष करवाथी, ज्ञाननी अत्यन्त आशातना करवाथी, ज्ञानना विसंवादन योगथी अने ज्ञानावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी ज्ञानावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.

ज्ञानावरणीय कार्मणशरीर प्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे ?

७६. [प्र०] हे भगवन् ! दर्शनावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! दर्शननी प्रत्यनीकताथी–इत्यादि जेम ज्ञानावरणीयना कारणो कह्यां छे तेम दर्शनावरणीय माटे जाणवां; परन्तु [ज्ञानावरणीयस्थाने] 'दर्शनावरणीय' कहेवुं, यावद् दर्शन विसंवादनयोगथी, तथा दर्शनावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी दर्शनावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.

दर्शनावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगबन्ध.

७७. [प्र०] हे भगवन् ! सातावेदनीयकार्मणशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! प्राणीओ उपर अनुकम्पा करवाथी, भूतो उपर अनुकंपा करवाथी–इत्यादि जेम *सप्तम शतकना दुःषमा उद्देशकमां कह्युं छे तेम कहेवुं, यावद् तेओने परिताप नहि उत्पन्न करवाथी, अने सातावेदनीयकार्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी सातावेदनीयकार्मणशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.

सातावेदनीय.

१– प्पयोगबंधंतरे णं क विनाऽन्यत्र । २ –सायणाए ग । ३ –नाम घे– ग–घ । ४ दुसमोदे– क विनाऽन्यत्र ।

७७. * भग० खं. ३. श. ७ उ. ६. पृ० ११. सू० १४.
१५ म० सू०

७८. [प्र०] असायावेयणिज्ज-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! परदुक्खणयाए, परसोयणयाए, जहा सत्तमसए दुस्समाउद्देसए, जाव परियावणयाए असायावेयणिज्जकम्मा० जाव पओगबंधे ।

७९. [प्र०] मोहणिज्जकम्मासरीर-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! तिव्वकोहयाए, तिव्वमाणयाए, तिव्वमायंयाए, तिव्वलोभयाए, तिव्वदंसणमोहणिज्जयाए, तिव्वचरित्तमोहणिज्जयाए मोहणिज्जकम्मासरीरप्पओग० जाव पओगबंधे ।

८०. [प्र०] नेरइयाउयकम्मासरीर-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! महारंभयाए, महापरिग्गहयाए, कुणिमाहारेणं, पंचिंदियवहेणं नेरइयाउयकम्मासरीरप्पओगनामाए कम्मस्स उदएणं नेरइयाउयकम्मासरीर० जाव पओगबंधे ।

८१. [प्र०] तिरिक्खजोणियाउअकम्मासरीर-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! माइल्लयाए, नियडिल्लयाए, अलियवयणेणं, कूडतुल-कूडमाणेणं तिरिक्खजोणियाउअकम्मा० जाव पयोगबंधे ।

८२. [प्र०] मणुस्साउयकम्मासरीर-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! पगइभद्दयाए, पगइविणीययाए, साणुक्कोसणयाए, अमच्छरियाए मणुस्साउयकम्मा० जाव पयोगबंधे ।

८३. [प्र०] देवाउयकम्मासरीर-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सरागसंजमेणं, संजमासंजमेणं, बालतवोकम्मेणं, अकामनिज्जराए देवाउयकम्मासरीर० जाव पयोगबंधे ।

८४. [प्र०] सुभनामकम्मासरीर-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! काउज्जुययाए, भावुज्जुययाए, भासुज्जुययाए, अविसंवादणजोगेणं सुभनामकम्मासरीर० जाव पयोगबंधे ।

८५. [प्र०] असुभनामकम्मासरीर-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! कायअणुज्जुययाए, जाव विसंवायणाजोगेणं असुभनामकम्मा० जाव पयोगबंधे ।

असातावेदनीय. ७८. [प्र०] हे भगवन् ! असातावेदनीयकार्मणशरीरप्रयोगबन्ध संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! बीजाने दुःख देवाथी, बीजाने शोक उत्पन्न करवाथी—इत्यादि जेम *सप्तम शतकना दुःषमा उद्देशकमां कह्युं छे तेम यावद् बीजाने परिताप उपजाववाथी अने असातावेदनीयकार्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी असातावेदनीयकार्मणशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.

मोहनीय. ७९. [प्र०] हे भगवन् ! मोहनीयकार्मणशरीरप्रयोगबन्ध संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तीव्रक्रोध करवाथी, तीव्र मान करवाथी, तीव्र माया (कपट) करवाथी, तीव्र लोभ करवाथी, तीव्र दर्शनमोहनीयथी, तीव्र चारित्रमोहनीयथी तथा मोहनीयकार्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी मोहनीयकार्मणशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.

नारकायुष. ८०. [प्र०] हे भगवन् ! नारकायुषकार्मणशरीरप्रयोगबन्ध संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! महाआरम्भथी, महापरिग्रहथी, मांसाहार करवाथी, पंचेन्द्रिय जीवोनो वध करवाथी तथा नारकायुषकार्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी नारकायुषकार्मणशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.

तीर्यंचयोनिकायुष. ८१. [प्र०] हे भगवन् ! तिर्यंचयोनिकायुषकार्मणशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! मायिकपणाथी, कपटीपणाथी, खोटुं बोलवाथी, खोटां तोलां अने खोटां मापथी तथा तिर्यंचयोनिकायुषकार्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी तिर्यंचयोनिकायुषकार्मणशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.

मनुष्यायुष. ८२. [प्र०] हे भगवन् ! मनुष्यायुषकार्मणशरीरप्रयोगबन्ध कया कर्मना उदयथी थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! प्रकृतिनी भद्रताथी, प्रकृतिना विनीतपणाथी, दयाळुपणाथी, अमत्सरिपणाथी तथा मनुष्यायुषकार्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी मनुष्यायुषकार्मणशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.

देवायुष. ८३. [प्र०] देवायुषकार्मणशरीरप्रयोगबन्ध संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सरागसंयमथी, संयमासंयम—(देशविरति)थी, अज्ञानतपकर्मथी, अकामनिर्जराथी तथा देवायुष्कार्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी देवायुष्कार्मणशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.

शुभनाम. ८४. [प्र०] शुभनामकार्मणशरीरप्रयोगबन्ध संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! कायनी सरलताथी, भावनी सरलताथी, भाषानी सरलताथी अने योगना अविसंवादनपणाथी-एकताथी तथा शुभनामकार्मणशरीरप्रयोगनाम कर्मना उदयथी यावत् प्रयोगबन्ध थाय छे.

अशुभनाम. ८५. [प्र०] अशुभनामकार्मणशरीरप्रयोगबन्ध संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! कायनी वक्रताथी, भावनी वक्रताथी, भाषानी वक्रताथी, अने योगना विसंवादनपणाथी—भिन्नताथी अशुभनामकार्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी यावत् प्रयोगबन्ध थाय छे.

---

* ७८. भग० खं. ३. श. ७. उ. ६. पृ. २०. सू. १६.

१ दुसमोद्दे—क विनाऽन्यत्र । २ —सरीरप्पओगबंधे णं भंते पुच्छा क विनाऽन्यत्र ।

८६. [प्र०] उच्चागोयकम्मासरीर–पुच्छा। [उ०] गोयमा! जातिअमदेणं, कुलअमदेणं, बलअमदेणं, रूवअमदेणं, तवअमदेणं, सुयअमदेणं, लाभअमदेणं, इस्सरियअमदेणं उच्चागोयकम्मासरीर० जाव पयोगबंधे।

८७. [प्र०] नीयागोयकम्मासरीर–पुच्छा। [उ०] गोयमा! जातिमदेणं, कुलमदेणं, बलमदेणं, जाव इस्सरियमदेणं नीयागोयकम्मासरीर० जाव पयोगबंधे।

८८. [प्र०] अंतराइयकम्मासरीर–पुच्छा। [उ०] गोयमा! दाणंतराएणं, लाभंतराएणं, भोगंतराएणं, उवभोगंतराएणं, वीरियंतराएणं अंतराइयकम्मासरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं अंतराइयकम्मासरीरप्पयोगबंधे।

८९. [प्र०] णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भंते! किं देसबंधे, सव्वबंधे? [उ०] गोयमा! देसबंधे, णो सव्वबंधे, एवं जाव अंतराइयं।

९०. [प्र०] णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भंते! कालओ केवच्चिरं होइ? [उ०] गोयमा! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा– [1]अणाईए एवं [2]जहा तेयगस्स संचिट्ठणा तहेव, एवं जाव अंतराइयस्स।

९१. [प्र०] णाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधं[3][4]तरं णं भंते! कालओ केवच्चिरं होइ? [उ०] गोयमा! अणाइयस्स, एवं जहा तेयगसरीरस्स अंतरं तहेव, एवं जाव अंतराइयस्स।

९२. [प्र०] एएसि णं भंते! जीवाणं णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स देसबंधगाणं, अबंधगाण य कयरे कयरे० जाव? [उ०] अप्पाबहुगं जहा तेयगस्स, एवं आउयवज्जं जाव अंतराइयस्स।

९३. [प्र०] [5]आउयस्स पुच्छा। [उ०] गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा आउयस्स कम्मस्स देसबंधगा, अबंधगा संखेज्जगुणा।

८६. [प्र०] उच्चगोत्रकार्मणशरीरप्रयोगबन्ध संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम! जातिमद न करवाथी, कुलमद न करवाथी बलमद न करवाथी, रूपमद न करवाथी, तपमद न करवाथी, श्रुतमद न करवाथी, लाभमद न करवाथी अने ऐश्वर्यमद न करवाथी, तथा उच्चगोत्रकार्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी उच्चगोत्रकार्मणशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.

उच्चगोत्र.

८७. [प्र०] नीचगोत्रकार्मणशरीरप्रयोगबन्ध संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम! जातिमद करवाथी, कुलमद करवाथी, बलमद करवाथी, यावद् ऐश्वर्यमद करवाथी तथा नीचगोत्रकार्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी नीचगोत्रकार्मणशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.

नीचगोत्र.

८८. [प्र०] अंतरायकार्मणशरीरप्रयोगबन्ध संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम! दाननो अन्तराय करवाथी, लाभनो अन्तराय करवाथी, भोगनो अन्तराय करवाथी, उपभोगनो अन्तराय करवाथी अने वीर्यनो अन्तराय करवाथी तथा अन्तरायकार्मणशरीरप्रयोगनामकर्मना उदयथी अंतरायकार्मणशरीरप्रयोगबन्ध थाय छे.

अन्तराय.

८९. [प्र०] हे भगवन्! ज्ञानावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगबन्ध शुं देशबन्ध छे के सर्वबन्ध छे? [उ०] हे गौतम! देशबन्ध छे, पण सर्वबन्ध नथी. ए प्रमाणे यावद् अन्तरायकार्मणशरीरप्रयोगबन्ध सुधी जाणवुं.

ज्ञानावरणीयनो देशबन्ध के सर्वबन्ध?

९०. [प्र०] हे भगवन्! ज्ञानावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगबन्ध कालथी क्यां सुधी होय? [उ०] हे गौतम! ज्ञानावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगबन्ध बे प्रकारनो कह्यो छे; ते आ प्रमाणे—अनादि सपर्यवसित (सान्त) अने अनादि अपर्यवसित (अनन्त). ए प्रमाणे यावत् जेम तैजस शरीरनो स्थितिकाल कह्यो छे तेम अहीं पण कहेवो, ए प्रमाणे यावद् अन्तराय कर्मनो स्थितिकाल जाणवो.

ज्ञानावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगबन्धनो काल.

९१. [प्र०] हे भगवन्! ज्ञानावरणीयकार्मणशरीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर कालथी क्यां सुधी होय? [उ०] हे गौतम! अनादि अनंत अने अनादि सांत छे. जे प्रमाणे तैजसशरीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर कह्युं (सू. ७२.) ते प्रमाणे अहीं पण कहेवुं. ए प्रमाणे यावद् अंतरायकार्मणशरीरप्रयोगबन्धनुं अन्तर जाणवुं.

ज्ञानावरणीयकार्मणशरीर प्रयोगबन्धनुं अन्तर.

९२. [प्र०] हे भगवन्! ज्ञानावरणीय कर्मना देशबन्धक अने अबन्धक जीवोमां कया जीवो कया जीवोथी यावद् विशेषाधिक छे? [उ०] जेम तैजस शरीरनुं अल्पबहुत्व कह्युं (सू. ७३.) तेम अहीं पण जाणवुं. ए प्रमाणे आयुषकर्म शिवाय यावत् अन्तराय कर्म सुधी जाणवुं.

देशबन्धक अने अबन्धकनुं अल्पबहुत्व.

९३. [प्र०] आयुषकर्म संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम! आयुषकर्मना देशबन्धक जीवो सौथी थोडा छे, अने तेनाथी अबंधक जीवो संख्यातगुण छे.

आयुष् कर्मना देशबन्धक अने अबन्धक जीवोनुं अल्पबहुत्व.

---

१ अणाइए सपज्जवसिए, अणाइए अपज्जवसिए वा एवं –ग–घ। २ जहेव क। ३–यकम्मस्स ग–क। ४–तरे णं क विनाऽन्यत्र। ५ आउयपु–क।

९४. [प्र०] जस्स णं भंते ! ओरालियसरीरस्स सव्वबंधे से णं भंते ! वेउव्वियसरीरस्स किं बंधए, अबंधए ? [उ०] गोयमा ! नो बंधए, अबंधए।

९५. [प्र०] आहारगसरीरस्स किं बंधए अबंधए ? [उ०] गोयमा ! नो बंधए अबंधए।

९६. [प्र०] तेयासरीरस्स किं बंधए, अबंधए ? [उ०] गोयमा ! बंधए, नो अबंधए।

९७. [प्र०] जइ बंधए किं देसबंधए सव्वबंधए ? [उ०] गोयमा ! देसबंधए, नो सव्वबंधए।

९८. [प्र०] कम्मासरीरस्स किं बंधए, अबंधए ? [उ०] जहेव तेयगस्स, जाव देसबंधए, नो सव्वबंधए।

९९. [प्र०] जस्स णं भंते ! ओरालियसरीरस्स देसबंधे से णं भंते ! वेउव्वियसरीरस्स किं बंधए, अबंधए ? [उ०] गोयमा ! नो बंधए, अबंधए। एवं जहेव सव्वबंधेणं भणियं तहेव देसबंधेण वि भाणियव्वं जाव कम्मगस्स।

१००. [प्र०] जस्स णं भंते ! वेउव्वियसरीरस्स सव्वबंधे से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए, अबंधए ? [उ०] गोयमा ! नो बंधए, अबंधए। आहारगसरीरस्स एवं चेव, तेयगस्स कम्मगस्स य जहेव ओरालिएणं समं भणियं तहेव भाणियव्वं जाव देसबंधए, नो सव्वबंधए।

१०१. [प्र०] जस्स णं भंते ! वेउव्वियसरीरस्स देसबंधे से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए, अबंधए ? [उ०] गोयमा ! नो बंधए, अबंधए। एवं जहेव सव्वबंधेणं भणियं तहेव देसबंधेण वि भाणियव्वं जाव कम्मगस्स।

१०२. [प्र०] जस्स णं भंते ! आहारगसरीरस्स सव्वबंधे से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए, अबंधए ? [उ०] गोयमा ! नो बंधए, अबंधए। एवं वेउव्वियस्स वि, तेया–कम्माणं जहेव ओरालिएणं समं भणियं तहेव भाणियव्वं।

शरीरबन्धनो परस्पर संबन्ध.

औदारिक शरीरना सर्वबन्ध साथे वैक्रियशरीरबन्धनो संबन्ध.

९४. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीवने औदारिकशरीरनो सर्वबन्ध छे ते जीव शुं वैक्रियशरीरनो बन्धक छे के अबन्धक छे ? [उ०] हे गौतम ! ते बन्धक नथी; पण अबन्धक छे.

आहारक शरीरबन्धनो संबन्ध.

९५. [प्र०] औदारिकशरीरनो सर्वबन्धक शुं आहारकशरीरनो बन्धक छे के अबन्धक छे ? [उ०] हे गौतम ! बन्धक नथी, पण अबन्धक छे.

तैजसशरीरनो संबन्ध.

९६. [प्र०] तैजसशरीरनो बन्धक छे के अबन्धक छे ? [उ०] हे गौतम ! ते तैजसशरीरनो बन्धक छे पण अबन्धक नथी.

देशबन्धक के सर्वबन्धक ?

९७. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते (तैजस शरीरनो) बन्धक छे तो शुं देशबन्धक छे के सर्वबन्धक छे ? [उ०] हे गौतम ! ते देशबन्धक छे, पण सर्वबन्धक नथी.

कार्मणशरीरनो संबन्ध.

९८. [प्र०] कार्मणशरीरनो बंधक छे के अबंधक छे ? [उ०] हे गौतम ! तैजस शरीरनी पेठे यावत् कार्मणशरीरनो देशबन्धक छे पण सर्वबन्धक नथी.

औदारिक शरीरना देशबन्ध साथे वैक्रिय शरीरनो संबन्ध.

९९. [प्र०] हे भगवन् ! जेने औदारिकशरीरनो देशबन्ध छे ते जीव शुं वैक्रियशरीरनो बन्धक छे के अबन्धक छे ? [उ०] हे गौतम ! बन्धक नथी, पण अबन्धक छे. ए प्रमाणे जेम सर्वबन्धना प्रसंगे कह्युं, तेम अहीं देशबन्धना प्रसंगे पण यावत् कार्मण शरीर सुधी कहेवुं.

वैक्रिय शरीरना सर्वबन्ध साथे औदारिक शरीरनो संबन्ध.

१००. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीवने वैक्रियशरीरनो सर्वबन्ध छे ते जीव शुं औदारिकशरीरनो बन्धक छे के अबन्धक छे ? [उ०] हे गौतम ! बन्धक नथी, पण अबन्धक छे. ए प्रमाणे आहारकशरीर माटे पण जाणवुं, तैजस अने कार्मण शरीरने जेम औदारिक शरीरनी साथे कह्युं तेम वैक्रियशरीरनी साथे पण कहेवुं, यावद् देशबन्धक छे पण सर्वबन्धक नथी.

देशबन्ध साथे औदारिक शरीरबन्धनो संबन्ध.

१०१. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीवने वैक्रियशरीरनो देशबन्ध छे ते जीव शुं औदारिक शरीरनो बन्धक छे के अबन्धक छे ? [उ०] हे गौतम ! बन्धक नथी, पण अबन्धक छे. ए प्रमाणे जेम [वैक्रियशरीरना] सर्वबंधना प्रसंगे कह्युं तेम अहीं देशबन्धना प्रसंगे पण यावत् कार्मणशरीर सुधी कहेवुं.

आहारक शरीरना सर्वबन्ध साथे औदारिक शरीरबन्धनो संबन्ध.

१०२. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीवने आहारकशरीरनो सर्वबन्ध होय ते जीव शुं औदारिकशरीरनो बन्धक छे के अबन्धक छे ? [उ०] हे गौतम ! बन्धक नथी, पण अबन्धक छे. ए प्रमाणे वैक्रियशरीरने पण जाणवुं. अने जेम तैजस अने कार्मण शरीरने औदारिक शरीर साथे कह्युं तेम [आहारक शरीर साथे पण] कहेवुं.

१०३. [प्र०] जस्स णं भंते! आहारगसरीरस्स देसबंधे से णं भंते! ओरालियसरीरस्स० ? [उ०] एवं जहा आहारगस्स सव्वबंधेणं भणियं तहा देसबंधेण वि भाणियव्वं, जाव कम्मगस्स।

१०४. [प्र०] जस्स णं भंते! तेयासरीरस्स देसबंधे से णं भंते! ओरालियसरीरस्स किं बंधए, अबंधए? [उ०] गोयमा! बंधए वा, अबंधए वा।

१०५. [प्र०] जइ बंधए किं देसबंधए, सव्वबंधए? [उ०] गोयमा! देसबंधए वा सव्वबंधए वा।

१०६. [प्र०] वेउव्वियसरीरस्स किं बंधए, अबंधए? [उ०] एवं चेव, एवं आहारगसरीरस्स वि।

१०७. [प्र०] कम्मगसरीरस्स किं बंधए, अबंधए? [उ०] गोयमा! बंधए, नो अबंधए।

१०८. [प्र०] जइ बंधए किं देसबंधए, सव्वबंधए? [उ०] गोयमा! देसबंधए, नो सव्वबंधए।

१०९. [प्र०] जस्स णं भंते! कम्मासरीरस्स देसबंधे से णं भंते! ओरालियस्स० ? [उ०] जहा तेयगस्स वत्तव्वया भणिया तहा कम्मगस्स वि भाणियव्वा, जाव तेयासरीरस्स जाव देसबंधए, नो सव्वबंधए।

११०. [प्र०] एएसि णं भंते! सव्वजीवाणं ओरालिय–वेउव्विय–आहारग–तेया–कम्मासरीरगाणं देसबंधगाणं सव्वबंधगाणं अबंधगाण य कयरे कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया वा? [उ०] गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा आहारगसरीरस्स सव्वबंधगा, तस्स चेव देसबंधगा संखेज्जगुणा। वेउव्वियसरीरस्स सव्वबंधगा असंखेज्जगुणा, तस्स चेव देसबंधगा असंखेज्जगुणा। तेया-कम्मगाणं[1] अबंधगा अणंतगुणा दोण्ह वि तुल्ला[2]। ओरालियसरीरस्स सव्वबंधगा अणंतगुणा, तस्स चेव अबंधगा विसेसाहिया, तस्स चेव देसबंधगा असंखेज्जगुणा। तेया–कम्मगाणं देसबंधगा विसेसाहिया; वेउव्वियसरीरस्स अबंधगा विसेसाहिया, आहारगसरीरस्स अबंधगा विसेसाहिया। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति।

अट्ठमसए नवमो उद्देसो समत्तो।

१०३. [प्र०] हे भगवन्! जे जीवने आहारक शरीरनो देशबन्ध छे ते जीव शुं औदारिक शरीरनो बन्धक छे के अबन्धक छे? [उ०] हे गौतम! जेम आहारक शरीरना सर्वबन्ध साथे कह्युं छे तेम देशबन्धनी साथे पण यावत् कार्मणशरीर सुधी कहेवुं.

आहारक शरीरना देशबन्ध साथे औदारिक शरीरनो संबन्ध.

१०४. [प्र०] हे भगवन्! जे जीवने तैजसशरीरनो देशबन्ध छे ते जीव शुं औदारिक शरीरनो बन्धक छे के अबन्धक छे? [उ०] हे गौतम! बन्धक पण छे अने अबन्धक पण छे.

तैजस शरीरना देशबन्धक साथे औदारिक शरीरनो संबन्ध

१०५. [प्र०] जो ते जीव [औदारिक शरीरनो] बन्धक छे तो शुं देशबन्धक छे के सर्वबन्धक छे? [उ०] हे गौतम! ते देशबन्धक पण छे अने सर्वबन्धक पण छे.

औदारिक शरीरनो देशबन्धक के सर्वबन्धक?

१०६. [प्र०] ते जीव शुं वैक्रियशरीरनो बन्धक छे के अबन्धक छे? [उ०] पूर्वनी पेठे जाणवुं, ए प्रमाणे आहारक शरीर माटे पण जाणवुं.

वैक्रियशरीरनो बन्धक के अबन्धक?

१०७. [प्र०] ते जीव शुं कार्मण शरीरनो बन्धक छे के अबन्धक छे? [उ०] हे गौतम! बन्धक छे, पण अबन्धक नथी.

कार्मण शरीरनो बन्धक के अबन्धक?

१०८. [प्र०] जो [कार्मण शरीरनो] बन्धक छे तो शुं देशबन्धक छे के सर्वबन्धक छे? [उ०] हे गौतम! देशबन्धक छे, पण सर्वबन्धक नथी.

देशबन्धक के सर्वबन्धक?

१०९. [प्र०] हे भगवन्! जे जीवने कार्मणशरीरनो देशबन्ध छे ते जीव शुं औदारिकनो बन्धक छे के अबन्धक छे? [उ०] जेम तैजसशरीरनी वक्तव्यता कही, तेम कार्मण शरीरनी पण वक्तव्यता कहेवी, यावत् तैजसशरीरनो देशबन्धक छे, पण सर्वबन्धक नथी.

कार्मण शरीरना देशबन्धक साथे औदारिक शरीरबन्धनो संबन्ध.

११०. [प्र०] हे भगवन्! औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस अने कार्मणशरीरना देशबन्धक, सर्वबन्धक अने अबन्धक एवा सर्व जीवोमां कया जीवो कया जीवोथी यावद् विशेषाधिक छे? [उ०] हे गौतम! १ सौथी थोडा जीवो आहारक शरीरना सर्वबन्धक छे, २ तेथी तेना देशबन्धक संख्यातगुणा छे, ३ तेथी वैक्रियशरीरना सर्वबन्धक असंख्यातगुणा छे, ४ तेथी तेना देशबन्धक जीवो असंख्यातगुणा छे, ५ तेथी तैजस अने कार्मण शरीरना अबन्धक जीवो अनंतगुण अने परस्पर तुल्य छे. ६ तेथी औदारिक शरीरना सर्वबन्धक जीवो अनंत गुण छे, ७ तेथी तेना अबन्धक जीवो विशेषाधिक छे, ८ तेथी तेना देशबन्धक जीवो असंख्येयगुणा छे, ९ तेथी तैजस अने कार्मण शरीरना देशबन्धक जीवो विशेषाधिक छे, १० तेथी वैक्रिय शरीरना अबन्धक जीवो विशेषाधिक छे, ११ तेथी आहारक शरीरना अबन्धक जीवो विशेषाधिक छे. हे भगवन्! ते एम ज छे, हे भगवन्! ते एम ज छे [एम कही भगवान् गौतम! यावद् विहरे छे.]

शरीरना देशबन्धक, सर्वबन्धक अने अबन्धकनुं अल्पबहुत्व.

अष्टम शतके नवम उद्देशक समाप्त.

---

१ कम्मगस– घ। २ दुण्ह वि तुल्ला अबंधगा अणंतगुणा घ।

दसमो उद्देसो.

१. [प्र०] रायगिहे नगरे जाव एवं वयासी, अन्नउत्थिया णं भंते ! एवं आइक्खंति, जाव एवं परूवेंति–"एवं खलु १ सीलं सेयं, २ सुयं सेयं, ३ सुयं सेयं, सीलं सेयं;" से कहमेयं भंते ! एवं ? [उ०] गोयमा ! जं णं ते अन्नउत्थिया एवं आइक्खंति, जाव जे ते एवं आहंसु, मिच्छा ते एवं आहंसु; अहं पुण गोयमा ! एवं आइक्खामि, जाव परूवेमि–एवं खलु मए चत्तारि पुरिसजाया पन्नत्ता, तं जहा–१ सीलसंपन्ने णामं एगे णो सुयसंपन्ने, २ सुयसंपन्ने नामं एगे नो सीलसंपन्ने, ३ एगे सीलसंपन्ने वि सुयसंपन्ने वि, ४ एगे णो सीलसंपन्ने नो सुयसंपन्ने । तत्थ णं जे से पढमे पुरिसजाए से णं पुरिसे सीलवं असुयवं; उवरए, अविन्नायधम्मे; एस णं गोयमा ! मए पुरिसे देसाराहए पन्नत्ते । तत्थ णं जे से दोच्चे पुरिसजाए से णं पुरिसे असीलवं सुयवं; अणुवरए, विन्नायधम्मे; एस णं गोयमा ! मए पुरिसे देसविराहए पन्नत्ते । तत्थ णं जे से तच्चे पुरिसजाए से णं पुरिसे सीलवं सुयवं; उवरए, विन्नायधम्मे; एस णं गोयमा ! मए पुरिसे सव्वाराहए पन्नत्ते । तत्थ णं जे से चउत्थे पुरिसजाए से णं पुरिसे असीलवं असुतवं; अणुवरए, अविण्णायधम्मे; एस णं गोयमा ! मए पुरिसे सव्वविराहए पन्नत्ते ।

२. [प्र०] कतिविहा णं भंते ! आराहणा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! तिविहा आराहणा पण्णत्ता, तं जहा–नाणाराहणा, दंसणाराहणा, चरित्ताराहणा ।

दशम उद्देशक.

'शीलज श्रेय छे' इत्यादि अन्य तीर्थिकोनुं मन्तव्य.

१. [प्र०] *राजगृह नगरमां यावद् [गौतम] ए प्रमाणे बोल्या के हे भगवन् ! अन्यतीर्थिको ए प्रमाणे कहे छे, यावद् ए प्रमाणे प्ररूपे छे–"ए रीते खरेखर १ शील ज श्रेय छे, २ श्रुत ज श्रेय छे, ३ [शीलनिरपेक्ष ज] श्रुत श्रेय छे, अथवा [श्रुतनिरपेक्ष ज] शील श्रेय छे, तो हे भगवन् ! ए प्रमाणे केम होइ शके ? [उ०] हे गौतम ! ते अन्यतीर्थिको जे ए प्रमाणे कहे छे, यावत् तेओए जे ए प्रमाणे कह्युं छे ते तेओए मिथ्या कह्युं छे. हे गौतम ! हुं वळी आ प्रमाणे कहुं छुं, यावत् प्ररूपुं छुं, ए प्रमाणे में चार प्रकारना पुरुषो कह्या छे, ते आ प्रमाणे–१ एक शीलसंपन्न छे पण श्रुतसंपन्न नथी, २ एक श्रुतसंपन्न छे पण शीलसंपन्न नथी, ३ एक शीलसंपन्न छे अने श्रुतसंपन्न पण छे, ४ एक शीलसंपन्न नथी तेम श्रुतसंपन्न पण नथी. तेमां जे प्रथम प्रकारनो पुरुष छे ते शीलवान् छे पण श्रुतवान् नथी. ते उपरत (पापादिकथी निवृत्त) छे, पण धर्मने जाणतो नथी. हे गौतम ! ते पुरुषने में देशाराधक कह्यो छे. तेमां जे बीजो पुरुष छे ते पुरुष शीलवाळो नथी, पण श्रुतवाळो छे. ते पुरुष अनुपरत (पापथी अनिवृत्त) छतां पण धर्मने जाणे छे. हे गौतम ! ते पुरुषने में देशविराधक कह्यो छे. तेमां जे त्रीजो पुरुष छे ते शीलवाळो छे अने श्रुतवाळो पण छे. ते पुरुष [पापथी] उपरत छे अने धर्मने जाणे छे. हे गौतम ! ते पुरुषने में सर्वाराधक कह्यो छे. तेमां जे चोथो पुरुष छे ते शीलथी अने श्रुतथी रहित छे, ते पापथी उपरत नथी अने धर्मथी अज्ञात छे. हे गौतम ! ए पुरुषने हुं सर्वविराधक कहुं छुं.

'शीलसंपन्न छे पण श्रुतसंपन्न नथी'–इत्यादि चतुर्भंगी.

देशाराधक.

देशविराधक.

सर्वाराधक.

सर्वविराधक.

आराधना.

आराधनाना प्रकार.

२. [प्र०] हे भगवन् ! आराधना केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रकारनी आराधना कही छे; ते आ प्रमाणे–१ †ज्ञानाराधना, २ दर्शनाराधना अने ३ चारित्राराधना.

---

१. * केटला एक अन्यतीर्थिको एम माने छे के शील–प्राणातिपातादि विरमणरूप क्रिया मात्र श्रेय छे; ज्ञाननुं कंइ पण प्रयोजन नथी, केमके ते चेष्टारहित छे. बीजा ज्ञानमात्रथी फलसिद्धि माने छे, कारण के ज्ञानरहित क्रियावाळाने फलसिद्धि थती नथी, तेथी तेओ कहे छे के श्रुत–ज्ञानज श्रेय छे. अन्य परस्पर निरपेक्ष श्रुत अने शीलथी अभीष्टार्थसिद्धि माने छे–एटले तेओ क्रियारहित ज्ञान, अथवा ज्ञानरहित क्रियाथी अभीष्ट सिद्धि माने छे, केमके बन्नेमांना प्रत्येक पुरुषनी पवित्रतानुं कारण छे. तेथी एम कहे छे के ३ शील अथवा ४ श्रुत श्रेय छे.–टीका.

२. † १ ज्ञानाराधना–योग्यकाळे अध्ययन, विनय, बहुमान–इत्यादि अष्टविध ज्ञानाचारनुं निरतिचारपणे परिपालन करवुं. २ दर्शनाराधना–दर्शन एटले सम्यक्त्व, तेना निःशंकितादि आठ प्रकारना आचारनुं पालन करवुं. ३ चारित्राचार–निरतिचारपणे पंचसमित्यादि चारित्राचारनुं पालन.

३. [प्र०] णाणाराहणा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा–उक्कोसिया, मज्झिमा, जहन्ना ।

४. [प्र०] दंसणाराहणा णं भंते कतिविहा ? [उ०] एवं चेव तिविहा वि, एवं चरित्ताराहणा वि ।

५. [प्र०] जस्स णं भंते ! उक्कोसिया णाणाराहणा तस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा, जस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स उक्कोसिया णाणाराहणा ? [उ०] गोयमा ! जस्स उक्कोसिया णाणाराहणा तस्स दंसणाराहणा उक्कोसा वा अजहन्नुक्कोसा वा; जस्स पुण उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स नाणाराहणा उक्कोसा वा, जहन्ना वा, अजहन्नमणुक्कोसा वा ।

६. [प्र०] जस्स णं भंते उक्कोसिया णाणाराहणा तस्स उक्कोसिआ चरित्ताराहणा, जस्सुक्कोसिआ चरित्ताराहणा तस्सुक्कोसिआ णाणाराहणा ? [उ०] जहा उक्कोसिआ णाणाराहणा य दंसणाराहणा य भणिया तहा उक्कोसिआ णाणाराहणा य चरित्ताराहणा य भाणिअव्वा ।

७. [प्र०] जस्स णं भंते ! उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा, जस्सुक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्सुक्कोसिया दंसणाराहणा ? [उ०] गोयमा ! जस्स उक्कोसिया दंसणाराहणा तस्स चरित्ताराहणा उक्कोसा वा, जहन्ना वा अजहन्नमणुक्कोसा वा; जस्स पुण उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स दंसणाराहणा नियमा उक्कोसा ।

८. [प्र०] उक्कोसियं णं भंते ! णाणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झति, जाव अंतं करेति ? [उ०] गोयमा ! अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति, जाव अंतं करेति; अत्थेगतिए दोच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झति, जाव अंतं करेति; अत्थेगतिए कप्पोवएसु वा कप्पातीएसु वा उववज्जति ।

९. [प्र०] उक्कोसियं णं भंते ! दंसणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं० ? [उ०] एवं चेव ।

१०. [प्र०] उक्कोसियं णं भंते ! चरित्ताराहणं आराहेत्ता० ? [उ०] एवं चेव, नवरं अत्थेगतिए कप्पातीएसु उववज्जति ।

३. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानाराधना केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे–उत्कृष्ट, मध्यम अने जघन्य.

ज्ञानाराधना.

४. [प्र०] हे भगवन् ! दर्शनाराधना केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] ए प्रमाणे त्रण प्रकारनी कही छे. ए रीते चारित्राराधना पण त्रण प्रकारनी जाणवी.

दर्शनाराधना.

५. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीवने उत्कृष्ट ज्ञानाराधना होय तेने उत्कृष्ट दर्शनाराधना होय ? जे जीवने उत्कृष्ट दर्शनाराधना होय ते जीवने उत्कृष्ट ज्ञानाराधना होय ? [उ०] हे गौतम ! जे जीवने उत्कृष्ट ज्ञानाराधना होय तेने उत्कृष्ट अने मध्यम दर्शनाराधना होय, वळी जेने उत्कृष्ट दर्शनाराधना होय तेने उत्कृष्ट, जघन्य अने मध्यम ज्ञानाराधना होय.

उत्कृष्ट ज्ञानाराधना अने उत्कृष्ट दर्शनाराधनानो संबन्ध.

६. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीवने ज्ञाननी उत्कृष्ट आराधना होय तेने चारित्रनी उत्कृष्ट आराधना होय ? जे जीवने चारित्रनी उत्कृष्ट आराधना होय तेने ज्ञाननी उत्कृष्ट आराधना होय ? [उ०] जेम उत्कृष्ट ज्ञानाराधना अने दर्शनाराधनानो संबन्ध कह्यो तेम उत्कृष्ट ज्ञानाराधना अने उत्कृष्ट चारित्राराधनानो संबन्ध कहेवो.

उत्कृष्ट ज्ञानाराधना अने उत्कृष्ट चारित्राराधनानो संबन्ध.

७. [प्र०] हे भगवन् ! जेने उत्कृष्ट दर्शनाराधना होय तेने उत्कृष्ट चारित्राराधना होय ? जेने उत्कृष्ट चारित्राराधना होय तेने उत्कृष्ट दर्शनाराधना होय ? [उ०] हे गौतम ! जेने उत्कृष्ट दर्शनाराधना होय तेने उत्कृष्ट, जघन्य अने मध्यम चारित्राराधना होय. तथा जेने उत्कृष्ट चारित्राराधना होय तेने अवश्य उत्कृष्ट दर्शनाराधना होय.

उत्कृष्ट दर्शनाराधना अने उत्कृष्ट चारित्राराधनानो संबन्ध.

८. [प्र०] हे भगवन् ! जीव उत्कृष्ट ज्ञानाराधनाने आराधी केटला भव कर्या पछी सिद्ध थाय, यावत् सर्व दुःखोनो अन्त करे ? [उ०] हे गौतम ! केटलाक जीवो तेज भवमां सिद्ध थाय, यावत् सर्व दुःखोनो नाश करे; केटलाक जीवो बे भवमां सिद्ध थाय, यावत् सर्व दुःखोनो नाश करे; अने केटलाक जीवो कल्पोपपन्न देवलोकोमां अथवा कल्पातीत देवलोकोमां उत्पन्न थाय.

उत्कृष्ट ज्ञानाराधक केटला भव पछी मोक्षे जाय ?

९. [प्र०] हे भगवन् ! जीव उत्कृष्ट दर्शनाराधनाने आराधी केटला भव कर्या पछी सिद्ध थाय ? [उ०] हे गौतम ! पूर्वेनी पेठे जाणवुं.

उत्कृष्ट दर्शनाराधक क्यारे मोक्षे जाय ?

१०. [प्र०] हे भगवन् ! उत्कृष्ट चारित्राराधनाने आराधी केटला भव कर्या पछी जीवो सिद्ध थाय ? [उ०] पूर्वेनी पेठे जाणवुं, परन्तु केटलाएक जीवो कल्पातीत देवोमां उत्पन्न थाय.

उत्कृष्ट चारित्राराधक क्यारे मोक्षे जाय ?

११. [प्र०] मज्झिमियं णं भंते! णाणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झति, जाव अंतं करेति? [उ०] गोयमा! अत्थेगतिए दोच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झइ, जाव अंतं करेति; तच्चं पुण भवग्गहणं नाइक्कमइ।

१२. [प्र०] मज्झिमियं णं भंते! दंसणाराहणं आराहेत्ता०? [उ०] एवं चेव, एवं मज्झिमियं चरित्ताराहणं पि।

१३. [प्र०] जहन्नियं णं भंते! नाणाराहणं आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झति, जाव अंतं करेति? [उ०] गोयमा! अत्थेगतिए तच्चेणं भवग्गहणेणं सिज्झइ, जाव अंतं करेइ; सत्त-ट्ठ भवग्गहणाइं पुण नाइक्कमइ। एवं दंसणाराहणं पि, एवं चरित्ताराहणं पि।

१४. [प्र०] कतिविहे णं भंते! पोग्गलपरिणामे पन्नत्ते? [उ०] गोयमा! पंचविहे पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते, तं जहा—वन्नपरिणामे, गंधपरिणामे, रसपरिणामे, फासपरिणामे, संठाणपरिणामे।

१५. [प्र०] वन्नपरिणामे णं भंते! कइविहे पण्णत्ते? [उ०] गोयमा! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—कालवन्नपरिणामे, जाव सुक्किलवन्नपरिणामे। एवं एएणं अभिलावेणं गंधपरिणामे दुविहे, रसपरिणामे पंचविहे, फासपरिणामे अट्ठविहे।

१६. [प्र०] संठाणपरिणामे णं भंते! कइविहे पण्णत्ते? [उ०] गोयमा! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—परिमंडलसंठाणपरिणामे, जाव आयतसंठाणपरिणामे।

१७. [प्र०] एगे भंते! पोग्गलत्थिकायपएसे किं दव्वं, दव्वदेसे, दव्वाइं, दव्वदेसा; उदाहु दव्वं च दव्वदेसे य, उदाहु दव्वं च दव्वदेसा य, उदाहु दव्वाइं च दव्वदेसे य, उदाहु दव्वाइं च दव्वदेसा य? [उ०] गोयमा! सिय दव्वं, सिय दव्वदेसे; नो दव्वाइं, नो दव्वदेसा, नो दव्वं च दव्वदेसे य, जाव नो दव्वाइं च दव्वदेसा य।

ज्ञाननी मध्यमाराधना आराधक क्यारे मोक्षे जाय?

११. [प्र०] हे भगवन्! ज्ञाननी मध्यम आराधनाने आराधी केटला भव ग्रहण कर्या पछी जीव सिद्ध थाय, यावत् सर्व दुःखोनो अन्त करे? [उ०] हे गौतम! केटलाक जीवो बे भव ग्रहण कर्या पछी सिद्ध थाय, यावत् सर्वदुःखोनो नाश करे, पण त्रीजा भवने अतिक्रमे नहीं.

दर्शन अने चारित्रनी मध्यमाराधनानो आराधक क्यारे मोक्षे जाय?

१२. [प्र०] हे भगवन्! जीव मध्यम दर्शनाराधनाने आराधी केटला भव ग्रहण कर्या पछी सिद्ध थाय? [उ०] हे गौतम! पूर्वनी पेठे जाणवुं. ए प्रमाणे चारित्रनी मध्यम आराधनाने माटे जाणवुं.

ज्ञाननी जघन्य आराधनानो आराधक क्यारे मोक्षे जाय? ए प्रमाणे दर्शनाराधना अने चारित्राराधना.

१३. [प्र०] हे भगवन्! जघन्य ज्ञानाराधनाने आराधी जीव केटला भव ग्रहण कर्या पछी सिद्ध थाय, यावत् सर्वदुःखोनो अन्त करे? [उ०] हे गौतम! केटलाक जीव त्रीजा भवमां सिद्ध थाय, यावत् सर्वदुःखोनो अन्त करे, पण सात आठ भवथी वधारे भवो न करे. ए प्रमाणे दर्शनाराधना अने चारित्राराधना माटे पण जाणवुं.

पुद्गलपरिणाम.

पुद्गलपरिणामना प्रकार.

१४. [प्र०] हे भगवन्! पुद्गलनो परिणाम केटला प्रकारनो कह्यो छे? [उ०] हे गौतम! पांच प्रकारनो कह्यो छे; ते आ प्रमाणे,—वर्णपरिणाम, गन्धपरिणाम, रसपरिणाम, स्पर्शपरिणाम अने संस्थानपरिणाम.

वर्णपरिणाम, गन्धपरिणाम, रसपरिणाम अने स्पर्शपरिणाम.

१५. [प्र०] हे भगवन्! वर्णपरिणाम केटला प्रकारनो कह्यो छे? [उ०] हे गौतम! पांच प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—१ काळोवर्णपरिणाम, यावत् ५ शुक्लवर्णपरिणाम. ए प्रमाणे ए अभिलापथी बे प्रकारनो गन्धपरिणाम, पांच प्रकारनो रसपरिणाम, अने आठ प्रकारनो स्पर्शपरिणाम जाणवो.

संस्थानपरिणाम.

१६. [प्र०] हे भगवन्! संस्थानपरिणाम केटला प्रकारनो कह्यो छे? [उ०] हे गौतम! पांच प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—१ *परिमंडल संस्थानपरिणाम, यावद् ५ आयत संस्थानपरिणाम.

पुद्गलास्तिकायनो एक प्रदेश.

१७. [प्र०] हे भगवन्! पुद्गलास्तिकायनो एक प्रदेश (परमाणु) १ शुं द्रव्य छे, २ द्रव्यदेश छे, ३ द्रव्यो छे, ४ द्रव्यदेशो छे, ५ अथवा द्रव्य अने द्रव्यदेश छे, ६ अथवा द्रव्य अने द्रव्यदेशो छे, ७ अथवा द्रव्यो अने द्रव्यदेश छे, ८ के द्रव्यो अने द्रव्यदेशो छे? [उ०] हे गौतम! ते कथंचिद् द्रव्य छे, कथंचिद् द्रव्यदेश छे, पण द्रव्यो नथी, द्रव्यदेशो नथी, द्रव्य अने द्रव्यदेश नथी, यावद् द्रव्यो अने द्रव्यदेशो नथी.

---

१६. * १ परिमंडल—वलयाकारपरिणाम, २ वृत्ताकार, ३ त्र्यस्र, ४ चतुरस्र अने ५ आयतसंस्थान परिणाम—ए पांच प्रकारे संस्थानपरिणाम छे.

१८. [प्र०] दो भंते ! पोग्गलत्थिकायपएसा किं दवं, दवदेसे—पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सिय दवं, सिय दवदेसे, सिय दवाइं, सिय दवदेसा; सिय दवं च दवदेसे य, नो दवं च दवदेसा य; सेसा पडिसेहेयबा ।

१९. [प्र०] तिन्नि भंते ! पोग्गलत्थिकायपएसा किं दवं दवदेसे—पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सिय दवं, सिय दवदेसे, एवं सत्त भंगा भाणियवा, जाव सिय दवाइं च दवदेसे य, नो दवाइं च दवदेसा य ।

२०. [प्र०] चत्तारि भंते ! पोग्गलत्थिकायपएसा किं दवं—पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सिय दवं, सिय दवदेसे; अट्ठ वि भंगा भाणियवा, जाव सिय दवाइं च दवदेसा य; जहा चत्तारि भणिया एवं पंच, छ, सत्त, जाव असंखेज्जा ।

२१. [प्र०] अणंता भंते ! पोग्गलत्थिकायपएसा किं दवं ? [उ०] एवं चेव, जाव सिय दवाइं च दवदेसा य ।

२२. [प्र०] केवतिया णं भंते ! लोयागासपएसा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! असंखेज्जा लोयागासपएसा पन्नत्ता ।

२३. [प्र०] एगमेगस्स णं भंते ! जीवस्स केवइया जीवपएसा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! जावतिया लोयागासपएसा, एगमेगस्स णं जीवस्स एवतिया जीवपएसा पण्णत्ता ।

२४. [प्र०] कति णं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? [उ०] गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—नाणावरणिज्जं, जाव अंतराइयं ।

२५. [प्र०] नेरइयाणं भंते ! कति कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? [उ०] गोयमा ! अट्ठ, एवं सवजीवाणं अट्ठ कम्मपगडीओ ठावेयवाओ जाव वेमाणियाणं ।

२६. [प्र०] नाणावरणिज्जस्स णं भंते ! कम्मस्स केवतिया अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! अणंता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ।

१८. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्गलास्तिकायना बे प्रदेशो शुं द्रव्य छे के द्रव्यदेश छे ? इत्यादि पूर्वोक्त प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! कथंचित् द्रव्य छे, २ कथंचित् द्रव्यदेश छे, ३ कथंचित् द्रव्यो छे, ४ कथंचित् द्रव्यदेशो छे, ५ कथंचित् द्रव्य अने द्रव्यदेश छे, पण द्रव्य अने द्रव्यदेशो नथी, बाकीना विकल्पोनो प्रतिषेध करवो. 　बे प्रदेशो.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्गलास्तिकायना त्रण प्रदेशो शुं द्रव्य छे, द्रव्यदेश छे ?—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! १ कथंचित् द्रव्य छे, २ कथंचित् द्रव्यदेश छे, ए प्रमाणे सात भांगाओ कहेवा, यावत् कथंचित् द्रव्यो अने द्रव्यदेश छे, पण द्रव्यो अने द्रव्यदेशो नथी. 　त्रण प्रदेशो.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्गलास्तिकायना चार प्रदेशो शुं द्रव्य छे ? इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! १ कथंचिद् द्रव्य छे, २ कथंचित् द्रव्यदेश छे—इत्यादि आठ भांगा कहेवा, यावत् द्रव्यो अने द्रव्यदेशो छे, जेम चार प्रदेशो कह्या तेम पांच, छ, सात यावद् असंख्येय प्रदेशो पण कहेवा. 　चार प्रदेशो.

२१. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्गलास्तिकायना अनन्त प्रदेशो शुं द्रव्य छे ? इत्यादि प्रश्न. [उ०] पूर्व प्रमाणेज जाणवुं, यावद् कथंचित् द्रव्यो अने द्रव्यदेशो छे. 　अनन्त प्रदेशो.

२२. [प्र०] हे भगवन् ! लोकाकाशना प्रदेशो केटला कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! असंख्य प्रदेशो कह्या छे. 　लोकाकाशना प्रदेशो.

२३. [प्र०] हे भगवन् ! एक एक जीवना केटला जीवप्रदेशो कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! जेटला लोकाकाशना प्रदेशो कह्या छे तेटला एक एक जीवना प्रदेशो कह्या छे. 　एक जीवना प्रदेशो.

२४. [प्र०] हे भगवन् ! कर्मप्रकृतिओ केटली कही छे ? [उ०] हे गौतम ! आठ कर्मप्रकृतिओ कही छे. ते आ प्रमाणे—ज्ञानावरणीय, यावद् अन्तराय. 　कर्मप्रकृति.

२५. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकोने केटली कर्मप्रकृतिओ कही छे ? [उ०] हे गौतम ! आठ कर्मप्रकृतिओ कही छे. ए प्रमाणे सर्वजीवोने यावद् वैमानिकोने आठ कर्मप्रकृतिओ कहेवी. 　नैरयिकोने यावद् वैमानिकोने कर्मप्रकृति.

२६. [प्र०] हे भगवन् ! ज्ञानावरणीयकर्मना केटला अविभाग परिच्छेदो कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! अनंत *अविभागपरिच्छेदो कह्या छे. 　ज्ञानावरणीय कर्मना अविभाग परिच्छेद.

---

१ पुच्छा तहेव क । २ एतावतिया ग । ३ कइविहा णं क्र ।

२६. * जेना केवलज्ञानिनी प्रज्ञाथी पण विभाग न कल्पी शकाय एवा सूक्ष्म अंशोने अविभागपरिच्छेद कहेवाय छे. ते कर्मपरमाणुओनी अपेक्षाए अथवा ज्ञानना जेटला अविभाग परिच्छेदोनुं आच्छादन कर्युं छे तेनी अपेक्षाए अनन्त छे.—टीका.

२७. [प्र०] नेरइयाणं भंते ! णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवतिया अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! अणंता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता; एवं सव्वजीवाणं, जाव–[प्र०] वेमाणियाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! अणंता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता, एवं जहा णाणावरणिज्जस्स अविभागपलिच्छेदा भाणिया तहा अट्ठण्ह वि कम्मपगडीणं भाणियव्वा, जाव वेमाणिआणं अंतराइयस्स ।

२८. [प्र०] एगमेगस्स णं भंते ! जीवस्स एगमेगे जीवपएसे णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवतिएहिं अविभागपलिच्छेदेहिं आवेढिय–परिवेढिए ? [उ०] गोयमा ! सिय आवेढिय–परिवेढिए, सिय नो आवेढिय–परिवेढिए; जइ आवेढिय-परिवेढिए नियमा अणंतेहिं ।

२९. [प्र०] एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स एगमेगे जीवपएसे णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवइएहिं अविभागपलिच्छेदेहिं आवेढिय–परिवेढिए ? [उ०] गोयमा ! नियमं अणंतेहिं, जहा नेरइयस्स एवं जाव वेमाणियस्स; नवरं मणुसस्स जहा जीवस्स ।

३०. [प्र०] एगमेगस्स णं भंते ! जीवस्स एगमेगे जीवपएसे दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवइएहिं ? [उ०] एवं जहेव नाणावरणिज्जस्स तहेव दंडगो भाणियव्वो जाव वेमाणियस्स; एवं जाव अंतराइयस्स भाणियव्वं, नवरं वेयणिज्जस्स, आउयस्स, णामस्स, गोयस्स–एएसिं चउण्ह वि कम्माणं मणुसस्स जहा नेरइयस्स तहा भाणियव्वं, सेसं तं चेव ।

३१. [प्र०] जस्स णं भंते ! णाणावरणिज्जं तस्स दरिसणावरणिज्जं, जस्स दंसणावरणिज्जं तस्स नाणावरणिज्जं ? [उ०] गोयमा ! जस्स णं णाणावरणिज्जं तस्स दंसणावरणिज्जं नियमं अत्थि, जस्स णं दरिसणावरणिज्जं तस्स वि नाणावरणिज्जं नियमं अत्थि ।

३२. [प्र०] जस्स णं भंते ! णाणावरणिज्जं तस्स वेयणिज्जं, जस्स वेयणिज्जं तस्स णाणावरणिज्जं ? [उ०] गोयमा ! जस्स णाणावरणिज्जं तस्स वेयणिज्जं नियमं अत्थि, जस्स पुण वेयणिज्जं तस्स णाणावरणिज्जं सिय अत्थि, सिय नत्थि ।

नैरयिक.

२७. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकोने ज्ञानावरणीयकर्मना अविभागपरिच्छेदो केटला कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! अनन्त अविभागपरिच्छेदो कह्या छे. ए प्रमाणे सर्वजीवोने–जाणवुं; यावद् [प्र०] वैमानिको संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! अनन्त अविभागपरिच्छेदो कह्या छे. जेम ज्ञानावरणीय कर्मना अविभागपरिच्छेदो कह्या तेम आठे कर्मप्रकृतिना अविभागपरिच्छेदो अन्तरायकर्म पर्यन्त यावद् वैमानिकोने कहेवा.

जीवनो एक एक प्रदेश केटला ज्ञानावरणीय कर्मना परिच्छेदोथी आवेष्टित छे ?

२८. [प्र०] हे भगवन् ! एक एक जीवनो एक एक जीवप्रदेश ज्ञानावरणीय कर्मना केटला अविभागपरिच्छेदो (अंशोथी) आवेष्टित- परिवेष्टित छे ? [उ०] हे गौतम ! कदाचित् आवेष्टित–परिवेष्टित होय, अने कदाचित् *आवेष्टित–परिवेष्टित न होय. जो आवेष्टित–परिवेष्टित होय तो ते अवश्य अनंत अविभागपरिच्छेदो वडे आवेष्टित–परिवेष्टित होय.

एक एक नैरयिकनो एक एक जीवप्रदेश.

२९. [प्र०] हे भगवन् ! एक एक नैरयिक जीवनो एक एक जीवप्रदेश ज्ञानावरणीय कर्मना केटला अविभागपरिच्छेदो वडे आवेष्टित–परिवेष्टित होय ? [उ०] हे गौतम ! अवश्य ते अनन्त अविभागपरिच्छेदो वडे आवेष्टित–परिवेष्टित होय. जेम नैरयिको माटे कह्युं तेम यावद् वैमानिकोने कहेवुं, परन्तु मनुष्यने जीवनी पेठे कहेवुं.

दर्शनावरणीयना केटला परिच्छेदोथी वेष्टित छे ?

३०. [प्र०] हे भगवन् ! एक एक जीवनो एक एक जीव प्रदेश दर्शनावरणीय कर्मना केटला अविभागपरिच्छेदो वडे आवेष्टित परिवेष्टित होय ? [उ०] जेम ज्ञानावरणीय कर्मना संबन्धे दंडक कह्यो तेम अहीं पण यावद् वैमानिकने कहेवो, यावत् अन्तरायकर्मपर्यन्त कहेवुं. पण वेदनीय, आयुष्, नाम अने गोत्र–ए चार कर्मो माटे जेम नैरयिकोने कह्युं तेम मनुष्योने कहेवुं, बाकी बधुं पूर्व प्रमाणेज जाणवुं.

ज्ञानावरणीय अने दर्शनावरणीयनो संबन्ध.

३१. [प्र०] हे भगवन् ! जे जीवने ज्ञानावरणीय कर्म छे तेने शुं दर्शनावरणीय कर्म छे, जेने दर्शनावरणीय कर्म छे तेने शुं ज्ञानावरणीय कर्म छे ? [उ०] हे गौतम ! जेने ज्ञानावरणीय छे तेने अवश्य दर्शनावरणीय होय छे, जेने दर्शनावरणीय छे तेने पण अवश्य ज्ञानावरणीय होय छे.

ज्ञानावरणीय अने वेदनीयनो संबन्ध.

३२. [प्र०] हे भगवन् ! जेने ज्ञानावरणीय छे, तेने शुं वेदनीय होय छे, जेने वेदनीय छे तेने ज्ञानावरणीय होय छे ? [उ०] हे गौतम ! जेने ज्ञानावरणीय कर्म छे तेने अवश्य वेदनीय होय छे, अने जेने वेदनीय छे तेने ज्ञानावरणीय कर्म कदाच होय अने कदाच न होय.

---

२८. * केवलज्ञानिनी अपेक्षाए आवेष्टित–परिवेष्टित न होय, केमके तेने ज्ञानावरणीय कर्म क्षीण थयेलुं होवाथी ज्ञानावरणीयना अविभागपरिच्छेदो वडे तेना प्रदेशोने परिवेष्टन होतुं नथी, अने इतर जीवोना प्रदेशो अनन्त अविभागपरिच्छेदोथी परिवेष्टित छे.—टीका.

३३. [प्र०] जस्स णं भंते ! नाणावरणिज्जं तस्स मोहणिज्जं, जस्स मोहणिज्जं तस्स णाणावरणिज्जं ? [उ०] गोयमा ! जस्स नाणावरणिज्जं तस्स मोहणिज्जं सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण मोहणिज्जं तस्स णाणावरणिज्जं नियमं अत्थि ।

३४. [प्र०] जस्स णं भंते ! णाणावरणिज्जं तस्स आउयं ? [उ०] एवं जहा वेयणिज्जेण समं भणियं तहा आउएण वि समं भाणियव्वं, एवं नामेण वि, एवं गोएण वि समं; अंतराएण समं जहा दरिसणावरणिज्जेण समं तहेव नियमं परोप्परं भाणियव्वाणि ।

३५. [प्र०] जस्स णं भंते ! दरिसणावरणिज्जं तस्स वेयणिज्जं, जस्स वेयणिज्जं तस्स दरिसणावरणिज्जं ? [उ०] जहा णाणावरणिज्जं उवरिमेहिं सत्तहिं कम्मेहिं समं भणियं तहा दरिसणावरणिज्जं पि उवरिमेहिं छहिं कम्मेहिं समं भाणियव्वं, जाव अंतराइएणं ।

३६. [प्र०] जस्स णं भंते ! वेयणिज्जं तस्स मोहणिज्जं, जस्स मोहणिज्जं तस्स वेयणिज्जं ? [उ०] गोयमा ! जस्स वेयणिज्जं तस्स मोहणिज्जं सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण मोहणिज्जं तस्स वेयणिज्जं नियमं अत्थि ।

३७. [प्र०] जस्स णं भंते ! वेयणिज्जं तस्स आउयं० ? [उ०] एवं एयाणि परोप्परं नियमं, जहा आउएण समं एवं नामेण वि गोएण वि समं भाणियव्वं ।

३८. [प्र०] जस्स णं भंते ! वेयणिज्जं तस्स अंतराइयं–पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जस्स वेयणिज्जं तस्स अंतराइयं सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण अंतराइयं तस्स वेयणिज्जं नियमं अत्थि ।

३९. [प्र०] जस्स णं भंते ! मोहणिज्जं तस्स आउयं, जस्स णं भंते ! आउयं तस्स मोहणिज्जं ? [उ०] गोयमा जस्स मोहणिज्जं तस्स आउयं नियमं अत्थि, जस्स पुण आउयं तस्स पुण मोहणिज्जं सिय अत्थि, सिय नत्थि; एवं नामं गोयं अंतराइयं च भाणियव्वं ।

४०. [प्र०] जस्स णं भंते ! आउयं तस्स नामं–पुच्छा । [उ०] गोयमा ! दो वि परोप्परं नियमं, एवं गोत्तेण वि समं भाणियव्वं ।

३३. [प्र०] हे भगवन् ! जेने ज्ञानावरणीय छे तेने शुं मोहनीय छे, जेने मोहनीय छे तेने ज्ञानावरणीय छे ? [उ०] हे गौतम ! जेने ज्ञानावरणीय छे तेने मोहनीय कर्म कदाच होय अने कदाच न होय. पण जेने मोहनीय छे तेने अवश्य ज्ञानावरणीय कर्म होय छे.

ज्ञानावरणीय अने मोहनीय कर्मनो संबंध.

३४. [प्र०] हे भगवन् ! जेने ज्ञानावरणीय कर्म छे तेने शुं आयुष् कर्म छे ?–इत्यादि [उ०] जेम वेदनीय कर्म साथे कह्युं तेम आयुष्नी साथे पण कहेवुं. ए प्रमाणे नाम अने गोत्र कर्मनी साथे पण जाणवुं. जेम दर्शनावरणीय साथे कह्युं तेम अन्तराय कर्म साथे अवश्य परस्पर कहेवुं.

ज्ञानावरणीय अने आयुषकर्मनो संबंध.

३५. [प्र०] हे भगवन् ! जेने दर्शनावरणीयकर्म छे तेने शुं वेदनीय छे, जेने वेदनीय छे तेने दर्शनावरणीय छे ? [उ०] जेम ज्ञानावरणीय कर्म उपरना सात कर्मो साथे कह्युं छे तेम दर्शनावरणीय कर्म पण उपरना छ कर्मो साथे कहेवुं, अने ए प्रमाणे यावद् अंतराय कर्म साथे कहेवुं.

दर्शनावरणीय अने वेदनीयनो संबंध.

३६. [प्र०] हे भगवन् ! जेने वेदनीय छे तेने शुं मोहनीय छे, जेने मोहनीय छे तेने वेदनीय छे ? [उ०] हे गौतम ! जेने वेदनीय छे, तेने मोहनीय कदाच होय अने कदाच न होय. पण जेने मोहनीय छे तेने अवश्य वेदनीय छे.

वेदनीय अने मोहनीयनो संबंध.

३७. [प्र०] हे भगवन् ! जेने वेदनीय छे तेने शुं आयुष् कर्म होय? [उ०] ए प्रमाणे ए बन्ने परस्पर अवश्य होय. जेम आयुष्नी साथे कह्युं तेम नाम अने गोत्रनी साथे पण कहेवुं.

३८. [प्र०] हे भगवन् ! जेने वेदनीय कर्म छे तेने शुं अन्तराय होय–इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! जेने वेदनीय छे तेने अन्तराय कर्म कदाच होय अने कदाच न होय. पण जेने अन्तराय कर्म छे तेने अवश्य वेदनीय कर्म होय.

वेदनीय अने अन्तरायनो संबंध.

३९. [प्र०] हे भगवन् ! जेने मोहनीय छे तेने शुं आयुष् होय, जेने आयुष् छे तेने शुं मोहनीय होय? [उ०] हे गौतम ! जेने मोहनीय छे तेने अवश्य आयुष् होय, जेने आयुष्य छे तेने मोहनीय कर्म कदाच होय अने कदाच न होय. ए प्रमाणे नाम, गोत्र अने अन्तरायकर्म कहेवुं.

मोहनीय अने आयुषनो संबंध.

४०. [प्र०] हे भगवन् ! जेने आयुष् कर्म छे तेने नाम कर्म होय?–इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! ते बन्ने परस्पर अवश्य होय, ए प्रमाणे गोत्र साथे पण कहेवुं.

आयुष अने नामकर्मनो संबंध.

४१. [प्र०] जस्स णं भंते ! आउयं तस्स अंतराइयं–पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जस्स आउयं तस्स अंतराइयं सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण अंतराइयं तस्स आउयं नियमं अत्थि ।

४२. [प्र०] जस्स णं भंते ! नामं तस्स गोयं, जस्स णं गोयं तस्स णं णामं–पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जस्स णं णामं तस्स नियमा गोयं, जस्स णं गोयं तस्स नियमा नामं; दो वि एए परोप्परं नियमा अत्थि ।

४३. [प्र०] जस्स णं भंते ! णामं तस्स अंतराइयं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जस्स नामं तस्स अंतराइयं सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण अंतराइयं तस्स णामं नियमा अत्थि ।

४४. [प्र०] जस्स णं भंते ! गोयं तस्स अंतराइयं–पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जस्स णं गोयं तस्स अंतराइयं सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण अंतराइयं तस्स गोयं नियमं अत्थि ।

४५. [प्र०] जीवे णं भंते ! किं पोग्गली, पोग्गले ? [उ०] गोयमा ! जीवे पोग्गली वि, पोग्गले वि । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'जीवे पोग्गली वि पोग्गले वि' ? [उ०] गोयमा ! से जहानामए छत्तेणं छत्ती, दंडेणं दंडी, घडेणं घडी, पडेणं पडी, करेणं करी, एवामेव गोयमा ! जीवे वि सोइंदिय–चक्खिदिय–घाणिंदिय–जिब्भिंदिय–फासिंदियाइं पडुच्च पोग्गली, जीवं पडुच्च पोग्गले; से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ–'जीवे पोग्गली वि, पोग्गले वि' ।

४६. [प्र०] नेरइए णं भंते ! किं पोग्गली० ? [उ०] एवं चेव, एवं जाव वेमाणिए, नवरं जस्स जइ इंदियाइं तस्स तइ वि भाणियव्वाइं ।

४७. [प्र०] सिद्धे णं भंते ! किं पोग्गली, पोग्गले ? [उ०] गोयमा ! नो पोग्गली, पोग्गले । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'जाव पोग्गले' ? [उ०] गोयमा ! जीवं पडुच्च, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ–'सिद्धे नो पोग्गली, पोग्गले । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

अट्ठमसए दसमो उद्देसो समत्तो ।

समत्तं अट्ठमं सयं ।

आयुषकर्म अने अन्तराय कर्मनो संबंध.

४१. [प्र०] हे भगवन् ! जेने आयुष् छे तेने अन्तराय कर्म होय ? इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! जेने आयुष् छे तेने अन्तराय कदाच होय अने कदाच न होय, पण जेने अन्तराय कर्म छे तेने अवश्य आयुष् कर्म होय.

नामकर्म अने गोत्र कर्मनो संबंध.

४२. [प्र०] हे भगवन् ! जेने नाम कर्म छे, तेने शुं गोत्र कर्म होय, जेने गोत्र कर्म छे तेने नाम कर्म होय–प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! जेने नाम कर्म छे तेने अवश्य गोत्रकर्म होय; अने जेने गोत्रकर्म छे तेने अवश्य नामकर्म होय. ए बन्ने कर्मो परस्पर अवश्य होय.

नामकर्म अने अन्तरायकर्मनो संबन्ध.

४३. [प्र०] हे भगवन् ! जेने नाम कर्म छे तेने शुं अंतराय कर्म होय, अने जेने अंतराय कर्म छे तेने शुं नाम कर्म होय ? [उ०] हे गौतम ! जेने नामकर्म छे तेने अंतराय कदाच होय अने कदाच न होय, पण जेने अंतराय कर्म छे तेने अवश्य नामकर्म होय.

गोत्रकर्म अने अन्तराय कर्मनो संबंध.

४४. [प्र०] हे भगवन् ! जेने गोत्रकर्म छे तेने शुं अंतराय कर्म होय ? इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! जेने गोत्रकर्म छे तेने अन्तराय कर्म कदाच होय अने कदाच न होय, पण जेने अन्तराय कर्म छे तेने अवश्य गोत्रकर्म होय.

जीव पुद्गली के पुद्गल.

४५. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जीव पुद्गली छे के पुद्गल छे ? [उ०] हे गौतम ! जीव पुद्गली पण छे अने पुद्गल पण छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के 'जीव पुद्गली पण छे अने पुद्गल पण छे' ? [उ०] हे गौतम ! जेम कोइ एक पुरुष छत्रवडे छत्री, दंडवडे दंडी, घटवडे घटी, पटवडे पटी अने करवडे करी कहेवाय छे तेम जीव पण श्रोत्रेंद्रिय, चक्षुरिंद्रिय, घ्राणेन्द्रिय, जिह्वेन्द्रिय अने स्पर्शनेन्द्रियने आश्रयी पुद्गली कहेवाय छे, अने जीवने आश्रयी पुद्गल कहेवाय छे. माटे हे गौतम ! ते हेतुथी एम कहेवाय छे के 'जीव पुद्गली पण छे अने पुद्गल पण छे.'

नैरयिको पुद्गली के पुद्गल ?

४६. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिक पुद्गली छे के पुद्गल छे ? [उ०] हे गौतम ! ते पूर्वनी पेठे जाणवुं. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकोने पण कहेवुं; परन्तु तेमां जे जीवोने जेटली इन्द्रियो होय तेने तेटली कहेवी.

सिद्धो पुद्गली के पुद्गल ?

४७. [प्र०] हे भगवन् ! शुं सिद्धो पुद्गली छे के पुद्गल छे ? [उ०] हे गौतम ! पुद्गली नथी, पण पुद्गल छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के सिद्धो यावत् पुद्गल छे ? [उ०] हे गौतम ! जीवने आश्रयी [पुद्गल] कहुं छुं. ते हेतुथी एम कहेवाय छे के सिद्धो पुद्गली नथी, पण पुद्गल छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.

अष्टम शतके दशम उद्देशक समाप्त.

नवमं सयं

१. १ जंबुद्दीवे २ जोइस ३० अंतरदीवा ३१ असोच्च ३२ गंगेय ।
३३ कुंडग्गामे ३४ पुरिसे णवमम्मि सतंमि चोत्तीसा ॥

पढमो उद्देसो ।

२. [प्र०] तेणं कालेणं तेणं समएणं मिहिला णामं णगरी होत्था । वण्णओ । माणिभद्दे चेतिए । वण्णओ । सामी समोसढे, परिसा णिग्गता, जाव भगवं गोयमे पज्जुवासमाणे एवं वदासी–कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे, किंसंठिए णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे ? [उ०] एवं जंबुद्दीवपन्नत्ती भाणियव्वा, जाव एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे चोद्दस सलिला सयसहस्सा छप्पन्नं च सहस्सा भवंतीति मक्खाया । सेवं भंते !, सेवं भंते ! त्ति ।

इति नवमसए पढमो उद्देसो समत्तो ।

नवम शतक.

१. [उद्देशक संग्रह–] १ जंबूद्वीप, २ ज्योतिष्क, ३–३० अठ्यावीश अन्तर्द्वीपो, ३१ असोचा, ३२ गांगेय, ३३ कुंडग्राम अने ३४ पुरुष–ए संबन्धे नवमा शतकमां चोत्रीश उद्देशको छे. [१ जंबूद्वीप संबन्धे प्रथम उद्देशक छे, २ ज्योतिषिक देव संबन्धे बीजो उद्देशक छे, ३–३० अठ्यावीश अन्तर्द्वीपोना त्रीजाथी आरंभी त्रीश उद्देशको छे, ३१ असोचा–'सांभळ्या शिवाय–धर्मने पामे'–इत्यादि विषे एकत्रीशमो उद्देशक छे, गांगेय अनगारना प्रश्न विषे बत्रीशमो उद्देशक छे, ब्राह्मणकुंडग्राम संबन्धे तेत्रीशमो उद्देशक छे, अने पुरुषने हणनार संबन्धे चोत्रीशमो उद्देशक छे.]

प्रथम उद्देशक.

जंबूद्वीप.

२. ते काले–ते समये मिथिला नामे नगरी हती. वर्णन. त्यां मणिभद्र चैत्य हतुं. वर्णन. त्यां महावीरस्वामी समोसर्या. पर्षद् [वांदवाने] नीकळी. यावद् भगवान् गौतमे पर्युपासना करता आ प्रमाणे पूछ्युं–हे भगवन् ! जंबूद्वीप कये स्थळे छे ? हे भगवन् ! जंबूद्वीप केवा आकारे रहेलो छे ? [उ०] अहीं *जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति कहेवी, यावद् 'जंबूद्वीप नामे द्वीपमां पूर्व अने पश्चिम चौद लाख अने छप्पन हजार नदीओ छे' तेम कह्युं छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे [एम कही भगवान् गौतम यावत् विहरे छे.]

नवम शतके प्रथम उद्देशक समाप्त.

---

१ सए चउत्तीसा ग–घ । २ नयरी ग–ङ । ३ माणभ– ख–ग–घ । ४ चेइए ग–घ–ङ । ५ वयासी ग–घ–ङ ।
२. * जंबूद्वीप० प. १५. १—३०८. १.

बिओ उद्देसो.

१. [प्र०] रायगिहे जाव एवं वयासी–जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे केवइया चंदा पभासिंसु वा, पभासेंति वा, पभासिस्संति वा ? [उ०] एवं जहा जीवाभिगमे, जाव–"एगं च सयसहस्सं तेत्तीसं खलु भवे सहस्साइं । नव य सया पन्नासा तारागणकोडाकोडीणं" ॥ सोभं सोभिंसु, सोभिंति, सोभिस्संति ।

२. [प्र०] लवणे णं भंते ! समुद्दे केवतिया चंदा पभासिंसु वा, पभासिंति वा, पभासिस्संति वा ? [उ०] एवं जहा जीवाभिगमे, जाव ताराओ । धायइसंडे, कालोदे, पुक्खरवरे, अब्भिंतरपुक्खरद्धे, मणुस्सखेत्ते–एएसु सव्वेसु जहा जीवाभिगमे, जाव–"एगससीपरिवारो तारागणकोडिकोडीणं" ।

३. [प्र०] पुक्खरोदे णं भंते ! समुद्दे केवइया चंदा पभासिंसु वा० ३ ? [उ०] एवं सव्वेसु दीव–समुद्देसु जोतिसियाणं भाणियव्वं, जाव सयंभूरमणे, जाव सोभं सोभिंसु वा, सोभंति वा, सोभिस्संति वा । सेवं भंते !, सेवं भंते ! त्ति ।

नवमसए बीओ उद्देसो समत्तो ।

द्वितीय उद्देशक.

जंबूद्वीपमां चंद्रोनो प्रकाश.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां यावत् [गौतम स्वामीए] ए प्रमाणे प्रश्न कर्यो के–हे भगवन् ! जंबूद्वीप नामना द्वीपमां केटला चंद्रोए प्रकाश कर्यो, केटला प्रकाश करे छे अने केटला प्रकाश करशे ? [उ०] ए प्रमाणे जेम *जीवाभिगम सूत्रमां कह्युं छे तेम जाणवुं, यावत् 'एक लाख, तेत्रीश हजार, नवसो ने पचास कोडाकोडि ताराना समूहे शोभा करी, शोभा करे छे अने शोभा करशे' त्यां सुधी जाणवुं.

लवण समुद्रमां चंद्रोनो प्रकाश. धातकिखंड कालोद, पुष्करवर अने अभ्यन्तर पुष्करार्ध.

२. [प्र०] हे भगवन् ! लवण समुद्रमां केटला चंद्रोए प्रकाश कर्यो, केटला प्रकाश करे छे अने केटला प्रकाश करशे ? [उ०] ए प्रमाणे जेम †जीवाभिगम सूत्रमां कह्युं छे तेम तारानी हकीकत सुधी सर्व जाणवुं. धातकिखंड, कालोदधि, पुष्करवर द्वीप, अभ्यंतर पुष्करार्ध अने मनुष्यक्षेत्रमां–ए सर्व स्थळे जीवाभिगम सूत्रमां कह्या प्रमाणे यावत् "एक चंद्रनो परिवार कोटाकोटि तारागणो होय छे" त्यां सुधी सर्व जाणवुं.

पुष्करोद समुद्र. यावत् स्वयंभूरमण समुद्र.

३. [प्र०] हे भगवन् ! पुष्करोद समुद्रमां केटला चंद्रोए प्रकाश कर्यो ?—इत्यादि [उ०] ए रीते [‡जीवाभिगम सूत्रमां कह्या प्रमाणे] सर्व द्वीप अने समुद्रोमां ज्योतिष्कोनी हकीकत यावत् 'स्वयंभूरमणसमुद्रमां छे यावत् शोभ्या, शोभे छे अने शोभशे' त्यां सुधी कहेवी. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे, [एम कही यावद् भगवान् गौतम विहरे छे.]

नवम शतके द्वितीय उद्देशक समाप्त.

---

१ वयासी क, वयासि ख । २ अस्या गाथाया पूर्वार्धं नास्ति क–ख–ङ । ३ चायतिसं– क–ख । ४ –कोडिको– ङ । ५ जोइसं मा– क–ख । ६ सयंभुर– क–ङ ।

१. * जीवा० प्रति. ३ उ. २ प. ३००–१. २. † जीवा० प्रति. ३ उ. २ प. ३०३–१. ३३५–२. ३. ‡ जीवा० प्रति. ३ उ. २ प. ३४८. १–३६७. २.

तइओ उद्देसो.

१. [प्र०] रायगिहे जाव एवं वयासी–कहि णं भंते ! दाहिणिल्लाणं एगोरुयमणुस्साणं एगोरुयदीवे नामं दीवे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ लवणसमुदं उत्तरपुरत्थिमेणं तिन्नि जोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थ णं दाहिणिल्लाणं एगोरुयमणुस्साणं एगोरुयदीवे नामं दीवे पण्णत्ते । गोयमा ! तिन्नि जोयणसयाइं आयाम–विक्खंभेणं णव एगूणवन्ने जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं पन्नत्ते । से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, दोण्ह वि पमाणं वन्नओ य एवं एएणं कमेणं एवं जहा जीवाभिगमे जाव 'सुद्धदंतदीवे,' जाव 'देवलोगपरिग्गहा णं ते मणुया पण्णत्ता' समणाउसो ! । एवं अट्ठावीसंपि अंतरदीवा सएणं सएणं आयाम–विक्खंभेणं भाणियव्वा, नवरं दीवे दीवे उद्देसओ, एवं सव्वे वि अट्ठावीसं उद्देसगा । सेवं भंते !, सेवं भंते ! त्ति ।

नवमसयस्स तीसइमो उद्देसो समत्तो ।

तृतीय उद्देशक.

अठ्यावीश अन्तर्द्वीपो.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां [भगवान् गौतमे] यावत् ए प्रमाणे पूछ्युं—हे भगवन् ! दक्षिण दिशाना एकोरुक मनुष्योनो एकोरुक नामे द्वीप क्यां कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! जंबूद्वीप नामना द्वीपमां आवेला मंदरपर्वत (मेरुपर्वत) नी दक्षिणे चुल्ल (क्षुद्र) हिमवंत नामे वर्षधर पर्वतना पूर्वना छेडाथी ईशान कोणमां त्रणसो योजन लवणसमुद्रमां गया पछी ए स्थळे दक्षिण दिशाना एकोरुक मनुष्योनो एकोरुक नामे द्वीप कह्यो छे. हे गौतम ! ते द्वीपनी लंबाइ अने पहोळाइ त्रणसो योजन छे, अने तेनो परिक्षेप (परिधि) नवसो ओगण पचास योजनथी कांइक न्यून छे. ते द्वीप एक पद्मवरवेदिका अने एक वनखंडथी चारे बाजु विंटाएल छे. ए बन्नेनुं प्रमाण तथा वर्णन ए प्रमाणे ए क्रम वडे जेम [1]जीवाभिगमसूत्रमां कह्युं छे तेम यावत् 'शुद्धदंत द्वीप छे, यावद् हे आयुष्मान् श्रमण ! ए द्वीपना मनुष्यो मरीने देवगतिमां उपजे छे' त्यांसुधी जाणवुं. ए प्रमाणे पोत पोतानी लंबाइ, अने पहोळाइथी अठ्यावीश अंतर्द्वीपो कहेवा; परन्तु एक एक द्वीपे एक एक उद्देशक जाणवो. ए प्रमाणे बधा मळीने अठ्यावीश उद्देशको कहेवा. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे. [एम कही भगवान् गौतम यावद् विहरे छे.]

नवम शतके त्रीशमो उद्देशक समाप्त.

---

१ वदासि क–ख । २ एगूरु– क–ङ । एगुरु– क–ख । ३ अयं पाठो नास्ति क–ख–ङ । ४ एकोण– ग–घ, एकाव–ङ । ५–परिग्गहिया णं ग–घ । ६ –वीसं अं– घ,–वीस वि ङ । ७ 'भाणियव्वा' इत्यधिकः पाठः ग–घ ।

१. * जीवा० प्रति. ३ उ. १ पृ. १४४–२–१५६–१.

एगतीसइमो उद्देसो.

१. [प्र०] रायगिहे जाव एवं वयासी–असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा, केवलिसावगस्स वा, केवलिसावियाए वा, केवलिउवासगस्स वा, केवलिउवासियाए वा, तप्पक्खियस्स वा, तप्पक्खियसावगस्स वा, तप्पक्खियसावियाए वा, तप्पक्खियउवासगस्स वा, तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए? [उ०] गोयमा! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए, अत्थेगतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभेज्जा सवणयाए। [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'असोच्चा णं जाव नो लभेज्जा सवणयाए' ? [उ०] गोयमा ! जस्स णं नाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा, जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्ज सवणयाए; जस्स णं नाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ–तं चेव जाव 'नो लभेज्ज सवणयाए'।

२. [प्र०] असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं बोहिं बुज्झेज्जा ? [उ०] गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव अत्थेगतिए केवलं बोहिं बुज्झेज्जा, अत्थेगतिए केवलं बोहिं णो बुज्झेज्जा ! [प्र०] से केणट्ठेणं

एकत्रीशमो उद्देशक.

केवल्यादिपासे सांभळ्या सिवाय कोइ जीवने धर्मनो बोध थाय के न थाय?–इत्यादि.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां यावत् [भगवान् गौतमे] आ प्रमाणे पूछ्युं—हे भगवन् ! केवलि पासेथी, *केवलिना श्रावक पासेथी, केवलिनी श्राविका पासेथी, केवलिना उपासक पासेथी, केवलिनी उपासिका पासेथी, केवलिना पाक्षिक (स्वयंबुद्ध) पासेथी, केवलिना पाक्षिक श्रावक पासेथी, केवलिना पाक्षिकनी श्राविका पासेथी, केवलिना पक्षना उपासक पासेथी अने केवलिना पाक्षिकनी उपासिका पासेथी सांभळ्या विना जीवने केवलज्ञानीए कहेला धर्मनां †श्रवणनो–ज्ञाननो लाभ थाय? [उ०] हे गौतम ! केवलि पासेथी यावत् तेना पाक्षिकनी उपासिका पासेथी सांभळ्या विना पण कोइ जीवने केवलिए कहेला धर्मश्रवणनो लाभ थाय अने कोइ जीवने लाभ न थाय. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के सांभळ्या विना यावत् [धर्म] श्रवणनो लाभ न थाय? [उ०] हे गौतम ! जे जीवे ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम करेलो छे ते जीवने केवलि पासेथी यावत् तेना पाक्षिकनी उपासिका पासेथी सांभळ्या विना पण केवलिए कहेला धर्मश्रवणनो लाभ थाय, अने जे जीवे ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम कर्यो नथी ते जीवने केवलि पासेथी यावत् तेना पाक्षिकनी उपासिका पासेथी सांभळ्या विना केवलिए कहेल धर्मने सांभळवानो लाभ न थाय. हे गौतम ! ते हेतुथी एम कह्युं छे के, तेने यावत् 'श्रवणनो लाभ न थाय.'

बोधि.

२. [प्र०] हे भगवन् ! केवली पासेथी के यावत् तेना पक्षनी उपासिका पासेथी [धर्म] सांभळ्या विना कोइ जीव शुद्ध बोधि–सम्यग्दर्शनने अनुभवे? [उ०] हे गौतम ! केवली पासेथी यावत् सांभळ्या विना पण कोइ जीव शुद्ध सम्यग्दर्शनने अनुभवे.

---

१. * जेणे केवलज्ञानीने स्वयं पूछ्युं छे, अथवा तेमनी पासेथी सांभळ्युं छे ते केवलिश्रावक. केवलज्ञानीनी उपासना करता केवलीए अन्यने कहेलुं जेणे सांभळ्युं होय ते केवलिउपासक. केवलिनो पाक्षिक एटले स्वयंबुद्ध.–टीका.

† अहीं श्रवण श्रुतज्ञानरूप जाणवुं, अर्थात् केवलज्ञानीवगेरे पासेथी सांभळ्या सिवाय कोई जीवने धर्मनो बोध थाय, अन्यथा सांभळ्या विना पोतानी मेळे बोध पामेलाने श्रवण शीरीते थाय ?

भंते! जाव नो बुज्झेज्जा? [उ०] गोयमा! जस्स णं दरिसणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलं बोहिं बुज्झेज्जा; जस्स णं दरिसणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे णो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलं बोहिं णो बुज्झेज्जा; से तेणट्ठेणं जाव णो बुज्झेज्जा।

३. [प्र०] असोच्चा णं भंते! केवलिस्स वा, जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं मुंडे भवित्ता [1]अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा? [उ०] गोयमा! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा अत्थेगतिए केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा; अत्थेगतिए केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं नो पव्वएज्जा। [प्र०] से केणट्ठेणं जाव नो पव्वएज्जा? [उ०] गोयमा! जस्स णं धम्मंतराइयाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवति से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा; जस्स णं धम्मंतराइयाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवति से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव मुंडे भवित्ता जाव णो पव्वएज्जा, से तेणट्ठेणं गोयमा! जाव नो पव्वएज्जा।

४. [प्र०] असोच्चा णं भंते! केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा केवलं बंभचेरवासं आवसेज्जा? [उ०] गोयमा! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा अत्थेगतिए केवलं बंभचेरवासं आवसेज्जा, अत्थेगतिए केवलं बंभचेरवासं नो आवसेज्जा। [प्र०] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–'जाव नो आवसेज्जा'? [उ०] गोयमा! जस्स णं चरित्तावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलं बंभचेरवासं आवसेज्जा; जस्स णं चरित्तावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव नो आवसेज्जा, से तेणट्ठेणं जाव नो आवसेज्जा।

५. [प्र०] असोच्चा णं भंते! केवलिस्स वा जाव केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा? [उ०] गोयमा! असोच्चा णं [2]केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा अत्थेगतिए केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा; अत्थेगतिए केवलेणं संजमेणं नो संजमेज्जा। [प्र०] से

अने कोइ जीव शुद्ध सम्यग्दर्शनने न अनुभवे. [प्र०] हे भगवन्! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के, यावत् [शुद्ध सम्यग्दर्शनने] न अनुभवे? [उ०] हे गौतम! जे जीवे दर्शनावरणीय (दर्शनमोहनीय) कर्मनो क्षयोपशम कर्यो छे ते जीव केवली पासेथी यावत् सांभळ्या विना शुद्ध सम्यग्दर्शनने अनुभवे; अने जे जीवे दर्शनावरणीय कर्मनो क्षयोपशम कर्यो नथी, ते जीव केवली पासेथी यावत् सांभळ्या विना शुद्ध सम्यग्दर्शनने न अनुभवे. माटे हे गौतम! ते हेतुथी एम कहुं छे के—यावत् 'सांभळ्या विना शुद्ध सम्यक्त्वने अनुभवे नहि.' — *बोधिनो हेतु.*

३. [प्र०] हे भगवन्! केवली पासेथी के यावत् तेना पक्षनी उपासिका पासेथी सांभळ्या विना पण कोइ जीव मुंड–दीक्षित थइने अगारवास–गृहवास–त्यजी शुद्ध अनगारिकपणाने–प्रव्रज्याने स्वीकारे? [उ०] हे गौतम! केवली पासेथी यावत् तेना पक्षनी उपासिका-पासेथी सांभळ्या विना कोइ जीव मुंड थइने गृहवास त्यजी शुद्ध अनगारिकपणाने स्वीकारे, अने कोइ जीव मुंड थइ गृहवास त्यजी अन-गारिकपणाने न स्वीकारे. [प्र०] हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो के, 'यावत् न स्वीकारे'? [उ०] हे गौतम! जे जीवे धर्मांतरायिक —चारित्र धर्ममां अन्तरायभूत–चारित्रावरणीय कर्मोनो क्षयोपशम कर्यो छे ते जीव केवली पासेथी यावत् सांभळ्या विना पण मुंड थइने अगारवास त्यजी शुद्ध अनगारिकपणाने स्वीकारे, अने जे जीवे धर्मांतरायिक कर्मोनो क्षयोपशम कर्यो नथी ते जीव केवली पासेथी यावत् सांभळ्या विना यावत् मुंड थइने यावद् न स्वीकारे. माटे हे गौतम! ते हेतुथी एम कहुं छे के 'यावत् न स्वीकारे.' — *प्रव्रज्या. प्रव्रज्यानो हेतु.*

४. [प्र०] हे भगवन्! केवली पासेथी, यावत् तेना पक्षनी उपासिका पासेथी सांभळ्या विना कोइ जीव शुद्ध ब्रह्मचर्यवासने धारण करे? [उ०] हे गौतम! केवली पासेथी, यावत् तेना पक्षनी उपासिका पासेथी सांभळ्या विना पण कोइ जीव शुद्ध ब्रह्मचर्यवासने धारण करे, अने कोइ जीव शुद्ध ब्रह्मचर्यवासने धारण न करे. [प्र०] हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो के—'यावत् ब्रह्मचर्यवासने धारण न करे'? [उ०] हे गौतम! जे जीवे चारित्रावरणीय कर्मोनो क्षयोपशम कर्यो छे ते जीव केवली पासेथी यावत् सांभळ्या विना पण शुद्ध ब्रह्मचर्यवासने धारण करे, अने जे जीवे चारित्रावरणीय कर्मोनो क्षयोपशम नथी कर्यो ते जीव केवली पासेथी यावत् सांभळ्या विना शुद्ध ब्रह्मचर्यवासने धारण न करे. माटे हे गौतम! ते हेतुथी एम कहुं छे के 'यावत् ब्रह्मचर्यवासने धारण न करे.' — *ब्रह्मचर्य. ब्रह्मचर्यवासनो हेतु.*

५. [प्र०] हे भगवन्! केवली पासेथी यावत् सांभळ्या विना कोइ जीव शुद्ध संयमवडे संयमयतना करे? [उ०] हे गौतम! केवली पासेथी यावत् तेना पक्षनी उपासिका पासेथी सांभळ्या विना पण कोइ जीव शुद्ध संयमवडे *संयमयतना करे, अने कोइ जीव न करे. [प्र०] हे भगवन्! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के, यावत् संयमयतना न करे? [उ०] हे गौतम! जे जीवे †यतनावरणीय — *संयम. संयमनो हेतु.*

---

१ आगाराओ घ–ङ। २ केवलि– जाव क–ख।

५. * अहिं संयम–चारित्रनो स्वीकार करीने तेना दोषने त्यागकरवारूप प्रयत्नविशेष करवो ते संयमयतना.

† चारित्रविषे वीर्य प्रवृत्ति ते यतना, तेने आच्छादन करनार कर्म यतनावरणीय–वीर्यान्तराय कर्म–कहेवाय छे–टीका.

केणट्ठेणं जाव नो संजमेज्जा ? [उ०] गोयमा ! जस्स णं जयणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा; जस्स णं जयणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव नो संजमेज्जा; से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव अत्थेगतिए नो संजमेज्जा ।

६. [प्र०] असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा ? [उ०] गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव अत्थेगतिए केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा, अत्थेगतिए केवलेणं जाव नो संवरेज्जा । [प्र०] से केणट्ठेणं जाव नो संवरेज्जा ? [उ०] गोयमा ! जस्स णं अज्झवसाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा; जस्स णं अज्झवसाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे णो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव नो संवरेज्जा, से तेणट्ठेणं जाव नो संवरेज्जा ।

७. [प्र०] असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव केवलं आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा ? [उ०] गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा अत्थेगतिए केवलं आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलं आभिणिबोहियनाणं नो उप्पाडेज्जा । [प्र०] से केणट्ठेणं जाव नो उप्पाडेज्जा ? [उ०] गोयमा ! जस्स णं आभिणिबोहियनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलं आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा; जस्स णं आभिणिबोहियनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा, जाव केवलं आभिणिबोहियनाणं नो उप्पाडेज्जा; से तेणट्ठेणं जाव नो उप्पाडेज्जा ।

८. [प्र०] असोच्चा णं भंते ! केवलि० जाव केवलं सुयनाणं उप्पाडेज्जा ? [उ०] एवं जहा आभिणिबोहियनाणस्स वत्तव्वया भणिया तहा सुयनाणस्स वि भाणियव्वा; नवरं सुयणाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे भाणियव्वे । एवं चेव केवलं ओहिनाणं भाणियव्वं, नवरं ओहिणाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे भाणियव्वे । एवं केवलं मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा, नवरं मणपज्जवणाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे भाणियव्वे ।

कर्मोनो क्षयोपशम कर्यो छे ते जीव केवली पासेथी यावत् सांभळ्या विना पण शुद्ध संयमवडे संयमयतना करे, अने जे जीवे यतनावरणीय कर्मोनो क्षयोपशम नथी कर्यो ते जीव केवली पासेथी यावत् सांभळ्या विना शुद्ध संयमवडे संयमयतना न करे, माटे हे गौतम ! ते हेतुथी एम कह्युं छे के, यावत् 'कोइ संयम न करे.'

संवर.

६. [प्र०] हे भगवन् ! केवली पासेथी के यावत् तेना पक्षनी उपासिका पासेथी सांभळ्या विना कोइ जीव शुद्ध संवरवडे संवर—आस्रवनो रोध—करे ? [उ०] हे गौतम ! केवली पासेथी यावत् सांभळ्या विना पण कोइ जीव शुद्ध संवरवडे आस्रवने रोके, अने कोइ जीव शुद्ध संवरवडे आस्रवने न रोके. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के-'यावत् संवर न करे' ? [उ०] हे गौतम ! जे जीवे अध्यवसानावरणीय (भावचारित्रावरणीय) कर्मोनो क्षयोपशम कर्यो छे ते जीव केवली पासेथी यावत् सांभळ्या विना पण शुद्ध संवरवडे संवर—आस्रवनो रोध—करी शके, अने जे जीवे अध्यवसानावरणीय कर्मोनो क्षयोपशम नथी कर्यो ते जीव केवली पासेथी सांभळ्या विना संवर न करी शके; माटे हे गौतम ! ते हेतुथी एम कह्युं छे के—यावत् 'संवर न करे'.

संवरनो हेतु.

आभिनिबोधिक ज्ञान.

७. [प्र०] हे भगवन् ! केवली पासेथी यावत् सांभळ्या विना कोइ जीव शुद्ध आभिनिबोधिक ज्ञान उत्पन्न करे ? [उ०] हे गौतम ! केवली पासेथी के यावत् तेनी उपासिका पासेथी सांभळ्या विना पण कोइ जीव शुद्ध आभिनिबोधिक ज्ञान उपजावी शके, अने कोइ जीव शुद्ध आभिनिबोधिक ज्ञान न उपजावी शके. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी कहो छो के—'यावत् न उपजावी शके' ? [उ०] हे गौतम ! जे जीवे आभिनिबोधिक ज्ञानावरणीय कर्मोनो क्षयोपशम कर्यो छे ते जीव केवली पासेथी यावत् सांभळ्या विना पण शुद्ध आभिनिबोधिकज्ञान उपजावी शके, अने जे जीवे आभिनिबोधिक ज्ञानावरणीय कर्मोनो क्षयोपशम कर्यो नथी ते जीव केवली पासेथी यावत् सांभळ्या विना शुद्ध आभिनिबोधिकज्ञान न उपजावी शके. माटे हे गौतम ! ते हेतुथी एम कह्युं छे के—'यावत् न उपजावी शके.'

आभिनिबोधिक ज्ञाननो हेतु.

श्रुतज्ञान.

८. [प्र०] हे भगवन् ! केवली पासेथी यावत् सांभळ्या विना कोइ जीव शुद्ध श्रुतज्ञान उत्पन्न करी शके ? [उ०] ए प्रमाणे जेम आभिनिबोधिकज्ञाननी हकीकत कही, तेम श्रुतज्ञाननी पण जाणवी; परन्तु अहीं श्रुतज्ञानावरणीय कर्मोनो क्षयोपशम कहेवो. ए प्रमाणे शुद्ध अवधिज्ञाननी पण हकीकत कहेवी, पण त्यां अवधिज्ञानावरणीय कर्मोनो क्षयोपशम कहेवो; ए रीते शुद्ध मनःपर्यवज्ञान पण उत्पन्न करे, परन्तु मनःपर्यवज्ञानावरणीय कर्मोनो क्षयोपशम कहेवो.

अवधिज्ञान अने मनःपर्यवज्ञान.

१ जतणा- क-ख ।

९. [प्र०] असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलनाणं उप्पाडेज्जा ? [उ०] एवं चेव, नवरं केवलनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खए भाणियव्वे, सेसं तं चेव; से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ–जाव केवलणाणं उप्पाडेज्जा।

१०. [प्र०] असोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए, केवलं बोहिं बुज्झेज्जा, केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा, केवलं बंभचेरवासं आवसेज्जा, केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा, केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा, केवलं आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा; जाव केवलं मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा, केवलनाणं उप्पाडेज्जा ? [उ०] गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव उवासियाए वा अत्थेगतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए, अत्थेगतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभेज्जा सवणयाए; अत्थेगइए केवलं बोहिं बुज्झेज्जा, अत्थेगतिए केवलं बोहिं णो बुज्झेज्जा; अत्थेगतिए केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वएज्जा, अत्थेगतिए जाव नो पव्वएज्जा; अत्थेगतिए केवलं बंभचेरवासं आवसेज्जा, अत्थेगतिए केवलं बंभचेरवासं नो आवसेज्जा; अत्थेगतिए केवलेणं संजमेणं संजमेज्जा, अत्थेगतिए केवलेणं संजमेणं नो संजमेज्जा; एवं संवरेण वि; अत्थेगतिए केवलं आभिणिबोहियनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए जाव नो उप्पाडेज्जा; एवं जाव मणपज्जवणाणं, अत्थेगतिए केवलनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा। [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–असोच्चा णं तं चेव जाव अत्थेगतिए केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा ? [उ०] गोयमा ! जस्स णं णाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ, जस्स णं दरिसणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ, जस्स णं धम्मंतराइयाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ, एवं चरित्तावरणिज्जाणं, जयणावरणिज्जाणं, अज्झवसाणावरणिज्जाणं, आभिणिबोहियणाणावरणिज्जाणं, जाव मणपज्जवनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ; जस्स णं केवलणाणावरणिज्जाणं जाव खए नो कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभेज्ज सवणयाए, केवलं बोहिं नो बुज्झेज्जा, जाव केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा। जस्स णं नाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवति, जस्स णं दरिसणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ, जस्स णं धम्मंतराइयाणं, एवं जाव जस्स णं केवलणाणावरणिज्जाणं कम्माणं खए कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए, केवलं बोहिं बुज्झेज्जा, जाव केवलनाणं उप्पाडेज्जा।

९. [प्र०] हे भगवन् ! केवली पासेथी के यावत् तेना पक्षनी उपासिका पासेथी [सांभळ्या विना कोइ जीव] केवलज्ञानने उत्पन्न करी शके ? [उ०] पूर्वनी पेठे जाणवुं, परन्तु अहीं 'केवलज्ञानावरणीय कर्मोनो क्षय' कहेवो. बाकी बधुं पूर्वनी पेठे जाणवुं. माटे हे गौतम ! ते हेतुथी एम कह्युं छे के 'यावत् केवलज्ञानने पण उत्पन्न करी शके.'

केवलज्ञान.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! केवली पासेथी के यावत् तेना पक्षनी उपासिका पासेथी सांभळ्या विना पण शुं कोइ जीव केवलज्ञानीए कहेला धर्मने श्रवण करे–जाणे, शुद्ध सम्यक्त्वनो अनुभव करे, मुंड थइने अगारवास त्यजी शुद्ध अनगारिकपणाने स्वीकारे, शुद्ध ब्रह्मचर्यवासने धारण करे, शुद्ध संयमवडे संयमयतना–करे, शुद्ध संवरवडे संवर–आस्रवनो रोध–करे, शुद्ध आभिनिबोधिकज्ञान उत्पन्न करे, यावत् शुद्ध मनःपर्यवज्ञान उत्पन्न करे अने शुद्ध केवलज्ञान उत्पन्न करे ? [उ०] हे गौतम ! केवली पासेथी यावत् तेनी उपासिका पासेथी सांभळ्या विना पण कोइ जीव केवलज्ञानीए कहेला धर्मने जाणे अने कोइ जीव केवलिए कहेला धर्मने न जाणे, कोइ जीव शुद्ध सम्यक्त्वनो अनुभव करे अने कोइ जीव शुद्ध सम्यक्त्वनो अनुभव न करे; कोइ जीव मुंड थइने आगारवास त्यजी शुद्ध अनगारपणुं स्वीकारे अने कोइ जीव न स्वीकारे; कोइ जीव शुद्ध ब्रह्मचर्यवासने धारण करे अने कोइ जीव शुद्ध ब्रह्मचर्यवासने धारण न करे; कोइ जीव शुद्ध संयम वडे संयमयतना करे अने कोइ जीव शुद्ध संयमवडे संयम न करे; ए प्रमाणे संवरने विषे पण जाणवुं; कोइ जीव शुद्ध आभिनिबोधिकज्ञानने उत्पन्न करे अने कोइ जीव यावद् न उत्पन्न करे; ए प्रमाणे यावत् मनःपर्यवज्ञान सुधी जाणवुं, कोइ जीव केवलज्ञान उपजावे अने कोइ जीव केवलज्ञान न उपजावे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के–'धर्मने सांभळ्या शिवाय ते प्रमाणे यावत् कोइ जीव केवलज्ञान न उत्पन्न करे ? [उ०] हे गौतम ! १ जे जीवे ज्ञानावरणीय कर्मोनो क्षयोपशम नथी कर्यो, २ जेणे दर्शनावरणीय कर्मोनो क्षयोपशम नथी कर्यो, ३ जेणे धर्मांतरायिक कर्मोनो क्षयोपशम नथी कर्यो, ४ ए प्रमाणे चारित्रावरणीय कर्मोनो क्षयोपशम नथी कर्यो, ५ यतनावरणीय कर्मोनो क्षयोपशम नथी कर्यो, ६ अध्यवसानावरणीय कर्मोनो क्षयोपशम नथी कर्यो, ७ आभिनिबोधिकज्ञानावरणीय कर्मोनो क्षयोपशम नथी कर्यो, यावत् १० मनःपर्यवज्ञानावरणीय कर्मोनो क्षयोपशम नथी कर्यो, अने ११ जेणे केवलज्ञानावरणीय कर्मोनो क्षय नथी कर्यो ते जीव केवलज्ञानी पासेथी यावत् सांभळ्या विना केवलज्ञानीए कहेला धर्मने सांभळवाने प्राप्त न करे, अर्थात् न जाणे, शुद्ध सम्यक्त्वनो अनुभव न करे, यावत् केवलज्ञानने न उत्पन्न करे. तथा जे जीवे ज्ञानावरणीय कर्मोनो क्षयोपशम कर्यो छे, जेणे दर्शनावरणीय कर्मोनो क्षयोपशम कर्यो छे, जेणे धर्मांतरायिक कर्मोनो क्षयोपशम कर्यो छे, ए प्रमाणे यावत् जेणे केवलज्ञानावरणीय कर्मोनो क्षय कर्यो छे ते जीव केवली पासेथी यावत् सांभळ्या विना पण केवलिए कहेल धर्मने जाणे, शुद्ध सम्यक्त्वनो अनुभव करे अने यावत् केवलज्ञानने उत्पन्न करे.

धर्मबोध, शुद्धसम्यक्त्वनो अनुभव वगेरे.

केवल्यादिनुं वचन सांभळ्या शिवाय कोई धर्मादिकने प्राप्त करे तेनो हेतु.

११. तस्स णं भंते ! छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स पगतिभद्दयाए, पगइउवसंतयाए, पगतिपयणुकोह–माण–माया–लोभयाए, मिउमद्दवसंपन्नयाए, अल्लीणयाए, भद्दयाए, विणीययाए, अन्नया कयावि सुभेणं अज्झवसाणेणं, सुभेणं परिणामेणं, लेस्साहिं विसुज्झमाणीहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहा–ऽपोह–मग्गणगवेसणं करेमाणस्स विब्भंगे नामं अन्नाणे समुप्पज्जइ, से णं तेणं विब्भंगनाणेणं समुप्पन्नेणं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं जाणइ, पासइ; से णं तेणं विब्भंगनाणेणं समुप्पन्नेणं जीवे वि जाणइ, अजीवे वि जाणइ, पासंडत्थे, सारंभे, सपरिग्गहे, संकिलिस्समाणे वि जाणइ, विसुज्झमाणे वि जाणइ, से णं पुव्वामेव सम्मत्तं पडिवज्जइ, सम्मत्तं पडिवज्जित्ता समणधम्मं रोएति, समणधम्मं रोएत्ता चरित्तं पडिवज्जति, चरित्तं पडिवज्जित्ता लिंगं पडिवज्जइ, तस्स णं तेहिं मिच्छत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं परिहायमाणेहिं सम्मदंसणपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं परिवड्ढमाणेहिं से विब्भंगे अन्नाणे सम्मत्तपरिग्गहिए खिप्पामेव ओही परावत्तइ ।

१२. [प्र०] से णं भंते ! कतिसु लेस्सासु होज्जा ? [उ०] गोयमा ! तिसु विसुद्धलेस्सासु होज्जा, तं जहा–तेउलेस्साए, पम्हलेस्साए, सुक्कलेस्साए ।

१३. [प्र०] से णं भंते ! कतिसु णाणेसु होज्जा ? [उ०] गोयमा ! तिसु आभिणिबोहियनाण–सुयणाण–ओहिनाणेसु होज्जा ।

१४. [प्र०] से णं भंते ! किं सजोगी होज्जा, अजोगी होज्जा ? [उ०] गोयमा ! सजोगी होज्जा, नो अजोगी होज्जा ।

१५. [प्र०] जइ सजोगी होज्जा, किं मणजोगी होज्जा, वइजोगी होज्जा, कायजोगी होज्जा ? [उ०] गोयमा ! मणजोगी वा होज्जा, वइजोगी वा होज्जा, कायजोगी वा होज्जा ।

१६. [प्र०] से णं भंते ! किं सागारोवउत्ते होज्जा, अणागारोवउत्ते वा होज्जा ? [उ०] गोयमा ! सागारोवउत्ते वा होज्जा, अणागारोवउत्ते वा होज्जा ।

१७. [प्र०] से णं भंते ! कयरम्मि संघयणे होज्जा ? [उ०] गोयमा ! वइरोसहनारायसंघयणे होज्जा ।

केवलिप्रमुखना वचनने सांभळ्या सिवाय सम्यक्त्वादि अने स्वीकारे.

विभंगज्ञाननी उत्पत्ति.

सम्यग्दर्शननी प्राप्ति.

चारित्रनो स्वीकार.

अवधिज्ञाननी उत्पत्ति.

११. ते जीवने निरंतर छट्ठ छट्ठना तप करवापूर्वक सूर्यनी सामे उंचा हाथ राखी राखीने आतापना भूमिमां आतापना लेता, प्रकृतिना भद्रपणाथी, प्रकृतिना उपशांतपणाथी, स्वभावथी क्रोध, मान, माया अने लोभ घणा ओछा थयेला होवाथी, अत्यंत मार्दव–नम्रताने प्राप्त थयेला होवाथी, आलीनपणाथी, भद्रपणाथी अने विनीतपणाथी अन्य कोइ दिवसे शुभ अध्यवसायवडे, शुभ परिणामवडे, विशुद्ध लेश्याओवडे तदावरणीय (विभंगज्ञानावरणीय) कर्मोना क्षयोपशमथी, ईहा, अपोह, मार्गणा अने गवेषणा करता विभंग नामे अज्ञान उत्पन्न थाय छे. ते उत्पन्न थएल विभंगज्ञान वडे जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट असंख्येय हजार योजनोने जाणे छे अने जुए छे; उत्पन्न थएला विभंगज्ञान वडे ते जीवोने पण जाणे छे अने अजीवोने पण जाणे छे; पाखंडी, आरंभवाळा, परिग्रहवाळा अने संक्लेशने प्राप्त थयेला जीवोने पण जाणे छे अने विशुद्ध जीवोने पण जाणे छे; ते विभंगज्ञानी पहेलांज सम्यक्त्वने प्राप्त करे छे; प्राप्त करी श्रमणधर्म उपर रुचि करे छे, रुचि करी चारित्रने स्वीकारे छे. चारित्रने स्वीकारी लिंगवेषने स्वीकारे छे; पछी ते विभंगज्ञानिना मिथ्यात्वपर्यायो क्षीण थता थता अने सम्यग्दर्शन पर्यायो वधता वधता ते विभंग अज्ञान सम्यक्त्व युक्त थाय छे, अने शीघ्र अवधिरूपे परावर्तन पामे छे.

लेश्या.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! ते अवधिज्ञानी जीव केटली लेश्याओमां होय ? [उ०] हे गौतम ! त्रण विशुद्ध लेश्याओमां होय. ते आ प्रमाणे—तेजोलेश्या, पद्मलेश्या अने शुक्ललेश्या.

ज्ञान.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! ते [अवधिज्ञानी] जीव केटला ज्ञानोमां होय ? [उ०] हे गौतम ! आभिनिबोधिकज्ञान, श्रुतज्ञान अने अवधिज्ञान–ए त्रण ज्ञानोमां होय.

योग.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! ते [अवधिज्ञानी] सयोगी (मनोयोगादिसहित) होय के अयोगी होय ? [उ०] हे गौतम ! ते सयोगी होय पण अयोगी न होय.

मनयोगी–इत्यादि.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते सयोगी होय तो शुं मनयोगी होय, वचनयोगी होय के काययोगी होय ? [उ०] हे गौतम ! ते मनयोगी होय, वचनयोगी होय अने काययोगी पण होय.

उपयोग.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते साकार–ज्ञानउपयोगवाळो होय के अनाकार–दर्शनउपयोगवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! ते साकारउपयोगवाळो पण होय अने अनाकारउपयोगवाळो पण होय.

संघयण.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! ते कया संघयणमां होय ? [उ०] हे गौतम ! ते वज्रऋषभनाराचसंघयणवाळो होय.

---

१ –ज्झित्ते क, ज्झित ख । २ पगती–क–ख । ३ पगई–क–ख । ४ आलीयण– । ५ लेसासु क–ख । ६ –ओगी वा क ।

१८. [प्र०] से णं भंते ! कयरम्मि संठाणे होज्जा ? [उ०] गोयमा ! छण्हं संठाणाणं अन्नयरे संठाणे होज्जा ।

१९. [प्र०] से णं भंते ! कयरम्मि उच्चत्ते होज्जा ? [उ०] गोयमा ! जहण्णेणं सत्तरयणीए, उक्कोसेणं पंचधणुसतिए होज्जा ।

२०. [प्र०] से णं भंते ! कयरम्मि आउए होज्जा ? [उ०] गोयमा ! जहण्णेणं सातिरेगट्ठवासाउए, उक्कोसेणं पुव्वकोडी-आउए होज्जा ।

२१. [प्र०] से णं भंते ! किं सवेदए होज्जा, अवेदए होज्जा ? [उ०] गोयमा ! सवेदए होज्जा, नो अवेदए होज्जा ।

२२. [प्र०] जइ सवेदए होज्जा किं इत्थिवेदए होज्जा, पुरिसवेदए होज्जा, पुरिस–नपुंसगवेदए होज्जा, नपुंसगवेदए होज्जा ? [उ०] गोयमा ! नो इत्थिवेदए होज्जा, पुरिसवेदए वा होज्जा, नो नपुंसगवेदए होज्जा, पुरिस–नपुंसगवेदए वा होज्जा ।

२३. [प्र०] से णं भंते ! किं सकसाई होज्जा अकसाई होज्जा ? [उ०] गोयमा ! सकसाई होज्जा, नो अकसाई होज्जा ।

२४. [प्र०] जइ सकसाई होज्जा से णं भंते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ? [उ०] गोयमा ! चउसु संजलणकोह-माण-माया-लोभेसु होज्जा ।

२५. [प्र०] तस्स णं भंते ! केवइया अज्झवसाणा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! असंखेज्जा अज्झवसाणा पण्णत्ता ।

२६. [प्र०] ते णं भंते ! किं पसत्था, अप्पसत्था ? [उ०] गोयमा ! पसत्था, नो अप्पसत्था ।

२७. से णं भंते ! तेहिं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं वट्टमाणेहिं[1] अणंतेहिं नेरइयभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ, अणंतेहिं तिरिक्खजोणिय– जाव विसंजोएइ, अणंतेहिं मणुस्सभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ, अणंतेहिं देवभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ; जाओ वि य से इमाओ नेरइय–तिरिक्खजोणिय–मणुस्स–देवगतिनामाओ चत्तारि उत्तरपयडीओ, तासिं च णं उवग-

संस्थान.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! ते कया संस्थानमां होय ? [उ०] हे गौतम ! तेने छ संस्थानमांनुं कोइ पण एक संस्थान होय.

उंचाइ.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! ते केटली उंचाइवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! ते जघन्यथी सात हाथ अने उत्कृष्टथी पांचसो धनुषनी उंचाइवाळो होय.

आयुष्.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! ते केटला आयुषवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! ते जघन्यथी कांइक वधारे आठ वर्ष, अने उत्कृष्टथी पूर्वकोटिआयुषवाळो होय.

वेद.

२१. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते वेदसहित होय के वेदरहित होय ? [उ०] हे गौतम ! ते वेदसहित होय पण वेदरहित न होय.

पुरुषवेदादि.

२२. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते वेदसहित होय तो शुं १ स्त्रीवेदवाळो होय, २ पुरुषवेदवाळो होय, ३ नपुंसकवेदवाळो होय के ४* पुरुषनपुंसकवेदवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! स्त्रीवेदवाळो न होय, पण पुरुषवेदवाळो होय; नपुंसकवेदवाळो न होय, पण पुरुषनपुंसकवेदवाळो होय.

कषाय.

२३. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते (अवधिज्ञानी) सकषायी होय के अकषायी होय ? [उ०] हे गौतम ! ते सकषायी होय, पण कषायरहित न होय.

संज्वलनक्रोधादि.

२४. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते कषायवाळो होय तो तेने केटला कषायो होय ? [उ०] हे गौतम ! तेने संज्वलनक्रोध, मान, माया अने लोभ—ए चार कषाय होय.

अध्यवसायो.

२५. [प्र०] हे भगवन् ! तेने केटला अध्यवसायो कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! तेने असंख्याता अध्यवसायो कह्यां छे.

प्रशस्त अध्यवसाय.

२६. [प्र०] हे भगवन् ! ते अध्यवसायो प्रशस्त होय के अप्रशस्त होय ? [उ०] हे गौतम ! प्रशस्त अध्यवसायो होय, पण अप्रशस्त न होय.

नारक, तिर्यंच, देव अने मनुष्य भवोथी मुक्ति.

२७. [प्र०] हे भगवन् ! ते (अवधिज्ञानी) वृद्धि पामता प्रशस्त अध्यवसायोवडे अनंत नारकना भवोथी पोताना आत्माने विमुक्त करे, अनंत तिर्यंचोना भवोथी आत्माने विमुक्त करे, अनंत मनुष्यभवोथी आत्माने विमुक्त करे, अने अनंत देवभवोथी आत्माने विमुक्त करे. तथा तेनी जे आ नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्यगति अने देवगति नामे चार उत्तर प्रकृतिओ छे, तेनी अने बीजी प्रकृतिओना आधारभूत अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया अने लोभनो क्षय करे, तेनो क्षय करीने अप्रत्याख्यान कषायरूप क्रोध, मान, माया अने लोभनो क्षय करे, क्षय करीने प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया अने लोभनो क्षय करे, तेनो क्षय करी संज्वलन क्रोध, मान, माया अने लोभनो

अनन्तानुबंध्यादि-कषायनो क्षय.

---

1 वड्ढमाणेहिं च ।

२२. * लिंगनो छेद करवा वगेरेथी नपुंसक थयेलो–अर्थात् कृत्रिम नपुंसक थयेलो होय ते पुरुषनपुंसक कहेवाय छे—टीका.

हिए अणंताणुबंधी कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, अणं० खवेइत्ता अपच्चक्खाणकसाए कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, अपच्च० खवेइत्ता पच्चक्खाणावरणकोह-माण-माया-लोभे खवेइ, पच्च० खवेइत्ता संजलणकोह-माण-माया-लोभे खवेइ, संज० खवेइत्ता पंचविहं नाणावरणिज्जं, नवविहं दरिसणावरणिज्जं, पंचविहं अंतराइयं, तालमत्थाकडं च णं मोहणिज्जं कट्टु कम्मरयविकिरणकरं अपुव्वकरणं अणुपविट्ठस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरनाण-दंसणे समुप्पज्जे ।

२८. [प्र०] से णं भंते ! केवलिपन्नत्तं धम्मं आघवेज्ज वा, पन्नवेज्ज वा, परूवेज्ज वा ? [उ०] णो तिणट्ठे समट्ठे, णण्णत्थ एगण्णाएण वा, एगवागरणेण वा ।

२९. [प्र०] से णं भंते ! पव्वावेज्ज वा, मुंडावेज्ज वा ? [उ०] णो इणट्ठे समट्ठे, उवदेसं पुण करेज्जा ।

३०. [प्र०] से णं भंते ! सिज्झति, जाव अंतं करेति ? [उ०] हंता सिज्झति, जाव अंतं करेति ।

३१. [प्र०] से णं भंते ! किं उड्ढं होज्जा, अहे होज्जा, तिरियं होज्जा ? [उ०] गोयमा ! उड्ढं वा होज्जा, अहे वा होज्जा, तिरियं वा होज्जा; उड्ढं होज्जमाणे सद्दावइ–वियडावइ–गंधावइ–मालवंतपरियाएसु वट्टवेयड्ढपव्वएसु होज्जा; साहरणं पडुच्च सोमणसवणे वा होज्जा, पंडगवणे वा होज्जा; अहे होज्जमाणे गड्डाए वा, दरीए वा होज्जा; साहरणं पडुच्च पायाले वा, भवणे वा होज्जा; तिरियं होज्जमाणे पन्नरससु कम्मभूमीसु होज्जा; साहरणं पडुच्च अड्ढाइज्जदीव-समुद्द–तदेक्कदेसभाए होज्जा ।

३२. [प्र०] ते णं एगसमए णं केवतिया होज्जा ? [उ०] गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा; उक्कोसेणं दस, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ–'असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव अत्थेगतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए, अत्थेगतिए असोच्चा णं केवलि० जाव नो लभेज्जा सवणयाए, जाव अत्थेगतिए केवलनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा' ।

क्षय करे, पछी पांच प्रकारे ज्ञानावरणीय कर्म, नव प्रकारे दर्शनावरणीय कर्म, पांच प्रकारे अंतराय कर्म, तथा मोहनीय कर्मने छेदायेल मस्तकवाळा ताडवृक्षना समान [क्षीण] करीने कर्म रजने विखेरी नांखनार अपूर्व करणमां प्रवेश करेला एवा तेने अनंत, अनुत्तर, व्याघातरहित, आवरणरहित, सर्व पदार्थने ग्रहण करनार, प्रतिपूर्ण, श्रेष्ठ एवुं केवलज्ञान अने केवलदर्शन उत्पन्न थाय छे.

अश्रुत्वा केवली धर्मोपदेश न करे.

२८. [प्र०] हे भगवन् ! ते [केवलज्ञानी] केवलिए कहेल धर्मने कहे, जणावे अने प्ररूपे ? [उ०] हे गौतम ! ते अर्थ योग्य नथी, परन्तु एक न्याय–उदाहरण अने एक [प्रश्नना] उत्तर शिवाय. [अर्थात् ते अश्रुत्वा केवली एक उदाहरण या एक प्रश्नना उत्तर शिवाय धर्मनो उपदेश न करे.]

प्रव्रज्या न आपे.

२९. [प्र०] हे भगवन् ! ते [केवली] कोइने प्रव्रज्या आपे, मुंडे–दीक्षा आपे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी, पण मात्र ['अमुकनी पासे प्रव्रज्या ग्रहण करो' एवो] उपदेश करे.

सिद्ध थाय.

३०. [प्र०] हे भगवन् ! ते (अश्रुत्वा केवलज्ञानी) सिद्ध थाय, यावत् सर्व दुःखोनो अंत करे ? [उ०] हा, सिद्ध थाय, यावत् सर्व दुःखोनो अन्त करे.

ऊर्ध्व, अधो अने तिर्यग् लोकमां होय. ऊर्ध्वलोकमां वृत्त वैताढ्यमां होय.

अधोलोकग्रामादिमां होय. तिर्यग्लोकमां पंदर कर्मभूमिमां होय.

३१. [प्र०] हे भगवन् ! ते (अश्रुत्वा केवलज्ञानी) ऊर्ध्वलोकमां होय, अधोलोकमां होय के तिर्यग् लोकमां होय ? [उ०] हे गौतम ! ते ऊर्ध्वलोकमां पण होय, अधोलोकमां पण होय अने तिर्यग् लोकमां पण होय. जो ते ऊर्ध्वलोकमां होय तो शब्दापाति, विकटापाति, गंधापाति, अने माल्यवंत नामे वृत्तवैताढ्य पर्वतोमां होय. तथा संहरणने आश्रयी सौमनस्यवनमां के पांडुकवनमां होय. जो ते अधोलोकमां होय तो गर्ता—अधोलोकग्रामादिमां के गुफामां होय, तथा संहरणने आश्रयी पातालकलशमां के भवनमां (भवनवासि देवोना रहेठाणमां) होय, जो ते तिर्यग्लोकमां होय तो ते पंदर कर्मभूमिमां होय, अने संहरणने आश्रयी अढी द्वीप अने समुद्रोना एक भागमां होय.

ते एक समये केटला होय ?

३२. [प्र०] हे भगवन् ! ते [अश्रुत्वा केवलज्ञानी] एक समये केटला होय ? [उ०] हे गौतम ! जघन्यथी एक, बे, त्रण अने उत्कृष्टथी दस होय. माटे हे गौतम ! ते हेतुथी एम कह्युं छे के, केवली पासेथी यावत् सांभळ्या विना कोइ जीवने केवलिए कहेल धर्म–श्रवणनो लाभ थाय अने केवली पासेथी सांभळ्या सिवाय कोइ जीवने केवलिप्रणीत धर्म श्रवणनो लाभ न थाय, यावत् कोइ जीव केवलज्ञानने उत्पन्न करे अने कोइ जीव केवलज्ञानने न उत्पन्न करे.

---

१ अयं पाठो नास्ति क–ख । २–क्खाणावरणे को–ङ । ३ –कण्णे को– ख–ङ । ४ –विकरण– ग ।

३३. सोच्चा णं भंते ! केवलिस्स वा, जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए ? [उ०] गोयमा ! सोच्चा णं केवलिस्स वा, जाव अत्थेगतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं, एवं जा चेव असोच्चाए वत्तव्वया सा चेव सोच्चाए वि भाणियव्वा, नवरं अभिलावो 'सोच्चे'त्ति, सेसं तं चेव निरवसेसं, जाव जस्स णं मणपज्जवनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवति, जस्स णं केवलनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खए कडे भवइ से णं सोच्चा केवलिस्स वा, जाव उवासियाए वा केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए, केवलं बोहिं बुज्झेज्जा, जाव केवलनाणं उप्पाडेज्जा ।

३४. [प्र०] तस्स णं अट्ठमंअट्ठमेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स पगइभद्दयाए, तहेव जाव गवेसणं करेमाणस्स ओहिणाणे समुप्पज्जइ, से णं तेणं ओहिनाणेणं समुप्पन्नेणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं अलोए लोयप्पमाणमेत्ताइं खंडाइं जाणइ, पासइ ।

३५. [प्र०] से णं भंते ! कतिसु लेस्सासु होज्जा ? [उ०] गोयमा ! छसु लेसासु होज्जा, तं जहा–कण्हलेस्साए, जाव सुक्कलेस्साए ।

३६. [प्र०] से णं भंते ! कतिसु णाणेसु होज्जा ? [उ०] गोयमा ! तिसु वा, चउसु वा होज्जा; तिसु होज्जमाणे तिसु आभिणिबोहियनाण–सुयनाण–ओहिनाणेसु होज्जा, चउसु होज्जमाणे आभिणिबोहियनाण–सुयणाण–ओहिणाण–मणपज्जवणाणेसु होज्जा ।

३७. [प्र०] से णं भंते ! किं सजोगी होज्जा, अजोगी होज्जा ? [उ०] एवं जोगो, उवओगो, संघयणं, संठाणं, उच्चत्तं, आउयं च एयाणि सव्वाणि जहा असोच्चाए तहेव भाणियव्वाणि ।

३८. [प्र०] से णं भंते ! किं सवेदए ? पुच्छा [उ०] गोयमा ! सवेदए वा होज्जा, अवेदए वा होज्जा ।

३३. [प्र०] हे भगवन् ! केवली पासेथी यावत् तेना पक्षनी उपासिका पासेथी [धर्म] सांभळीने कोइ जीव केवलिप्ररूपित धर्म प्राप्त करे ? [उ०] हे गौतम ! केवलज्ञानी पासेथी यावत् सांभळीने कोइ जीव केवलिप्ररूपित धर्मने प्राप्त करे अने कोइ जीव न करे. ए प्रमाणे यावत् 'असोच्चा'नी जे वक्तव्यता छे ते ज वक्तव्यता 'सोच्चा' ने पण कहेवी. परन्तु अहीं 'सोच्चा' एवो पाठ कहेवो. बाकी सर्व पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. यावत् जे जीवे मनःपर्यवज्ञानावरणीय कर्मोनो क्षयोपशम कर्यो छे, अने जे जीवे केवलज्ञानावरणीय कर्मोनो क्षय कर्यो छे ते जीवने केवली पासेथी यावत् तेनी उपासिका पासेथी केवलीए कहेल धर्मनो लाभ थाय, अने ते शुद्ध सम्यक्त्वनो अनुभव करे, यावत् केवलज्ञानने प्राप्त करे.

केवल्यादि पासेथी धर्म सांभळीने कोई धर्मने पामे अने कोइ न पामे इत्यादि.

३४. (केवलज्ञानी वगेरे पासेथी धर्म सांभळीने सम्यग्दर्शनादि जेने प्राप्त थयेल छे एवा) तेने निरन्तर अट्ठम तप करवा वडे आत्माने भावित करता, प्रकृतिनी भद्रताथी तेमज यावत् मार्गनी गवेषणा करता अवधिज्ञान उत्पन्न थाय छे. अने ते उत्पन्न थएल अवधिज्ञान वडे जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग, अने उत्कृष्टथी अलोकने विषे लोकप्रमाण असंख्य खंडोने जाणे छे अने जुए छे.

केवल्यादिपासेथी धर्म श्रवण करीने सम्यग्दर्शनादियुक्त जीवने अवधिज्ञानादिनी प्राप्ति.

३५. [प्र०] हे भगवन् ! ते [अवधिज्ञानी] जीव केटली लेश्याओमां वर्ततो होय ? [उ०] हे गौतम ! ते *छ ए लेश्यामां वर्ततो होय छे, ते आ प्रमाणे–कृष्णलेश्या, यावत् शुक्ललेश्या.

लेश्या.

३६. [प्र०] हे भगवन् ! ते [अवधिज्ञानी] केटलां ज्ञानमां वर्ततो होय ? [उ०] हे गौतम ! ते त्रण के चार ज्ञानमां होय. जो त्रण ज्ञानमां होय तो आभिनिबोधिक ज्ञान, श्रुतज्ञान अने अवधिज्ञानमां होय, जो चार ज्ञानमां होय तो ते आभिनिबोधिकज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान अने मनःपर्यवज्ञानमां होय.

ज्ञान.

३७. [प्र०] हे भगवन् ! ते [अवधिज्ञानी] सयोगी होय के अयोगी होय ? [उ०] पूर्वे कह्या प्रमाणे योग, उपयोग, संघयण, संस्थान, उंचाइ, अने आयुष् ए बधा जेम 'असोच्चा' ने कह्या (सू० १२–२०) तेम अहीं कहेवां.

योग.

३८. [प्र०] हे भगवन् ! ते (अवधिज्ञानी) शुं वेदसहित होय–इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! वेदसहित होय के वेदरहित पण होय.

वेद.

---

१ जवेव क–ख । २ सवेव क–ख । ३ जोगोवओ– ग–घ–ङ ।

३५. *यद्यपि त्रण प्रशस्त एवी भावलेश्यामां ज ज्ञान प्राप्त थाय छे, तो पण द्रव्यलेश्यानी अपेक्षाए छ ए लेश्यामां ते अवधिज्ञानी होय छे.—टीका.

३९. [प्र०] जइ अवेदए होज्जा किं उवसंतवेदए होज्जा, खीणवेदए होज्जा ? [उ०] गोयमा ! नो उवसंतवेदए होज्जा, खीणवेदए होज्जा ।

४०. [प्र०] जइ सवेदए होज्जा किं इत्थीवेदए होज्जा, पुरिसवेदए होज्जा, नपुंसगवेदए होज्जा, पुरिस–नपुंसगवेदए होज्जा ? [उ०] गोयमा ! इत्थीवेदए वा होज्जा, पुरिसवेदए वा होज्जा, पुरिस–नपुंसगवेदए वा होज्जा ।

४१. [प्र०] से णं भंते ! किं सकसाई होज्जा, अकसाई होज्जा ? [उ०] गोयमा ! सकसाई वा होज्जा, अकसाई वा होज्जा ।

४२. [प्र०] जइ अकसाई होज्जा किं उवसंतकसाई होज्जा, खीणकसाई होज्जा ? [उ०] गोयमा ! नो उवसंतकसाई होज्जा, खीणकसाई होज्जा ।

४३. [प्र०] जदि सकसाई होज्जा से णं भंते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ? [उ०] गोयमा ! चउसु वा तिसु वा दोसु वा एक्कम्मि वा होज्जा । चउसु होज्जमाणे चउसु संजलणकोह–माण–माया–लोभेसु होज्जा, तिसु होज्जमाणे तिसु–संजलणमाण–माया–लोभेसु होज्जा, दोसु होज्जमाणे दोसु–संजलणमाया–लोभेसु होज्जा, एगम्मि होज्जमाणे एगम्मि–संजलणलोभे होज्जा ।

४४. [प्र०] तस्स णं भंते ! केवतिया अज्झवसाणा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! असंखेज्जा, एवं जहा असोच्चाए तहेव जाव केवलवरनाण–दंसणे समुप्पज्जइ ।

४५. [प्र०] से णं भंते ! केवलिपन्नत्तं धम्मं आघवेज्ज वा, पन्नवेज्ज वा, परूवेज्ज वा ? [उ०] हंता, आघवेज्ज वा, पन्नवेज्ज वा, परूवेज्ज वा ।

४६. [प्र०] से णं भंते ! पव्वावेज्ज वा, मुंडावेज्ज वा ? [उ०] हंता, गोयमा ! पव्वावेज्ज वा, मुंडावेज्ज वा ।

४७. [प्र०] तस्स णं भंते ! सिस्सा वि पव्वावेज्ज वा, मुंडावेज्ज वा ? [उ०] हंता, पव्वावेज्ज वा, मुंडावेज्ज वा ।

उपशांतवेद के क्षीणवेद होय ?

३९. [प्र०] हे भगवन् ! जो वेदरहित होय तो शुं ते उपशांतवेदवाळो होय के क्षीणवेदवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! उपशांतवेदवाळो न होय, पण क्षीणवेदवाळो होय.

स्त्रीवेदादि.

४०. [प्र०] हे भगवन् ! जो वेदसहित होय तो शुं ते स्त्रीवेदवाळो होय, पुरुषवेदवाळो होय, नपुंसकवेदवाळो होय के पुरुष-नपुंसकवेदवाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! ते स्त्रीवेदवाळो होय, पुरुषवेदवाळो होय के पुरुषनपुंसकवेदवाळो पण होय.

सकषायी के अकषायी ?

४१. [प्र०] हे भगवन् ! ते (अवधिज्ञानी) शुं सकषायी होय के अकषायी होय ? [उ०] हे गौतम ! ते सकषायी होय के अकषायी पण होय.

उपशांत के क्षीणकषायी ?

४२. [प्र०] हे भगवन् ! जो ते अकषायी होय तो शुं उपशांतकषायी होय के क्षीणकषायी होय ? [उ०] हे गौतम ! उपशांतकषायी न होय, पण क्षीणकषायी होय.

केटला कषायो होय ?

४३. [प्र०] हे भगवन् ! जो सकषायी होय तो ते केटला कषायोमां होय ? [उ०] हे गौतम ! ते चार कषायोमां, त्रण कषायोमां, बे कषायोमां के एक कषायमां होय. जो चार कषायोमां होय तो संज्वलन क्रोध, मान, माया अने लोभमां होय. जो त्रण कषायोमां होय तो संज्वलन मान, माया अने लोभमां होय. जो बे कषायोमां होय तो संज्वलन माया अने लोभमां होय. अने जो एक कषायमां होय तो एक संज्वलन लोभमां होय.

अध्यवसायो.

४४. [प्र०] हे भगवन् ! तेने केटलां अध्यवसायो कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! तेने असंख्यात अध्यवसायो कह्यां छे. ए प्रमाणे जेम 'असोच्चा' ने कह्युं (सू. २५) तेम यावत् 'तेने श्रेष्ठ केवलज्ञान अने केवलदर्शन उत्पन्न थाय छे' त्यां सुधी कहेवुं.

धर्मोपदेश.

४५. [प्र०] हे भगवन् ! ते (सोच्चा केवलज्ञानी) केवलिए कहेला धर्मने कहे, जणावे, प्ररूपे ? [उ०] हा, गौतम ! ते (केवलिप्रज्ञप्त धर्मने) कहे, जणावे, अने प्ररूपे.

प्रव्रज्या आपे.

४६. [प्र०] हे भगवन् ! ते कोइने प्रव्रज्या आपे, दीक्षा आपे ? [उ०] हा, गौतम ! ते प्रव्रज्या आपे–दीक्षा आपे.

तेना शिष्यो पण प्रव्रज्या आपे.

४७. [प्र०] हे भगवन् ! तेना (सोच्चा केवलिना) शिष्यो पण प्रव्रज्या आपे, दीक्षा आपे ? [उ०] हा, गौतम ! तेना शिष्यो पण प्रव्रज्या आपे–दीक्षा आपे.

---

१ ०माणे. क–ख । २ होमाणे क–ख ।

४८. [प्र०] तस्स णं भंते ! पसिस्सा वि पव्वावेज्ज वा, मुंडावेज्ज वा ? [उ०] हंता, पव्वावेज्ज वा, मुंडावेज्ज वा।

४९. [प्र०] से णं भंते ! सिज्झति, बुज्झति, जाव अंतं करेइ ? [उ०] हंता, सिज्झति, जाव अंतं करेति।

५०. [प्र०] तस्स णं भंते ! सिस्सा वि सिज्झंति, जाव अंतं करेंति ? [उ०] हंता, सिज्झंति, जाव अंतं करेंति।

५१. [प्र०] तस्स णं भंते ! पसिस्सा वि सिज्झंति, जाव अंतं करेंति ? [उ०] एवं चेव जाव अंतं करेंति।

५२. [प्र०] से णं भंते ! किं उड्ढं होज्जा ? [उ०] जहेव असोच्चाए, जाव तदेकदेसभाए होज्जा।

५३. [प्र०] ते णं भंते ! एगसमए णं केवइया होज्जा ? [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं एक्को वा, दो वा, तिन्नि वा, उक्कोसेणं अट्ठसयं, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति–'सोच्चा णं केवलिस्स वा, जाव केवलिउवासियाए वा, जाव अत्थेगतिए केवलनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाणं णो उप्पाडेज्जा'। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति।

नवमसए एगतीसइमो उद्देसो समत्तो।

४८. [प्र०] हे भगवन् ! तेना प्रशिष्यो पण प्रव्रज्या आपे, दीक्षा आपे ? [उ०] हा, गौतम ! प्रव्रज्या आपे, दीक्षा आपे.

प्रशिष्यो पण प्रव्रज्या आपे.

४९. [प्र०] हे भगवन् ! ते (सोच्चा केवली) सिद्ध थाय, बुद्ध थाय, यावत् सर्व दुःखनो अन्त करे ? [उ०] हा गौतम ! ते सिद्ध थाय, यावत् सर्व दुःखोनो नाश करे.

सिद्ध थाय.

५०. [प्र०] हे भगवन् ! तेना शिष्यो पण सिद्ध थाय, यावत् सर्व दुःखोनो अंत करे ? [उ०] हा, गौतम ! सिद्ध थाय, यावत् सर्व दुःखोनो नाश करे.

शिष्यो पण सिद्ध थाय.

५१. [प्र०] हे भगवन् ! तेना प्रशिष्यो पण सिद्ध थाय, यावत् सर्व दुःखोनो अन्त करे ? [उ०] ए प्रमाणे यावत् सर्व दुःखोनो अन्त करे.

प्रशिष्यो पण सिद्ध थाय.

५२. [प्र०] हे भगवन् ! ते (सोच्चा केवली) शुं ऊर्ध्वलोकमां होय–इत्यादि प्रश्न. [उ०] जेम 'असोच्चा' केवली संबंधे कह्युं (सू. ३१.) ते प्रमाणे जाणवुं, यावत् [अढी द्वीप समुद्र के] तेना एक भागमां होय.

शुं ऊर्ध्वलोकमां इत्यादि.

५३. [प्र०] हे भगवन् ! ते (सोच्चा केवली) एक समयमां केटला होय ? [उ०] हे गौतम ! ते एक समयमां जघन्यथी एक, बे के त्रण होय, अने उत्कृष्टथी एक सो आठ होय. माटे हे गौतम ! ते हेतुथी एम कह्युं छे के, 'केवली पासेथी यावत् केवलिनी उपासिकापासेथी सांभळीने यावत् कोइ जीव केवलज्ञानने उपजावे अने कोइ जीव केवलज्ञानने न उपजावे.' हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे. [एम कही भगवान् गौतम यावद् विहरे छे.]

एकसमयमां संख्या.

नवम शतके एकत्रीशमो उद्देशक समाप्त.

बत्तीसइमो उद्देसो.

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियग्गामे [1]नयरे होत्था, । वन्नओ । [2]दूतिपलासए चेइए । सामी समोसढे । परिसा निग्गया । धम्मो कहिओ । परिसा पडिगया । तेणं कालेणं तेणं समएणं पासावच्चिज्जे गंगेए णामं अणगारे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव [3]उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं [4]वयासी--

२. [प्र०] संतरं भंते! नेरइया उववज्जंति, निरंतरं नेरइया उववज्जंति ? [उ०] गंगेया ! संतरं पि नेरइया उववज्जंति, निरंतरं पि नेरइया उववज्जंति ।

३. [प्र०] संतरं भंते ! असुरकुमारा उववज्जंति, निरंतरं असुरकुमारा उववज्जंति ? [उ०] गंगेया ! संतरं पि असुरकुमारा उववज्जंति, निरंतरं पि असुरकुमारा उववज्जंति; एवं जाव थणियकुमारा ।

४. [प्र०] संतरं भंते ! पुढविकाइया उववज्जंति, निरंतरं पुढविकाइया उववज्जंति ? [उ०] गंगेया ! नो [5]संतरं पुढविकाइया उववज्जंति, निरंतरं पुढविकाइया उववज्जंति; एवं जाव वणस्सइकाइया, बेइंदिया जाव वेमाणिया एते जहा णेरइया ।

५. [प्र०] संतरं भंते ! नेरइया [6]उव्वट्टंति, निरंतरं नेरइया उव्वट्टंति ? [उ०] गंगेया ! संतरं पि नेरइया उव्वट्टंति, निरंतरं पि नेरइया उव्वट्टंति; एवं जाव थणियकुमारा ।

बत्रीशमो उद्देशक.

वाणिज्यग्राम.

१. ते काले, अने ते समये वाणिज्यग्राम नामे नगर हतुं. वर्णन. दूतिपलाश नामे चैत्य हतुं. श्रीमहावीर स्वामी समवसर्या. पर्षद् वांदवा निकळी. धर्मोपदेश कर्यो. पर्षद् विसर्जित थइ. ते काले-ते समये श्रीपार्श्वप्रभुना शिष्य गांगेय नामे अनगार ज्यां श्रमण भगवान् महावीर विराजमान हता त्यां आव्या, आवीने श्रमण भगवंत महावीरनी पासे थोडे दूर बेसीने तेणे श्रमण भगवंत महावीरने ए प्रमाणे कह्युं--

गांगेयना प्रश्नो.

नैरयिको सान्तर के निरन्तर उत्पन्न थाय छे ?

२. [प्र०] हे भगवन्! नैरयिको *सांतर (अन्तरसहित) उत्पन्न थाय छे के निरंतर (अन्तर शिवाय) उत्पन्न थाय छे? [उ०] हे गांगेय! नैरयिको सांतर पण उत्पन्न थाय छे अने निरंतर पण उत्पन्न थाय छे.

असुरकुमार.

३. [प्र०] हे भगवन्! असुरकुमारो सांतर उत्पन्न थाय छे के निरंतर उत्पन्न थाय छे? [उ०] हे गांगेय! असुरकुमारो सांतर पण उत्पन्न थाय छे, अने निरंतर पण उत्पन्न थाय छे. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं.

पृथिवीकायिको. बेइन्द्रियो यावत् वैमानिको.

४. [प्र०] हे भगवन्! पृथिवीकायिक जीवो सान्तर उत्पन्न थाय छे के निरन्तर उत्पन्न थाय छे? [उ०] हे गांगेय! पृथिवीकायिक जीवो सान्तर उत्पन्न थता नथी, पण निरंतर उत्पन्न थाय छे. ए प्रमाणे यावद् वनस्पतिकायिक जीवो सुधी जाणवुं. बेइन्द्रिय जीवोथी मांडी यावद् वैमानिको नैरयिकोनी पेठे (सू० २) जाणवा.

नैरयिको अने यावत् स्तनितकुमारनुं सान्तर अने निरंतर च्यवन.

५. [प्र०] हे भगवन्! नैरयिको सांतर च्यवे छे के निरंतर च्यवे छे? [उ०] हे गांगेय! नैरयिको सांतर पण च्यवे छे अने निरंतर पण च्यवे छे. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमार सुधी जाणवुं.

---

१ अयं पाठो नास्ति घ । २ -पलासे चे- घ-ङ । ३ -गच्छइत्ता ग-घ-ङ । ४ वयासी ग-घ-ङ । ५ सांतरं क-ख । ६ उववट्टं- घ ।

२. * जे उत्पत्तिमां समयादिकालनुं अन्तर-व्यवधान होय ते सान्तर कहेवाय छे. तेमां एकेन्द्रियो प्रतिसमय उत्पन्न थता होवाथी तेओ सान्तर उत्पन्न थतां नथी, पण निरन्तर उपजे छे. ते शिवाय बीजा जीवोनी उत्पत्तिमां अन्तरनो संभव होवाथी तेओ सान्तर अने निरन्तर-ए बन्ने प्रकारे उपजे छे. —टीका.

६. [प्र०] संतरं भंते ! पुढविकाइया उव्वट्टंति–पुच्छा । [उ०] गंगेया ! णो संतरं पुढविकाइया उव्वट्टंति, निरंतरं पुढविकाइया उव्वट्टंति; एवं जाव वणस्सइकाइया नो संतरं, निरंतरं उव्वट्टंति ।

७. [प्र०] संतरं भंते ! बेइंदिया उव्वट्टंति, निरंतरं बेइंदिया उव्वट्टंति ? [उ०] गंगेया ! संतरं पि बेइंदिया उव्वट्टंति, निरंतरं पि बेइंदिया उव्वट्टंति; एवं जाव वाणमंतरा ।

८. [प्र०] संतरं भंते ! जोइसिया चयंति–पुच्छा । [उ०] गंगेया ! संतरं पि जोइसिया चयंति, निरंतरं पि जोइसिया चयंति; एवं जाव वेमाणिया वि ।

९. [प्र०] कइविहे णं भंते ! पवेसणए पन्नत्ते ? [उ०] गंगेया ! चउव्विहे पवेसणए पन्नत्ते, तं जहा–नेरइयपवेसणए, [1]तिरिक्खजोणियपवेसणए, मणुस्सपवेसणए, देवपवेसणए ।

१०. [प्र०] नेरइयपवेसणए णं भंते ! कइविहे पन्नत्ते ? [उ०] गंगेया ! सत्तविहे पन्नत्ते, तं जहा–रयणप्पभापुढविनेरइयपवेसणए, जाव अहेसत्तमापुढविनेरतियपवेसणए ।

११. [प्र०] एगे णं भंते ! नेरइए नेरइयपवेसणएणं पविसमाणे किं रयणप्पभाए होज्जा, सक्करप्पभाए होज्जा, जाव अहेसत्तमाए होज्जा ? [उ०] गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा, जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।

१२. [प्र०] दो भंते ! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा, जाव अहेसत्तमाए होज्जा ? [उ०] गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा, जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा; जाव एगे रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुय-

६. [प्र०] हे भगवन्! पृथिवीकायिक जीवो सांतर च्यवे छे ? –इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! पृथिवीकायिक जीवो निरंतर च्यवे छे पण सांतर च्यवता नथी. ए प्रमाणे यावत् वनस्पतिकायिक जीवो सान्तर च्यवता नथी, पण निरन्तर च्यवे छे.

पृथिवीकायिकादिनुं सान्तर के निरन्तर च्यवन.

७. [प्र०] हे भगवन्! बेइन्द्रिय जीवो सांतर च्यवे छे के निरंतर च्यवे छे? [उ०] हे गांगेय! बेइन्द्रिय जीवो सांतर पण च्यवे छे अने निरंतर पण च्यवे छे. ए प्रमाणे यावद् वानव्यन्तर सुधी जाणवुं.

बेइन्द्रियादि.

८. [प्र०] हे भगवन्! ज्योतिषिक देवो सांतर च्यवे छे ?–इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय! ज्योतिषिक देवो सांतर पण च्यवे छे अने निरंतर पण च्यवे छे. ए प्रमाणे यावद् वैमानिक देवो सुधी जाणवुं.

ज्योतिषिक.

९. [प्र०] हे भगवन्! *प्रवेशनक (उत्पत्ति) केटला प्रकारे कहेल छे? [उ०] हे गांगेय! प्रवेशनक चार प्रकारे कह्यां छे. ते आ प्रमाणे–१ नैरयिकप्रवेशनक, २ तिर्यंचयोनिकप्रवेशनक, ३ मनुष्यप्रवेशनक अने ४ देवप्रवेशनक.

प्रवेशनक.

१०. [प्र०] हे भगवन्! नैरयिकप्रवेशनक केटला प्रकारे कह्युं छे? [उ०] हे गांगेय! सात प्रकारे कह्युं छे. ते आ प्रमाणे–१ रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकप्रवेशनक, यावद् ७ अधःसप्तमपृथिवीनैरयिकप्रवेशनक.

नैरयिकप्रवेशनक.

११. [प्र०] हे भगवन्! एक नारक जीव नैरयिकप्रवेशनकद्वारा प्रवेश करतो शुं १ रत्नप्रभापृथिवीमां होय, २ शर्कराप्रभापृथिवीमां होय के यावद् ७ अधःसप्तमपृथिवीमां होय? [उ०] हे गांगेय! ते १ रत्नप्रभापृथिवीमां पण होय, यावद् ७ †अधःसप्तमपृथिवीमां पण होय.

एक नैरयिक.

१२. [प्र०] हे भगवन्! बे नारको नैरयिकप्रवेशनकद्वारा प्रवेश करता शुं रत्नप्रभापृथिवीमां उत्पन्न थाय के यावद् अधःसप्तमपृथिवीमां उत्पन्न थाय? [उ०] हे गांगेय! ते बन्ने १ ‡रत्नप्रभापृथिवीमां होय, के यावद् ७ अधःसप्तमनरकपृथिवीमां होय. १ अथवा एक रत्नप्रभापृथिवीमां होय अने एक शर्कराप्रभापृथिवीमां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभापृथिवीमां होय अने एक वालुकाप्रभापृथिवीमां होय. यावत् ६ एक रत्नप्रभामां होय अने एक अधःसप्तमनरकपृथिवीमां होय. [३ एक ¶रत्नप्रभापृथिवीमां होय अने एक पंकप्रभापृथिवीमां होय. ४ अथवा एक रत्नप्रभापृथिवीमां होय अने एक धूमप्रभापृथिवीमां होय. ५ अथवा एक रत्नप्रभापृथिवीमां होय अने एक तमःप्रभापृथिवीमां होय.

बे नैरयिक.

---

१ तिरियजो– ग–घ ।

९. * बीजी गतिमांथी च्यवीने विजातीय गतिमां जीवनो प्रवेश–उत्पाद थवो ते प्रवेशनक कहेवाय छे.—टीका.

११. † अहीं एक नारकना रत्नप्रभादि सात पृथिवीने आश्रयी सात विकल्प थाय छे.

१२. ‡ बे नारकोना अठ्यावीश विकल्पो थाय छे. तेमां एक एक पृथिवीमां बन्ने नारकोनी उत्पत्तिने आश्रयी सात भांगा थाय छे, तथा बे पृथिवीने विषे एक एक नारकनी उत्पत्ति वडे द्विकसंयोगी एकवीश भांगा थाय छे.

¶ मूळ सूत्रपाठमां नहि आपेला भंगो आवा [ ] कोष्ठकनी अंदर आपेला छे. अहीं त्रीजा भंगथी मांडी छट्ठा भंगसुधीना भंगो आप्या छे.

प्पभाए होज्जा; जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा; एवं जाव अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। एवं एकेका पुढवी छड्डेयव्वा, जाव अहवा एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

१३. [प्र०] तिन्नि भंते! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा, जाव अहेसत्तमाए होज्जा? [उ०] गंगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा, जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए होज्जा; जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा; जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा; जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा; जाव अहवा दो सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। एवं जहा सक्करप्पभाए वत्तव्वया भणिया, तहा सव्वपुढवीणं भाणियव्वं, जाव अहवा दो तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

६ अथवा एक रत्नप्रभापृथिवीमां होय अने एक तमःतमःप्रभापृथिवीमां होय. ए रीते रत्नप्रभा साथे छ विकल्प थाय छे.] १ अथवा एक शर्कराप्रभापृथिवीमां होय अने एक वालुकाप्रभापृथिवीमां होय. यावत् ५ अथवा एक शर्कराप्रभामां होय अने एक अधःसप्तम नरकपृथिवीमां होय. [२ एक शर्कराप्रभापृथिवीमां होय अने एक पंकप्रभापृथिवीमां होय, ३ अथवा एक शर्कराप्रभापृथिवीमां होय अने एक धूमप्रभापृथिवीमां होय, ४ अथवा एक शर्कराप्रभापृथिवीमां होय अने एक तमःप्रभापृथिवीमां होय, ५ अथवा एक शर्कराप्रभापृथिवीमां होय अने एक तमःतमापृथिवीमां होय. ए प्रमाणे पांच विकल्प शर्कराप्रभा साथे थाय छे.] १ अथवा एक वालुकाप्रभामां होय अने एक पंकप्रभामां होय. [२ अथवा एक वालुकाप्रभामां होय अने एक धूमप्रभामां होय, ३ अथवा एक वालुकाप्रभामां होय अने एक तमःप्रभामां होय.] ए प्रमाणे यावत् ४ अथवा एक वालुकाप्रभामां होय अने एक अधःसप्तम नरकपृथिवीमां होय. ए प्रमाणे आगल आगलनी एक एक पृथिवी छोडी देवी, यावत् एक तमामां होय अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. [एटले वालुकाप्रभा साथे चार विकल्प थाय छे. १ अथवा एक पंकप्रभामां होय अने एक धूमप्रभामां होय. २ अथवा एक पंकप्रभामां होय अने एक तमःप्रभामां होय, ३ अथवा एक पंकप्रभामां होय अने एक तमः-तमामां होय. ए रीते पंकप्रभा साथे त्रण विकल्प थाय छे. १ अथवा एक धूमप्रभामां होय अने एक तमःप्रभामां होय, २ अथवा एक धूम-प्रभामां होय अने एक तमःतमामां होय. ए प्रमाणे धूमप्रभा साथे बे विकल्प थाय छे. १ अथवा एक तमःप्रभामां होय अने एक तमतमाप्र-भामां होय. ए रीते तमःप्रभा साथे एक विकल्प थाय छे*]

१३. [प्र०] हे भगवन्! नैरयिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करता त्रण नैरयिको शुं रत्नप्रभामां होय के यावत् अधःसप्तम पृथिवीमां होय? [उ०] हे गांगेय! ते त्रण नैरयिको १† रत्नप्रभामां पण होय अने यावत् ७ अधःसप्तम पृथिवीमां पण होय. १‡अथवा एक रत्नप्रभामां अने बे शर्कराप्रभामां होय. यावत् ६ एक रत्नप्रभामां होय अने बे अधःसप्तम नरकमां होय. [ए प्रमाणे १—२ ना रत्नप्रभानी साथे अनुक्रमे बीजी नरकपृथिवीओनो संयोग करतां छ विकल्प थाय.] १ अथवा बे रत्नप्रभामां अने एक शर्कराप्रभामां होय. यावत् ६ बे रत्नप्रभामां होय अने एक अधःसप्तम नरकपृथिवीमां होय [ए प्रमाणे २—१ ना बीजा छ विकल्पो थाय.] १ अथवा एक शर्कराप्रभामां अने बे वालुकाप्रभामां होय. यावत् ५ अथवा एक शर्कराप्रभामां अने बे अधःसप्तम नरकमां होय. [ए रीते १—२ ना पांच विकल्प थाय.] १ अथवा बे शर्कराप्रभामां अने एक वालुकाप्रभामां होय. यावत् ५ अथवा बे शर्कराप्रभामां अने एक अधःसप्तम पृथिवीमां होय. [ए प्रमाणे २—१ ना पांच विकल्प थाय.] जेम शर्कराप्रभानी वक्तव्यता कही तेम साते पृथिवीओनी कहेवी. [ते आ प्रमाणे—१ एक वालुकाप्रभामां अने बे पंकप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ४ एक वालुकाप्रभामां अने बे तमतमापृथिवीमां होय. एवी रीते १—२ ना चार विकल्प थाय. १ अथवा बे वालुकाप्रभामां होय अने एक पंकप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ४ बे वालुकाप्रभामां होय अने एक तमतमामां होय. ए प्रमाणे २—१ ना चार विकल्प थाय. १ अथवा एक पंकप्रभामां होय अने बे धूमप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ३ एक पंकप्र-भामां होय अने बे तमःतमाप्रभामां होय. ए रीते १—२ ना त्रण विकल्प थाय. १ अथवा बे पंकप्रभामां होय अने एक धूमप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ३ बे पंकप्रभामां होय अने एक तमतमामां होय. ए रीते २—१ ना त्रण विकल्प थाय. १ अथवा एक धूमप्रभामां होय अने बे तमःप्रभामां होय. २ अथवा एक धूमप्रभामां होय अने बे तमतमाप्रभामां होय. एम १—२ ना बे विकल्पो थाय. १ अथवा बे धूमप्रभामां होय अने एक तमःप्रभामां होय. २ अथवा बे धूमप्रभामां होय अने एक तमतमामां होय. एम २—१ ना बे विकल्प थाय. १ अथवा एक तमःप्रभामां होय अने बे तमःतमाप्रभामां होय.] यावत् १ अथवा बे तमःप्रभामां होय अने एक तमतमाप्रभामां होय. [एम १—२, २—१ ना बे विकल्प थाय.]

---

१२. * ए प्रमाणे बे नैरयिकोने आश्रयी द्विकसंयोगी ६-५-४-३-२-१ भांगा मळीने एकवीश भांगाओ थाय छे, तेनी साथे एकसंयोगी सात भांगा मेळवतां कुल अठ्यावीश भांगा थाय छे.

१३. † त्रणे नैरयिको रत्नप्रभादि साते नरकपृथिवीमां उत्पन्न थाय, माटे त्रण नैरयिकोने आश्रयी एकसंयोगी सात विकल्पो थाय छे.

‡ त्रण नैरयिकना द्विकसंयोगी १-२ अने २-१-ए बे विकल्प थाय छे. तेमां १-२ ना रत्नप्रभानी साथे बीजी बधी पृथिवीओनो अनुक्रमे योग करतां छ विकल्पो थाय, अने तेवी रीते २-१ ना पण छ विकल्पो मळीने बार विकल्पो थाय. शर्कराप्रभा साथे पांच पांच मळीने दश, वालुकाप्रभा साथे आठ, पंक-प्रभा साथे छ, धूमप्रभा साथे चार, अने तमःप्रभा साथे बे-ए प्रमाणे द्विकसंयोगी बेंताळीश भांगाओ थाय छे.

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा; जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा; एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा; जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा; अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा; जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा; जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा; अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा; अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा; अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए होज्जा; अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा; अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए

त्रिकसंयोगी पां-त्रीश विकल्पो.

१ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने एक वालुकाप्रभामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने एक पंकप्रभामां होय. यावत् ५ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने एक अधःसप्तम पृथिवीमां होय. [३ एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने एक धूमप्रभामां होय. ४ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. ५ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने एक तमःतमाप्रभामां होय. ए प्रमाणे रत्नप्रभा साथे पांच विकल्प थाय.] १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां अने एक पंकप्रभामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां अने एक धूमप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ४ अथवा एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां अने एक अधःसप्तम पृथिवीमां होय [३ एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. ४ अथवा एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां अने एक तमःतमःप्रभामां होय. ए प्रमाणे शर्कराप्रभाने छोडीने चार विकल्प थाय.] १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक धूमप्रभामां होय. यावत् ३ अथवा एक रत्नप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक अधः-सप्तम पृथिवीमां होय. [२ अथवा एक रत्नप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. ३ अथवा एक रत्नप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक तमःतमःप्रभामां होय. ए रीते वालुकाप्रभा छोडीने त्रण विकल्प थाय.] १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक अधःसप्तम पृथिवीमां होय. [एम पंकप्रभाने छोडीने बे विकल्प थाय.] १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक अधःसप्तम पृथिवीमां होय. [ए एक विकल्प धूमप्रभा छोडीने थाय. ए प्रमाणे रत्न० ना ५—४—३—२—मळीने पंदर विकल्प थाय छे.] १ एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां अने एक पंकप्रभामां होय. २ अथवा एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां अने एक धूमप्रभामां होय. यावत् ४ अथवा एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. [३ एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. ४ अथवा एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां अने एक तमःतमःप्रभामां होय. एम शर्कराप्रभा साथे चार विकल्प थाय.] १ अथवा एक शर्कराप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक धूमप्रभामां होय. यावत् ३ अथवा एक शर्कराप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. [२ एक शर्कराप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. ३ अथवा एक शर्कराप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक तमःतमःप्रभामां होय. एम वालुकाप्रभाने छोडीने त्रण विकल्प थाय.] १ अथवा एक शर्कराप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. २ अथवा एक शर्कराप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. [एम पंकप्रभाने छोडीने बे विकल्प थाय.] १ अथवा एक शर्कराप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. [ए रीते धूमप्रभाने छोडीने एक विकल्प थाय.] ए प्रमाणे शर्करा० ना ४—३—२—१ मळीने दश विकल्पो थाय छे. १ अथवा एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक धूमप्रभामां होय. २ अथवा एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. ३ अथवा एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. [ए रीते वालुका० साथे त्रण विकल्प थया.] १ अथवा एक वालुकाप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक तमामां होय. २ अथवा एक वालुकाप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय [पंक० छोडीने बे विकल्प.] १ अथवा एक वालुकाप्रभामां एक तमामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. [ए एक विकल्प मळी वालुका० साथे छ विकल्प थया.] १ अथवा एक पंकप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. २ अथवा एक पंकप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. ३ अथवा एक पंकप्रभामां एक तमःप्रभामां

---

१ वालुयप्प° क-ख । २ वालुयाए क ।

एगे अहेसत्तमाए होज्जा; अहवा एगे [1]वालुयप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा; अहवा एगे [2]पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा; अहवा एगे पंकप्पभाए एगे धूम[3]प्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा; अहवा एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा; अहवा एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ।

१४. [प्र०] चत्तारि भंते ! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा ?—पुच्छा । [उ०] गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा, जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।

अहवा एगे रयणप्पभाए तिन्नि सक्करप्पभाए होज्जा; अहवा एगे रयणप्पभाए तिन्नि वालुयप्पभाए होज्जा; एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए तिन्नि अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा दो रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए होज्जा; एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा तिन्नि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा; एवं जाव अहवा तिन्नि रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे सक्करप्पभाए तिन्नि वालुयप्पभाए होज्जा; एवं जहेव रयणप्पभाए उवरिमाहिं समं चारियं तहा सक्करप्पभाए वि उवरिमाहिं समं चारेयव्वं; एवं एक्केक्काए समं चारेयव्वं, जाव अहवा तिन्नि तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ६३ ।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो पंकप्पभाए होज्जा; एवं जाव[4] एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए

अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. [एम पंक० साथे त्रण विकल्प थया.] १ अथवा एक धूमप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. [धूम० साथे एक विकल्प थयो. १५—१०—६—३—१—ए बधा मळीने त्रिकसंयोगी पांत्रीस विकल्प थया. ए प्रमाणे त्रण नैरयिकोने आश्रयी एक संयोगी ७, द्विकसंयोगी ४२, अने त्रिकसंयोगी ३५ मळीने कुल ८४ विकल्प थाय छे.]

चार नैरयिको.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करता चार नैरयिको शुं रत्नप्रभामां होय ?—इत्यादि प्रश्न [उ०] हे गांगेय ! ते चारे १ रत्नप्रभामां पण होय, अने यावत् ७ अधःसप्तम पृथिवीमां पण होय. [ए प्रमाणे एकसंयोगी सात विकल्प थया.]

द्विकसंयोगी त्रेसठ विकल्पो.

१ *अथवा एक रत्नप्रभामां अने त्रण शर्कराप्रभामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां अने त्रण वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ६ अथवा एक रत्नप्रभामां अने त्रण अधःसप्तम पृथिवीमां होय. [एम १—३ ना छ विकल्प थया.] १ अथवा बे रत्नप्रभामां अने बे शर्कराप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावद् ६ अथवा बे रत्नप्रभामां अने बे अधःसप्तम पृथिवीमां होय. [ए प्रमाणे बीजी रीते २—२ ना छ विकल्प थया.] १ अथवा त्रण रत्नप्रभामां अने एक शर्कराप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ६ अथवा त्रण रत्नप्रभामां अने एक अधःसप्तम पृथिवीमां होय. [ए त्रीजी रीते ३—१ ना छ विकल्प थया. ए प्रमाणे रत्नप्रभानी साथे अढार विकल्प थाय छे.] १ अथवा एक शर्कराप्रभामां अने त्रण वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे जेम रत्नप्रभानो उपरनी नरकपृथिवीओ साथे संचार (योग) कर्यो तेम शर्कराप्रभानो पण उपरनी नरकपृथिवीओ साथे संचार करवो. एवी रीते एक एक नरक पृथिवीओ साथे योग करवो. यावत् अथवा त्रण तमामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय.

त्रिकसंयोगी १०५ विकल्पो.

१ †अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने बे वालुकाप्रभामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने बे पंकप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ५ एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने बे अधःसप्तम नरकपृथिवीमां होय. [ए रीते १—१—२ ना

---

१ वालुयाए क । २ पंकाए क । ३ धूमाए क । ४ जाव अहवा ए-क ।

१४. * चार नैरयिकना १-३, २-२, ३-१—ए प्रमाणे द्विकयोगी त्रण विकल्प थाय छे. तेमां रत्नप्रभा साथे बाकीनी पृथिवीओनो योग करता १-३ ना छ भांगा, ए प्रमाणे २-२ ना छ, अने ३-१ ना छ—ए रीते अढार भांगा थाय छे. शर्कराप्रभानी साथे ते प्रमाणे त्रण विकल्पना ५-५-५ मळीने पंदर विकल्प थाय छे. एम वालुकाप्रभानी साथे ४-४-४ मळीने बार विकल्प, पंकप्रभानी साथे ३-३-३ मळीने नव विकल्प, धूमप्रभानी साथे २-२-२ मळीने छ विकल्प अने तमःप्रभानी साथे १-१-१ मळीने त्रण विकल्प—सर्व मळीने द्विकसंयोगी ६३ विकल्पो थाय छे. तेमां रत्नप्रभाना अढार भांगाओ उपर मूळ अनुवादमां कह्या छे. ए प्रमाणे शर्कराप्रभा साथे आगळनी पृथिवीओनो योग करता १-३ ना पांच विकल्प थाय छे. जेम के एक शर्करामां अने त्रण वालुकामां होय. ए रीते २-२ ना पण पांच विकल्प थाय छे. जेम के बे शर्करामां अने बे वालुकामां होय. ते प्रमाणे ३-१ ना पण पांच विकल्प थाय. जेम के त्रण शर्करामां अने एक वालुकामां होय. आ रीते शर्कराप्रभाना पंदर विकल्प थाय. वालुकाप्रभा साथे पंकप्रभादि पृथिवीओनो योग करतां चार विकल्पो थाय, तेने पूर्वोक्त त्रण विकल्प साथे गुणतां बार विकल्प थाय. तेमज पंकप्रभा साथे धूमप्रभादिनो योग करतां त्रण विकल्प थाय, तेने पूर्वोक्त त्रण विकल्प साथे गुणतां नव विकल्प थाय. धूमप्रभा साथे तमःप्रभादिनो योग करतां बे विकल्प थाय, तेने त्रण विकल्प साथे गुणतां छ विकल्प थाय. तमःप्रभा साथे तमःतमःप्रभानो योग करतां एक विकल्प थाय, तेने पूर्वना त्रण विकल्प साथे गुणतां त्रण विकल्प थाय. ए रीते आगळनी पृथिवीओनो योग करतां उपर कह्या प्रमाणे रत्नप्रभाना १८, शर्कराना १५, वालुकाना १२, पंकप्रभाना ९, धूमप्रभाना ६, अने तमःप्रभाना ३ विकल्पो मळीने चार नैरयिकना द्विकसंयोगी त्रेसठ विकल्पो (भांगाओ) थाय छे.

† चार नैरयिकना त्रिकसंयोगी १०५ विकल्पो थाय छे, ते आ प्रमाणे—चार नैरयिकना १-१-२, १-२-१ अने २-१-१—ए त्रण विकल्प थाय छे. हवे रत्नप्रभा अने शर्कराप्रभा साथे वालुकाप्रभादि आगळनी नरकपृथिवीओनो योग करतां पांच भांगा थाय छे, तेने पूर्वोक्त त्रण विकल्प साथे गुणता पंदर भांगा थाय. एज प्रकारे त्रणे विकल्पोना रत्नप्रभा अने वालुकाप्रभा ए बन्नेनो बाकीनी बीजी पृथिवीओ साथे संयोग करतां कुल बार विकल्प थाय, रत्नप्रभा अने

एगे वालुयप्पभाए होज्जा; एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा; एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो पंकप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। एवं एएणं गमएणं जहा तिण्हं तियसंजोगो तहा भाणियव्वो; जाव अहवा दो धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १०५।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा १; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा २; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए होज्जा ३; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ४; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा ५; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए होज्जा ६; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ७; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा ८; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ९; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १०; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा ११; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे

पांच विकल्प थया.] १ अथवा एक रत्नप्रभामां बे शर्कराप्रभामां अने एक वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ५ एक रत्नप्रभामां बे शर्कराप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकपृथिवीमां होय. [एम १—२—१ ना पांच विकल्प थया.] अथवा बे रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने एक वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ५ बे रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकपृथिवीमां होय. [ए रीते २—१—१ ना पांच विकल्प थया, अने त्रणे विकल्पना मळीने पंदर विकल्पो थया.] १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां अने बे पंकप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ४ एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां अने बे अधःसप्तम पृथिवीमां होय. ए प्रमाणे ए पाठवडे जेम त्रण नैरयिकनो त्रिकसंयोग कह्यो तेम चार नैरयिकोनो पण त्रिकसंयोग कहेवो. यावत् अथवा १०५ बे धूमप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय.

१ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां अने एक पंकप्रभामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां अने एक धूमप्रभामां होय. ३ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. ४ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकपृथिवीमां होय. [चार विकल्प थया.] १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक धूमप्रभामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. ३ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. [त्रण विकल्प थया.] १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक अधःसप्तम पृथिवीमां होय. ३ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक अधःसप्तम पृथिवीमां होय. [ए त्रण विकल्प थया.] १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक धूमप्रभामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. ३ अथवा एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक अधः सप्तम नरकमां होय. [त्रण विकल्प थया.] १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक अधःसप्तम पृथिवीमां होय. [बे विकल्प थया.] १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक अधःसप्तम पृथिवीमां होय. [एक विकल्प थयो.] १

---

१ घ विनाऽन्यत्र जाव अ—। २ तियासंजो— क, तियजो— घ। ३ एवं जाव अहवा ङ। ४ अहेसत्तमाए हो— ङ।

पंकप्रभा ए बन्नेनो बाकीनी नरकपृथिवी साथे संयोग करवाथी नव विकल्पो थाय, रत्नप्रभा अने धूमप्रभा ए बन्नेनो बाकीनी पृथिवीओ साथे संयोग करतां छ विकल्पो थाय, तथा रत्नप्रभा अने तमःप्रभा ए बन्नेनो तमःतमःप्रभा साथे संयोग करता त्रण विकल्प थाय. ए प्रमाणे रत्नप्रभाना संयोगवाळा १५. १२,—९, ६ अने ३ विकल्पो मळीने कुल पीस्तालीश विकल्पो थाय छे. वळी पूर्वोक्त त्रण विकल्पोना शर्कराप्रभा अने वालुकाप्रभानो बाकीनी पृथिवीओ साथे संयोग करवाथी बार विकल्प थाय, तेज प्रमाणे शर्कराप्रभा अने पंकप्रभानो बाकीनी पृथिवीओ साथे संयोग करतां नव विकल्पो थाय, शर्करा अने धूमप्रभानो बाकीनी पृथिवीओ साथे संयोग करतां छ विकल्प थाय, शर्कराप्रभा अने तमःप्रभानो तमःतमःप्रभा साथे संयोग करतां त्रण विकल्पो थाय. १२-९-६-३ ए सर्व विकल्पो मळीने शर्कराप्रभाना संयोगवाळा कुल त्रीश विकल्पो थाय छे. हवे पूर्वोक्त त्रण विकल्पोना वालुका अने पंकप्रभानो बीजी पृथ्वीओ साथे संयोग करता नव विकल्प थाय छे. वालुका अने धूमप्रभानो बीजी पृथ्वीओ साथे संयोग करतां छ विकल्पो थाय छे, वालुका अने तमःप्रभानो तमःतमःप्रभा साथे संयोग करतां त्रण विकल्प थाय छे. ९-६-३ ए बधा मळीने वालुकाप्रभाना संयोगवाळा अढार विकल्पो थाय छे. पंकप्रभा अने धूमप्रभानो बीजी पृथ्वीओ साथे संयोग करतां पूर्वोक्त त्रण विकल्पना छ विकल्पो थाय छे, पंकप्रभा अने तमःप्रभानो तमःतमःप्रभा साथे संयोग करतां त्रण विकल्पो थाय छे. सर्व मळीने पंकप्रभाना संयोगवाळा नव विकल्पो थाय छे. हवे धूमप्रभा, तमःप्रभा तथा तमःतमःप्रभानो संयोग करतां पूर्वोक्त त्रण विकल्प साथे बीजा त्रण विकल्प थाय छे. ए प्रकारे ४५, ३०, १८, ९, ३—ए बधा मळीने एकसो ने पांच विकल्प थाय छे.

पंकप्पभाए एगे तमाए होज्जा १२; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १३; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा १४; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १५; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १६; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा १७; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १८; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १९; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा २०; अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा २१। एवं जहा रयणप्पभाए उवरिमाओ पुढवीओ चारियाओ[1] तहा सक्करप्पभाए वि उवरिमाओ चारियव्वाओ[2]; जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३०। अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा ३१; अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३२; अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३३; अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३४; अहवा एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३५।

१५. [प्र०] पंच भंते! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा—पुच्छा। [उ०] गंगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा, जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए चत्तारि सक्करप्पभाए होज्जा, जाव अहवा एगे रयणप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए तिन्नि सक्करप्पभाए होज्जा; एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए तिन्नि अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा तिन्नि

अथवा एक रत्नप्रभामां एक पंकप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां एक पंकप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक अधःसप्तम पृथिवीमां होय. [बे विकल्प थया.] १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक पंकप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. [एक विकल्प थयो.] १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक धूमप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. [एक विकल्प थयो. ए प्रमाणे बधा मळीने रत्नप्रभाना संयोगवाळा ४—३—३—३—२—१—२—१—१—वीश विकल्प थया.] १ अथवा एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक धूमप्रभामां होय. ए प्रमाणे जेम रत्नप्रभापृथिवीनो बीजी उपरनी पृथिवीओ साथे संचार (योग) कर्यो, तेम शर्कराप्रभा पृथिवीनो पण बीजी बधी उपरनी पृथिवीओ साथे योग करवो; *यावत् १० अथवा एक शर्कराप्रभामां एक धूमप्रभामां एक तमामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. [शर्कराना संयोगवाळा दश विकल्प थया.] १ अथवा एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. २ अथवा एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक अधःसप्तम पृथिवीमां होय. ३ अथवा एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक अधःसप्तम पृथिवीमां होय. ४ अथवा एक वालुकाप्रभामां एक धूमप्रभामां एक तमामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. [ए प्रमाणे वालुकाप्रभाना संयोगवाळा चार विकल्प थया.] १ अथवा एक पंकप्रभामां एक धूमप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. [ए प्रमाणे २०—१०—४—१ मळीने चतुःसंयोगी पांत्रीश विकल्प थया. अने सर्व मळीने चार नैरयिकने आश्रयी एकसंयोगी ७, द्विकसंयोगी ६३, त्रिकसंयोगी १०५ अने चतुःसंयोगी ३५ बधा मळीने बसो दस विकल्पो थाय छे.]

पांच नैरयिक.

१५. [प्र०] हे भगवन्! पांच नैरयिको नैरयिकप्रवेशनवडे प्रवेश करता शुं रत्नप्रभामां होय—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय! १ रत्नप्रभामां पण होय, अने यावद् ७ अधःसप्तम पृथिवीमां पण होय. [ए प्रमाणे एक संयोगी सात विकल्प थया.]

द्विकसंयोगी ८४ विकल्पो.

** १ अथवा एक रत्नप्रभामां अने चार शर्कराप्रभामां होय. यावत् ६ अथवा एक रत्नप्रभामां अने चार अधःसप्तम नरकमां होय. [ए प्रमाणे 'एक अने चार' विकल्पना रत्नप्रभा साथे बीजी पृथ्वीओनो योग करतां छ भांगा थाय.] १ अथवा बे रत्नप्रभामां अने

---

१ संचारिया— क। २ चारेय— क। ३ ग—ख—क विना नास्ति।

* १४. शर्कराप्रभाना संयोगवाळा बीजाथी मांडीने दशमा विकल्प सुधी आ प्रमाणे—२ अथवा एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक तमःप्रभापृथिवीमां होय. ३ अथवा एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक तमःतमःप्रभामां होय. (त्रण विकल्प थया.) १ एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. २ अथवा एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक तमःतमःप्रभामां होय. ३ अथवा एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक तमःतमःप्रभामां होय. (त्रण विकल्प थया.) १ अथवा एक शर्कराप्रभामां एक पंकप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. २ अथवा एक शर्कराप्रभामां एक पंकप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक तमतमामां होय. ३ अथवा एक शर्कराप्रभामां एक पंकप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक तमतमाप्रभामां होय. (ए त्रण विकल्प थया.) अथवा १० एक शर्कराप्रभामां एक धूमप्रभामां एक तमामां अने एक तमतमामां होय.

** १५. पांच नैरयिकना द्विकसंयोगी १—४, २—३, ३—२, ४—१—ए चार विकल्प थाय छे, तेने रत्नप्रभाना द्विकसंयोगी छ विकल्प साथे गुणतां चोवीस भांगा थाय. शर्कराप्रभाना उपरनी पृथिवीओ साथे द्विकसंयोगी पांच विकल्प थाय, तेने पूर्वोक्त चार विकल्प साथे गुणतां वीस भांगा थाय. तेवी रीते

रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए होज्जा; एवं जाव अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा; एवं जाव अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए चत्तारि वालुयप्पभाए होज्जा। एवं जहा रयणप्पभाए समं उवरिमपुढवीओ चारियाओ तहा सक्करप्पभाए वि समं चारेयव्वाओ; जाव अहवा चत्तारि सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा; एवं एक्केकाए समं चारेयव्वाओ; जाव अहवा चत्तारि तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए तिन्नि वालुयप्पभाए होज्जा; एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए तिन्नि अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा; एवं जाव

त्रण शर्कराप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ६ अथवा बे रत्नप्रभामां अने त्रण अधःसप्तम पृथिवीमां होय. [ए रीते 'बे ने त्रण' विकल्पना छ भांगा थया.] १ अथवा त्रण रत्नप्रभामां अने बे शर्कराप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ६ त्रण रत्नप्रभामां अने बे अधःसप्तम पृथिवीमां होय. [ए रीते 'त्रण ने बे' विकल्पना छ भांगा थया.] १ अथवा चार रत्नप्रभामां अने एक शर्कराप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ६ अथवा चार रत्नप्रभामां अने एक अधःसप्तम पृथिवीमां पण होय. [एम 'चार ने एक' विकल्पना छ, अने बधा मळीने रत्नप्रभाना संयोगवाळा चोवीश विकल्प थया.] १ अथवा एक शर्कराप्रभामां अने चार वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे जेम रत्नप्रभानी साथे बीजी उपरनी नरक पृथिवीओनो योग कर्यो, तेम शर्कराप्रभानी साथे उपरनी नरक पृथिवीओनो संयोग करवो. यावत् २० अथवा चार शर्कराप्रभामां अने एक अधःसप्तम पृथिवीमां होय. ए प्रमाणे [वालुकाप्रभा वगेरे] एक एक पृथिवीनी साथे योग करवो. यावत् अथवा चार तमामां अने एक अधःसप्तम पृथिवीमां होय.

त्रिकसंयोगी २१० विकल्पो.

१ *अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने त्रण वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ५ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने त्रण अधःसप्तम पृथिवीमां होय. [ए प्रमाणे 'एक एक ने त्रण' विकल्पने आश्रयी पांच भांगा थया.] १ अथवा एक

---

१ दोन्नि क। २ चत्तारि- क। ३ उवारिय- क।

वालुकाप्रभाना उपरनी पृथिवीओ साथे चार विकल्प थाय, तेने उपर कहेला चार विकल्प साथे गुणतां सोल विकल्प थाय. पंकप्रभाना धूमप्रभादि पृथिवीओ साथे त्रण विकल्प थाय, तेने पूर्वना चार विकल्पे गुणतां बार विकल्प थाय. धूमप्रभानी साथे तमःप्रभादिनो योग करता बे विकल्प थाय, तेने पूर्वना चार विकल्पे गुणतां आठ विकल्प थाय. तमःप्रभा साथे तमतमानो योग करतां पूर्वना चार विकल्पना चार विकल्पो थाय. ए रीते २४, २०, १६, १२, ८ अने ४–ए बधा मळीने द्विकसंयोगी ८४ विकल्पो थाय छे.

* १५. पांच नैरयिकना त्रिकसंयोगी छ विकल्प थाय छे, जेमके–१–१–३, १–२–२, २–१–२, १–३–१, २–२–१, ३–१–१. हवे सात नरकना त्रिकसंयोगी पांत्रीश भंगो थाय छे, ते प्रत्येकनी साथे पूर्वोक्त छ विकल्पने जोडता पांच नारकोने आश्रयी त्रिकसंयोगी बसो ने दश भांगा थाय छे.

१	रत्नप्रभा,	शर्कराप्रभा,	वालुकाप्रभा.
२	,,	,,	पंकप्रभा.
३	,,	,,	धूमप्रभा.
४	,,	,,	तमःप्रभा.
५	,,	,,	तमःतमःप्रभा.
६	,,	वालुकाप्रभा,	पंकप्रभा.
७	,,	,,	धूमप्रभा.
८	,,	,,	तमःप्रभा.
९	रत्नप्रभा,	वालुकाप्रभा,	तमःतमःप्रभा.
१०	,,	पंकप्रभा,	धूमप्रभा.
११	,,	,,	तमःप्रभा.
१२	,,	,,	तमःतमःप्रभा.
१३	,,	धूमप्रभा,	तमःप्रभा.
१४	,,	,,	तमःतमःप्रभा.
१५	,,	तमःप्रभा,	,,

आ पंदर भांगाओने पूर्वोक्त छ विकल्पो साथे जोडता रत्नप्रभाना संयोगवाळा नेवुं विकल्पो थाय छे.

१	शर्कराप्रभा,	वालुकाप्रभा,	पंकप्रभा.
२	,,	,,	धूमप्रभा.
३	,,	,,	तमःप्रभा.
४	,,	,,	तमःतमःप्रभा.
५	,,	पंकप्रभा,	धूमप्रभा.
६	शर्कराप्रभा,	पंकप्रभा,	तमःप्रभा.
७	,,	,,	तमःतमःप्रभा.
८	,,	धूमप्रभा,	तमःप्रभा.
९	,,	,,	तमःतमःप्रभा.
१०	,,	तमःप्रभा,	तमःतमःप्रभा.

आ दश भांगाओनी साथे पूर्वोक्त छ विकल्पोनो योग करवाथी शर्कराप्रभाना संयोगवाळा साठ विकल्पो थाय छे.

१	वालुकाप्रभा,	पंकप्रभा,	धूमप्रभा.
२	,,	,,	तमःप्रभा.
३	,,	,,	तमःतमःप्रभा.
४	वालुकाप्रभा,	धूमप्रभा,	तमःप्रभा.
५	,,	,,	तमःतमःप्रभा.
६	,,	तमःप्रभा,	,,

आ छ भांगाओनी साथे पूर्वोक्त छ विकल्पोनो योग करतां वालुकाप्रभाना संयोगवाळा छत्रीश विकल्पो थाय छे.

१	पंकप्रभा,	धूमप्रभा,	तमःप्रभा.
२	,,	,,	तमःतमःप्रभा.
३	पंकप्रभा,	तमःप्रभा,	तमःतमःप्रभा.

आ त्रण भांगाओनी साथे पूर्वोक्त छ विकल्पोनो संयोग करतां पंकप्रभाना संयोगवाळा अढार विकल्पो थाय छे.

१	धूमप्रभा,	तमःप्रभा,	तमःतमःप्रभा.

आ छेल्ला भांगानी साथे पूर्वोक्त छ विकल्पोनो योग करतां धूमप्रभाना संयोगवाळा छ विकल्पो थाय छे. ९०, ६०, ३६, १८, अने ६–ए बधा मळीने पांच नैरयिकोने आश्रयी त्रिकसंयोगी बसो दश विकल्पो थाय छे.

अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा; एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए तिन्नि सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा; एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए तिन्नि सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा; एवं जाव अहेसत्तमाए। अहवा तिन्नि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा; एवं जाव अहवा तिन्नि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए तिन्नि पंकप्पभाए होज्जा। एवं एएणं कमेणं जहा चउण्हं तियासंजोगो भणितो तहा पंचण्ह वि तियासंजोगो भाणियव्वो; नवरं तत्थ एगो संचारिज्जइ, इह दोन्नि, सेसं तं चेव, जाव अहवा तिन्नि धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो पंकप्पभाए होज्जा; एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा; एवं जाव अहेसत्तमाए। अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा; एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा; एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए दो धूमप्पभाए होज्जा;

रत्नप्रभामां बे शर्कराप्रभामां अने बे वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ५ अथवा एक रत्नप्रभामां बे शर्कराप्रभामां अने बे अधःसप्तम नरकमां होय. ['एक बे बे' ना विकल्पने आश्रयी ए पांच भंग थया.] १ अथवा बे रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने बे वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावद् ५ अथवा बे रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने बे अधःसप्तम नरकमां होय. ['बे एक बे' विकल्पने आश्रयी ए पांच भंग थया.] १ अथवा एक रत्नप्रभामां त्रण शर्कराप्रभामां अने एक वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ५ अथवा एक रत्नप्रभामां त्रण शर्कराप्रभामां अने एक अधःसप्तममां होय. ['एक त्रण एक' ने आश्रयी पांच भंग थया.] १ अथवा बे रत्नप्रभामां बे शर्कराप्रभामां अने एक वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ५ बे रत्नप्रभामां बे शर्कराप्रभामां अने एक अधःसप्तममां होय. ['बे बे एक'ने आश्रयी पांच भंग थया.] १ अथवा त्रण रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने एक वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ५ अथवा त्रण रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने एक अधःसप्तममां होय. [ए 'त्रण एक एक'नी अपेक्षाए पांच भंग थया.] (३०). १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां अने त्रण पंकप्रभामां होय. ए प्रमाणे ए क्रमथी जेम चार नैरयिकोनो त्रिकसंयोग कह्यो तेम पांच नैरयिकोनो पण त्रिकसंयोग कहेवो. परन्तु त्यां एकनो संचार कराय छे, अहीं बेनो संचार करवो. बाकी सर्व पूर्वोक्त जाणवुं; यावत् अथवा त्रण धूमप्रभामां एक तमामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. (२१०).

चतुःसंयोगी १४० विकल्पो.

१ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां अने बे पंकप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ४ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां अने बे अधःसप्तम पृथिवीमां होय. [ए चार विकल्प थया.] १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां बे वालुकाप्रभामां अने एक पंकप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ४ एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां बे वालुकाप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकपृथिवीमां होय. [४ भंग.] १ अथवा एक रत्नप्रभामां बे शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां अने एक पंकप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ४ अथवा एक रत्नप्रभामां बे शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकपृथिवीमां होय. [४ भंग.] १ अथवा बे रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां अने एक पंकप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ४ अथवा बे रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक

* चतुःसंयोगी विकल्पोनी रीति आ प्रमाणे छे—पांच नैरयिकोना चतुःसंयोग '१-१-१-२' '१-१-२-१' '१-२-१-१' २-१-१-१ ए चार प्रकारे थाय छे. तेने सात नरकना चतुःसंयोगी पांत्रीश भंगोनी साथे जोडता १४० विकल्पो थाय छे. ते आ प्रमाणे—

१	रत्नप्रभा,	शर्कराप्रभा,	वालुकाप्रभा,	पंकप्रभा.	११	रत्नप्रभा,	वालुकाप्रभा,	पंकप्रभा,	धूमप्रभा.
२	,,	,,	,,	धूमप्रभा.	१२	,,	,,	,,	तमःप्रभा.
३	,,	,,	,,	तमःप्रभा.	१३	,,	,,	,,	तमःतमःप्रभा.
४	,,	,,	,,	तमःतमःप्रभा.	१४	,,	,,	धूमप्रभा,	तमःप्रभा.
५	,,	,,	पंकप्रभा,	धूमप्रभा.	१५	,,	,,	,,	तमःतमःप्रभा.
६	,,	,,	,,	तमःप्रभा.	१६	,,	,,	तमःप्रभा,	,,
७	,,	,,	,,	तमःतमःप्रभा.	१७	,,	पंकप्रभा,	धूमप्रभा,	तमःप्रभा.
८	,,	,,	धूमप्रभा,	तमःप्रभा.	१८	,,	,,	,,	तमःतमःप्रभा.
९	,,	,,	,,	तमःतमःप्रभा.	१९	,,	,,	तमःप्रभा,	,,
१०	,,	,,	तमःप्रभा,	तमःतमःप्रभा.	२०	,,	धूमप्रभा,	,,	,,

आ वीश भंगोनी साथे पूर्वोक्त चार विकल्पोनो संयोग करतां रत्नप्रभाना संयोगवाळा एंशी विकल्पो थाय छे.

एवं जहा चउण्हं चउक्कसंजोगो भणिओ तहा पंचण्ह वि चउक्कसंजोगो भाणियव्वो, नवरं अब्भहियं एगो संचारेयव्वो, एवं जाव अहवा दो पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा १; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए होज्जा २; अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ३; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा ४; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ५; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ६; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा ७; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ८; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए

वालुकाप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकपृथिवीमां होय. [४ भंग.] १ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक पंकप्रभामां अने बे धूमप्रभामां होय. ए प्रमाणे जेम चार नैरयिकोनो चतुःसंयोग कह्यो, तेम पांच नैरयिकोनो पण चतुःसंयोग कहेवो. परन्तु अहीं एकनो अधिक संचार (योग) करवो. ए प्रमाणे यावत् अथवा बे पंकप्रभामां एक धूमप्रभामां एक तमामां अने एक अधःसप्तम नरकपृथिवीमां होय.

पंचसंयोगी २१ विकल्पो.

अथवा १ एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक धूमप्रभामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. ३ अथवा एक रत्नप्रभामां यावत् एक पंकप्रभामां अने एक अधःसप्तम पृथिवीमां होय. ४ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. ५ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. ६ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. ७ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक पंकप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक तमःप्रभामां होय. ८ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक पंकप्रभामां

१	शर्कराप्रभा,	वालुकाप्रभा,	पंकप्रभा,	धूमप्रभा.
२	,,	,,	,,	तमःप्रभा.
३	,,	,,	,,	तमःतमःप्रभा.
४	,,	,,	धूमप्रभा,	तमःप्रभा.
५	,,	,,	,,	तमःतमःप्रभा.
६	शर्कराप्रभा,	वालुकाप्रभा,	तमःप्रभा,	तमःतमःप्रभा.
७	,,	पंकप्रभा,	धूमप्रभा,	तमःप्रभा.
८	,,	,,	,,	तमःतमःप्रभा.
९	,,	,,	तमःप्रभा,	,,
१०	,,	धूमप्रभा,	,,	,,

आ दस भंगो साथे पूर्वोक्त चार विकल्पोनो संयोग करवाथी शर्कराप्रभाना संयोगवाळा चाळीश विकल्पो थाय छे.

१	वालुकाप्रभा,	पंकप्रभा,	धूमप्रभा,	तमःप्रभा.
२	,,	,,	,,	तमःतमःप्रभा.
३	वालुकाप्रभा,	पंकप्रभा,	तमःप्रभा,	तमःतमःप्रभा.
४	,,	धूमप्रभा,	,,	,,

आ चार भंगोनी साथे पूर्वोक्त चार विकल्पोनो संयोग करवाथी वालुकाप्रभाना संयोगवाळा सोळ विकल्पो थाय छे.

पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा, तमःतमःप्रभा.

आ एक भंग साथे पूर्वोक्त चार विकल्पोनो संयोग करवाथी पंकप्रभाना संयोगवाळा चार भांगा थाय छे. एटले ८०, ४०, १६ अने ४ ए बधा मळीने पांच नारकोना चतुःसंयोगी एकसो चाळीश विकल्पो थाय छे.

पांच संयोगी विकल्पो दर्शावे छे—पांच नैरयिकोनो पांचसंयोगी १–१–१–१–१ ए प्रमाणे एकज विकल्प थाय छे, तेथी ते द्वारा सात नरकपृथिवीना पांच संयोगी २१ विकल्पो थाय छे. ते आ प्रमाणे—

१	रत्नप्रभा,	शर्कराप्रभा,	वालुकाप्रभा,	पंकप्रभा,	धूमप्रभा.
२	,,	,,	,,	,,	तमःप्रभा.
३	,,	,,	,,	,,	तमतमा.
४	,,	,,	,,	धूमप्रभा,	तमःप्रभा.
५	,,	,,	,,	,,	तमःतमःप्रभा.
६	,,	,,	,,	तमःप्रभा,	,,
७	,,	,,	पंकप्रभा,	धूमप्रभा,	तमःप्रभा.
८	,,	,,	,,	,,	तमःतमःप्रभा.
९	रत्नप्रभा,	शर्कराप्रभा,	पंकप्रभा,	तमःप्रभा,	तमःतमःप्रभा.
१०	,,	,,	धूमप्रभा,	,,	,,
११	,,	वालुकाप्रभा,	पंकप्रभा,	धूमप्रभा;	तमःप्रभा.
१२	,,	,,	पंकप्रभा,	,,	तमःतमःप्रभा.
१३	,,	,,	,,	तमःप्रभा,	,,
१४	,,	,,	धूमप्रभा	,,	,,
१५	,,	पंकप्रभा,	,,	,,	,,

पूर्वोक्त एक विकल्पना योगे रत्नप्रभाना संयोगवाळा उपर कहेला पंदर विकल्पो थाय छे.

१	शर्कराप्रभा,	वालुकाप्रभा,	पंकप्रभा,	धूमप्रभा,	तमःप्रभा.
२	,,	,,	,,	,,	तमःतमःप्रभा.
३	,,	,,	,,	तमःप्रभा,	,,
४	शर्कराप्रभा,	वालुकाप्रभा,	धूमप्रभा,	तमःप्रभा,	तमःतमःप्रभा.
५	,,	पंकप्रभा,	,,	,,	,,

पूर्वोक्त एक विकल्पना योगे शर्कराप्रभाना संयोगवाळा उपरना पांच विकल्प थाय छे.

१ वालुकाप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा, तमःतमःप्रभा.

ए प्रमाणे वालुकाप्रभाना संयोगवाळो एक विकल्प थाय छे. १५, ५ अने १—ए बधा मळीने पंचसंयोगी एकवीश विकल्पो थाय छे. ७, ८४, २१०, १४०, अने २१ ए सर्व मळीने पांच नैरयिकना कुल चारसो ने बासठ विकल्पो थाय छे.

होज्जा ९; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १०; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा ११; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १२; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १३; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १४; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पंकप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा १५; अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे तमाए होज्जा १६; अहवा एगे सक्करप्पभाए जाव एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १७; अहवा एगे सक्करप्पभाए जाव एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १८; अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा १९; अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा २०; अहवा एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा २१।

१६. [प्र०] छब्भंते! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा–पुच्छा। [उ०] गंगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा, जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए पंच सक्करप्पभाए होज्जा; अहवा एगे रयणप्पभाए पंच वालुयप्पभाए होज्जा; जाव अहवा

एक धूमप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. ९ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक पंकप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक तमःतमःप्रभामां होय. १० अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक धूमप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. ११ अथवा एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक तमामां होय. १२ अथवा एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. १३ अथवा एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक अधःसप्तममां होय. १४ अथवा एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक धूमप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक अधःसप्तममां होय. १५ अथवा एक रत्नप्रभामां एक पंकप्रभामां यावत् एक अधःसप्तममां होय. १६ अथवा एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां यावत् एक तमामां होय. १७ अथवा एक शर्कराप्रभामां यावत् एक पंकप्रभामां एक धूमप्रभामां अने एक अधःसप्तममां होय. १८ अथवा एक शर्कराप्रभामां यावद् एक पंकप्रभामां एक तमामां अने एक अधःसप्तममां होय. १९ अथवा एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां एक धूमप्रभामां एक तमामां अने एक अधःसप्तममां होय. २० अथवा एक शर्कराप्रभामां एक पंकप्रभामां यावत् एक अधःसप्तममां होय. २१ अथवा एक वालुकाप्रभामां यावत् एक अधःसप्तममां होय.

छ नैरयिको.

१६. [प्र०] हे भगवन्! छ नैरयिको नैरयिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करता शुं रत्नप्रभामां होय?—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय! तेओ १ रत्नप्रभामां पण होय, ७ यावत् अधःसप्तम पृथिवीमां पण होय. [एक संयोगी सात विकल्प थया.]

द्विकसंयोगी १०५ विकल्पो.

१ *अथवा एक रत्नप्रभामां अने पांच शर्कराप्रभामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां अने पांच वालुकाप्रभामां पण होय. यावत् ६

---

१ धूमाए ग। २ तमाए क। ३ धूमप्पभाए घ, तमाए क–ङ। ४ रतणप्प– क। ५ –प्पभाए वा हो– घ–ङ।

* १६. द्विकसंयोगी विकल्पोनी रीति आ प्रमाणे छे–छ नैरयिकोना द्विकसंयोगी पांच विकल्पो थाय छे–२–४, ३–३, ४–२, १–५ अने ५–१. ए पांच विकल्पोने सात नरकना द्विकसंयोगी एकवीश भंगोनी साथे गुणता १०५ भंगो थाय छे. ते आ प्रमाणे—

१	रत्नप्रभा,	शर्कराप्रभा.	४	रत्नप्रभा,	धूमप्रभा.
२	,,	वालुकाप्रभा.	५	,,	तमःप्रभा.
३	,,	पंकप्रभा.	६	,,	तमःतमःप्रभा.

ए छ भंगोनी साथे पूर्वोक्त पांच विकल्पोने गुणवाथी रत्नप्रभाना संयोगवाळा त्रीश विकल्प थाय छे.

१	शर्कराप्रभा,	वालुकाप्रभा.	४	शर्कराप्रभा,	तमःप्रभा.
२	,,	पंकप्रभा.	५	,,	तमःतमःप्रभा.
३	,,	धूमप्रभा.			

ए पांच भंगो साथे पूर्वोक्त पांच विकल्पोने गुणतां शर्कराप्रभाना संयोगवाळा पचीश विकल्प थाय छे.

१	वालुकाप्रभा,	पंकप्रभा.	३	वालुकाप्रभा,	तमःप्रभा.
२	,,	धूमप्रभा.	४	,,	तमःतमःप्रभा.

ए चार भंगोनी साथे पूर्वोक्त पांच विकल्पोने गुणतां वालुकाप्रभाना संयोगवाळा वीश विकल्पो थाय छे.

१	पंकप्रभा,	धूमप्रभा.	३	पंकप्रभा,	तमःतमःप्रभा.
२	,,	तमःप्रभा.			

ए त्रण भंगोनी साथे पूर्वोक्त पांच विकल्पोनो गुणाकार करवाथी पंकप्रभाना संयोगवाळा पंदर विकल्प थाय छे.

१	धूमप्रभा,	तमःप्रभा.	२	धूमप्रभा,	तमःतमःप्रभा.

ए बे भंगोनी साथे पूर्वोक्त पांच विकल्पोने गुणतां धूमप्रभाना संयोगवाळा दस विकल्प थाय छे.

१	तमःप्रभा,	तमःतमःप्रभा.

ए एक भांगा साथे पूर्वोक्त पांच विकल्पोने गुणतां तमःप्रभाना संयोगवाळा पांच विकल्प थाय छे. ए बधा ३०–२५–१५–१०–५ मळीने छ नैरयिकोना द्विकसंयोगी एकसोने पांच विकल्पो थाय छे.

एगे रयणप्पभाए पंच अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा दो रयणप्पभाए चत्तारि सक्करप्पभाए होज्जा; जाव अहवा दो रयणप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा तिन्नि रयणप्पभाए तिन्नि [1]सक्करप्पभाए, एवं एएणं कमेणं जहा पञ्चण्हं [2]दुयासंजोगो तहा छण्ह वि भाणियव्वो, नवरं एक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो, जाव अहवा पंच तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि वालुयप्पभाए होज्जा; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि पंकप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए तिन्नि वालुयप्पभाए होज्जा, एवं एएणं कमेणं जहा पंचण्हं [3]तियासंजोगो भणिओ तहा छण्ह वि भाणियव्वो, नवरं एक्को [4]अहिओ उच्चारेयव्वो, सेसं तं चेव । चउक्कसंजोगो वि तहेव, [5]पंचगसंजोगो वि तहेव, नवरं एक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो, जाव पच्छिमो भंगो, अहवा दो वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा ।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे तमाए होज्जा; अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा; अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे पंकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा; अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे

अथवा एक रत्नप्रभामां अने पांच अधःसप्तम पृथिवीमां होय. १ अथवा बे रत्नप्रभामां अने चार शर्कराप्रभामां होय. यावद् ६ अथवा बे रत्नप्रभामां अने चार अधःसप्तम पृथिवीमां होय. १ अथवा त्रण रत्नप्रभामां अने त्रण शर्कराप्रभामां होय. ए प्रमाणे ए क्रम वडे जेम पांच नैरयिकोनो द्विकसंयोग कह्यो तेम छ नैरयिकोनो पण कहेवो. परन्तु अहीं एक अधिक गणवो. यावत् १०५ अथवा पांच तमामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय.

त्रिकसंयोगी विकल्पो.

* १ एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने चार वालुकाप्रभामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने चार पंकप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ५ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने चार अधःसप्तम पृथिवीमां होय. १ अथवा एक रत्नप्रभामां बे शर्कराप्रभामां अने त्रण वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे ए क्रमथी जेम पांच नैरयिकोनो त्रिकसंयोग कह्यो तेम छ नैरयिकोनो पण त्रिकसंयोग कहेवो, परन्तु विशेष ए छे के तेमां एक नैरयिक अधिक कहेवो, अने बाकी बधुं पूर्ववत् जाणवुं.

चतुःसंयोग अने पंचसंयोग.

ते प्रमाणे छ नारकोनो †चतुःसंयोग अने पंचसंयोग पण जाणवो. परन्तु तेमां एक नैरयिक अधिक गणवो. यावत् छेल्लो भंग—अथवा बे वालुकाप्रभामां एक पंकप्रभामां एक धूमप्रभामां एक तमःप्रभामां अने एक तमःतमःप्रभामां होय.

छसंयोगी विकल्पो.

१ ‡ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां यावत् एक तमामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां यावत् एक धूमप्रभामां अने एक अधःसप्तम नरकमां होय. ३ अथवा एक रत्नप्रभामां यावत् एक पंकप्रभामां एक तमामां अने एक अधःसप्तममां होय. ४ अथवा एक रत्नप्रभामां यावत् एक वालुकाप्रभामां एक धूमप्रभामां यावत् एक अधःसप्तम नरकमां होय. ५ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां

---

१ सक्कराए ग। २ दुयसं- क। ३ तियसं-क। ४ अब्भहिओ क। ५ पंचकसं-क।

* १६. त्रिकसंयोगी विकल्पोनी रीति आ प्रमाणे छे-छ नैरयिकोना १-१-४, १-२-३, २-१-३, १-३-२, २-२-२, ३-१-२, १-४-१, २-३-१, ३-२-१, अने ४-१-१ ए प्रमाणे त्रिकसंयोगी दश विकल्पो थाय छे. हवे सात नरकपृथिवीना त्रिकसंयोगी ३५ विकल्पो थाय छे, ते पांच नैरयिकोना त्रिकसंयोगी विकल्प प्रसंगे (पृ. १४५) दर्शाव्या छे. तेनी साथे उपर कहेला दश विकल्पोने गुणतां ३५० भंगो थाय छे.

† छ नैरयिकना चतुःसंयोगी दश विकल्पो थाय छे, ते आ प्रमाणे—१-१-१-३, १-१-२-२, १-२-१-२, २-१-१-२, १-१-३-१, १-२-२-१, २-१-२-१, १-३-१-१, २-२-१-१, ३-१-१-१. हवे रत्नप्रभादि सात नरकना चतुःसंयोगी पांत्रीश विकल्पो थाय छे, ते पांच नैरयिकना चतुःसंयोगी भांगाओना कथन प्रसंगे (पृ. १४६.) दर्शावेला छे, तेनी साथे उपर कहेला दश विकल्पोने गुणतां छ नैरयिकना चतुःसंयोगी ३५० भांगाओ थाय छे.

छ नैरयिकना पंचसंयोगी पांच विकल्पो थाय छे—१-१-१-१-२, १-१-१-२-१, १-१-२-१-१, १-२-१-१-१, २-१-१-१-१. हवे जे सात नरकपृथिवीना पंचसंयोगी एकवीश विकल्पो थाय छे. ते (पृ. १४७) दर्शावेला छे. तेने उपर कहेला पांच विकल्पो साथे गुणतां छ नैरयिकोना सात नरकपृथिवीने आश्रयी पांचसंयोगी १०५ विकल्पो थाय छे.

१	रत्नप्रभा,	शर्करा०,	वालुकाप्रभा,	पंकप्रभा,	धूम०,	तमःप्रभा.
२	,,	,,	,,	,,	,,	तमःतमःप्रभा.
३	,,	,,	,,	,,	तमःप्रभा,	,,
४	,,	,,	,,	धूमप्रभा,	,,	,,
५	रत्नप्रभा,	शर्कराप्रभा,	पंकप्रभा,	धूमप्रभा,	तमःप्रभा,	तमःतमःप्रभा.
६	,,	वालुकाप्रभा,	,,	,,	,,	,,
७	शर्कराप्रभा,	,,	,,	,,	,,	,,

ए प्रमाणे छ नैरयिकोनो छसंयोगी एकज विकल्प थाय छे. ते द्वारा सात नरक पृथिवीना छ संयोगी सात विकल्प थाय छे. ए प्रमाणे छ नैरयिकोना एक संयोगी ७, द्विकसंयोगी १०५, त्रिकसंयोगी ३५०, चतुःसंयोगी ३५०, पंचसंयोगी १०५, अने छ संयोगी ७ सर्वे मळी ९२४ विकल्पो थाय छे.

पंकप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए, जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

१७. [प्र०] सत्त भंते! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा० पुच्छा। [उ०] गंगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा, जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए छ सक्करप्पभाए होज्जा। एवं एएणं कमेणं जहा छण्हं दुयासंजोगो तहा सत्तण्ह वि भाणियव्वं, नवरं एगो अब्भहिओ संचारिज्जइ, सेसं तं चेव। तियासंजोगो, चउक्कसंजोगो, पंचसंजोगो, छक्कसंजोगो य छण्हं जहा तहा सत्तण्ह वि भाणियव्वं, नवरं एक्केक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो, जाव छक्कगसंजोगो। अहवा दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

१८. [प्र०] अट्ठ भंते! नेरतिया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा० पुच्छा। [उ०] गंगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा, जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए सत्त सक्करप्पभाए होज्जा। एवं दुयासंजोगो, जाव छक्कसंजोगो य जहा सत्तण्हं भणितो तहा अट्ठण्ह वि भाणियव्वो, नवरं एक्केक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो, सेसं तं चेव, जाव छक्कसंजोगस्स। अहवा तिन्नि

एक पंकप्रभामां यावत् एक अधःसप्तम नरकमां होय. ६ अथवा एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां यावत् एक अधःसप्तम नरकमां होय. ७ अथवा एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां यावत् एक अधःसप्तम नरकमां होय.

सात नैरयिको.

१७. [प्र०] हे भगवन्! सात नैरयिको नैरयिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करता [शुं रत्नप्रभामां होय?] इत्यादि संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गांगेय! [ते साते नैरयिको] रत्नप्रभामां पण होय अने यावद् अधःसप्तम नरकपृथिवीमां पण होय. [एक संयोगी सात विकल्प थया.]

द्विकसंयोगी विकल्पो.

* अथवा एक रत्नप्रभामां अने छ शर्कराप्रभामां होय. ए प्रमाणे ए क्रमथी जेम छ नैरयिकोनो द्विकसंयोग कह्यो तेम सात नैरयिकोनो पण जाणवो. पण विशेष ए छे के एक नैरयिकनो अधिक संचार करवो, बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. जेम छ नैरयिकोनो †त्रिकसंयोग, ‡चतुःसंयोग, $पंचसंयोग अने ¶षट्संयोग कह्यो तेम सात नैरयिकोनो पण जाणवो; परन्तु विशेष ए छे के एक एक नैरयिकनो अधिक संचार करवो, यावत् षट्कसंयोग–'अथवा बे शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां यावत् एक अधःसप्तम नरकमां होय' त्यांसुधी जाणवुं [सप्तसंयोगी एक विकल्प–] अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां यावत् एक अधःसप्तम नरकमां होय.

त्रिकसंयोग, चतुःसंयोग, पंचसंयोग अने छ संयोग.

सात संयोगी विकल्पो.

आठ नैरयिको.

१८. [प्र०] हे भगवन्! आठ नैरयिको नैरयिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करता शुं रत्नप्रभामां होय?–इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय! १ रत्नप्रभामां पण होय; यावद् ७ अधःसप्तम पृथिवीमां पण होय.§

द्विकसंयोगी विकल्पो.

अथवा १ 'एक रत्नप्रभामां अने सात शर्कराप्रभामां होय.' ए प्रमाणे जेम सात नैरयिकोनो **द्विकसंयोग, ††त्रिकसंयोग, ‡‡चतुष्कसंयोग,

---

१ रतण–क। २ चउक्कासं–क। ३ पंचासं–क। ४ छक्कासं–क। ५ छक्कसं–क। ६ छक्कासं–क। ७ छक्कसं–क।

१७. * सात नैरयिकना द्विकसंयोगी छ विकल्प थाय छे, जेम के, १–६, २–५, ३–४, ४–३, ५–२, ६–१. ते छ विकल्पवडे पूर्वे कहेला सात नरकना द्विकसंयोगी एकवीश भांगाने गुणतां सात नैरयिकना द्विकसंयोगी १२६ भांगा थाय छे.

† सात नैरयिकोना त्रिकसंयोगी पंदर विकल्पो थाय छे—१–१–५, १–२–४, २–१–४, १–३–३, २–२–३, ३–१–३, १–४–२, २–३–२, ३–२–२, ४–१–२, १–५–१, २–४–१, ३–३–१, ४–२–१, ५–१–१. हवे सात नरक पृथिवीना त्रिकसंयोगी ३५ विकल्पो पूर्वे (पृ० १४१.) जणाव्या छे, तेनी साथे उपर कहेला पंदर विकल्पोने गुणतां ५२५ भंगो थाय छे.

‡ सात नैरयिकोना चतुःसंयोगी १–१–१–४–इत्यादि वीश विकल्पो थाय छे, तेने पूर्वे जणावेला (पृ० १४३.) सात नरक पृथिवीना चतुःसंयोगी पांत्रीश भांगा साथे गुणतां ७०० विकल्पो थाय छे.

$ सात नैरयिकोना पंचसंयोगी १–१–१–१–३ इत्यादि पंदर विकल्पो थाय छे, तेने सात नरकना पूर्वे जणावेला (पृ० १४७.) पंचसंयोगी एकवीश विकल्पोनी साथे गुणतां ३१५ विकल्पो थाय छे.

¶ सात नैरयिकोना षट्संयोगी १–१–१–१–१–२ इत्यादि छ विकल्प थाय छे. तेने पूर्वे कहेला (पृ० १४९.) सात नरकपृथिवीना छसंयोगी सात विकल्पोनी साथे गुणतां ४२ विकल्पो थाय छे.

सातसंयोगी एक विकल्पने सात नरकपृथिवी साथे गुणतां सात विकल्प थाय छे. ७–१२६–५२५–७००–३१५–४२–१ सर्व मळीने सात नैरयिकोना १७१६ विकल्पो थाय छे.

१८. § ए प्रमाणे आठ नैरयिकोना एक संयोगी सात विकल्पो थया.

** आठ नैरयिकोना १–७ इत्यादि द्विकसंयोगी सात विकल्प थाय छे, तेने पूर्वे कहेला (पृ. १३९. सू. १२) सात नरकना द्विकसंयोगी एकवीश भंगो साथे गुणतां १४७ भांगा थाय छे.

†† आठ नैरयिकोना १–१–६ इत्यादि त्रिकसंयोगी एकवीश विकल्पो थाय छे. तेने पूर्वे जणावेला (पृ० १४१.) सात नरकना त्रिकसंयोगी पांत्रीश भंगो साथे गुणता ७३५ विकल्पो थाय छे.

‡‡ आठ नैरयिकोना १–१–१–५ इत्यादि चतुःसंयोगी ३५ विकल्पो थाय छे. तेने पूर्वे कहेला (पृ० १४३.) सात नरकना चतुःसंयोगी ३५ भांगानी साथे गुणतां १२२५ विकल्पो थाय छे.

सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा; अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे तमाए दो अहेसत्तमाए होज्जा; अहवा एगे रयणप्पभाए जाव दो तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। एवं संचारेयव्वं, जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

१९. [प्र०] नव भंते! नेरतिया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा किं० पुच्छा। [उ०] गंगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा; जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए अट्ठ सक्करप्पभाए होज्जा। एवं दुयासंजोगो, जाव सत्तगसंजोगो य जहा अट्ठण्हं भणियं तहा नवण्हं पि भाणियव्वं; नवरं एक्केक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो, सेसं तं चेव। पच्छिमो आलावगो—अहवा तिन्नि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

२०. [प्र०] दस भंते! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा० पुच्छा। [उ०] गंगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा; जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए नव सक्करप्पभाए होज्जा। एवं दुयासंजोगो जाव सत्तसंजोगो य जहा

*पंचसंयोग अने †षट्कसंयोग कह्यो तेम आठ नैरयिकोनो पण कहेवो. परन्तु विशेष ए के एक एक नैरयिकनो अधिक संचार करवो. बाकी बधुं छसंयोग सुधी पूर्व प्रमाणे जाणवुं. [छेल्लो विकल्प—] अथवा त्रण शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां यावत् एक अधःसप्तम नरकमां होय. *यावत् षट्कसंयोगी विकल्पो.*

१ ‡अथवा एक रत्नप्रभामां यावत् एक तमामां अने बे अधःसप्तम पृथिवीमां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां यावत् बे तमामां अने एक अधःसप्तम पृथिवीमां होय. ए प्रमाणे सर्वत्र संचार करवो. यावत् ७ अथवा बे रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां यावद् एक अधःसप्तम पृथिवीमां होय. [ए प्रमाणे ७, १४७, ७३५, १२२५, ७३५, १४७ अने ७. ए बधा मळीने आठ जीवने आश्रयी ३००३ विकल्पो थाय छे.] *सप्तसंयोगी विकल्प.*

१९. [प्र०] हे भगवन्! नव नैरयिको नैरयिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करता शुं रत्नप्रभामां होय—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय! ते नव नैरयिको १ रत्नप्रभामां होय, अने ए प्रमाणे यावद् ७ अधःसप्तम पृथिवीमां पण होय.$ *नव नैरयिको.*

अथवा 'एक रत्नप्रभामां अने आठ शर्कराप्रभामां पण होय' इत्यादि आठ नैरयिकोनो जेम ¶द्विकसंयोग [§त्रिकसंयोग, **चतुष्कसंयोग, ††पंचकसंयोग, ‡‡षट्कसंयोग,] यावत् $$सप्तकसंयोग. कह्यो तेम नव नैरयिकोनो पण कहेवो. परन्तु विशेष ए छे के एक एक नैरयिकनो अधिक संचार करवो. बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. तेनो छेल्लो भांगो—अथवा त्रण रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां एक वालुकाप्रभामां यावत् एक अधःसप्तम नरकमां होय. *द्विकसंयोगी विकल्पो.*

२०. [प्र०] हे भगवन्! दश नैरयिकोनैरयिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करता शुं १ रत्नप्रभामां होय के यावद् ७ अधःसप्तम पृथिवीमां होय? [उ०] हे गांगेय! ते दश नैरयिको १ रत्नप्रभामां पण होय, अने ए प्रमाणे यावद् ७ अधःसप्तम पृथिवीमां पण होय.§§ *दश नैरयिको.*

---

* १८. आठ नैरयिकोना १–१–१–१–५ इत्यादि पंचसंयोगी ३५ विकल्पो थाय छे, तेने सात नरकना पंचसंयोगी २१ भांगानी साथे गुणतां ७३५ विकल्पो थाय.

† आठ संख्याना छसंयोगी १–१–१–१–१–३ इत्यादि २१ विकल्पो थाय छे, तेने पूर्वे कहेला (पृ. १४९.) सात नरकना छसंयोगी सात भांगा साथे गुणतां १४७ विकल्पो थाय.

‡ आठ संख्याना सात संयोगी सात विकल्प थाय छे, तेने सात नरकना सात संयोगी एक विकल्पनी साथे गुणतां सात भंग थाय. एप्रमाणे ७–१४७–७३५–१२२५–७३५–१४७–७ सर्व मळीने आठ नैरयिकोना सात नरकने आश्रयी ३००३ भांगा थाय छे.

१९. $ नव नैरयिकोना आश्रयी एक संयोगी सात विकल्पो थया.

¶ नव संख्याना द्विकसंयोगी आठ विकल्पो थाय, तेने सात नरकना द्विकसंयोगी एकवीश विकल्पनी साथे गुणतां १६८ भांगा थाय छे.

§ नव संख्याना १–१–७ इत्यादि त्रिकयोगी २८ विकल्पो थाय, तेने सात नरकना त्रिकसंयोगी पांत्रीश विकल्पनी साथे गुणतां ९८० भांगा थाय छे.

** नव संख्याना चतुष्कयोगी १–१–१–६ इत्यादि ५६ विकल्प थाय, तेने सात नरकना चतुःसंयोगी ३५ विकल्प साथे गुणता १९६० भांगा थाय छे.

†† नव संख्याना १–१–१–१–५ इत्यादि पंचयोगी ७० विकल्पो थाय, तेने सात नरकना पंचसंयोगी एकवीश भांगा साथे गुणतां १४७० विकल्पो थाय छे.

‡‡ नव संख्याना षट्योगी १–१–१–१–१–४ इत्यादि ५६ विकल्पो थाय, तेने सात नरकना छसंयोगी सात विकल्पनी साथे गुणतां ३९२ भांगा थाय छे.

$$ नव संख्याना सप्तयोगी १–१–१–१–१–१–३ इत्यादि २८ विकल्पो थाय, तेने सात नरकना सप्तसंयोगी एक विकल्पनी साथे गुणतां २८ भांगा थाय छे. ए प्रमाणे ७–१६८–९८०–१९६०–१४७०–३९२–२८ मळीने पांच हजारने पांच विकल्पो थाय छे.

§§ २०. दश नारकना एक योगी सात विकल्प थाय.

नवण्हं; नवरं एकेको अब्भहिओ संचारेयव्वो, सेसं तं चेव। अपच्छिमआलावगो—अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

२१. [प्र०] संखेज्जा भंते! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा० पुच्छा। [उ०] गंगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा, जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा; एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा; एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा तिन्नि रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा। एवं एएणं कमेणं एकेको संचारेयव्वो, जाव अहवा दस रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा। एवं जाव अहवा दस रयणप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा संखेज्जा

द्विकसंयोगादि विकल्पो.

अथवा एक रत्नप्रभामां अने नव शर्कराप्रभामां होय—इत्यादि *द्विकसंयोग [तथा †त्रिकसंयोग, ‡चतुष्कसंयोग, $पंचकसंयोग, ¶षट्कसंयोग] यावत् §सप्तकसंयोग जेम नव नारकनो कह्यो तेम दस नैरयिकनो पण जाणवो. परन्तु विशेष ए छे के एक एक नैरयिकनो अधिक संचार करवो. बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. तेनो छेल्लो भंग—अथवा चार रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां यावत् एक अधःसप्तमनरकमां होय.

संख्यातनैरयिको.

२१. [प्र०] हे भगवन्! संख्याता नैरयिको नैरयिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करता शुं रत्नप्रभामां होय? इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय! **संख्याता नैरयिको १ रत्नप्रभामां पण होय अने यावद् ७ अधःसप्तम पृथिवीमां पण होय. [एक संयोगी सात विकल्प थया.]

द्विकसंयोगी विकल्पो.

१ अथवा एक रत्नप्रभामां होय अने संख्याता शर्कराप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ६ एक रत्नप्रभामां होय अने संख्याता अधःसप्तम पृथिवीमां पण होय. [छ विकल्प थया.] १ अथवा बे रत्नप्रभामां अने संख्याता शर्कराप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् ६ बे रत्नप्रभामां अने संख्याता अधःसप्तम पृथिवीमां पण होय. [छ विकल्प थया.] १ अथवा त्रण रत्नप्रभामां अने संख्याता शर्कराप्रभामां होय. ए

---

* दश संख्याना १-९ इत्यादि द्विकयोगी नव विकल्पो थाय, तेने सात नरकना द्विकसंयोगी एकवीश भांगा साथे गुणतां १८९ विकल्पो थाय छे.

† दश संख्याना १-१-८ इत्यादि त्रिकयोगी ३६ विकल्पो थाय छे. तेनी साथे सात नरकना त्रिकसंयोगी पांत्रीस विकल्पोने गुणतां १२६० भांगा थाय छे.

‡ दश संख्याना चतुष्कयोगी १-१-१-७ इत्यादि ८४ विकल्पो थाय, तेनी साथे सात नरकना ३५ भांगाने गुणतां २९४० भांगा थाय छे.

$ दशसंख्याना पंचयोगी १-१-१-१-६ इत्यादि १२६ विकल्पो थाय, तेने सात नरकना पंचसंयोगी एकवीश भांगानी साथे गुणतां २६४६ भांगा थाय छे.

¶ दशसंख्याना षट्कयोगी १-१-१-१-१-५ इत्यादि १२६ विकल्पो थाय छे, तेनी साथे सात नरकना छसंयोगी सात विकल्पोनी साथे गुणतां ८८२ भांगा थाय छे.

§ दश संख्याना सप्तयोगी १-१-१-१-१-१-४ इत्यादि ८४ विकल्पो थाय. अने सात नरकनो सप्तसंयोगी एकज भांगो थाय छे, माटे एकनी साथे गुणतां पण ८४ भांगा थाय छे. ए प्रमाणे ७-१८९-१२६०-२९४०-२६४६-८८२-८४ सर्व मळीने दश नैरयिकना ८००८ विकल्पो थाय छे.

२१. ** अहिं अग्यारथी मांडीने शीर्षप्रहेलिका सुधीनी संख्याने संख्याता जाणवा. तेमां एकयोगी सात ज विकल्प थाय छे. द्विकसंयोगमां संख्याताना बे विभाग करतां एक अने संख्याता, बे अने संख्याता, यावत् दश अने संख्याता—ए रीते दश विकल्प, तथा 'संख्याता' अने संख्याता मळीने अगीयार विकल्पो थाय छे. अने ते विकल्पो उपरनी रत्नप्रभादि पृथिवी साथे एकथी आरंभी संख्यात सुधीना अगीयार पदनो संचार करवाथी अने नीचेनी शर्कराप्रभादि साथे केवळ 'संख्यात'पदनो संचार करवाथी थाय छे. एथी विपरीत उपरनी पृथिवी साथे 'संख्यात'पदनो अने नीचेनी पृथिवी साथे एकादि पदनो संचार करवाथी जे भांगा थाय ते अहिं विवक्षित नथी. अर्थात्—एक रत्नप्रभामां अने संख्याता शर्कराप्रभामां, एक रत्नप्रभामां अने संख्याता वालुकप्रभामां होय—इत्यादि विकल्पो करवा, पण संख्याता रत्नप्रभामां अने एक शर्कराप्रभामां, संख्याता रत्नप्रभामां अने एक वालुकाप्रभामां होय—इत्यादि विकल्पो न करवा, केमके पूर्वना सूत्रोमां आज क्रम विवक्षित छे. आगळना सूत्रोमां दश वगेरे राशिओना बे भाग करी एकादि लघु संख्याओने पूर्वे मूकी छे, अने नवादि मोटी संख्याओने पछी मूकी छे, अर्थात् 'एक रत्नप्रभामां अने नव शर्कराप्रभामां'—ए प्रमाणे कह्युं छे. पण 'नव रत्नप्रभामां अने एक शर्कराप्रभामां'—एवा कोइ विकल्पो जणाव्या नथी. ए प्रमाणे अहिं पण उपरनी नरकपृथिवी साथे एकादि संख्यानो, अने नीचेनी नरकपृथिवी साथे संख्यातराशिनो संचार करवो. तेमां पाछलनी नरकपृथिवी साथेनी संख्यातराशिमांथी एकादि संख्याने ओछी करवामां आवे तोपण संख्यात राशिनुं संख्यातपणुं कायम रहे छे. तेमां रत्नप्रभानी साथे एकथी आरंभी संख्यात सुधीना अगीयार पदोनो अने बाकीनी पृथिवीओ साथे अनुक्रमे 'संख्यात'पदनो संचार करतां छासठ भांगा थाय छे—

एक.	संख्याता.	एक.	संख्याता.
१ रत्न०	शर्करा०	४ रत्न०	धूम०
२ ,,	वालुका०	५ ,,	तमा०
३ ,,	पंक०	६ ,,	तमतमा०

आ प्रमाणे बे अने संख्याता—इत्यादि दश विकल्पना बीजा साठ भांगा मळीने रत्नप्रभाना संयोगवाळा ६६ भांगा जाणवा. शर्कराप्रभानो बाकीनी नरकपृथिवीओ साथे योग करतां पांच विकल्प थाय, तेने पूर्वोक्त अगीयार विकल्प साथे गुणतां शर्कराप्रभाना संयोगवाळा ५५ विकल्पो थाय छे. ते प्रकारे वालुकाप्रभाना चुम्मालीस, पंकप्रभाना तेत्रीश, धूमप्रभाना बावीश अने तमःप्रभाना अगीयार विकल्पो थाय छे. बधा मळीने द्विकसंयोगी बसोने एकत्रीश विकल्प थाय छे.

रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, जाव अहवा संखेज्जा रयणप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्कर-प्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जहा रयणप्पभा उवरिमपुढवीहिं समं चारिया एवं सक्करप्पभा वि उवरिमपुढवीहिं समं चारियव्वा, एवं एक्केक्का पुढवी उवरिमपुढवीहिं समं चारेयव्वा, जाव अहवा संखेज्जा तमाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा; अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए संखेज्जा पंकप्पभाए होज्जा; जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा; जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए तिन्नि सक्करप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा; एवं एएणं कमेणं एक्केक्को संचारेयव्वो; अहवा एगे रय-णप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा; जाव अहवा एगे रयणप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए संखेज्जा

प्रमाणे ए क्रमथी एक एक नैरयिकनो अधिक संचार करवो. यावत् १ अथवा दस रत्नप्रभामां अने संख्याता शर्कराप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावद् ६ अथवा दस रत्नप्रभामां अने संख्याता अधःसप्तम पृथिवीमां होय. १ अथवा संख्याता रत्नप्रभामां अने संख्याता शर्कराप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावद् ६ अथवा संख्याता रत्नप्रभामां अने संख्याता अधःसप्तम पृथिवीमां होय. १ अथवा एक शर्कराप्रभामां अने संख्याता वालुकामां होय. ए प्रमाणे जेम रत्नप्रभापृथिवीनो बीजी पृथिवी साथे योग कर्यो तेम शर्कराप्रभा पृथिवीनो पण उपरनी बधी पृथिवीओ साथे योग करवो. ए प्रकारे एक एक पृथिवीनो उपरनी पृथिवीओ साथे योग करवो. यावद् अथवा संख्याता तमःप्रभामां अने संख्याता अधःसप्तम नरकमां पण होय. [ए प्रमाणे द्विकसंयोगी विकल्पो थया.]

त्रिकसंयोगी विकल्पो.

१ *अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने संख्याता वालुकाप्रभामां होय. २ अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने संख्याता पंकप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावत् अथवा एक रत्नप्रभामां एक शर्कराप्रभामां अने संख्याता अधःसप्तम पृथिवीमां होय. अथवा एक

१-प्पभाए ख- ग-घ। २-पुढवीएहिं ग-घ। ३ पुढवीएहिं ग-घ।

* त्रिकसंयोगमां 'रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा अने वालुकाप्रभा'-ए प्रथम त्रिकयोग छे. अने तेमां 'एक, एक अने संख्याता' ए प्रथम विकल्प छे. तेमां प्रथम पृथिवीमां एक जीव अने त्रीजी पृथिवीमां संख्याता जीव स्थापीने अने बीजी पृथिवीमां अनुक्रमे संख्याना विन्यासमां बेथी मांडीने दस सुधीनी संख्यानो तथा संख्यातपदनो योग करवाथी पूर्वना विकल्पनी साथे मळीने अगीयार विकल्पो थाय छे. त्यार बाद बीजी अने त्रीजी पृथिवीमां 'संख्यात'पद अने प्रथम पृथिवीमां बेथी मांडीने संख्यातपद सुधी संचार करतां दश विकल्प थाय छे. सर्व मळीने एकवीश विकल्पो थाय छे; ते आ प्रमाणे—

	रत्नप्रभा.	शर्कराप्रभा.	वालुका.
१.	१	१	संख्याता
२.	१	२	,,
३.	१	३	,,
४.	१	४	,,
५.	१	५	,,
६.	१	६	,,
७.	१	७	,,
८.	१	८	,,
९.	१	९	,,
१०.	१	१०	,,

	रत्नप्रभा.	शर्कराप्रभा.	वालुका.
११.	१	संख्याता	संख्याता.
१२.	२	,,	,,
१३.	३	,,	,,
१४.	४	,,	,,
१५.	५	,,	,,
१६.	६	,,	,,
१७.	७	,,	,,
१८.	८	,,	,,
१९.	९	,,	,,
२०.	१०	,,	,,
२१.	संख्याता.	,,	,,

ते एकवीश विकल्पोनी साथे सात नरकपृथिवीना त्रिकसंयोगी पांत्रीश पदोनो गुणाकार करवाथी त्रिकसंयोगी सातसो ने पांत्रीश विकल्पो थाय छे.

आदिनी चार नरकपृथिवीवडे प्रथम चतुष्कसंयोग थाय छे. तेमां प्रथमनी त्रण पृथिवीमां 'एक एक अने चोथी पृथिवीमां संख्याता'-ए प्रमाणे प्रथम विकल्प थाय छे. त्यार बाद पूर्वोक्त क्रमथी त्रीजी पृथिवीमां बेथी मांडीने संख्यातपदनो संचार करतां बीजा दश विकल्पो थाय छे. एम बीजी तथा प्रथम पृथिवीमां पण बेथी मांडीने संख्यातपदनो संचार करतां वीश विकल्पो थाय, अने बधा मळीने एकत्रीश विकल्प थाय. ते एकत्रीश विकल्पोनी साथे सात नरकना चतुष्कयोगी पांत्रीश पदोनो गुणाकार करतां चतुःसंयोगी एक हजार पंचाशी विकल्पो थाय छे.

आदिनी पांच पृथिवीसाथे प्रथम पंचसंयोग थाय छे, अने तेमां आदिनी चार पृथिवीमां 'एक एक अने पांचमी पृथिवीमां संख्याता'-एम प्रथम विकल्प थाय, त्यार बाद पूर्वोक्त क्रमथी चोथी नरकपृथिवीमां अनुक्रमे बेथी मांडीने संख्यात पद सुधी संचार करवो. ए रीते बाकीनी त्रीजी, बीजी अने प्रथम पृथिवीमां पण संचार करवो. एम बधा मळीने पंचकयोगी एकताळीश विकल्पो थाय छे. तेनी साथे सात नरकपृथिवीना पंचसंयोगी एकवीस पदोनो गुणाकार करवाथी आठसोने एकसठ विकल्पो थाय छे.

षट्कसंयोगमां पूर्वोक्त क्रमथी एकावन विकल्पो थाय छे, अने तेनी साथे सात नरकना षट्कयोगी सात पदोनो गुणाकार करवाथी त्रणसो ने सत्तावन विकल्पो थाय छे.

सप्तसंयोगमां तो पूर्वोक्त भावनाथी एकसठ विकल्प थाय छे. ए प्रमाणे संख्यात नैरयिकोने आश्रयी ७, २३१, ७३५, १०८५, ८६१, ३५७ तथा ६१-बधा मळीने ३३२७ विकल्पो थाय छे.

अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा; जाव अहवा दो रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा तिन्नि रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा; एवं एएणं कमेणं एक्केक्को रयणप्पभाए संचारेयव्वो; जाव अहवा संखेज्जा रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए संखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा; जाव अहवा संखेज्जा रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए संखेज्जा पंकप्पभाए होज्जा; जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए दो वालुयप्पभाए संखेज्जा पंकप्पभाए होज्जा; एवं एएणं कमेणं तियासंजोगो, चउक्कसंजोगो, जाव सत्तगसंजोगो य जहा दसण्हं तहेव भाणियव्वो। पच्छिमो आलावगो सत्तसंजोगस्स–अहवा संखेज्जा रयणप्पभाए संखेज्जा सक्करप्पभाए जाव संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।

२२. [प्र०] असंखेज्जा भंते! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं० पुच्छा। [उ०] गंगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा, जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए असंखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा; एवं दुयासंजोगो, जाव सत्तगसंजोगो य जहा संखेज्जाणं भणिओ तहा असंखेज्जाण वि भाणियव्वो, नवरं 'असंखेज्जाओ' अब्भहिओ भाणियव्वो, सेसं तं चेव, जाव सत्तगसंजोगस्स पच्छिमो आलावगो–अहवा असंखेज्जा रयणप्पभाए असंखेज्जा सक्करप्पभाए जाव असंखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।

२३. [प्र०] उक्कोसेणं भंते! नेरइआ नेरइयप्पवेसणएणं० पुच्छा। [उ०] गंगेया! सव्वे वि ताव रयणप्पभाए होज्जा; अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य होज्जा; अहवा रयणप्पभाए य वालुयप्पभाए य होज्जा; जाव अहवा रयणप्पभाए य अहेसत्तमाए य होज्जा; अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य वालुयप्पभाए य होज्जा; एवं जाव अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य अहेसत्तमाए य होज्जा; अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए य होज्जा; जाव अहवा रयणप्पभाए वालुयप्प-

रत्नप्रभामां बे शर्कराप्रभामां अने संख्याता वालुकाप्रभामां होय. अथवा एक रत्नप्रभामां बे शर्कराप्रभामां अने संख्याता अधःसप्तमपृथिवीमां होय. अथवा एक रत्नप्रभामां त्रण शर्कराप्रभामां अने संख्याता वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे ए क्रमथी एक एक नैरयिकनो संचार करवो. अथवा एक रत्नप्रभामां संख्याता शर्कराप्रभामां अने संख्याता वालुकाप्रभामां होय, यावद् अथवा एक रत्नप्रभामां संख्याता वालुकाप्रभामां अने संख्याता अधःसप्तमपृथिवीमां होय. अथवा बे रत्नप्रभामां संख्याता शर्कराप्रभामां अने संख्याता वालुकाप्रभामां होय. यावद् अथवा बे रत्नप्रभामां संख्याता शर्कराप्रभामां अने संख्याता अधःसप्तमपृथिवीमां होय. अथवा त्रण रत्नप्रभामां संख्याता शर्कराप्रभामां अने संख्याता वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे ए क्रमथी रत्नप्रभामां एक एकनो संचार करवो. यावत् अथवा संख्याता रत्नप्रभामां संख्याता शर्कराप्रभामां अने संख्याता वालुकाप्रभामां होय. यावद् अथवा संख्याता रत्नप्रभामां संख्याता शर्कराप्रभामां अने संख्याता अधःसप्तमपृथिवीमां होय. अथवा एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां अने संख्याता पंकप्रभामां होय. यावद् अथवा एक रत्नप्रभामां एक वालुकाप्रभामां अने संख्याता अधःसप्तमपृथिवीमां होय. अथवा एक रत्नप्रभामां बे वालुकाप्रभामां अने संख्याता पंकप्रभामां होय. ए प्रमाणे ए क्रमथी त्रिकसंयोग, चतुष्कसंयोग, यावत् सप्तकसंयोग जेम दस नैरयिकोनो कह्यो तेम कहेवो. तेनो छेल्लो आलापक–अथवा संख्याता रत्नप्रभामां संख्याता शर्कराप्रभामां अने यावत् संख्याता अधःसप्तमपृथिवीमां होय.

असंख्यात नैरयिको.

२२. [प्र०] हे भगवन्! असंख्यात नैरयिको नैरयिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करता शुं रत्नप्रभामां होय?—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय! १ रत्नप्रभामां पण होय अने यावत् ७ अधःसप्तमपृथिवीमां पण होय. * १ अथवा एक रत्नप्रभामां अने असंख्याता शर्कराप्रभामां होय. ए प्रमाणे जेम संख्याता नैरयिकोनो द्विकसंयोग, यावत् सप्तकसंयोग कह्यो तेम असंख्यातानो पण कहेवो. पण विशेष ए के अहिं 'असंख्याता' पद कहेवुं. बाकी बधुं तेज प्रमाणे जाणवुं, यावत् छेल्लो आलापक–अथवा असंख्याता रत्नप्रभामां असंख्याता शर्कराप्रभामां यावद् असंख्याता अधःसप्तमपृथिवीमां पण होय.

द्विकसंयोगादि विकल्पो.

उत्कृष्टप्रवेशनक. द्विकसंयोग. त्रिकसंयोग.

२३. [प्र०] हे भगवन्! नैरयिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करता नैरयिको उत्कृष्टपदे शुं रत्नप्रभामां होय?—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय! १ सर्व नैरयिको उत्कृष्टपदे रत्नप्रभामां होय. [द्विकसंयोगी छ विकल्प–] १ अथवा रत्नप्रभामां अने शर्कराप्रभामां होय. २ अथवा रत्नप्रभा अने वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावद् अथवा ६ रत्नप्रभा अने अधःसप्तमपृथिवीमां पण होय. [त्रिकसंयोगी १५ विकल्प–] १ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा अने वालुकाप्रभामां होय. ए प्रमाणे यावद् ५ रत्नप्रभा शर्कराप्रभा अने अधःसप्तमपृथिवीमां होय. ६ अथवा रत्नप्रभा वालुकाप्रभा अने पंकप्रभामां पण होय. यावद् १० अथवा रत्नप्रभा वालुकाप्रभा अने अधःसप्तमपृथिवीमां होय.

---

१ सक्करप्पभाए क। २ चउक्कासं–क। ३ सत्तासं–क। ४ सत्तासं–क।

* असंख्याता नैरयिकोने आश्रयी एकयोगादि विकल्पो आ प्रमाणे छे—७, २५२, ८०५, ११९०, ९४५, ३९२, ६७–बधा मळीने ३६५८ विकल्पो थाय छे.

भाए अहेसत्तमाए य होज्जा; अहवा रयणप्पभाए पंकप्पभाए धूमाए होज्जा, एवं रयणप्पभं अमुयंतेसु जहा तिण्हं तियासंजोगो भणिओ तहा भाणियव्वं जाव अहवा रयणप्पभाए तमाए य अहेसत्तमाए य होज्जा। अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए य होज्जा; अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए य होज्जा; जाव अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए अहेसत्तमाए य होज्जा; अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए य होज्जा; एवं रयणप्पभं अमुयंतेसु जहा चउण्हं [1]चउक्कगसंजोगो भणितो तहा भाणियव्वं, जाव अहवा रयणप्पभाए धूमप्पभाए तमाए अहेसत्तमाए य होज्जा। अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए य होज्जा १; अहवा रयणप्पभाए जाव पंकप्पभाए तमाए य होज्जा २; अहवा रयणप्पभाए जाव पंकप्पभाए अहेसत्तमाए य होज्जा ३; अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए तमाए य होज्जा ४; एवं रयणप्पभं अमुयंतेसु जहा पंचण्हं [2]पंचगसंजोगो तहा भाणियव्वं; जाव अहवा रयणप्पभाए पंकप्पभाए जाव अहेसत्तमाए य होज्जा; अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए जाव धूमप्पभाए तमाए य होज्जा १; अहवा रयणप्पभाए जाव धूमप्पभाए अहेसत्तमाए य होज्जा २; अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए जाव पंकप्पभाए तमाए य अहेसत्तमाए य होज्जा ३; अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए तमाए अहेसत्तमाए य होज्जा ४; अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए पंकप्पभाए जाव अहेसत्तमाए य होज्जा ५; अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए जाव अहेसत्तमाए होज्जा ६; अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य जाव अहेसत्तमाए य होज्जा ७।

२४. [प्र०] एयस्स णं भंते! रयणप्पभापुढविनेरइयप्पवेसणगस्स सक्करप्पभापुढवि– जाव अहे [3]सत्तमापुढविनेरइयप्पवेसणगस्स कयरे– कयरे जाव विसेसाहिया वा? [उ०] गंगेया! सव्वत्थोवे अहेसत्तमापुढविनेरइयपवेसणए, तमापुढविनेरइयपवेसणए असंखेज्जगुणे; एवं पडिलोमगं जाव रयणप्पभापुढविनेरइयपवेसणए असंखेज्जगुणे।

२५. [प्र०] तिरिक्खजोणियपवेसणए णं भंते! कतिविहे पण्णत्ते? [उ०] गंगेया! पंचविहे पन्नत्ते, तं जहा–एगिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए, जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियप्पवेसणए।

११ अथवा रत्नप्रभा पंकप्रभा अने धूमप्रभामां होय. ए प्रमाणे जेम रत्नप्रभाने मुक्या शिवाय त्रण नैरयिकोनो त्रिकसंयोग कह्यो तेम अहीं कहेवुं. यावद् १५ अथवा रत्नप्रभा, तमःप्रभा अने तमःतमःप्रभामां पण होय.

चतुःसंयोग.

[चतुःसंयोगी २० विकल्प–] १ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा वालुकाप्रभा अने पंकप्रभामां होय. २ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा वालुकाप्रभा अने धूमप्रभामां होय. यावत् ४ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा वालुकाप्रभा अने अधःसप्तमपृथिवीमां पण होय. ५ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा पंकप्रभा अने धूमप्रभामां होय. ए प्रमाणे रत्नप्रभाने मूक्या शिवाय जेम चार नैरयिकोनो चतुष्कसंयोग कह्यो छे तेम अहीं कहेवो. यावद् २० अथवा रत्नप्रभा धूमप्रभा तमःप्रभा अने तमःतमःप्रभामां होय.

पंचसंयोग.

[पंचसंयोगी १५ विकल्प–] १ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा वालुकाप्रभा पंकप्रभा अने धूमप्रभामां होय. २ अथवा रत्नप्रभा यावत् पंकप्रभा अने तम प्रभामां होय. ३ अथवा रत्नप्रभा यावत् पंकप्रभा अने अध.सप्तमपृथिवीमां होय. ४ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा वालुकाप्रभा धूमप्रभा अने तमःप्रभामां होय. ए प्रमाणे रत्नप्रभाने छोड्या शिवाय जेम पांच नैरयिकोनो पंचसंयोग कह्यो तेम कहेवो. यावद् १५ अथवा रत्नप्रभा पंकप्रभा यावद् अधःसप्तमपृथिवीमां होय.

षट्कसंयोग.

[षट्कसंयोगी छ विकल्प–] १ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा यावत् धूमप्रभा अने तमःप्रभामां होय. २ अथवा रत्नप्रभा यावद् धूमप्रभा अने अधःसप्तमपृथिवीमां होय. ३ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा यावत् पंकप्रभा तमःप्रभा अने अधःसप्तम पृथिवीमां होय. ४ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा वालुकाप्रभा धूमप्रभा तमःप्रभा अने तमःतमःप्रभामां होय. ५ अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा पंकप्रभा यावद् अधःसप्तमपृथिवीमां होय. ६ अथवा रत्नप्रभा वालुकाप्रभा यावद् अधःसप्तमपृथिवीमां होय.

सप्तसंयोग.

[सप्तसंयोगी १ विकल्प–] अथवा रत्नप्रभा शर्कराप्रभा, यावद् अधःसप्तमपृथिवीमां होय. [ए रीते उत्कृष्ट पदना १–६–१५–२०–१५–६–१ मळी ६४ विकल्पो थाय छे.]

नैरयिकप्रवेशनक अल्पबहुत्व.

२४. [प्र०] हे भगवन्! रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकप्रवेशनक, शर्कराप्रभापृथिवीनैरयिकप्रवेशनक, यावद् अधःसप्तमपृथिवीनैरयिकप्रवेशनकमां कया प्रवेशनको कया प्रवेशनकोथी यावद् विशेषाधिक छे? [उ०] हे गांगेय! सौथी अल्प अधःसप्तमपृथिवीनैरयिकप्रवेशनक छे, तेना करतां तमापृथिवीनैरयिकप्रवेशनक असंख्येयगुण छे. ए प्रमाणे विपरीत क्रमथी यावत् रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकप्रवेशनक असंख्यातगुण छे.

तिर्यंचयोनिकप्रवेशनक.

तिर्यंचप्रवेशनक प्रकार.

२५. [प्र०] हे भगवन्! तिर्यंचयोनिकप्रवेशनक केटला प्रकारे कह्युं छे? [उ०] हे गांगेय! पांच प्रकारे कह्युं छे. ते आ प्रमाणे –एकेन्द्रियतिर्यंचयोनिकप्रवेशनक, यावत् पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिकप्रवेशनक.

---

१ चउक्कसं– क। २ पंचकसं– घ। ३–सत्तमपु– क।

२६. [प्र०] एगे भंते ! तिरिक्खजोणिए तिरिक्खजोणियप्पवेसणएणं पविसमाणे किं एगिंदिएसु होज्जा, जाव पंचिंदिएसु होज्जा ? [उ०] गंगेया ! एगिंदिएसु वा होज्जा; जाव पंचिंदिएसु वा होज्जा ।

२७. [प्र०] दो भंते ! तिरिक्खजोणिया० पुच्छा । [उ०] गंगेया ! एगिंदिएसु वा होज्जा, जाव पंचिंदिएसु वा होज्जा । अहवा एगे एगिंदिएसु होज्जा एगे बेइंदिएसु होज्जा, एवं जहा नेरइयप्पवेसणए तहा तिरिक्खजोणियप्पवेसणए वि भाणियव्वे, जाव असंखेज्जा ।

२८. [प्र०] उक्कोसा भंते ! तिरिक्खजोणिया० पुच्छा । [उ०] गंगेया ! सव्वे वि ताव एगिंदिएसु होज्जा, अहवा एगिंदिएसु वा बेइंदिएसु वा होज्जा । एवं जहा नेरतिया चारिया तहा तिरिक्खजोणिया वि चारेयव्वा । एगिंदिया अमुयंतेसु दुयासंजोगो, तियासंजोगो, चउक्कसंजोगो, पंचसंजोगो उवउंजिऊण भाणियव्वो, जाव अहवा एगिंदिएसु वा, बेइंदिय० जाव पंचिंदिएसु वा होज्जा ।

२९. [प्र०] एयस्स णं भंते ! एगिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणगस्स, जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणगस्स य कयरे कयरे— जाव विसेसाहिया वा ? [उ०] गंगेया ! सव्वत्थोवे पंचिंदियतिरिक्खजोणियप्पवेसणए, चउरिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए विसेसाहिए, तेइंदिय० विसेसाहिए, बेइंदिय० विसेसाहिए, एगिंदियतिरिक्ख० विसेसाहिए ।

३०. [प्र०] मणुस्सप्पवेसणए णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ? [उ०] गंगेया ! दुविहे पन्नत्ते, तं जहा— संमुच्छिममणुस्सप्पवेसणए, गब्भवक्कंतियमणुस्सपवेसणए य ।

३१. [प्र०] एगे भंते ! मणुस्से मणुस्सप्पवेसणएणं पविसमाणे किं संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा, गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा ? [उ०] गंगेया ! संमुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु वा होज्जा ।

एक तिर्यंचयोनिक.

२६. [प्र०] हे भगवन् ! एक तिर्यंचयोनिक जीव तिर्यंचयोनिकप्रवेशनकवडे प्रवेश करतो शुं एकेन्द्रियोमां होय के यावत् पंचेन्द्रियोमां होय ? [उ०] हे गांगेय ! *१ एक तिर्यंचयोनिक जीव एकेन्द्रियमां होय अने यावत् ५ पंचेन्द्रियमां पण होय.

बे तिर्यंचयोनिको.

२७. [प्र०] हे भगवन् ! बे तिर्यंचयोनिक जीवो संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! १ एकेन्द्रियोमां पण होय अने यावत् ५ पंचेन्द्रियोमां पण होय. अथवा एक एकेन्द्रियमां अने एक बेइन्द्रियमां पण होय. ए प्रमाणे जेम नैरयिकप्रवेशनकमां कह्युं तेम तिर्यंचयोनिकप्रवेशनकमां यावत् असंख्येय तिर्यंचयोनिको सुधी कहेवुं.

यावत् असंख्याता तिर्यंचो.

उत्कृष्ट तिर्यंच योनिकप्रवेशनक.

२८. [प्र०] हे भगवन् ! तिर्यंचयोनिको उत्कृष्टपणे [शुं एकेन्द्रियोमां होय के यावत् पंचेन्द्रियोमां होय ?] ए प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! ते बधा एकेन्द्रियोमां होय. अथवा एकेन्द्रियो अने बेइन्द्रियोमां पण होय. ए प्रमाणे जेम नैरयिकोनो संचार कर्यो तेम तिर्यंचयोनिकोनो पण संचार करवो. एकेन्द्रियोने मुक्या सिवाय द्विकसंयोग, त्रिकसंयोग, चतुष्कसंयोग अने पंचकसंयोग उपयोगपूर्वक कहेवो. यावत् अथवा एकेन्द्रियोमां बेइन्द्रियोमां यावत् पंचेन्द्रियोमां पण होय.

तिर्यंचयोनिकप्रवेशनकाल्पबहुत्व.

२९. [प्र०] हे भगवन् ! एकेन्द्रियतिर्यंचयोनिकप्रवेशनक, यावत् पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिकप्रवेशनकमां कयुं प्रवेशनक कोनाथी यावद् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गांगेय ! पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिकप्रवेशनक सौथी अल्प छे, तेथी चउरिन्द्रियतिर्यंचयोनिकप्रवेशनक विशेषाधिक छे, तेना करतां त्रीन्द्रियतिर्यंचयोनिकप्रवेशनक विशेषाधिक छे, तेना करतां बेइन्द्रियतिर्यंचयोनिकप्रवेशनक विशेषाधिक छे, अने तेना करतां एकेन्द्रियतिर्यंचयोनिकप्रवेशनक विशेषाधिक छे.

मनुष्यप्रवेशनक.

३०. [प्र०] हे भगवन् ! मनुष्यप्रवेशनक केटला प्रकारे कह्युं छे ? [उ०] हे गांगेय ! बे प्रकारे कह्युं छे, ते आ प्रमाणे—संमूर्च्छिममनुष्यप्रवेशनक अने गर्भजमनुष्यप्रवेशनक.

एक मनुष्य.

३१. [प्र०] हे भगवन् ! मनुष्यप्रवेशनकवडे प्रवेश करतो एक मनुष्य शुं संमूर्च्छिम मनुष्योमां होय के गर्भज मनुष्योमां होय ? [उ०] हे गांगेय ! ते संमूर्च्छिम मनुष्योमां पण होय अने गर्भज मनुष्योमां पण होय.

१-२ बेंदियेसु क । ३ चउक्कासं- क । ४ पंचासं- क ।

२६. * यद्यपि अहिं 'एक जीव एकेन्द्रियमां उत्पन्न थाय' एम कह्युं, तेमां ए विचारणीय छे के एकेन्द्रियोमां एक जीव कदापि उत्पन्न थतो नथी, परंतु प्रतिसमय अनन्त जीवो उत्पन्न थाय छे; तोपण विजातीय देवादिभवथी नीकळीने जे एकेन्द्रियमां उत्पन्न थाय ते प्रवेशनक कहेवाय छे, ते अपेक्षाए एक जीव पण लाभे. प्रवेशनक एटले जे विजातीय भवथी आवीने विजातिमां उत्पन्न थाय. सजातीय जीव सजातिमां आवीने उत्पन्न थाय, ते तो तेमां प्रविष्ट छे माटे ते प्रवेशनक न कहेवाय. हवे एक जीव अनुक्रमे एकेन्द्रियादि पांच स्थळे आवी उत्पन्न थाय त्यारे तेना पांच विकल्पो थाय. बे जीवो पण एक एक स्थळे साथे उत्पन्न थाय तो पण पांच ज विकल्पो थाय, अने द्विकसंयोगी दश विकल्पो थाय, हवे त्रणथी मांडीने असंख्यात तिर्यंचयोनिकोनुं प्रवेशनक नैरयिकप्रवेशनकनी पेठे जाणवुं, परन्तु नारको सात नरकपृथिवीमां उत्पन्न थाय अने तिर्यंचो एकेन्द्रियादि पांच स्थानकोमां उत्पन्न थाय, माटे भांगानी संख्या भिन्न भिन्न थाय, ते बुद्धिमाने स्वयं विचारी लेवा. यद्यपि अहीं अनन्त एकेन्द्रियो उत्पन्न थाय छे, परन्तु उपर बतावेलुं प्रवेशनकनुं लक्षण असंख्यात जीवोमां ज घटी शके छे माटे असंख्यात सुधी प्रवेशनक जाणवुं.

३२. [प्र०] दो भंते ! मणुस्सा० पुच्छा । [उ०] गंगेया ! संमुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु वा होज्जा । अहवा एगे संमुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा एगे गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु वा होज्जा, एवं एएणं कमेणं जहा नेरइयपवेसणए तहा मणुस्सपवेसणए वि भाणियव्वे, जाव दस ।

३३. [प्र०] संखेज्जा भंते ! मणुस्सा० पुच्छा । [उ०] गंगेया ! संमुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु वा होज्जा । अहवा एगे संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु वा होज्जा; अहवा दो संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा; एवं एक्केक्कं [1]उस्सारिंतेसु जाव अहवा संखेज्जा संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा ।

३४. [प्र०] असंखेज्जा भंते ! मणुस्सा० पुच्छा । [उ०] गंगेया ! सव्वे वि ताव संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा । अहवा असंखेज्जा संमुच्छिममणुस्सेसु एगे गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा; अहवा असंखेज्जा संमुच्छिममणुस्सेसु दो गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा; एवं जाव असंखेज्जा संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु होज्जा ।

३५. [प्र०] उक्कोसा भंते ! मणुस्सा० पुच्छा । [उ०] गंगेया ! सव्वे वि ताव संमुच्छिममणुस्सेसु होज्जा, अहवा संमुच्छिममणुस्सेसु य गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु वा होज्जा ।

३६. [प्र०] एयस्स णं भंते ! संमुच्छिममणुस्सपवेसणगस्स गब्भवक्कंतियमणुस्सपवेसणगस्स य कयरे कयरे— जाव विसेसाहिया ? [उ०] गंगेया ! सव्वत्थोवे गब्भवक्कंतियमणुस्सपवेसणए, संमुच्छिममणुस्सप्पवेसणए असंखेज्जगुणे ।

३७. [प्र०] देवपवेसणए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? [उ०] गंगेया ! चउव्विहे पन्नत्ते, तं जहा—भवणवासिदेवपवेसणए, जाव वेमाणियदेवपवेसणए ।

३८. [प्र०] एगे भंते ! देवे देवपवेसणएणं पविसमाणे किं भवणवासीसु होज्जा, वाणमंतर—जोइसिय—वेमाणिएसु होज्जा ? [उ०] गंगेया ! भवणवासीसु वा होज्जा, वाणमंतर—जोइसिय—वेमाणिएसु वा होज्जा ।

बे मनुष्यो.
३२. [प्र०] हे भगवन् ! बे मनुष्यो मनुष्यप्रवेशनकवडे प्रवेश करता—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! बे मनुष्यो संमूर्च्छिम मनुष्योमां पण होय अने गर्भज मनुष्योमां पण होय. अथवा एक संमूर्च्छिम मनुष्यमां होय अने एक गर्भजमनुष्यमां होय. ए प्रमाणे ए क्रमथी जेम नैरयिकप्रवेशनक कह्युं तेम मनुष्यप्रवेशनक पण यावद् दश मनुष्यो सुधी कहेवुं.
दश मनुष्यो.

संख्याता मनुष्यो.
३३. [प्र०] हे भगवन् ! संख्याता मनुष्यो मनुष्यप्रवेशनकवडे प्रवेश करता—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! तेओ संमूर्च्छिम मनुष्यमां पण होय अने गर्भज मनुष्यमां पण होय. अथवा एक संमूर्च्छिम मनुष्योमां होय अने संख्याता गर्भज मनुष्योमां होय. अथवा बे संमूर्च्छिम मनुष्योमां होय अने संख्याता गर्भज मनुष्योमां होय. ए प्रमाणे एक एक वधारता यावद् अथवा संख्याता संमूर्च्छिम मनुष्योमां अने संख्याता गर्भज मनुष्योमां होय.

असंख्याता मनुष्यो.
३४. [प्र०] हे भगवन् ! असंख्याता मनुष्यो संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! ते बधा संमूर्च्छिम मनुष्योमां होय. अथवा असंख्याता संमूर्च्छिम मनुष्योमां होय अने एक गर्भज मनुष्योमां होय. अथवा असंख्याता संमूर्च्छिम मनुष्योमां होय अने बे गर्भज मनुष्योमां होय. ए प्रमाणे यावत् असंख्याता संमूर्च्छिम मनुष्योमां होय अने संख्याता गर्भज मनुष्योमां होय.

उत्कृष्ट मनुष्य-प्रवेशनक.
३५. [प्र०] हे भगवन् ! मनुष्यो उत्कृष्टपणे [कया प्रवेशनकमां होय ?] ए संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! ते बधाय संमूर्च्छिम मनुष्योमां होय. अथवा संमूर्च्छिम मनुष्यो अने गर्भज मनुष्योमां पण होय.

मनुष्यप्रवेशनक अल्पबहुत्व.
३६. [प्र०] हे भगवन् ! संमूर्च्छिममनुष्यप्रवेशनक अने गर्भजमनुष्यप्रवेशनकमां कयुं प्रवेशनक कोनाथी यावद् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गांगेय ! सौथी अल्प गर्भजमनुष्य प्रवेशनक छे, अने संमूर्च्छिम मनुष्यप्रवेशनक असंख्येयगुण छे.

देवप्रवेशनक.

देवप्रवेशनकना प्रकार.
३७. [प्र०] हे भगवन् ! देवप्रवेशनक केटला प्रकारे कह्युं छे ? [उ०] हे गांगेय ! चार प्रकारे कह्युं छे. ते आ प्रमाणे—१ भवनवासिदेवप्रवेशनक, यावद् ४ वैमानिकदेवप्रवेशनक.

एक देव.
३८. [प्र०] हे भगवन् ! एक देव देवप्रवेशनकद्वारा प्रवेश करतो शुं भवनवासिमां होय, वानव्यतरमां होय, ज्योतिषिकमां होय के वैमानिकमां होय ? [उ०] हे गांगेय ! १ भवनवासिमां होय, २ वानव्यंतर, ३ ज्योतिष्क अने ४ वैमानिकमां पण होय.

---

१ ओसारिंते— क, ऊसारिए— क । २-ज्जा एं भं— ग ।

३९. [प्र०] दो भंते ! देवा देवपवेसणएणं० पुच्छा । [उ०] गंगेया ! भवणवासीसु वा होज्जा, वाणमंतर–जोइसिय–वेमाणिएसु वा होज्जा । अहवा एगे भवणवासीसु एगे वाणमंतरेसु होज्जा, एवं जहा तिरिक्खजोणियपवेसणए तहा देवपवेसणए वि भाणियव्वे, जाव असंखेज्ज त्ति ।

४०. [प्र०] उक्कोसा भंते ! पुच्छा । [उ०] गंगेया ! सव्वे वि ताव जोइसिएसु होज्जा, अहवा जोइसिय–भवणवासीसु य होज्जा, अहवा जोइसिय– वाणमंतरेसु य होज्जा, अहवा जोइसिय– वेमाणिएसु य होज्जा, अहवा जोइसिएसु य भवणवासीसु य वाणमंतरेसु य होज्जा, अहवा जोइसिएसु य भवणवासीसु य वेमाणिएसु य होज्जा, अहवा जोइसिएसु य वाणमंतरेसु य वेमाणिएसु य होज्जा, अहवा जोइसिएसु य भवणवासीसु य वाणमंतरेसु य वेमाणिएसु य होज्जा ।

४१. [प्र०] एयस्स णं भंते ! भवणवासिदेवपवेसणगस्स, वाणमंतरदेवपवेसणगस्स, जोइसियदेवपवेसणगस्स, वेमाणियदेवपवेसणगस्स य कयरे कयरे– जाव विसेसाहिया वा ? [उ०] गंगेया ! सव्वत्थोवे वेमाणियदेवपवेसणए, भवणवासिदेवपवेसए असंखेज्जगुणे, वाणमंतरदेवपवेसणए असंखेज्जगुणे, जोइसियदेवपवेसणए संखेज्जगुणे ।

४२. [प्र०] एयस्स णं भंते ! नेरइयपवेसणगस्स तिरिक्खजोणिय० मणुस्स० देवपवेसणगस्स य कयरे कयरे– जाव विसेसाहिए वा ? [उ०] गंगेया ! सव्वत्थोवे मणुस्सपवेसणए, नेरइयपवेसणए असंखेज्जगुणे, देवपवेसणए असंखेज्जगुणे, तिरिक्खजोणियप्पवेसणए असंखेज्जगुणे ।

४३. [प्र०] संतरं[1] भंते ! नेरइया उववज्जंति निरंतरं नेरइया उववज्जंति, संतरं असुरकुमारा उववज्जंति निरंतरं असुरकुमारा उववज्जंति, जाव संतरं वेमाणिया उववज्जंति निरंतरं वेमाणिया उववज्जंति, संतरं नेरइया उव्वट्टंति निरंतरं नेरतिया उव्वट्टंति[2], जाव संतरं वाणमंतरा उव्वट्टंति निरंतरं वाणमंतरा उव्वट्टंति, सांतरं जोइसिया चयंति निरंतरं जोइसिया चयंति, सांतरं वेमाणिया चयंति निरंतरं वेमाणिया चयंति ? [उ०] गंगेया ! संतरं पि नेरइया उववज्जंति निरंतरं पि नेरतिया उववज्जंति, जाव संतरं पि थणियकुमारा उववज्जंति निरंतरं पि थणियकुमारा उववज्जंति; नो संतरं पुढविक्काइया उववज्जंति निरंतरं पुढविक्काइया उववज्जंति, एवं जाव वणस्सइकाइया, सेसा जहा नेरइया, जाव संतरं पि वेमाणिया उववज्जंति निरंतरं

बे देवो.

३९. [प्र०] हे भगवन् ! बे देवो देवप्रवेशनकवडे प्रवेश करता–इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! ते बे देवो १ भवनवासिमां होय, २ वानव्यंतर, ३ ज्योतिष्क अने ४ वैमानिकमां पण होय. अथवा एक भवनवासिमां होय अने एक वानव्यंतरमां होय. ए प्रमाणे जेम तिर्यंचयोनिकप्रवेशनक कह्युं छे तेम देवप्रवेशनक पण यावद् असंख्याता देवो सुधी जाणवुं.

उत्कृष्टदेवप्रवेशनक.

४०. [प्र०] हे भगवन् ! देवो उत्कृष्टपणे [कया प्रवेशनकमां होय ?]–इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय ! ते बधा ज्योतिषिकमां होय. अथवा ज्योतिष्क अने भवनवासिमां होय. अथवा ज्योतिष्क अने वानव्यतरमां होय. अथवा ज्योतिष्क अने वैमानिकमां होय. अथवा ज्योतिष्क, भवनवासी अने वानव्यंतरमां होय. अथवा ज्योतिष्क, भवनवासी अने वैमानिकमां होय. अथवा ज्योतिष्क, वानव्यंतर अने वैमानिकमां होय. अथवा ज्योतिष्क, भवनवासी, वानव्यंतर अने वैमानिकमां होय.

देवप्रवेशनकनुं अल्पबहुत्व.

४१. [प्र०] हे भगवन् ! भवनवासिदेवप्रवेशनक, वानव्यंतरदेवप्रवेशनक, ज्योतिष्कदेवप्रवेशनक अने वैमानिकदेवप्रवेशनकमां कयुं प्रवेशनक कया प्रवेशनकथी यावद् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गांगेय ! वैमानिकदेवप्रवेशनक सौथी अल्प छे, तेना करतां असंख्येयगुण भवनवासिदेवप्रवेशनक छे, तेथी असंख्येयगुण वानव्यंतरदेवप्रवेशनक छे, अने तेनाथी ज्योतिष्कदेवप्रवेशनक संख्यातगुण छे.

सर्व प्रवेशनकनुं अल्पबहुत्व.

४२. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकप्रवेशनक, तिर्यंचयोनिकप्रवेशनक, मनुष्यप्रवेशनक अने देवप्रवेशनकमां कयुं प्रवेशनक कया प्रवेशनकथी यावद् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गांगेय ! सौथी अल्प मनुष्यप्रवेशनक छे, तेथी नैरयिकप्रवेशनक असंख्यात गुण छे, तेना करतां असंख्यातगुण देवप्रवेशनक छे अने तेनाथी असंख्यातगुण तिर्यंचयोनिकप्रवेशनक छे.

उत्पाद अने उद्वर्तना.

नैरयिकोनी सान्तर अने निरन्तर उत्पाद अने उद्वर्तना.

४३. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिको सान्तर (अन्तरसहित) उत्पन्न थाय छे के निरंतर (अन्तररहित) उत्पन्न थाय छे ? असुरकुमारो सान्तर उत्पन्न थाय छे के निरन्तर उत्पन्न थाय छे ? यावत् वैमानिक देवो सान्तर उत्पन्न थाय छे के निरन्तर उत्पन्न थाय छे ? नैरयिको सान्तर उद्वर्ते छे–नीकळे छे के निरन्तर उद्वर्ते छे ? यावत् वानव्यंतरो सांतर उद्वर्ते छे के निरन्तर उद्वर्ते छे ? ज्योतिष्को सान्तर च्यवे छे के निरन्तर च्यवे छे ? अने वैमानिको सान्तर च्यवे छे के निरन्तर च्यवे छे ? [उ०] हे गांगेय ! नैरयिको सान्तर उत्पन्न थाय छे अने निरन्तर पण उत्पन्न थाय छे. यावत् स्तनितकुमारो सान्तर अने निरन्तर उत्पन्न थाय छे. पृथिवीकायिको सान्तर उत्पन्न थता नथी पण निरन्तर उत्पन्न थाय छे. ए प्रमाणे यावत् वनस्पतिकायिको पण निरन्तर उत्पन्न थाय छे. तथा बाकीना बधा जीवो नैरयिकोनी पेठे सान्तर

---

१ सांतरं सर्वत्र क । २ उववट्टंति सर्वत्र ख, क्वचित् क; 'उव्वट्टंति' कपुस्तके बहुशः पाठः समुपलभ्यते ।

पि वेमाणिया उववज्जंति; संतरं पि नेरइया उव्वट्टंति निरंतरं पि नेरइया उव्वट्टंति, एवं जाव थणियकुमारा। नो संतरं पुढविकाइया उव्वट्टंति निरंतरं पुढविकाइया उव्वट्टंति, एवं जाव वणस्सइकाइया, सेसा जहा नेरइया, नवरं जोइसिय-वेमाणिया चयंति अभिलावो, जाव संतरं पि वेमाणिया चयंति निरंतरं पि वेमाणिया चयंति।

४४. [प्र०] संतो भंते! णेरइया उववज्जंति, असतो भंते! नेरइया उववज्जंति? [उ०] गंगेया! सतो नेरइया उववज्जंति, नो असतो नेरइया उववज्जंति; एवं जाव वेमाणिया।

४५. [प्र०] सतो भंते! नेरइया उव्वट्टंति, असतो नेरइया उव्वट्टंति? [उ०] गंगेया! सतो नेरइया उव्वट्टंति, नो असतो नेरइया उव्वट्टंति; एवं जाव वेमाणिया, नवरं जोइसिय-वेमाणिएसु चयंति भाणियव्वं।

४६. [प्र०] सओ[1] भंते! नेरइया उववज्जंति, असतो भंते नेरइया उववज्जंति; सतो असुरकुमारा उववज्जंति, जाव सतो वेमाणिया उववज्जंति, असतो वेमाणिया उववज्जंति; सतो नेरतिया उव्वट्टंति, असतो नेरइया उव्वट्टंति; सतो असुरकुमारा उव्वट्टंति, जाव सतो वेमाणिया चयंति, असतो वेमाणिया चयंति? [उ०] गंगेया! सतो नेरइया उववज्जंति, नो असओ नेरइया उववज्जंति; सओ असुरकुमारा उववज्जंति, नो असतो असुरकुमारा उववज्जंति; जाव सओ वेमाणिया उववज्जंति, नो असतो वेमाणिआ उववज्जंति; सतो नेरतिया उव्वट्टंति, नो असतो नेरतिया उव्वट्टंति; जाव सतो वेमाणिया चयंति, नो असतो वेमाणिया चयंति। [प्र०] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चति-सतो नेरतिया उववज्जंति, नो असतो नेरइया उववज्जंति; जाव सओ वेमाणिया चयंति, नो असओ वेमाणिया चयंति? [उ०] से नूणं गंगेया! पासेणं अरहया पुरिसादाणीएणं सासए लोए वुइए अणादीए[2] अणवयग्गे, जहा पंचमसए, जाव 'जे लोक्कइ से लोए', से तेणट्ठेणं गंगेया! एवं वुच्चइ-जाव सतो वेमाणिया चयंति, नो असतो वेमाणिया चयंति।

४७. [प्र०] सयं भंते! एवं जाणह, उदाहु असयं, असोच्चा एते एवं जाणह, उदाहु सोच्चा; 'सतो नेरइया उववज्जंति, नो असतो नेरइया उववज्जंति; जाव सओ वेमाणिया चयंति नो असओ वेमाणिया चयंति'? [उ०] गंगेया! सयं एते एवं

अने निरन्तर उत्पन्न थाय छे. यावद् वैमानिको पण सान्तर अने निरन्तर उत्पन्न थाय छे. नैरयिको सान्तर अने निरन्तर उद्वर्ते छे. ए प्रमाणे यावद् स्तनितकुमारो जाणवा. पृथिवीकायिको सान्तर उद्वर्तता नथी पण निरन्तर उद्वर्ते छे. ए प्रमाणे यावद् वनस्पतिकायिको पण जाणवा. बाकीना बधा जीवो नैरयिकोनी पेठे सान्तर अने निरन्तर उद्वर्ते छे. पण विशेष ए छे के 'ज्योतिषिको अने वैमानिको च्यवे छे' एम पाठ कहेवो. ए प्रमाणे यावद् वैमानिको सान्तर अने निरन्तर च्यवे छे.

४४. [प्र०] हे भगवन्! सद्-विद्यमान नैरयिको उत्पन्न थाय छे के असद्-अविद्यमान नैरयिको उत्पन्न थाय छे? [उ०] हे गांगेय! सद्-विद्यमान नैरयिको उत्पन्न थाय छे, पण असद् नैरयिको उत्पन्न थता नथी. ए प्रमाणे यावद् वैमानिक पर्यन्त जाणवुं.

विद्यमान नैरयिको उत्पन्न थाय छे के अविद्यमान?

४५. [प्र०] हे भगवन्! विद्यमान नैरयिको उद्वर्ते छे के अविद्यमान नैरयिको उद्वर्ते छे? [उ०] हे गांगेय! विद्यमान नैरयिको उद्वर्ते छे पण अविद्यमान नैरयिको उद्वर्तता नथी. ए प्रमाणे यावद् वैमानिको सुधी जाणवुं. विशेष ए छे के ज्योतिष्क अने वैमानिकोमां 'च्यवे छे' एवो पाठ कहेवो.

सद् नैरयिको उद्वर्ते छे के असद्?

४६. [प्र०] हे भगवन्! सद् नैरयिको उत्पन्न थाय छे के असद् नैरयिको उत्पन्न थाय छे? सद् असुरकुमारो उत्पन्न थाय छे के असद् असुरकुमारो उत्पन्न थाय छे? ए प्रमाणे यावत् सद् वैमानिको उत्पन्न थाय छे के असद् वैमानिको उत्पन्न थाय छे? सद् नैरयिको उद्वर्ते छे के असद् नैरयिको उद्वर्ते छे? सद् असुरकुमारो उद्वर्ते छे के असद् असुरकुमारो उद्वर्ते छे? ए प्रमाणे यावत् सद् वैमानिको च्यवे छे के असद् वैमानिको च्यवे छे? [उ०] हे गांगेय! सद् नैरयिको उत्पन्न थाय छे पण असद् नैरयिको उत्पन्न थता नथी. सद् असुरकुमारो उत्पन्न थाय छे पण असद् असुरकुमारो उत्पन्न थता नथी. ए प्रमाणे यावद् सद् वैमानिको उत्पन्न थाय छे पण असद् वैमानिको उत्पन्न थता नथी. सद् नैरयिको उद्वर्ते छे पण असद् नैरयिको उद्वर्तता नथी. यावद् सद् वैमानिको च्यवे छे पण असद् वैमानिको च्यवता नथी. [प्र०] हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो के सद् नैरयिको उत्पन्न थाय छे पण असद् नैरयिको उत्पन्न थता नथी. ए प्रमाणे यावद् सद् वैमानिको च्यवे छे पण असद् वैमानिको च्यवता नथी? हे भगवन्! शुं ते निश्चित छे? [उ०] हे गांगेय! खरेखर पुरुषादानीय अर्हत् श्रीपार्श्वनाथे "लोकने शाश्वत, अनादि अने अनन्त कह्यो छे-" इत्यादि *पांचमा शतकमां कह्या प्रमाणे जाणवुं. यावत् जे अवलोकी शकाय-जाणी शकाय ते लोक, ते हेतुथी हे गांगेय! एम कह्युं छे के, सद् वैमानिको च्यवे छे पण असद् वैमानिको च्यवता नथी.

सद् नैरयिकादिना उत्पाद अने उद्वर्तना-संबन्धे प्रश्न.

सद् नैरयिकादिना उत्पाद अने उद्वर्तनानो हेतु.

४७. [प्र०] हे भगवन्! आप स्वयं आ प्रमाणे जाणो छो, के अस्वयं जाणो छो? सांभळ्या शिवाय ए प्रमाणे जाणो छो अथवा सांभळीने जाणो छो के 'सद् नैरयिको उत्पन्न थाय छे पण असद् नैरयिको उत्पन्न थता नथी, यावत् सद्

आप स्वयं जाणो छो के अस्वयं जाणो छो?

---

१ संतो क-घ, सओ ङ। २ अणाइए ङ।

४६ * भग० खं. २ श. ५ उ. ९ पृ. २४९.

आणामि, नो असयं; असोच्चा एते एवं जाणामि, नो सोच्चा 'सतो नेरइया उववज्जंति, नो असओ नेरइया उववज्जंति, जाव सतो वेमाणिया चयंति, नो असतो वेमाणिया चयंति' । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चति–तं चेव, जाव 'नो असतो वेमाणिया चयंति' ? [उ०] गंगेया! केवली णं पुरत्थिमेणं[1] मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ; दाहिणेणं एवं जहा सद्दुद्देसए, जाव निव्वुडे[2] नाणे केवलिस्स; से तेणट्ठेणं गंगेया! एवं वुच्चइ 'तं चेव जाव नो असतो वेमाणिया चयंति' ।

४८. [प्र०] सयं भंते! नेरइया नेरइएसु उववज्जंति, असयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति? [उ०] गंगेया! सयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति, नो असयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति [प्र०] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–जाव उववज्जंति? [उ०] गंगेया! कम्मोदएणं, कम्मगुरुयत्ताए, कम्मभारियत्ताए, कम्मगुरुसंभारियत्ताए; असुभाणं कम्माणं उदएणं, असुभाणं कम्माणं विवागेणं, असुभाणं कम्माणं फलविवागेणं सयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति, नो असयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति, से तेणट्ठेणं गंगेया! जाव उववज्जंति ।

४९. [प्र०] सयं भंते! असुरकुमारा० पुच्छा । [उ०] गंगेया! सयं असुरकुमारा जाव उववज्जंति, नो असयं असुरकुमारा जाव उववज्जंति । [प्र०] से केणट्ठेणं तं चेव जाव उववज्जंति? [उ०] गंगेया! कम्मोदएणं, कम्मोवसमेणं, कम्मविगतीए, कम्मविसोहीए, कम्मविसुद्धीए; सुभाणं कम्माणं उदएणं, सुभाणं कम्माणं विवागेणं, सुभाणं कम्माणं फलविवागेणं सयं असुरकुमारा असुरकुमारत्ताए उववज्जंति, नो असयं असुरकुमारा जाव उववज्जंति; से तेणट्ठेणं जाव उववज्जंति, एवं जाव थणियकुमारा ।

५०. [प्र०] सयं भंते! पुढविकाइया० पुच्छा । [उ०] गंगेया! सयं पुढविकाइया जाव उववज्जंति, नो असयं पुढविकाइया जाव उववज्जंति । [प्र०] से केणट्ठेणं जाव उववज्जंति? [उ०] गंगेया! कम्मोदएणं, कम्मगुरुयत्ताए, कम्मभारियत्ताए, कम्मगुरुसंभारियत्ताए सुभा–सुभाणं कम्माणं उदएणं, सुभा–सुभाणं कम्माणं विवागेणं, सुभा–सुभाणं कम्माणं फल-

वैमानिको च्यवे छे, पण असद् वैमानिको च्यवता नथी' ? [उ०] हे गांगेय! हुं ए बधुं स्वयं जाणुं छुं, पण अस्वयं (बीजानी सहायथी) जाणतो नथी. वळी सांभळ्या विना आ प्रमाणे जाणुं छुं, पण सांभळीने जाणतो नथी के 'सद् नैरयिको उत्पन्न थाय छे, पण असद् नैरयिको उत्पन्न थता नथी, यावत् सद् वैमानिको च्यवे छे, पण असद् वैमानिको च्यवता नथी.' [प्र०] हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो के, 'हुं स्वयं जाणुं छुं–इत्यादि पूर्वोक्त यावत् असद् वैमानिको च्यवता नथी' ? [उ०] हे गांगेय! केवलज्ञानी पूर्वमां मित (मर्यादित) पण जाणे, अने अमित (अमर्यादित) पण जाणे, तथा दक्षिणमां पण ए प्रमाणे जाणे. ए प्रमाणे जेम *शब्द उद्देशकमां कह्युं छे तेम जाणवुं, यावत् 'केवलिनुं ज्ञान निरावरण होय छे,' माटे हे गांगेय! ते हेतुथी एम कहुं छुं के 'हुं स्वयं जाणुं छुं–इत्यादि यावद् असद् वैमानिको च्यवता नथी.'

नैरयिको स्वयं उपजे छे के अस्वयं उपजे छे?

४८. [प्र०] हे भगवन्! नैरयिको नैरयिकमां स्वयं उत्पन्न थाय छे के अस्वयं उत्पन्न थाय छे.? [उ०] हे गांगेय! नैरयिको नैरयिकमां स्वयं उत्पन्न थाय छे, पण अस्वयं उत्पन्न थता नथी. [प्र०] हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो के 'स्वयं यावद् उत्पन्न थाय छे'? [उ०] हे गांगेय! कर्मना उदयथी, कर्मना गुरुपणाथी, कर्मना भारेपणाथी, कर्मना अत्यन्त भारेपणाथी, अशुभ कर्मोना उदयथी, अशुभ कर्मोना विपाकथी अने अशुभ कर्मोना फल–विपाकथी नैरयिको नैरयिकोमां स्वयं उत्पन्न थाय छे, पण नैरयिको नैरयिकोमां अस्वयं उत्पन्न थता नथी; ते हेतुथी हे गांगेय! एम कहेवाय छे के यावत् 'तेओ स्वयं उत्पन्न थाय छे.'

असुरकुमारो.

४९. [प्र०] हे भगवन्! असुरकुमारो स्वयं [असुरकुमारपणे उत्पन्न थाय छे?] इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय! असुरकुमारो स्वयं उत्पन्न थाय छे, पण अस्वयं उत्पन्न थता नथी. [प्र०] हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो के तेओ 'स्वयं यावद् उत्पन्न थाय छे'? [उ०] हे गांगेय! कर्मना उदयथी, [अशुभ] कर्मना उपशमथी, अशुभ कर्मना अभावथी, कर्मनी विशोधिथी, कर्मनी विशुद्धिथी, शुभ कर्मोना उदयथी, शुभ कर्मोना विपाकथी अने शुभ कर्मोना फल–विपाकथी असुरकुमारो असुरकुमारपणे स्वयं उत्पन्न थाय छे, पण असुरकुमारो असुरकुमारपणे अस्वयं उत्पन्न थता नथी. माटे हे गांगेय! ते हेतुथी एम कहेवाय छे के, यावत् 'उत्पन्न थाय छे.' ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं.

पृथिवीकायिको.

५०. [प्र०] हे भगवन्! पृथिवीकायिको स्वयं उत्पन्न थाय छे?–इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गांगेय! पृथिवीकायिको स्वयं उत्पन्न थाय छे पण अस्वयं उत्पन्न थता नथी. [प्र०] हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो के 'पृथिवीकायिको स्वयं उत्पन्न थाय छे'? [उ०] हे गांगेय! कर्मना उदयथी, कर्मना गुरुपणाथी, कर्मना भारथी, कर्मना अत्यन्त भारथी, शुभ अने अशुभ कर्मोना उदयथी, शुभ अने अशुभ

१–पुरच्छिमेणं घ–ङ । २ सगड्डे–क–ग–घ–ङ ।

४७ * भग० २ श. ६ उ. ४ पृ. १७०.

विवागेणं सयं पुढविक्काइया जाव उववज्जंति, नो असयं पुढविक्काइया जाव उववज्जंति, से तेणट्ठेणं जाव उववज्जंति। एवं जाव मणुस्सा। वाणमंतर–जोइसिय–वेमाणिया जहा असुरकुमारा। से तेणट्ठेणं गंगेया! एवं वुच्चति–सयं वेमाणिया जाव उववज्जंति, नो असयं जाव उववज्जंति।

५१. तप्पभिर्तिं च णं से गंगेये अणगारे समणं भगवं महावीरं पच्चभिजाणइ सव्वण्णुं, सव्वदरिसिं। तए णं से गंगेये अणगारे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण–पयाहिणं करेइ, २ करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी–इच्छामि णं भंते! तुब्भं अंतियं चाउज्जामाओ धम्माओ पंचमहव्वइयं, एवं जहा कालासवेसियपुत्तो तहेव भाणियव्वं, जाव सव्वदुक्खप्पहीणे। सेवं भंते!, सेवं भंते! त्ति।

नवमसए गंगेयो बत्तीसइमो उद्देसो समत्तो।

कर्मोना विपाकथी, अने शुभाशुभ कर्मोना फलविपाकथी पृथिवीकायिको स्वयं उत्पन्न थाय छे, पण यावद् अस्वयं उत्पन्न थता नथी. माटे हे गांगेय! ते हेतुथी एम कहुं छुं के–यावत् 'पृथिवीकायिको स्वयं उत्पन्न थाय छे.' ए प्रमाणे यावत् मनुष्यो सुधी जाणवुं. जेम असुरकुमारोने कह्युं तेम वानव्यंतर, ज्योतिषिक अने वैमानिको संबन्धे कहेवुं. माटे हे गांगेय! ते हेतुथी एम कहुं छुं के–यावत् 'वैमानिको स्वयं उत्पन्न थाय छे, पण अस्वयं उत्पन्न थता नथी.'

५१. त्यार पछी श्रीगांगेय अनगार श्रमण भगवान् महावीरने सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी जाणे छे. त्यारबाद ते गांगेय अनगार श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार आदक्षिणा प्रदक्षिणा करे छे, करीने वांदे छे, नमे छे; वांदीने, नमीने तेणे एम कह्युं के–हे भगवन्! तमारी पासे चार महाव्रत धर्मथी पांच महाव्रतधर्मने ग्रहण करवा इच्छुं छुं. ए प्रमाणे बधुं *कालासवेसिक पुत्रनी पेठे यावत् ते 'सर्वदुःखथी मुक्त थया' त्यां सुधी कहेवुं. हे भगवन्! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन्! ते ए प्रमाणे छे.

गांगेय भगवान् महावीरने सर्वज्ञ जाणे छे, अने दीक्षा ग्रहण करी निर्वाण पामे छे.

नवम शतके बत्रीशमो गांगेय उद्देशक समाप्त.

५१. * भग० खं. १ श. १ उ. ९ पृ. २०७.

तेत्तीसइमो उद्देसो.

१. [प्र०] तेणं कालेणं, तेणं समएणं माहणकुंडग्गामे नयरे होत्था । वण्णओ । बहुसालए चेतिए । वण्णओ । तत्थ णं माहणकुंडग्गामे नयरे उसभदत्ते नामं माहणे परिवसइ, अड्ढे, दित्ते, वित्ते, जाव अपरिभूए, रिउव्वेद–जजुव्वेद–सामवेद–अथव्वणवेद– जहा खंदओ, जाव अन्नेसु य बहुसु बंभन्नएसु सुपरिनिट्ठिए समणोवासए अभिगयजीवाऽजीवे, उवलद्धपुण्ण–पावे, जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तस्स णं उसभदत्तस्स माहणस्स देवाणंदा नामं माहणी होत्था, सुकुमालपाणि–पाया, जाव पियदंसणा, सुरूवा समणोवासिया अभिगयजीवा–जीवा, उवलद्धपुन्न–पावा जाव विहरइ । तेणं कालेणं, तेणं समएणं सामी समोसढे । परिसा जाव पज्जुवासति । तए णं से उसभदत्ते माहणे इमीसे कहाए उवलद्धट्ठे समाणे हट्ठ– जाव हियए, जेणेव देवाणंदा माहणी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता देवाणंदं माहणिं एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिए ! समणे भगवं महावीरे आदिगरे, जाव सव्वण्णू, सव्वदरिसी, आगासगएणं चक्केणं जाव सुहंसुहेणं विहरमाणे बहुसालए चेइए अहापडिरूवं जाव विहरति । तं महाफलं खलु देवाणुप्पिए ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण–वंदण–नमंसण–पडिपुच्छण–पज्जुवासणयाए, एगस्स वि आयरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए; तं गच्छामो णं देवाणुप्पिए ! समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो, जाव पज्जुवासामो, एयं णं इहभवे य, परभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ । तए णं सा देवाणंदा माहणी उसभ-

तेत्रीशमो उद्देशक.

ब्राह्मणकुंडग्राम.

ऋषभदत्त.

देवानंदा.

महावीरस्वामी समोसर्या.

बहुशालक चैत्य.

१. ते काले, ते समये ब्राह्मणकुंडग्राम नामे नगर हतुं. वर्णन. बहुशालक नामे चैत्य हतुं. वर्णन. ते ब्राह्मणकुंडग्राम नामे नगरमां ऋषभदत्त नामे ब्राह्मण रहेतो हतो. ते आढ्य–धनिक, तेजस्वी, प्रसिद्ध अने यावत् अपरिभूत–कोइथी पराभव न पामे तेवो हतो. वळी ते ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद अने अथर्वणवेदमां निपुण अने *स्कंदक तापसनी पेठे यावत् ब्राह्मणोना बीजा घणा नयोमां कुशल हतो. ते श्रमणोनो उपासक, जीवाजीव तत्त्वने जाणनार, पुण्य–पापने ओळखनार अने यावत् आत्माने भावित करतो विहरतो हतो. ते ऋषभदत्त ब्राह्मणने देवानंदा नामे ब्राह्मणी स्त्री हती. तेना हाथ पग सुकुमाल हता, यावत् तेनुं दर्शन प्रिय हतुं अने तेनुं रूप सुन्दर हतुं. वळी श्रमणोनी उपासिका [देवानंदा] जीवाजीव अने पुण्यपापने जाणती विहरती हती. ते काले, ते समये महावीरस्वामी समोसर्या. पर्षत् यावत् पर्युपासना करे छे. त्यार पछी ते ऋषभदत्त ब्राह्मण श्रमण भगवान् महावीरना आगमननी आ वात जाणीने खुश थयो, यावत् उल्लसित हृदयवाळो थयो, अने ज्यां देवानंदा ब्राह्मणी हती त्यां आव्यो. त्यां आवीने तेणे देवानंदा ब्राह्मणीने आ प्रमाणे कह्युं के–'हे देवानुप्रिये ! ए प्रमाणे अहीं तीर्थनी आदि करनार यावत् सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी श्रमण भगवान् महावीर आकाशमां रहेला चक्रवडे यावत् सुखपूर्वक विहार करता बहुशालक नामे चैत्यमां योग्य अवग्रहने ग्रहण करीने यावत् विहरे छे. हे देवानुप्रिये ! यावत् तेवा प्रकारना अर्हत् भगवंतना नाम –गोत्रना पण श्रवणथी मोटुं फल प्राप्त थाय छे, तो वळी तेओना अभिगमन (सामा जवुं), वंदन, नमन, प्रतिप्रच्छन अने पर्युपासन करवाथी फल थाय तेमां शुं कहेवुं ? तथा एक पण आर्य अने धार्मिक सुवचनना श्रवणथी मोटुं फल थाय छे, तो वळी विपुल अर्थने ग्रहण करवावडे महाफल थाय तेमां शुं कहेवुं ? माटे हे देवानुप्रिये ! आपणे जइए अने श्रमण भगवंत महावीरने वन्दन–नमन करीए, यावत् तेमनी पर्युपासना करीए. ए आपणने आ भवमां तथा परभवमां हित, सुख, संगतता, निःश्रेयस अने शुभ अनुबंधने माटे थशे. ज्यारे ते

---

१ –ग्गामे णामं न– क । २ अहिग– क । ३ तते णं क । ४ हियए क । ५ महप्फलं क । ६ जाव तहा– ग–घ । ७ अरिहं–ग–घ । ८ एवं णे इ– क, एवं णो इ– क ।

१. * भग. खं. १ श. २ उ. १ पृ. २११.

दत्तेणं माहणेणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठ– जाव हियया, करयल– जाव कट्टु उसभदत्तस्स माहणस्स एयमट्ठं विणएणं पडि-सुणेइ ।

२. तए णं से उसभदत्ते माहणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, कोडुंबियपुरिसे सद्दावेत्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवा-णुप्पिया ! लहुकरणजुत्त–जोइय–समखुरवालिहाण–समलिहियसिंगेहिं, जंबूणयामयकलावजुत्त–पैतिविसिट्ठेहिं, रययामयघंटा-सुत्तरज्जुयपवरकंचणनत्थपग्गहोग्गहियएहिं, नीलुप्पलकयामेलएहिं, पवरगोणजुवाणएहिं णाणामणि–रयणघंटियाजालपरिगयं, सुजायजुग–जोत्तरज्जुयजुग–पसत्थसुविरचियनिमियं, पवरलक्खणोववेयं धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एतमाणत्तियं पच्चप्पिणह । तए णं ते कोडुंबियपुरिसा उसभदत्तेणं माहणेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ– जाव हियया, करयल– एवं सामी तहत्ताणाए विणएणं वयणं जाव पडिसुणेत्ता खिप्पामेव लहुकरणजुत्त– जाव धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेत्ता जाव तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ।

३. तए णं से उसभदत्ते माहणे ण्हाए, जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे साँतो गिहातो पडिणिक्खमति, पडिणि-क्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढे । तए णं सा देवाणंदा माहणी अंतो अंतेउरंसि ण्हाता, कयबलिकम्मा, कयकोउय–मंगल–पायच्छित्ता, किंच वर-पादपत्तणेउर–मणिमेहला–हाँररचित–उचियकडग–खुड्डाग–एकावली–कंठसुत्त–उरत्थगेवेज्ज–सोणिसुत्तग–नाणामणि–रयण-भूसणविराइयंगी, चीणंसुयवत्थपवरपरिहिया, दुगुल्लसुकुमालउत्तरिज्जा, सव्वोउयसुरभिकुसुमवरियसिरया, वरचंदणवंदिता, वराभरणभूसितंगी, कालागरुधूवधूविया, सिरिसमाणवेसा, जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा, बहूहिं खुज्जाहिं, चिलाति-

ऋषभदत्त ब्राह्मणे देवानंदा ब्राह्मणीने ए प्रमाणे कह्युं त्यारे ते खुश थइ, अने यावत् उल्लसितहृदयवाळी थईने पोताना करतलने यावत् मस्तके अंजलिरूपे करी ऋषभदत्त ब्राह्मणना ए कथनने विनयपूर्वक स्वीकारे छे.

२. त्यारबाद ते ऋषभदत्त ब्राह्मण पोताना कौटुंबिक पुरुषोने बोलावे छे, बोलावीने तेओने तेणे आ प्रमाणे कह्युं के—'हे देवानु-प्रियो ! जलदी चालवावाळा, प्रशस्त अने सदृशरूपवाळा, समान खरी अने पुच्छवाळा, समान उगेला शिंगडावाळा, सोनाना कलाप–आ-भरणोथी युक्त, चालवामां उत्तम, रूपानी घंटडीओथी युक्त, सुवर्णमय सुतरनी नाथवडे बांधेला, नील कमळना शिरपेचवाळा बे उत्तम युवान बळदोथी युक्त; अनेक प्रकारनी मणिमय घंटडीओना समूहथी व्याप्त, उत्तम काष्ठमय धोंसरु अने जोतरनी बे दोरीओ उत्तम रीते जेमां गोठवेली छे एवा; प्रवरलक्षणयुक्त, धार्मिक, श्रेष्ठ यान–रथने तैयार करी हाजर करो अने आ मारी आज्ञा पाछी आपो'. ज्यारे ते ऋषभदत्त ब्राह्मणे ते कौटुंबिक पुरुषोने एम कह्युं त्यारे तेओए खुश थइ यावद् आनंदितहृदयवाळा थइ, मस्तके करतलने जोडी एम कह्युं के—'हे स्वामिन् ! ए प्रमाणे आपनी आज्ञा मान्य छे'. एम कही विनयपूर्वक वचनने स्वीकारी जलदी चालवावाळा बे बळदोथी जोडेला, यावत् धार्मिक अने प्रवर यानने (रथने) शीघ्र हाजर करीने यावत् आज्ञाने पाछी आपे छे.

३. त्यारबाद ते ऋषभदत्त ब्राह्मण स्नान करी यावत् अल्प अने महामूल्यवाळां आभरणोथी पोताना शरीरने अलंकृत करी पोताना घरथी बहार निकळे छे. बहार निकळीने जे ठेकाणे बहारनी उपस्थान शाळा छे, अने ज्यां धार्मिक यानप्रवर छे त्यां आवीने ते रथ उपर चढे छे. त्यारबाद ते देवानंदा ब्राह्मणी अंदर अंतःपुरमां स्नान करी, बलिकर्म—पूजा करी, कौतुक–(मषीतिलक) मंगल अने प्रायश्चित्त करी, पगमां पहेरेला सुंदर नूपुर, मणिनो कंदोरो, हार, पहेरेलां उचित कडां, वींटीओ, विचित्रमणिमय एकावली (एकसर-वाळा) हार, कंठसूत्र, छातीमां रहेला ग्रैवेयक (लांबा हार), कटीसूत्र, अने विचित्रमणि तथा रत्नोना आभूषणथी शरीरने सुशोभित करी, उत्तम चीनांशुक वस्त्रने पहेरी, उपर सुकुमाल रेशमी वस्त्रने ओढी, बधी ऋतुना सुगंधी पुष्पोथी पोताना केशने गुंथी, कपाळमां चंदन लगावी, उत्तम आभूषणथी शरीरने शणगारी, कालागरुना धूपवडे सुगंधित थइ, लक्ष्मीसमानवेशवाळी, यावत् अल्प अने बहुमूल्यवाळां आभरणोथी शरीरने अलंकृत करी, घणी कुब्ज दासीओ, चिलातदेशनी दासीओ, यावत् अनेक देश विदेशथी आवीने एकठी थयेली, पोताना देशना पोषाक जेवा वेशने धारण करनारी, इंगितवडे–आकृतिवडे–चिन्तित अने इष्ट अर्थने जाणनारी, कुशल अने विनयवाळी दासीओना परिवारसहित, तेमज पोताना देशनी दासीओ, खोजाओ, वृद्ध कंचुकिओ अने मान्य पुरुषोना वृन्द साथे ते देवानंदा पोताना अंतःपुरथी निकळे छे. निकळीने ज्यां बहारनी उपस्थान शाळा छे अने ज्यां धार्मिक यान प्रवर (श्रेष्ठ रथ) उभो छे त्यां आवे छे. आवीने यावत् ते धार्मिक उत्तम रथ उपर चढे छे. त्यारबाद ते ऋषभदत्त ब्राह्मण देवानंदा ब्राह्मणीनी साथे धार्मिक अने श्रेष्ठ यान (रथ) उपर चढीने पोताना परिवारनी साथे ब्राह्मणकुंडग्राम नामे नगरना मध्यभागमांथी निकळे छे. निकळीने जे स्थळे बहुशालक चैत्य छे त्यां आवे छे. त्यां

१ हियया ग–घ–ङ । २ सद्दावित्ता ग–घ । ३ वयासि ङ । ४ पत्तिवि ग–घ–ङ । ५–वर–जाव ङ । ६ तहत्ति आणा–ग–घ । ७ सा-[illegible] ङ । ८ –अप्पमहग्घा ङ । ९ किंते क, किंचि ग । १० हारविराइय–ग । ११ बहुल–ए– क, बहुग ङ । १२–गुरुधूव– ग–घ ।

याहिं, णाणादेस–विदेसपरिपिंडियाहिं, सदेसनेवत्थगहियवेसाहिं, इंगित–चिंतित–पत्थियवियाणियाहिं, कुसलाहिं, विणीयाहिं, चेडियाचक्कवाल–वरिसधर–थेरकंचुइज्ज–महत्तरगवंदपरिक्खित्ता अंतेउराओ निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाण- साला, जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढा। तए णं से उसभदत्ते माहणे देवाणंदाए माहणीए सद्धिं धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढे समाणे णियगपरियालसंपरिवुडे माहणकुंडग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्ग- च्छइ; निग्गच्छित्ता जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता छत्तादीए तित्थकरातिसए पासइ, पासित्ता धम्मियं जाणप्पवरं ठवेइ, ठवित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिग- मेणं अभिगच्छति; तं जहा–सचित्ताणं दव्वाणं विउसरणयाए, एवं जहा बितियसए, जाव तिविहाए पज्जुवासणयाए पज्जुवा- सति। तए णं सा देवाणंदा माहणी धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहति, प० २ पच्चोरुहित्ता बहूहिं खुज्जाहिं, जाव महत्तरग- वंदपरिक्खित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ, तं जहा–सचित्ताणं दव्वाणं विउसरणयाए, अचित्ताणं दव्वाणं अविमोयणयाए, विणयोणयाए गायलट्ठीए, चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं, मणस्स एगत्तीभावकरणेणं; जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण–पयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता उसभदत्तं माहणं पुरओ कट्टु ठिया चेव सपरिवारा सुस्सूसमाणी, णमंसमाणी अभिमुहा विणएणं पंज- लिउडा जाव पज्जुवासइ।

४. तए णं सा देवाणंदा माहणी आगयपण्हाया, पप्फुयलोयणा, संवरियवलयबाहा, कंचुयपरिक्खित्तिया धाराहयक- लंबगं पिव समूसवियरोमकूवा समणं भगवं महावीरं अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी देहमाणी चिट्ठति।

५. [प्र०] भंते! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति, णमंसति, वंदित्ता, णमंसित्ता एवं वयासी–किं णं भंते! एसा देवाणंदा माहणी आगयपण्हया, तं चेव जाव रोमकूवा देवाणुप्पियं अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी २ चिट्ठति? [उ०] गोयमादि! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी–एवं खलु गोयमा! देवाणंदा माहणी ममं अम्मगा, अहं णं देवाणंदाए माहणीए अत्तए; तए णं सा देवाणंदा माहणी तेणं पुव्वपुत्तसिणेहरागेणं आगयपण्हया, जाव समूसवियरोमकूवा ममं अणिमि- साए दिट्ठीए देहमाणी २ चिट्ठइ। तए णं समणे भगवं महावीरे उसभदत्तस्स माहणस्स देवाणंदाए माहणीए तीसे य महति- महालियाए इसिपरिसाए जाव परिसा पडिगया।

आवी तीर्थंकरना छत्रादिक अतिशयोने जुए छे; जोईने धार्मिक श्रेष्ठ रथने उभो राखे छे. उभो राखी तेना उपरथी नीचे उतरे छे. उतरीने श्रमण भगवंत महावीरनी पासे पांच प्रकारना अभिगमवडे जाय छे. ते आ प्रमाणे–'सचित्त द्रव्योनो त्याग करवो'–इत्यादि *बीजा शतकमां कह्या प्रमाणे यावत् त्रण प्रकारनी उपासनावडे उपासे छे. ते देवानंदा ब्राह्मणी पण धार्मिक यानप्रवरथी नीचे उतरे छे, उतरीने घणी कुब्जदासीओना यावत् मान्य पुरुषना समूहथी परिवृत थईने श्रमण भगवंत महावीरनी पासे पांच प्रकारना अभिगमवडे जाय छे. ते आ प्रमाणे––१ सचित्त द्रव्यनो (फलादिनो) त्याग करवो. २ अचित्त द्रव्यनो (आभरणादिनो) त्याग नहि करवो, ३ विनयथी शरीरने अव- नत करवुं, ४ भगवंतने चक्षुथी जोतां अंजलि करवी. अने ५ मननी एकाग्रता करवी. ए पांच अभिगम वडे ज्यां श्रमण भगवान् महावीर छे त्यां आवे छे. त्यां आवीने श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार प्रदक्षिणा करे छे. करीने वांदे छे, नमे छे. वांदी अने नमी ऋषभदत्त ब्राह्म- णने आगळ करी पोताना परिवारसहित उभी रहीने शुश्रूषा करती, नमती अभिमुख रहीने विनयवडे हाथ जोडी यावत् उपासना करे छे.

४. त्यारबाद ते देवानंदा ब्राह्मणीने पानो चढ्यो–तेना स्तनमांथी दूधनी धारा छूटी, तेना लोचनो आनंदाश्रुथी भिनां थयां, तेनी हर्षथी एकदम फुलती भुजाओने तेना कडाओए रोकी, [हर्षथी शरीर प्रफुल्लित थतां] तेनो कंचुक विस्तीर्ण थयो, मेघनी धाराथी विकसित थयेला कदंबपुष्पनी पेठे तेना रोमकूप उभा थया, अने ते श्रमण भगवंत महावीरने अनिमिष दृष्टिथी जोती जोती उभी रही.

देवानंदाना स्तनमांथी दूधनी धार केम छूटी?

५. [प्र०] त्यारे 'भगवन्'! एम कही भगवान् गौतम श्रमण भगवंत महावीरने वांदे छे, नमे छे. वांदीने–नमीने तेणे आ प्रमाणे कह्युं–हे भगवन्! आ देवानंदा ब्राह्मणीने पानो केम चढ्यो, अर्थात् तेना स्तनमांथी दूधनी धारा केम वछूटी इत्यादि पूर्वे कह्या प्रमाणे यावत् तेने रोमांच केम थयो? अने देवानुप्रिय तरफ अनिमिष नजरे जोती जोती केम उभी छे? [उ०] 'हे गौतम!' एम कही श्रमण भगवान् महावीरे भगवंत गौतमने आ प्रमाणे कह्युं–हे गौतम! ए प्रमाणे खरेखर आ देवानंदा ब्राह्मणी मारी माता छे, हुं देवानंदा ब्राह्मणीनो पुत्र छुं. माटे ते देवानंदा ब्राह्मणीने पूर्वना पुत्रस्नेहानुरागथी पानो चढ्यो, अने तेना रोमकूप उभा थया, अने मारी सामुं अनिमिष नजरथी जोती उभी छे.

पुत्रना स्नेहथी दूधनी धार छूटी.

त्यारबाद श्रमण भगवान् महावीरे ऋषभदत्त ब्राह्मण, देवानंदा ब्राह्मणी अने अत्यंत मोटी ऋषि पर्षदने धर्म कह्यो. यावत् पर्षद पाछी गई.

---

१ देसीहिं ग–घ। २–याहिं य चे– ग–घ। ३ छत्तातीए क। ४ –रुभइ क। ५–खुही क। ६ कलंबपुप्फगं पिव स– ७ –पुप्फिए कविनाऽप्यत्र। ८ वदासि क। ९ –पण्हुया क।

१. * भग. खं. १ श. २ उ. ५ पृ. २७९.

६. तए णं से उसभदत्ते माहणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ-तुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, २ उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता एवं वयासी–एवमेयं भंते!, तहमेयं भंते! जहा खंदओ, जाव से जहेयं तुब्भे वयह त्ति कट्टु उत्तरपुरत्थिमं दिसिभागं अवक्कमति, अवक्कमित्ता सयमेव आभरण–मल्ला–ऽलंकारं ओमुयइ, सय– २ ओमुइत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति, २ करित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, २ उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं, जाव नमंसित्ता एवं वयासी–आलित्ते णं भंते! लोए, पलित्ते णं भंते! लोए, आलित्तपलित्ते णं भंते! लोए जराए मरणेण य, एवं एएणं कमेणं[1] जहा खंदओ तहेव पव्वइओ, जाव सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, जाव बहूहिं चउत्थ-छट्ठ-ट्ठम-दसम– जाव विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, २ पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेति, २ झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेति, २ छेदित्ता जस्सट्ठाए कीरति नग्गभावो जाव तमट्ठं आराहेइ, २ आराहेत्ता[2] जाव सव्वदुक्खप्पहीणे।

७. तए णं सा देवाणंदा माहणी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठा तुट्ठा[3] समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण–पयाहिणं, जाव नमंसित्ता एवं वयासी–एवमेयं भंते, तहमेयं भंते! एवं जहा उसभदत्तो तहेव जाव धम्मं आइक्खियं। तए णं समणे भगवं महावीरे देवाणंदं माहणिं सयमेव पव्वावेति, सयमेव पव्वावित्ता सयमेव अज्ज-चंदणाए[4] अज्जाए सीसिणित्ताए दलयइ। तए णं सा अज्जचंदणा अज्जादेवाणंदामाहणिं सयमेव पव्वावेति, सयमेव मुंडावेति, सयमेव सेहावेति। एवं जहेव उसभदत्तो तहेव अज्जचंदणाए अज्जाए इमं एयारूवं धम्मियं उवदेसं संमं संपडिवज्जइ, तमाणाए तह[5] गच्छइ, जाव संजमेणं संजमति। तए णं सा देवाणंदा अज्जा अज्जचंदणाए अज्जाए अंतियं सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, सेसं तं चेव, जाव सव्वदुक्खप्पहीणा।

८. तस्स णं माहणकुंडग्गामस्स नगरस्स पच्चत्थिमेणं[6] एत्थ णं खत्तियकुंडग्गामे नामं नयरे होत्था। वण्णओ। तत्थ णं खत्तियकुंडग्गामे नयरे जमाली नामं खत्तियकुमारे परिवसइ, अड्ढे, दित्ते, जाव अपरिभूते, उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं

६. त्यारपछी ते ऋषभदत्त ब्राह्मण श्रमण भगवंत महावीरनी पासे धर्मने सांभळी, हृदयमां धारण करी खुश थयो, तुष्ट थयो, अने ऊभो उभा थइने श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार प्रदक्षिणा करी, यावत् नमस्कार करी आ प्रमाणे कह्युं–'हे भगवन्! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन्! ते ए प्रमाणे छे.'–इत्यादि *स्कंदक तापसना प्रकरणमां कह्या प्रमाणे यावत् 'जे तमे कहो छो ते एमज छे' एम कही ते [ऋषभदत्त ब्राह्मण] ईशान दिशा तरफ जाय छे, त्यां जइने पोतानी मेळे आभरण, माळा अने अलंकारने उतारे छे, उतारीने पोतानी मेळे पंचमुष्टिक लोच करे छे. लोच करीने ज्यां श्रमण भगवंत महावीर छे त्यां आवे छे, आवीने श्रमण भगवंत महावीरने त्रणवार प्रदक्षिणा करी यावत् नमी तेणे आ प्रमाणे कह्युं के–'हे भगवन्! जरा अने मरणथी आ लोक चोतरफ प्रज्वलित थयेलो छे, हे भगवन्! आ लोक अत्यन्त प्रज्वलित थयेलो छे, हे भगवन्! लोक चोतरफ अने अत्यन्त प्रज्वलित थयेलो छे.–ए प्रमाणे ए क्रमथी †स्कंदकतापसनी पेठे तेणे प्रव्रज्या लीधी, यावत् सामायिकादि अगीयार अंगोनुं अध्ययन करे छे, यावद् घणा उपवास, छट्ठ, अट्ठम अने दशम यावद् विचित्र तपकर्म वडे आत्माने भावित करतो ते घणा वरस सुधी साधुपणाना पर्यायने पाळे छे. पाळीने मासिकी संलेखनावडे आत्माने वासित करीने साठ भक्तोने अनशन करवावडे व्यतीत करीने जेने माटे नग्नभाव–निर्ग्रन्थपणानो स्वीकार कर्यो हतो, यावत् ते निर्वाणरूप अर्थने आराधे छे, ते अर्थने आराधी त्यार बाद यावत् सर्वदुःखथी मुक्त थाय छे.

ऋषभदत्ते प्रव्रज्या लीधी.

७. हवे ते देवानंदा ब्राह्मणी श्रमण भगवंत महावीरनी पासे धर्मने सांभळी, हृदयमां अवधारी आनन्दित अने संतुष्ट थइ, अने श्रमण भगवंत महावीरने त्रणवार प्रदक्षिणा करी यावत् नमस्कार करी आ प्रमाणे बोली–'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे,'–ए प्रमाणे ऋषभदत्तनी जेम यावत् तेणे भगवंत कथित धर्म कह्यो. त्यारबाद श्रमण भगवान् महावीर पोते देवानंदा ब्राह्मणीने दीक्षा आपे छे, दीक्षा आपीने पोते आर्यचंदना नामे आर्याने शिष्यापणे सोंपे छे. त्यारबाद ते आर्यचंदना आर्या पोतेज ते देवानंदा ब्राह्मणीने दीक्षा आपे छे, स्वयमेव मुंडे छे, स्वयमेव शिक्षा आपे छे. ए प्रमाणे देवानंदा ऋषभदत्त ब्राह्मणनी पेठे आर्यचंदनाना आ आवा प्रकारना धार्मिक उपदेशने सम्यक् प्रकारे स्वीकार करे छे, अने तेनी आज्ञा प्रमाणे वर्ते छे, यावत् संयमवडे प्रवर्ते छे. त्यारपछी देवानंदा आर्या आर्यचंदना आर्यानी पासे सामायिकादि अगीयार अंगोनुं अध्ययन करे छे. बाकीनुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं, यावत् ते [देवानंदा] सर्वदुःखथी मुक्त थाय छे.

देवानंदानी प्रव्रज्या.

८. हवे ते ब्राह्मणकुंडग्राम नगरनी पश्चिम दिशाए ए स्थळे क्षत्रियकुंडग्राम नामे नगर हतुं. वर्णन. ते क्षत्रियकुंडग्राम नामे नगरमां जमालि नामनो क्षत्रियकुमार रहेतो हतो. ते आढ्य–धनिक, तेजस्वी अने यावद् जेनो पराभव न थइ शके तेवो (समर्थ) हतो. ते पोताना

क्षत्रियकुंडग्राम. जमालिनुं वर्णन.

---

1 कमेणं इमं क– ग–घ। 2 –हेत्ता तएणं से ग–घ। 3 हट्ठ–तुट्ठा ग–घ। 4 –चंदं आ– ग–घ। 5 तह घ–ङ। 6 पच्चत्थिमेणं ङ।

६. * भग. खं. १ श. २ उ. १ पृ. ११८. † भग. खं. १ श. २ उ. १ पृ. २३६–२४२.

मुइंगमत्थएहिं बत्तीसतिबद्धेहिं णाडएहिं णाणाविहवरतरुणीसंपउत्तेहिं उवनचिज्जमाणे उवनचिज्जमाणे, उवगिज्जमाणे उवगिज्जमाणे, उवलालिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे, पाउस–वासारत्त–सरद–हेमंत–वसंत–गिम्हपज्जंते छप्पि उऊ जहाविभवेणं माणमाणे, कालं गालेमाणे, इट्ठे सद्द–फरिस–रस–रूव–गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पञ्चणुब्भवमाणे विहरति। तए णं खत्तियकुंडग्गामे नयरे सिंघाडग–तिक–चउक्क–चच्चर– जाव बहुजणसद्दे इ वा जहा उववाइए जाव एवं पन्नवेइ, एवं परूवेइ, एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे आदिगरे, जाव सव्वण्णू सव्वदरिसी माहणकुंडग्गामस्स नगरस्स बहिया बहुसालए चेइए अहापडिरूवं जाव विहरति। तं महप्फलं खलु देवाणुप्पिया! तहारूवाणं [1]अरहंताणं भगवंताणं जहा उववाइए, जाव एगाभिमुहे खत्तियकुंडग्गामं नयरं मज्झंमज्झेणं [2]निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे जेणेव बहुसालए चेइए, एवं जहा उववाइए, जाव तिविहाए पज्जुवासणयाए [3]पज्जुवासति। तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स तं महयाजणसद्दं वा जाव जणसन्निवायं वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा अयं एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था— "किं णं अज्ज खत्तियकुंडग्गामे नयरे इंदमहे इ वा, खंदमहे इ वा, मुगुंदमहे इ वा, णागमहे इ वा, जक्खमहे इ वा, भूयमहे इ वा, कूवमहे इ वा, तडागमहे इ वा, नईमहे इ वा, दहमहे इ वा, पव्वयमहे इ वा, रुक्खमहे इ वा, चेइयमहे इ वा, [4]थूममहे इ वा, जं णं एए बहवे उग्गा, भोगा, राइन्ना, इक्खागा, णाता, कोरव्वा, खत्तिया, खत्तियपुत्ता, भडा, भडपुत्ता, जहा उववाइए, जाव सत्थवाहप्पभितयो [5]ण्हाया, कयबलिकम्मा जहा उववाइए, जाव निग्गच्छंति" एवं संपेहेइ, एवं संपेहित्ता कंचुइज्जपुरिसं सद्दावेति, कं० २ सद्दावित्ता एवं वयासी–किं णं देवाणुप्पिया! अज्ज खत्तियकुंडग्गामे नयरे इंदमहे इ वा, जाव निग्गच्छंति। तए णं से कंचुइज्जपुरिसे [6]जमालिणा खत्तियकुमारेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठ–तुट्ठे समणस्स भगवओ महावीरस्स [7]आगमणगहियविणिच्छए करयल– जमालिं खत्तियकुमारं जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावित्ता एवं वयासी–णो खलु देवाणुप्पिया! अज्ज खत्तियकुंडग्गामे नयरे इंदमहे इ वा, जाव [8]निग्गच्छंति, एवं खलु देवाणुप्पिया! अज्ज समणे भगवं महावीरे जाव सव्वण्णू

उत्तम प्रासाद उपर जेमां मृदंगो वागे छे एवा, अने अनेक प्रकारनी सुंदर युवतिओवडे भजवाता बत्रीश प्रकारना नाटकोवडे (नृत्यने अनुसारे) हस्तपादादि अवयवोने नचावतो २, स्तुति करातो २, अत्यन्त खुश करातो २ प्रावृष्, वर्षा, शरद, हेमंत, वसंत, अने ग्रीष्म पर्यन्त ए छए ऋतुओमां पोताना वैभव प्रमाणे सुखनो अनुभव करतो २, समयने गाळतो, मनुष्यसंबन्धी पांच प्रकारना इष्ट शब्द, स्पर्श, रस, रूप अने गन्धरूप कामभोगोने अनुभवतो विहरे छे. त्यारबाद क्षत्रियकुंडग्राम नामना नगरमां शृंगाटक, त्रिक, चतुष्क अने चत्वरमां यावत् घणा माणसोनो कोलाहल थतो हतो–इत्यादि *औपपातिक सूत्रमां कह्या प्रमाणे कहेवुं; यावत् घणां माणसो परस्पर ए प्रमाणे जणावे छे, यावत् ए प्रमाणे प्ररूपे छे के–हे देवानुप्रियो! ए प्रमाणे खरेखर तीर्थनी आदिना करनारा, यावत् सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी श्रमण भगवान् महावीर आ ब्राह्मणकुंडग्राम नामे नगरनी बहार बहुशाल नामना चैत्यमां यथायोग्य अवग्रहने ग्रहण करी यावत् विहरे छे, तो हे देवानुप्रियो! तेवा प्रकारना अर्हत् भगवंतना नामगोत्रना श्रवणमात्रथी पण मोटुं फल थाय छे'—इत्यादि †औपपातिक सूत्रने अनुसारे वर्णन करवुं. यावत् ते जनसमूह एक दिशा तरफ जाय छे, अने क्षत्रियकुंडग्राम नामे नगरना मध्यभागमांथी बहार निकळे छे, निकळीने ज्यां ब्राह्मणकुंडग्राम नामे नगर छे, अने ज्यां बहुशालक चैत्य छे त्यां आवे छे. ए प्रमाणे बधुं ‡औपपातिक सूत्रने अनुसारे कहेवुं, यावत् त्रण प्रकारनी पर्युपासना करे छे. त्यार पछी ते घणा मनुष्यना शब्दने यावत् जनना कोलाहलने सांभळीने अने अवधारीने क्षत्रियकुमार जमालिना मनमां आवा प्रकारनो आ विचार यावत् उत्पन्न थयो–'शुं आजे क्षत्रियकुंडग्राम नगरमां इन्द्रनो उत्सव छे, स्कन्दनो उत्सव छे, वासुदेवनो उत्सव छे, नागनो उत्सव छे, यक्षनो उत्सव छे, भूतनो उत्सव छे, कूवानो उत्सव छे, तळावनो उत्सव छे, नदीनो उत्सव छे, द्रहनो उत्सव छे, पर्वतनो उत्सव छे, वृक्षनो उत्सव छे, चैत्यनो उत्सव छे या स्तूपनो उत्सव छे, के जेथी ए बधा उग्रकुलना, भोगकुलना, राजन्यकुलना, इक्ष्वाकुकुलना, ज्ञातकुलना अने कुरुवंशना क्षत्रियो, क्षत्रियपुत्रो, भटो, अने भटपुत्रो, इत्यादि ¶औपपातिकसूत्रने अनुसारे कहेवुं, यावत् सार्थवाह प्रमुख स्नान करी, बलिकर्म (पूजा) करी इत्यादि ¶औपपातिकसूत्रमां वर्णन कर्या प्रमाणे यावत् बहार निकळे छे!' एम विचार करे छे. विचार करीने जमालि कंचुकिने बोलावे छे, बोलावीने तेने आ प्रमाणे कह्युं–'हे देवानुप्रिय! शुं आजे क्षत्रियकुंडग्राम नामना नगरमां इन्द्रनो उत्सव छे के यावत् आ बधा नगर बहार निकळे छे? त्यारे ते जमालि नामना क्षत्रियकुमारे ते कंचुकि पुरुषने ए प्रमाणे कह्युं त्यारे ते हर्षित अने संतुष्ट थयो, अने ते श्रमण भगवान् महावीरना आगमननो निश्चय करीने हाथ जोडी जमालि नामे क्षत्रियकुमारने जय अने विजय वडे वधावे छे. वधावीने तेणे आ प्रमाणे कह्युं–'हे देवानुप्रिय! आजे क्षत्रियकुंडग्राम नामे नगरमां इन्द्रनो उत्सव छे–इत्यादि तेथी यावत् बधा नीकळे छे, एम नथी, पण हे देवानुप्रिय! ए प्रमाणे श्रमण भगवान् महावीर यावत् सर्वज्ञ, सर्वदर्शी

---

१ अरिहंताणं ग। २ निग्गच्छइ क। ३ पज्जुवासइ क। ४ थूभम– क– ङ। ५ –प्पभिइ ग–घ। ६ –जमालिणं क– ङ। ७ –विणिच्छिए घ। ८ –गच्छति क–ङ।

८. * औपपातिक. प. ५७–१. † औपपातिक प. ५७–२. ‡ औपपातिक. प. ५९–२. ¶ औपपातिक. प. ५८–१.

...दरिसी माहणकुंडग्गामस्स नयरस्स बहिया बहुसालए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं जाव विहरति । तए णं एए बहवे उग्गा भोगा, जाव अप्पेगइया वंदणवत्तियं जाव निग्गच्छंति । तए णं से जमाली खत्तियकुमारे कंचुइपुरिसस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा, निसम्म हट्ठ-तुट्ठ- जाव कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, को० २ सद्दावेत्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जमालिणा खत्तियकुमारेणं एवं वुत्ता समाणा जाव पच्चप्पिणंति ।

९. तए णं से जमालिखत्तियकुमारे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता ण्हाते कयबलिकम्मे जाव उववाइए परिसावण्णओ तहा भाणियव्वं, जाव चंदणोक्खित्तगायसरीरे सव्वालंकारविभूसिए मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ, मज्जण० २ पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ, चाउग्घंटं २ दुरूहित्ता सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं, महयाभडचडगरपहकरवंदपरिक्खित्ते, खत्तियकुंडग्गामे नगरे मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे, जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुरए निगिण्हेइ, तुरए निगिण्हित्ता रहं ठवेइ, रहं ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता पुप्फ-तंबोला-ऽऽउहमादियं वाहणाओ य विसज्जेति, वा० २ विसज्जेत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, एग० करित्ता आयंते, चोक्खे, परमसुइब्भूए, अंजलिमउलियहत्थे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, ति० २ करेत्ता जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ । तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिस्स खत्तियकुमारस्स, तीसे य महतिमहालियाए इसि० जाव धम्मकहा, जाव परिसा पडिगया ।

१०. तए णं से जमालिखत्तियकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा, निसम्म हट्ठ-तुट्ठ जाव उट्ठाए उट्ठेइ, उ० २ उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव णमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं, रोएमि णं भंते! निग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते! निग्गंथं पावयणं, एव-

ब्राह्मणकुंडग्राम नामे नगरनी बहार बहुशाल नामे चैत्यमां यथायोग्य अवग्रह ग्रहण करीने यावत् विहरे छे. तेथी ए उग्रकुलना, भोगकुलना क्षत्रियो—इत्यादि यावत् केटलाक वांदवा माटे नीकळे छे. त्यारपछी ते जमालि क्षत्रियकुमार कंचुकि पुरुष पासेथी ए वातने सांभळी, हृदयमां अवधारी हर्षित अने संतुष्ट थई, कौटुंबिक पुरुषोने बोलावे छे, बोलावीने तेणे आ प्रमाणे कह्युं के—'हे देवानुप्रियो! तमे शीघ्र चारघंटावाळा अश्वरथने जोडीने हाजर करो अने हाजर करीने आ मारी आज्ञा पाछी आपो'. त्यारबाद जमालि क्षत्रियकुमारे ए प्रमाणे कह्युं एटले ते कौटुंबिक पुरुषो ते प्रमाणे अमल करी यावत् तेनी आज्ञा पाछी आपे छे.

ब्राह्मणकुंडग्राम. बहुशालचैत्य.

९. त्यारपछी ते जमालि क्षत्रियकुमार ज्यां स्नानगृह छे त्यां आवे छे, त्यां आवीने स्नान करी, तेणे बलिकर्म (पूजा) कर्युं—इत्यादि यावत् जेम *औपपातिकसूत्रमां पर्षदनुं वर्णन कर्युं छे तेम अहिं जाणवुं, यावत् चंदनथी जेना शरीरे विलेपन करायेलुं छे एवो ते जमालि सर्व अलंकारथी विभूषित थई स्नानगृहथी बहार निकळे छे. बहार निकळीने ज्यां बहार उपस्थानशाला छे, अने ज्यां चारघंटावाळो अश्वरथ उभो छे त्यां आवे छे. त्यां आवीने ते चारघंटावाळा अश्वरथ उपर चढे छे. चढीने माथा उपर धारण कराता कोरंटपुष्पनी माळावाळा छत्रसहित, महान् योधाओना समूहथी विंटायेलो ते क्षत्रियकुंडग्राम नामे नगरना मध्यभागथी बहार निकळे छे. निकळीने ज्यां ब्राह्मणकुंडग्राम नगर आवेलुं छे, अने ज्यां बहुशाल नामे चैत्य छे त्यां आवे छे. त्यां आवीने घोडाओने रोके छे, अने रथने उभो राखे छे. रथने उभो राखी, रथथी नीचे उतरे छे. उतरीने पुष्प, तांबूल, आयुधादि तथा उपानहो (पगरखानो) त्याग करे छे. त्याग करीने एक सळंग वस्त्रनुं उत्तरासंग करे छे. करीने कोगळो करी चोक्खा अने परम पवित्र थईने अंजलिवडे बे हाथ जोडीने ज्यां श्रमण भगवान् महावीर छे त्यां आवे छे, त्यां आवीने श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार प्रदक्षिणा करी यावत् त्रिविध पर्युपासनाथी उपासे छे. त्यारपछी श्रमण भगवंत महावीर जमालि नामे क्षत्रियकुमारने अने ते अत्यन्त मोटी ऋषि पर्षदाने यावत् धर्मोपदेश करे छे. यावत् ते पर्षद् [धर्मोपदेश श्रवण करीने] पाछी गई.

१०. त्यारबाद ते जमालि नामे क्षत्रियकुमार श्रमण भगवान् महावीरनी पासेथी धर्मने सांभळी, हृदयमां अवधारीने हर्षित अने संतुष्टहृदयवाळो थयो, अने यावत् उभो थइने श्रमण भगवंत महावीरनी त्रण वार प्रदक्षिणा करी, वंदन—नमस्कार करी तेणे आ प्रमाणे कह्युं—हे भगवन्! हुं निर्ग्रंथना प्रवचननी श्रद्धा करुं छुं, हे भगवन्! हुं निर्ग्रंथना प्रवचन उपर विश्वास करुं छुं, हे भगवन्! हुं निर्ग्रंथना

१ अहापडिरूवं क। २ जमालियखत्ति-ग-घ। ३ कंचुइज्ज ग-घ-ङ। ४ चंदणोक्खित्तगा- क, चंदणाकिन्नगा-घ, चंदणोक्खित्तगा- ङ। ५ -उक्खमति क। पाहणाउ य वि- क; ६ वाहणीओ य ग, वाहणाउ य ङ। ७ अंतियं क। ८ वयासि क।

९. * औपपातिक. प. ६४-२.

मेयं भंते !, तहमेयं भंते !, अवितहमेयं भंते !, असंदिद्धमेयं भंते !, जाव से जहेयं तुब्भे वदह, जं नवरं देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयामि । अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ।

११. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठ-तुट्ठे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता तामेव चाउग्घंटं आसरहं दुरूहेइ, दुरूहित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ बहुसालाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सकोरंट० जाव धरिज्जमाणे णं महयाभडचडगर- जाव परिक्खित्ते, जेणेव खत्तियकुंडग्गामे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खत्तियकुंडग्गामं नयरं मज्झंमज्झेणं, जेणेव सए गेहे, जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुरए निगिण्हइ, निगिण्हित्ता रहं ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ, रहाओ पच्चोरुहित्ता जेणेव अब्भिंतरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव अम्मा-पियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अम्मा-पियरो जएणं विजएणं वद्धावेइ, जएणं २ वद्धावित्ता एवं वयासी-एवं खलु अम्म-ताओ ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मे निसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए, अभिरुइए । तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मा-पियरो एवं वयासी-धन्ने सि णं तुमं जाया !, कयत्थे सि णं तुमं जाया !, कयपुन्ने सि णं तुमं जाया !, कयलक्खणे सि णं तुमं जाया ! जं णं तुमे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मे निसंते, से वि य धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए, अभिरुइए ।

१२. तए णं से जमालिखत्तियकुमारे अम्मा-पियरो दोच्चं पि एवं वयासी-एवं खलु मए अम्म-ताओ ! समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे निसंते, जाव अभिरुइए । तए णं अहं अम्म-ताओ ! संसारभउव्विग्गे, भीए जम्म-जरा-मरणेणं, तं इच्छामि णं अम्म-ताओ ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ।

प्रवचन उपर रुचि करुं छुं, अने हे भगवन् ! निर्ग्रंथना प्रवचनानुसारे वर्तवाने तैयार थयो छुं. वळी हे भगवन् ! जे तमे उपदेशो छो ते निर्ग्रन्थ प्रवचन एम ज छे, हे भगवन् ! तेमज छे. हे भगवन् ! सत्य छे, हे भगवन् ! असंदिग्ध (निश्चित) छे, परन्तु हे देवानुप्रिय ! मारा माता पितानी रजा मागीने हुं आप देवानुप्रियनी पासे मुंड-दीक्षित थइ गृहवासनो त्याग करी अनगारिकपणाने स्वीकारवा इच्छुं छुं.' हे देवानुप्रिय ! जेम सुख उपजे तेम करो, प्रतिबंध न करो.'

११. ज्यारे श्रमण भगवंत महावीरे जमालिने ए प्रमाणे कह्युं त्यारे ते प्रसन्न अने संतुष्ट थइ श्रमण भगवंत महावीरने त्रणवार प्रदक्षिणा करी यावत् नमस्कार करीने चारघंटावाळा अश्वरथ उपर चढे छे, चढीने श्रमण भगवंत महावीरनी पासेथी अने बहुशालक चैत्यथी नीकळे छे. नीकळीने माथे धराता यावत् कोरंटपुष्पनी मालावाळा छत्रसहित, मोटा सुभटोना समूहथी वींटायलो ते जमालि ज्यां क्षत्रियकुंडग्राम नामे नगर छे त्यां आवे छे. आवीने क्षत्रियकुंडग्राम नामे नगरनी मध्यभागमां थइने जे स्थळे पोतानुं घर छे अने ज्यां बहारनी उपस्थानशाला छे त्यां आवे छे. त्यां आवीने घोडाओने रोकीने रथने उभो राखे छे. उभो राखीने रथथी नीचे उतरे छे. उतरीने ज्यां अंदरनी उपस्थानशाला छे, ज्यां माता-पिता (बेठा) छे त्यां आवे छे, आवीने माता-पिताने जय अने विजयथी वधावे छे. वधावीने ते जमालिए आ प्रमाणे कह्युं-हे माता पिता ! ए प्रमाणे में श्रमण भगवंत महावीर पासेथी धर्म सांभळ्यो छे, ते धर्म मने इष्ट छे, अत्यन्त इष्ट छे, अने तेमां मारी अभिरुचि थइ छे. त्यारपछी ते जमालि कुमारने तेना माता पिताए आ प्रमाणे कह्युं-'हे पुत्र ! तुं धन्य छे, हे पुत्र ! तुं कृतार्थ छे, हे पुत्र ! तुं कृतपुण्य छे अने हे पुत्र ! तुं कृतलक्षण छे के जे तें श्रमण भगवंत महावीरनी पासेथी धर्मने सांभळ्यो छे, अने ते धर्म तने प्रिय छे, अत्यन्त प्रिय छे अने तेमां तारी अभिरुचि थई छे.'

जमालि०

१२. पछी ते जमालि क्षत्रियकुमारे बीजीवार पण पोताना माता-पिताने आ प्रमाणे कह्युं के-'हे माता-पिता ! ए प्रमाणे में श्रमण भगवंत महावीरनी पासेथी धर्म सांभळ्यो छे, यावत् तेमां मारी अभिरुचि थइ छे. तेथी हे माता-पिता ! हुं संसारना भयथी उद्विग्न थयो छुं, जन्म जरा अने मरणथी भय पाम्यो छुं, तेथी हे माता-पिता ! तमारी आज्ञाथी हुं श्रमण भगवंत महावीरनी पासे दीक्षा लेइने, गृहवासनो त्याग करी, अनगारिकपणाने ग्रहण करवा इच्छुं छुं.

---

१ आगारा- ग-घ-ङ । २ पव्वज्जामि क । ३ अंतियं क । ४ -हतिते क । ५ -भयड- ग-ङ । ६ जम्मणमरणेणं क-घ । ७ आगाराओ घ ङ ।

१३. तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माता तं अणिट्ठं, अकंतं, अप्पियं, अमणुन्नं, अमणामं, असुयपुव्वं गिरं सोच्चा, निसम्म, सेयागयरोमकूवपगलंतविलीणगत्ता, सोगभरपवेवियंगमंगी, नित्तेया, दीण-विमणवयणा, करयलमलियव्व कमलमाला, तक्खणओलुग्गदुब्बलसरीरलायन्नसुन्ननिच्छाया, गयसिरीया, पसिढिलभूसण-पडंतखुण्णियसंचुण्णियधवलवलय-पब्भट्ठउत्तरिज्जा, मुच्छावसणट्ठचेतगरुई, सुकुमालविकिण्णकेसहत्था, परसुणियत्त व्व चंपगलया, निव्वत्तमहे व्व इंदलट्ठी, विमुक्कसंधिबंधणा कोट्टिमतलंसि धसत्ति सव्वंगेहिं संनिवडिया। तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया ससंभमोवत्तियाए तुरियं कंचणभिंगारमुहविणिग्गयसीयलविमलजलधारपरिसिंचमाणनिव्वावियगायलट्ठी, उक्खेवय-तालियंट-वीयणगजणियवाएणं, संफुसिएणं अंतेउरपरिजणेणं आसासिया समाणी, रोयमाणी, कंदमाणी, सोयमाणी, विलवमाणी जमालिं खत्तियकुमारं एवं वयासी-तुमं सि णं जाया! अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे, कंते, पिए, मणुन्ने, मणामे, थेज्जे, वेसासिए, संमते, बहुमए, अणुमए भंडकरंडगसमाणे, रयणे रयणब्भूए, जीविऊसविये, हिययनंदिजणणे, उंबरपुप्फमिव दुल्लभे सवणयाए, किमंग! पुण पासणयाए, तं नो खलु जाया! अम्हे इच्छामो तुब्भं खणमवि विप्पयोगं, तं अच्छाहि ताव जाया! जाव ताव अम्हे जीवामो, तओ पच्छा अम्हेहिं कालगएहिं समाणेहिं परिणयवये, वड्ढियकुलवंसतंतुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइहिसि।

१४. तए णं जमाली खत्तियकुमारे अम्मा-पियरो एवं वयासी-तहा वि णं तं अम्म-ताओ! जं णं तुब्भे मम एवं वदह, तुमं सि णं जाया! अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते चेव, जाव पव्वइहिसि; एवं खलु अम्म-ताओ! माणुस्सए भवे अणेगजाइ-जरा-मरण-रोग-सारीर-माणसपकामदुक्ख-वेयण-वसणसतोवद्दवाभिभूए, अधुए, अणितिए, असासए, संज्झब्भरागसरिसे, जलबुब्बुदसमाणे, कुसग्गजलबिंदुसन्निभे, सुविणगदंसणोवमे, विज्जुलयाचंचले, अणिच्चे, सडण-पडण-विद्धंसणधम्मे, पुव्विं वा पच्छा वा अवस्स विप्पजहियव्वे भविस्सइ, से केस णं जाणइ अम्मताओ! के पुव्विं गमणयाए, के पच्छा गमणयाए? तं इच्छामि णं अम्म-ताओ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे समणस्स जाव- पव्वइत्तए।

१३. त्यारबाद जमालि क्षत्रियकुमारनी माता अनिष्ट, अकांत, अप्रिय, अमनोज्ञ, मनने न गमे तेवी अने पूर्वे नहीं सांभळेली एवी वाणीने सांभळी अने अवधारीने रोमकूपथी झरता परसेवाथी भीना शरीरवाळी थइ, शोकना भारथी तेनां अंगो अंग कंपवा लाग्यां, ते निस्तेज थई, तेनुं मुख दीन अने शोकातुर थयुं, करतलवडे चोळायेली कमळमालानी पेठे तेनुं शरीर तत्काळ ग्लान अने दुर्बल थयुं. ते लावण्यशून्य, प्रभारहित अने शोभाविनानी थइ गइ. तेना आभूषणो ढीलां थइ गयां, अने तेथी तेना निर्मल वलयो पडी गयां अने भांगीने चूर्ण थइ गया. तेनुं उत्तरीय वस्त्र शरीर उपरथी सरी गयुं, अने मूर्छावडे तेनुं चैतन्य नष्ट थयुं होवाथी ते भारे शरीरवाळी थइ गइ. तेनो सुकुमाल केशपाश विखराइ गयो. कुहाडीना वाथी छेदाएली चंपकलतानी पेठे अने उत्सव पूरो थता इन्द्रध्वजदंडनी जेम तेनां संधिबंधनो शिथिल थइ गयां, अने ते फरसबंधी उपर सर्व अंगोवडे 'धस्' दइने नीचे पडी गइ. त्यार पछी ते जमालि क्षत्रियकुमारनी माताना शरीरने [दासीवडे] व्याकुलचित्ते त्वराथी ढळाता सोनाना कलशना मुखथी नीकळेली शीतल अने निर्मल जलधाराना सिंचनवडे स्वस्थ कर्युं, अने ते उत्क्षेपक (वांसना बनेला), तालवृंत (ताडना पांदडाना बनेला) पंखा अने वींजणाना जलबिन्दुसहित पवनवडे अंतःपुरना माणसोथी आश्वासनने प्राप्त थइ. रोती, आक्रंदन करती, शोक करती अने विलाप करती ते जमालि क्षत्रियकुमारनी माता ए प्रमाणे कहेवा लागी-'हे जात! तुं अमारे इष्ट, कांत, प्रिय, मनोज्ञ, मन गमतो, आधारभूत, विश्वासपात्र, संमत, बहुमत, अनुमत, आभरणनी पेटी जेवो, रत्नस्वरूप, रत्नना जेवो, जीवितना उत्सव समान अने हृदयने आनंदजनक एकज पुत्र छो. वळी उंबराना पुष्पनी पेठे तारा नामनुं श्रवण पण दुर्लभ छे, तो तारुं दर्शन दुर्लभ होय एमां शुं कहेवुं? माटे हे पुत्र! खरेखर अमे तारो एक क्षण पण वियोग इच्छता नथी. तेथी हे पुत्र! ज्यां सुधी अमे जीवीए छीए त्यांसुधी तुं रहे. अने अमे कालगत थया पछी वृद्धावस्थामां कुलवंशतन्तुनी वृद्धि करीने निरपेक्ष थइने तुं श्रमण भगवंत महावीरनी पासे दीक्षा ग्रहण करी गृहवासनो त्याग करी अनगारिकपणाने स्वीकारजे.'

१४. त्यार पछी ते जमालि क्षत्रियकुमारे पोताना माता-पिताने आ प्रमाणे कह्युं के-"हे माता-पिता! हमणां मने जे तमे ए प्रमाणे कह्युं के-हे पुत्र! तुं अमारे इष्ट तथा कांत एक पुत्र छो-इत्यादि यावत् अमारा कालगत थया पछी तुं प्रव्रज्या लेजे." पण हे माता-पिता! ए प्रमाणे खरेखर आ मनुष्यभव अनेक जन्म, जरा, मरण अने रोगरूप शारीर अने मानसिक दुःखोनी अत्यन्त वेदनाथी अने सेंकडो व्यसनोथी पीडित, अध्रुव, अनित्य, अने अशाश्वत छे, तेम संध्याना रंग जेवो, पाणीना परपोटा जेवो, डाभनी अणी उपर रहेला जलबिन्दु जेवो, स्वप्नदर्शनना समान, विजळीनी पेठे चंचळ अने अनित्य छे. सडवुं, पडवुं अने नाश पामवो ए तेनो धर्म छे. पहेलां के पछी तेनो अवश्य त्याग करवानो छे; तो हे माता-पिता! ते कोण जाणे छे के-कोण पूर्वे जशे, अने कोण पछी जशे? माटे हे माता-पिता! हुं तमारी अनुमतिथी श्रमण भगवंत महावीरनी पासे यावत् प्रव्रज्या ग्रहण करवाने इच्छुं छुं.

जमालिनी माताने अवस्था.

जमालि.

---

१ नियस ख-ग-घ-ङ। २-मोयत्तियाए ग-घ-ङ। ३-परिसिंचमाण-ग। ४ जीवियऊसविए ङ। ५ हिययाणंदि-घ, हिययंदि-। ६ पुप्फं पिव क-ङ। ७-भगवओ क-ङ। ८ अम्हे क।

१५. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मा-पियरो एवं वयासी-इमं च ते जाया! सरीरगं पविसिट्ठरूव-लक्खण-वंजणगुणोववेयं, उत्तमबल-वीरीय-सत्तजुत्तं, विण्णाणवियक्खणं, ससोहग्गगुणसमुस्सियं अभिजायमहक्खमं, विविहवाहि-रोगरहियं, निरुवहय-उदत्त-लट्ठं, पंचिंदियपडुपढमजोव्वणत्थं, अणेगउत्तमगुणेहिं संजुत्तं, तं अणुहोहि ताव जाया! नियग-सरीररूव-सोहग्ग-जोव्वणगुणे, तओ पच्छा अणुभूय नियगसरीररूव-सोहग्गजोव्वणगुणे अम्हेहिं कालगएहिं समाणेहिं परिणयवये, वड्ढियकुलवंसतंतुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइहिसि।

१६. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मा-पियरो एवं वयासी-तहा वि णं तं अम्म-याओ! जं णं तुब्भे ममं एवं वदह-इमं च णं ते जाया! सरीरगं तं चेव जाव पव्वइहिसि; एवं खलु अम्म-याओ! माणुस्सगं सरीरं दुक्खाययणं, विविहवाहिसयसंनिकेतं, अट्ठियकट्ठुट्ठियं, छिरा-ण्हारुजालओणद्धसंपिणद्धं, मट्टियभंडं व दुब्बलं, असुइसंकिलिट्ठं, अणिट्ठवियसव्व-कालसंठप्पयं, जराकुणिम-जज्जरघरं व सडण-पडण-विद्धंसणधम्मं, पुव्विं वा पच्छा वा अवस्सं विप्पजहियव्वं भविस्सइ, से के स णं जाणति अम्मयाओ! के पुव्विं तं चेव जाव पव्वइत्तए।

१७. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मा-पियरो एवं वयासी—इमाओ य ते जाया! विपुलकुलबालियाओ सरिसियाओ, सरित्तयाओ, सरिव्वयाओ, सरिसलावन्न-रूव-जोव्वणगुणोववेयाओ, सरिसएहिंतो कुलेहिंतो आणियल्लियाओ कलाकुसल-सव्वकाललालिय-सुहोचियाओ, मद्दवगुणजुत्त-निउणविणओवयारपंडिय-वियक्खणाओ, मंजुल-मिय-महुरभणिय-विहसिय-विप्पेक्खियगति-विलास-चिट्ठियविसारदाओ, अविकलकुल-सीलसालिणीओ, विसुद्धकुल-वंससंताणतंतुवद्धण-प्पगब्भवयभाविणीओ, मणाणुकूल-हियइच्छियाओ, अट्ठ तुज्झ गुणवल्लहाओ, उत्तमाओ, निच्चं भावाणुरत्तसव्वंगसुंदरीओ भारियाओ, तं भुंजाहि ताव जाया! एताहिं सद्धिं विउले माणुस्सए कामभोगे, तओ पच्छा भुत्तभोगी, विसयविगयवोच्छिन्नकोउहल्ले अम्हेहिं कालगएहिं जाव पव्वइहिसि।

माता-पिता.

१५. त्यारपछी ते जमालि क्षत्रियकुमारने तेना माता पिताए आ प्रमाणे कह्युं के-"हे पुत्र! आ तारुं शरीर उत्तम रूप, लक्षण, व्यंजन (मस, तल वगेरे) अने गुणोथी युक्त छे, उत्तम बल, वीर्य अने सत्वसहित छे, विज्ञानमां विचक्षण छे, सौभाग्य गुणथी उन्नत छे, कुलीन छे, अत्यन्त समर्थ छे, अनेक प्रकारना व्याधि अने रोगथी रहित छे, निरुपहत, उदात्त, अने मनोहर छे, पटु (चतुर) एवी पांच इन्द्रियोथी युक्त अने उगती युवावस्थाने प्राप्त थयेलुं छे, अने ए शिवाय बीजा अनेक उत्तम गुणोथी भरपूर छे. माटे हे पुत्र! ज्यां सुधी तारा पोताना शरीरमां रूप, सौभाग्य तथा यौवनादि गुणो छे त्यांसुधी तेनो तुं अनुभव कर, अने अनुभव करी अमो कालगत थया पछी वृद्धावस्थामां कुलवंशरूप तन्तुनी वृद्धि करीने निरपेक्ष एवो तुं श्रमण भगवान् महावीर पासे दीक्षा लइने गृहवासनो त्याग करी अनगारिकपणाने स्वीकारजे.

जमालि.

१६. त्यारपछी ते जमालि क्षत्रियकुमारे पोताना माता-पिताने ए प्रमाणे कह्युं के-'हे माता-पिता! ते बरोबर छे, पण जे तमे मने ए प्रमाणे कह्युं के-'हे पुत्र! आ तारुं शरीर [उत्तमरूप, लक्षण व्यंजन अने गुणोथी युक्त छे] इत्यादि यावत् [अमारा कालगत थया पछी] तुं दीक्षा लेजे.' पण ए रीते तो हे माता-पिता! खरेखर आ मनुष्यनुं शरीर दुःखनुं घर छे, अनेक प्रकारना सेंकडो व्याधिओनुं स्थान छे, अस्थिरूप लाकडानुं बनेलुं छे, नाडीओ अने स्नायुना समूहथी अत्यन्त विंटाएल छे, माटीना वासणनी पेठे दुर्बल छे, अशुचिथी भरपूर छे, जेनुं शुश्रूषा कार्य हमेशां चालु छे. जीर्ण मृतक अने जीर्ण घरनी पेठे सडवुं, पडवुं अने नाश पामवो-ए तेना सह धर्मो छे. वळी ए शरीर पहेलां के पछी अवश्य छोडवानुं छे. तो हे माता-पिता! ते कोण जाणे छे के कोण पहेलां [जशे अने कोण पछी जशे.?] इत्यादि.

माता-पिता.

१७. त्यारपछी तेना माता-पिताए ते जमालि क्षत्रियकुमारने आ प्रमाणे कह्युं के-'हे पुत्र! आ तारे आठ स्त्रीओ छे, ते विशाल कुलमां उत्पन्न थयेली अने बाळाओ छे, ते समान त्वचावाळी, समान उमरवाळी, समान लावण्य, रूप अने यौवनगुणथी युक्त छे; वळी ते समान कुलथी आणेली, कलामां कुशल, सर्वकाल लालित अने सुखने योग्य छे; ते मार्दवगुणथी युक्त, निपुण, विनयोपचारमां पंडित अने विचक्षण छे; सुंदर मित, अने मधुर बोलवामां, तेमज हास्य, विप्रेक्षित, (कटाक्ष दृष्टि), गति, विलास अने स्थितिमां विशारद छे; उत्तम कुल अने शीलथी सुशोभित छे; विशुद्ध कुलरूप वंशतंतुनी वृद्धि करवामां समर्थ यौवनवाळी छे; मनने अनुकूल अने हृदयने इष्ट छे, वळी गुणो वडे प्रिय अने उत्तम छे, तेमज हमेशां भावमां अनुरक्त अने सर्व अंगमां सुंदर छे. माटे हे पुत्र! तुं ए स्त्रीओ साथे मनुष्यसंबन्धी विशाल कामभोगोने भोगव अने त्यार पछी भुक्तभोगी थइ विषयनी उत्सुकता दूर थाय त्यारे अमारा कालगत थया पछी यावत् तुं दीक्षा लेजे.

१ पसिविसिट्ठ-क। २ ससोभग्ग-क-क। ३-समूसियं क।

१८. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मा-पियरो एवं वयासी-तहा वि णं तं अम्म-याओ ! जं णं तुब्भे मम एवं वयह-इमाओ ते जाया ! विपुलकुल- जाव पव्वइहिसि, एवं खलु अम्म-याओ ! माणुस्सगा कामभोगा असुई, असासया, वंतासवा, पित्तासवा, खेलासवा, सुक्कासवा, सोणियासवा, उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणग-वंत-पित्त-पूय-सुक्क-सोणिय-समुब्भवा, अमणुन्नदुरूय-मुत्त-पूइय-पुरिसपुन्ना, मयगंधुस्सास-असुभनिस्सासउव्वेयणगा, बीभत्था, अप्पकालिया, लहुसगा, कलमलाहियासदुक्खबहुजणसाहारणा, परिकिलेसकिच्छदुक्खसज्झा, अबुहजणणिसेविया, सदा साहुगरहणिज्जा, अणंतसंसारवद्धणा, कडुगफलविवागा चुडलिव्व अमुच्चमाणदुक्खाणुबंधिणो, सिद्धिगमणविग्घा; से के स णं जाणइ अम्म-याओ ! के पुव्विं गमणयाए के पच्छा ? तं इच्छामि णं अम्म-याओ ! जाव पव्वइत्तए ।

१९. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मा-पियरो एवं वयासी-इमे य ते जाया ! अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागए सुबहुहिरन्ने य, सुवन्ने य, कंसे य, दूसे य, विउलधण-कणग- जाव संतसारसावएज्जे, अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं, पकामं भोत्तुं, परिभाएउं, तं अणुहोहि ताव जाया ! विउले माणुस्सए इड्ढि-सक्कारसमुदए, तओ पच्छा अणुहूयकल्लाणे, वड्ढियकुलवंस- जाव पव्वइहिसि ।

२०. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मा-पियरो एवं वयासी-तहा वि णं तं अम्म-याओ ! जं णं तुब्भे ममं एवं वयह-इमं च ते जाया ! अज्जग-पज्जग- जाव पव्वइहिसि, एवं खलु अम्म-याओ ! हिरन्ने य, सुवन्ने य, जाव सावएज्जे अग्गिसाहिए, चोरसाहिए, रायसाहिए, मच्चुसाहिए, दाइयसाहिए, अग्गिसामन्ने जाव दाइयसामन्ने, अधुवे, अणितिए, असासए, पुव्विं वा पच्छा वा अवस्स विप्पजहियव्वे भविस्सइ, से केस णं जाणइ तं चेव जाव पव्वइत्तए ।

२१. तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्म-याओ जाहे नो संचाएंति विसयाणुलोमाहिं बहूहिं आघवणाहि य, पन्नवणाहि य, सन्नवणाहि य, विन्नवणाहि य आघवेत्तए वा, पन्नवेत्तए वा, सन्नवेत्तए वा, विन्नवेत्तए वा, ताहे विसयपडिकूलाहिं

१८. त्यारपछी ते जमालि नामे क्षत्रियकुमारे पोताना माता पिताने आ प्रमाणे कह्युं के-'हे माता-पिता ! हमणा तमे जे मने कह्युं के-हे पुत्र ! तारे विशाल कुलमां [उत्पन्न थयेली आ आठ स्त्रीओ छे]-इत्यादि यावत् तुं दीक्षा लेजे, ते ठीक छे. पण हे माता-पिता ! ए प्रमाणे खरेखर मनुष्यसंबन्धी कामभोगो अशुचि अने अशाश्वत छे; वात, पित्त, श्लेष्म, वीर्य अने लोहीने झरवावाळा छे; विष्ठा, मूत्र, श्लेष्म, नासिकानो मेल, वमन, पित्त, परु, शुक्र अने शोणितथी उत्पन्न थयेलां छे; वळी ते अमनोज्ञ, खराब मूत्र अने दुर्गन्धी विष्टाथी भरपूर छे; मृतकना जेवी गंधवाळा उच्छ्वासथी अने अशुभ निःश्वासथी उद्वेगने उत्पन्न करे छे, बीभत्स, अल्पकाळस्थायी, हलका, अने कलमल-(शरीरमां रहेल एक प्रकारना अशुभ द्रव्य)ना स्थानरूप होवाथी दुःखरूप अने सर्व मनुष्योने साधारण छे; शारीरिक अने मानसिक अत्यंत दुःखवडे साध्य छे; अज्ञान जनथी सेवाएला छे; साधु पुरुषोथी हमेशां निंदनीय छे; अनंत संसारनी वृद्धि करनारा छे, परिणामे कटुकफळवाळा छे, बळता घासना पूळानी पेठे न मुकी शकाय तेवा दुःखानुबंधी अने मोक्षमार्गमां विघ्नरूप छे. वळी हे माता-पिता ! ते कोण जाणे छे के कोण पहेलां जशे अने कोण पछी जशे ? माटे हे माता-पिता ! हुं यावद् दीक्षा लेवाने इच्छुं छुं.'

जमालि.

मनुष्यसंबन्धी कामभोगो अशुचि अने अशाश्वत छे इत्यादि.

१९. त्यारपछी ते जमालि नामे क्षत्रियकुमारने तेना माता-पिताए आ प्रमाणे कह्युं के 'हे पुत्र ! आ अर्या (पितामह), पर्या (प्रपितामह) अने पिताना पर्या-(प्रपितामह-) थकी आवेलुं घणुं हिरण्य, सुवर्ण, कांस्य, वस्त्र, विपुल धन, कनक यावत् सारभूत द्रव्य विद्यमान छे, अने ते तारे सात पेढी सुधी पुष्कळ दान देवाने पुष्कळ भोगववाने अने वहेंचवा माटे पूरतुं छे. माटे हे पुत्र ! मनुष्यसंबन्धी विपुल ऋद्धि अने सन्मानने भोगव, अने त्यारपछी सुखनो अनुभव करी, अने कुलवंशने वधारी यावत् तुं दीक्षा लेजे.'

मात-पिता.

हिरण्यादिनो उपभोग कर-इत्यादि.

२०. त्यारबाद जमालि नामे क्षत्रियकुमारे पोताना माता-पिताने आ प्रमाणे कह्युं के-'हे माता-पिता ! तमे जे ए प्रमाणे कह्युं के, 'हे पुत्र ! आ हिरण्यादि द्रव्य तारा पितामह अने प्रपितामहथी यावत् आवेलुं छे, इत्यादि यावत् तुं दीक्षा लेजे. ए ठीक छे, पण हे माता-पिता ! ए प्रमाणे खरेखर ते हिरण्य, सुवर्ण, यावत् सर्व सारभूत द्रव्य अग्निने साधारण छे, चोरने साधारण छे, राजाने साधारण छे, मृत्युने साधारण छे, दायाद (भायात) ने साधारण छे, अग्निने सामान्य छे, यावद् दायादने सामान्य छे. वळी ते अध्रुव, अनित्य, अने अशाश्वत छे. पहेलां के पछी ते अवश्य छोडवानुं छे, तो कोण जाणे छे के पहेलां कोण जशे अने पछी कोण जशे ? इत्यादि यावत् हुं प्रव्रज्या लेवाने इच्छुं छुं.'

जमालि.

हिरण्यादि अग्निसाधारण अने अशाश्वत छे.

२१. ज्यारे जमालि क्षत्रियकुमारने तेना माता पिता विषयने अनुकूल एवी घणी उक्तिओ, प्रज्ञप्तिओ, संज्ञप्तिओ अने विज्ञप्तिओथी कहेवाने, जणाववाने, समजाववाने, विनववाने समर्थ न थया त्यारे तेओए विषयने प्रतिकूल, अने संयमने विषे भय अने उद्वेग करनारी

मात-पिता.

१-स्सवका-ग,-स्सवा ङ । २ आकाहि ग ।

संजमभयुव्वेयणकराहिं पन्नवणाहिं पन्नवेमाणा एवं वयासी–एवं खलु जाया ! णिग्गंथे पावयणे सच्चे, अणुत्तरे, केवले जहा आवस्सए, जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति । अहीव एगंतदिट्ठीए, खुरो इव एगंतधाराए, लोहमया जवा चावेयव्वा, वालुयाकवले इव निस्साए, गंगा वा महानदी पडिसोयगमणयाए, महासमुद्दे वा भुयाहिं दुत्तरो; तिक्खं कमियव्वं, गरुयं लंबेयव्वं, असिधारगं वतं चरियव्वं । नो खलु कप्पइ जाया ! समणाणं निग्गंथाणं अहाकम्मिए इ वा, उद्देसिए इ वा, मिस्सजाए इ वा, अज्झोयरए इ वा, पूइए इ वा, कीते इ वा, पामिच्चे इ वा, अच्छेज्जे इ वा, अणिसट्ठे इ वा, अभिहडे इ वा, कंतारभत्ते इ वा, दुब्भिक्खभत्ते इ वा, गिलाणभत्ते इ वा, वद्दलियाभत्ते इ वा, पाहुणगभत्ते इ वा, सेज्जायरपिंडे इ वा, रायपिंडे इ वा, मूलभोयणे इ वा, कंदभोयणे इ वा, फलभोयणे इ वा, बीयभोयणे इ वा, हरियभोयणे इ वा भुत्तए वा पायए वा । तुमं सि च णं जाया ! सुहसमुचिए, णो चेव णं दुहसमुचिए; नालं सीयं, नालं उण्हं, नालं खुहा, नालं पिवासा, नालं चोरा, नालं वाला, नालं दंसा, नालं मसगा, नालं वाइय–पित्तिय–सेंभिय–सन्निवाइए विविहरोगायंके, परिस्सहोवसग्गे उदिन्ने अहियासेत्तए । तं नो खलु जाया ! अम्हे उ इच्छामो तुम्भं खणमवि विप्पयोगं, तं अच्छाहि ताव जाया ! जाव ताव अम्हे जीवामो; तओ पच्छा अम्हेहिं जाव पव्वइहिसि;

२२. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मा–पियरो एवं वयासी–तहा वि णं तं अम्म–याओ ! जं णं तुब्भे ममं एवं वदह, एवं खलु जाया ! निग्गंथे पावयणे सच्चे, अणुत्तरे, केवले तं चेव जाव पव्वइहिसि; एवं खलु अम्मयाओ ! निग्गंथे पावयणे कीवाणं, कायराणं, कापुरिसाणं, इहलोगपडिबद्धाणं, परलोगपरंमुहाणं, विसयतिसियाणं दुरणुचरे पागयजणस्स धीरस्स, निच्छियस्स, ववसियस्स नो खलु एत्थं किंचि वि दुक्करं करणयाए, तं इच्छामि णं अम्म–याओ ! तुब्भेहिं अब्भणु

निर्ग्रन्थ प्रवचन सत्य छे.

एवी उक्तिओथी समजावता आ प्रमाणे कह्युं के 'हे पुत्र ! ए प्रमाणे खरेखर निर्ग्रंथ प्रवचन सत्य, अनुत्तर अने अद्वितीय छे. इत्यादि *आवश्यक सूत्रमां कह्या प्रमाणे यावत् ते सर्व दुःखोनो नाश करनारुं छे. परन्तु ते सर्पनी पेठे [1]एकांत–निश्चितदृष्टिवाळुं, अस्त्रानी पेठे एकांत धारवाळुं, लोढाना जवने चाववानी पेठे दुष्कर, अने वेळुना कोळीयानी पेठे निःस्वाद छे, वळी ते गंगा नदीना सामे प्रवाहे जवानी पेठे, अने बे हाथथी समुद्र तरवाना जेवुं ते प्रवचननुं अनुपालन मुश्केल छे. तीक्ष्ण खड्गादि उपर चालवाना जेवुं [दुष्कर] छे, मोटी शिलाने उचकवा बरोबर छे अने तरवारनी धारा समान व्रतनुं आचरण करवानुं छे. हे पुत्र ! श्रमण निर्ग्रंथोने ‡ १ आधाकर्मिक, २ औद्देशिक, ३ मिश्रजात, ४ अध्यवपूरक, ५ पूतिकृत, ६ क्रीत, ७ प्रामित्य, ८ अच्छेद्य, ९ अनिःसृष्ट, १० अभ्याहृत, ११ कांतारभक्त, १२ दुर्भिक्षभक्त, १३ ग्लानभक्त, १४ वार्दलिकाभक्त, १५ प्राघूर्णकभक्त, १६ शय्यातरपिंड अने १७ राजपिंड, तेमज मूलनुं भोजन, कंदनुं भोजन, फलनुं भोजन, बीजनुं भोजन अने हरित–(लीलीवनस्पति) नुं भोजन खावुं के पीवुं कल्पतुं नथी. वळी हे पुत्र ! तुं सुखने योग्य छो पण दुःखने योग्य नथी. तेमज टाढ, तडका, भुख, तरश, चोर, श्वापद, डांस अने मच्छरना उपद्रवो, तथा वातिक, पैत्तिक, श्लैष्मिक अने संनिपातजन्य विविध प्रकारना रोगो अने तेना दुःखोने, तेमज परीषह अने उपसर्गोने सहवाने समर्थ नथी. माटे हे पुत्र ! अमे तारो वियोग एक क्षण पण इच्छता नथी; तेथी ज्यांसुधी अमे जीविए त्यांसुधी तुं रहे अने अमे कालगत थया पछी यावत् तुं दीक्षा लेजे'.

जमालि.

२२. त्यारपछी ते जमालि नामे क्षत्रियकुमारे पोताना माता–पिताने आ प्रमाणे कह्युं के—'हे माता–पिता ! तमे मने जे ए प्रमाणे कह्युं के—हे पुत्र ! निर्ग्रंथप्रवचन सत्य, अनुत्तर अने अद्वीतीय छे–इत्यादि यावत् अमारा कालगत थया पछी तुं दीक्षा लेजे. ते ठीक छे, पण हे मात–पिता ! ए प्रमाणे खरेखर निर्ग्रन्थ प्रवचन क्लीब–मन्दशक्तिवाळा, कायर अने हलका पुरुषोने, तथा आ लोकमां आसक्त, परलोकथी पराङ्मुख एवा विषयनी तृष्णावाळा सामान्य पुरुषोने (तेनुं अनुपालन) दुष्कर छे; पण धीर, निश्चित अने प्रयत्नवान् पुरुषने तेनुं अनुपालन जरा पण दुष्कर नथी. माटे हे माता–पिता ! हुं तमारी अनुमतिथी श्रमण भगवंत महावीरनी पासे यावद् दीक्षा लेवा

---

१ समुद्दे इ वा ग, समुद्दे व्वा घ, समुद्दो व्व ङ । २ मिस्साजा–ङ । ३ उज्झोयरए ग–घ–ङ । ४ तुमं च णं ग–घ । ५ ६ १ अ–ङ । ६ अम्हेहिं कालगएहिं –ङ ।

२१. * "इणमेव णिग्गंथं पावयणं सच्चं, अणुत्तरं, केवलियं, पडिपुन्नं नेआउयं, संसुद्धं, सल्लगत्तणं, सिद्धिमग्गं, मुत्तिमग्गं, निज्जाणमग्गं, निव्वाणमग्गं, अवितहं, अविसंधि, सव्वदुक्खप्पहीणमग्गं । इत्थं ठिआ जीवा सिज्झंति, बुज्झंति, मुच्चंति, परिनिव्वायंति, सव्वदुक्खाणमंतं करंति" ।

(आवश्यकप्रतिक्रमण सूत्र–३०–३१.)

अर्थ—आज निर्ग्रन्थप्रवचन सत्य, अनुपम, अद्वितीय, परिपूर्ण, न्याययुक्त, शुद्ध, शल्यने कापनार, सिद्धिमार्ग, मुक्तिमार्ग, निर्याणमार्ग, अने निर्वाणमार्गरूप छे. तेमज ते असत्यरहित, निरन्तर अने सर्वदुःखना नाशनुं कारण छे. तेनामां तत्पर थयेला जीवो सिद्ध थाय छे, बुद्ध थाय छे, मुक्त थाय छे, निर्वाणने प्राप्त थाय छे अने सर्वदुःखोनो नाश करे छे.

‡ साधुओने पिंडना बेंताळीश दोषो होय छे. सोळ उद्गमदोष, सोळ उत्पादनादोष. अने दश एषणादोष. तेमां आधाकर्मिकादि सोळ उद्गमदोषो छे. तेमांना 'आधाकार्मिक'थी मांडीने 'अभ्याहृत'सुधीना दश दोषो छे. जुओ–प्रवचनसारोद्धार गाथा. ५६५.

तए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव पव्वइत्तए। तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मा-पियरो जाहे नो संचाएंति विसयाणुलोमाहि य, विसयपडिकूलाहि य बहूहिं आघवणाहि य, पन्नवणाहि य आघवित्तए वा, जाव विन्नवित्तए वा, ताहे अकामाइं चेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स निक्खमणं अणुमन्नित्था।

२३. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! खत्तियकुंडग्गामं नयरं सब्भितरबाहिरियं आसिय-संमज्जि-ओवलित्तं जहा उववाइए, जाव पच्चप्पिणंति। तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया दोच्चं पि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! जमालिस्स खत्तियकुमारस्स महत्थं, महग्घं, महरिहं विपुलं निक्खमणाभिसेयं उवट्ठवेह। तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव जाव पच्चप्पिणंति। तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मा-पियरो सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहं निसीयावेंति, निसीयावेत्ता अट्ठसएणं सोवण्णियाणं कलसाणं, एवं जहा रायप्पसेणइज्जे, जाव अट्ठसएणं भोमेज्जाणं कलसाणं सव्विड्ढिए जाव महया रवेणं महया महया निक्खमणाभिसेगेणं अभिसिंचंति।

२४. अ० २ अभिसिंचित्ता करयल- जाव जएणं विजएणं वद्धावेंति, ज० २ वद्धावित्ता एवं वयासी—भण जाया! किं देमो, किं पयच्छामो, किणा वा ते अट्ठो? तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मा-पियरो एवं वयासी—इच्छामि णं अम्म-ताओ! कुत्तियावणाओ रयहरणं च पडिग्गहं च आणिउं कासवगं च सद्दाविउं। तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, को० २ सद्दावित्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! सिरिघराओ तिन्नि सयसहस्साइं गहाय दोहिं सयसहस्सेणं कुत्तियावणाओ रयहरणं च पडिग्गहं च आणेह, सयसहस्सेणं कासवगं सद्दावेह। तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठ-तुट्ठ- करयल- जाव पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सिरिघराओ तिन्नि सयसहस्साइं, तहेव जाव कासवगं सद्दावेंति। तए णं से कासवए जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविए समाणे हट्ठे तुट्ठे ण्हाए कयबलिकम्मे जाव सरीरे, जेणेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तेणेव

इच्छुं छुं. ज्यारे जमालि क्षत्रियकुमारने तेना माता-पिता विषयने अनुकूल तथा विषयने प्रतिकूल एवी घणी उक्तिओ, प्रज्ञप्तिओ, संज्ञप्तिओ अने विनतिओथी कहेवाने यावत् समजाववाने शक्तिमान् न थया त्यारे वगर इच्छाए तेओए जमालि क्षत्रियकुमारने दीक्षा लेवानी अनुमति आपी. दीक्षानुमति.

२३. त्यार पछी ते जमालि क्षत्रियकुमारना पिताए कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या. अने बोलावीने एम कह्युं के—'हे देवानुप्रियो! शीघ्र आ क्षत्रियकुंडग्राम नगरनी बहार अने अंदर पाणीथी छंटकाव करावो, वाळीने साफ करावो, अने लींपावो'—इत्यादि जेम* औपपातिक सूत्रमां कह्युं छे तेम करीने यावत् ते कौटुंबिक पुरुषो आज्ञा पाछी आपे छे. त्यारबाद फरीने पण जमालि क्षत्रियकुमारना पिताए कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, अने बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं के—'हे देवानुप्रियो! जल्दी जमालि क्षत्रियकुमारनो महार्थ, महामूल्य, महापूज्य अने मोटो दीक्षानो अभिषेक तैयार करो.' त्यारबाद ते कौटुंबिक पुरुषो कह्या प्रमाणे करीने आज्ञा पाछी आपे छे. त्यारबाद जमालि क्षत्रियकुमारने तेना माता-पिता उत्तम सिंहासनमां पूर्व दिशा सन्मुख बेसारे छे, अने बेसारीने एकसो आठ सोनाना कळशोथी—इत्यादि †राजप्रश्नीयसूत्रमां कह्या प्रमाणे यावत् एकसोने आठ माटीना कळशोथी सर्व ऋद्धिवडे यावद् मोटा शब्दवडे मोटा २ निष्क्रमणाभिषेकथी तेनो अभिषेक करे छे. जमालिनी दीक्षा.

२४. अभिषेक कर्या बाद ते जमालि क्षत्रियकुमारना माता-पिता हाथ जोडी यावत् तेने जय अने विजयथी वधावे छे. वधावीने तेओए आ प्रमाणे कह्युं के—'हे पुत्र! तुं कहे के तने अमे शुं दइए, शुं आपीए, अथवा तारे कांइ प्रयोजन छे? त्यारे ते जमालि क्षत्रियकुमारे पोताना माता-पिताने आ प्रमाणे कह्युं के—हे माता-पिता! हुं ‡कुत्रिकापणथी एक रजोहरण अने एक पात्र मंगाववा तथा एक हजामने बोलाववा इच्छुं छुं. त्यारे ते जमालि क्षत्रियकुमारना पिताए कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या अने बोलावीने कह्युं के—'हे देवानुप्रियो! शीघ्र आपणा खजानामांथी त्रण लाख (सोनैया) ने लइने तेमांथी बे लाख (सोनैया) वडे कुत्रिकापणथी एक रजोहरण अने एक पात्र लावो, तथा एक लाख सोनैया आपीने एक हजामने बोलावो. ज्यारे जमालि क्षत्रियकुमारना पिताए ते कौटुंबिक पुरुषोने ए प्रमाणे आज्ञा करी त्यारे तेओ खुश थया, तुष्ट थया, अने हाथ जोडीने यावत् पोताना स्वामीनुं वचन स्वीकारीने तुरतज खजानामांथी त्रण लाख सुवर्णमुद्रा लइने यावत् हजामने बोलावे छे, त्यारबाद जमालि क्षत्रियकुमारना पिताए कौटुंबिक पुरुषो द्वारा बोलावेलो ते हजाम खुश थयो, तुष्ट थयो,

---

१ बहूहिं य आ- ग-ङ। २ अकामए चे-ग। ३ अट्ठसयाणं ङ। ४-सिंचइ ग-घ। ५ वा क। ६-वा क। ७-णुप्पिये। ८ वुत्ते समाणे ङ। ९-तुट्ठा घ। १० हट्ठतुट्ठे क।

२३. * औपपातिक. प. ६१-२. † राजप्रश्नीय प. १००-१. पं ८.

२४. ‡ कु-पृथिवी, त्रिक-त्रण, आपण-हाट; स्वर्ग, मर्त्य अने पातालरूप त्रण लोकमां रहेली वस्तुने मळवाना स्थान-हाटने कुत्रिकापण कहे छे—टीका.

उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल– जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पियरं जएणं विजएणं वद्धावेइ, अ० २ वद्धावित्ता एवं वयासी–संदिसंतु णं देवाणुप्पिया! जं मए करणिज्जं? तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तं कासवगं एवं वयासी–तुमं देवाणुप्पिया! जमालिस्स खत्तियकुमारस्स परेणं जत्तेणं चउरंगुलवज्जे [1]निक्खमणपाओग्गे अग्गकेसे [2]कप्पेहि। तए णं से कासवे जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एवं वुत्ते समाणे हट्ठ–तुट्ठ– करयल– जाव एवं सामी! [3]तहत्ताणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता सुरभिणा गंधोदएणं हत्थ–पादे पक्खालेइ, पक्खालित्ता सुद्धाए अट्ठपडलाए पोत्तीए मुहं बंधइ, मुहं बंधित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स परेणं जत्तेणं चउरंगुलवज्जे [4]निक्खमणपाओग्गे अग्गकेसे कप्पेइ। तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया हंसलक्खणेणं पडसाडएणं अग्गकेसे [5]पडिच्छइ, अ० २ पडिच्छित्ता सुरभिणा गंधोदएणं पक्खालेइ, सुरभि० २ पक्खालित्ता अग्गेहिं [6]वरेहिं गंधेहिं, मल्लेहिं अच्चेति, अग्गेहिं० २ अच्चित्ता [7]सुद्धे वत्थे बंधइ, सु० २ बंधित्ता रयणकरंडगंसि पक्खिवति, पक्खिवित्ता हार–[8]वारिधार–सिंदुवार–छिन्नमुत्तावलिप्पगासाइं सुयवियोगदूसहाइं अंसूइं विणिम्मुयमाणी २ एवं वयासी–एस णं अम्हं जमालिस्स खत्तियकुमारस्स बहूसु तिहीसु य पव्वणीसु य उस्सवेसु य जन्नेसु य छणेसु य अपच्छिमे दरिसणे भविस्सतीति कट्टु [9]ऊसीसगमूले ठवेति।

२५. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मा–पियरो [10]दोच्चं पि उत्तरावक्कमणं सीहासणं रयावेंति, दोच्चं पि रयावित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स [11]सेयी–पीयएहिं कलसेहिं [12]ण्हावेंति, सेया० २ [13]ण्हावित्ता पम्हलसुकुमालाए सुरभीए गंधकासाईए गायाइं लूहेंति, प० २ लूहित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपंति, स० २ अणुलिंपित्ता नासानिस्सासवायवोज्झं, चक्खुहरं, वन्न–फरिसजुत्तं, हयलालापेलवाऽतिरेगं, धवलं, कणगखचितंतकम्मं, महरिहं, हंसलक्खणपडसाडगं [14]परिहिंति, परिहित्ता हारं [15]पिणद्धेंति, पिणद्धित्ता अद्धहारं पिणद्धेंति, पिणद्धित्ता एवं जहा [*]सूरियाभस्स अलंकारो तहेव जाव चित्तं रयणसंकडुक्कडं मउडं पिणिद्धंति; किं बहुणा! गंथिम–वेढिम–पूरिम–संघातिमेणं चउव्विहेणं मल्लेणं कप्परुक्खगं पिव अलंकिय–विभूसियं करेंति। तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं, लीलट्ठियसालभंजियागं जहा रायप्पसेणइज्जे विमाणवण्णओ, जाव मणि-

न्हायो, अने बलिकर्म (देवपूजा) करी, यावत् तेणे पोतानुं शरीर शणगार्युं, अने पछी ज्यां जमालि क्षत्रियकुमारनो पिता छे त्यां ते आवे छे. आवीने हाथ जोडीने जमालि क्षत्रियकुमारना पिताने जय अने विजयथी वधावे छे; वधाव्या पछी ते हजाम आ प्रमाणे बोल्यो के–'हे देवानुप्रिय! जे मारे करवानुं होय ते फरमावो'. त्यारपछी ते जमालि क्षत्रियकुमारना पिताए ते हजामने आ प्रमाणे कह्युं के–'हे देवानुप्रिय! जमालि क्षत्रियकुमारना अत्यन्त यत्नपूर्वक चार अंगुल मूकीने निष्क्रमणने (दीक्षाने) योग्य आगळना वाळ कापी नाख. त्यारपछी ज्यारे जमालि क्षत्रियकुमारना पिताए ते हजामने ए प्रमाणे कह्युं त्यारे ते खुश थयो, तुष्ट थयो अने हाथ जोडीने ए प्रमाणे बोल्यो–'हे स्वामिन्! आज्ञा प्रमाणे करीश' एम कहीने विनयथी ते वचननो स्वीकार करे छे. स्वीकार करीने सुगंधी गंधोदकथी हाथ पगने धुए छे, धोइने शुद्ध आठ पडवाळा वस्त्रथी मोंढाने बांधी अत्यंत यत्नपूर्वक जमालि क्षत्रियकुमारना निष्क्रमण योग्य अग्रकेशो चार आंगळ मूकीने कापे छे. त्यार पछी जमालि क्षत्रियकुमारनी माता हंसना जेवा श्वेत पटशाटकथी ते अग्रकेशोने ग्रहण करे छे. ग्रहण करीने ते केशोने सुगंधी गंधोदकथी धूए छे. धोइने उत्तम अने प्रधान गंध तथा मालावडे पूजे छे. पूजीने शुद्ध वस्त्रवडे बांधे छे. बांधीने रत्नना करंडियामां मूके छे. त्यार पछी ते जमालि क्षत्रियकुमारनी माता हार, पाणीनी धारा, सिंदुवारना पुष्पो अने तूटी गएली मोतीनी माळा जेवां पुत्रना वियोगथी दुःसह आंसु पाडती आ प्रमाणे बोली के–आ केशो अमारा माटे घणी तिथिओ, पर्वणीओ, उत्सवो, यज्ञो, अने महोत्सवोमां जमालिकुमारना वारंवार दर्शनरूप थशे' एम धारी तेने ओशीकाना मूळमां मूके छे.

२५. त्यार बाद ते जमालि क्षत्रियकुमारना माता–पिता पुनः उत्तर दिशा सन्मुख बीजुं सिंहासन मूकावे छे. मूकावीने फरीवार जमालि क्षत्रियकुमारने सोना अने रूपाना कळशो वडे न्हवरावे छे. न्हवरावीने सुरभि, दशावाळी अने सुकुमाल सुगंधी गंधकाषाय (गन्धप्रधान लाल) वस्त्र वडे तेनां अंगोने लुंछे छे, अने अंगोने लुंछीने सरस गोशीर्ष चंदनवडे गात्रनुं विलेपन करे छे. विलेपन करीने नासिकाना निःश्वासना वायुथी उडी जाय एवुं हल्कुं, आंखने गमे तेवुं सुंदर, वर्ण अने स्पर्शथी संयुक्त, घोडानी लाळ करतां पण वधारे नरम, धोळुं, सोनाना कसबी छेडावाळुं, महामूल्यवाळुं, अने हंसना चिह्नयुक्त एवुं पटशाटक (रेशमी वस्त्र) पहेरावे छे. पहेरावीने हार अने अर्धहारने पहेरावे छे. ए प्रमाणे जेम [*]सूर्याभना अलंकारनुं वर्णन करेलुं छे तेम अहिं करवुं, यावत् विचित्र रत्नोथी जडेला उत्कृष्ट मुकुटने पहेरावे

१–पओगे ग–घ–ङ। २ पडिकप्पेहि घ। ३ तहत्ताणा वि–क। ४–पयोगे ग–घ–ङ। ५ पडिसा–ग। ६ चमरेहिं क। ७ सुद्धवत्थेणं घ, सुद्धेणं वत्थेणं ङ। ८–वारिधारा ग–घ। ९ ओसीसग–ग। १० दोच्चं उत्त–क। ११ सीयापी–क–घ, सेयपी–ङ। १२ ण्हाणेंति ग–घ। १३ ण्हाणेत्ता ग–घ। १४ पिणिहेंति, पिणिहित्ता क। १५ –णहेंति, –णहेत्ता क।

२५. * राजप्रश्नीय पृ. १०२–१

रयणघंटियाजालपरिक्खित्तं पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । तए णं ते कोडुं-बियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति । तए णं से जमाली खत्तियकुमारे केसालंकारेणं, वत्थालंकारेणं, मल्लालंकारेणं, आभरणा-लंकारेणं चउव्विहेणं अलंकारेणं अलंकारिए समाणे पडिपुन्नालंकारे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, सिंहासणाओ अब्भुट्ठित्ता सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणे सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाऽभिमुहे सन्निसन्ने । तए णं तस्स जमालिस्स खत्तिय-कुमारस्स माता ण्हाया, कय–(बलिकम्मा) जाव –सरीरा हंसलक्खणं पडसाडगं गहाय सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणी सीयं दुरुहइ, सीयं दुरुहित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स दाहिणे पासे भद्दासणवरंसि सन्निसन्ना । तए णं तस्स जमालिस्स-खत्तियकुमारस्स अम्मधाती ण्हाया, जाव –सरीरा रयहरणं पडिग्गहं च गहाय सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणी सीयं दुरु-हइ, सीयं दुरुहित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स वामे पासे भद्दासणवरंसि सन्निसन्ना । तए णं तस्स जमालिस्स खत्तिय-कुमारस्स पिट्ठओ एगा वरतरुणी सिंगारागारचारुवेसा संगयगय– जाव रूव–जोव्वण–विलासकलिया सुंदरथण– हिम–रयय–कुमुद–कुंदें–दुप्पगासं सकोरेंटमल्लदामं धवलं आयवत्तं गहाय सलीलं [1]उवरिं धारेमाणीओ धारेमाणीओ चिट्ठंति । तए णं तस्स जमालिस्स उभओ पासिं दुवे वरतरुणीओ सिंगारागारचारु– जाव –कलियाओ, णाणामणि–कणग–रयण–विमलमहरिहतवणिज्जु–ज्जलविचित्तदंडाओ, चिल्लियाओ, संख–क–कुंदें–दु–दगरय–अमयमहिय-फेणपुंजसन्निकासाओ धव-लाओ चामराओ गहाय सलीलं [2]वीयमाणीओ वीयमाणीओ चिट्ठंति । तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स [3]उत्तरपुर-त्थिमेणं एगा वरतरुणी सिंगारागार– जाव –कलिया [4]सेतं रययामयं विमलसलिलपुण्णं मत्तगयमहामुहाकितिसमाणं भिंगारं गहाय चिट्ठइ । तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स दाहिणपुरत्थिमेणं एगा वरतरुणी सिंगारागार– जाव –कलिया चित्तकणगदंडं तालवेंटं गहाय चिट्ठइ । तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ को० २ सद्दावित्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सरिसयं, सरित्तयं, सरिव्वयं, सरिसलावन्न–रूव–जोव्वण–गुणोववेयं, एगाभरण–वसणगहियनिज्जोयं कोडुंबियवरतरुणसहस्सं सद्दावेह । तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पडिसुणित्ता खिप्पामेव सरिसयं, सरित्तयं, जाव सद्दावेंति । तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा कोडुंबि-यपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठ–तुट्ठ–ण्हाया, कयबलिकम्मा, कयकोउय–मंगल–पायच्छित्ता, एगाभरण–वसणगहिय-

छे. वधारे शुं कहेवुं ? पण ग्रंथिम–गुंथेली, वेष्टिम–वींटेली, पूरिम–पूरेली अने संघातिम–परस्पर संघात वडे तैयार थयेली चारे प्रकारनी माळाओ वडे कल्पवृक्षनी पेठे ते जमालि कुमारने अलंकृत–विभूषित करे छे. त्यार बाद ते जमालि क्षत्रियकुमारना पिता कौटुंबिक पुरुषोने बोलावे छे. अने बोलावीने तेणे आ प्रमाणे कह्युं के–'हे देवानुप्रियो ! शीघ्र सेंकडो स्तंभोवडे सहित लीलापूर्वक पुतळीओथी युक्त–इत्यादि *राजप्रश्नीयसूत्रमां विमाननुं वर्णन कर्युं छे तेवी यावत् मणिरत्ननी घंटिकाओना समूह युक्त, हजार पुरुषोथी उंचकी शकाय तेवी शीबिका–पालखीने तैयार करो अने तैयार करीने मारी आज्ञा पाछी आपो.' त्यारबाद ते कौटुंबिक पुरुषो यावत् आज्ञाने पाछी आपे छे. त्यार पछी ते जमालि क्षत्रियकुमार केशालंकार, वस्त्रालंकार माल्यालंकार अने आभरणालंकार ए चार प्रकारना अलंकारथी अलंकृत थइ प्रतिपूर्ण अलंकारथी विभूषित थइ सिंहासनथी उठे छे. उठीने ते शिबिकाने प्रदक्षिणा दइने तेना उपर चढे छे. चढीने उत्तम सिंहासन उपर पूर्व दिशा सन्मुख बेसे छे. त्यारपछी ते जमालि क्षत्रियकुमारनी माता स्नान करी बलिकर्म करी यावत् शरीरने अलंकृत करी, हंसना चिह्नवाळा पटशाटकने लइ शिबिकाने प्रदक्षिणा करी तेना उपर चढे छे; अने चढीने ते जमालि क्षत्रिय-कुमारने जमणे पडखे उत्तम भद्रासन उपर बेठी. पछी जमालि क्षत्रियकुमारनी धावमाता स्नान करी यावत् शरीरने शणगारी रजोहरण अने पात्रने लइ ते शिबिकाने प्रदक्षिणा करी तेना उपर चढे छे, अने चढीने जमालि क्षत्रियकुमारने डाबे पडखे उत्तम भद्रासन उपर बेठी. त्यारपछी ते जमालि क्षत्रियकुमारनी पाछळ मनोहर आकार अने सुंदर पहेरवेशवाळी, संगतगतिवाळी यावत् रूप अने यौवनना विलासथी युक्त, सुंदर स्तनवाळी एक युवती हिम, रजत, कुमुद, मोगरानुं फुल अने चंद्रसमान कोरंटकपुष्पनी माळायुक्त, धोळुं छत्र हाथमां लइ तेने लीलापूर्वक धारण करती उभी रहे छे. त्यारपछी ते जमालिने बन्ने पडखे शृंगारना जेवा मनोहर आकारवाळी अने सुंदर वेषवाळी उत्तम बे युवती स्त्रीओ यावत् अनेक प्रकारना मणि, कनक, रत्न अने विमल, महामूल्य तपनीय (रक्त सुवर्ण–) थी बनेला, उज्ज्वल विचित्र दंडवाळां, दीपतां, शंख, अंक, मोगराना फुल, चंद्र, पाणीना बिन्दु अने मथेल अमृतना फीणना समान धोळां चामरोने ग्रहण करी लीलापूर्वक वींजती उभी रहे छे. पछी ते जमालि क्षत्रियकुमारनी उत्तरपूर्व दिशाए शृंगारना गृह जेवी उत्तम वेषवाळी यावत् एक उत्तम स्त्री श्वेत रजतमय, पवित्र पाणीथी भरेला अने उन्मत्त हस्तीना मोटा मुखना आकारवाळा कळशने ग्रहण करीने यावत् उभी रहे छे. त्यार पछी ते जमालि क्षत्रियकुमारनी दक्षिणपूर्वे शृंगारना गृहरूप उत्तम वेषवाळी यावत् एक उत्तम स्त्री

---

१ उवधरेमाणी २ क । २ वीएमाणीओ १ क । ३–पुरच्छिमेणं ग–घ क । ४ सेत–रययाम– ग–घ ।

* जुओ–राजप्रश्नीय प. २६–२ पं. ९.

विओया तेणेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता करयल– जाव वद्धावेत्ता एवं वयासी–संदिसंतु णं देवाणुप्पिया! जं अम्हेहिं करणिज्जं । तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तं कोडुंबियवर-तरुणसहस्सं पि एवं वयासी–तुब्भे णं देवाणुप्पिया! ण्हाया कयबलिकम्मा जाव–गहियनिज्जोग्गा जमालिस्स खत्तियकुमा-रस्स सीयं परिवहह । तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स जाव पडिसुणित्ता ण्हाया जाव –गहिय-निज्जोगा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सीयं परिवहंति । तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूढस्स समाणस्स तप्पढमयाए इमे अट्ठ–ट्ठ मंगलगा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया; तं जहा–सोत्थिय–सिरिवच्छ– जाव –दप्पणा; तदाणंतरं च णं पुन्नकलसभिंगारं जहा उववाइए, जाव –गगणतलमणुलिहंती पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया, एवं जहा उववाइए तहेव भाणियव्वं, जाव–आलोयं च करेमाणा जयजयसद्दं च पउंजमाणा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया । तदाणंतरं च णं बहवे उग्गा भोगा जहा उववाइए जाव महापुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता, जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरओ य मग्गतो य पासओ य अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।

२६. तए णं से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया ण्हाया कयबलिकम्मा जाव –विभूसिए हत्थिक्खंधवरगए सकोरंट-मल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं उद्धुव्वमाणीहिं हय–गय–रह–पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे, महयाभडचडगर– जाव –परिक्खित्ते जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिट्ठओ अणुगच्छइ । तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरओ महं आसा, आसवरा, उभओ पासिं णागा, णागवरा, पिट्ठओ रहा, रहसंगेल्ली । तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अब्भुग्गतभिंगारे, परिग्गहियतालियंटे, ऊसवियसेतछत्ते, पवीइयसेतचामरबालवीयणाए, सव्विड्ढीए जाव णादितरवेणं, तयाणंतरं च णं बहवे लैट्ठिग्गाहा कुंतग्गाहा जाव पुंत्थयग्गाहा, जाव वीणग्गाहा; तयाणंतरं च णं अट्ठसयं

विचित्र सोनाना दंडवाळा विंजणाने लइने उभी रहे छे, पछी ते जमालि क्षत्रियकुमारना पिताए कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या अने बोलावीने आ प्रमाणे कहुं के–'हे देवानुप्रियो! शीघ्र सरखा, समानत्वचावाळा, समानउमरवाळा, समानलावण्य, रूप अने यौवन गुण युक्त, अने एक सरखा आभरण अने वस्त्ररूप परिकरवाळा एक हजार उत्तम युवान कौटुंबिक पुरुषोने बोलावो'. पछी ते कौटुंबिक पुरुषोए यावत् पोताना स्वामीनुं वचन स्वीकारीने जलदी एक सरखा अने सरखी त्वचावाळा यावत् एक हजार पुरुषोने बोलाव्या. त्यारपछी ते जमालि क्षत्रियकुमारना पिताए कौटुंबिक पुरुषोद्वारा बोलावेला ते कौटुंबिक पुरुषो हर्षित अने तुष्ट थया. स्नान करी, बलिकर्म (पूजा) करी, कौतुक अने मंगलरूप प्रायश्चित्त करी, एकसरखा घरेणां अने वस्त्ररूप परिकरवाळा थईने तेओ ज्यां जमालि क्षत्रियकुमारना पिता छे त्यां आवे छे. आवीने हाथ जोडी यावत् वधावी तेओए आ प्रमाणे कहुं के–'हे देवानुप्रिय! जे कार्य अमारे करवानुं होय ते फरमावो.' पछी ते जमालिकुमारना पिताए ते हजार कौटुंबिक उत्तम युवान पुरुषोने आ प्रमाणे कहुं के–'हे देवानुप्रियो! स्नान करी, बलिकर्म करी अने यावत् एक सरखां आभरण अने वस्त्ररूपपरिकरवाळा तमे जमालि क्षत्रियकुमारनी शिबिकाने उपाडो.' पछी ते जमालि क्षत्रियकुमारना पितानुं वचन स्वीकारी स्नान करेला यावत् सरखो पहेरवेष धारण करेला ते कौटुम्बिक पुरुषो जमालि क्षत्रियकुमारनी शिबिका उपाडे छे. पछी ज्यारे ते जमालि क्षत्रियकुमार हजार पुरुषोथी उपाडेली शीबिकामां बेठो त्यारे सौ पहेलां आ आठ आठ मंगलो आगळ अनुक्रमे चाल्या. ते आ प्रमाणे १ स्वस्तिक, २ श्रीवत्स, यावद् ८ दर्पण. ते आठ मंगळ पछी पूर्ण कलश चाल्यो– इत्यादि* औपपातिकसूत्रमां कह्या प्रमाणे यावद् गगन तलनो स्पर्श करती एवी वैजयंती–ध्वजा आगळ अनुक्रमे चाली–इत्यादि †औपपातिकसूत्रमां कह्या प्रमाणे यावत् जय जय शब्दनो उच्चार करता तेओ आगळ अनुक्रमे चाल्या. त्यारपछी घणा उग्रकुलमां उत्पन्न थयेला, भोगकुलमां उत्पन्न थयेला पुरुषो औपपातिकसूत्रमां कह्या प्रमाणे यावत् मोटा पुरुषो रूपी वागुराथी वींटायेला जमालि क्षत्रियकुमारनी आगळ, पाछळ अने पडखे अनुक्रमे चाल्या.

२६. त्यारपछी ते जमालिकुमारना पिता स्नान करी, बलिकर्म करी यावद् विभूषित थइ हाथीना उत्तम स्कंध उपर चडी, कोरंटक पुष्पनी माळा युक्त, [मस्तके] धारण कराता छत्रसहित, बे श्वेत चामरोथी वींजाता २, घोडा, हाथी, रथ अने प्रवर योधाओ सहित चतुरंगिणी सेना साथे परिवृत थइ, मोटा सुभटना वृन्दथी यावत् वींटायेला जमालि क्षत्रियकुमारनी पाछळ चाले छे, त्यारपछी ते जमालि क्षत्रियकुमारनी आगळ मोटा अने उत्तम घोडाओ, अने बन्ने पडखे उत्तम हाथीओ, पाछळ रथो अने रथनो समूह चाल्यो. त्यार बाद ते जमालिकुमार सर्व ऋद्धिसहित यावत् वादित्रना शब्दसहित चाल्यो. तेनी आगळ कळश अने तालवृन्तने लइने पुरुषो चालता हता, तेना उपर उंचे श्वेत छत्र धारण करायुं हतुं, अने तेना पडखे श्वेत चामर अने नाना पंखाओ वींजाता हता. त्यार पछी केटलाक लाक-

१ तुब्भे णं घ–ङ । २ पासाओ य क–ग । ३ कय–जाव क–ङ । ४–कुमारस्स । ५ –वीयणीए ग–घ–ङ । ६ तयणंतरं क । ७–ग्गाहा ग–ङ ।

* औपपा. प. ६९–१ † औपपा. प. ६९–१

गयाणं, अट्ठसयं तुरयाणं, अट्ठसयं रहाणं, तयाणंतरं च णं लउड–असि–कोंतहत्थाणं बहूणं पायत्ताणीणं पुरओ संपट्ठियं, तयाणंतरं च णं बहवे राईसर–तलवर–जाव सत्थवाहप्पभियओ पुरओ संपट्ठिया खत्तियकुंडग्गामं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे, जेणेव बहुसालए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव पाहारेत्थ गमणाए।

२७. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स खत्तियकुंडग्गामं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छमाणस्स सिंघाडग–तिय–चउक्क– जाव पहेसु बहवे अत्थत्थिया, जहा उववाइए, जाव अभिनंदिता य अभित्थुणंता य एवं वयासी–'जय जय णंदा! धम्मेणं, जय जय नंदा! तवेणं, जय जय नंदा! भद्दं ते अभग्गेहिं णाण–दंसण–चरित्तमुत्तमेहिं, अजियाइं जिणाहि इंदियाइं, जीयं च पालेहि समणधम्मं; जियविग्घो वि य वसाहि तं देव! सिद्धिमज्झे, णिहणाहि य राग–दोसमल्ले तवेण धितिधणियबद्धकच्छे, मद्दाहि य अट्ठ कम्मसत्तू झाणेणं उत्तमेणं सुक्केणं, अप्पमत्तो हराहि आराहणपडागं च धीर! तेलोक्करंगमज्झे, पावय वितिमिरमणुत्तरं केवलं च णाणं, गच्छ य मोक्खं परं पदं जिणवरोवदिट्ठेणं सिद्धमग्गेणं अकुडिलेणं, हंता परीसहचमूं, अभिभविय गामकंटकोवसग्गाणं, धम्मे ते अविग्घमत्थु'त्ति कट्टु अभिनंदंति य अभिथुणंति य।

तए णं से जमाली खत्तियकुमारे नयणमालासहस्सेहिं पिच्छिज्जमाणे पिच्छिज्जमाणे एवं जहा उववाइए कुणिओ, जाव णिग्गच्छति; णिग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्तादीए तित्थगरातिसए पासइ, पासित्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं ठवेइ, पुरिससहस्सवाहिणीओ सियाओ पच्चोरुहइ। तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मा–पियरो पुरओ काउं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता एवं वयासी–एवं खलु भंते! जमाली खत्तियकुमारे अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते, जाव किमंग! पुण पासणयाए, से जहा णामए उप्पले इ वा, पउमे इ वा, जाव सहस्सपत्ते इ वा पंके जाए जले संवुड्ढे णोऽवलिप्पति पंकरएणं,

झंडीवाळा, भालावाळा, यावत् पुस्तकवाळा यावत् वीणावाळा पुरुषो चाल्या. त्यारपछी एकसो आठ हाथी, एकसो आठ घोडा अने एकसो आठ रथो चाल्या, त्यारपछी लाकडी, तरवार अने भालाने ग्रहण करी मोटुं पायदळ आगळ चाल्युं, त्यारपछी घणा युवराजो, धनिको, तलवरो, यावत् सार्थवाह प्रमुख आगळ चाल्या. यावद् क्षत्रियकुंडग्राम नगरनी वच्चे थइने ज्यां ब्राह्मणकुंडग्राम नामे नगर छे, ज्यां बहुशालक चैत्य छे अने ज्यां श्रमण भगवंत महावीर छे त्यां जवानो विचार कर्यो.

२७. त्यारपछी क्षत्रियकुंडग्राम नगरनी वचोवच निकळता ते जमालि क्षत्रियकुमारने शृंगाटक, त्रिक, चतुष्क यावत् मार्गोमां घणा धनना अर्थिओए, कामना अर्थिओए–इत्यादि *औपपातिकसूत्रमां कह्या प्रमाणे यावत् अभिनंदन आपता, स्तुति करता आ प्रमाणे कह्युं के–'हे नंद–आनन्ददायक! तारो धर्म वडे जय थाओ, हे नन्द! तारो तपवडे जय थाओ, हे नन्द! तारुं भद्र थाओ, अभग्न–अखंडित अने उत्तम ज्ञान, दर्शन अने चारित्र वडे अजित एवी इन्द्रियोने तुं जित, अने जीतिने श्रमण धर्मनुं पालन कर. हे देव! विघ्नोने जीती तुं सिद्धिगतिमां निवास कर. धैर्यरूप कच्छने मजबूत बांधीने तपवडे रागद्वेषरूप मल्लोनो घात कर. उत्तम शुक्ल ध्यानवडे अष्टकर्मरूप शत्रुनुं मर्दन कर. वळी हे धीर! तुं अप्रमत्त थइ त्रणलोकरूप रंगमंडप मध्ये आराधनापताकाने ग्रहण करी निर्मळ अने अनुत्तर एवा केवलज्ञानने प्राप्त कर, अने जिनवरे उपदेशेल सरल सिद्धिमार्गवडे परमपदरूप मोक्षने प्राप्त कर. परीषहरूप सेनाने हणीने इन्द्रियोने प्रतिकूल उपसर्गोनो पराजय कर. तने धर्ममां अविघ्न थाओ'–ए प्रमाणे तेओ अभिनंदन आपे छे अने स्तुति करे छे.

त्यारबाद ते जमालि क्षत्रियकुमार हजारो नेत्रोनी मालाओथी वारंवार जोवातो –इत्यादि †औपपातिकसूत्रमां कूणिकना प्रसंगे कह्युं छे तेम अहिं जाणवुं; यावत् ते [जमालि] नीकळे छे. नीकळीने ज्यां ब्राह्मणकुंडग्राम नामे नगर छे, ज्यां बहुशाल नामे चैत्य छे त्यां आवे छे. त्यां आवीने तीर्थंकरना छत्रादिक अतिशयोने जुए छे, जोइने हजार पुरुषोथी वहन कराती ते शिबिकाने उभी राखे छे. उभी राखीने ते शिबिका थकी नीचे उतरे छे. त्यारपछी ते जमालि क्षत्रियकुमारने आगळ करी तेना माता–पिता ज्यां श्रमण भगवान् महावीर छे त्यां आवे छे. त्यां आवीने श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार प्रदक्षिणा करी यावत् नमी तेओ आ प्रमाणे बोल्या के–'हे भगवन्! ए प्रमाणे खरेखर आ जमालि क्षत्रियकुमार अमारे एक इष्ट अने प्रिय पुत्र छे, जेनुं नाम श्रवण पण दुर्लभ छे, तो दर्शन दुर्लभ होय तेमां शुं कहेवुं? जेम कोइ एक कमळ, पद्म, यावत् सहस्रपत्र कादवमां उत्पन्न थाय, अने पाणीमां वधे, तोपण ते पंकनी रजथी तेम जलना कणथी लेपातुं नथी; ए प्रमाणे आ जमालि क्षत्रियकुमार पण कामथकी उत्पन्न थयो छे अने भोगोथी वृद्धि पाम्यो छे, तो पण ते कामरजथी

---

१ संपट्ठिया क–ङ। २ जाव आदितरवेणं खत्तिय–ग–घ। ३ –तिगच–ङ। ४ अभिग्गहेहिं ग। ५ जियाइं ग–ङ। ६ णिहय क। ७ –बद्धकच्छो क। ८ –वाहिणीं सीयं घ। ९ –वमति क। १० गच्छइ ग–घ–ङ। ११ पउमसहस्स–ग–घ।

२७. * औपपा० प. ७३–१.　　† औपपा० प. ७५–१.

णोऽवलिप्पइ जलरएणं, एवामेव जमाली वि खत्तियकुमारे कामेहिं जाए, भोगेहिं संवुड्ढे णो विलिप्पइ कामरएणं, णो विलिप्पइ भोगरएणं, णो विलिप्पइ मित्त–णाइ–णियगसयण–संबंधिपरिजणेणं। एस णं देवाणुप्पिया! संसारभयुव्विग्गे भीए जम्मण–मरणेणं; देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वतेति, तं एयं णं देवाणुप्पियाणं अम्हे सीसभिक्खं दलयामो, पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया! सीसभिक्खं।

२८. तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिं खत्तियकुमारं एवं वयासी–अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं। तए णं से जमाली खत्तियकुमारे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठ–तुट्ठे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसिभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरण–मल्ला–लंकारं ओमुयइ। तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया हंसलक्खणेणं पडसाडएणं आभरण–मल्ला–लंकारं पडिच्छति, आ० २ पडिच्छित्ता हार–वारि– जाव विणिम्मुयमाणी विणिम्मुयमाणी जमालिं खत्तियकुमारं एवं वयासी–घडियव्वं जाया! जइयव्वं जाया! परिक्कमियव्वं जाया! अस्सिं च णं अट्ठे, णो पमाएतव्वं ति कट्टु जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मा–पियरो समणं भगवं महावीरं [3]वंदंति, णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया।

२९. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, एवं जहा उसभदत्तो तहेव पव्वइओ, नवरं पंचहिं पुरिससएहिं सद्धिं तहेव जाव सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, सा० २ अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ–छट्ठ–ट्ठम– जाव –मासद्ध–मासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

३०. तए णं से जमाली अणगारे अन्नया कयाइ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता एवं वयासी–इच्छामि णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरित्तए। तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठं णो आढाइ, णो

अने भोगरजथी लेपातो नथी, तेमज मित्र, ज्ञाति, पोताना स्वजन, संबन्धी अने परिजनथी पण लेपातो नथी. हे देवानुप्रिय! आ जमालि क्षत्रियकुमार संसारना भयथी उद्विग्न थयो छे, जन्म मरणथी भयभीत थयो छे, अने देवानुप्रिय एवा आपनी पासे मुंड–दीक्षित थइने अगारवासथी अनगारिकपणाने स्वीकारवाने इच्छे छे. तो देवानुप्रियने अमे आ शिष्यरूपी भिक्षा आपीए छीए. तो हे देवानुप्रिय! आप आ शिष्यरूप भिक्षानो स्वीकार करो'.

२८. त्यारे श्रमण भगवंत महावीरे ते जमालि क्षत्रियकुमारने आ प्रमाणे कह्युं के–'हे देवानुप्रिय! जेम सुख उपजे तेम करो, प्रतिबन्ध न करो'. ज्यारे श्रमण भगवान् महावीरे जमालि क्षत्रियकुमारने ए प्रमाणे कह्युं त्यारे ते हर्षित थइ, तुष्ट थइ, यावत् श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार प्रदक्षिणा करी यावद् नमस्कार करी, उत्तरपूर्व दिशा तरफ जाय छे. जइने पोतानी मेळे आभरण, माळा अने अलंकार उतारे छे. पछी ते जमालि क्षत्रियकुमारनी माता हंसना चिह्नवाळां पटशाटकथी आभरण, माला अने अलंकारोने ग्रहण करे छे. ग्रहण करीने हार अने पाणीनी धारा जेवा आंसु पाडती २ तेणे पोताना पुत्र जमालिने आ प्रमाणे कह्युं के–'हे पुत्र! संयममां विषे प्रयत्न करजे, हे पुत्र! यत्न करजे, हे पुत्र! पराक्रम करजे, संयम पाळवामां प्रमाद न करीश. ए प्रमाणे (कहीने) ते जमालि क्षत्रियकुमारना माता–पिता श्रमण भगवंत महावीरने वांदे छे, नमे छे; वांदी अने नमीने जे दिशाथी तेओ आव्या हता ते दिशाए पाछा गया.

२९. त्यारपछी ते जमालि क्षत्रियकुमार पोतानी मेळे पंच मुष्टिक लोच करे छे, करीने ज्यां श्रमण भगवान् महावीर छे त्यां आवे छे, आवीने *ऋषभदत्त ब्राह्मणनी पेठे तेणे प्रव्रज्या लीधी. परन्तु जमालि क्षत्रियकुमारे पांचसो पुरुषो साथे प्रव्रज्या लीधी–इत्यादि सर्व जाणवुं. यावत् ते जमालि अनगार सामायिकादि अगीआर अंगोने भणे छे. भणीने घणा चतुर्थ भक्त, छट्ठ, अट्ठम, अने यावत् मासार्ध तथा मासक्षमणरूप विचित्र तपकर्मवडे आत्माने भावित करता विहरे छे.

३०. त्यार बाद अन्य कोइ दिवसे ते जमालि अनगार ज्यां श्रमण भगवान् महावीर छे त्यां आवे छे, आवीने श्रमण भगवंत महावीरने वांदे छे, नमे छे. वांदी अने नमीने तेणे आ प्रमाणे कह्युं के–'हे भगवन्! तमारी अनुमतिथी हुं पांचसे अनगारनी साथे बहारना देशोमां विहार करवाने इच्छुं छुं.' त्यारे श्रमण भगवान् महावीरे जमालि अनगारनी आ वातनो आदर न कर्यो, स्वीकार न कर्यो,

---

१ पव्वइत्तए ऊ। २ –लक्खत्ति क–ऊ। ३–वंदइ णमंसइ ग–घ। ४–५ दिसिं ग–घ। ६ खत्तिए घ। ७ उवागच्छित्ता एवं ग–घ–ऊ। ८ जाव सव्वं सा–घ।

२९. * जुओ–भग. खं ३. श. ९–उ–३३ पृ. ६.

परिजाणइ, तुसिणीए संचिट्ठइ । तए णं से जमाली अणगारे समणे भगवं महावीरं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी–इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं जाव विहरित्तए । तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिस्स अणगारस्स दोच्चं पि, तच्चं पि एयमट्ठं णो आढाइ, जाव तुसिणीए संचिट्ठइ । तए णं से जमाली अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता, णमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ, बहुसालाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरइ ।

३१. तेणं कालेणं, तेणं समएणं सावत्थी नामं नयरी होत्था, वण्णओ; कोट्ठए चेइए, वण्णओ, जाव वणसंडस्स । तेणं कालेणं, तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था, वण्णओ । पुण्णभद्दे चेइए, वण्णओ, जाव पुढविसिलापट्टओ । तए णं से जमाली अणगारे अन्नया कयाइं पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे, गामाणुग्गामं दूइज्जमाणे जेणेव सावत्थी नयरी, जेणेव कोट्ठए चेइए तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हइ, अ० २ ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइं पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे, जाव सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव चंपा नयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हति, अ० २ ओगिण्हित्ता संजमेणं, तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

३२. तए णं तस्स जमालिस्स अणगारस्स तेहिं अरसेहि य, विरसेहि य, अंतेहि य, पंतेहि य, लूहेहि य, तुच्छेहि य, कालाइक्कंतेहि य, पमाणाइक्कंतेहि य, सीएहि य पाण–भोयणेहिं अन्नया कयाइं सरीरगंसि विउले रोगातंके पाउब्भूए, उज्जले, विउले, पगाढे, कक्कसे, कडुए, चंडे, दुक्खे, दुग्गे, तिव्वे, दुरहियासे । पित्तज्जरपरिगतसरीरे, दाहवुक्कंतिए या वि विहरइ । तए णं से जमाली अणगारे वेयणाए अभिभूए समाणे समणे णिग्गंथे सद्दावेति, स० २ सद्दावित्ता एवं वयासी–तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! मम सेज्जासंथारगं संथरह । तए णं ते समणा णिग्गंथा जमालिस्स अणगारस्स एतमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जमालिस्स अणगारस्स सेज्जासंथारगं संथरंति । तए णं से जमाली अणगारे बलियतरं वेदणाए अभिभूए समाणे दोच्चं पि समणे निग्गंथे सद्दावेइ, सद्दावित्ता दोच्चं पि एवं वयासी–ममं णं देवाणुप्पिया ! सेज्जासंथारए णं किं कडे, कज्जइ ?*

परन्तु मौन रह्या. त्यार पछी ते जमालि अनगारे श्रमण भगवंत महावीरने बीजी वार, त्रीजी वार पण ए प्रमाणे कह्युं के–'हे भगवन् ! तमारी अनुमतिथी हुं पांचसो साधु साथे यावत् विहार करवाने इच्छुं छुं.' पछी श्रमण भगवान् महावीरे जमालि अनगारनी आ वातनो बीजी वार, त्रीजी वार पण आदर न कर्यो, यावत् मौन रह्या. त्यारबाद जमालि अनगार श्रमण भगवंत महावीरने वांदे छे, नमे छे, वांदीने–नमीने श्रमण भगवंत महावीर पासेथी अने बहुशाल नामे चैत्यथी नीकळे छे, नीकळीने पांचसो साधुओनी साथे बहारना देशोमां विहार करे छे.

३१. ते काळे अने ते समये श्रावस्ती नामे नगरी हती. *वर्णन. त्यां कोष्ठक नामे चैत्य हतुं. †वर्णन यावत् वनखंड सुधी जाणवुं. ते काळे अने ते समये चंपा नामे नगरी हती, वर्णन. पूर्णभद्र चैत्य हतुं. वर्णन. यावत् पृथिवीशिलापट्ट हतो. हवे अन्य कोइ दिवसे ते जमालि अनगार पांचसो साधुओना परिवारनी साथे अनुक्रमे विहार करता, एक गामथी बीजे गाम जता ज्यां श्रावस्ती नामे नगरी छे, अने ज्यां कोष्ठक चैत्य छे त्यां आवे छे. त्यां आवीने यथायोग्य अवग्रहने ग्रहण करीने संयम अने तपवडे आत्माने भावित करता विहरे छे. त्यारबाद अन्य कोई दिवसे श्रमण भगवान् महावीर अनुक्रमे विचरता यावत् सुखपूर्वक विहार करता ज्यां चंपानगरी छे, अने ज्यां पूर्णभद्र चैत्य छे त्यां आवे छे, आवीने यथायोग्य अवग्रहने ग्रहण करी संयम अने तपवडे आत्माने भावित करता विचरे छे.

श्रावस्ती नगरी. कोष्ठक चैत्य. चंपा नगरी, पूर्णभद्रचैत्य. श्रावस्ती. कोष्ठकचैत्य.

३२. हवे अन्य कोइ दिवसे ते जमालि अनगारने रसरहित, विरस, अन्त, प्रान्त, रूक्ष (लुखा) तुच्छ, कालातिक्रांत, (भुख तरसनो काल वीती गया पछी) प्रमाणातिक्रांत (प्रमाणथी वधारे के ओछा) शीत पान–भोजनथी शरीरमां मोटो व्याधि पेदा थयो, ते व्याधि अत्यन्त दाह करनार, विपुल, सख्त, कर्कश, कटुक, चंड, (भयंकर) दुःखरूप, कष्टसाध्य, तीव्र अने असह्य हतो, तेनुं शरीर पित्तज्वरथी व्याप्त होवाथी ते दाहयुक्त हतो. हवे ते जमालि अनगार वेदनाथी पीडित थयेलो पोताना श्रमण निर्ग्रंथोने बोलावे छे. बोलावीने तेणे ए प्रमाणे कह्युं के–'हे देवानुप्रियो ! तमे मारे सुवा माटे संस्तारक (शय्या) पाथरो'. त्यारबाद ते श्रमण निर्ग्रन्थो जमालि अनगारनी आ वातनो विनयपूर्वक स्वीकार करे छे, स्वीकारीने जमालि अनगारने सुवा माटे संस्तारक पाथरे छे. ज्यारे ते जमालि अनगार अत्यंत वेदनाथी व्याकुळ थयो त्यारे फरीथी श्रमण निर्ग्रंथोने बोलाव्या अने बोलावीने फरीथी तेणे आ प्रमाणे कह्युं के–'हे देवानुप्रियो ! मारे माटे

---

१ कयावि घ । २ तुब्भे णं ग–क । ३ अयमट्ठं ग–क । *'एवं वुत्ते समाणे समणा निग्गंथा एवं वितिं–भो सामी ! कीरइ' इत्यधिकः पाठः ग–घ ।

३१. * जुओ उववाइय चंपानगरीनुं वर्णन. प. १–१. † जुओ उववाइय पूर्णभद्रचैत्यनुं वर्णन. प. ४–२.

तते णं ते समणा निग्गंथा जमालिं अणगारं एवं वयासी-णो खलु देवाणुप्पिया णं सेज्जासंथारए कडे, कज्जइ । तए णं तस्स जमालिस्स अणगारस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-जं णं समणे भगवं महावीरे एवं आइक्खइ, जाव एवं परूवेइ-एवं खलु चलमाणे चलिए, उदीरिज्जमाणे उदीरिए, जाव निज्जरिज्जमाणे णिज्जिण्णे, तं णं मिच्छा; इमं च णं पच्चक्खमेव दीसइ सेज्जासंथारए कज्जमाणे अकडे, संथरिज्जमाणे असंथरिए; जम्हा णं सेज्जासंथारए कज्जमाणे अकडे, संथरिज्जमाणे असंथरिए तम्हा चलमाणे वि अचलिए, जाव निज्जरिज्जमाणे वि अणिज्जिण्णे, एवं संपेहेइ, संपेहित्ता समणे णिग्गंथे सद्दावेइ, सम० २ सद्दावित्ता एवं वयासी-जं णं देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे एवं आइक्खइ, जाव परूवेइ-एवं खलु चलमाणे चलिए, तं चेव सव्वं जाव णिज्जरमाणे अणिज्जिण्णे । तए णं तस्स जमालिस्स अणगारस्स एवं आइक्खमाणस्स जाव परूवेमाणस्स अत्थेगईया समणा णिग्गंथा एयमट्ठं सद्दहंति, पत्तियंति, रोयंति, अत्थेगईया समणा णिग्गंथा एयमट्ठं नो सद्दहंति, नो पत्तियंति, नो रोयंति । तत्थ णं जे ते समणा णिग्गंथा जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठं सद्दहंति, पत्तियंति, रोयंति ते णं जमालिं चेव अणगारं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति; तत्थ णं जे ते समणा णिग्गंथा जमालिस्स अणगारस्स एयं अट्ठं णो सद्दहंति, णो पत्तियंति, णो रोयंति ते णं जमालिस्स अणगारस्स अंतियाओ, कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव चंपा नयरी, जेणेव पुन्नभद्दे चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता समणं भगवं महावीरं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति ।

३३. तए णं से जमाली अणगारे अन्नया कयावि ताओ रोगायंकाओ विप्पमुक्के, हट्ठे जाए, अरोए बलियसरीरे, सावत्थीओ नयरीओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे, गामाणुग्गामं दूइज्जमाणे जेणेव चंपा नयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं वयासी-जहा णं देवाणुप्पियाणं बहवे अंतेवासी समणा णिग्गंथा

संस्तारक कर्यो छे के कराय छे ?' त्यार पछी ते श्रमण निर्ग्रन्थोए जमालि अनगारने एम कह्युं के-'देवानुप्रियने माटे शय्यासंस्तारक कर्यो नथी, पण कराय छे'. त्यार पछी ते जमालि अनगारने आ आवा प्रकारनो संकल्प उत्पन्न थयो के-"श्रमण भगवंत महावीर जे ए प्रमाणे कहे छे, यावत् प्ररूपे छे के, चालतुं होय ते चाल्युं कहेवाय, उदीरातुं होय ते उदीरायुं कहेवाय, यावत् निर्जरातुं होय ते निर्जरायुं कहेवाय, ते मिथ्या छे. कारण के आ प्रत्यक्ष देखाय छे के, शय्या संस्तारक करातो होय त्यां सुधी ते करायो नथी, पथरातो होय त्यां सुधी ते पथरायो नथी; जे कारणथी आ शय्या-संस्तारक करातो होय त्यां सुधी ते करायो नथी, पथरातो होय त्यां सुधी ते पथरायेलो नथी; ते कारणथी चालतुं होय त्यां सुधी ते चलित नथी, पण अचलित छे; यावत् निर्जरातुं होय त्यां सुधी ते निर्जरायुं नथी पण अनिर्जरित छे" ए प्रमाणे विचार करे छे. विचार करीने ते जमालि अनगार श्रमण निर्ग्रंथोने बोलावे छे, बोलावीने तेणे आ प्रमाणे कह्युं-"हे देवानुप्रियो ! श्रमण भगवंत महावीर जे आ प्रमाणे कहे छे, यावत् प्ररूपे छे के-खरेखर ए प्रमाणे "चालतुं ते चलित कहेवाय"-इत्यादि, पूर्ववत् सर्व कहेवुं, यावत् निर्जरातुं होय ते निर्जरित नथी, पण अनिर्जरित छे.' ज्यारे जमालि अनगार ए प्रमाणे कहेता हता, यावत् प्ररूपणा करता हता, त्यारे केटलाएक श्रमण निर्ग्रन्थो ए वातने श्रद्धापूर्वक मानता हता, तेनी प्रतीति करता हता, रुचि करता हता; अने केटलाक श्रमण निर्ग्रन्थो ए वात मानता न होता, तथा तेनी प्रतीति अने रुचि करता न होता. तेमां जे श्रमण निर्ग्रंथो ते जमालि अनगारना आ मन्तव्यनी श्रद्धा करता हता, प्रतीति करता हता अने रुचि करता हता तेओ ते जमालि अनगारने आश्रयी विहार करे छे. अने जे श्रमण निर्ग्रंथो जमालि अनगारना ए मन्तव्यमां श्रद्धा करता न होता, प्रतीति करता न होता अने रुचि करता न होता तेओ जमालि अनगारनी पासेथी कोष्ठक चैत्य थकी बहार नीकळे छे, अने बहार नीकळीने अनुक्रमे विचरता, एक गामथी बीजे गाम विहार करता ज्यां चंपा नगरी छे, ज्यां पूर्णभद्र चैत्य छे, अने ज्यां श्रमण भगवंत महावीर छे त्यां आवे छे. आवीने श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार प्रदक्षिणा करे छे, करीने वांदे छे; नमे छे, अने वांदी-नमीने श्रमण भगवंत महावीरनी निश्राए विहार करे छे.

३३. त्यार पछी कोइ एक दिवसे ते जमालि अनगार पूर्वोक्त रोगना दुःखथी विमुक्त थयो, हृष्ट, रोगरहित अने बलवान् शरीरवाळो थयो. अने श्रावस्ती नगरीथी अने कोष्ठक चैत्यथी बहार नीकळी अनुक्रमे विचरता ग्रामानुग्राम विहार करता ज्यां चंपानगरी छे, ज्यां पूर्णभद्र चैत्य छे, अने ज्यां श्रमण भगवंत महावीर छे त्यां आवे छे. आवीने श्रमण भगवंत महावीरनी अत्यन्त दूर नहि तेम अत्यन्त पासे नहि, तेम उभा रहीने श्रमण भगवंत महावीरने आ प्रमाणे कह्युं-'जेम देवानुप्रियना घणा शिष्यो श्रमण निर्ग्रन्थो छद्मस्थ

---

१ -प्पिया ! से- क । २ कयाई ख, कयाती क । ३ हट्ठे तुट्ठे जा- ख ।

छउमत्था भवेत्ता छउमत्थावक्कमणेणं अवक्कंता, णो खलु अहं तहा छउमत्थे भवित्ता छउमत्थावक्कमणेणं अवक्कंते; अहं णं उप्पन्ननाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली भवित्ता केवलिअवक्कमणेणं अवक्कंते।

३४. तए णं भगवं गोयमे जमालिं अणगारं एवं वयासी-णो खलु जमाली! केवलिस्स णाणे वा दंसणे वा सेलंसि वा थंभंसि वा थूभंसि वा आवरिज्जइ वा णिवारिज्जइ वा; जदि णं तुमं जमाली! उप्पन्ननाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली भवित्ता केवलिअवक्कमणेणं अवक्कंते, तो णं इमाइं दो वागरणाइं वागरेहि-सासए लोए जमाली! असासए लोए जमाली! सासए जीवे जमाली! असासए जीवे जमाली?। तए णं से जमाली अणगारे भगवया गोयमेणं एवं वुत्ते समाणे संकिए कंखिए जाव कलुससमावन्ने जाए या वि होत्था, णो संचायति भगवओ गोयमस्स किंचि वि पमोक्खं आइक्खित्तए, तुसिणीए संचिट्ठइ।

३५. 'जमालि'त्ति समणे भगवं महावीरे जमालिं अणगारं एवं वयासी-अत्थि णं जमाली! ममं बहवे अंतेवासी समणा णिग्गंथा छउमत्था, जे णं पभू एयं वागरणं वागरित्तए, जहा णं अहं, नो चेव णं एयप्पगारं भासं भासित्तए, जहा णं तुमं। सासए लोए जमाली! जं ण कदायि णासि, ण कयाइ ण भवति, ण कयाइ ण भविस्सइ; भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य; धुवे, णितिए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए णिच्चे। असासए लोए जमाली! जं ओसप्पिणी भवित्ता उस्सप्पिणी भवइ, उस्सप्पिणी भवित्ता ओसप्पिणी भवइ। सासए जीवे जमाली! जं न कयायि णासि, जाव णिच्चे। असासए जीवे जमाली! जं णं नेरइए भवित्ता तिरिक्खजोणिए भवइ, तिरिक्खजोणिए भवित्ता मणुस्से भवइ, मणुस्से भवित्ता देवे भवइ।

३६. तए णं से जमाली अणगारे समणस्स भगवतो महावीरस्स एवं आइक्खमाणस्स, जाव एवं परूवेमाणस्स एयं अट्ठं नो सद्दहति, णो पत्तियइ, णो रोएइ; एयमट्ठं असद्दहमाणे, अपत्तियमाणे, अरोएमाणे दोच्चं पि समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ आयाए अवक्कमइ, दोच्चं पि आयाए अवक्कमित्ता बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य अप्पाणं च परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणे, वुप्पाएमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं

होइने छद्मस्थ विहारथी विहरी रह्या छे; पण हुं तेम छद्मस्थ विहारथी विहरतो नथी. हुं तो उत्पन्न थयेला ज्ञान अने दर्शन धारण करनारो अर्हन्, जिन अने केवली थइने केवलिविहारथी विचरुं छुं.

३४. त्यारपछी भगवंत गौतमे ते जमालि अनगारने आ प्रमाणे कह्युं के-'हे जमालि! खरेखर ए प्रमाणे केवलिनुं ज्ञान के दर्शन पर्वतथी स्तंभथी के स्तूपथी आवृत थतुं नथी, तेम निवारित थतुं नथी. हे जमालि! जो तुं उत्पन्न थयेला ज्ञान, दर्शनने धारण करनार अर्हन्, जिन अने केवली थइने केवलिविहारथी विचरे छे तो आ बे प्रश्नोनो उत्तर आप. [प्र०] हे जमालि! १ लोक शाश्वत छे के अशाश्वत छे? हे जमालि! २ जीव शाश्वत छे के अशाश्वत छे? ज्यारे भगवंत गौतमे ते जमालि अनगारने पूर्व प्रमाणे पूछ्युं त्यारे ते शंकित अने कांक्षित थयो, यावत् कलुषितपरिणामवाळो थयो. ज्यारे ते (जमालि) भगवंत गौतमना प्रश्नोनो कांइ पण उत्तर आपवा समर्थ न थयो त्यारे तेणे मौन धारण कर्युं.

भगवान् गौतमना जमालिने प्रश्नो.

लोक शाश्वत छे के अशाश्वत? जीव शाश्वत छे के अशाश्वत? जमालि उत्तर आपवा असमर्थ थयो.

३५. पछी श्रमण भगवान् महावीरे 'हे जमालि!' एम कहीने ते जमालि अनगारने आ प्रमाणे कह्युं के-'हे जमालि! मारे घणा श्रमण निर्ग्रंथ शिष्यो छद्मस्थ छे, तेओ मारी पेठे आ प्रश्नोनो उत्तर आपवा समर्थ छे. पण जेम तुं कहे छे तेम 'हुं सर्वज्ञ अने जिन छुं' एवी भाषा तेओ बोलता नथी. हे जमालि! लोक शाश्वत छे, कारण के 'लोक कदापि न हतो' एम नथी, 'कदापि लोक नथी' एम नथी, अने 'कदापि लोक नहि हशे' एम पण नथी. परन्तु लोक हतो, छे अने हशे. ते ध्रुव, नियत, शाश्वत, अक्षत, अव्यय, अवस्थित अने नित्य छे. वळी हे जमालि! लोक अशाश्वत पण छे, कारण के अवसर्पिणी थइने उत्सर्पिणी थाय छे. उत्सर्पिणी थइने अवसर्पिणी थाय छे. हे जमालि! जीव शाश्वत छे, कारण के ते 'कदापि न हतो' एम नथी, 'कदापि नथी' एम नथी अने, 'कदापि नहि हशे' एम पण नथी, जीव यावद् नित्य छे. वळी हे जमालि! जीव अशाश्वत पण छे, कारण के नैरयिक थइने तिर्यंचयोनिक थाय छे, तिर्यंचयोनिक थइने मनुष्य थाय छे, अने मनुष्य थइने देव थाय छे.

भगवान् महावीरना उत्तरो.

लोक शाश्वत छे.

लोक अशाश्वत छे.

जीव शाश्वत छे.

जीव अशाश्वत छे.

३६. त्यारपछी ते जमालि अनगार आ प्रमाणे कहेता, यावत् ए प्रकारे प्ररूपणा करता श्रमण भगवान् महावीरनी आ वातनी श्रद्धा करतो नथी, प्रतीति करतो नथी, रुचि करतो नथी, अने आ बाबतनी अश्रद्धा करतो, अप्रतीति करतो अने अरुचि करतो पोते बीजी वार पण श्रमण भगवंत महावीर पासेथी नीकळे छे. नीकळीने घणा असद्-असत्य भावने प्रकट करवा वडे अने मिथ्यात्वना अभिनिवेश वडे पोताने, परने तथा बन्नेने भ्रान्त करतो अने मिथ्याज्ञानवाळा करतो घणा वरस सुधी श्रमण पर्यायने पाळे छे, पाळीने अर्धमासिकसं-

१ तहा चेव क। २ अवक्कमिए ख। ३ ताणं क। ४ वागरेत्तए क। ५ जं न क। ६ कयावि ख। ७ जओ ख। ८ पाउणित्ति क।

झूसेइ, झूसित्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेति, तीसं० २ छेदेत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइय-पडिकंते कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे तेरससागरोवमठितीएसु देवकिब्बिसिएसु देवेसु देवकिब्बिसियत्ताए उववन्ने ।

३७. [प्र०] तए णं भगवं गोयमे जमालिं अणगारं कालगयं जाणित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी- एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कुसिस्से जमाली नामं अणगारे, से णं भंते ! जमाली अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए, कहिं उववन्ने ? [उ०] गोयमादी ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी–एवं खलु गोयमा ! ममं अंतेवासी कुसिस्से जमाली नामं अणगारे से णं तदा मम एवं आइक्खमाणस्स ४ एयं अट्ठं णो सद्दहइ ३, एयं अट्ठं असद्दहमाणे ३ दोच्चं पि ममं अंतियाओ आयाए अवक्कमइ, दोच्चं० २ अवक्कमित्ता बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं तं चेव जाव देवकिब्बिसियत्ताए उववन्ने ।

३८. [प्र०] कतिविहा णं भंते ! देवकिब्बिसिया पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! तिविहा देवकिब्बिसिया पण्णत्ता, तं जहा– तिपलिओवमट्ठिइया, तिसागरोवमट्ठिइया, तेरससागरोवमट्ठिइया ।

३९. [प्र०] कहिं णं भंते ! तिपलिओवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया परिवसंति ? [उ०] गोयमा ! उप्पिं जोइसियाणं, हिट्ठिं सोहम्मी–साणेसु कप्पेसु, एत्थ णं तिपलिओवमट्ठितिया देवकिब्बिसिया परिवसंति ।

४०. [प्र०] कहिं णं भंते ! तिसागरोवमट्ठिईया देवकिब्बिसिया परिवसंति ? [उ०] गोयमा ! उप्पिं सोहम्मी–साणाणं कप्पाणं, हिट्ठिं सणंकुमार- माहिंदेसु कप्पेसु, एत्थ णं तिसागरोवमट्ठिईया देवकिब्बिसिया परिवसंति ।

४१. [प्र०] कहिं णं भंते ! तेरससागरोवमट्ठिइया देवकिब्बिसिया देवा परिवसंति ? [उ०] गोयमा ! उप्पिं बंभलोगस्स कप्पस्स हिट्ठिं लंतए कप्पे, एत्थ णं तेरससागरोवमट्ठिईया देवकिब्बिसिया देवा परिवसंति ।

लेखनावडे आत्माने-शरीरने कृश करीने अनशनवडे त्रीश भक्तोने पूरा करी ते पापस्थानकने आलोच्या के प्रतिक्रम्या सिवाय मरण समये काल करीने लान्तक देवलोकने विषे तेर सागरोपमनी स्थितिवाळा किल्बिषिक देवोमां किल्बिषिक देव पणे उत्पन्न थयो.

३७. पछी ते जमालि अनगारने कालगत थयेला जाणीने भगवान् गौतम ज्यां श्रमण भगवान् महावीर छे त्यां आवे छे. आवीने श्रमण भगवान् महावीरने वांदे छे, नमे छे. वांदी–नमीने ते आ प्रमाणे बोल्या के–'हे भगवन् ! ए प्रमाणे देवानुप्रिय एवा आपनो अंतेवासी कुशिष्य जमालि नामे अनगार हतो, ते काळ समये काळ करीने क्यां गयो–क्यां उत्पन्न थयो ? [उ०] 'हे गौतमादि !' ए प्रमाणे कहीने श्रमण भगवंत महावीरे भगवान् गौतमने आ प्रमाणे कह्युं के–'हे गौतम ! मारो अंतेवासी कुशिष्य जमालि नामे अनगार हतो ते ज्यारे हुं ए प्रमाणे कहेता हतो, यावत् प्ररूपणा करतो हतो त्यारे ते आ बाबतनी श्रद्धा करतो नहोतो, प्रतीति के रुचि करतो नहोतो. आ बाबतनी श्रद्धा, प्रतीति के रुचि न करतो फरीथी मारी पासेथी नीकळीने घणा असद्भूत–मिथ्या भावोने प्रकट करवावडे–इत्यादि यावत् किल्बिषिकदेवपणे उत्पन्न थयो छे.

किल्बिषिकदेवनी स्थिति.

३८. [प्र०] हे भगवन् ! किल्बिषिक देवो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रकारना किल्बिषिक देवो कह्या छे. ते आ प्रमाणे–त्रण पल्योपमनी स्थितिवाळा, त्रण सागरोपमनी स्थितिवाळा अने तेर सागरोपमनी स्थितिवाळा.

किल्बिषिक देवोनो निवास.

३९. [प्र०] हे भगवन् ! त्रण पल्योपमनी स्थितिवाळा किल्बिषिक देवो कये ठेकाणे रहे छे ? [उ०] हे गौतम ! ज्योतिष्कदेवोनी उपर अने सौधर्म अने ईशानदेवलोकनी नीचे त्रण पल्योपमनी स्थितिवाळा किल्बिषिक देवो रहे छे.

४०. [प्र०] हे भगवन् ! त्रण सागरोपमनी स्थितिवाळा किल्बिषिक देवो क्यां रहे छे ? [उ०] हे गौतम ! सौधर्म अने ईशान देवलोकनी उपर तथा सनत्कुमार अने माहेन्द्र देवलोकनी नीचे त्रण सागरोपमनी स्थितिवाळा किल्बिषिक देवो रहे छे.

४१. [प्र०] हे भगवन् ! तेर सागरोपमनी स्थितिवाळा किल्बिषिक देवो क्यां रहे छे ? [उ०] हे गौतम ! ब्रह्मलोकनी उपर अने लांतक कल्पनी नीचे तेर सागरोपमनी स्थितिवाळा किल्बिषिक देवो रहे छे.

१–अपडि– ग । २–३–४ द्वितीया क ।

४२. [प्र०] देवकिब्बिसिया णं भंते ! केसु कम्मादाणेसु देवकिब्बिसियत्ताए उववत्तारो भवन्ति ? [उ०] गोयमा ! जे इमे जीवा आयरियपडिणीया, उवज्झायपडिणीया, कुलपडिणीया, गणपडिणीया, संघपडिणीया; आयरिय–उवज्झायाणं अयसकरा, अवन्नकरा, अकित्तिकरा, बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं, मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाणं परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणा, वुप्पाएमाणा बहूइं वासाइं सामन्नपरियागं पाउणंति, पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवकिब्बिसिएसु देवकिब्बिसियत्ताए उववत्तारो भवंति, तं जहा–तिपलिओवमट्ठितिएसु वा, तिसागरोवमट्ठितिएसु वा, तेरससागरोवमट्ठितिएसु वा ।

४३. [प्र०] देवकिब्बिसिया णं भंते ! ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं, भवक्खएणं, ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छंति, कहिं उववज्जंति ? [उ०] गोयमा ! जाव चत्तारि पंच नेरइय–तिरिक्खजोणिय–मणुस्स–देवभवग्गहणाइं संसारं अणुपरियट्टित्ता तओ पच्छा सिज्झंति, बुज्झंति, जाव अंतं करेंति; अत्थेगइया अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंत-संसारकंतारं अणुपरियट्टंति ।

४४. [प्र०] जमाली णं भंते ! अणगारे अरसाहारे, विरसाहारे, अंताहारे, पंताहारे, लूहाहारे, तुच्छाहारे, अरसजीवी, विरसजीवी, जाव तुच्छजीवी, उवसंतजीवी, पसंतजीवी, विवित्तजीवी ? [उ०] हंता, गोयमा ! जमाली णं अणगारे अरसाहारे, विरसाहारे, जाव विवित्तजीवी ।

४५. [प्र०] जति णं भंते ! जमाली अणगारे अरसाहारे, विरसाहारे, जाव विवित्तजीवी कम्हा णं भंते ! जमाली अणगारे कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे तेरससागरोवमट्ठितिएसु देवकिब्बिसिएसु देवेसु देवकिब्बिसियत्ताए उववन्ने ? [उ०] गोयमा ! जमाली णं अणगारे आयरियपडिणीए, उवज्झायपडिणीए; आयरिय-उवज्झायाणं अयसकारए, अवन्नकारए, जाव

४२. [प्र०] हे भगवन् ! किल्बिषिक देवो क्या कर्मना निमित्ते किल्बिषिकदेवपणे उत्पन्न थाय छे ? [उ०] हे गौतम ! जे जीवो आचार्यना प्रत्यनीक (द्वेषी), उपाध्यायना प्रत्यनीक, कुलप्रत्यनीक, गणप्रत्यनीक अने संघना प्रत्यनीक होय, तथा आचार्य अने उपाध्यायना अयश करनारा, अवर्णवाद करनारा अने अकीर्ति करनारा होय, तथा घणा असत्य अर्थने प्रगट करवाथी अने मिथ्या कदाग्रहथी पोताने, परने अने बन्नेने भ्रान्त करता, दुर्बोध करता, घणा वरस सुधी साधुपणाने पाळे, अने पाळीने ते अकार्य स्थाननुं आलोचन के प्रतिक्रमण कर्या सिवाय मरणसमये काल करीने कोइ पण किल्बिषिक देवोमां किल्बिषिकदेवपणे उत्पन्न थाय छे. ते आ प्रमाणे—त्रण पल्योपमनी स्थितिवाळामां, त्रण सागरोपमनी स्थितिवाळामां, के तेर सागरोपमनी स्थितिवाळामां. [उत्पन्न थाय.]

कया कर्मथी किल्बिषिकदेव थाय छे ?

४३. [प्र०] हे भगवन् ! ते किल्बिषिक देवो आयुष्यनो क्षय थवाथी, भवनो क्षय थवाथी, स्थितिनो क्षय थवाथी, तरत ते देवलोकथी च्यवीने क्यां जाय–क्यां उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! ते किल्बिषिक देवो *नारक, तिर्यंच, मनुष्य अने देवना चार के पांच भवो करी, एटलो संसार भ्रमण करीने त्यारपछी सिद्ध थाय, बुद्ध थाय अने यावद् दुःखोनो नाश करे. अने केटलाक किल्बिषिक देवो तो अनादि, अनंत अने दीर्घमार्गवाळा चारगति संसाराटवीमां भम्या करे.

किल्बिषिक देवो मरीने क्यां उपजे ?

४४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं जमालि नामे अनगार रसरहित आहार करतो, विरसाहार करतो, अंताहार करतो, प्रांताहार करतो, रूक्षाहार करतो, तुच्छाहार करतो, अरसजीवी, विरसजीवी, यावत् तुच्छजीवी, उपशांतजीवनवाळो, प्रशांतजीवनवाळो, पवित्र अने एकान्त जीवनवाळो हतो ? [उ०] हे गौतम ! हा, जमालि नामे अनगार अरसाहारी, विरसाहारी यावद् पवित्रजीवनवाळो हतो.

४५. [प्र०] हे भगवन् ! जो जमालि नामे अनगार अरसाहारी, विरसाहारी अने यावद् पवित्र जीवनवाळो हतो तो हे भगवन् ! ते जमालि अनगार मरणसमये काल करीने लांतक देवलोकमां तेर सागरोपमनी स्थितिवाळा किल्बिषिक देवोमां किल्बिषिक देवपणे केम उत्पन्न थयो ? [उ०] हे गौतम ! ते जमालि अनगार आचार्यनो अने उपाध्यायनो प्रत्यनीक हतो, तथा आचार्य अने उपाध्यायनो अयश करनार अवर्णवाद करनार हतो यावद् ते [मिथ्या अभिनिवेश वडे पोताने, परने अने उभयने भ्रान्त करतो] दुर्बोध करतो, यावत् घणा

---

१ इमे जाव–क–ख । २ –देवत्ताए क–ख ।

४३. * यद्यपि 'किल्बिषिक मरीने क्यां उत्पन्न थाय ?' ए प्रश्नना उत्तरमां नारक, तिर्यंच, मनुष्य अने देवना चार पांच भवग्रहण करीने मोक्षे जाय' एम कह्युं छे, ते सामान्य कथन छे. अन्यथा देव अने नारक मरीने देव के नारक न थाय, परन्तु तुरत तो मनुष्य के तिर्यंचमां उत्पन्न थइने पछी नारक के देवमां उत्पन्न थाय. –टीका

बुप्पायमाणे, जाव बहूइं वासाइं सामन्नपरियागं पाउणति, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेति, तीसं २ छेदेत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे जाव उववन्ने।

४६. [प्र०] जमाली णं भंते! देवत्ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव कहिं उववज्जिहिति? [उ०] गोयमा! चत्तारि, पंच तिरिक्खजोणिय–मणुस्स–देवभवग्गहणाइं संसारं अणुपरियट्टित्ता तओ पच्छा सिज्झिहिति, जाव अंतं काहिति। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति।

नवमसए तेत्तीसइमो उद्देसो समत्तो।

वरस सुधी श्रमणपणाने पाळीने अर्धमासिक संलेखना वडे शरीरने कृश करीने त्रीश भक्तोने अनशन वडे पूरा करीने ते स्थानकने आलोच्या के प्रतिक्रम्या सिवाय काळसमये काळ करीने लांतक कल्पमां यावद् उत्पन्न थयो.

४६. [प्र०] हे भगवन्! ते जमालि नामे देव देवपणाथी, देवलोकथी पोताना आयुषनो क्षय थया बाद यावत् क्यां उत्पन्न थशे? [उ०] हे गौतम! तिर्यंचयोनिक, मनुष्य, अने देवना चार पांच भवो करी–एटलो संसार भमी–त्यार पछी ते सिद्ध थशे, यावत् सर्व दुःखोनो नाश करशे. हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे. [एम कही भगवंत गौतम यावत् विहरे छे.]

नवम शते तेत्रीशमो उद्देशक समाप्त.

---

१ देवत्ताओ क। २ काहेति ग।

चोत्तीसइमो उद्देसो.

१. [प्र०] तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव एवं वयासी–पुरिसे णं भंते! पुरिसं हणमाणे किं पुरिसं हणइ, नोपुरिसं हणइ? [उ०] गोयमा! पुरिसं पि हणइ, नोपुरिसे वि हणति। [प्र०] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–पुरिसं पि हणइ, जाव नोपुरिसे वि हणइ? [उ०] गोयमा! तस्स णं एवं भवइ–एवं खलु अहं एगं पुरिसं हणामि, से णं एगं पुरिसं हणमाणे अणेगे जीवे हणइ, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ–पुरिसं पि हणइ, जाव नोपुरिसे वि हणइ।

२. [प्र०] पुरिसे णं भंते! आसं हणमाणे किं आसं हणइ, नोआसे वि हणइ? [उ०] गोयमा! आसं पि हणइ, नोआसे वि हणइ। [प्र०] से केणट्ठेणं? [उ०] अट्ठो तहेव, एवं हत्थि, सीहं, वग्घं जाव चिल्ललगं। *एए सव्वे इक्कगमा।

३. [प्र०] पुरिसे णं भंते! अन्नयरं तसं पाणं हणमाणे किं अन्नयरं तसं पाणं हणइ, नोअन्नतरे तसे पाणे हणइ? [उ०] गोयमा! अन्नयरं पि तसं पाणं हणइ, णोअन्नयरे वि तसे पाणे हणइ। [प्र०] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–अन्नयरं पि तसं पाणं, नोअन्नयरे वि तसे पाणे हणइ [उ०] गोयमा! तस्स णं एवं भवइ–एवं खलु अहं एगं अन्नयरं तसं पाणं हणामि, से णं एगं अन्नयरं तसं पाणं हणमाणे अणेगे जीवे हणइ, से तेणट्ठेणं गोयमा! तं चेव। एए सव्वे वि एकगमा।

चोत्रीशमो उद्देशक.

पुरुषने हणतो पुरुषने हणे के नोपुरुषने हणे? पुरुष अने नोपुरुषनो घात करे.

१. [प्र०] ते काले–ते समये राजगृह नगरमां [भगवान् गौतमे] यावत् ए प्रमाणे पुछ्युं के–हे भगवन्! कोइ पुरुष पुरुषनो घात करतो शुं पुरुषनो ज घात करे के नोपुरुषनो घात करे? [उ०] हे गौतम! पुरुषनो पण घात करे अने नोपुरुषोनो (पुरुष शिवाय बीजा जीवोनो) पण घात करे. [प्र०] हे भगवन्! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के–पुरुषनो घात करे अने यावत् नोपुरुषोनो पण घात करे? [उ०] हे गौतम! ते घात करनारना मनमां तो एम छे के 'हुं एक पुरुषने हणुं छुं', पण ते एक पुरुषने हणतो बीजा अनेक जीवोने हणे छे; माटे ते हेतुथी हे गौतम! एम कहुं छुं छे के ते पुरुषने पण हणे अने यावत् नोपुरुषोने पण हणे.

अश्वने हणतो अश्वने के नोअश्वोने हणे?

२. [प्र०] हे भगवन्! अश्वने हणतो कोइ पुरुष शुं अश्वने हणे के नोअश्वोने (अश्व सिवाय बीजा जीवोने) पण हणे? [उ०] हे गौतम! ते अश्वने पण हणे अने नोअश्वोने पण हणे. [प्र०] हे भगवन्! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो? [उ०] हे गौतम! उत्तर पूर्ववत् जाणवो. ए प्रमाणे हस्ती, सिंह, वाघ तथा यावत् चिल्लक संबन्धे पण जाणवुं. ए बधानो एक सरखो पाठ जाणवो.

अमुक त्रसने हणतो तेने हणे के बीजा त्रसोने पण हणे?

३. [प्र०] हे भगवन्! कोइ पुरुष कोइ एक त्रस जीवने हणतो शुं ते त्रस जीवने हणे के ते शिवाय बीजा त्रस जीवोने पण हणे? [उ०] हे गौतम! ते कोइ एक त्रस जीवने पण हणे, अने ते शिवाय बीजा त्रस जीवोने पण हणे. [प्र०] हे भगवन्! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के 'ते कोई एक त्रस जीवने हणे अने ते शिवाय बीजा त्रस जीवोने पण हणे'? [उ०] हे गौतम! ते हणनारना मनमां ए प्रमाणे होय छे के 'हुं कोइ एक त्रस जीवने हणुं छुं', पण ते कोई एक त्रस जीवने हणतो ते शिवाय बीजा अनेक त्रस जीवोने हणे छे. माटे हे गौतम! इत्यादि पूर्ववत् जाणवुं. ए बधाना एक सरखा पाठ कहेवा.

१–चिल्ललगं ख–घ–ङ। * 'एए सव्वे इक्कगमा' इत्यधिकः पाठो ग पुस्तक एव। २–३ तसपा–ख।

४. [प्र०] पुरिसे णं भंते ! इसिं हणमाणे किं इसिं हणइ, नोइसिं हणइ ? [उ०] गोयमा ! इसिं पि हणइ नोइसिं पि हणइ । [प्र०] से कणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–जाव नोइसिं पि हणइ ? [उ०] गोयमा ! तस्स णं एवं भवइ–एवं खलु अहं एगं इसिं हणामि, से णं एगं इसिं हणमाणे अणंते जीवे हणइ, से तेणट्ठेणं निक्खेवो ।

५. [प्र०] पुरिसे णं भंते ! पुरिसं हणमाणे किं पुरिसवेरेणं पुट्ठे, नोपुरिसवेरेणं पुट्ठे ? [उ०] गोयमा ! नियमं ताव पुरिसवेरेणं पुट्ठे, अहवा पुरिसवेरेण य णोपुरिसवेरेण य पुट्ठे, अहवा पुरिसवेरेण य नोपुरिसवेरेहि य पुट्ठे। एवं आसं, एवं जाव चिंल्ललगं, जाव अहवा चिंल्ललावेरेण य णोचिंल्ललावेरेहि य पुट्ठे ।

६. [प्र०] पुरिसे णं भंते ! इसिं हणमाणे किं इसिवेरेणं पुट्ठे, नोइसिवेरेणं पुट्ठे ? [उ०] गोयमा ! नियमं ताव इसिवेरेण य नोइसिवेरेहि य पुट्ठे ।

७. [प्र०] पुढविकाइए णं भंते ! पुढविकायं चेव आणमइ वा, पाणमति वा, ऊससति वा, नीससइ वा ? [उ०] हंता, गोयमा ! पुढविकाइए पुढविकाइअं चेव आणमति वा, जाव [11]नीससति वा ।

८. [प्र०] पुढविकाइए णं भंते ! आउकाइयं आणमं(म)ति, जाव नीससं(स)ति वा ? [उ०] हंता, गोयमा ! पुढविकाइए चेव आउकाइयं आणमं(म)ति, जाव नीससं(स)ति वा; एवं तेउकाइयं, वाउकाइयं, एवं वणस्सइकाइयं ।

९. [प्र०] आउकाइए णं भंते ! पुढविकाइयं आणमति वा, पाणमति वा ? [उ०] एवं चेव ।

ऋषिने हणतो ऋषिने हणे के ते शिवाय बीजाने हणे?

४. [प्र०] हे भगवन् ! ऋषिने हणतो कोई पुरुष शुं ऋषिने हणे के ऋषि शिवाय बीजाने पण हणे ? [उ०] हे गौतम ! ऋषिने हणे अने ऋषि शिवाय बीजाने पण हणे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के यावद् ऋषि शिवाय बीजाने पण हणे ? [उ०] हे गौतम ! ते हणनारना मनमां एम होय छे के 'हुं एक ऋषिने हणुं छुं.', पण ते एक ऋषिने हणतो *अनंत जीवोने हणे छे. ते हेतुथी एम कहेवाय छे–इत्यादि उपसंहार जाणवो.

पुरुषने हणनार पुरुषना वैरथी बन्धाय के नो-पुरुषना वैरथी बन्धाय?

५. [प्र०] हे भगवन् ! कोइ पुरुष बीजा पुरुषने हणतो शुं पुरुषना वैरथी बन्धाय के नोपुरुषना (पुरुष शिवाय बीजा जीवोना) वैरथी बन्धाय ? [उ०] हे गौतम ! ते अवश्य पुरुषना वैरथी बन्धाय, १ अथवा †पुरुषना वैरथी अने नोपुरुषना वैरथी बन्धाय, २ अथवा पुरुषना वैरथी अने नोपुरुषना वैरोथी बन्धाय. ए प्रमाणे अश्वसंबन्धे अने यावत् चिल्ललक संबन्धे पण जाणवुं. यावत् अथवा चिल्ललकना वैरथी अने नोचिल्ललकना वैरोथी बन्धाय.

ऋषिना वैरथी के नोऋषिना वैरोथी बन्धाय?

६. [प्र०] हे भगवन् ! ऋषिनो वध करनार पुरुष शुं ऋषिना वैरथी बन्धाय के नोऋषिना वैरथी बन्धाय ? [उ०] हे गौतम ! ते अवश्य ‡ऋषिना वैरथी अने नोऋषिना वैरोथी बन्धाय.

पृथिवीकायिक पृथिवीकायिकने श्वासोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे अने मूके?

७. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिक जीव पृथिवीकायिकने आनप्राणरूपे–श्वासोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे अने मूके ? [उ०] हे गौतम ! हा, पृथिवीकायिक जीव पृथिवीकायिकने आनप्राणरूपे–श्वासोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे अने मूके.

पृथिवीकायिक अप्कायिकादिकने ग्रहण करे अने मूके?

८. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिक जीव अप्कायिकने आणप्राणरूपे–श्वासोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे अने मूके ? [उ०] हा, गौतम ! पृथिवीकायिक अप्कायिकने श्वासोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे, यावत् मूके. ए प्रमाणे अग्निकाय, वायुकायिक अने वनस्पतिकायिकसंबन्धे प्रश्नो करवा.

अप्कायिक पृथिवीकायिकने ग्रहण करे.

९. [प्र०] हे भगवन् ! अप्कायिक जीव पृथिवीकायिकने आनप्राणरूपे–श्वासोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे अने मूके ? [उ०] ए रीते पूर्व प्रमाणे जाणवुं.

---

१ अणंता जीवा क–ग–ङ । २ नियमा ख, नियमेणं ङ । ३ चिल्ललगं ग–घ–ङ । ४–५ चिल्ललगवे– ग–घ–ङ । ६ नियमा घ । ७ –काइया ग–घ–ङ । ८ –कायं घ । ९ –मंति पाणमंति वा ऊससंति नीससंति वा ग–घ–ङ । १०–मंति वा ग–घ–ङ । ११ –संति वा क–ग–घ–ङ ।

४. * "ऋषिनो वध करनार कोई पुरुष ऋषिने हणे अने ते शिवाय बीजा जीवोने पण हणे" ते संबन्धे टीकाकार आ प्रमाणे खुलासो करे छे— "ऋषिनो हणनार पुरुष ऋषिनो घात करता ते शिवाय बीजा अनन्त जीवोनो घात करे, कारण के ऋषि जीवतो होय तो अनेक प्राणिओने प्रतिबोध करे, अने तेओ प्रतिबोध पामीने अनुक्रमे मोक्षे जाय, मुक्त जीवो तो अनन्त जीवोना अहिंसक छे, अने ते अनन्त जीवोनी अहिंसामां ऋषि कारण छे माटे ऋषिनो वध करनार तेनी अने बीजा अनन्त जीवोनी हिंसा करे छे."—टीका.

५. † पुरुषने हणनार पुरुषे पुरुषनो घात करेलो होवाथी तेना पापथी ते अवश्य बन्धाय, पण ज्यारे ते तेम करता बीजा कोइ एक प्राणीनी हिंसा करे त्यारे ते नोपुरुषवैरथी पण बन्धाय, अने अनेक प्राणिओनी हिंसा करे तो नोपुरुषवैरोथी बन्धाय.

६. ‡ ऋषिनो घात करनार पुरुष ऋषिना वैरथी अने नोऋषिना वैरोथी बन्धाय. आ पक्षमां आ एकज भंग जाणवो.

१०. [प्र०] आउकाइए णं भंते ! आउकाइयं चेव आणमति वा ? [उ०] एवं चेव, एवं तेउ–वाउ–वणस्सइकाइयं ।

११. [प्र०] तेउकाइए णं भंते ! पुढविकाइयं आणमति वा ? [उ०] एवं, जाव वणस्सइकाइए णं भंते ! वणस्सइकाइयं चेव आणमति वा ? [उ०] तहेव ।

१२. [प्र०] पुढविकाइए णं भंते ! पुढविकाइयं चेव आणममाणे वा, पाणममाणे वा, ऊससमाणे वा, नीससमाणे वा कइकिरिए ? [उ०] गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए ।

१३. [प्र०] पुढविकाइए णं भंते ! आउकाइयं आणममाणे वा ? [उ०] एवं चेव; एवं जाव वणस्सइकाइयं, एवं आउकाइएण वि सव्वे वि भाणियव्वा, एवं तेउकाइएण वि, एवं वाउकाइएण वि । जाव [प्र०] वणस्सइकाइए णं भंते ! वणस्सइकाइयं चेव आणममाणे वा–पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए ।

१४. [प्र०] वाउकाइए णं भंते ! रुक्खस्स मूलं पचालेमाणे वा पवाडेमाणे वा कतिकिरिए ? [उ०] गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए, एवं कंदं, एवं जाव [प्र०] बीयं पचालेमाणे वा पुच्छा ? [उ०] गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

नवमसए चोत्तीसइमो उद्देसो समत्तो ।

नवमं सयं समत्तं ।

१०. [प्र०] हे भगवन् ! अप्कायिक जीव अप्कायिकने आनप्राणरूपे–श्वासोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे अने मूके ? [उ०] पूर्व प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे तेजःकाय, वायुकाय अने वनस्पतिकाय संबन्धे पण जाणवुं.

अप्कायिक अप्कायिकने ग्रहण करे अने मूके?

११. [प्र०] हे भगवन् ! अग्निकायिक जीव पृथिवीकायिकने आनप्राणरूपे–श्वासोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे अने मूके ? ए प्रमाणे यावत् [प्र०] हे भगवन् ! वनस्पतिकायिक जीव वनस्पतिकायिकने आनप्राणरूपे–श्वासोच्छ्वासरूपे ग्रहण करे अने मूके ? [उ०] उत्तर पूर्ववत् जाणवुं.

तेजस्कायिक पृथिवीकायादिकने ग्रहण करे के मूके?

१२. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिक जीव पृथिवीकायिकने आनप्राणरूपे–श्वासोच्छ्वासरूपे ग्रहण करतो अने मूकतो केटली क्रियावाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! ते कदाच* त्रणक्रियावाळो, कदाच चारक्रियावाळो अने कदाच पांचक्रियावाळो होय.

पृथिवीकायिकादिकने क्रियाओ.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिक जीव अप्कायिकने आनप्राणरूपे–श्वासोच्छ्वासरूपे ग्रहण करतो [केटली क्रियावाळो होय ?] [उ०] इत्यादि पूर्व प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे यावद् वनस्पतिकायिक संबन्धे पण जाणवुं. तथा ए प्रमाणे अप्कायिकनी साथे सर्व पृथिवीकायादिकनो संबन्ध कहेवो. तेज प्रकारे तेजःकायिक अने वायुकायिकनी साथे सर्वनो संबन्ध कहेवो. यावत् [प्र०] हे भगवन् ! वनस्पतिकायिक जीव वनस्पतिकायिकने आनप्राणरूपे–श्वासोच्छ्वासरूपे ग्रहण करतो [अने मूकतो केटली क्रियावाळो होय ?] [उ०] हे गौतम ! ते कदाच त्रणक्रियावाळो, कदाच चारक्रियावाळो अने कदाच पांचक्रियावाळो पण होय.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! वायुकायिक जीव वृक्षना मूळने †कंपावतो के पाडतो केटली क्रियावाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! कदाच त्रणक्रियावाळो होय, कदाच चारक्रियावाळो होय अने कदाच पांचक्रियावाळो पण होय. ए प्रमाणे यावत् कंद संबन्धे जाणवुं. ए प्रमाणे यावत् [प्र०] बीजने कंपावतो–इत्यादि संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! कदाच त्रणक्रियावाळो, कदाच चारक्रियावाळो अने कदाच पांचक्रियावाळो होय. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.

वायुकायिकने क्रिया.

नवमशते चोत्रीशमो उद्देशक समाप्त.

नवम शतक समाप्त.

---

१२. * पृथिवीकायिकादि जीव पृथिवीकायिकादिकने श्वासोच्छ्वासरूपे ग्रहण करतां ज्यारे तेने पीडा उत्पन्न न करे त्यारे तेने कायिकी इत्यादि त्रण क्रिया होय, ज्यारे पीडा करे त्यारे पारितापनिकी सहित चार क्रिया, अने घात करे त्यारे प्राणातिपातिकीयुक्त पांच क्रिया होय.—टीकाकार.

१४. † वृक्षना मूळने कंपाववुं के पाडवुं ते नदीना कांठा उपर रहेला वृक्षोना मूळ पृथ्वीथी ढंकायेला न होय त्यारे संभवे छे.—टीकाकार.

दसमं सयं

१. १ [1]दिसि २ संवुडअणगारे ३ आयड्ढी ४ सामहत्थि ५ देवि ६ सभा।
७-२८ उत्तरअंतरदीवा दसमम्मि सयंमि चउत्तीसा॥

२. [प्र०] रायगिहे जाव एवं वयासी-किमियं भंते! 'पाईणा'ति पवुच्चइ? [उ०] गोयमा! जीवा चेव अजीवा चेव।

३. [प्र०] किमियं भंते! 'पडीणा'ति पवुच्चइ? [उ०] गोयमा! एवं चेव; एवं दाहिणा, एवं उदीणा, एवं उड्ढा, एवं अहो वि।

४. [प्र०] कति णं भंते! दिसाओ पन्नत्ताओ? [उ०] गोयमा! दस दिसाओ पन्नत्ताओ, तं जहा-१ पुरत्थिमा, २ पुरत्थिमदाहिणा, ३ दाहिणा, ४ दाहिणपच्चत्थिमा, ५ पच्चत्थिमा, ६ पच्चत्थिमुत्तरा, ७ उत्तरा, ८ उत्तरपुरत्थिमा, ९ उड्ढा, १० अहो।

दशम शतक.

१. [उद्देशक संग्रह-] १ दिशा, २ संवृत अनगार, ३ आत्मऋद्धि, ४ श्यामहस्ती, ५ देवी, ६ सभा अने ७-३४ उत्तर दिशाना अन्तरद्वीपो-ए सबन्धे दशमां शतकमां चोत्रीश उद्देशको छे. [१ दिशा संबंधे प्रथम उद्देशक, २ संवृत (संवरयुक्त) अनगारादि विषे बीजो उद्देशक, ३ आत्म ऋद्धि-पोतानी शक्ति-थी देवो देवावासोने उल्लंघन करे'-इत्यादि संबन्धे त्रीजो उद्देशक, ४ श्यामहस्ति नामे श्रीमहावीरना शिष्यना प्रश्न संबन्धे चोथो उद्देशक, ५ देवी-चमरादि इन्द्रनी अग्रमहिषी-संबन्धे पांचमो उद्देशक, ६ सभा-सुधर्मा सभा-संबंधे छट्ठो उद्देशक अने ७-३४ उत्तर दिशाना अठ्यावीश अन्तरद्वीपो संबन्धी सातथी चोत्रीश उद्देशको छे.]

प्रथम उद्देशक.

पूर्वादि दिशाओ.

२. [प्र०] राजगृह नगरमां [गौतम] यावत् आ प्रमाणे बोल्या—हे भगवन्! आ पूर्वदिशा ए शुं कहेवाय छे? [उ०] हे गौतम! ते *जीवरूप अने अजीवरूप कहेवाय छे.

३. [प्र०] हे भगवन्! आ पश्चिम दिशा ए शुं कहेवाय छे? [उ०] हे गौतम! पूर्वनी पेठे जाणवुं. ए प्रमाणे दक्षिण दिशा, उत्तर दिशा, ऊर्ध्वदिशा, अने अधोदिशा संबन्धे पण जाणवुं.

दिशाओना प्रकार.

४. [प्र०] हे भगवन्! केटली दिशाओ कही छे? [उ०] हे गौतम! दश दिशाओ कही छे; ते आ प्रमाणे-१ पूर्व, २ पूर्वदक्षिण (अग्नि कोण), ३ दक्षिण, ४ दक्षिणपश्चिम (नैर्ऋत कोण), ५ पश्चिम, ६ पश्चिमोत्तर (वायव्य कोण), ७ उत्तर, ८ उत्तरपूर्व (ईशान कोण), ९ ऊर्ध्व अने १० अधो दिशा.

---

१ दिस सं-ग। २ चोत्तीसा क। ३ पाईणाति ग। ४ पडीणाति ग। ५ दाहिणाव-ग।

२. * प्राची एटले पूर्व दिशा जीवरूप छे, केमके त्यां एकेन्द्रियादिक जीवो रहेला छे, अने पुद्गलास्तिकाय वगेरे अजीव पदार्थ रहेला छे माटे अजीवरूप पण छे.—टीका.

५. [प्र०] कयाओ णं भंते ! दसण्हं दिसाणं कति नामधेज्जा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! दस नामधेज्जा पन्नत्ता, तं जहा–१ इंदा २ अग्गेयी ३ जमा य नेरई वारुणी य वायव्वा । सोमा ईसाणी य विमला य तमा य बोद्धव्वा ।

६. [प्र०] इंदा णं भंते ! दिसा किं १ जीवा, २ जीवदेसा, ३ जीवपएसा, ४ अजीवा, ५ अजीवदेसा, ६ अजीवपएसा ? [उ०] गोयमा ! जीवा वि, तं चेव जाव अजीवपएसा वि । जे जीवा ते णियमा एगिंदिया, बेइंदिया, जाव पंचिंदिया, अणिंदिया । जे जीवदेसा ते णियमा एगिंदियदेसा, जाव अणिंदियदेसा । जे जीवपएसा ते एगिंदियपएसा बेइंदियपएसा, जाव अणिंदियपएसा । जे अजीवा ते दुविहा पन्नत्ता, तं जहा–रूविअजीवा य अरूविअजीवा य । जे रूविअजीवा ते चउव्विहा पन्नत्ता, तं जहा–खंधा, खंधदेसा, खंधपएसा, परमाणुपोग्गला । जे अरूविअजीवा ते सत्तविहा पन्नत्ता, तं जहा–१ नोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे, २ धम्मत्थिकायस्स पएसा, ३ नोअधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्स देसे, ४ अधम्मत्थिकायस्स पएसा, ५ नोआगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्स देसे, ६ आगासत्थिकायस्स पएसा, ७ अद्धासमए ।

७. [प्र०] अग्गेयी णं भंते ! दिसा किं जीवा, जीवदेसा, जीवपएसा–पुच्छा । [उ०] गोयमा ! १ णोजीवा जीवदेसा वि, २ जीवपएसा वि; १ अजीवा वि, २ अजीवदेसा वि, ३ अजीवपएसा वि । जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा । १ अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स देसे, २ अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स देसा य, ३ अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियाण य देसा । १ अहवा एगिंदियदेसा य तेइंदियस्स देसे अ । एवं चेव तियभंगो भाणियव्वो । एवं जाव अणिंदियाणं तियभंगो । जे जीवपएसा ते नियमा एगिंदियपएसा । अहवा एगिंदियपएसा य बेइंदियस्स पएसा, अहवा एगिंदियपएसा य

५. [प्र०] हे भगवन् ! ए दश दिशाओना केटलां नाम कह्यां छे ? [उ०] हे गौतम ! दश नाम कह्यां छे. ते आ प्रमाणे–१ *ऐन्द्री (पूर्व), २ आग्नेयी (अग्नि कोण), ३ याम्या (दक्षिण), ४ नैर्ऋती (नैर्ऋतकोण), ५ वारुणी (पश्चिम), ६ वायव्या, ७ सौम्या (उत्तर), ८ ऐशानी (ईशान कोण), ९ विमला (उर्ध्व दिशा), अने १० तमा (अधो दिशा). ए दिशाना नामो अनुक्रमे जाणवां.

दिशाओना दश नाम.

६. [प्र०] हे भगवन् ! ऐन्द्री (पूर्व) दिशा शुं १ जीवरूप छे, २ जीवना देशरूप छे के जीवना प्रदेशरूप छे ? अथवा १ अजीव रूप छे, २ अजीवना देशरूप छे के ३ अजीवना प्रदेशरूप छे ? [उ०] हे गौतम ! ऐन्द्री दिशा जीवरूप छे–इत्यादि पूर्व प्रमाणे यावत् अजीवप्रदेशरूप पण छे. तेमां जे जीवो छे ते अवश्य एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, यावत् पंचेन्द्रिय, तथा अनिन्द्रिय (सिद्धो) छे. जे जीवना देशो छे ते अवश्य एकेन्द्रिय जीवना देशो छे, यावद् अनिंद्रिय–मुक्तजीवना देशो छे. जे जीवप्रदेशो छे ते अवश्य एकेन्द्रिय जीवना प्रदेशो छे, बेइन्द्रियजीवना प्रदेशो छे, यावद् अनिन्द्रिय (मुक्त) जीवना प्रदेशो छे. वळी जे अजीवो छे ते बे प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे–रूपिअजीव अने अरूपिअजीव. तेमां जे रूपिअजीवो छे ते चार प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे–१ स्कंध, २ स्कंध देश, ३ स्कंधप्रदेश अने ४ परमाणु पुद्गल. तथा जे अरूपिअजीवो छे ते सात प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे–१ †नोधर्मास्तिकायरूप धर्मास्तिकायनो देश, २ धर्मास्तिकायना प्रदेशो, ३ नोअधर्मास्तिकायरूप अधर्मास्तिकायनो देश, ४ अधर्मास्तिकायना प्रदेशो, ५ नो आकाशास्तिकायरूप आकाशास्तिकायनो देश, ६ आकाशास्तिकायना प्रदेशो, अने ७ अद्धासमय (काळ).

ऐन्द्री दिशा जीवरूप छे? इत्यादि.

७. [प्र०] हे भगवन् ! ‡आग्नेयी दिशा (अग्निकोण) शुं १ जीवरूप छे, २ जीवदेशरूप छे के ३ जीवप्रदेशरूप छे–इत्यादि प्रश्न करवो. [उ०] हे गौतम ! १ नोजीवरूप जीवना देश अने २ जीवना प्रदेशरूप छे, ३ अजीवरूप छे, ४ अजीवना देशरूप छे अने ५ अजीवना प्रदेशरूप पण छे. तेमां जे जीवना देशो छे ते अवश्य एकेन्द्रिय जीवना देशो छे, १ अथवा एकेन्द्रियोना देशो अने बेइन्द्रियजीवनो देश छे, २ अथवा एकेन्द्रियोना देशो अने बेइन्द्रियना देशो छे; ३ अथवा एकेन्द्रियोना देशो अने बेइन्द्रियोना देशो छे. १ अथवा एकेन्द्रियोना देशो अने त्रीन्द्रियनो देश छे–इत्यादि पूर्व प्रमाणे अहिं त्रण विकल्पो जाणवा. ए प्रमाणे यावद् अनिंद्रिय सुधी त्रण विकल्पो–भांगा कहेवा. तेमां जे जीवना प्रदेशो छे. ते अवश्य एकेन्द्रियोना प्रदेशो छे, १ अथवा एकेन्द्रियोना प्रदेशो अने बेइन्द्रियना प्रदेशो छे, २ अथवा एकेन्द्रियोना प्रदेशो अने बेइन्द्रियोना प्रदेशो छे. ए प्रमाणे सर्वत्र प्रथम भांगा सिवाय बे भांगा जाणवा, ए प्रमाणे यावद्

आग्नेयी दिशा.

---

१ दसण्हं ग । २ णोयव्वा ग । ३–गिंदियस्स देसा क । ४–देसा, घ । ५–गिंदियस्स दे–घ ।

५. * इन्द्र तेनो स्वामी छे, माटे ते ऐन्द्री दिशा कहेवाय छे. ए प्रमाणे अग्नि, यम, नैर्ऋति, वरुण, वायु, सोम अने ईशान देवो स्वामी होवाथी आग्नेयी वगेरे तेना गुणनिष्पन्न नामो छे. प्रकाशयुक्त होवाथी ऊर्ध्व दिशाने विमला अने अन्धकारयुक्त होवाथी अधो दिशाने तमा कहेवाय छे.–टीका.

६. † प्राचीदिशा अखंड धर्मास्तिकायरूप नथी, परन्तु तेना देश अने असंख्यात प्रदेशरूप छे, माटे ते नोधर्मास्तिकायरूप छे. ए प्रमाणे ते नोअधर्मास्तिकाय रूप छे.–इत्यादि पण जाणवुं.

७. ‡ आग्नेयी दिशा जीवस्वरूप नथी, कारणके दरेक विदिशाओनो मात्र एक प्रदेशरूप छे, अने एक प्रदेशमां जीवनो समावेश थतो नथी, केमके तेओनी अवगाहना असंख्यप्रदेशात्मक छे.–टीकाकार.

बेइंदियाण य पएसा । एवं आइल्लविरहिओ जाव अणिंदियाणं । जे अजीवा ते दुविहा पन्नत्ता, तं जहा–रूविअजीवा य अरूविअजीवा य । जे रूविअजीवा ते चउव्विहा पन्नत्ता, तं जहा–खंधा, जाव परमाणुपोग्गला । जे अरूविअजीवा ते सत्तविहा पन्नत्ता, तं जहा–१ नोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे, २ धम्मत्थिकायस्स पएसा, एवं अहम्मत्थिकायस्स वि, जाव ६ आगासत्थिकायस्स पएसा, ७ अद्धासमए । विदिसासु नत्थि जीवा, देसे भंगो य होइ सव्वत्थ ।

८. [प्र०] जमा णं भंते ! दिसा किं जीवा ? [उ०] जहा इंदा तहेव निरवसेसा । नेरई य जहा अग्गेयी । वारुणी जहा इंदा । वायव्वा जहा अग्गेयी । सोमा जहा इंदा । ईसाणी जहा अग्गेयी । विमलाए जीवा जहा अग्गेयीए । अजीवा जहा इंदा । एवं तमाए वि, नवरं अरूवी छव्विहा, अद्धासमयो न भन्नति ।

९. [प्र०] कति णं भंते ! सरीरा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! पंच सरीरा पण्णत्ता, तं जहा–१ ओरालिए, जाव ५ कम्मए ।

१०. [प्र०] ओरालियसरीरे णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ? [उ०] एवं ओगाहणासंठाणं निरवसेसं भाणियव्वं, जाव, 'अप्पाबहुगं'ति । सेवं भंते !, सेवं भंते ! त्ति ।

दसमसए पढमो उद्देसो समत्तो ।

अनिंद्रिय सुधी जाणवुं. हवे जे अजीवो छे ते बे प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे–रूपिअजीव अने बीजा अरूपिअजीव. जे रूपिअजीवो छे ते चार प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे–१ स्कंधो, यावत् ४ परमाणुपुद्गलो. तथा जे अरूपिअजीवो छे ते सात प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे–१ नोधर्मास्तिकायरूप धर्मास्तिकायनो देश, २ धर्मास्तिकायना प्रदेशो; ए प्रमाणे अधर्मास्तिकाय संबन्धे पण जाणवुं; यावत् आकाशास्तिकायना प्रदेशो अने अद्धासमय. विदिशाओमां जीवो नथी, माटे सर्वत्र देशविषयक भांगो जाणवो.

याम्या दिशा.

८. [प्र०] हे भगवन् ! याम्या (दक्षिण) दिशा शुं जीवरूप छे–इत्यादि पूर्ववत् प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! जेम ऐन्द्री दिशा संबन्धे कह्युं (सू. ६) तेम सर्व अहीं जाणवुं. जेम आग्नेयी दिशा संबन्धे कह्युं (सू. ७) ते प्रमाणे नैर्ऋती दिशा माटे जाणवुं. जेम ऐन्द्री दिशा संबन्धे कह्युं तेम वारुणी (पश्चिम) दिशा माटे जाणवुं. वायव्यदिशाने आग्नेयीनी पेठे जाणवुं. ऐन्द्रीनी पेठे सौम्या अने आग्नेयीनी पेठे ऐशानी दिशा जाणवी. तथा विमला–ऊर्ध्वदिशा–मां जेम आग्नेयीमां जीवो कह्या तेम जीवो अने ऐन्द्रीमां अजीवो कह्या तेम अजीवो जाणवा. ए प्रमाणे तमा–अधोदिशा–ने विषे पण जाणवुं, परन्तु विशेष ए छे के, *तमा दिशामां अरूपिअजीवो छ प्रकारना छे, कारण के त्यां अद्धासमय (काल) नथी.

शरीरना प्रकार.

९. [प्र०] हे भगवन् ! शरीरो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! शरीरो पांच प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे–१ औदारिक, [२ वैक्रिय, ३ आहारक, ४ तैजस] यावत् ५ कार्मण.

औदारिक शरीरना प्रकार.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! औदारिक शरीर केटला प्रकारे कह्युं छे ? [उ०] हे गौतम ! अहिं सर्व †'अवगाहनासंस्थान' पद अल्पबहुत्व सुधी कहेवुं. हे भगवन् ! ते एमज छे, ए भगवन् ! ते एमज छे, [एम कही यावत् भगवान् गौतम विहरे छे]

दशमशते प्रथम उद्देशक समाप्त.

१–संठाणपदे मि–ग ।

८. * समयनो व्यवहार गतिमान् सूर्यना प्रकाश उपर अवलंबित छे, ते (गतिमान् सूर्यनो प्रकाश) तमाने विषे नथी माटे त्यां अद्धासमय (काल) नथी. यद्यपि विमलाने विषे पण गतिमान् सूर्यनो प्रकाश नहि होवाथी समयना व्यवहारनो संभव नथी, तो पण मेरुपर्वतना स्फटिककांडने विषे गतिमान् सूर्यना प्रकाशनो संक्रम थाय छे, तेथी त्यां समयव्यवहार होइ शके छे.—टीकाकार.

१०. † प्रज्ञा० पद. २१. प. ४०७. २–४११. २.

बीओ उद्देसो.

१. [प्र०] रायगिहे जाव एवं वयासी–संवुडस्स णं भंते ! अणगारस्स वीयीपंथे ठिच्चा पुरओ रूवाइं निज्झायमाणस्स, मग्गओ रूवाइं अवयक्खमाणस्स, पासओ रूवाइं अवलोएमाणस्स, उड्ढं रूवाइं आलोएमाणस्स, अहे रूवाणि आलोएमाणस्स तस्स णं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ ? [उ०] गोयमा ! संवुडस्स णं अणगारस्स वीयीपंथे ठिच्चा जाव तस्स णं णो इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जति । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–जाव संपराइया किरिया कज्जति ? [उ०] गोयमा ! जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा० एवं जहा सत्तमसए पढमोद्देसए जाव से णं उस्सुत्तमेव रीयति से तेणट्ठेणं जाव से संपराइया किरिया कज्जइ ।

२. [प्र०] संवुडस्स णं भंते ! अणगारस्स अवीयीपंथे ठिच्चा पुरओ रूवाइं निज्झायमाणस्स जाव तस्स णं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ ? पुच्छा [उ०] गोयमा ! संवुड० जाव तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ, नो संपराइया किरिया कज्जइ । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? [उ०] जहा सत्तमे सए सत्तमोद्देसए, जाव से णं अहासुत्तमेव रीयति से तेणट्ठेणं जाव नो संपराइया किरिया कज्जइ ।

३. [प्र०] कइविहा णं भंते ! जोणी पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! तिविहा जोणी पण्णत्ता, तं जहा–सीया, उसिणा, सीतोसिणा; एवं जोणीपयं निरवसेसं भाणियव्वं ।

द्वितीय उद्देशक.

कषायभावमां रहेला संवृत साधुने ऐर्यापथिकी के सांपरायिकी क्रिया लागे ?

१. [प्र०] राजगृह नगरमां यावत् [गौतम] ए प्रमाणे बोल्या–हे भगवन् ! वीचिमार्गमां–कषायभावमां–रहीने आगळ रहेलां रूपोने जोता, पाछळना रूपोने देखता, पडखेना रूपोने अवलोकता, ऊंचेना रूपोने आलोकता अने नीचेना रूपोने अवलोकता संवृत (संवरयुक्त) अनगारने शुं ऐर्यापथिकी क्रिया लागे के सांपरायिकी क्रिया लागे ? [उ०] हे गौतम ! वीचिमार्गमां (कषायभावमां) रहीने यावत् रूपोने जोता संवृत अनगारने ऐर्यापथिकी क्रिया न लागे, पण सांपरायिकी क्रिया लागे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के संवृत अनगारने यावत् सांपरायिकी क्रिया लागे ? [उ०] हे गौतम ! जेना क्रोध, मान, माया अने लोभ क्षीण थया होय तेने ऐर्यापथिकी क्रिया लागे–इत्यादि *सप्तम शतकना प्रथम उद्देशकमां कह्या प्रमाणे यावत् 'ते संवृत अनगार सूत्र विरुद्ध वर्ते छे' त्यांसुधी कहेवुं. माटे हे गौतम ! ते हेतुथी तेने यावत् सांपरायिकी क्रिया लागे छे.

अकषायभावमां रहेला साधुने ऐर्यापथिकी के सांपरायिकी क्रिया ?

२. [प्र०] हे भगवन् ! अवीचिमार्गमां–अकषायभावमां–रहीने आगळना रूपोने जोता, यावत् अवलोकता संवृत अनगारने शुं ऐर्यापथिकी क्रिया लागे के सांपरायिकी क्रिया लागे ? [उ०] हे गौतम ! यावत् अकषायभावमां रहीने आगळ रूपोने जोता यावत् ते संवृत अनगारने ऐर्यापथिकी क्रिया लागे, पण सांपरायिकी क्रिया न लागे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के ते अनगारने ऐर्यापथिकी क्रिया लागे पण सांपरायिकी क्रिया न लागे ? [उ०] हे गौतम ! 'जेना क्रोध, मान, माया अने लोभ क्षीण थया छे तेने ऐर्यापथिकी क्रिया लागे छे–इत्यादि जेम सप्तम शतकना प्रथम उद्देशकमां (उ० १. सू० १८.) कह्युं छे तेम अहीं पण यावत् 'ते अनगार सूत्रानुसारे वर्ते छे' त्यांसुधी कहेवुं, हे गौतम ! ते हेतुथी तेने यावत् सांपरायिकी क्रिया लागती नथी.

ऐर्यापथिकी अथवा सांपरायिकी क्रियानो हेतु.

योनि.

३. [प्र०] हे भगवन् ! योनि केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! योनि त्रण प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे– †शीत, उष्ण अने शीतोष्ण. ए प्रमाणे अहीं समग्र †योनिपद कहेवुं.

---

१. * भग. ख. ३. श. ७ उ. १ पृ. ५ सू. १८.

२. † प्रज्ञा. पद ९ प. २२४. १—२२७.

४. [प्र०] कइविहा णं भंते ! वेयणा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! तिविहा वेयणा पण्णत्ता, तं जहा–सीया, उसिणा, सीओसिणा। एवं वेयणापयं निरवसेसं भाणियव्वं, जाव [प्र०] 'नेरइया णं भंते ! किं दुक्खं वेयणं वेदेंति, सुहं वेयणं वेदेंति, अदुक्खमसुहं वेयणं वेदेंति ? [उ०] गोयमा ! दुक्खं पि वेयणं वेदेंति, सुहं पि वेदणं वेदेंति, अदुक्खमसुहं पि वेयणं वेदेंति'।

५. मासियं णं भंते ! भिक्खुपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स निच्चं वोसट्ठे काए, चियत्ते देहे–एवं मासिया भिक्खुपडिमा निरवसेसा भाणियव्वा, जहा दसाहिं, जाव 'आराहिया भवइ'।

६. भिक्खू य अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता से णं तस्स ठाणस्स अणालोइय–पडिक्कंते कालं करेइ, नत्थि तस्स आराहणा, से णं तस्स ठाणस्स आलोइय–पडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा। भिक्खू य अन्नयरं अकिच्चठाणं पडिसेवित्ता तस्स णं एवं भवइ–'पच्छा वि णं अहं चरिमकालसमयंसि एयस्स ठाणस्स आलोएस्सामि, जाव पडिक्कमिस्सामि, से णं तस्स ठाणस्स अणालोइय–पडिक्कंते जाव नत्थि तस्स आराहणा, से णं तस्स ठाणस्स आलोइय–पडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा। भिक्खू य अन्नयरं अकिच्चट्ठाणं पडिसेवित्ता तस्स णं एवं भवइ–'जइ ताव समणोवासगा वि काल-मासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति, किमंग ! पुण अहं अणपन्नियदेवत्तणंपि नो लभिस्सामि'त्ति कट्टु से णं तस्स ठाणस्स अणालोइय–पडिक्कंते कालं करेइ नत्थि तस्स आराहणा, से णं तस्स ठाणस्स आलोइय–पडिक्कंते कालं करेइ अत्थि तस्स आराहणा। सेवं भंते !, सेवं भंते ! त्ति।

दसमसए बीओ उद्देसो समत्तो।

वेदनाना प्रकार. नैरयिकोने वेदना.

४. [प्र०] हे भगवन् ! वेदना केटला प्रकारनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! वेदना त्रण प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे– शीत, उष्ण अने शीतोष्ण. ए प्रमाणे अहीं संपूर्ण *वेदनापद कहेवुं. यावत्–[प्र०] 'हे भगवन् ! नैरयिको शुं दुःखपूर्वक वेदना वेदे छे, सुखपूर्वक वेदना वेदे छे के सुख–दुःख शिवाय वेदना वेदे छे ? [उ०] हे गौतम ! नैरयिको दुःखपूर्वक वेदना वेदे छे, सुखपूर्वक वेदना वेदे छे अने सुखदुःख सिवाय पण वेदना वेदे छे.

भिक्षु प्रतिमा. आराधना.

५. [प्र०] हे भगवन् ! जे अनगारे मासिक भिक्षु प्रतिमाने स्वीकारेली छे, अने हंमेशां शरीरना ममत्वनो त्याग कर्यो छे–देहनो त्याग कर्यो छे–इत्यादि मासिक भिक्षु प्रतिमानो संपूर्ण विचार अहिं दशाश्रुत स्कंधमां बताव्या प्रमाणे यावत् [बारमी प्रतिमा] 'आराधी होय छे' त्यांसुधी जाणवो.

६. जो ते भिक्षु कोइ एक अकृत्यस्थानने सेवीने अने ते अकृत्यस्थाननुं आलोचन तथा प्रतिक्रमण कर्या विना काळ करे तो तेने आराधना थती नथी, परन्तु जो ते ते अकृत्यस्थाननुं आलोचन अने प्रतिक्रमण करीने काल करे तो तेने आराधना थाय छे. वळी कदाच कोइ भिक्षुए अकृत्यस्थाननुं प्रतिसेवन कर्युं होय, पछी तेना मनमां एम विचार थाय के 'हुं मारा अंतकालना समये ते अकृत्यस्थाननुं आलोचन करीश, यावत् तपरूप प्रायश्चित्तनो स्वीकार करीश,' त्यार पछी ते भिक्षु ते अकृत्यस्थाननुं आलोचन के प्रतिक्रमण कर्या विना मरण पामे तो तेने आराधना थती नथी, अने जो ते भिक्षु ते अकृत्यस्थाननुं आलोचन अने प्रतिक्रमण करी काल करे तो तेने आराधना थाय छे. वळी कोइ भिक्षु कोइ एक अकृत्यस्थाननुं प्रतिसेवन करी पछी मनमां एम विचारे के, 'जो श्रमणोपासको पण मरणसमये काल करीने कोइ एक देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थाय छे, तो शुं हुं अणपन्निकदेवपणुं पण नहि पामुं,' एम विचारीने ते अकृत्यस्थाननुं आलोचन के प्रतिक्रमण कर्या विना जो काल करे तो तेने आराधना थती नथी, अने जो ते अकृत्यस्थानने आलोची तथा प्रतिक्रमी पछी काल करे तो तेने आराधना थाय छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे, [एम कही भगवान् गौतम यावद् विहरे छे.]

दशमशते द्वितीय उद्देशक समाप्त.

---

१ जाव ख–घ, जहा दसा क–ङ। २ चरम–घ। ३ पडिक्कमिस्सामि घ। ४ अणपन्निय–ग·घ।

४. * प्रज्ञा० पद ३५ प ५५३. २—५५७.

ततीओ उद्देसो.

१. [प्र०] रायगिहे जाव एवं वयासी–आइड्ढीए णं भंते ! देवे जाव चत्तारि, पंच देवावासंतराइं वीतिक्कंते, तेण परं परिड्ढीए ? [उ०] हंता, गोयमा ! आयड्ढीए णं तं चेव, एवं असुरकुमारे वि । नवरं असुरकुमारावासंतराइं, सेसं तं चेव । एवं एएणं कमेणं जाव थणियकुमारे, एवं वाणमंतरे, जोइस–वेमाणिए, जाव तेण परं परिड्ढीए ।

२. [प्र०] अप्पड्ढीए णं भंते ! देवे से महड्ढियस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ? [उ०] णो इणट्ठे समट्ठे ।

३. [प्र०] समिड्ढीए णं भंते ! देवे समड्ढीयस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ? [उ०] णो इणट्ठे समट्ठे, पमत्तं पुण वीइवएज्जा ।

४. [प्र०] से णं भंते ! किं विमोहित्ता पभू, अविमोहित्ता पभू ? [उ०] गोयमा ! विमोहित्ता पभू, नो अविमोहेत्ता पभू ।

५. [प्र०] से भंते ! किं पुव्विं विमोहित्ता पच्छा वीइवएज्जा, पुव्विं वीतीवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ? [उ०] गोयमा ! पुव्विं विमोहित्ता पच्छा वीईवएज्जा, णो पुव्विं वीईवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ।

तृतीय उद्देशक.

राजगृह नगर.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां [भगवान् गौतम] यावत् आ प्रमाणे बोल्या के–हे भगवन् ! शुं देव पोतानी शक्तिवडे यावत् चार पांच देवावासोने उल्लंघन करे, अने त्यारपछी बीजानी शक्तिवडे उल्लंघन करे ? [उ०] हा, गौतम ! पोतानी शक्तिवडे चार पांच देवावासोनुं उल्लंघन करे–इत्यादि पूर्व प्रमाणे कहेवुं. ए प्रमाणे असुरकुमार संबन्धे पण जाणवुं, परन्तु ते आत्मशक्तिथी असुरकुमारोना आवासोनुं उल्लंघन करे. बाकी सर्व पूर्व प्रमाणे जाणवुं. ए रीते आ अनुक्रमथी यावत् स्तनितकुमार, वानव्यंतर, ज्योतिष्क अने वैमानिक सुधी जाणवुं. 'तेओ यावत् चार पांच देवावासोनुं उल्लंघन करे अने त्यारपछी आगळ परनी शक्तिथी उल्लंघन करे' त्यांसुधी जाणवुं.

देव आत्मशक्तिथी चार पांच देवावासोने ओळंगे ?

२. [प्र०] हे भगवन् ! अल्पऋद्धिक–अल्पशक्तिवाळो देव महर्द्धिक–महा शक्तिवाळा देवनी वच्चे थइने जाय ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. [अर्थात् ते वच्चोवच्च थइने न जाय.]

अल्पर्द्धिक देव महर्द्धिक देवनी वच्चोवच्च थईने जाय ?

३. [प्र०] हे भगवन् ! समर्द्धिक–समानशक्तिवाळो–देव समानशक्तिवाळा देवनी वच्चे थइने जाय ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी. पण जो ते प्रमत्त (असावधान) होय तो तेनी वच्चे थईने जाय.

समर्द्धिक देव समर्द्धिक देवनी वच्चोवच्च थईने जाय ?

४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते देव सामेना देवने विमोह पमाडीने जइ शके, के विमोह पमाड्या सिवाय जइ शके ? [उ०] हे गौतम ! ते देव सामेना देवने विमोह पमाडीने जइ शके, पण विमोह पमाड्या सिवाय न जई शके.

मोह पमाडीने जई शके के ते सिवाय जाय ?

५. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते देव पहेलां विमोह पमाडीने पछी जाय के पहेलां जइने पछी विमोह पमाडे ? [उ०] हे गौतम ! ते देव पहेलां विमोह पमाडीने पछी जाय, पण पहेलां जइने पछी विमोह न पमाडे.

मोह पमाडीने जाय के जईने मोह पमाडे ?

---

१ जोइसिए ङ, जोइस–वेमाणिए–घ । २ जाव परं ङ । ३ महिड्ढिय–ग–ङ । ४ समिड्ढीय–ग–ङ । ५ से णं भं–ङ ।

६. [प्र०] महिड्डीए णं भंते ! देवे अप्पड्डियस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ? [उ०] हंता, वीइवएज्जा ।

७. [प्र०] [1]से भंते ! किं विमोहित्ता पभू, अविमोहेत्ता पभू ? [उ०] गोयमा ! विमोहेत्ता वि पभू, अविमोहेत्ता वि पभू ।

८. [प्र०] से भंते ! किं पुव्विं विमोहित्ता पच्छा वीइवएज्जा, पुव्विं वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ? [उ०] गोयमा ! पुव्विं वा विमोहेत्ता पच्छा वीइवएज्जा, पुव्विं वा वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ।

९. [प्र०] अप्पड्डिए णं भंते ! असुरकुमारे महड्डियस्स असुरकुमारस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ? [उ०] णो इणट्ठे समट्ठे । एवं [2]असुरकुमारेण वि तिन्नि आलावगा भाणियव्वा जहा ओहिएणं देवेणं भणिया । एवं जाव थणियकुमारेणं, वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिएणं एवं चेव ।

१०. [प्र०] अप्पड्डिए णं भंते ! देवे महिड्डियाए देवीए मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ? [उ०] णो इणट्ठे समट्ठे ।

११. [प्र०] समड्डिए णं भंते ! देवे समड्डियाए देवीए मज्झंमज्झेणं० ? [उ०] एवं तहेव देवेण य [4]देवीए य दंडओ भाणियव्वो, जाव वेमाणियाए ।

१२. [प्र०] अप्पड्डिया णं भंते ! देवी महड्डियस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं० ? [उ०] एवं एसो वि ततिओ दंडओ भाणियव्वो, जाव [प्र०] 'महिड्डिया वेमाणिणी अप्पड्डियस्स वेमाणियस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ? [उ०] हंता, वीइवएज्जा' ।

१३. [प्र०] अप्पड्डिया णं भंते ! देवी महड्डियाए देवीए मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ? [उ०] णो इणट्ठे समट्ठे । एवं समड्डिया देवी समड्डियाए देवीए तहेव, महिड्डिया वि देवी अप्पड्डियाए देवीए तहेव, एवं एक्केक्के तिन्नि तिन्नि आलावगा

महर्द्धिक देव अल्पर्द्धिक देवनी वचे थईने जाय?

६. [प्र०] हे भगवन् ! महर्द्धिक—महाशक्तिवाळो देव अल्पशक्तिवाळा देवनी वचोवच थईने जाय ? [उ०] हा, गौतम ! जाय.

महर्द्धिक देव अल्पर्द्धिकने मोह पमाडीने जाय के ते सिवाय जाय?

७. [प्र०] हे भगवन् ! ते महर्द्धिक देव शुं ते अल्पशक्तिवाळा देवने विमोह पमाडीने जइ शके के विमोह पमाड्या विना जइ शके ? [उ०] हे गौतम ! विमोह पमाडीने पण जइ शके अने विमोह पमाड्या विना पण जइ शके.

महर्द्धिक देव मोह पमाडीने जाय के जईने मोह पमाडे?

८. [प्र०] हे भगवन् ! ते महर्द्धिक देव शुं पूर्वे विमोह पमाडीने पछी जाय के पूर्वे जाय अने पछी विमोह पमाडे ? [उ०] हे गौतम ! ते महर्द्धिक देव पहेलां विमोह पमाडीने पछी जाय, के पहेलां जइने पछी विमोह पमाडे.

असुरकुमार.

९. [प्र०] हे भगवन् ! अल्पशक्तिवाळो असुरकुमार महाशक्तिवाळा असुरकुमारनी वचोवच थइने जइ शके ? [उ०] हे गौतम ! आ अर्थ योग्य नथी. ए प्रमाणे सामान्य देवनी पेठे असुरकुमारना पण *त्रण आलापक कहेवा. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमार सुधी कहेवुं. तथा वानव्यंतर, ज्योतिष्क अने वैमानिक देवोने पण ए प्रमाणे कहेवुं.

अल्पर्द्धिक देव महर्द्धिक देवीनी वचे थईने जाय?

१०. [प्र०] हे भगवन् ! अल्पशक्तिवाळो देव महाशक्तिवाळी देवीनी वचोवच थइने जाय ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ योग्य नथी; अर्थात् न जाय.

समर्द्धिक देव समर्द्धिक देवीनी वचे थईने जाय?

११. [प्र०] हे भगवन् ! समानशक्तिवाळो देव समानशक्तिवाळी देवीनी वचोवच थइने जाय ? [उ०] हे गौतम ! ए प्रमाणे पूर्वेनी पेठे देवनी साथे देवीनो दंडक कहेवो, यावत् वैमानिक सुधी जाणवुं.

अल्पर्द्धिक देवी महर्द्धिक देवनी वचे थईने जाय? महर्द्धिक वैमानिक देवी.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! अल्पशक्तिवाळी देवी महाशक्तिवाळा देवनी वचोवच थइने जाय ? [उ०] हे गौतम ! न जाय, ए प्रमाणे अहीं त्रीजो दंडक पूर्व प्रमाणे कहेवो; यावत्–[प्र०] 'हे भगवन् ! महाशक्तिवाळी वैमानिक देवी अल्पशक्तिवाळा वैमानिक देवनी वचोवच थइने जाय ? [उ०] हा, गौतम ! जाय.'

अल्पर्द्धिक देवी महर्द्धिक देवीनी वचे थईने जाय? समर्द्धिक देवी समर्द्धिक देवीनी साथे.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! अल्पशक्तिवाळी देवी मोटी शक्तिवाळी देवीनी वचोवच थइने जाय ? [उ०] हे गौतम ! आ अर्थ योग्य नथी. ए प्रमाणे समानशक्तिवाळी देवीनो समानशक्तिवाळी देवी साथे, तथा महाशक्तिवाळी देवीनो अल्पशक्तिवाळी देवी साथे ते प्रमाणे आलापक कहेवा, अने ए रीते एक एकना त्रण त्रण आलापक कहेवा. यावत्–[प्र०] 'हे भगवन् ! मोटीशक्तिवाळी वैमानिक देवी अल्पशक्तिवाळी

---

१ से णं भं-ख । २-कुमारे वि ख । ३-कुमाराणं ख । ४ देवीण य रा-ख ।

९. * १ अल्पर्द्धिक साथे महर्द्धिक, २ समर्द्धिक साथे समर्द्धिक, अने महर्द्धिक साथे अल्पर्द्धिकना-त्रण आलापक जाणवा.

आणियव्वा, जाव–[प्र०] 'महड्डिया णं भंते! वेमाणिणी अप्पड्डियाए वेमाणिणीए मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ? [उ०] हंता, वीइवएज्जा'। सा भंते! किं विमोहित्ता पभू० ? तहेव जाव 'पुव्विं वा वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा'। एए चत्तारि दंडगा।

१४. [प्र०] आसस्स णं भंते! धावमाणस्स किं 'खु खु'त्ति करेति ? [उ०] गोयमा! आसस्स णं धावमाणस्स हिययस्स य जगयस्स य अंतरा एत्थ णं [1]कब्बडए नामं वाए समुच्छइ, जेणं आसस्स धावमाणस्स 'खु खु'त्ति करेइ।

१५. [प्र०] अह भंते! आसइस्सामो, सइस्सामो, चिट्ठिस्सामो, [2]निसिइस्सामो, तुयट्टिस्सामो; "आमंतणी आणवणी जायणी तह पुच्छणी य पण्णवणी। पच्चक्खाणी भासा भासा इच्छाणुलोमा य॥ अणभिग्गहिया भासा भासा य अभिग्गहम्मि बोद्धव्वा। संसयकरणी भासा वोयडमव्वोयडा चेव" ॥ पन्नवणी णं एसा भासा, न एसा भासा मोसा ? हंता, गोयमा! आसइस्सामो, तं चेव जाव न एसा भासा मोसा। सेवं भंते!, सेवं भंते! त्ति।

दसमे सए तईओ उद्देसो समत्तो।

वैमानिक देवीनी वचोवच थइने जाय ? [उ०] हा, गौतम! जाय; यावत्–[प्र०] 'हे भगवन्! शुं ते महाशक्तिवाळी देवी विमोह पमाडीने जइ शके [के विमोह पमाड्या विना जइ शके ? वळी पहेलां विमोह पमाडे, अने पछी जाय के पहेलां जाय अने पछी विमोह पमाडे ? [उ०] हे गौतम] पूर्वे प्रमाणे जाणवुं, यावत् 'पूर्वे जाय अने पछीथी विमोह पमाडे' त्यां सुधी कहेवुं. ए प्रमाणे ए *चार दंडक कहेवा.

महर्द्धिक वैमानिक देवी अल्पर्द्धिक देवीनी साथे.

१४. [प्र०] हे भगवन्! ज्यारे घोडो दोडतो होय त्यारे ते 'खु खु' शब्द केम करे छे ? [उ०] हे गौतम! ज्यारे घोडो दोडतो होय छे त्यारे हृदय अने यकृत् (लीव्हर)–नी वच्चे कर्कटनामे वायु उत्पन्न थाय छे, अने तेथी घोडो दोडतो होय छे त्यारे ते 'खु खु' शब्द करे छे,

महर्द्धिक देवी मोह पमाडीने जाय के ते सिवाय ?
दोडता घोडाने 'खु खु' शब्द केम थाय छे ?

१५. [प्र०] हे भगवन्! 'अमे आश्रय करीशुं, शयन करीशुं, उभा रहीशुं, बेसीशुं, (पथारीमां) आळोटशुं—इत्यादि भाषा * "१ आमंत्रणी, २ आज्ञापनी, ३ याचनी, ४ प्रच्छनी, ५ प्रज्ञापनी, ६ प्रत्याख्यानी, ७ इच्छानुलोमा, ८ अनभिगृहीत, ९ अभिगृहीत, १० संशयकरणी, ११ व्याकृता, अने १२ अव्याकृता भाषा छे." तेमांनी आ प्रज्ञापनी भाषा कहेवाय ? अने ए भाषा मृषा (असत्य) न कहेवाय ? [उ०] हे गौतम! 'आश्रय करीशुं'–इत्यादि भाषा पूर्ववत् कहेवाय, पण मृषा भाषा न कहेवाय. हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे. [एम कही भगवान् गौतम यावद् विहरे छे.]

भाषाना बार प्रकार.

दशमशते तृतीय उद्देशक समाप्त.

---

१ कब्बडए ग। २ निसइस्सामो ग।

१३. * १ सामान्य देव साथे देवीनो दंडक, २ देव साथे देवनो दंडक, ३ देवी साथे देवनो दंडक, ४ देवी साथे देवीनो दंडक.—ए चार दंडक जाणवा.

१५. *१ संबोधन करवापूर्वक बोलाती भाषा ते आमन्त्रणी, २ आज्ञापूर्वक बोलाती भाषा ते आज्ञापनी. जेम के 'अ० कर'. ३ कोइ पण वस्तुनी याचना करवी ते याचनी. ४ अज्ञात अथवा संदिग्ध अर्थनो प्रश्न करवो ते प्रच्छनी. ५ उपदेश आपवारूप ते प्रज्ञापनी. ६ निषेध करवो ते प्रत्याख्यानी. ७ इच्छाने अनुकूल भाषा ते इच्छानुलोमा. ८ अर्थना अभिग्रह–निश्चय सिवाय बोलाय ते अनभिगृहिता. जेमके 'तने ठीक लागे ते कर'. ९ अर्थना निश्चयपूर्वक बोलाय ते अभिगृहिता. जेमके 'आ प्रमाणे कर'. १० अर्थनो संशय करनारी ते संशयकरणी, जेमके सैन्धवशब्द पुरुष, लवण अने घोडाना अर्थनो संशय उत्पन्न करे छे. ११ लोकप्रसिद्धशब्दार्थवाळी भाषा ते व्याकृता. १२ अने गंभीरशब्दार्थवाळी भाषा ते अव्याकृता.—टीका. जुओ प्रज्ञापना भाषापद प० २५६–१ पं. ९.

चतुर्थ उद्देशक.

१. तेणं कालेणं, तेणं समएणं वाणियग्गामे नयरे होत्था, वण्णओ। दूतिपलासए चेइए। सामी समोसढे। जाव परिसा पडिगया। तेणं कालेणं, तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे, जाव उड्ढंजाणू जाव विहरति। तेणं कालेणं, तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी सामहत्थी नामं अणगारे पगइभद्दए, जहा रोहे, जाव उड्ढंजाणू जाव विहरइ। तए णं से सामहत्थी अणगारे जायसड्ढे जाव उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता भगवं गोयमं तिक्खुत्तो जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी।

२. [प्र०] अत्थि णं भंते! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तायत्तीसगा देवा? [उ०] हंता, अत्थि। [प्र०] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–'चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तायत्तीसगा देवा'? [उ०] तायत्तीसगा देवा एवं खलु सामहत्थी–तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे कायंदी नामं नयरी होत्था। वण्णओ। तत्थ णं कायंदीए नयरीए तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासया परिवसंति, अड्ढा, जाव अपरिभूता अभिगयजीवाजीवा, उवलद्धपुण्णपावा, वण्णओ, जाव विहरंति। तए णं ते तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासया पुव्विं उग्गा उग्गविहारी, संविग्गा, संविग्गविहारी भवित्ता, तओ पच्छा पासत्था, पासत्थविहारी, ओसन्ना, ओसन्नविहारी, कुसीला, कुसीलविहारी, अहाच्छंदा, अहाच्छंदविहारी बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणंति। पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेंति, अत्ताणं

चतुर्थ उद्देशक.

वाणिज्यग्राम. दूतिपलाशचैत्य. श्यामहस्ती अनगार.

१. ते काले–ते समये वाणिज्यग्राम नामे नगर हतुं. वर्णन. त्यां दूतिपलाश नामे चैत्य हतुं. त्यां भगवान् महावीर स्वामी समोसर्या. परिषद् धर्मोपदेश श्रवण करीने पाछी गइ. ते काले–ते समये श्रमण भगवंत महावीरना मोटा शिष्य इंद्रभूति नामे अनगार यावद् ऊर्ध्वजानु (जेना ढींचण उभा छे एवा) यावद् विहरे छे. ते काले–ते समये श्रमण भगवान् महावीरना शिष्य श्यामहस्ती नामे अनगार हता. जे *रोह नामे अनगारनी पेठे भद्रप्रकृतिना यावद् ऊर्ध्वजानु विहरता हता. त्यार पछी श्रद्धावाळा ते श्यामहस्ती अनगार यावत् उभा थइने ज्यां भगवान् गौतम छे त्यां आवे छे, आवीने भगवान् गौतमने त्रणवार प्रदक्षिणा करी, वंदी, नमी अने पर्युपासना करता आ प्रमाणे बोल्या–

चमरेन्द्रने त्रायस्त्रिंशक देवो छे? त्रायस्त्रिंशक देवोनो संबन्ध.

२. [प्र०] हे भगवन्! असुरकुमारना इन्द्र चमरने त्रायस्त्रिंशक देवो छे? [उ०] हा, चमरेन्द्रने त्रायस्त्रिंशक देवो छे. [प्र०] हे भगवन्! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के असुरकुमारना इंद्र चमरने त्रायस्त्रिंशक देवो छे? [उ०] हे श्यामहस्ती! ते त्रायस्त्रिंशक देवोनो संबन्ध आ प्रमाणे छे–ते काले–ते समये आ जंबूद्वीपमां, भारतवर्षमां काकंदी नामे नगरी हती, वर्णन. ते काकंदी नगरीमां परस्पर सहाय करनारा तेत्रीश श्रमणोपासक गृहपतिओ रहेता हता, जेओ धनिक, यावत् अपरिभूत (जेनो पराभव न थइ शके एवा समर्थ) हता, जीवाजीवने जाणनारा, अने पुण्य पापना ज्ञाता तेओ यावद् विहरे छे. त्यारपछी ते परस्पर सहाय करनारा तेत्रीश श्रमणोपासक

---

१ कुमाररस्स ख–घ। २ तायत्तीसं क। ३ सहाया क।

१. * भग० खं. १ श. १ उ. ६ पृ. १६७.

झूसेत्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति, छेदित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइय-पडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तायत्तीसगदेवत्ताए उववन्ना ।

३. [प्र०] जप्पभिइं च णं भंते ! ते कायंदगा तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासगा चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तायत्तीसगदेवत्ताए उववन्ना तप्पभिइं च णं भंते ! एवं वुच्चइ–'चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तायत्तीसगा देवा ? तए णं भगवं गोयमे सामहत्थिणा अणगारेणं एवं वुत्ते समाणे संकिए, कंखिए, वितिगिच्छिए उट्ठाए उट्ठेइ । उट्ठाए उट्ठित्ता सामहत्थिणा अणगारेणं सद्धिं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ । तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ, नमंसइ । वंदित्ता, नमंसित्ता एवं वयासी—

४. [प्र०] अत्थि णं भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तायत्तीसगा देवा २ ? [उ०] हंता, अत्थि । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–एवं तं चेव सव्वं भाणियव्वं, जाव 'तप्पभिइं च णं एवं वुच्चइ–चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तायत्तीसगा देवा २ ? [उ०] णो इणट्ठे समट्ठे, गोयमा ! चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तायत्तीसगाणं देवाणं सासए नामधेज्जे पण्णत्ते; जं न कयाइ नासी, न कयाइ न भवइ, ण कयाइ ण भविस्सई; जाव णिच्चे अव्वोच्छित्तिनयट्ठयाए, अन्ने चयंति, अन्ने उववज्जंति ।

५. [प्र०] अत्थि णं भंते ! बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो तायत्तीसगा देवा २ ? [उ०] हंता, अत्थि । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'बलिस्स वइरोयणिंदस्स जाव तायत्तीसगा देवा २' ? [उ०] एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं, तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे बिभेले णामं सन्निवेसे होत्था । वन्नओ । तत्थ णं बिभेले सन्निवेसे जहा चमरस्स जाव उववन्ना । [प्र०] जप्पभिइं च णं भंते ! बिभेलगा तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासगा बलिस्स वइरोयणिंदस्स सेसं तं चेव जाव निच्चे अव्वोच्छित्तिणयट्ठयाए, अन्ने चयंति, अन्ने उववज्जंति ।

गृहपतिओ पूर्वे उग्र, उग्रविहारी (उग्रचर्यावाळा) * संविग्न अने संविग्नविहारी हता, पण पाछळथी †पासत्था, पासत्थविहारी (पासत्थानी चर्यावाळा) अवसन्न, अवसन्नविहारी, कुशील, कुशीलविहारी, यथाछंद, अने यथाछंदविहारी थईने तेओ घणा वरससुधी श्रमणोपासकना पर्यायने पाळे छे, पाळीने अर्धमासिक संलेखनावडे आत्माने सेवीने त्रीश भक्तोने अनशनपणे व्यतीत करीने ते प्रमादस्थाननुं आलोचन अने प्रतिक्रमण कर्या विना काळ समये काळ करी तेओ असुरेंद्र, असुरकुमार राजा चमरना त्रायस्त्रिंशकदेवपणे उत्पन्न थया.

३. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यारथी मांडीने ते काकंदीना रहेनारा अने परस्पर सहाय करनारा, तेत्रीश श्रमणोपासको असुरेंद्र, असुरकुमारराजा चमरना त्रायस्त्रिंशकदेवपणे उत्पन्न थया त्यारथी एम कहेवाय छे के असुरेंद्र, असुरकुमारराजा चमरने त्रायस्त्रिंशक देवो छे ? (अर्थात् ते पूर्वे त्रायस्त्रिंश देवो न होता ?). ज्यारे ते श्यामहस्ती अनगारे भगवंत गौतमने ए प्रमाणे कह्युं, त्यारे भगवान् गौतम शंकित, कांक्षित अने अत्यन्त संदिग्ध थया, अने तेओ उभा थईने ते श्यामहस्ती अनगारनी साथे ज्यां श्रमण भगवान् महावीर हता त्यां आवे छे त्यां आवीने श्रमण भगवान् महावीरने वांदी अने नमीने आ प्रमाणे बोल्या—

४. [प्र०] हे भगवन् ! असुरेंद्र, असुरकुमारना राजा चमरने त्रायस्त्रिंशक देवो छे ? [उ०] हा, गौतम ! छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के ते चमरने त्रायस्त्रिंशक देवो छे ?–इत्यादि पूर्वे कहेलो त्रायस्त्रिंशक देवोनो सर्व संबन्ध कहेवो; यावत् काकंदीना रहेनारा श्रमणोपासको त्रायस्त्रिंशकदेवपणे उत्पन्न थया छे त्यारथी शुं एम कहेवाय छे के चमरने त्रायस्त्रिंशक देवो छे ? (ते पूर्वे शुं नहोता ?) [उ०] हे गौतम ! ते अर्थ योग्य नथी, पण असुरेंद्र असुरकुमारना राजा चमरना त्रायस्त्रिंशक देवोना नामो शाश्वत कह्या छे, जेथी तेओ कदी न हतां एम नथी, कदी न हशे एम नथी; कदी नथी एम पण नथी. यावत् [तेओ नित्य छे, अव्युच्छित्तिनय– (द्रव्यार्थिकनय–) नी अपेक्षाए अन्य च्यवे छे अने अन्य उत्पन्न थाय छे. [पण तेओनो विच्छेद थतो नथी.]

५. [प्र०] हे भगवन् ! वैरोचनेंद्र, वैरोचनराजा बलिने त्रायस्त्रिंशक देवो छे ? [उ०] हे गौतम ! हा, छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के वैरोचनेंद्र बलिने त्रायस्त्रिंशक देवो छे ? [उ०] हे गौतम ! बलिना त्रायस्त्रिंशक देवोनो संबन्ध आ प्रमाणे छे–ते काळे–ते समये जंबूद्वीपना भारतवर्षमां बिभेल नामे संनिवेश (कस्बो) हतो. वर्णन. ते बिभेल सन्निवेशमां परस्पर सहाय करनारा तेत्रीश श्रमणोपासको रहेता हता. इत्यादि जेम चमरेन्द्रना संबन्धे कह्युं तेम अहीं पण जाणवुं. यावत् तेओ त्रायस्त्रिंशकदेवपणे उत्पन्न थया. ज्यारथी मांडीने ते बिभेल संनिवेशना परस्पर सहाय करनारा तेत्रीश गृहपतिओ श्रमणोपासको वैरोचनेन्द्र बलिना त्रायस्त्रिंशकदेवपणे उत्पन्न थया–इत्यादि पूर्वोक्त सर्व हकीकत यावत् 'तेओ नित्य छे, अव्यवच्छित्तिनयनी अपेक्षाए अन्य च्यवे छे अन्य उत्पन्न थाय छे' त्यांसुधी जाणवी.

बलीन्द्रने त्रायस्त्रिंशक देवो. हेतु.

१. * संविग्न–मोक्ष मेळववा तत्पर थयेला, अथवा संसारथी भयभीत थयेला, संविग्नविहारी–मोक्षने अनुकूल चर्यावाळा.

† ज्ञानादिथी बाह्य ते पासत्था, हमेशां पासत्थाना आचारवाळा ते पासत्थविहारी. अवसन्न–थाकी गयेला, आळसथी सम्यक् अनुष्ठानने बरोबर नहि करनारा, अर्थात् जन्मथी मांडीने शिथीलाचारी. कुशील–ज्ञानादि आचारनी विराधना करनार; हमेशां ज्ञानादिआचारना विराधक ते कुशीलविहारी. यथाछन्द–आगमने परतन्त्र नहि होवाथी स्वच्छन्दी, अने हमेशां स्वच्छन्दी ते यथाच्छन्दविहारी.—टीका.

६. [प्र०] अत्थि णं भंते ! धरणस्स णागकुमारिंदस्स णागकुमाररण्णो तायत्तीसगा देवा २ ? [उ०] हंता अत्थि । [प्र०] से केणट्ठेणं जाव तायत्तीसगा देवा २ ? [उ०] गोयमा ! धरणस्स नागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो तायत्तीसगाणं देवाणं सासए नामधेज्जे पण्णत्ते, जं न कयाइ नासी, जाव अन्ने चयंति, अन्ने उववज्जंति। एवं भूयाणंदस्स वि, एवं जाव महाघोसस्स ।

७. [प्र०] अत्थि णं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स, देवरन्नो पुच्छा । [उ०] हंता अत्थि । [प्र०] से केणट्ठेणं जाव तायत्तीसगा देवा २ ? [उ०] एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं, तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पलासए नामं सन्निवेसे होत्था । वन्नओ । तत्थ णं पलासए सन्निवेसे तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासया जहा चमरस्स जाव विहरंति । तए णं ते तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासया पुव्विं पि पच्छा वि उग्गा, उग्गविहारी, संविग्गा, संविग्गविहारी बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेंति, झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेंति, छेदित्ता आलोइय-पडिकंता, समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा जाव उववन्ना । जप्पभिइं च णं भंते ! पालासिगा तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासगा, सेसं जहा चमरस्स जाव अन्ने उववज्जंति ।

८. [प्र०] अत्थि णं भंते ! ईसाणस्स० ? [उ०] एवं जहा सक्कस्स, नवरं चंपाए णयरीए जाव उववन्ना । जप्पभिइं च णं भंते ! चंपिज्जा तायत्तीसं सहाया, सेसं तं चेव, जाव अन्ने उववज्जंति ।

९. [प्र०] अत्थि णं भंते ! सणंकुमारस्स देविंदस्स देवरन्नो पुच्छा । [उ०] हंता अत्थि । [प्र०] से केणट्ठेणं ? [उ०] जहा धरणस्स तहेव, एवं जाव पाणयस्स, एवं अच्चुयस्स, आव अन्ने उववज्जंति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

दसमसए चउत्थो उद्देसो समत्तो ।

धरणेन्द्रने त्रायस्त्रिंशक देवो.

६. [प्र०] हे भगवन् ! नागकुमारना इंद्र अने नागकुमारना राजा धरणने त्रायस्त्रिंशक देवो छे ? [उ०] हे गौतम ! हा, छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के धरणेन्द्रने त्रायस्त्रिंशक देवो छे ? [उ०] हे गौतम ! नागकुमारना इंद्र अने नागकुमारना राजा धरणना त्रायस्त्रिंशक देवोना नामो शाश्वत कह्या छे, जेथी तेओ कदापि न हता एम नथी, कदापि नथी एम नथी, अने कदापि न हशे एम पण नथी. यावत् अन्य च्यवे छे अने अन्य उपजे छे. ए प्रमाणे भूतानंद अने यावत् महाघोष इन्द्रना त्रायस्त्रिंशक देवो संबन्धे पण जाणवुं.

शक्रेन्द्रने त्रायस्त्रिंशक देवो.

७. [प्र०] हे भगवन् ! देवेंद्र देवराज शक्रने त्रायस्त्रिंशक देवो छे ? [उ०] हा गौतम ! छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के देवेंद्र देवराज शक्रने त्रायस्त्रिंशक देवो छे ? [उ०] हे गौतम ! शक्रना त्रायस्त्रिंशक देवोनो संबन्ध आ प्रमाणे छे–ते काले–ते समये आ जंबूद्वीपना भारतवर्षमां पलाशक नामे संनिवेश हतो. वर्णन. ते पलाशक नामे संनिवेशमां परस्पर सहाय करनारा तेत्रीश श्रमणोपासको रहेता हता–इत्यादि जेम चमर संबन्धे कह्युं ते प्रमाणे यावत् तेओ विचरे छे. त्यारपछी परस्पर सहाय करनारा तेत्रीश गृहपति श्रमणोपासको पहेलां अने पछी उग्र, उग्रविहारी, संविग्न अने संविग्नविहारी थइने घणा वर्ष सुधी श्रमणोपासकपर्यायने पाळीने मासिक संलेखनावडे आत्माने सेवे छे, सेवीने साठ भक्तो अनशन वडे व्यतीत करीने आलोचन, प्रतिक्रमण करीने समाधिने प्राप्त थाय छे, अने मरणसमये काळ करी यावत् त्रायस्त्रिंशकदेवपणे उत्पन्न थाय छे. ज्यारथी आरंभीने पलाशक संनिवेशना निवासी परस्पर सहाय करनारा तेत्रीश गृहपतिओ श्रमणोपासको शक्रना त्रायस्त्रिंशकपणे उत्पन्न थया इत्यादि सर्व वृत्तान्त चमरेन्द्रना प्रमाणे यावत् 'अन्य छे च्यवे छे अने अन्य उत्पन्न थाय छे' त्यांसुधी जाणवो.

ईशानेन्द्रने त्रायस्त्रिंशक देवो.

८. [प्र०] हे भगवन् ! ईशान इंद्रने त्रायस्त्रिंशक देवो छे ? [उ०] शक्रनी पेठे ईशानेन्द्रने पण जाणवुं; परन्तु विशेष ए छे के ते गृहपतिओ श्रमणोपासको पलाशक संनिवेशने बदले चंपानगरीमां उत्पन्न थयेला छे. 'ज्यारथी चंपाना निवासी त्रायस्त्रिंशकपणे उत्पन्न थया'–इत्यादि पूर्वोक्त सर्व वृत्तान्त यावत् 'अन्य उपजे छे' त्यांसुधी जाणवो.

सनत्कुमारने त्रायस्त्रिंशक देवो.

९. [प्र०] हे भगवन् ! देवोना राजा देवेंद्र सनत्कुमारने त्रायस्त्रिंशक देवो छे ? [उ०] हा, गौतम ! छे. [प्र०] हे भगवन् ! आप ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के सनत्कुमार देवेंद्रने त्रायस्त्रिंशक देवो छे ? [उ०] हे गौतम ! जेम धरणेन्द्र संबन्धे कह्युं ते प्रमाणे अहीं जाणवुं. ए रीते यावत् प्राणतथी मांडीने अच्युतपर्यन्त यावत् 'बीजा उत्पन्न थाय छे' त्यांसुधी कहेवुं. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे. [एम कही भगवान् गौतम विहरे छे.]

दशमशते चतुर्थ उद्देशक समाप्त.

पंचमओ उद्देसो.

१. [प्र०] तेणं कालेणं, तेणं समएणं रायगिहे णामं नयरे। गुणसिलए चेइए। जाव परिसा पडिगया। तेणं कालेणं, तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे अंतेवासी थेरा भगवंतो जाइसंपन्ना, कुलसंपन्ना, जहा अट्ठमे सए सत्तमुद्देसए जाव विहरंति। तए णं ते थेरा भगवंतो जायसड्ढा, जायसंसया, जहा गोयमसामी, जाव पज्जुवासमाणा एवं वयासी—

२. [प्र०] चमरस्स णं भंते! असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो कति अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ? [उ०] अज्जो! पंच अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा—१ काली, २ रायी, ३ रयणी, ४ विज्जु, ५ मेहा। तत्थ णं एगमेगाए देवीए अट्ठ-ट्ठ देवीसहस्स परिवारो पन्नत्तो।

३. [प्र०] पभू णं भंते! ताओ एगमेगा देवी अन्नाइं अट्ठ-ट्ठ देवीसहस्साइं परिवारं विउव्वित्तए? [उ०] एवामेव सपुव्वावरेणं चत्तालीसं देवीसहस्सा, सेत्तं तुडिए।

४. [प्र०] पभू णं भंते! चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचंचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, चमरंसि सीहासणंसि तुडिएणं सद्धिं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए? [उ०] णो इणट्ठे समट्ठे। [प्र०] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—'नो पभू चमरे असुरिंदे चमरचंचाए रायहाणीए जाव विहरित्तए'? [उ०] अज्जो! चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो चमरचंचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, माणवए चेइयखंभे वइरामएसु गोल-वट्ट-समुग्गएसु बहूओ जिणसकहाओ

पंचम उद्देशक.

१. ते काले—ते समये राजगृह नामे नगर हतुं, अने त्यां गुणसिल नामे चैत्य हतुं. [श्रमण भगवान् महावीर समोसर्या.] यावत् सभा [धर्मश्रवण करीने] पाछी गइ. ते काले—ते समये श्रमण भगवान् महावीरना घणा शिष्यो पूज्य स्थविरो जातिसंपन्न—इत्यादि जेम आठमां शतकना सातमां *उद्देशकमां कह्युं छे तेम यावत् विहरे छे. त्यार पछी ते स्थविर भगवंतो जाणवानी श्रद्धावाळा यावत् संशयवाळा थईने गौतमस्वामीनी पेठे पर्युपासना करता आ प्रमाणे बोल्या.

राजगृह नगर. गुणशीलचैत्य.

२. [प्र०] हे भगवन्! असुरेंद्र असुरकुमारना राजा चमरने केटली अग्रमहिषीओ (पट्टराणीओ) कही छे? [उ०] हे आर्यो! चमरेन्द्रने पांच पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे—काली रायी, रजनी, विद्युत् अने मेघा. तेमांनी एक एक देवीने आठ आठ हजार देवीओनो परिवार कह्यो छे.

चमरेन्द्रने अग्रमहिषीओ.

३. [प्र०] हे भगवन्! शुं ते एक एक देवी आठ आठ हजार देवीओना परिवारने विकुर्ववा समर्थ छे? [उ०] हे आर्यो! हा, ए प्रमाणे पूर्वापर बधी मळीने [पांच पट्टराणीओनो परिवार] चालीश हजार देवीओ छे अने ते त्रुटिक (वर्ग) कहेवाय छे.

अग्रमहिषीओनो परिवार.

४. [प्र०] हे भगवन्! असुरेंद्र अने असुरकुमारोनो राजा चमर पोतानी चमरचंचा नामनी राजधानीमां सुधर्मा सभामां चमर नामे सिंहासनमां बेसी ते त्रुटिक (स्त्रीओना परीवार) साथे भोगववा लायक दिव्यभोगोने भोगववाने समर्थ छे? [उ०] हे आर्यो! ए अर्थ योग्य नथी. [प्र०] हे भगवन्! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के चमरचंचा राजधानीमां ते असुरेंद्र अने असुरकुमारनो राजा चमर दिव्य भोगोने भोगववा समर्थ नथी? [उ०] हे आर्यो! असुरेंद्र अने असुरकुमारना राजा चमरनी चमरचंचा नामनी राजधानीमां सुधर्मा

चमरेन्द्र पोतानी सभामां देवीओ साथे भोगो भोगववा समर्थ छे? हेतु.

---

१. *भग० खं. ३. श. ८ उ. ७ पृ. ८९.

सन्निक्खित्ताओ चिट्ठंति; जाओ णं चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो अन्नेसिं च बहूणं असुरकुमाराणं देवाण य देवीण य अच्चणिज्जाओ, वंदणिज्जाओ, नमंसणिज्जाओ, पूयणिज्जाओ, सक्कारणिज्जाओ, सम्माणणिज्जाओ, कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं पज्जुवासणिज्जाओ भवंति, तेसिं पणिहाए नो पभू, से तेणट्ठेणं अज्जो! एवं वुच्चइ–'नो पभू चमरे असुरिंदे जाव चमरचंचाए जाव विहरित्तए'। [प्र०] पभू णं अज्जो! चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचंचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, चमरंसि सीहासणंसि चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीहिं, तायत्तीसाए जाव अन्नेसिं च बहूणं असुरकुमारेहिं देवेहि य, देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे महयाहय– जाव भुंजमाणे विहरित्तए? [उ०] केवलं परियारिड्ढीए, नो चेव णं मेहुणवत्तियं।

५. [प्र०] चमरस्स णं भंते! असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सोमस्स महारन्नो कति अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ? [उ०] अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा–१ कणगा, २ कणगलता, ३ चित्तगुत्ता, ४ वसुंधरा। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगंसि देवीसहस्सं परिवारे पण्णत्ते [प्र०] पभू णं ताओ एगमेगाए देवीए अन्नं एगमेगं देवीसहस्सं परियारं विउव्वित्तए? [उ०] एवामेव सपुव्वावरेणं चत्तारि देवीसहस्सा। सेत्तं तुडिए।

६. [प्र०] पभू णं भंते! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो सोमे महाराया सोमाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, सोमंसि सीहासणंसि तुडिएणं? [उ०] अवसेसं जहा चमरस्स, नवरं परिवारो जहा सूरियाभस्स, सेसं तं चेव, जाव णो चेव णं मेहुणवत्तियं।

७. [प्र०] चमरस्स णं भंते! जाव रन्नो जमस्स महारन्नो कति अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ? [उ०] एवं चेव, नवरं जमाए रायहाणीए, सेसं जहा सोमस्स, एवं वरुणस्स वि, नवरं वरुणाए रायहाणीए; एवं वेसमणस्स वि, नवरं वेसमणाए रायहाणीए, सेसं तं चेव, जाव मेहुणवत्तियं।

नामे सभामां माणवक चैत्यस्तंभने विषे वज्रमय अने गोल–वृत्त डाबडामां नांखेलां जिनना घणां अस्थिओ (हाडकांओ) छे, जे असुरेंद्र अने असुरकुमारना राजा चमरने तथा बीजा घणा असुरकुमार देवोने अने देवीओने अर्चनीय, वंदनीय, नमस्कार करवा योग्य, पूजवा-योग्य, सत्कार करवा योग्य अने संमान करवा योग्य छे, तथा कल्याण अने मंगलरूप देव चैत्यनी पेठे उपासना करवा योग्य छे, माटे ते जिनना अस्थिओना प्रणिधानमां [संनिधानमां] ते असुरेंद्र पोतानी राजधानीमां यावत् [भोगो भोगववा] समर्थ नथी. तेथी हे आर्यो! एम कहेवाय छे के चमर असुरेंद्र यावत् चमरचंचा राजधानीमां यावत् [ते देवीओ साथे दिव्य भोगो] भोगववा समर्थ नथी. पण हे आर्यो! ते असुरेंद्र असुरकुमारराजा चमर चमरचंचा नामे राजधानीमां, सुधर्मा सभामां, चमरनामे सिंहासनमां बेसी चोसठ हजार सामानिक देवो, त्रायस्त्रिंशक देवो, अने बीजा घणा असुरकुमार देवो तथा देवीओ साथे परिवृत थइ मोटा अने निरन्तर थता नाट्य, गीत, अने वादित्रोना शब्दो वडे केवल परिवारनी ऋद्धिथी भोगो भोगववा समर्थ छे, परन्तु मैथुननिमित्तक भोगो भोगववा समर्थ नथी.

चमरेन्द्रना सोम लोकपालने पट्टराणीओ.

५. [प्र०] हे भगवन्! असुरकुमारना इंद्र अने असुरकुमारना राजा चमरना [लोकपाल] सोम महाराजाने केटली पट्टराणीओ कही छे? [उ०] हे आर्यो! तेने चार पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे–कनका, कनकलता, चित्रगुप्ता अने वसुंधरा. त्यां एक एक देवीने एक एक हजार देवीनो परिवार छे. तेओमांनी एक एक देवी एक एक हजार हजार देवीना परिवारने विकुर्वी शके छे. ए प्रमाणे पूर्वापर बधी मळीने चार हजार देवीओ थाय छे. ते त्रुटिक (देवीओनो वर्ग) कहेवाय छे.

सोम लोकपाल पोतानी सभामां देवीओ साथे भोग भोगववा समर्थ छे?

६. [प्र०] हे भगवन्! असुरकुमारना इंद्र अने असुरकुमारना राजा चमरना [लोकपाल] सोम नामे महाराजा पोतानी सोमा नामे राजधानीमां सुधर्मा सभामां सोमनामे सिंहासनमां बेसी ते त्रुटिक (देवीओना वर्ग) साथे भोग भोगववा समर्थ छे? [उ०] चमरना संबन्धे कह्युं छे ते सर्व अहीं पण जाणवुं. परन्तु तेनो परीवार *सूर्याभनी पेठे जाणवो. अने बाकीनुं सर्व पूर्व प्रमाणे कहेवुं, यावत् ते देवीओ साथे पोतानी सोमा राजधानीमां मैथुननिमित्तक भोग भोगववा समर्थ नथी.

चमरने अग्रमहिषीओ. बलीन्द्रने अग्रमहिषीओ.

७. [प्र०] हे भगवन्! ते चमरना [लोकपाल] यम नामे महाराजाने केटली पट्टराणीओ कही छे? [उ०] हे आर्यो! पूर्व प्रमाणे जाणवुं. विशेष ए छे के [यम लोकपालने] यमा नामे राजधानी छे. बाकी बधुं सोमनी पेठे जाणवुं. तथा ए प्रमाणे वरुणना संबन्धे पण जाणवुं, परन्तु तेने वरुणा राजधानी छे. ते प्रमाणे वैश्रमणने पण जाणवुं. परन्तु तेने वैश्रमणा राजधानी छे. बाकी सर्व पूर्व प्रमाणे जाणवुं, यावत् 'तेओ मैथुननिमित्ते भोग भोगववा समर्थ नथी.'

---

६. * जुओ राजप्र० प. १४–१.

८. [प्र०] बलिस्स णं भंते ! वइरोयणिंदस्स पुच्छा । [उ०] अज्जो ! पंच अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा–१ सुभा, २ निसुंभा, ३ रंभा, ४ निरंभा, ५ मदणा । तत्थ णं एगमेगाए देवीए अट्ठ-ट्ठ०, सेसं जहा चमरस्स, नवरं बलिचंचाए रायहाणीए, परियारो जहा मोउद्देसए सेसं तं चेव, जाव मेहुणवत्तियं ।

९. [प्र०] बलिस्स णं भंते ! वइरोयणिंदस्स, वइरोयणरण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ ? [उ०] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ । तं जहा–१ मीणगा, २ सुभद्दा, ३ विजया, ४ असणी । तत्थ णं एगमेगाए देवीए, सेसं जहा चमरसोमस्स एवं जाव वेसमणस्स ।

१०. [प्र०] धरणस्स णं भंते ! नागकुमारिंदस्स नागकुमाररन्नो कति अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ ? [उ०] अज्जो ! छ अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा–१ इला, २ सुक्का, ३ सतारा, ४ सोदामिणी, ५ इंदा, ६ घणविज्जुया । तत्थ णं एगमेगाए देवीए छ छ देवीसहस्सा परियारो पण्णत्तो ।

११. [प्र०] पभू णं ताओ एगमेगा देवी अन्नाइं छ छ देविसहस्साइं परियारं विउव्वित्तए ? [उ०] एवामेव सपुव्वावरेणं छत्तीसाइं देविसहस्साइं, सेसं तुडिए । [प्र०] पभू णं भंते ! धरणे ० ? [उ०] सेसं तं चेव, नवरं धरणाए रायहाणीए, धरणंसि सीहासणंसि, सओ परियारो, सेसं तं चेव ।

१२. [प्र०] धरणस्स णं भंते ! नागकुमारिंदस्स लोगपालस्स कालवालस्स महारन्नो कति अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ ? [उ०] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा–१ असोगा, २ विमला, ३ सुप्पभा, ४ सुदंसणा । तत्थ णं एगमेगाए०, अवसेसं जहा चमरलोगपालाणं । एवं सेसाणं तिण्ह वि ।

१३. [प्र०] भूयाणिंदस्स भंते ! पुच्छा । [उ०] अज्जो ! छ अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा–१ रूया, २ रूयंसा, ३ सुरूया, ४ रूयगावती, ५ रूयकंता, ६ रूयप्पभा । तत्थ णं एगमेगाए देवीए० अवसेसं जहा धरणस्स ।

८. [प्र०] हे भगवन् ! वैरोचनेन्द्र बलिने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! पांच पट्टराणीओ कही छे; ते आ प्रमाणे —शुभा, निशुंभा, रंभा, निरंभा अने मदना. तेमांनी एक एक देवीने आठ आठ हजार देवीओनो परिवार होय छे–इत्यादि सर्व चमरेन्द्रनी पेठे जाणवुं; परन्तु बलि नामे इन्द्रने बलिचंचा नामे राजधानी छे. अने तेनो परिवार तृतीय शतकना प्रथम *उद्देशकमां कह्या प्रमाणे जाणवो, बाकी सर्व पूर्वप्रमाणे जाणवुं. यावत् ते मैथुननिमित्ते भोग भोगववा समर्थ नथी.

बलीन्द्रनी अग्रमहिषीओ.

९. [प्र०] हे भगवन् ! वैरोचनेन्द्र वैरोचनराजा बलिना [लोकपाल] सोम नामे महाराजाने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! चार पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे–मेनका, सुभद्रा, विजया अने अशनी. तेमां एक एक देवीनो परिवार वगेरे बधुं चमरना सोम नामे लोकपालनी पेठे जाणवुं. ए प्रमाणे यावत् वैश्रमण सूधी जाणवुं.

बलिना लोकपाल सोमनी अग्रमहिषीओ.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! नागकुमारना इन्द्र अने नागकुमारना राजा धरणने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! तेने छ पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे–इला, शुक्रा, सतारा, सौदामिनी, इन्द्रा अने घनविद्युत्. तेमां एक एक देवीने छ छ हजार देवीओनो परिवार कह्यो छे.

धरणेन्द्रनी अग्रमहिषीओ.

११. [प्र०] हे भगवन् ! तेमांनी एक एक देवी अन्य छ छ हजार देवीओना परिवारने विकुर्वी शके ? [उ०] तेओ पूर्वे कह्या प्रमाणे पूर्वापर सर्व मळीने छत्रीश हजार देवीओने विकुर्ववा समर्थ छे. ए प्रमाणे ते त्रुटिक (देवीओनो समूह) कह्यो. [प्र०] हे भगवन् ! शुं धरणेन्द्र पोतानी धरणा नामे राजधानीमां धरण नामे सिंहासनमां बेसी पोताना परिवार देवीओ साथे भोग भोगववा समर्थ छे इत्यादि ? [उ०] बाकी सर्व पूर्ववत् जाणवुं, [अर्थात् मैथुननिमित्ते त्यां भोग भोगववा समर्थ नथी.]

धरणेन्द्रनी देवीओनो परिवार.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! नागकुमारना इन्द्र धरणना लोकपाल कालवाल नामे महाराजाने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! चार पट्टराणीओ कही छे; ते आ प्रमाणे–अशोका, विमला, सुप्रभा अने सुदर्शना. तेमां एक एक देवीनो परिवार वगेरे चमरना लोकपालोनी पेठे जाणवुं. ए प्रमाणे बाकीना त्रणे लोकपालो संबन्धे जाणवुं.

धरणना लोकपाल कालवालनी अग्रमहिषीओ.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! भूतानेन्द्रने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! छ पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे–रूपा, रूपांशा, सुरूपा, रूपकावती, रूपकांता अने रूपप्रभा. तेमां एक एक देवीनो परिवार इत्यादि सर्व धरणेन्द्रनी पेठे जाणवुं.

भूतानेन्द्रनी अग्रमहिषीओ.

---

८. * भग० खं. २ श. ३ उ० १ पृ० ११.

१४. [प्र०] भूयाणंदस्स णं भंते ! नागवित्तस्स पुच्छा । [उ०] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा–१ सुणंदा, २ सुभद्दा, ३ सुजाया, ४ सुमणा । तत्थ णं एगमेगाए० अवसेसं जहा चमरलोगपालाणं । एवं सेसाणं तिण्ह वि लोगपालाणं । जे दाहिणिल्ला इंदा तेसिं जहा धरणिंदस्स, लोगपालाण वि तेसिं जहा धरणस्स लोगपालाणं । उत्तरिल्लाणं इंदाणं जहा भूयाणंदस्स, लोगपालाण वि तेसिं जहा भूयाणंदस्स लोगपालाणं, नवरं इंदाणं सव्वेसिं रायहाणीओ सीहासणाणि य सरिसणामगाणि; परियारो जहा तइए सए पढमे उद्देसए । लोगपालाणं सव्वेसिं रायहाणीओ सीहासणाणि य सरिसणामगाणि, परियारो जहा चमरस्स लोगपालाणं ।

१५. [प्र०] कालस्स णं भंते ! पिसायिंदस्स पिसायरण्णो कति अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ ? [उ०] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा–१ कमला, २ कमलप्पभा, ३ उप्पला, ४ सुदंसणा । तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देविसहस्सं, सेसं जहा चमरलोगपालाणं । परिवारो तहेव, णवरं कालाए रायहाणीए, कालंसि सीहासणंसि, सेसं तं चेव, एवं महाकालस्स वि ।

१६. [प्र०] सुरूवस्स णं भंते ! भूतिंदस्स भूतरण्णो पुच्छा । [उ०] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा–१ रूववई, २ बहुरूवा, ३ सुरूवा, ४ सुभगा । तत्थ णं एगमेगाए, सेसं जहा कालस्स । एवं पडिरूवस्स वि ।

१७. [प्र०] पुण्णभद्दस्स णं भंते ! जक्खिंदस्स पुच्छा । [उ०] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा–१ पुन्ना, २ बहुपुत्तिया, ३ उत्तमा, ४ तारया । तत्थ णं एगमेगाए, सेसं जहा कालस्स । एवं माणिभद्दस्स वि ।

१८. [प्र०] भीमस्स णं भंते ! रक्खसिंदस्स पुच्छा । [उ०] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा–१ पउमा, २ [1]पउमावती, ३ कणगा, ४ रयणप्पभा । तत्थ णं एगमेगाए, सेसं जहा कालस्स । एवं महाभीमस्स वि ।

भूतानेन्द्रना लोकपालने अग्रमहिषीओ.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! भूतानेंद्रना लोकपाल नागवित्तने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! तेने चार पट्टराणीओ कही छे. ते आ प्रमाणे—सुनंदा, सुभद्रा, सुजाता अने सुमना. तेमां एक एक देवीनो परिवार वगेरे बधुं चमरेन्द्रना लोकपालोनी पेठे जाणवुं. ए प्रमाणे बाकी रहेला त्रणे लोकपालोना संबन्धे जाणवुं. जे दक्षिण दिशिना इन्द्रो छे तेओने धरणेन्द्रनी पेठे (सू. १०.) जाणवुं, अने तेओना लोकपालोने पण धरणेंद्रना लोकपालोनी पेठे जाणवुं. तथा उत्तर दिशिना इंद्रोने भूतानेंद्रनी पेठे (सू. १३.) जाणवुं. तेओना लोकपालोने पण भूतानेंद्रना लोकपालोनी पेठे जाणवुं; परन्तु विशेष ए छे के सर्व इन्द्रोनी राजधानीओ अने सिंहासनो इंद्रना समान नामे जाणवां. अने तेओनो परिवार *तृतीय शतकना प्रथम उद्देशकमां कह्या प्रमाणे समजवो. तथा बधा लोकपालोनी राजधानीओ अने सिंहासनो पण तेओनां समान नामे जाणवां. अने तेओनो परिवार चमरेन्द्रना लोकपालोना परिवारनी पेठे जाणवो.

कालेन्द्रने अग्रमहिषीओ.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! पिशाचना इंद्र अने पिशाचना राजा कालने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! तेने चार पट्टराणीओ कही छे. ते आ प्रमाणे—कमला, कमलप्रभा, उत्पला अने सुदर्शना. तेमांनी एक एक देवीने एक एक हजार देवीनो परिवार छे, बाकी बधुं चमरना लोकपालोनी पेठे जाणवुं, अने परिवार पण तेज प्रमाणे जाणवो. परन्तु विशेष ए छे के काला नामे राजधानी अने काल नामे सिंहासन जाणवुं. तथा बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे महाकालसंबंधे पण जाणवुं.

सुरूपेन्द्रने अग्रमहिषीओ.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! भूतना इन्द्र अने भूतना राजा सुरूपने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! तेने चार पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे—रूपवती, बहुरूपा, सुरूपा, अने सुभगा. तेमां एक एक देवीनो परिवार वगेरे कालेन्द्रनी पेठे जाणवुं. अने एज प्रमाणे प्रतिरूपेन्द्र संबंधे पण जाणवुं.

पूर्णभद्रने अग्रमहिषीओ.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! यक्षना इन्द्र पूर्णभद्रने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! तेने चार पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे—पूर्णा, बहुपुत्रिका, उत्तमा अने तारका. तेमां एक एक देवीनो परिवार वगेरे कालेन्द्रनी पेठे जाणवुं, अने ए प्रमाणे माणिभद्र संबन्धे पण जाणवुं.

राक्षसना इन्द्र भीमने अग्रमहिषीओ.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! राक्षसना इंद्र भीमने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! तेने चार पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे—पद्मा, पद्मावती, कनका अने रत्नप्रभा. तेमां एक एक देवीनो परिवार वगेरे सर्व कालेन्द्रनी पेठे जाणवुं. ए प्रमाणे महाभीमेन्द्र संबन्धे पण जाणवुं.

---

१ वसुमती क ।

१४. * भग० द्वि० खं० श० ३ उ० १ पृ० १.

१९. [प्र०] किन्नरस्स णं भंते ! पुच्छा । अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा–१ वडेंसा, २ केतुमती, ३ रतिसेणा, ४ रइप्पिया । तत्थ णं, सेसं तं चेव, एवं किंपुरिसस्स वि ।

२०. [प्र०] सप्पुरिसस्स णं पुच्छा । [उ०] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा–१ रोहिणी, २ नवमिया, ३ हिरी, ४ पुप्फवती । तत्थ णं एगमेगाए, सेसं तं चेव, एवं महापुरिसस्स वि ।

२१. [प्र०] अतिकायस्स णं पुच्छा । [उ०] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा–१ भुयंगा, २ भुयगवती, ३ महाकच्छा, ४ फुडा । तत्थ णं सेसं तं चेव, एवं महाकायस्स वि ।

२२. [प्र०] गीयरइस्स णं पुच्छा । [उ०] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा–१ सुघोसा, २ विमला, ३ सुस्सरा, ४ सरस्सई । तत्थ णं सेसं तं चेव । एवं गीयजसस्स वि । सब्वेसिं एएसिं जहा कालस्स, नवरं सरिसनामियाओ रायहाणीओ सीहासणाणि य, सेसं तं चेव ।

२३. [प्र०] चंदस्स णं भंते ! जोइसिंदस्स जोइसरण्णो पुच्छा । [उ०] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा–१ चंदप्पभा, २ दोसिणाभा, ३ अच्चिमाली, ४ पभंकरा । एवं जहा जीवाभिगमे जोइसियउद्देसए तहेव सूरस्स वि १ सूरप्पभा, २ आयवाभा, ३ अच्चिमाली, ४ पभंकरा । सेसं तं चेव, जाव नो चेव णं मेहुणवत्तियं ।

२४. [प्र०] इंगालस्स णं भंते ! महग्गहस्स कति अग्गमहिसीओ पुच्छा । [उ०] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–१ विजया, २ वेजयंती, ३ जयंती, ४ अपराजिया । तत्थ णं एगमेगाए देवीए सेसं तं चेव चंदस्स, नवरं इंगालवडेंसए विमाणे, इंगालगंसि सीहासणंसि, सेसं तं चेव, एवं वियालगस्स वि । एवं अट्ठासीतीए वि महागहाणं भाणियव्वं, जाव भावकेउस्स, नवरं वडेंसगा सीहासणाणि य सरिसनामगाणि, सेसं तं चेव ।

१९. [प्र०] हे भगवन् ! किंनरेन्द्रने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! तेने चार पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे –अवतंसा, केतुमती, रतिसेना अने रतिप्रिया. तेओनां एक एकनो परिवार वगेरे पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे किंपुरुषेन्द्र संबंधे पण जाणवुं.

किंनरेन्द्रने अग्रमहिषीओ.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! सत्पुरुषेन्द्रने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! तेने चार पट्टराणीओ कही छे. ते आ प्रमाणे–रोहिणी, नवमिका, ह्री अने पुष्पवती. तेमां एक एकनो परिवार वगेरे बधुं पूर्वनी पेठे जाणवुं. ए प्रमाणे महापुरुषेन्द्र संबन्धे पण जाणवुं.

सत्पुरुषेन्द्रने अग्रमहिषीओ.

२१. [प्र०] हे भगवन् ! अतिकायेन्द्रने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! तेने चार पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे–भुजंगा, भुजगवती, महाकच्छा अने स्फुटा. तेमां एक एकनो परिवार वगेरे बधुं पूर्वनी पेठे जाणवुं. ए प्रमाणे महाकायेन्द्र संबन्धे पण जाणवुं.

अतिकायेन्द्रने अग्रमहिषीओ.

२२. [प्र०] हे भगवन् ! गीतरतीन्द्रने केटली पट्टराणीओ होय छे ? [उ०] हे आर्य ! तेने चार पट्टराणीओ होय छे, ते आ प्रमाणे –सुघोषा, विमला, सुस्वरा अने सरस्वती. तेमां एक एकनो परिवार वगेरे बधुं पूर्वनी पेठे जाणवुं. ए प्रमाणे गीतयश इन्द्र संबन्धे पण समजवुं. आ सर्व इन्द्रोने बाकीनुं सर्व कालेन्द्रनी पेठे जाणवुं; परन्तु विशेष ए छे के, राजधानीओ अने सिंहासनो इन्द्रना समान नामे जाणवां, बाकी सर्व पूर्वनी पेठे जाणवुं.

गीतरतीन्द्रने अग्रमहिषीओ.

२३. [प्र०] हे भगवन् ! ज्योतिष्कना इन्द्र अने ज्योतिष्कना राजा चन्द्रने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! तेने चार पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे–चन्द्रप्रभा, ज्योत्स्नाभा, अर्चिर्माली अने प्रभंकरा–इत्यादि जेम *जीवाभिगमसूत्रमां ज्योतिष्कना उद्देशकमां कह्युं छे तेम जाणवुं. सूर्यसंबन्धे पण बधुं तेमज जाणवुं. सूर्यने चार पट्टराणीओ छे, ते आ प्रमाणे–सूर्यप्रभा, आतपाभा, अर्चिर्माली अने प्रभंकरा–इत्यादि सर्व पूर्वोक्त कहेवुं, यावत् तेओ पोतानी राजधानीमां सिंहासनने विषे मैथुननिमित्ते भोगो भोगवी शकता नथी.

चन्द्रने अग्रमहिषीओ.

२४. [प्र०] हे भगवन् ! अंगार नामना महाग्रहने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! तेने चार पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे–विजया, वैजयंती, जयंती अने अपराजिता. तेमां एक एक देवीनो परिवार वगेरे बधुं चन्द्रनी पेठे जाणवुं परन्तु विशेष ए छे के, अंगारावतंसकनामना विमानमां अने अंगारक नामना सिंहासनने विषे यावत् मैथुननिमित्ते भोगो भोगवता नथी. बाकी सर्व पूर्ववत् जाणवुं. तथा ए प्रमाणे यावत् व्याल नामे ग्रहसंबन्धे पण जाणवुं. एम अठ्याशी महाग्रहो माटे यावत् भावकेतु ग्रह सुधी कहेवुं. परन्तु विशेष ए छे के, अवतंसको अने सिंहासनो इन्द्रना समान नामे जाणवां. बाकी बधुं पूर्वप्रमाणे जाणवुं.

अंगारग्रहने अग्रमहिषीओ.

---

१ भुयगा क । २ भुयंग-ख ।

२३. * जीवाभि० प्र० ३ उ० २ प० ३८३-१.

२५. [प्र०] सक्कस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरन्नो पुच्छा । [उ०] अज्जो ! अट्ठ अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा– १ पउमा, २ सिवा, ३ सेया, ४ अंजू, ५ अमला, ६ अच्छरा, ७ नवमिया, ८ रोहिणी । तत्थ णं एगमेगाए देवीए सोलस सोलस देवीसहस्सा परिवारो पण्णत्तो । [प्र०] पभू णं ताओ एगमेगा देवी अन्नाइं सोलस सोलस देविसहस्साइं परियारं विउव्वित्तए ? [उ०] एवामेव सपुव्वावरेणं अट्ठावीसुत्तरं देविसयसहस्सं परियारं विउव्वित्तए, सेत्तं तुडिए ।

२६. [प्र०] पभू णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया सोहम्मे कप्पे, सोहम्मवडेंसए विमाणे, सभाए सुहम्माए, सक्कंसि सीहासणंसि तुडिएणं सद्धिं, सेसं जहा चमरस्स, नवरं परियारो जहा मोउद्देसए ।

२७. [प्र०] सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ पुच्छा । [उ०] अज्जो ! चत्तारि- अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा–१ रोहिणी, २ मदणा, ३ चित्ता, ४ सोमा । तत्थ णं एगमेगा०, सेसं जहा चमरलोगपा- लाणं, नवरं सयंपभे विमाणे, सभाए सुहम्माए, सोमंसि सीहासणंसि, सेसं तं चेव, एवं जाव–वेसमणस्स, नवरं विमाणाइं जहा ततियसए ।

२८. [प्र०] ईसाणस्स णं भंते ! पुच्छा । [उ०] अज्जो ! अट्ठ अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ, तं जहा–१ कण्हा, २ कण्हराई, ३ रामा, ४ रामरक्खिया, ५ वसू, ६ वसुगुत्ता, ७ वसुमित्ता, ८ वसुंधरा । तत्थ णं एगमेगाए सेसं जहा सक्कस्स ।

२९. [प्र०] ईसाणस्स णं भंते ! देविंदस्स सोमस्स महारन्नो कति अग्गमहिसीओ पुच्छा । [उ०] अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पन्नत्ताओ । तं जहा–१ पुढवी, २ राई, ३ रयणी, ४ विज्जू । तत्थ णं०, सेसं जहा सक्कस्स लोगपालाणं, एवं जाव वरुणस्स, णवरं विमाणा जहा चउत्थसए, सेसं तं चेव, जाव नो चेव णं मेहुणवत्तियं । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

दसमसए पंचमो उद्देसो समत्तो ।

शक्रने अग्रमहिषीओ.

२५. [प्र०] हे भगवन् ! देवना इन्द्र देवना राजा शक्रने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! तेने आठ पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे–पद्मा, शिवा, श्रेया, अंजु, अमला, अप्सरा, नवमिका अने रोहिणी. तेमांनी एक एक देवीनो सोळ सोळ हजार देवीओनो परिवार होय छे. तेमांनी एक एक देवी बीजी सोळ सोळ हजार देवीओना परिवारने विकुर्वी शके छे. ए प्रमाणे पूर्वापर मळीने एक लाख अने अठ्यावीश हजार देवीओना परिवारने विकुर्ववा समर्थ छे. ए प्रमाणे त्रुटिक (देवीओनो समूह) कह्यो.

शक्र सुधर्मा सभामां देवीओ साथे भोग भोगववा समर्थ छे ?

२६. [प्र०] हे भगवन् ! देवेन्द्र देवराज शक्र सौधर्म देवलोकमां सौधर्मावतंसक विमानमां सुधर्मा सभाने विषे अने शक्र नामे सिंहासनमां बेसी ते त्रुटिक (देवीओना समूह) साथे भोग भोगववा समर्थ छे ? [उ०] हे आर्य ! बाकी सर्व चमरेन्द्रनी पेठे जाणवुं. परन्तु विशेष ए छे के तेनो परिवार *तृतीयशतकना प्रथम उद्देशकमां कह्या प्रमाणे जाणवो.

शक्रना लोकपाल सोमने अग्रमहिषीओ.

२७. [प्र०] हे भगवन् ! देवेन्द्र देवराज शक्रना (लोकपाल) सोम नामे महाराजाने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! तेने चार पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे–रोहिणी, मदना, चित्रा अने सोमा. तेमां एक एक देवीनो परिवार वगेरे चमरेन्द्रना लोकपालोनी पेठे जाणवो; परन्तु विशेष ए छे के स्वयंप्रभ नामे विमानमां, सुधर्मा सभामां अने सोम नामना सिंहासनमां बेसीने मैथुननिमित्ते देवीओनी साथे भोग भोगववा समर्थ नथी–इत्यादि सर्व पूर्ववत् जाणवुं. ए प्रमाणे यावद् वैश्रमण सुधी जाणवुं. परन्तु विशेष ए छे के तेमना विमानो *तृतीयशतकमां कह्या प्रमाणे कहेवां.

ईशानेन्द्रने अग्रमहिषीओ.

२८. [प्र०] हे भगवन् ! ईशानेन्द्रने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! तेने आठ पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे– कृष्णा, कृष्णराजि, रामा, रामरक्षिता, वसु, वसुगुप्ता, वसुमित्रा अने वसुंधरा. तेमां एक एक देवीनो परिवार वगेरे बधुं शक्रनी पेठे जाणवुं.

ईशानना लोकपाल सोमने अग्रमहिषीओ.

२९. [प्र०] हे भगवन् ! देवेन्द्र देवराज ईशानना [लोकपाल] सोम नामे महाराजाने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे आर्य ! तेने चार पट्टराणीओ कही छे, ते आ प्रमाणे–पृथिवी, रात्री, रजनी, अने विद्युत्. तेमां एक एकनो परिवार वगेरे बाकी बधुं शक्रना लोकपालोनी पेठे जाणवुं. ए प्रमाणे यावत् वरुण सुधी जाणवुं. परन्तु विशेष ए छे के †चोथा शतकमां कह्या प्रमाणे विमानो कहेवा, बाकी बधुं पूर्वनी पेठे जाणवुं. यावत् ते मैथुननिमित्ते [राजधानीमां पोताना सिंहासन उपर बेसीने] भोग भोगवता नथी. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.

दशम शते पंचम उद्देशक समाप्त.

---

२६. * भग० खं. १ श० ३ उ० १ पृ० १६.

२९. † भग० खं. २ श० ४ उ० १-८ पृ० ११०.

छट्ठओ उद्देसो ।

१. [प्र०] कहि णं भंते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो सभा सुहम्मा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए एवं जहा रायप्पसेणइज्जे, जाव पंच वडेंसगा पण्णत्ता, तं जहा–१ असोगवडेंसए, जाव मज्झे ५ सोहम्मवडेंसए । से णं सोहम्मवडेंसए महाविमाणे अद्धतेरसजोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं, "एवं जह सूरियाभे तहेव माणं, तहेव उववाओ । सक्कस्स य अभिसेओ तहेव जह सूरियाभस्स ॥ अलंकारअच्चणिया तहेव जाव आयरक्ख त्ति" दो सागरोवमाइं ठिती ।

[प्र०] सक्केणं भंते ! देविंदे देवराया केमहिड्ढिए, जाव केमहासोक्खे । [उ०] गोयमा ! महिड्ढिए, जाव महासोक्खे । से णं तत्थ बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्साणं जाव विहरइ, एवं महिड्ढिए जाव महासोक्खे सक्के देविंदे देवराया । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

दसमसए छट्ठओ उद्देसो समत्तो ।

षष्ठ उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! देवेन्द्र देवराज शक्रनी सुधर्मा नामे सभा क्यां कही छे ? [उ०] हे गौतम ! जंबूद्वीप नामे द्वीपमां मेरु पर्वतनी दक्षिणे आ रत्नप्रभापृथिवीना [बहु सम अने रमणीय भूमिभागनी उंचे घणा कोटाकोटि योजन दूर सौधर्म नामे देवलोकने विषे] इत्यादि *'रायपसेणीय' सूत्रमां कह्या प्रमाणे यावत् पांच अवतंसक विमानो कह्या छे, ते आ प्रमाणे–अशोकावतंसक, यावत् वच्चे सौधर्मावतंसक छे. ते सौधर्मावतंसक नामे महा विमाननी लंबाई अने पहोळाई साडा बार लाख योजन छे. शक्रनुं प्रमाण, उपपात (उपजवुं), अभिषेक, अलंकार अने अर्चनिका (पूजा)–इत्यादि यावत् आत्मरक्षको †सूर्याभ देवनी पेठे जाणवा. तेमी स्थिति (आयुष) बे सागरोपमनी छे.

२. [प्र०] हे भगवन् ! देवेन्द्र देवराज शक्र केवी महाऋद्धिवाळो छे, केवा महासुखवाळो छे ? [उ०] हे गौतम ! ते महाऋद्धिवाळो यावत् महासुखवाळो बत्रीश लाख विमानोनो स्वामी थइने यावद् विहरे छे, ए प्रमाणे महाऋद्धिवाळो अने महासुखवाळो ते देवेन्द्र देवराज शक्र छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे. [एम कही भगवान् गौतम यावद् विहरे छे.]

दशम शते षष्ठ उद्देशक समाप्त.

---

१ –महिड्ढिया –क । २ –सोक्खा–क ।

१. *जुओ अवतंसकविमाननुं वर्णन रायप० पृ० ५९. †जुओ रायप० पृ० ९७–११२.

सत्तमो उद्देसो ।

१. [प्र०] कहि णं भंते! उत्तरिल्लाणं एगोरुयमणुस्साणं एगोरुयदीवे नामं दीवे पण्णत्ते ? [उ०] एवं जहा जीवाभिगमे तहेव निरवसेसं, जाव सुद्धदंतदीवो त्ति । एए अट्ठावीसं उद्देसगा भाणियव्वा । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरति ।

दसमसए सत्तमादि चोत्तीसइमपज्जन्ता अट्ठावीसं उद्देसा समत्ता ।

समत्तं दसमं सयं ।

उद्देशक ७–३४.

१. [प्र०] हे भगवन् ! उत्तरमां रहेनारा एकोरुक मनुष्योनो एकोरुक नामे द्वीप कये स्थळे कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम [1]*जीवाभिगमसूत्रमां कह्या प्रमाणे सर्व द्विपो संबन्धे यावत् शुद्धदंतद्वीप सुधी कहेवुं. ए प्रमाणे प्रत्येक द्वीप संबन्धे एक एक उद्देशक कहेवो. एम अठ्यावीश उद्देशको कहेवा. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे. [एम कही भगवान् गौतम यावत् विहरे छे.]

दशम शते ७–३४ उद्देशको समाप्त.

दशम शतक समाप्त.

१* जीवाभि० प्रति० ३ उ० १ प० १४४–१५६.

एकारसं सयं ।

१. उप्पल सालु पलासे कुंभी नाली य पउम कन्नीय ।
नलिण सिव लोग काला–लभिय दस दो य एक्कारे ॥

पढमो उद्देसो ।

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासि–[प्र०] उप्पले णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे ? [उ०] गोयमा ! एगजीवे, णो अणेगजीवे । तेण परं जे अन्ने जीवा उववज्जंति तेणं णो एगजीवे, अणेगजीवे ।

एकादश शतक.

१. [उद्देश संग्रह–] १ उत्पल, २ शालूक, ३ पलाश, ४ कुंभी, ५ नाडीक, ६ पद्म, ७ कर्णिका, ८ नलिन, ९ शिवराजर्षि, १० लोक, ११ काल, अने १२ आलभिक–ए संबन्धे अगीयारमां शतकमां बार उद्देशको छे. [उत्पल–अमुक जातना कमल–संबन्धे प्रथम उद्देशक, शालूक–उत्पलकन्द–संबन्धे बीजो उद्देशक, पलाश–खाखरा–ना वृक्ष संबन्धे त्रीजो उद्देशक, कुंभी वनस्पति संबन्धे चोथो उद्देशक, नाडीक वनस्पति संबन्धे पांचमो उद्देशक, पद्म–अमुक जातना कमल–विषे छट्ठो उद्देशक, कर्णिका संबन्धे सातमो उद्देशक, नलिन–अमुक प्रकारना कमल–संबंधे आठमो उद्देशक, शिवराजर्षि संबन्धे नवमो उद्देशक, लोकने विषे दशमो उद्देशक, कालसंबन्धे अगीआरमो उद्देशक, अने आलभिक–आलभिकानगरीमां करेला प्रश्न–संबंधे बारमो उद्देशक.–ए प्रमाणे अगीयारमां शतकमां बार उद्देशको छे.]

*प्रथम उद्देशक.

२. [प्र०] ते काले–ते समये राजगृह नगरने विषे पर्युपासना करता [गौतम] आ प्रमाणे बोल्या–हे भगवन् ! उत्पल शुं एक जीववाळुं छे के अनेकजीववाळुं छे ? [उ०] हे गौतम ! ते एक जीववाळुं छे, पण अनेक जीववाळुं नथी. त्यार पछी ज्यारे ते उत्पलने विषे बीजा जीवो–जीवाश्रित पांदडा वगेरे अवयवो–उगे छे त्यारे ते उत्पल एक जीववाळुं नथी, पण अनेक जीववाळुं छे.

उत्पल.
उत्पल एकजीवी छे के अनेक जीवी छे ?

---

* प्रथम उद्देशकार्थसंग्रह गाथा—"१ उववाओ २ परिमाणं ३ अवहार–४ चत्त ५ बन्ध ६ वेदे य । ७ उदए ८ उदीरणाए ९ लेसा १० दिट्ठी य ११ नाणे य ॥ १२ जोगु–१३ वओगे १४ वन्न–१५ रसमाई १६ ऊसासगे १७ य आहारे । १८ विरई १९ किरिया २० बन्धे २१ सन्न–२२ कसायि–२३ त्थि–२४ बन्धे य ॥ २५ सन्नि–२६ दिय–२७ अणुबन्धे २८ संवेहा–२९ हार–३० ठिइ–३१ समुग्घाए । ३२ चयणं ३३ मूलादीसु य उववाओ सव्वजीवाणं ॥"

संग्रह गाथानो अर्थ—१ उपपात, २ परिमाण, ३ अपहार, ४ उंचाई, ५ ज्ञानावरणादिकर्मनो बन्ध, ६ वेदक, ७ उदय, ८ उदीरणा, ९ लेश्या, १० दृष्टि (सम्यग्दृष्टि, मिश्रदृष्टि अने मिथ्यादृष्टि), ११ ज्ञान, १२ योग, १३ उपयोग, १४ वर्ण, १५ रसादि १६ उच्छ्वासक, १७ आहार, १८ विरति, १९ क्रिया, २० बन्धक, २१ संज्ञा, २२ कषाय, २३ स्त्रीवेदादि, २४ समुद्घात, २५ संज्ञी, २६ इन्द्रिय, २७ अनुबन्ध, २८ संवेध, २९ आहार, ३० स्थिति, ३१ समुद्घात, ३२ च्यवन, अने ३३ सर्व जीवोनो मूलादिमां उपपात—एरीते प्रथम उद्देशकना ३३ द्वारो बणाव्या छे.

३. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरि० मणु० देवेहिंतो उववज्जंति ? [उ०] गोयमा ! नो नेरतिएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो वि उववज्जंति मणुस्सेहिंतो० देवेहिंतो वि उववज्जंति । एवं उववाओ भाणिअव्वो जहा वक्कंतीए वणस्सइकाइयाणं जाव ईसाणेति ।

४. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा एगसमए णं केवइया उववज्जंति ? [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति ।

५. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा समए २ अवहीरमाणा २ केवतिकालेणं अवहीरंति ? [उ०] गोयमा ! ते णं असंखेज्जा समए २ अवहीरमाणा २ असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं अवहीरंति, नो चेव णं अवहिया सिया ।

६. [प्र०] तेसि णं भंते ! जीवाणं केमहालिआ सरीरोगाहणा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ-भागं, उक्कोसेणं सातिरेगं जोयणसहस्सं ।

७. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधगा अबंधगा ? [उ०] गोयमा ! नो अबंधगा, बंधए वा, बंधगा वा । एवं जाव अंतराइअस्स ।

८. [प्र०] नवरं आउअस्स पुच्छा । [उ०] गोयमा ! १ बंधए वा, २ अबंधए वा, ३ बंधगा वा, ४ अबंधगा वा, ५ अहवा बंधए अ अबंधए अ, ६ अहवा बंधए अ अबंधगा य, ७ अहवा बंधगा य अबंधए अ, ८ अहवा बंधगा य अबंधगा य । एते अट्ठ भंगा ।

९. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं वेदगा अवेदगा ? [उ०] गोयमा ! नो अवेदगा, वेदए वा वेदगा वा । एवं जाव अंतराइअस्स ।

उपपात—जीवो उत्पलमां क्यांथी आवीने उपजे छे?

३. [प्र०] हे भगवन् ! [उत्पलमां] ते जीवो क्यांथी आवीने उपजे छे—शुं नैरयिकथी, तिर्यंचथी, मनुष्यथी के देवथी आवीने उपजे छे? [उ०] हे गौतम ! ते जीवो नैरयिकथी आवीने उपजता नथी, पण तिर्यंचथी, मनुष्यथी के देवथी आवीने उपजे छे. जेम प्रज्ञापनासूत्रनां *व्युत्क्रांतिपदमां कह्युं छे ते प्रमाणे वनस्पतिकायिकोमां यावत् ईशान देवलोक सुधीना जीवोनो उपपात कहेवो.

परिमाण—एक समयमां केटला उपजे?

४. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवो [उत्पलमां] एक समयमां केटला उत्पन्न थाय? [उ०] हे गौतम ! जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कृष्टथी संख्यात के असंख्याता जीवो एक समयमां उत्पन्न थाय.

अपहार—प्रतिसमय काढवामां आवे तो क्यारे खाली थाय?

५. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलना जीवो समये समये काढवामां आवे तो केटले काले ते पूरा काढी शकाय? [उ०] हे गौतम ! जो ते जीवो समये समये असंख्य काढवामां आवे, अने ते असंख्य उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी काळ सुधी काढवामां आवे तो पण ते पूरा काढी शकाय नहीं.

शरीरावगाहना.

६. [प्र०] हे भगवन् ! उत्पलना जीवोनी केटली मोटी शरीरावगाहना कही छे? [उ०] हे गौतम ! जघन्य—ओछामां ओछी—अंगुलना असंख्यातमा भाग जेटली, अने उत्कृष्ट कंइक अधिक हजार योजन होय छे.

ज्ञानावरणीयादि कर्मना बन्धक.

७. [प्र०] हे भगवन् ! ते जीवो शुं ज्ञानावरणीय कर्मना बंधक छे के अबंधक छे? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानावरणीय कर्मना अबंधक नथी, पण बन्धक छे. अथवा †एक जीव बंधक छे अने अनेक जीवो पण बंधक छे. ए प्रमाणे यावद् अंतरायकर्म संबंधे पण जाणवुं.

आयुष कर्मना बन्धक.

८. [प्र०] परन्तु आयुषकर्मना संबंधे प्रश्न करवो. [हे भगवन् ! शुं ते उत्पलना जीवो आयुषकर्मना बंधक छे के अबंधक छे?] [उ०] हे गौतम ! १ [उत्पलनो] एक जीव बंधक छे, २ एक जीव अबंधक छे, ३ अनेक जीवो बंधक छे, ४ अनेक जीवो अबंधक छे, ५ अथवा एक बंधक अने एक अबंधक छे, ६ अथवा एक बंधक अने अनेक अबंधक छे, ७ अथवा अनेक बंधक अने एक अबंधक छे, ८ अथवा अनेक बंधक अने अनेक अबंधक छे. ए प्रमाणे ए आठ भांगा जाणवा.

ज्ञानावरणीयादिक कर्मना वेदक.

९. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलना जीवो ज्ञानावरणीयकर्मना वेदक छे के अवेदक छे? [उ०] हे गौतम ! तेओ अवेदक नथी, पण एक जीव वेदक छे अथवा अनेक जीवो अवेदक छे. ए प्रमाणे यावद् अंतराय कर्म सुधी जाणवुं.

---

३. * प्रज्ञा० पद ६ प० २०४.

७. † उत्पलने प्रारंभमां ज्यारे एकज पांदडुं होय छे त्यारे तेमां एक जीव होवाथी एक जीव ज्ञानावरणीयादि कर्मनो बन्धक कहेवाय छे, परन्तु ज्यारे अनेक पांदडा थाय छे त्यारे तेमां अनेक जीवो होवाथी अनेक जीवो बन्धक कहेवाय छे.—टीका.

१०. [प्र०] ते णं भंते जीवा किं सायावेयगा असायावेयगा ? [उ०] गोयमा ! सायावेयए वा, असायावेयए वा अट्ठ भंगा।

११. [प्र०] ते णं भंते ! णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं उदई अणुदई ? [उ०] गोयमा ! नो अणुदई, उदई वा, उदइणो वा। एवं जाव अंतराइयस्स।

१२. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं उदीरगा अणुदीरगा ? [उ०] गोयमा ! नो अणुदीरगा, उदीरए वा, उदीरगा वा। एवं जाव अंतराइयस्स। नवरं वेयणिज्जा-उएसु अट्ठ भंगा।

१३. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा किं कण्हलेसा, नीललेसा, तेउलेसा ? [उ०] गोयमा ! कण्हलेसे वा, जाव तेउलेसे वा, कण्हलेस्सा वा नीललेस्सा वा काउलेस्सा वा तेउलेस्सा वा। अहवा कण्हलेसे य नीललेस्से य, एवं एए दुयासंजोग-तियासंजोग-चउक्कसंजोगेणं असीती भंगा भवंति।

१४. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा किं सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छादिट्ठी ? [उ०] गोयमा ! नो सम्मदिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी, मिच्छादिट्ठी वा मिच्छादिट्ठिणो वा।

१५. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा किं नाणी अन्नाणी ? [उ०] गोयमा ! नो नाणी, अन्नाणी वा, अन्नाणिणो वा।

१६. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा किं मणजोगी, वयजोगी, कायजोगी ? [उ०] गोयमा ! णो मणजोगी, णो वयजोगी, कायजोगी वा, कायजोगिणो वा।

१०. [प्र०] हे भगवन् ! ते [उत्पलना] जीवो साताना वेदक छे के असाताना वेदक छे ? [उ०] हे गौतम ! ते जीवो साताना वेदक छे अने असाताना पण वेदक छे. अहीं पूर्व प्रमाणे आठ भांगा कहेवा.

११. [प्र०] हे भगवन् ! ते [उत्पलना] जीवो ज्ञानावरणीय कर्मना उदयवाळा छे के अनुदयवाळा छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ ज्ञानावरणीयकर्मना अनुदयवाळा नथी, पण एक जीव उदयवाळो छे अथवा अनेक जीवो उदयवाळा छे. ए प्रमाणे यावत् अंतरायकर्म संबंधे जाणवुं.

ज्ञानावरणीयादि कर्मनो उदय.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते [उत्पलना] जीवो ज्ञानावरणीयकर्मना उदीरक छे के अनुदीरक छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ अनुदीरक नथी, पण एक जीव उदीरक छे, अथवा अनेक जीवो उदीरक छे. ए प्रमाणे यावत् अंतरायकर्म सुधी जाणवुं परन्तु विशेष ए छे के वेदनीयकर्म अने आयुषकर्ममां पूर्ववत् (सू० ८) आठ भांगा कहेवा.

उदीरक.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते [उत्पलना] जीवो कृष्णलेश्यावाळा, नीललेश्यावाळा, कापोतलेश्यावाळा के तेजोलेश्यावाळा होय ? [उ०] हे गौतम ! एक जीव कृष्णलेश्यावाळो, यावत् एक तेजोलेश्यावाळो होय, अथवा अनेक जीवो कृष्णलेश्यावाळा, नीललेश्यावाळा, कापोतलेश्यावाळा अने तेजोलेश्यावाळा होय, अथवा एक कृष्णलेश्यावाळो अने एक नीललेश्यावाळो होय. ए प्रमाणे द्विकसंयोग, त्रिकसंयोग अने चतुष्कसंयोग वडे सर्व मळीने *एंशी भांगा कहेवा.

लेश्या.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते [उत्पलना] जीवो सम्यग्दृष्टि छे, मिथ्यादृष्टि छे, के सम्यग्मिथ्यादृष्टि छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ सम्यग्दृष्टि नथी, सम्यग्मिथ्यादृष्टि नथी, पण एक जीव मिथ्यादृष्टि छे, अथवा अनेक जीवो मिथ्यादृष्टिओ छे.

दृष्टि-सम्यग्दृष्टि छे के मिथ्यादृष्टि?

१५. [प्र०] हे भगवन् ! ते [उत्पलना] जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे ? [उ०] हे गौतम ! ते ज्ञानी नथी, पण एक अज्ञानी छे, अथवा अनेक अज्ञानीओ छे.

ज्ञान-ज्ञानी के अज्ञानी?

१६. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते [उत्पलना] जीवो मनयोगी, वचनयोगी के काययोगी छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ मनयोगी नथी, वचनयोगी नथी, पण एक काययोगी छे अथवा अनेक काययोगिओ छे.

योग-मनयोगी वचनयोगी के काययोगी?

---

१३. * उत्पल वनस्पतिकायिक होवाथी तेमां प्रथमनी चार लेश्याओ होय छे. एकयोगे एक जीवना चार तथा अनेक जीवोना चार भांगा मळीने तेओना आठ भांगा थाय छे. द्विकसंयोगमां एक अने अनेकनी चउभंगी थाय छे. कृष्णादि चार लेश्याना छ द्विकसंयोग थाय छे, तेने पूर्वोक्त चउभंगी साथे गुणतां द्विकयोगी चोवीश विकल्पो थाय छे. चार लेश्याना त्रिकयोगी आठ विकल्प थाय छे, तेने पूर्वोक्त चउभंगी साथे गुणतां त्रिकसंयोगी बत्रीश विकल्पो थाय छे, अने चतुःसंयोगे सोळ विकल्पो थाय छे, सर्वे मळीने एंशी भांगा थाय छे.

१७. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा किं सागारोवउत्ता, अणागारोवउत्ता ? [उ०] गोयमा ! सागारोवउत्ते वा, अणागारोवउत्ते वा अट्ठ भंगा ।

१८. [प्र०] तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा कतिवन्ना, कतिगंधा, कतिरसा, कतिफासा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! पंचवन्ना, पंचरसा, दुगंधा अट्ठफासा पन्नत्ता । ते पुण अप्पणा अवन्ना, अगंधा, अरसा, अफासा पन्नत्ता ।

१९. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा किं उस्सासगा, निस्सासगा, णोउस्सासनिस्सासगा ? [उ०] गोयमा ! उस्सासए वा, निस्सासए वा, णोउस्सासनिस्सासए वा, उस्सासगा वा, निस्सासगा वा, णोउस्सासनिस्सासगा वा, अहवा उस्सासए य निस्सासए य, अहवा उस्सासए य णोउस्सासनिस्सासए य, अहवा निस्सासए य णोउस्सासनिस्सासए य, अहवा उस्सासए य निस्सासए य णोउस्सासनिस्सासए य । अट्ठ भंगा । एए छव्वीसं भंगा भवंति ।

२०. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा किं आहारगा अणाहारगा ? [उ०] गोयमा ! णो अणाहारगा, आहारए वा, अणाहारए वा एवं अट्ठ भंगा ।

उपयोग—साकार उपयोगी के अनाकार उपयोगी ?

१७. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते [उत्पलना] जीवो साकार उपयोगवाळा छे के अनाकार उपयोगवाळा छे ? [उ०] हे गौतम ! एक जीव साकार उपयोगवाळो छे, अथवा एक जीव अनाकारउपयोगवाळो छे—इत्यादि पूर्व प्रमाणे (सू० ८) आठ भांगा कहेवा.

शरीरमां वर्णादि.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! ते [उत्पलना] जीवोना शरीरो केटला वर्णवाळां, केटला गंधवाळां, केटला रसवाळां अने केटला स्पर्शवाळां कह्यां छे ? [उ०] हे गौतम ! पांच वर्णवाळां, पांच रसवाळां, बे गंधवाळां अने आठ स्पर्शवाळां कह्यां छे. अने जीवो पोते वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श रहित छे.

उच्छ्वासक, निःश्वासक अने अनुच्छ्वासक-निःश्वासक.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते [उत्पलना] जीवो उच्छ्वासक (श्वास लेनारा) छे, निःश्वासक (श्वास मूकनारा) छे के अनुच्छ्वासक—निःश्वासक (श्वास नहि लेनारा अने नहि मूकनारा) होय छे ? [उ०] हे गौतम ! *१ कोई एक उच्छ्वासक छे, २ कोई एक निःश्वासक छे, अने ३ कोई एक अनुच्छ्वासकनिःश्वासक पण छे. ४ अथवा अनेक जीवो उच्छ्वासक छे, ५ अनेक निःश्वासक छे, अने ६ अनेक अनुच्छ्वासक—निःश्वासक पण छे. १—४ अथवा एक उच्छ्वासक, अने एक निःश्वासक छे, १—४ अथवा एक उच्छ्वासक अने एक अनुच्छ्वासक—निःश्वासक छे, १—४ अथवा एक निःश्वासक अने एक अनुच्छ्वासक—निःश्वासक छे, १—८ अथवा एक उच्छ्वासक, एक निःश्वासक अने एक अनुच्छ्वासकनिःश्वासक छे.—ए प्रमाणे आठ भांगा करवा. ए सर्व मळीने छव्वीश भांगा थाय छे.

आहारक के अनाहारक ?

२०. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते [उत्पलना] जीवो आहारक छे के अनाहारक छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ सघळा अनाहारक नथी, पण एक आहारक छे, अथवा एक अनाहारक छे.—इत्यादि आठ भांगा अहीं कहेवा.

---

१९. * एक अने अनेकना एकत्व योगे छ भांगा, द्विकयोगे बार भांगा, अने त्रिकयोगे आठ भांगा थाय छे. तेमां एकत्व योगे छ भांगा कहेला छे. द्विकयोगे बार भांगा आ प्रमाणे—

	उ. नि.	उ. अनु.	नि. अनु.	
१—एक	१—१	१—१	१—१	
	१—२	१—२	१—२	१२
२—अनेक	२—१	२—१	२—१	
	२—२	२—२	२—२	

त्रिकयोगे आठ भांगा थाय छे, ते आ प्रमाणे—

उ.	नि.	अनु.
१.	१.	१.
१.	१.	२.
१.	२.	१.
१.	२.	२.
२.	१.	१.
२.	१.	२.
२.	२.	१.
२.	२.	२.

बधा मळीने २६ भांगा थाय छे.

२१. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा किं विरता, अविरता, विरताविरता ? [उ०] गोयमा ! नो विरता नो विरयाविरया, अविरए वा अविरया वा।

२२. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा किं सकिरिया अकिरिया ? [उ०] गोयमा ! नो अकिरिया, सकिरिए वा, सकिरिया वा।

२३. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा किं सत्तविहबंधगा अट्ठविहबंधगा ? [उ०] गोयमा ! सत्तविहबंधए वा, अट्ठविहबंधए वा। अट्ठ भंगा।

२४. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा किं आहारसन्नोवउत्ता, भयसन्नोवउत्ता, मेहुणसन्नोवउत्ता, परिग्गहसन्नोवउत्ता ? [उ०] गोयमा ! आहारसन्नोवउत्ता वा असीती भंगा।

२५. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा किं कोहकसायी, माणकसायी, मायाकसायी, लोभकसायी ? [उ०] असीती भंगा।

२६. [प्र०] ते णं भंते जीवा किं इत्थिवेदगा, पुरिसवेदगा, नपुंसगवेदगा ? [उ०] गोयमा ! नो इत्थिवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुंसगवेदए वा, नपुंसगवेदगा वा।

२७. [प्र०] ते णं भंते जीवा किं इत्थिवेदबंधगा, पुरिसवेदबंधगा, नपुंसगवेदबंधगा ? [उ०] गोयमा ! इत्थिवेदबंधए वा, पुरिसवेदबंधए वा, नपुंसगवेदबंधए वा छब्बीसं भंगा।

२८. [प्र०] ते णं भंते जीवा किं सन्नी, असन्नी ? [उ०] गोयमा ! णो सन्नी, असन्नी वा असन्निणो वा।

२९. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा किं सइंदिया अणिंदिया ? [उ०] गोयमा ! णो अणिंदिया, सइंदिए वा, सइंदिया वा।

२१. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते उत्पलना जीवो सर्वविरति छे, अविरति छे के विरताविरत (देशविरति) छे ? [उ०] हे गौतम ! ते सर्वविरति नथी, विरताविरत (देशविरति) नथी, पण एक जीव अविरति छे, अथवा अनेक जीवो अविरति छे. *सर्वविरति, अविरति के देशविरति छे ?*

२२. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलना जीवो शुं सक्रिय छे के अक्रिय छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ अक्रिय नथी पण तेमांनो एक जीव सक्रिय छे अथवा अनेक जीवो सक्रिय छे. *सक्रिय के अक्रिय ?*

२३. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते उत्पलना जीवो सात प्रकारे कर्मना बंधक छे के आठ प्रकारे कर्मना बंधक छे ? [उ०] हे गौतम ! ते जीवो सात प्रकारे कर्मना बंधक छे, अथवा आठ प्रकारे बंधक छे. अहीं आठ भांगा कहेवा. *सप्तविधबंधक के अष्टविधबंधक ?*

२४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते [उत्पलना] जीवो आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा, भयसंज्ञाना उपयोगवाळा, मैथुनसंज्ञाना उपयोगवाळा, के परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा छे—इत्यादि *एंशी भांगा कहेवा. *आहारादि संज्ञाओ.*

२५. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते उत्पलना जीवो क्रोधकषायवाळा, मानकषायवाळा, मायाकषायवाळा के लोभकषायवाळा छे ? [उ०] हे गौतम ! अहीं पण एंशी भांगा कहेवा. *कषाय.*

२६. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते उत्पलना जीवो स्त्रीवेदवाळा, पुरुषवेदवाळा के नपुंसकवेदवाळा होय ? [उ०] हे गौतम ! ते स्त्रीवेदवाळा नथी, पुरुषवेदवाळा नथी, पण एक जीव नपुंसकवेदवाळो के अनेक नपुंसकवेदवाळा होय. *वेद.*

२७. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते उत्पलना जीवो स्त्रीवेदना बंधक, पुरुष वेदना बंधक के नपुंसक वेदना बंधक छे ? [उ०] हे गौतम ! ते स्त्रीवेदना बंधक, पुरुषवेदना बंधक अथवा नपुंसकवेदना बंधक छे. अहीं पण छव्वीश† भांगा कहेवा. *वेदना बन्धक.*

२८. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते उत्पलजीवो संज्ञी छे के असंज्ञी छे ? [उ०] हे गौतम ! ते संज्ञी नथी, एक असंज्ञी छे, अथवा अनेक असंज्ञिओ छे. *संज्ञी के असंज्ञी ?*

२९. [प्र०] हे भगवन् ! शुं ते उत्पलजीवो इंद्रियसहित छे के इंद्रियरहित छे ? [उ०] हे गौतम ! ते इंद्रियरहित नथी, पण एक जीव इंद्रियवाळो छे, अथवा अनेक जीवो इंद्रियवाळा छे. *सेन्द्रिय के अनिन्द्रिय ?*

---

२४. * लेश्याद्वारनी पेठे अहिं पण एंशी भांगा कहेवा. जुओ सू० १३ मुं टीप्पन.

२७. † अहिं पण एक अने अनेकना उच्छ्वासकादिनी पेठे छव्वीश भांगा कहेवा. जुओ सू० १९ मुं टीप्पन.

३०. [प्र०] से णं भंते ! उप्पलजीवेति कालओ केवचिरं होइ ? [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं ।

३१. [प्र०] से णं भंते ! उप्पलजीवे पुढविजीवे, पुणरवि उप्पलजीवेति केवतियं कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ? [उ०] गोयमा ! भवादेसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं भवग्गहणाइं । कालादेसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं, एवतियं कालं सेवेज्जा—एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ।

३२. [प्र०] से णं भंते ! उप्पलजीवे, आउजीवे० [उ०] एवं चेवं, एवं जहा पुढविजीवे भणिए तहा, जाव वाउजीवे भाणियव्वे ।

३३. [प्र०] से णं भंते ! उप्पलजीवे से वणस्सइजीवे, से पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवइयं कालं सेवेज्जा—केवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ? [उ०] गोयमा ! भवादेसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं उक्कोसेणं अणंताइं भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं अणंतं कालं तरुकालं, एवइयं कालं सेवेज्जा, एवइयं कालं गतिरागतिं करेज्जा ।

३४. [प्र०] से णं भंते ! उप्पलजीवे बेइंदियजीवे पुणरवि उप्पलजीवे त्ति केवइयं कालं सेवेज्जा—केवइयं कालं गतिरागतिं करेज्जा ? [उ०] गोयमा ! भवादेसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं संखेज्जाइं भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं संखेज्जं कालं, एवतियं कालं सेवेज्जा—एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा । एवं तेइंदियजीवे, एवं चउरिंदियजीवे वि ।

३५. [प्र०] से णं भंते ! उप्पलजीवे पंचेंदियतिरिक्खजोणियजीवे पुणरवि उप्पलजीवेत्ति पुच्छा । [उ०] गोयमा ! भवादेसेणं जहन्नेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहन्नेणं दो अंतोमुहुत्ताइं, उक्कोसेणं पुव्वकोडिपुहुत्तं, एवतियं कालं सेवेज्जा—एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा । एवं मणुस्सेण वि समं जाव एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ।

३०. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलनो जीव उत्पलपणे कालथी क्यांसुधी रहे ? [उ०] हे गौतम ! जघन्यथी अंतर्मुहूर्त सुधी अने उत्कृष्टथी असंख्य काल सुधी रहे.

३१. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलनो जीव पृथिवीकायिकमां आवे, अने फरीथी पाछो उत्पलमां आवे—ए प्रमाणे केटलो काळ सेवे—केटला काळ सुधी गमनागमन करे ? [उ०] हे गौतम ! भवनी अपेक्षाए जघन्यथी* बे भव अने उत्कृष्टथी असंख्यात भव सुधी गमनागमन करे, कालनी अपेक्षाए जघन्यथी बे अंतर्मुहूर्त, अने उत्कृष्टथी असंख्यकाल; एटलो काल सेवे—तेटलो काल गमनागमन करे.

३२. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलनो जीव अप्कायिकपणे उपजे अने फरीथी ते पाछो उत्पलमां आवे, ए प्रमाणे केटलो काळ गमनागमन करे ? [उ०] पूर्व प्रमाणे जाणवुं. जेम पृथिवीना जीव संबन्धे (सू० ३१) कह्युं तेम यावत् वायुना जीव सुधी कहेवुं.

३३. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलनो जीव वनस्पतिमां आवे, अने ते फरीथी उत्पलमां आवे ए प्रमाणे केटलो काल सेवे—केटलो काल गमनागमन करे ? [उ०] हे गौतम ! भवनी अपेक्षाए जघन्यथी बे भव, अने उत्कृष्टथी अनंत भव सुधी गमनागमन करे. कालनी अपेक्षाए जघन्यथी बे अंतर्मुहूर्त, अने उत्कृष्टथी अनंत काल—वनस्पतिकाल पर्यन्त; एटलो काळ सेवे—एटलो काल गमनागमन करे.

३४. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलनो जीव बेइन्द्रियमां आवे, अने ते फरीथी उत्पलपणे उपजे; ए प्रमाणे ते केटलो काल सेवे—केटलो काल गमनागमन करे ? [उ०] हे गौतम ! भवनी अपेक्षाए जघन्यथी बे भव, उत्कृष्टथी संख्याता भवो; तथा कालनी अपेक्षाए जघन्यथी बे अंतर्मुहूर्त, अने उत्कृष्टथी संख्यातो काल; एटलो काल सेवे—एटलो काल गमनागमन करे. एज प्रमाणे त्रीन्द्रियपणे, अने चतुरिंद्रियजीवपणे गमनागमन करवामां पूर्ववत् काल जाणवो.

३५. [प्र०] हे भगवन् ! उत्पलनो जीव पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिकपणे उपजे अने ते फरीथी उत्पलपणे उपजे, एम केटलो काळ गमनागमन करे ? [उ०] हे गौतम ! भवनी अपेक्षाए जघन्यथी बे भव, उत्कृष्टथी आठ भवो, कालनी अपेक्षाए जघन्यथी बे अंतर्मुहूर्त, अने उत्कृष्टथी पूर्वकोटिपृथक्त्व; एटलो काल सेवे—एटलो काल गमनागमन करे. ए प्रमाणे उत्पलनो जीव मनुष्य साथे पण यावत् एटलो काळ गमनागमन करे.

अनुबन्ध—उत्पलनो जीव उत्पलपणे क्यां सुधी रहे ?

संवेध—उत्पलनो जीव पृथिवीमां आवी उत्पलमां आवे त्यारे केटलो काल गमनागमन करे ?

उत्पलनो जीव वनस्पतिमां जईने पुनः उत्पलमां आवे त्यारे ते केटलो काल गमनागमन करे ?

उत्पलनो जीव बेइन्द्रियमां जइने उत्पलपणे उपजे त्यारे केटलो काळ जाय ?

उत्पलनो जीव पंचेन्द्रिय तिर्यंच थइने उत्पलमां आवे त्यारे केटलो काळ जाय ?

---

३१. * प्रथम भव पृथिवीकायिकपणे अने बीजो उत्पलपणे, त्यारपछी मनुष्यादि गतिमां आवे—टीका.

३६. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा किमाहारमाहारेंति ? [उ०] गोयमा ! दव्वओ अणंतपदेसियाइं दव्वाइं, एवं जहा आहारुद्देसए वणस्सइकाइयाणं आहारो तहेव जाव सव्वप्पणयाए आहारमाहारेंति । नवरं नियमा छद्दिसिं सेसं तं चेव ।

३७. [प्र०] तेसि णं भंते ! जीवाणं केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं दस वाससहस्साइं ।

३८. [प्र०] तेसि णं भंते ! जीवाणं कति समुग्घाया पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! तओ समुग्घाया पन्नत्ता । तं जहा–वेदणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए ।

३९. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा मारणंतियसमुग्घाएणं किं समोहता मरंति, असमोहता मरंति ? [उ०] गोयमा ! समोहता वि मरंति, असमोहता वि मरंति ।

४०. [प्र०] ते णं भंते ! जीवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति–कहिं उववज्जंति ? किं नेरइएसु उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति० ? एवं जहा वक्कंतीए उव्वट्टणाए वणस्सइकाइयाणं तहा भाणियव्वं ।

४१. [प्र०] अह भंते ! सव्वे पाणा, सव्वे भूता, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता, उप्पलमूलत्ताए, उप्पलकंदत्ताए, उप्पलनालत्ताए, उप्पलपत्तत्ताए, उप्पलकेसरत्ताए, उप्पलकन्नियत्ताए, उप्पलथिभुगत्ताए उववन्नपुव्वा ? [उ०] हन्ता, गोयमा ! असतिं, अदुवा अणंतखुत्तो । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

पढमो उप्पलउद्देसओ समत्तो ।

आहार.

३६. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलना जीवो कया पदार्थनो आहार करे ? [उ०] हे गौतम ! ते जीवो द्रव्यथी अनन्तप्रदेशिक द्रव्योनो आहार करे, इत्यादि सर्व *आहारक उद्देशकमां वनस्पतिकायिकोनो आहार कह्यो छे ते प्रमाणे यावत् 'तेओ सर्वात्मना–सर्व प्रदेशोए आहार करे छे,' त्यां सुधी कहेवुं, परन्तु एटलो विशेष छे के तेओ अवश्य छए दिशीनो आहार करे छे, बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं.

आयुष.

३७. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलना जीवोनी स्थिति (आयुष) केटला काल सुधी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! जघन्यथी अंतर्मुहूर्त, अने उत्कृष्टथी दस हजार वर्षनी स्थिति कही छे.

समुद्घात.

३८. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलना जीवोने केटला †समुद्घातो कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने त्रण समुद्घातो कह्या छे, ते आ प्रमाणे–वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात अने मारणांतिकसमुद्घात.

३९. [प्र०] हे भगवन् ! ते [उत्पलना] जीवो मारणांतिक समुद्घात वडे समवहत (समुद्घातने प्राप्त) थइने मरे, के असमवहत (समुद्घातने प्राप्त थया शिवाय) मरे ? [उ०] हे गौतम ! ते समवहत थइने पण मरे अने असमवहत थइने पण मरे.

च्यवन.

४०. [प्र०] हे भगवन् ! ते उत्पलना जीवो मरीने तरत क्यां जाय ?–क्यां उत्पन्न थाय ? शुं नैरयिकोमां उत्पन्न थाय, तिर्यंचयोनिकोमां उत्पन्न थाय, मनुष्योमां उत्पन्न थाय के देवोमां उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! ‡प्रज्ञापना सूत्रना व्युत्क्रांतिपदमां उद्वर्तना प्रकरणमां वनस्पतिकायिकोने कह्या प्रमाणे अहीं पण कहेवुं.

सर्व जीवोनुं उत्पलपणे उपजवुं.

४१. [प्र०] हे भगवन् ! सर्व प्राणो, सर्व भूतो, सर्व जीवो अने सर्व सत्त्वो उत्पलना मूलपणे, कंदपणे, नालपणे, पांदडापणे, केसरपणे, कर्णिकापणे अने थिभुग (पांदडानुं उत्पत्ति स्थान) पणे पूर्वे उत्पन्न थया छे ? [उ०] हा, गौतम ! जीवो अनेकवार अथवा अनन्तवार पूर्वे उत्पन्न थया छे. हे भगवन् ! ते एमज छे. हे भगवन् ! ते एमज छे.

एकादश शते प्रथम उत्पलोद्देशक समाप्त.

---

३६. * प्रज्ञा० पद २० उ० १ प० ४९८–५०५.

३८. † समुद्घात माटे जुओ प्रज्ञा० पद ३६ प० ५५८.

४०. ‡ प्रज्ञा० पद ६ प० २०४.

बीओ उद्देसो.

१. [प्र०] सालुए णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे ? [उ०] गोयमा ! एगजीवे । एवं उप्पलुद्देसगवत्तव्वया अपरिसेसा भाणियव्वा जाव 'अणंतखुत्तो', नवरं सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं धणुपुहुत्तं । सेसं तं चेव । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

बीओ उद्देसो समत्तो ।

द्वितीय उद्देशक.

शालूक. १. [प्र०] हे भगवन् ! एक पांदडावाळो शालूक (उत्पलकन्द) शुं एक जीववाळो छे के अनेक जीववाळो छे ? [उ०] हे गौतम ! ते एक जीववाळो छे, ए प्रमाणे उत्पलोद्देशकनी सघळी वक्तव्यता कहेवी, यावद् 'अनन्तवार उत्पन्न थया छे.' परन्तु विशेष ए छे के, शालूकना शरीरनी अवगाहना जघन्यथी अंगुलना असंख्यातमा भाग जेटली, अने उत्कृष्ट धनुषपृथक्त्व छे, बाकी बधुं पूर्ववत् जाणवुं. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.

एकादशशते द्वितीयोद्देशक समाप्त.

तईओ उद्देसो ।

१. [प्र०] पलासे णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे ? [उ०] एवं उप्पलुद्देसगवत्तव्वया अपरिसेसा भाणियव्वा । नवरं सरीरोगाहणा जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं गाउयपुहुत्ता, देवा एएसु चेव न उववज्जंति ।

२. [प्र०] लेसासु ते णं भंते ! जीवा किं कण्हलेसे, नीललेसे, काउलेसे ? [उ०] गोयमा ! कण्हलेस्से वा नीललेस्से वा काउलेस्से वा छव्वीसं भंगा । सेसं तं चेव । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

तईओ उद्देसो समत्तो ।

तृतीय उद्देशक.

पलाश.

१. [प्र०] हे भगवन् ! पलाशवृक्ष [प्रारंभमां] एक पांदडावाळो होय त्यारे शुं एक जीववाळो होय के अनेक जीववाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! *उत्पलउद्देशकनी बधी वक्तव्यता अहीं कहेवी. परन्तु विशेष ए छे के, पलाशना शरीरनी अवगाहना जघन्यथी अंगुलनो असंख्यातमो भाग अने उत्कृष्ट गाउपृथक्त्व छे. वळी देवो च्यवीने ए पलाशवृक्षमां उत्पन्न थता नथी.

२. [प्र०] लेश्याद्वारमां हे भगवन् ! शुं पलाशवृक्षना जीवो कृष्णलेश्यावाळा, नीललेश्यावाळा के कापोतलेश्यावाळा होय ? [उ०] हे गौतम ! ते कृष्णलेश्यावाळा, नीललेश्यावाळा के कापोतलेश्यावाळा होय, ए प्रमाणे †छव्वीश भांगा कहेवा. बाकी बधुं पूर्वेनी पेठे जाणवुं. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.

एकादश शते तृतीय उद्देशक समाप्त.

---

१. * भग० खं० ३ श० ११ उ० १ सू० १.

२. † अहीं एक अने अनेकना वचनाश्रयकारिनी पेठे २६ भांगा जाणवा. जुओ भग० खं० ३ श० ११ उ० १ सू० १९ मुं टीप्पन.

चउत्थो उद्देसो ।

१. [प्र०] कुंभिए णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे ? [उ०] एवं जहा पलासुद्देसए तहा भाणियव्वे । नवरं ठिती जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वासपुहुत्तं । सेसं तं चेव । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

चउत्थो उद्देसो समत्तो ।

चतुर्थ उद्देशक.

कुंभिक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! एक पांदडावाळो कुंभिक (वनस्पतिविशेष) शुं एक जीववाळो होय के अनेकजीववाळो होय ? [उ०] हे गौतम ! ए प्रमाणे *पलाशोद्देशकमां कह्या प्रमाणे बधुं कहेवुं, परन्तु विशेष ए छे के कुंभिकनी स्थिति (आयु) जघन्यथी अंतर्मुहूर्त, अने उत्कृष्ट वर्षपृथक्त्व–बे वर्षथी नव वर्ष–सुधीनी होय छे. बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.

एकादशशते चतुर्थ उद्देशक समाप्त.

---

१. * भग० खं० ३ श० ११ उ० ३ सू० १.

पंचमो उद्देसो ।

१. नालिए णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे अणेगजीवे ? [उ०] एवं कुंभिउद्देसगवत्तव्वया निरवसेसं भाणियव्वा । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

पंचमो उद्देसो समत्तो ।

पंचम उद्देशक.

नालिक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! एकपांदडावाळो नालिक (वनस्पतिविशेष) शुं एक जीववाळो छे के अनेकजीववाळो छे ? [उ०] हे गौतम ! कुंभिक उद्देशकनी (उ० ४ सू० १) बधी वक्तव्यता अहीं कहेवी. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.

एकादश शते पंचम उद्देशक समाप्त.

छट्ठो उद्देसो।

१. [प्र०] पउमे णं भंते! एगपत्तए किं एगजीवे, अणेगजीवे? [उ०] एवं उप्पलुद्देसगवत्तव्वया निरवसेसा भाणियव्वा। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति।

छट्ठो उद्देसो समत्तो।

षष्ठ उद्देशक.

पद्म. १. [प्र०] हे भगवन्! एक पांदडावाळुं पद्म शुं एक जीववाळुं होय के अनेक जीववाळुं होय? [उ०] हे गौतम! उत्पल उद्देशकमां (उ० १ सू० १) कह्या प्रमाणे बधुं कहेवुं. हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे.

एकादश शते षष्ठ उद्देशक समाप्त.

सत्तमो उद्देसो ।

१. [प्र०] कन्निए णं भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे, अणेगजीवे ? [उ०] एवं चेव निरवसेसं भाणियव्वं । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

सत्तमो उद्देसो समत्तो ।

सप्तम उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! एक पांदडावाळी कर्णिका शुं एक जीववाळी छे के अनेक जीववाळी छे ? [उ०] हे गौतम ! बधुं पूर्वे प्रमाणे कहेवुं. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.

कर्णिका.

एकादश शते सप्तम उद्देशक समाप्त.

अट्ठमो उद्देसो।

१. [प्र०] नलिणे णं भंते! एगपत्तए किं एगजीवे, अणेगजीवे? [उ०] एवं चेव निरवसेसं जाव 'अणंतखुत्तो'। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति।

अट्ठमो उद्देसो समत्तो।

अष्टम उद्देशक.

नलिन.

१. [प्र०] हे भगवन्! एकपत्रवाळुं नलिन (कमलविशेष) शुं एकजीववाळुं छे के अनेकजीववाळुं छे? [उ०] हे गौतम! ए बधुं पूर्व प्रमाणे (उ० १ सू० १) यावत् 'सर्व जीवो अनंतवार उत्पन्न थया छे' त्यांसुधी कहेवुं. हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे.

एकादश शते अष्टम उद्देशक समाप्त.

नवमो उद्देसो।

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिनागपुरे णामं णगरे होत्था। वण्णओ। तस्स णं हत्थिनागपुरस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे एत्थ णं सहसंबवणे णामं उज्जाणे होत्था। सव्वोउयपुप्फ–फलसमिद्धे, रम्मे, णंदणवणसंनिप्पगासे, सुहसीतलच्छाए, मणोरमे, सादुप्फले, अकंटए, पासादीए, जाव–पडिरूवे। तत्थ णं हत्थिणापुरे णगरे सिवे णामं राया होत्था। महयाहिमवंत० वण्णओ। तस्स णं सिवस्स रन्नो धारिणी णामं देवी होत्था। सुकुमाल० वण्णओ। तस्स णं सिवस्स रन्नो पुत्ते धारिणीए अत्तए सिवभद्दे णामं कुमारे होत्था। सुकुमाल० जहा सूरियकंते, जाव–पच्चुवेक्खमाणे २ विहरति।

२. तए णं तस्स सिवस्स रन्नो अन्नया कया वि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि रज्जधुरं चिंतेमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–'अत्थि ता मे पुरा पोराणाणं० जहा तामलिस्स, जाव–पुत्तेहिं वड्ढामि, पसूहिं वड्ढामि, रज्जेणं वड्ढामि, एवं रट्ठेणं, बलेणं, वाहणेणं, कोसेणं, कोट्ठागारेणं, पुरेणं, अंतेउरेणं वड्ढामि; विपुलधण–कणग–रयण० जाव संतसारसावएज्जेणं अतीव २ अभिवड्ढामि, तं किं णं अहं पुरा पोराणाणं० जाव एगंतसोक्खयं उवेहमाणे विहरामि? तं जाव ताव अहं हिरण्णेणं वड्ढामि, तं चेव जाव अभिवड्ढामि, जाव मे सामंतरायाणो वि वसे वट्टंति, तावता मे सेयं कल्लं पाउप्पभाताए जाव जलंते सुबहुं लोही–लोहकडाह–कडुच्छुयं तंबियं तावसभंडगं घडावेत्ता सिवभद्दं कुमारं रज्जे ठावेत्ता तं सुबहुं लोही–लोहकडाह–कडु-

नवम उद्देशक.

१. ते काले–ते समये हस्तिनापुर नामे नगर हतुं. वर्णन. ते हस्तिनापुर नगरनी बहार उत्तरपूर्व दिशामां–ईशानकोणमां–सहस्राम्रवन नामे उद्यान हतुं. ते उद्यान सर्व ऋतुना पुष्प अने फलथी समृद्ध, रम्य अने नंदनवन समान हतुं. तेनी छाया सुखकारक अने शीतळ हती, ते मनोहर, स्वादिष्टफलवाळुं, कंटकरहित, प्रसन्नता आपनार, यावत् प्रतिरूप–सुन्दर–हतुं. ते हस्तिनापुर नगरमां शिव नामे राजा हतो, ते मोटा हिमाचल पर्वतनी पेठे (सर्व राजाओमां) श्रेष्ठ हतो, [इत्यादि राजानुं वर्णन कहेवुं.] ते शिव राजाने धारिणी नामे पट्टराणी हती, तेना हाथ पग सुकुमाल हता,–[इत्यादि स्त्रीनुं वर्णन कहेवुं]. ते शिवराजाने धारिणी राणीथी उत्पन्न थयेलो शिवभद्र नामे पुत्र हतो, तेना हाथ पग सुकुमाल हता–इत्यादि कुमारनुं वर्णन सूर्यकांत राजकुमारनी पेठे* कहेवुं. यावत् ते कुमार [राज्य, राष्ट्र, सैन्यादिने] जोतो जोतो विहरे छे.

हस्तिनापुर. शिवराजा. शिवभद्रपुत्र.

२. हवे कोइ एक दिवसे शिवराजाने पूर्वरात्रिना पाछला भागमां राज्यकारभारनो विचार करता आ आवो अध्यवसाय–संकल्प उत्पन्न थयो के मारा पूर्व पुण्यकर्मोनो प्रभाव छे, इत्यादि †तामलि तापसनी पेठे कहेवुं, जे यावत् हुं पुत्रोवडे, पशुओवडे, राज्यवडे, राष्ट्रवडे, बलवडे, वाहनवडे, कोशवडे, कोष्टागारवडे, पुरवडे अने अन्तःपुरवडे वृद्धि पामुं छुं. वळी पुष्कळ धन, कनक, रत्न यावत् सारभूत द्रव्यवडे अतिशय अत्यंत वृद्धि पामुं छुं, तो शुं हवे हुं मारा पूर्व पुण्यकर्मोना फलरूप एकान्त सुखने भोगवतो ज विहरुं? ते माटे ज्यांसुधी हुं हिरण्यथी वृद्धि पामुं छुं, यावत् पूर्वे कह्या प्रमाणे वृद्धि पामुं छुं, ज्यांसुधी सामंत राजाओ मारे ताबे छे, त्यांसुधी मारे काले प्रातःकाळे

शिवराजानो संकल्प.

१. * सूर्यकान्तकुमारनुं वर्णन जुओ राजप्र० प० ११५.

२. † तामलि तापसना संकल्पनुं वर्णन जुओ भग० खं० २ श० ३ उ० १ पृ० २५.

कडुच्छुयं तंबियं तावसभंडगं गहाय जे इमे गंगाकुले वाणपत्था तावसा भवंति, तं जहा–होत्तिया, पोत्तिया, जहा उववाइए जाव–कट्ठसोल्लियं पिव अप्पाणं करेमाणा विहरंति, तत्थ णं जे ते दिसापोक्खी तावसा तेसिं अंतियं मुंडे भवित्ता दिसापोक्खिय-तावसत्ताए पव्वइत्तए। पव्वइते वि य णं समाणे अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हिस्सामि–'कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठं–छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय २ जाव विहरित्तए' त्ति कट्टु एवं संपेहेति।

३. संपेहेत्ता कल्लं जाव जलंते सुबहुं लोही–लोह० जाव घडावेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासि–'खिप्पामेव भो! देवाणुप्पिया! हत्थिनागपुरं णगरं सब्भिंतर–बाहिरियं आसिय०' जाव तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति। तए णं से सिवे राया दोच्चं पि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावेत्ता एवं वयासि–'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! सिवभद्दस्स कुमारस्स महत्थं ३ विउलं रायाभिसेयं उवट्ठवेह'। तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव उवट्ठवेंति। तए णं से सिवे राया अणेगगणनायग–दंडनायग० जाव–संधिपालसद्धिं संपरिवुडे सिवभद्दं कुमारं सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहं णिसियावेति। णिसियावेत्ता अट्ठसएणं सोवण्णियाणं कलसाणं जाव–अट्ठसएणं भोमेज्जाणं कलसाणं सव्विड्ढीए जाव–रवेणं महया २ रायाभिसेगेणं अभिसिंचति। म० २ पम्हलसुकुमालाए सुरभीए गंधकासाईए गायाइं लूहेति। पम्हल० २ सरसेणं गोसीसेणं एवं जहेव जमालिस्स अलंकारो तहेव जाव–कप्परुक्खगं पिव अलंकिय–विभूसियं करेति। करित्ता करयल० जाव–कट्टु सिवभद्दं कुमारं जएणं विजएणं वद्धावेति। जएणं० २ ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं जहा उववाइए कूणियस्स जाव–परमाउं पालयाहि, इट्ठजणसंपरिवुडे हत्थिणापुरस्स नगरस्स अन्नेसिं च बहूणं गामा–गर–णगर० जाव विहराहि' ति कट्टु जयजयसद्दं पउंजति। तए णं से सिवभद्दे कुमारे राया जाते। महया हिमवंत० वण्णओ जाव–विहरइ।

४. तए णं से सिवे राया अन्नया कयाइ सोभणंसि तिहि–करण–दिवस–मुहुत्त–नक्खत्तंसि विपुलं असण–पाण–खाइम–साइमं उवक्खडावेति। उवक्खडावेत्ता मित्त–णाइ–नियग० जाव–परिजणं रायाणो य खत्तिया आमंतेति। आमंतेत्ता तओ

सूर्य देदीप्यमान थये छते घणी लोढीओ, लोहना कडायां, कडछा अने त्रांबाना बीजा तापसना उपकरणोने घडावीने शिवभद्र कुमारने राज्यमां स्थापीने घणी लोढीओ, लोहना कडायां, कडछा अने त्रांबाना तापसना उपकरणो लइने, जे आ गंगाने कांठे वानप्रस्थ तापसो रहे छे, ते आ प्रकारे–अग्निहोत्री, पोतिक–वस्त्र धारण करनारा–इत्यादि *'उववाइअ' सूत्रमां कह्या प्रमाणे यावत्–जेओ काष्ठथी शरीरने तपावता विचरे छे, ते तापसोमां जे तापसो दिशाप्रोक्षक (पाणी वडे दिशाने पूजी फल पुष्पादि ग्रहण करनारा) छे, तेओनी पासे मारे मुंड थइने दिक्प्रोक्षकतापसपणे प्रव्रज्या अंगीकार करवी श्रेय छे, प्रव्रज्या ग्रहण करीने हुं आ आवा प्रकारनो अभिग्रह ग्रहण करीश, ते आ प्रकारे–यावज्जीव निरंतर छट्ठ छट्ठ करवाथी दिक्चक्रवाल तपकर्म वडे उंचा हाथ राखीने रहेवुं मने कल्पे–ए प्रमाणे ते शिवराजा विचारे छे.

शिवभद्रने राज्याभिषेक.

३. ए प्रमाणे विचारीने आवती काले प्रातःकाळे सूर्य देदीप्यमान छते, अनेक प्रकारना लोढी, कडाया वगेरे तापसना उपकरणो तैयार करावी पोताना कौटुंबिक पुरुषोने बोलावे छे. बोलावीने तेणे तेओने आ प्रमाणे कह्युं–हे देवानुप्रियो! शीघ्र आ हस्तिनापुर नगरनी बाहेर अने अंदर जल छंटकावी साफ करावो–इत्यादि यावत् तेम करी तेओ तेनी आज्ञाने पाछी आपे छे. त्यारपछी ते शिवराजा फरीने पण ते कौटुंबिक पुरुषोने बोलावे छे, बोलावीने तेणे आ प्रमाणे कह्युं–हे देवानुप्रियो! शीघ्र शिवभद्र कुमारना महाअर्थवाळा यावत् विपुल राज्याभिषेकनी तैयारी करो. त्यारबाद ते कौटुंबिक पुरुषो ते प्रमाणे यावत् राज्याभिषेकनी तैयारी करे छे, त्यारपछी ते शिवराजा अनेक गणनायक, दंडनायक, यावत् संधिपालना परिवारयुक्त शिवभद्र कुमारने उत्तम सिंहासन उपर पूर्व दिशा सन्मुख बेसाडे छे, बेसाडीने एकसो आठ सोनाना कलशोवडे, यावत् एकसो आठ माटीना कलशोवडे, सर्व ऋद्धिथी यावत् वादित्रादिकना शब्दोवडे मोटा राज्याभिषेकथी अभिषेक करे छे. त्यारपछी पांपण जेवा सुकुमाल अने सुगंधि गंधवस्त्रवडे तेनां शरीरने साफ करे छे, साफ करीने सरस गोशीर्षचंदन वडे लेप करी यावत् जेम †जमालिनुं वर्णन कर्युं छे तेम कल्पवृक्षनी पेठे तेने अलंकृत–विभूषित करे छे. त्यारपछी हाथ जोडी शिवभद्रकुमारने जय अने विजयथी वधावे छे; वधावीने इष्ट, कान्त, प्रिय वाणीवडे आशीर्वाद आपता औपपातिक सूत्रमां कोणिक राजा संबन्धे कह्या प्रमाणे‡ तेओए कह्युं–यावत् तुं दीर्घायुषी था, अने इष्ट जनना परिवारयुक्त हस्तिनापुर नगर अने बीजा अनेक ग्राम, आकर तथा नगरोनुं स्वामिपणुं भोगव–इत्यादि कहीने तेओ जय जय शब्द बोले छे. त्यार बाद ते शिवभद्र कुमार राजा थयो, ते मोटा हिमाचलनी पेठे सर्व राजाओमां मुख्य थइने यावत् विहरे छे, अहीं शिवभद्रराजानुं वर्णन करवुं.

शिवराजनी प्रव्रज्या.

४. त्यारपछी ते शिवराजा अन्य कोइ दिवसे प्रशस्त तिथि, करण, दिवस अने नक्षत्रना योगमां विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिम वस्तुओने तैयार करावे छे, तैयार करावी मित्र, ज्ञाति, यावत् पोताना परिजनने, राजाओने अने क्षत्रियोने आमन्त्रण करे

२. * तापसोनुं वर्णन जुओ उववाइअ प० ९०–१.

३. † जमालिनुं वर्णन जुओ भग० खं० ३ श० ९ उ० ३३ पृ० १७४.

‡ कोणिकनुं वर्णन जुओ उववाइअ प० ७३–१.

पच्छा ण्हाए जाव–सरीरे भोयणवेलाए भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए तेणं मित्त–णाति–नियगसयण० जाव–परिजणेणं राएहिं य खत्तिएहि य सद्धिं विपुलं असण–पाण–खाइम–साइमं एवं जहा तामली जाव–सक्कारेति, संमाणेति। सक्कारेत्ता संमाणेत्ता तं मित्त–णाति० जाव–परिजणं रायाणो य खत्तिए य सिवभद्दं च रायाणं आपुच्छइ। आपुच्छित्ता सुबहुं लोही–लोहकडाह–कडुच्छुयं जाव–भंडगं गहाय जे इमे गंगाकूलगा वाणपत्था तावसा भवंति, तं चेव जाव तेसिं अंतियं मुंडे भवित्ता दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइए। पव्वइए वि य णं समाणे अयमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हति–'कप्पइ मे आवज्जीवाए छट्ठं०' तं चेव जाव अभिग्गहं अभिगिण्हति, अभिगिण्हित्ता पढमं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ।

५. तए णं से सिवे रायरिसी पढमछट्ठक्खमणपारणगंसि आयावणभूमीए पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छति, तेणेव उवागच्छित्ता किढिणसंकाइयगं गिण्हति, गिण्हित्ता पुरत्थिमं दिसं पोक्खेति, 'पुरत्थिमाए दिसाए सोमे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवे रायरिसी, अभिरक्खित्ता जाणि य तत्थ कंदाणि य मूलाणि य तयाणि य पत्ताणि य पुप्फाणि य फलाणि य बीयाणि य हरियाणि य ताणि अणुजाणउ' त्ति कट्टु पुरत्थिमं दिसं पसरति, पुर० २ जाणि य तत्थ कंदाणि य जाव–हरियाणि य ताइं गेण्हति, गिण्हित्ता किढिणसंकाइयं भरेइ, किढि० २ दब्भे य कुसे य समिहाओ य पत्तामोडं च गिण्हति, गिण्हित्ता जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिणसंकाइयगं ठवेति, किढि० २ वेदिं वड्ढेति, वे० २ उवलेवण–संमज्जणं करेइ, उ० २ दब्भ–कलसाहत्थगए जेणेव गंगा महानदी तेणेव उवागच्छति, तेणेव० २ गंगामहानदीं ओगाहेति, गंगा० २ जलमज्जणं करेइ, जल० २ जलकीडं करेइ, जल० २ जलाभिसेयं करेति, जला० २ आयंते चोक्खे परमसुइभूए देवय–पितिकयकज्जे दब्भ–कलसाहत्थगए गंगाओ महानईओ पच्चुत्तरइ, गंगाओ० २ जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, तेणेव० २ दब्भेहि य कुसेहि य वालुयाएहि य वेतिं रएति, वेतिं रएत्ता सरएणं अरणिं महेति, सर० २ अग्गिं पाडेति, २ अग्गिं संधुक्केइ, २ समिहाकट्ठाइं पक्खिवइ, समिहा० २ अग्गिं उज्जालेइ, अग्गिं० २ "अग्गिस्स दाहिणे पासे, सत्तंगाइं समादहे। [तं जहा–] सकहं वकलं ठाणं, सिज्जा भंडं कमंडलुं॥ दंडदारुं तह-

छे, आमन्त्रण करी त्यार बाद स्नान करी यावत् शरीरने अलंकृत करी भोजनवेलाए भोजनमंडपमां उत्तम सुखासन उपर बेसी मित्र, ज्ञाति अने पोताना स्वजन यावत् परिजन साथे तथा राजा अने क्षत्रियो साथे विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिम भोजन करी *तामलितापसनी पेठे यावत् ते शिवराजा बधाओनो सत्कार करे छे, सन्मान करे छे, सत्कार अने सन्मान करीने मित्र, ज्ञाति, पोताना स्वजन, यावत् परिजननी तथा राजाओ, क्षत्रियो अने शिवभद्र राजानी रजा मागे छे. रजा मागीने अनेक प्रकारना लोढी, लोढाना कडायां, कडछा यावत् तापसना उचित उपकरणो लइने गंगाने कांठे जे आ वानप्रस्थ तापसो रहे छे–इत्यादि सर्व †पूर्ववत् जाणवुं, यावत् ते दिशाप्रोक्षक तापसोनी पासे दीक्षित थई दिशाप्रोक्षकतापसरूपे प्रव्रज्या ग्रहण करी प्रव्रजित थइने ते आ प्रकारनो अभिग्रह धारण करे छे–'मारे यावजीव निरंतर छट्ठ छट्ठनो तप करवो कल्पे'–इत्यादि पूर्ववत् अभिग्रह ग्रहण करीने प्रथम छट्ठ तपनो स्वीकार करी विहरे छे.

शिवराजर्षिनो अभिग्रह.

५. त्यारबाद प्रथम छट्ठ तपना पारणाना दिवसे ते शिव राजर्षि आतापना भूमिथी नीचे आवे छे, नीचे आवीने वल्कलना वस्त्र पहेरी ज्यां पोतानी झुंपडी छे त्यां आवे छे, त्यां आवी किढिन (वांसनुं पात्र) अने कावडने ग्रहण करे छे, ग्रहण करी पूर्व दिशाने प्रोक्षित करी 'पूर्व दिशाना सोम महाराजा धर्मसाधनमां प्रवृत्त थएला शिव राजर्षिनुं रक्षण करो, अने पूर्व दिशामां रहेला कंद, मूल, छाल, पांदडा, पुष्प, फळ, बीज अने हरित–लीली वनस्पतिने लेवानी अनुज्ञा आपो'–एम कही ते शिव राजर्षि पूर्व दिशा तरफ जाय छे, जइने त्यां रहेला कंद, यावत्–लीली वनस्पतिने ग्रहण करीने पोतानी कावड भरे छे. त्यार पछी दर्भ, कुश, समिध–काष्ठ अने झाडनी शाखाने मरडी पांदडाओने ले छे; लेईने ज्यां पोतानी झुंपडी छे त्यां आवे छे, आवीने कावडने नीचे मूके छे, मूकीने वेदिकाने प्रमार्जित करे छे; पछी वेदिकाने [छाण पाणीवडे] लींपी शुद्ध करे छे. त्यारबाद डाभ अने कलशने हाथमां लइ ज्यां गंगा महानदी छे, त्यां आवीने गंगा महानदीमां प्रवेश करे छे, प्रवेश करी डुबकी मारे छे, जलक्रीडा करे छे, अने स्नान करे छे, पछी आचमन करी चोक्खा थइ–परम पवित्र थइ देवता अने पितृकार्य करी डाभ अने पाणीनो कलश हाथमां लइ गंगा महानदीथी बहार नीकळीने ज्यां पोतानी झुंपडी छे त्यां आवे छे, आवीने डाभ, कुश अने वालुका वडे वेदिने बनावे छे, बनावी मथनकाष्ठवडे अरणिने घसे छे, घसीने अग्नि पाडे छे, पाडीने अग्निने सळगावे छे, पछी तेमां समिधना काष्ठोने नांखी ते अग्निने प्रज्वलित करे छे, अने अग्निनी दक्षिण बाजुए आ सात वस्तुओ मुके छे, ते आ प्रमाणे–"१ सकथा (उपकरणविशेष), २ वल्कल, ३ दीप, ४ शय्याना उपकरण, ५ कमंडल, ६ दंड अने ७ आत्मा (पोते). ए सर्वने

---

४. * तामलितापसनुं वर्णन जुओ भग० खं० २ श० ३ उ० १ पृ० २६.

† गंगाने किनारे रहेता तापसोनुं वर्णन जुओ उववाइअ प० ९०–१.

ज्झयाणं भद्दे ताहं समादहे ।" महुणा य घएण य तंदुलेहि य अग्गिं हुणइ, अग्गिं हुणित्ता चरुं साहेइ, चरुं साहेत्ता बलिं वइस्सदेवं करेइ, बलिं० २ अतिहिपूयं करेइ, अतिहि० २ तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेति ।

६. तए णं से सिवे रायरिसी दोच्चं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ । तए णं से सिवे रायरिसी दोच्चे छट्ठक्खमणपारणगंसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, आयावण० २ एवं जहा पढमपारणगं, नवरं दाहिणगं दिसं पोक्खेति, दाहिण० २ दाहिणाए दिसाए जमे महाराया पत्थाणे पत्थियं सेसं तं चेव आहारमाहारेइ । तए णं से सिवे रायरिसी तच्चं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ता णं विहरति । तए णं से सिवे रायरिसी सेसं तं चेव नवरं पच्चच्छिमाए दिसाए वरुणे महाराया पत्थाणे पत्थियं सेसं तं चेव जाव आहारमाहारेइ । तए णं से सिवे रायरिसी चउत्थं छट्ठक्खमणं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ, तए णं से सिवे रायरिसी चउत्थछट्ठक्खमण० एवं तं चेव, नवरं उत्तरदिसं पोक्खेइ, उत्तराए दिसाए वेसमणे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिवं, सेसं तं चेव जाव–तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ ।

७. तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालेणं जाव–आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए जाव–विणीययाए अन्नया कया वि तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहा–पोह–मग्गण–गवेसणं करेमाणस्स विब्भंगे नामं अन्नाणे समुप्पन्ने । से णं तेणं विब्भंगनाणेणं समुप्पन्नेणं पासइ अस्सिं लोए सत्त दीवे सत्त समुद्दे, तेण परं न जाणति न पासति ।

८. तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–'अत्थि णं ममं अइसेसे नाण–दंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सिं लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य, एवं संपेहेइ, एवं० २ आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, आ० २ वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, तेणेव० २ सुबहुं लोही–लोहकडाह–कडुच्छुयं जाव–भंडगं किढिणसंकाइयं च गेण्हइ, २ जेणेव हत्थिणापुरे नगरे जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव० २ भंडनिक्खेवं करेइ, भंड० २ हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग–तिग० जाव–पहेसु बहु जणस्स एवमाइक्खइ, जाव–एवं परूवेइ–'अत्थि णं देवाणुप्पिया ! ममं अतिसेसे नाण–दंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सिं लोए जाव दीवा य समुद्दा य' । तए णं तस्स

एकठा करे छे." पछी मध, घी अने चोखा वडे अग्निमां होम करे छे, होम करीने चरु–बलि तैयार करे छे, अने बलिथी वैश्वदेवनी पूजा करे छे, त्यारबाद अतिथिनी पूजा करी ते शिव राजर्षि पोते आहार करे छे.

६. त्यारबाद ते शिवराजर्षि फरीवार छट्ठ तप करीने विहरे छे, पछी ते शिवराजर्षि आतापनाभूमिथी उतरी वल्कलनुं वस्त्र पहेरे छे, इत्यादि बधुं प्रथम पारणानी पेठे जाणवुं. परन्तु विशेष ए छे के बीजा पारणा वखते दक्षिण दिशाने प्रोक्षित करे–पूजे, तेम करीने एम कहे के 'दक्षिण दिशाना (लोकपाल) यम महाराजा प्रस्थान–परलोकसाधन–मां प्रवृत्त थएला शिवराजर्षिनुं रक्षण करो' इत्यादि सर्व पूर्ववत् कहेवुं, यावत् पोते आहार करे छे. पछी ते शिवराजर्षि त्रीजा छट्ठ तपने स्वीकारी विहरे छे, तेना पारणानी बधी हकीकत पूर्वनी पेठे जाणवी, परन्तु विशेष ए छे के, पश्चिम दिशानुं प्रोक्षण–पूजन–करे, अने एम कहे के पश्चिम दिशाना (लोकपाल) वरुण महाराजा प्रस्थान–परलोक साधनमां प्रवृत्त थयेला शिव राजर्षिनुं रक्षण करो, बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. यावत् त्यार पछी ते आहार करे. पछी ते शिवराजर्षि चोथा छट्ठना तपने स्वीकारी विहरे छे–इत्यादि पूर्ववत् जाणवुं. परन्तु (चोथे पारणे) उत्तर दिशाने पूजे छे, अने एम कहे छे के 'उत्तर दिशाना (लोकपाल) वैश्रमण महाराजा धर्मसाधनमां प्रवृत्त थयेला शिवराजर्षिनुं रक्षण करो, बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं, यावत् त्यार पछी पोते आहार करे छे.

शिव राजर्षिने विभंगज्ञान.

७. ए प्रमाणे निरंतर छट्ठ छट्ठना तप करवाथी दिक्चक्रवाल तप करता, यावत् आतापना लेता ते शिवराजर्षिने प्रकृतिनी भद्रता अने यावद् विनीततायी अन्य कोइ दिवसे तेना आवरणभूत कर्मोना क्षयोपशम थवाथी ईहा, अपोह, मार्गणा अने गवेषण करता विभंग नामे ज्ञान उत्पन्न थयुं. पछी ते उत्पन्न थयेला ते विभंगज्ञान वडे आ लोकमां सात द्वीपो अने सात समुद्रो जुए छे, ते पछी आगळ जाणता नथी, के जोता नथी.

शिवराजर्षिनो सात द्वीप अने सात समुद्रनो अध्यवसाय.

८. त्यारबाद ते शिवराजर्षिने आ आवा प्रकारनो अध्यवसाय उत्पन्न थयो के, 'मने अतिशयवाळुं ज्ञान अने दर्शन उत्पन्न थयुं छे, अने ए प्रमाणे आ लोकमां सात द्वीप अने सात समुद्रो छे, अने त्यारपछी द्वीपो अने समुद्रो नथी'–एम विचारे छे, विचारीने आतापना भूमिथी नीचे उतरे छे, अने वल्कलनां वस्त्रो पहेरी ज्यां पोतानी झुंपडी छे त्यां आवी अनेक प्रकारना लोढी, लोढाना कडायां अने कडछा प्रमुख बीजा उपकरणो अने कावडने ग्रहण करे छे, अने ज्यां हस्तिनापुर नगर छे अने ज्यां तापसोनुं यावद् आश्रम छे त्यां आवे छे, आवीने उपकरण वगेरेने मूके छे, अने हस्तिनापुर नगरमां शृंगाटक, त्रिक, यावद् राजमार्गोमां घणा माणसोने एम कहे छे, यावद् एम प्ररूपे छे के, 'हे देवानुप्रियो ! मने अतिशयवाळुं ज्ञान अने दर्शन उत्पन्न थयुं छे, अने आ लोकमां ए प्रमाणे सात द्वीपो अने सात समुद्रो छे,'

सिवस्स रायरिसिस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग–तिग० जाव–पहेसु बहु जणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ, जाव परूवेइ–'एवं खलु देवाणुप्पिया! सिवे रायरिसी एवं आइक्खइ, जाव परूवेइ–अत्थि णं देवाणुप्पिया! ममं अतिसेसे नाणदंसणे, जाव तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य'। से कहमेयं मन्ने एवं?

९. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे, परिसा जाव पडिगया। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी जहा बितियसए नियंठुद्देसए जाव अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेइ, बहुजणो अन्नमन्नस्स एवं आइक्खइ, एवं जाव परूवेइ–'एवं खलु देवाणुप्पिया! सिवे रायरिसी एवं आइक्खइ, जाव परूवेइ–अत्थि णं देवाणुप्पिया! तं चेव जाव वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य'। से कहमेयं मन्ने एवं?

१०. तए णं भगवं गोयमे बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म जाव–सड्ढे जहा नियंठुद्देसए जाव तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य, से कहमेयं भंते! एवं? गोयमादि! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी–जन्नं गोयमा! से बहुजणे अन्नमन्नस्स एवमातिक्खइ, तं चेव सव्वं भाणियव्वं, जाव–भंडनिक्खेवं करेति, हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग० तं चेव जाव वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य। तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य, तण्णं मिच्छा। अहं पुण गोयमा! एवमाइक्खामि, जाव परूवेमि–'एवं खलु जंबुद्दीवादीया दीवा लवणादीया समुद्दा संठाणओ एगविहिविहाणा, वित्थारओ अणेगविहिविहाणा एवं जहा जीवाभिगमे जाव–सयंभूरमणपज्जवसाणा अस्सिं तिरियलोए असंखेज्जे दीवसमुद्दे पन्नत्ते समणाउसो!

११. [प्र०] अत्थि णं भंते! जंबुद्दीवे दीवे दव्वाइं सवन्नाइं पि अवन्नाइं पि सगंधाइं पि अगंधाइं पि सरसाइं पि अरसाइं पि सफासाइं पि अफासाइं पि अन्नमन्नबद्धाइं अन्नमन्नपुट्ठाइं जाव–घडत्ताए चिट्ठंति? [उ०] हंता अत्थि।

त्यारबाद ते शिवराजर्षि पासेथी ए प्रकारनुं वचन सांभळी, अवधारी हस्तिनापुर नगरमां शृंगाटक, त्रिक, यावद् राजमार्गोमां घणा माणसो परस्पर एम कहे छे–यावद् एम प्ररूपे छे–हे देवानुप्रियो! शिवराजर्षि आ प्रमाणे कहे छे–यावत् प्ररूपे छे के हे देवानुप्रियो! मने अतिशयवाळुं ज्ञान अने दर्शन उत्पन्न थयुं छे, यावत् ए प्रमाणे आ लोकमां सात द्वीप अने सात समुद्रो छे, त्यार पछी नथी, ते एम केवी रीते होय?

९. ते काले–ते समये महावीर स्वामी समोसर्या, पर्षद् पण पाछी गई. ते काले–ते समये श्रमण भगवान् महावीरना मोटा शिष्य इंद्रभूति नामे अनगार बीजा शतकना निर्ग्रन्थोद्देशकमां *वर्णव्या प्रमाणे यावत् भिक्षाए जता घणा माणसोनो शब्द सांभळे छे–बहु माणसो परस्पर आ प्रमाणे कहे छे–यावत् प्ररूपे छे के 'हे देवानुप्रियो! शिव राजर्षि एम कहे छे–यावत् एम प्ररूपे छे–हे देवानुप्रियो! मने अतिशयवाळुं ज्ञान अने दर्शन उत्पन्न थयुं छे, अने यावत् सात द्वीप अने सात समुद्रो छे, त्यार पछी द्वीपो अने समुद्रो नथी,' तो ए प्रमाणे केम होय?

१०. [प्र०] त्यार पछी भगवान् गौतमे घणा माणसो पासे आ वात सांभळी, अवधारी श्रद्धावाळा थई निर्ग्रंथ उद्देशकमां †कह्या प्रमाणे यावत् श्रमण भगवंत महावीरने पूछ्युं–हे भगवन्! शिवराजर्षि कहे छे के–'यावत् सात द्वीप अने सात समुद्र छे, त्यार पछी कांइ नथी' तो ए प्रमाणे केम होइ शके? [उ०] 'हे गौतम'! एम कही श्रमण भगवान् महावीरे गौतमने आ प्रमाणे कह्युं–हे गौतम! घणा माणसो जे परस्पर ए प्रमाणे कहे छे–इत्यादि बधुं कहेवुं, यावद् ते शिवराजर्षि पोताना उपकरणो मूके छे अने हस्तिनापुर नगरमां जइ शृंगाटक, त्रिक अने बहु प्रकारना मार्गोमां आ प्रमाणे कहे छे, यावत् सात द्वीपो अने समुद्रो छे त्यार पछी नथी, त्यारबाद ते शिवराजर्षिनी पासे आ वात सांभळी अने अवधारी हस्तिनापुर नगरमां माणसो परस्पर आ प्रमाणे कहे छे के–'यावत् सात द्वीप अने समुद्रो छे, ते पछी कांइ नथी' इत्यादि, ते मिथ्या (असत्य) छे. हे गौतम! हुं ए प्रमाणे कहुं छुं, यावत् प्ररूपुं छुं–ए प्रमाणे जंबूद्वीपादि द्वीपो अने लवणादि समुद्रो बधा [वृत्ताकारे होवाथी] आकारे एक सरखा छे, पण विशालताए द्विगुण द्विगुण विस्तारवाळा होवाथी अनेक प्रकारना छे–इत्यादि सर्व †'जीवाभिगम'मां कह्या प्रमाणे जाणवुं, यावत् हे आयुष्मन् श्रमण! आ तिर्यग्लोकमां स्वयंभूरमण समुद्रपर्यन्त असंख्यात द्वीपो अने समुद्रो कह्या छे.

शिवराजर्षि संबंधे सात द्वीप अने सात समुद्र संबन्धे प्रश्न.

११. [प्र०] हे भगवन्! जंबूद्वीप नामे द्वीपमां वर्णवाळां, वर्णरहित, गंधवाळां, गंधरहित, रसवाळां, रसरहित, स्पर्शवाळां अने स्पर्शरहित द्रव्यो अन्योन्य बद्ध, अन्योन्य स्पृष्ट यावद् अन्योन्य संबद्ध छे? [उ०] हे गौतम! हा, छे.‡

वर्णादिसहित अने वर्णादिरहित द्रव्यो.

---

९ * भगवान् गौतमनुं वर्णन जुओ भग० खं० १ श० २ उ० ५ पृ० २८०.　　† जुओ भग० खं० १ पृ० २८१.

१० † द्वीप अने समुद्रोनुं वर्णन जुओ जीवाभि० प्रति० ३ उ० १ प० १७६–१.

११ ‡ वर्ण गंध रस अने स्पर्शवाळां पुद्गल द्रव्यो छे, अने वर्णादिरहित आकाशादि द्रव्यो छे, वळी तेओ परस्पर स्पर्शीने रहेला छे.—टीका.

१२. [प्र०] अत्थि णं भंते ! लवणसमुद्दे दव्वाइं सवन्नाइं पि अवन्नाइं पि सगंधाइं अगंधाइं पि सरसाइं पि अरसाइं पि सफासाइं पि अफासाइं पि अन्नमन्नबद्धाइं अन्नमन्नपुट्ठाइं जाव–घडत्ताए चिट्ठंति ? [उ०] हंता अत्थि ।

१३. [प्र०] अत्थि णं भंते ! धायइसंडे दीवे दव्वाइं सवन्नाइं पि एवं चेव, एवं जाव–सयंभूरमणसमुद्दे ? [उ०] जाव हंता अत्थि ।

१४. तए णं सा महतिमहालिया महच्चपरिसा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा, निसम्म हट्ठ–तुट्ठा समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ।

१५. तए णं हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग० जाव–पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ, जाव परूवेइ–जन्नं 'देवाणुप्पिया ! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ, जाव परूवेइ–अत्थि णं देवाणुप्पिया ! ममं अतिसेसे नाणे जाव–समुद्दा य', तं नो इणट्ठे समट्ठे, समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ, जाव परूवेइ–एवं खलु एयस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठंछट्ठेणं तं चेव जाव–भंडनिक्खेवं करेइ, भंडनिक्खेवं करेत्ता हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग० जाव–समुद्दा य । तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म जाव–समुद्दा य तण्णं मिच्छा, समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ–एवं खलु जंबुद्दीवादीया दीवा लवणादीया समुद्दा तं चेव जाव असंखेज्जा दीवसमुद्दा पन्नत्ता समणाउसो !

१६. तए णं से सिवे रायरिसी बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म संकिए कंखिए वितिगिच्छिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने जाए यावि होत्था । तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स संकियस्स कंखियस्स जाव–कलुससमावन्नस्स से विभंगे अन्नाणे खिप्पामेव परिवडिए ।

१७. तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–'एवं खलु समणे भगवं महावीरे आदिगरे तित्थगरे जाव–सव्वन्नू सव्वदरिसी आगासगएणं चक्केणं जाव सहसंबवणे उज्जाणे अहापडिरूवं जाव विहरइ, तं महाफलं खलु तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्स जहा उववाइए जाव–गहणयाए, तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं, वंदामि जाव पज्जुवासामि, एयं णे इहभवे य परभवे य जाव भविस्सइ'त्तिकट्टु एवं संपेहेति ।

लवणसमुद्रमां द्रव्यो.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! लवण समुद्रमां वर्णवाळां, वर्णविनाना, गंधवाळां, गंध विनाना, रसवाळां, रसविनाना, स्पर्शवाळां ने स्पर्श विनाना द्रव्यो अन्योन्य बद्ध, अन्योन्य स्पृष्ट, यावत् अन्योन्य संबद्ध छे ? [उ०] हे गौतम ! हा, छे.

धातकि खंडमां द्रव्यो.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! धातकिखंडमां अने ए प्रमाणे यावत् स्वयंभूरमण समुद्रमां वर्णवाळां ने वर्णरहित इत्यादि पूर्वोक्त द्रव्यो परस्पर संबद्ध छे इत्यादि यावत् ? [उ०] हे गौतम ! हा, छे त्यां सुधी जाणवुं.

१४. त्यारबाद ते अत्यन्त मोटी अने महत्वयुक्त परिषद् श्रमण भगवान् महावीर पासेथी ए अर्थ सांभळी अने अवधारी हृष्ट तुष्ट थइ श्रमण भगवंत महावीरने वांदी नमी जे दिशामांथी आवी हती ते दिशामां गइ.

शिवराजर्षिनुं कथन यथार्थ नथी.

महावीरस्वामीनुं कथन–असंख्यात द्वीप–समुद्रो.

१५. त्यारबाद हस्तिनापुर नगरमां शृंगाटक यावद् बीजा मार्गोमां घणा माणसो परस्पर आ प्रमाणे कहे छे, यावत् प्ररूपे छे के हे देवानुप्रियो ! शिवराजर्षि जे एम कहे छे–यावत् प्ररूपे छे–'हे देवानुप्रियो ! मने अतिशयवाळुं ज्ञान उत्पन्न थयुं छे, यावत् बीजा द्वीप–समुद्रो नथी;' ते तेनुं कथन यथार्थ नथी. श्रमण भगवान् महावीर ए प्रमाणे कहे छे, यावत् प्ररूपे छे के–छट्ठ छट्ठना तपने निरंतर करता शिवराजर्षि पूर्वे कह्या प्रमाणे यावत् पोताना उपकरणो मूकीने हस्तिनापुर नामना नगरमां शृंगाटक यावत् बीजा मार्गोमां ए प्रमाणे कहे छे–यावत् सात द्वीप–समुद्रो छे, बीजा नथी. त्यारबाद ते शिवराजर्षिनी पासे ए वात सांभळीने अवधारीने घणा माणसो एम कहे छे–'शिवराजर्षि जे कहे छे के मात्र सात द्वीप समुद्रो छे' ते मिथ्या छे, यावत् श्रमण भगवान् महावीर ए प्रमाणे कहे छे के–हे आयुष्मन् श्रमण ! जंबूद्वीपादि द्वीपो अने लवणादि समुद्रो एक सरखा आकारे छे–इत्यादि पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं, यावत् असंख्याता द्वीप–समुद्रो कह्या छे.'

शिवराजर्षि शंकित थया.

१६. त्यार बाद ते शिवराजर्षि घणा माणसो पासेथी ए वातने सांभळीने अने अवधारीने शंकित, कांक्षित, संदिग्ध, अनिश्चित अने कलुषित भावने प्राप्त थया, अने शंकित, कांक्षित, संदिग्ध, अनिश्चित अने कलुषित भावने प्राप्त थयेला शिवराजर्षिनुं विभंग नामे अज्ञान तरतज नाश पाम्युं.

शिवराजर्षिनो महावीरस्वामी पासे आववानो संकल्प.

१७. त्यार पछी ते शिवराजर्षिने आवा प्रकारनो आ संकल्प यावत् उत्पन्न थयो–"ए प्रमाणे श्रमण भगवान् महावीर धर्मनी आदि करनारा, तीर्थंकर, यावत् सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी छे; अने तेओ आकाशमा चालता धर्मचक्रवडे यावत् सहस्राम्रवन नामे उद्यानमां यथायोग्य अवग्रह ग्रहण करी यावद् विहरे छे. तो तेवा प्रकारना अरिहंत भगवंतोना नामगोत्रनुं श्रवण करवुं ते महा फळवाळुं छे, तो अभिगमन वंदनादि माटे तो शुं कहेवुं ?–इत्यादि *औपपातिक सूत्रमां कह्या प्रमाणे जाणवुं, यावत् एक आर्य धार्मिक सुवचननुं श्रवण करवुं महा फळवाळुं छे, तो तेना विपुल अर्थनुं अवधारण करवा माटे तो शुं कहेवुं ? तेथी हुं श्रमण भगवान् महावीरनी पासे जाउं, वांदुं अने नमुं, यावत् तेओनी पर्युपासना करुं, ए मने आ भवमां अने परभवमां यावत् श्रेयने माटे थशे" एम विचारे छे.

१७ * जुओ औपपा० पृ० ५७–२.

१८. एवं २ त्ता जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता तावसावसहं अणुप्पविसति, ता० २ सुबहुं लोही–लोहकडाह० जाव किढिणसंकातिगं च गेण्हइ, गेण्हित्ता तावसावसहाओ पडिनिक्खमति, ताव० २ पडिवडियविब्भंगे हत्थिणागपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासन्ने नाइदूरे जाव– पंजलिउडे पज्जुवासइ। तए णं समणे भगवं महावीरे सिवस्स रायरिसिस्स तीसे य महतिमहालियाए० जाव–आणाए आराहए भवइ।

१९. तए णं से सिवे रायरिसी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा, निसम्म जहा खंदओ, जाव उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमइ, २ सुबहुं लोही–लोहकडाह०जाव–किढिणसंकातिगं एगंते एडेइ, ए० २ सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति, सयमे० २ समणं भगवं महावीरं एवं जहेव उसभदत्ते तहेव पव्वइओ, तहेव इक्कारस अंगाइं अहिज्जति, तहेव सव्वं जाव–सव्वदुक्खप्पहीणे।

२०. [प्र०] 'भंते'त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–जीवा णं भंते! सिज्झमाणा कयरंमि संघयणे सिज्झंति? [उ०] गोयमा! वयरोसभणारायसंघयणे सिज्झंति। एवं जहेव उववाइए तहेव "संघयणं संठाणं उच्चत्तं आउयं च परिवसणा"। एवं सिद्धिगंडिया निरवसेसा भाणियव्वा, जाव–"अव्वाबाहं सोक्खं अणुहोंति सासयं सिद्धा" ॥ सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥ सिवो समत्तो।

एकारससए नवमो उद्देसो समत्तो।

१८. ए प्रमाणे विचार करी ज्यां तापसोनो मठ छे त्यां आवे छे. आवी तापसोना मठमां प्रवेश करी घणी लोढी, लोढाना कडाया यावत् कावड वगेरे उपकरणोने लेइ तापसोना आश्रमथी नीकळे छे. नीकळीने विभंगज्ञानरहित ते शिवराजर्षि हस्तिनापुर नगरनी वच्चोवच्च थईने ज्यां सहस्राम्रवन नामे उद्यान छे, ज्यां श्रमण भगवान् महावीर छे त्यां आवे छे. आवीने श्रमण भगवान् महावीरने त्रण वार प्रदक्षिणा करीने वांदे छे अने नमे छे. वांदी अने नमीने तेओथी बहु नजीक नहीं अने बहुदूर नहीं तेम उभा रही यावत् हाथ जोडी ते शिवराजर्षि श्रमण भगवंत महावीरनी उपासना करे छे. त्यार बाद ते शिवराजर्षिने अने मोटामा मोटी पर्षदने श्रमण भगवंत महावीर धर्मकथा कहे छे. अने यावत् ते शिवराजर्षि आज्ञाना आराधक थाय छे.

शिवराजर्षिनुं महावीरस्वामी पासे आगमन.

१९. पछी ते शिवराजर्षि श्रमण भगवान् महावीरनी पासेथी धर्मने सांभळी अने अवधारी *स्कंदकना प्रकरणमां कह्या प्रमाणे यावत् ईशान कोण तरफ जइ घणी लोढी, लोढाना कडाया यावत् कावड वगेरे तापसोचित उपकरणोने एकांत जग्याए मूके छे. मूकीने पोतानी मेळे पंच मुष्टि लोच करी, श्रमण भगवंत महावीर पासे †ऋषभदत्तनी पेठे प्रव्रज्यानो स्वीकार करे छे, अने ते प्रमाणे अग्यार अंगोनुं अध्ययन करे छे, तथा एज प्रमाणे यावत् ते शिवराजर्षि सर्व दुःखथी मुक्त थाय छे.

शिवराजर्षिनी दीक्षा.

२०. 'हे भगवन्'! एम कही भगवान् गौतम श्रमण भगवंत महावीरने वांदे छे अने नमे छे, वांदी अने नमीने भगवंत गौतमे आ प्रमाणे पूछ्युं—[प्र०] "हे भगवन्! सिद्ध थता जीवो कया संघयणमां सिद्ध थाय? [उ०] हे गौतम! जीवो वज्रऋषभनाराच संघयणमां सिद्ध थाय"—इत्यादि ‡औपपातिकसूत्रमां कह्या प्रमाणे "संघयण, संस्थान, उंचाइ, आयुष, परिवसना (वास)"—अने ए प्रमाणे आखी ¶सिद्धिगंडिका कहेवी; यावत् अव्याबाध (दुःखरहित) शाश्वत सुखने सिद्धो अनुभवे छे. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे' एम कही यावद् विहरे छे.

एकादश शते शिवनामे नवम उद्देशक समाप्त.

---

१९ * जुओ भग० खं० १ श० २ उ० १ पृ० २३८. † ऋषभदत्तनी प्रव्रज्या जुओ भग० खं० ३ श० ९ उ० ३३ पृ० १६५.

२० ‡ सिद्धना स्वरूपनुं वर्णन जुओ औपपा० प० ११२–१.

¶ औपपातिक सूत्रने अन्ते सिद्धना स्वरूपनुं वर्णन करनार "कहिं पडिहया सिद्धा०" इत्यादि बावीश गाथाना प्रकरणने सिद्धिगंडिका कहे छे.

दसमो उद्देसो ।

१. [प्र०] रायगिहे जाव—एवं वयासी—कतिविहे णं भंते ! लोए पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! चउव्विहे लोए पन्नत्ते, तंजहा—दव्वलोए, खेत्तलोए, काललोए, भावलोए ।

२. [प्र०] खेत्तलोए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! तिविहे पन्नत्ते, तंजहा—१ अहोलोयखेत्तलोए, २ तिरियलोयखेत्तलोए, ३ उड्ढलोयखेत्तलोए ।

३. [प्र०] अहोलोयखेत्तलोए णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! सत्तविहे पन्नत्ते, तंजहा—रयणप्पभापुढविअहेलोयखेत्तलोए, जाव—अहेसत्तमापुढविअहोलोयखेत्तलोए ।

४. [प्र०] तिरियलोयखेत्तलोए णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! असंखेज्जविहे पन्नत्ते, तंजहा—जंबुद्दीवे दीवे तिरियलोयखेत्तलोए, जाव—सयंभूरमणसमुद्दे तिरियलोयखेत्तलोए ।

५. [प्र०] उड्ढलोगखेत्तलोए णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! पन्नरसविहे पन्नत्ते, तंजहा—सोहम्मकप्पउड्ढलोगखेत्तलोए, जाव—अच्चुयउड्ढलोए, गेवेज्जविमाणउड्ढलोए, अनुत्तरविमाण० ईसिपब्भारपुढविउड्ढलोगखेत्तलोए ।

६. [प्र०] अहोलोगखेत्तलोए णं भंते ! किंसंठिए पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! तप्पागारसंठिए पन्नत्ते ।

दशम उद्देशक.

लोकना प्रकार.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां [गौतम] यावद् आ प्रमाणे बोल्या—हे भगवन् ! लोक केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! लोक चार प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—१ द्रव्यलोक, २ क्षेत्रलोक, ३ काललोक अने ४ भावलोक.

क्षेत्रलोकना प्रकार.

२. [प्र०] हे भगवन् ! क्षेत्रलोक केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! त्रण प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—१ अधोलोकक्षेत्रलोक, २ तिर्यग्लोकक्षेत्रलोक अने ३ ऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक.

अधोलोकक्षेत्रलोकना प्रकार.

३. [प्र०] हे भगवन् ! अधोलोकक्षेत्रलोक केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! सात प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—१ रत्नप्रभापृथिवीअधोलोकक्षेत्रलोक, यावत् ७ अधःसप्तमपृथिवीअधोलोकक्षेत्रलोक.

तिर्यक् क्षेत्रलोक.

४. [प्र०] हे भगवन् ! तिर्यग्लोकक्षेत्रलोक केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! असंख्य प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—जंबूद्वीपतिर्यग्लोकक्षेत्रलोक, यावत् स्वयंभूरमणसमुद्रतिर्यग्लोकक्षेत्रलोक.

ऊर्ध्वलोक-क्षेत्रलोकना प्रकार.

५. [प्र०] हे भगवन् ! ऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! पंदर प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे—१ सौधर्मकल्पऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक, यावद् १२ अच्युतकल्पऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक, १३ ग्रैवेयकविमानऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक, १४ अनुत्तरविमानऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक अने १५ ईषत्प्राग्भारपृथिवीऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक.

अधोलोकनुं संस्थान.

६. [प्र०] हे भगवन् ! अधोलोकक्षेत्रलोक केवा संस्थाने छे ? [उ०] हे गौतम ! अधोलोक त्रापाने आकारे छे.

७. [प्र०] तिरियलोयखेत्तलोए णं भंते ! किंसंठिए पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! झल्लरिसंठिए पन्नत्ते ।

८. [प्र०] उड्ढलोयखेत्तलोय–पुच्छा [उ०] उड्ढमुइंगाकारसंठिए पन्नत्ते ।

९. [प्र०] लोए णं भंते ! किंसंठिए पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! सुपइट्ठगसंठिए लोए पन्नत्ते, तंजहा–हेट्ठा विच्छिन्ने, मज्झे संखित्ते, जहा सत्तमसए पढमुद्देसए जाव अंतं करेंति ।

१०. [प्र०] अलोए णं भंते ! किंसंठिए पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! झुसिरगोलसंठिए पन्नत्ते ।

११. [प्र०] अहेलोगखेत्तलोए णं भंते ! किं जीवा, जीवदेसा, जीवपएसा ? [उ०] एवं जहा इंदा दिसा तहेव निरवसेसं भाणियव्वं, जाव–अद्धासमए ।

१२. [प्र०] तिरियलोयखेत्तलोए णं भंते ! किं जीवा० ? [उ०] एवं चेव, एवं उड्ढलोयखेत्तलोए वि, नवरं अरूवी छव्विहा, अद्धासमओ नत्थि ।

१३. [प्र०] लोए णं भंते किं जीवा० ? [उ०] जहा बितियसए अत्थिउद्देसए लोयागासे, नवरं अरूवी सत्तविहा, जाव–अहम्मत्थिकायस्स पएसा, नोआगासत्थिकाए, आगासत्थिकायस्स देसे, आगासत्थिकायपएसा, अद्धासमए, सेसं तं चेव ।

१४. [प्र०] अलोए णं भंते ! किं जीवा० ? [उ०] एवं जहा अत्थिकायउद्देसए अलोयागासे, तहेव निरवसेसं जाव–अणंतभागूणे ।

७. [प्र०] हे भगवन् ! तिर्यग्लोकक्षेत्रलोक केवा संस्थाने छे ? [उ०] हे गौतम ! ते झालरने आकारे छे.

तिर्यग्लोकनुं संस्थान.

८. [प्र०] हे भगवन् ! ऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक केवा आकारे छे ? [उ०] हे गौतम ! उभा मृदंगने आकारे छे.

ऊर्ध्वलोकनुं संस्थान.

९. [प्र०] हे भगवन् ! लोक केवा आकारे संस्थित छे ? [उ०] हे गौतम ! लोक सुप्रतिष्ठकने आकारे संस्थित छे, ते आ प्रमाणे–"नीचे पहोळो, मध्यभागमां संक्षिप्त–संकीर्ण"–इत्यादि *सातमा शतकना प्रथम उद्देशकमां कह्या प्रमाणे कहेवुं. [ते लोकने उत्पन्न ज्ञान दर्शनने धारण करनारा केवलज्ञानी जाणे छे अने त्यार पछी सिद्ध थाय छे] यावद् 'सर्व दुःखोनो अन्त करे छे'.

लोकनुं संस्थान.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! अलोक केवा आकारे कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! अलोक पोला गोळने आकारे कह्यो छे.

अलोकनुं संस्थान.

११. [प्र०] हे भगवन् ! अधोलोकक्षेत्रलोक शुं जीवरूप छे, जीवदेशरूप छे, जीवप्रदेशरूप छे इत्यादि ? [उ०] हे गौतम ! जेम † ऐन्द्री दिशा संबन्धे कह्युं छे ते प्रमाणे सर्व अहिं जाणवुं, यावद् 'अद्धासमय (काल) रूप छे'.

अधोलोक जीवरूप छे इत्यादि प्रश्न.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! तिर्यग्लोक शुं जीवरूप छे इत्यादि ? [उ०] पूर्ववत् जाणवुं. ए प्रमाणे ऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोक संबन्धे पण जाणवुं; परन्तु विशेष ए छे के ऊर्ध्वलोकमां अरूपी द्रव्य छ प्रकारे छे, कारण के त्यां अद्धा समय नथी.

तिर्यग्लोक जीवरूप छे इत्यादि.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! लोक शुं जीव छे इत्यादि ? [उ०] बीजा शतकना ‡अस्तिउद्देशकमां लोकाकाशने विषे कह्युं छे ते प्रमाणे अहिं जाणवुं. परन्तु विशेष ए छे के अहिं अरूपी सात प्रकारे जाणवा, ¶यावद् ४ 'अधर्मास्तिकायना प्रदेशो, ५ नोआकाशास्तिकाय–रूप, आकाशास्तिकायनो देश, ६ आकाशास्तिकायना प्रदेशो अने ७ अद्धासमय. बाकी पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं.

लोक जीवरूप छे इत्यादि.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! अलोक शुं जीव छे इत्यादि ? [उ०] जेम §अस्तिकायउद्देशकमां अलोकाकाशने विषे कह्युं छे ते प्रमाणे बधुं अहीं जाणवुं, यावत् ते [सर्वाकाशना] 'अनन्तमा भाग न्यून छे'.

अलोकाकाश जीवरूप छे इत्यादि.

---

९ * लोकनुं संस्थान जुओ भग० खं० ३ श० ७ उ० १ पृ० २.

११ † जुओ ऐन्द्रीदिशासंबन्धे प्रश्न भग० खं० ३ श० १० उ १. पृ० १८९.

१३ ‡ भग० खं० १ श० २ उ० १० पृ० ३१०. सू० ६६.

१३ ¶ १ धर्मास्तिकाय, २ धर्मास्तिकायना प्रदेशो, ३ अधर्मास्तिकाय, ४ अधर्मास्तिकायना प्रदेशो, ५ आकाशास्तिकायनो देश, ६ आकाशास्तिकायना प्रदेशो, अने ७ काल.—ए अरूपीना सात प्रकार छे. तेमां प्रथम धर्मास्तिकाय छे. कारण के ते संपूर्ण लोकने विषे विद्यमान छे. धर्मास्तिकायनो देश नथी, केमके लोकमां अखंड धर्मास्तिकाय छे. तथा धर्मास्तिकायना प्रदेशो छे, कारण के धर्मास्तिकाय ते प्रदेशोना समुदायरूप छे. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकायना पण बे भेद जाणवा. आकाशास्तिकाय नथी, कारण के लोकमां तेनो एक भाग छे, अने तेथीज आकाशास्तिकायनो देश छे. आकाशास्तिकायना प्रदेशो छे. तथा काल द्रव्य छे.—टीका.

१४ § भग० खं० १ श० २ उ० १० पृ० ३१० सू० ६७.

१५. [प्र०] अहेलोगखेत्तलोगस्स णं भंते! एगंमि आगासपपसे किं जीवा, जीवदेसा, जीवप्पएसा, अजीवा, अजीवदेसा, अजीवपपसा? [उ०] गोयमा! नो जीवा, जीवदेसा वि, जीवपपसा वि, अजीवा वि, अजीवदेसा वि, अजीवपपसा वि। जे जीवदेसा ते नियमा १ एगिंदियदेसा, २ अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स देसे, ३ अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियाण य देसा। एवं मज्झिल्लविरहिओ जाव-अणिंदिएसु, जाव-अहवा एगिंदियदेसा य अणिंदियदेसा य। जे जीवपपसा ते नियमा १ एगिंदियपपसा, २ अहवा एगिंदियपपसा य बेंदियस्स पपसा, ३ अहवा एगिंदियपपसा य बेइंदियाण य पपसा, एवं आइल्लविरहिओ जाव पंचिंदिएसु, अणिंदिएसु तियभंगो। जे अजीवा ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-रूवी अजीवा य अरूवी अजीवा य। रूवी तहेव, जे अरूवी अजीवा ते पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा-१ नोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे, २ धम्मत्थिकायस्स पपसे, एवं ४ अहम्मत्थिकायस्स वि, ५ अद्धासमए।

१६. [प्र०] तिरियलोगखेत्तलोगस्स णं भंते! एगंमि आगासपपसे किं जीवा०? [उ०] एवं जहा अहोलोगखेत्तलोगस्स तहेव, एवं उड्ढलोगखेत्तलोगस्स वि, नवरं अद्धासमओ नत्थि, अरूवी चउव्विहा। लोगस्स जहा अहेलोगखेत्तलोगस्स एगंमि आगासपपसे।

१७. [प्र०] अलोगस्स णं भंते! एगंमि आगासपपसे पुच्छा [उ०] गोयमा! नो जीवा, नो जीवदेसा, तं चेव जाव अणंतेहिं अगुरुयलहुयगुणेहिं संजुत्ते सव्वागासस्स अणंतभागूणे।

१८. दव्वओ णं अहेलोगखेत्तलोए अणंताइं जीवदव्वाइं, अणंताइं अजीवदव्वाइं, अणंता जीवाजीवदव्वा। एवं तिरियलोयखेत्तलोए वि, एवं उड्ढलोयखेत्तलोए वि। दव्वओ णं अलोए णेवत्थि जीवदव्वा, नेवत्थि अजीवदव्वा, नेवत्थि जीवाजीवदव्वा, एगे

अधोलोकना एक आकाशप्रदेशमां शुं जीवो छे इत्यादि.

१५. [प्र०] हे भगवन्! अधोलोकक्षेत्रलोकना एक आकाशप्रदेशमां शुं १ जीवो, २ जीवना देशो, ३ अजीवो, ४ अजीवोना देशो अने ५ अजीवना प्रदेशो छे? [उ०] हे गौतम! जीवो नथी, पण जीवोना देशो, जीवोना प्रदेशो, अजीवो, अजीवना देशो अने अजीवना प्रदेशो छे. तेमां त्यां जे जीवोना देशो छे ते अवश्य १ एकेन्द्रियजीवोना देशो छे २ अथवा एकेन्द्रिय जीवोना देशो अने बेइन्द्रिय जीवनो देश छे, ३ अथवा एकेन्द्रिय जीवोना देशो अने बेइन्द्रियोना देशो छे. ए प्रमाणे *मध्यम भंगरहित बाकीना विकल्पो यावद् अनिन्द्रियो-सिद्धो संबन्धे जाणवा. यावद् 'एकेन्द्रियोना देशो अने अनिन्द्रियोना देशो' छे, तथा त्यां जे जीवना प्रदेशो छे ते अवश्य एकेन्द्रिय जीवोना प्रदेशो छे, १ अथवा एकेन्द्रिय जीवोना प्रदेशो अने एक बेइन्द्रिय जीवना प्रदेशो छे, २ अथवा एकेन्द्रिय जीवोना प्रदेशो अने बेइन्द्रियोना प्रदेशो छे. ए प्रमाणे यावत् पंचेन्द्रिय अने अनिन्द्रियो संबन्धे प्रथम भंग शिवाय त्रण भांगा जाणवा. तथा त्यां जे अजीवो छे ते बे प्रकारना कह्या छे. ते आ प्रमाणे-रूपिअजीव अने अरूपिअजीव. तेमां रूपिअजीवो पूर्व प्रमाणे जाणवा. अने जे अरूपिअजीवो छे ते पांच प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे-१ †नोधर्मास्तिकाय धर्मास्तिकायनो देश, २ धर्मास्तिकायनो प्रदेश, ए प्रमाणे ४ अधर्मास्तिकाय संबन्धे पण जाणवुं. अने ५ अद्धा समय.

तिर्यग्लोकना एक आकाशप्रदेशमां शुं जीवो छे इत्यादि. लोकना एक आकाश प्रदेशमां शुं जीव होय?

१६. [प्र०] हे भगवन्! तिर्यग्लोकक्षेत्रलोकना एक आकाश प्रदेशमां शुं जीवो छे? इत्यादि [उ०] जेम अधोलोकक्षेत्रलोकना संबन्धे कह्युं तेम अहीं बधुं जाणवुं. ए प्रमाणे ऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोकना एक आकाश प्रदेशने विषे पण जाणवुं, परन्तु विशेष ए छे के, त्यां अद्धासमय नथी, माटे अरूपी चार प्रकारना छे, लोकना एक आकाश प्रदेशमां अधोलोकक्षेत्रलोकना एक आकाश प्रदेशमां जेम कह्युं छे तेम जाणवुं.

अलोकना एक आकाशप्रदेशमां जीव होय?

१७. [प्र०] हे भगवन्! अलोकना एक आकाश प्रदेश संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम! त्यां 'जीवो नथी, जीव देशो नथी'-इत्यादि पूर्वनी पेठे [सू. १४] कहेवुं, यावत् अलोक अनन्त अगुरुलघुगुणोथी संयुक्त छे अने सर्वाकाशना अनंतमा भागे न्यून छे.

द्रव्यादिथी अधोलोकादिनो विचार.

१८. [प्र०] हे भगवन्! द्रव्यथी अधोलोकक्षेत्रलोकमां अनन्त जीव द्रव्यो छे, अनंत अजीव द्रव्यो छे अने अनंत जीवाजीव द्रव्यो छे. ए प्रमाणे तिर्यग्लोकक्षेत्रलोकमां तथा ऊर्ध्वलोकक्षेत्रलोकमां पण जाणवुं. द्रव्यथी अलोकमां जीव द्रव्यो नथी, अजीव द्रव्यो नथी अने जीवाजीव द्रव्यो नथी, पण एक अजीवद्रव्यनो देश छे, यावत् सर्वाकाशना अनंतमा भागे न्यून छे. काळथी अधोलोकक्षेत्रलोक कोइ

---

१५ * श० १० उ० १ प्रदर्शित एकेन्द्रिय जीवोना देशो अने बेइन्द्रिय जीवना देशो-ए मध्यम भांगो होतो नथी, कारणके एक आकाशप्रदेशमां एक बेइन्द्रिय जीवना घणा देशो संभवित नथी.

† नोधर्मास्तिकाय-अधोलोकना एक आकाशप्रदेशमां संपूर्ण धर्मास्तिकाय नथी. पण तेनो देश अने प्रदेश होय छे तेथी तेने नोधर्मास्तिकायरूप कहेल छे.

अजीवदव्वदेसे जाव सव्वागासअणंतभागूणे । कालओ णं अहेलोयखेत्तलोए न कयाइ नासि, जाव निच्चे, एवं जाव अलोगे। भावओ णं अहेलोगखेत्तलोए अणंता वण्णपज्जवा, जहा खंदए, जाव अणंता अगुरुयलहुयपज्जवा, एवं जाव लोए। भावओ णं अलोए नेवत्थि वण्णपज्जवा, जाव नेवत्थि अगुरुयलहुयपज्जवा, एगे अजीवदव्वदेसे, जाव अणंतभागूणे ।

१९. [प्र०] लोए णं भंते ! के महालए पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीव० जाव–परिक्खेवेणं । तेणं कालेणं तेणं समएणं छ देवा महिड्डीया जाव–महेसक्खा जंबुद्दीवे दीवे मंदरे पव्वए मंदरचूलियं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता णं चिट्ठेज्जा, अहेणं चत्तारि दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ चत्तारि बलिपिंडे गहाय जंबुद्दीवस्स दीवस्स चउसु वि दिसासु बहियाऽभिमुहीओ ठिच्चा ते चत्तारि बलिपिंडे जमगसमगं बहियाभिमुहे पक्खिवेज्जा, पभू णं गोयमा ! ताओ एगमेगे देवे ते चत्तारि बलिपिंडे धरणितलमसंपत्ते खिप्पामेव पडिसाहरित्तए, ते णं गोयमा ! देवा ताए उक्किट्ठाए जाव देवगईए एगे देवे पुरच्छाभिमुहे पयाते, एवं दाहिणाभिमुहे, एवं पच्चत्थाभिमुहे, एवं उत्तराभिमुहे, एवं उड्ढाभि० एगे देवे अहोभिमुहे पयाए, तेणं कालेणं तेणं समएणं वाससहस्साउए दारए पयाए, तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पहीणा भवंति, णो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति । तए णं तस्स दारगस्स आउए पहीणे भवति, णो चेव णं जाव संपाउणंति, तए णं तस्स दारगस्स अट्ठिमिंजा पहीणा भवंति, णो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति । तए णं तस्स दारगस्स आसत्तमे वि कुलवंसे पहीणे भवति, नो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति । तए णं तस्स दारगस्स नामगोए वि पहीणे भवति, णो चेव णं ते देवा लोगंतं संपाउणंति, तेसि णं भंते ! देवाणं किं गए बहुए अगएबहुए ? गोयमा ! गए बहुए नो अगए बहुए, गयाउ से अगए असंखेज्जइभागे, अगयाउ से गए असंखेज्जगुणे, लोए णं गोयमा ! ए महालए पन्नत्ते ।

२०. [प्र०] अलोए णं भंते ! के महालए पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! अयण्णं समयखेत्ते पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं, जहा खंदए, जाव–परिक्खेवेणं । तेणं कालेणं तेणं समएणं दस देवा महिड्डिया तहेव जाव–संपरिक्खित्ता णं संचिट्ठेज्जा, अहे णं अट्ठ दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ अट्ठ बलिपिंडे गहाय माणुसुत्तरस्स पव्वयस्स चउसु वि दिसासु चउसु

दिवस न हतो एम नथी, यावत् नित्य छे. ए प्रमाणे यावत् अलोक जाणवो. भावथी अधोलोकक्षेत्रलोकमां 'अनंत वर्ण पर्यवो छे'–इत्यादि जेम *स्कंदकना अधिकारमां कह्युं छे तेम जाणवुं, यावद् अनंत अगुरुलघुपर्यवो छे. ए प्रमाणे यावत् लोक सुधी जाणवुं. भावथी अलोकमां वर्णपर्यवो नथी, †यावत् अगुरुलघुपर्यवो नथी, पण एक अजीवद्रव्यनो देश छे अने ते सर्वाकाशना अनंतमा भागे न्यून छे.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! लोक केटलो मोटो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! आ जंबूद्वीप नामे द्वीप सर्व द्वीपो अने समुद्रोनी अभ्यंतर छे, यावत् ‡परिधि युक्त छे. ते काले–ते समये महर्धिक अने यावत् महासुखवाळा छ देवो जंबूद्वीपमां मेरुपर्वतने विषे मेरुपर्वतनी चूलिकाने चारे तरफ वींटाइने उभा रहे, अने नीचे मोटी चार दिक्कुमारीओ चार बलिपिंडने ग्रहण करीने जंबूद्वीपनी चारे दिशामां बहार मुख राखीने उभी रहे, पछी तेओ ते चारे बलिपिंडने एक साथे बाहेर फेंके, तोपण हे गौतम ! तेमांनो एक एक देव ते चार बलिपिंडने पृथिवी उपर पड्या पहेलां शीघ्र ग्रहण करवा समर्थ छे. हे गौतम ! एवी गतिवाळा ते देवोमांथी एक देव उत्कृष्ट यावद् त्वरित देवगतिवडे पूर्व दिशा तरफ गयो, ए प्रमाणे एक दक्षिण दिशा तरफ गयो, ए प्रमाणे एक पश्चिम दिशामां, एक उत्तर दिशामां, एक ऊर्ध्व दिशामां अने एक देव अधोदिशामां गयो. हवे ते काले, ते समये हजार वर्षना आयुषवाळो एक बाळक उत्पन्न थयो, त्यार पछी ते बाळकना मातापिता मरण पाम्या, तोपण तेटला वखत सुधी पण ते गएला देवो लोकना अंतने प्राप्त करी शकता नथी. त्यार बाद ते बाळकनुं आयुष क्षीण थयुं–पूरुं थयुं, तोपण ते देवो लोकान्तने प्राप्त करी शकता नथी. पछी ते बाळकना अस्थि अने मज्जा नाश पाम्या, तोपण ते देवो लोकना अंतने पामी शकता नथी, त्यार बाद सात पेढी सुधी तेना कुलवंश नष्ट थया, तोपण ते देवो लोकांतने प्राप्त करी शकता नथी. पछी ते बाळकनुं नामगोत्र पण नष्ट थयुं तोपण ते देवो लोकना अंतने पामी शकता नथी. [प्र०] जो एम छे तो हे भगवन् ! ते देवोए ओळंगेलो मार्ग घणो छे के ओळंग्या विनानो मार्ग घणो छे ? [उ०] हे गौतम ! ते देवो वडे ओळंगायेल–गमन करायेल–क्षेत्र वधारे छे, पण नहि ओळंगायेलुं–नहि गमन करायेलुं क्षेत्र वधारे नथी. गमन करायेला क्षेत्रथी नहि गमन करायेलुं क्षेत्र असंख्यातमा भागे छे. अने नहि गमन करायेला क्षेत्रथी गमन करायेलुं क्षेत्र असंख्यात गुण छे. हे गौतम ! लोक एटलो मोटो कह्यो छे.

लोकनो विस्तार.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! अलोक केटलो मोटो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! 'आ मनुष्यक्षेत्र लंबाइ अने पहोळाइमां पीस्तालीश

अलोकनो विस्तार.

---

१८ * जुओ स्कंदकना अधिकारमां लोकना स्वरूपनुं वर्णन. भग० खं० १ श० २ उ० १ पृ० २३५.

† चार स्पर्शवाळा पुद्गलस्कन्धो तथा अरूपी द्रव्यमां अगुरुलघु पर्यायो होय छे, अने ते द्रव्यो अलोकमां नहि होवाथी त्यां अगुरुलघुपर्यायो नथी–टीका.

१९ ‡ त्रण लाख, सोळ हजार, बसो सत्यावीश योजन, त्रण कोश, एकसो अठ्यावीश धनुष अने कंइक अधिक साडा तेर आंगळ–एटली जंबूद्वीपनी परिधि छे–टीका.

वि विदिसासु बहियाभिमुहीओ ठिच्चा ते अट्ठ बलिपिंडे जमगसमगं बहियाभिमुहीओ पक्खिवेज्जा, पभू णं गोयमा ! तओ एग-मेगे देवे ते अट्ठ बलिपिंडे धरणितलमसंपत्ते खिप्पामेव पडिसाहरित्तए; ते णं गोयमा ! देवा ताए उक्किट्ठाए जाव देवगईए लोगंते ठिच्चा असब्भावपट्ठवणाए एगे देवे पुरच्छाभिमुहे पयाए, एगे देवे दाहिणपुरच्छाभिमुहे पयाए, एवं जाव–उत्तरपु-रच्छाभिमुहे, एगे देवे उड्ढाभिमुहे, एगे देवे अहोभिमुहे पयाए । तेणं कालेणं तेणं समएणं वाससयसहस्साउए दारए पयाए । तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पहीणा भवंति, नो चेव णं ते देवा अलोयंतं संपाउणंति, तं चेव जाव–तेसिं णं देवाणं किं गए बहुए अगए बहुए ? गोयमा ! नो गए बहुए अगए बहुए, गयाउ से अगए अणंतगुणे, अगयाउ से गए अणंतभागे, अलोए णं गोयमा ! एमहालए पन्नत्ते ।

२१. [प्र०] लोगस्स णं भंते ! एगंमि आगासपएसे जे एगिंदियपएसा जाव–पंचिंदियपएसा अणिंदियपदेसा अन्नमन्न-बद्धा, अन्नमन्नपुट्ठा, जाव–अन्नमन्नसमभरघडत्ताए चिट्ठंति ? अत्थि णं भंते ! अन्नमन्नस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पा-यंति, छविच्छेदं वा करेंति ? [उ०] णो तिणट्ठे समट्ठे । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–लोगस्स णं एगंमि आगासपएसे जे एगिंदियपएसा जाव चिट्ठंति, णत्थि णं भंते ! अन्नमन्नस्स किंचि आबाहं वा जाव करेंति ?, [उ०] गोयमा ! से जहानामए नट्टिया सिया सिंगारागारचारुवेसा, जाव–कलिया रंगट्ठाणंसि जणसयाउलंसि जणसयसहस्साउलंसि बत्तीसइविहस्स नट्टस्स अन्नयरं नट्टविहिं उवदंसेज्जा, से नूणं गोयमा ! ते पेच्छगा तं नट्टियं अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोएंति? हंता समभिलोएंति, ताओ णं गोयमा ! दिट्ठीओ तंसि नट्टियंसि सव्वओ समंता संनिपडियाओ ?, हंता सन्निपडियाओ, अत्थि णं गोयमा ! ताओ दिट्ठीओ तीसे नट्टियाए किंचि वि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएंति, छविच्छेदं वा करेंति ?, णो तिणट्ठे समट्ठे । अहवा सा नट्टिया तासिं दिट्ठीणं किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएति, छविच्छेदं वा करेइ ? णो तिणट्ठे समट्ठे । ताओ वा दिट्ठीओ अन्नमन्नाए दिट्ठीए किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएंति, छविच्छेदं वा करेन्ति ?, णो तिणट्ठे समट्ठे । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ–तं चेव जाव छविच्छेदं वा करेंति ।

लाख योजन छे'–इत्यादि जेम *स्कंदकना अधिकारमां कह्युं छे तेम जाणवुं, यावत् ते परिधियुक्त छे. ते काले–ते समये दस महर्धिक देवो पूर्वनी पेठे ते मनुष्य लोकनी चारे बाजु वींटाइने उभा रहे. तेनी नीचे मोटी आठ दिक्कुमारीओ आठ बलिपिंडने लेइने मानुषोत्तर पर्वतनी चारे दिशामां अने चारे विदिशामां बाह्याभिमुख उभी रहे अने ते आठ बलि पिंडने लइने एकज साथे मानुषोत्तर पर्वतनी बाहे-रनी दिशामां फेंके, तो हे गौतम ! तेमांनो कोई पण एक देव ते आठ बलिपिंडोने पृथिवी उपर पड्या पहेलां शीघ्र संहरवा समर्थ छे. हे गौतम ! ते देवो उत्कृष्ट, यावद् त्वरित देवगतिथी लोकना अंतमां उभा रही असत् कल्पना वडे एक देव पूर्व दिशा तरफ जाय, एक देव दक्षिणपूर्व तरफ जाय, अने ए प्रमाणे यावत् एक देव पूर्व तरफ जाय, वळी एक देव ऊर्ध्व दिशा तरफ जाय, अने एक देव अधोदिशा तरफ जाय; ते काले–ते समये लाख वर्षना आयुषवाळा एक बालकनो जन्म थाय, पछी तेना मातापिता मरण पामे तोपण ते देवो अलो-कना अन्तने प्राप्त करी शकता नथी–इत्यादि पूर्वे कहेलुं. अहीं कहेवुं. यावत् [प्र०] हे भगवन् ! ते देवोनुं गमन करायेलुं क्षेत्र बहु छे के नहि गमन करायेलुं क्षेत्र बहु छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओनुं गमन करायेलुं क्षेत्र बहु नथी, पण नहि गमन करायेलुं क्षेत्र बहु छे. गमन करायेला क्षेत्र करतां नहि गमन करायेलुं क्षेत्र अनन्तगुण छे, अने नहि गमन करायेला क्षेत्र करतां गमन करायेलुं क्षेत्र अनंतमे भागे छे. हे गौतम ! अलोक एटलो मोटो कह्यो छे.

लोकना एक आकाश प्रदेशमां जीवना प्रदेशो परस्पर संबद्ध छे अने एक बीजाने पीडा उत्पन्न करे ?

२१. [प्र०] हे भगवन् ! लोकना एक आकाशप्रदेशमां जे एकेन्द्रिय जीवोना प्रदेशो छे, यावत् पंचेन्द्रियना प्रदेशो अने अनि-न्द्रियना प्रदेशो छे ते शुं बधा परस्पर बद्ध छे, अन्योऽन्य स्पृष्ट छे, यावद् अन्योन्य संबद्ध छे ? वळी हे भगवन् ! ते बधा परस्पर एक बीजाने कांइ पण आबाधा (पीडा) व्याबाधा (विशेष पीडा) उत्पन्न करे, तथा अवयवनो छेद करे ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ यथार्थ नथी. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के लोकना एक आकाशप्रदेशमां जे एकेन्द्रियना प्रदेशो यावत् रहे छे, अने ते परस्पर एक बीजाने कांइ पण आबाधा वा व्याबाधा करता नथी ? [उ०] हे गौतम ! जेम शृंगारना आकार सहित सुन्दर वेषवाळी अने संगीतादिने विषे निपुणतावाळी कोई एक नर्तकी होय अने ते सेंकडो अथवा लाखो माणसोथी भरेला रंगस्थानमां बत्रीश प्रकारना नाट्य-मांनुं कोइ एक प्रकारनुं नाट्य देखाडे तो हे गौतम ! ते प्रेक्षको शुं ते नर्तकीने अनिमेष दृष्टिथी चोतरफ जुए ? हा, भगवन् ! जुए. तो हे गौतम ! ते प्रेक्षकोनी दृष्टिओ शुं ते नर्तकीने विषे चारे बाजुथी पडेली होय छे ? हा, पडेली होय छे. हे गौतम ! प्रेक्षकोनी ते दृष्टिओ ते नर्तकीने कांइ पण आबाधा वा व्याबाधा उत्पन्न करे, अथवा तेना अवयवनो छेद करे ? हे भगवन् ! ए अर्थ योग्य नथी. अथवा ते नर्तकी ते प्रेक्षकोनी दृष्टिओने कंइ पण आबाधा के व्याबाधा उत्पन्न करे अथवा तेना अवयवनो छेद करे ? ए अर्थ यथार्थ नथी. अथवा ते दृष्टिओ परस्पर एक बीजी दृष्टिओने कांइपण आबाधा के व्याबाधा उत्पन्न करे, अथवा तेना अवयवनो छेद करे ? ए अर्थ यथार्थ नथी. अर्थात् न करे, ते हेतुथी एम कहेवाय छे के पूर्वोक्त यावत् अवयवनो छेद करता नथी.'

२० * स्कंदकना अधिकारमां सिद्धिक्षेत्रनुं वर्णन जुओ भग० खं० १ श० २ उ० १ पृ० २३५.

२२. [प्र०] लोगस्स णं भंते ! एगंमि आगासपए जहन्नपए जीवपएसाणं, उक्कोसपए जीवपएसाणं, सव्वजीवाण य कयरे कयरे० जाव विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सव्वत्थोवा लोगस्स एगंमि आगासपएसे जहन्नपए जीवपएसा, सव्वजीवा असंखेज्जगुणा, उक्कोसपए जीवपएसा विसेसाहिया । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

एक्कारससए दसमोद्देसो समत्तो ।

२२. [प्र०] हे भगवन् ! लोकना एक आकाशप्रदेशमां जघन्यपदे रहेला जीवप्रदेशो, उत्कृष्टपदे रहेला जीवप्रदेशो अने सर्व जीवोमां कोण कोना करतां यावद् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! लोकना एक आकाशप्रदेशमां जघन्य पदे रहेला जीवप्रदेशो सौथी थोडा छे, तेना करतां सर्व जीवो असंख्यात गुण छे, अने ते करतां पण उत्कृष्ट पदे रहेला जीवप्रदेशो विशेषाधिक छे. हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे, एम कही [भगवान् गौतम] यावद् विहरे छे.

एक आकाशप्रदेशमां जघन्य अने उत्कृष्ट पदे रहेला जीव प्रदेशो तथा सर्व जीवोनुं अल्पबहुत्व.

एकादश शते दशम उद्देश समाप्त.

एक्कारसमो उद्देसो।

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियग्गामे णामं नगरे होत्था, वण्णओ। दूतिपलासए चेइए, वण्णओ। जाव–पुढविसिलापट्टओ। तत्थ णं वाणियगामे नगरे सुदंसणे णामं सेट्ठी परिवसइ, अड्ढे, जाव–अपरिभूए समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव–विहरइ। सामी समोसढे, जाव–परिसा पज्जुवासइ। तए णं से सुदंसणे सेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ–तुट्ठे ण्हाए कय–जाव–पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, साओ० २ सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं पायविहारचारेणं महयापुरिसवग्गुरापरिक्खित्ते वाणियगामं नगरं मज्झं–मज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव दूतिपलासे चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ। तेणेव० २ समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छति, तंजहा–सच्चित्ताणं दव्वाणं० जहा उसभदत्तो, जाव–तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ। तए णं समणे भगवं महावीरे सुदंसणस्स सेट्ठिस्स तीसे य महतिमहालयाए जाव–आराहए भवइ। तए णं से सुदंसणे सेट्ठी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा, निसम्म हट्ठ–तुट्ठ० उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठाए० २ –त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव–नमंसित्ता एवं वयासी—

२. [प्र०] कइविहे णं भंते! काले पन्नत्ते? [उ०] सुदंसणा! चउव्विहे काले पन्नत्ते, तंजहा–१ पमाणकाले, २ अहाउनिव्वत्तिकाले, ३ मरणकाले, ४ अद्धाकाले।

अगीयारमो उद्देशक.

वाणिज्यग्राम. दूतिपलाशक चैत्य.

१. ते काले, ते समये वाणिज्यग्राम नामे नगर हतुं. वर्णन. दूतिपलाशक चैत्य हतुं. वर्णन. यावत् पृथिवीशिलापट्ट हतो. ते वाणिज्यग्राम नगरमां सुदर्शन नामे शेठ रहेतो हतो; ते आढ्य–धनिक, यावत् अपरिभूत–कोइथी पराभव न पामे तेवो, जीवा–जीव तत्त्वनो जाणनार श्रमणोपासक हतो. त्यां महावीर स्वामी समवसर्या. यावत् पर्षद्–जनसमुदाये पर्युपासना करे छे. त्यार बाद महावीर स्वामी आव्यानी आ वात सांभळी सुदर्शन शेठ हर्षित अने संतुष्ट थया, अने स्नान करी, बलिकर्म यावत् मंगलरूप प्रायश्चित्त करी, सर्व अलंकारथी विभूषित थइ, पोताना घेरथी बहार नीकळे छे, बहार नीकळीने माथे धारण कराता कोरंटकपुष्पनी माळावाळा छत्र सहित पगे चालीने घणा मनुष्योना समुदायरूप वागुरा–बन्धनथी विंटायेला ते सुदर्शन शेठ वाणिज्यग्राम नगरनी वच्चोवच्च थईने नीकळे छे. नीकळीने ज्यां दूतिपलाश चैत्य छे, अने ज्यां श्रमण भगवंत महावीर छे त्यां आवे छे, आवीने श्रमण भगवंत महावीरनी पासे पांच प्रकारना अभिगमवडे जाय छे, ते अभिगमो आ प्रमाणे छे–१ 'सचित्त द्रव्योनो त्याग करवो'–इत्यादि जेम *ऋषभदत्तना प्रकरणमां कह्युं छे तेम अहीं जाणवुं, यावत् ते सुदर्शन शेठ त्रण प्रकारनी पर्युपासना वडे पर्युपासे छे. त्यार पछी श्रमण भगवंत महावीरे ते सुदर्शन शेठने अने ते मोटामा मोटी सभाने धर्मकथा कही, यावत् ते सुदर्शन शेठ आराधक थाय छे. त्यार पछी सुदर्शन शेठ श्रमण भगवंत महावीर पासेथी धर्म सांभळी अने अवधारी हर्षित अने संतुष्ट थइ उभा थाय छे, उभा थइने श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार प्रदक्षिणा करी, यावद् नमस्कार करी तेणे आ प्रमाणे पूछ्युं—

कालना प्रकार.

२. [प्र०] हे भगवन्! काल केटला प्रकारनो कह्यो छे? [उ०] हे सुदर्शन! काल चार प्रकारनो कह्यो छे; ते आ प्रमाणे–१ प्रमाणकाल, २ यथायुर्निर्वृत्तिकाल, ३ मरणकाल अने ४ अद्धाकाल.

---

१. * भग० खं० १ श० ९ उ० ३३ पृ० १६४.

३. [प्र०] से किं तं पमाणकाले? [उ०] पमाणकाले दुविहे पन्नत्ते, तं जहा–दिवसप्पमाणकाले, राइप्पमाणकाले य। चउपोरिसिए दिवसे चउपोरिसिया राई भवइ। उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ।

४. [प्र०] जदा णं भंते! उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवति, तदा णं कतिभागमुहुत्तभागेणं परिहायमाणी २ जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवति? जदा णं जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवति, तदा णं कतिभागमुहुत्तभागेणं परिवड्ढमाणी २ उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ? [उ०] सुदंसणा! जदा णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ तदा णं बावीससयभागमुहुत्तभागेणं परिहायमाणी २ जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ। जदा णं जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ तया णं बावीससयभागमुहुत्तभागेणं परिवड्ढमाणी २ उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवति।

५. [प्र०] कदा णं भंते! उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स राईए वा पोरिसी भवइ, कदा वा जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ? [उ०] सुदंसणा! जदा णं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ तदा णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स पोरिसी भवइ, जहन्निया तिमुहुत्ता राईए पोरिसी भवइ। जया णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्तिया राई भवति, जहन्निए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तदा णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता राईए पोरिसी भवइ, जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स पोरिसी भवइ।

६. [प्र०] कदा णं भंते! उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, कदा वा उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति, जहन्नए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति? [उ०] सुदंसणा! आसाढपुन्निमाए उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ। पोसस्स पुन्निमाए णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहन्नए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ।

७. [प्र०] अत्थि णं भंते! दिवसा य राईओ य समा चेव भवन्ति? [उ०] हन्ता, अत्थि।

८. [प्र०] कदा णं भंते! दिवसा य राईओ य समा चेव भवन्ति? [उ०] सुदंसणा! चित्ता–सोयपुन्निमासु णं एत्थ णं

३. [प्र०] हे भगवन्! प्रमाणकाल केटला प्रकारे छे? [उ०] प्रमाणकाल बे प्रकारनो कह्यो छे; ते आ प्रमाणे–दिवसप्रमाणकाल अने रात्रीप्रमाणकाल, अर्थात् चार पौरुषीना–प्रहरनो दिवस थाय छे, अने चार पौरुषीनी रात्री थाय छे. अने उत्कृष्ट–मोटामां मोटी साडा च्यार मुहूर्तनी पौरुषी दिवसनी, अने रात्रिनी थाय छे. तथा जघन्य–न्हानामां न्हानी पौरुषी दिवस अने रात्रिनी त्रण मुहूर्तनी थाय छे.

प्रमाणकाल.

४. [प्र०] हे भगवन्! ज्यारे दिवसे के रात्रीए साडा चार मुहूर्तनी उत्कृष्ट पौरुषी होय छे त्यारे ते मुहूर्तना केटला भाग घटती घटती दिवसे अने रात्रीए त्रण मुहूर्तनी जघन्य पौरुषी थाय? अने ज्यारे दिवसे के रात्रीए त्रण मुहूर्तनी न्हानामां न्हानी पौरुषी होय छे त्यारे ते मुहूर्तना केटला भाग वधती वधती दिवस अने रात्रीनी साडाचार मुहूर्तनी उत्कृष्ट पौरुषी थाय? [उ०] हे सुदर्शन! ज्यारे दिवसे अने रात्रीए साडाचार मुहूर्तनी उत्कृष्ट पौरुषी होय छे त्यारे ते मुहूर्तना एकसो बावीशमा भाग जेटली घटती घटती दिवस अने रात्रीनी जघन्य त्रण मुहूर्तनी पौरुषी थाय छे, अने ज्यारे दिवसे अने रात्रीए त्रण मुहूर्तनी जघन्य पौरुषी होय छे त्यारे मुहूर्तना एकसो बावीशमा भाग जेटली वधती वधती दिवसे अने रात्रीए साडाचार मुहूर्तनी उत्कृष्ट पौरुषी थाय छे.

५. [प्र०] हे भगवन्! क्यारे दिवसे अने रात्रीए साडाचार मुहूर्तनी उत्कृष्ट पौरुषी होय, अने क्यारे दिवसे अने रात्रीए त्रण मुहूर्तनी जघन्य पौरुषी होय? [उ०] हे सुदर्शन! ज्यारे अढारमुहूर्तनो मोटो दिवस होय अने बार मुहूर्तनी न्हानी रात्री होय त्यारे साडाचार मुहूर्तनी दिवसनी उत्कृष्ट पौरुषी होय छे, अने रात्रीनी त्रण मुहूर्तनी जघन्य पौरुषी होय छे. तथा ज्यारे अढारमुहूर्तनी मोटी रात्री होय अने बार मुहूर्तनो न्हानो दिवस होय त्यारे साडा च्यार मुहूर्तनी रात्रिनी उत्कृष्ट पौरुषी होय छे, अने त्रण मुहूर्तनी दिवसनी जघन्य पौरुषी होय छे.

६. [प्र०] हे भगवन्! अढार मुहूर्तनो मोटो दिवस, अने बार मुहूर्तनी न्हानी रात्री क्यारे होय? तथा अढार मुहूर्तनी मोटी रात्री अने बार मुहूर्तनो न्हानो दिवस क्यारे होय? [उ०] हे सुदर्शन! आषाढपूर्णिमाने विषे अढार मुहूर्तनो मोटो दिवस होय छे, अने बार मुहूर्तनी न्हानी रात्री होय छे. तथा पोषमासनी पूर्णिमाने समये अढार मुहूर्तनी मोटी रात्री अने बार मुहूर्तनो न्हानो दिवस होय छे.

७. [प्र०] हे भगवन्! दिवस अने रात्री ए बन्ने सरखां होय? [उ०] हा, होय.

८. [प्र०] क्यारे (दिवस अने रात्री) सरखां होय? [उ०] हे सुदर्शन! ज्यारे चैत्री पूनम अने आसो मासनी पूनम होय त्यारे

दिवसा य राईओ य समा चेव भवन्ति, पन्नरसमुहुत्ते दिवसे पन्नरसमुहुत्ता राई भवइ। चउभागमुहुत्तभागूणा चउमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ। सेत्तं पमाणकाले।

९. [प्र०] से किं तं अहाउनिव्वत्तिकाले? [उ०] अहाउनिव्वत्तिकाले जन्नं नेरइएण वा तिरिक्खजोणिएण वा मणुस्सेण वा देवेण वा अहाउयं निव्वत्तियं सेत्तं पालेमाणे अहाउनिव्वत्तिकाले।

१०. [प्र०] से किं तं मरणकाले? [उ०] जीवो वा सरीराओ सरीरं वा जीवाओ सेत्तं मरणकाले।

११. [प्र०] से किं तं अद्धाकाले? [उ०] अद्धाकाले अणेगविहे पन्नत्ते। से णं समयट्ठयाए आवलियट्ठयाए जाव–उस्सप्पिणीट्ठयाए। एस णं सुदंसणा! अद्धादोहारच्छेदेणं छिज्जमाणी जाहे विभागं नो हव्वमागच्छइ सेत्तं समए। समयट्ठयाए असंखेज्जाणं समयाणं समुदयसमिइसमागमेणं सा एगा 'आवलिय' त्ति पवुच्चइ। संखेज्जाओ आवलियाओ जहा सालिउद्देसए जाव–सागरोवमस्स उ एगस्स भवे परिमाणं।

१२. [प्र०] एएहि णं भंते! पलिओवम–सागरोवमेहिं किं पयोयणं? [उ०] सुदंसणा! एएहिं पलिओवम–सागरोवमेहिं नेरइय–तिरिक्खजोणिय–मणुस्स–देवाणं आउयाइं मविज्जंति।

१३. [प्र०] नेरइयाणं भंते! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? [उ०] एवं ठिइपदं निरवसेसं भाणियव्वं जाव–अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिति पन्नत्ता।

१४. [प्र०] अत्थि णं भंते! एएसिं पलिओवमसागरोवमाणं खएति वा अवचएति वा? [उ०] हन्ता, अत्थि।

१५. [प्र०] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ 'अत्थि णं एएसि णं पलिओवम–सागरोवमाणं जाव–अवचएति वा'? [उ०] एवं खलु सुदंसणा! तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिणागपुरे नामं नगरे होत्था, वण्णओ। सहसंबवणे उज्जाणे, वण्णओ। तत्थ णं हत्थिणागपुरे नगरे बले नामं राया होत्था, वण्णओ। तस्स णं बलस्स रन्नो पभावई णामं देवी होत्था। सुकुमाल० वण्णओ, जाव–विहरइ। तए णं सा पभावई देवी अन्नया कयाइ तंसि तारिसगंसि वासघरंसि अब्भिंतरओ सचित्तकम्मे, बाहिरओ

दिवस अने रात्री ए बन्ने सरखां होय छे. त्यारे पंदर मुहूर्तनो दिवस होय छे अने पंदर मुहूर्तनी रात्री होय छे. अने ते दिवस अने रात्रीनी मुहूर्तना चोथा भागे न्यून चार मुहूर्तनी पौरुषी होय छे. ए प्रमाणे प्रमाणकाल कह्यो.

९. [प्र०] हे भगवन्! यथायुर्निर्वृत्तिकाल केवा प्रकारे कहेलो छे? [उ०] जे कोइ नैरयिक, तिर्यंचयोनिक, मनुष्य के देवे पोते जेवुं आयुष्य बांध्युं छे ते प्रकारे तेनुं पालन करे ते यथायुर्निर्वृत्तिकाल कहेवाय छे.

१०. [प्र०] हे भगवन्! मरणकाल ए शुं छे? [उ०] (ज्यारे) शरीरथी जीवनो अथवा जीवथी शरीरनो वियोग थाय (त्यारे) ते मरणकाल कहेवाय छे.

११. [प्र०] हे भगवन्! अद्धाकाल ए केटला प्रकारे छे? [उ०] अद्धाकाल अनेक प्रकारनो कह्यो छे; समयरूपे, आवलिकारूपे, अने यावद् उत्सर्पिणीरूपे. हे सुदर्शन! कालना बे भाग करवा छतां ज्यारे तेना बे भाग न ज थइ शके ते काल समयरूपे समय कहेवाय छे. असंख्येय समयोनो समुदाय मळवाथी एक आवलिका थाय छे. संख्यात आवलिकानो [एक उच्छ्वास] थाय छे–इत्यादि बधुं* शालि उद्देशकमां कह्या प्रमाणे यावत् सागरोपमना प्रमाण सुधी जाणवुं.

१२. [प्र०] हे भगवन्! ए पल्योपम अने सागरोपमरूपनुं शुं प्रयोजन छे? [उ०] हे सुदर्शन! ए पल्योपम अने सागरोपम वडे नैरयिक, तिर्यंचयोनिक, मनुष्य तथा देवोनां आयुषोनुं माप करवामां आवे छे.

१३. [प्र०] हे भगवन्! नैरयिकोनी स्थिति (आयुष) केटला काल सुधीनी कही छे? [उ०] अहीं †संपूर्ण स्थितिपद कहेवुं, यावद् "[पर्याप्त सर्वार्थसिद्ध देवोनी] उत्कृष्ट नहि अने जघन्य नहि एवी तेत्रीश सागरोपमनी स्थिति कही छे' त्यां सुधी जाणवुं.

१४. [प्र०] हे भगवन्! ए पल्योपम तथा सागरोपमनो क्षय के अपचय थाय छे? [उ०] हा, थाय छे.

हस्तिनागपुर. बलराजा. प्रभावती राणी. वासगृह.

१५. [प्र०] हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो के पल्योपम अने सागरोपमनो यावत् अपचय थाय छे? [उ०] हे सुदर्शन! ए प्रमाणे खरेखर ते काले, ते समये हस्तिनागपुर नामे नगर हतुं. वर्णन. त्यां सहस्राम्रवन नामे उद्यान हतुं. वर्णन. ते हस्तिनागपुर नगरमां बल नामे राजा हतो. वर्णन. ते बल राजाने प्रभावती नामे राणी हती. तेना हाथ पग सुकुमाल हता–इत्यादि वर्णन जाणवुं. यावत् ते विहरती हती. त्यार बाद अन्य कोइ पण दिवसे तेवा प्रकारना, अंदर चित्रवाळा, बहारथी धोळेला, घसेला अने सुंवाळा करेला, जेमां

११. * भग० खं० २ श० ६ उ० ७ पृ० ३२१.

१३. † प्रज्ञा० पद ४ पृ० १६८–१७८.

दूमिय-घट्ठ-मट्ठे, विचित्तउल्लोग-चिल्लियतले, मणि-रयणपणासियंधयारे, बहुसम-सुविभत्तदेसभाए, पंचवण्ण-सरस-सुरभि-मुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिए, कालागुरुपवर-कुंदुरुक्क-तुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामे, सुगंधि-वरगंधिए, गंधवट्टिभूए तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगणवट्टिए, उभओबिब्बोयणे, दुहओ उन्नए, मज्झे णय-गंभीरे, गंगापुलिनवालुयउद्दालसालिसए, उवचिय-खोमिय-दुगुल्लपट्टपडिच्छायणे, सुविरइयरयत्ताणे, रत्तंसुयसंवुए, सुरम्मे, आइणग-रुय-बूर-णवणीय-तूलफासे, सुगंधवरकुसुम-चुन्न-सयणोवयारकलिए, अद्धरत्तकालसमयंसि सुत्त-जागरा ओहीरमाणी २ अयमेयारूवं ओरालं, कल्लाणं, सिवं, धन्नं, मंगल्लं, सस्सिरियं महासुविणं पासित्ता णं पडिबुद्धा।

१६. हार-रयय-खीरसागर-ससंककिरण-दगरय-रययमहासेल-पंडुरतरोरुरमणिज्ज-पेच्छणिज्जं, थिर-लट्ठ-पउट्ठ-वट्ट-पीवर-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-तिक्खदाढाविडंबियमुहं, परिकम्मियजच्चकमलकोमल-माइअसोभंतलट्ठउट्ठं, रत्तुप्पलपत्तमउअ-सुकुमालतालुजीहं, मूसागयपवरकणगतावियआवत्तायंत-वट्ट-तडिविमलसरिसनयणं, विसालपीवरोरुं, पडिपुण्णविपुलखंधं, मिउविसयसुहुमलक्खण-पसत्थ-विच्छिन्न-केसरसडोवसोभियं, ऊसिय-सुनिम्मिय-सुजाय-अप्फोडियलंगूलं, सोमं, सोमाकारं, लीलायंतं, जंभायंतं, नहयलाओ ओवयमाणं, नियगवयणमतिवयंतं, सीहं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धा।

१७. तए णं सा पभावती देवी अयमेयारूवं ओरालं जाव-सस्सिरियं महासुविणं पासित्ता णं पडिबुद्धा समाणी हट्ठ-तुट्ठ-जाव-हियया धाराहयकलंबपुप्फगं पिव समूसियरोमकूवा तं सुविणं ओगिण्हति, ओगिण्हित्ता सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भु० २ अतुरियमचवलमसंभंताए अविलंबियाए रायहंससरिसीए गईए जेणेव बलस्स रन्नो सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव० २ बलं रायं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं ओरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धन्नाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरीयाहिं मिय-महुर-मंजुलाहिं गिराहिं संलवमाणी २ पडिबोहेति, पडि० २ बलेणं रन्ना अब्भणुन्नाया समाणी नाणामणि-रयणभत्तिचित्तंसि भद्दासणंसि णिसीयति, णिसियित्ता आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया बलं रायं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव-संलवमाणी २ एवं वयासी—

उपरनो भाग विविध चित्रयुक्त अने नीचेनो भाग सुशोभित छे एवा, मणि अने रत्नना प्रकाशथी अंधकाररहित, बहु समान अने सुविभक्त भागवाळा, मुकेला पांच वर्णना सरस अने सुगंधी पुष्पपुंजना उपचार वडे युक्त, उत्तम कालागुरु, कीन्दरु अने तुरुष्क–शिलारसना धूपथी चोतरफ फेलायेला सुगंधना उद्भवथी सुंदर, सुगंधि पदार्थोथी सुवासित थयेला, सुगंधि द्रव्यनी गुटिका जेवा ते वासघरमां तकीयासहित, माथे अने पगे ओशीकावाळी, बन्ने बाजुए उंची, वचमां नमेली अने विशाल, गंगाना किनारानी रेतीना *अवदाल सरखी (अत्यंत कोमल), भरेला क्षौमिक–रेशमी दुकूलना पट्टथी आच्छादित, रजस्त्राणथी (उडती धूळने अटकावनार वस्त्रथी) ढंकायेली, रक्तांशुक—मच्छरदानी सहित, सुरम्य, आजिनक (एक जातनुं चामडानुं कोमल वस्त्र), रू, बरु, माखण अने आकडाना रूना समान स्पर्शवाळी, सुगंधि उत्तम पुष्पो, चूर्ण, अने बीजा शयनोपचारथी युक्त एवी शय्यामां कंइक सुती अने जागती निद्रा लेती लेती प्रभावती देवी अर्धरात्रीना समये आ एवा प्रकारना, उदार, कल्याण, शिव, धन्य, मंगलकारक अने शोभा युक्त महास्वप्नने जोइने जागी.

शय्या.

महास्वप्नने जोइ प्रभावती जागी.

१६. मोतीना हार, रजत, क्षीरसमुद्र, चंद्रना किरण, पाणीना बिंदु अने रूपाना मोटा पर्वत जेवा धोळा, विशाल, रमणीय अने दर्शनीय, स्थिर अने सुंदर प्रकोष्ठवाळा, गोळ, पुष्ट, सुश्लिष्ट, विशिष्ट, अने तीक्ष्ण दाढोवडे फाडेला मुखवाळा, संस्कारित उत्तम कमलना जेवा कोमल, प्रमाणयुक्त अने अत्यन्त सुशोभित ओष्ठवाळा, राता कमलना पत्रनी जेम अत्यंत कोमळ ताळु अने जीभवाळा, मूषामां रहेला, अग्निथी तपावेल अने आवर्त करता उत्तम सुवर्णना समान वर्णवाळी गोळ अने विजळीना जेवी निर्मळ आंखवाळा, विशाल अने पुष्ट जंघावाळा, संपूर्ण अने विपुल स्कंधवाळा, कोमल, विशद–स्पष्ट, सूक्ष्म, अने प्रशस्त, लक्षणवाळी विस्तीर्ण केसरानी छटाथी सुशोभित, उंचा करेला, सारीरीते नीचे नमावेला, सुन्दर अने पृथिवी उपर पछाडेल पूछडाथी युक्त, सौम्य, सौम्य आकारवाळा, लीला करता, बगासां खाता अने आकाश थकी उतरी पोताना मुखमां प्रवेश करता सिंहने स्वप्नमां जोइ ते प्रभावती देवी जागी.

सिंहनुं वर्णन.

सिंहने स्वप्नमां जोइने जागी.

१७. त्यार बाद ते प्रभावती देवी आ आवा प्रकारना उदार यावत् शोभावाळा महास्वप्नने जोइने जागी अने हर्षित तथा संतुष्ट हृदयवाळी थई, यावत् मेघनी धारथी विकसित थयेला कदंबकना पुष्पनी पेठे रोमांचित थयेली [प्रभावती देवी] ते स्वप्ननुं स्मरण करे छे, स्मरण करीने पोताना शयनथी उठी त्वराविनानी, चपलतारहित, संभ्रमविना, विलंबरहित पणे राजहंससमान गतिवडे ज्यां बलराजानुं शयनगृह छे त्यां आवे छे, आवीने इष्ट, कांत, प्रिय, मनोज्ञ, मनगमती, उदार, कल्याण, शिव, धन्य, मंगल्य, सौन्दर्ययुक्त, मित, मधुर अने मंजुल–कोमल वाणीवडे बोलती २ ते बल राजाने जगाडे छे. त्यार बाद ते बल राजानी अनुमतिथी विचित्र मणि अने रत्नोनी रचना वडे विचित्र भद्रासनमां बेसे छे. सुखासनमां बेठेली स्वस्थ अने शान्त थएली ते प्रभावती देवीए इष्ट, प्रिय, यावत् मधुर वाणीथी बोलतां २ आ प्रमाणे कह्युं—

बलराजाना शयनगृह तरफ आवे छे.

१५. * पग मूकवाथी नीचे उरी जवाय एवी रेताळ जमीनने अवदाल कहे छे.

१८. एवं खलु अहं देवाणुप्पिया! अज्ज तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगण० तं चेव जाव-नियगवयणमइवयंतं सीहं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धा, तण्णं देवाणुप्पिया! एयस्स ओरालस्स जाव-महासुविणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ? तए णं से बले राया पभावईए देवीए अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ-तुट्ठ० जाव-हयहियए धाराहयनीवसुरभिकुसुमचंचुमालइयतणुयऊसवियरोमकूवे तं सुविणं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता ईहं पविस्सइ, ईहं पविसित्ता अप्पणो साभाविएणं मइपुव्वएणं बुद्धिविन्नाणेणं तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहणं करेइ, तस्स० २-त्ता पभावइं देविं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव-मंगल्लाहिं मिय-महुर-सस्सिरि० संलवमाणे २ एवं वयासी—

१९. ओराले णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे, कल्लाणे णं तुमे जाव-सस्सिरीए णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे, आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउ-कल्लाण-मंगल्लकारए णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे, अत्थलाभो देवाणुप्पिए! भोगलाभो देवाणुप्पिए! पुत्तलाभो देवाणुप्पिए! रज्जलाभो देवाणुप्पिए! एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए! णवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाणराइंदियाणं विइक्कंताणं अम्हं कुलकेउं, कुलदीवं, कुलपव्वयं, कुलवडेंसयं, कुलतिलगं, कुलकित्तिकरं, कुलनंदिकरं, कुलजसकरं, कुलाधारं, कुलपायवं, कुलविवद्धणकरं, सुकुमालपाणि-पायं, अहीणपडिपुन्नपंचिंदियसरीरं, जाव-ससिसोमाकारं, कंतं, पियदंसणं, सुरूवं, देवकुमारसमप्पभं दारगं पयाहिसि।

२०. से वि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे विन्नायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कंते वित्थिन्न-विउलबल-वाहणे रज्जवई राया भविस्सइ। तं उराले णं तुमे जाव-सुमिणे दिट्ठे, आरोग्ग-तुट्ठि० जाव-मंगल्लकारए णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे त्ति कट्टु पभावतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं जाव-वग्गूहिं दोच्चं पि तच्चं पि अणुबूहति। तए णं सा पभावती देवी बलस्स रन्नो अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ-तुट्ठ० करयल० जाव एवं वयासी-'एवमेयं देवाणुप्पिया! तहमेयं देवाणुप्पिया! अवितहमेयं देवाणुप्पिया! असंदिद्धमेयं देवाणुप्पिया! इच्छियमेयं देवाणुप्पिया! पडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया! इच्छियपडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया! से जहेयं तुज्झे वयह'त्ति कट्टु तं सुविणं सम्मं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता बलेणं रन्ना अब्भणुन्नाया समाणी णाणामणि-रयणभत्तिचित्ताओ भद्दासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता अतुरियमचवल० जाव गतीए जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव

१८. हे देवानुप्रिय! ए प्रमाणे खरेखर में आजे ते तेवा प्रकारनी अने तकीयावाळी शय्यामां [सुतां जागतां] इत्यादि पूर्वोक्त जाणवुं, यावत् मारा पोताना मुखमां प्रवेश करता सिंहने स्वप्नमां जोइने जागी. तो हे देवानुप्रिय! ए उदार यावत् महास्वप्ननुं बीजुं शुं कल्याणकारक फल अथवा वृत्तिविशेष थशे? त्यार पछी ते बल राजा प्रभावती देवी पासेथी आ वात सांभळी, अवधारी हर्षित, तुष्ट, यावत् आल्हादयुक्त हृदयवाळो थयो, मेघनी धाराथी विकसित थयेला सुगंधि कदंब पुष्पनी पेठे जेनुं शरीर रोमांचित थयेलुं छे अने जेनी रोमराजी उभी थयेली छे, एवो बलराजा ते स्वप्ननो अवग्रह-सामान्य विचार-करे छे, पछी ते स्वप्नसंबन्धी ईहा (विशेष विचार) करे छे. तेम करीने पोताना स्वाभाविक, मतिपूर्वक बुद्धिविज्ञानथी ते स्वप्नना फलनो निश्चय करे छे. पछी इष्ट, कांत, यावत् मंगलयुक्त, तथा मित, मधुर अने शोभायुक्त वाणीथी संलाप करता २ ते बल राजाए आ प्रमाणे कह्युं—

स्वप्ननुं फल.

१९. हे देवी! तमे उदार स्वप्न जोयुं छे, हे देवी! तमे कल्याणकारक स्वप्न जोयुं छे, यावत् हे देवी! तमे शोभायुक्त स्वप्न जोयुं छे, तथा हे देवी! तमे आरोग्य, तुष्टि, दीर्घायुष, कल्याण अने मंगलकारक स्वप्न जोयुं छे. हे देवानुप्रिये! तेथी अर्थनो लाभ थशे, हे देवानुप्रिये! भोगनो लाभ थशे, हे देवानुप्रिये! पुत्रनो लाभ थशे, हे देवानुप्रिये! राज्यनो लाभ थशे, हे देवानुप्रिये! खरेखर तमे नव मास संपूर्ण थया बाद साडा सात दिवस वित्या पछी आपणा कुलमां ध्वजसमान, कुलमां दीवासमान, कुलमां पर्वतसमान, कुलमां शेखरसमान, कुलमां तिलकसमान, कुलनी कीर्ति करनार, कुलने आनंद आपनार, कुलनो जश करनार, कुलना आधारभूत, कुलमां वृक्षसमान, कुलनी वृद्धिकरनार, सुकुमाल हाथपगवाळा, खोडरहित अने संपूर्ण पंचेन्द्रिययुक्त शरीरवाळा, यावत् चंद्रसमान सौम्यआकारवाळा, प्रिय, जेनुं दर्शन प्रिय छे एवा, सुन्दररूपवाळा, अने देवकुमार जेवी कांतिवाळा पुत्रने जन्म आपशो.

२०. अने ते बालक पोतानुं बालकपणुं मूकी, विज्ञ अने परिणत-मोटो थईने युवावस्थाने पामी शूर, वीर, पराक्रमी, विस्तीर्ण अने विपुल बल तथा वाहनवाळो, राज्यनो धणी राजा थशे. हे देवी! तमे उदार स्वप्न जोयुं छे, हे देवी! तमे आरोग्य, तुष्टि अने यावद् मंगलकारक स्वप्न जोयुं छे'-एम कही ते बल राजा इष्ट यावद् मधुर वाणीथी प्रभावती देवीनी बीजी वार अने त्रीजी वार ए प्रमाणे प्रशंसा करे छे. त्यार बाद ते प्रभावती देवी बल राजानी पासेथी ए पूर्वोक्त वात सांभळीने, अवधारीने हर्षवाळी अने संतुष्ट थइ हाथ जोडी आ प्रमाणे बोली-'हे देवानुप्रिय! तमे जे कहो छो ते एज प्रमाणे छे, हे देवानुप्रिय! तेज प्रमाणे छे, हे देवानुप्रिय! ए सत्य छे, हे देवानुप्रिय! ए संदेहरहित छे, हे देवानुप्रिय! मने इच्छित छे, हे देवानुप्रिय! ए में स्वीकारेलुं छे, हे देवानुप्रिय! ए मने इच्छित अने स्वीकृत छे' एम कही स्वप्नने सारी रीते स्वीकार करे छे, स्वीकार करीने बल राजानी अनुमतिथी अनेक जातना मणि अने रत्ननी

प्रभावती देवी स्वप्नना फळनो स्वीकार करे छे.

उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता सयणिज्जंसि निसीयति, निसीइत्ता एवं वयासी—'मा मे से उत्तमे पहाणे मंगल्ले सुविणे अन्नेहिं पावसुमिणेहिं पडिहम्मिस्सइ' त्ति कट्टु देव-गुरुजणसंबद्धाहिं पसत्थाहिं मंगल्लाहिं धम्मियाहिं कहाहिं सुविणजागरियं पडिजागरमाणी २ विहरति।

२१. तए णं से बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अज्ज सविसेसं बाहिरियं उवट्ठाणसालं गंधोदयसित्त-सुइय-संमज्जिओ-वलित्तं सुगंधवरपंचवण्णपुप्फोवयारकलियं कालागुरुपवर-कुंदुरुक्क० जाव-गंधवट्टिभूयं करेह य करावेह य, करेत्ता करावेत्ता सीहासणं रएह, सीहासणं रयावेत्ता ममेतं जाव-पच्चप्पिणह। तए णं ते कोडुंबिय० जाव-पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सविसेसं बाहिरियं उवट्ठाणसालं जाव-पच्चप्पिणंति।

२२. तए णं से बले राया पच्चूसकालसमयंसि सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, सय० २ —त्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पाय० २ —हित्ता जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छति, अट्टणसालं अणुपविसइ, जहा उववाइए तहेव अट्टणसाला तहेव मज्जणघरे जाव —ससिव्व पियदंसणे नरवई मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयइ निसीइत्ता अप्पणो उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अट्ठ भद्दासणाइं सेयवत्थपच्चुत्थुयाइं सिद्धत्थगकयमंगलोवयाराइं रयावेइ, रयावेत्ता अप्पणो अदूरसामंते णाणामणिरयणमंडियं, अहियपेच्छणिज्जं, महग्घ-वरपट्टणुग्गयं, सण्हपट्टबहुभत्तिसयचित्तताणं, ईहामिय-उसभ० जाव-भत्तिचित्तं, अब्भिंतरियं जवणियं अंछावेइ, अंछावेत्ता नाणामणि-रयणभत्तिचित्तं अत्थरय-मउयमसूरगोत्थयं, सेयवत्थपच्चुत्थुयं, अंगसुहफासुयं, सुमउयं पभावतीए देवीए भद्दासणं रयावेइ, रयावेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

२३. 'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अट्ठंगमहानिमित्तसुत्त-त्थधारए, विविहसत्थकुसले, सुविणलक्खणपाढए सद्दावेह' तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव-पडिसुणेत्ता बलस्स रन्नो अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सिग्घं तुरियं चवलं चंडं वेइयं हत्थिणपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव तेसिं सुविणलक्खणपाढगाणं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता ते सुवि-

रचना वडे विचित्र एवा भद्रासनथी उठे छे, उठीने त्वरा विना, चपलतारहित यावद् गति वडे [ते प्रभावती देवी] ज्यां पोतानी शय्या छे त्यां आवी शय्या उपर बेसे छे, बेसीने तेणे आ प्रमाणे कह्युं—'आ मारुं उत्तम, प्रधान अने मंगलरूप स्वप्न बीजा पापस्वप्नोथी न हणाओ' एम कहीने ते प्रभावती देवी देव अने गुरु संबन्धी, प्रशस्त, मंगलरूप अने धार्मिक कथाओवडे स्वप्न जागरण करती करती विहरे छे.

२१. त्यार बाद ते बल राजाए कौटुंबिक पुरुषोने बोलावी आ प्रमाणे कह्युं—हे देवानुप्रियो! आजे तमे जल्दी बहारनी उपस्थानशालाने सविशेषपणे गंधोदकवडे छांटी, वाळी अने छाणथी लींपीने साफ करो. तथा सुगंधी अने उत्तम पांच वर्णना पुष्पोथी शणगारो, वळी उत्तम कालागुरु अने कींदरुना धूपथी यावद् गंधवर्तिभूत-सुगंधी गुटिका समान करो, करावो, अने त्यारपछी त्यां सिंहासन मूकावो, सिंहासन मूकावीने आ मारी आज्ञा यावत् पाछी आपो.' त्यार बाद ते कौटुंबिक पुरुषो यावत् आज्ञानो स्वीकार करी तुरतज सविशेषपणे बहारनी उपस्थान शालाने साफ करीने यावत् आज्ञा पाछी आपे छे.

२२. त्यार बाद ते बल राजा प्रातःकाल समये पोतानी शय्याथी उठीने पादपीठथी उतरी ज्यां व्यायामशाळा छे त्यां आवे छे. आवीने व्यायामशाळामां प्रवेश करे छे, त्यार पछी ते स्नानगृहमां जाय छे. व्यायामशाला अने स्नानगृहनुं वर्णन *औपपातिक सूत्रमां कह्या प्रमाणे जाणवुं, यावत् चंद्रनी पेठे जेनुं दर्शन प्रिय छे एवो ते बल नरपति स्नानगृहथी बहार नीकळे छे, बहार नीकळीने ज्यां बहारनी उपस्थानशाला छे त्यां आवे छे, त्यां आवीने पूर्वदिशा सन्मुख उत्तम सिंहासनमां बेसे छे. त्यार बाद पोतानाथी उत्तरपूर्वदिशामां —ईशान कोणमां धोळा वस्त्रथी आच्छादित अने सरसव वडे जेनो मंगलोपचार करेलो छे एवा आठ भद्रासनो मूकावे छे. त्यार बाद पोतानाथी थोडे दूर अनेक प्रकारना मणि अने रत्नथी सुशोभित, अधिक दर्शनीय, कींमती, मोटा शहेरमां बनेली, सूक्ष्म सूतरना सेंकडो कारीगरीवाळा विचित्रताणावाळी, तथा ईहामृग अने बळद वगेरेनी कारीगरीथी विचित्र एवी अंदरनी जवनिकाने-पडदाने खसेडे छे, खसेडीने [जवनिकानी अंदर] अनेक प्रकारना मणि अने रत्नोनी रचना वडे विचित्र, गादी अने कोमळ गालमसूरीयाथी ढंकायेलुं, श्वेत वस्त्रवडे आच्छादित, शरीरने सुखकर स्पर्शवाळुं तथा सुकोमळ एवुं एक भद्रासन प्रभावती देवी माटे मूकावे छे. त्यार पछी ते बल राजाए कौटुंबिक पुरुषोने बोलावी आ प्रमाणे कह्युं—

व्यायामशाळा अने स्नानगृहमां प्रवेश.

२३. 'हे देवानुप्रियो! तमे शीघ्र जाओ, अने अष्टांग महानिमित्तना सूत्र अने अर्थने धारण करनारा, अने विविध शास्त्रमां कुशल एवा स्वप्नना लक्षण पाठकोने बोलावो.' त्यार बाद ते कौटुंबिक पुरुषो यावत् आज्ञानो स्वीकार करीने बल राजानी पासेथी नीकळे छे; नीकळीने सत्वर, चपलपणे, झपाटाबंध अने वेगसहित हस्तिनापुर नगरनी वच्चोवच्च ज्यां स्वप्नलक्षणपाठकोना घरो छे, त्यां जइने स्वप्नलक्ष-

स्वप्नपाठकोने बोलाववानी आज्ञा.

२२. * जुओ औपपा० प० ६४-२.

लक्खणपाढए सद्दावेंति। तए णं ते सुविणलक्खणपाढगा बलस्स रन्नो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठ–तुट्ठ० ण्हाया कय० जाव–सरीरा सिद्धत्थग–हरियालियाकयमंगलमुद्धाणा सएहिं २ गेहेहिंतो निग्गच्छंति, सएहिं २–च्छित्ता हत्थिणापुरं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव बलस्स रन्नो भवणवरवडेंसए तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता भवणवरवडेंसगपडिदुवारंसि एगओ मिलंति, एगओ मिलित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता करयल० बलरायं जएणं विजएणं वद्धावेंति। तए णं ते सुविणलक्खणपाढगा बलेणं रन्ना वंदिय–पूइअ–सक्कारिअ–संमाणिआ समाणा पत्तेयं २ पुव्वन्नत्थेसु भद्दासणेसु निसीयंति। तए णं से बले राया पभावतिं देविं जवणियंतरियं ठावेइ, ठावेत्ता पुप्फ–फल पडिपुन्नहत्थे परेणं विणएणं ते सुविणलक्खणपाढए एवं वयासी–'एवं खलु देवाणुप्पिया! पभावती देवी अज्ज तंसि तारिसगंसि वासघरंसि जाव–सीहं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धा, तण्णं देवाणुप्पिया! एयस्स ओरालस्स जाव केमन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ'? तए णं सुविणलक्खणपाढगा बलस्स रन्नो अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ–तुट्ठ० तं सुविणं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता ईहं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहणं करेइ, तस्स० २–त्ता अन्नमन्नेणं सद्धिं संचालेंति, संचालेत्ता तस्स सुविणस्स लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अभिगयट्ठा बलस्स रन्नो पुरओ सुविणसत्थाइं उच्चारेमाणा २ एवं वयासी–'एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं सुविणसत्थंसि बायालीसं सुविणा, तीसं महासुविणा, बावत्तरि सव्वसुविणा दिट्ठा। तत्थणं देवाणुप्पिया! तित्थगरमायरो वा चक्कवट्टिमायरो वा तित्थगरंसि वा चक्कवट्टिंसि वा गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासुविणाणं इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति। तं जहा–"गय–वसह–सीह–अभिसेय–दाम–ससि–दिणयरं झयं कुंभं। पउमसर–सागर–विमाण–भवण–रयणुच्चय–सिहिं च" ॥ वासुदेवमायरो वा वासुदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अन्नयरे सत्त महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति। बलदेवमायरो वा बलदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अन्नयरे चत्तारि महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति। मंडलियमायरो वा मंडलियंसि गब्भं वक्कममाणंसि एतेसिं णं चउदसण्हं महासुविणाणं अन्नयरं एगं महासुविणं पासित्ता णं पडिबुज्झंति। इमे य णं देवाणुप्पिया! पभावतीए देवीए एगे महासुविणे दिट्ठे, तं ओराले णं देवाणुप्पिया! प्रभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे, जाव–आरोग्ग–तुट्ठि० जाव–मंगल्लकारए णं देवाणुप्पिया! प्रभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे, अत्थलाभो देवाणुप्पिए! भोग-

णपाठकोने बोलावे छे. ज्यारे ते बल राजाना कौटुंबिक पुरुषोए ते स्वप्नलक्षणपाठकोने बोलाव्या त्यारे तेओ प्रसन्न थया, तुष्ट थया अने स्नान करी बलिकर्म करी यावत् शरीरने अलंकृत करी, मस्तके सर्षप अने लीली धरोनुं मंगल करी पोत पोताना घेरथी नीकळे छे, नीकळीने हस्तिनागपुर नगरनी वच्चे थइ ज्यां बल राजानुं उत्तम महालय छे, त्यां आवे छे, त्यां आवीने श्रेष्ठ महालयना द्वार पासे ते स्वप्नपाठको एकठा थाय छे, एकठा थइने ज्यां बहारनी उपस्थानशाला छे त्यां आवे छे, त्यां आवी हाथ जोडी बल राजाने जय अने विजयथी वधावे छे. त्यार बाद ते बल राजाए वांदेला, पूजेला, सत्कारेला अने सम्मानित करेला ते स्वप्नलक्षणपाठको पूर्वे गोठवेला भद्रासनो उपर बेसे छे. त्यार पछी ते बल राजा प्रभावती देवीने जवनिकानी–पडदानी अंदर बेसाडे छे. त्यार बाद पुष्प अने फळथी परिपूर्ण हस्तवाळा ते बल राजाए अतिशय विनयपूर्वक ते स्वप्नलक्षणपाठकोने आ प्रमाणे कह्युं–'हे देवानुप्रियो! ए प्रमाणे खरेखर आजे प्रभावती देवी ते तेवा प्रकारना वासगृहमां यावत् स्वप्नमां सिंहने जोइने जागेली छे, तो हे देवानुप्रियो! आ उदार एवा स्वप्ननुं यावत् बीजुं कयुं कल्याणरूप फल अने वृत्तिविशेष थशे. त्यार पछी ते स्वप्नलक्षणपाठको बल राजानी पासेथी ए वात सांभळी तथा अवधारी खुश अने संतुष्ट थई ते स्वप्न संबन्धे सामान्य विचार करे छे, सामान्य विचार करी तेनो विशेष विचार करे छे, अने पछी ते स्वप्नना अर्थनो निश्चय करे छे, अने त्यार बाद तेओ परस्पर साथे विचारणा करे छे. त्यार पछी ते स्वप्नना अर्थने स्वयं जाणी, बीजा पासेथी ग्रहण करी, ते संबन्धी शंकाने पूछी, अर्थनो निश्चय करी अने स्वप्नना अर्थने अवगत करी बल राजानी आगळ स्वप्नशास्त्रोनो उच्चार करतां तेओए आ प्रमाणे कह्युं–'हे देवानुप्रिय! ए प्रमाणे खरेखर अमारा स्वप्नशास्त्रमां बेंताळीश सामान्य स्वप्नो, अने त्रीश महास्वप्नो मळीने कुल बहोंतेर जातना स्वप्नो कहेला छे. तेमां हे देवानुप्रिय! तीर्थंकरनी माताओ के चक्रवर्तिनी माताओ ज्यारे तीर्थंकर के चक्रवर्ती गर्भमां आवीने उपजे त्यारे ए त्रीश महास्वप्नोमांथी आ चौद स्वप्नोने जोइने जागे छे, ते चौद स्वप्नो आ प्रमाणे छे– "१ हाथी, २ बलद, ३ सिंह, ४ लक्ष्मीनो अभिषेक, ५ पुष्पमाळा, ६ चंद्र, ७ सूरज, ८ ध्वजा, ९ कुंभ, १० पद्मसरोवर, ११ समुद्र, १२ *विमान अथवा भवन, १३ रत्ननो ढगलो अने १४ अग्नि" वळी वासुदेवनी माताओ ज्यारे वासुदेव गर्भमां आवे त्यारे ए चौद महास्वप्नोमांना कोइ पण सात महास्वप्नो जोइने जागे छे. तथा बलदेवनी माताओ ज्यारे बलदेव गर्भमां प्रवेश करे त्यारे ए चौद महास्वप्नोमांना कोइ पण चार महास्वप्नो जोइने जागे छे. मांडलिक राजानी माताओ ज्यारे मांडलिक राजा गर्भमां प्रवेश करे त्यारे ए चौद महास्वप्नोमांना कोइ एक महास्वप्न जोइने जागे

आ पाठकोने स्वप्ना फळनो प्रश्न.

---

२१. * जो तीर्थंकर देवलोकथी आवीने उपजे तो तेनी माता स्वप्नमां विमान जुए अने नरकथी आवीने उपजे तो तेनी माता स्वप्नमां भवन जुए छे—टीका.

लाभो देवाणुप्पिए! पुत्तलाभो देवाणुप्पिए! रज्जलाभो देवाणुप्पिए! एवं खलु देवाणुप्पिए! पभावती देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव–वीतिक्कंताणं तुम्हं कुलकेउं जाव–पयाहिति। से वि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे जाव–रज्जवई राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा। तं ओराले णं देवाणुप्पिया! पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे, जाव–आरोग्ग–तुट्ठि–दीहाउय–कल्लाण० जाव–दिट्ठे।

२४. तए णं से बले राया सुविणलक्खणपाढगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ–तुट्ठ० करयल० जाव–कट्टु ते सुविणलक्खणपाढगे एवं वयासी–'एवमेयं देवाणुप्पिया! जाव–से जहेयं तुम्भे वदह'त्ति कट्टु तं सुविणं सम्मं पडिच्छइ, तं० २–च्छित्ता सुविणलक्खणपाढए विउलेणं असण–पाण–खाइम–साइम–पुप्फ–वत्थ–गंध–मल्लालंकारेणं सक्कारेति, सम्माणेति, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयति, विउलं २–यित्ता पडिविसज्जेति, पडिविसज्जेत्ता सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, सी० २–त्ता जेणेव पभावती देवी तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता पभावतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव–संलवमाणे २ एवं वयासी–'एवं खलु देवाणुप्पिया! सुविणसत्थंसि बायालीसं सुविणा तीसं महासुविणा बावत्तरि सव्वसुविणा दिट्ठा। तत्थ णं देवाणुप्पिए! तित्थगरमायरो वा चक्कवट्टिमायरो वा तं चेव जाव अन्नयरं एगं महासुविणं पासित्ता णं पडिबुज्झंति। इमे य णं तुमे देवाणुप्पिए! एगे महासुविणे दिट्ठे, तं ओराले णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे, जाव–रज्जवई राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा, तं ओराले णं तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे, जाव–दिट्ठे, त्ति कट्टु पभावतिं देविं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव–दोच्चं पि तच्चं पि अणुबूहइ।

२५. तए णं सा पभावती देवी बलस्स रन्नो अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ–तुट्ठ० करयल० जाव–एवं वयासी–'एयमेयं देवाणुप्पिया! जाव–तं सुविणं सम्मं पडिच्छति, तं० २–च्छित्ता बलेणं रन्ना अब्भणुन्नाया समाणी नाणामणि–रयण–भत्तिचित्त० जाव अब्भुट्ठेति। अतुरियमचवल० जाव–गतीए जेणेव सए भवणे तेणेव उवागच्छइ, ते० २–च्छित्ता सयं भवणमणुपविट्ठा।

२६. तए णं सा पभावती देवी ण्हाया कयबलिकम्मा जाव– सव्वालंकारविभूसिया तं गब्भं णाइसीएहिं नाइउण्हेहिं नाइतित्तेहिं नाइकडुएहिं नाइकसाएहिं नाइअंबिलेहिं नाइमहुरेहिं उउभयमाणसुहेहिं भोयण–च्छायण–गंध–मल्लेहिं जं तस्स

छे. तो हे देवानुप्रिय! आ प्रभावती देवीए एक महास्वप्न जोयुं छे, हे देवानुप्रिय! प्रभावती देवीए उदार स्वप्न जोयुं छे, यावत् आरोग्य, तुष्टि यावत् मंगल करनार स्वप्न जोयुं छे. तेथी हे देवानुप्रिय! तमने अर्थलाभ थशे, भोगलाभ थशे, पुत्रलाभ थशे अने राज्यलाभ थशे. तथा हे देवानुप्रिय! ए प्रमाणे खरेखर प्रभावती देवी नव मास संपूर्ण थया पछी अने साडा सात दिवस विल्या पछी तमारा कुलमां ध्वज समान एवा यावत् पुत्रनो जन्म आपशे. अने ते पुत्र पण बाल्यावस्था मूकी मोटो थशे त्यारे ते यावद् राज्यनो पति राजा थशे, अथवा भावितात्मा साधु थशे. तेथी हे देवानुप्रिय! प्रभावती देवीए उदार स्वप्न जोयुं छे, यावत् आरोग्य, तुष्टि, दीर्घायुष तथा कल्याण करनार स्वप्न जोयुं छे.

२४. त्यार बाद ते बलराजा स्वप्नलक्षणपाठको पासेथी ए वातने सांभळी अने अवधारी हर्षित, अने संतुष्ट थयो, अने हाथ जोडी यावत् तेणे स्वप्नलक्षणपाठकोने आ प्रमाणे कह्युं–'हे देवानुप्रियो! आ ए प्रमाणे छे के, यावत् जे तमे कहो छो'–एम कही ते स्वप्नोनो सारी रीते स्वीकार करे छे. त्यार बाद स्वप्नलक्षणपाठकोनो पुष्कळ अशन, पान, खादिम, स्वादिम, पुष्प, वस्त्र, गंध, माला अने अलंकारो वडे सत्कार करे छे, सन्मान करे छे, तेम करीने जीविकाने उचित घणुं प्रीतिदान आपे छे; अने प्रीतिदान आपीने ते स्वप्नलक्षणपाठकोने रजा आपे छे. त्यार पछी पोताना सिंहासनथी उठे छे, उठीने ज्यां प्रभावती देवी छे त्यां आवी प्रभावती देवीने तेणे ते प्रकारनी इष्ट, मनोहर यावत् मधुर वाणीवडे संलाप करता करता आ प्रमाणे कह्युं–हे देवानुप्रिये! ए प्रमाणे खरेखर स्वप्नशास्त्रमां बेंताळीश साधारण स्वप्नो, अने त्रीश महास्वप्नो तथा बधा मळीने बहोंतेर स्वप्नो देखाड्या छे. तेमां हे देवानुप्रिये! तीर्थंकरनी माताओ के चक्रवर्तिनी माताओ–इत्यादि पूर्ववत् कहेवुं, यावत् कोइ एक महास्वप्नने जोइने जागे छे. हे देवानुप्रिये! तमे आ एक महास्वप्न जोयुं छे, हे देवी! तमे उदार स्वप्न जोयुं छे, यावद् ते राज्यनो पति राजा थशे के भावितात्मा अनगार थशे. हे देवि! तमे उदार स्वप्न जोयुं छे, यावत् मंगलकर स्वप्न जोयुं छे, एम कही प्रभावती देवीनी ते प्रकारनी इष्ट, कांत, प्रिय एवी यावद् मधुर वाणीवडे बे वार अने त्रण वार पण प्रशंसा करे छे.

२५. त्यार बाद ते प्रभावती देवी बल राजानी पासेथी ए वातने सांभळीने अवधारीने हर्षवाळी, अने संतुष्ट थइ यावत् हाथ जोडी आ प्रमाणे बोली–'हे देवानुप्रिय! ए ए प्रमाणे ज छे' यावद् एम कही यावत् ते स्वप्नने सारी रीते ग्रहण करे छे. त्यार पछी बल राजानी अनुमतिथी अनेक प्रकारना मणि अने रत्ननी कारीगरीथी युक्त तथा विचित्र एवा ते भद्रासनथी उठी त्वरारहित, अचपलपणे यावत् हंस-समानगति वडे ज्यां पोतानुं भवन छे त्यां आवी तेणे पोताना भवनमां प्रवेश कर्यो.

२६. त्यार बाद ते प्रभावती देवी स्नान करी, बलिकर्म–देवपूजा करी, यावत् सर्व अलंकारथी विभूषित थइ ते गर्भने अतिशीत नहि, अतिउष्ण नहि, अति तिक्त नहि, अतिकटु नहि, अति तुरा नहि, अतिखाटां नहि, अने अतिमधुर नहि एवा, तथा दरेक ऋतुमां

गर्भनुं रक्षण.

गब्भस्स हियं मितं पत्थं गब्भपोसणं तं देसे य काले य आहारमाहारेमाणी विवित्तमउएहिं सयणा–सणेहिं पइरिकसुहाए मणाणुकूलाए विहारभूमीए पसत्थदोहला संपुन्नदोहला सम्माणियदोहला अविमाणियदोहला वोच्छिन्नदोहला ववणीयदोहला ववगयरोग–मोह–भय–परित्तासा तं गब्भं सुहं–सुहेणं परिवहति । तए णं सा पभावती देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाणराइंदियाणं वीतिकंताणं सुकुमालपाणि–पायं अहीणपडिपुन्नपंचिंदियसरीरं लक्खण–वंजणगुणोववेयं जाव–ससिसोमाकारं कंतं पियदंसणं सुरूवं दारयं पयाया ।

२७. तए णं तीसे पभावतीए देवीए अंगपडियारियाओ पभावतिं देविं पसूयं जाणेत्ता जेणेव बले राया तेणेव उवागच्छन्ति, तेणेव उवागच्छित्ता करयल० जाव–बलं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति, जएणं विजएणं वद्धावेत्ता एवं वयासी–'एवं खलु देवाणुप्पिया ! पभावतीपियट्ठयाए पियं निवेदेमो, पियं भे भवउ' । तए णं से बले राया अंगपडियारियाणं अंतियं एयमट्ठं सोचा निसम्म हट्ठ–तुट्ठ० जाव–धाराहयणीव० जाव–रोमकूवे तासिं अंगपडियारियाणं मउडवज्जं जहामालियं ओमोयं दलयति, दलयित्ता सेतं रययामयं विमलसलिलपुन्नं भिंगारं च गिण्हइ, गिण्हित्ता मत्थए धोवइ, मत्थए धोवित्ता विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयति, पीइदाणं दलयित्ता सक्कारेति सम्माणेति ।

२८. तए णं से बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! हत्थिणापुरे नयरे चारगसोहणं करेह, चारग० २–करेत्ता माणुम्माणवड्ढणं करेह, मा० करेत्ता २ हत्थिणापुरं नगरं सब्भितरबाहिरियं आसिय–संमज्जिओ–वलित्तं जाव–करेह कारवेह, करेत्ता य कारवेत्ता य जूयसहस्सं वा चक्कसहस्सं वा पूयामहामहिमसक्कारं वा उस्सवेह, २ ममेतमाणत्तियं पच्चप्पिणह' । तए णं ते कोडुंबियपुरिसा बलेणं रन्ना एवं वुत्ता० जाव–पच्चप्पिणंति । तए णं से बले राया जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छति, तेणेव उवागच्छित्ता तं चेव जाव मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता उस्सुकं उक्करं उक्किट्ठं अदिज्जं अमिज्जं अभडप्पवेसं अदंडकोडंडिमं अधरिमं गणियावरनाडइज्जकलियं अणेगतालाचराणुचरियं अणुद्धुयमुइंगं अमिलायमल्लदामं पमुइयपक्कीलियं सपुरजणजाणवयं दसदिवसे ठिइवडियं करेति । तए णं से बले राया दसाहियाए ठिइवडियाए वट्टमाणीए सइए य साहस्सिए य सयसाहस्सिए य जाए य दाए य भाए य दलमाणे य दवावेमाणे य, सए य साहस्सिए य सयसाहस्सिए य लंभे पडिच्छेमाणे पडिच्छावेमाणे एवं विहरइ । तए णं तस्स दारगस्स

भोगवतां सुखकारक एवा भोजन, आच्छादन, गंध अने माला वडे ते गर्भने हितकर, मित, पथ्य अने पोषणरूप छे तेवा आहारने योग्य देश अने योग्य काळे ग्रहण करती, तथा पवित्र अने कोमळ शयन अने आसनवडे एकान्तमां सुखरूप अने मनने अनुकूल एवी विहारभूमिवडे प्रशस्त दोहदवाळी, संपूर्ण दोहदवाळी, सन्मानित दोहदवाळी, जेनो दोहद तिरस्कार पाम्यो नथी एवी, दोहदरहित, दूर थयेला दोहदवाळी, तथा रोग, मोह, भय अने परित्रास रहित ते गर्भने सुखपूर्वक धारण करे छे. त्यार बाद ते प्रभावती देवीए नव मास पूर्ण थया पछी अने साडा सात दिवस वीत्या पछी सुकुमालहाथ–पगवाळा अने दोषरहित प्रतिपूर्णपंचेन्द्रिय युक्त शरीरवाळा, तथा लक्षण, व्यंजन अने गुणथी युक्त, यावत् चंद्रसमानसौम्य आकारवाळा, कांत, प्रियदर्शन अने सुंदर रूपवाळा पुत्रने जन्म आप्यो.

पुत्रजन्म.

२७. त्यार बाद ते प्रभावती देवीनी सेवा करनार दासीओए तेने प्रसव थयेलो जाणी ज्यां बल राजा छे त्यां आवी हाथ जोडी यावत् बल राजाने जय अने विजयथी वधावीने आ प्रमाणे कह्युं–'हे देवानुप्रिय ! ए प्रमाणे खरेखर प्रभावती देवीनी प्रीति माटे आ (पुत्रजन्मरूप) प्रिय निवेदन करीए छीए, अने ते आपने प्रिय थाओ.' त्यार बाद ते बल राजा शरीरनी शुश्रूषा करनार दासीओ पासेथी ए वात सांभळी अवधारीने हर्षित अने संतुष्ट थइ यावद् मेघनी धाराथी सिंचायला कदंबकना पुष्पनी पेठे यावद् रोमांचित थइ ते अंगरक्षिका दासीओने मुकुट सिवाय पहेरेल सर्व अलंकार आपे छे. आपीने ते राजा श्वेत रजतमय अने निर्मल पाणीथी भरेला कलशने लइ ते दासीओना मस्तक धुए छे, मस्तकने धोइने तेओने जीविकाने उचित घणुं प्रीतिदान आपी सत्कार अने सन्मान करी विसर्जित करे छे.

वधामणी.

२८. त्यार बाद ते बल राजाए कौटुंबिक पुरुषोने बोलावी आ प्रमाणे कह्युं–'हे देवानुप्रिय ! तमे शीघ्र हस्तिनापुर नगरमां केदीओने मुक्त करो, मुक्त करीने मान (माप) अने उन्मानने (तोलाने) वधारो; त्यार बाद हस्तिनागपुर नगरनी बहार अने अंदरना भागमां छंटकाव करो, साफ करो, संमार्जित करो अने लींपो; तेम करी अने करावीने सहस्र यूपोनो अने सहस्र चक्रोनो पूजा, महामहिमा अने सत्कार करो, ए प्रमाणे करी मारी आ आज्ञा पाछी आपो. त्यार बाद ते बल राजाना कहेवा प्रमाणे करी ते कौटुंबिक पुरुषो तेनी आज्ञा पाछी आपे छे. त्यार पछी ते बल राजा ज्यां व्यायामशाला छे त्यां आवे छे, त्यां आवीने–इत्यादि पूर्ववत् कहेवुं. यावद् स्नानगृहथी बहार नीकळी जकात रहित, कररहित, प्रधान, [विक्रयनो निषेध करेलो होवाथी] आपवा योग्य वस्तु रहित, मापवा योग्य वस्तुरहित, मेयरहित, सुभटना प्रवेशरहित, दंड तथा कुदंडरहित, [ऋण मुक्त करेलुं होवाथी] अधरिमयुक्त–देवारहित, उत्तम गणिकाओ अने नाटकीयाओथी युक्त, अनेक तालानुचरो वडे युक्त, निरंतर वागतां मृंदगोसहित, ताजा पुष्पोनी माला युक्त, प्रमोद सहित, अने क्रीडा युक्त एवी स्थितिपतिता–पुत्रजन्ममहोत्सव पुर अने देशना लोको साथे मळीने दस दिवस सुधी करे छे. त्यार बाद दस दिवस सुधी स्थितिप-

पुत्रजन्मोत्सव.

अम्मा-पियरो पढमे दिवसे ठिइवडियं करेइ, तइए दिवसे चंदसूरदंसणियं करेइ, छट्ठे दिवसे जागरियं करेइ, एक्कारसमे दिवसे वीतिक्कंते निव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे संपत्ते बारसाहदिवसे विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडाविंति, उवक्खडावेत्ता जहा सिवो जाव-खत्तिए य आमंतेति, आ० २ तओ पच्छा ण्हाया कय० तं चेव जाव सक्कारेंति सम्माणेंति, २ तस्सेव मित्त-णाति- जाव-राईण य खत्तियाण य पुरओ अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागयं बहुपुरिसपरंपरप्परूढं कुलाणुरूवं कुलसरिसं कुलसंताणतंतुवद्धणकरं अयमेयारूवं गोण्णं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति-'जम्हा णं अम्हं इमे दारए बलस्स रण्णो पुत्ते पभावतीए देवीए अत्तए, तं होउ णं अम्हं एयस्स दारगस्स नामधेज्जं महब्बले,' तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति 'महब्बले'त्ति ।

२९. तए णं से महब्बले दारए पंचधाईपरिग्गहिए, तंजहा-खीरधाईए, एवं जहा दढपइन्ने, जाव-निवाय-निव्वाघायंसि सुहंसुहेणं परिवड्ढति । तए णं तस्स महब्बलस्स दारगस्स अम्मा-पियरो अणुपुव्वेणं ठितिवडियं वा चंदसूरदंसावणियं वा जागरियं वा नामकरणं वा परंगामणं वा पयचंकमणं वा जेमामणं वा पिंडवद्धणं वा पज्जपावणं वा कण्णवेहणं वा संवच्छरपडिलेहणं वा चोलोयणगं च उवणयणं च अन्नाणि य बहूणि गब्भाधाण-जम्मणमादियाइं कोउयाइं करेंति ।

३०. तए णं तं महब्बलं कुमारं अम्मापियरो सातिरेगट्ठवासगं जाणित्ता सोभणंसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि० एवं जहा दढप्पइन्नो, जाव-अलं भोगसमत्थे जाए यावि होत्था । तए णं तं महब्बलं कुमारं उम्मुक्कबालभावं जाव-अलं भोगसमत्थं विजाणित्ता अम्मा-पियरो अट्ठ पासायवडेंसए करेंति, अब्भुग्गय-मूसिय-पहसिए इव वण्णओ जहा रायप्पसेणइज्जे, जाव-पडिरूवे, तेसि णं पासायवडेंसगाणं बहुमज्झदेसभागे एत्थ णं महेगं भवणं करेंति अणेगखंभसयसंनिविट्ठं, वण्णओ जहा रायप्पसेणइज्जे पेच्छाघरमंडवंसि जाव-पडिरूवे ।

तिता-उत्सव चालु हती त्यारे ते बल राजा सो रूपियाना, हजार रूपियाना अने लाख रूपियाना खर्चवाळा भागो, दानो अने द्रव्यना अमुक भागोने देतो अने देवरावतो तथा सो रूपियाना, हजार रूपियाना तथा लाख रूपियाना लाभने मेळवतो, मेळवावतो ए प्रमाणे रहे छे. त्यार बाद ते छोकराना मातापिता प्रथम दिवसे स्थितिपतिता-कुलनी मर्यादा प्रमाणे क्रिया करे छे; त्रीजे दिवसे चंद्र अने सूर्यनुं दर्शन करावे छे, छट्ठे दिवसे धर्मजागरण करे छे अने अग्यारमो दिवस वीत्या बाद अशुचि जातकर्म करवानुं निवृत्त थया पछी बारमे दिवसे पुष्कळ अशन, पान, खादिम अने स्वादिम पदार्थोने तैयार करावे छे, अने जेम *शिव राजा संबन्धे कह्युं तेम क्षत्रियोने आमंत्रे छे. त्यार पछी स्नान तथा बलिकर्म करी इत्यादि पूर्वोक्त यावत् सत्कार अने सन्मान करी तेज मित्र, ज्ञाति यावत् राजन्य अने क्षत्रियोनी समक्ष अर्या-पिता, पर्या-पितामह अने पिताना पण पितामहथी, घणा पुरुषोनी परंपराथी चयेलुं, कुलने योग्य, कुलने उचित अने कुलरूपसंतानतंतुने वधारनार आ आवा प्रकारनुं, गुणयुक्त अने गुणनिष्पन्न नाम पाडे छे. जेथी अमारो आ छोकरो बल राजानो पुत्र अने प्रभावती देवीनो आत्मज छे, माटे ते अमारा आ पुत्रनुं नाम 'महाबल' हो. त्यार बाद ते छोकराना माता पिता तेनुं 'महाबल' एवुं नाम करे छे.

पुत्रनुं नाम पाडवुं.

२९. त्यार पछी ते महाबल नामे पुत्रनुं पांच धात्रो वडे पालन करायुं. ते पांच धावो आ प्रमाणे छे-†क्षीरधात्री, ए प्रमाणे बधुं ‡दृढप्रतिज्ञनी पेठे जाणवुं. यावत् ते कुमार वायुरहित अने निर्व्याघात-अडचणरहित स्थानमां अत्यंत सुखपूर्वक वृद्धि पामे छे. पछी ते महाबलना मातापिताए जन्मना दिवसथी मांडी अनुक्रमे स्थितिपतिता, सूर्यचंद्रनुं दर्शन, धर्मजागरण, नामकरण, भांखोडीया चालवुं, पगे चालवुं, जमाडवुं, कोळीआ वधारवा, बोलाववुं, कान विंधाववा, वर्षगांठ करवी, चूडा-शिखा रखाववी, उपनयन-शीखववुं ए बधां अने ए शिवाय बीजा घणा गर्भाधान, जन्म वगेरे कौतुको करे छे.

पांच धात्रोवडे पुत्र पालन.

३०. त्यार पछी ते महाबल कुमारने तेना मातापिता आठ वरसथी अधिक उमरनो जाणी प्रशस्त तिथि, करण, नक्षत्र अने मुहूर्तमां [कलाचार्य पासे भणवा मोकले छे]-इत्यादि ए प्रमाणे बधुं ¶ दृढप्रतिज्ञनी पेठे कहेवुं, यावत् ते महाबल कुमार विषयोपभोगने समर्थ थयो. त्यार बाद ते महाबल कुमारनो बालभाव व्यतीत थयो जाणी, यावद् तेने विषयोपभोगने योग्य जाणी तेना माता पिता तेने माटे आठ श्रेष्ठ प्रासादो तैयार करावे छे, ते प्रासादो अतिशय उंचा अने [श्वेत वर्णना होवाथी] जाणे हसता होयनी-इत्यादि वर्णन§ राजप्रश्नीयसूत्रमां कह्या प्रमाणे जाणवुं. यावत् ते प्रासादो अत्यंत सुंदर छे, ते प्रासादोना बराबर मध्यभागमां एक मोटुं भवन तैयार करावे छे, ते भवन सेंकडो थांभला उपर रहेलुं छे-इत्यादि वर्णन ✱राजप्रश्नीय सूत्रमां कह्या प्रमाणे प्रेक्षागृह अने मंडपना वर्णननी पेठे जाणवुं, यावत् ते सुन्दर हतुं.

महाबल कुमारने भणवा मोकल्यो.

२८ * भग० श० ११ उ० ९ पृ० २२२.

२९ † पांच धावोना नामो आ प्रमाणे छे-१ क्षीरधात्री (दूध पानारी), २ मज्जनधात्री (स्नान करावनारी), ३ मंडनधात्री (अलंकार पहेरावनारी), ४ क्रीडा करावनार धात्री, अने ५ अंकधात्री-खोळामां बेसाडनार. ‡ जुओ दृढप्रतिज्ञसंबन्धे राजप्र० १४७-१,२.

३० ¶ जुओ राजप्र० प० १४७-२. § जुओ राजप्र० प० ८५-२. ✱ प्रेक्षागृह मंडपनुं वर्णन जुओ राजप्र० प० ३५-१.

३१. तए णं तं महब्बलं कुमारं अम्मा-पियरो अन्नया कया वि सोभणंसि तिहि-करण-दिवस-नक्खत्त-मुहुत्तंसि ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउय-मंगलपायच्छित्तं सव्वालंकारविभूसियं पमक्खणग-ण्हाण-गीय-वाइय-पसाहण-ट्ठंगतिलग-कंकणअविहववहुउवणीयं मंगलसुजंपिएहि य वरकोउयमंगलोवयारकयसंतिकम्मं सरिसयाणं सरित्तयाणं सरिव्वयाणं सरिसलावन्न-रूव-जोव्वणगुणोववेयाणं विणीयाणं कयकोउय-मंगलपायच्छित्ताणं सरिसएहिं रायकुलेहिंतो आणिल्लियाणं अट्ठण्हं रायवरकन्नाणं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हाविंसु।

३२. तए णं तस्स महाबलस्स कुमारस्स अम्मा-पियरो अयमेयारूवं पीइदाणं दलयंति, तं जहा-अट्ठ हिरन्नकोडीओ, अट्ठ सुवन्नकोडीओ, अट्ठ मउडे मउडप्पवरे, अट्ठ कुंडलजुए कुंडलजुयप्पवरे, अट्ठ हारे हारप्पवरे, अट्ठ अद्धहारे अद्धहारप्पवरे, अट्ठ एगावलीओ एगावलिप्पवराओ, एवं मुत्तावलीओ, एवं कणगावलीओ, एवं रयणावलीओ, अट्ठ कडगजोए कडगजोयप्पवरे, एवं तुडियजोए, अट्ठ खोमजुयलाइं खोमजुयलप्पवराइं, एवं वडगजुयलाइं, एवं पट्टजुयलाइं, एवं दुगुल्लजुयलाइं, अट्ठ सिरीओ, अट्ठ हिरीओ, एवं धिईओ, कित्तीओ, बुद्धीओ, लच्छीओ, अट्ठ नंदाइं, अट्ठ भद्दाइं, अट्ठ तले तलप्पवरे, सव्वरयणामए, नियगवरभवणकेऊ अट्ठ झए झयप्पवरे, अट्ठ वये वयप्पवरे, दसगोसाहस्सिएणं वएणं, अट्ठ नाडगाइं नाडगप्पवराइं बत्तीसबद्धेणं नाडएणं, अट्ठ आसे आसप्पवरे, सव्वरयणामए, सिरिघरपडिरूवए, अट्ठ हत्थी हत्थिप्पवरे, सव्वरयणामए सिरिघरपडिरूवए, अट्ठ जाणाइं जाणप्पवराइं, अट्ठ जुगाइं जुगप्पवराइं, एवं सिबियाओ, एवं संदमाणीओ, एवं गिल्लीओ, थिल्लीओ, अट्ठ वियडजाणाइं वियडजाणप्पवराइं, अट्ठ रहे पारिजाणिए, अट्ठ रहे संगामिए, अट्ठ आसे आसप्पवरे, अट्ठ हत्थी हत्थिप्पवरे, अट्ठ गामे गामप्पवरे, दसकुलसाहस्सिएणं गामेणं, अट्ठ दासे दासप्पवरे, एवं चेव दासीओ, एवं किंकरे, एवं कंचुइज्जे, एवं वरिसधरे, एवं महत्तरए, अट्ठ सोवन्निए ओलंबणदीवे, अट्ठ रुप्पामए ओलंबणदीवे, अट्ठ सुवन्नरुप्पामए ओलंबणदीवे, अट्ठ सोवन्निए उक्कंचणदीवे, अट्ठ पंजरदीवे, एवं चेव तिन्नि वि, अट्ठ सोवन्निए थाले, अट्ठ रुप्पमए थाले, अट्ठ सुवन्नरुप्पमए थाले, अट्ठ सोवन्नियाओ पत्तीओ ३, अट्ठ सोवन्नियाइं थासयाइं ३, अट्ठ सोवन्नियाइं मल्लगाइं ३, अट्ठ सोवन्नियाओ तलियाओ ३, अट्ठ सोवन्नियाओ कावइआओ ३, अट्ठ सोवन्निए अवएडए ३, अट्ठ सोवन्नियाओ अवयक्काओ ३, अट्ठ सोवण्णिए पायपीढए ३, अट्ठ सोवन्नियाओ भिसियाओ ३, अट्ठ सोवन्नियाओ करोडियाओ ३, अट्ठ सोवन्निए पल्लंके ३,

महाबलनुं पाणि-ग्रहण.

३१. त्यार पछी बीजा कोइ एक दिवसे शुभ तिथि, करण, दिवस, नक्षत्र अने मुहूर्तमां जेणे स्नान, बलिकर्म-पूजा, रक्षा आदि कौतुक अने मंगलरूप प्रायश्चित्त कर्युं छे एवा महाबल कुमारने सर्व अलंकारथी विभूषित करी अने सधवा स्त्रीओए करेला अभ्यंजन-विलेपन, स्नान, गीत, वादित्र, मंडन, आठ अंगमां तिलक अने कंकण पहेरावी मंगळ अने आशीर्वादपूर्वक उत्तम रक्षा वगेरे कौतुकरूप अने सरसव वगेरे मंगलरूप उपचार वडे शांतिकर्म करी, योग्य, समानत्वचावाळी, समान उमरवाळी, समान लावण्य, रूप, यौवन अने गुणोथी युक्त, विनीत, जेणे कौतुक अने मंगलरूप प्रायश्चित्त करेलुं छे एवी, समान राजकुलथी आणेली एवी, उत्तम, राजानी आठ श्रेष्ठ कन्याओनुं एक दिवसे पाणिग्रहण कराव्युं.

प्रीतिदान.

३२. त्यार पछी ते महाबल कुमारना माता पिता एवा प्रकारनुं आ प्रीतिदान आपे छे, ते आ प्रमाणे-आठ कोटि हिरण्य, आठ क्रोड सोनैया, मुकुटोमां उत्तम एवा आठ मुकुट, कुंडलयुगलमां उत्तम एवी आठ कुंडलनी जोडी, हारोमां उत्तम एवा आठ हार, अर्धहारमां श्रेष्ठ एवा आठ अर्धहार, एकसरा हारमां उत्तम एवा आठ एकसरा हार, एज प्रमाणे मुक्तावलीओ, कनकावलीओ अने रत्नावलीओ जाणवी; कडा युगलमां उत्तम एवा आठ कडानी जोडी, ए प्रमाणे तुडिय-बाजुबंधनी जोडी, रेशमी वस्त्र युगलमां उत्तम एवा आठ रेशमी वस्त्रनी जोडी, ए प्रमाणे सूतराउ वस्त्रनी जोडीओमां उत्तम एवी आठ सूतराउ वस्त्रनी जोडीओ, ए प्रमाणे टसरनी जोडीओ, पट्टयुगलो, दुकूलयुगलो, आठ श्री, आठ ह्री, ए प्रमाणे धी, कीर्ति, बुद्धि, अने लक्ष्मी देवीओनी प्रतिमा जाणवी. आठ नंदो, आठ भद्रो, ताडमां उत्तम एवा आठ तालवृक्ष-ए सर्व रत्नमय जाणवा. पोताना भवनना केतु-चिह्नरूप ध्वजमां उत्तम एवा आठ ध्वजो, दस हजार गायोनुं एक व्रज-गोकुल थाय छे, तेवा गोकुलमां उत्तम एवा आठ गोकुलो, नाटकोमां उत्तम अने बत्रीश माणसोथी भजवी शकाय एवा आठ नाटको, घोडाओमां उत्तम एवा आठ घोडा, आ बधुं रत्नमय जाणवुं. भांडागार समान हाथीओमां उत्तम एवा आठ रत्नमय हाथीओ, भांडागार समान सर्वरत्नमय यानोमां श्रेष्ठ एवा आठ यानो, *युग्यमां उत्तम आठ युग्यो (अमुक जातना वाहनो), ए प्रमाणे शिबिका, स्यंदमानिका, ए प्रमाणे गिल्ली, (हाथीनी उपरनी अंबाडी), थिल्लिओ (घोडाना आडा पलाणो), विकट यानोमां (उघाडा वाहनोमां) प्रधान एवा आठ विकट यानो, आठ पारियानिक (क्रीडाना) रथो, संग्रामने योग्य एवा आठ रथो, अश्वोमां उत्तम एवा आठ अश्व, हाथीओमां उत्तम एवा आठ हाथीओ, ग्रामोमां उत्तम एवा आठ गामो, जेमां दस हजार कुलो रहे ते एक गाम कहेवाय छे. दासोमां उत्तम एवा आठ दासो, एज प्रमाणे दासीओ, ए प्रमाणे किंकरो, ए प्रमाणे कंचुकिओ, ए प्रमाणे वर्षधरो, (अंतःपुरना रक्षक खोजाओ) ए प्रमाणे महत्तरको (वडाओ), आठ सोनाना, आठ रुपाना तथा आठ सोना-रुपाना अवलंबन

---

३१ * युग्य-एक जातनुं वाहन, जेने गोल्लदेशमां जम्पान कहे छे-टीका.

अट्ठ सोवत्थियाओ पडिसेज्जाओ ३, अट्ठ हंसासणाइं, अट्ठ कोंचासणाइं, एवं गरुलासणाइं, उन्नयासणाइं, पणयासणाइं, दीहासणाइं, भद्दासणाइं, पक्खासणाइं, मगरासणाइं, अट्ठ पउमासणाइं, अट्ठ दिसासोवत्थियासणाइं, अट्ठ तेल्लसमुग्गे, जहा रायप्पसेणइज्जे, जाव–अट्ठ सरिसवसमुग्गे, अट्ठ खुज्जाओ, जहा उववाइए, जाव–अट्ठ पारिसीओ, अट्ठ छत्ते, अट्ठ छत्तधारिओ चेडीओ, अट्ठ चामराओ, अट्ठ चामरधारीओ चेडीओ, अट्ठ तालियंटे, अट्ठ तालियंटधारीओ चेडीओ, अट्ठ करोडियाधारीओ चेडीओ, अट्ठ खीरधातीओ, जाव–अट्ठ अंकधातीओ, अट्ठ अंगमद्दियाओ, अट्ठ उम्मद्दियाओ, अट्ठ ण्हावियाओ, अट्ठ पसाहियाओ, अट्ठ वण्णगपेसीओ, अट्ठ चुण्णगपेसीओ, अट्ठ कोट्ठागारीओ, अट्ठ दवकारीओ, अट्ठ उवत्थाणियाओ, अट्ठ नाडइज्जाओ, अट्ठ कोडुंबिणीओ, अट्ठ महाणसिणीओ, अट्ठ भंडागारिणीओ, अट्ठ अज्झाधारिणीओ, अट्ठ पुप्फधरणीओ, अट्ठ पाणिघरणीओ, अट्ठ बलिकारीओ, अट्ठ सेज्जाकारीओ, अट्ठ अब्भिंतरियाओ पडिहारीओ, अट्ठ बाहिरियाओ पडिहारीओ, अट्ठ मालाकारीओ, अट्ठ पेसणकारीओ, अन्नं वा सुबहुं हिरन्नं वा सुवन्नं वा कंसं वा दूसं वा विउलधण–कणग०जाव–संतसारसावएज्जं, अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं, पकामं भोत्तुं, पकामं परिभाएउं। तए णं से महब्बले कुमारे एगमेगाए भज्जाए एगमेगं हिरन्नकोडिं दलयति, एगमेगं सुवन्नकोडिं दलयति, एगमेगं मउडं मउडप्पवरं दलयति, एवं तं चेव सव्वं जाव–एगमेगं पेसणकारिं दलयति, अन्नं वा सुबहुं हिरन्नं वा जाव–परिभाएउं। तए णं से महब्बले कुमरे उप्पिं पासायवरगए जहा जमाली जाव–विहरति।

३३. तेणं कालेणं तेणं समएणं विमलस्स अरहओ पओप्पए धम्मघोसे नामं अणगारे जाइसंपन्ने, वन्नओ जहा केसिसामिस्स, जाव पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुग्गामं दूतिज्जमाणे जेणेव हत्थिणागपुरे

दीपो (हांडीओ), आठ सोनाना, आठ रुपाना अने आठ सोना–रुपाना उत्कंचनदीपो (दंडयुक्त दीवाओ), ए प्रमाणे त्रणे जातना पंजरदीपो–फानसो, आठ सोनाना, आठ रुपाना अने आठ सोना–रुपाना थाळो, आठ सोनानी, आठ रुपानी अने आठ सोना–रुपानी पात्रीओ, (नाना पात्रो), ए प्रमाणे त्रणे जातना आठ स्थासको–तासको, आठ मल्लको–चपणीया, आठ तलिका–रकेबीओ, आठ कलाचिका–चमचा, आठ तावेथाओ, आठ तवीओ, आठ पादपीठ–(पग मूकवाना बाजोठ), आठ भिसिका–(अमुक प्रकारना आसनो), आठ करोटिका (अमुक जातना पात्रो, लोटा अथवा कचोला), आठ पलंग, आठ प्रतिशय्या (ढोयणी प्रमुख नानी बीजी शय्याओ), आठ हंसासनो, आठ क्रौंचासनो, ए प्रमाणे गरुडासनो, उंचा आसनो, नीचा आसनो, दीर्घासनो, भद्रासनो, पक्षासनो, मकरासनो, आठ पद्मासनो, आठ दिक्स्वस्तिकासनो, आठ तेलना डाबडा–इत्यादि बधुं *राजप्रश्नीय सूत्रमां कह्या प्रमाणे कहेवुं, यावद् आठ सरसवना डाबडा, आठ कुब्ज दासीओ–इत्यादि बधुं †औपपातिक सूत्रमां कह्या प्रमाणे कहेवुं, यावत् आठ पारसिक देशनी दासीओ; आठ छत्रो, आठ छत्र धरनारी दासीओ, आठ चामरो, आठ चामर धरनारी दासीओ, आठ पंखा, आठ पंखा वींजनारी दासीओ, आठ करोटिका–तांबूलना करंडिया–ने धारण करनारी दासीओ, आठ क्षीरधात्रीओ (दूध पानारी धावो), यावद् आठ अंकधात्रीओ, (खोळामां रमाडनारी धावो) आठ अंगमर्दिकाओ,–शरीरनुं अल्प मर्दन करनारी दासीओ, आठ उन्मर्दिकाओ (अधिक मर्दन करनारी दासीओ), आठ स्नान करावनारी दासीओ, आठ अलंकार पहेरावनारीओ, आठ चंदन घसनारीओ, आठ तांबूल चूर्ण पीसनारीओ, आठ कोष्ठागारनुं रक्षण करनारी, आठ परिहास करनारी, आठ सभामां पासे रहेनारी, आठ नाटक करनारीओ, आठ कौटुंबिकीओ–साथे जनारी दासीओ, आठ रसोइ करनारी, आठ भांडागारनुं रक्षण करनारी, आठ मालणो, आठ पुष्प धारण करनारी, आठ पाणी लावनारी, आठ बलि करनारी, आठ पथारी तैयार करनारी, आठ अंदरनी अने आठ बहारनी प्रतिहारीओ, आठ माला करनारीओ, आठ पेषण करनारी, अने ए शिवाय बीजुं घणुं हिरण्य, सुवर्ण, कांसुं, वस्त्र तथा विपुल धन, कनक, यावत् विद्यमान सारभूत धन आप्युं, जे सात पेढी सुधी इच्छापूर्वक आपवा अने भोगववाने परिपूर्ण हतुं. त्यार बाद ते महाबल कुमार दरेक स्त्रीने एक एक हिरण्यकोटि, एक एक सुवर्णकोटि अने मुकुटोमां उत्तम एक एक मुकुट आपे छे. ए प्रमाणे पूर्वोक्त सर्व वस्तुओ एक एक आपे छे, यावत् एक एक पेषण करनारी दासी तथा बीजुं पण घणुं हिरण्य यावद् वहेंची आपे छे. त्यार पछी ते महाबल कुमार उत्तम प्रासादमां उपर बेसी ‡जमालिनी पेठे यावद् विहरे छे.

धर्मघोष अनगारनुं आगमन.

३३. ते काले–ते समये विमलनाथ तीर्थंकरना प्रपौत्र–प्रशिष्य धर्मघोष नामे अनगार हता, ते जातिसंपन्न हता–इत्यादि वर्णन ¶केशी स्वामीनी पेठे जाणवुं, यावत् तेओ पांचसो साधुना परिवारनी साथे अनुक्रमे एक गामथी बीजे गाम विहार करता, ज्यां हस्तिनागपुर नामे नगर छे, अने ज्यां सहस्राम्रवन नामे उद्यान छे त्यां आवे छे, आवीने यथा योग्य अवग्रहने ग्रहण करी संयम अने तपवडे आत्माने

---

३२ * जुओ राजप्रश्नीय प० ६८–१. † जुओ औपपा० प० ७६–२. ‡ जमालिनुं वर्णन जुओ भग० खं० ३ श० ९ उ० ३३ पृ० १६६.
३३ ¶ जुओ राजप्र० प० ११८–१.

नगरे, जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हति, ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति। तए णं हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिय० जाव-परिसा पज्जुवासइ।

३४. तए णं तस्स महब्बलस्स कुमारस्स तं महयाजणसद्दं वा जणवूहं वा एवं जहा जमाली तहेव चिंता, तहेव कंचुइज्जपुरिसं सद्दावेति, कंचुइज्जपुरिसो वि तहेव अक्खाति, नवरं धम्मघोसस्स अणगारस्स आगमणगहियविणिच्छए करयल० जाव-निग्गच्छइ। एवं खलु देवाणुप्पिया! विमलस्स अरहओ पउप्पए धम्मघोसे नामं अणगारे, सेसं तं चेव, जाव-सो वि तहेव रहवरेणं निग्गच्छति। धम्मकहा जहा केसिसामिस्स। सो वि तहेव अम्मा-पियरो आपुच्छइ, नवरं धम्मघोसस्स अणगारस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए, तहेव वुत्तपडिवुत्तया, नवरं इमाओ य ते जाया! विउलरायकुलबालियाओ कला०, सेसं तं चेव जाव-ताहे अकामाइं चेव महब्बलकुमारं एवं वयासी-'तं इच्छामो ते जाया! एगदिवसमवि रज्जसिरिं पासित्तए'। तए णं से महब्बले कुमारे अम्मा-पियराण वयणमणुयत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठति। तए णं से बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, एवं जहा सिवभद्दस्स तहेव रायाभिसेओ भाणियव्वो, जाव-अभिसिंचति। करयलपरिग्गहियं महब्बलं कुमारं जएणं विजएणं वद्धावेंति, जएणं विजएणं वद्धावित्ता जाव-एवं वयासी-'भण जाया! किं देमो, किं पयच्छामो', सेसं जहा जमालिस्स तहेव, जाव-तए णं से महब्बले अणगारे धम्मघोसस्स अणगारस्स अंतियं सामाइयमाइयाइं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जति, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ० जाव-विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुन्नाइं दुवालस वासाइं सामन्नपरियागं पाउणति, बहु० २-णित्ता मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए० आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदम-सूरिय० जहा अम्मडो, जाव बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता, तत्थ णं महब्बलस्स वि दस सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता। से णं तुमं सुदंसणा! बंभलोगे कप्पे दस सागरोवमाइं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्ता ताओ चेव देवलोगाओ आउक्खएणं ३ अणंतरं चयं चइत्ता इहेव वाणियग्गामे नगरे सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाए।

भावित करता यावद् विहरे छे. ते समये हस्तिनागपुर नगरमां शृंगाटक, त्रिक-[वगेरे मार्गोमां घणा माणसो परस्पर एम कहे छे इत्यादि] यावत् परिषद् उपासना करे छे.

३४. त्यार बाद ते महाबल कुमार घणा माणसोना शब्दने, जनना कोलाहलने सांभळी ए प्रमाणे यावत् *जमालिनी पेठे जाणवुं, यावत् ते महाबल कुमार कंचुकी पुरुषने बोलावे छे, अने कंचुकी पुरुष पण तेज प्रमाणे कहे छे, परन्तु एटलो विशेष छे के ते कंचुकी धर्मघोष मुनिना आगमननो निश्चय जाणीने हाथ जोडीने यावद् नीकळे छे. ए प्रमाणे हे देवानुप्रिय! विमलनाथ अरिहंतना प्रशिष्य धर्मघोष नामे अनगार अहीं आव्या छे-इत्यादि पूर्व प्रमाणे जाणवुं, यावत् ते महाबल कुमार पण उत्तम रथमां बेसीने वांदवा नीकळे छे. धर्मकथा †केशिस्वामिनी पेठे जाणवी. महाबल कुमार पण ते प्रमाणे मातापितानां रजा मागे छे, परन्तु ते 'धर्मघोष अनगारनी पासे दीक्षा लइ अगारथी-गृहवासथकी अनगारिकपणुं लेवाने इच्छुं छुं' एम कहे छे-इत्यादि उक्ति अने प्रत्युक्ति ‡ते प्रमाणे (जमालिना चरितमां वर्णव्या प्रमाणे) जाणवी. परन्तु हे पुत्र! [आ तारी स्त्रीओ] विपुल एवा राजकुलमां उत्पन्न थयेली बालाओ छे, वळी ते कलाओमां कुशल छे-इत्यादि बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. यावत् मातापिताए इच्छा विना ते महाबल कुमारने आ प्रमाणे कह्युं-'हे पुत्र! एक दिवस पण तारी राज्यलक्ष्मीने जोवा अमे इच्छीए छीए,' त्यारे ते महाबल कुमार मातापिताना वचनने अनुसरीने चूप रह्यो. पछी ते बल राजाए कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या-इत्यादि §शिवभद्रनी पेठे राज्याभिषेक जाणवो, यावत् राज्याभिषेक कर्यो, अने हाथ जोडीने महाबल कुमारने जय अने विजयवडे वधावी यावद् आ प्रमाणे कह्युं-'हे पुत्र! कहे के तने शुं दइए, तने शुं आपीए,' इत्यादि बाकीनुं बधुं ¶जमालिनी पेठे जाणवुं; यावत् त्यार पछी ते महाबल अनगार धर्मघोष अनगारनी पासे सामायिकादि चउद पूर्वोने भणे छे, भणीने घणा चतुर्थ भक्त, यावद् विचित्र तपकर्मवडे आत्माने भावित करीने संपूर्ण बार वर्ष श्रमण पर्यायने पाळे छे, पाळीने मासिक संलेखनावडे निराहारपणे साठ भक्तोने वीतावी, आलोचना अने प्रतिक्रमण करी समाधिने प्राप्त थइ मरण समये काल करी ऊर्ध्व लोकमां चंद्र अने सूर्यनी उपर बहु दूर $अंबडनी पेठे यावत् ब्रह्मलोक कल्पमां देवपणे उत्पन्न थयो. त्यां केटलाक देवोनी स्थिति दस सागरोपमनी कहेली छे. तेमां महाबल देवनी पण दस सागरोपमनी स्थिति कहेली छे. हे सुदर्शन! तुं ते ब्रह्मलोक कल्पमां दस सागरोपम सुधी दिव्य अने भोग्य एवा भोगोने भोगवी ते देवलोकथी आयुषनो, भवनो अने स्थितिनो क्षय थया पछी तुरतज च्यवी अहींज वाणिज्यग्राम नामना नगरमां श्रेष्ठिना कुलमां पुत्रपणे उत्पन्न थयो छे.

महाबल कुमारनुं वंदन करवा माटे जवुं. दीक्षा लेवानी रजा मागवी.

महाबल कुमारने राज्याभिषेक अने दीक्षा.

ब्रह्मदेवलोकमां उपजवुं अने त्यांथी च्यवी सुदर्शन श्रेष्ठीपणे उपजवुं.

---

३४ * जुओ भग० खं० ३ श० ९ उ० ३३ पृ० १६६. † जुओ राजप्र० प० १२०-१.
‡ जुओ भग० खं० ३ श० ९ उ० ३३ पृ० १६९-१७२. § जुओ भग० खं० ३ श० ११ उ० ९ पृ० २२२.
¶ भग० खं० ३ श० ९ उ० ३३ पृ० १७३. $ जुओ औपपा० अंबडाधिकार प० ९७-२.

३५. तए णं तुमे सुदंसणा ! उम्मुक्कबालभावेणं विण्णायपरिणयमेत्तेणं जोव्वणगमणुप्पत्तेणं तहारूवाणं थेराणं अंतियं केवलिपन्नत्ते धम्मे निसंते, सेऽवि य धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए, अभिरुइए; तं सुट्ठु णं तुमं सुदंसणा ! इदाणिं पकरेसि । से तेणट्ठेणं सुदंसणा ! एवं वुच्चइ—अत्थि णं एतेसिं पलिओवम—सागरोवमाणं खयेति वा अवचयेति वा । तए णं तस्स सुदंसणस्स सेट्ठिस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म सुभेणं अज्झवसाणेणं सुभेणं परिणामेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहा—पोह—मग्गण—गवेसणं करेमाणस्स सन्नीपुव्वजातीसरणे समुप्पन्ने, एयमट्ठं सम्मं अभिसमेति । तए णं से सुदंसणे सेट्ठी समणेणं भगवया महावीरेणं संभारियपुव्वभवे दुगुणाणीयसड्ढसंवेगे आणंद-सुपुण्णनयणे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेति, आ० २—रेत्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—'एवमेयं भंते ! जाव से जहेयं तुज्झे वदह'त्ति कट्टु उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमइ, सेसं जहा उसभदत्तस्स, जाव—सव्वदुक्खप्पहीणे; नवरं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ, बहुपडिपुण्णाइं दुवालस वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, सेसं तं चेव । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति । महब्बलो समत्तो ।

एक्कारसमे सए एक्कारसमो उद्देसो समत्तो ।

३५. त्यार बाद हे सुदर्शन ! बालपणाने वीतावी विज्ञ अने मोटो थइ, यौवनने प्राप्त थइ तें तेवा प्रकारना स्थविरोनी पासे केवलिए कहे-लो धर्म सांभळ्यो, अने ते धर्म पण तने इच्छित अने स्वीकृत थयो, तथा तेना उपर तने अभिरुचि थइ. हे सुदर्शन ! हाल तुं जे करे छे ते सारुं करे छे. ते माटे हे सुदर्शन ! एम कहेवाय छे के ए पल्योपम अने सागरोपमनो क्षय अने अपचय थाय छे. त्यार बाद श्रमण भगवंत महावीरनी पासेथी धर्मने सांभळी, अवधारी ते सुदर्शन शेठने शुभ अध्यवसायवडे, शुभ परिणामवडे अने विशुद्ध लेश्याओथी तदावरणीय कर्मोनो क्षयोपशम थवाथी ईहा, अपोह, मार्गणा अने गवेषणा करतां संज्ञिरूप पूर्व जन्मनुं स्मरण उत्पन्न थयुं, अने तेथी भगवंते कहेला आ अर्थने सारी रीते जाणे छे. त्यार बाद ते सुदर्शन शेठने श्रमण भगवंत महावीरे पूर्वभव संभारेलो होवाथी बेवडी श्रद्धा अने संवेग उत्पन्न थयो, तेनां लोचन आनंदाश्रुथी परिपूर्ण थया, अने तेणे श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार आदक्षिण प्रदक्षिणा करी, वांदी अने नमीने आ प्रमाणे कह्युं—'हे भगवन् ! तमे जे कहो छो ते एज प्रमाणे छे—यावत् एम कही ते सुदर्शन शेठ उत्तरपूर्व (ईशान) दिशा तरफ गया. बाकी बधुं *ऋषभदत्तनी पेठे जाणवुं, यावत् ते सुदर्शन शेठ सर्व दुःखथी रहित थया. परन्तु विशेष ए छे के ते पूरां चौद पूर्वो भणे छे, अने संपूर्ण बार वरस सुधी श्रमणपर्यायने पाळे छे. बाकी बधु पूर्व प्रमाणे जाणवुं. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे—एम कही यावद् विहरे छे.

सुदर्शन शेठने जातिस्मरण.

सुदर्शन शेठनी प्रव्रज्या.

एकादश शते महाबल नाम एकादश उद्देशक समाप्त.

३५ * जुओ भग० खं० १ श० ९ उ० ३३ पृ० ११५.

बारसमो उद्देसो।

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं आलभिया नामं नगरी होत्था। वण्णओ। संखवणे चेइए। वण्णओ। तत्थ णं आलभियाए नगरीए बहवे इसिभद्दपुत्तपामोक्खा समणोवासया परिवसंति, अड्ढा, जाव-अपरिभूया, अभिगयजीवा-जीवा जाव-विहरंति। तए णं तेसिं समणोवासयाणं अन्नया कया वि एगयओ सहियाणं समुवागयाणं संनिविट्ठाणं सन्निसन्नाणं अयमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था-देवलोगेसु णं अज्जो! देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता? तए णं से इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देवट्ठितीगहियट्ठे ते समणोवासए एवं वयासी-देवलोएसु णं अज्जो! देवाणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया, दुसमयाहिया, जाव-दससमयाहिया, संखेज्जसमयाहिया, असंखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता। तेण परं वोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य। तए णं ते समणोवासया इसिभद्दपुत्तस्स समणोवासगस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव-एवं परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति, नो पत्तियंति, नो रोयंति, एयमट्ठं असद्दहमाणा अपत्तियमाणा, अरोएमाणा जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया।

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव-समोसढे, जाव-परिसा पज्जुवासइ। तए णं ते समणोवासया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा हट्ठ-तुट्ठा एवं जहा तुंगिउद्देसए जाव पज्जुवासंति। तए णं समणे भगवं महावीरे तेसिं समणोवासगाणं तीसे य महति० धम्मकहा, जाव-आणाए आराहए भवइ।

बारमो उद्देशक.

आलभिका नगरी. शंखवन चैत्य. ऋषिभद्रप्रमुख श्रमणोपासको. श्रमणोपासकोनो वार्तालाप. देवलोकमां देवोनी स्थिति. जघन्यस्थिति. उत्कृष्टस्थिति.

१. ते काले-ते समये आलभिका नामे नगरी हती. वर्णन. शंखवन नामे चैत्य हतुं. वर्णन. ते आलभिका नगरीमां ऋषिभद्रपुत्र प्रमुख घणा श्रमणोपासको-श्रावको रहेता हता. तेओ धनिक यावद् कोइथी पराभव न पामे तेवा अने जीवा-जीव तत्त्वने जाणनारा हता. त्यार बाद बीजा कोइ एक दिवसे एकत्र मळेला, आवेला, एकठा थयेला अने बेठेला ते श्रमणोपासकोनो आ आवा प्रकारनो वार्तालाप थयो-'हे आर्य! देवलोकमां देवोनी केटला काल सुधी स्थिति कही छे'? त्यार बाद देवस्थिति संबन्धे सत्य हकीकत जाणनार ऋषिभद्रपुत्रे ते श्रमणोपासकोने आ प्रमाणे कह्युं-'हे आर्य! देवलोकमां देवोनी जघन्य स्थिति दस हजार वर्षनी कही छे, त्यार पछी एकसमय अधिक, बे समय अधिक, यावद् दश समय अधिक, संख्यात समयाधिक, अने असंख्य समयाधिक करतां उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमनी स्थिति कही छे. त्यार पछी देवो अने देवलोको व्युच्छिन्न थाय छे (अर्थात् तेनाथी उपरनी स्थितिना देवो अने देवलोको नथी.) त्यार पछी ए प्रमाणे कहेतां, यावत् एम प्ररूपणा करता ते श्रमणोपासको ऋषिभद्रपुत्र श्रमणोपासकना आ अर्थनी श्रद्धा करता नथी, प्रतीति करता नथी अने रुचि करता नथी. ए अर्थनी श्रद्धा, प्रतीति अने रुचि नहि करता तेओ जे दिशाथी आव्या हता तेज दिशा तरफ पाछा गया.

२. ते काले-ते समये श्रमण भगवंत महावीर यावत् समवसर्या, यावत् परिषद तेमनी उपासना करे छे. त्यार बाद ते श्रमणोपासको [श्री महावीर स्वामी आव्यानी] आ वात सांभळी, हर्षित अने संतुष्ट थया-इत्यादि *तुंगिक उद्देशकनी पेठे जाणवुं, यावत् तेओ पर्युपासना करे छे. त्यार पछी श्रमण भगवंत महावीरे ते श्रमणोपासकोने तथा अत्यन्त मोटी ते पर्षदने धर्मकथा कही. यावत् तेओ आज्ञाना आराधक थया.

---

१ * भग० खं० १ श० २ उ० ५ पृ० २७८.

३. तए णं ते समणोवासया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ–तुट्ठा उट्ठाए उट्ठेइ, उ० २–त्ता समणं भगवं महावीरं वंदन्ति, नमंसन्ति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासी–[प्र०] एवं खलु भंते ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए अम्हं एवं आइक्खइ, जाव–परूवेइ–देवलोएसु णं अज्जो ! देवाणं जहन्नेणं दस वाससहस्साइं ठिती पन्नत्ता, तेण परं समयाहिया, जाव–तेण परं वोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य, से कहमेयं भंते ! एवं ? [उ०] 'अज्जो'त्ति समणे भगवं महावीरे ते समणोवासए एवं वयासी–जन्नं अज्जो ! "इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तुज्झं एवं आइक्खइ, जाव–परूवेइ–देवलोगेसु णं अज्जो ! देवाणं जहन्नेणं दस वाससहस्साइं ठिई पन्नत्ता, तेण परं समयाहिया, जाव–तेण परं वोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य," सच्चे णं एसमट्ठे, अहं पुण अज्जो ! एवमाइक्खामि, जाव–परूवेमि–'देवलोगेसु णं अज्जो ! देवाणं जहन्नेणं दस वाससहस्साइं तं चेव जाव–तेण परं वोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य,' सच्चे णं एसमट्ठे । तए णं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म समणं भगवं महावीरं वंदन्ति नमंसन्ति, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तेणेव उवागच्छन्ति, उवागच्छित्ता इसिभद्दपुत्तं समणोवासगं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता, नमंसित्ता एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो २ खामेंति । तए णं ते समणोवासया पसिणाइं पुच्छंति, प० २–च्छित्ता अट्ठाइं परियादियंति, अ० २–इत्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वं० २–त्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ।

४. [प्र०] 'भंते'त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ, णमंसइ, वं० २–त्ता एवं वयासी–पभू णं भंते ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतियं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ? [उ०] गोयमा ! णो तिणट्ठे, समट्ठे । गोयमा ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए बहूहिं सीलव्वय–गुणव्वय–वेरमण–पच्चक्खाण–पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणिहिति, पा० २–णित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेहिति, मा० २–सेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेहिति, २ आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति । तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता । तत्थ णं इसिभद्दपुत्तस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिती भविस्सति ।

५. [प्र०] से णं भंते ! इसिभद्दपुत्ते देवे तातो देवलोगाओ आउक्खएणं भव० ठिइक्खएणं जाव–कहिं उववज्जिहिति ?

देवोनी स्थिति.

३. त्यार पछी ते श्रमणोपासको श्रमण भगवंत महावीर पासेथी धर्मने सांभळी, अवधारी, हर्षित अने संतुष्ट थया, अने प्रयत्नथी उभा थइ श्रमण भगवंत महावीरने वांदी अने नमीने आ प्रमाणे कह्युं–'हे भगवन् ! ए प्रमाणे खरेखर ऋषिभद्रपुत्र श्रमणोपासक अमने ए प्रमाणे कहे छे, यावत् प्ररूपे छे के, हे आर्य ! देवलोकमां देवोनी जघन्य स्थिति दश हजार वर्षनी कही छे, अने ते पछी समयाधिक यावद् उत्कृष्ट स्थिति [तेत्रीश सागरोपमनी कही छे], अने पछी देवो अने देवलोक व्युच्छिन्न थाय छे, तो हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे केवी-रीते होय ? [उ०] 'हे आर्यो' ! एम कही श्रमण भगवंत महावीरे ते श्रमणोपासकोने आ प्रमाणे कह्युं–'हे आर्यो ! ऋषिभद्रपुत्र श्रमणोपासक जे तमने आ प्रमाणे कहे छे, यावत् प्ररूपे छे के, देवलोकोमां देवोनी जघन्य स्थिति दस हजार वर्षनी छे, अने ते पछी समयाधिक करता– इत्यादि कहेवुं, यावत् त्यार पछी देवो अने देवलोको व्युच्छिन्न थाय छे. ए वात साची छे. हे आर्यो ! हुं पण एज प्रमाणे कहुं छुं, यावत् प्ररूपुं छुं के देवलोकमां देवोनी स्थिति जघन्य दस हजार वर्षनी छे–इत्यादि पूर्वोक्त कहेवुं, यावत् त्यार बाद देवो अने देवलोको व्युच्छिन्न थाय छे, ए अर्थ सत्य छे. त्यार बाद ते श्रमणोपासको श्रमण भगवंत महावीरनी पासेथी ए वात सांभळी अने अवधारी श्रमण भगवंत महावीरने वांदी, नमी ज्यां ऋषिभद्रपुत्र श्रमणोपासक छे त्यां आवे छे, आवीने ऋषिभद्रपुत्र श्रमणोपासकने वांदी तथा नमी ए अर्थने (सत्य बातने न मानवारूप अपराधने) सारी रीते विनयपूर्वक वारंवार खमावे छे. त्यार बाद ते श्रमणोपासको तेने प्रश्नो पूछे छे, अने पूछी अर्थने ग्रहण करे छे, ग्रहण करी श्रमण भगवंत महावीरने वांदी नमी जे दिशायकी आव्या हता, पाछा तेज दिशा तरफ गया.

ऋषिभद्रपुत्र अनगारिकपणाने लेवाने समर्थ छे?

४. [प्र०] 'हे भगवन्' ! ए प्रमाणे कही भगवान् गौतमे श्रमण भगवंत महावीरने वांदी अने नमस्कार करी आ प्रमाणे कह्युं–'हे भगवन् ! श्रमणोपासक ऋषिभद्रपुत्र आप देवानुप्रियनी पासे दीक्षा लइ गृहवासनो त्याग करी अनगारिकपणाने लेवाने समर्थ छे ? [उ०] हे गौतम ! आ अर्थ यथार्थ नथी; पण हे गौतम ! श्रमणोपासक ऋषिभद्रपुत्र घणा शीलव्रत, गुणव्रत, विरमणव्रत, प्रत्याख्यान अने पौषधोपवासो वडे तथा यथायोग्य स्वीकारेल तपकर्म वडे आत्माने भावित करतो घणां वरसो सुधी श्रमणोपासकपर्यायने पाळी, मासिक संलेखनावडे आत्माने सेवी, साठ भक्तो निराहारपणे वीतावी आलोचन अने प्रतिक्रमण करी, समाधिने प्राप्त थइ मरण समये काल करी सौधर्मकल्पमां अरुणाभ नामे विमानमां देवपणे उत्पन्न थशे. त्यां केटलाक देवोनी चार पल्योपमनी स्थिति कही छे; तेमां ऋषिभद्रपुत्र देवनी पण चार पल्योपमनी स्थिति हशे.

ऋषिभद्रपुत्र देवलोकथी च्यवी क्यां जशे ?

५. [प्र०] हे भगवन् ! पछी ते ऋषिभद्रपुत्र देव ते देवलोकथी आयुषनो क्षय थया पछी, भवनो क्षय थया पछी, अने स्थितिनो

[उ०] गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति, जाव–अंतं काहेति। 'सेवं भंते! सेवं भंते'! त्ति भगवं गोयमे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कया वि आलभियाओ नगरीओ संखवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ।

६. [प्र०] तेणं कालेणं तेणं समएणं आलभिया नामं नगरी होत्था। वन्नओ। तत्थ णं संखवणे णामं चेइए होत्था। वन्नओ। तस्स णं संखवणस्स चेइयस्स अदूरसामंते पोग्गले नामं परिव्वायए परिवसति, रिउव्वेद–जजुव्वेद० जाव–नएसु सुपरिनिट्ठिए छट्ठं–छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ० जाव–आयावेमाणे विहरति। तए णं तस्स पोग्गलस्स छट्ठं–छट्ठेणं जाव–आयावेमाणस्स पगतिभद्दयाए जहा सिवस्स जाव–विब्भंगे नामं अन्नाणे समुप्पन्ने। से णं तेणं विब्भंगेणं नाणेणं समुप्पन्नेणं बंभलोए कप्पे देवाणं ठितिं जाणति पासति। तए णं तस्स पोग्गलस्स परिव्वायगस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव–समुप्पज्जित्था–'अत्थि णं ममं अइसेसे नाण–दंसणे समुप्पन्ने, देवलोएसु णं देवाणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया, दुसमयाहिया जाव–असंखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेणं दससागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता, तेण परं वोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य'–एवं संपेहेति, एवं संपेहेत्ता आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, आ० २–हित्ता तिदंडकुंडिया जाव–धाउरत्ताओ य गेण्हइ, गेण्हेत्ता जेणेव आलंभिया नगरी, जेणेव परिव्वायगावसहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भंडनिक्खेवं करेति, भं० २–रेत्ता आलंभियाए नगरीए सिंघाडग० जाव–पहेसु अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ, जाव–परूवेइ–'अत्थि णं देवाणुप्पिया! ममं अतिसेसे नाण–दंसणे समुप्पन्ने, देवलोएसु णं देवाणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं, तहेव जाव–वोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य। तए णं आलंभियाए नगरीए एएणं अभिलावेणं जहा सिवस्स, तं चेव जाव से कहमेयं मन्ने एवं? सामी समोसढे, जाव–परिसा पडिगया। भगवं गोयमे तहेव भिक्खायरियाए तहेव बहुजणसद्दं निसामेइ, तहेव० २–त्ता तहेव सव्वं भाणियव्वं, जाव–अहं पुण गोयमा! एवं आइक्खामि, एवं भासामि, जाव परूवेमि–'देवलोएसु णं देवाणं जहन्नेणं दस वाससहस्साइं ठिती पण्णत्ता, तेण परं समयाहिया, दुसमयाहिया, जाव–उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता, तेण परं वोच्छिन्ना देवा य देवलोगा य।

७. [प्र०] अत्थि णं भंते! सोहम्मे कप्पे दव्वाइं सवन्नाइं पि अवन्नाइं पि? [उ०] तहेव जाव–हंता अत्थि, एवं ईसाणे

सिद्धिपद पामशे.

क्षय थया बाद यावत् क्यां उत्पन्न थशे? [उ०] हे गौतम! महाविदेह क्षेत्रमां सिद्धिपद पामशे, यावत् सर्व दुःखोनो अन्त–नाश करशे. हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे–एम कही भगवान् गौतम यावत् आत्माने भावित करता विहरे छे. त्यार बाद श्रमण भगवंत महावीर अन्य कोइ दिवसे आलभिका नगरीथी अने शंखवन नामे चैत्यथी नीकळी बहारना देशोमां विचरे छे.

६. [प्र०] ते काले–ते समये आलभिका नामे नगरी हती. वर्णन. त्यां शंखवन नामे चैत्य हतुं. वर्णन. ते शंखवन चैत्यनी थोडे दूर पुद्गल नामे परिव्राजक रहेतो हतो. ते ऋग्वेद, यजुर्वेद अने यावत् बीजा ब्राह्मण संबन्धी नयोमां कुशल हतो. ते निरंतर छट्ठ छट्ठनो तप करवापूर्वक उंचा हाथ राखीने यावत् आतापना लेतो हतो. त्यार बाद ते पुद्गल परिव्राजकने निरन्तर छट्ठ छट्ठना तप करवापूर्वक यावद् आतापना लेता प्रकृतिनी सरलताथी *शिव परिव्राजकनी पेठे यावद् विभंग नामे अज्ञान उत्पन्न थयुं, अने ते उत्पन्न थयेला विभंगज्ञानवडे ब्रह्मलोक कल्पमां रहेला देवोनी स्थिति जाणे छे अने जुए छे. पछी ते पुद्गल परिव्राजकने आवा प्रकारनो आ संकल्प यावद् उत्पन्न थयो–'मने अतिशयवाळुं ज्ञान अने दर्शन उत्पन्न थयुं छे, देवलोकमां देवोनी जघन्य स्थिति दस हजार वर्षनी छे, अने पछी एक समय अधिक, बे समय अधिक, यावद् असंख्य समय अधिक करतां उत्कृष्टथी दस सागरोपमनी स्थिति कही छे. त्यार पछी देवो अने देवलोको व्युच्छिन्न थाय छे'–एम विचार करे छे, विचारीने आतापनाभूमिथी नीचे उतरी त्रिदंड, कुंडिका, यावद् भगवां वस्त्रोने ग्रहण करी ज्यां आलभिका नगरी छे, अने ज्यां तापसोना आश्रमो छे त्यां आवे छे, आवीने पोताना उपकरणो मूकी आलभिका नगरीमां शृंगाटक, त्रिक, यावद् बीजा मार्गोमां एक बीजाने ए प्रमाणे कहे छे, यावत् प्ररूपे छे–'हे देवानुप्रिय! मने अतिशयवाळुं ज्ञान अने दर्शन उत्पन्न थयुं छे, अने देवलोकमां देवोनी जघन्य स्थिति दश हजार वर्षनी छे'–इत्यादि पूर्वोक्त कहेवुं, त्यार पछी देवो अने देवलोको व्युच्छिन्न थाय छे.' त्यार बाद 'आलमिका नगरीमां'–ए अभिलापथी जेम शिव राजर्षि माटे पूर्वे कह्युं [श० ११ उ० ९ सू० ८] तेम अहीं कहेवुं, यावद् ए प्रमाणे केवी रीते होय? हवे महावीर स्वामी समवसर्या अने यावत् परिषद् वांदीने विसर्जित थइ. भगवान् गौतम तेज प्रमाणे भिक्षाचर्या माटे नीकळ्या अने तेओ घणा माणसोनो शब्द सांभळे छे–इत्यादि बधुं पूर्ववत् कहेवुं, यावद् हे गौतम! हुं पण ए प्रमाणे कहुं छुं, बोलुं छुं, यावद् प्ररूपुं छुं के देवलोकमां देवोनी जघन्य स्थिति दस हजार वर्षनी कही छे, अने त्यार पछी एक समयाधिक, द्विसमयाधिक यावद् उत्कृष्टथी तेत्रीश सागरोपम स्थिति कही छे, अने त्यार बाद देवो अने देवलोको व्युच्छिन्न थाय छे.

७. [प्र०] हे भगवन्! सौधर्मकल्पमां वर्णसहित अने वर्णरहित द्रव्यो छे?–इत्यादि पूर्ववत् प्रश्न. [उ०] हे गौतम! हा, छे. ए प्रमाणे

---

५. * जुओ भग० खं० ३ श० ११ उ० ९ पृ० २२४.

वि, एवं जाव अच्चुए, एवं गेवेज्जविमाणेसु, अणुत्तरविमाणेसु वि, ईसिपब्भाराए वि जाव–हंता अत्थि । तए णं सा महतिमहालिया जाव–पडिगया ।

८. तए णं आलंभियाए नगरीए सिंघाडग–तिय० अवसेसं जहा सिवस्स, जाव–सव्वदुक्खप्पहीणे, नवरं तिदंड–कुंडियं जाव–धाउरत्तवत्थपरिहिए परिवडियविब्भंगे आलंभियं नगरं मज्झं–मज्झेणं निग्गच्छति, जाव–उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमति, अवक्कमित्ता तिदंडकुंडियं च जहा खंदओ, जाव पव्वइओ सेसं जहा सिवस्स, जाव–"अव्वाबाहं सोक्खं अणुभवंति सासयं सिद्धा" । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

दुवालसमो उद्देसो समत्तो ।

समत्तं एगारसमं सयं ।

यावद् ईशान देवलोकमां पण जाणवुं. ते प्रमाणे यावद् अच्युतमां, ग्रैवेयकविमानमां, अनुत्तरविमानमां अने ईषत्प्राग्भारा पृथिवीमां (सिद्धशिलामां) पण वर्णसहित अने वर्णरहित द्रव्यो छे. त्यार बाद ते अत्यन्त मोटी परिषद् यावद् विसर्जित थई.

८. पछी आलभिका नगरीमां शृंगाटक, त्रिक–वगेरे मार्गोमां घणा माणसोने एम कहे छे इत्यादि *शिव राजर्षिनी पेठे कहेवुं, यावत् ते सर्वे दुःखथी रहित थया. परन्तु विशेष ए छे के, त्रिदंड, कुंडिका यावद् गेरुथी रंगेला वस्त्रने पहेरी विभंगज्ञान रहित थयेलो ते पुद्गल परिव्राजक आलभिका नगरीनी वच्चे थईने नीकळे छे. नीकळीने यावद् उत्तरपूर्व (ईशान) दिशा तरफ जइ †स्कंदकनी पेठे ते पुद्गल परिव्राजक त्रिदंड, कुंडिका यावद् मूकी प्रव्रजित थाय छे. बाकी बधुं शिवराजर्षिनी पेठे यावद् 'सिद्धो अव्याबाध अने शाश्वत सुखने अनुभवे छे' त्यांसुधी जाणवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'–एम कही यावद् भगवान् गौतम विहरे छे.

पुद्गल-

एकादश शते द्वादश उद्देशक समाप्त.

एकादश शतक समाप्त.

८. * भग० खं० ३ श० ११ उ० ९ पृ० २२४. † भग० खं० १ श० २ उ० १ पृ० २३३.

दुवालसमं सयं ।

१ संखे २ जयंति ३ पुढवि ४ पोग्गल ५ अइवाय ६ राहु ७ लोगे य ।
८ नागे य ९ देव १० आया बारसमसए दसुद्देसा ॥ १ ॥

पढमो उद्देसो ।

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नामं नगरी होत्था, वण्णओ । कोट्ठए चेइए, वण्णओ । तत्थ णं सावत्थीए नगरीए बहवे संखप्पामोक्खा समणोवासगा परिवसंति, अड्ढा, जाव-अपरिभूया अभिगयजीवाजीवा जाव विहरंति । तस्स णं संखस्स समणोवासगस्स उप्पला नामं भारिया होत्था, सुकुमाल० जाव-सुरूवा समणोवासिया अभिगयजीवा-जीवा जाव-विहरइ । तत्थ णं सावत्थीए नगरीए पोक्खली नामं समणोवासए परिवसइ, अड्ढे, अभिगय० जाव-विहरइ । तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे । परिसा निग्गया, जाव-पज्जुवासइ । तए णं ते समणोवासगा इमीसे कहाए जहा आलंभियाए जाव-पज्जुवासंति । तए णं समणे भगवं महावीरे तेसिं समणोवासगाणं तीसे य महति० धम्मकहा, जाव-परिसा पडिगया । तए णं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोचा निसम्म हट्ठतुट्ठ० समणं भगवं महावीरं वंदंति, नमंसंति, वंदित्ता

बारमुं शतक.

[उद्देशक संग्रह-] १ शंख, २ जयंती, ३ पृथिवी, ४ पुद्गल, ५ अतिपात, ६ राहु, ७ लोक, ८ नाग, ९ देव अने १० आत्मा-ए विषयो संबन्धे दश उद्देशको बारमा शतकमां कहेवामां आवशे.

प्रथम उद्देशक.

श्रावस्ती नगरी. शंखप्रमुख श्रमणोपासको. शंखने उत्पला स्त्री हती. पुष्कलिश्रमणोपासक.

१. ते काले, ते समये श्रावस्ती नामनी नगरी हती. वर्णन. कोष्ठक नामे चैत्य हतुं. वर्णन. ते श्रावस्ती नगरीमां शंखप्रमुख घणा श्रमणोपासको रहेता हता, तेओ धनिक यावद् अपरिभूत-कोइथी पराभव न पामे तेवा अने जीवाजीव तत्त्वने जाणनारा हता. ते शंख नामना श्रमणोपासकने उत्पला नामे स्त्री हती, ते सुकुमाल हाथपगवाळी, यावत् सुरूपा अने जीवाजीव तत्त्वने जाणनारी श्रमणोपासिका यावद् विहरती हती. ते श्रावस्ती नगरीमां पुष्कली नामे श्रमणोपासक रहेतो हतो, ते धनिक अने जीवाजीव तत्त्वनो ज्ञाता हतो. ते काले, ते समये त्यां महावीर स्वामी समवसर्या, परिषद् वांदवाने नीकळी, यावत् ते पर्युपासना करे छे. त्यार बाद ते श्रमणोपासको भगवंत आव्यानी आ वात सांभळी *आलभिका नगरीना श्रावकोनी पेठे यावत् पर्युपासना करे छे. त्यार बाद श्रमण भगवंत महावीरे ते श्रमणोपासकोने तथा ते अत्यंत मोटी सभाने धर्मकथा कही, यावत् सभा पाछी गई. पछी ते श्रमणोपासकोए श्रमण भगवंत महावीर पासेथी धर्म सांभळी, अवधारी हर्षित अने संतुष्ट थई श्रमण भगवंत महावीरने वांद्या अने नमन कर्युं; वांदीने, नमीने प्रश्नो पूछ्या, प्रश्नो पूछीने तेमा

---

१ * जुओ भग० खं० ३ श० ११ उ० १२ पृ० २४८.

अभंसित्ता पासिणाइं पुच्छंति प० २–च्छित्ता अट्ठाइं परियादियंति, अ० २–यित्ता उट्ठाए उट्ठेंति, उ० २–त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सावत्थी नगरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

२. तए णं से संखे समणोवासए ते समणोवासए एवं वयासी–'तुज्झे णं देवाणुप्पिया! विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेह, तए णं अम्हे तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणा विसाएमाणा परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणा विहरिस्सामो। तए णं ते समणोवासगा संखस्स समणोवासगस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति। तए णं तस्स संखस्स समणोवासगस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव–समुप्पज्जित्था–'नो खलु मे सेयं तं विउलं असणं जाव–साइमं आसाएमाणस्स ४ पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणस्स विहरित्तए, सेयं खलु मे पोसहसालाए पोसहियस्स बंभचारिस्स उम्मुक्कमणि–सुवन्नस्स ववगयमाला–वन्नग–विलेवणस्स निक्खित्तसत्थ–मुसलस्स एगस्स अबिइयस्स दब्भसंथारोवगयस्स पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणस्स विहरित्तए'त्ति कट्टु एवं संपेहेति, संपेहेत्ता जेणेव सावत्थी नगरी, जेणेव सए गिहे, जेणेव उप्पला समणोवासिया, तेणेव उवागच्छइ, ते० २–च्छित्ता उप्पलं समणोवासियं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, ते० २–च्छित्ता पोसहसालं अणुपविस्सइ, अणुपविस्सित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पो० २–ज्जित्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ, उ० २–हित्ता दब्भसंथारगं संथरति, दब्भ० २–रित्ता दब्भसंथारगं दुरूहइ, द० २ दुरूहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी जाव–पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणे विहरति।

३. तए णं ते समणोवासगा जेणेव सावत्थी नगरी जेणेव साइं २ गिहाइं, तेणेव उवागच्छंति, ते० २–च्छित्ता विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावेत्ता अन्नमन्नं सद्दावेंति, अ० २–वेत्ता एवं वयासी–'एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हेहिं से विउले असण–पाण–खाइम–साइमे उवक्खडाविए, संखे य णं समणोवासए नो हव्वमागच्छइ, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं संखं समणोवासगं सद्दावेत्तए'।

४. तए णं से पोक्खली समणोवासए ते समणोवासए एवं वयासी–'अच्छह णं तुज्झे देवाणुप्पिया! सुनिव्वुया वीसत्था, अहन्नं संखं समणोवासगं सद्दावेमि'त्ति कट्टु तेसिं समणोवासगाणं अंतियाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता सावत्थीए नगरीए मज्झं–मज्झेणं जेणेव संखस्स समणोवासगस्स गिहे, तेणेव उवागच्छइ, ते० २–च्छित्ता संखस्स समणोवासगस्स गिहं अणुपविट्ठे।

५. तए णं सा उप्पला समणोवासिया पोक्खलिं समणोवासयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ० आसणाओ अब्भु

अर्थो ग्रहण कर्या, अर्थो ग्रहण करी अने उभा थई श्रमण भगवंत महावीर पासेथी अने कोष्ठक नामे चैत्यथी नीकळीने तेओए श्रावस्ती नगरी तरफ जवानो विचार कर्यो.

२. पछी ते शंख नामे श्रमणोपासके ए बधा श्रमणोपासकोने आ प्रमाणे कह्युं के हे देवानुप्रियो! तमे पुष्कळ अशन, पान, खादिम अने स्वादिम आहारने तैयार करावो, पछी आपणे पुष्कळ अशन, पान, खादिम अने स्वादिम आहारनो आस्वाद लेता, विशेष स्वाद लेता, परस्पर देता अने खाता पाक्षिक पोषधनुं अनुपालन करता विहरीशुं. त्यार पछी ते श्रमणोपासकोए शंख नामना श्रमणोपासकनुं वचन विनयपूर्वक स्वीकार्युं. त्यार बाद ते शंख नामे श्रमणोपासकने आवा प्रकारनो आ संकल्प यावद् उत्पन्न थयो–'अशन, यावत् स्वादिम आहारनो आस्वाद लेता, विस्वाद लेता, परस्पर आपता अने खाता पाक्षिक पोषधने ग्रहण करीने रहेवुं मने श्रेयस्कर नथी, पण मारी पोषधशाळामां ब्रह्मचर्यपूर्वक, मणि अने सुवर्णनो त्याग करी माला, उद्वर्तन अने विलेपनने छोडी शस्त्र अने मुसल वगेरेने मूकीने तथा डाभना संथारा सहित मारे एकलाने–बीजानी सहाय शिवाय–पोषधनो स्वीकार करी विहरवुं श्रेय छे.' एम विचार करी, श्रावस्ती नगरीमां ज्यां पोतानुं घर छे, अने ज्यां उत्पला श्रमणोपासिका रहे छे, त्यां आवी उत्पला श्रमणोपासिकाने पूछी, ज्यां पौषधशाला छे त्यां जइ, पोषधशाळामां प्रवेश करी, पोषधशालाने प्रमार्जी निहार अने पेशाब करवानी जग्याने प्रतिलेही–तपासीने डाभनो संथारो पाथरी तेना उपर बेठो, बेसीने पोषधशालामां पोषधग्रहण करी ब्रह्मचर्यपूर्वक यावत् पाक्षिक पोषधनुं पालन करे छे.

शंखनो संकल्प–अशनादिनो आहार करता पाक्षिक पोषध लेवो मने श्रेयस्कर नथी.

३. त्यार बाद ते श्रमणोपासकोए श्रावस्ती नगरीमां पोतपोताने घेर जइ, पुष्कळ अशन, पान, खादिम अने स्वादिम आहारने तैयार करावी परस्पर एक बीजाने बोलावी आ प्रमाणे कह्युं–'हे देवानुप्रियो! आपणे पुष्कळ अशन, पान, खादिम अने स्वादिम आहारने तैयार करावेलो छे, पण ते शंख श्रमणोपासक जल्दी आव्या नहि, माटे हे देवानुप्रियो! आपणे शंख श्रमणोपासकने बोलाववा श्रेयस्कर छे.

भोजन माटे शंख श्रमणोपासकने बोलाववा योग्य छे.

४. त्यार बाद ते पुष्कली नामना श्रमणोपासके ते श्रमणोपासकोने आ प्रमाणे कह्युं–'हे देवानुप्रियो! तमे शांतिपूर्वक विसामो ल्यो, अने हुं शंख श्रमणोपासकने बोलावुं छुं, एम कही श्रमणोपासकोनी पासेथी नीकळी श्रावस्ती नगरीना मध्य भागमां ज्यां शंख श्रमणोपासकनुं घर छे, त्यां जइ तेणे शंख श्रमणोपासकना घरमां प्रवेश कर्यो.

पुष्कलि शंखने बोलाववा जाय छे.

५. पछी ते [शंख श्रावकनी पत्नी] उत्पला श्रमणोपासिका ते पुष्कलि श्रमणोपासकने आवतो जोइ, हर्षित अने संतुष्ट थई पो-

ट्ठेइ, आ० २-त्ता सत्त-ट्ठ पयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता पोक्खलिं समणोवासगं वंदति, नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता आसणेणं उवनिमंतेइ, आ० २-त्ता एवं वयासी-'संदिसतु णं देवाणुप्पिया! किमागमणप्पयोयणं? तए णं से पोक्खली समणोवासए उप्पलं समणोवासियं एवं वयासी-कहिं णं देवाणुप्पिए! संखे समणोवासए'? तए णं सा उप्पला समणोवासिया पोक्खलिं समणोवासयं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! संखे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी जाव-विहरइ।

६. तए णं से पोक्खली समणोवासए जेणेव पोसहसाला, जेणेव संखे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, ते० २-च्छित्ता गमणागमणाए पडिक्कमइ, ग० २-मित्ता संखं समणोवासगं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-'एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हेहिं से विउले असणे०जाव-साइमे उवक्खडाविए, तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया! तं विउलं असणं जाव-साइमं आसाएमाणा जाव-पडिजागरमाणा विहरामो।

७. तए णं से संखे समणोवासए पोक्खलिं समणोवासगं एवं वयासी-'णो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया! तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणस्स जाव-पडिजागरमाणस्स विहरित्तए, कप्पइ मे पोसहसालाए पोसहियस्स जाव-विहरित्तए, तं छंदेणं देवाणुप्पिया! तुब्भे तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणा जाव विहरह।

८. तए णं से पोक्खली समणोवासए संखस्स समणोवासगस्स अंतियाओ पोसहसालाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सावत्थिं नगरिं मज्झं-मज्झेणं जेणेव ते समणोवासगा तेणेव उवागच्छइ, ते० २-च्छित्ता ते समणोवासए एवं वयासी-'एवं खलु देवाणुप्पिया! संखे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए जाव-विहरइ, तं छंदेणं देवाणुप्पिया! तुब्भे विउलं असणं ४ जाव विहरह, संखे णं समणोवासए नो हव्वमागच्छइ। तए णं ते समणोवासगा तं विउलं असणं ४ आसाएमाणा जाव-विहरंति।

९. तए णं तस्स संखस्स समणोवासगस्स पुव्वरत्ता-वरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे जाव-समुप्पज्जित्था-'सेयं खलु मे कल्लं जाव-जलंते समणं भगवं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता जाव-पज्जुवासित्ता तओ पडिनियत्तस्स पक्खियं पोसहं पारित्तए'त्ति कट्टु एवं संपेहेति, एवं संपेहेत्ता कल्लं जाव जलंते पोसहसालाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिए सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमति, स० २-मित्ता पादविहारचारेणं सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं जाव-पज्जुवासति, अभिगमो नत्थि।

ताना आसनथी उठी, सात आठ पगलां तेनी सामे जइ पुष्कलि श्रमणोपासकने वांदी अने नमी आसनवडे उपनिमंत्रण कर्या बाद आ प्रमाणे बोली-'हे देवानुप्रिय! कहो, के तमारा आगमननुं शुं प्रयोजन छे? त्यारे ते पुष्कलि श्रमणोपासके ते उत्पला श्रमणोपासिकाने आ प्रमाणे कह्युं-'हे देवानुप्रिये! शंख श्रमणोपासक क्यां छे'? त्यार बाद ते उत्पला श्रमणोपासिकाए ते पुष्कलि श्रमणोपासकने आ प्रमाणे कह्युं-'हे देवानुप्रिय! खरेखर शंख श्रमणोपासक पोषधशालामां पोषध ग्रहण करी ब्रह्मचारी थइने यावद् विहरे छे.'

६. त्यार बाद ते पुष्कलि श्रमणोपासके ज्यां पोषधशाला छे, अने ज्यां शंख श्रमणोपासक छे त्यां आवी, गमनागमनने (जतां आवतां कोइ जीवनी हिंसा करी होय तेने) प्रतिक्रमी शंख श्रमणोपासकने वांदी अने नमीने तेने आ प्रमाणे कह्युं-'हे देवानुप्रिय! ए प्रमाणे खरेखर अमे घणो अशन, यावत्-स्वादिम आहार तैयार कराव्यो छे, तो हे देवानुप्रिय! आपणे जइए, अने पुष्कळ अशन, यावत्-स्वादिम आहारनो आस्वाद लेता यावत्-पोषधनुं पालन करता विहरीए.

शंखे कह्युं के-आहारनो आस्वाद लेता पोषधनुं पालन करवुं मने योग्य नथी.

७. त्यार बाद ते शंख श्रमणोपासके ते पुष्कलि श्रमणोपासकने आ प्रमाणे कह्युं-'हे देवानुप्रिय! पुष्कळ अशन, पान, खादिम अने स्वादिम आहारनो आस्वाद लेता यावत् पोषधनुं पालन करी विहरवुं मने योग्य नथी, मने तो पोषधशालामां पोषधयुक्त थइने यावत्-विहरवुं योग्य छे. माटे हे देवानुप्रिय! तमे इच्छा प्रमाणे घणा अशन, पान, खादिम अने स्वादिम आहारनो आस्वाद लेता यावद् विहरो.'

८. त्यार बाद ते पुष्कलि श्रमणोपासक शंख श्रमणोपासकनी पासेथी पोषधशालामांथी बहार नीकळी श्रावस्ती नगरीना मध्यभागमां ज्यां ते श्रमणोपासको छे त्यां आव्यो, अने त्यां आवी ते श्रमणोपासकोने आ प्रमाणे कह्युं-'हे देवानुप्रियो! ए प्रमाणे खरेखर शंख श्रमणोपासक पोषधशालामां पोषध ग्रहण करीने यावद् विहरे छे. [तेणे कह्युं छे के-] 'हे देवानुप्रियो! तमे इच्छा मुजब घणा अशन, पान, खादिम अने स्वादिम आहारनो आस्वाद लेता यावत् विहरो, शंख श्रमणोपासक तो शीघ्र नहि आवे'. त्यार बाद ते श्रमणोपासको ते विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिम आहारने आस्वादता यावद्-विहरे छे.

शंखनो महावीर स्वामिने वंदन करवानो संकल्प.

९. त्यार बाद मध्य रात्रिना समये धर्म जागरण करता ते शंख श्रमणोपासकने आवा प्रकारनो आ विचार यावत् उत्पन्न थयो-'आवती काले यावत् सूर्य उगवाना समये श्रमण भगवंत महावीरने वांदी, नमी यावत् पर्युपासना करी त्यांथी पाछा आवीने पाक्षिक पोषध पारवो श्रेयस्कर छे'-एम विचार करे छे, एम विचारी आवती काले यावत् सूर्योदय समये पोषधशालाथी बहार नीकळी शुद्ध, बहार जवा योग्य तथा मंगलरूप वस्त्रो उत्तम रीते पहेरी पोताना घरथी बहार नीकळी पगे चाली श्रावस्ती नगरीना मध्यभागमां थइने जाय छे, यावत् पर्युपासना करे छे. अहिं [पोषधयुक्त होवाथी] तेने *अभिगमो नथी.

शंख भगवंतने वंदन करवा जाय छे.

---

९ * पांच अभिगम संबन्धे जुओ भग० खं० १ श० २ उ० ५ पृ० २७९.

१०. तए णं ते समणोवासगा कल्लं पादु० जाव–जलंते ण्हाया कयबलिकम्मा जाव–सरीरा सएहिं २ गेहेहिंतो पडि-निक्खमंति, स० २–मित्ता एगयओ मिलायंति, एगयओ मिलायित्ता सेसं जहा पढमं जाव–पज्जुवासंति। तए णं समणे भगवं महावीरे तेसिं समणोवासगाणं तीसे य धम्मकहा, जाव–आणाए आराहए भवति। तए णं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेंति, उ० २–ट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव संखे समणोवासए तेणेव उवागच्छन्ति, ते० २–च्छित्ता संखं समणोवासयं एवं वयासी–'तुमं देवा-णुप्पिया! हिज्जो अम्हे अप्पणा चेव एवं वयासी, तुम्हे णं देवाणुप्पिया! विउलं असणं० जाव–विहरिस्सामो, तए णं तुमं पोसहसालाए जाव विहरिए, तं सुट्ठु णं तुमं देवाणुप्पिया! अम्हे हीलसि। 'अज्जो'त्ति समणे भगवं महावीरे ते समणोवासए एवं वयासी–'मा णं अज्जो! तुज्झे संखं समणोवासगं हीलह, निंदह, खिंसह, गरहह, अवमन्नह, संखे णं समणोवासए पिय-धम्मे चेव, दढधम्मे चेव, सुदक्खुजागरियं जागरिए।

११. [प्र०] 'भंते'त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–कइविहा णं भंते! जागरिया पण्णत्ता? [उ०] गोयमा! तिविहा जागरिया पण्णत्ता, तंजहा–बुद्धजागरिया, अबुद्धजागरिया, सुदक्खु-जागरिया। [प्र०] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–'तिविहा जागरिया पण्णत्ता, तंजहा–बुद्धजागरिया, अबुद्धजागरिया, सुदक्खु जागरिया'? [उ०] गोयमा! जे इमे अरिहंता भगवंतो उप्पन्ननाण–दंसणधरा जहा खंदए जाव–सव्वन्नू सव्वदरिसी, एए णं बुद्धा बुद्धजागरियं जागरंति। जे इमे अणगारा भगवंतो ईरियासमिया भासासमिया जाव–गुत्तबंभचारी एए णं अबुद्धा अबुद्ध-जागरियं जागरंति। जे इमे समणोवासगा अभिगयजीवा–जीवा जाव–विहरन्ति, एते णं सुदक्खुजागरियं जागरंति, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ 'तिविहा जागरिया जाव–सुदक्खुजागरिया'।

१२. [प्र०] तए णं से संखे समणोवासए समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–कोह-वसट्टे णं भंते! जीवे किं बंधइ, किं पकरेति, किं चिणाति, किं उवचिणाति? संखा! कोहवसट्टे णं जीवे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ–एवं जहा पढमसए असंवुडस्स अणगारस्स जाव–अणुपरियट्टइ।

बीजा श्रमणोपासको पण शंखना जाव छे.

१०. त्यार बाद [पूर्वे कहेला] ते श्रमणोपासको आवती काले यावत् सूर्योदय समये स्नान करी, बलिकर्म करी यावत् शरीरने अलं-कृत करी पोत पोताना घरथी नीकळी एक स्थळे भेगा थाय छे, एक स्थळे भेगा थइने–इत्यादि बधुं *प्रथम निर्गमवत् जाणवुं, यावत् (भगवंत महावीरनी पासे जइ) तेमनी पर्युपासना करे छे. त्यार बाद श्रमण भगवंत महावीरे ते श्रमणोपासकोने तथा ते सभाने धर्मकथा कही. यावत् 'ते आज्ञाना आराधक थाय छे' त्यां सुधी जाणवुं. त्यार बाद ते श्रमणोपासको श्रमण भगवंत महावीरनी पासेथी धर्मने सांभळी, अव-धारी, हृष्ट अने तुष्ट थया, अने उभा थइ श्रमण भगवंत महावीरने वांदी, नमी, ज्यां शंख श्रमणोपासक छे त्यां आव्या; आवीने शंख श्रम-णोपासकने तेओए एम कह्युं के–'हे देवानुप्रिय! तमे गइ काले अमने एम कह्युं हतुं के, 'हे देवानुप्रियो! तमे पुष्कळ अशनादि आहारने तैयार करावो, यावत्–आपणे विहरीशुं, त्यार बाद तमे पोषधशालामां यावद् विहर्या, तो हे देवानुप्रिय! तमे अमारी ठीक हीलना (हांसी) करी.' पछी 'हे आर्यो!' एम कही श्रमण भगवंत महावीरे ते श्रमणोपासकोने आ प्रमाणे कह्युं–'हे आर्यो!' तमे शंख श्रमणोपासकनी हीलना, निंदा, खिंसना, गर्हा अने अवमानना न करो, कारण के ते शंख श्रमणोपासक धर्मने विषे प्रीतिवाळो अने दृढतावाळो छे, तथा तेणे [प्रमाद अने निद्राना त्यागथी] सुदृष्टि–ज्ञानीनुं जागरण करेल छे.

शंखनी निन्दा न करो.

११. [प्र०] 'भगवन्'! ए प्रमाणे कही भगवान् गौतम श्रमण भगवंत महावीरने वांदे छे, नमे छे, वांदी अने नमी तेणे आ प्रमाणे कह्युं–'हे भगवन्! जागरिका केटला प्रकारनी कही छे? [उ०] हे गौतम! जागरिका त्रण प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे–१ बुद्धजाग-रिका, २ अबुद्धजागरिका अने ३ सुदर्शनजागरिका. [प्र०] हे भगवन्! तमे ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के 'जागरिका त्रण प्रकारनी छे, ते आ प्रमाणे–बुद्धजागरिका, अबुद्धजागरिका अने सुदर्शनजागरिका'? [उ०] हे गौतम! जे उत्पन्न थयेला ज्ञान अने दर्शनना धारण करनारा आ अरिहंत भगवंतो छे–इत्यादि †स्कंदकना अधिकारमां कह्या प्रमाणे सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी छे–ए बुद्धो [केवलज्ञानवडे] बुद्धजा-गरिका जागे छे. जे आ भगवंत अनगारो ईर्यासमितियुक्त, भाषासमितियुक्त अने यावत्–गुप्त ब्रह्मचारी छे, तेओ ['केवलज्ञानी नहि होवा-थी] अबुद्ध छे अने तेओ अबुद्धजागरिका जागे छे. तथा जे आ श्रमणोपासको जीवाजीवने जाणनारा छे, यावत् एओ [सम्यग्दर्शनी होवाथी] सुदर्शनजागरिका जागे छे. माटे ते हेतुथी हे गौतम! ए प्रमाणे कह्युं छे के जागरिका त्रण प्रकारनी छे, यावत् सुदर्शनजागरिका छे.

जागरिकाना प्रकार.

१२. [प्र०] त्यार बाद ते शंख श्रमणोपासके श्रमण भगवंत महावीरने वांदी, नमी आ प्रमाणे कह्युं–हे भगवन्! 'क्रोधने वश होवाथी पीडित थयेलो जीव शुं बांधे, शुं करे, शेनो चय करे अने शेनो उपचय करे? [उ०] हे शंख! क्रोधने वश थवाथी पीडित थयेलो जीव आयुष सिवायनी सात कर्मप्रकृतिओ शिथिल बन्धनथी बांधेली होय तो कठिन बन्धनवाळी करे–इत्यादि सर्व ‡प्रथम शत-कमां कहेला संवररहित अनगारनी पेठे जाणवुं, यावत् ते [संवररहित साधु] संसारमां भमे छे.

क्रोधथी व्याकुळ थयेलो जीव शुं बांधे?

---

१० * भग० खं० १ श० २ उ० ५ पृ० २७८. ११ † भग० खं० १ श० २ उ० १ पृ० २३४. १२ ‡ भग० खं० १ श० १ उ० १ पृ० ६३.

१३. [प्र०] माणवसट्टे णं भंते ! जीवे एवं चेव, एवं मायावसट्टेऽवि। एवं लोभवसट्टेऽवि, जाव-अणुपरियट्टइ ।

१४. तए णं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म भीया तत्था तसिया संसारभउव्विग्गा समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव संखे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, ते० २-च्छित्ता संखं समणोवासगं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो २ खामेंति। तए णं ते समणोवासगा सेसं जहा आलंभियाए जाव-पडिगया।

१५. [प्र०] 'भंते'त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-पभू णं भंते ! संखे समणोवासए देवाणुप्पियाणं अंतियं० [उ०] सेसं जहा इसिभद्दपुत्तस्स, जाव-अंतं काहेति। सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव-विहरइ ।

पढमो उद्देसो समत्तो ।

मानी जीव शुं बांधे?

१३. [प्र०] हे भगवन्! मानने वश थवाथी पीडित थयेलो जीव शुं बांधे-इत्यादि प्रश्न. [उ०] पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं, अने एज प्रमाणे मायाने वश थवाथी पीडित थयेला अने लोभने वश थवाथी पीडित थयेला जीव संबन्धे पण जाणवुं; यावत् ते संसारमां भमे छे.

१४. त्यार बाद ते श्रमणोपासको श्रमण भगवंत महावीर पासेथी ए प्रमाणे वात सांभळी, अवधारी भय पाम्या, त्रास पाम्या, त्रसित थया अने संसारना भयथी उद्विग्न थया. तथा तेओ श्रमण भगवंत महावीरने वांदी, नमी ज्यां शंख श्रमणोपासक छे त्यां जइ शंख श्रमणोपासकने वांदी, नमी ए (अविनयरूप) अर्थने सारी रीते विनयपूर्वक वारंवार खमावे छे. त्यार बाद ते श्रमणोपासको यावत् पाछा गया. तेनो बाकी रहेलो वृत्तांत *आलभिकाना श्रमणोपासकोनी पेठे जाणवो.

शंख प्रव्रज्या ग्रहण करवा समर्थ छे?

१५. [प्र०] 'भगवन्'! एम कही भगवान् गौतमे श्रमण भगवंत महावीरने वांदी, नमी आ प्रमाणे कह्युं-हे भगवन्! ते शंख श्रमणोपासक आप देवानुप्रियनी पासे प्रव्रज्या लेवाने समर्थ छे? [उ०] बाकी बधुं †ऋषिभद्रपुत्रनी पेठे जाणवुं. यावत्-ते सर्व दुःखोनो अन्त करशे. हे भगवन्! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन्! ते ए प्रमाणे छे, एम कही विहरे छे.

द्वादशशते प्रथम उद्देशक समाप्त.

---

१४ * आलभिकाना श्रमणोपासक संबन्धे जुओ भग० खं० ३ श० ११ उ० १२ पृ० २४८.

१५ † ऋषिभद्रपुत्रनो संबन्ध जुओ भग० खं० ३ श० ११ उ० १२ पृ० २४८.

बीओ उद्देसो।

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं कोसंबी नामं नगरी होत्था। वण्णओ। चंदोवतरणे चेइए। वण्णओ। तत्थ णं कोसंबीए नगरीए सहस्साणीयस्स रण्णो पोत्ते सयाणीयस्स रण्णो पुत्ते चेडगस्स रण्णो नत्तुए मिगावतीए देवीए अत्तए जयंतीए समणोवासियाए भत्तिज्जए उदायणे नामं राया होत्था। वण्णओ। तत्थ णं कोसंबीए नयरीए सहस्साणीयस्स रण्णो सुण्हा सयाणीयस्स रण्णो भज्जा चेडगस्स रण्णो धूया उदायणस्स रण्णो माया जयंतीए समणोवासियाए भाउज्जा मिगावती नामं देवी होत्था। वण्णओ, सुकुमाल० जाव-सुरूवा समणोवासिया जाव-विहरइ। तत्थ णं कोसंबीए नगरीए सहस्साणीयस्स रण्णो धूया सयाणीयस्स रण्णो भगिणी उदायणस्स रण्णो पिउच्छा मिगावतीए देवीए नणंदा वेसालीसावयाणं अरहंताणं पुव्वसिज्जायरी जयंती नामं समणोवासिया होत्था, सुकुमाल० जाव-सुरूवा अभिगय० जाव विहरइ।

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे। जाव-परिसा पज्जुवासइ। तए णं से उदायणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ-तुट्ठे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, को० २-त्ता एवं वयासी-'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! कोसंबिं नगरिं सब्भितर-बाहिरियं० एवं जहा कूणिओ तहेव सव्वं जाव-पज्जुवासइ। तए णं सा जयंती समणोवासिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठ-तुट्ठा जेणेव मियावती देवी तेणेव उवागच्छइ, ते० २-च्छित्ता मियावतिं देविं एवं वयासी-एवं जहा नवमसए उस-

द्वितीय उद्देशक.

१. ते काले, ते समये कौशांबी नामे नगरी हती. वर्णन. चन्द्रावतरण चैत्य हतुं. वर्णन. ते कौशांबी नगरीमां सहस्रानीक राजानो पौत्र, शतानीक राजानो पुत्र, चेटक राजानी पुत्रीनो पुत्र, मृगावती देवीनो पुत्र, अने जयंती श्रमणोपासिकानो भत्रीजो उदायन नामे राजा हतो. वर्णन. ते कौशांबी नगरीमां सहस्रानीक राजाना पुत्रनी पत्नी, शतानीक राजानी पत्नी, चेटक राजानी पुत्री, उदायन राजानी माता अने जयंती श्रमणोपासिकानी भोजाइ मृगावती नामे देवी हती. सुकुमाल हाथपगवाळी-इत्यादि वर्णन जाणवुं, यावत् सुरूपवाळी अने श्रमणोपासिका हती. वळी ते कौशांबी नगरीमां जयंती नामे श्रमणोपासिका हती, जे सहस्रानीक राजानी पुत्री, शतानीक राजानी भगिनी, उदायन राजानी फोइ, मृगावती देवीनी नणंद अने श्रमण भगवंत महावीरना साधुओनी प्रथम शय्यातर (वसति आपनार) हती. ते सुकुमाल, यावत् सुरूपा अने जीवाजीवने जाणनारी यावद् विहरती हती.

कौशाम्बी नगरी.

उदायन राजा.

जयंती श्रमणोपासिका.

२. ते काले, ते समये महावीर स्वामी समवसर्या, यावत् पर्षत् पर्युपासना करे छे. त्यार बाद ते उदायन राजा आ (श्रमण भगवंत महावीर पधार्यानी) वात सांभळी हृष्ट तुष्ट थयो, अने तेणे कौटुंबिक पुरुषोने बोलावी आ प्रमाणे कह्युं-'हे देवानुप्रियो! शीघ्र कौशांबी नगरीने बहार अने अंदर साफ करावो'-इत्यादि बधुं *कूणिक राजानी पेठे कहेवुं, यावत्-ते पर्युपासना करे छे. त्यार बाद (श्रमण भगवंत महावीर पधार्यानी) आ वात सांभळी ते जयंती श्रमणोपासिका हृष्ट अने तुष्ट थइ, अने ज्यां मृगावती देवी छे त्यां आवी तेणे मृगावती देवीने आ प्रमाणे कह्युं-ए प्रमाणे नवम शतकमां †ऋषभदत्तना प्रकरणमां कह्या प्रमाणे जाणवुं, यावत् [श्रमण भगवंत महावीरनुं दर्शन आपणा कल्याण माटे] थशे. त्यार बाद जेम ‡देवानंदाए ऋषभदत्तना वचननो स्वीकार कर्यो तेम मृगावती देवीए ते जयंती श्रमणो-

---

१ चंदोत्तरायणे क। २ संजहा-सुद्ध-क। ३ जयंती स-क।

२ * उववा० प० ६३-२. † भग० खं० ३ श० ९ उ० ३३ पृ० १६२. ‡ भग० खं० ३ श० ९ उ० ३३ पृ० १६३.

भद्दत्तो जाव–भविस्सइ । तए णं सा मियावती देवी जयंतीए समणोवासियाए जहा देवाणंदा जाव–पडिसुणेति । तए णं सा मियावती देवी कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, को० २–त्ता एवं वयासी–'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! लहुकरण–जुत्तजोइय० जाव–धम्मियं जाणप्पवरं जुत्तामेव उवट्ठवेह' जाव–उवट्ठवेंति, जाव–पच्चप्पिणंति । तए णं सा मियावती देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं ण्हाया कयबलिकम्मा जाव–सरीरा बहूहिं खुज्जाहिं जाव–अंतेउराओ निग्गच्छति, अं० २–च्छित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, ते० २–च्छित्ता० २ जाव–दुरूढा । तए णं सा मियावती देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढा समाणी नियगपरियाल० जहा उसभदत्तो जाव–धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ । तए णं सा मियावती देवी जयंतीए समणोवासियाए सद्धिं बहूहिं खुज्जाहिं जहा देवाणंदा जाव–वंदइ नमंसइ, उदायणं रायं पुरओ कट्टु ठितिया चेव जाव पज्जुवासइ । तए णं समणे भगवं महावीरे उदायणस्स रन्नो मियावईए देवीए जयंतीए समणोवासियाए तीसे य महतिमहा० जाव धम्मं परिकहेइ, जाव परिसा पडिगया, उदायणे पडिगए, मियावती देवी वि पडिगया ।

३. तए णं सा जयंती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ–तुट्ठा समणं भगवं महावीरं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता एवं वयासी–[प्र०] कहन्नं भंते ! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छन्ति ? [उ०] जयंती ! पाणाइवाएणं, जाव–मिच्छादंसणसल्लेणं, एवं खलु जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति । एवं जहा पढमसए जाव–वीईवयंति ।

४. [प्र०] भवसिद्धियत्तणं भंते ! जीवाणं किं सभावओ परिणामओ ? [उ०] जयंती ! सभावओ, नो परिणामओ ।

५. [प्र०] सव्वेवि णं भंते ! भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति ? [उ०] हंता ! जयंती ! सव्वेऽवि णं भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति ।

६. [प्र०] जइ णं भंते ! सव्वे वि भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति, तम्हा णं भवसिद्धियविरहिए लोए भविस्सइ ? [उ०] णो तिणट्ठे समट्ठे । [प्र०] से केणं खाइएणं अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'सव्वे वि णं भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति, नो

पासिकाना वचननो स्वीकार कर्यो, त्यार पछी ते मृगावती देवीए कौटुंबिक पुरुषोने बोलावी आ प्रमाणे कह्युं–'हे देवानुप्रियो ! वेगवाळुं, जोतरसहित यावत् धार्मिक श्रेष्ठ यान जोडीने जलदी हाजर करो,' यावत्–ते कौटुंबिक पुरुषो यावत् हाजर करे छे, अने तेनी आज्ञा पाछी आपे छे. त्यार बाद ते मृगावती देवी ते जयंती श्रमणोपासिकानी साथे स्नान करी, बलिकर्म–पूजा करी, यावत्–शरीरने शणगारी घणी कुब्ज दासीओ साथे यावत् अंतःपुरथी बहार नीकळे छे, नीकळी ज्यां बहारनी उपस्थानशाला छे, अने ज्यां धार्मिक श्रेष्ठ वाहन तैयार उभुं छे, त्यां आवी यावत् ते वाहन उपर चढी. त्यार बाद जयंती श्रमणोपासिकानी साथे धार्मिक श्रेष्ठ यान उपर चडेली ते मृगावती देवी पोताना परिवारयुक्त *ऋषभदत्त ब्राह्मणनी पेठे यावत्–ते धार्मिक श्रेष्ठ वाहनथी नीचे उतरे छे. पछी जयंती श्रमणोपासिकानी साथे ते मृगावती देवी घणी कुब्ज दासीओना परिवार सहित †देवानंदानी पेठे यावद् वांदी, नमी उदायन राजाने आगळ करी त्यांज रहीनेज यावद् पर्युपासना करे छे. त्यार बाद श्रमण भगवंत महावीरे उदायन राजाने, मृगावती देवीने, जयंती श्रमणोपासिकाने अने ते अत्यन्त मोटी परिषदने यावद् धर्मोपदेश कर्यो, यावत् परिषद् पाछी गइ, उदायन राजा अने मृगावती देवी पण पाछा गया.

जयंती मृगावती सहित भगवंतने वंदन करवा जाय छे.

जयंतीना प्रश्नो.

३. त्यार बाद ते जयंती श्रमणोपासिका श्रमण भगवंत महावीरनां पासेथी धर्मने सांभळी, अवधारी हृष्ट अने तुष्ट थइ, श्रमण भगवंत महावीरने वांदी, नमी आ प्रमाणे बोली के–[प्र०] हे भगवन् ! जीवो शाथी गुरुत्व–भारेपणुं पामे ? [उ०] हे जयंती ! जीवो प्राणातिपातथी–जीवहिंसाथी यावद् मिथ्यादर्शनशल्यथी, ए प्रमाणे खरेखर जीवो भारेकर्मीपणुं प्राप्त करे छे. ए प्रमाणे जेम ‡प्रथम शतकमां कह्युं छे तेम जाणवुं, यावत् तेओ मोक्षे जाय छे.

जीवो शाथी भारेपणुं पामे ?

४. [प्र०] हे भगवन् ! जीवोनुं भवसिद्धिकपणुं स्वभावथी छे के परिणामथी छे ? [उ०] हे जयंती ! भवसिद्धिक जीवो ¶स्वभावथी छे, पण परिणामथी नथी.

भव्यपणुं स्वाभाविक छे के परिणामजन्य छे ?

५. [प्र०] हे भगवन् ! सर्वे भवसिद्धिक जीवो सिद्ध थशे ? [उ०] हे जयंती ! हा, सर्वे भवसिद्धिक जीवो सिद्ध थशे.

सर्वे भव्यजीवो मोक्ष जशे ? तो शुं लोक भव्य रहित थशे ?

६. [प्र०] हे भगवन् ! जो सर्वे भवसिद्धिको सिद्ध थशे तो आ लोक भवसिद्धिक जीवो रहित थशे ? [उ०] ते अर्थ यथार्थ नथी, अर्थात् बधा भवसिद्धिको सिद्ध थाय तोपण भवसिद्धिक विनानो लोक नहिं थाय. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे तमे शा हेतुथी कहो छो

---

२ * भग० खं० ३ श० ९ उ० ३३ पृ० १६४. † भग० खं० ३ पृ० १६४.

३ ‡ भग० खं० १ श० १ उ० ९ पृ० १९९.

४ ¶ स्वाभाविक भावने स्वभाव कहे छे, जेम पुद्गलने विषे मूर्तत्व स्वाभाविक भाव छे. रूपान्तरने परिणाम कहे छे, जेम बालत्व, यौवन, वृद्धत्व वगेरे परिणामथी थयेला भावो छे.

चेव णं भवसिद्धियविरहिए लोए भविस्सइ ? [उ०] जयंती ! से जहानामए सव्वागाससेढी सिया, अणादीया अणवदग्गा परित्ता परिवुडा, सा णं परमाणुपोग्गलमेत्तेहिं खंडेहिं समए २ अवहीरमाणी २ अणंताहिं ओसप्पिणी–अवसप्पिणीहिं अवहीरंति, नो चेव णं अवहिया सिया, से तेणट्ठेणं जयंती ! एवं वुच्चइ–'सव्वे वि णं भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्संति, नो चेव णं भवसिद्धियविरहिए लोए भविस्सइ ।

७. [प्र०] सुत्तत्तं भंते ! साहू, जागरियत्तं साहू ? [उ०] जयंती ! अत्थेगइयाणं जीवाणं सुत्तत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं जागरियत्तं साहू । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ 'अत्थेगइयाणं जाव–साहू' ? [उ०] जयंती ! जे इमे जीवा अहम्मिया अहम्माणुया अहम्मिट्ठा अहम्मक्खाई अहम्मपलोइ अहम्मपलज्जमाणा अहम्मसमुदायारा अहम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, एएसि णं जीवाणं सुत्तत्तं साहू । एए णं जीवा सुत्ता समाणा नो बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं दुक्खणयाए सोयणयाए जाव–परियावणयाए वट्टंति, एए णं जीवा सुत्ता समाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा नो बहूहिं अहम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति, एएसिं जीवाणं सुत्तत्तं साहू । जयंती ! जे इमे जीवा धम्मिया धम्माणुया जाव–धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति एएसि णं जीवाणं जागरियत्तं साहू । एए णं जीवा जागरा समाणा बहूणं पाणाणं जाव–सत्ताणं अदुक्खणयाए, जाव–अपरियावणयाए वट्टंति, ते णं जीवा जागरमाणा अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा बहूहिं धम्मियाहिं संजोयणाहिं संजोएत्तारो भवंति । एए णं जीवा जागरमाणा धम्मजागरियाए अप्पाणं जागरइत्तारो भवंति, एएसि णं जीवाणं जागरियत्तं साहू; से तेणट्ठेणं जयंती ! एवं वुच्चइ–'अत्थेगइयाणं जीवाणं सुत्तत्तं साहू, अत्थेगइयाणं जीवाणं जागरियत्तं साहू' ।

८. [प्र०] बलियत्तं भंते ! साहू, दुब्बलियत्तं साहू ? [उ०] जयंती ! अत्थेगइयाणं जीवाणं बलियत्तं साहू, अत्थेगइयाणं जीवाणं दुब्बलियत्तं साहू । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–जाव साहू ? [उ०] जयंती ! जे इमे जीवा अहम्मिया जाव–विहरंति, एएसि णं जीवाणं दुब्बलियत्तं साहू । एए णं जीवा एवं जहा सुत्तस्स तहा दुब्बलियस्स वत्तव्वया भाणियव्वा । बलियस्स जहा जागरस्स तहा भाणियव्वं, जाव संजोएत्तारो भवंति, एएसि णं जीवाणं बलियत्तं साहू, से तेणट्ठेणं जयंती ! एवं वुच्चइ–तं चेव जाव–साहू ।

के 'बधाय पण भवसिद्धिको सिद्ध थशे, अने लोक भवसिद्धिक जीवोथी रहित नहीं थाय' ? [उ०] हे जयंती ! जेमके सर्वाकाशनी श्रेणी होय, ते अनादि, अनंत, बन्ने बाजुए परिमित अने बीजी श्रेणीओथी परिवृत होय, तेमांथी समये समये एक परमाणु पुद्गलमात्रखंडो काढतां काढतां अनन्त उत्सर्पिणी अने अनन्त अवसर्पिणी सुधी काढीए तोपण ते श्रेणि खाली थाय नहीं; ते प्रमाणे हे जयंती ! ते हेतुथी एम कहेवाय छे के, बधाय भवसिद्धिक जीवो सिद्ध थशे, तो पण लोक भवसिद्धिक जीवो विनानो थशे नहि.

सुतापणुं सारुं के जागतापणुं सारुं?

७. [प्र०] हे भगवन् ! सुतेलापणुं सारुं के जागरितत्व–जागेलापणुं सारुं ? [उ०] हे जयंती ! केटलाक जीवोनुं सूतेलापणुं सारुं, अने केटलाक जीवोनुं जागेलापणुं सारुं. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी तमे एम कहो छो के 'केटलाक जीवोनुं सुतेलापणुं सारुं अने केटलाक जीवोनुं जागेलापणुं सारुं ? [उ०] हे जयंती ! जे आ जीवो अधार्मिक, अधर्मने अनुसरनारा, जेने अधर्म प्रिय छे एवा, अधर्म कहेनारा, अधर्मने ज जोनारा, अधर्ममां आसक्त, अधर्माचरण करनारा अने अधर्मथीज आजीविकाने करता विहरे छे, ए जीवोनुं सूतेलापणुं सारुं छे. जो ए जीवो सूतेला होय तो बहु प्राणोना, भूतोना, जीवोना तथा सत्त्वोना दुःख माटे, शोक माटे, यावत्–परिताप माटे थता नथी, वळी जो ए जीवो सूतेला होय तो पोताने, बीजाने के बन्नेने घणी अधार्मिक संयोजना वडे जोडनारा होता नथी, माटे ए जीवोनुं सूतेलापणुं सारुं छे. तथा हे जयंती ! जे आ जीवो धार्मिक अने धर्मानुसारी छे, यावत्–धर्मवडे आजीविका करता विहरे छे, ए जीवोनुं जागेलापणुं सारुं छे; जो ए जीवो जागता होय तो ते घणा प्राणीओना यावत्–सत्त्वोना अदुःख (सुख) माटे यावत्–अपरिताप (शान्ति) माटे वर्ते छे, वळी ते जीवो जागता होय तो पोताने, परने अने बन्नेने घणी धार्मिक संयोजना (क्रिया) साथे जोडनारा थाय छे, तथा ए जीवो जागता होय तो धर्मजागरिकावडे पोताने जागृत राखे छे, माटे ए जीवोनुं जागेलापणुं सारुं छे, ते हेतुथी हे जयंती ! एम कहेवाय छे के, 'केटलाक जीवोनुं सूतेलापणुं सारुं अने केटलाक जीवोनुं जागेलापणुं सारुं छे'.

सबळपणुं सारुं के दुर्बलपणुं सारुं?

८. [प्र०] हे भगवन् ! सबलपणुं सारुं के दुर्बलपणुं सारुं ? [उ०] हे जयंती ! केटलाक जीवोनुं सबलपणुं सारुं अने केटलाक जीवोनुं दुर्बलपणुं सारुं. [प्र०] हे भगवन् ! तमे ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के, 'केटलाक जीवोनुं सबलपणुं सारुं अने केटलाक जीवोनुं दुर्बलपणुं सारुं' ? [उ०] हे जयंती ! जे आ जीवो अधार्मिक छे, अने यावद् अधर्मवडे आजीविका करता विहरे छे, ए जीवोनुं दुर्बलपणुं सारुं, जो ए जीवो दुबळा होय तो कोइ जीवना दुःख माटे थता नथी–इत्यादि 'सूतेला'नी पेठे दुर्बलपणानी वक्तव्यता कहेवी, अने 'जागता'नी पेठे सबलपणानी वक्तव्यता कहेवी; यावत्–धार्मिक क्रिया–संयोजनावडे जोडनारा थाय छे, माटे ए जीवोनुं बलवानपणुं सारुं छे, ते हेतुथी हे जयंती ! एम कहेवाय छे के–इत्यादि केटलाक जीवोनुं बलवानपणुं अने केटलाक जीवोनुं दुर्बलपणुं सारुं छे.

९. [प्र०] दक्खत्तं भंते! साहू, आलसियत्तं साहू? [उ०] जयंती! अत्थेगतियाणं जीवाणं दक्खत्तं साहू, अत्थेगतियाणं जीवाणं आलसियत्तं साहू। [प्र०] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—तं चेव जाव साहू? [उ०] जयंती! जे इमे जीवा अहम्मिया जाव—विहरंति, एएसि णं जीवाणं आलसियत्तं साहू। एए णं जीवा आलसा समाणा नो बहूणं, जहा सुत्ता आलसा भाणियवा, जहा जागरा तहा दक्खा भाणियवा, जाव संजोएत्तारो भवंति। एए णं जीवा दक्खा समाणा बहूहिं आयरियवेयावच्चेहिं, जाव—उवज्झाय०, थेर०, तवस्सि०, गिलाण०, सेह०, कुल०, गण०, संघ०, साहम्मियवेयावच्चेहिं अत्ताणं संजोएत्तारो भवंति, एएसि णं जीवाणं दक्खत्तं साहू, से तेणट्ठेणं तं चेव जाव साहू।

१०. [प्र०] सोइंदियवसट्टे णं भंते! जीवे किं बंधइ? [उ०] एवं जहा कोहवसट्टे तहेव जाव—अणुपरियट्टइ। एवं चक्खिदियवसट्टे वि, एवं जाव फासिंदियवसट्टे वि, जाव—अणुपरियट्टइ।

११. तए णं सा जयंती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोचा निसम्म हट्ठ—तुट्ठा सेसं जहा देवाणंदा तहेव पवइया, जाव सवदुक्खप्पहीणा। सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति।

बीओ उद्देसो समत्तो।

दक्षत्व सारुं के आळसुपणुं सारुं?

९. [प्र०] हे भगवन्! दक्षपणुं—उद्यमीपणुं सारुं के आळसुपणुं सारुं? [उ०] हे जयंती! केटलाक जीवोनुं दक्षपणुं सारुं अने केटलाक जीवोनुं आळसुपणुं सारुं. [प्र०] हे भगवन्! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो—इत्यादि तेज प्रमाणे कहेवुं. [उ०] हे जयंती! जे आ जीवो अधार्मिक [अधर्मानुसारी] यावद् विहरे छे, ए जीवोनुं आळसुपणुं सारुं छे. ए जीवो जो आळसु होय तो घणा जीवोमा दुःख माटे थता नथी—इत्यादि बधुं 'सूतेला'नी पेठे कहेवुं, तथा 'जागेला'नी पेठे दक्ष—उद्यमी जाणवा, यावत्—[धार्मिक प्रवृत्तिओ साथे] जोडनारा थाय छे. वळी ए जीवो दक्ष होय तो आचार्य, उपाध्याय, स्थविर, तपस्वी, ग्लान, शैक्ष (नव दीक्षित), कुल, गण, संघ, अने साधर्मिकना घणा वैयावच—सेवा—साथे आत्माने जोडनारा थाय छे. तेथी ए जीवोनुं दक्षपणुं सारुं छे. माटे हे जयंती! ते हेतुथी एम कहुं छुं—इत्यादि तेज प्रमाणे कहेवुं, यावत् केटलाएक जीवोनुं दक्षपणुं सारुं छे.

श्रोत्रेन्द्रियवशार्त शुं करे?

१०. [प्र०] हे भगवन्! श्रोत्रेन्द्रियने वश थवाथी पीडित थयेलो जीव शुं बांधे? [उ०] हे जयंती! जेम क्रोधने वश थयेला जीव संबन्धे कह्युं तेम अहीं पण जाणवुं, यावत् ते संसारमां भमे छे. ए प्रमाणे चक्षुइन्द्रियने वश थयेला अने यावत् स्पर्शेन्द्रियवश थयेला जीव संबन्धे पण जाणवुं, यावत् ते संसारमां भमे छे.

जयंतीए प्रव्रज्या ग्रहण करी.

११. त्यार बाद ते जयंती श्रमणोपासिका श्रमण भगवंत महावीर पासेथी ए वात सांभळी, हृदयमां अवधारी, हर्षवाळी अने संतुष्ट थई—इत्यादि (बाकी) बधुं *देवानंदानी पेठे जाणवुं. यावत् तेणे प्रव्रज्या ग्रहण करी अने सर्व दुःखथी मुक्त थई. हे भगवन्! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन्! ते ए प्रमाणे छे.

द्वादशशते द्वितीय उद्देशक समाप्त.

११ * जुओ देवानंदा संबन्धे भग० खं० ३ श० ९ उ० ३३ पृ० १५५.

तईओ उद्देसो.

१. [प्र०] रायगिहे जाव–एवं वयासी–कइ णं भंते ! पुढवीओ पन्नत्ताओ ? [उ०] गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तंजहा–पढमा, दोचा, जाव–सत्तमा ।

२. [प्र०]पढमा णं भंते ! पुढवी किंनामा, किंगोत्ता पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! घम्मा नामेणं, रयणप्पभा गोत्तेणं, एवं जहा जीवाभिगमे पढमो नेरइयउद्देसओ सो चेव निरवसेसो भाणियव्वो, जाव अप्पाबहुगं ति । सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।

तईओ उद्देसो समत्तो ।

तृतीय उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां [भगवान् गौतमे] यावद्–आ प्रमाणे पूछ्युं–हे भगवन् ! केटली पृथिवीओ कही छे ? [उ०] हे गौतम ! सात पृथिवीओ कही छे, ते आ प्रमाणे–प्रथमा, द्वितीया यावत्–सप्तमी.

पृथिवीओना प्रकार.

२. [प्र०] हे भगवन् ! प्रथम पृथिवी कया नामवाळी अने कया गोत्रवाळी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! प्रथम पृथिवीनुं नाम 'घम्मा' छे अने गोत्र रत्नप्रभा छे–ए प्रमाणे *'जीवाभिगम' सूत्रमां प्रथम नैरयिक उद्देशक कह्यो छे ते बधो यावद्–अल्पबहुत्व सूधी अहिं कहेवो. हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे.

प्रथमपृथिवीना नाम अने गोत्र.

द्वादशशते तृतीय उद्देशक समाप्त.

---

२ * जुओ नैरयिक संबन्धे जीवा० प्रति० ३ प० ८८.

चउत्थो उद्देसो ।

१. [प्र०] रायगिहे जाव–एवं वयासी–दो भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति, एगयओ साहण्णित्ता किं भवति ? [उ०] गोयमा ! दुप्पएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहा कज्जइ, एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ परमाणुपोग्गले भवइ ।

२. [प्र०] तिन्नि भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति, साहण्णित्ता किं भवति ? [उ०] गोयमा ! तिपएसिए खंधे भवति । से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ, तिहा कज्जमाणे तिण्णि परमाणुपोग्गला भवंति ।

३. [प्र०] चत्तारि भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति ? जाव–पुच्छा । [उ०] गोयमा ! चउपएसिए खंधे भवइ, से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि चउहा वि कज्जइ, दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, अहवा दो दुपएसिया खंधा भवंति । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवइ, चउहा कज्जमाणे चत्तारि परमाणुपोग्गला भवंति ।

४. [प्र०] पंच भंते ! परमाणुपोग्गला–पुच्छा । [उ०] गोयमा ! पंचपएसिए खंधे भवइ । से भिज्जमाणे दुहाऽवि तिहाऽवि चउहाऽवि पंचहाऽवि कज्जइ; दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दुप-

चतुर्थ उद्देशक.

बे परमाणुओ एकरूपे एकठा थईने शुं थाय ?

१. [प्र०] राजगृह नगरमां यावद्–आ प्रमाणे पूछ्युं–हे भगवन् ! बे परमाणुओ एकरूपे एकठा थाय, अने एकरूपे एकठा थइने पछी तेनुं शुं थाय ? [उ०] हे गौतम ! तेनो द्विप्रदेशिक स्कंध थाय, अने जो तेनो भेद थाय तो तेना बे विभाग थाय–एक तरफ एक परमाणुपुद्गल रहे, अने बीजी तरफ एक (बीजो) परमाणुपुद्गल रहे. [•] [•]

त्रण परमाणुओ.

२. [प्र०] हे भगवन् ! त्रण परमाणुपुद्गलो एकरूपे एकठा थाय ? अने एकठा थईने तेनुं शुं थाय ? [उ०] हे गौतम ! तेनो त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय. जो तेनो भेद–वियोग थाय तो तेना बे के त्रण विभाग थाय, जो बे विभाग थाय तो एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, अने बीजी तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध रहे. [•] [••]. तथा जो तेना त्रण विभाग थाय तो त्रण परमाणुपुद्गल रहे. [•] [•] [•].

चार परमाणुओ.

३. [प्र०] हे भगवन् ! चार परमाणुपुद्गलो एकरूपे एकठा थाय ?–इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय, अने जो ते स्कंधनो भेद थाय तो तेना बे, त्रण अने चार भाग थाय. जो बे भाग थाय तो एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कंध रहे. [•] [•••]. अथवा बे द्विप्रदेशिक स्कंध रहे. [••] [••]. जो त्रण भाग थाय तो एक तरफ बे छूटा परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध रहे. [•] [•] [••]. जो चार भाग थाय तो जूदा चार परमाणुपुद्गल रहे. [•] [•] [•] [•].

पांच परमाणुओ.

४. [प्र०] हे भगवन् ! पांच परमाणुओ एकरूपे एकठा थाय ? [अने पछी शुं थाय ?] इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! पंचप्रदेशिक स्कंध थाय. जो ते भेदाय तो तेना बे, त्रण, चार अने पांच विभाग थाय. जो तेना बे विभाग थाय तो एक तरफ एक परमाणु

पसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति; चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे भवति, पंचहा कज्जमाणे पंच परमाणुपोग्गला भवंति ।

५. [प्र०] छब्भंते ! परमाणुपोग्गला–पुच्छा । [उ०] गोयमा ! छप्पएसिए खंधे भवइ; से भिज्जमाणे दुहाऽवि तिहाऽवि जाव–छव्विहाऽवि कज्जइ; दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; अहवा दो तिपएसिया खंधा भवन्ति; तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा तिन्नि दुपएसिया खंधा भवन्ति; चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुप्पएसिया खंधा भवंति; पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवति; छहा कज्जमाणे छ परमाणुपोग्गला भवंति ।

६. [प्र०] सत्त भंते ! परमाणुपोग्गला–पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सत्तपएसिए खंधे भवइ; से भिज्जमाणे दुहाऽवि जाव–सत्तहाऽवि कज्जइ; दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिप्पएसिए खंधे एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवति; चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवति, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले,

पुद्गल अने एक तरफ चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय. [•] [••••]. अथवा एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय. [••] [••••]. जो तेना त्रण विभाग थाय तो एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय. [•] [•], [•••]. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ जुदा जुदा बे द्विप्रदेशिक स्कंधो थाय. [•] [••] [••]. जो तेना चार विभाग थाय तो एक तरफ जुदा त्रण परमाणुओ अने एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध थाय. [•] [•] [•] [••]. जो तेना पांच विभाग थाय तो जुदा पांच परमाणुओ थाय. [•] [•] [•] [•] [•].

छ परमाणुओ.

५. [प्र०] हे भगवन् ! छ परमाणुपुद्गलो संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! षट्प्रदेशिक स्कंध थाय. जो तेनो भेद थाय तो तेना बे, त्रण, चार, पांच के छ विभाग थाय. जो तेना बे भाग थाय तो एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ एक पंचप्रदेशिक स्कंध थाय. [•] [•••••] अथवा एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ एक चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय. [••] [••••]. अथवा बे त्रिप्रदेशिक स्कंधो थाय. [•••] [•••]. जो तेना त्रण भाग थाय तो एक तरफ जुदा जुदा बे परमाणुपुद्गल अने एक तरफ एक चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय. [•] [•] [•••]. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय. [•] [••] [•••]. अथवा त्रण द्विप्रदेशिक स्कंधो थाय. [••] [••] [••]. जो तेना चार भाग थाय तो एक तरफ जुदा त्रण परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय. [•] [•] [•] [•••]. अथवा एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ द्विप्रदेशिक बे स्कंधो थाय [•] [•] [••] [••]. जो तेना पांच भाग थाय तो एक तरफ जुदा चार परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध थाय. [•] [•] [•] [•] [••]. जो तेना छ भाग थाय तो जुदा जुदा छ परमाणु पुद्गलो थाय. [•] [•] [•] [•] [•] [•].

सात परमाणुओ.

६. [प्र०] हे भगवन् ! सात परमाणुपुद्गलो संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सप्तप्रदेशिक स्कंध थाय. जो तेना विभाग थाय तो बे, त्रण, यावत् सात विभाग थाय छे. जो बे विभाग थाय तो एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ छप्रदेशिक स्कंध थाय. [•] [••••••]. अथवा एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ पंचप्रदेशिक स्कंध थाय. [••] [•••••]. अथवा एक तरफ त्रिप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय. [•••] [••••]. जो तेना त्रण भाग थाय तो एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ पंचप्रदेशिक स्कंध थाय [•] [•] [•••••]. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ द्विप्रदेशिक अने चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय. [•] [••] [••••]. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ बे त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय. [•] [•••] [•••]. अथवा एक तरफ बे द्विप्रदेशिक स्कंधो अने एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय. [••] [••] [•••]. जो तेना चार भाग थाय तो एक तरफ त्रण परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ एक चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय. [•] [•] [•] [••••]. अथवा

एगयओ तिन्नि दुपएसिया खंधा भवंति; पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति; छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ; सत्तहा कज्जमाणे सत्त परमाणुपोग्गला भवंति ।

७. [प्र०] अट्ठ भंते ! परमाणुपोग्गला–पुच्छा । [उ०] गोयमा ! अट्ठपएसिए खंधे भवइ; जाव–दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिपएसिए खंधे एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा दो चउप्पएसिया खंधा भवंति; तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला भवंति, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति, चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दोन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवति; अहवा चत्तारि दुपएसिया खंधा भवंति; पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिन्नि दुपएसिया खंधा भवंति; छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ

एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय. [•] [•] [••] [•••]. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ त्रण द्विप्रदेशिक स्कंधो थाय. [•] [••] [••] [••]. जो तेना पांच विभाग थाय तो जुदा चार परमाणुपुद्गलो, अने एक त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय. [•] [•] [•] [•] [•••]. अथवा एक तरफ त्रण परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ बे द्विप्रदेशिक स्कंधो थाय. [•] [•] [•] [••] [••]. जो तेना छ भाग थाय तो एक तरफ जुदा पांच परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध थाय. [•] [•] [•] [•] [•] [••]. तथा जो तेना सात भाग थाय तो जुदा जुदा सात परमाणुपुद्गलो थाय. [•] [•] [•] [•] [•] [•] [•].

आठ परमाणुओ.

७. [प्र०] हे भगवन् ! आट परमाणुपुद्गलो संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! आठ प्रदेशनो एक स्कंध थाय. [जो तेना विभाग थाय तो बे, त्रण, चार, पांच, छ, सात के आठ विभाग थाय.] यावत् तेना बे विभाग थाय तो एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ सात प्रदेशनो एक स्कंध थाय छे. [•] [•••••••]. अथवा एक तरफ बे प्रदेशोनो एक स्कंध अने एक तरफ छ प्रदेशनो एक स्कंध थाय छे. [••] [••••••]. अथवा एक तरफ त्रण प्रदेशनो एक स्कंध अने एक तरफ पांच प्रदेशनो एक स्कंध थाय छे. [•••] [•••••]. अथवा चार चार प्रदेशना बे स्कंध थाय छे. [••••] [••••]. जो तेना त्रण विभाग थाय तो एक तरफ जुदा बे परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ छ प्रदेशनो एक स्कंध थाय छे. [•] [•] [••••••]. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ पंचप्रदेशिक स्कंध थाय छे. [•] [••] [•••••] अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय छे. [•] [•••] [••••]. अथवा एक तरफ बे द्विप्रदेशिक स्कंधो अने एक चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय छे. [••] [••] [••••]. अथवा एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ बे त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय छे. [••] [•••] [•••]. जो तेना चार विभाग थाय तो एक तरफ जुदा त्रण परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ पांच प्रदेशनो एक स्कंध थाय छे. [•] [•] [•] [•••••]. अथवा एक तरफ जुदा बे परमाणुपुद्गलो, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक चार प्रदेशनो स्कंध थाय छे. [•] [•] [••] [••••]. अथवा एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ बे त्रिप्रदेशिक स्कंधो थाय छे. [•] [•] [•••] [•••] अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ बे द्विप्रदेशिक स्कंधो अने एक त्रिप्रदेशिक एक स्कंध थाय छे. [•] [••] [••] [•••]. अथवा चार द्विप्रदेशिक स्कंधो थाय छे. [••] [••] [••] [••]. तेना पांच विभाग थाय तो एक तरफ जुदा चार परमाणु पुद्गलो, अने एक तरफ एक चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय छे. [•] [•] [•] [•] [••••]. अथवा एक तरफ त्रण परमाणुओ अने एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने एक त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय छे. [•] [•] [•] [••] [•••]. अथवा एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो, एक तरफ त्रण द्विप्रदेशिक स्कन्धो थाय छे. [•] [•] [••] [••] [••]. जो तेना छ विभाग थाय तो एक तरफ जुदा पांच परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय छे. [•] [•] [•] [•] [•] [•••]. अथवा एक तरफ चार परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ बे द्विप्रदेशिक स्कंधो थाय छे. [•] [•] [•] [•] [••] [••] जो तेना सात विभाग थाय तो एक तरफ जुदा

तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवन्ति; सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ; अट्ठहा कज्जमाणे अट्ठ परमाणुपोग्गला भवंति ।

८. [प्र०] नव भंते ! परमाणुपोग्गला—पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जाव–नवविहा कज्जंति; दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ अट्ठपएसिए खंधे भवति; एवं एक्केकं संचारंतेहिं जाव–अहवा एगयओ चउप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवति; तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ; अहवा तिन्नि तिपएसिया खंधा भवंति; चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ तिन्नि दुप्पएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवति; पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ

छ परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध थाय छे. जो तेना आठ विभाग थाय तो जुदा जुदा आठ परमाणुपुद्गलो थाय छे.

८. [प्र०] हे भगवन् ! नव परमाणुपुद्गलो संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! नवप्रदेशनो एक स्कंध थाय छे; अने जो तेना विभाग करवामां आवे तो [बे, त्रण, चार, पांच, छ, सात, आठ के] यावत् नव विभाग थाय छे. तेना जो बे विभाग थाय तो एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ एक अष्टप्रदेशिक स्कंध थाय छे. ए प्रमाणे एक एकनो संचार करवो; यावत्–अथवा एक तरफ एक चार प्रदेशनो स्कंध अने एक तरफ पांच प्रदेशनो स्कंध थाय छे. जो तेना त्रण भाग करवामां आवे तो एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो, अने एक तरफ एक सप्तप्रदेशिक स्कंध थाय छे. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कंध, अने एक तरफ छप्रदेशिक स्कंध थाय छे. अथवा एक तरफ एक परमाणु, एक तरफ त्रिप्रदेशिक स्कंध, अने एक तरफ पंचप्रदेशिक स्कंध थाय छे. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ बे चतुष्प्रदेशिक स्कंधो थाय छे. अथवा एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध, एक तरफ त्रिप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय छे. अथवा त्रण त्रिप्रदेशिक स्कंधो थाय छे. तेना चार भाग थाय तो एक तरफ त्रण परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ छप्रदेशनो एक स्कंध थाय छे. अथवा एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक अने एक तरफ पंचप्रदेशिक स्कंध थाय छे. अथवा एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो, एक तरफ त्रिप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ चारप्रदेशिक स्कंध थाय छे. अथवा एक तरफ एक परमाणु पुद्गल, एक तरफ बे द्विप्रदेशिक स्कंधो, अने एक तरफ चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय छे. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ बे त्रिप्रदेशिक स्कंधो थाय छे. अथवा एक तरफ त्रण द्विप्रदेशिक स्कन्धो अने एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध थाय छे. पांच भाग थाय तो एक तरफ जुदा चार परमाणुओ अने एक तरफ एक पंचप्रदेशिक स्कंध थाय छे. अथवा एक तरफ त्रण परमाणुओ अने एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ चतुष्प्रदेशिक स्कंध थाय छे. अथवा एक तरफ त्रण परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ बे त्रिप्रदेशिक स्कन्धो थाय छे. अथवा एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो, एक तरफ बे द्विप्रदेशिक स्कंधो अने एक त्रिप्रदेशिक स्कंध थाय छे. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ चार द्विप्रदेशिक स्कंधो थाय छे. जो तेना छ भाग करवामां आवे तो एक तरफ पांच परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ एक चतुष्प्रदेशिक स्कंध होय छे. अथवा एक तरफ चार परमाणुपुद्गलो, एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ त्रिप्रदेशिक स्कंध होय छे.

नव परमाणुओ.

१ संचारेंतेहिं ख, संचारिएहिं क ।

तिपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चत्तारि दुपएसिया खंधा भवंति; छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिन्नि दुप्पएसिया खंधा भवंति; सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति; अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्त परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवति; नवहा कज्जमाणे नव परमाणुपोग्गला भवंति।

९. [प्र०] दस भंते! परमाणुपोग्गला–[उ०] जाव–दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ नवपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ अट्ठ पएसिए खंधे भवइ; एवं एकेकं [1]संचारेयव्वं ति, जाव–अहवा दो पंच पएसिया खंधा भवंति; तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ अट्ठपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चउप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दो तिपएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिन्नि तिपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ तिन्नि दुपएसिया खंधा, एगयओ चउपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिन्नि तिपएसिआ खंधा भवन्ति। अहवा एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति; पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ छपएसिए खंधे

[••] [•••]. अथवा एक तरफ त्रण परमाणुओ अने एक तरफ त्रण द्विप्रदेशिक स्कंधो होय छे. [•] [•] [•] [••] [••] [••]. जो तेना सात भाग करवामां आवे तो एक तरफ छ परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कंध होय छे. [•] [•] [•] [•] [•] [•] [•••]. अथवा एक तरफ पांच परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ बे द्विप्रदेशिक स्कंधो होय छे. [•] [•] [•] [•] [•] [••] [••]. आठ भाग करवामां आवे तो एक तरफ सात परमाणुओ अने एक तरफ द्विप्रदेशिक एक स्कंध होय छे. [•] [•] [•] [•] [•] [•] [•] [••]. जो तेना नव भाग करवामां आवे तो जुदा नव परमाणुओ होय छे. [•] [•] [•] [•] [•] [•] [•] [•] [•].

दश परमाणु.

९. [प्र०] हे भगवन्! दश परमाणुओ संबन्धे प्रश्न. [उ०] (तेनो एक दशप्रदेशिक स्कंध थाय छे. अने जो तेना विभाग करवामां आवे तो बे, त्रण, चार, पांच, छ, सात, आठ, नव अने दश विभाग थाय छे.) यावत् बे भाग करवामां आवे तो एक तरफ एक परमाणु अने एक तरफ नव प्रदेशनो एक स्कंध थाय छे. [•] [•••••••••]. अथवा एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ अष्टप्रदेशिक एक स्कंध होय छे. [••] [••••••••]. ए प्रमाणे एक एकनो संचार करवो; यावत्–अथवा बे पंचप्रदेशिक स्कंधो थाय छे. [•••••] [•••••]. जो तेना त्रण विभाग करवामां आवे तो एकतरफ बे परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ एक आठ प्रदेशनो स्कंध होय छे. [•] [•] [••••••••]. अथवा एक तरफ परमाणुपुद्गल, एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कंध, अने एक तरफ सप्तप्रदेशिक स्कंध होय छे. [•] [••] [•••••••]. अथवा एक तरफ परमाणुपुद्गल, एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कंध अने एक छ प्रदेशिक स्कंध होय छे. [•] [•••] [••••••]. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ एक चतुष्प्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ पंचप्रदेशिक स्कंध होय छे. [•] [••••] [•••••]. अथवा एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध, एक तरफ त्रिप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ पंचप्रदेशिक स्कंध होय छे. [••] [•••] [•••••] अथवा एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ बे चतुष्प्रदेशिक स्कंधो होय छे. [••] [••••] [••••]. अथवा एक तरफ बे त्रिप्रदेशिक स्कन्धो अने एक तरफ एक चतुष्प्रदेशिक स्कंध होय छे. [•••] [•••] [••••]. तेना चार विभाग करवामां आवे तो एक तरफ त्रण परमाणुपुद्गलो, अने एक तरफ सप्तप्रदेशिक स्कंध होय छे. [•] [•] [•] [•••••••]. अथवा एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो, एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ छप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. [•] [•] [••] [••••••]. अथवा एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो, एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध अने एक पंचप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. [•] [•] [•••] [•••••]. अथवा एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ बे चतुष्प्रदेशिक स्कन्धो होय छे. [•] [•] [••••] [••••]. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कंध, एक तरफ

---

[1] संचारेतेव्वं क संचारिंति ख।

भवइ; अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपदेसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिन्नि दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवति; अहवा पंच दुपएसिया खंधा भवंति; छहा कज्जमाणे एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ चत्तारि दुपएसिया खंधा भवंति; सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ पंच परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिन्नि दुपएसिया खंधा भवंति; अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्त परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा भवंति; नवहा कज्जमाणे एगयओ अट्ठ परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवति । दसहा कज्जमाणे दस परमाणुपोग्गला भवंति ।

१०. [प्र०] संखेज्जा णं भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहन्नंति, एगयओ साहणित्ता किं भवति ? [उ०] गोयमा ! संखेज्जपएसिए खंधे भवति । से भिज्जमाणे दुहाऽवि, जाव-दसहाऽवि संखेज्जहाऽवि कज्जति । दुहा कज्जमाणे एगयओ परमा-

त्रिप्रदेशिक स्कंध, अने एक चतुष्प्रदेशिक स्कंध होय छे. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ त्रण त्रिप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. अथवा एक तरफ त्रण द्विप्रदेशिक स्कन्धो अने एक तरफ एक चतुष्प्रदेशिक स्कंध होय छे. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ त्रण त्रिप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. अथवा एक तरफ बे द्विप्रदेशिक स्कन्धो अने एक तरफ बे त्रिप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. तेना पांच विभाग करवामां आवे तो एक तरफ चार परमाणुपुद्गल अने एक तरफ एक छप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ त्रण परमाणुपुद्गलो, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ एक पंचप्रदेशिक स्कंध होय छे. अथवा एक तरफ त्रण परमाणुपुद्गलो, एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध अने एक चतुष्प्रदेशिक स्कंध होय छे. अथवा एक तरफ बे परमाणुओ, एक तरफ बे द्विप्रदेशिक स्कन्धो अने एक तरफ एक चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो, एक द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ बे त्रिप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. अथवा एक तरफ परमाणुपुद्गल, एक तरफ त्रण द्विप्रदेशिक स्कन्धो अने एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा पांच द्विप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. तेना छ विभाग करवामां आवे तो एक तरफ जूदा पांच परमाणुओ अने एक तरफ एक पंचप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ चारपरमाणुपुद्गलो, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध तथा एक तरफ एक चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ चार परमाणुपुद्गलो, अने एक तरफ बे त्रिप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. अथवा एक तरफ त्रण परमाणुपुद्गलो, एक तरफ बे द्विप्रदेशिक स्कन्धो अने एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ चार द्विप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. तेना सात विभाग करवामां आवे तो एक तरफ छ परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ एक चतुःप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ पांच परमाणुओ अने एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध तथा एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ चार परमाणुओ, अने एक तरफ त्रण द्विप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. तेना आठ विभाग करवामां आवे तो एक तरफ सात (जूदा) परमाणुओ अने एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ छ परमाणुओ, अने एक तरफ बे द्विप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. तेना नव विभाग करवामां आवे तो एक तरफ आठ परमाणुओ अने एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अने जो तेना दश विभाग करवामां आवे तो जुदा दश परमाणुओ थाय छे.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! संख्याता परमाणुओ एक साथे मळे अने एक साथे मळीने तेनुं शुं थाय ? [उ०] हे गौतम ! तेनो संख्याता प्रदेशनो स्कन्ध थाय. जो तेनो भेद-विभाग थाय तो तेना बे, यावत् दस के संख्याता विभाग थाय. जो तेना बे भाग करवामां आवे तो एक

संख्याता परमाणुओ.

णुपोग्गले, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवति, एग-यओ तिपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवति, एवं जाव-अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपए-सिए खंधे भवति; अहवा दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ संखे-ज्जपएसिए खंधे भवति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवइ; एवं जाव-अहवा एगयओ पर-माणुपोग्गले, एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; एवं जाव-अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा तिन्नि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एग-यओ दुपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवति; एवं जाव-अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; जाव-अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दसपएसिए खंधे एगयओ दो संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिन्नि संखे-ज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिन्नि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; जाव-अहवा एग-यओ दसपएसिए खंधे, एगयओ तिन्नि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा चत्तारि संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; एवं

तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध थाय छे [•] [सं०]. अथवा एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ एक संख्यातप्रदेशिक स्कंध थाय छे. [••] [सं०] अथवा एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ एक संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध थाय छे. [•••] [सं०]. ए प्रमाणे यावद् एक तरफ दशप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. [∶∶∶∶∶] [सं०]. अथवा बे संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. [सं०] [सं०]. तेना त्रण विभाग करवामां आवे तो एक तरफ बे परमाणुओ अने एक तरफ एक संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. [•] [•] [सं०]. अथवा एक तरफ एक परमाणु, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ एक संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. [•] [••] [सं०]. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ एक संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. [•] [••] [सं०]. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. [•] [•••] [सं०]. ए प्रमाणे यावत्-अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ दश प्रदेशिक स्कन्ध अने एक संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. [•] [∶∶∶∶∶] [सं०]. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, अने एक तरफ बे संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. [•] [सं०] [सं०]. अथवा एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ बे संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. [••] [सं०] [सं०]. ए प्रमाणे यावत्-अथवा एक तरफ एक दशप्रदेशिक स्कन्ध अने बे संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. [∶∶∶∶∶] [सं०] [सं०]. अथवा त्रण संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. तेना चार भाग करवामां आवे तो एक तरफ त्रण परमाणुपुद्गलो, अने एक तरफ एक संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. [•] [•] [•] [सं०]. अथवा एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ एक संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. [•] [•] [••] [सं०]. अथवा एक तरफ बे परमाणुओ, एक त्रिप्रदेशिक स्कन्ध, अने एक संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. [•] [•] [•••] [सं०]. ए प्रमाणे यावद्-अथवा एक तरफ बे परमा-णुओ, एक तरफ दशप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. [•] [•] [∶∶∶∶∶] [सं०]. अथवा एक तरफ बे परमाणुओ अने एक तरफ बे संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. [•] [•] [सं०] [सं०]. अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने बे संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. [•] [••] [सं०]. [सं०]. ए प्रमाणे यावद्-अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक दश प्रदेशिक स्कन्ध अने बे संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. [•] [∶∶∶∶∶] [सं०] [सं०]. अथवा एक परमाणुपुद्गल अने त्रण संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. [•] [सं०] [सं०] [सं०]. अथवा एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने त्रण संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. [••] [सं०] [सं०] [सं०]. ए प्रमाणे यावद्-अथवा एक तरफ एक दश प्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ त्रण संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. [∶∶∶∶∶] [सं०] [सं०] [सं०]. अथवा चार संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. [सं०] [सं०] [सं०] [सं०] ए प्रमाणे ए क्रमथी पंचसंयोग पण कहेवो; यावत् नव संयोग सुधी कहेवुं. तेना दश विभाग करवामां आवे तो एक तरफ नव परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ एक संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. [•] [•] [•] [•] [•] [•] [•] [•] [•] [सं०]. अथवा एक तरफ आठ परमाणुपुद्गलो, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कंध अने एक तरफ संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. [•] [•] [•] [•] [•] [•] [•] [•] [••] [सं०]. अथवा एक तरफ आठ परमाणुपुद्गलो, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ एक संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे.

एवमेणं कमेणं पंचगसंजोगो वि भाणियव्वो, जाव–नवगसंजोगो। दसहा कज्जमाणे एगयओ नव परमाणुपोग्गला, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ अट्ठ परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे भवति। एएणं कमेणं एक्केक्को पूरेयव्वो, जाव–अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ नव संखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा दस संखेज्जपएसिया खंधा भवंति। संखेज्जहा कज्जमाणे संखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति।

११. [प्र०] असंखेज्जा णं भंते! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति, एगयओ साहणित्ता किं भवति? [उ०] गोयमा! असंखेज्जपएसिए खंधे भवति; से भिज्जमाणे दुहाऽवि, जाव–दसहाऽवि, संखेज्जहाऽवि, असंखेज्जहाऽवि कज्जइ। दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवति; जाव–अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे भवइ, एगयओ असंखिज्जपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवति; अहवा दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए, एगयओ असंखिज्जपएसिए खंधे भवति; जाव–अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति; एवं जाव–अहवा एगयओ संखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ दो असंखिज्जपएसिया खंधा भवंति; अहवा तिन्नि असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवति; एवं चउक्कगसंजोगो, जाव–दसगसंजोगो, एए जहेव संखेज्जपएसियस्स, नवरं असंखेज्जगं एगं अहिगं भाणियव्वं, जाव–अहवा दस असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति। संखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ संखेज्जा परमाणुपोग्गला, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ संखेज्जा दुपएसिया खंधा, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवति; एवं जाव–अहवा एगयओ संखेज्जा दसपएसिया खंधा, एगयओ असंखेज्जपए-

[·] [·] [·] [·] [·] [·] [·] [·] [··] [सं०] ए क्रमवडे एक एकनी संख्या वधारवी, यावद्–अथवा एक दशप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ नव संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. [:::::] [सं०] [सं०] [सं०] [सं०] [सं०] [सं०] [सं०] [सं०] [सं०]. अथवा दश संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. [सं०] [सं०] [सं०] [सं०] [सं०] [सं०] [सं०] [सं०] [सं०] [सं०]. जो तेना संख्यात भागो करवामां आवे तो संख्याता परमाणुपुद्गलो थाय छे.

११. [प्र०] हे भगवन्! असंख्याता परमाणुपुद्गलो एकठां मळे, अने पछी तेनुं शुं थाय? [उ०] हे गौतम! तेनो असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध थाय. जो तेना विभाग करीए तो बे, यावत् दश, संख्याता के असंख्याता विभाग थाय. जो बे विभाग करवामां आवे तो एक तरफ एक परमाणुपुद्गल अने एक तरफ असंख्यातप्रदेशिक स्कंध होय छे. [·] [असं०]. यावद्–अथवा एक तरफ दशप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. [:::::] [असं०]. अथवा एक तरफ संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. [सं०] [असं०]. अथवा बे असंख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. [असं०] [असं०]. जो तेना त्रण विभाग करवामां आवे तो एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. [·] [·] [असं०] अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. [·] [··] [असं०]. यावद्–अथवा एक तरफ परमाणुपुद्गल, एक तरफ दशप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. [·] [:::::] [असं०]. अथवा एक तरफ एक परमाणु, एक तरफ संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. [·] [सं०] [असं०]. अथवा एक तरफ एक परमाणु, अने एक तरफ बे असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. [·] [असं०] [असं०]. अथवा एक तरफ द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ बे असंख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. [··] [असं०] [असं०]. ए प्रमाणे यावद्–अथवा एक तरफ संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ बे असंख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. [सं०] [असं०] [असं०]. अथवा त्रण असंख्यातप्रदेशात्मक स्कन्धो होय छे. [असं०] [असं०] [असं०]. जो तेना चार भाग करवामां आवे तो एक तरफ त्रण परमाणुओ अने एक तरफ एक असंख्यातप्रदेशात्मक स्कन्ध होय छे. [·] [·] [·] [असं०]. ए प्रमाणे चतुष्कसंयोग, यावद् दशकसंयोग जाणवो. अने ए सर्व संख्यातप्रदेशिकनी पेठे जाणवुं, परन्तु एक 'असंख्यात' शब्द अधिक कहेवो. यावद्–अथवा दश असंख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. जो संख्याता विभाग करवामां आवे तो एक तरफ संख्याता परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ असंख्यातप्रदेशात्मक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ संख्याता द्विप्रदेशिक स्कन्धो अने एक तरफ असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. ए प्रमाणे यावद्–अथवा एक तरफ संख्याता दशप्रदेशिक स्कन्धो अने एक तरफ एक

असंख्याता परमाणुओ.

सिए खंधे भवति; अहवा एगयओ संखेज्जा संखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे भवति; अहवा संखेज्जा असंखेज्जपएसिया खंधा भवंति। असंखेज्जहा कज्जमाणे असंखेज्जा परमाणुपोग्गला भवंति।

१२. [प्र०] अणंता णं भंते! परमाणुपोग्गला जाव–किं भवति? [उ०] गोयमा! अणंतपएसिए खंधे भवति; से भिज्जमाणे दुहाऽवि तिहाऽवि जाव–दसहाऽवि संखेज्जा–असंखेज्जा–अणंतहाऽवि कज्जइ। दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवति; जाव–अहवा दो अणंतपएसिया खंधा भवंति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवति; जाव–अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति, एवं जाव–अहवा एगयओ दसपएसिए खंधे, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ संखेज्जपदेसिए खंधे, एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति; अहवा एगयओ असंखेज्जपएसिए खंधे एगयओ दो अणंतपएसिया खंधा भवंति; अहवा तिन्नि अणंतपएसिया खंधा भवंति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिन्नि परमाणुपोग्गला, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवति; एवं चउक्कसंजोगो, जाव–असंखेज्जगसंजोगो, एते सव्वे जहेव असंखेज्जाणं भणिया तहेव अणंताणऽवि भाणियव्वं, नवरं एक्कं अणंतगं अब्भहियं भाणियव्वं, जाव–अहवा एगयओ संखेज्जा संखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ संखेज्जा असंखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवति; अहवा संखेज्जा अणंतपएसिया खंधा भवंति। असंखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ असंखेज्जा परमाणुपोग्गला, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ असंखेज्जा दुपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवति; जाव–अहवा एगयओ असंखेज्जा संखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवति; अहवा एगयओ असंखेज्जा असंखेज्जपएसिया खंधा, एगयओ अणंतपएसिए खंधे भवति, अहवा असंखेज्जा अणंतपएसिया खंधा भवंति। अणंतहा कज्जमाणे अणंता परमाणुपोग्गला भवंति।

असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ संख्याता संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो अने एक तरफ एक असंख्यप्रदेशात्मक स्कन्ध होय छे. अथवा संख्याता असंख्यातप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. जो तेना असंख्य विभाग करवामां आवे तो असंख्य परमाणुपुद्गलो थाय छे.

अनन्त परमाणुओ.

१२. [प्र०] हे भगवन्! अनन्त परमाणुपुद्गलो एकठा थाय अने एकठा थया पछी तेनुं शुं थाय? [उ०] हे गौतम! तेनो अनन्तप्रदेशात्मक स्कन्ध थाय. जो तेना विभाग थाय तो बे, त्रण, यावत् दस, संख्यात, असंख्यात अने अनन्त विभाग थाय. बे विभाग करवामां आवे तो एक तरफ परमाणुपुद्गल अने एक तरफ अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. |•| |अनं०|. यावद्–अथवा बे अनन्तप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. |अनं०| |अनं०|. जो तेना त्रण विभाग करवामां आवे तो एक तरफ बे परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. |•| |•| |अनं०|. अथवा एकतरफ एक परमाणु, एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ एक अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. |•| |••| |अनं०|. यावद्–अथवा एक तरफ एक परमाणुपुद्गल, एक तरफ असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. |•| |असं०|. |अनं०|. अथवा एक तरफ एक परमाणु, अने एक तरफ बे अनन्तप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. |•| |अनं०| |अनं०|. अथवा एक तरफ एक द्विप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ बे अनन्तप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. |••| |अनं०| |अनं०|. ए प्रमाणे यावद्–अथवा एक तरफ एक दशप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ बे अनन्तप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. |::::: | |अनं०| |अनं०|. अथवा एक तरफ एक संख्यातप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ बे अनन्त प्रदेशिक स्कन्धो होय छे. |सं०| |अनं०| |अनं०|. अथवा एक तरफ एक असंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध अने एक तरफ बे अनन्तप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. |असं०| |अनं०| |अनं०|. जो तेना चार भाग करवामां आवे तो एक तरफ त्रण परमाणुओ अने एक तरफ एक अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. |•| |•| |•| |अनं०|–ए प्रमाणे चतुष्कसंयोग, यावद्–संख्यातसंयोग कहेवो. ए बधा संयोगो असंख्यातनी पेठे अनन्तने पण कहेवा; परन्तु एक 'अनन्त' शब्द अधिक कहेवो; यावद्–अथवा एक तरफ संख्याता संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो अने एक तरफ एक अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ संख्याता असंख्येयप्रदेशिक स्कन्धो अने एक तरफ अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा संख्याता अनंतप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. जो तेना असंख्याता विभाग करीए तो एक तरफ असंख्यात परमाणुपुद्गलो अने एक तरफ एक अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ असंख्यात द्विप्रदेशिक स्कन्धो अने एक तरफ एक अनन्त प्रदेशिक स्कंध होय छे, यावद्–अथवा एक तरफ असंख्याता संख्यातप्रदेशिक स्कन्धो अने एक तरफ एक अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा एक तरफ असंख्याता असंख्यातप्रदेशिक स्कन्धो अने एक तरफ अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध होय छे. अथवा असंख्याता अनन्तप्रदेशिक स्कन्धो होय छे. जो तेना अनन्त विभाग करवामां आवे तो अनन्त परमाणुपुद्गलो थाय छे.

१३. [प्र०] एएसि णं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं साहणणा–भेदाणुवाएणं अणंताणंता पोग्गलपरियट्टा समणुगंतव्वा भवंतीति मक्खाया ? [उ०] हंता, गोयमा ! एएसि णं परमाणुपोग्गलाणं साहणणा० जाव–मक्खाया।

१४. [प्र०] कइविहे णं भंते ! पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते, तंजहा–१ ओरालियपोग्गलपरियट्टे, २ वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे, ३ तेयापोग्गलपरियट्टे, ४ कम्मापोग्गलपरियट्टे, ५ मणपोग्गलपरियट्टे, ६ वइपोग्गलपरियट्टे, ७ आणापाणुपोग्गलपरियट्टे।

१५. [प्र०] नेरइयाणं भंते ! कतिविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते, तंजहा–१ ओरालियपोग्गलपरियट्टे, २ वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे, जाव– ७ आणापाणुपोग्गलपरियट्टे; एवं जाव–वेमाणियाणं।

१६. [प्र०] एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता ? [उ०] अणंता, [प्र०] केवइया पुरेक्खडा ? [उ०] कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि; जस्सत्थि जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा।

१७. [प्र०] एगमेगस्स णं भंते ! असुरकुमारस्स केवतिया ओरालियपोग्गल० ? [उ०] एवं चेव, एवं जाव–वेमाणियस्स।

१८. [प्र०] एगमेगस्स णं भंते ! नेरइयस्स केवतिया वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा अतीता ? [उ०] अणंता; एवं जहेव ओरालियपोग्गलपरियट्टा तहेव वेउव्वियपोग्गलपरियट्टाऽवि भाणियव्वा, एवं जाव वेमाणियस्स, एवं जाव–आणापाणुपोग्गलपरियट्टा, एते एगत्तिया सत्त दंडगा भवंति।

१९. [प्र०] नेरइयाणं भंते ! केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता ? [उ०] गोयमा ! अणंता, केवइया पुरेक्खडा ? [उ०] अणंता, एवं जाव–वेमाणियाणं, एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टाऽवि, एवं जाव–आणापाणुपोग्गलपरियट्टा, जाव–वेमाणियाणं, एवं एए पोहत्तिया सत्त चउवीसतिदंडगा।

१३. हे भगवन् ! ए परमाणुपुद्गलोना संयोग अने भेदना संबंधथी अनन्तानन्त पुद्गलपरिवर्तो जाणवा योग्य छे माटे कह्या छे ? [उ०] हा, गौतम ! संयोग अने भेदना योगथी ए परमाणुपुद्गलोना अनंतानंत पुद्गलपरिवर्तो जाणवा योग्य छे माटे कह्या छे.

अनन्तानन्त पुद्गलपरिवर्तो.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्गलपरिवर्तो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! पुद्गलपरिवर्तो सात प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे–१ औदारिकपुद्गलपरिवर्त, २ वैक्रियपुद्गलपरिवर्त, ३ तैजसपुद्गलपरिवर्त, ४ कार्मणपुद्गलपरिवर्त, ५ मनपुद्गलपरिवर्त, ६ वचनपुद्गलपरिवर्त अने ७ आनप्राणपुद्गलपरिवर्त.

पुद्गलपरिवर्तना प्रकार.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकोने केटला प्रकारना पुद्गलपरिवर्तो कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने सात पुद्गलपरिवर्तो कह्या छे, ते आ प्रमाणे–१ औदारिकपुद्गलपरिवर्त, २ वैक्रियपुद्गलपरिवर्त, यावद् ७ आनप्राणपुद्गलपरिवर्त. ए प्रमाणे यावद्–वैमानिको सुधी जाणवुं.

नैरयिकोने पुद्गलपरिवर्तो.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो अतीत–थया छे ? [उ०] हे गौतम ! अनन्त थया छे. [प्र०] केटला थनारा छे ? [उ०] कोइने थवाना होय छे अने कोइने नथी; जेने थवाना छे तेने जघन्यथी एक, बे के त्रण थवाना छे; अने उत्कृष्टथी संख्याता, असंख्याता के अनन्ता थवाना होय छे.

एक नैरयिकने औदारिकपुद्गलपरिवर्तो.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! एक एक असुरकुमारने केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो थया छे ? [उ०] ए प्रमाणे–उपर कह्या प्रमाणे जाणवुं, ए प्रमाणे यावद् वैमानिक सुधी जाणवुं.

असुरकुमारने औदारिकपुद्गलपरिवर्त.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! एक एक नैरयिकने केटला वैक्रियपुद्गलपरिवर्तो थया छे ? [उ०] अनन्ता थया छे. ए प्रमाणे जेम औदारिकपुद्गलपरिवर्त संबन्धे कह्युं तेम वैक्रियपुद्गलपरावर्त संबन्धे पण जाणवुं. यावद् वैमानिक सुधी कहेवुं. ए प्रमाणे यावद् आनप्राणपुद्गलपरिवर्त संबन्धे पण जाणवुं. ए प्रमाणे एक एकने आश्रयी सात दंडको थाय छे.

एक नैरयिकने वैक्रियपुद्गलपरिवर्तो.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकोने केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो थया छे ? [उ०] हे गौतम ! अनन्ता थया छे. [प्र०] केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो थवाना छे ? [उ०] अनन्ता थवाना छे. ए प्रमाणे यावद् वैमानिको सुधी जाणवुं. ए रीते वैक्रियपुद्गलपरिवर्तो, यावद् आनप्राणपुद्गलपरिवर्तो संबन्धे पण यावत् वैमानिको सुधी जाणवुं. एम [सात पुद्गलपरिवर्त संबन्धे] बहुवचनने आश्रयी सात दंडको [नैरयिकादि]चोवीश दंडके कहेवा.

नैरयिकोने पुद्गलपरिवर्तो.

२०. [प्र०] एगमेगस्स णं भंते! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता? [उ०] नत्थि एक्को वि। [प्र०] केवतिया पुरेक्खडा? [उ०] नत्थि एक्को वि।

२१. [प्र०] एगमेगस्स णं भंते! नेरइयस्स असुरकुमारत्ते केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्टा० [उ०] एवं चेव, एवं जाव-थणियकुमारत्ते जहा असुरकुमारत्ते।

२२. [प्र०] एगमेगस्स णं भंते! नेरइयस्स पुढविकाइयत्ते केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता? [उ०] अणंता, [प्र०] केवतिया पुरेक्खडा? [उ०] कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि; जस्सत्थि तस्स जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा, एवं जाव-मणुस्सत्ते, वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियत्ते जहा असुरकुमारत्ते।

२३. [प्र०] एगमेगस्स णं भंते! असुरकुमारस्स नेरइयत्ते केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्टा? [उ०] एवं जहा नेरइयस्स वत्तव्वया भणिया, तहा असुरकुमारस्स वि भाणियव्वा, जाव-वेमाणियत्ते, एवं जाव-थणियकुमारस्स, एवं पुढविकाइयस्स वि, एवं जाव-वेमाणियस्स, सव्वेसिं एक्को गमो।

२४. [प्र०] एगमेगस्स णं भंते! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवतिया वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा अतीता? [उ०] अणंता, [प्र०] केवतिया पुरेक्खडा? [उ०] एकोत्तरिया जाव-अणंता वा, एवं जाव-थणियकुमारत्ते।

२५. [प्र०] पुढवीकाइयत्ते पुच्छा। [उ०] नत्थि एक्कोऽवि, [प्र०] केवतिया पुरेक्खडा? [उ०] नत्थि एक्कोऽवि, एवं जत्थ वेउव्वियसरीरं अत्थि तत्थ एगुत्तरिओ, जत्थ नत्थि तत्थ जहा पुढविकाइयत्ते तहा भाणियव्वं, जाव-वेमाणियस्स वेमाणियत्ते। तेयापोग्गलपरियट्टा, कम्मापोग्गलपरियट्टा य सव्वत्थ एकोत्तरिया भाणियव्वा; मणपोग्गलपरियट्टा सव्वेसु पंचिंदिएसु एगोत्तरिया, विगलिंदिएसु नत्थि। वइपोग्गलपरियट्टा एवं चेव, नवरं एगिंदिएसु नत्थि भाणियव्वा। आणापाणुपोग्गलपरियट्टा सव्वत्थ एकोत्तरिया, जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते।

एक नैरयिकने नैरयिकपणामां औदारिकपुद्गलपरिवर्त.

२०. [प्र०] हे भगवन्! एक एक नैरयिकने नैरयिकपणामां केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो अतीत-थया छे? [उ०] तेओने एक पण औदारिकपुद्गलपरिवर्त थयो नथी. [प्र०] केटला औदारिक पुद्गलपरिवर्तो थवाना छे? [उ०] तेओने एक पण थवानो नथी.

एक नैरयिकने असुरकुमारपणामां औदारिकपुद्गलपरिवर्त.

२१. [प्र०] हे भगवन्! एक एक नैरयिकने असुरकुमारपणामां केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो थया छे? [उ०] उपर कह्या प्रमाणे जाणवुं, ए प्रमाणे जेम असुरकुमारपणामां कह्युं तेम यावत् स्तनितकुमारपणामां पण जाणवुं.

एक नैरयिकने पृथिवीकायपणामां औदारिकपुद्गलपरिवर्तो.

२२. [प्र०] हे भगवन्! एक एक नैरयिकने पृथिवीकायपणामां केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो थया छे? [उ०] अनन्ता थया छे. [प्र०] केटला थवाना छे? [उ०] कोइने थवाना छे अने कोइने थवाना नथी, जेने थवाना छे तेने जघन्यथी एक, बे के त्रण थवाना छे, अने उत्कृष्टथी संख्याता, असंख्याता के अनन्ता थवाना छे, ए प्रमाणे यावत् मनुष्यपणामां पण जाणवुं. तथा वानव्यंतर, ज्योतिष्क अने वैमानिकपणामां जेम असुरकुमारपणामां कह्युं तेम जाणवुं.

एक असुरकुमारने नैरयिकपणामां औदारिकपुद्गलपरिवर्त.

२३. [प्र०] हे भगवन्! एक एक असुरकुमारने नैरयिकपणामां केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो अतीत-थया छे? [उ०] जेम नैरयिकनी वक्तव्यता कही तेम असुरकुमारनी पण वक्तव्यता कहेवी. ए प्रमाणे यावद्-वैमानिकपणामां कहेवुं. ए प्रमाणे यावत्-स्तनितकुमार सुधी कहेवुं. ए प्रमाणे पृथिवीथी आरंभी यावद् वैमानिकसुधी बधाओने एक गम-पाठ कहेवो.

एक नैरयिकने नैरयिकपणामां वैक्रियपुद्गलपरिवर्त.

२४. [प्र०] हे भगवन्! एक एक नैरयिकने नैरयिकपणामां केटला वैक्रियपुद्गलपरिवर्तो थया छे? [उ०] अनन्ता थया छे. [प्र०] केटला थवाना छे? [उ०] हे गौतम! एकथी मांडीने यावद् अनन्ता थवाना छे. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारपणामां जाणवुं.

नैरयिकने पृथिवीकायिकपणामां वैक्रियपुद्गलपरिवर्त.

२५. [प्र०] पृथिवीकायिकपणामां प्रश्न.—एक एक नैरयिकने पृथिवीकायिकपणामां वैक्रियपुद्गलपरिवर्तो केटला थया छे? [उ०] एक पण नथी. [प्र०] केटला थवाना छे? [उ०] एक पण नथी. ए प्रमाणे जे जीवोने वैक्रियशरीर छे तेओने एकादि पुद्गलपरावर्तो जाणवा, अने जेओने वैक्रियशरीर नथी तेओने पृथिवीकायिकपणामां कह्युं छे तेम कहेवुं, यावद् वैमानिकने वैमानिकपणामां कहेवुं. तैजसपुद्गलपरिवर्तो अने कार्मणपुद्गलपरिवर्तो सर्वत्र एकथी मांडीने अनन्तसुधी कहेवा. मनःपुद्गलपरिवर्तो बधा पंचेन्द्रियोमां एकथी आरंभी [अनन्त सुधी] कहेवा. ते (मनःपुद्गलपरिवर्तो) विकलेन्द्रियोमां नथी. वचनपुद्गलपरिवर्तो पण ए प्रमाणे जाणवा; परन्तु विशेष ए छे के ते एकेन्द्रिय जीवोमां नथी. श्वासोच्छ्वासपुद्गलपरिवर्तो बधा जीवोमां एकथी मांडीने वधारे जाणवा; यावद्-वैमानिकने वैमानिकपणामां कहेवुं.

२६. [प्र०] नेरइयाणं भंते ! नेरइयत्ते केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता ? [उ०] नत्थि एक्कोऽवि । [प्र०] केवइया पुरेक्खडा ? [उ०] नत्थि एक्को वि, एवं जाव–थणियकुमारत्ते ।

२७. [प्र०] पुढविकाइयत्ते पुच्छा । [उ०] अणंता । [प्र०] केवइया पुरेक्खडा ? [उ०] अणंता, एवं जाव–मणुस्सत्ते । वाण-मंतर–जोइसिय–वेमाणियत्ते जहा नेरइयत्ते, एवं जाव–वेमाणियस्स वेमाणियत्ते, एवं सत्त वि पोग्गलपरियट्टा भाणियव्वा; जत्थ अत्थि तत्थ अतीता वि पुरेक्खडा वि अणंता भाणियव्वा, जत्थ नत्थि तत्थ दोऽवि नत्थि भाणियव्वा । जाव–[प्र०] वेमाणियाणं वेमाणियत्ते केवतिया आणापाणुपोग्गलपरियट्टा अतीया ? [उ०] अणंता । [प्र०] केवतिया पुरेक्खडा ? [उ०] अणंता ।

२८. [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'ओरालियपोग्गलपरियट्टे ओरालियपोग्गलपरियट्टे' ? [उ०] गोयमा ! जण्णं जीवेणं ओरालियसरीरे वट्टमाणेणं ओरालियसरीरपायोग्गाइं दव्वाइं ओरालियसरीरत्ताए गहियाइं, बद्धाइं, पुट्ठाइं, कडाइं, पट्ठवियाइं, निविट्ठाइं, अभिनिविट्ठाइं, अभिसमन्नागयाइं, परियादियाइं, परिणामियाइं, निज्जिण्णाइं, निसिरियाइं, निसिट्ठाइं भवंति; से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ–'ओरालियपोग्गलपरियट्टे ओरालियपोग्गलपरियट्टे' । एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टेऽवि, नवरं वेउव्वियसरीरे वट्टमाणेणं वेउव्वियसरीरप्पायोग्गाइं, सेसं तं चेव सव्वं, एवं जाव–आणापाणुपोग्गलपरियट्टे, नवरं आणापाणुपायोग्गाइं सव्वदव्वाइं आणापाणुत्ताए सेसं तं चेव ।

२९. [प्र०] ओरालियपोग्गलपरियट्टे णं भंते ! केवइकालस्स निव्वत्तिज्जइ ? [उ०] गोयमा ! अणंताहिं उस्सप्पिणि-ओसप्पिणीहिं एवतिकालस्स निव्वत्तिज्जइ; एवं वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे वि, एवं जाव–आणापाणुपोग्गलपरियट्टेऽवि ।

३०. [प्र०] एयस्स णं भंते ! ओरालियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकालस्स, वेउव्वियपोग्गल०, जाव–आणापाणुपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकालस्स कयरे–कयरेहिंतो जाव–विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सव्वत्थोवे कम्मगपोग्गलपरियट्टनिव्वत्त-

नैरयिकोने नैरयिकपणामां केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो व्यतीत थया छे ?

२६. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकोने नैरयिकपणामां केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो व्यतीत थया छे ? [उ०] एक पण व्यतीत थयेल नथी. [प्र०] केटला थवाना छे ? [उ०] एक पण थवानो नथी. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारपणामां जाणवुं.

नैरयिकोने पृथिवीकायिकपणामां औदारिकपुद्गलपरिवर्त.

२७. [प्र०] पृथिवीकायिकपणामां प्रश्न. (नैरयिकोने पृथिवीकायिकपणामां केटला औदारिकपुद्गलपरिवर्तो व्यतीत थया छे ?) [उ०] अनन्ता व्यतीत थया छे. [प्र०] केटला थवाना छे ? [उ०] अनन्ता थवाना छे. ए प्रमाणे यावत्–मनुष्यपणामां जाणवुं. तथा जेम नैरयिकपणामां कह्युं छे तेम वानव्यन्तर, ज्योतिष्क अने वैमानिकपणामां कहेवुं. ए प्रमाणे यावत् वैमानिकने वैमानिकपणामां कहेवुं. ए रीते साते पुद्गलपरिवर्तो कहेवा; ज्यां होय छे त्यां अतीत–थयेला अने पुरस्कृत–भावी पण अनन्ता कहेवा, अने 'ज्यां नथी त्यां अतीत अने भावी बन्ने पण नथी–' एम कहेवुं. यावद्–[प्र०] वैमानिकोने वैमानिकपणामां केटला आनप्राणपुद्गलपरिवर्तो थयेला छे ? [उ०] अनन्ता थयेला छे. [प्र०] केटला थवाना छे ? [उ०] अनन्ता थवाना छे.

औदारिकपुद्गलपरिवर्त शा हेतुथी कहेवाय ?

२८. [प्र०] हे भगवन् ! 'औदारिकपुद्गलपरिवर्त औदारिकपुद्गलपरिवर्त'–एम शा हेतुथी कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! औदारिकशरीरमां वर्तता जीवे औदारिकशरीरने योग्य द्रव्यो औदारिकशरीरपणे ग्रहण करेलां छे, स्पर्शेलां छे, करेलां छे, स्थिर करेलां छे, स्थापन करेलां छे, अभिनिविष्ट–सर्वथा लागेलां छे, सर्वथा प्राप्त थयेलां छे, सर्व अवयववडे ग्रहण करायेलां छे, परिणाम पामेलां छे, निर्जरायेलां छे, जीवप्रदेशथी नीकळेलां छे, अने जीवप्रदेशथी जूदा थयेलां छे, माटे ते हेतुथी हे गौतम ! एम 'औदारिकपुद्गलपरिवर्त औदारिकपुद्गलपरिवर्त' कहेवाय छे. ए प्रमाणे वैक्रियपुद्गलपरिवर्त पण जाणवो. परन्तु विशेष ए छे के, वैक्रियशरीरमां वर्तता जीवे वैक्रियशरीरने योग्य पुद्गलो कहेवां, बाकी बधुं तेज प्रमाणे कहेवुं. ए प्रमाणे यावद् आनप्राणपुद्गलपरिवर्त सुधी जाणवुं; विशेष ए छे के, त्यां 'आनप्राणयोग्य सर्व द्रव्यो आनप्राणपणे ग्रह्यां छे' इत्यादि कहेवुं, बाकी बधुं पूर्वनी पेठेज जाणवुं.

औदारिकपुद्गलपरिवर्तनो निष्पत्तिकाल.

२९. [प्र०] हे भगवन् ! औदारिकपुद्गलपरिवर्त केटला काळे नीपजे ? [उ०] हे गौतम ! अनन्त उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणीवडे–एटला काळे–औदारिकपुद्गलपरिवर्त नीपजे. ए प्रमाणे वैक्रियपुद्गलपरिवर्त पण जाणवो. ए प्रमाणे यावत् आनप्राणपुद्गलपरिवर्त पण जाणवो.

औदारिकादिपुद्गलपरिवर्तकालनुं अल्पबहुत्व.

३०. [प्र०] हे भगवन् ! ए औदारिकपुद्गलपरिवर्तना निष्पत्तिकाळमां, वैक्रियपुद्गलपरिवर्तना निष्पत्तिकाळमां, यावद्–आनप्राणपुद्गलपरिवर्तना निष्पत्तिकाळमां कयो काळ कोनाथी (अल्प), यावत् विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! सर्वथी थोडो कार्मणपुद्गलपरिवर्तनो निष्पत्तिकाळ छे, तेनाथी अनन्तगुण तैजसपुद्गलपरिवर्तनो निष्पत्तिकाळ छे, तेनाथी अनन्तगुण औदारिकपुद्गलपरिवर्तनो निष्पत्तिकाळ छे, तेनाथी

णाकाले, तेयापोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे, ओरालियपोग्गल० अणंतगुणे, आणापाणुपोग्गल० अणंतगुणे, मणपोग्गल० अणंतगुणे, वइपोग्गल० अणंतगुणे, वेउव्वियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणंतगुणे ।

३१. [प्र०] एएसि णं भंते ! ओरालियपोग्गलपरियट्टाणं जाव–आणापाणुपोग्गलपरियट्टाण य कयरे कयरेहिंतो जाव–विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सव्वत्थोवा वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा, वइपो० अणंतगुणा, मणपो० अणंतगुणा, आणापाणुपो० अणंतगुणा, ओरालियपो० अणंतगुणा, तेयापो० अणंतगुणा, कम्मगपो० अणंतगुणा । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति भगवं जाव–विहरइ ।

द्वादश शते चतुर्थ उद्देशक समाप्त.

आनप्राणपुद्गलनो निष्पत्तिकाळ अनन्तगुण छे, तेनाथी मनःपुद्गलपरिवर्तनो निष्पत्तिकाळ अनन्तगुण छे, तेनाथी वचनपुद्गलपरिवर्तनो निष्पत्तिकाळ अनन्तगुण छे, अने तेनाथी वैक्रियपुद्गलपरिवर्तनो निष्पत्तिकाळ अनन्तगुण छे.

पुद्गलपरिवर्तनुं अल्पबहुत्व.

३१. [प्र०] हे भगवन् ! ए औदारिकपुद्गलपरिवर्त, यावद्–आनप्राणपुद्गलपरिवर्त–एओमां परस्पर कया पुद्गलपरिवर्त कोनाथी यावद्–विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! सौथी थोडा वैक्रियपुद्गलपरिवर्तो छे, तेनाथी अनन्तगुणा वचनपुद्गलपरिवर्तो छे, तेनाथी अनन्तगुणा मनःपुद्गलपरिवर्तो छे, तेनाथी अनन्तगुणा आनप्राणपुद्गलपरिवर्तो छे, तेनाथी अनन्तगुण औदारिकपुद्गलपरिवर्तो छे, तेनाथी अनन्तगुणा तैजसपुद्गलपरिवर्तो छे, अने तेनाथी अनन्तगुण कार्मणपुद्गलपरिवर्तो छे. 'हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे छे'–एम कही यावद्–भगवान् गौतम विहरे छे.

द्वादश शते चतुर्थ उद्देशक समाप्त.

पंचमो उद्देसओ।

१. [प्र०] रायगिहे जाव-एवं वयासी-अह भंते! १ पाणाइवाए, २ मुसावाए, ३ अदिन्नादाणे, ४ मेहुणे, ५ परिग्गहे-एस णं कतिवन्ने, कतिगंधे, कतिरसे, कतिफासे पण्णत्ते? [उ०] गोयमा! पंचवन्ने, दुगंधे, पंचरसे, चउफासे, पण्णत्ते॥

२. [प्र०] अह भंते! १ कोहे, २ कोवे, ३ रोसे, ४ दोसे, ५ अखमा, ६ संजलणे, ७ कलहे, ८ चंडिक्के, ९ भंडणे, १० विवादे-एस णं कतिवन्ने, जाव-कतिफासे पण्णत्ते? [उ०] गोयमा! पंचवन्ने, दुगंधे, पंचरसे, चउफासे पण्णत्ते॥

३. [प्र०] अह भंते! १ माणे, २ मदे, ३ दप्पे, ४ थंभे, ५ गव्वे, ६ अत्तुक्कोसे, ७ परपरिवाए, ८ उक्कासे, ९ अवक्कासे, १० उन्नते, ११ उन्नामे, १२ दुन्नामे-एस णं कतिवन्ने ४? [उ०] गोयमा! पंचवन्ने, जहा कोहे तहेव॥

पंचम उद्देशक.

प्राणातिपातवगेरे केटला वर्णादियुक्त छे?

१. [प्र०] राजगृह नगरमां [गौतम] यावद्-आ प्रमाणे बोल्या के हे भगवन्! १ *प्राणातिपात, २ मृषावाद, ३ अदत्तादान, ४ मैथुन अने ५ परिग्रह-ए बधा केटला वर्णवाळा, केटला गन्धवाळा, केटला रसवाळा अने केटला स्पर्शवाळा कह्या छे? [उ०] हे गौतम! ते पांच वर्णवाळा, बे गन्धवाळा, पांच रसवाळा अने चार स्पर्शवाळा कह्या छे.

क्रोधादि केटला वर्णादि सहित छे?

२. [प्र०] हे भगवन्! १ †क्रोध, २ कोप, ३ रोष, ४ दोष, ५ अक्षमा, ६ संज्वलन, ७ कलह, ८ चांडिक्य (रौद्राकार), ९ भंडन (दंडादिथी युद्ध करवुं) अने १० विवाद-ए बधा केटला वर्णवाळा, यावत्-केटला स्पर्शवाळा कह्या छे? [उ०] हे गौतम! पांच वर्णवाळा, बे गन्धवाळा, पांच रसवाळा अने चार स्पर्शवाळा कह्या छे.

मान वगेरे केटला वर्णादियुक्त छे?

३. [प्र०] हे भगवन्! १ ‡मान, २ मद, ३ दर्प, ४ स्तंभ, ५ गर्व, ६ अत्युत्कोश, ७ परपरिवाद, ८ उत्कर्ष, ९ अपकर्ष, १० उन्नत (उन्नय), ११ उन्नाम अने १२ दुर्नाम-ए बधा केटला वर्णवाळा, यावत्-केटला स्पर्शवाळा कह्या छे? [उ०] हे गौतम! पांच वर्णवाळा-इत्यादि जेम क्रोध संबन्धे कह्युं तेम अहिं जाणवुं.

---

१ * प्राणातिपात—जीवहिंसाथी उत्पन्न थयेलुं कर्म अथवा जीवहिंसाने उत्पन्न करनार चारित्रमोहनीय-कर्म उपचारथी प्राणातिपात कहेवाय छे. ए रीते मृषावादादि संबन्धे पण जाणवुं. अने ते कर्म पुद्गलरूप होवाथी तेने वर्णादिक होय छे, माटे तेने पांच वर्ण वगेरे कह्या छे—टीका.

२ † क्रोधना परिणामने उत्पन्न करनार कर्मने क्रोध कहे छे. तेमां १ क्रोध सामान्य नाम छे अने कोपादि तेना विशेषवाची नामो छे. २ क्रोधना उदयथी स्वभावथी चलित थवुं ते कोप, ३ क्रोधनी परंपरा ते रोष, ४ पोताने अथवा परने दूषण आपवुं ते दोष, अथवा अप्रीतिमात्र ते द्वेष, ५ बीजाए करेला अपराधने सहन न करवो ते अक्षमा, ६ वारंवार क्रोधथी बळवुं ते संज्वलन, ७ मोटेथी बुम पाडी परस्पर अनुचित्त बोलवुं ते कलह, ८ रौद्राकार धारण करवो ते चांडिक्य, ९ दंडादिथी युद्ध करवुं ते भंडन अने १० परस्पर विरोधथी उत्पन्न थयेला वचनो ते विवाद. अथवा आ बधा क्रोधना एकार्थक शब्दो छे—टीका.

३ ‡ मानना परिणामने उत्पन्न करनार कर्मने मान कहेवाय छे. तेमां १ मान सामान्य नाम छे अने मदादि तेना विशेषवाची नामो छे, २ मद-हर्ष, ३ दर्प-दृप्तपणुं, ४ स्तंभ-अनमनस्वभाव, ५ गर्व-अहंकार, ६ अत्युत्कोश-बीजाथी पोतानी उत्कृष्टता बताववी, ७ परपरिवाद-परनिन्दा, ८ उत्कर्ष-मानथी पोतानी के परनी क्रियाने उत्कृष्ट करवी, अथवा अभिमानथी पोतानी समृद्धि वगेरेने प्रकट करवी, ९ अपकर्ष-अभिमानथी पोताना अथवा परना कोइ पण कार्यथी अल्प पडवुं, अथवा अभिमानथी अप्रकट रहेवुं, १० उन्नत-पूर्वे प्रवृत्त नमननो त्याग करवो, अथवा उन्नय-अभिमानथी नीतिनो त्याग करवो, ११ उन्नाम-नमेलाने अभिमानथी न नमवुं अने १२ दुर्नाम-मदथी दुष्टरीते नमवुं. अहिं सांसारिक मानना कार्य छे. अथवा आ बधा शब्दो मानना एकार्थवाचक छे-टीका.

४. [प्र०] अह भंते ! १ माया, २ उवही, ३ नियडी, ४ वलये, ५ गहणे, ६ णूमे, ७ कक्के, ८ कुरूए, ९ जिम्हे, १० किब्बिसे, ११ आयरणया, १२ गूहणया, १३ वंचणया, १४ पलिउंचणया, १५ सातिजोगे य-एस णं कतिवन्ने ४ पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! पंचवन्ने, जहेव कोहे ।

५. [प्र०] अह भंते ! १ लोमे, २ इच्छा, ३ मुच्छा, ४ कंखा, ५ गेही, ६ तण्हा, ७ भिज्झा, ८ अभिज्झा, ९ आसासणया, १० पत्थणया, ११ लालप्पणया, १२ कामासा, १३ भोगासा, १४ जीवियासा, १५ मरणासा, १६ नंदीरागे-एस णं कतिवन्ने ४ ? [उ०] जहेव कोहे ।

६. [प्र०] अह भंते ! पेज्जे, दोसे, कलहे, जाव-मिच्छादंसणसल्ले-एस णं कतिवन्ने ? [उ०] जहेव कोहे तहेव चउफासे ।

७. [प्र०] अह भंते ! १ पाणाइवायवेरमणे, जाव-५ परिग्गहवेरमणे, ६ कोहविवेगे जाव-१८ मिच्छादंसणसल्लविवेगे-एस णं कतिवन्ने, जाव-कतिफासे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! अवन्ने, अगंधे, अरसे, अफासे पण्णत्ते ।

८. [प्र०] अह भंते ! १ उप्पत्तिया, २ वेणइया, ३ कम्मिया, ४ परिणामिया-एस णं कतिवन्ना ? [उ०] तं चेव जाव-अफासा पन्नत्ता ।

माया.

४. [प्र०] हे भगवन् ! १ *माया, २ उपधि, ३ निकृति, ४ वलय-वक्रताजननस्वभाव, ५ गहन, ६ नूम, ७ कल्क, ८ कुरूपा ९ जिह्मता, १० किल्बिष, ११ आदरणता (आचरणता), १२ गूहनता, १३ वंचनता, १४ प्रतिकुंचनता, १५ सातियोग-ए बधा केटला वर्णवाळा, यावत्-केटला स्पर्शवाळा छे ? [उ०] हे गौतम ! ए बधा पांच वर्णवाळा-इत्यादि क्रोधनी पेठे जाणवा.

लोभ.

५. [प्र०] हे भगवन् ! १ †लोभ, २ इच्छा, ३ मूर्छा, ४ कांक्षा, ५ गृद्धि, ६ तृष्णा, ७ भिध्या, ८ अभिध्या, ९ आशंसना, १० प्रार्थना, ११ लालपनता, १२ कामाशा, १३ भोगाशा, १४ जीविताशा, १५ मरणाशा अने १६ नंदिराग-ए बधा केटला वर्णवाळा, यावत्-केटला स्पर्शवाळा छे ? [उ०] हे गौतम ! क्रोधनी पेठे (सू. २) जाणवुं.

राग द्वेष वगेरे केटला वर्णादियुक्त छे ?

६. [प्र०] हे भगवन् ! १ प्रेम-राग, २ द्वेष, ३ कलह, यावत्-८ मिथ्यादर्शनशल्य-ए बधा केटला वर्णवाळा, यावत्-केटला स्पर्शवाळा छे ? [उ०] क्रोधनी पेठे ते बधा चार स्पर्शवाळा छे.

प्राणातिपातविरमणादि केटला वर्णादियुक्त छे ?

७. [प्र०] हे भगवन् ! १ ‡प्राणातिपातविरमण, यावद्-५ परिग्रहविरमण, ६ क्रोधनो त्याग, यावद्-१८ मिथ्यादर्शनशल्यनो त्याग-ए बधा केटला वर्णवाळा, यावत् केटला स्पर्शवाळा कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! वर्ण विनाना, गंध विनाना, रस विनाना अने स्पर्श विनाना कह्या छे.

चारप्रकारनी मति.

८. [प्र०] हे भगवन् ! १ ¶औत्पत्तिकी (स्वाभाविक उत्पन्न थयेली), २ वैनयिकी (गुरुना विनय-शास्त्राभ्यासद्वारा थयेली बुद्धि), ३ कार्मिकी (कर्मद्वारा थयेली) अने ४ पारिणामिकी (लांबा काळ सुधी पूर्वापर अर्थना अवलोकनादिकथी उत्पन्न थयेली) बुद्धि-ए केटला वर्णवाळी, यावत्-केटला स्पर्शवाळी कही छे ? [उ०] पूर्व प्रमाणे जाणवुं, यावद्-स्पर्शरहित कही छे.

---

४ * १ माया सामान्यवाचक नाम छे अने उपधिआदि तेना भेदो छे. २ उपधि-छेतरवा योग्य मनुष्यनी पासे जवाना कारणभूत भाव, ३ निकृति-आदर करवा वडे बीजाने छेतरवुं, अथवा पूर्वकृत मायाने ढांकवा बीजी माया करवी, ४ वलय-जे भाव वडे वलयनी पेठे वक्र वचन के चेष्टा प्रवर्ते ते भाव, ५ गहन-बीजाने छेतरवा माटे गहनना जेवी-न समजी शकाय तेवी-वचनजाल, ६ नूम-बीजाने ठगवा नीचतानो अथवा नीच स्थाननो आश्रय करवो, ७ कल्क-हिंसादिनिमित्ते परने छेतरवानो अभिप्राय, ८ कुरूप-निन्दितरीते मोह पमाडनार अभिप्राय, ९ जिह्मता-बीजाने छेतरवानी बुद्धिथी कार्यमां मन्दतानुं अवलंबन कराय ते, १० किल्बिष-जे मायाथी अहिंआ किल्बिषकना जेवो थाय ते, ११ आदरणता-(आचरणता) जे मायाविशेषथी कोइ पण वस्तुनो आदर करे ते आदरणता, अथवा बीजाने छेतरवा विविध क्रियानुं आचरण करवुं ते आचरणता, १२ गूहनता-पोताना स्वरूपने छूपाववुं, १३ वंचनता-परने छेतरवुं, १४ प्रतिकुंचनता-सरलपणे कहेला वचननुं खंडन करवुं, १५ सातियोग-उत्तम द्रव्यनी साथे हीन द्रव्यनो योग करवो. अथवा आ बधा मायाना एकार्थक शब्दो छे टीका.

५ † १ लोभ सामान्यवाची नाम छे अने इच्छादिक तेना विशेष भेदो छे, २ इच्छा-अभिलाष, ३ मूर्छा-संरक्षण करवानी निरन्तर अभिलाषा, ४ कांक्षा-अप्राप्त पदार्थनी इच्छा, ५ गृद्धि-प्राप्त अर्थमां आसक्ति, ६ तृष्णा-प्राप्त पदार्थनो व्यय न थाय तेवी इच्छा, ७ भिध्या-विषयोनुं ध्यान, एकाग्रता, ८ अभिध्या-अदृढ आग्रह, चलायमान चित्तनी स्थिति, ९ आशंसना-पोताने इष्ट अर्थनी इच्छा, १० प्रार्थना-बीजा माटे इष्ट अर्थनी मागणी, ११ लालपनता-अत्यन्त बोलवाथी प्रार्थना करवी, १२ कामाशा-इष्ट शब्द अने रूप प्राप्तिनी संभावना, १३ भोगाशा-इष्ट गंधादि प्राप्तिनी संभावना, १४ जीविताशा-जीवितव्यनी प्राप्तिनी संभावना, १५ मरणाशा-कोइक अवस्थामां मरण प्राप्तिनी संभावना, १६ नंदीराग-छती समृद्धिनो राग थवो-टीका.

७ ‡ प्राणातिपातविरमणादि जीवना उपयोगस्वरूप छे, अने जीवनो उपयोग अमूर्त होवाथी ते वर्णादिरहित कह्या छे.

८ ¶ १ उत्पत्ति एज जेनुं प्रयोजन छे, परन्तु जेने शास्त्र, कर्म अने अभ्यासादिनी अपेक्षा नथी ते औत्पत्तिकी बुद्धि कहेवाय छे. २ जेमां विनय-गुरुसेवा कारणभूत छे ते वैनयिकी बुद्धि, ए जीवनो स्वभाव होवाथी अमूर्त छे अने तेथी ते वर्णादिरहित छे. ए प्रमाणे अवग्रहादि अने उत्थानादि प्रतिपादक सूत्रो जाणवा.

९. [प्र०] अह भंते ! १ उग्गहे, २ ईहा, ३ अवाए, ४ धारणा—एस णं कतिवन्ना ? [उ०] एवं चेव जाव—अफासा पन्नत्ता ।

१०. [प्र०] अह भंते ! १ उट्ठाणे, २ कम्मे, ३ बले, ४ वीरीए, ५ पुरिसक्कारपरक्कमे—एस णं कतिवन्ने ? [उ०] तं चेव जाव—अफासे पन्नत्ते ।

११. [प्र०] सत्तमे णं भंते ! उवासंतरे कतिवन्ने ? [उ०] एवं चेव जाव—अफासे पन्नत्ते ।

१२. [प्र०] सत्तमे णं भंते ! तणुवाए कतिवन्ने ? [उ०] जहा पाणाइवाए, नवरं अट्ठफासे पण्णत्ते, एवं जहा सत्तमे तणुवाए तहा सत्तमे घणवाए, घणोदधी, पुढवी । छट्ठे उवासंतरे अवन्ने, तणुवाए जाव—छट्ठी पुढवी—एयाइं अट्ठफासाइं, एवं जहा सत्तमाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया तहा जाव—पढमाए पुढवीए भाणियव्वं । जंबुद्दीवे दीवे जाव—सयंभुरमणे समुद्दे, सोहम्मे कप्पे, जाव—ईसिपब्भारा पुढवी, नेरतियावासा, जाव—वेमाणियावासा—एयाणि सव्वाणि अट्ठफासाणि ।

१३. [प्र०] नेरइया णं भंते ! कतिवन्ना, जाव—कतिफासा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! वेउव्विय—तेयाइं पडुच्च पंचवन्ना, पंचरसा, दुग्गंधा, अट्ठफासा पण्णत्ता, कम्मगं पडुच्च पंचवन्ना, पंचरसा, दुगंधा, चउफासा पण्णत्ता, जीवं पडुच्च अवन्ना, जाव—अफासा पण्णत्ता, एवं जाव—थणियकुमारा ।

१४. [प्र०] पुढविकाइयाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! ओरालिय—तेयगाइं पडुच्च पंचवन्ना, जाव—अट्ठफासा पण्णत्ता, कम्मगं पडुच्च जहा नेरइयाणं, जीवं पडुच्च तहेव, एवं जाव—चउरिंदिया । नवरं वाउकाइया ओरालिय—वेउव्विय—तेयगाइं पडुच्च पंचवन्ना, जाव—अट्ठफासा पण्णत्ता; सेसं जहा नेरइयाणं । पंचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा वाउकाइया ।

अवग्रहादि.

९. [प्र०] हे भगवन् ! १ अवग्रह (अत्यन्त सूक्ष्म ज्ञान), २ ईहा (विचारणा), ३ अवाय—निश्चय अने ४ धारणा (उपयोगनुं सातत्य)—ए बधा केटला वर्णवाळा, यावत्—केटला स्पर्शवाळा छे ? [उ०] ए प्रमाणे यावद्—स्पर्शरहित कह्या छे.

उत्थानादि केटला वर्णादियुक्त छे ?

१०. [प्र०] हे भगवन् ! १ उत्थान, २ कर्म, ३ बल, ४ वीर्य अने ५ पुरुषकारपराक्रम—ए बधा केटला वर्णवाळा, यावत्—केटला स्पर्शवाळा कह्या छे ? [उ०] पूर्व प्रमाणे यावद् ते स्पर्शरहित कह्या छे.

सप्तम अवकाशान्तर.

११. [प्र०] हे भगवन् ! सातमो [सातमी* नरकपृथिवी नीचेनो] अवकाशांतर—आकाशनो खंड केटला वर्णवाळो, यावत्—केटला स्पर्शवाळो कह्यो छे ? [उ०] ए प्रमाणे यावद्—स्पर्शरहित कह्यो छे.

सप्तम तनुवात.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! सातमी नरकपृथिवी नीचेनो तनुवात केटला वर्णवाळो, यावत्—केटला स्पर्शवाळो कह्यो छे ? [उ०] प्राणातिपातनी पेठे (सू. ११) जाणवुं, परंतु विशेष ए छे के अहीं सातमो तनुवात आठ स्पर्शवाळो कह्यो छे. जेम सातमो तनुवात कह्यो छे तेम सातमो घनवात तथा सप्तमपृथिवी जाणवी. छट्ठी पृथिवीनी नीचेनो अवकाशांतर वर्णादिरहित छे. छट्ठो तनुवात तथा यावद्—छट्ठी पृथिवी—ए बधां आठ स्पर्शवाळां छे. ए प्रमाणे जेम सातमी पृथिवीनी वक्तव्यता कही, तेम यावत्—प्रथम पृथिवी सुधी जाणवुं. जंबूद्वीप नामे द्वीप, यावत् स्वयंभुरमणसमुद्र, सौधर्म कल्प, यावद्—ईषत्प्राग्भारा पृथिवी, नैरयिकावासो तथा यावद्—वैमानिकावासो—ए बधा आठ स्पर्शवाळा छे.

नैरयिकोने वर्णादि.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिको केटला वर्णवाळा, यावत् केटला स्पर्शवाळा कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! वैक्रिय अने तैजस—पुद्गलोनी अपेक्षाए तेओ पांच वर्णवाळा, पांच रसवाळा, बे गंधवाळा अने आठ स्पर्शवाळा कह्या छे, अने कार्मण पुद्गलोनी अपेक्षाए पांच वर्णवाळा, पांच रसवाळा, बे गंधवाळा अने चार स्पर्शवाळा कह्या छे, तथा जीवनी अपेक्षाए वर्णरहित, अने यावद् स्पर्शरहित कह्या छे. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं.

पृथिवीकायिको.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीकायिको केटला वर्णवाळा छे ?—इत्यादि. [उ०] हे गौतम ! औदारिक अने तैजस पुद्गलोनी अपेक्षाए पांच वर्णवाळा, यावत्—आठ स्पर्शवाळा छे, कार्मणनी अपेक्षाए जेम नैरयिको कह्या तेम कहेवा, अने जीवनी अपेक्षाए पण पूर्व प्रमाणे (वर्णादिरहित) जाणवा. ए प्रमाणे यावत्—चउरिन्द्रिय जीवो सुधी जाणवुं, पण विशेष ए छे के, वायुकायिको औदारिक, वैक्रिय अने तैजसपुद्गलोनी अपेक्षाए पांच वर्णवाळा, यावद्—आठ स्पर्शवाळा कह्या छे, बाकी बधुं नैरयिकोनी पेठे जाणवुं. तथा वायुकायिकोनी पेठे पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिको पण जाणवा.

---

११ * प्रथम अने बीजी नरकपृथिवीनी वच्चेनो आकाश ते प्रथम अवकाशान्तर कहेवाय छे, अने तेनी अपेक्षाए सप्तमनरकपृथिवीनी नीचेनो आकाशखंड सप्तम अवकाशान्तर कहेवाय छे, तेना उपर सातमो घनवात छे तेना उपर सातमो घनोदधि छे अने तेना उपर सातमी नरकपृथ्वी छे, तनुवातादि पौद्गलिक होवाथी मूर्त छे, तेथी तेने वर्णादि होय छे.—टीका.

१५. [प्र०] मणुस्साणं पुच्छा। [उ०] ओरालिय-वेउव्विय-आहारग-तेयगाइं पडुच्च पंचवन्ना, जाव-अट्ठफासा पण्णत्ता, कम्मगं जीवं च पडुच्च जहा नेरइयाणं, वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया। धम्मत्थिकाए, जाव-पोग्गलत्थिकाए-एए सव्वे अवन्ना, जाव-अफासा, नवरं पोग्गलत्थिकाए पंचवन्ने, पंचरसे, दुगंधे, अट्ठफासे पण्णत्ते। णाणावरणिज्जे, जाव-अंतराइए-एयाणि चउफासाणि।

१६. [प्र०] कण्हलेसा णं भंते! कइवन्ना-पुच्छा। [उ०] दव्वलेसं पडुच्च पंचवन्ना, जाव-अट्ठफासा पण्णत्ता, भावलेसं पडुच्च अवन्ना ४; एवं जाव सुक्कलेस्सा। सम्मद्दिट्ठि ३, चक्खुदंसणे ४, आभिणिबोहियणाणे ५ जाव-विब्भंगणाणे, आहारसन्ना, जाव-परिग्गहसन्ना-एयाणि अवन्नाणि ४। ओरालियसरीरे, जाव-तेयगसरीरे-एयाणि अट्ठफासाणि। कम्मगसरीरे चउफासे, मणजोगे, वयजोगे य चउफासे, कायजोगे अट्ठफासे। सागारोवओगे य अणागारोवओगे य अवन्ना।

१७. [प्र०] सव्वदव्वा णं भंते! कतिवन्ना-पुच्छा। [उ०] गोयमा! अत्थेगतिया सव्वदव्वा पंचवन्ना, जाव-अट्ठफासा पण्णत्ता, अत्थेगतिया सव्वदव्वा पंचवन्ना, चउफासा पण्णत्ता; अत्थेगतिया सव्वदव्वा एगवण्णा, एगगंधा, एगरसा, दुफासा पन्नत्ता, अत्थेगइया सव्वदव्वा अवन्ना, जाव-अफासा पन्नत्ता। एवं सव्वपएसा वि, सव्वपज्जवा वि, तीयद्धा अवन्ना, जाव-अफासा पण्णत्ता, एवं अणागयद्धा वि, एवं सव्वद्धा वि।

१८. [प्र०] जीवे णं भंते! गब्भं वक्कममाणे कतिवन्नं, कतिगंधं, कतिरसं, कतिफासं परिणामं परिणमइ? [उ०] गोयमा! पंचवन्नं, पंचरसं, दुगंधं, अट्ठफासं परिणामं परिणमइ।

१९. [प्र०] कम्मओ णं भंते! जीवे नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ, कम्मओ णं जए नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ? [उ०] हंता गोयमा! कम्मओ णं तं चेव जाव-परिणमइ, नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ। 'सेवं भंते! सेवं भंते'त्ति।

मनुष्यो.

१५. [प्र०] हे भगवन्! मनुष्यो केटला वर्णवाळा कह्या छे?—इत्यादि. [उ०] औदारिक, वैक्रिय, आहारक अने तैजस पुद्गलोनी अपेक्षाए पांच वर्णवाळा, यावत्—आठ स्पर्शवाळा कह्या छे, कार्मणपुद्गल अने जीवनी अपेक्षाए नैरयिकोनी पेठे (सू० १३.) जाणवा. जेम नैरयिको कह्या तेम वानव्यंतर, ज्योतिष्क अने वैमानिको कहेवा. धर्मास्तिकाय अने यावत्—पुद्गलास्तिकाय—ए बधा वर्णरहित छे, यावत् स्पर्शरहित छे; पण विशेष ए छे के, पुद्गलास्तिकाय पांच वर्णवाळो, पांच रसवाळो, बे गंधवाळो अने आठ स्पर्शवाळो होय छे. १ ज्ञानावरणीय, यावद्—८ अंतराय कर्म—ए बधां चार स्पर्शवाळां छे.

वानव्यन्तरादि. धर्मास्तिकायादि. ज्ञानावरणादि.

कृष्णलेश्यादि. सम्यग्दृष्ट्यादि. औदारिकादि शरीर. साकारोपयोग अने अनाकारोपयोग.

१६. [प्र०] हे भगवन्! कृष्णलेश्या केटला वर्णवाळी छे—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम *द्रव्यलेश्यानी अपेक्षाए पांच वर्णवाळी, यावद्—आठ स्पर्शवाळी कही छे अने भावलेश्यानी अपेक्षाए वर्णादिरहित छे. ए प्रमाणे यावत्—शुक्लेश्या सुधी जाणवुं. १ सम्यग्दृष्टि, २ मिथ्यादृष्टि, ३ सम्यग्मिथ्यादृष्टि, ४-७ चक्षुदर्शन वगेरे चार दर्शन, ८-१२ आभिनिबोधिक (मतिज्ञान) वगेरे पांच ज्ञान, यावद्—विभंगज्ञान, आहारसंज्ञा, यावत्—परिग्रहसंज्ञा—ए बधां वर्णादिरहित छे. औदारिक शरीर, यावत्—तैजस शरीर—ए बधां—आठ स्पर्शवाळां छे. कार्मणशरीर, मनोयोग अने वचनयोग चार स्पर्शवाळा छे, काययोग आठ स्पर्शवाळो छे, साकारोपयोग अने अनाकारोपयोग—ए बन्ने वर्णादिरहित छे.

सर्वद्रव्यो.

१७. [प्र०] हे भगवन्! बधां द्रव्यो केटला वर्णवाळां छे?—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम! सर्व द्रव्योमांना केटलाक पांच वर्णवाळां, यावद्—आठ स्पर्शवाळां छे, अने केटलाक पांच वर्णवाळां अने चार स्पर्शवाळां छे. तथा सर्व द्रव्योमांना केटलाक एक वर्णवाळां, एक गंधवाळां, एक रसवाळां अने बे स्पर्शवाळां छे, वळी सर्व द्रव्योमांना केटलाक वर्णरहित, यावद्—स्पर्शरहित छे. ए प्रमाणे सर्व प्रदेशो, सर्व पर्यायो अने अतीतकाळ पण वर्णरहित, यावत् स्पर्शरहित कह्या छे. ए प्रमाणे भविष्यकाळ अने सर्वकाळ पण जाणवो.

गर्भमां उत्पन्न थतो जीव.

१८. [प्र०] हे भगवन्! गर्भमां उत्पन्न थतो जीव केटला वर्णवाळा, केटला गंधवाळा, केटला रसवाळा अने केटला स्पर्शवाळा परिणामवडे परिणमे? [उ०] हे गौतम! ते पांच वर्णवाळा, पांच रसवाळा, बे गंधवाळा अने आठ स्पर्शवाळा परिणामवडे परिणमे.

जीव अने जगत् कर्मथी विविधरूपे परिणमे छे?

१९. [प्र०] हे भगवन्! जीव कर्मवडे विविधरूपे—मनुष्य—तिर्यंचादि अनेकरूपे—परिणमे छे? कर्म शिवाय विविधरूपे परिणमतो नथी? तथा जगत् कर्मवडे विविधरूपे परिणमे छे? कर्म विना परिणमतुं नथी? [उ०] हा, गौतम! कर्मथी जीव अने जगत्—जीवनो समूह विविधरूपे परिणमे छे, कर्म विना परिणमतुं नथी. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे'—एम कही [भगवान् गौतम] यावद् विहरे छे.

द्वादश शते पंचम उद्देशक समाप्त.

---

१६ * लेश्याना बे प्रकार छे—द्रव्य अने भाव. तेमां द्रव्यलेश्या बादरपुद्गलपरिणामरूप होवाथी तेने पांचवर्ण, यावत्—आठ स्पर्श होय छ, अने भावलेश्या आन्तरपरिणामरूप होवाथी वर्णादिरहित छे—टीका.

छट्ठओ उद्देसओ।

१. रायगिहे जाव-एवं वयासी-बहुजणे णं भंते! अन्नमन्नस्स एवमाइक्खति, जाव-एवं परूवेइ-'एवं खलु राहू चंदं गेण्हति, एवं०' २, से कहमेयं भंते! एवं? [उ०] गोयमा! जन्नं से बहुजणे अन्नमन्नस्स० जाव-मिच्छं ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा! एवमाइक्खामि, जाव एवं परूवेमि-"एवं खलु राहू देवे महिड्ढीए, जाव-महेसक्खे, वरवत्थधरे, वरमल्लधरे, वरगंधधरे, वराभरणधारी, राहुस्स णं देवस्स नव नामधेज्जा पण्णत्ता, तंजहा-सिंघाडए १, जडिलए २, खत्तए ३, खरए ४, दद्दुरे ५, मगरे ६, मच्छे ७, कच्छभे ८, कण्हसप्पे ९। राहुस्स णं देवस्स विमाणा पंचवन्ना पण्णत्ता, तंजहा-किण्हा, नीला, लोहिया, हालिद्दा, सुक्किल्ला। अत्थि कालए राहुविमाणे खंजणवन्नाभे पण्णत्ते, अत्थि नीलए राहुविमाणे लाउयवन्नाभे पन्नत्ते, अत्थि लोहिए राहुविमाणे मंजिट्ठवन्नाभे पन्नत्ते, अत्थि पीतए राहुविमाणे हालिद्दवन्नाभे पन्नत्ते, अत्थि सुक्किलए राहुविमाणे भासरासिवन्नाभे पन्नत्ते। जया णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्सं पुरत्थिमेणं आवरेत्ता णं पच्चत्थिमेणं वीतीवयइ तदा णं पुरत्थिमेणं चंदे उवदंसेति, पच्चत्थिमेणं राहू, जदा णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्सं पच्चत्थिमेणं आवरेत्ता णं पुरत्थिमेणं वीतीवयति तदा णं पच्चत्थिमेणं चंदे उवदंसेति, पुरत्थिमेणं राहू, एवं जहा पुरत्थिमेणं पच्चत्थिमेण य दो आलावगा भणिया तहा दाहिणेण य उत्तरेण य दो आलावगा भाणियव्वा, एवं उत्तरपुरत्थिमेण दाहिणपच्चत्थिमेण य दो आलावगा भाणियव्वा, एवं दाहिणपुरत्थिमेणं उत्तरपच्चच्छिमेण य दो आलावगा भाणियव्वा, एवं चेव जाव-तदा णं उत्तरपच्चत्थिमेणं चंदे उवदंसेति, दाहिणपुरत्थिमेणं राहू। जदा णं राहू आग-

षष्ठ उद्देशक.

राहु चन्द्रने ग्रसे छे ते संबन्धे प्रश्न.

राहु देवनुं वर्णन.

राहुना नामो.

राहुना विमानो.

राहु आवतो के जतो चन्द्रना प्रकाशने आवरे छे.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां (भगवान् गौतम) यावद्-आ प्रमाणे बोल्या-हे भगवन्! घणा माणसो परस्पर ए प्रमाणे कहे छे, यावत्-ए प्रमाणे प्ररूपे छे के 'ए प्रमाणे खरेखर राहु चंद्रने ग्रसे छे, ए प्रमाणे खरेखर राहु चंद्रने ग्रसे छे'; हे भगवन्! एवी रीते केम होय? [उ०] हे गौतम! बहु माणसो परस्पर जे कहे छे ते यावत् ए प्रमाणे मिथ्या-असत्य कहे छे. हे गौतम! हुं तो आ प्रमाणे कहुं छुं, यावद्-आ प्रमाणे प्ररूपुं छुं-ए प्रमाणे खरेखर राहु महर्धिक, (महाऋद्धिवाळो) यावद्-महासुखवाळो, उत्तम वस्त्रो, उत्तम माला, उत्तम सुगंध अने उत्तम आभूषण धारण करनार देव छे, ते राहुदेवना नव नामो कह्या छे, ते आ प्रमाणे-१ शृंगाटक, २ जटिलक, ३ क्षत्रक, ४ खर, ५ दर्दुर, ६ मकर, ७ मत्स्य, ८ कच्छप अने ९ कृष्णसर्प. ते राहुदेवना विमानो पांच वर्णवाळा कह्या छे, ते आ प्रमाणे-१ काळा, २ नीला (लीला), ३ लाल, ४ पीळा अने ५ शुक्ल. तेमां राहुनुं जे काळुं विमान छे ते खंजन-काजळना जेवा वर्णवाळुं छे, जे नील (लीलुं) विमान छे ते काचा तुंबडाना वर्ण जेवुं छे, जे लाल वर्णनुं राहुनुं विमान छे ते मजिठना वर्ण जेवुं छे, जे पीळुं राहुनुं विमान छे ते हळदरना वर्ण जेवुं छे, अने जे धोळुं विमान छे ते राखना ढगलाना वर्ण जेवुं कह्युं छे. ज्यारे आवतो के जतो, विकुर्वणा करतो के काम-क्रीडा करतो राहु पूर्वमां रहेला चंद्रना प्रकाशने आवरीने पश्चिम तरफ जाय त्यारे पूर्वमां चंद्र पोताने देखाडे छे, अर्थात् चन्द्र पूर्वमां देखाय छे, अने पश्चिममां राहु पोताने देखाडे छे, अर्थात् राहु पश्चिममां देखाय छे. ज्यारे आवतो के जतो, विकुर्वणा करतो के काम-क्रीडा करतो राहु पश्चिममां चंद्रना प्रकाशने आवरीने पूर्व तरफ जाय त्यारे पश्चिममां चंद्र पोताने देखाडे छे, अने पूर्वमां राहु पोताने देखाडे छे. ए प्रमाणे जेम पूर्व अने पश्चिमना बे आलापक कह्या तेम दक्षिण अने उत्तरना बे आलापक कहेवा, ए प्रमाणे उत्तर-पूर्व (ईशान कोण) अने दक्षिण-पश्चिमना (नैर्ऋत कोणना) बे आलापक कहेवा. ए प्रमाणे दक्षिण-पूर्व (अग्निकोण) अने उत्तर-पश्चिमना (वायव्य कोणना) बे आलापक कहेवा. ए रीते यावत्-ज्यारे उत्तर-पश्चिम-(वायव्य कोण) मां चन्द्र पोताने

च्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेस्सं आवरेमाणे २ चिट्ठति तदा णं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति– 'एवं खलु राहू चंदं गेण्हति, एवं०' २। जदा णं राहू आगच्छमाणे ४ चंदस्स लेस्सं आवरेत्ता णं पासेणं वीइवयइ तदा णं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति–'एवं खलु चंदेणं राहुस्स कुच्छी भिन्ना, एवं०' २। जदा णं राहू आगच्छमाणे वा ४ चंदस्स लेस्सं आवरेत्ता णं पच्चोसक्कइ तदा णं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति–'एवं खलु राहुणा चंदे वंते, एवं०' २। जदा णं राहू आगच्छमाणे वा ४ जाव–परियारेमाणे वा चंदलेस्सं अहे सपक्खिं सपडिदिसिं आवरेत्ता णं चिट्ठति तदा णं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति–'एवं खलु राहुणा चंदे घत्थे एवं०' २।

२. [प्र०] कतिविहे णं भंते! राहू पन्नत्ते? [उ०] गोयमा! दुविहे राहू पन्नत्ते, तंजहा–धुवराहू य पव्वराहू य। तत्थ णं जे से धुवराहू से णं बहुलपक्खस्स पाडिवए पन्नरसतिभागेणं पन्नरसतिभागं चंदस्स लेस्सं आवरेमाणे २ चिट्ठति, तंजहा–पढमाए पढमं भागं, बितियाए बितियं भागं, जाव–पन्नरसेसु पन्नरसमं भागं, चरिमसमये चंदे रत्ते भवति, अवसेसे समये चंदे रत्ते य विरत्ते य भवति; तमेव सुक्कपक्खस्स उवदंसेमाणे २ चिट्ठति, पढमाए पढमं भागं, जाव–पन्नरसेसु पन्नरसमं भागं, चरिमसमये चंदे विरत्ते भवइ, अवसेसे समये चंदे रत्ते य विरत्ते य भवइ। तत्थ णं जे से पव्वराहू से जहन्नेणं छण्हं मासाणं उक्कोसेणं बायालीसाए मासाणं चंदस्स, अडयालीसाए संवच्छराणं सूरस्स।

३. [प्र०] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–'चंदे ससी' २? [उ०] गोयमा! चंदस्स णं जोइसिंदस्स जोइसरन्नो मियंके विमाणे कंता देवा, कंताओ देवीओ, कंताइं आसण–सयण–खंभ–भंडमत्तोवगरणाइं, अप्पणा वि य णं चंदे जोइसिंदे जोइसराया सोमे कंते सुभए पियदंसणे सुरूवे, से तेणट्ठेणं जाव–ससी।

४. [प्र०] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–'सूरे आइच्चे, सूरे० २' २? [उ०] गोयमा! सूरादिया णं समया इ वा आवलिया इ वा जाव–उस्सप्पिणी इ वा अवसप्पिणी इ वा, से तेणट्ठेणं जाव–आइच्चे।

देखाडे छे, अने दक्षिण–पूर्वमां (अग्निकोणमां) राहु पोताने देखाडे छे. वळी ज्यारे आवतो के जतो, विकुर्वणा करतो के कामक्रीडा करतो राहु चंद्रनी ज्योत्स्नानुं आवरण करतो २ स्थिति करे, त्यारे मनुष्यलोकमां मनुष्यो कहे छे के, 'ए प्रमाणे खरेखर राहु चंद्रने ग्रसे छे.' ए प्रमाणे ज्यारे राहु आवतो के जतो, विकुर्वणा करतो के कामक्रीडा करतो चंद्रना प्रकाशने आवरीने पासे थइने जाय त्यारे मनुष्यलोकमां मनुष्यो कहे छे के–'ए प्रमाणे खरेखर चंद्रे राहुनी कुक्षि भेदी' २, अर्थात् राहुनी कुक्षिमां प्रवेश कर्यो. ए प्रमाणे आवतो के जतो, विकुर्वणा करतो के कामक्रीडा करतो राहु ज्यारे चंद्रनी लेश्याने ढांकीने पाछो वळे त्यारे मनुष्य लोकमां मनुष्यो कहे छे के, 'ए प्रमाणे खरेखर राहुए चंद्रने वम्यो'. वळी ए प्रमाणे ज्यारे राहु आवतो के यावत्–कामक्रीडा करतो चंद्रना प्रकाशने नीचेथी, चारे दिशाथी अने चारे विदिशाथी आवरीने–ढांकीने रहे त्यारे मनुष्यलोकमां मनुष्यो कहे छे के–'ए प्रमाणे खरेखर राहुए चंद्रने ग्रस्यो.'

राहुना प्रकार.

२. [प्र०] हे भगवन्! राहु केटला प्रकारना कह्या छे? [उ०] हे गौतम! राहु बे प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे–ध्रुवराहु (नित्यराहु) अने पर्वराहु. तेमां जे ध्रुवराहु छे ते कृष्णपक्षना पडवाथी मांडीने [प्रतिदिवस] पोताना पन्नरमा भागवडे चन्द्रलेश्या–चंद्रबिम्बसंबन्धी पन्नरमा भागने ढांकतो २ रहे छे, ते आ प्रमाणे–एकमने दिवसे प्रथम भागने ढांके छे, बीजना दिवसे बीजा भागने ढांके छे, ए प्रमाणे यावद्–अमावास्याने दिवसे चंद्रना पंदरमा भागने ढांके छे; अने कृष्णपक्षने छेल्ले समये चंद्र रक्त–सर्वथा आच्छादित थाय छे अने बाकीना समये चंद्र रक्त–अंशथी आच्छादित अने विरक्त–अंशथी अनाच्छादित होय छे. शुक्लपक्षना प्रतिपदथी आरंभी (प्रतिदिवस) तेज चंद्रनी लेश्याना पंदरमा भागने देखाडतो २ रहे छे. ते आ प्रमाणे–पडवाने विषे पहेला भागने देखाडे छे, यावत् पूर्णिमाने विषे पंदरमा-भागने देखाडे छे. शुक्लपक्षना छेवटना समये चन्द्र विरक्त–राहुथी सर्वथा मुक्त होय छे, अने बाकीना समये चन्द्र रक्त–आच्छादित अने विरक्त–अनाच्छादित होय छे. तेमां जे पर्वराहु छे ते ओछामां ओछां छ मासे (चंद्रने के सूर्यने) ढांके छे. अने वधारेमां वधारे बेंताळीश–मासे चंद्रने अने वधारेमां वधारे अडताळीश वरसे सूर्यने ढांके छे.

राहु चन्द्रने अने सूर्यने क्यारे ढांके?

शा हेतुथी चन्द्रने ससी (सश्री) शोभायुक्त कहेवाय छे?

३. [प्र०] हे भगवन्! शा हेतुथी चन्द्रने 'ससी' सश्री–ए प्रमाणे कहेवाय छे? [उ०] हे गौतम! ज्योतिष्कना इंद्र अने ज्योतिष्कना राजा चंद्रना मृगांक (मृगना चिह्नवाळा) विमानमां मनोहर देवो, मनोहर देवीओ, मनोहर आसन, शयन, स्तंभ तथा सुंदर पात्र वगेरे उपकरणो छे, तथा ज्योतिष्कनो राजा अने ज्योतिषिक इंद्र चंद्र पोते पण सौम्य, कांत, सुभग, प्रियदर्शन अने सुरूप छे, ते माटे चंद्र ससी–सश्री–शोभासहित कहेवाय छे.

शा हेतुथी सूर्यने आदित्य कहेवाय छे?

४. [प्र०] हे भगवन्! शा हेतुथी सूर्यने आदित्य (आदिमां थयेलो) एम कहेवाय छे? [उ०] हे गौतम! समयो, आवलिकाओ, यावत्–उत्सर्पिणीओ अने अवसर्पिणीओना आदिभूत–कारण सूर्य छे, माटे आदित्य–आदिमां थनार कहेवाय छे. [अर्थात् अहोरात्रादिक कालमां समय–आवलिका अने मुहूर्तादि भेदो सूर्यनी अपेक्षाए थाय छे, माटे सूर्यने अहोरात्रादि कालनो आदिभूत होवाथी आदित्य कहेवाय छे.]

५. [प्र०] चंदस्स णं भंते ! जोइसिंदस्स जोइसरन्नो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ? [उ०] जहा दसमसए जाव–णो चेव णं मेहुणवत्तियं । सूरस्स वि तहेव ।

६. [प्र०] चंदिम–सूरिया णं भंते ! जोइसिंदा जोइसरायाणो केरिसए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ? [उ०] गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे पढमजोव्वणुट्ठाणबलत्थे पढमजोव्वणुट्ठाणबलत्थाए भारियाए सद्धिं अचिरवत्तविवाहकज्जे, अत्थगवेसणयाए सोलसवासविप्पवासिए, से णं तओ लद्धट्ठे, कयकज्जे, अणहसमग्गे पुणरवि नियगगिहं हव्वमागए, ण्हाए कयबलिकम्मे, कयकोउय–मंगलपायच्छित्ते, सव्वालंकारविभूसिए, मणुन्नं थालिपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाकुलं भोयणं भुत्ते समाणे, तंसि तारिसगंसि वासघरंसि, वन्नओ महब्बले कुमारे, जाव–सयणोवयारकलिए ताए तारिसियाए भारियाए सिंगारागारचारुवेसाए जाव–कलियाए अणुरत्ताए अविरत्ताए मणाणुकूलाए सद्धिं इट्ठे सद्दे फरिसे जाव–पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरेज्जा, से णं गोयमा ! पुरिसे विउसमणकालसमयंसि केरिसयं सायासोक्खं पच्चणुब्भवमाणो विहरति ? ओरालं समणाउसो ! तस्स णं गोयमा ! पुरिसस्स कामभोगेहिंतो वाणमंतराणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा, वाणमंतराणं देवाणं कामभोगेहिंतो असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा, असुरिंदवज्जियाणं भवणवासियाणं देवाणं कामभोगेहिंतो असुरकुमाराणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा, असुरकुमाराणं देवाणं कामभोगेहिंतो गहगण–नक्खत्त–तारारूवाणं जोतिसियाणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा, गहगण–नक्खत्त–जाव–कामभोगेहिंतो चंदिम–सूरियाणं जोतिसियाणं जोतिसराईणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा, चंदिम–सूरिया णं गोयमा ! जोतिसिंदा जोतिसरायाणो एरिसे कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरंति । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं जाव–विहरइ ।

छट्ठओ उद्देसओ समत्तो ।

५. [प्र०] हे भगवन् ! ज्योतिषिकना इंद्र अने ज्योतिषिकना राजा चंद्रने केटली पट्टराणीओ कही छे ? [उ०] हे गौतम ! जेम *दशम शतकमां कह्युं छे तेम अहीं जाणवुं, यावत्–[पोतानी राजधानीमां सिंहासन विषे जिनना अस्थिओनुं संनिधान होवाथी] 'मैथुन निमित्ते देवीओ साथे भोग भोगववा समर्थ नथी' त्यां सुधी जाणवुं, तथा सूर्य संबंधे पण तेज प्रमाणे जाणवुं.

चन्द्रने अग्रमहिषीओ.

६. [प्र०] हे भगवन् ! ज्योतिष्कना इंद्र अने राजा, चंद्र अने सूर्य केवा प्रकारना कामभोगोने भोगवता विहरे छे ? [उ०] जेम प्रथम युवावस्थाना प्रारंभमां बलवान् कोइ एक पुरुषे प्रथम उगती युवावस्थामां बळवाळी भार्या साथे ताजोज विवाह कर्यो, अने पछी ते धन मेळववा माटे सोळवरस सुधी परदेश गयो, अने ते धनने मेळवी, कार्य समाप्त करी समस्त विघ्नरहितपणे पाछो पोताने घेर तुरत आव्यो, स्नान करी, बलिकर्म–पूजा करी, कौतुक अने मंगलरूप प्रायश्चित्त करी तथा सर्वालंकारथी विभूषित थई मनोज्ञ, अने स्थालीमां पाक करवा वडे शुद्ध तथा अढार प्रकारना व्यंजन–शाकादियी युक्त भोजन कर्या बाद †महाबल उद्देशकमां वासगृहनुं वर्णन कर्युं छे तेवा प्रकारना–शयनोपचार युक्त वासगृहमां यावत्–तेवा प्रकारनी उत्तम शृंगारना गृहरूप सुंदर वेषवाळी, यावत्–कलित–कलायुक्त, अनुरक्त, अत्यन्त रागयुक्त, अने मनने अनुकूल एवी स्त्री साथे इष्ट शब्द, स्पर्श यावत्–पांच प्रकारना मनुष्य संबंधी कामभोगोने भोगवतो विहरे छे, हे गौतम ! हवे ते पुरुष वेदोपशमनना–विकार शांतिना–समये केवा प्रकारना सुखने भोगवे ? हे आयुष्मन् श्रमण ! ते पुरुष उदार ‡सुखने अनुभवे. हे गौतम ! ते पुरुषना कामभोगो करतां वानव्यंतर देवोने अनंतगुण विशिष्टतर कामभोगो होय छे. वानव्यंतर देवोना कामभोगोथी असुरेन्द्र सिवायना भवनवासी देवोने अनन्तगुण विशिष्टतर कामभोगो होय छे, असुरेन्द्र सिवाय भवनवासी देवोना कामभोगो करतां असुरकुमार देवोना कामभोगो अनंतगुण विशिष्टतर होय छे, असुरकुमार देवोना कामभोगो करतां अनंतगुण विशिष्टतर कामभोगो ज्योतिषिक देवरूप ग्रहगण, नक्षत्र अने ताराओने होय छे. ज्योतिषिक देवरूप ग्रहगण, नक्षत्र अने ताराओना कामभोगो करतां अनंतगुण विशिष्टतर कामभोगो ज्योतिषिकना इन्द्र अने ज्योतिषिक देवोना राजा चन्द्र तथा सूर्यने होय छे. हे गौतम ! ज्योतिष्कना इन्द्र, अने ज्योतिष्कना राजा चंद्र अने सूर्य आवा प्रकारना कामभोगोने अनुभवता विहरे छे. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे' एम कही भगवान् गौतम श्रमण भगवंत महावीरने (वांदी अने नमी) यावद् विहरे छे.

सूर्य अने चन्द्र केवा प्रकारना कामभोगो भोगवे छे ?

द्वादश शते षष्ठ उद्देशक समाप्त.

---

५ * भग० खं० ३ श० १० उ० १० पृ० २०३ सू० २१.

६ † भग० खं० ३ श० ११ उ० ११ पृ० २३६ सू० १५.

‡ अहीं कामभोगोना सुखने–सुखाभासने उदार सुख तरीके कह्युं ते प्राकृत जनोनी दृष्टिए समजवुं, आध्यात्मिक दृष्टिए तो ते दुःखरूप ज छे.—अनुवादक.

सत्तमो उद्देसओ।

१. [प्र०] तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव–एवं वयासी–केमहालए णं भंते! लोए पन्नत्ते? [उ०] गोयमा! महतिमहालए लोए पन्नत्ते, पुरत्थिमेणं असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ, दाहिणेणं असंखिज्जाओ एवं चेव, एवं पच्चत्थिमेण वि, एवं उत्तरेण वि, एवं उड्ढं पि, अहे असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयाम–विक्खंभेणं।

२. [प्र०] एयंसि णं भंते! एमहालगंसि लोगंसि अत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जत्थ णं अयं जीवे न जाए वा, न मए वा वि? [उ०] गोयमा! नो इणट्ठे समट्ठे। [प्र०] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–'एयंसि णं एमहालगंसि लोगंसि नत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जत्थ णं अयं जीवे ण जाए वा, न मए वा वि'? [उ०] गोयमा! सेजहानामए–केइ पुरिसे अयासयस्स एगं महं अयावयं करेज्जा, से णं तत्थ जहन्नेणं एक्कं वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं अयासहस्सं पक्खिवेज्जा, ताओ णं तत्थ पउरगोयराओ पउरपाणियाओ जहन्नेणं एगाहं वा दुयाहं वा तियाहं वा उक्कोसेणं छम्मासे परिवसेज्जा, अत्थि णं गोयमा! तस्स अयावयस्स केई परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जे णं तासिं अयाणं उच्चारेण वा पासवणेण वा खेलेण वा सिंघाणएण वा वंतेण वा पित्तेण वा पूएण वा सुक्केण वा सोणिएण वा चम्मेहिं वा रोमेहिं वा सिंगेहिं वा खुरेहिं वा नहेहिं वा अणक्कंतपुव्वे भवइ? णो तिणट्ठे समट्ठे, होज्जा वि णं गोयमा! तस्स अयावयस्स केई परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जे णं तासिं अयाणं उच्चारेण वा जाव–णहेहिं वा अणक्कंतपुव्वे, णो चेव णं एयंसि एमहालगंसि लोगंसि लोगस्स य सासयं भावं, संसारस्स य अणादिभावं, जीवस्स य णिच्चभावं, कम्मबहुत्तं, जम्मण–मरणबाहुल्लं च पडुच्च नत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जत्थ णं अयं जीवे न जाए वा न मए वा वि, से तेणट्ठेणं तं चेव जाव–न मए वा वि।

सप्तम उद्देशक.

लोकनुं महत्त्व.

१. [प्र०] ते काले–ते समये यावद्–[भगवान् गौतम] आ प्रमाणे बोल्या के–हे भगवन्! लोक केटलो मोटो कह्यो छे? [उ०] हे गौतम! लोक अत्यन्त मोटो कह्यो छे; ते पूर्व दिशाए असंख्य कोटाकोटी योजन छे, दक्षिण दिशाए ए प्रमाणे असंख्याता कोटाकोटी योजन छे, ए प्रमाणे पश्चिम दिशाए अने उत्तर दिशाए छे. तथा एज प्रमाणे ऊर्ध्व–उपर अने नीचे पण असंख्य कोटाकोटि योजन आयाम–लंबाइ अने विष्कंभ–विस्तारथी छे.

२. [प्र०] हे भगवन्! आ एवडा मोटा लोकमां एवो कोइ परमाणुपुद्गलना जेटलो पण प्रदेश छे के, ज्यां आ जीव उत्पन्न थयो न होय, अने मरण पाम्यो पण न होय? [उ०] हे गौतम! ए अर्थ यथार्थ नथी. [प्र०] हे भगवन्! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के–'आ एवडा मोटा लोकमां एवो कोइ परमाणुपुद्गलमात्र पण प्रदेश नथी, के ज्यां आ जीव उत्पन्न थयो न होय अने मर्यो न होय'? [उ०] हे गौतम! जेम कोइ एक पुरुष सो बकरीने माटे एक मोटो अजाव्रज–बकरीनो वाडो–करे, तथा तेमां ओछामां ओछी एक, बे के त्रण अने वधारेमां वधारे एक हजार बकरीओ नांखे, अने ते वाडामां घणुं पाणी अने घणुं गोचर–चरवानुं स्थळ–होवाथी ते बकरीओ जघन्यथी एक दिवस, बे दिवस के त्रण दिवस अने उत्कृष्टथी छ मास सुधी रहे, तो हे गौतम! ते वाडानो एवो कोइ परमाणुपुद्गल मात्र प्रदेश होय के जे ते बकरीओनी लिंडिओथी, मूत्रथी, श्लेष्मथी, नाकनां मळथी, वमनथी, पित्तथी, शुक्रथी, लोहिथी, चामडाथी, रोमथी, शिंगडाथी, खरीथी अने नखथी पूर्वे स्पर्श न करायेलो होय? [हे भगवन्!] ए अर्थ यथार्थ नथी. हे गौतम! कदाच कोइ एक परमाणुपुद्गल मात्र प्रदेश होय के जे ते बकरीओनी लींडीओथी, यावत् नखोथी पूर्वे स्पर्श न करायेलो होय. तो पण आ एवडा मोटा लोकमां लोकना शाश्वत भावने लइने, संसारना अनादिपणाने लीधे, जीवना नित्य भावने आश्रयी, अने कर्मनी बहुलताने अने जन्म तथा मरणनी बहुलताने अपेक्षी एवो कोइ परमाणुपुद्गल मात्र प्रदेश नथी के ज्यां आ जीव न जन्म्यो होय के न मर्यो होय. माटे हे गौतम! ते हेतुथी पूर्वोक्त यावत्–'ते मर्यो न होय.'

३. [प्र०] कति णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? [उ०] गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, जहा पढमसए पंचमउद्देसए तहेव आवासा ठावेयवा, जाव–अणुत्तरविमाणेत्ति, जाव–अपराजिए सबट्ठसिद्धे ।

४. [प्र०] अयं णं भंते ! जीवे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि पुढविकाइयत्ताए, जाव–वणस्सइकाइयत्ताए, नरगत्ताए, नेरइयत्ताए उववन्नपुवे ? [उ०] हंता गोयमा ! असइं, अदुवा अणंतखुत्तो ।

५. [प्र०] सबजीवा वि णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए णिरया० [उ०] तं चेव जाव–अणंतखुत्तो ।

६. [प्र०] अयन्नं भंते ! जीवे सक्करप्पभाए पुढवीए पणवीसा० [उ०] एवं जहा रयणप्पभाए तहेव दो आलावगा भाणियवा, एवं जाव–धूमप्पभाए ।

७. [प्र०] अयन्नं भंते ! जीवे तमाए पुढवीए पंचूणे निरयावाससयसहस्से एगमेगंसि० [उ०] सेसं तं चेव ।

८. [प्र०] अयन्नं भंते ! जीवे अहेसत्तमाए पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु महतिमहालएसु महानिरएसु एगमेगंसि निरयावासंसि० [उ०] सेसं जहा रयणप्पभाए ।

९. [प्र०] अयन्नं भंते ! जीवे चउसट्ठीए असुरकुमारावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि असुरकुमारावासंसि पुढविकाइयत्ताए, जाव–वणस्सइकाइयत्ताए देवत्ताए देवित्ताए आसण–सयण–भंडमत्तोवगरणत्ताए उववन्नपुवे ? [उ०] हंता गोयमा ! जाव–अणंतखुत्तो । सबजीवा वि णं भंते ! एवं चेव, एवं जाव–थणियकुमारेसु । नाणत्तं आवासेसु, आवासा पुवभणिया ।

३. [प्र०] हे भगवन् ! पृथिवीओ केटली कही छे ? [उ०] हे गौतम ! सात पृथिवीओ कही छे, अहीं प्रथम शतकना पंचम *उद्देशकमां कह्या प्रमाणे नरकादिना आवासो कहेवा, ए प्रमाणे यावत्–अनुत्तरविमान, यावत्–अपराजित अने सर्वार्थसिद्ध सुधी जाणवुं।

नरकपृथिवी.

४. [प्र०] हे भगवन् ! आ जीव आ रत्नप्रभा पृथिवीमां अने तेना त्रीश लाख नरकावासोमांना एक एक नरकावासमां पृथ्वीकायिकपणे, यावद्–वनस्पतिकायिकपणे, नरकपणे, नैरयिकपणे, पूर्वे उत्पन्न थएलो छे ? [उ०] हा, गौतम ! अनेकवार अथवा अनंतवार पूर्वे उत्पन्न थएलो छे.

आ जीव रत्नप्रभाना एक एक नरकावासमां पृथिवीकायिकादिपणे उत्पन्न थयो छे ?

५. [प्र०] हे भगवन् ! सर्वे जीवो पण आ रत्नप्रभा पृथिवीमां अने तेना त्रीस लाख नरकावासमांना [एक एक नरकावासमां पृथिवीकायिकपणे, यावद्–वनस्पतिकायिकपणे यावत्–पूर्वे उत्पन्न थएला छे ? [उ०] पूर्वे कह्या प्रमाणे त्यां अनेकवार अथवा] यावत्–अनंतवार पूर्वे उत्पन्न थएला छे.

सर्व जीवो.

६. [प्र०] हे भगवन् ! आ जीव शर्कराप्रभाना पचीस लाख नरकावासमांना एक एक नरकावासमां पृथिवीकायिकपणे यावत् वनस्पतिकायिकपणे यावत्–पूर्वे उत्पन्न थएलो छे ? [उ०] जेम रत्नप्रभाना बे आलापक कह्या तेम शर्कराप्रभाना पण [एक जीव अने सर्व जीव आश्रयी] बे आलापक कहेवा. ए प्रमाणे यावत्–धूमप्रभा सुधी आलापक कहेवा.

शर्कराप्रभाना नरकावासमां पृथिवीकायिकादिपणे उत्पन्न थयो छे ?

७. [प्र०] हे भगवन् ! आ जीव तमापृथिवीमांना पांच न्यून एक लाख निरयावासमांना एक एक नरकावासमां [पृथिवीकायिकपणे यावत्–वनस्पतिकायिकपणे पूर्वे उत्पन्न थएलो छे ?] [उ०] बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं.

तमा पृथिवी.

८. [प्र०] हे भगवन् ! आ जीव अधःसप्तम नरकपृथिवीना पांच अनुत्तर अने अत्यन्त म्होटा नरकावासोमांना एक एक नरकावासमां पूर्वे उत्पन्न थयो छे ? [उ०] बाकी बधुं रत्नप्रभानी पेठे जाणवुं.

सप्तम पृथिवीमां पूर्वे उत्पन्न थयो छे ?

९. [प्र०] हे भगवन् ! आ जीव असुरकुमारोना चोसठ लाख असुरकुमारावासोमांना एक एक असुरकुमारावासमां पृथिवीकायिकपणे, यावत्–वनस्पतिकायिकपणे, देवपणे, देवीपणे, आसन, शयन अने पात्र वगेरे उपकरणपणे पूर्वे उत्पन्न थएलो छे ? [उ०] हा, गौतम ! यावद्–अनंतवार उत्पन्न थएलो छे. सर्व जीवो ए प्रमाणे जाणवा. ए प्रमाणे यावत्–'स्तनितकुमारो' सुधी जाणवुं, परन्तु तेओना आवासोनी संख्यामां भेद छे, अने ए आवासो पूर्वे कहेला छे.

असुरकुमार.

१ * भग० खं० १ श० १ उ० ५ पृ० १४१–१४२.

१०. [प्र०] अयं णं भंते ! जीवे असंखेज्जेसु पुढविकाइयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि पुढविकाइयावासंसि पुढविकाइयत्ताए जाव–वणस्सइकाइयत्ताए उववन्नपुव्वे ? [उ०] हंता गोयमा ! जाव–अणंतखुत्तो । एवं सव्वजीवा वि, एवं जाव–वणस्सइकाइएसु ।

११. [प्र०] अयं णं भंते ! जीवे असंखेज्जेसु बेंदियावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि बेंदियावासंसि पुढविकाइयत्ताए, जाव–वणस्सइकाइयत्ताए, बेइंदियत्ताए उववन्नपुव्वे ? [उ०] हंता गोयमा ! जाव–खुत्तो । सव्वजीवा वि णं एवं चेव, एवं जाव–मणुस्सेसु, नवरं तेंदिएसु जाव–वणस्सइकाइयत्ताए तेंदियत्ताए, चउरिंदिएसु चउरिंदियत्ताए, पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु पंचिंदियतिरिक्खजोणियत्ताए, मणुस्सेसु मणुस्सत्ताए, सेसं जहा बेंदियाणं, वाणमंतर–जोइसिय–सोहम्मी–साणाण य जहा असुरकुमाराणं ।

१२. [प्र०] अयं णं भंते ! जीवे सणंकुमारे कप्पे बारससु विमाणावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि वेमाणियावासंसि पुढविकाइयत्ताए० [उ०]सेसं जहा असुरकुमाराणं जाव–अणंतखुत्तो, नो चेव णं देवित्ताए, एवं सव्वजीवा वि, एवं जाव–आणय–पाणएसु, एवं आरण–च्चुएसु वि ।

१३. [प्र०] अयन्नं भंते ! जीवे तिसु वि अट्ठारसुत्तरेसु गेविज्जविमाणावाससयेसु० [उ०] एवं चेव ।

१४. [प्र०] अयन्नं भंते ! जीवे पंचसु अणुत्तरविमाणेसु एगमेगंसि अणुत्तरविमाणंसि पुढवि० [उ०] तहेव जाव–अणंतखुत्तो, नो चेव णं देवत्ताए वा देवीत्ताए वा, एवं सव्वजीवा वि ।

१५. [प्र०] अयन्नं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं माइत्ताए, पितित्ताए, भाइत्ताए, भगिणित्ताए, भज्जत्ताए, पुत्तत्ताए, धूयत्ताए, सुण्हत्ताए उववन्नपुव्वे ? [उ०] हंता गोयमा ! असइं, अदुवा अणंतखुत्तो ।

१६. [प्र०] सव्वजीवा वि णं भंते ! इमस्स जीवस्स माइत्ताए जाव–उववन्नपुव्वा ? [उ०] हंता गोयमा ! जाव–अणंतखुत्तो ।

पृथिवीकायिकावासमां पूर्वे उत्पन्न थयो छे ?

१०. [प्र०] हे भगवन् ! आ जीव असंख्याता लाख पृथिवीकायिकावासमांना एक एक पृथिवीकायिकावासमां पृथिवीकायिकपणे यावद्–वनस्पतिकायिकपणे पूर्वे उत्पन्न थयो छे ? [उ०] हा, गौतम ! यावत्–अनंतवार उत्पन्न थएलो छे; ए प्रमाणे सर्व जीवो पण जाणवा. ए प्रमाणे यावत्–वनस्पतिकायिकोमां पण जाणवुं.

बेइन्द्रियावासमां पूर्वे उत्पन्न थयो छे ?

११. [प्र०] हे भगवन् ! आ जीव असंख्याता लाख बेइंद्रियावासमांना एक एक बेइंद्रियावासमां पृथिवीकायिकपणे, यावत्–वनस्पतिकायिकपणे अने बेइंद्रियपणे पूर्वे उत्पन्न थएलो छे ? [उ०] हा, गौतम ! त्यां यावद्–अनंतवार उत्पन्न थएलो छे. सर्व जीवो पण ए प्रमाणे जाणवा, ए प्रमाणे यावद्–मनुष्योमां जाणवुं. परन्तु विशेष ए छे के, तेइंद्रियोमां यावद्–वनस्पतिकायिकपणे, यावत् तेइंद्रियपणे; चउरिंद्रियोमां चउरिंद्रियपणे, पंचेंद्रियतिर्यंचयोनिकोमां पंचेंद्रियतिर्यंचयोनिकपणे, अने मनुष्योमां मनुष्यपणे उत्पत्ति जाणवी. बाकी बधुं बेइंद्रियोनी पेठे जाणवुं. जेम असुरकुमारो संबंधे कह्युं तेम वानव्यंतर, ज्योतिष्क, सौधर्म अने ईशानमां पण जाणवुं.

सनत्कुमारकल्पमां.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! आ जीव सनत्कुमार कल्पमां तेना बार लाख विमानावासमांना एक एक वैमानिकावासमां पृथिवीकायपणे, यावत्–पूर्वे उत्पन्न थयलो छे ? [उ०] बाकीनुं बधुं असुरकुमारोनी पेठे (सू० ९) यावद्–'अनंतवार उत्पन्न थएलो छे' त्यां सुधी जाणवुं. पण त्यां देवीपणे उत्पन्न थयो नथी. ए प्रमाणे सर्व जीवो संबन्धे पण जाणवुं. ए प्रमाणे यावत्–आनत अने प्राणतमां तथा आरण–अच्युतमां पण जाणवुं.

ग्रैवेयक विमानावासमां.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! आ जीव त्रणसोने अढार ग्रैवेयक विमानावासमांना एक एक आवासमां पृथिवीकायिकपणे, यावद्–पूर्वे उत्पन्न थएलो छे ? [उ०] ए प्रमाणे जाणवुं. (यावत्–अनंतवार उत्पन्न थएलो छे.)

अनुत्तर विमानावासमां.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! आ जीव पांच अनुत्तर विमानोमांना एक एक अनुत्तर विमानमां पृथिवीकायिकपणे, (यावत्–पूर्वे उत्पन्न थएलो छे ?) [उ०] ते प्रमाणे यावद्–अनंतवार उत्पन्न थएलो छे, पण देवपणे अने देवीपणे उत्पन्न थयो नथी. ए प्रमाणे सर्व जीवो पण जाणवा.

आ जीव सर्व जीवोना माता पिता इत्यादि संबन्धरूपे उत्पन्न थयो छे ?

१५. [प्र०] हे भगवन् ! आ जीव सर्व जीवोना मातापणे, पितापणे, भाईपणे, बहेनपणे, स्त्रीपणे, पुत्रपणे, पुत्री अने पुत्रवधूपणे पूर्वे उत्पन्न थएलो छे ? [उ०] हा, गौतम ! अनेकवार, अथवा अनंतवार उत्पन्न थयेलो छे.

सर्व जीवो आ जीवना माता इत्यादि संबन्धरूपे उत्पन्न थया छे ?

१६. [प्र०] हे भगवन् ! सर्व जीवो पण आ जीवना मातापणे, यावत्–पूर्वे उत्पन्न थएला छे ? [उ०] हा, गौतम ! यावद्–अनेकवार अथवा अनंतवार उत्पन्न थया छे.

१७. [प्र०] अयण्णं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं अरित्ताए, वेरियत्ताए, घातगत्ताए, वहगत्ताए, पडिणीयत्ताए, पच्चामित्त-त्ताए उववन्नपुव्वे ? [उ०] हंता गोयमा ! जाव-अणंतखुत्तो ।

१८. [प्र०] सव्वजीवा वि णं भंते !० [उ०] एवं चेव ।

१९. [प्र०] अयन्नं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं रायत्ताए, जुवरायत्ताए, जाव-सत्थवाहत्ताए उववन्नपुव्वे ? [उ०] हंता गोयमा ! असतिं, जाव-अणंतखुत्तो । सव्वजीवाणं एवं चेव ।

२०. [प्र०] अयन्नं भंते ! जीवे सव्वजीवाणं दासत्ताए, पेसत्ताए, भयगत्ताए, भाइल्लगत्ताए, भोगपुरिसत्ताए, सीसत्ताए, वेसत्ताए उववन्नपुव्वे ? [उ०] हंता गोयमा ! जाव-अणंतखुत्तो । एवं सव्वजीवा वि अणंतखुत्तो । 'सेवं भंते ! सेवं भंते'त्ति जाव-विहरइ ।

सत्तमो उद्देसओ समत्तो ।

१७. [प्र०] हे भगवन् ! आ जीव सर्व जीवोना शत्रुपणे, वैरिपणे, घातकपणे, वधकपणे, प्रत्यनीकपणे अने शत्रुना मित्रपणे पूर्वे उत्पन्न थएलो छे ? [उ०] हा, गौतम ! यावद्-अनंतवार उत्पन्न थयो छे.

आ जीव सर्व जीवना शत्रुरूपे उत्पन्न थयो छे ?

१८. [प्र०] हे भगवन् ! बधा य जीवो (आ जीवना वैरिपणे यावत्-पूर्वे उत्पन्न थएला छे ?) [उ०] ए प्रमाणे जाणवुं.

सर्व जीवो.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! आ जीव सर्व जीवोना राजातरीके, युवराजतरीके यावत्-सार्थवाहतरीके पूर्वे उत्पन्न थएलो छे ? [उ०] हा गौतम ! अनेकवार अथवा अनंतवार उत्पन्न थयो छे. ए प्रमाणे सर्व जीवो संबंधे पण जाणवुं.

आ जीव सर्व जीवना राजा तरीके उत्पन्न थयेल छे ?

२०. [प्र०] हे भगवन् ! आ जीव सर्व जीवोना दासपणे प्रेष्य-चाकरपणे, भृतकपणे, भागीदारपणे, भोगपुरुषपणे (बीजाए उपार्जेला धननो भोग करनारपणे), शिष्यपणे, अने शत्रुपणे पूर्वे उत्पन्न थएलो छे ? [उ०] हा गौतम ! यावत्-अनंतवार उत्पन्न थयो छे, ए प्रमाणे सर्व जीवो पण यावद् अनंतवार उत्पन्न थया छे. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.'-एम कही यावद्-विहरे छे.

आ जीव सर्व जीवोना दासरूपे उत्पन्न थयेल छे ? सर्व जीवो.

द्वादश शते सप्तम उद्देशक समाप्त.

अट्ठमो उद्देसओ।

१. [प्र०] तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव–एवं वयासी–देवे णं भंते! महिड्ढीए जाव–महेसक्खे अणंतरं चयं चइत्ता बिसरीरेसु नागेसु उववज्जेज्जा? [उ०] हंता गोयमा! उववज्जेज्जा।

२. [प्र०] से णं तत्थ अच्चिय–वंदिय–पूइय–सक्कारिय–सम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवाए संनिहियपाडिहेरे यावि भवेज्जा? [उ०] हंता, भवेज्जा।

३. [प्र०] से णं भंते! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता सिज्झेज्जा, बुज्झेज्जा, जाव–अंतं करेज्जा? [उ०] हंता सिज्झिज्जा, जाव–अंतं करेज्जा।

४. [प्र०] देवे णं भंते! महिड्ढीए एवं चेव जाव–बिसरीरेसु मणीसु उववज्जेज्जा। [उ०] एवं चेव जहा नागाणं।

५. [प्र०] देवे णं भंते! महिड्ढीए जाव–बिसरीरेसु रुक्खेसु उववज्जेज्जा? [उ०] हंता, उववज्जेज्जा एवं चेव, नवरं इमं नाणत्तं–जाव–सन्निहियपाडिहेरे लाउल्लोइयमहिते यावि भवेज्जा? हंता भवेज्जा, सेसं तं चेव जाव–अंतं–करेज्जा।

अष्टम उद्देशक.

महाऋद्धिवाळो देव अरीने मात्र बेशरीरवाळा नागोमां उपजे?

१. [प्र०] ते काले, ते समये, [भगवान् गौतम] यावद्–आ प्रमाणे बोल्या के हे भगवन्! महाऋद्धिवाळो यावद्–महासुखवाळो देव च्यवीने–मरण पामीने तुरतज मात्र *बे शरीरनेज धारण करनारा नागोमां, (सर्प अथवा हाथीमां) उत्पन्न थाय? [उ०] हा गौतम! उत्पन्न थाय.

नागना जन्ममां अर्चित पूजित थाय?

२. [प्र०] हे भगवन्! त्यां ते नागनां जन्ममां अर्चित, वंदित, पूजित, सत्कारित, सम्मानित, दिव्य, प्रधान, सत्य, सत्यावपातरूप (जेनी सेवा सफळ छे एवो) ते संसारनो अन्त करे, अने पासे रहेला [पूर्वना संबन्धी देवोए] जेनुं †प्रतिहार कर्म कर्युं छे एवो थाय? [उ०] हा थाय.

३. [प्र०] ते त्यांथी मरण पामीने सिद्ध थाय, बुद्ध थाय, यावद्–संसारनो अन्त करे? [उ०] हा, सिद्ध थाय, यावद्–अन्त करे.

बे शरीरवाळा मणिओमां उत्पन्न थाय?

४. [प्र०] हे भगवन्! महर्धिक देव–ए प्रमाणे यावद्–बे शरीरवाळा मणिमां उत्पन्न थाय? [उ०] ए प्रमाणे नागनी पेठे जाणवुं.

बेशरीरवाळा वृक्षमां उत्पन्न थाय?

५. [प्र०] हे भगवन्! महर्धिक यावद्–महासौख्यवाळो देव बे शरीरनेज धारण करनारा वृक्षोमां उत्पन्न थाय? [उ०] हा, गौतम! उत्पन्न थाय–इत्यादि पूर्व प्रमाणे जाणवुं. परन्तु एटलो विशेष छे के 'जे वृक्षमां ते उत्पन्न थाय ते वृक्ष यावत्–समीपमां रहेला देवकृत प्रातिहार्यवाळुं थाय, तथा [ते ‡वृक्ष] छाणथी लींपेल अने खडीथी धोळेल होय, बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं, यावद्–'ते संसारनो अन्त करे.'

---

१ * जेओ नागनुं शरीर छोडीने मनुष्यशरीरने पामी मोक्ष प्राप्त करशे ते मात्र बे शरीरने धारण करनारा नागो कहेवाय छे.

५ † प्रतिहारकर्म–पासे रही तेनुं रक्षणादि कार्य करवुं.

‡ देवाधिष्ठित विशिष्ट वृक्षो बद्धपीठवाळा होय छे, तेथी तेनी पीठ–चोतरो छाणवगेरेथी लींपेल अने खडी वगेरेथी धोळेल होय छे–टीका.

६. [प्र०] अह भंते ! गोलंगूलवसभे, कुक्कुडवसभे, मंडुक्कवसभे—एए णं निस्सीला निव्वया निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्च-क्खाण-पोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसेणं सागरोवमट्ठितीयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जेज्जा ? [उ०] समणे भगवं महावीरे वागरेइ—'उववज्जमाणे उववन्ने'त्ति वत्तव्वं सिया।

७. [प्र०] अह भंते ! सीहे वग्घे जहा उस्स(ओस)प्पिणीउद्देसए जाव—परस्सरे—एए णं निस्सीला० [उ०] एवं चेव जाव—वत्तव्वं सिया।

८. [प्र०] अह भंते ! ढंके कंके विलए मग्गुए सिखी—एए णं निस्सीला० [उ०] सेसं तं चेव जाव—वत्तव्वं सिया। 'सेवं भंते ! सेवं भंते !' त्ति जाव—विहरइ।

अट्ठमो उद्देसो समत्तो।

६. [प्र०] हे भगवन् ! वानरवृषभ—मोटो वानर, मोटो कुकडो, अने मोटो देडको—ए बधा शीलरहित, व्रतरहित, गुणरहित, मर्यादारहित, प्रत्याख्यान अने पौषधोपवासरहित मरणसमये काल करी आ रत्नप्रभा पृथिवीमां उत्कृष्टथी सागरोपमनी स्थितिवाळा नरकमां नैरयिकपणे उत्पन्न थाय ? [उ०] श्रमण भगवंत महावीर कहे छे के [हा नैरयिकरूपे उत्पन्न थाय,] कारण के *जे उपजतुं होय ते 'उत्पन्न थयुं' एम कहेवाय.

वानर वगेरे जीवो रत्नप्रभामां उत्पन्न थाय ?

७. [प्र०] हे भगवन् ! सिंह, वाघ—वगेरे †अवसर्पिणी उद्देशकमां कह्या प्रमाणे यावत्—परासर—ए बधा शीलरहित—इत्यादि यावत् [उ०] पूर्व प्रमाणे जाणवुं.

सिंह वगेरे पण नैरयिकपणे उपजे ?

८. [प्र०] हे भगवन् ! कागडो, गीध, वीलक, देडको अने मोर—ए बधा शीलरहित—इत्यादि प्रश्न. [उ०] उत्तर पूर्ववत् जाणवुं. हे भगवन् ! 'ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'—एम कही यावद्—विहरे छे.

काक वगेरे.

द्वादशशते अष्टम उद्देशक समाप्त.

६ * जे समये वानरादि छे ते समये ते नारकरूपे नथी, माटे ते नारकरूपे केम उत्पन्न थाय ? आ प्रश्नना उत्तरमां भगवान् महावीर कहे छे के 'जे उपजतुं होय ते उत्पन्न थएलुं' एम कहेवाय, माटे वानरादि नारकरूपे जे उत्पन्न थवाना छे ते उत्पन्न थएला एम कहेवाय—टीका.

७ † जुओ भग० खं० ३ श० ७ उ० ६ पृ० २२ सू० १२.

नवमो उद्देसो।

१. [प्र०] कइविहा णं भंते! देवा पण्णत्ता? [उ०] गोयमा! पंचविहा देवा पण्णत्ता, तंजहा–१ भवियदव्वदेवा, २ नरदेवा, ३ धम्मदेवा, ४ देवाहिदेवा, ५ भावदेवा।

२. [प्र०] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–भवियदव्वदेवा भवियदव्वदेवा? [उ०] गोयमा! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा देवेसु उववज्जित्तए से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ–'भवियदव्वदेवा २'।

३. [प्र०] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–'नरदेवा नरदेवा'? [उ०] गोयमा! जे इमे रायाणो चाउरंतचक्कवट्टी उप्पन्नसमत्तचक्करयणप्पहाणा नवनिहिपइणो समिद्धकोसा बत्तीसंरायवरसहस्साणुयातमग्गा सागरवरमेहलाहिवइणो मणुस्सिंदा, से तेणट्ठेणं जाव–'नरदेवा २'।

४. [प्र०] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–'धम्मदेवा धम्मदेवा'? [उ०] गोयमा! जे इमे अणगारा भगवंतो ईरियासमिया, जाव–गुत्तबंभयारी, से तेणट्ठेणं जाव–'धम्मदेवा २'।

नवम उद्देशक.

देवोना भव्यदेवादि प्रकार.

१. [प्र०] हे भगवन्! देवो केटला प्रकारना कह्या छे? [उ०] हे गौतम! देवो पांच प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे–१ *भव्यद्रव्यदेव, २ नरदेव, ३ धर्मदेव, ४ देवाधिदेव अने ५ भावदेव.

भव्यद्रव्यदेव कहेवानुं कारण.

२. [प्र०] हे भगवन्! ए प्रमाणे शा हेतुथी 'भव्यद्रव्यदेव' 'भव्यद्रव्यदेव'–एम कहो छो? [उ०] हे गौतम! जे पंचेंद्रियतिर्यंचयोनिक के मनुष्य देवोमां उत्पन्न थवाने भव्य–योग्य छे, ते माटे ते 'भव्यद्रव्यदेव' २ कहेवाय छे.

नरदेव.

३. [प्र०] हे भगवन्! ए प्रमाणे शा हेतुथी 'नरदेव' 'नरदेव'–एम कहो छो? [उ०] हे गौतम! जे आ राजाओ चार दिशाना अन्तना स्वामी चक्रवर्तीओ छे, जेने समस्त रत्नोमां प्रधान चक्ररत्न उत्पन्न थयुं छे एवा, नव निधिना स्वामिओ, समृद्ध भंडारवाळा, जेओनो मार्ग बत्रीस हजार राजाओ वडे अनुसराय छे एवा, महासागररूप उत्तम मेखलापर्यन्त पृथ्वीना पति अने मनुष्यना इंद्रो छे ते माटे 'नरदेवो' 'नरदेवो'–एम कहेवाय छे.

धर्मदेव.

४. [प्र०] हे भगवन्! शा हेतुथी 'धर्मदेव' 'धर्मदेव'–एम कहो छो? [उ०] हे गौतम! जे आ अनगार भगवंतो, ईर्यासमितिवाळा यावद्–गुप्त ब्रह्मचारी छे, माटे ते हेतुथी 'धर्मदेव' 'धर्मदेव'–एम कहेवाय छे.

---

१ * भव्यद्रव्यदेव—अहिं द्रव्यशब्द अप्राधान्यवाचक छे, भूतकाळमां देवत्वपर्यायने प्राप्त थयेला अथवा भविष्य काळमां देवपणाने पामनार, वर्तमानमां देवना गुणथी शून्य होवाथी अप्रधान एवा द्रव्यदेव कहेवाय छे, तेमां भविष्यमां देवपणाने प्राप्त थनार भव्यद्रव्यदेव कहेवाय छे. २ नरदेव—मनुष्योथी देवनी पेठे आराधवा लायक नरदेव कहेवाय छे. ३ धर्मदेव—श्रुतादि धर्मवडे देवो जेवा, अथवा जेने धर्म प्रधान छे एवा 'धार्मिक देवोने' धर्मदेव कहे छे. ४ देवाधिदेव—पारमार्थिक देवपणुं होवाथी सामान्य देवो करतां अधिक–श्रेष्ठ देवाधिदेव कहेवाय छे, अथवा देवातिदेव पण कहे छे. ५ भावदेव—देवगत्यादि कर्मना उदयथी देवपणानो अनुभव करनार भावदेव कहेवाय छे.

५. [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'देवाधिदेवा देवाधिदेवा' ? [उ०] गोयमा ! जे इमे अरिहंता भगवंतो उप्पन्न-णाण-दंसणधरा जाव–सव्वदरिसी, से तेणट्ठेणं जाव–'देवाधिदेवा' २।

६. [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'भावदेवा भावदेवा' ? [उ०] गोयमा ! जे इमे भवणवइ–वाणमंतर–जोइस–वेमाणिया देवा देवगतिनामगोयाइं कम्माइं वेदेंति, से तेणट्ठेणं जाव–'भावदेवा' २।

७. [प्र०] भवियदव्वदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति, किं नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्ख० मणुस्स० देवेहिंतो उववज्जंति ? [उ०] गोयमा ! नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरि० मणु० देवेहिंतो वि उववज्जंति, भेदो जहा वक्कंतीए सव्वेसु उववाएयव्वा जाव–'अणुत्तरोववाइय'त्ति, नवरं असंखेज्जवासाउयअकम्मभूमगअंतरदीवगसव्वट्ठसिद्धवज्जं जाव–अपराजियदेवेहिंतो वि उववज्जंति, णो सव्वट्ठसिद्धदेवेहिंतो उववज्जंति।

८. [प्र०] नरदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? किं नेरतिए०–पुच्छा। [उ०] गोयमा ! नेरतिएहिंतो वि उववज्जंति, नो तिरि०, नो मणु०, देवेहिंतो वि उववज्जंति।

९. [प्र०] जइ नेरइएहिंतो उववज्जंति किं रयणप्पभापुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति, जाव–अहेसत्तमपुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति ? [उ०] गोयमा ! रयणप्पभापुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति, नो सक्कर० जाव–नो अहेसत्तमपुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति।

१०. [प्र०] जइ देवेहिंतो उववज्जंति किं भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जंति, वाणमंतर० जोइसिय० वेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति ? [उ०] गोयमा ! भवणवासिदेवेहिंतो वि उववज्जंति, वाणमंतर०, एवं सव्वदेवेसु उववाएयव्वा, वक्कंतीभेदेणं जाव–सव्वट्ठसिद्धत्ति।

५. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी 'देवाधिदेव' 'देवाधिदेव' कहेवाय छे ? [उ] हे गौतम ! जे आ अरहिंत–भगवंतो उत्पन्न थयेला ज्ञान अने दर्शनने धारण करनारा यावद्–सर्वदर्शी छे, ते हेतुथी यावद् 'देवाधिदेव' 'देवाधिदेव' कहेवाय छे.

देवाधिदेव.

६. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी 'भावदेव' 'भावदेव' कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! जे आ भवनपतिओ, वानव्यंतरो, ज्योतिष्को अने वैमानिक देवो देवगति संबन्धी नाम अने गोत्र कर्मोने वेदे छे, ते माटे 'भावदेव' 'भावदेव' कहेवाय छे.

भावदेव.

७. [प्र०] हे भगवन् ! भव्यद्रव्यदेवो क्यांथी आवीने उत्पन्न थाय ? शुं नैरयिकोथी आवीने उत्पन्न थाय, तिर्यंचोथी आवीने उत्पन्न थाय, मनुष्योथी आवीने उत्पन्न थाय, के देवोथी आवीने उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! नैरयकोथी आवी उत्पन्न थाय, तिर्यंचोथी, मनुष्योथी, अने देवोथी पण आवीने उत्पन्न थाय. अहीं *व्युत्क्रान्ति पदमां कह्या प्रमाणे भेद–विशेषता कहेवी, अने तेओनी सर्वने विषे उत्पत्ति कहेवी, यावत्–अनुत्तरौपपातिक सुधी कहेवुं, परन्तु विशेष ए छे के, असंख्यात वर्षना आयुष्यवाळा जीवो, अकर्मभूमिना जीवो, अंतरद्वीपना जीवो अने सर्वार्थसिद्ध वर्जिने यावद्–अपराजित देवोथी आवीने उत्पन्न थाय छे. पण सर्वार्थसिद्धना देवो उत्पन्न थता नथी.

भव्यद्रव्यदेवो क्यांथी आवीने उपजे ?

८. [प्र०] हे भगवन् ! नरदेवो क्यांथी आवीने उत्पन्न थाय ?–शुं नैरयिकोथी, तिर्यंचोथी, मनुष्योथी के देवोथी आवीने उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! तेओ नैरयिको अने देवोथी आवीने उत्पन्न थाय छे, पण तिर्यंच अने मनुष्योथी आवीने उत्पन्न थता नथी.

नरदेवो क्यांथी आवीने उपजे ?

९. [प्र०] जो तेओ नैरयिकोथी आवीने उत्पन्न थाय तो शुं रत्नप्रभाना नैरयिकोथी आवीने (नरदेवो) उत्पन्न थाय के यावद्–अधःसप्तम पृथ्वीना नैरयिकोथी आवीने उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! तेओ रत्नप्रभाना नैरयिकोथी आवीने उत्पन्न थाय, पण शर्कराप्रभाथी आवीने न उत्पन्न थाय, यावद्–अधःसप्तमपृथ्वीना नैरयिकोथी आवीने उत्पन्न न थाय.

रत्नप्रभादिमांथी कई नरक पृथिवीथी आवी उपजे ?

१०. [प्र०] जो तेओ देवोथी आवी (नरदेवो) उत्पन्न थाय तो शुं भवनवासी देवोथी आवी उत्पन्न थाय के वानव्यंतर, ज्योतिष्क अने वैमानिक देवोथी आवी उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! तेओ भवनवासी देवोथी पण आवी उत्पन्न थाय, तथा वानव्यंतर, ज्योतिषिक अने वैमानिक देवोथी पण आवी उत्पन्न थाय. ए प्रमाणे सर्व देवो संबन्धे †व्युत्क्रांति पदमां कहेली विशेषतापूर्वक यावत् सर्वार्थसिद्ध सुधी उपपात कहेवो.

शुं भवनवासीआदि देवोमांथी कया देवोथी आवी उपजे ?

---

७ * प्रज्ञा० पद ६ प० २१५.

१० † प्रज्ञा० पद ६ प० २१५.

११. [प्र०] धम्मदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? किं नेरइएहिंतो० ? [उ०] एवं वक्कंतीभेदेणं सव्वेसु उववाएयव्वा जाव–'सव्वट्ठसिद्ध'त्ति । नवरं तमा–अहेसत्तमाए नो उववाओतेउ–वाउ–असंखिज्जवासाउयअकम्मभूमग–अंतरदीवगवज्जेसु ।

१२. [प्र०] देवाधिदेवा णं भंते ! कतोहिंतो उववज्जंति, किं नेरइएहिंतो उववज्जंति ? पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नेरइएहिंतो उववज्जंति, नो तिरि० नो मणु० देवेहिंतो वि उववज्जंति ।

१३. [प्र०] जइ नेरइएहिंतो० [उ०] एवं तिसु पुढवीसु उववज्जंति, सेसाओ खोडेयव्वाओ ।

१४. [प्र०] जइ देवेहिंतो० [उ०] वेमाणिएसु सव्वेसु उववज्जंति जाव–सव्वट्ठसिद्धत्ति, सेसा खोडेयव्वा ।

१५. [प्र०] भावदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? [उ०] एवं जहा वक्कंतीए भवणवासीणं उववाओ तहा भाणियव्वो ।

१६. [प्र०] भवियदव्वदेवाणं भंते ! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं ।

१७. [प्र०] नरदेवाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं सत्त वाससयाइं, उक्कोसेणं चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइं ।

१८. [प्र०] धम्मदेवाणं भंते ! पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी ।

धर्मदेव क्यांथी आवी उपजे ?

११. [प्र०] हे भगवन् ! धर्मदेवो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय ? शुं नैरयिकोथी, [तिर्यंचोथी, मनुष्योथी के देवोथी आवी] उत्पन्न थाय ? [उ०] ए प्रमाणे बधुं *व्युत्क्रांति पदमां कहेला भेद–विशेषवडे यावत्– सर्वार्थसिद्ध सुधी सर्वथकी उपपाद कहेवो, परन्तु विशेष ए छे के, †तमःप्रभा अने अधःसप्तमपृथ्वीथी, तथा तेजःकाय, वायुकाय, असंख्यवर्षना आयुष्यवाळा कर्मभूमिजो, अकर्मभूमिजो अने अंतरद्वीपज मनुष्य तथा तिर्यंचोथी आवी धर्मदेवो उत्पन्न न थाय. [अर्थात्–ए सिवाय बाकीना स्थानथी आवी धर्मदेव थाय.]

देवाधिदेव क्यांथी आवी उपजे ?

१२. [प्र०] हे भगवन् ! देवाधिदेवो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय–शुं नैरयिकोथी आवी उत्पन्न थाय–इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! नैरयिकोथी आवी उत्पन्न थाय छे, तिर्यंच अने मनुष्योथी आवी उत्पन्न थता नथी, पण देवो थकी आवीने उत्पन्न थाय छे.

रत्नप्रभादि नरक पृथिवीओथी कइ नरकपृथिवीथी आवी उपजे ?

१३. [प्र०] जो नैरयिकोथी आवी (देवाधिदेव) उत्पन्न थाय [तो शुं रत्नप्रभाना नैरयिकथी आवी उत्पन्न थाय]–इत्यादि प्रश्न. [उ०] ए प्रमाणे ‡प्रथम त्रण पृथिवीथी आवी [देवाधिदेव] उत्पन्न थाय छे. बाकीनी पृथिवीओनो प्रतिषेध करवो.

देवोमां सर्व वैमानिक देवोथी आवीने उपजे.

१४. [प्र०] जो तेओ देवोथी आवी उत्पन्न थाय तो शुं भवनपति वगेरेथी आवी उत्पन्न थाय ? [उ०] सर्व वैमानिक देवोथी, यावत्–सर्वार्थसिद्धथी आवी उत्पन्न थाय. बाकीना देवोनो निषेध करवो.

भावदेवो क्यांथी आवी उपजे ?

१५. [प्र०] हे भगवन् ! भावदेवो क्यांथी आवी उत्पन्न थाय ? [उ०] जेम ¶व्युत्क्रांतिपदमां भवनवासिओनो उपपात कह्यो छे तेम अहिं कहेवो.

भव्यद्रव्यदेवनी स्थिति.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! भव्यद्रव्यदेवोनी केटला काळ सुधी स्थिति कही छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओनी ओछामां ओछी §अन्तर्मुहूर्त अने वधारेमां वधारे त्रण पल्योपमनी स्थिति कही छे.

नरदेवनी स्थिति.

१७. [प्र०] नरदेवो संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओनी जघन्य स्थिति ‡सातसो वर्षनी अने उत्कृष्ट चोराशीलाख पूर्वनी स्थिति कही छे.

धर्मदेवनी स्थिति.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! धर्मदेवो संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओनी जघन्य स्थिति ‖अन्तर्मुहूर्तनी, अने उत्कृष्ट देशोनपूर्वकोटिनी कही छे.

---

११ * प्रज्ञा० पद ६ प० २१५. † तमःप्रभा पृथिवीथी नीकळेलाने मनुष्यपणुं प्राप्त थाय, पण चारित्र प्राप्त थतुं नथी, तथा सातमी नरकपृथिवी, तेजःकाय, वायुकाय, असंख्यवर्षना आयुषवाळा कर्मभूमिज, अकर्मभूमिज अने अन्तर्द्वीपज मनुष्य अने तिर्यंचो–थकी नीकळेलाने मनुष्यपणानो अभाव थकी चारित्र होतुं नथी, तेथी त्यांथी नीकळी तेओ धर्मदेव (चारित्रयुक्त अनगार) थता नथी—टीका.

१३ ‡ प्रथम त्रण नरकपृथिवीथकी नीकळेला तीर्थंकरपणे उपजे छे, पण नीचेनी चार पृथिवीथी नीकळेला तीर्थंकरो थता नथी, माटे बाकीनी चार पृथिवीनो प्रतिषेध करवो—टीका.

१५ ¶ प्रज्ञा० पद ६ प० २११. घणा स्थानोथी आवी भवनपतिदेवपणे उपजे छे, कारणके असंज्ञी पण तेमां उत्पन्न थाय छे, माटे भवनपति संबन्धे उपपात कह्यो छे—टीका.

१६ § अन्तर्मुहूर्तना आयुषवाळो पंचेन्द्रिय तिर्यंच देवपणे उपजे, माटे भव्यद्रव्यदेवनी जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्तनी कही छे, तेमज त्रण पल्योपमनी स्थितिवाळा उत्तरकुरु आदिना मनुष्यो अने तिर्यंचो देवपणे उत्पन्न थाय माटे उत्कृष्ट त्रण पल्योपमनी स्थिति कही छे—टीका.

१७ ‡ चक्रवर्तिनी जघन्य स्थिति सातसो वर्षनी होय छे, जेमके ब्रह्मदत्तनी, अने उत्कृष्ट स्थिति चोराशी लाख पूर्वनी होय छे, जेमके भरतनी.

१८ ‖ कोईपण मनुष्य अन्तर्मुहूर्त आयुष बाकी होय त्यारे चारित्रनो स्वीकार करे, तेनी अपेक्षाए धर्मदेवनी जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्तनी, अने जे कंइक न्यून पूर्वकोटि वर्षपर्यन्त चारित्र पालन करे तेनी अपेक्षाए उत्कृष्ट स्थिति जाणवी—टीका.

१९. [प्र०] देवाधिदेवाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं बावत्तरिं वासाइं, उक्कोसेणं चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइं ।

२०. [प्र०] भावदेवाणं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ।

२१. [प्र०] भवियदव्वदेवा णं भंते ! किं एगत्तं पभू विउव्वित्तए, पुहुत्तं पभू विउव्वित्तए ? [उ०] गोयमा ! एगत्तं पि पभू विउव्वित्तए, पुहुत्तं पि पभू विउव्वित्तए, एगत्तं विउव्वमाणे एगिंदियरूवं वा जाव–पंचिंदियरूवं वा, पुहुत्तं विउव्वमाणे एगिंदियरूवाणि वा जाव–पंचिंदियरूवाणि वा, ताइं संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा, संबद्धाणि वा असंबद्धाणि वा, सरिसाणि वा असरिसाणि वा विउव्वंति, विउव्वित्ता तओ पच्छा अप्पणो जहिच्छियाइं कज्जाइं करेंति, एवं नरदेवा वि, एवं धम्मदेवा वि ।

२२. [प्र०] देवाधिदेवाणं पुच्छा, [उ०] गोयमा ! एगत्तं पि पभू विउव्वित्तए, पुहुत्तं पि पभू विउव्वित्तए, नो चेव णं संपत्तीए विउव्विंसु वा, विउव्विंति वा, विउव्विस्संति वा ।

२३. [प्र०] भावदेवाणं पुच्छा [उ०] जहा भवियदव्वदेवा ।

२४. [प्र०] भवियदव्वदेवा णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति ? कहिं उववज्जंति ? किं नेरइएसु उववज्जंति ? जाव–देवेसु उववज्जंति ? [उ०] गोयमा ! नो नेरइएसु उववज्जंति, नो तिरि०, नो मणु०, देवेसु उववज्जंति, जइ देवेसु उववज्जंति सव्वदेवेसु उववज्जंति जाव–सव्वट्ठसिद्धत्ति ।

२५. [प्र०] नरदेवा णं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता–पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नेरइएसु उववज्जंति, नो तिरि०, नो मणु०, णो देवेसु उववज्जंति, जइ नेरइएसु उववज्जंति०, सत्तसु वि पुढवीसु उववज्जंति ।

२६. [प्र०] धम्मदेवा णं भंते ! अणंतरं–पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नो नेरइएसु उववज्जेज्जा, नो तिरि०, नो मणु०, देवेसु उववज्जंति ।

१९. [प्र०] देवाधिदेव संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओनी जघन्य स्थिति बहोंतर वर्षनी, अने उत्कृष्ट स्थिति चोराशीलाख पूर्वनी कही छे. (देवाधिदेवनी स्थिति.)

२०. [प्र०] भावदेवोनी स्थिति संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओनी जघन्य स्थिति दशहजार वर्षनी, अने उत्कृष्ट स्थिति तेत्रीश सागरोपमनी कही छे. (भावदेवनी स्थिति.)

२१. [प्र०] हे भगवन् ! भव्यद्रव्यदेवो एक रूप विकुर्ववाने समर्थ छे के अनेकरूपो विकुर्ववाने समर्थ छे ? [उ०] हे गौतम ! [भव्यद्रव्यदेव वैक्रियलब्धिसंपन्न मनुष्य के तिर्यंच] एक रूप विकुर्ववाने पण समर्थ छे अने अनेकरूपो पण विकुर्ववाने समर्थ छे. एक रूपने विकुर्वतो एक एकेंद्रियरूपने यावत्–एक पंचेन्द्रियरूपने विकुर्वे छे, अथवा अनेक रूपोने विकुर्वतो अनेक एकेंद्रियरूपोने के अनेक पंचेन्द्रियरूपोने विकुर्वे छे, ते रूपो संख्याता के असंख्याता, संबद्ध के असंबद्ध, समान के असमान विकुर्वे छे, विकुर्व्या पछी पोतानां यथेष्ट कार्यो करे छे. ए प्रमाणे नरदेव अने धर्मदेव संबंधे पण जाणवुं. (भव्यद्रव्यदेवनी विकुर्वणा शक्ति.)

२२. [प्र०] देवाधिदेवो संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओ एक रूप विकुर्ववाने पण समर्थ छे, अने अनेक रूप विकुर्ववाने पण समर्थ छे. पण तेणे [औत्सुक्यना अभावथी शक्ति छतां] संप्राप्तिवडे (करवावडे) वैक्रियरूप विकुर्व्युं नथी, विकुर्वता नथी अने विकुर्वशे पण नहि. (देवाधिदेवनी विकुर्वणा शक्ति.)

२३. [प्र०] भावदेवसंबन्धे प्रश्न. [उ०] जेम भव्यद्रव्यदेवो संबन्धे (सू० २१) कह्युं तेम भावदेवसंबन्धे पण जाणवुं. (भावदेवनी विकुर्वणा शक्ति.)

२४. [प्र०] हे भगवन् ! भव्यद्रव्यदेवो तुरतज मरण पामी क्यां जाय–क्यां उत्पन्न थाय ? शुं नैरयिकोमां उपजे, यावद्–देवोमां उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! तेओ नैरयिकोमां, तिर्यंचोमां के मनुष्योमां उत्पन्न थता नथी, पण देवोमां उत्पन्न थाय छे. जो देवोमां उत्पन्न थाय तो ते सर्वदेवोमां उत्पन्न थाय, यावत् सर्वार्थसिद्धमां उत्पन्न थाय. (भव्यद्रव्यदेवो मरण पामी क्यां जाय ?)

२५. [प्र०] हे भगवन् ! नरदेवो अन्तररहित–तुरतज मरण पामी क्यां उत्पन्न थाय–ए प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! *नैरयिकोमां उत्पन्न थाय, पण तिर्यंच, मनुष्य के देवमां उत्पन्न न थाय, जो नैरयिकोमां उत्पन्न थाय तो साते नरकपृथिवीमां उत्पन्न थाय. (नरदेव मरण पामी क्यां उपजे ?)

२६. [प्र०] हे भगवन् ! धर्मदेवो तुरतज मरण पामी क्यां उत्पन्न थाय–ए प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओ नैरयिकोमां, तिर्यंचोमां के मनुष्योमां उत्पन्न थता नथी, पण देवोमां उत्पन्न थाय छे. (धर्मदेव मरण पामी क्यां जाय ?)

---

२५ * यद्यपि कोईक चक्रवर्तिओ देवमां उत्पन्न थाय छे, परन्तु ते नरदेवपणुं छोडी अने धर्मदेवपणुं पामीने उपजे छे, कामभोगोनो त्याग कर्या सिवाय नरदेव अवस्थामां तो ते नैरयिकमांज उपजे छे.

२७. [प्र०] जइ देवेसु उववज्जंति किं भवणवासि-पुच्छा। [उ०] गोयमा! नो भवणवासिदेवेसु उववज्जंति, नो वाणमंतर०, नो जोइसिय०, वेमाणियदेवेसु उववज्जंति, सव्वेसु वेमाणिएसु उववज्जंति जाव-सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइएसु-जाव उववज्जंति, अत्थेगइया सिज्झंति, जाव-अंतं करेंति।

२८. [प्र०] देवाधिदेवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति, कहिं उववज्जंति? [उ०] गोयमा! सिज्झंति, जाव-अंतं करेंति।

२९. [प्र०] भावदेवा णं भंते! अणंतरं उव्वट्टित्ता-पुच्छा। [उ०] जहा वक्कंतीए असुरकुमाराणं उव्वट्टणा तहा भाणियव्वा।

३०. [प्र०] भवियदव्वदेवे णं भंते! 'भवियदव्वदेवे'त्ति कालओ केवचिरं होइ? [उ०] गोयमा! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं, एवं जहेव ठिई सच्चेव संचिट्ठणा वि जाव-भावदेवस्स, नवरं धम्मदेवस्स जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी।

३१. [प्र०] भवियदव्वदेवस्स णं भंते! केवतियं कालं अंतरं होइ? [उ०] गोयमा! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अणंतं कालं-वणस्सइकालो।

३२. [प्र०] नरदेवाणं पुच्छा। [उ०] गोयमा! जहन्नेणं सातिरेगं सागरोवमं, उक्कोसेणं अणंतं कालं-अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं।

धर्मदेवो क्या देवोमां उत्पन्न थाय?

२७. [प्र०] जो तेओ (धर्मदेवो) देवोमां उत्पन्न थाय तो शुं भवनवासी देवोमां उत्पन्न थाय-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम! भवनवासिदेवोमां, वानव्यंतरोमां अने ज्योतिष्कोमां उत्पन्न थता नथी, पण वैमानिक देवोमां उत्पन्न थाय छे. सर्व वैमानिकोमां, यावत्-सर्वार्थसिद्ध अनुत्तरौपपातिक देवोमां यावद्-उत्पन्न थाय छे, अने केटलाक सिद्ध थाय छे, यावत्-सर्व दुःखोनो नाश करे छे.

देवाधिदेवो मरण पामी क्यां जाय?

२८. [प्र०] हे भगवन्! देवाधिदेवो अन्तररहित-तुरतज मरण पामी क्यां जाय-क्यां उत्पन्न थाय? [उ०] हे गौतम! तेओ सिद्ध थाय, यावत्-सर्व दुःखोनो अन्त करे.

भावदेव मरण पामी क्यां जाय?

२९. [प्र०] हे भगवन्! भावदेवो तुरतज मरण पामी क्यां जाय?-ए प्रश्न. [उ०] *जेम 'व्युत्क्रांति' पदमां असुरकुमारोनी उद्वर्तना कही छे तेम अहिं भावदेवोनी पण उद्वर्तना कहेवी.

भव्यद्रव्यदेवोनी स्थिति.

३०. [प्र०] हे भगवन्! भव्यद्रव्यदेवो 'भव्यद्रव्यदेवरूपे' काळथी क्यांसुधी होय? [उ०] हे गौतम! जघन्यथी अंतर्मुहूर्त अने उत्कृष्टथी त्रण पल्योपम सुधी होय. ए प्रमाणे जेम भवस्थिति कही तेम संस्थिति पण यावद्-भावदेव सुधी जाणवी. परन्तु धर्मदेव जघन्य †एक समय सुधी अने उत्कृष्ट कंईक न्यून पूर्वकोटि वर्ष सुधी होय.

भव्यद्रव्यदेवने केटला काळनुं अन्तर होय?

३१. [प्र०] हे भगवन्! ‡भव्यद्रव्यदेवने परस्पर केटला काळनुं अंतर होय? [उ०] हे गौतम! जघन्य अंतर्मुहूर्त अधिक दशहजार वर्ष, अने उत्कृष्ट अनंतकाळ-वनस्पतिकाळ पर्यन्त अन्तर होय.

नरदेवने परस्पर केटलुं अन्तर होय?

३२. [प्र०] हे भगवन्! नरदेवने परस्पर केटलुं अन्तर होय-ए प्रश्न. [उ०] हे गौतम! जघन्य ¶कांइक अधिक एक सागरोपम, अने उत्कृष्ट अनंतकाळ-कांइक न्यून अर्धपुद्गलपरिवर्त पर्यन्त अन्तर होय.

---

२९ * प्रज्ञा० पद ६ प० २१५-१.

३० † अशुभ भावने प्राप्त कर्या पछी शुभ भावने एक समय मात्र प्राप्त करी तुरतज मरण पामे ते अपेक्षाए धर्मदेवनी जघन्य स्थिति एक समयनी जाणवी.

३१ ‡ कोई भव्यद्रव्यदेव थईने दशहजारवर्षनी स्थितिवाळा व्यन्तरादिमां उत्पन्न थाय, अने त्यांथी मरी शुभ पृथ्वी आदिमां जई त्यां अन्तर्मुहूर्त रहीने पुनः भव्यद्रव्यदेव तरीके उपजे-एरीते अन्तर्मुहूर्त अधिक दशहजार वर्षनुं अन्तर होय. अहिं कोई शंका करे छे के "देवपणाथी च्यवी तुरतज भव्यद्रव्यदेव तरीके उत्पत्तिनो संभव होवाथी दश हजार वर्षनुं अन्तर होय, पण अन्तर्मुहूर्त अधिक केम होय"? अहिं समाधान करे छे-'सर्वजघन्य आयुषवाळो देव च्यवी शुभ पृथिव्यादिमां उत्पन्न थई भव्यद्रव्यदेवमां उपजे छे'-आवो प्राचीन टीकाकारनो आशय जणाय छे, ते मतने अनुसरी उपर कहेलुं अन्तर होय छे-बीजा तेनुं समाधान आ प्रमाणे आपे छे—"जेणे देवनुं आयुष बांधेलुं छे ते अहिं भव्यद्रव्यदेव तरीके इष्ट छे, तेथी दशहजारवर्षनी स्थितिवाळा देवभवथी च्यवी भव्यद्रव्यदेवपणे उत्पन्न थाय अने अन्तर्मुहूर्त पछी आयुषनो बन्ध करे त्यारे पूर्वे कहेलुं अन्तर घटे. भव्यद्रव्यदेव मरी देव थई त्यांथी च्यवी वनस्पतिकायिकने विषे अनन्तकाल पर्यन्त रही पुनः भव्यद्रव्यदेव थाय—ते अपेक्षाए उत्कृष्ट अन्तर जाणवुं.

३२ ¶ नरदेव-चक्रवर्ती कामभोगोमां आसक्त थई प्रथम नरकपृथिवीमां जघन्य सागरोपम आयुष भोगवी पुनः चक्रवर्ती थाय, अने ज्यांसुधी चक्ररत्न उत्पन्न न थाय तेटलो काळ अधिक एक सागरोपम जघन्य अन्तर होय. कोई सम्यग्दृष्टि चक्रवर्तीपणुं पामे, अने ते उत्कृष्ट कंईक न्यून अर्ध पुद्गलपरावर्त संसार भ्रमण करी पुनः सम्यक्त्व पामी छेवटे नरदेवत्व पामी मोक्षे जाय, ते अपेक्षाए नरदेवनुं उत्कृष्ट अन्तर होय—टीका.

३३. [प्र०] धम्मदेवस्स णं पुच्छा। [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमपुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं, जाव–अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं।

३४. [प्र०] देवाधिदेवाणं पुच्छा। [उ०] गोयमा ! नत्थि अंतरं।

३५. [प्र०] भावदेवस्स णं पुच्छा। [उ०] गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं–वणस्सइकालो।

३६. [प्र०] एएसि णं भंते ! भवियदव्वदेवाणं, नरदेवाणं, जाव–भावदेवाण य कयरे कयरेहिंतो जाव–विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सव्वत्थोवा नरदेवा, देवाधिदेवा संखेज्जगुणा, धम्मदेवा संखेज्जगुणा, भवियदव्वदेवा असंखेज्जगुणा, भावदेवा असंखेज्जगुणा।

३७. [प्र०] एएसि णं भंते ! भावदेवाणं भवणवासीणं, वाणमंतराणं, जोइसियाणं, वेमाणियाणं सोहम्मगाणं, जाव–अच्चुयगाणं, गेवेज्जगाणं, अणुत्तरोववाइयाण य कयरे कयरेहिंतो जाव–विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सव्वत्थोवा अणुत्तरोववाइया भावदेवा, उवरिमगेवेज्जा भावदेवा संखेज्जगुणा, मज्झिमगेवेज्जा संखेज्जगुणा, हेट्ठिमगेवेज्जा संखेज्जगुणा, अच्चुए कप्पे देवा संखेज्जगुणा, जाव–आणयकप्पे देवा संखेज्जगुणा, एवं जहा जीवाभिगमे तिविहे देवपुरिसे अप्पाबहुयं जाव–जोतिसिया भावदेवा असंखेज्जगुणा। 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति।

नवमो उद्देसओ समत्तो.

३३. [प्र०] हे भगवन् ! धर्मदेवने परस्पर केटलुं अन्तर होय. ए प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! जघन्यथी *पल्योपमपृथक्त्व (बेथी नव पल्योपम) अने उत्कृष्ट अनंतकाळ–कंइक न्यून अपार्ध पुद्गलपरिवर्त पर्यन्त अन्तर होय.

धर्मदेवने परस्पर केटलुं अन्तर होय?

३४. [प्र०] हे भगवन् ! देवाधिदेवने परस्पर केटलुं अन्तर होय–ए संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेने †अंतर नथी.

देवाधिदेवनुं अन्तर.

३५. [प्र०] भावदेवना परस्पर अन्तर संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! जघन्यथी अंतर्मुहूर्त अने उत्कृष्ट अनंतकाळ–वनस्पतिकाळ पर्यन्त अन्तर होय.

भावदेवनुं अन्तर.

३६. [प्र०] हे भगवन् ! भव्यद्रव्यदेवो, नरदेवो, यावद्–भावदेवोमांना कोण कोनाथी यावद्–विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! सौथी थोडा नरदेवो छे, ते करतां देवाधिदेवो संख्यातगुण छे, तेथी धर्मदेवो संख्यातगुण छे, ते करतां भव्यद्रव्यदेवो असंख्यातगुण छे अने तेथी भावदेवो असंख्यातगुण छे.

भव्यद्रव्यदेवादिनुं परस्पर अल्पबहुत्व.

३७. [प्र०] हे भगवन् ! भावदेवो–भवनवासी, वानव्यंतर, ज्योतिष्क, वैमानिक, सौधर्म, ईशान यावद्–अच्युतक, ग्रैवेयक तथा अनुत्तरौपपातिक–एओमांना कोण कोनाथी यावद्–विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! सर्वथी थोडा अनुत्तरौपपातिक भावदेवो छे, ते करतां उपरना ग्रैवेयक भावदेवो संख्यातगुण छे, ते करतां मध्यम ग्रैवेयक भावदेवो संख्यातगुण छे, तेथी अधस्तन ग्रैवेयक भावदेवो संख्यातगुण छे, ते करतां अच्युत कल्पना देवो संख्यातगुण छे, यावद्–आनतकल्पना देवो संख्यातगुण छे. ए प्रमाणे जेम ‡'जीवाभिगम'सूत्रमां त्रिविध जीवना अधिकारमां देवपुरुषोनुं अल्पबहुत्व कह्युं छे तेम अहीं पण यावद्–'ज्योतिष्क भावदेवो असंख्येयगुण छे' त्यां सुधी कहेवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे' [एम कही–भगवान् गौतम यावद् विहरे छे.]

भावदेवनुं अल्पबहुत्व.

द्वादश शते नवम उद्देशक समाप्त.

---

३३ * कोईक धर्मदेव—चारित्रयुक्त साधु सौधर्म देवलोकमां पल्योपमपृथक्त्वना आयुषवाळो देव थई त्यांथी च्यवी पुनः मनुष्यपणुं पामी आठ वर्ष पछी चारित्र स्वीकारे, ते अपेक्षाए कांईक अधिक पल्योपमपृथक्त्व अन्तर होय—टीका.

३४ † देवाधिदेव मोक्षे जाय छे तेथी तेओने अन्तर होतुं नथी—टीका.

३७ ‡ जीवाभि० प्रति० २ प० ७१–१.

दसमो उद्देसो ।

१. [प्र०] कइविहा णं भंते ! आया पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! अट्ठविहा आया पण्णत्ता, तंजहा–१ दवियाया, २ कसायाया, ३ योगाया, ४ उवओगाया, ५ णाणाया, ६ दंसणाया, ७ चरित्ताया, ८ वीरियाया ।

२. [प्र०] जस्स णं भंते ! दवियाया तस्स कसायाया, जस्स कसायाया तस्स दवियाया ? [उ०] गोयमा ! जस्स दवियाया तस्स कसायाया सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण कसायाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि ।

३. [प्र०] जस्स णं भंते ! दवियाया तस्स जोगाया ? [उ०] एवं जहा दवियाया कसायाया भणिया तहा दवियाया जोगाया भाणियव्वा ।

४. [प्र०] जस्स णं भंते ! दवियाया, तस्स उवओगाया–एवं सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा । [उ०] गोयमा ! जस्स दवियाया तस्स उवओगाया नियमं अत्थि, जस्स वि उवओगाया तस्स वि दवियाया नियमं अत्थि, जस्स दवियाया तस्स णाणाया भय-

दशम उद्देशक.

आत्माना प्रकार.

१. [प्र०] हे भगवन् ! आत्मा केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! आठ प्रकारना आत्मा छे, ते आ प्रमाणे–*१ द्रव्यात्मा, २ कषायात्मा, ३ योगात्मा, ४ उपयोगात्मा, ५ ज्ञानात्मा, ६ दर्शनात्मा, ७ चारित्रात्मा अने ८ वीर्यात्मा.

द्रव्यात्मा अने कषायात्मानो संबन्ध.

२. [प्र०] हे भगवन् ! जेने †द्रव्यात्मा होय तेने शुं कषायात्मा होय अने जेने कषायात्मा होय तेने शुं द्रव्यात्मा होय ? [उ०] हे गौतम ! जेने द्रव्यात्मा होय तेने कषायात्मा कदाचित् होय अने कदाचित् न होय, पण जेने कषायात्मा होय, तेने तो अवश्य द्रव्यात्मा होय.

द्रव्यात्मा अने योगात्मानो संबन्ध.

३. [प्र०] हे भगवन् ! जेने ‡द्रव्यात्मा होय तेने योगात्मा होय ? [अने जेने योगात्मा होय तेने द्रव्यात्मा होय ?] [उ०] ए प्रमाणे जेम द्रव्यात्मा अने कषायात्मानो संबन्ध कह्यो तेम द्रव्यात्मा अने योगात्मानो संबन्ध कहेवो.

द्रव्यात्मा अने उपयोगात्मानो संबन्ध.

४. [प्र०] हे भगवन् ! जेने द्रव्यात्मा होय तेने उपयोगात्मा होय ? [अने जेने उपयोगात्मा होय तेने द्रव्यात्मा होय ?] ए प्रमाणे सर्वत्र प्रश्न करवो. [उ०] हे गौतम ! जेने द्रव्यात्मा होय तेने §उपयोगात्मा अवश्य होय, अने जेने उपयोगात्मा होय तेने पण

---

१ * उपयोगलक्षण आत्मा एक प्रकारे छे, तो पण अमुक विशेषताने लीधे तेना आठ प्रकार छे, ते आ प्रमाणे—१ त्रिकालवर्ती आत्मा द्रव्य ते द्रव्यात्मा, ते सर्व जीवोने होय छे, २ क्रोधादिकषाययुक्त आत्मा ते कषायात्मा, ते सकषायी जीवोने होय छे, पण उपशान्तकषाय अने क्षीणकषायने होतो नथी, ३ मन, वचन अने कायव्यापारवाळाने योगात्मा होय छे, ४ साकार अने निराकार उपयोगवाळा सिद्ध अने संसारी सर्व जीवने उपयोगात्मा होय छे, ५ सम्यग् विशेषावबोधरूप ज्ञानात्मा सर्व सम्यग्दृष्टिने होय छे, ६ सामान्यअवबोधरूप दर्शनात्मा सर्व जीवोने होय छे, ७ चारित्रात्मा विरतिवाळाने होय छे, ८ अने वीर्यात्मा करणवीर्यवाळा सर्व संसारी जीवोने होय छे–टीका.

२ † अहिं द्रव्यात्मा–आदि आठ पदोनी स्थापना करवी, तेमां प्रथम सू० २–४ सुधी द्रव्यात्मानो बाकीना कषायात्मा वगेरे सात आत्मानी साथे संबन्ध बतावे छे—जेने द्रव्यात्मत्व–जीवत्व होय, तेने कषायात्मा कदाचित् (सकषायावस्थामां) होय, अने कदाचित् क्षीणकषाय अने उपशान्तकषायवाळाने न होय, पण जेने कषायात्मा होय छे तेने द्रव्यात्मत्व–जीवत्व अवश्य होय छे, केमके जीवत्व शिवाय कषायो होता नथी.

३ ‡ जेने द्रव्यात्मा होय तेने योगात्मा सयोगीअवस्थामां होय छे, अयोगी (योगरहित) केवली अने सिद्धोने योगात्मा होतो नथी, पण जेने योगात्मा होय तेने अवश्य द्रव्यात्मा होय छे, केमके जीवत्व शिवाय योगो होता नथी. आ हकीकत पूर्वसूत्रमां बताव्या प्रमाणे जाणवी.

४ § जे जीवने द्रव्यात्मा होय छे तेने अवश्य उपयोगात्मा होय छे, अने जेने उपयोगात्मा होय छे तेने अवश्य द्रव्यात्मा होय छे, केमके द्रव्यात्मा अने उपयोगात्मानो परस्पर नियत संबन्ध छे. सिद्ध अने अन्य संसारी जीवोने द्रव्यात्मा पण छे, अने उपयोगात्मा पण छे; कारण के उपयोग ए जीवनुं लक्षण छे.

णाए, जस्स पुण णाणाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि, जस्स दवियाया तस्स दंसणाया नियमं अत्थि, जस्स वि दंसणाया तस्स दवियाया नियमं अत्थि, जस्स दवियाया तस्स चरित्ताया भयणाए, जस्स पुण चरित्ताया तस्स दवियाया नियमं अत्थि, एवं वीरियायाए वि समं ।

५. [प्र०] जस्स णं भंते ! कसायाया तस्स जोगाया–पुच्छा । [उ०] गोयमा ! जस्स कसायाया तस्स जोगाया नियमं अत्थि, जस्स पुण जोगाया तस्स कसायाया सिय अत्थि सिय नत्थि, एवं उवओगायाए वि समं कसायाया नेयव्वा, कसायाया य णाणाया य परोप्परं दो वि भइयव्वाओ, जहा कसायाया य उवओगाया य तहा कसायाया य दंसणाया य कसायाया य चरित्ताया य दो वि परोप्परं भइयव्वाओ, जहा कसायाया य जोगाया य तहा कसायाया य वीरियाया य भाणियव्वाओ, एवं जहा कसायायाए वत्तव्वया भणिया तहा जोगायाए वि उवरिमाहिं समं भाणियव्वाओ । जहा दवियायाए वत्तव्वया भणिया तहा

द्रव्यात्मानो ज्ञानात्मानी साथे संबन्ध. दर्शनात्मा साथे संबन्ध. चारित्रात्मा साथे संबन्ध. वीर्यात्मा. कषायात्मा अने योगात्मानो संबन्ध. कषायात्मा अने दर्शनात्मानो संबन्ध.

द्रव्यात्मा अवश्य होय, जेने *द्रव्यात्मा होय तेने ज्ञानात्मा भजनाए–विकल्पे होय, अने जेने ज्ञानात्मा होय तेने द्रव्यात्मा अवश्य होय. जेने द्रव्यात्मा होय तेने दर्शनात्मा अवश्य होय, जेने दर्शनात्मा होय तेने द्रव्यात्मा पण अवश्य होय, जेने द्रव्यात्मा होय तेने †चारित्रात्मा भजनाए–विकल्पे होय, अने जेने चारित्रात्मा होय तेने द्रव्यात्मा अवश्य होय. ए प्रमाणे वीर्यात्मानी साथे पण संबन्ध कहेवो.

५. [प्र०] हे भगवन् ! जेने कषायात्मा होय तेने शुं योगात्मा होय ?–इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! जेने ‡कषायात्मा होय तेने योगात्मा अवश्य होय, अने जेने योगात्मा होय तेने कदाचित् कषायात्मा होय अने कदाचित् न पण होय. ए प्रमाणे उपयोगात्मानी साथे कषायात्मानो संबन्ध जाणवो. तथा कषायात्मा अने ज्ञानात्मा ए बन्ने परस्पर भजनाए–विकल्पे कहेवा. जेम कषायात्मा अने उपयोगात्मानो संबन्ध कह्यो तेम कषायात्मा अने ¶दर्शनात्मानो संबन्ध कहेवो. तथा §कषायात्मा अने चारित्रात्मा–ए बन्ने–परस्पर भजनाए कहेवा. जेम कषायात्मा अने योगात्मा कह्या, तेम कषायात्मा अने वीर्यात्मा पण कहेवा. ए प्रमाणे जेम कषायात्मानी साथे इतर [छ] आत्मानी वक्तव्यता कही, तेम $योगात्मानी साथे पण उपरना [पांच] आत्माओनी वक्तव्यता कहेवी. जेम द्रव्यात्मानी वक्तव्यता कही तेम ||उपयोगात्मानी

---

४ * जेने द्रव्यात्मा होय छे तेने ज्ञानात्मा विकल्पे होय छे, जेमके सम्यग्दृष्टिने तत्त्वना विशेषावबोधरूप सम्यग्ज्ञान होय छे, अने मिथ्यादृष्टिने सम्यग्ज्ञान होतुं नथी; पण जेने ज्ञानात्मा होय छे तेने द्रव्यात्मा सिद्धनी पेठे अवश्य होय छे. जेने द्रव्यात्मा होय छे तेने सामान्य अवबोधरूप दर्शनात्मा अवश्य होय छे, जेम सिद्धने केवलदर्शन होय छे, जेने दर्शनात्मा होय छे तेने द्रव्यात्मा पण अवश्य होय छे. जेमके चक्षुर्दर्शनादिवाळाने द्रव्यात्मा–जीवत्व होय छे.

† जेने द्रव्यात्मा होय छे तेने चारित्रात्मा भजनाए होय छे, कारण के सिद्ध अथवा विरतिरहितने द्रव्यात्मा छतां पण हिंसादि दोषथी निवृत्तिरूप चारित्रात्मा होतो नथी, अने विरतिवाळाने होय छे, माटे भजना जाणवी. जेने चारित्रात्मा होय छे तेने द्रव्यात्मा अवश्य होय छे, केमके चारित्रवाळाने जीवत्वनुं नियतसाहचर्य होय छे. ए प्रमाणे द्रव्यात्मानो वीर्यात्मानी साथे संबन्ध जाणवो. जेमके द्रव्यात्मानो चारित्रात्मानी साथे भजना अने नियम कह्यो तेम वीर्यात्मानी साथे पण जाणवुं. ते आ प्रमाणे—जेने द्रव्यात्मा होय छे तेने वीर्यात्मा होतो नथी, जेमके सकरण वीर्यनी अपेक्षाए सिद्धने वीर्यात्मा नथी, बीजा संसारीने होय छे. पण जेने वीर्यात्मा होय छे तेने द्रव्यात्मा अवश्य होय छे. जेमके वीर्यवाळा संसारी जीवोने द्रव्यात्मा होय छे.

५ ‡ हवे कषायात्मानी साथे बीजा छ आत्माओनो संबन्ध बतावे छे–जेने कषायात्मा होय छे तेने योगात्मा होय छे, केमके कोइ पण सकषायी अयोगी (योगरहित) होतो नथी. पण जेने योगात्मा होय छे तेने कषायात्मा कदाच होय के न होय, केमके सयोगी सकषायी अने अकषायी बन्ने प्रकारना होय छे. ए प्रमाणे उपयोगात्मा पण कहेवो, ते आ प्रमाणे–जेने कषायात्मा होय छे तेने उपयोगात्मा अवश्य होय छे, केमके उपयोगरहितने (जड पदार्थने) कषायो होता नथी, पण जेने उपयोगात्मा होय छे तेने कषायात्मा भजनाए होय छे. उपयोगात्मा छतां पण सकषायीने कषायात्मा होय छे, पण वीतरागने कषायो होता नथी. कषायात्मा अने ज्ञानात्मानी परस्पर भजना जाणवी. जेमके जेने कषायात्मा होय छे तेने ज्ञानात्मा कदाचित् होय छे, अने कदाचित् होतो नथी. कारण के सकषायी सम्यग्दृष्टिने ज्ञानात्मा होय छे, पण मिथ्यादृष्टि सकषायीने ज्ञानात्मा होतो नथी, तथा जेने ज्ञानात्मा होय छे तेने कषायात्मा कदाचित् होय छे, कदाचित् होतो नथी. कारण के ज्ञानीने कषायो होय छे, अने होता पण नथी.

¶ जेम कषायात्मा अने उपयोगात्मानो संबन्ध कह्यो, तेम कषायात्मा अने दर्शनात्मानो संबन्ध कहेवो, जेमके जेने कषायात्मा होय छे तेने दर्शनात्मा अवश्य होय छे, दर्शनरहित जड पदार्थने कषायात्मा होतो नथी, पण तेने दर्शनात्मा होय छे, तेने कषायात्मा कदाचित् होय छे अने कदाचित् होतो नथी, केमके दर्शनवाळाने कषाय होय छे अने होता पण नथी.

§ कषायात्मा अने चारित्रात्मा परस्पर भजनाए जाणवा, जेमके जेने कषायात्मा होय छे तेने चारित्रात्मा कदाचित् होय छे, कदाचित् होतो नथी, कारण के सकषायीने प्रमत्त साधुनी पेठे चारित्र होय छे, अने असंयतनी पेठे तेनो अभाव पण होय छे. ते आ प्रमाणे–जेने चारित्रात्मा होय छे तेने कषायात्मा कदाचित् होय छे अने कदाचित् होतो नथी. सामायिकादि चारित्रवाळाने कषायो होय छे अने यथाख्यातचारित्रवाळाने तेनो अभाव होय छे. जेम कषायात्मा अने योगात्मा कह्या तेम कषायात्मा अने वीर्यात्मानो संबन्ध कहेवो.

$ ए प्रमाणे योगात्मानो उपयोगात्मा वगेरे उपरना पांच पदो साथे पूर्व प्रमाणे संबन्ध कहेवो, जेने चारित्रात्मा होय छे तेने योगात्मा कदाच सयोग चारित्रवाळानी पेठे होय छे अने अयोगीनी पेठे कदाच होतो नथी. पण अन्य वाचनामां आवो पाठ छे 'जस्स चरित्ताया तस्स जोगाया नियमं अत्थि' जेने प्रत्युपेक्षणादिरूप चारित्रात्मा होय छे तेने योगात्मा अवश्य होय छे—टीका.

|| हवे उपयोगात्मानी साथे बीजा चार पदोनो संबन्ध अतिदेश द्वारा जणावे छे.

उवयोगायाए वि उवरिल्लाहिं समं भाणियव्वा । जस्स नाणाया तस्स दंसणाया नियमं अत्थि, जस्स पुण दंसणाया तस्स णाणाया भयणाए, जस्स नाणाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण चरित्ताया तस्स नाणाया नियमं अत्थि, णाणाया वीरियाया दो वि परोप्परं भयणाए । जस्स दंसणाया तस्स उवरिमाओ दो वि भयणाए, जस्स पुण ताओ तस्स दंसणाया नियमं अत्थि । जस्स चरित्ताया तस्स वीरियाया नियमं अत्थि, जस्स पुण वीरियाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि सिय नत्थि ।

६. [प्र०] एयासि णं भंते ! दवियायाणं, कसायायाणं, जाव-वीरियायाण य कयरे कयरेहिंतो जाव-विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सव्वत्थोवाओ चरित्तायाओ, नाणायाओ अणंतगुणाओ, कसायाओ अणंतगुणाओ, जोगायाओ विसेसाहियाओ, वीरियायाओ विसेसाहिआओ, उवयोग-दविय-दंसणायाओ तिन्नि वि तुल्लाओ विसेसाहिआओ ।

७. [प्र०] आया भंते ! नाणे अन्नाणे ? [उ०] गोयमा ! आया सिय नाणे सिय अन्नाणे, णाणे पुण नियमं आया ।

८. [प्र०] आया भंते ! नेरइयाणं नाणे, अन्ने नेरइयाणं नाणे ? [उ०] गोयमा ! आया नेरइयाणं सिय नाणे, सिय अन्नाणे । नाणे पुण से नियमं आया, एवं जाव थणियकुमाराणं ।

९. [प्र०] आया भंते ! पुढविकाइयाणं अन्नाणे, अन्ने पुढविकाइयाणं अन्नाणे ? [उ०] गोयमा ! आया पुढविकाइयाणं नियमं अन्नाणे, अन्नाणे वि नियमं आया, एवं जाव वणस्सइकाइयाणं, बेइंदिय-तेइंदिय-जाव-वेमाणियाणं जहा नेरइयाणं ।

१०. [प्र०] आया भंते ! दंसणे, अन्ने दंसणे ? [उ०] गोयमा ! आया नियमं दंसणे, दंसणे वि नियमं आया ।

११. [प्र०] आया भंते ! नेरइयाणं दंसणे, अन्ने नेरइयाणं दंसणे ? [उ०] गोयमा ! आया नेरइयाणं नियमा दंसणे, दंसणे वि से नियमं आया, एवं जाव-वेमाणियाणं निरंतरं दंडओ ।

पण उपरना आत्माओनी साथे वक्तव्यता कहेवी. जेने *ज्ञानात्मा होय तेने दर्शनात्मा अवश्य होय, अने जेने वळी दर्शनात्मा होय तेने ज्ञानात्मा भजनाए होय. जेने ज्ञानात्मा होय तेने चारित्रात्मा भजनाए होय-एटले कदाचिद् होय अने कदाचिद् न होय, वळी जेने चारित्रात्मा होय तेने ज्ञानात्मा अवश्य होय. तथा ज्ञानात्मा अने वीर्यात्मा-ए बन्ने परस्पर भजनाए-विकल्पे होय. जेने †दर्शनात्मा होय तेने उपरना चारित्रात्मा, वीर्यात्मा ए बन्ने भजनाए होय, वळी जेने ते बन्ने आत्मा होय तेने दर्शनात्मा अवश्य होय. जेने चारित्रात्मा होय तेने अवश्य वीर्यात्मा होय, वळी जेने वीर्यात्मा होय तेने चारित्रात्मा कदाचिद् होय अने कदाचिद् न होय.

द्रव्यात्मा वगेरेनुं अल्पबहुत्व.

६. [प्र०] हे भगवन् ! द्रव्यात्मा, कषायात्मा, यावद्-वीर्यात्मामां कया आत्मा कोनाथी यावद्-विशेषाधिक छे ? [उ०] हे गौतम ! १ सौथी थोडा चारित्रात्मा छे, २ ते करतां ज्ञानात्मा अनंतगुण छे, ३ तेथी कषायात्मा अनंतगुण छे, ४ ते करतां योगात्मा विशेषाधिक छे, ५ तेथी वीर्यात्मा विशेषाधिक छे, ६ ते करतां उपयोगात्मा, द्रव्यात्मा अने दर्शनात्मा-ए त्रणे विशेषाधिक छे अने परस्पर तुल्य छे.

आत्मा ज्ञानस्वरूप छे के अन्यस्वरूप छे ?

७. [प्र०] हे भगवन् ! आत्मा ‡ज्ञानस्वरूप छे के अज्ञानस्वरूप छे ? [उ०] हे गौतम ! आत्मा कदाचित् ज्ञानस्वरूप छे, अने कदाचित् अज्ञानस्वरूप छे. पण ज्ञान तो अवश्य आत्मस्वरूप छे.

नैरयिकोनो आत्मा.

८. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकोनो आत्मा ज्ञानरूप छे, के अज्ञानरूप छे ? [उ०] हे गौतम ! नैरयिकोनो आत्मा कदाचिद् ज्ञानरूप छे, अने कदाचिद् अज्ञानरूप पण छे. परन्तु तेओनुं ज्ञान अवश्य आत्मरूप छे. ए प्रमाणे यावत्-स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं.

पृथिवीकायिकोनो आत्मा.

९. [प्र०] हे भगवन् ! पृथ्वीकायिकोनो आत्मा ज्ञानरूप छे के अज्ञानरूप छे ? [उ०] हे गौतम ! पृथ्वीकायिकोनो आत्मा अवश्य अज्ञानरूप छे, अने तेओनुं अज्ञान पण अवश्य आत्मरूप छे. ए प्रमाणे यावद्-वनस्पतिकायिको सुधी जाणवुं. बेइन्द्रिय, त्रीन्द्रिय अने यावद्-वैमानिकोने नैरयिकोनी पेठे (सू० ८) जाणवुं.

आत्मा दर्शनरूप छे के तेथी अन्य छे ?

१०. [प्र०] हे भगवन् ! आत्मा दर्शनरूप छे के तेथी दर्शन बीजुं छे ? [उ०] हे गौतम ! आत्मा अवश्य दर्शनरूप छे अने दर्शन पण अवश्य आत्मा छे.

नैरयिकोनो आत्मा.

११. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकोनो आत्मा दर्शनरूप छे ? के नैरयिकोनुं दर्शन तेथी अन्य छे ? [उ०] हे गौतम ! नैरयिकोनो आत्मा अवश्य दर्शनरूप छे, अने तेओनुं दर्शन पण अवश्य आत्मा छे. ए प्रमाणे यावद्-वैमानिको सुधी निरंतर (चोवीस) दंडक कहेवा.

---

५ * ज्ञानात्मा साथे उपरना त्रण आत्मानो संबन्ध बतावे छे. † दर्शनात्मा साथे उपरना बे पदोनो संबन्ध बतावे छे.

७ ‡ ज्ञान-सम्यग्ज्ञान अने अज्ञान-मिथ्याज्ञान ग्रहण करवुं.

१२. [प्र०] आया भंते ! रयणप्पभापुढवी, अन्ना रयणप्पभा पुढवी ? [उ०] गोयमा ! रयणप्पभा १ सिय आया, २ सिय नोआया, ३ सिय अवत्तव्वं आयाति य नोआयाइ य । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—'रयणप्पभा पुढवी सिय आया, सिय नोआया, सिय अवत्तव्वं आताति य नोआताति य' ? [उ०] गोयमा ! अप्पणो आदिट्ठे १ आया, परस्स आदिट्ठे २ नोआया, ३ तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्वं रयणप्पभा पुढवी आयाति य नोआयाति य, से तेणट्ठेणं तं चेव जाव—नोआयाति य ।

१३. [प्र०] आया भंते ! सक्करप्पभा पुढवी ? [उ०] जहा रयणप्पभा पुढवी तहा सक्करप्पभाए वि, एवं जाव—अहेसत्तमा ।

१४. [प्र०] आया भंते ! सोहम्मे कप्पे पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सोहम्मे कप्पे १ सिय आया, २ सिय नोआया, जाव—नो आयाति य । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! जाव—'नो आयाति य' ? [उ०] गोयमा ! अप्पणो आइट्ठे १ आया, परस्स आइट्ठे २ नो आया, तदुभयस्स आइट्ठे ३ अवत्तव्वं आताति य नोआताति य, से तेणट्ठेणं तं चेव जाव—'नोआयाति य' । एवं जाव—अच्चुए कप्पे ।

१५. [प्र०] आया भंते ! गेविज्जविमाणे, अन्ने गेविज्जविमाणे ? [उ०] एवं जहा रयणप्पभा तहेव, एवं अणुत्तरविमाणा वि, एवं ईसिपब्भारा वि ।

१६. [प्र०] आया भंते ! परमाणुपोग्गले, अन्ने परमाणुपोग्गले ? [उ०] एवं जहा सोहम्मे कप्पे तहा परमाणुपोग्गले वि भाणियव्वे ।

१७. [प्र०] आया भंते ! दुपएसिए खंधे, अन्ने दुपएसिए खंधे ? [उ०] गोयमा ! दुपएसिए खंधे १ सिय आया, २

रत्नप्रभा पृथिवी सद्रूप छे के असद्रूप छे ?

१२. [प्र०] हे भगवन् ! रत्नप्रभापृथ्वी आत्मा—सत्स्वरूप छे के अन्य—असत्स्वरूप रत्नप्रभा पृथिवी छे ? [उ०] हे गौतम ! रत्नप्रभा पृथ्वी १ कथंचित् आत्मा—सद्रूप छे, २ कथंचित् नोआत्मा—असद्रूप पण छे, अने ३ सद्रूपे अने असद्रूपे [उभयथा] कथंचित् अवक्तव्य—कहेवाने अशक्य छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के, 'रत्नप्रभा पृथिवी कथंचिद् आत्मा—सद्रूप छे, कथंचित् नोआत्मा—असद्रूप छे, अने सद् अने असद्—ए उभयरूपे कथंचिद् अवक्तव्य छे' ? [उ०] हे गौतम ! *रत्नप्रभा पृथिवी पोताना आदेशथी—स्वरूपथी आत्मा—विद्यमान छे, परना आदेशथी—पररूपे विवक्षाथी नोआत्मा—अविद्यमान छे, अने उभयना आदेशथी—स्व अने परनी विवक्षाथी आत्मा—सद्रूपे अने नोआत्मा—असद्रूपे अवक्तव्य छे. ते हेतुथी पूर्व प्रमाणे कह्युं छे तेम आत्मा—सद् अने यावद्—नोआत्मा—असद्रूपे अवक्तव्य छे.

शर्कराप्रभा पृथिवी.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! शर्कराप्रभा पृथ्वी आत्मा—सद्रूप छे ?—इत्यादि प्रश्न. [उ०] जेम रत्नप्रभा पृथ्वी कही तेम शर्कराप्रभा पृथ्वी संबंधे पण जाणवुं. ए प्रमाणे यावद्—अधःसप्तम पृथ्वी सुधी जाणवुं.

सौधर्म देवलोक.

१४. [प्र०] हे भगवन् ! सौधर्म देवलोक आत्मा—सद्रूप छे ?—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सौधर्म कल्प १ कथंचित् आत्मा—सद्रूप छे, २ कथंचिद् नोआत्मा—असद्रूप छे, यावद्—आत्मा—सद् अने नोआत्मा—असद्रूपे कथंचिद् अवक्तव्य छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के, 'ते यावद्—आत्मा अने नोआत्मारूपे अवक्तव्य छे ? [उ०] हे गौतम ! पोताना आदेशथी आत्मा—विद्यमान छे, परना आदेशथी नोआत्मा—अविद्यमान छे, अने बन्नेना आदेशथी अवक्तव्य—आत्मा तथा नोआत्मा रूपे अवाच्य छे, माटे ते हेतुथी इत्यादि पूर्वोक्त यावद्—आत्मा तथा नोआत्मा रूपे अवक्तव्य छे. ए रीते यावद्—अच्युतकल्प पण जाणवी.

ग्रैवेयक विमान.

१५. [प्र०] हे भगवन् ! ग्रैवेयक विमान आत्मा—विद्यमान छे के तेथी अन्य (अविद्यमान) ग्रैवेयक विमान छे ? [उ०] ए बधुं रत्नप्रभा पृथिवीनी पेठे (सू० १२) जाणवुं, अने ते प्रमाणे अनुत्तर विमान तथा ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी (सिद्धशिला) सुधी जाणवुं.

एक परमाणु सद्रूप छे के असद्रूप छे ?

१६. [प्र०] हे भगवन् ! एक परमाणुपुद्गल आत्मा—विद्यमान छे के तेथी अन्य (अविद्यमान) परमाणुपुद्गल छे ? [उ०] हे गौतम ! जेम सौधर्मकल्प संबन्धे कह्युं (सू० १४) तेम एक परमाणुपुद्गलसंबन्धे पण जाणवुं.

द्विप्रदेशिक स्कन्ध.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! द्विप्रदेशिक स्कंध आत्मा—विद्यमान छे के तेथी अन्य द्विप्रदेशिक स्कंध छे ? [उ०] हे गौतम ! †द्विप्रदेशिक

---

१२ * रत्नप्रभा पृथिवी पोताना वर्णादि पर्याय वडे आत्मा—सद्रूप छे, परवस्तुना पर्याय वडे नोआत्मा—असद्रूप छे, अने स्वपरना पर्याय वडे आत्मस्वरूप के अनात्मस्वरूप ए बन्ने प्रकारे कहेवाने अशक्य छे. ए प्रमाणे परमाणु [सू० १६] सुधी त्रण भांगा थाय छे.

१७ † द्विप्रदेशिक स्कन्धने विषे ६ भांगा थाय छे, तेमां प्रथमना त्रण भांगा सकल स्कन्धनी अपेक्षाए थाय छे, अने ते पूर्वे कहेला छे. बाकीना त्रण भांगा देशनी अपेक्षाए छे. द्विप्रदेशिक स्कन्ध होवाथी तेना एक देशनी स्वपर्याय वडे सद्रूपे विवक्षा करीए अने बीजा देशनी परपर्याय वडे असद्रूपे विवक्षा करीए तो द्विप्रदेशिक स्कन्ध अनुक्रमे ४ कथंचित् आत्मारूपे अने कथंचित् अनात्मरूपे होय, तथा तेना एक देशनी स्वपर्यायवडे सद्रूपे विवक्षा करीए अने बीजा देशनी सद् अने असद् ए उभयरूपे विवक्षा करीए तो ५ कथंचित् आत्मरूप अने अवक्तव्य कहेवाय. तथा ते स्कन्धनो एक देश परपर्यायवडे असद्रूपे विवक्षित करीए अने एक बीजा देशनी उभयरूपे विवक्षा करीए तो ते ६ नोआत्मा अने अवक्तव्य कहेवाय. कथंचित् आत्मा, नोआत्मा अने अवक्तव्य—ए प्रमाणे सातमो भांगो द्विप्रदेशिक स्कन्धने विषे तेना बे अंश होवाथी थतो नथी. त्रिप्रदेशिकादि स्कन्धने विषे तो आ साते भांगा थाय छे.

सिय नोआया, ३ सिय अवत्तव्वं आयाइ य नोआयाति य, ४ सिय आया य नोआया य, ५ सिय आया य अवत्तव्वं आयाति य नोआयाति य, ६ सिय नोआया य अवत्तव्वं आयाति य नोआयाति य।

१८. [प्र०] से केणट्ठेणं भंते! एवं तं चेव जाव–'नोआया य अवत्तव्वं आयाति य नोआयाति य'? [उ०] गोयमा! १ अप्पणो आदिट्ठे १ आया, २ परस्स आदिट्ठे नोआया, ३ तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्वं दुपएसिए खंधे आयाति य नोआयाति य, ४ देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे दुप्पएसिए खंधे आया य नोआया य, ५ देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे दुपएसिए खंधे आया य अवत्तव्वं आयाइ य नो आयाइ य, ६ देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे दुपएसिए खंधे नोआया य अवत्तव्वं आयाति य नोआयाति य, से तेणट्ठेणं तं चेव जाव–'नोआयाति य'।

१९. [प्र०] आया भंते! तिपएसिए खंधे अन्ने तिपएसिए खंधे? [उ०] गोयमा! तिपएसिए खंधे १ सिय आया, २ सिय नोआया, ३ सिय अवत्तव्वं आयाति य नोआयाति य, ४ सिय आयाय नोआया य, ५ सिय आया य नोआयाओ य, ६ सिय आयाओ य नोआया य, ७ सिय आया य अवत्तव्वं आयाति य नोआयाति य, ८ सिय आया य अवत्तव्वाइं आयाओ य नोआयाओ य, ९ सिय आयाओ य अवत्तव्वं आयाति य नोआयाति य, १० सिय नोआया य अवत्तव्वं आयाति य नोआयाति य, ११ सिय नोआया य अवत्तव्वाइं आयाओ य नोआयाओ य, १२ सिय नोआयाओ य अवत्तव्वं आयाइ य नोआयाइ य, १३ सिय आया य नोआया य अवत्तव्वं आयाइ य नोआयाइ य।

२०. [प्र०] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–तिपएसिए खंधे सिय आया–एवं चेव उच्चारेयव्वं जाव–सिय आया य नोआया य अवत्तव्वं आयाति य नोआयाति य? [उ०] गोयमा! १ अप्पणो आइट्ठे आया, २ परस्स आइट्ठे नोआया, ३ तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्वं आयाति य नो आयाति य, ४ देसे आइट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे तिपएसिए

स्कंध १ कथंचित् आत्मा–विद्यमान छे, २ कथंचिद्–नोआत्मा–अविद्यमान छे, अने ३ आत्मा तथा नोआत्मा रूपे कथंचिद् अवक्तव्य छे, ४ कथंचिद् आत्मा छे, अने कथंचिद् नोआत्मा पण छे, ५ कथंचिद् आत्मा छे, अने आत्मा तथा नोआत्मा–ए उभयरूपे अवक्तव्य छे, ६ कथंचित् नोआत्मा छे, अने आत्मा अने नोआत्मा–उभयरूपे अवक्तव्य छे.

शा हेतुथी सदरूप छे इत्यादि.

१८. [प्र०] हे भगवन्! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के–इत्यादि पूर्वोक्त यावद्–आत्मा अने नोआत्मा–ए उभयरूपे अवक्तव्य छे? [उ०] हे गौतम! १ (द्विप्रदेशिक स्कंध) पोताना आदेशथी आत्मा छे, २ परना आदेशथी नोआत्मा छे, ३ उभयना आदेशथी आत्मा अने नोआत्मा–ए उभयरूपे अवक्तव्य छे, ४ एक देशनी अपेक्षाए सद्भावपर्यायनी विवक्षाथी अने एक देशनी अपेक्षाए असद्भावपर्यायनी विवक्षाथी द्विप्रदेशिक स्कंध आत्मा–विद्यमान, तथा नोआत्मा–अविद्यमान छे, ५ एक देशना आदेशथी सद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने एक देशना आदेशथी सद्भाव अने असद्भाव ए बन्ने पर्यायनी अपेक्षाए द्विप्रदेशिक स्कंध आत्मा–विद्यमान अने आत्मा तथा नोआत्मा ए उभयरूपे अवक्तव्य छे. ६ एक देशना आदेशथी असद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने एक देशना आदेशथी सद्भाव अने असद्भाव–ए बन्ने पर्यायनी अपेक्षाए ते द्विप्रदेशिक स्कंध नोआत्मा–अविद्यमान अने आत्मा तथा नोआत्मारूपे अवक्तव्य छे. ते हेतुथी ए प्रमाणे कह्युं छे के यावद्–नोआत्मा–अविद्यमान छे.'

त्रिप्रदेशिक स्कन्धना आत्मा–आदि तेर भांगा.

१९. [प्र०] हे भगवन्! *त्रिप्रदेशिक स्कंध आत्मा–विद्यमान छे के तेथी अन्य त्रिप्रदेशिक स्कंध छे? [उ०] हे गौतम! त्रिप्रदेशिक स्कंध १ कथंचित् आत्मा–विद्यमान छे, २ कथंचिद् नोआत्मा–अविद्यमान छे, ३ आत्मा तथा नोआत्मा–ए उभयरूपे कथंचिद् अवक्तव्य छे, ४ कथंचिद् आत्मा तथा कथंचित् नोआत्मा छे, ५ कथंचिद् आत्मा तथा नोआत्माओ छे, (एकवचन अने बहुवचन.) ६ कथंचिद् आत्माओ अने नोआत्मा छे, (बहुवचन अने एकवचन.) ७ कथंचिद् आत्मा अने कथंचिद् आत्मा तथा नोआत्मा–ए उभयरूपे अवक्तव्य छे, ८ कथंचिद् आत्मा अने आत्माओ तथा नोआत्माओ–ए उभयरूपे अवक्तव्य छे. ९ कथंचिद् आत्माओ अने आत्मा तथा नोआत्मा–ए उभयरूपे अवक्तव्य छे, १० कथंचिद् नोआत्मा अने आत्मा तथा नोआत्मा–ए उभयरूपे अवक्तव्य छे, ११ कथंचिद् नोआत्मा अने आत्माओ तथा नोआत्माओ–ए बन्ने रूपे अवक्तव्यो छे, १२ कथंचिद् नोआत्माओ अने आत्मा तथा नोआत्मा–ए उभयरूपे अवक्तव्य छे, १३ कथंचिद् आत्मा, नोआत्मा अने आत्मा तथा नोआत्मा–ए बन्ने रूपे अवक्तव्य छे.

शा हेतुथी त्रिप्रदेशिक स्कन्धना 'आत्मा' इत्यादि भांगा थाय छे?

२०. [प्र०] हे भगवन्! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के, 'त्रिप्रदेशिक स्कंध कथंचिद् आत्मा छे–इत्यादि पूर्व प्रमाणे कहेवुं, यावद्–कथंचिद् आत्मा, नोआत्मा अने आत्मा तथा नोआत्मारूपे अवक्तव्य छे? [उ०] हे गौतम! (त्रिप्रदेशिक स्कंध) पोताना आदेशथी १ आत्मा छे, २ परना–आदेशथी नोआत्मा छे, ३ उभयना आदेशथी आत्मा अने नोआत्मा–ए उभय रूपे अवक्तव्य छे, ४ एक देशना आदेशथी सद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने एक देशना आदेशथी असद्भावपर्यायनी अपेक्षाए त्रिप्रदेशिक स्कंध आत्मा अने नोआत्मारूप छे, ५ एक

१९ * त्रिप्रदेशिक स्कन्धने विषे तेर भांगा थाय छे. तेमां पूर्वे कहेला सात भांगामांथी आदिना त्रण भांगा सकल स्कन्धनी अपेक्षाए थाय छे, पछीना बीजा त्रण भांगाना एकवचन अने बहुवचनना भेद थकी त्रण त्रण विकल्पो थाय छे. अने सातमो भांगो एकज प्रकारनो छे.

अंधे आया य नोआया य, ५ देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा असब्भावपज्जवा तिपएसिए खंधे आया य नोआयाओ य, ६ देसा आदिट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे तिपएसिए खंधे आयाओ य नोआया य, ७ देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे आया य अवत्तव्वं आयाइ य नोआयाइ य, ८ देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा तदुभयपज्जवा तिपएसिए खंधे आया य अवत्तव्वाइं आयाउ य नोआयाउ य, ९ देसा आदिट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे आयाउ य अवत्तव्वं आयाति य नो आयाति य, एए तिन्नि भंगा, १० देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे नोआया य, अवत्तव्वं आयाइ य नोआयाति य, ११ देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा तदुभयपज्जवा तिपएसिए खंधे नोआया य अवत्तव्वाइं आयाउ य नोआयाउ य, १२ देसा आदिट्ठा असब्भावपज्जवा देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे नोआयाउ य अवत्तव्वं आयाति य नो आयाति य, १३ देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे आया य नोआया य अवत्तव्वं आयाति य नोआया इ य। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ–'तिपएसिए खंधे सिय आया तं–चेव जाव–नोआयाति य*।

२१. [प्र०] आया भंते! चउप्पएसिए खंधे अन्ने० पुच्छा। [उ०] गोयमा! चउप्पएसिए खंधे १ सिय आया, २ सिय नोआया, ३ सिय अवत्तव्वं आयाति य नोआयाति य, ४–७ सिय आया य नोआया य ४, ८–११ सिय आया य अवत्तव्वं ४, १२–१५ सिय नोआया य अवत्तव्वं ४, १६ सिय आया य नो आया य अवत्तव्वं आयाति य नोआयाति य ४, १७ सिय आया य नोआया य अवत्तव्वाइं आयाओ य नोआयाओ य, १८ सिय आया य नोआयाओ य अवत्तव्वं आयाति य नो आयाति य, १९ सिय आयाओ य नोआया य अवत्तव्वं आयाति य नोआयाति य।

२२. [प्र०] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–'चउप्पएसिए खंधे सिय आया य नोआया य अवत्तव्वं–तं चेव अट्ठे पडिउच्चारेयव्वं? [उ०] गोयमा! १ अप्पणो आदिट्ठे आया, २ परस्स आदिट्ठे नोआया, ३ तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्वं आयाति

देशना आदेशथी सद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशोना आदेशथी असद्भावपर्यायनी अपेक्षाए ते त्रिप्रदेशिकस्कंध आत्मा तथा नोआत्माओ छे, ६ देशोना आदेशथी सद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशना आदेशथी असद्भावपर्यायनी अपेक्षाए त्रिप्रदेशिक स्कंध आत्माओ अने नोआत्मारूप छे, ७ देशना आदेशथी सद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशना आदेशथी उभय–सद्भाव तथा असद्भाव पर्यायनी अपेक्षाए ते त्रिप्रदेशिकस्कंध आत्मा अने आत्मा तथा नोआत्मा–ए उभयरूपे अवक्तव्य छे, ८ देशना आदेशथी सद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशोना आदेशथी उभयपर्यायनी विवक्षाए ते त्रिप्रदेशिक स्कंध आत्मा अने आत्माओ तथा नोआत्माओ–ए उभयरूपे अवक्तव्यो छे, ९ देशोना आदेशथी सद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशना आदेशथी तदुभयपर्यायनी अपेक्षाए ते त्रिप्रदेशिक स्कंध आत्माओ अने आत्मा तथा नोआत्मा ए उभयरूपे अवक्तव्य छे.–ए त्रण भांगाओ जाणवा. १० देशना आदेशथी असद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशना आदेशथी उभयपर्यायनी अपेक्षाए ते त्रिप्रदेशिक स्कंध नोआत्मा अने आत्मा तथा नोआत्मा रूपे अवक्तव्य छे, ११ देशना आदेशथी असद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशोना आदेशथी तदुभयपर्यायनी अपेक्षाए ते त्रिप्रदेशिक स्कंध नोआत्मा अने आत्माओ तथा नोआत्माओ–ए उभयरूपे अवक्तव्यो छे, १२ देशोना आदेशथी असद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशना आदेशथी तदुभयपर्यायनी अपेक्षाए ते त्रिप्रदेशिक स्कंध नोआत्माओ अने आत्मा तथा नोआत्मा उभयरूपे अवक्तव्य छे, १३ देशना आदेशथी सद्भावपर्यायनी अपेक्षाए, देशना आदेशथी असद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशना आदेशथी तदुभयपर्यायनी अपेक्षाए ते त्रिप्रदेशिक स्कंध (कथंचिद्) आत्मा, नोआत्मा अने आत्मा तथा नोआत्मा उभयरूपे अवक्तव्य छे. माटे हे गौतम! ते हेतुथी एम कह्युं छे के–'त्रिप्रदेशिक स्कंध कथंचिद्–आत्मा छे–इत्यादि यावद्–नो आत्मा छे–'त्यां सुधी बधुं कहेवुं.

चतुष्प्रदेशिक स्कन्धना १९ भांगाओ.

२१. [प्र०] हे भगवन्! चतुःप्रदेशिक स्कन्ध आत्मा–विद्यमान छे के तेथी अन्य छे–इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम! *चतुःप्रदेशिक स्कन्ध १ कथंचिद् आत्मा छे, २ कथंचिद् नोआत्मा छे, ३ आत्मा अने नोआत्मा उभयरूपे कथंचिद् अवक्तव्य छे, ४–७ कथंचिद् आत्मा अने नोआत्मा छे ४, (एकवचन अने बहुवचनना चार भांगाओ) ८–११ कथंचिद् आत्मा अने अवक्तव्य छे ४, १२–१५ कथंचिद् नोआत्मा अने अवक्तव्य छे ४, १६ कथंचिद् आत्मा अने नोआत्मा तथा आत्मा–नोआत्मरूपे अवक्तव्य छे, १७ कथंचिद् आत्मा, नोआत्मा अने आत्माओ तथा नोआत्माओरूपे अववक्तव्यो छे, १८ कथंचित् आत्मा नोआत्माओ तथा आत्मा अने नोआत्मा–उभयरूपे अवक्तव्य छे. १९ कथंचिद् आत्माओ, नोआत्मा तथा आत्मा अने अनात्मरूपे अवक्तव्य छे.

शा हेतुथी 'आत्मा' इत्यादि छे.

२२. [प्र०] हे भगवन्! शा हेतुथी एम कहेवाय छे के चतुःप्रदेशिक स्कन्ध कथंचित् आत्मा, नोआत्मा अने अवक्तव्य छे–इत्यादि पूर्व प्रमाणे अर्थनो पुनरुच्चार करी प्रश्न करवो. [उ०] हे गौतम! १ पोताना आदेशथी–स्वरूपनी विवक्षाथी आत्मा छे, २ परना आदेशथी–पररूपनी विवक्षाथी नोआत्मा छे, ३ तदुभयना आदेशथी आत्मा अने नोआत्मा–ए उभयरूपे अवक्तव्य छे, ४ देशना आदेशथी सद्भा-

२१ * चतुष्प्रदेशिक स्कन्धने विषे पण त्रिप्रदेशिक स्कन्धनी पेठे जाणवुं, परन्तु त्यां ओगणीश भांगाओ थाय छे, तेमां प्रथमना त्रण भांगाओ सकलादेशी–सकल स्कन्धनी अपेक्षाए थाय छे, ते प्रमाणे बाकीना चार भांगाना प्रत्येके चार चार विकल्पो थाय छे.

य नोआयाति य, ४ देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे चउभंगो, सब्भावपज्जवेणं तदुभयेण य चउभंगो, असब्भावेणं तदुभयेण य चउभंगो, देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंधे आया य नोआया य अवत्तव्वं आयाति य नो आयाति य १६, देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा तदुभयपज्जवा चउप्पएसिए खंधे भवइ आया य नोआया य अवत्तव्वाइं आयाओ य नोआयाओ य १७, देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा असब्भावपज्जवा देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंधे आया य नोआयाओ य अवत्तव्वं आयाति य नोआयाति य १८, देसा आइट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आइट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आइट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंधे आयाओ य नोआया य अवत्तव्वं आयाति य नो आयाति य १९, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ चउप्पएसिए खंधे सिय आया सिय नोआया सिय अवत्तव्वं निक्खेवे ते चेव भंगा उच्चारेयव्वा जाव–नोआयाति य।

२३. [प्र०] आया भंते! पंचपएसिए खंधे अन्ने पंचपएसिए खंधे? [उ०] गोयमा! पंचपएसिए खंधे १ सिय आया, २ सिय नोआया, ३ सिय अवत्तव्वं आयाति य नोआयाति य, ४–७ सिय आया य नोआया य सिय अवत्तव्वं ४, ८–११ नोआया य अवत्तव्वेण य ४, तियगसंजोगे एक्को ण पडइ।

२४. [प्र०] से केणट्ठेणं भंते! तं चेव पडिउच्चारेयव्वं। [उ०] गोयमा! १ अप्पणो आदिट्ठे आया, २ परस्स आदिट्ठे नोआया, ३ तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्वं, ४ देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे–एवं दुयगसंजोगे सव्वे पडंति तियगसंजोगे एक्को ण पडइ। छप्पएसियस्स सव्वे पडंति। जहा छप्पएसिए एवं जाव–अणंतपएसिए। 'सेवं भंते! सेवं भंते'त्ति जाव–विहरति।

बारसमसए दसमो उद्देसो समत्तो।
समत्तं बारसमं सयं।

वपर्यायनी अपेक्षाए अने देशना आदेशथी असद्भावपर्यायनी अपेक्षाए [एकवचन अने बहुवचनना] चार भांगा थाय छे, सद्भावपर्याय अने तदुभयनी अपेक्षाए चार भांगा थाय छे, तथा असद्भाव अने तदुभयनी अपेक्षाए पण चार भांगा थाय छे, तथा १६ देशना आदेशथी सद्भावपर्यायनी अपेक्षाए देशना आदेशथी असद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशना आदेशथी तदुभयपर्यायनी अपेक्षाए चतुष्प्रदेशिक स्कंध आत्मा, नोआत्मा अने आत्मा तथा नोआत्मा—ए उभयरूपे अवक्तव्य छे, १७ देशना आदेशथी सद्भावपर्यायनी अपेक्षाए, देशना आदेशथी असद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशोना आदेशथी तदुभयपर्यायनी अपेक्षाए चतुष्प्रदेशिक स्कंध आत्मा, नोआत्मा अने आत्माओ तथा नोआत्माओरूपे अवक्तव्य छे, १८ देशना आदेशथी सद्भावपर्यायनी अपेक्षाए, देशोना आदेशथी असद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशना आदेशथी तदुभयपर्यायनी अपेक्षाए चतुष्प्रदेशिक स्कंध आत्मा, नोआत्माओ अने आत्मा तथा नोआत्मा—उभयरूपे अव्यक्तव्य छे, १९ देशोना आदेशथी सद्भावपर्यायनी अपेक्षाए, देशना आदेशथी असद्भावपर्यायनी अपेक्षाए, अने देशना आदेशथी तदुभयपर्यायनी अपेक्षाए चतुष्प्रदेशिक स्कंध आत्माओ, नोआत्मा अने आत्मा तथा नोआत्मारूपे अवक्तव्य छे. माटे हे गौतम! ते हेतुथी एम कहेवाय छे के, चतुष्प्रदेशिक स्कंध कथंचिद् आत्मा छे, कथंचिद् नोआत्मा छे अने कथंचित् अवक्तव्य छे,—ए निक्षेपमां पूर्वोक्त भांगाओ यावद्—"नो आत्मा छे" त्यां सुधी कहेवा.

पंचप्रदेशिक स्कन्ध- ना २२ भांगाओ.

२३. [प्र०] हे भगवन्! पंचप्रदेशिक स्कंध आत्मा छे, के तेथी अन्य पंचप्रदेशिक स्कंध छे? [उ०] हे गौतम! पंचप्रदेशिक स्कंध १ *कथंचित् आत्मा छे, २ कथंचित् नोआत्मा छे, अने ३ आत्मा तथा नोआत्मारूपे कथंचित् अवक्तव्य छे, ४ कथंचित् आत्मा, नोआत्मा अने आत्मा अने अनात्मा—उभयरूपे कथंचित् अवक्तव्य छे. नोआत्मा अने अवक्तव्यवडे ए प्रमाणे चार भांगा करवा, त्रिक संयोगमां (आठ भांगा थाय छे) एक आठमो भांगो उतरतो नथी, एटले सात भांगाओ थाय छे. (कुल मळीने बावीश भांगाओ थाय छे.)

क्या हेतुथी ते 'आत्मा' वगेरेरूप छे?

२४. [प्र०] हे भगवन्! शा हेतुथी (पंचप्रदेशिक स्कन्ध आत्मा छे)—इत्यादि पाठनो पुनः उच्चार करवो. [उ०] हे गौतम! १ (पंचप्रदेशिक स्कन्ध) पोताना आदेशथी आत्मा छे, २ परना आदेशथी नोआत्मा छे, ३ तदुभयना—आदेशथी अवक्तव्य छे, ४ देशना आदेशथी सद्भावपर्यायनी अपेक्षाए अने देशना आदेशथी असद्भावपर्यायनी अपेक्षाए कथंचित् आत्मा छे अने आत्मा नथी—ए प्रमाणे द्विकसंयोगमां सर्वे भांगा उपजे छे, मात्र त्रिकसंयोगमां (आठमो) एक भांगो उतरतो नथी. षट्प्रदेशिक स्कन्धने विषे सर्वे भांगाओ लागु पडे छे, जेम षट्प्रदेशिक स्कन्धने विषे कह्युं, तेम यावत्—अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध संबन्धे जाणवुं, 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे—' एम कही [भगवान् गौतम] यावद् विहरे छे.

द्वादश शतके दशम उद्देशक समाप्त.
द्वादश शतक समाप्त.

---

२३ * पंचप्रदेशिक स्कन्धना बावीश भांगा थाय छे, तेमां आदिना त्रण भांगा पूर्व प्रमाणे सकलादेशरूप छे, त्यार पछीना त्रण भांगाना प्रत्येके चार चार विकल्प थाय छे, अने सातमा भांगाना सात विकल्प थाय छे. त्रिकसंयोगना मूळ आठ भांगा थाय, तेमां अहिं प्रथमना सात भांगा ग्रहण करवा, एक छेल्ला भांगानो असंभव होवाथी ते न ग्रहण करवो. छ प्रदेशिक स्कन्धने विषे त्रेवीश भांगा थाय छे.—टीका.

तेरसमं सयं।

१. १ पुढवी २ देव ३ मणंतर ४ पुढवी ५ आहारमेव ६ उववाए।
७ भासा ८ कम्म ९ अणगारे [1]केयाघडिया १० समुग्घाए॥

२. [प्र०] रायगिहे जाव–एवं वयासी–कति णं भंते! पुढवीओ पन्नत्ताओ? [उ०] गोयमा! सत्त पुढवीओ पन्नत्ताओ, तं जहा–१ रयणप्पभा, जाव–७ अहेसत्तमा।

३. [प्र०] इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए केवतिया निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता? [उ०] गोयमा! तीसं निरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता। [प्र०] ते णं भंते! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा? [उ०] गोयमा! संखेज्जवित्थडा वि असंखेज्जवित्थडा वि।

४. [प्र०] इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु १ एगसमएणं केवतिया नेरइया उववज्जंति? २ केवतिया काउलेस्सा उववज्जंति? ३ केवइया कण्हपक्खिया उववज्जंति? ४ केवतिया

त्रयोदशशतक.

१. [उद्देशक संग्रह–] १ नरक पृथ्वी विषे प्रथम उद्देशक, २ देवनी प्ररूपणा संबन्धे बीजो उद्देशक, ३ अनन्तराहार–उपपात क्षेत्रनी प्राप्ति समये तुरतज आहार करनारा–नारक संबन्धे त्रीजो उद्देशक, ४ पृथिवी–नरकपृथिवीनी वक्तव्यता प्रतिपादन करवा माटे चोथो उद्देशक, ५ आहार–नारकादिना आहारनी प्ररूपणा करवा माटे पांचमो उद्देशक, ६ उपपात–नारकादिना उपपात संबन्धे छट्ठो उद्देशक, ७ भाषा संबन्धे सातमो उद्देशक, ८ कर्मनी प्ररूपणा करवा माटे आठमो उद्देशक, ९ अनगार–भावितात्मा अनगार वैक्रिय लब्धिना सामर्थ्यथी केयाघडिया–हाथमां दोरडाथी बांधेली घटीका लइने [एवारूपे] आकाशमां गमन करी शके–इत्यादिक अर्थनुं प्रतिपादन करवा माटे नवमो उद्देशक, १० अने समुद्घातनुं प्रतिपादन करवा माटे दशमो उद्देशक–ए प्रमाणे तेरमा शतकने विषे दश उद्देशको कहेवामां आवशे.

प्रथम उद्देशक.

नरकपृथिवी.

२. [प्र०] राजगृह नगरमां [भगवान् गौतम] यावत्–ए प्रमाणे बोल्या के–हे भगवन्! केटली नरक पृथिवीओ कहेली छे? [उ०] हे गौतम! सात नरकपृथिवीओ कहेली छे, ते आ प्रमाणे–१ रत्नप्रभा, यावत्–७ अधः सप्तमनरकपृथिवी.

रत्नप्रभानेविषे नरकावासो.

३. [प्र०] हे भगवन्! आ रत्नप्रभा नरकपृथिवीने विषे केटला लाख नरकावासो कहेला छे? [उ०] हे गौतम! त्रीश लाख नरकावासो कहेला छे. [प्र०] हे भगवन्! ते नरकावासो संख्याता योजन विस्तारवाळा छे के असंख्याता योजन विस्तारवाळा छे? [उ०] हे गौतम! संख्याता योजन विस्तारवाळा पण छे अने असंख्याता योजन विस्तारवाळा पण छे.

संख्याताजोजन विस्तारवाळा नरकावासोमां एक समये नारकादिनो उत्पाद.

४. [प्र०] हे भगवन्! आ रत्नप्रभापृथिवीना त्रीश लाख नरकावासोमांना संख्यातायोजनविस्तारवाळा नरकावासोने विषे एक समये १ केटला नारक जीवो उत्पन्न थाय, २ केटला कापोतलेश्यावाळा उत्पन्न थाय, ३ केटला *कृष्णपाक्षिकजीवो उत्पन्न थाय, ४

---

[1] केयाइडिया क।

४ * जे जीवोने कंइक न्यून अर्धपुद्गलपरावर्त संसार बाकी होय छे ते शुक्लपाक्षिक, अने तेथी अधिक संसार बाकी होय ते कृष्णपाक्षिक कहेवाय छे.–टीका.

सुक्कपक्खिया उववज्जंति ? ५ केवतिया सन्नी उववज्जंति ? ६ केवतिया असन्नी उववज्जंति ? ७ केवतिया भवसिद्धीया उववज्जंति ? ८ केवतिया अभवसिद्धीया उववज्जंति ? ९ केवतिया आभिणिबोहियनाणी उववज्जंति ? १० केवइया सुयनाणी उववज्जंति ? ११ केवइया ओहिनाणी उववज्जंति ? १२ केवइया मइअन्नाणी उववज्जंति ? १३ केवइया सुयअन्नाणी उववज्जंति ? १४ केवइया विब्भंगनाणी उववज्जंति ? १५ केवइया चक्खुदंसणी उववज्जंति ? १६ केवइया अचक्खुदंसणी उववज्जंति ? १७ केवइया ओहिदंसणी उववज्जंति ? १८ केवइया आहारसन्नोवउत्ता उववज्जंति ? १९ केवइया भयसन्नोवउत्ता उववज्जंति ? २० केवइया मेहुणसन्नोवउत्ता उववज्जंति ? २१ केवइया परिग्गहसन्नोवउत्ता उववज्जंति ? २२ केवइया इत्थिवेयगा उववज्जंति ? २३ केवइया पुरिसवेदगा उववज्जंति ? २४ केवइया नपुंसगवेदगा उववज्जंति ? २५ केवइया कोहकसाई उववज्जंति ? २८ जाव–केवइया लोभकसायी उववज्जंति ? २९ केवइया सोइंदियउवउत्ता उववज्जंति ? जाव–३३ केवइया फासिंदियोवउत्ता उववज्जंति ? ३४ केवइया नोइंदियोवउत्ता उववज्जंति ? ३५ केवतिया मणजोगी उववज्जंति ? ३६ केवतिया वइजोगी उववज्जंति ? ३७ केवतिया कायजोगी उववज्जंति ? ३८ केवतिया सागारोवउत्ता उववज्जंति ? ३९ केवतिया अणागारोवउत्ता उववज्जंति ? [उ०] गोयमा ! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नेरइया उववज्जंति, जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोस्सेणं संखेज्जा काउलेस्सा उववज्जंति, जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा कण्हपक्खिया उववज्जंति, एवं सुक्कपक्खिया वि, एवं सन्नी, एवं असन्नी वि, एवं भवसिद्धीया, एवं अभवसिद्धिया, आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी, मइअन्नाणी, सुयअन्नाणी, विभंगनाणी एवं चेव, चक्खुदंसणी ण उववज्जंति, जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेणं संखेज्जा अचक्खुदंसणी उववज्जंति, एवं ओहिदंसणी वि, आहारसन्नोवउत्ता वि, जाव–परिग्गहसन्नोवउत्ता वि, इत्थीवेयगा न उववज्जंति, पुरिसवेयगा वि न उववज्जंति, जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नपुंसगवेदगा उववज्जंति, एवं कोहकसाई, जाव–लोभकसाई, सोइंदियउवउत्ता न उववज्जंति, एवं जाव–फासिंदिओवउत्ता न उववज्जंति, जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा

केटला शुक्लपाक्षिक जीवो उत्पन्न थाय, ५ केटला संज्ञी जीवो उत्पन्न थाय, ६ केटला असंज्ञी जीवो उत्पन्न थाय, ७ केटला भवसिद्धिक जीवो उत्पन्न थाय, ८ केटला अभवसिद्धिक जीवो उत्पन्न थाय, ९ केटला आभिनिबोधिकज्ञानी–मतिज्ञानी उत्पन्न थाय, १० केटला श्रुतज्ञानी उत्पन्न थाय, ११ केटला अवधिज्ञानी उत्पन्न थाय, १२ केटला मतिअज्ञानी उत्पन्न थाय, १३ केटला श्रुतअज्ञानी उत्पन्न थाय, १४ केटला विभंगज्ञानी उत्पन्न थाय, १५ केटला चक्षुदर्शनी उत्पन्न थाय, १६ केटला *अचक्षुदर्शनी उत्पन्न थाय, १७ केटला अवधिदर्शनी उत्पन्न थाय, १८ केटला आहारसंज्ञाना उपयोगवाळा जीव उत्पन्न थाय, १९ केटला भयसंज्ञाना उपयोगवाळा उत्पन्न थाय, २० केटला मैथुनसंज्ञाना उपयोगवाळा उत्पन्न थाय, २१ केटला परिग्रह संज्ञाना उपयोगवाळा उत्पन्न थाय, २२ केटला स्त्रीवेदी जीव उत्पन्न थाय, २३ केटला पुरुषवेदी उत्पन्न थाय, २४ केटला नपुंसकवेदी उत्पन्न थाय, २५ केटला क्रोधकषायवाळा जीव उत्पन्न थाय, यावत्–२८ केटला लोभकषायवाळा उत्पन्न थाय, २९ केटला श्रोत्रेन्द्रियना उपयोगवाळा उत्पन्न थाय, यावत् ३३ केटला स्पर्शनेन्द्रियना उपयोगवाळा उत्पन्न थाय, ३४ केटला नोइन्द्रिय (मन)ना उपयोगवाळा उत्पन्न थाय, ३५ केटला मनयोगी उत्पन्न थाय, ३६ केटला वचनयोगी उत्पन्न थाय, ३७ केटला काययोगी उत्पन्न थाय, ३८ केटला साकारोपयोगवाळा उत्पन्न थाय, अने ३९ केटला अनाकारोपयोगवाळा उत्पन्न थाय? [उ०] हे गौतम! आ रत्नप्रभापृथिवीना त्रीश लाख नरकावासोमांना संख्याता योजनना विस्तारवाळा नरकावासोने विषे १ जघन्यथकी एक, बे के त्रण अने उत्कृष्टथी संख्याता नारको उत्पन्न थाय छे, २ जघन्यथी एक बे के त्रण, अने उत्कृष्टथी संख्याता कापोतलेश्यावाळा उत्पन्न थाय छे, कारणके प्रथम नरक पृथिवीमां कापोतलेश्या होय छे. ३ जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कृष्टथी संख्याता कृष्णपाक्षिक जीवो उत्पन्न थाय छे, ए प्रमाणे शुक्लपाक्षिक संबंधे पण जाणवुं, ए रीते संज्ञी अने असंज्ञीने पण कहेवुं, ए प्रमाणे भवसिद्धिक अने अभवसिद्धिक जीवो पण जाणवा. मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, मतिअज्ञानी, श्रुतअज्ञानी, विभंगज्ञानी ए सर्व ए प्रमाणेज उत्पन्न थाय छे. चक्षुदर्शनवाळा जीवो उत्पन्न थता नथी. जघन्यथी एक, बे अथवा त्रण अने उत्कृष्टथी संख्याता अचक्षुदर्शनवाळा जीवो उत्पन्न थाय छे. [कारणके उत्पत्ति समये सामान्य उपयोगरूप अचक्षुदर्शन छे.] एम अवधिदर्शनवाळा पण जाणवा. ए रीते आहार संज्ञाना उपयोगवाळा अने †यावत् परिग्रह संज्ञाना उपयोगवाळा पण ए प्रमाणे उत्पन्न थाय छे. स्त्रीवेदवाळा अने पुरुषवेदवाळा जीवो [भवप्रत्यय नपुंसकवेद होवाथी] उत्पन्न थता नथी. जघन्यथकी एक, बे के त्रण अने उत्कृष्टथी संख्याता नपुंसकवेदी उत्पन्न थाय छे. ए प्रमाणे क्रोधकषायी, अने यावत् लोभकषायी जाणवा. श्रोत्रेन्द्रियना उपयोगवाळा उत्पन्न थता नथी, अने यावत् स्पर्शनेन्द्रियना उपयोगवाळा पण उत्पन्न थता नथी. जघन्यथी एक, बे

---

४ * इन्द्रियो अने मन सिवाय सामान्य उपयोगमात्रने पण अचक्षुदर्शन कहे छे, अने ते उत्पत्तिसमये पण होय छे तेथी उत्तरमां 'अचक्षुदर्शनी उत्पन्न थाय छे'–एम कह्युं छे.

† यावत् शब्दथी भयसंज्ञाना उपयोगवाळा अने मैथुनसंज्ञाना उपयोगवाळा जीवो ग्रहण करवा.

णोइंदिओवउत्ता उववज्जंति, मणजोगी ण उववज्जंति, एवं वइजोगी वि, जहन्नेणं एको वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा कायजोगी उववज्जंति, एवं सागारोवउत्ता वि, एवं अणागारोवउत्ता वि।

५. [प्र०] इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं केवइया नेरइया उव्वट्टंति ? केवतिया काउलेस्सा उव्वट्टंति ? जाव–केवतिया अणागारोवउत्ता उव्वट्टंति ? [उ०] गोयमा ! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं जहन्नेणं एको वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नेरइया उव्वट्टंति, जहन्नेणं एको वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा काउलेस्सा उव्वट्टंति, एवं जाव–सन्नी। असन्नी ण उव्वट्टंति। जहन्नेणं एको वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा भवसिद्धीया उव्वट्टंति, एवं जाव–सुयअन्नाणी। विभंगनाणी ण उव्वट्टंति, चक्खुदंसणी ण उव्वट्टंति। जहन्नेणं एको वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा अचक्खुदंसणी उव्वट्टंति, एवं जाव–लोभकसायी। सोइंदिओवउत्ता ण उव्वट्टंति, एवं जाव–फासिंदियोवउत्ता न उव्वट्टंति। जहन्नेणं एको वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नोइंदियोवउत्ता उव्वट्टंति। मणजोगी न उव्वट्टंति, एवं वइजोगी वि। जहन्नेणं एको वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा कायजोगी उव्वट्टंति, एवं सागारोवउत्ता वि, अणागारोवउत्ता वि।

६. [प्र०] इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु केवइया नेरइया, पन्नत्ता केवइया काउलेस्सा, जाव–केवतिया अणागारोवउत्ता पन्नत्ता ? केवतिया अणंतरोववन्नगा पन्नत्ता १ ? केवइया परंपरोववन्नगा पन्नत्ता २ ? केवइया अणंतरोवगाढा पन्नत्ता ३ ? केवइया परंपरोवगाढा पन्नत्ता ४ ? केवइया अणंतराहारा पन्नत्ता ५ ? केवतिया परंपराहारा पन्नत्ता ६ ? केवतिया अणंतरपज्जत्ता पन्नत्ता ७ ? केवतिया परंपरपज्जत्ता पन्नत्ता ८ ? केवतिया चरिमा पन्नत्ता ९ ? केवतिया अचरिमा पन्नत्ता १० ? [उ०] गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु संखेज्जा नेरतिया पन्नत्ता, संखेज्जा काउलेस्सा पन्नत्ता, एवं जाव–संखेज्जा सन्नी पन्नत्ता।

के त्रण अने उत्कृष्टथी संख्याता *नोइंद्रियना उपयोगवाळा उत्पन्न थाय छे. मनयोगी अने वचनयोगी उत्पन्न थता नथी. जघन्यथी एक, बे अने त्रण तथा उत्कृष्टथी संख्याता काययोगवाळा उत्पन्न थाय छे. ए प्रमाणे साकारोपयोगवाळा अने ए रीते अनाकारोपयोगवाळा पण उत्पन्न थाय छे.

एक समये नारकोनी उद्वर्तना.

५. [प्र०] हे भगवन् ! आ रत्नप्रभापृथिवीना त्रीश लाख नरकावासोमांना संख्यातायोजन विस्तारवाळा नरकावासोने विषे एक समयमां केटला नारक जीवो उद्वर्ते–मरण पामे, केटला कापोतलेश्यावाळा उद्वर्ते, यावत्–केटला अनाकारोपयोगवाळा उद्वर्ते ? [उ०] हे गौतम ! आ रत्नप्रभा पृथिवीना त्रीश लाख नरकावासोमांना संख्याता योजन विस्तारवाळा नरकावासोमां एक समये जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कृष्टथी †संख्याता नारको उद्वर्ते, जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कृष्टथी संख्याता कापोतलेश्यावाळा उद्वर्ते, ए प्रमाणे यावत्–संज्ञी जीवो सुधी उद्वर्तना जाणवी. असंज्ञी जीवो ‡उद्वर्तता नथी. भवसिद्धिक जीवो जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कृष्टथी संख्याता उद्वर्ते छे. ए प्रमाणे–यावत् श्रुतअज्ञानी सुधी जाणवुं. विभंगज्ञानी अने चक्षुदर्शनी उद्वर्तता नथी. जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कृष्टथी संख्याता अचक्षुदर्शनी उद्वर्ते छे. ए प्रमाणे यावत् लोभकषायी जीवो सुधी जाणवुं. श्रोत्रेन्द्रियना उपयोगवाळा उद्वर्तता नथी. ए प्रमाणे यावत्–स्पर्शनेन्द्रियना उपयोगवाळा पण उद्वर्तता नथी. जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कृष्टथकी संख्याता नोइंद्रियना उपयोगवाळा उद्वर्ते छे. मनयोगी उद्वर्तता नथी. ए प्रमाणे वचनयोगी पण उद्वर्तता नथी. काययोगी जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कृष्टथी संख्याता उद्वर्ते छे. ए प्रमाणे साकारोपयोगवाळा अने अनाकारोपयोगवाळा पण जाणवा. [ए प्रमाणे नारक जीवोने विषे उद्वर्तनानुं परिमाण कह्युं].

रत्नप्रभामां नारक जीवोनी संख्या.

६. [प्र०] हे भगवन् ! आ रत्नप्रभापृथिवीना त्रीश लाख नरकावासोमांना संख्याता योजन विस्तारवाळा नरकावासोने विषे १ केटला नारक जीवो कहेला छे ? २ केटला कापोत लेश्यावाळा, यावत्–३९ केटला अनाकारोपयोगवाळा कहेला छे. १ केटला अनन्तरोपपन्न–प्रथम समये उत्पन्न थयेला होय छे, अने केटला परंपरोपपन्न–उत्पत्ति समयनी अपेक्षाए बे इत्यादि समयोने विषे उत्पन्न थयेला होय छे. केटला अनंतरावगाढ–विवक्षित क्षेत्रने विषे प्रथम समयमां रहेला छे, केटला परंपरावगाढ–विवक्षित क्षेत्रमां द्वितीयादि समयने विषे रहेला छे, केटला अनंतराहार–प्रथम समये आहार करवावाळा छे, केटला परंपराहार–द्वितीयादि समये आहार करवावाळा छे, केटला अनंतरपर्याप्त–प्रथम समये पर्याप्त होय छे, अने केटला परंपरपर्याप्त–द्वितीयादि समये पर्याप्त होय छे, केटला चरम–जेने छेल्लो तेज नारकभव बाकी छे एवा होय छे, अथवा केटला नारक भवना चरम छेल्ले समये वर्ते छे, १० अने केटला अचरम–चरमथकी विपरीत होय छे ? [उ०] हे गौतम ! आ रत्नप्रभापृथिवीना त्रीश लाख नरकावासोमांना संख्याता योजन विस्तारवाळा नरकावासोने विषे १ संख्याता नारक जीवो कहेला छे, २

---

४ * नोइन्द्रिय–मन, यद्यपि अहिं अपर्याप्तावस्थामां मनःपर्याप्तिनो अभाव होवाथी द्रव्य मन होतुं नथी, तो पण चैतन्यरूप भावमन हंमेशां होय छे, माटे 'नोइन्द्रियना उपयोगवाळा उत्पन्न थाय छे'–एम कह्युं छे–टीका.

५ † संख्याता योजन विस्तारवाळा नरकावासने विषे संख्याताज नारको समाइ शके.

‡ उद्वर्तना परभवना प्रथम समयने विषे होय, अने नारको असंज्ञीने विषे न उपजे, माटे असंज्ञी उद्वर्तता नथी.–टीका.

असन्नी सिय अत्थि, सिय नत्थि, जइ अत्थि जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा पन्नत्ता । संखेज्जा भवसिद्धीया पन्नत्ता, एवं जाव–संखेज्जा परिग्गहसन्नोवउत्ता पन्नत्ता, इत्थिवेदगा नत्थि, पुरिसवेदगा नत्थि, संखेज्जा नपुंसगवेदगा पन्नत्ता, एवं कोहकसायी वि । मानकसाई जहा असन्नी, एवं जाव–लोभकसायी । संखेज्जा सोइंदियोवउत्ता पन्नत्ता, एवं जाव–फासिंदियोवउत्ता । नोइंदियोवउत्ता जहा असन्नी । संखेज्जा मणजोगी पन्नत्ता, एवं जाव–अणागारोवउत्ता । अणंतरोववन्नगा सिय अत्थि, सिय नत्थि; जइ अत्थि जहा असन्नी । संखेज्जा परंपरोववन्नगा पन्नत्ता । एवं जहा अणंतरोववन्नगा तहा अणंतरोवगाढगा, अणंतराहारगा, अणंतरपज्जत्तगा, चरिमा । परंपरोवगाढगा, जाव–अचरिमा जहा परंपरोववन्नगा ।

७. [प्र०] इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु असंखेज्जवित्थडेसु एगसमएणं केवतिया नेरइया उववज्जंति, जाव–केवतिया अणागारोवउत्ता उववज्जंति ? [उ०] गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु असंखेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएणं जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं असंखेज्जा नेरइया उववज्जंति । एवं जहेव संखेज्जवित्थडेसु तिन्नि गमगा तहा असंखेज्जवित्थडेसु वि तिन्नि गमगा भाणितव्वा, नवरं असंखेज्जा भाणियव्वा, सेसं तं चेव, जाव–असंखेज्जा अचरिमा पन्नत्ता, नाणत्तं लेस्सासु, लेस्साओ जहा पढमसए, नवरं संखेज्जवित्थडेसु वि असंखेज्जवित्थडेसु वि ओहिनाणी ओहिदंसणी य संखेज्जा उव्वट्टावेयव्वा, सेसं तं चेव ।

८. [प्र०] सक्करप्पभाए णं भंते ! पुढवीए केवतिया निरयावास–पुच्छा । [उ०] गोयमा ! पणवीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता । [प्र०] ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ? [उ०] एवं जहा रयणप्पभाए तहा सक्करप्पभाए वि । नवरं असन्नी तिसु वि गमएसु न भन्नति, सेसं तं चेव ।

संख्याता कापोतलेश्यावाळा कहेला छे, ए प्रमाणे यावत्–संख्याता संज्ञी जीवो कहेला छे. *असंज्ञी जीवो कदाचित् होय छे अने कदाचित् होता नथी. जो होय छे तो जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कृष्टथी संख्याता होय छे, संख्याता भवसिद्धिक जीवो कहेला छे, ए प्रमाणे यावत् संख्याता परिग्रहसंज्ञाना उपयोगवाळा कहेला छे; स्त्रीवेदी नथी अने पुरुषवेदी पण नथी, नपुंसकवेदी संख्याता होय छे. ए प्रमाणे क्रोधकषायी पण संख्याता होय छे. मानकषायी असंज्ञीनी पेठे [कदाचित् होय छे अने कदाचिद् होता नथी.] ए प्रमाणे यावत्–[मायाकषायी अने] लोभकषायी जाणवा. संख्याता श्रोत्रेन्द्रियना उपयोगवाळा कह्या छे, ए प्रमाणे यावत्–स्पर्शनेन्द्रियना उपयोगवाळा पण कह्या छे. नोइंद्रियना उपयोगवाळा असंज्ञीनी पेठे जाणवा, संख्याता मनोयोगी कहेला छे, अने ए प्रमाणे यावत् [संख्याता] ३९ अनाकारोपयोगी जाणवा. अनंतरोपपन्न–प्रथम समये उत्पन्न थवावाळा नारको कदाचित् होय छे अने कदाचित् होता नथी. जो होय तो ते असंज्ञीनी पेठे जाणवा. संख्याता परंपरोपपन्न–द्वितीयादि समये उत्पन्न थयेला जाणवा. ए प्रमाणे जेम अनंतरोपपन्न कह्या तेम अनंतरावगाढ अनंतराहारक, अनन्तरपर्याप्तक अने चरम–जेने छेल्लोज नारक भव बाकी छे ते अथवा नारकभवने छेल्ले समये वर्तता–जाणवा. परंपरावगाढ, यावत्–अचरम सुधी जेम परंपरोपपन्न कह्या तेम कहेवा. [ए प्रमाणे संख्याता योजन विस्तारवाळा नरकावासनी वक्तव्यता कही.]

असंख्ययोजनवाळा नरकावासोमां नारकादिनो उत्पाद.

७. [प्र०] हे भगवन् ! आ रत्नप्रभापृथिवीना त्रीश लाख नरकावासोमांना असंख्यात योजन विस्तारवाळा नरकावासोने विषे एक समये केटला नारको उत्पन्न थाय, यावत्–केटला अनाकारोपयोगवाळा उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! आ रत्नप्रभापृथ्वीना त्रीश लाख नरकावासोमांना असंख्यातयोजन विस्तारवाळा नरकावासोने विषे एक समये जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कृष्टथी असंख्याता नारको उत्पन्न थाय छे, ए प्रमाणे जेम संख्याता विस्तारवाळा नरकने विषे [उत्पाद, च्यवन अने सत्ता–] ए त्रण आलापक कह्या तेम असंख्यातयोजन विस्तारवाळा नरकावासोने विषे पण त्रण आलापक कहेवा, परन्तु अहिं 'असंख्याता' एवो पाठ कहेवो. बाकी बधुं पूर्व पेठे जाणवुं. यावत् 'असंख्याता अचरम नारको कहेला छे'–त्यां सुधी कहेवुं. लेश्याने विषे विशेषता छे, अने ते लेश्याओ †प्रथम शतकमां कह्या प्रमाणे जाणवी. परन्तु एटलो विशेष छे के संख्यात योजन विस्तारवाळा अने असंख्यात योजन विस्तारवाळा नरकावासोने विषे अवधिज्ञानी अने अवधिदर्शनी ‡संख्याता ज च्यवे छे,–एम कहेवुं, बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं.

शर्कराप्रभामां नरकावासो.

८. [प्र०] हे भगवन् ! शर्कराप्रभा नरक पृथिवीने विषे केटला नरकावासो होय छे–ते संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! पचीश लाख नरकावासो होय छे. [प्र०] हे भगवन् ! ते नरकावासो शुं संख्यातायोजनविस्तारवाळा होय के असंख्यातयोजनविस्तारवाळा होय ? [उ०] ए प्रमाणे जेम रत्नप्रभा संबन्धे कह्युं तेम शर्कराप्रभा संबन्धे जाणवुं, परन्तु [उत्पाद, उद्वर्तना अने सत्ता–] ए त्रणे आलापकमां विषे असंज्ञी न कहेवा [कारण के असंज्ञी प्रथम नरकपृथिवीने विषेज उपजे छे.] बाकी बधुं पूर्व पेठे जाणवुं.

---

६ * असंज्ञीथकी मरण पामी जेओ नारकपणे उत्पन्न थया छे, तेओ अपर्याप्तावस्थामां भूतभावनी अपेक्षाए असंज्ञी कहेवाय छे, तेओ अल्प होय छे माटे 'असंज्ञी कदाचित् होय छे अने कदाचित् होता नथी' एम कह्युं छे–टीका.

७ † भग० खं० १ श० १ उ० २ पृ० १०४. जुओ प्रज्ञा० लेश्यापद १७ उ० २ प० ३४३–२.

‡ अवधिज्ञानी अने अवधिदर्शनी तीर्थंकरादि ज होय, ते थोडा होय माटे ते संख्याताज नीकळे.–टीका.

९. [प्र०] वालुयप्पभाए णं पुच्छा। [उ०] गोयमा! पन्नरस निरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता, सेसं जहा सक्करप्पभाए, णाणत्तं लेसासु, लेसाओ जहा पढमसए।

१०. [प्र०] पंकप्पभाए णं पुच्छा। [उ०] गोयमा! दस निरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता, एवं जहा सक्करप्पभाए, नवरं ओहिनाणी ओहिदंसणी य न उव्वट्टंति, सेसं तं चेव।

११. [प्र०] धूमप्पभाए णं पुच्छा। [उ०] गोयमा! तिन्नि निरयावाससयसहस्सा, एवं जहा पंकप्पभाए।

१२. [प्र०] तमाए णं भंते! पुढवीए केवतिया निरयावास० पुच्छा। [उ०] गोयमा! एगे पंचूणे निरयावाससयसहस्से पण्णत्ते। सेसं जहा पंकप्पभाए।

१३. [प्र०] अहेसत्तमाए णं भंते! पुढवीए कति अणुत्तरा महतिमहालया महानिरया पन्नत्ता? [उ०] गोयमा! पंच अणुत्तरा जाव–अपइट्ठाणे। [प्र०] ते णं भंते! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा? [उ०] गोयमा! संखेज्जवित्थडे य असंखेज्जवित्थडा य।

१४. [प्र०] अहेसत्तमाए णं भंते! पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु महतिमहालया० जाव–महानिरएसु संखेज्जवित्थडे नरए एगसमएणं केवतिया०? [उ०] एवं जहा पंकप्पभाए, नवरं तिसु नाणेसु न उववज्जंति, न उव्वट्टंति, पन्नत्ता एसु तहेव अत्थि, एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि, नवरं असंखेज्जा भाणियव्वा।

१५. [प्र०] इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु नरएसु किं सम्मदिट्ठी नेरतिया उववज्जंति, मिच्छदिट्ठी नेरतिया उववज्जंति, सम्मामिच्छदिट्ठी नेरतिया उववज्जंति? [उ०] गोयमा! सम्मदिट्ठी वि नेरइया उववज्जंति, मिच्छादिट्ठी वि नेरइया उववज्जंति, नो सम्मामिच्छदिट्ठी नेरइया उववज्जंति।

९. [प्र०] वालुकाप्रभा संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम! पंदरलाख नरकावासो कह्या छे, बाकी बधुं शर्कराप्रभानी पेठे जाणवुं. पण लेश्याने विषे *विशेषता छे, अने ते †प्रथम शतकमां कह्या प्रमाणे जाणवी.

वालुकाप्रभामां नरकावासो.

१०. [प्र०] हे भगवन्! पंकप्रभा नरकने विषे केटला नरकावासो कह्या छे?—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम! दश लाख नरकावासो कह्या छे. ए प्रमाणे जेम शर्कराप्रभा संबन्धे कह्युं, तेम अहिं पण जाणवुं. परन्तु अहिंथी ‡अवधिज्ञानी अने अवधिदर्शनी च्यवता नथी, बाकी बधुं पूर्वनी पेठे जाणवुं.

पंकप्रभामां नरकावासो.

११. [प्र०] धूमप्रभा संबन्धे प्रश्न. [उ०] हे गौतम! त्रण लाख नरकावासो कह्या छे, ए प्रमाणे जेम पंकप्रभा संबन्धे कह्युं छे तेम अहिं जाणवुं.

धूमप्रभामां नरकावासो.

१२. [प्र०] हे भगवन्! तमा नरकपृथिवीने विषे केटला नरकावासो कह्या छे?—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम! पांच न्यून एक लाख नरकावासो कह्या छे. बाकी बधुं पंकप्रभा पेठे जाणवुं.

तमःप्रभामां नरकावासो.

१३. [प्र०] हे भगवन्! अधःसप्तम नरक पृथिवीने विषे अनुत्तर अने अत्यंत मोटा एवा केटला महानरकावासो कह्या छे? [उ०] हे गौतम! अनुत्तर अने मोटा पांच नरकावासो कह्या छे. यावत्–[१ काल, २ महाकाल, ३ रोर, ४ महारोर, अने] ५ अप्रतिष्ठान. [प्र०] हे भगवन्! ते नरकावासो शुं संख्यात योजनना विस्तारवाळा छे के असंख्यात योजनना विस्तारवाळा छे? [उ०] हे गौतम! वच्चेनो अप्रतिष्ठान नरकावास संख्यातयोजनना विस्तारवाळो छे अने बीजा असंख्यातयोजनना विस्तारवाळा छे.

सप्तम नरकमां नरकावासो.

१४. [प्र०] हे भगवन्! अधःसप्तम नरकपृथिवीना पांच अनुत्तर अने अत्यंत मोटा यावत्–महानरकावासोमांना संख्यात योजन विस्तारवाळा नरकावासने विषे एक समये केटला नारको उत्पन्न थाय—इत्यादि प्रश्न. [उ०] जेम पंकप्रभाने विषे कह्युं तेम अहिं जाणवुं; परंतु एटलो विशेष छे के अहिं त्रण ज्ञानसहित उत्पन्न थता नथी, [केमके सम्यक्त्वभ्रष्ट ज अहिं उपजे छे.] तेम च्यवता पण नथी. तो पण ए पांच नरकावासोमां ए प्रमाणे–प्रथमादि नरकपृथिवीनी जेम त्रण ज्ञानवाळा होय छे. ए प्रमाणे असंख्यातायोजनविस्तारवाळा नरकावासोने विषे पण जाणवुं, परन्तु त्यां 'असंख्याता' एवो पाठ कहेवो.

१५. [प्र०] हे भगवन्! आ रत्नप्रभापृथिवीना त्रीश लाख नरकावासोमांना संख्याता योजनविस्तारवाळा नरकावासोने विषे शुं सम्यग्दृष्टि नारको उत्पन्न थाय, मिथ्यादृष्टि नारको उत्पन्न थाय के सम्यग्मिथ्यादृष्टि नारको उत्पन्न थाय? [उ०] हे गौतम! सम्यग्दृष्टि पण नारको उपजे, मिथ्यादृष्टि पण नारको उपजे, परन्तु सम्यग्मिथ्यादृष्टि नारको उत्पन्न थता नथी.

रत्नप्रभामां संख्यातायोजन विस्तारवाळा नरकावासोमां सम्यग्दृष्टि वगेरेनो उत्पाद.

९ * प्रथमनी बे नरक पृथिवीमां कापोतलेश्या होय छे, त्रीजी नरकपृथिवीमां मिश्र–कापोत अने नील बन्ने लेश्या छे. चतुर्थ पृथिवीमां नीललेश्या छे, पांचमी पृथिवीमां मिश्र–कृष्ण अने नील बन्ने लेश्या छे, छट्ठी पृथिवीमां कृष्णलेश्या छे अने सातमी नरकपृथिवीमां परमकृष्णलेश्या छे.

† भग० खं० १ श० १ उ० २ पृ० १०४. जुओ प्रज्ञा० लेश्या पद १७ उ० २ प० ३४३–२.

१० ‡ अवधिज्ञानी अने अवधिदर्शनी प्रायः तीर्थंकर ज होय अने चोथी आदि नरकपृथिवीथी नीकळेला तीर्थंकर न थाय माटे 'अहिंथी अवधिज्ञानी अने अवधिदर्शनी च्यवता नथी' एम कह्युं छे–टीका.

१६. [प्र०] इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेजवित्थडेसु नरएसु किं सम्मदिट्ठी नेरइया उव्वट्टंति ? [उ०] एवं चेव ।

१७. [प्र०] इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेजवित्थडा नरगा किं सम्मदिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया, मिच्छादिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया, सम्मामिच्छदिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सम्मदिट्ठीहिं वि नेरइएहिं अविरहिया, मिच्छादिट्ठीहिं वि नेरइएहिं अविरहिया, सम्मामिच्छादिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया विरहिया वा । एवं असंखेजवित्थडेसु वि तिन्नि गमगा भाणियव्वा । एवं सक्करप्पभाए वि, एवं जाव-तमाए वि ।

१८. [प्र०] अहेसत्तमाए णं भंते ! पुढवीए पंचसु अणुत्तरेसु जाव-संखेजवित्थडे नरए किं सम्मदिट्ठी नेरइया-पुच्छा । [उ०] गोयमा ! सम्मदिट्ठी नेरइया न उववज्जंति, मिच्छादिट्ठी नेरइया उववज्जंति, सम्मामिच्छदिट्ठी नेरइया न उववज्जंति, एवं उव्वट्टंति वि, अविरहिए जहेव रयणप्पभाए । एवं असंखेजवित्थडेसु वि तिन्नि गमगा ।

१९. [प्र०] से नूणं भंते ! कण्हलेस्से, नीललेस्से, जाव-सुक्कलेस्से भवित्ता कण्हलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जंति ? [उ०] हंता, गोयमा ! कण्हलेस्से जाव-उववज्जंति । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-कण्हलेस्से जाव-उववज्जंति ? [उ०] गोयमा ! लेस्सट्ठाणेसु संकिलिस्समाणेसु २ कण्हलेसं परिणमइ, कण्ह० २-णमित्ता कण्हलेसेसु नेरइएसु उववज्जंति, से तेणट्ठेणं जाव-उववज्जंति ।

२०. [प्र०] से नूणं भंते ! कण्हलेस्से जाव-सुक्कलेस्से भवित्ता नीललेस्सेसु नेरइएसु उववज्जंति ? [उ०] हंता, गोयमा ! जाव-उववज्जंति । [प्र०] से केणट्ठेणं जाव-उववज्जंति ? [उ०] गोयमा ! लेस्सट्ठाणेसु संकिलिस्समाणेसु वा विसुज्झमाणेसु वा नीललेस्सं परिणमंति, नील० २-णमित्ता नीललेस्सेसु नेरइएसु उववज्जंति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव-उववज्जंति ।

२१. [प्र०] से नूणं भंते ! कण्हलेस्से नील० जाव-भवित्ता काउलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जंति ? [उ०] एवं जहा नीललेस्साए तहा काउलेस्साए वि भाणियव्वा, जाव-से तेणट्ठेणं जाव-उववज्जंति । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति ।

त्रयोदश शतके प्रथम उद्देशक समाप्त.

सम्यग्दृष्टि वगेरेनी उद्वर्तना.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! आ रत्नप्रभापृथ्वीना त्रीश लाख नरकावासोमांना संख्यातायोजनविस्तारवाळा नरकावासोने विषे शुं सम्यग्दृष्टि नारकी च्यवे ?-इत्यादि प्रश्न. [उ०] पूर्वे प्रमाणे जाणवुं.

सम्यग्दृष्टि वगेरेथी अविरहित होय.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! रत्नप्रभापृथ्वीना त्रीश लाख नरकावासोमांना संख्याता योजनविस्तारवाळा नरकावासो शुं सम्यग्दृष्टि नारको वडे अविरहित-सहित छे, मिथ्यादृष्टि नारको वडे अविरहित छे के सम्यग्मिथ्यादृष्टि नारको वडे अविरहित छे ? [उ०] हे गौतम ! सम्यग्दृष्टि नारको वडे अविरहित छे, अने मिथ्यादृष्टि नारको वडे अविरहित छे, परन्तु सम्यग्मिथ्यादृष्टि नारको वडे कदाचित् अविरहित होय छे अने कदाचित् विरहित होय छे. ए प्रमाणे असंख्याता योजनविस्तारवाळा नरकोने विषे पण [उत्पाद, उद्वर्तना अने सत्ता संबन्धे] त्रण आलापक कहेवा. ए प्रमाणे शर्कराप्रभाने विषे अने यावत्-तमापृथिवी सुधी कहेवुं.

सप्तम नरकमां सम्यग्दृष्टि वगेरे उपजे ?

१८. [प्र०] हे भगवन् ! अधःसप्तमपृथ्वीना पांच अनुत्तर नरकावासोमांना यावत्-संख्याता योजनविस्तारवाळा नरकावासने विषे शुं सम्यग्दृष्टि नारको उत्पन्न थाय ?-इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! सम्यग्दृष्टि नारको उत्पन्न थता नथी, पण मिथ्यादृष्टि नारको उत्पन्न थाय छे. सम्यग्मिथ्यादृष्टि नारको उत्पन्न थता नथी. [सम्यग्मिथ्यादृष्टि काल न करे माटे न उपजे.] ए प्रमाणे उद्वर्तना पण कहेवी. जेम रत्नप्रभाने विषे सत्ता संबन्धे नारको मिथ्यादृष्ट्यादिवडे अविरहित-सहित कह्या छे तेम अहिं कहेवुं, ए प्रमाणे असंख्याता योजनविस्तारवाळा नरकावासोने विषे पण त्रण आलापको कहेवा.

कृष्णादिलेश्यावाळो थईने कृष्णलेश्यावाळा नारकोमां उत्पन्न थाय ?

१९. [प्र०] हे भगवन् ! खरेखर कृष्णलेश्यावाळो, नीललेश्यावाळो, यावत्-शुक्ललेश्यावाळो थईने कृष्णलेश्यावाळा नारकोने विषे उत्पन्न थाय ? [उ०] हा, गौतम ! कृष्णलेश्यावाळो थईने यावत्-उत्पन्न थाय. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी आप एम कहो छो के 'कृष्णलेश्यावाळो थईने यावत्-उत्पन्न थाय ?' [उ०] हे गौतम ! लेश्याना स्थानको संक्लेशने पामतां पामतां कृष्णलेश्यारूपे परिणमे छे, कृष्णलेश्यारूपे परिणाम थया बाद ते कृष्णलेश्यावाळा नारकोने विषे उत्पन्न थाय छे, ते कारणथी यावत्-'उत्पन्न थाय छे.'

नीललेश्यावाळा नारकोमां उत्पन्न थाय ? तेनो हेतु.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! शुं खरेखर कृष्णलेश्यावाळो, यावत्-शुक्ललेश्यावाळो थईने नीललेश्यावाळा नारकोने विषे उत्पन्न थाय ? [उ०] हा, गौतम ! यावत्-उत्पन्न थाय. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी यावत्-उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! लेश्याना स्थानको संक्लेशने पामतां अने विशुद्धि पामतां, नीललेश्यारूपे परिणमे छे, नीललेश्यारूपे परिणाम थया बाद नीललेश्यावाळा नारकोमां ते उत्पन्न थाय छे, ते हेतुथी हे गौतम ! यावत् उत्पन्न थाय छे.

कापोतलेश्यावाळा नारकोमां उपजे ?

२१. [प्र०] हे भगवन् ! खरेखर कृष्णलेश्यावाळो, नीललेश्यावाळो, अने यावत्-[शुक्ललेश्यावाळो थईने] कापोतलेश्यावाळा नारकोने विषे उत्पन्न थाय ? [उ०] जेम नीललेश्या संबन्धे कह्युं, तेम कापोतलेश्या संबन्धे पण यावत्-'ते हेतुथी यावत्-उत्पन्न थाय छे,' त्यां सुधी कहेवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.'

त्रयोदश शतके प्रथम उद्देशक समाप्त.

बीओ उद्देसो.

१. [प्र०] कइविहा णं भंते ! देवा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! चउव्विहा देवा पन्नत्ता, तंजहा— भवणवासी, २ वाणमंतरा, ३ जोइसिआ, ४ वेमाणिआ ।

२. [प्र०] भवणवासी णं भंते ! देवा कतिविहा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, तंजहा— १ असुरकुमारा—एवं भेओ जहा बितियसए देवुद्देसए, जाव—अपराजिया, सव्वट्ठसिद्धगा ।

३. [प्र०] केवइया णं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! चोसट्ठिं असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता [प्र०] ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ? [उ०] गोयमा ! संखेज्जवित्थडा वि, असंखेज्जवित्थडा वि ।

४. [प्र०] चोसट्ठीए णं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु असुरकुमारावासेसु एगसमएणं केवतिया असुरकुमारा उववज्जंति, जाव—केवतिया तेउलेस्सा उववज्जंति, केवतिया कण्हपक्खिया उववज्जंति ? एवं जहा रयणप्पभाए तहेव पुच्छा, तहेव वागरणं; नवरं दोहिं वेदेहिं उववज्जंति, नपुंसगवेयगा न उववज्जंति, सेसं तं चेव । उव्वट्टंतगा वि तहेव, नवरं असन्नी उव्वट्टंति । ओहिनाणी ओहिदंसणी य ण उव्वट्टंति, सेसं तं चेव, पन्नत्ता एसु तहेव, नवरं संखेज्जगा इत्थि-

द्वितीय उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! केटला प्रकारना देवो कहेला छे ? [उ०] हे गौतम ! चार प्रकारना देवो कहेला छे, ते आ प्रमाणे—१ भवनवासी, २ वानव्यंतर, ३ ज्योतिषिक अने ४ वैमानिक.

देवोना प्रकार.

२. [प्र०] हे भगवन् ! भवनवासी देवो केटला प्रकारना कहेला छे ? [उ०] हे गौतम ! दश प्रकारना कहेला छे, ते आ प्रमाणे—१ असुरकुमार—इत्यादि भेदो बीजा शतकना *देवोद्देशकमां कह्या प्रमाणे यावत् 'अपराजित अने सर्वार्थसिद्ध' पर्यन्त कहेवा.

भवनवासी देवोना प्रकार.

३. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमारना केटला लाख आवासो कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! चोसठ लाख असुरकुमारना आवासो कहेला छे. [प्र०] हे भगवन् ! ते असुरकुमारना आवासो संख्याता योजनविस्तारवाळा छे के असंख्यातायोजनविस्तारवाळा छे ? [उ०] हे गौतम ! †संख्याता योजनविस्तारवाळा पण छे अने असंख्यातयोजनविस्तारवाळा पण छे.

असुरकुमारना आवासो.

४. [प्र०] हे भगवन् ! चोसठ लाख असुरकुमारना आवासोमांना संख्यातायोजनविस्तारवाळा असुरकुमारोना आवासोमां एक समये केटला असुरकुमारो उपजे, यावत्—केटला तेजोलेश्यावाळा उत्पन्न थाय, केटला कृष्णपाक्षिक जीवो उत्पन्न थाय ? ए प्रमाणे जेम रत्नप्रभा संबंधे [उ० १ प्र० ४] प्रश्न कर्यो हतो, तेम अहिं प्रश्न करवो. अने ते प्रकारे उत्तर पण आपवो, परन्तु एटलो विशेष छे के अहीं बे वेदो सहित उपजे, नपुंसकवेदवाळा न उपजे, बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. उद्वर्तना संबंधे पण तेज प्रमाणे जाणवुं, परन्तु एटलो

असुरकुमारनो उत्पाद.

उद्वर्तना.

---

२ * भग० खं० १ श० २ उ० ७ पृ० २९५. जुओ बीजा० प्रति० १ प० ४८–१.

३ † असुरकुमारादिना जे भवनो सौथी न्हानां छे, ते जंबूद्वीपना समान छे, मध्यम संख्याता योजनविस्तारवाळा छे अने बाकीना (मोटां) छे ते असंख्ययोजनना विस्तारवाळा छे.

वेदगा पण्णत्ता, एवं पुरिसवेदगा वि, नपुंसगवेदगा नत्थि। कोहकसाई सिय अत्थि सिय नत्थि, जइ अत्थि जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा पण्णत्ता। एवं माण० माय०। संखेज्जा लोभकसाई पण्णत्ता, सेसं तं चेव। तिसु वि गमएसु संखेज्जेसु चत्तारि लेस्साओ भाणियव्वाओ, एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि, नवरं तिसु वि गमएसु असंखेज्जा भाणियव्वा, जाव-असंखेज्जा अचरिमा पण्णत्ता।

५. [प्र०] केवतिया णं भंते! नागकुमारावास०? [उ०] एवं जाव-थणियकुमारा, नवरं जत्थ जत्तिया भवणा।

६. [प्र०] केवतिया णं भंते! वाणमंतरावाससयसहस्सा पन्नत्ता? [उ०] गोयमा! असंखेज्जा वाणमंतरावाससयसहस्सा पन्नत्ता। [प्र०] ते णं भंते! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा? [उ०] गोयमा! संखेज्जवित्थडा, नो असंखेज्जवित्थडा।

७. [प्र०] संखेज्जेसु णं भंते! वाणमंतरावाससयसहस्सेसु एगसमएणं केवतिया वाणमंतरा उववज्जंति? [उ०] एवं जहा असुरकुमाराणं संखेज्जवित्थडेसु तिन्नि गमगा तहेव भाणियव्वा वाणमंतराण वि तिन्नि गमगा।

८. [प्र०] केवतिया णं भंते! जोतिसियविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता? [उ०] गोयमा! असंखेज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता। [प्र०] ते णं भंते! किं संखेज्जवित्थडा०? [उ०] एवं जहा वाणमंतराणं तहा जोइसियाण वि तिन्नि गमगा भाणियव्वा, नवरं एगा तेउलेस्सा। उववज्जंतेसु पन्नत्तेसु य असन्नी नत्थि, सेसं तं चेव।

विशेष छे के असंज्ञी उद्वर्ते छे-च्यवे छे, [कारण के ईशानदेवलोकसुधीना देवो पृथिवीकायादि असंज्ञीमां उपजे छे.] अवधिज्ञानी अने अवधिदर्शनी त्यांथी उद्वर्तता-नीकळतां नथी, [कारण के असुरकुमारादिथी नीकळेला तीर्थंकरादि न थाय अने अवधिज्ञान अने अवधिदर्शनसहित तीर्थंकरादि ज उद्वर्ते.] बाकीनुं बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. सत्ताने आश्रयी पूर्वे ज कहेलुं छे ते प्रमाणे सर्व कहेवुं. परन्तु एटलो विशेष छे के त्यां संख्याता स्त्रीवेदवाळा कहेला छे. ए प्रमाणे पुरुषवेदवाळा पण कहेला छे, नपुंसकवेदवाळा नथी. *क्रोधकषायवाळा कदाचित् होय छे अने कदाचित् होता नथी. जो होय छे तो जघन्यथी एक, बे के त्रण अने उत्कृष्टथी संख्याता होय छे, ए प्रमाणे मान अने माया संबंधे पण जाणवुं. लोभकषायवाळा संख्याता कहेला छे. [कारण के देवगतिमां लोभकषायी घणा होय छे, तेथी हमेशां ते संख्याता ज होय.] बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. संख्यातासंबन्धे उत्पाद, उद्वर्तना अने सत्ताना त्रण आलापकोने विषे चार लेश्याओ कहेवी. ए प्रमाणे असंख्याता योजनविस्तारवाळा असुरकुमारावासो संबंधे पण जाणवुं, परन्तु त्रणे आलापकोने विषे 'असंख्याता' पाठ कहेवो, यावत्-'असंख्याता अचरम कह्या' छे.

नागकुमारादिना आवासो.

५. [प्र०] हे भगवन्! केटला लाख नागकुमारना आवासो कहेला छे? [उ०] पूर्व प्रमाणे जाणवा. यावत्-स्तनितकुमार सुधी [उत्पाद, उद्वर्तना अने सत्ता संबंधे त्रण आलापक] कहेवा, परन्तु एटलो विशेष छे के ज्यां जेटला लाख भवनो होय त्यां †तेटला लाख भवनो कहेवां.

वानव्यंतर देवोना आवास.

६. [प्र०] हे भगवन्! वानव्यंतरदेवोना केटला लाख आवासो कहेला छे? [उ०] हे गौतम! वानव्यंतरदेवोना असंख्याता लाख आवासो कहेला छे. [प्र०] हे भगवन्! ते आवासो शुं संख्यातयोजनविस्तारवाळा छे के असंख्यातयोजनविस्तारवाळा छे? [उ०] हे गौतम! संख्यात योजनविस्तारवाळा छे, पण असंख्यात योजनविस्तारवाळा नथी.

एक समये वानव्यन्तर देवोनो उत्पाद.

७. [प्र०] हे भगवन्! संख्यातालाख योजनविस्तारवाळा वानव्यंतरदेवोना आवासने विषे एक समये केटला वानव्यंतरदेवो उपजे? [उ०] जेम असुरकुमारोना संख्याता योजनविस्तारवाळा आवासोने विषे त्रण आलापको कह्या छे ते प्रमाणे वानव्यंतर संबन्धे पण त्रण आलापको कहेवा.

ज्योतिषिक देवोना विमानावास.

८. [प्र०] हे भगवन्! ज्योतिषिक देवोना केटला लाख विमानावासो कह्या छे? [उ०] हे गौतम! ज्योतिषिक देवोना असंख्याता लाख विमानावासो कहेला छे. [प्र०] हे भगवन्! ते विमानावासो शुं संख्यात योजनविस्तारवाळा छे के असंख्यात योजनविस्तारवाळा छे? [उ०] ए प्रमाणे जेम वानव्यंतर देवो संबंधे कह्युं छे, ते प्रमाणे ज्योतिषिकोने पण त्रण आलापको कहेवा, परन्तु एटलो विशेष छे के अहिं एक मात्र तेजोलेश्या कहेवी. उत्पादने विषे अने सत्ताने विषे असंज्ञी जीवो उपजता तेम उद्वर्तता नथी, बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं.

---

४ * देवोमां क्रोध, मान अने मायारूप कषायना उदयवाळा कोइक समये ज होय छे, माटे 'कदाचित् होय छे अने कदाचित् होता नथी'-एम कह्युं छे, अने लोभकषायना उदयवाळा सर्वदा होय छे, माटे 'संख्याता लोभकषायी होय छे'-एम कह्युं छे.

५ † असुरकुमारने चोसठ लाख, नागकुमारने चोराशी लाख, सुवर्णकुमारने बहोंतेर लाख, वायुकुमारने छन्नुं लाख, द्वीपकुमार, दिक्कुमार, उदधिकुमार, विद्युत्कुमार, स्तनितकुमार अने अग्निकुमारना प्रत्येक युगलने छोंतेर लाख भवनो होय छे.-टीका.

९. [प्र०] सोहम्मे णं भंते ! कप्पे केवतिया विमाणावाससयसहस्सा पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता । [प्र०] ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ? [उ०] गोयमा ! संखेज्जवित्थडा वि असंखेज्जवित्थडा वि ।

१०. [प्र०] सोहम्मे णं भंते ! कप्पे बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु विमाणेसु एगसमएणं केवतिया सोहम्मा देवा उववज्जंति, केवतिया तेउलेस्सा उववज्जंति? [उ०] एवं जहा जोइसियाणं तिन्नि गमगा तहेव तिन्नि गमगा भाणियव्वा, नवरं तिसु वि 'संखेज्जा' भाणियव्वा, ओहिनाणी ओहिदंसणी य चयावेयव्वा, सेसं तं चेव । असंखेज्जवित्थडेसु एवं चेव तिन्नि गमगा, नवरं तिसु वि गमएसु 'असंखेज्जा' भाणियव्वा । ओहिनाणी य ओहिदंसणी य संखेज्जा चयंति, सेसं तं चेव । एवं जहा सोहम्मे वत्तव्वया भणिया तहा ईसाणे वि छ गमगा भाणियव्वा । सणंकुमारे एवं चेव, नवरं इत्थीवेयगा न उववज्जंति, पन्नत्तेसु य न भण्णंति, असन्नी तिसु वि गमएसु न भण्णंति, सेसं तं चेव, एवं जाव–सहस्सारे, नाणत्तं विमाणेसु लेस्सासु य, सेसं तं चेव ।

११. [प्र०] आणय–पाणएसु णं भंते ! कप्पेसु केवतिया विमाणावाससया पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! चत्तारि विमाणावाससया पण्णत्ता । [प्र०] ते णं भंते ! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा ? [उ०] गोयमा ! संखेज्जवित्थडा वि, असंखेज्जवित्थडा वि । एवं संखेज्जवित्थडेसु तिन्नि गमगा जहा सहस्सारे, असंखेज्जवित्थडेसु उववज्जंतेसु य चयंतेसु य एवं चेव 'संखेज्जा' भाणियव्वा, पन्नत्तेसु असंखेज्जा, नवरं नोइंदियोवउत्ता अणंतरोववन्नगा अणंतरोगाढगा अणंतराहारगा अणंतरपज्जत्तगा य एएसिं जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा, पन्नत्तेसु असंखेज्जा भाणियव्वा । आरण–च्चुएसु एवं चेव जहा आणय–पाणएसु, नाणत्तं विमाणेसु, एवं गेवेज्जगा वि ।

९. [प्र०] हे भगवन् ! सौधर्म देवलोकने विषे केटला लाख विमानावासो कहेला छे? [उ०] हे गौतम ! बत्रीश लाख विमानावासो कहेला छे. [प्र०] हे भगवन् ! ते विमानावासो शुं संख्याता योजनविस्तारवाळा छे के असंख्यातयोजनविस्तारवाळा छे? [उ०] हे गौतम ! संख्याता योजनविस्तारवाळा छे अने असंख्यात योजनविस्तारवाळा पण छे.

सौधर्मदेवलोकमां विमानावास.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! सौधर्म देवलोकने विषे बत्रीश लाख विमानावासोमांना संख्यातायोजन विस्तारवाळा विमानोने विषे एक समये केटला सौधर्म देवो उत्पन्न थाय, केटला तेजोलेश्यावाळा उत्पन्न थाय? [उ०] जेम ज्योतिषिकोने त्रण आलापको कह्यां तेम अहिं पण त्रण आलापको कहेवां, परन्तु त्रणे आलापकोमां 'संख्याता' एवो पाठ कहेवो. [अहिंथी नीकळी तीर्थंकरादि थाय माटे] 'अवधिज्ञानी अने अवधिदर्शनी च्यवे'–एम कहेवुं, बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. असंख्यातायोजनविस्तारवाळा विमानावासोमां ए प्रमाणे त्रण आलापको कहेवा, परन्तु एटलो विशेष छे के ए त्रणे आलापकोमां 'असंख्याता' एवो पाठ कहेवो. अवधिज्ञानी अने अवधिदर्शनी संख्याता च्यवे छे. [केमके तीर्थंकरादिक अवधिज्ञान अने अवधिदर्शन सहित च्यवे अने ते संख्याता होय.] बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे जेम सौधर्म देवलोकनी वक्तव्यता कही, तेम ईशान देवलोकने विषे [त्रण संख्याताना अने त्रण असंख्याताना] ए प्रमाणे छ आलापको कहेवा. सनत्कुमारने विषे पण एमज जाणवुं, परन्तु एटलो विशेष छे के अहिं स्त्रीवेदवाळा उत्पन्न थता नथी, तेम सत्तामां पण होता नथी. त्रणे आलापकोने विषे असंज्ञी न कहेवा. [कारण के अहिं संज्ञीथी आवी उपजे छे अने संज्ञीने विषे जाय छे.] बाकीनुं बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे यावत्–सहस्रार देवलोक सुधी जाणवुं, परन्तु विमानो अने लेश्याओमां विशेष छे. बाकी बधुं पूर्वनी पेठे जाणवुं.

एक समये सौधर्मथी मांडीने सहस्रारसुधी देवोनो उत्पाद.

११. [प्र०] हे भगवन् ! आनत अने प्राणत देवलोकने विषे केटला शत (सेंकडो) विमानावासो कहेला छे? [उ०] हे गौतम ! चारसो विमानावासो कहेला छे. [प्र०] हे भगवन् ! ते विमानावासो शुं संख्याता योजनविस्तारवाळा छे के असंख्यातायोजनविस्तारवाळा छे? [उ०] हे गौतम ! संख्याता योजन विस्तारवाळा पण छे अने असंख्यातयोजनविस्तारवाळा पण छे. ए प्रमाणे संख्यातायोजनविस्तारवाळा विमानावासोने विषे त्रण आलापको सहस्रार देवलोकनी पेठे कहेवा. *असंख्यात योजनविस्तारवाळा विमानोने विषे उत्पाद अने च्यवन संबन्धे ए प्रमाणे 'संख्याता' ज कहेवा; सत्तामां असंख्याता कहेवा; परन्तु एटलो विशेष छे के नोइंद्रिय–मनना उपयोगवाळा, अनन्तरोपपन्नक, अनन्तरावगाढ, अनंतराहारक अने अनंतरपर्याप्त–ए पांच पदने विषे जघन्यथकी एक, बे के त्रण अने उत्कृष्टथी संख्याता उपजे, अने सत्तामां असंख्याता होय–एम कहेवुं. जेम आनत अने प्राणतने विषे कह्युं, तेम आरण अने अच्युतने विषे पण ए प्रमाणे जाणवुं, परंतु विमानोनी संख्यामां †विशेषता छे. ए प्रमाणे ग्रैवेयक संबंधे पण जाणवुं.

आनत अने प्राणत देवलोकमां विमानावास.

ग्रैवेयक.

११ * आनतादि देवलोकमां संख्यातायोजनविस्तारवाळा विमानावासमां उत्पाद, च्यवन अने स्थिति विषे संख्याता देवो होय छे, अने असंख्यात योजनविस्तारवाळा विमानोमां उत्पाद अने च्यवनने विषे संख्याता होय छे, अने स्थितिविषे असंख्याता देवो होय छे, कारण के गर्भज मनुष्य थकी ज आनतादि देवोमां उत्पन्न थाय छे, तथा ते देवो त्यांथी च्यवीने गर्भज मनुष्यमां ज उत्पन्न थाय छे, अने ते संख्याताज होय छे, माटे एक समये संख्यातानो ज उत्पाद अने च्यवन संभवे छे, अने तेओनुं आयुष असंख्यवर्षनुं होवाथी तेना जीवनकाळमां असंख्य देवो उपजे छे, तेथी स्थितिने विषे असंख्याता देवो होय छे.–टीका.

† अहिं आरण अने अच्युत देवलोकमां त्रणसो विमान छे.

१२. [प्र०] कति णं भंते! अणुत्तरविमाणा पन्नत्ता? [उ०] गोयमा! पंच अणुत्तरविमाणा पन्नत्ता। [प्र०] ते णं भंते! किं संखेज्जवित्थडा, असंखेज्जवित्थडा? [उ०] गोयमा! संखेज्जवित्थडे य असंखेज्जवित्थडा य।

१३. [प्र०] पंचसु णं भंते! अणुत्तरविमाणेसु संखेज्जवित्थडे विमाणे एगसमएणं केवतिया अणुत्तरोववाइया देवा उववज्जंति, केवतिया सुक्कलेस्सा उववज्जंति–पुच्छा तहेव। [उ०] गोयमा! पंचसु णं अणुत्तरविमाणेसु संखेज्जवित्थडे अणुत्तरविमाणे एगसमएणं जहन्नेणं एक्को वा दोवा तिन्नि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा अणुत्तरोववाइया देवा उववज्जंति, एवं जहा गेवेज्जविमाणेसु संखेज्जवित्थडेसु, नवरं किण्हपक्खिया, अभवसिद्धिया, तिसु अन्नाणेसु एए न उववज्जंति, न चयंति, न पन्नत्तएसु भाणियव्वा, अचरिमा वि खोडिज्जंति, जाव–संखेज्जा चरिमा पन्नत्ता, सेसं तं चेव। असंखेज्जवित्थडेसु वि एए न भन्नंति, नवरं अचरिमा अत्थि, सेसं जहा गेवेज्जएसु असंखेज्जवित्थडेसु जाव–असंखेज्जा अचरिमा पन्नत्ता।

१४. [प्र०] चोसट्ठीए णं भंते! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु संखेज्जवित्थडेसु असुरकुमारावासेसु किं सम्मद्दिट्ठी असुरकुमारा उववज्जंति, मिच्छादिट्ठी? [उ०] एवं जहा रयणप्पभाए तिन्नि आलावगा भणिया तहा भाणियव्वा। एवं असंखेज्जवित्थडेसु वि तिन्नि गमगा, एवं जाव–गेवेज्जविमाणे, अणुत्तरविमाणेसु एवं चेव, नवरं तिसु वि आलावएसु मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी य न भन्नंति, सेसं तं चेव।

१५. [प्र०] से नूणं भंते! कण्हलेस्से, नील० जाव–सुक्कलेस्से भवित्ता कण्हलेस्सेसु देवेसु उववज्जंति? [उ०] हंता गोयमा! एवं जहेव नेरइएसु पढमे उद्देसए तहेव भाणियव्वं, नीललेसाए वि जहेव नेरइयाणं, जहा नीललेस्साए एवं जाव–पम्हलेस्सेसु, सुक्कलेस्सेसु एवं चेव, नवरं लेस्सट्ठाणेसु विसुज्झमाणेसु २ सुक्कलेस्सं परिणमति, सु० २ परिणमित्ता सुक्कलेस्सेसु देवेसु उववज्जंति। से तेणट्ठेणं जाव–उववज्जंति। 'सेवं भंते! सेवं भंते'! त्ति।

तेरसमसए बीओ उद्देसो समत्तो

अनुत्तर विमानो.

१२. [प्र०] हे भगवन्! केटलां अनुत्तर विमानो कह्यां छे? [उ०] हे गौतम! पांच अनुत्तर विमानो कहेलां छे. [प्र०] हे भगवन्! ते अनुत्तर विमानो संख्याता योजनविस्तारवाळां छे के असंख्याता योजनविस्तारवाळां छे? [उ०] हे गौतम! *संख्याता योजनविस्तारवाळुं पण छे, तेमज असंख्याता योजनविस्तारवाळां पण छे.

पांच अनुत्तरमां एक समये देवोना उत्पादादि.

१३. [प्र०] हे भगवन्! पांच अनुत्तर विमानोमांना संख्याता योजन विस्तारवाळा विमानने विषे एक समये केटला अनुत्तरौपपातिक देवो उत्पन्न थाय, केटला शुक्ललेश्यावाळा उत्पन्न थाय–इत्यादि प्रश्न करवो. [उ०] हे गौतम! पांच अनुत्तरविमानोमां संख्याता योजन विस्तारवाळा सर्वार्थसिद्ध अनुत्तर विमानने विषे जघन्यथी एक, बे के त्रण, अने उत्कृष्टथी संख्याता अनुत्तरौपपातिक देवो उत्पन्न थाय छे. ए प्रमाणे जेम संख्याता विस्तारवाळा ग्रैवेयक विमानो संबन्धे कह्युं ते प्रमाणे अहिं कहेवुं, परन्तु एटलो विशेष के कृष्णपाक्षिको, अभव्यो अने त्रण अज्ञानने विषे वर्तता जीवो अहिं उपजता नथी, च्यवता नथी अने सत्तामां पण होता नथी–एम कहेवुं. अचरमनो (जेने छेल्लो अनुत्तर देवनो भव नथी, पण वधारे भवो छे तेनो) पण प्रतिषेध करवो, [केमके अनुत्तरसर्वार्थसिद्धने विषे जे चरम होय तेज उपजे.] यावत्–त्यां 'संख्याता चरम' (जेने छेल्लो अनुत्तर देवनो भव छे तेओ) कहेला छे. बाकी बधुं पूर्व पेटे जाणवुं. असंख्याता योजन विस्तारवाळां अनुत्तर विमानोने विषे पण पूर्वोक्त (कृष्णपाक्षिकादिक) न कहेवा, पण त्यां अचरम (जेने ते छेल्लो भव नथी एवा) उपजे छे. बाकी जेम ग्रैवेयकने विषे कह्युं तेम असंख्याता योजन विस्तारवाळा अनुत्तर विमानोने विषे यावत्–'असंख्याता अचरम कह्या छे' त्यां सुधी जाणवुं.

असुरकुमारावासमां सम्यग्दृष्ट्यादि उपजे?

१४. [प्र०] हे भगवन्! चोसठलाख असुरकुमारना आवासोमांना संख्यातायोजन विस्तारवाळा असुरकुमारना आवासोने विषे शुं सम्यग्दृष्टि असुरकुमारो उत्पन्न थाय, मिथ्यादृष्टि असुरकुमारो उत्पन्न थाय, (के मिश्रदृष्टि उत्पन्न थाय)? [उ०] ए प्रमाणे जेम रत्नप्रभा संबन्धे त्रण आलापको कह्या (उ० १ सू० १३.) तेम अहिं पण कहेवा. ए प्रमाणे असंख्याता योजन विस्तारवाळा असुरकुमारोना आवासोने विषे पण सम्यग्दृष्टि, मिथ्यादृष्टि अने मिश्रदृष्टि संबन्धे ए त्रण आलापको कहेवा. ए प्रमाणे यावत्–ग्रैवेयक विमानने विषे अने अनुत्तर विमानने विषे पण जाणवुं, परन्तु एटलो विशेष छे के अनुत्तरविमानसंबन्धे उत्पाद, च्यवन अने सत्ताना त्रण आलापकने विषे मिथ्यादृष्टि अने मिश्रदृष्टि न कहेवा. बाकी बधुं पूर्व पेठे जाणवुं.

कृष्णादिलेश्यावाळा थईने कृष्णलेश्यावाळा देवोमां उत्पन्न थाय?

१५. [प्र०] हे भगवन्! खरेखर कृष्णलेश्यावाळा, नीललेश्यावाळा, यावत्–शुक्ललेश्यावाळा थईने कृष्णलेश्यावाळा देवोमां उत्पन्न थाय? [उ०] हा, गौतम! जेम नारको संबन्धे प्रथम उद्देशकमां (सू० १९) कह्युं छे ते प्रमाणे जाणवुं. नीललेश्यावाळाने पण जेम नारकोने कह्युं छे तेम कहेवुं. जेम नीललेश्यावाळाने विषे कह्युं छे तेम यावत्–पद्मलेश्यावाळा अने शुक्ललेश्यावाळा माटे पण जाणवुं. परन्तु एटलो विशेष छे के–लेश्याना स्थानको विशुद्ध थतां थतां शुक्ललेश्यारूपे परिणमे छे, शुक्ललेश्यारूपे परिणमन थया पछी शुक्ललेश्यावाळा देवोमां ते उत्पन्न थाय छे, ते कारणथी हे गौतम! यावत् 'उत्पन्न थाय छे.' 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे.'

त्रयोदश शतके द्वितीय उद्देशक समाप्त.

---

१२ * तेमां वचेनुं सर्वार्थसिद्ध विमान लक्ष योजन प्रमाण होवाथी संख्याता योजन विस्तारवाळुं छे, अने विजयादि चार विमानो असंख्ययोजनविस्तारवाळां छे.

तईओ उद्देसो।

१. [प्र०] नेरइया णं भंते! अणंतराहारा, ततो निव्वत्तणया, एवं परियारणापदं निरवसेसं भाणियव्वं। 'सेवं भंते! सेवं भंते'! त्ति।

तेरसमसए तईओ उद्देसो समत्तो.

तृतीय उद्देशक.

नारको अनन्तराहारी होय अने त्यार बाद अनुक्रमे परिचारणा करे?

१. [प्र०] हे भगवन्! नारको [उपजवाना क्षेत्रने प्राप्त थतां] अनन्तराहारी–तुरतज आहार करवावाळा होय? अने त्यार पछी निर्वर्तना–शरीरनी उत्पत्ति करे, [त्यार पछी लोमाहारादिद्वारा पुद्गलो ग्रहण करे, त्यार पछी इन्द्रियादिरूपे पुद्गलोनो परिणाम करे, त्यार बाद परिचारणा–शब्दादि विषयोनो उपभोग–करे, अने त्यार पछी अनेक प्रकारना रूपो विकुर्वे? [उ०] [हा, गौतम!] इत्यादि प्रज्ञापना सूत्रनुं *परिचारणा पद समग्र कहेवुं. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे.'

त्रयोदश शतके तृतीय उद्देशक समाप्त.

१ * प्रज्ञा० पद ३४ प० ५४२.

चउत्थो उद्देसो।

१. [प्र०] कति णं भंते! पुढवीओ पन्नत्ताओ? [उ०] गोयमा! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, तंजहा–१ रयणप्पभा, जाव–७ अहेसत्तमा।

२. [प्र०] अहेसत्तमाए णं भंते! पुढवीए पंच अणुत्तरा महतिमहालया जाव–अपइट्ठाणे। ते णं नरगा छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरएहिंतो १ महंततरा चेव, २ महाविच्छिन्नतरा चेव, ३ महावासतरा चेव, ४ महापइरिक्कतरा चेव; १ णो तहा महापवेसणतरा चेव, २ आइन्नतरा चेव, ३ आउलतरा चेव, ४ अणोमाणतरा चेव। तेसु णं नरएसु नेरतिया छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइएहिंतो १ महाकम्मतरा चेव, २ महाकिरियतरा चेव, ३ महासवतरा चेव, ४ महावेयणतरा चेव; नो तहा १ अप्पकम्मतरा चेव, २ अप्पकिरियतरा चेव, ३ अप्पासवतरा चेव, ४ अप्पवेदणतरा चेव; १ अप्पड्ढियतरा चेव, २ अप्पज्जुत्तियतरा चेव; १ नो तहा महड्ढियतरा चेव, २ महज्जुइयतरा चेव। छट्ठीए णं तमाए पुढवीए एगे पंचूणे निरयावाससयसहस्से पण्णत्ते, ते णं नरगा अहेसत्तमाए पुढवीए नरएहिंतो नो तहा महत्तरा चेव, महाविच्छिन्नतरा चेव ४; महप्पवेसणतरा चेव आइन्नतरा चेव ४। तेसु णं नरएसु णं नेरतिया अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइएहिंतो अप्पकम्मतरा चेव अप्पकिरियतरा चेव ४; नो तहा महाकम्मतरा चेव, महाकिरियतरा चेव ४। महड्ढियतरा चेव महाज्जुइयतरा चेव, नो तहा अप्प-

चतुर्थ उद्देशक.

नरकपृथिवी.

१. [प्र०] हे भगवन्! केटली नरक पृथिवीओ कही छे? [उ०] हे गौतम! *सात पृथिवीओ कही छे. ते आ प्रमाणे–१ रत्नप्रभा, यावत्–७ अधःसप्तम पृथिवी.

१ नैरयिकद्वार.

२. [प्र०] हे भगवन्! अधःसप्तम नरकपृथिवीमां पांच अनुत्तर अने अत्यन्त मोटा नरकावासो यावत्–'अप्रतिष्ठान' सुधी कहेला छे, ते नरकावासो छट्ठी तमःप्रभापृथिवीना नरकावासोथी अत्यन्त मोटा, अतिविस्तारवाळा, घणा अवकाशवाळा, घणाजन रहित अने शून्य छे, परन्तु ते महाप्रवेशवाळा नथी, [अर्थात् छट्ठी नरक पृथिवीमां जेम घणा जीवोनो प्रवेश थाय छे, तेम सप्तम नरकपृथिवीमां घणा जीवोनो प्रवेश थतो नथी.] [घणा नारकोवडे] ते अत्यन्त संकीर्ण अने अत्यन्त व्याप्त नथी, अर्थात् ते नरकावासो घणा विशाळ छे. ते नरकावासोमां रहेला नारको छट्ठी तमा पृथिवीना नारकोथी महाकर्मवाळा, महाक्रियावाळा, महाआश्रववाळा अने महावेदनावाळा छे, परन्तु तेओ [छट्ठी नरक पृथिवीनी अपेक्षाए] अल्पकर्मवाळा, अल्पक्रियावाळा, अल्पआश्रववाळा अने अल्पवेदनावाळा नथी. ते नारको अत्यन्त अल्पऋद्धि-वाळा अने अत्यन्त अल्पद्युतिवाळा छे; परन्तु ते महाऋद्धिवाळा अने महाद्युतिवाळा नथी. छट्ठी तमा नरकपृथिवीमां पांच न्यून एक लाख नरकावासो कहेला छे. ते नरकावासो सातमी नरकपृथिवीना नरकावासो करतां तेवा अत्यन्त मोटा अने महाविस्तारवाळा नथी, परन्तु ते महाप्रवेशवाळा अने नारकोवडे अत्यन्त संकीर्ण छे. ते नरकावासोमां नारको सातमी नरकपृथिवीना नारको करतां अल्पकर्मवाळा अने अल्पक्रियावाळा छे, परन्तु तेवा अत्यन्त महाकर्मवाळा अने महाक्रियावाळा नथी. तेओ सप्तमनरकपृथिवीना नारकोथी महाऋद्धिवाळा अने महाद्युतिवाळा छे. परन्तु तेथी अल्पऋद्धिवाळा अने अल्पद्युतिवाळा नथी, छट्ठी तमा नरकपृथिवीना नरकावासो पांचमी धूमप्रभानरकपृथिवीना

---

१ *आ उद्देशकमां १३ द्वारो कहेलां छे, ते आ प्रमाणे–१ नैरयिक, २ स्पर्श, ३ प्रणिधि, ४ निरयान्त, ५ लोकमध्य, ६ दिशा–विदिशाप्रवह, ७ अस्तिकायप्रवर्तन, ८ अस्तिकायप्रदेशस्पर्शना, ९ अवगाहना, १० जीवावगाढ, ११ अस्तिकायनिषदन, १२ बहुसम अने १३ लोकसंस्थान.

हियतरा चेव अप्पज्जुइयतरा चेव। छट्ठीए णं तमाए पुढवीए नरगा पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए नरएहिंतो महत्तरा चेव ४, नो तहा महप्पवेसणतरा चेव ४। तेसु णं नरएसु नेरतिया पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए नेरइएहिंतो महाकम्मतरा चेव ४ नो तहा अप्पकम्मतरा चेव ४; अप्पड्ढियतरा चेव २ नो तहा महड्ढियतरा चेव २। पंचमाए णं धूमप्पभाए पुढवीए तिन्नि निरयावाससयसहस्सा पन्नत्ता; एवं जहा छट्ठीए भणिया एवं सत्त वि पुढवीओ परोप्परं भण्णंति जाव–रयणप्पभंति, जाव–नो तहा महड्ढियतरा चेव, अप्पज्जुतियतरा चेव।

३. [प्र०] रयणप्पभापुढविनेरइया णं भंते! केरिसयं पुढविफासं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति? [उ०] गोयमा! अणिट्ठं, जाव–अमणामं, एवं जाव–अहेसत्तमपुढविनेरइया, एवं आउफासं, एवं जाव–वणस्सइफासं।

४. [प्र०] इमा णं भंते! रयणप्पभापुढवी दोच्चं सक्करप्पभं पुढविं पणिहाय सव्वमहंतिया बाहल्लेणं, सव्वखुड्डिया सव्वंतेसु०? [उ०] एवं जहा जीवाभिगमे बितिए नेरइयउद्देसए।

५. [प्र०] इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामंतेसु जे पुढविकाइया०? [उ०] एवं जहा नेरइयउद्देसए जाव–अहेसत्तमाए।

६. [प्र०] कहि णं भंते! लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते? [उ०] गोयमा! इमीसे णं रयणप्पभाए उवासंतरस्स असंखेज्जतिभागं ओगाहेत्ता एत्थ णं लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते।

७. [प्र०] कहि णं भंते! अहेलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते? [उ०] गोयमा! चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए उवासंतरस्स सातिरेगं अद्धं ओगाहित्ता एत्थ णं अहेलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते।

नरकावासोथी अत्यन्तमोटा छे–इत्यादि चार बोल कहेवा. परन्तु तेनी पेठे ते महाप्रवेशवाळा नथी, अर्थात् तेमां घणा जीवो प्रवेश करता नथी. ते नरकावासोमां नारकीओ पांचमी धूमप्रभा पृथिवीना नारको करतां महाकर्मवाळा छे ४, परन्तु तेवा अल्पकर्मवाळा नथी–४, ते अल्पऋद्धिवाळा छे, परन्तु ते प्रमाणे ते अत्यन्त महर्द्धिक नथी. पांचमी धूमप्रभा नरकपृथिवीमां त्रण लाख नरकावासो कहेला छे–इत्यादि जेम छट्ठी तमापृथिवी संबंधे कह्युं, तेम साते नरकपृथिवीओ संबन्धे परस्पर यावत्–'रत्नप्रभा'–सुधी कहेवुं, यावत्–तेथी [शर्कराप्रभाना नारको] महाऋद्धिवाळा नथी, पण अल्पद्युतिवाळा छे.

३. [प्र०] हे भगवन्! रत्नप्रभा पृथिवीना नारको केवा प्रकारना पृथिवीना स्पर्शने अनुभवता विहरे छे? [उ०] हे गौतम! *अनिष्ट, यावत्–मनने प्रतिकूल–[पृथिवीना स्पर्शने अनुभवता विहरे छे.] इत्यादि यावत्–अधःसप्तम पृथिवीना नारको संबंधे जाणवुं, ए रीते [अनिष्ट अने प्रतिकूल] पाणीना स्पर्शने, †यावत्–वनस्पतिना स्पर्शने (अनुभवता विहरे छे.)

१ स्पर्शद्वार.

४. [प्र०] हे भगवन्! आ रत्नप्रभा पृथिवी बीजी शर्कराप्रभापृथिवीनी अपेक्षाए जाडाइमां सर्व करतां मोटी छे, अने चारे दिशाए लंबाइ पहोळाइमां सर्वथी न्हानी छे? [उ०] हा, गौतम! इत्यादि–जेम ‡जीवाभिगम सूत्रना बीजा नैरयिक उद्देशकमां ¶कह्युं छे तेम अहिं जाणवुं.

३ प्रणिधिद्वार.

५. [प्र०] हे भगवन्! आ रत्नप्रभा पृथिवीना नरकावासोनी आसपास जे पृथिवीकायिक जीवो छे, यावत्–वनस्पतिकायिक जीवो छे ते [महाकर्मवाळा अने महावेदनावाळा छे? [उ०] हा, गौतम!] इत्यादि–जेम जीवाभिगम सूत्रना §नैरयिक उद्देशकमां कह्युं छे तेम यावत्–अधःसप्तमनरकपृथिवी सुधी जाणवुं.

४ निरयान्तद्वार.

६. [प्र०] हे भगवन्! लोकना आयाम–लंबाईनो मध्य भाग क्यां कहेलो छे? [उ०] हे गौतम! आ रत्नप्रभा पृथिवीना आकाशना खंडनो असंख्यातमो भाग उल्लंघन कर्या पछी अहिं लोकना आयामनो मध्यभाग कहेलो छे.

५ लोकमध्यद्वार.

७. [प्र०] हे भगवन्! क्यां अधोलोकना आयाम–लंबाईनो मध्य भाग कह्यो छे? [उ०] हे गौतम! चोथी पंकप्रभा पृथिवीना आकाशना खंडनो कंइक अधिक अरधो भाग उल्लंघन कर्या पछी अहिं अधोलोकना आयामनो मध्य भाग कहेलो छे.

अधोलोकमध्य.

---

३ * जुओ जीवा० प्रति० ३ उ० २ प० १२७–१.

† यावत् शब्दथी तेजस्कायिक अने वायुकायिक ग्रहण करवा, बादर तेजस्कायिक मात्र समयक्षेत्रने विषे ज होय छे, तेथी अहिं नरकपृथिवीने विषे तेनो सद्भाव होतो नथी, परन्तु त्यां अग्निसमान उष्ण अन्य वस्तुओ होय छे, तेथी 'तेजस्कायिकना स्पर्शने अनुभवे छे' एम कह्युं छे–टीका.

४ ‡ जीवा० प्रति० ३ उ० २ प० १२७–१.

¶ रत्नप्रभा पृथिवी जाडाइमां एक लाख अने एंशीहजार योजनप्रमाण होवाथी सर्व करतां मोटी छे, अने शर्कराप्रभा एक लाख अने बत्रीश हजार योजनप्रमाण होवाथी तेनाथी न्हानी छे. तेमज रत्नप्रभा लंबाइ अने पहोळाइमां एक रज्जु (राज) प्रमाण छे तेथी न्हानी छे, अने शर्कराप्रभा तेथी अधिक प्रमाण होवाथी मोटी छे—टीका.

५ § जीवा० प्रति० ३ उ० २ प० १२७–२.

८. [प्र०] कहि णं भंते ! उड्ढलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! उप्पिं सणंकुमार–माहिंदाणं कप्पाणं हेट्ठिं बंभलोए कप्पे रिट्ठविमाणे पत्थडे एत्थ णं उड्ढलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ।

९. [प्र०] कहिणं भंते ! तिरियलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स बहुमज्झदेसभाए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डागपयरेसु एत्थ णं तिरियलोगस्स मज्झे अट्ठपएसिए रुयए पण्णत्ते, जओ णं इमाओ दस दिसाओ पवहंति, तंजहा–१ पुरच्छिमा, २ पुरच्छिमदाहिणा–एवं जहा दसमसए जाव–नामधेज्जं ति ।

१०. [प्र०] इंदा णं भंते ! दिसा १ किमादीया, २ किंपवहा, ३ कतिपदेसादिया, ४ कतिपदेसुत्तरा, ५ कतिपदेसिया, ६ किंपज्जवसिया, ७ किंसंठिया पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! इंदा णं दिसा १ रुयगादीया, २ रुयगप्पवहा, ३ दुपएसादीया, ४ दुपएसुत्तरा, ५ लोगं पडुच्च असंखेज्जपएसिया, अलोगं पडुच्च अणंतपएसिया, ६ लोगं पडुच्च साईया सपज्जवसिया, अलोगं पडुच्च साईया अपज्जवसिया, ७ लोगं पडुच्च मुरजसंठिया, अलोगं पडुच्च सगडुद्धिसंठिया पन्नत्ता ।

११. [प्र०] अग्गेयी णं भंते ! दिसा १ किमादीया, २ किंपवहा, ३ कतिपएसादीया, ४ कतिपएसविच्छिन्ना, ५ कतिपएसिया, ६ किंपज्जवसिया, ७ किंसंठिया पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! अग्गेयी णं दिसा १ रुयगादीया, २ रुयगप्पवहा, ३ एगपएसादीया, ४ एगपएसविच्छिन्ना, ५ अणुत्तरा लोगं पडुच्च असंखेज्जपएसीया, अलोगं पडुच्च अणंतपएसीया, ६ लोगं पडुच्च साइया सपज्जवसिया, अलोगं पडुच्च साइया अपज्जवसिया, छिन्नमुत्तावलिसंठिया पण्णत्ता । जमा जहा इंदा, नेरई जहा अग्गेयी । एवं जहा इंदा तहा दिसाओ चत्तारि, जहा अग्गेई तहा चत्तारि वि विदिसाओ ।

१२. [प्र०] विमला णं भंते ! दिसा किमादीया०–पुच्छा जहा अग्गेयीए । [उ०] गोयमा ! विमला णं दिसा १ रुयगादीया, २ रुयगप्पवहा, ३ चउप्पएसादीया, ४ दुपएसविच्छिन्ना, अणुत्तरा लोगं पडुच्च सेसं जहा अग्गेयीए, नवरं रुयगसंठिया पण्णत्ता, एवं तमा वि ।

ऊर्ध्वलोकमध्य.

८. [प्र०] हे भगवन् ! क्यां ऊर्ध्वलोकनी लंबाईनो मध्यभाग कहेलो छे ? [उ०] हे गौतम ! सनत्कुमार अने माहेन्द्र देवलोकना उपर अने ब्रह्मदेवलोकनी नीचे रिष्ट नामे त्रीजा प्रतरने विषे अहिं ऊर्ध्वलोकना आयामनो मध्य भाग कहेलो छे.

तिर्यग्लोकमध्य.

९. [प्र०] हे भगवन् ! तिर्यग् लोकना आयामनो मध्यभाग क्यां कहेलो छे ? [उ०] हे गौतम ! जंबूद्वीपमां मेरुपर्वतना बरोबर मध्य भागने विषे आ रत्नप्रभा पृथिवीना उपर अने नीचेना क्षुद्र (सर्व करतां लघु) एवा बे प्रतरो छे, तेने विषे तिर्यग्लोकना मध्यभागरूप आठ प्रदेशनो रुचक कहेलो छे, ज्यांथी आ दश दिशाओ नीकळे छे, ते आ प्रमाणे–१ पूर्वदिशा, २ पूर्वदक्षिण,–इत्यादि जेम दशम शतकना *प्रथम उद्देशकने विषे कह्युं छे ते प्रमाणे यावत् 'दिशाना दश नाम छे'–त्यां सुधी जाणवुं.

६ दिशा–विदिशा प्रवहद्वार. ऐन्द्री दिशा क्यांथी नीकळे छे ?

१०. [प्र०] हे भगवन् ! १ ऐन्द्री (पूर्व) दिशानी आदिमां शुं छे ? २ ते क्यांथी नीकळे छे ? ३ तेनी आदिमां केटला प्रदेशो छे ? ४ केटला प्रदेशोनी उत्तरोत्तर वृद्धि थाय छे ? ५ ते केटला प्रदेशनी छे ? ६ तेनो अन्त क्यां छे ? अने ७ ते केवा आकारे कहेली छे ? [उ०] हे गौतम ! १ ऐन्द्री दिशानी आदिमां रुचक छे, २ ते रुचक थकी नीकळे छे, ३ तेनी आदिमां बे प्रदेशो छे, ४ बे प्रदेशनी उत्तरोत्तर वृद्धि थाय छे, ५ लोकने आश्रयी ते असंख्यातप्रदेशवाळी छे, अलोकने आश्रयी अनन्तप्रदेशात्मक छे, ६ लोकने आश्रयी आदि अने अन्तसहित छे, अने अलोकने आश्रयी सादि अने अनन्त छे, ७ लोकने आश्रयी मुरज–मृदंगने आकारे छे, अने अलोकने आश्रयी गाडानी ऊधने आकारे कहेली छे.

आग्नेयी.

११. [प्र०] हे भगवन् ! १ आग्नेयी दिशानी आदिमां शुं छे ? २ ते क्यांथी नीकळे छे ? ३ तेनी आदिमां केटला प्रदेशो छे ? ४ ते केटला प्रदेशना विस्तारवाळी छे ? ५ ते केटला प्रदेशनी छे ? ६ तेने अन्ते शुं छे ? ७ अने ते केवा आकारे छे ? [उ०] हे गौतम ! १ आग्नेयी दिशानी आदिमां रुचक छे, २ ते रुचक थकी नीकळे छे, ३ तेनी आदिमां एक प्रदेश छे, ४ ते एक प्रदेशना विस्तारवाळी छे, ५ ते उत्तरोत्तर वृद्धिरहित छे, अने लोकने आश्रयी असंख्यप्रदेशात्मक छे, अलोकने आश्रयी अनन्त प्रदेशात्मक छे, ६ लोकने आश्रयी आदि अने अन्त सहित छे, अने अलोकने आश्रयी सादि अने अनन्त छे. अने ७ ते तूटी गएली मोतीनी माळना आकारे कहेली छे.

याम्या–दक्षिण. नैर्ऋती.

याम्या (दक्षिण) दिशा ऐन्द्री (पूर्व) दिशानी पेठे जाणवी. नैर्ऋती आग्नेयी दिशानी पेठे जाणवी–इत्यादि जेम ऐन्द्री दिशा कही, तेम चारे दिशाओ अने आग्नेयी दिशा कही तेम चारे विदिशाओ जाणवी.

ऊर्ध्वदिशा.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! विमला (ऊर्ध्व) दिशानी आदिमां शुं छे ? इत्यादि आग्नेयीनी पेठे प्रश्न करवो. [उ०] हे गौतम ! १ विमला दिशानी आदिमां रुचक छे, २ ते रुचक थकी नीकळे छे, ३ तेनी आदिमां चार प्रदेश छे, ४ ते बे प्रदेशना विस्तारवाळी छे, ५ उत्तरोत्तर वृद्धि रहित ते दिशा लोकने आश्रयी असंख्यातप्रदेशात्मक छे. बाकी बधुं आग्नेयी दिशाने विषे कह्युं छे तेम जाणवुं. परन्तु

तमादिशा.

एटलो विशेष छे के ते रुचकने आकारे कहेली छे. ए प्रमाणे तमा (अधो) दिशा पण जाणवी.

१ * भग० खं० ३ श० १० उ० १ पृ० १८८.

१३. [प्र०] किमियं भंते ! लोएत्ति पवुच्चइ ? [उ०] गोयमा ! पंचत्थिकाया, एस णं एवतिए लोए त्ति पवुच्चइ, तंजहा— १ धम्मत्थिकाए, २ अहम्मत्थिकाए, जाव—५ पोग्गलत्थिकाए ।

१४. [प्र०] धम्मत्थिकाएणं भंते ! जीवाणं किं पवत्तति ? [उ०] गोयमा ! धम्मत्थिकाएणं जीवाणं आगमण—गमण—भासु—म्मेस—मणजोगा—वइजोगा—कायजोगा, जे यावन्ने तहप्पगारा चला भावा सव्वे ते धम्मत्थिकाए पवत्तंति, गइलक्खणे णं धम्मत्थिकाए ।

१५. [प्र०] अहम्मत्थिकाएणं भंते ! जीवाणं किं पवत्तति ? [उ०] गोयमा ! अहम्मत्थिकाएणं जीवाणं ठाण—निसीयण—तुयट्टण, मणस्स य एगत्तीभावकरणता, जे यावन्ने तहप्पगारा थिरा भावा सव्वे ते अहम्मत्थिकाए पवत्तंति, ठाणलक्खणे णं अहम्मत्थिकाए ।

१६. [प्र०] आगासत्थिकाएणं भंते ! जीवाणं अजीवाण य किं पवत्तति ? [उ०] गोयमा ! आगासत्थिकाएणं जीवदव्वाण य अजीवदव्वाण य भायणभूए । "एगेण वि से पुन्ने दोहि वि पुन्ने सयं पि माएज्जा । कोडिसएण वि पुन्ने कोडिसहस्सं पि माएज्जा ॥" अवगाहणालक्खणे णं आगासत्थिकाए ।

१७. [प्र०] जीवत्थिकाएणं भंते ! जीवाणं किं पवत्तति ? [उ०] गोयमा ! जीवत्थिकाएणं जीवे अणंताणं आभिणिबोहियनाणपज्जवाणं, अणंताणं सुयनाणपज्जवाणं—एवं जहा बितियसए अत्थिकायउद्देसए जाव—उवओगं गच्छति, उवओगलक्खणे णं जीवे ।

१८. [प्र०] पोग्गलत्थिकाए णं पुच्छा । [उ०] गोयमा ! पोग्गलत्थिकाएणं जीवाणं ओरालिय—वेउव्विय—आहारग—तेया—कम्मए सोइंदिय—चक्खिंदिय—घाणिंदिय—जिब्भिंदिय—फासिंदिय—मणजोग—वयजोग—कायजोग—आणापाणूणं च गहणं पवत्तति, गहणलक्खणे णं पोग्गलत्थिकाए ।

लोक.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! आ लोक केवो कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! आ लोक पंचास्तिकायरूप कहेवाय छे, ते आ प्रमाणे— १ धर्मास्तिकाय, २ अधर्मास्तिकाय, यावत्—[३ आकाशास्तिकाय ४ जीवास्तिकाय अने] ५ पुद्गलास्तिकाय.

७ अस्तिकाय—प्रवर्तनद्वार. धर्मास्तिकायवडे जीवोनुं प्रवर्तन.

१४. [प्र०] धर्मास्तिकाय वडे जीवोनी शी प्रवृत्ति थाय ? [उ०] हे गौतम ! धर्मास्तिकाय वडे जीवोनुं आगमन, गमन, भाषा, उन्मेष (नेत्रनुं उघडवुं), मनोयोग, वचनयोग अने काययोग प्रवर्ते छे; ते शिवाय बीजा तेवा प्रकारना गमनशील भावो छे, ते सर्व धर्मास्तिकायथी प्रवर्ते छे; केमके गतिलक्षण धर्मास्तिकाय छे.

अधर्मास्तिकायवडे प्रवर्तन.

१५. [प्र०] अधर्मास्तिकाय वडे जीवोनी शी प्रवृत्ति थाय ? [उ०] हे गौतम ! अधर्मास्तिकाय वडे जीवोनुं उभा रहेवुं, बेसवुं, सुवुं अने मनने स्थिर करवुं—वगेरे प्रवर्ते छे, ते शिवाय बीजा स्थिर भावो छे ते सर्व अधर्मास्तिकाय थकी प्रवर्ते छे, केमके स्थितिलक्षण अधर्मास्तिकाय छे.

आकाशास्तिकायवडे प्रवर्तन.

१६. [प्र०] हे भगवन् ! आकाशास्तिकायवडे जीवोनी अने अजीवोनी शी प्रवृत्ति थाय ? [उ०] हे गौतम ! आकाशास्तिकाय जीव अने अजीव द्रव्यनो आश्रयरूप छे. अर्थात् तेथी जीव अने अजीवद्रव्यनो अवगाह प्रवर्ते छे. "एक—[परमाणु—]थी के बे—[परमाणु] थी पूर्ण एक आकाशप्रदेशनी अंदर सो परमाणुओ पण माय, अने सो क्रोड [परमाणुओ] वडे पूर्ण एक आकाशप्रदेशमां हजार क्रोड [परमाणुओ] पण *माय;" केमके अवगाहनालक्षण आकाशास्तिकाय छे.

जीवास्तिकायवडे प्रवर्तन.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! जीवास्तिकायवडे जीवोनुं शुं प्रवर्ते ? [उ०] हे गौतम ! जीवास्तिकायवडे जीव अनन्त आभिनिबोधिक—मतिज्ञानना पर्यायो, अने अनन्त श्रुतज्ञानना पर्यायोमां—इत्यादि जेम †बीजा शतकना अस्तिकाय उद्देशकमां कह्युं छे तेम अहिं कहेवुं, यावत्—ते [ज्ञान अने दर्शनना] उपयोगने प्राप्त थाय छे, केमके उपयोगलक्षण जीव छे.

पुद्गलास्तिकायवडे प्रवर्तन.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्गलास्तिकाय वडे शुं प्रवर्ते ? [उ०] हे गौतम ! पुद्गलास्तिकायवडे जीवोने औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस, कार्मण, श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, स्पर्शनेन्द्रिय, मनोयोग, वचनयोग, काययोग अने श्वासोच्छ्वासनुं ग्रहण प्रवर्ते छे. केमके ग्रहणलक्षण पुद्गलास्तिकाय छे.

---

१६ * जेम एक ओरडानो आकाश एक दीवाना प्रकाशथी भराय, अने बीजो दीवो करीए तो तेनो प्रकाश पण त्यांज समाय, एम सो के सहस्र दीवानो प्रकाश पण त्यां ज समाय, पण बहार न नीकळे तेम पुद्गलनो परिणाम विचित्र होवाथी एक, बे, संख्याता, असंख्याता के अनन्त परमाणुथी पूर्ण एक आकाश प्रदेशमां एकथी मांडीने अनन्त परमाणुओ सुधी त्यां समाय.

१७ † भग० खं० १ श० २ उ० १० पृ० ३०६.

१९. [प्र०] एगे भंते ! धम्मत्थिकायपदेसे केवतिएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ? [उ०] गोयमा ! जहन्नपदे तिहिं, उक्कोसपदे छहिं । [प्र०] केवतिएहिं अहम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ? [उ०] गोयमा ! जहन्नपए चउहिं, उक्कोसपए सत्तहिं । [प्र०] केवतिएहिं आगासत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ? [उ०] गोयमा ! सत्तहिं । [प्र०] केवतिएहिं जीवत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ? [उ०] गोयमा ! अणंतेहिं । [प्र०] केवतिएहिं पोग्गलत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ? [उ०] गोयमा ! अणंतेहिं । [प्र०] केवतिएहिं अद्धासमएहिं पुट्ठे ? [उ०] सिय पुट्ठे सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे नियमं अणंतेहिं ।

२०. [प्र०] एगे भंते ! अहम्मत्थिकायपएसे केवतिएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ? [उ०] गोयमा ! जहन्नपए चउहिं, उक्कोसपए सत्तहिं । [प्र०] केवतिएहिं अहम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ? [उ०] जहन्नपए तिहिं, उक्कोसपए छहिं, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ।

२१. [प्र०] एगे भंते ! आगासत्थिकायपएसे केवतिएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ? [उ०] गोयमा ! सिय पुट्ठे सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे जहन्नपदे एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा चउहिं वा, उक्कोसपए सत्तहिं । एवं अहम्मत्थिकायप्पएसेहि वि ।

८ अस्तिकायप्रदेश स्पर्शनाद्वार. धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश धर्मास्तिकायादि द्रव्यना केटला प्रदेशो वडे स्पर्शाय ?

१९. [प्र०] हे भगवन् ! धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्शायेलो होय ? [उ०] हे गौतम ! *जघन्यपदे त्रण प्रदेशोवडे, अने उत्कृष्टपदे छ प्रदेशोवडे स्पर्शायलो होय. [प्र०] केटला अधर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्शायलो होय ? [उ०] हे गौतम ! जघन्यपदे †चार, अने उत्कृष्ट पदे सात अधर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्शायलो होय. [प्र०] केटला आकाशास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्शायलो होय ? [उ०] हे गौतम ! आकाशास्तिकायना सात प्रदेशोवडे स्पर्शायलो होय. [प्र०] केटला जीवास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्शायलो होय ? [उ०] हे गौतम ! ‡जीवास्तिकायना अनन्त प्रदेशोवडे स्पर्शायलो होय. [प्र०] केटला पुद्गलास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्शायलो होय ? [उ०] हे गौतम ! पुद्गलास्तिकायना अनन्तप्रदेशोवडे स्पर्शायलो होय. [प्र०] केटला ¶अद्धा–काल–ना समयोवडे स्पर्शायलो होय ? [उ०] कदाचित् कालना समयोवडे स्पर्शायलो होय अने कदाचित् स्पर्शायलो न होय. जो स्पर्श करायलो होय तो अवश्य अनन्तसमयोवडे स्पर्श करायेलो होय.

अधर्मास्तिकायनो एक प्रदेश.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! अधर्मास्तिकायनो एक प्रदेश केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्शायेलो होय ? [उ०] हे गौतम ! जघन्यपदे §चार, अने उत्कृष्टपदे सात धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेलो होय. [प्र०] केटला अधर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेलो होय ? [उ०] हे गौतम ! जघन्यपदे त्रण अने उत्कृष्टपदे छ प्रदेशोवडे स्पर्श करायेलो होय. बाकी बधुं धर्मास्तिकायना प्रदेशनी पेठे कहेवुं.

आकाशास्तिकायनो एक प्रदेश.

२१. [प्र०] हे भगवन् ! आकाशास्तिकायनो एक प्रदेश केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेलो होय ? [उ०] हे गौतम ! ‖कदाचित् [लोकने आश्रयी] स्पर्श करायेलो होय अने कदाचित् [अलोकने आश्रयी] स्पर्श करायेलो न होय. जो स्पर्श करायेलो होय

---

१९ * अहिं जघन्यपद लोकान्तना कोणने विषे होय छे, ते भूमिने नजीक ओरडाना कोणनी पेठे जाणवुं. [स्थापना]— त्यां धर्मास्तिकायना एक प्रदेशने उपरना एक प्रदेश अने पासेना बे प्रदेशो–एम धर्मास्तिकायना त्रण प्रदेशोनी स्पर्शना होय छे. अने उत्कृष्टपदे चार दिशाना चार प्रदेशो अने ऊर्ध्व तथा अधोदिशाना एक एक प्रदेश मळीने छ प्रदेशनी स्पर्शना होय छे. स्थापना—

† धर्मास्तिकायना एक प्रदेशने जघन्यपदे जेम धर्मास्तिकायना त्रण प्रदेशनी स्पर्शना कही छे, तेवी रीते अधर्मास्तिकायना त्रण प्रदेशनी स्पर्शना तथा धर्मास्तिकायना एक प्रदेशने स्थाने रहेला अधर्मास्तिकायना एक प्रदेशनी स्पर्शना-मळीने चार प्रदेशनी स्पर्शना होय छे. अने उत्कृष्टपदे छ दिशाना छ प्रदेशो अने धर्मास्तिकायना प्रदेशने स्थाने रहेला एक अधर्मास्तिकायनी प्रदेशनी एम सात प्रदेशनी स्पर्शना होय छे. लोकान्ते पण अलोकाकाश होवाथी पूर्वोक्त सात आकाशास्तिकायना प्रदेशनी स्पर्शना होय छे.

‡ एक धर्मास्तिकायना प्रदेशने विषे अने तेनी पासे अनन्तजीवना अनन्त प्रदेशो विद्यमान होवाथी ते जीवना अनन्त प्रदेशो वडे स्पर्शायेल होय. ए प्रमाणे पुद्गलास्तिकायना अनन्त प्रदेशोवडे पण स्पर्शायलो होय.

¶ अद्धासमय मात्र समयक्षेत्र–अढी द्वीपमां होय छे, तेनी बाहेर नथी, केमके समयादिक काल सूर्यनी गतिद्वारा निष्पन्न थाय छे, तेथी कदाचित् धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश स्पर्शायेल होय अने कदाचित् न होय. जो स्पर्शायेल होय तो अनन्त अद्धासमयो वडे स्पर्शायेल होय, केमके ते अनादि होवाथी तेने अनन्त समयनी स्पर्शना होय छे. अथवा वर्तमानसमयविशिष्ट अनन्त द्रव्यो ते अनन्त समय कहेवाय छे, माटे अनन्त समयोवडे स्पृष्ट कहेवाय छे.

२० § अधर्मास्तिकायना एक प्रदेशनी बाकीना द्रव्योना प्रदेशोनी साथे स्पर्शना धर्मास्तिकायप्रदेशनी स्पर्शनाने अनुसारे जाणवी.

२१ ‖ आकाशास्तिकायनो एक प्रदेश लोकने आश्रयी धर्मास्तिकायना प्रदेश वडे स्पृष्ट होय छे, अने अलोकने आश्रयी स्पृष्ट होतो नथी. जो स्पृष्ट होय तो जघन्य पदे १ लोकान्तमां वर्तमान धर्मास्तिकायना एक प्रदेश वडे अलोकाकाशना अग्रभागमां वर्ततो एक आकाश प्रदेश स्पृष्ट होय, २ वक्रगत आकाशप्रदेश धर्मास्तिकायना बे प्रदेश वडे स्पृष्ट होय, ३ जे अलोकाकाशना प्रदेशनी आगळ, नीचे अने उपर धर्मास्तिकायना प्रदेशो छे ते धर्मास्तिकायना त्रण प्रदेशो वडे स्पृष्ट होय. ४ लोकान्तने विषे खुणामां रहेलो आकाशप्रदेश ते तदाश्रित प्रदेश, उपरना के नीचेना अने बे दिशामां रहेला बे प्रदेश–ए रीते चार धर्मास्तिकायना प्रदेशो वडे स्पृष्ट होय. ५ जे आकाशनो प्रदेश उपरना, नीचेना, बे दिशाना अने त्यांज रहेला धर्मास्तिकायना प्रदेशथी स्पृष्ट होय ते पांच प्रदेशो वडे स्पर्शाय. ६ जे उपर, नीचे, त्रण दिशा अने त्यांज रहेला धर्मास्तिकायना प्रदेशो वडे स्पर्शाय ते छ प्रदेशो वडे स्पृष्ट होय. ७ अने जे उपर, नीचे, चार दिशामां अने त्यां रहेला प्रदेशो वडे स्पर्शाय ते धर्मास्तिकायना सात प्रदेशो वडे स्पृष्ट होय. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकायना प्रदेशो वडे स्पर्शना जाणवी.

[प्र०] केवतिएहिं आगासत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ? [उ०] छहिं । [प्र०] केवतिएहिं जीवत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे ? [उ०] सिय पुट्ठे सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे नियमं अणंतेहिं । एवं पोग्गलत्थिकायपएसेहि वि, अद्धासमएहि वि ।

२२. [प्र०] एगे भंते ! जीवत्थिकायपएसे केवतिएहिं धम्मत्थिकाय-पुच्छा । [उ०] जहन्नपदे चउहिं, उक्कोसपए सत्तहिं । एवं अहम्मत्थिकायपएसेहि वि । [प्र०] केवतिएहिं आगासत्थिकाय-पुच्छा । [उ०] सत्तहिं । [प्र०] केवतिएहिं जीवत्थि० ? [उ०] सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ।

२३. [प्र०] एगे भंते ! पोग्गलत्थिकायपएसे केवतिएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं० ? [उ०] एवं जहेव जीवत्थिकायस्स ।

२४. [प्र०] दो भंते ! पोग्गलत्थिकायप्पएसा केवतिएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा ? [उ०] गोयमा ! जहन्नपए छहिं, उक्कोसपए बारसहिं । एवं अहम्मत्थिकायपएसेहि वि । [प्र०] केवतिएहिं आगासत्थिकाय० ? [उ०] बारसहिं, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स ।

२५. [प्र०] तिन्नि भंते ! पोग्गलत्थिकायपएसा केवतिएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा ? [उ०] जहन्नपए अट्ठहिं, उक्कोसपए सत्तरसहिं । एवं अहम्मत्थिकायपएसेहि वि । [प्र०] केवतिएहिं आगासत्थि० ? [उ०] सत्तरसहिं, सेसं जहा धम्म-

तो जघन्यपदे एक, बे, त्रण के चार धर्मास्तिकायना प्रदेशवडे स्पर्श करायेलो होय, अने उत्कृष्टपदे सात प्रदेशोवडे स्पर्श करायेलो होय. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकायना प्रदेशोनी साथे पण स्पर्श जाणवो. [प्र०] केटला आकाशास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] हे गौतम ! छ प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय. [प्र०] केटला जीवास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] कदाचित् स्पर्श करायेलो होय अने कदाचित् स्पर्श न करायेलो पण होय. जो स्पर्श करायेलो होय तो अवश्य अनन्त प्रदेशोवडे स्पर्श करायेलो होय. ए प्रमाणे पुद्गलास्तिकायना प्रदेशोवडे अने अद्धा-काळना समयोवडे पण स्पर्शना जाणवी.

जीवास्तिकायनो एक प्रदेश.

२२. [प्र०] हे भगवन् ! जीवास्तिकायनो एक प्रदेश केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेलो होय-ए प्रश्न. [उ०] जघन्यपदे चार अने उत्कृष्टपदे सात प्रदेशोवडे स्पर्श करायेलो होय. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे पण स्पर्श करायेल होय. [प्र०] केटला आकाशास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] सात प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय. [प्र०] केटला जीवास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] बाकी बधुं धर्मास्तिकायनी पेठे जाणवुं.

पुद्गलास्तिकायनो एक प्रदेश.

२३. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्गलास्तिकायनो एक प्रदेश केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय ? [उ०] जेम जीवास्तिकायना एक प्रदेश संबन्धे कह्युं तेम अहिं जाणवुं.

पुद्गलास्तिकायना बे प्रदेशो.

२४. [प्र०] हे भगवन् ! पुद्गलास्तिकायना बे प्रदेशो केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेला होय ? [उ०] हे गौतम ! जघन्यपदे *छ प्रदेशोवडे, अने उत्कृष्टपदे बार प्रदेशोवडे स्पर्श करायेला होय. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे पण स्पर्शना जाणवी. [प्र०] केटला आकाशास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेला होय ? [उ०] बार प्रदेशोवडे स्पर्श करायेला होय. बाकी बधुं धर्मास्तिकायनी पेठे जाणवुं.

पुद्गलास्तिकायना त्रण प्रदेशो.

२५. [प्र०] हे भगवन् ! त्रण पुद्गलास्तिकायना प्रदेशो केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेला होय ? [उ०] जघन्यपदे †आठ, अने उत्कृष्टपदे सत्तर प्रदेशोवडे स्पर्श करायेला होय. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे पण स्पर्श करायेला होय. [प्र०] केटला

---

२४ * अहिं चूर्णिकारनुं आवा प्रकारनुं व्याख्यान छे—"लोकान्ते द्विप्रदेशिक स्कन्ध एक प्रदेशने अवगाहीने रहेलो छे, तो पण ते प्रदेशने 'प्रतिद्रव्यनी अवगाहना होय छे' ए नयमतनी विवक्षाथी अवगाह प्रदेश एक छतां पण भिन्न मानवाथी ते बे प्रदेशो वडे स्पर्शायेलो छे, तथा जे तेनी उपरनो के नीचेनो प्रदेश छे ते पण नयना मतथी बे प्रदेशथी स्पर्शायेलो छे, अने पासेना बे अणुओ एक एक प्रदेशनो स्पर्श करे छे—आ प्रमाणे धर्मास्तिकायना छ प्रदेशो वडे द्व्यणुक स्कन्धनो स्पर्श थाय छे. नयना मतनो आश्रय न करीए तो द्व्यणुक स्कन्धने चार प्रदेशनी जघन्य स्पर्शना होय छे." वृत्तिकार आ प्रमाणे कहे छे— "अहिं जे बे बिंदुओ छे ते बे परमाणुओ जाणवा, तेमां आ तरफनो परमाणु आ तरफना धर्मास्तिकायना प्रदेश वडे स्पर्श करायेल होय, अने पेली तरफनो परमाणु पेली तरफना धर्मास्तिकायप्रदेश वडे स्पृष्ट होय-ए प्रमाणे बे प्रदेशो, तथा जे बे प्रदेशोमां बे परमाणुओ स्थापित करेला छे तेनी आगळना बे प्रदेशोवडे स्पर्श करायेला होय-ए प्रमाणे चार थया, अने बे अवगाढ प्रदेशनी स्पर्शना होय-एम छ प्रदेशनी स्पर्शना होय. उत्कृष्ट बार प्रदेशनी स्पर्शना होय छे, ते आ प्रमाणे— द्विप्रदेशावगाढ होवाथी बे प्रदेश, बे उपरना अने बे नीचेना, पासेना बब्बे, अने उत्तर दक्षिणनो एक एक मळीने बार प्रदेशनी स्पर्शना होय छे.

२५ † पुद्गलास्तिकायना त्रण प्रदेशने एक प्रदेशावगाढ छतां पूर्वोक्त नयना मतथी अवगाढ त्रण प्रदेश, नीचेना के उपरना त्रण प्रदेश अने पासेना बे प्रदेश-ए प्रमाणे धर्मास्तिकायना आठ प्रदेशनी स्पर्शना होय छे. अहिं बधा जघन्य पदे विवक्षित परमाणुथी बमणा करी अने बे अधिक करीए एटला प्रदेशोनी स्पर्शना होय छे. अने उत्कृष्टपदे विवक्षित परमाणुथी पांचगुणा करी बे अधिक करीए एटला प्रदेशनी स्पर्शना होय छे. तेमां एक परमाणुने बमणा करीए अने बे सहित करीए एटले जघन्यपदे चार प्रदेशनी स्पर्शना होय, अने उत्कृष्टपदे एक परमाणुने पांच गुणा करीए अने बे सहित करीए एटले सात प्रदेशनी स्पर्शना होय छे. ए प्रमाणे द्व्यणुक-त्र्यणुकादिने विषे जाणवुं—टीका.

त्थिकायस्स। एवं एएणं गमेणं भाणियव्वं जाव–दस, नवरं जहन्नपदे दोन्नि पक्खिवियव्वा, उक्कोसपए पंच। चत्तारि पोग्गलत्थिकायस्स० जहन्नपए दसहिं, उक्कोसपए बावीसाए। पंच पुग्गल०, जहन्नपए बारसहिं, उक्कोसपए सत्तावीसाए। छ पोग्गल० जहन्नपए चोद्दसहिं, उक्कोसपए बत्तीसाए। सत्त पोग्गल० जहन्नेणं सोलसहिं, उक्कोसपए सत्ततीसाए। अट्ठ पोग्गल० जहन्नपए अट्ठारसहिं, उक्कोसेणं बायालीसाए। नव पोग्गल० जहन्नपए वीसाए, उक्कोसपदे सीयालीसाए। दस पोग्गल० जहन्नपए बावीसाए, उक्कोसपए बावन्नाए। आगासत्थिकायस्स सव्वत्थ उक्कोसगं भाणियव्वं।

२६. [प्र०] संखेज्जा भंते! पोग्गलत्थिकायपएसा केवतिएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठा? [उ०] जहन्नपदे तेणेव संखेज्जएणं दुगुणेणं दुरूवाहिएणं, उक्कोसपए तेणेव संखेज्जएणं पंचगुणेणं दुरूवाहिएणं। [प्र०] केवतिएहिं अधम्मत्थिकाय पएसेहिं? [उ०] एवं चेव। [प्र०] केवतिएहिं आगासत्थिकाय०? [उ०] तेणेव संखेज्जएणं पंचगुणेणं दुरूवाहिएणं। [प्र०] केवइएहिं जीवत्थिकाय०? [उ०] अणंतेहिं। [प्र०] केवइएहिं पोग्गलत्थिकाय०? [उ०] अणंतेहिं। [प्र०] केवइएहिं अद्धासमएहिं? [उ०] सिय पुट्ठे, सिय नो पुट्ठे, जाव–अणंतेहिं।

२७. [प्र०] असंखेज्जा भंते! पोग्गलत्थिकायप्पएसा केवतिएहिं धम्मत्थिकायपदेसेहिं०? [उ०] जहन्नपए तेणेव असंखेज्जएणं दुगुणेणं दुरूवाहिएणं, उक्कोसपदे तेणेव असंखेज्जएणं पंचगुणेणं दुरूवाहिएणं, सेसं जहा संखेज्जाणं जाव–नियमं अणंतेहिं।

२८. [प्र०] अणंता भंते! पोग्गलत्थिकायपएसा केवतिएहिं धम्मत्थिकाय०? [उ०] एवं जहा असंखेज्जा तहा अणंता वि निरवसेसं।

आकाशास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेला होय? [उ०] सत्तर प्रदेशोवडे स्पर्श करायेला होय. बाकी बधुं धर्मास्तिकायनी पेठे जाणवुं. ए प्रमाणे आ पाठ वडे 'यावत्–दश प्रदेशो सुधी कहेवुं. परन्तु एटलो विशेष छे के जघन्यपदे बेनो अने उत्कृष्टपदे पांचनो प्रक्षेप करवो. चार पुद्गलास्तिकायना प्रदेशो जघन्यपदे दश अने उत्कृष्टपदे बावीश प्रदेशोवडे स्पर्श करायेला होय. पुद्गलास्तिकायना पांच प्रदेशो जघन्यपदे बार अने उत्कृष्टपदे सत्यावीश प्रदेशोवडे स्पर्श करायेला होय. पुद्गलास्तिकायना छ प्रदेशो जघन्यपदे चौद अने उत्कृष्टपदे बत्रीश प्रदेशोवडे स्पर्श करायेला होय. पुद्गलास्तिकायना सात प्रदेशो जघन्यपदे सोळ अने उत्कृष्टपदे साडत्रीश प्रदेशोवडे स्पर्श करायेला होय. पुद्गलास्तिकायना आठ प्रदेशो जघन्यपदे अढार अने उत्कृष्टपदे बेंतालीश प्रदेशोवडे स्पर्शायेला होय. पुद्गलास्तिकायना नव प्रदेशो जघन्यपदे वीश अने उत्कृष्टपदे सुडतालीश प्रदेशोवडे स्पर्शायेला होय. पुद्गलास्तिकायना दश प्रदेशो जघन्यपदे बावीश अने उत्कृष्टपदे बावन प्रदेशोवडे स्पर्शायेला होय. आकाशास्तिकायनुं सर्वत्र *उत्कृष्टपद कहेवुं.

पुद्गलास्तिकायना संख्याता प्रदेशो.

२६. [प्र०] हे भगवन्! †संख्याता पुद्गलास्तिकायना प्रदेशो केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्शायेला होय? [उ०] जघन्यपदे तेज संख्याता प्रदेशने बमणा करी बे रूप अधिक करीए, अने उत्कृष्टपदे तेज संख्याता प्रदेशने पांच गुणा करी बे रूप अधिक करीए. [तेटला प्रदेशोवडे स्पर्शायेला होय.] [प्र०] केटला अधर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्शाय? [उ०] ए प्रमाणे [धर्मास्तिकायनी पेठे] जाणवुं. [प्र०] केटला आकाशास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्शायेला होय? [उ०] तेज संख्याताने पांचगुणा करी बे रूप अधिक करीए [तेटला प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय.] [प्र०] केटला जीवास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय? [उ०] अनन्त प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय. [प्र०] केटला पुद्गलास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय? [उ०] अनन्त प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय. [प्र०] केटला अद्धासमयोवडे स्पर्श करायेल होय? [उ०] कदाच स्पर्श करायेल होय, अने कदाच स्पर्श न करायेल होय, यावत्–अनन्त समयोवडे स्पर्श करायेल होय.

पुद्गलास्तिकायना असंख्य प्रदेशो.

२७. [प्र०] हे भगवन्! पुद्गलास्तिकायना असंख्याता प्रदेशो केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श कराय? [उ०] जघन्यपदे तेज असंख्याताने बमणा करीए अने बे रूप अधिक करीए तेटला प्रदेशोवडे स्पर्श कराय, अने उत्कृष्टपदे तेज असंख्याताने पांच गुणा करीए, अने बे रूप अधिक करीए एटला प्रदेशोवडे स्पर्श कराय. बाकी बधुं जेम संख्यातासंबन्धे कह्युं तेम अहिं जाणवुं, यावत्–'अवश्य अनन्त समयोवडे स्पर्श कराय' त्यां सुधी जाणवुं.

पुद्गलास्तिकायना अनन्त प्रदेशो.

२८. [प्र०] हे भगवन्! पुद्गलास्तिकायना अनन्त प्रदेशो केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श कराय? [उ०] ए प्रमाणे जेम असंख्याता प्रदेश संबन्धे कह्युं तेम अनन्ता प्रदेश संबन्धे पण समग्र ‡जाणवुं.

---

२५ * आकाशास्तिकायनुं उत्कृष्टपद छे, पण जघन्यपद नथी, कारण के आकाश सर्व स्थळे विद्यमान छे.—टीका.

२६ † दशथी उपरांत संख्यानी गणना संख्यातामां ज थाय छे. जेमके वीश प्रदेशनो एक स्कन्ध लोकान्तना एक प्रदेशने विषे रहेलो छे, अने ते अमुक नयना अभिप्रायथी वीश अवगाढ प्रदेशोवडे, अने तेज नयना मतथी उपरना के नीचेना वीश प्रदेशो वडे तथा पासेना बे प्रदेशो वडे—ए प्रमाणे जघन्यपदे बेंतालीश प्रदेशोवडे स्पर्शाय. उत्कृष्टपदे निरुपचरित (वास्तविक) वीश अवगाढ प्रदेशोवडे, वीश नीचेना अने वीश उपरना प्रदेशोवडे अने पूर्व अने पश्चिम, ए बन्ने दिशाए वीश वीश प्रदेशोवडे, तथा उत्तर अने दक्षिण बाजु एक एक प्रदेशवडे–सर्व मळी एकसो बे प्रदेशोवडे स्पर्शाय.—टीका.

२८ ‡ अहिं एटली विशेषता छे के जेम जघन्यपदने विषे उपरना के नीचेना अवगाढ प्रदेशो औपचारिक छे, तेम उत्कृष्ट पदने विषे पण जाणवुं. केमके अवगाहथी निरुपचरित अनन्त आकाश प्रदेशो होता नथी, पण असंख्याता होय छे.—टीका.

२९. [प्र०] एगे भंते! अद्धासमए केवतिएहिं धम्मत्थिकायपएसेहिं पुट्ठे? [उ०] सत्तहिं। [प्र०] केवतिएहिं अह-म्मत्थि०? [उ०] एवं चेव, एवं आगासत्थिकाएहि वि। [प्र०] केवतिएहिं जीवत्थिकाय०? [उ०] अणंतेहिं, एवं जाव–अद्धासमएहिं।

३०. [प्र०] धम्मत्थिकाए णं भंते! केवतिएहिं धम्मत्थिकायप्पएसेहिं पुट्ठे? [उ०] नत्थि एक्केण वि। [प्र०] केवतिएहिं अधम्मत्थिकायप्पएसेहिं? [उ०] असंखेज्जेहिं। [प्र०] केवतिएहिं आगासत्थिकायपदेसेहिं०? [उ०] असंखेज्जेहिं। [प्र०] केव-तिएहिं जीवत्थिकायपएसेहिं०? [उ०] अणंतेहिं। [प्र०] केवतिएहिं पोग्गलत्थिकायपएसेहिं०? [उ०] अणंतेहिं। [प्र०] केवतिएहिं अद्धासमएहिं? [उ०] सिय पुट्ठे, सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे नियमा अणंतेहिं।

३१. [प्र०] अहम्मत्थिकाए णं भंते! केवइएणं धम्मत्थिकाय०? [उ०] असंखेज्जेहिं। [प्र०] केवतिएहिं अहम्मत्थि०? [उ०] णत्थि एक्केण वि, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स। एवं एएणं गमएणं सव्वे वि सट्ठाणए नत्थि एक्केण वि पुट्ठा। परट्ठाणए आदिल्लएहिं तिहिं असंखेज्जेहिं भाणियव्वं, पच्छिल्लएसु 'अणंता' भाणियव्वा, जाव-अद्धासमयो त्ति, जाव–[प्र०] केवतिएहिं अद्धासमएहिं पुट्ठे? [उ०] नत्थि एक्केण वि।

३२. [प्र०] जत्थ णं भंते! एगे धम्मत्थिकायपएसे ओगाढे, तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायप्पएसा ओगाढा? [उ०] नत्थि एक्को वि। [प्र०] केवतिया अहम्मत्थिकायप्पएसा ओगाढा? [उ०] एक्को। [प्र०] केवतिया आगासत्थिकायपदेसा०?

काळनो एक समय.

२९. [प्र०] हे भगवन्! अद्धा–काळनो एक समय केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय? [उ०] *अद्धासमय सात प्रदेशोवडे स्पर्श करायेलो होय. [प्र०] केटला अधर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय? [उ०] उपर प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे आकाशास्तिकायना प्रदेशोवडे पण स्पर्शना जाणवी. [प्र०] केटला जीवास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय? [उ०] अनन्त प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय. ए प्रमाणे †यावत्–[अनन्त] अद्धासमयोवडे स्पर्शना जाणवी.

धर्मास्तिकायद्रव्य.

३०. [प्र०] हे भगवन्! धर्मास्तिकायद्रव्य केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय? [उ०] एक पण प्रदेशवडे स्पर्श करायेल न होय. [प्र०] केटला अधर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय? [उ०] असंख्याता प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय. [प्र०] केटला आकाशास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय? [उ०] असंख्यात प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय. [प्र०] केटला जीवास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय? [उ०] अनन्ता प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय. [प्र०] केटला पुद्गलास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय? [उ०] अनन्त प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय. [प्र०] केटला अद्धासमयोवडे स्पर्श करायेल होय? [उ०] कदाच स्पर्श करायेल होय अने कदाच स्पर्श करायेल न होय. जो स्पर्श करायेल होय तो अवश्य अनन्त समयोवडे स्पर्श करायेल होय.

अधर्मास्तिकाय.

३१. [प्र०] हे भगवन्! अधर्मास्तिकाय केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय? [उ०] असंख्याता प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय. [प्र०] केटला अधर्मास्तिकायना प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय? [उ०] एक पण प्रदेशवडे स्पर्श करायेल न होय. बाकी बधुं धर्मास्तिकायनी पेठे जाणवुं. ए प्रमाणे ए पाठ वडे सर्वे पण ‡स्वस्थानके एक पण प्रदेशवडे स्पर्श करायेल नथी, परस्थानके–आदिना त्रण स्थानके–धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकाय ए त्रण स्थळे असंख्याता प्रदेशो वडे स्पर्श करायेल होय एम कहेवुं. अने पछीना त्रण स्थळे 'अनन्त प्रदेशोवडे स्पर्श करायेल होय'–एम यावत्–अद्धा समय सुधी कहेवुं. यावत्–[प्र०] केटला अद्धा समयोवडे स्पर्श करायेल होय? [उ०] एक पण समयवडे स्पर्श करायेल न होय.

१ अवगाहद्वार.

३२. [प्र०] हे भगवन्! ज्यां धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश अवगाढ–रहेलो होय त्यां बीजा केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ होय

---

२९ * अहिं वर्तमानसमयविशिष्ट समयक्षेत्रमां रहेलो परमाणु अद्धासमय तरीके जाणवो, अन्यथा अद्धासमयने धर्मास्तिकायना सात प्रदेश साथे स्पर्शना न होय. अहिं जघन्यपद नथी, केमके अद्धासमय मनुष्यक्षेत्रना मध्यवर्ती छे. जघन्यपदनो तो लोकान्तने विषे संभव छे, अने लोकान्तने विषे काळ नथी. अद्धासमयविशिष्ट परमाणुद्रव्य एक धर्मास्तिकायना प्रदेशने विषे अवगाढ छे, अने बीजा तेनी छ दिशाए धर्मास्तिकायना छ प्रदेशो रहेला छे–ए प्रमाणे तेने सात प्रदेशोनी स्पर्शना होय छे.

† अहिं यावत्शब्दथी एक अद्धासमय अनन्त पुद्गलास्तिकायप्रदेशोवडे अने अनन्त अद्धासमयोवडे स्पर्श करायेल होय, ते आ प्रमाणे—अद्धासमय-विशिष्ट अणुद्रव्य अद्धासमय कहेवाय छे, ते एक अद्धासमय पुद्गलास्तिकायना अनन्त प्रदेशोवडे अने अनन्त अद्धासमय—अद्धासमयविशिष्ट अनन्त पर-माणुओवडे स्पर्श कराय छे.

३१ ‡ ज्यां केवल धर्मास्तिकायादि द्रव्यनो तेना प्रदेशोनी साथे स्पर्शनानो विचार थाय ते स्वस्थानक कहेवाय, बीजा द्रव्यना प्रदेशोनी साथे स्पर्श-नानो विचार थाय ते परस्थानक कहेवाय. तेमां स्वस्थानके एक पण प्रदेशवडे स्पृष्ट नथी, अने परस्थानके धर्मास्तिकायादि त्रण सूत्रने विषे असंख्य प्रदेशोवडे स्पृष्ट होय छे, केमके धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अने तत्संबद्ध आकाशना असंख्य प्रदेशो छे. जीवादि त्रण सूत्रने विषे अनन्त प्रदेशो वडे स्पृष्ट होय छे. केमके तेओना अनन्त प्रदेशो छे. यावत् एक अद्धासमय केटला अद्धासमयो वडे स्पर्श करायेल होय? एक पण अद्धासमय वडे स्पर्श करायेल नथी, कारण के निरन्तरित अद्धासमय एक ज होवाथी तेनी समयान्तरनी साथे स्पर्शना नथी.

[उ०] एक्को। [प्र०] केवतिया जीवत्थिकायपदेसा? [उ०] अणंता। [प्र०] केवतिया पोग्गलत्थिकायपदेसा०? [उ०] अणंता। [प्र०] केवतिया अद्धासमया? [उ०] सिय ओगाढा सिय नो ओगाढा, जइ ओगाढा अणंता।

३३. [प्र०] जत्थ णं भंते! एगे अहम्मत्थिकायपएसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा? [उ०] एक्को। [प्र०] केवतिया अहम्मत्थि०? [उ०] नत्थि एक्को वि। सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स।

३४. [प्र०] जत्थ णं भंते! एगे आगासत्थिकायपएसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा? [उ०] सिय ओगाढा सिय नो ओगाढा, जइ ओगाढा एक्को, एवं अहम्मत्थिकायपएसा वि। [प्र०] केवइया आगासत्थिकाय०? [उ०] नत्थि एक्को वि। [प्र०] केवतिया जीवत्थि०? [उ०] सिय ओगाढा सिय नो ओगाढा, जइ ओगाढा अणंता, एवं जाव–अद्धासमया।

३५. [प्र०] जत्थ णं भंते! एगे जीवत्थिकायपएसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थि०? [उ०] एक्को, एवं अहम्मत्थिकायपदेसा वि। एवं आगासत्थिकायपएसा वि। [प्र०] केवतिया जीवत्थि०? [उ०] अणंता, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स।

३६. [प्र०] जत्थ णं भंते! एगे पोग्गलत्थिकायपएसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकाय०? [उ०] एवं जहा जीवत्थिकायपएसे तहेव निरवसेसं।

३७. [प्र०] जत्थ णं भंते! दो पोग्गलत्थिकायपदेसा ओगाढा तत्थ केवतिया धम्मत्थिकाय०? [उ०] सिय एक्को सिय दोन्नि, एवं अहम्मत्थिकायस्स वि, एवं आगासत्थिकायस्स वि, सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स।

३८. [प्र०] जत्थ णं भंते! तिन्नि पोग्गलत्थिकायपदेसा तत्थ केवइया धम्मत्थिकाय०? [उ०] सिय एक्को, सिय

ज्यां धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश अवगाढ होय त्यां बीजा धर्मास्तिकायादिना केटला प्रदेश अवगाढ होय?

छे? [उ०] एक पण प्रदेश अवगाढ नथी. [प्र०] केटला अधर्मास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ—रहेला होय? [उ०] एक अधर्मास्तिकायनो प्रदेश रहेलो होय. [प्र०] केटला आकाशास्तिकायना प्रदेश अवगाढ होय? [उ०] एक प्रदेश अवगाढ होय. [प्र०] केटला जीवास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ होय? [उ०] अनन्त प्रदेशो अवगाढ होय. [प्र०] केटला पुद्गलास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ होय? [उ०] अनन्ता प्रदेशो अवगाढ होय. [प्र०] केटला अद्धासमयो अवगाढ होय? [उ०] अद्धासमयो कदाच अवगाढ होय अने कदाच अवगाढ न होय; जो अवगाढ होय तो अनन्त अद्धासमयो अवगाढ होय.

अधर्मास्तिकायनो एक प्रदेश.

३३. [प्र०] हे भगवन्! ज्यां अधर्मास्तिकायनो एक प्रदेश अवगाढ—रहेलो होय त्यां केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ होय? [उ०] त्यां धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश अवगाढ होय. [प्र०] केटला अधर्मास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ होय? [उ०] एक पण नथी. बाकी बधुं धर्मास्तिकायनी पेठे जाणवुं.

आकाशास्तिकायनो एक प्रदेश.

३४. [प्र०] हे भगवन्! ज्यां आकाशास्तिकायनो एक प्रदेश अवगाढ होय त्यां केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ होय? [उ०] त्यां धर्मास्तिकायना प्रदेशो कदाच अवगाढ—रहेला होय, अने कदाच न अवगाढ होय. जो अवगाढ होय तो एक प्रदेश अवगाढ होय. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकायना प्रदेशो पण जाणवा. [प्र०] केटला आकाशास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ होय? [उ०] एक पण न होय. [प्र०] केटला जीवास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ होय? [उ०] कदाच अवगाढ होय अने कदाच न अवगाढ होय. जो अवगाढ होय तो अनन्त प्रदेशो अवगाढ होय. ए प्रमाणे यावत्—अद्धासमय सुधी जाणवुं.

जीवास्तिकायनो एक प्रदेश.

३५. [प्र०] हे भगवन्! ज्यां जीवास्तिकायनो एक प्रदेश अवगाढ होय त्यां केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ होय? [उ०] त्यां एक प्रदेश अवगाढ होय. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकायना प्रदेशो पण जाणवा. आकाशास्तिकायना प्रदेशो पण ए रीते जाणवा. [प्र०] जीवास्तिकायना केटला प्रदेशो अवगाढ होय? [उ०] अनन्ता प्रदेशो अवगाढ होय. बाकी बधुं धर्मास्तिकायनी पेठे जाणवुं.

पुद्गलास्तिकायनो एक प्रदेश.

३६. [प्र०] हे भगवन्! ज्यां पुद्गलास्तिकायनो एक प्रदेश अवगाढ होय त्यां धर्मास्तिकायना केटला प्रदेशो अवगाढ होय? [उ०] ए प्रमाणे जेम जीवास्तिकायना प्रदेश संबन्धे कह्युं तेम बधुं कहेवुं.

पुद्गलास्तिकायना बे प्रदेशो.

३७. [प्र०] हे भगवन्! ज्यां पुद्गलास्तिकायना बे प्रदेशो अवगाढ होय त्यां धर्मास्तिकायना केटला प्रदेशो अवगाढ—रहेला होय? [उ०] कदाच एक प्रदेश अवगाढ होय, अने कदाच बे प्रदेशो अवगाढ होय. ए प्रमाणे अधर्मास्तिकाय संबन्धे पण जाणवुं. ए प्रमाणे आकाशास्तिकाय संबंधे पण जाणवुं. बाकी बधुं [जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय अने अद्धासमय संबन्धे] जेम धर्मास्तिकायना प्रदेशनी वक्तव्यतामां कह्युं छे तेम पुद्गलास्तिकायना बे प्रदेशनी वक्तव्यताने विषे पण कहेवुं. [अर्थात् तेओना अनन्त प्रदेशो अवगाढ होय छे.]

पुद्गलास्तिकायना त्रण प्रदेशो.

३८. [प्र०] हे भगवन्! ज्यां पुद्गलास्तिकायना त्रण प्रदेशो अवगाढ—रहेला छे त्यां केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ होय? [उ०] कदाच एक, कदाच बे अने कदाच त्रण प्रदेशो अवगाढ होय. [कारणके ज्यारे पुद्गलास्तिकायना त्रण प्रदेशो एक आकाशास्ति-

दोन्नि, सिय तिन्नि, एवं अहम्मत्थिकायस्स वि, एवं आगासत्थिकायस्स वि, सेसं जहेव दोण्हं, एवं एक्केको वड्ढियव्वो पएसो आइल्लएहिं तिहिं अत्थिकाएहिं, सेसेहिं जहेव दोण्हं जाव-दसण्हं सिय एक्को, सिय दोन्नि, सिय तिन्नि, जाव-सिय दस। संखेज्जाणं सिय एक्को, सिय दोन्नि, जाव-सिय दस, सिय संखेज्जा। असंखेज्जाणं सिय एक्को, जाव-सिय संखेज्जा, सिय असंखेज्जा। जहा असंखेज्जा एवं अणंता वि।

३९. [प्र०] जत्थ णं भंते! एगे अद्धासमए ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थि०? [उ०] एक्को। [प्र०] केवतिया अहम्मत्थि०? [उ०] एक्को। [प्र०] केवतिया आगासत्थि०? [उ०] एक्को। [प्र०] केवइया जीवत्थि०? [उ०] अणंता, एवं जाव-अद्धासमया।

४०. [प्र०] जत्थ णं भंते! धम्मत्थिकाए ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा? [उ०] नत्थि एक्को वि। [प्र०] केवतिया अहम्मत्थिकाय०? [उ०] असंखेज्जा। [प्र०] केवतिया आगासत्थि०? [उ०] असंखेज्जा। [प्र०] केवतिया जीवत्थिकाय०? [उ०] अणंता। एवं जाव-अद्धासमया।

४१. [प्र०] जत्थ णं भंते! अहम्मत्थिकाए ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकाय०? [उ०] असंखेज्जा। [प्र०] केवतिया अहम्मत्थि०? [उ०] नत्थि एक्को वि। सेसं जहा धम्मत्थिकायस्स, एवं सव्वे, सट्ठाणे नत्थि एक्को वि भाणियव्वं, परट्ठाणे आदिल्लगा तिन्नि असंखेज्जा भाणियव्वा, पच्छिल्लगा तिन्नि अणंता भाणियव्वा जाव-अद्धासमओ त्ति। जाव-[प्र०] केवतिया अद्धासमया ओगाढा? [उ०] नत्थि एक्को वि।

कायना प्रदेशने अवगाहीने रहे त्यारे तेने विषे एक धर्मास्तिकायनो प्रदेश अवगाहीने रहे, ज्यारे बे आकाशास्तिकायना प्रदेशने अवगाहीने रहे त्यारे त्यां बे धर्मास्तिकायना प्रदेशो रहे, अने ज्यारे त्रण आकाशास्तिकायना प्रदेशोने अवगाहीने रहे त्यारे त्यां त्रण धर्मास्तिकायना प्रदेशो रहे.] ए प्रमाणे अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकायना संबन्धे कहेवुं. बाकी जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय अने अद्धासमयने आश्रयी जेम बे पुद्गलप्रदेशसंबन्धे कह्युं तेम त्रण पुद्गलप्रदेश संबन्धे पण कहेवुं. [अर्थात्–त्रण पुद्गल प्रदेशने स्थाने अनन्त जीवप्रदेशो, अनन्त पुद्गलपरमाणुओ अने अनन्त अद्धासमय अवगाढ होय.] ए प्रमाणे आदिना त्रण अस्तिकायने विषे एक एक प्रदेश वधारवो, बाकीनाने विषे जेम बे पुद्गलास्तिकायना प्रदेशसंबन्धे कह्युं तेम यावत्–दश प्रदेश संबन्धे पण कहेवुं. एटले ज्यां पुद्गलास्तिकायना दश प्रदेशो अवगाढ होय त्यां धर्मास्तिकायनो कदाचित् एक प्रदेश, कदाचित् बे प्रदेश, कदाचित् त्रण प्रदेश, यावत्–कदाचित् दश प्रदेशो अवगाढ होय. ज्यां संख्याता पुद्गलास्तिकायना प्रदेशो अवगाढ होय त्यां धर्मास्तिकायनो कदाचित् एक प्रदेश, कदाचित् बे प्रदेश, यावत्–कदाचित् दश प्रदेशो, यावत्–संख्याता प्रदेशो अवगाढ होय. असंख्याता पुद्गलास्तिकायना प्रदेशो ज्यां अवगाढ–रहेला होय त्यां धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश, यावत्–कदाचित् संख्याता प्रदेशो, अने कदाचित् असंख्याता प्रदेशो अवगाढ होय. जेम असंख्याता पुद्गलास्तिकायना प्रदेशो माटे कह्युं तेम अनन्त प्रदेशो माटे पण जाणवुं. [अर्थात् ज्यां पुद्गलास्तिकायना अनन्त प्रदेशो अवगाढ होय त्यां धर्मास्तिकायना कदाचित् एक, यावत्–संख्याता अने यावत्–असंख्याता प्रदेशो रहेला होय.]

३९. [प्र०] हे भगवन्! ज्यां एक अद्धासमय अवगाढ होय त्यां केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशो रहेला होय? [उ०] एक प्रदेश रहेलो होय. [प्र०] केटला अधर्मास्तिकायना प्रदेशो रहेला होय? [उ०] एक प्रदेश रहेलो होय. [प्र०] केटला आकाशास्तिकायना प्रदेशो रहेला होय? [उ०] एक प्रदेश रहेलो होय. [प्र०] केटला जीवास्तिकायना प्रदेशो रहेला होय? [उ०] अनन्त प्रदेशो रहेला होय. ए प्रमाणे यावत् अद्धासमय सुधी जाणवुं. [अर्थात् पुद्गलास्तिकाय अने अद्धासमयो अनन्ता रहेला होय.]

एक अद्धासमय.

४०. [प्र०] हे भगवन्! ज्यां एक धर्मास्तिकाय अवगाढ होय त्यां केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशो रहेला होय? [उ०] त्यां धर्मास्तिकायनो एक पण प्रदेश रहेलो न होय. [प्र०] केटला अधर्मास्तिकायना प्रदेशो रहेला होय? [उ०] असंख्याता प्रदेशो रहेला होय. [प्र०] केटला आकाशास्तिकायना प्रदेशो रहेला होय? [उ०] असंख्याता प्रदेशो रहेला होय. [प्र०] केटला जीवास्तिकायना प्रदेशो होय? [उ०] अनन्ता होय. ए प्रमाणे यावत्–अद्धासमय सुधी जाणवुं.

एक धर्मास्तिकाय.

४१. [प्र०] हे भगवन्! ज्यां एक अधर्मास्तिकाय अवगाढ–रहेलो होय त्यां केटला धर्मास्तिकायना प्रदेशो रहेला होय? [उ०] असंख्याता प्रदेशो रहेला होय. [प्र०] केटला अधर्मास्तिकायना प्रदेशो रहेला होय? [उ०] एक पण प्रदेश न होय. बाकी [आकाशास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय अने अद्धासमयने] धर्मास्तिकायनी पेठे जाणवुं. सर्व धर्मास्तिकायादि द्रव्यने 'स्वस्थानके एक पण प्रदेश नथी'– ए प्रमाणे कहेवुं, अने परस्थानके आदिना त्रण द्रव्यने (धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकायने) 'असंख्याता' कहेवा, अने पाछळना त्रण द्रव्यने 'अनन्ता' यावत्–अद्धासमय सुधी कहेवा. यावत्–[प्र०] केटला अद्धासमय अवगाढ होय? [उ०] एक पण नथी.

एक अधर्मास्तिकाय.

४२. [प्र०] जत्थ णं भंते ! एगे पुढविकाइए ओगाढे तत्थ णं केवतिया पुढविकाइया ओगाढा ? [उ०] असंखेज्जा । [प्र०] केवतिया आउकाइया ओगाढा ? [उ०] असंखेज्जा । [प्र०] केवइया तेउकाइया ओगाढा ? [उ०] असंखेज्जा । [प्र०] केवइया वाउकाइआ ओगाढा ? [उ०] असंखेज्जा । [प्र०] केवतिया वणस्सइकाइया ओगाढा ? [उ०] अणंता ।

४३. [प्र०] जत्थ णं भंते ! एगे आउकाइए ओगाढे तत्थ णं केवतिया पुढवि० ? [उ०] असंखेज्जा । [प्र०] केवतिया आउ० ? [उ०] असंखेज्जा । एवं जहेव पुढविकाइयाणं वत्तव्वता तहेव सव्वेसिं निरवसेसं भाणियव्वं जाव–वणस्सइकाइयाणं, जाव– [प्र०] केवतिया वणस्सइकाइया ओगाढा ? [उ०] अणंता ।

४४. [प्र०] एयंसि णं भंते ! धम्मत्थिकाय–अधम्मत्थिकाय–आगासत्थिकायंसि चक्किया केई आसइत्तए वा चिट्ठित्तए वा निसीयत्तए वा तुयट्टित्तए वा ? [उ०] नो इणट्ठे समट्ठे, अणंता पुण तत्थ जीवा ओगाढा । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'एतंसि णं धम्मत्थि० जाव–आगासत्थिकायंसि णो चक्किया केई आसइत्तए वा जाव–ओगाढा' ? [उ०] गोयमा ! से जहानामए–कूडागारसाला सिया, दुहओ लित्ता, गुत्ता, गुत्तदुवारा, जहा रायप्पसेणइज्जे, जाव–दुवारवयणाइं पिहेइ, दु० २ पिहेत्ता तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए जहन्नेणं एक्को वा दो वा तिन्नि वा उक्कोसेणं पदीवसहस्सं पलीवेज्जा, से नूणं गोयमा ! ताओ पदीवलेस्साओ अन्नमन्नसंबद्धाओ अन्नमन्नपुट्ठाओ जाव–अन्नमन्नघडत्ताए चिट्ठंति ? हंता चिट्ठंति । चक्किया णं गोयमा ! केई तासु पदीवलेस्सासु आसइत्तए वा जाव–तुयट्टित्तए वा ? भगवं ! णो तिणट्ठे समट्ठे । अणंता पुण तत्थ जीवा ओगाढा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ–जाव–'ओगाढा' ।

४५. [प्र०] कहि णं भंते ! लोए बहुसमे ? कहिणं भंते ! लोए सव्वविग्गहिए पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डागपयरेसु एत्थ णं लोए बहुसमे, एत्थ णं लोए सव्वविग्गहिए पण्णत्ते ।

पृथिवीकायिक.

४२. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यां एक पृथिवीकायिक जीव अवगाढ होय त्यां बीजा केटला पृथिवीकायिक जीवो रहेला होय ? [उ०] असंख्याता पृथिवीकायिको रहेला होय. [प्र०] केटला अप्कायिक जीवो अवगाढ होय ? [उ०] असंख्याता जीवो अवगाढ होय. [प्र०] केटला तेजःकायिक जीवो रहेला होय ? [उ०] असंख्याता रहेला होय. [प्र०] केटला वायुकायिक जीवो रहेला होय ? [उ०] असंख्याता रहेला होय. [प्र०] केटला वनस्पतिकायिको रहेला होय ? [उ०] अनन्ता वनस्पतिकायिको रहेला होय.

अप्कायिक.

४३. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यां एक अप्कायिक रहेलो होय त्यां केटला पृथिवीकायिक जीवो रहेला होय ? [उ०] असंख्याता रहेला होय. [प्र०] केटला अप्कायिको रहेला होय ? [उ०] असंख्याता रहेला होय. ए प्रमाणे जेम पृथिवीकायिकनी वक्तव्यता कही, तेम सर्वेनी सघळी वक्तव्यता यावत्–वनस्पतिकाय सुधी कहेवी. यावत्–[प्र०] केटला वनस्पतिकायिको रहेला होय ? [उ०] अनन्ता रहेला होय.

११ अस्तिकाय-निषदनद्वार. धर्मास्तिकायादि त्रण द्रव्यमां बेसवाने समर्थ थाय ?

४४. [प्र०] हे भगवन् ! आ धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, अने आकाशास्तिकायने विषे कोइ पुरुष बेसवाने, उभो रहेवाने, नीचे बेसवाने अने आळोटवाने शक्तिमान् होय ? [उ०] हे गौतम ! आ अर्थ यथार्थ नथी, परन्तु ते स्थाने तो अनन्ता जीवो अवगाढ–रहेला छे. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी एम कहो छो के आ 'धर्मास्तिकाय, यावत्–आकाशास्तिकायने विषे कोइ पुरुष बेसवाने शक्तिमान् नथी'–इत्यादि यावत्–त्यां अनन्ता जीवो अवगाढ–रहेला छे ? [उ०] हे गौतम ! जेम कोइ कूटागारशाला होय, तेने अंदर ने बहार लींपी होय, चारे तरफथी ढांकेली होय, अने तेनां बारणां पण बन्ध कर्यां होय–इत्यादि* राजप्रश्नीय सूत्रमां कह्या प्रमाणे तेनुं वर्णन जाणवुं, यावत्–ते कूटागार शालाना द्वारना कमाडने बंध करी, ते कूटागार शालाना बराबर मध्यभागमां जघन्यथी एक, बे, त्रण अने उत्कृष्टथी एक हजार दीवाओ सळगावे. हे गौतम ! खरेखर ते दीवाओनुं तेज परस्पर मळीने, परस्पर स्पर्श करीने, यावत् एक बीजा साथे एकरूपे थइने रहे ? हा, भगवन् ! रहे, हे गौतम ! कोइ पण पुरुष ते दिवाओना तेजमां बेसवाने यावत्–अथवा आळोटवाने शक्तिमान् थाय ? हे भगवन् ! ए अर्थ योग्य नथी, पण अनन्ता जीवो त्यां अवगाढ–रहेला होय छे. ते माटे हे गौतम ! एम कहेवाय छे के यावत्–'अनन्ता जीवो त्यां अवगाढ होय छे.'

१२ बहुसमद्वार.

४५. [प्र०] हे भगवन् ! लोकनो बराबर सम–(प्रदेशनी वृद्धि–हानिरहित) भाग क्यां कहेलो छे ? हे भगवन् ! लोकनो सर्वथी संक्षिप्त–सांकडो भाग क्यां कहेलो छे ? [उ०] हे गौतम ! आ रत्नप्रभा पृथिवीना उपर अने नीचेना क्षुद्र (लघु) प्रतरने विषे अहिं लोकनो बराबर †समभाग कहेलो छे, अने अहिंज लोकनो सर्वथी संक्षिप्त (सांकडो) भाग कहेलो छे.

---

४४ * कूटागारशालानुं वर्णन जुओ–राजप्रश्नीय प० ११४.

४५. † आ बन्ने क्षुद्र प्रतरोथी आरंभीने उपर अने नीचे प्रतरनी वृद्धि थाय छे–टीका.

४६. [प्र०] कहि णं भंते ! विग्गहविग्गहिए लोए पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! विग्गहकंडए एत्थ णं विग्गहविग्गहिए लोए पण्णत्ते ।

४७. [प्र०] किंसंठिए णं भंते ! लोए पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! सुपइट्ठियसंठिए लोए पण्णत्ते, हेट्ठा विच्छिन्ने, मज्झे जहा सत्तमसए पढमुद्देसे जाव–'अंतं करेंति' ।

४८. [प्र०] एयस्स णं भंते ! अहेलोगस्स, तिरियलोगस्स, उड्ढलोगस्स य कयरे कयरेहिंतो जाव–विसेसाहिया वा ? [उ०] गोयमा ! सव्वत्थोवे तिरियलोए, उड्ढलोए असंखेज्जगुणे, अहेलोए विसेसाहिए । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति ।

तेरसमसए चउत्थो उद्देसो समत्तो ।

४६. [प्र०] हे भगवन् ! क्यां विग्रहविग्रहिक–लोकरूप शरीरनो वक्रतायुक्त भाग छे ? [उ०] हे गौतम ! ज्यां विग्रहकंडक–वक्रतायुक्त अवयव छे (अर्थात् लोकरूप शरीरनो ब्रह्मदेवलोकरूप कोणीनो भाग छे, त्यां प्रदेशनी वृद्धि–हानि होवाथी वक्र अवयव छे) त्यां लोकरूपशरीर वक्रतायुक्त छे.

लोकनो वक्रभाग.

४७. [प्र०] हे भगवन् ! लोकनुं संस्थान केवा प्रकारे कह्युं छे ? [उ०] हे गौतम ! लोकनुं सुप्रतिष्ठक–(उंधा वाळेला शरावना उपर मूकेला शरावसंपुट)ने आकारे आ लोक कह्यो छे. नीचे विस्तीर्ण, मध्यमां संक्षिप्त–इत्यादि जेम *सातमा शतकना प्रथम उद्देशकमां कह्या प्रमाणे यावत्–'संसारनो अन्त करे छे'–त्यां सुधी जाणवुं.

११ संस्थानद्वार.

४८. [प्र०] हे भगवन् ! आ अधोलोक, तिर्यग्लोक, अने ऊर्ध्वलोकमां कयो लोक कोनाथी यावत्–विशेषाधिक छे ? [उ०] सर्वथी थोडो तिर्यग्लोक छे, तेथी असंख्यातगुण ऊर्ध्वलोक छे अने तेथी विशेषाधिक अधोलोक छे. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.'

त्रयोदश शतके चतुर्थ उद्देशक समाप्त.

---

४७ * भग० खं० १ श० ७ उ० १ पृ० २.

पंचमो उद्देसो।

१. [प्र०] नेरइया णं भंते ! किं सचित्ताहारा, अचित्ताहारा, मीसाहारा ? [उ०] गोयमा ! नो सचित्ताहारा, अचित्ताहारा, नो मीसाहारा। एवं असुरकुमारा, पढमो नेरइयउद्देसओ निरवसेसो भाणियव्वो। 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति।

तेरसमसए पंचमो उद्देसओ समत्तो।

पंचम उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिको शुं सचित्ताहारी छे, अचित्ताहारी छे के मिश्राहारी (सचित्त अने अचित्त उभय आहारवाळा) छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ सचित्ताहारी नथी, मिश्राहारी नथी, परन्तु अचित्ताहारी छे. असुरकुमारो ए प्रमाणे जाणवा. अहीं ['प्रज्ञापना'सूत्रना अठ्यावीशमा आहारपदनो] *प्रथम नैरयिक उद्देशक समग्र कहेवो. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे.'–एम कही भगवान् गौतम यावद्–विहरे छे.

त्रयोदश शतके पंचम उद्देशक समाप्त.

छट्ठो उद्देसो।

१. [प्र०] रायगिहे जाव–एवं वयासी–संतरं भंते ! नेरतिया उववज्जंति, निरंतरं नेरइया उववज्जंति ? [उ०] गोयमा ! संतरं पि नेरइया उववज्जंति, निरंतरं पि नेरइया उववज्जंति। एवं असुरकुमारा वि, एवं जहा गंगेये तहेव दो दंडगा जाव–'संतरं पि वेमाणिया चयंति, निरंतरं पि वेमाणिया चयंति'।

षष्ठ उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृह नगरमां [भगवान् गौतम] यावत्–आ प्रमाणे बोल्या के–हे भगवन् ! नारको सांतर–समयादिकना अंतर सहित उपजे, के निरन्तर–समयादिकना अंतर रहित उपजे ? [उ] हे गौतम ! नैरयिको सांतर पण उपजे छे, अने निरन्तर पण उपजे छे. असुरकुमारो पण ए प्रमाणे जाणवा, ए प्रमाणे †जेम गांगेय उद्देशकमां कह्युं छे तेम उत्पाद अने उद्वर्तना संबंधे बे दंडको यावत्–'वैमानिको सांतर पण च्यवे छे, अने निरन्तर पण च्यवे छे'–त्यां सुधी कहेवा.

---

१ * प्रज्ञा० पद २८ प० ४९८–२. १ † जुओ भग० खं० ३ श० ९ उ० ३२ पृ० १५८.

२. [प्र०] कहिणं भंते! चमरस्स असुरिंदस्स असुररन्नो चमरचंचा नामं आवासे पण्णत्ते? [उ०] गोयमा! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं तिरियमसंखेज्जे दीवसमुद्दे–एवं जहा बितियसए सभाउद्देसए वत्तव्वया सच्चेव अपरिसेसा नेयव्वा, नवरं इमं नाणत्तं–जाव–तिगिच्छकूडस्स उप्पायपव्वयस्स चमरचंचाए रायहाणीए चमरचंचस्स आवासपव्वयस्स अन्नेसिं च बहूणं सेसं तं चेव जाव–तेरस य अंगुलाइं अद्धंगुलं च किंचि विसेसाहिया परिक्खेवेणं। तीसे णं चमरचंचाए रायहाणीए दाहिणपच्चत्थिमेणं छक्कोडिसए पणपन्नं च कोडीओ पणतीसं च सयसहस्साइं पन्नासं च सहस्साइं अरुणोदगसमुद्दं तिरियं वीइवइत्ता एत्थ णं चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो चमरचंचे नामं आवासे पण्णत्ते, चउरासीइं जोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं, दो जोयणसयसहस्सा पन्नट्ठिं च सहस्साइं छच्च बत्तीसे जोयणसए किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं। से णं एगेणं पागारेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते। से णं पागारे दिवड्ढं जोयणसयं उड्ढं उच्चत्तेणं, एवं चमरचंचाए रायहाणीए वत्तव्वया भाणियव्वा सभाविहूणा, जाव–चत्तारि पासायपंतीओ।

३. [प्र०] चमरे णं भंते! असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचंचे आवासे वसहिं उवेति? [उ०] नो तिणट्ठे समट्ठे। [प्र०] से केणं खाइ अट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–'चमरचंचे आवासे०'? [उ०] गोयमा! से जहानामए–इहं मणुस्सलोगंसि उवगारियलेणाइ वा, उज्जाणियलेणाइ वा, णिज्जाणियलेणाइ वा, धारिवारियलेणाइ वा, तत्थ णं बहवे मणुस्सा य मणुस्सीओ य आसयंति, सयंति–जहा रायप्पसेणइज्जे जाव–कल्लाणफलवित्तिविसेसं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, अन्नत्थ पुण वसहिं उवेंति, एवामेव गोयमा! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररन्नो चमरचंचे आवासे केवलं किड्डा–रतिपत्तियं, अन्नत्थ पुण वसहिं उवेंति, से तेणट्ठेण जाव–आवासे। 'सेवं भंते! सेवं भंते'! त्ति जाव–विहरइ। तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ जाव–विहरइ।

असुरकुमारना इन्द्रनो चमरचंच आवास.

२. [प्र०] हे भगवन्! असुरकुमारना इन्द्र अने असुरकुमारना राजा चमरनो चमरचंचा नामे आवास क्यां कह्यो छे? [उ०] हे गौतम! जंबूद्वीप नामे द्वीपमां मेरु पर्वतनी दक्षिणे तिर्यग् असंख्याता द्वीपसमुद्रो उल्लंघीने [अरुणवर द्वीपनी बाह्य वेदिकाना अन्तथी अरुणवर समुद्रमां बेंतालीश लाख योजन गया बाद चमरेन्द्रनो तिगिच्छकूटनामे *उत्पातपर्वत आवे छे, तेनी दक्षिण दिशाए ६५५ क्रोड, ३५ लाख अने पचास हजार योजन अरुणोदक समुद्रमां तीर्छा गया बाद नीचे रत्नप्रभा पृथिवीनी अंदर चालीश हजार योजन जइए एटले चमरेन्द्रनी चमरचंचा नामे राजधानी आवे छे–इत्यादि] बीजा शतकनां आठमा †सभा उद्देशकमां–जे वक्तव्यता कही छे ते समग्र अहिं कहेवी, परंतु तेमां आ विशेष छे के तिगिच्छकूट नामे उत्पात पर्वत, चमरचंचानामे राजधानी, चमरचंच नामे आवासपर्वत, अने बीजा घणाना–इत्यादि बधुं ते प्रमाणे कहेवुं, यावत्–त्रण लाख, सोळ हजार, बसो सत्यावीश योजन [त्रण गाउ, बसो अठ्यावीश धनुष अने कंइक विशेषाधिक] साडा तेर अंगुल–एटली चमरचंचानी परिधि छे. ते चमरचंचा राजधानीथी दक्षिण–पश्चिम दिशाए (नैर्ऋत्य कोणने विषे, छसो पंचावन क्रोड, पांत्रीश लाख, अने पचास हजार योजन अरुणोदक समुद्रमां तिर्च्छा गया बाद अहिं असुरकुमारना इंद्र अने असुरकुमारना राजा चमरनो चमरचंच नामे आवास कह्यो छे. ते लंबाइ अने पहोळाइमां चोराशी हजार योजन छे. तेनी परिधि बे लाख, पांसठ हजार अने छसो बत्रीश योजनथी कंइक विशेषाधिक छे. ते आवास एक प्राकारथी (किल्लाथी) चोतरफ विंटाएलो छे. ते प्राकार उंचो–उंचाइमां दोढसो योजन छे. ए प्रमाणे चमरचंचा राजधानीनी बधी वक्तव्यता यावत्–"चार प्रासाद पंकितओ छे"–त्यां सुधी कहेवी, परन्तु [१ सुधर्मासभा, २ उपपातसभा, ३ अभिषेकसभा, ४ अलंकारसभा अने ५ व्यवसायसभा–] ए पांच सभा न कहेवी.

चमरेन्द्र चमरचंच नामे आवासमां रहे छे?

३. [प्र०] हे भगवन्! असुरेंद्र असुरकुमारना राजा चमर चमरचंच नामे आवासमां रहे छे? [उ०] ए अर्थ यथार्थ नथी. [प्र०] हे भगवन्! एम शा हेतुथी कहो छो के, चमरचंच नामे आवासमां–इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम! जेमके आ मनुष्यलोकमां उपकारक–पीठबद्ध घरो, उद्यानमां रहेला लोकने उपकारक (नगरप्रवेश गृहो) घरो, नगरनिर्गम–नगरथी बहार नीकळतां प्राप्त थतां घरो अने वारिधारायुक्त (फुवारायुक्त) घरो होय, त्यां घणा पुरुषो अने स्त्रीओ बेसे, सुवे–इत्यादि ‡राजप्रश्नीय सूत्रमां कह्या प्रमाणे यावत्–'कल्याणरूप फळ अने वृत्तिविशेषने अनुभवतां रहे छे' त्यां सुधी कहेवुं, पण त्यां रहेठाण करता नथी, अर्थात् पोतानो निवास तो बीजे स्थळे करे छे, ए प्रमाणे हे गौतम! असुरेन्द्र असुरकुमारना राजा चमरनो चमरचंच नामे आवास केवल क्रीडा अने रति निमित्ते छे, अने बीजे स्थळे ते पोतानो वास करे छे; ते हेतुथी एम कह्युं छे के चमरचंच आवासने विषे ते पोतानो वास करतो नथी.' 'हे भगवन्! ते ए प्रमाणे छे, हे भगवन्! ते ए प्रमाणे छे'–एम कही यावद् विहरे छे. त्यारबाद श्रमण भगवंत महावीर अन्य कोइ दिवसे राजगृह नगरथकी अने गुणसिलक चैत्यथकी यावद्–विहार करे छे.

---

२ * चमरेन्द्रने तिर्यग्लोकमां जवुं होय त्यारे आ पर्वत उपर आवी उत्पतन करे छे माटे ते पर्वतने उत्पातपर्वत कहेवामां आवे छे.–टीका.

† जुओ भग० खं० १ श० २ उ० ८ पृ० २९७.

३ ‡ राजप्र० प० ७६ सू० १२.

४. तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था, वन्नओ। पुन्नभद्दे चेइए, वन्नओ। तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कदाइ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव-विहरमाणे जेणेव चंपा नगरी जेणेव पुन्नभद्दे चेतिए तेणेव उवागच्छइ, ते० २-च्छित्ता जाव-विहरइ। तेणं कालेणं तेणं समएणं सिंधूसोवीरेसु जणवएसु वीतीभए नामं नगरे होत्था, वन्नओ। तस्स णं वीतीभयस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एत्थ णं मियवणे नामं उज्जाणे होत्था, सव्वोउय० वन्नओ। तत्थ णं वीतीभए नगरे उदायणे नामं राया होत्था, महया० वन्नओ। तस्स णं उदायणस्स रन्नो पभावती नामं देवी होत्था, सुकुमाल० वन्नओ। तस्स णं उदायणस्स रन्नो पुत्ते पभावतीए देवीए अत्तए अभीतिनामं कुमारे होत्था, सुकुमाल० जहा सिवभद्दे, जाव-'पच्चुवेक्खमाणे विहरति'। तस्स णं उदायणस्स रन्नो नियए भाइणिज्जे केसीनामं कुमारे होत्था, सुकुमाल० जाव-सुरूवे। से णं उदायणे राया सिंधूसोवीरप्पामोक्खाणं सोलसण्हं जणवयाणं, वीतीभयप्पामोक्खाणं तिण्हं तेसट्ठीणं नगरागरसयाणं, महसेणप्पामोक्खाणं दसण्हं राईणं बद्धमउडाणं विदिन्नछत्त-चामर-वालवीयणाणं, अन्नेसिं च बहूणं राई-सर-तलवर० जाव-सत्थवाहप्पभिईणं आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव-कारेमाणे, पालेमाणे समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव-विहरइ।

५. तए णं से उदायणे राया अन्नया कयाइ जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, जहा संखे जाव-विहरइ। तए णं तस्स उदायणस्स रन्नो पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव-समुप्पज्जित्था-"धन्ना णं ते गामा-गर-नगर-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणा-सम-संबाहसन्निवेसा, जत्थ णं समणे भगवं महावीरे विहरइ, धन्ना णं ते राईसर-तलवर० जाव-सत्थवाहप्पभिईओ, जे णं समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, जाव-पज्जुवासंति। जइ णं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं जाव-विहरमाणे इहमागच्छेज्जा, इह समोसरेज्जा, इहेव वीतीभयस्स नगरस्स बहिया मियवणे उज्जाणे अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा जाव-विहरेज्जा, तो णं अहं समणं भगवं महावीरं वंदेज्जा, नमंसेज्जा, जाव-पज्जुवासेज्जा। तए णं समणे भगवं महावीरे उदायणस्स रन्नो अयमेयारूवं अज्झत्थियं जाव-समुप्पन्नं वियाणित्ता चंपाओ नगरीओ पुन्नभद्दाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणु० जाव-विहरमाणे जेणेव सिंधूसोवीरे जणवए जेणेव वीतीभये नगरे, जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, ते० २-च्छित्ता

चंपानगरी.

पूर्णभद्र चैत्य.

सिन्धुसौवीरदेश. वीतभय.

उदायन राजा. प्रभावती देवी.

४. ते काले ते समये चंपा नामनी नगरी हती. वर्णन. पूर्णभद्र चैत्य हतुं. वर्णन. त्यारबाद श्रमण भगवंत महावीर अन्य कोइ दिवसे अनुक्रमे गमन करता, यावत्-विहार करता ज्यां चंपा नगरी छे, अने ज्यां पूर्णभद्र चैत्य छे त्यां आवे छे, त्यां आवीने यावद्-विहरे छे. ते काले ते समये सिंधूसौवीर देशने विषे वीतिभय नामे नगर हतुं. ते वीतभय नगरनी बहार उत्तरपूर्व दिशाए (ईशान कोणने विषे) मृगवन नामनुं उद्यान हतुं. ते सर्व ऋतुना पुष्पादिकथी समृद्ध हतुं-इत्यादि वर्णन जाणवुं. ते वीतभय नगरने विषे उदायन नामे राजा हतो, ते महाहिमवान् जेवो-इत्यादि वर्णन जाणवुं. ते उदायन राजाने प्रभावती नामनी देवी (राणी) हती, ते सुकुमालहाथपगवाळी-इत्यादि वर्णन जाणवुं. ते उदायन राजाने प्रभावती देवीथी थयेलो अभीचि नामे कुमार हतो. ते सुकुमाल-इत्यादि वर्णन *शिवभद्रनी पेठे जाणवुं, यावत्-ते राज्यनी चिंता करतो विहरे छे. ते उदायन राजाने पोतानो भाणेज केशी नामे कुमार हतो, ते सुकुमालहाथपगवाळो अने यावत्-सुरूप हतो. ते उदायन राजा सिंधूसौवीर प्रमुख सोळ देश, वीतभयप्रमुख त्रणसोने त्रेसठ नगर अने आकरनुं (सुवर्णादि खाणोनुं) तथा जेने छत्र चामर अने वालव्यजन-(विंजणो) आपेला छे एवा महासेन प्रमुख दश मुकुटबद्ध राजाओ, अने एवा बीजा घणा राजा, युवराज, तलवर (कोटवाल) यावत्-सार्थवाह प्रमुखनुं अधिपतिपणुं करतो, राज्यनुं पालन करतो, जीवाजीव तत्त्वने जाणतो, श्रमणोनो उपासक थईने यावत्-विहरे छे.

५. त्यारबाद ते उदायन राजा अन्य कोइ दिवसे ज्यां पोषधशाला छे त्यां आवे छे, अने †शंख श्रमणोपासकनी पेठे यावत्-विहरे छे. त्यारबाद ते उदायन राजाने मध्यरात्रीने समये धर्मजागरण करता आवा प्रकारनो आ संकल्प यावत्-उत्पन्न थयो-"ते गाम, आकर, नगर, खेड, कर्बट, मंडब, द्रोणमुख, पट्टन, आश्रम, संबाध अने सन्निवेश धन्य छे, ज्यां श्रमण भगवंत महावीर विचरे छे, ते राजा, शेठ, तलवर यावद्-सार्थवाह प्रमुख धन्य छे, जेओ श्रमण भगवंत महावीरने वंदन-नमस्कार करे छे अने यावत्-पर्युपासना करे छे. जो श्रमण भगवंत महावीर अनुक्रमे विचरता एक गामथी बीजे गाम जता, यावद्-विहार करता अहिं आवे, अहिं समोसरे, अने आ वीतभय नगरनी बहार मृगवन नामे उद्यानमां यथायोग्य अवग्रहने ग्रहण करी संयम अने तपवडे आत्माने भावित करता यावद्-विचरे तो हुं श्रमण भगवंत महावीरने वंदन करुं, अने नमस्कार करुं, यावत्-तेमनी पर्युपासना करुं. त्यारबाद श्रमण भगवंत महावीर उदायन राजाना आवा प्रकारना उत्पन्न थएला आ संकल्पने जाणीने चंपा नगरीथी अने पूर्णभद्र चैत्य थकी नीकळे छे, नीकळीने

४ * भग० खं० ३ श० ११ उ० ११ पृ० २२१.

५ † भग० खं० ३ श० १२ उ० १ पृ० २५२.

जाव–विहरति । तए णं वीतीभये नगरे सिंघाडग० जाव–परिसा पज्जुवासइ । तए णं से उदायणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठ० कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, को० २–त्ता एवं वयासी–"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! वीयीभयं नगरं सब्भिंतरबाहिरियं जहा कूणिओ उववाइए जाव–'पज्जुवासति'। पभावतीपामोक्खाओ देवीओ तहेव जाव–पज्जुवासंति । धम्मकहा। तए णं से उदायणे राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ–तुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठा० २–त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव–नमंसित्ता एवं वयासी–'एवमेयं भंते! तहमेयं भंते! जाव–से जहेयं तुज्झे वदह' त्ति कट्टु जं नवरं देवाणुप्पिया! अभीयिकुमारं रज्जे ठावेमि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव–पव्वयामि। 'अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं'। तए णं से उदायणे राया समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठ–तुट्ठे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव आभिसेक्कं हत्थि दुरूहति, दुरूहित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ मियवणाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव वीतीभये नगरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

६. तए णं तस्स उदायणस्स रन्नो अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव–समुप्पज्जित्था–"एवं खलु अभीयीकुमारे ममं एगे पुत्ते इट्ठे कंते, जाव–किमंग पुण पासणयाए? तं जदी णं अहं अभीयीकुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता जाव–पव्वयामि, तो णं अभीयीकुमारे रज्जे य रट्ठे य जाव–जणवए य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए, गिद्धे, गढिए, अज्झोववन्ने, अणादीयं, अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टिस्सइ, तं नो खलु मे सेयं अभीयीकुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव–पव्वइत्तए, सेयं खलु मे णियगं भाइणेज्जं केसिं कुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ जाव–पव्वइत्तए'–एवं संपेहेइ, एवं संपेहेत्ता जेणेव वीतीभये नगरे तेणेव उवागच्छइ, ते० २–गच्छित्ता वीतीभयं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गेहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, तेणेव उवागच्छइ, ते० २–च्छित्ता आभिसेक्कं हत्थि ठवेति, आभि० २–वेत्ता आभिसेक्काओ हत्थीओ पच्चोरुभइ, आ० २–भित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छति, ते० २–च्छित्ता

अनुक्रमे गमन करता, एक गामथी बीजे गाम यावत्–विहरता, ज्यां सिंधुसौवीर देश छे, ज्यां वीतभय नगर छे, अने ज्यां मृगवन नामे उद्यान छे त्यां आवे छे, त्यां आवीने यावद्–विहरे छे. ते समये वीतभय नगरमां शृंगाटक–शींगोडाना जेवा त्रिकोण (आकारवाळा)– इत्यादि मार्गोमां [घणा माणसो परस्पर कहे छे के 'अहिं मृगवन उद्यानमां भगवान् महावीर पधार्या छे' एम सांभळीने घणा क्षत्रियो वगेरे वंदन करवा नीकळे छे इत्यादि] यावद्–परिषद् पर्युपासना करे छे. त्यार पछी भगवान् महावीर आव्यानी आ वातथी विदित थयेला ते उदायन राजाए हर्षित अने संतुष्ट थई कौटुंबिक पुरुषोने बोलावी आ प्रमाणे कह्युं के–"हे देवानुप्रियो! तमे शीघ्र वीतभय नगरने अंदर अने बहार साफ करावो"–इत्यादि बधुं *औपपातिक सूत्रमां कूणिक संबन्धे कह्युं छे तेम अहिं पण कहेवुं. यावत्–ते पर्युपासना करे छे. तथा प्रभावती प्रमुख देवीओ पण तेज प्रमाणे यावत्–पर्युपासना करे छे. त्यारबाद [भगवंते] धर्म कथा कही. पछी ते उदायन राजा श्रमण भगवंत महावीरनी पासे धर्मने सांभळी, अवधारी हर्षित अने संतुष्ट थई उठी उभो थाय छे, उभो थइने श्रमण भगवंत महावीरने त्रणवार प्रदक्षिणा करी यावत्–नमस्कार करीने आ प्रमाणे बोल्यो–'हे भगवन्! ए ए प्रमाणे ज छे, हे भगवन्! ते ते प्रकारे छे'–यावत्–जे प्रकारे आ तमे कहो छो, परन्तु एटलो विशेष छे के, हे देवानुप्रिय! अभीचिकुमारने राज्यने विषे स्थापन करुं, अने त्यारबाद हुं देवानुप्रिय एवा आपनी पासे मुंड थईने यावत्–प्रव्रज्यानो स्वीकार करुं. [भगवंते कह्युं के] 'हे देवानुप्रिय! जेम सुख थाय तेम करो, प्रतिबंध न करो.' त्यार बाद श्रमण भगवंत महावीरे उदायन राजाने ए प्रमाणे कह्युं एटले ते हर्षित अने संतुष्ट थई श्रमण भगवंत महावीरने वंदन अने नमस्कार करे छे, वंदन अने नमस्कार करीने ते अभिषेकने योग्य (पट्ट) हस्ती उपर चढी श्रमण भगवंत महावीरनी पासेथी अने मृगवन नामना उद्यानथी नीकळीने ज्यां वीतभय नामे नगर छे ते तरफ जवानो तेणे विचार कर्यो.

पोताना भाणेज केशी कुमारने राज्याभिषेक करवानो उदायननो संकल्प.

६. त्यार पछी ते उदायन राजाने आवा प्रकारनो आ संकल्प यावत्–उत्पन्न थयो के 'ए प्रमाणे खरेखर अभीचिकुमार मारे एक पुत्र छे अने ते मने इष्ट अने प्रिय छे, यावत्–तेनुं नाम श्रवण पण दुर्लभ छे, तो पछी तेनुं दर्शन दुर्लभ होय तेमां शुं कहेवुं? ते माटे जो हुं अभीचिकुमारने राज्यने विषे स्थापीने श्रमण भगवंत महावीरनी पासे मुंड थई यावत्–प्रव्रज्या ग्रहण करुं, तो अभीचिकुमार राज्य, राष्ट्र, यावत्–जनपदमां अने मनुष्यसंबंधी कामभोगोमां मूर्छित, गृद्ध, ग्रथित अने तल्लीन थई अनादि अनंत अने दीर्घमार्गवाळा चारगतिरूप संसार अटवीने विषे परिभ्रमण करशे, ते माटे अभीचिकुमारने राज्यने विषे स्थापन करी श्रमण भगवंत महावीरनी पासे यावत्–प्रव्रज्या लेवी ए श्रेयरूप नथी, परंतु मारे मारा भाणेज केशीकुमारने राज्यने विषे स्थापन करीने श्रमण भगवंत महावीरनी पासे प्रव्रज्या लेवी श्रेयरूप छे'–ए प्रमाणे विचार करे छे. एम विचारीने ज्यां वीतभय नगर छे, त्यां आवी वीतभय नगरनी वच्चे ज्यां पोतानुं घर छे, अने ज्यां बाहेरनी उपस्थानशाला छे त्यां आवे छे, त्यां आवीने अभिषेकने योग्य–पट्ट हस्तीने उभो राखीने तेना उपरथी नीचे उतरे छे, नीचे उतरीने ज्यां सिंहासन छे, त्यां आवी उत्तम सिंहासन उपर पूर्व दिशासन्मुख बेसे छे, बेसीने कौटुंबिक पुरुषोने बोलावी तेणे ए प्रमाणे

५ * जुओ-औप० प० ६१-२ पं० १२.

सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयति, निसीइत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, को० २–वेत्ता एवं वयासी–'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! वीतीभयं नगरं सब्भितरबाहिरियं०'जाव–पच्चप्पिणंति। तए णं से उदायणे राया दोच्चं पि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावेत्ता एवं वयासी–'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! केसिस्स कुमारस्स महत्थं ३–एवं रायाभिसेओ जहा सिवभद्दस्स कुमारस्स तहेव भाणियव्वो जाव–'परमाउं पालयाहि, इट्ठजणसंपरिवुडे सिंधूसोवीरपामोक्खाणं सोलसण्हं जणवयाणं वीतीभयपामोक्खाणं तिन्नि तेसट्ठीणं नगरा–गरसयाणं महसेणपामोक्खाणं दसण्हं राईणं अन्नेसिं च बहूणं राईसर० जाव–कारेमाणे, पालेमाणे विहराहि'त्ति कट्टु जयजयसद्दं पउंजंति। तए णं से केसी कुमारे राया जाए, महया० जाव–विहरति।

७. तए णं से उदायणे राया केसिं रायाणं आपुच्छइ। तए णं से केसी राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति–एवं जहा जमालिस्स तहेव सब्भितरबाहिरियं तहेव जाव–निक्खमणाभिसेयं उवट्ठवेति। तए णं से केसी राया अणेगगणनायग० जाव–संपरिवुडे उदायणं रायं सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयावेति, निसीयावेत्ता अट्ठसएणं सोवन्नियाणं० एवं जहा जमालिस्स जाव–एवं वयासी–'भण सामी! किं देमो, किं पयच्छामो, किणा वा ते अट्ठो'? तए णं से उदायणे राया केसिं रायं एवं वयासी–'इच्छामि णं देवाणुप्पिया! कुत्तियावणाओ०'–एवं जहा जमालिस्स, नवरं पउमावती अग्गकेसे पडिच्छइ पियविप्पयोगदूसहा। तए णं से केसी राया दोच्चं पि उत्तरावक्कमणं सीहासणं रयावेति, दो० २ रयावेत्ता, उदायणं रायं सेयापीतएहिं कलसेहिं० सेसं जहा जमालिस्स, जाव–सन्निसन्ने, तहेव अम्मधाती, नवरं पउमावती हंसलक्खणं पडसाडगं गहाय सेसं तं चेव, जाव–सीयाओ पच्चोरुभति, सी० २–भित्ता, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, ते० २–च्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमति, उ० २–अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं तं चेव पउमावती पडिच्छति, जाव–'घडियव्वं सामी! जाव–नो पमादेयव्वं'ति कट्टु केसी राया पउमावती य समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता, नमंसित्ता जाव–पडिगया। तए णं से उदायणे राया सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं० सेसं जहा उसभदत्तस्स, जाव–सव्वदुक्खप्पहीणे।

कह्युं–'हे देवानुप्रियो! शीघ्र वीतभय नगरने बहार अने अंदरथी साफ करावो'–इत्यादि यावत्–तेओ तेम करीने आज्ञा पाछी आपे छे. त्यारपछी ते उदायन राजाए बीजीवार कौटुंबिक पुरुषोने बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं–'हे देवानुप्रियो! शीघ्र केशीकुमारनो महाअर्थवाळो ३ विपुल राज्याभिषेक करो'. ए प्रमाणे जेम *शिवभद्रकुमारनो राज्याभिषेक कह्यो छे तेम अहिं 'दीर्घायुषी थाओ'–त्यां सुधी कहेवो. हवे ते यावत्–इष्टजनथी परिवृत थइ सिंधूसौवीर प्रमुख सोळ देशो, वीतभय प्रमुख त्रणसो त्रेसठ नगरो अने खाणोनुं तथा महासेन प्रमुख दश राजाओ, अन्य बीजा घणा राजा अने युवराज वगेरेनुं स्वामिपणुं यावत्–करतो, पालन करतो विहर' एम कही 'जय जय' शब्द बोले छे. त्यारे ते केशीकुमार राजा थयो अने ते मोटा हिमवान् पर्वतना जेवो–इत्यादि वर्णन जाणवुं, यावत्–ते विहरे छे.

७. त्यारबाद उदायन राजा केशी राजा पासे [दीक्षा लेवानी] रजा मागे छे, त्यार पछी ते केशीराजा कौटुंबिक पुरुषोने बोलावे छे–इत्यादि †जेम जमालि संबन्धे कह्युं छे तेम नगरनी बहार अने अंदर साफ करावो–इत्यादि यावद्–निष्क्रमणाभिषेक–दीक्षाभिषेक करे छे. त्यारपछी अनेक गणनायक वगेरेना परिवार युक्त ते केशी राजा उदायन राजाने उत्तम सिंहासन उपर पूर्वदिशा सन्मुख बेसाडीने एकसो आठ सोनाना कलशो वडे अभिषेक करे छे–इत्यादि जेम ‡जमालि संबंधे कह्युं छे तेम कहेवुं, यावत्–ते केशी राजाए ए प्रमाणे कह्युं के–'हे स्वामिन्! अमे शुं दइए, अमे शुं आपीए, अने तमारे शेनुं प्रयोजन छे? पछी ते उदायन राजाए केशी राजाने ए प्रमाणे कह्युं–'हे देवानुप्रिय! कुत्रिकापणथी [हुं एक रजोहरण अने एक पात्र] मंगाववा इच्छुं छुं.–इत्यादि जेम ‡जमालि संबन्धे कह्युं तेम अहिं जाणवुं. परन्तु एटलो विशेष छे के जेने प्रियनो वियोग दुःसह छे एवी पद्मावती अग्रकेशोने ग्रहण करे छे. त्यार बाद केशी राजा बीजीवार पण उत्तर दिशा तरफ सिंहासन गोठवावीने उदायन राजानो श्वेत अने पीत (सोना–रुपाना) कळशो वडे अभिषेक करे छे. बाकी बधुं जमालिनी पेठे जाणवुं, यावत्–ते शिबिकामां बेठो. ते प्रमाणे धात्रमाता संबन्धे जाणवुं, परंतु एटलो विशेष छे के अहिं पद्मावती हंसना चिह्नवाळा रेशमी पटने ग्रहण करी–इत्यादि बाकी बधुं ते प्रमाणे जाणवुं, यावत्–ते उदायन राजा शिबिका थकी उतरीने ज्यां श्रमण भगवंत महावीर छे, त्यां आवीने श्रमण भगवंत महावीरने त्रणवार वंदन अने नमस्कार करी उत्तर–पूर्व दिशा–ईशान कोण तरफ जईने पोते ज आभरण, माळा अने अलंकारने मूके छे–इत्यादि पूर्व प्रमाणे कहेवुं, यावत्–पद्मावती तेने ग्रहण करे छे, अने यावत्–[ते बोली के–] 'हे स्वामिन्! संयमने विषे प्रयत्न करजो, यावत्–प्रमाद न करशो'–एम कही केशी राजा अने पद्मावती श्रमण भगवंत महावीरने वंदन अने नमस्कार करे छे. वंदन अने नमस्कार करीने तेओ पोताने स्थानके गया पछी उदायन राजा पोतानी मेळे पंच मुष्टिक लोच करे छे–बाकीनुं वृत्तांत ¶ऋषभदत्तनी पेठे जाणवुं, यावत्–ते सर्व दुःखथी रहित थाय छे.

---

६ * जुओ शिवभद्रकुमारना राज्याभिषेक संबंधे भग० खं० ३ श० ११ उ० ९ पृ० २२२.
७ † जुओ–भग० खं० ३ श० ९ उ० ३३ पृ० १७३. ‡ जुओ–भग० खं० ३ श० ९ उ० ३३ पृ० १७३. ¶ जुओ–भग० खं० ३ श० ९ उ० ३३ पृ० १६५.

८. तए णं तस्स अभीयिस्स कुमारस्स अन्नदा कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणस्स अय-मेयारूवे अज्झत्थिए जाव-समुप्पज्जित्था-'एवं खलु अहं उदायणस्स पुत्ते पभावतीए देवीए अत्तए, तए णं से उदायणे राया ममं अवहाय नियगं भाइणिज्जं केसिकुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ जाव-पव्वइए'-इमेणं एयारूवेणं महया अप्पत्तिएणं मणोमाणसिएणं दुक्खेणं अभिभूए समाणे अंतेउरपरियालसंपरिवुडे सभंडमत्तोवगरणमायाए वीतीभयाओ नयराओ निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव चंपा नयरी, जेणेव कूणिए राया, तेणेव उवागच्छइ, ते० २-च्छित्ता कूणियं रायं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ। तत्थ वि णं से विउलभोगसमितिसमन्नागए यावि होत्था। तए णं से अभी-यीकुमारे समणोवासए यावि होत्था, अभिगय० जाव-विहरइ, उदायणंमि रायरिसिंमि समणुबद्धवेरे यावि होत्था। तेणं कालेणं तेणं समएणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामंतेसु चोसट्ठिं असुरकुमारावाससयसहस्सा पन्नत्ता। तए णं से अभीयीकुमारे बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणति, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए तीसं भत्ताइं अणसणाए छेएइ, छेएत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइय-पडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामंतेसु चोयट्ठीए आयावा० जाव-सहस्सेसु अन्नयरंसि आयावाअसुरकुमारावासंसि आतावाअसुरकुमारदेवत्ताए उववन्नो। तत्थ णं अत्थेगइयाणं आयावगाणं असुरकुमाराणं देवाणं एगं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता, तत्थ णं अभीयिस्स वि देवस्स एगं पलिओवमं ठिई पण्णत्ता। [प्र०] से णं भंते! अभीयीदेवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं ३ अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिति, कहिं उववज्जिहिति? [उ०] गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति, जाव-अंतं काहिति। 'सेवं भंते! सेवं भंते'! त्ति।

तेरसमसए छट्ठो उद्देसो समत्तो।

८. त्यार पछी अन्य कोई दिवसे अभीचिकुमारने मध्यरात्रिने समये कुटुंबजागरण करता आवा प्रकारनो आ विचार उत्पन्न थयो—'ए प्रमाणे खरेखर हुं उदायन राजानो पुत्र अने प्रभावतीनी कुक्षियी उत्पन्न थयो छुं, अने ते उदायन राजाए मने छोडी पोताना भाणेज केशिकुमारने राज्य उपर बेसाडी श्रमण भगवंत महावीरनी पासे यावत्-प्रव्रज्या लीधी'—आवा प्रकारना आ मोटा अप्रीतिरूप मानसिक आंतर दुःखथी पीडित थएलो ते अभीचिकुमार पोताना अंतःपुरना परिवारसहित पोतानुं भांडमात्रोपकरण—पात्र वगेरे सामग्री लईने नीकळे छे, नीकळी अनुक्रमे जतां—एक गामथी बीजे गाम जतां ज्यां चंपा नगरी छे, अने ज्यां कूणिक राजा छे त्यां आवी कूणिकनो आश्रय करी विहरे छे. अने त्यां पण तेने विपुल भोगनी सामग्री प्राप्त थई. पछी ते अभीचिकुमार श्रावक पण थयो, अने जीवाजीवतत्त्वनो ज्ञाता थइ यावत्-विहरे छे, तो पण ते अभीचिकुमार उदायन राजर्षिने विषे वैरना अनुबन्धथी युक्त हतो. ते काळे, ते समये आ रत्नप्रभा पृथिवीना नरकावासोनी पासे चोसठ लाख असुरकुमारोना आवासो कह्या छे, हवे ते अभीचिकुमार घणा वर्षो सुधी श्रमणोपासक पर्यायने पाळी अर्ध मासिक संलेखनाथी त्रीश भक्तो अनशनपणे व्यतीत करी, ते पाप स्थानकनी आलोचना अने प्रतिक्रमण कर्या सिवाय मरणसमये काळधर्म पामी आ रत्नप्रभा पृथिवीना नरकावासोनी पासे चोसठ लाख आयाव (आताप—प्रकाशरूप) असुरकुमारावासोमांना कोइ एक आयावरूप असुरकुमारावासमां आतावरूप असुरकुमार देवपणे उत्पन्न थयो. त्यां केटलाक आयावरूप असुरकुमार देवोनी एक पल्योपम स्थिति कही छे, अने त्यां अभीचिदेवनी पण एक पल्योपमनी स्थिति कही छे. [प्र०] हे भगवन्! ते अभीचिदेव आयुःक्षय थया पछी तथा भवक्षय थया पछी मरण पामी क्यां जशे—क्यां उत्पन्न थशे? [उ०] हे गौतम! महाविदेह क्षेत्रने विषे सिद्ध थशे, यावत्-सर्व दुःखोनो अंत करशे. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे'—एम कही भगवान् गौतम यावत्-विहरे छे.

त्रयोदश शते षष्ठ उद्देशक समाप्त.

सत्तमो उद्देसो।

१. [प्र०] रायगिहे जाव–एवं वयासी–आया भंते! भासा, अन्ना भासा? [उ०] गोयमा! नो आया भासा, अन्ना भासा।

२. [प्र०] रूविं भंते! भासा, अरूविं भासा? [उ०] गोयमा! रूविं भासा, नो अरूविं भासा।

३. [प्र०] सचित्ता भंते! भासा, अचित्ता भासा? [उ०] गोयमा! नो सचित्ता भासा, अचित्ता भासा।

४. [प्र०] जीवा भंते! भासा, अजीवा भासा? [उ०] गोयमा! नो जीवा भासा, अजीवा भासा।

५. [प्र०] जीवाणं भंते! भासा, अजीवाणं भासा? [उ०] गोयमा! जीवाणं भासा, नो अजीवाणं भासा।

६. [प्र०] पुव्विं भंते! भासा, भासिज्जमाणी भासा, भासासमयवीतिक्कंता भासा? [उ०] गोयमा! नो पुव्विं भासा, भासिज्जमाणी भासा, णो भासासमयवीतिक्कंता भासा।

७. [प्र०] पुव्विं भंते! भासा भिज्जति, भासिज्जमाणी भासा भिज्जति, भासासमयवीतिक्कंता भासा भिज्जति? [उ०] गोयमा! नो पुव्विं भासा भिज्जति, भासिज्जमाणी भासा भिज्जइ, नो भासासमयवीतिक्कंता भासा भिज्जति।

सप्तम उद्देशक.

भाषा. भाषा आत्मस्वरूप छे के तेथी अन्य छे?

१. [प्र०] राजगृह नगरमां भगवान् गौतम यावत्–आ प्रमाणे बोल्या के, हे भगवन्! [1]*भाषा ए आत्मा–जीवस्वरूप छे के तेथी अन्य छे? [उ०] हे गौतम! भाषा ए आत्मा नथी, पण तेथी अन्य (पुद्गलस्वरूप) भाषा छे.

रूपी के अरूपी?

२. [प्र०] हे भगवन्! भाषा रूपी–रूपवाळी छे के अरूपी–रूप विनानी छे? [उ०] हे गौतम! भाषा (पुद्गलमय होवाथी) रूपी छे, पण रूप विनानी नथी.

सचित्त के अचित्त?

३. [प्र०] हे भगवन्! भाषा सचित्त–सजीव छे के अचित्त–अजीव छे? [उ०] हे गौतम! भाषा सचित्त नथी, पण अचित्त छे.

जीवस्वरूप के अजीवस्वरूप?

४. [प्र०] हे भगवन्! भाषा जीवरूप–प्राणधारणरूप छे के अजीवस्वरूप छे? [उ०] हे गौतम! भाषा जीवरूप नथी, पण अजीवरूप छे.

जीवोने भाषा के अजीवोने भाषा होय?

५. [प्र०] हे भगवन्! जीवोने भाषा होय छे के अजीवोने भाषा होय छे? [उ०] हे गौतम! जीवोने भाषा होय छे, पण अजीवोने भाषा नथी होती.

भाषा क्यारे कहेवाय?

६. [प्र०] हे भगवन्! शुं [बोलाया] पूर्वे भाषा कहेवाय, बोलाती होय त्यारे भाषा कहेवाय, के बोलाया पछी भाषा कहेवाय? [उ०] हे गौतम! बोलाया पहेला भाषा न कहेवाय, तेमज बोलाया पछी पण भाषा न कहेवाय, पण बोलाती होय त्यारे भाषा कहेवाय.

भाषा क्यारे भेदाय?

७. [प्र०] हे भगवन्! शुं बोलाया पहेलां भाषा भेदाय, बोलाती भाषा भेदाय, के बोलाया पछी भाषा भेदाय? [उ०] हे गौतम! बोलाया पहेलां भाषा न भेदाय, तेमज बोलाया पछी भाषा न भेदाय, पण बोलाती होय त्यारे भाषा भेदाय.

---

[1] * जीवथी प्रयोजाय छे, जीवना बन्ध अने मोक्षनुं कारण थाय छे माटे जीवनो धर्म होवाथी भाषा 'आत्मा–जीव'–एम कही शकाय? अथवा भाषा जीवस्वरूप नथी–एम पण कहेवाय? केमके ते श्रोत्रेन्द्रियग्राह्य होवाथी मूर्तपणाथी जीव करतां भिन्न छे, माटे शंकाथी आ प्रश्न थाय छे. उत्तर–भाषा पुद्गलमय होवाथी ते आत्मस्वरूप नथी.–टीका.

८. [प्र०] कतिविहा णं भंते! भासा पण्णत्ता? [उ०] गोयमा! चउब्विहा भासा पण्णत्ता, तंजहा—१ सच्चा, २ मोसा, ३ सच्चामोसा, ४ असच्चामोसा।

९. [प्र०] आया भंते! मणे, अन्ने मणे? [उ०] गोयमा! नो आया मणे, अन्ने मणे। जहा भासा तहा मणे वि, जाव—नो अजीवाणं मणे।

१०. [प्र०] पुब्विं भंते! मणे, मणिज्जमाणे मणे? [उ०] एवं जहेव भासा।

११. [प्र०] पुब्विं भंते! मणे भिज्जति, मणिज्जमाणे मणे भिज्जति, मणसमयवीतिकंते मणे भिज्जति? [उ०] एवं जहेव भासा।

१२. [प्र०] कतिविहे णं भंते! मणे पण्णत्ते? [उ०] गोयमा! चउब्विहे मणे पन्नत्ते, तंजहा—१ सच्चे, जाव—४ असच्चामोसे।

१३. [प्र०] आया भंते! काये, अन्ने काये? [उ०] गोयमा! आया वि काये, अन्ने वि काये।

१४. [प्र०] रूविं भंते! काये, अरूविं काये?—पुच्छा। [उ०] गोयमा! रूविं पि काये, अरूविं पि काए, एवं एक्केक्के पुच्छा। गोयमा! सचित्ते वि काये, अचित्ते वि काए। जीवे वि काए, अजीवे वि काए, जीवाण वि काए, अजीवाण वि काए।

१५. [प्र०] पुब्विं भंते! काये?—पुच्छा। [उ०] गोयमा! पुब्विं पि काए, कायिज्जमाणे वि काए, कायसमयवीतिकंते वि काये।

१६. [प्र०] पुब्विं भंते! काये भिज्जति?—पुच्छा। [उ०] गोयमा! पुब्विं पि काए भिज्जति, जाव—काए भिज्जति।

८. [प्र०] हे भगवन्! भाषा केटला प्रकारनी कही छे? [उ०] हे गौतम! भाषा चार प्रकारनी कही छे, ते आ प्रमाणे—१ सत्य, २ मृषा—असत्य, ३ सत्यमृषा—सत्य अने असत्य मिश्र, अने ४ असत्यामृषा—सत्य पण नहि तेम असत्य पण नहि. *भाषाना प्रकार.*

९. [प्र०] मन ए आत्मा छे, के तेथी अन्य मन छे? [उ०] हे गौतम! मन ए आत्मा नथी, पण मन अन्य छे—इत्यादि जेम भाषा संबन्धे कह्युं, तेम मनसंबन्धे पण जाणवुं, यावत्—अजीवोने मन नथी. *मन. मन आत्मा छे के तेथी अन्य छे?*

१०. [प्र०] हे भगवन्! [मनननी] पूर्वे मन होय, मनन समये मन होय, के मननसमय वीत्या पछी मन होय? [उ०] जेम भाषासंबन्धे कह्युं तेम जाणवुं. *मन क्यारे होय?*

११. [प्र०] हे भगवन्! मनननी पूर्वे मन भेदाय, मननसमये मन भेदाय, के मननसमय वीत्या पछी मन भेदाय? [उ०] जेम भाषासंबन्धे कह्युं छे तेम अहिं जाणवुं. *मन क्यारे भेदाय?*

१२. [प्र०] हे भगवन्! मन केटला प्रकारनुं कह्युं छे? [उ०] हे गौतम! मन चार प्रकारनुं कह्युं छे, ते आ प्रमाणे—१ सत्य, २ असत्य, [३ मिश्र] यावत्—४ असत्यामृषा—सत्य पण नहि अने असत्य पण नहि. *मनना प्रकार.*

१३. [प्र०] हे भगवन्! काय—शरीर आत्मा छे के तेथी अन्य—आत्माथी *भिन्न—काय छे? [उ०] हे गौतम! काय आत्मा पण छे, अने आत्माथी भिन्न पण काय छे. *काय आत्मा छे के तेथी अन्य?*

१४. [प्र०] हे भगवन्! काय रूपी छे के अरूपी छे? [उ०] हे गौतम! काय रूपी पण छे अने काय अरूपी पण छे. ए प्रमाणे पूर्ववत् एक एक प्रश्न करवो. हे गौतम! काय सचित्त पण छे अने अचित्त पण छे, काय जीवरूप पण छे अने अजीवरूप पण छे, तथा काय जीवोने होय छे, तेम अजीवोने पण होय छे. *रूपी के अरूपी?*

१५. [प्र०] हे भगवन्! पूर्वे काय होय?—इत्यादि [पूर्ववत्] प्रश्न. [उ०] हे गौतम! काय—शरीर [जीवनो संबन्ध थया] पूर्वे पण होय, चीयमान—पुद्गलोना ग्रहण समये पण काय होय, अने कायसमय—पुद्गल ग्रहण समय वीत्या पछी पण काय होय. *काय क्यारे होय?*

१६. [प्र०] हे भगवन्! काय [जीवे ग्रहण कर्या] पूर्वे भेदाय?—इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम! पूर्वे पण काय भेदाय, यावत्—[पुद्गल ग्रहण समय वीत्या बाद] पण यावत्—भेदाय. *काय क्यारे भेदाय?*

---

१३ * काय—आत्मस्वरूप छे, केमके काये करेला कर्मोनो अनुभव आत्माने थाय छे, अथवा काय आत्माथी भिन्न छे, केमके कायना एक अंशनो छेद थवा छतां पण आत्मानो छेद थतो नथी, माटे आ प्रश्न उपस्थित थाय छे. उत्तर—कथंचित् काय आत्मस्वरूप पण छे, केमके शरीरने स्पर्श थता तेनो आत्माने अनुभव थाय छे, तेमज कथंचिद् आत्माथी भिन्न पण छे, जो अत्यंत अभिन्न होय तो शरीरनो नाश थतां आत्मानो नाश पण थाय—टीका.

१७. [प्र०] कइविहे णं भंते ! काये पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! सत्तविहे काये पन्नत्ते, तंजहा–१ ओराले, २ ओरालियमीसए, ३ वेउव्विए, ४ वेउव्वियमीसए, ५ आहारए, ६ आहारगमीसए, ७ कम्मए ।

१८. [प्र०] कतिविहे णं भंते ! मरणे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! पंचविहे मरणे पण्णत्ते, तंजहा–१ आवीचियमरणे, २ ओहिमरणे, ३ आदिंतियमरणे, ४ बालमरणे, ५ पंडियमरणे ।

१९. [प्र०] आवीचियमरणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा–१ दव्वावीचियमरणे, २ खेत्तावीचियमरणे, ३ कालावीचियमरणे, ४ भवावीचियमरणे, ५ भावावीचियमरणे ।

२०. [प्र०] दव्वावीचियमरणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा–१ नेरइयदव्वावीचियमरणे, २ तिरिक्खजोणियदव्वावीचियमरणे, ३ मणुस्सदव्वावीचियमरणे, ४ देवदव्वावीचियमरणे । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'नेरइयदव्वावीचियमरणे नेरइयदव्वावीचियमरणे' ? [उ०] गोयमा ! जण्णं नेरइया नेरइए दव्वे वट्टमाणा जाइं दव्वाइं नेरइयाउयत्ताए गहियाइं, बद्धाइं, पुट्ठाइं, कडाइं, पट्ठवियाइं, निविट्ठाइं, अभिनिविट्ठाइं, अभिसमन्नागयाइं भवंति ताइं दव्वाइं आवीचीयमणुसमयं निरंतरं मरंति त्ति कट्टु से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ–'नेरइयदव्वावीचियमरणे,' एवं जाव–देवदव्वावीचियमरणे ।

२१. [प्र०] खेत्तावीचियमरणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा–१ 'नेरइयखेत्तावीचियमरणे, जाव–४ देवखेत्तावीचियमरणे' ।

२२. [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'नेरइयखेत्तावीचियमरणे नेर० २' ? [उ०] गोयमा ! जण्णं नेरइया नेरइयखेत्ते वट्टमाणा जाइं दव्वाइं नेरइयाउयत्ताए०–एवं जहेव दव्वावीचियमरणे तहेव खेत्तावीचियमरणे वि । एवं जाव–भावावीचियमरणे ।

कायना प्रकार.

१७. [प्र०] हे भगवन् ! काय केटला प्रकारे कहेल छे ? [उ०] हे गौतम ! काय सात प्रकारे कहेल छे, ते आ प्रमाणे–१ औदारिक, २ औदारिकमिश्र, ३ वैक्रिय, ४ वैक्रियमिश्र, ५ आहारक, ६ आहारकमिश्र, ७ कार्मण.

मरणना प्रकार.

१८. [प्र०] हे भगवन् ! मरण केटला प्रकारे कह्युं छे ? [उ०] हे गौतम ! मरण पांच प्रकारनुं कह्युं छे, ते आ प्रमाणे–१ *आवीचिकमरण, २ अवधिमरण, ३ आत्यंतिकमरण, ४ बालमरण, ५ पंडितमरण.

आवीचिकमरणना प्रकार.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! आवीचिकमरण केटला प्रकारे कह्युं छे ? [उ०] हे गौतम ! आवीचिकमरण पांच प्रकारे कह्युं छे, ते आ प्रमाणे–१ द्रव्यावीचिकमरण, २ क्षेत्रावीचिकमरण, ३ कालावीचिकमरण, ४ भवावीचिकमरण, अने ५ भावावीचिकमरण.

द्रव्यावीचिकमरणना प्रकार.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! द्रव्यावीचिकमरण केटला प्रकारे कह्युं छे ? [उ०] हे गौतम ! चार प्रकारे कह्युं छे, ते आ प्रमाणे–१ नैरयिकद्रव्यावीचिकमरण, २ तिर्यंचयोनिकद्रव्यावीचिकमरण, ३ मनुष्यद्रव्यावीचिकमरण अने ४ देवद्रव्यावीचिकमरण. [प्र०] हे भगवन् ! एम शा हेतुथी नैरयिकद्रव्यावीचिकमरणने नैरयिकद्रव्यावीचिकमरण कहो छो ? [उ०] हे गौतम ! नारकजीवपणे वर्तता नारकोए जे द्रव्योने नैरयिकआयुषपणे [स्पर्शयकी] ग्रह्यां छे, [बंधनथी] बांधेलां छे, [प्रदेशथी] पुष्ट कर्यां छे, [विशिष्टरसथी] करेलां छे, [स्थितिबद्धे] प्रस्थापित कर्यां छे, [जीवप्रदेशोमां] निविष्ट–प्रवेशेलां छे, अभिनिविशिष्ट–अत्यंत गाढ प्रवेशेलां छे, अने अभिसमन्वागत–उदयाभिमुख थयेलां छे, ते द्रव्योने आवीचिक–निरंतर प्रतिसमय मरे छे–छोडे छे, माटे ते हेतुथी हे गौतम ! नैरयिक द्रव्यावीचिकमरण नैरयिकद्रव्यावीचिकमरण कहेवाय छे. ए प्रमाणे [तिर्यंचयोनिकद्रव्यावीचिकमरण, मनुष्यद्रव्यावीचिकमरण अने] यावत्–देवद्रव्यावीचिकमरण जाणवुं.

नैरयिकद्रव्यावीचिकमरण.

क्षेत्रावीचिकमरण.

२१. [प्र०] हे भगवन् ! क्षेत्रावीचिकमरण केटला प्रकारे कह्युं छे ? [उ०] हे गौतम ! चार प्रकारे कह्युं छे, ते आ प्रमाणे–नैरयिकक्षेत्रावीचिकमरण, २ तिर्यंचयोनिकक्षेत्रावीचिकमरण, यावत्–४ देवक्षेत्रावीचिकमरण.

नारकक्षेत्रावीचिकमरण.

२२. [प्र०] हे भगवन् ! ते ए प्रमाणे शा हेतुथी नारकक्षेत्रावीचिकमरण नारकक्षेत्रावीचिकमरण कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! नारकक्षेत्रमां वर्तता नारक जीवोए जे द्रव्योने पोते नारकायुषपणे ग्रहण करेलां छे, अने ते [द्रव्योने प्रतिसमय निरंतर मूके छे]–इत्यादि द्रव्यावीचिकमरण संबंधे कहेलुं छे ते अहिं कहेवुं, ते माटे नैरयिकक्षेत्रावीचिकमरण कहेवाय छे. अने ए प्रमाणे यावत्–[कालावीचिकमरण, भवावीचिकमरण, तथा] भावावीचिकमरण पण जाणवुं.

---

१८ * १ आ–समन्तात्, वीचि–तरंगनी पेठे प्रतिसमय अनुभवाता आयुषकर्मपुद्गलोनो अन्य अन्य आयुषना दलिकना उदय थवा साथे क्षय थवो ते आवीचिमरण; २ अवधि–मर्यादासहित मरण, अर्थात् नरकादि भवना हेतुभूत जे वर्तमान आयुषकर्मना पुद्गलोनो अनुभव करीने मरण पामे, अने पुनः तेज आयुषकर्मना पुद्गलोने आगामी भवमां ग्रहण करीने मरण पामशे ते अवधिमरण कहेवाय छे, कारण के ते द्रव्यनी अपेक्षाए पुनः ते पुद्गलोने ग्रहण करे त्यां सुधी जीव मरण पामेलो छे, वळी परिणामना विचित्रपणाथी ग्रहण करीने छोडेला पुद्गलोनुं पुनः ग्रहण पण संभवे छे; ३ जे नारकादिआयुषकर्मना दलिक भोगवी मरण पामे, अने मरण पामी वळी तेज आयुषकर्मना पुद्गलोनो अनुभव कर्या सिवाय मरण पामशे एवुं जे मरण ते द्रव्यनी अपेक्षाए अत्यन्तपणाथी आत्यन्तिकमरण कहेवाय छे; ४ अविरतिनुं मरण ते बालमरण; ५ अने सर्वविरतिनुं मरण ते पंडितमरण कहेवाय छे.–टीका.

२३. [प्र०] ओहिमरणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा–१ दव्वोहिमरणे, २ खेत्तोहिमरणे, जाव–५ भावोहिमरणे ।

२४. [प्र०] दव्वोहिमरणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा–१ नेरइयदव्वोहिमरणे, जाव–४ देवदव्वोहिमरणे ।

२५. [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ नेरइयदव्वोहिमरणे २ ? [उ०] गोयमा ! जण्णं नेरइया नेरइयदव्वे वट्टमाणा जाइं दव्वाइं संपयं मरंति, तेणं नेरइया ताइं दव्वाइं अणागए काले पुणो वि मरिस्संति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव–दव्वोहिमरणे । एवं तिरिक्खजोणिय०, मणुस्स०, देवदव्वोहिमरणे वि । एवं एएणं गमेणं खेत्तोहिमरणे वि, कालोहिमरणे वि, भवोहिमरणे वि, भावोहिमरणे वि ।

२६. [प्र०] आइंतियमरणे णं भंते ! पुच्छा । [उ०] गोयमा ! पंचविहे पन्नत्ते, तंजहा–१ दव्वाइंतियमरणे, २ खेत्ताइंतियमरणे, जाव–५ भावाइंतियमरणे ।

२७. [प्र०] दव्वाइंतियमरणे णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा–१ नेरइयदव्वाइंतियमरणे, जाव–४ देवदव्वाइंतियमरणे ।

२८. [प्र०] से केणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ–'नेरइयदव्वाइंतियमरणे नेर० २' ? [उ०] गोयमा ! जण्णं नेरइया नेरइयदव्वे वट्टमाणा जाइं दव्वाइं संपयं मरंति, तेणं नेरइया ताइं दव्वाइं अणागए काले नो पुणो वि मरिस्संति, से तेणट्ठेणं जाव–मरणे । एवं तिरिक्ख०, मणुस्स०, देवाइंतियमरणे, एवं खेत्ताइंतियमरणे वि, एवं जाव–भावाइंतियमरणे वि ।

२९. [प्र०] बालमरणे णं भंते ! कतिविहे पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! दुवालसविहे पन्नत्ते, तंजहा–१ वलयमरणं, जहा खंदए, जाव–१२ गद्धपट्ठे ।

अवधिमरण.

२३. [प्र०] हे भगवन् ! अवधिमरण केटला प्रकारे कह्युं छे ? [उ०] हे गौतम ! पांच प्रकारे कह्युं छे, ते आ प्रमाणे–१ द्रव्यावधिमरण, २ क्षेत्रावधिमरण, [३ कालावधिमरण, ४ भवावधिमरण] यावत्–अने ५ भावावधिमरण.

द्रव्यावधिमरण.

२४. [प्र०] हे भगवन् ! द्रव्यावधिमरण केटला प्रकारे कह्युं छे ? [उ०] हे गौतम ! चार प्रकारे कह्युं छे. ते आ प्रमाणे–१ नैरयिकद्रव्यावधिमरण, २ यावत्–[तिर्यग्योनिकद्रव्यावधिमरण, ३ मनुष्यद्रव्यावधिमरण] अने ४ देवद्रव्यावधिमरण.

नैरयिकद्रव्यावधिमरण शा हेतुथी कहेवाय छे ?

२५. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकद्रव्यावधिमरण शा माटे कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! नारकपणे वर्तता नारक जीवो जे द्रव्योने सांप्रत काले मूके छे, अने वळी ते नारको थइने तेज द्रव्योने भविष्यकाळे फरीथी [ग्रहण करीने] पण छोडशे, ते माटे हे गौतम ! नैरयिकद्रव्यावधिमरण कहेवाय छे. ए प्रमाणे तिर्यंचयोनिकद्रव्यावधिमरण, मनुष्यद्रव्यावधिमरण अने देवद्रव्यावधिमरण पण जाणवुं. तथा ए पाठ वडे क्षेत्रावधिमरण, कालावधिमरण, भवावधिमरण अने भावावधिमरण जाणवुं.

आत्यन्तिक मरण.

२६. [प्र०] हे भगवन् ! आत्यंतिकमरण केटला प्रकारे कह्युं छे ? [उ०] हे गौतम ! पांच प्रकारे कह्युं छे, ते आ प्रमाणे–१ द्रव्यात्यंतिकमरण, २ क्षेत्रात्यंतिकमरण, यावत्–५ भावात्यंतिकमरण.

द्रव्यात्यन्तिकमरण.

२७. [प्र०] हे भगवन् ! द्रव्यात्यन्तिकमरण केटला प्रकारे कह्युं छे ? [उ०] हे गौतम ! चार प्रकारे कह्युं छे, ते आ प्रमाणे–१ नैरयिकद्रव्यात्यन्तिकमरण, अने यावत्–४ देवद्रव्यात्यंतिकमरण.

नैरयिकद्रव्यात्यन्तिकमरण शाथी कहेवाय छे ?

२८. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी 'नैरयिकद्रव्यात्यंतिकमरण' २ कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! नारकपणे वर्तता जे नारक जीवो जे द्रव्योने सांप्रत काळे छोडे छे, ते नैरयिको ते द्रव्योने भविष्यकाले फरी वार नहि छोडे, हे गौतम ! ते हेतुथी 'नैरयिकद्रव्यात्यंतिकमरण' २ कहेवाय छे. ए प्रमाणे तिर्यंचयोनिकद्रव्यात्यंतिकमरण, मनुष्यद्रव्यात्यन्तिकमरण, अने देवद्रव्यात्यन्तिकमरण पण जाणवुं, तथा ए प्रमाणे क्षेत्रात्यन्तिकमरण, यावत्–[कालात्यंतिकमरण, भवात्यंतिकमरण अने] भावात्यंतिकमरण जाणवुं.

बालमरणना प्रकार.

२९. [प्र०] हे भगवन् ! बालमरण केटला प्रकारे कह्युं छे ? [उ०] हे गौतम ! बार प्रकारे कह्युं छे, ते आ प्रमाणे–१ *वलयमरण,–इत्यादि †स्कन्दकना अधिकारमां कह्या प्रमाणे यावत्–१२ गृध्रस्पृष्टमरण जाणवुं.

---

२९ * १ वलयमरण–अत्यन्त क्षुधाथी वलवलता मरण पामवुं, अथवा संयमथी भ्रष्ट थयेलाई मरण ते वलन्मरण के वलयमरण कहेवाय छे, १२ गृध्रस्पृष्ट मरण–गीध पक्षीओए अथवा शिकारी पशुओए स्पृष्ट–विदारण करवाथी जे मरण थाय ते. † जुओ भग० खं० १ श० २ उ० १ पृ० २३५.

३०. [प्र०] पंडियमरणे णं भंते! कइविहे पण्णत्ते? [उ०] गोयमा! दुविहे पण्णत्ते, तंजहा–१ पाओवगमणे य २ भत्तपच्चक्खाणे य।

३१. [प्र०] पाओवगमणे णं भंते! कतिविहे पन्नत्ते? [उ०] गोयमा! दुविहे पन्नत्ते, तंजहा–णीहारिमे य अनीहारिमे य, जाव–नियमं अपडिकम्मे।

३२. [प्र०] भत्तपच्चक्खाणे णं भंते! कतिविहे पन्नत्ते? [उ०] एवं तं चेवं, नवरं नियमं सपडिकम्मे। 'सेवं भंते! सेवं भंते!'त्ति।

तेरसमसए सत्तमो उद्देसो समत्तो।

पंडितमरण.

३०. [प्र०] हे भगवन्! पंडितमरण केटला प्रकारे कह्युं छे? [उ०] हे गौतम! बे प्रकारे कह्युं छे, ते आ प्रमाणे–१ पादपोपगमन (पडेला पादप–वृक्षनी पेठे हाल्या चाल्या शिवाय एकज स्थितिमां उपगमन–रहेवुं), २ भक्तप्रत्याख्यान (आहार पाणिनो त्याग करवो).

पादपोपगमन.

३१. [प्र०] हे भगवन्! पादपोपगमन मरण केटला प्रकारे कह्युं छे? [उ०] हे गौतम! बे प्रकारनुं कह्युं छे, ते आ प्रमाणे–१ निर्हारिम (वसतिना एक भागमां पादपोपगमन कराय के ज्यांथी मृत कलेवरने बहार काढवुं पडे ते निर्हारिम पादपोपगमन) २ अनिर्हारिम (पर्वतनी गुफामां के तेवा बीजा स्थळे पादपोपगमन करे के ज्यांथी तेनुं मृत कलेवर बहार न काढवुं पडे ते) यावत्–आ बंने प्रकारनुं पादपोप गमन मरण अवश्य अप्रतिकर्म (शरीरसंस्काररहित) होय छे.

भक्तप्रत्याख्यान.

३२. [प्र०] हे भगवन्! भक्तप्रत्याख्यानरूप मरण केटला प्रकारे कह्युं छे? [उ०] ए प्रमाणे पूर्वे कह्या प्रमाणे तेना (निर्हारिम अने अनिर्हारिम ए बे भेद जाणवा) पण विशेष ए छे के आ बन्ने प्रकारनुं भक्तप्रत्याख्यानरूप मरण अवश्य सप्रतिकर्म–शरीरसंस्कारसहित होय छे. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे'–एम कही विहरे छे.

त्रयोदशशते सप्तम उद्देशक समाप्त.

अट्ठमो उद्देसो ।

१. [प्र०] कति णं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? [उ०] गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, एवं बंधट्ठिइ-उद्देसो भाणियव्वो निरवसेसो जहा पन्नवणाए । 'सेवं भंते ! सेवं भंते !' त्ति ।

तेरसमसए अट्ठमो उद्देसो समत्तो ।

अष्टम उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन् ! कर्मनी केटली प्रकृतिओ कही छे? [उ०] हे गौतम ! कर्मनी आठ प्रकृतिओ कही छे, अहिं प्रज्ञापना सूत्रनी *बंधस्थिति नामे संपूर्ण उद्देशक कहेवो. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'—एम कही यावत्—विहरे छे.

कर्मप्रकृति.

त्रयोदशशते अष्टम उद्देशक समाप्त.

नवमो उद्देसो ।

१. रायगिहे जाव—एवं वयासी—[प्र०] से जहानामए केइ पुरिसे केयाघडियं गहाय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा केयाघडियाकिच्चहत्थगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पएज्जा ? [उ०] गोयमा ! हंता, उप्पएज्जा ।

२. [प्र०] अणगारे णं भंते ! भावियप्पा केवतियाइं पभू केयाघडियाहत्थकिच्चगयाइं रूवाइं विउव्वित्तए ? [उ०] गोयमा ! से जहानामए जुवतिं जुवाणे हत्थेणं हत्थे—एवं जहा तइयसए पंचमुद्देसए जाव—'नो चेव णं संपत्तीए विउव्विंसु वा विउव्विंति वा विउव्विस्संति वा' ।

नवम उद्देशक.

१. [प्र०] राजगृहमां [भगवान् गौतम] यावत्—आ प्रमाणे बोल्या के हे भगवन् ! जेम कोइ एक पुरुष दोरडाथी बांधेली घटिकाने लइने गमन करे, ए प्रमाणे भावितात्मा साधु दोरडाथी बांधेली घटिकानुं कार्य हस्तगत करी [वैक्रियलब्धिथी एवुं रूप धारण करी] पोते ऊंचे आकाशमां उडे? [उ०] हा गौतम ! उडे.

वैक्रियशक्तिथी कोई दोरडाथी बांधेली घटिका लइने आकाशमां गमन करे?

२. [प्र०] हे भगवन् ! भावितात्मा अनगार दोरडाथी बांधेली घटिकाने हाथमां धारण करवारूप केटलां रूपो विकुर्वी शकवाने समर्थ होय? [उ०] हे गौतम ! 'जेम कोइ एक युवान पुरुष युवति स्त्रीने हाथ वडे आलिंगे'—इत्यादि ए प्रकारे †तृतीयशतकना पांचमा उद्देशकमां कह्या प्रमाणे यावत्—संप्राप्ति (संपादन) करवावडे तेवां रूपो विकुर्व्यां नथी, विकुर्वता नथी अने विकुर्वशे पण नहि.

केटलां रूपो विकुर्वी शके?

---

१ * प्रज्ञा० पद २४ प० ४९१-२.   २ † भग० श० ३ उ० ५ प० १९०-१.

३. [प्र०] से जहानामए केइ पुरिसे हिरन्नपेलं गहाय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा हिरण्णपेलहत्थकिच्चगएणं अप्पाणेणं० ? [उ०] सेसं तं चेव, एवं सुवन्नपेलं, एवं रयणपेलं, वइरपेलं, वत्थपेलं, आभरणपेलं, एवं वियलकिड्डं, सुंबकिड्डं, चम्मकिड्डं, कंबलकिड्डं, एवं अयभारं, तंबभारं, तउयभारं, सीसगभारं, हिरन्नभारं, सुवन्नभारं, वइरभारं ।

४. [प्र०] से जहानामए वग्गुली सिया, दो वि पाए उल्लंबिया २ उड्ढंपादा अहोसिरा चिट्ठेज्जा, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा वग्गुलीकिच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं० ? [उ०] एवं जन्नोवइयवत्तव्वया भाणियव्वा, जाव–विउव्विस्संति वा ।

५. [प्र०] से जहानामए जलोया सिया, उदगंसि कायं उव्विहिया २ गच्छेज्जा, एवामेव०? [उ०] सेसं जहा वग्गुलीए।

६. [प्र०] से जहाणामए बीयंबीयगसउणे सिया, दो वि पाए समतुरंगेमाणे २ गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे० ? [उ०] सेसं तं चेव ।

७. [प्र०] से जहाणामए पक्खिविरालए सिया, रुक्खाओ रुक्खं डेवेमाणे २ गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे० ? [उ०] सेसं तं चेव ।

८. [प्र०] से जहानामए जीवंजीवगसउणे सिया, दो वि पाए समतुरंगेमाणे २ गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे० ? [उ०] सेसं तं चेव ।

९. [प्र०] से जहाणामए हंसे सिया, तीराओ तीरं अभिरममाणे २ गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे हंसकिच्चगएणं अप्पाणेणं०? [उ०] तं चेव ।

१०. [प्र०] से जहानामए समुद्दवायसए सिया, वीईओ वीइं डेवेमाणे २ गच्छेज्जा, एवामेव० ? [उ०] तहेव ।

हिरण्यनी पेटी लेइने गमन करे?

३. [प्र०] जेम कोइ एक पुरुष हिरण्यनी पेटीने लइने गमन करे, ए प्रमाणे भावितात्मा अनगार पण हिरण्यनी पेटीना कृत्यने हस्तगत करी (एवुं रूप विकुर्वी) पोते गगनमां उडे? [उ०] बाकी बधुं पूर्ववत् जाणवुं. ए प्रकारे सुवर्णनी पेटी, रत्ननी पेटी, वज्रनी पेटी, वस्त्रनी पेटी अने घरेणांनी पेटीने लइने [आकाशमां गमन करे?] ए प्रमाणे विदलकट–वांसनी सादडी, शुंबकट–घासनी सादडी, चर्मकट, चामडाथी भरेल खाटली वगेरे, अने कांबळकट–पाथरवाना उनना कांबळा, तथा लोढाना भारने, तांबाना भारने, कलइना भारने, सीसाना भारने, हिरण्यना–रूपाना भारने, सुवर्णना भारने अने वज्रना भारने लइने पण गमन करे.

वडवागुलीनी पेठे गमन करे?

४. [प्र०] हे भगवन्! जेम कोइ एक वडवागुली होय अने ते पोताना बन्ने पग [वृक्षादिक साथे] उंचा लटकावी, उंचा पग अने माथुं नीचे राखीने रहे, ए प्रमाणे भावितात्मा अनगार पण वागुलीना कृत्यने प्राप्त थयेलो [अर्थात् वागुलीनी पेठे] पोते आकाशमां उंचे उडे? [उ०] हा, उडे. एज प्रमाणे यज्ञोपवीतनी (जनोइनी) वक्तव्यता पण कहेवी. [जेम कोइ ब्राह्मण गळामां जनोइ नाखी गमन करे तेम भावितात्मा अनगार तेवुं रूप विकुर्वे–इत्यादि], परन्तु (संप्राप्तिवडे तेवां रूपो) विकुर्वशे नहि.

जळोकानी पेठे गमन करे?

५. [प्र०] हे भगवन्! जेम कोइ एक जळो होय अने ते पोताना शरीरने पाणीमां प्रेरी प्रेरीने गमन करे, ए प्रमाणे भावितात्मा अनगार तेवुं रूप विकुर्वी आकाशमां गमन करे? [उ०] बाकी बधुं वागुलीनी पेठे जाणवुं.

बीजंबीजक पक्षीनी पेठे गमन करे?

६. [प्र०] हे भगवन्! जेम कोइ एक बीजंबीजक पक्षी होय, अने ते पोताना बन्ने पगने घोडानी पेठे साथे उपाडतुं गमन करे, ए प्रमाणे भावितात्मा अनगार [तेवा आकारे आकाशमां उडे? [उ०] हा, उडे.] बाकी बधुं पूर्वनी पेठे जाणवुं.

बिलाडक पक्षीनी पेठे गमन करे?

७. [प्र०] जेम कोइ एक बिलाडक नामे पक्षी होय, अने ते एक वृक्षथी बीजा वृक्षे जतुं, बीजा वृक्षथी त्रीजा वृक्षे जतुं गति करे, ए प्रमाणे भावितात्मा अनगार [तेवा आकारे गमन करे? [उ०] हा गमन करे.] बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं.

जीवंजीवक पक्षीना जेम गमन करे?

८. [प्र०] जेम कोइ एक जीवंजीवक नामे पक्षी होय, अने ते पण पोताना बन्ने पगने घोडानी पेठे साथे उपाडतुं गति करे, एज प्रमाणे भावितात्मा अनगार पण पोते तेवा आकारे आकाशमां उडे? [उ०] बाकी बधुं पूर्व पेठे जाणवुं.

हंस पेठे गति करे?

९. [प्र०] जेम कोइ एक हंस होय अने ते आ कांठेथी बीजे कांठे रमतो रमतो गति करे, ए प्रमाणे भावितात्मा अनगार पण हंस कृत्यने प्राप्त करी पोते गगनमां [हंसने आकारे उडे?] [उ०] पूर्ववत् जाणवुं.

समुद्रवायसना आकारे गति करे?

१०. [प्र०] जेम कोइ एक समुद्रवायस (समुद्रनो कागडो) होय, अने ते एक तरंगथी बीजा तरंगे जतो गति करे, ए प्रमाणे [भावितात्मा साधु पोते एवा आकारे गगनमां गति करे?] [उ०] ते प्रमाणे जाणवुं.

११. [प्र०] से जहानामए केइ पुरिसे चक्कं गहाय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा चक्कहत्थकिच्चगएणं अप्पाणेणं० ? [उ०] सेसं जहा केयाघडियाए; एवं छत्तं, एवं चमरं ।

१२. [प्र०] से जहानामए केइ पुरिसे रयणं गहाय गच्छेज्जा, एवं चेव, एवं वइरं, वेरुलियं, जाव-रिट्ठं, एवं उप्पलहत्थगं, पउमहत्थगं, कुमुदहत्थगं, एवं जाव-से जहानामए केइ पुरिसे सहस्सपत्तगं गहाय गच्छेज्जा० ? [उ०] एवं चेव,

१३. [प्र०] से जहानामए केइ पुरिसे भिसं अवद्दालिय २ गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भिसकिच्चगएणं अप्पाणेणं०? [उ०] तं चेव ।

१४. [प्र०] से जहानामए मुणालिया सिया, उदगंसि कायं उम्मज्जिय २ चिट्ठिज्जा, एवामेव० ? [उ०] सेसं जहा वग्गुलीए ।

१५. [प्र०] से जहानामए वणसंडे सिया, किण्हे, किण्होभासे, जाव-निकुरंबभूए, पासादीए ४, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा वणसंडकिच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पाएज्जा ? [उ०] सेसं तं चेव ।

१६. [प्र०] से जहानामए पुक्खरणी सिया, चउक्कोणा, समतीरा, अणुपुव्वसुजाय० जाव-सद्दुन्नइयमहुरसरणादिया पासादीया ४, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा पोक्खरणीकिच्चगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पएज्जा? [उ०] हंता उप्पएज्जा।

१७. [प्र०] अणगारे णं भंते ! भावियप्पा केवतियाइं पभू पोक्खरणीकिच्चगयाइं रूवाइं विउव्वित्तए ? [उ०] सेसं तं चेव जाव-विउव्विस्संति वा ।

१८. [प्र०] से भंते ! किं मायी विउव्वति, अमायी विउव्वति ? [उ०] गोयमा ! मायी विउव्वइ, नो अमायी विउव्वइ। मायी णं तस्स ठाणस्स अणालोइय० एवं जहा तइयसए चउत्थुद्देसए जाव-'अत्थि तस्स आराहणा' । 'सेवं भंते ! सेवं भंते !'त्ति विहरइ ।

तेरसमसए नवमो उद्देसो समत्तो ।

११. [प्र०] जेम कोइ एक पुरुष चक्रने लइने गति करे, एज प्रमाणे भावितात्मा अनगार पोते चक्रकृत्यने हस्तगत करीने [एवा आकारे आकाशमां उडे ?] [उ०] बाकी बधुं पूर्वे कहेली दोरडाथी बांधेल घटिकानी पेठे (सू० १) जाणवुं. एज प्रमाणे छत्र तथा चामरने लइने गमन करे.

चक्रहस्त पुरुषनी जेम गति करे?

१२ [प्र०] जेम कोइ एक पुरुष रत्नने लइने गमन करे, ए प्रमाणे वज्र, वैडूर्य, यावत्–रिष्ट (श्यामरत्न), ए प्रमाणे उत्पलने हस्तगत करी, पद्मने हस्तगत करी, ए प्रमाणे यावत्–कोइ एक पुरुष सहस्रपत्रने लइने गति करे, तेम भावितात्मा अनगार पोते एवा आकारे आकाशमां गति करे ? [उ०] ए प्रमाणे जाणवुं.

रत्नहस्त पुरुषनी पेठे गति करे ?

१३. [प्र०] हे भगवन् ! जेम कोइ एक पुरुष बिसनी–कमळनी डांडलीने तोडी तोडीने गति करे, ते प्रमाणे अनगार पण पोते बिसकृत्यने प्राप्त करी–[एवा प्रकारे] पोते गगनमां गमन करे ? [उ०] पूर्ववत् जाणवुं.

बिस.

१४. [प्र०] जेम कोइ एक मृणालिका–कमलनो छोड पाणीमां कायने–पोताना शरीरने डुबाडी डुबाडी [मुख बहार राखी] रहे, ए प्रमाणे भावितात्मा अनगार पोते एवा आकारे गगनमां उडे ? [उ०] बाकी बधुं वागुलीनी पेठे जाणवुं.

मृणालिका.

१५. [प्र०] जेम कोइ एक वनखंड होय, अने ते काळो, काळा प्रकाशवाळो, यावत्–मेघना समूहरूप, प्रसन्नता देनार अने [दर्शनीय] होय, ए ज प्रमाणे भावितात्मा अनगार पण पोते वनखंडना कृत्यने प्राप्त करी अर्थात् एवा आकारे पोते गगनमां उडे? [उ०] बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं.

वनखंड.

१६. [प्र०] जेम कोइ एक पुष्करिणी–वाव होय, अने ते चोखंडी, समान कांठावाळी, जेने अनुक्रमे सुशोभित वप्र–वंडी छे एवी, पोपट वगेरे पक्षीओना मोटा शब्दवाळी, तेओना मधुर स्वरवाळी अने प्रसन्नता आपनार होय, ए प्रमाणे भावितात्मा अनगार पण पुष्करिणीना कृत्यने प्राप्त करी–एवा आकारने विकुर्वी पोते आकाशमां उडे ? [उ०] हा उडे.

पुष्करिणीना आकारे आकाशमां गमन करे ?

१७. [प्र०] हे भगवन् ! भावितात्मा अनगार पुष्करिणीना कृत्यने प्राप्त–एवा आकारवाळां केटलां रूपो विकुर्ववाने समर्थ थाय ? [उ०] बाकी पूर्व प्रमाणे जाणवुं, पण ते संप्राप्तिथी यावत्–विकुर्वशे नहि.

केटलां रूपो विकुर्वे ?

१८. [प्र०] हे भगवन् ! [पूर्वोक्त रूपो] मायावाळो विकुर्वे के मायारहित (अनगार) विकुर्वे ? [उ०] हे गौतम ! मायावाळो विकुर्वे, पण मायारहित साधु न विकुर्वे. मायावाळो साधु विकुर्वणारूप प्रमाद स्थानकनी आलोचना अने प्रतिक्रमण कर्या शिवाय काळ करे–इत्यादि *तृतीय शतकना चोथा उद्देशकमां कह्या प्रमाणे जाणवुं, यावत्–'तेने आराधना थाय छे–' त्यां सुधी कहेवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'–एम कही [भगवान् गौतम !] यावद्–विहरे छे.

मायासहित के मायारहित विकुर्वे ?

त्रयोदशशते नवम उद्देशक समाप्त.

*भग० खं० २ श० ३ उ० ४ पृ० ९१.

दसमो उद्देसो ।

१. [प्र०] कति णं भंते ! छाउमत्थियसमुग्घाया पन्नत्ता ? [उ०] गोयमा ! छ छाउमत्थिया समुग्घाया पन्नत्ता, तंजहा–१ वेयणासमुग्घाए, एवं छाउमत्थियसमुग्घाया नेयव्वा, जहा पन्नवणाए, जाव–आहारगसमुग्घायेत्ति । 'सेवं भंते ! सेवं भंते !' त्ति जाव–विहरति ।

तेरसमसए दसमो उद्देसो समत्तो ।

तेरसमं सयं समत्तं ।

दशम उद्देशक.

समुद्घात.

१. [प्र०]–हे भगवन् ! छाद्मस्थिक समुद्घातो केटला कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! छाद्मस्थिक छ समुद्घातो कह्या छे, ते आ प्रमाणे–१ वेदनासमुद्घात–इत्यादि ए प्रमाणे छाद्मस्थिक समुद्घातो *प्रज्ञापनासूत्रना समुद्घात पदमां कह्या प्रमाणे यावत्–आहारसमुद्घात सुधी जाणवा. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'–एम कही [भगवान् गौतम]यावद्–विहरे छे.

त्रयोदशशते दशम उद्देशक समाप्त.

त्रयोदशशतक समाप्त.

---

१ * प्रज्ञा० पद ३६ प० ५५८.

चोद्दसमं सयं ।

१. १ चर २ उम्माद ३ सरीरे ४ पोग्गल ५ अगणी तहा ६ किमाहारे ।
७ संसिट्ठ ८ मंतरे खलु ९ अणगारे १० केवली चेव ॥

पढमो उद्देसो ।

२. [प्र०] रायगिहे जाव–एवं वयासी–अणगारे णं भंते ! भावियप्पा चरमं देवावासं वीतिक्कंते, परमं देवावासमसंपत्ते, एत्थ णं अंतरा कालं करेज्जा, तस्स णं भंते ! कहिं गती, कहिं उववाए पन्नत्ते ? [उ०] गोयमा ! जे से तत्थ परियस्सओ तल्लेसा देवावासा, तहिं तस्स गई, तहिं तस्स उववाए पन्नत्ते । से य तत्थ गए विराहेज्जा कम्मलेस्सामेव पडिपडति, से य तत्थ गए नो विराहेज्जा, तामेव लेस्सं उवसंपज्जित्ता णं विहरति ।

चतुर्दश शतक.

१. [उद्देशक संग्रह–] १ चरमशब्दसहित होवाथी चरमनामे प्रथम उद्देशक, २ उन्मादना अर्थनो प्रतिपादक होवाथी उन्मादनामे बीजो उद्देशक, ३ शरीरशब्दसहित होवाथी शरीरनामे त्रीजो उद्देशक, ४ पुद्गल–पुद्गलार्थ प्रतिपादित करवाथी पुद्गलनामे चोथो उद्देशक, ५ अग्निशब्दसहित होवाथी अग्निनामे पंचम उद्देशक, ६ किमाहार–(कई दिशाना आहारवाळो होय छे?) ए प्रश्नयुक्त होवाथी किमाहारनामे षष्ठ उद्देशक, ७ *'चिरसंसिट्ठो सि गोयमा' !–आ पदमां आवेला संश्लिष्टशब्दसहित होवाथी सातमो संश्लिष्ट उद्देशक, ८ नरकपृथिवीना अन्तरने प्रतिपादन करवाथी आठमो अन्तर उद्देशक, ९ प्रारंभमां 'अनगार'–पद होवाथी नवमो अनगार उद्देशक, अने १० आरंभमां 'केवली'–ए पद होवाथी दशमो केवली उद्देशक–[ए प्रमाणे चौदमा शतकमां दश उद्देशको कहेवामां आवशे.]

प्रथम उद्देशक.

भावितात्मा अनगार जेणे चरम देवावासनुं उल्लंघन कर्युं छे अने परम देवावासने प्राप्त थयो नथी ते मरीने क्यां उपजे ?

२. [प्र०] राजगृह नगरमां [भगवान् गौतम] यावद्–आ प्रमाणे बोल्या के, हे भगवन् ! भावितात्मा अनगार (साधु) जेणे चरम–छेल्ला देवावासनुं उल्लंघन कर्युं छे, अने हजी परम–आगळना देवावासने प्राप्त थयो नथी, आ अवसरे ते काळ करे–मरण पामे तो हे भगवन् ! तेनी क्यां गति थाय अने तेनो क्यां उत्पाद थाय ? [उत्तरोत्तर प्रशस्त अध्यवसायस्थानने विषे वर्तमान अनगार चरम–सौधर्मादिदेवलोकना आ छेडे वर्तमान देवावासनी स्थित्यादिना बन्धने योग्य अध्यवसायस्थानने ओळंगी गयो छे, अने परम–उपर रहेला सनत्कुमारादि देवलोकना स्थित्यादिना बन्धने योग्य अध्यवसायने प्राप्त थयो नथी, आ अवसरे काळ करे तो ते क्यां उपजे ?] [उ०] हे गौतम ! चरम देवावास अने परम देवावासनी पासे ते लेश्यावाळा देवावासो छे त्यां तेनी गति अने त्यां तेनो उत्पाद कहेलो छे. [सौधर्मादिदेवलोक अने सनत्कुमारादि देवलोकनी पासे ईशानादि देवलोकमां जे लेश्याए साधु मरण पामे ते लेश्यावाळा देवावासोने विषे तेनी गति अने तेनो उत्पाद थाय छे.] ते साधु त्यां जइने पोतानी पूर्व लेश्याने विराधे–छोडे तो ते कर्मलेश्या–†भावलेश्याथी पडे छे, अने जो ते त्यां जइने न विराधे तो तेज लेश्यानो आश्रय करी विहरे छे.

---

१ * हे गौतम ! तुं लांबा काळथी [मारी साथे] संबन्धवाळो छे.

२ † देव अने नारको द्रव्य लेश्याथी पडता नथी, भावलेश्याथी पडे छे, कारण के तेने द्रव्यलेश्या अवस्थित होय छे.

३. [प्र०] अणगारे णं भंते ! भावियप्पा चरमं असुरकुमारावासं वीतिकंते, परमं असुर० [उ०] एवं चेव, एवं जाव–थणियकुमारावासं, जोइसियावासं, एवं वेमाणियावासं, जाव–विहरति ।

४. [प्र०] नेरइयाणं भंते ! कहं सीहा गती, कहं सीहे गतिविसए पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! से जहानामए–केइ पुरिसे तरुणे बलवं जुगवं जाव–निउणसिप्पोवगए आउट्टियं बाहं पसारेज्जा, पसारियं वा बाहं आउंटेज्जा, विक्खिण्णं वा मुट्ठिं साहरेज्जा, साहरियं वा मुट्ठिं विक्खिरेज्जा, उम्मिसियं वा अच्छिं णिम्मिसेज्जा, निम्मिसियं वा अच्छिं उम्मिसेज्जा, भवे एयारूवे ? णो तिणट्ठे समट्ठे, नेरइया णं एगसमएण वा दुसमएण वा तिसमएण वा विग्गहेणं उववज्जंति, नेरइयाणं गोयमा ! तहा सीहा गती, तहा सीहे गतिविसए पण्णत्ते; एवं जाव–वेमाणियाणं, नवरं एगिंदियाणं चउसमइए विग्गहे भाणियव्वे । सेसं तं चेव ।

५. [प्र०] नेरइया णं भंते ! किं अणंतरोववन्नगा, परंपरोववन्नगा, अणंतरपरंपरअणुववन्नगा ? [उ०] गोयमा ! नेरइया अणंतरोववन्नगा वि, परंपरोववन्नगा वि, अणंतरपरंपरअणुववन्नगा वि [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–जाव–अणंतरपरंपरअणुववन्नगा वि ? [उ०] गोयमा ! जे णं नेरइया पढमसमयोववन्नगा ते णं नेरइया अणंतरोववन्नगा, जे णं नेरइया अपढम-

असुरकुमारावास.

३. [प्र०] हे भगवन् ! भावितात्मा अनगार चरम–आ तरफ छेल्ला असुरकुमारावासने ओळंगी गयो छे अने परम असुरकुमारावासने प्राप्त थयो नथी, ते जो आ अवसरे मरण पामे तो ते क्यां उपजे ? [उ०] ए प्रमाणे जाणवुं. ए रीते यावत्–स्तनितकुमारावास, ज्योतिषिकावास अने वैमानिकावासपर्यन्त यावत्–'विहरे छे' त्यां सुधी जाणवुं.

नारकोनी शीघ्र गति.

४. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिकोनी केवा प्रकारनी शीघ्र गति कही छे, अने तेओनो केवा प्रकारनी शीघ्र गतिनो विषय (समय) कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! जेम कोइ एक पुरुष तरुण, बलिष्ट, युगवाळो (विशिष्ट बलवाळा सुषमादिकाळमां उत्पन्न थयेलो) अने यावत्–निपुण शिल्पशास्त्रनो ज्ञाता होय; ते पोताना संकुचित हाथने (त्वराथी) पसारे अने पसारेला हाथने संकुचित करे, पसारेली मुठिने संकुचित करे, अने संकोचेली मुठीने पसारे–उघाडे, उघाडेली आंखने मींची दे अने मींचेली आंखने उघाडे, हे गौतम ! (नारकोनी) आवा प्रकारनी–शीघ्रगति अथवा शीघ्र गतिनो विषय होय ? आ अर्थ समर्थ–यथार्थ नथी. नारको एक समयनी (ऋजुगतिवडे) अने बे समय के त्रण समयनी *विग्रहगतिवडे उत्पन्न थाय छे. हे गौतम ! तेवा प्रकारे (एक समय, बे समय के त्रण समयनी) नैरयिकोनी शीघ्रगति अथवा शीघ्रगतिनो विषय कह्यो छे. ए प्रमाणे यावद्–वैमानिको सुधी जाणवुं. परन्तु विशेष ए छे के, †एकेन्द्रियोने (उत्कृष्ट) चार समयनी विग्रहगति कहेवी. बाकी (पृथिवीकायिकादि दंडकने विषे) बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं.

नारको अनन्तरोपपन्न, परंपरोपपन्न के अनन्तरपरंपरानुपपन्न छे ?

५. [प्र०] हे भगवन् ! शुं नैरयिको अनन्तरोपपन्न (जेओनी उत्पत्तिमां समयादिकनुं अन्तर नथी, अर्थात् नारकभवना प्रथम समये उत्पन्न थयेला एवा) छे, परंपरोपपन्न (जेओनी उत्पत्तिने बे–त्रण–इत्यादि समयनी परंपरा थयेली छे तेवा) छे, अनन्तरपरंपरानुपपन्न (जेओनी अनन्तर अने परम्पर–ए बन्ने प्रकारनी उत्पत्ति थयेली नथी एवा) छे ? [उ०] हे गौतम ! नैरयिको अनन्तरोपपन्न छे, परंपरोपपन्न छे अने अनन्तरपरंपरानुपपन्न पण छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के, नैरयिको यावत्–अनन्तरपरंपरानुपपन्न छे ? [उ०] हे गौतम ! जे नैरयिको प्रथम समये उत्पन्न थया छे तेओ 'अनन्तरोपपन्न' कहेवाय छे, जे नैरयिकोनी उत्पत्तिमां प्रथम समय शिवाय द्वितीयादि समयो व्यतीत थया छे तेओ 'परंपरोपपन्न' कहेवाय छे अने जे नैरयिको विग्रहगतिने प्राप्त थया छे ते 'अनन्तरपरंपरानुपपन्न' कहेवाय छे,

---

४ * अहिं एक भवथी भवान्तरमां गमनकरवारूप गति जाणवी. नारको नरकगतिमां एक समय, बे समय अने त्रण समयनी गतिवडे उत्पन्न थाय छे, तेमां ऋजुगति एक समयनी होय छे, अने विग्रहगति बे अथवा त्रण समयनी होय छे ते शीघ्रगति कहेवाय छे. बाहुप्रसारणादि गतिनो काळ असंख्य समयनो छे, तेथी तेवा प्रकारनी गतिने शीघ्रगति न कहेवाय. ज्यारे जीव समश्रेणिए आवेला उत्पत्ति स्थानके जइने उपजे छे त्यारे तेने ऋजुगति एक समयनी होय छे, पण ज्यारे उत्पत्तिस्थानक समश्रेणिमां होतुं नथी त्यारे विग्रहगति बे के त्रण समयनी होय छे; अने एकेन्द्रिय जीवने उत्कृष्ट चार समयनी विग्रहगति होय छे; तेमां बे समयनी विग्रहगति आ प्रमाणे–ज्यारे कोइ जीव भरतक्षेत्रनी पूर्व दिशाथी नरकमां पश्चिम दिशाए उत्पन्न थाय, त्यारे प्रथम समये नीचे आवे, बीजे समये तिर्छो उत्पत्तिस्थानके जाय. ए रीते बे समयनी विग्रहगति जाणवी. त्रण समयनी विग्रहगति आ प्रमाणे–ज्यारे कोइ जीव भरतनी पूर्व दिशाथी नरकमां वायव्य दिशा तरफ उपजे त्यारे ते एक समये समश्रेणिद्वारा नीचे आवे, बीजे समये तिर्यग् पश्चिम दिशाए जाय, त्रीजा समये तिर्यग् वायव्य दिशाने विषे उत्पत्तिस्थानके जइने उपजे. ए प्रमाणे नारकोनो शीघ्रगतिकाळ अथवा आवा प्रकारनी शीघ्रगति कही.

† एकेन्द्रियोने चार समयनी विग्रहगति आ प्रमाणे होय छे–एक समयमां त्रसनाडीथी बहार अधोलोकनी विदिशाथी दिशा तरफ जाय, केमके जीवनी गति श्रेणिने अनुसारे होय छे. बीजा समये लोकना मध्यभागमां प्रवेश करे, त्रीजा समये उंचे (ऊर्ध्वलोकमां) जाय, अने चोथे समये त्रसनाडीथी नीकळी दिशाने विषे व्यवस्थित उत्पत्तिस्थाने जाय. आ वात सामान्यरीते घणा जीवने आश्रयी कही. अन्यथा एकेन्द्रियने पांच समयनी विग्रहगति संभवे छे. ते आ प्रमाणे—१ त्रसनाडीथी बहार अधोलोकनी विदिशाथी दिशा तरफ जाय, २ बीजा समये लोकमां प्रवेश करे, ३ त्रीजा समये ऊर्ध्वलोकमां जाय, ४ चोथा समये त्यांथी दिशा तरफ जाय, अने ५ पांचमा समये विदिशामां रहेला उत्पत्तिस्थानके जाय. एम पांच समयनी विग्रहगति कही.

पढमसमयोववन्नगा ते णं नेरइया परंपरोववन्नगा, जे णं नेरइया विग्गहगइसमावन्नगा ते णं नेरइया अणंतरपरंपरअणुववन्नगा, से तेणट्ठेणं जाव–अणुववन्नगा वि, एवं निरंतरं जाव–वेमाणिया ।

६. [प्र०] अणंतरोववन्नगा णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति, तिरिक्ख०, मणुस्स०, देवाउयं पकरेंति ? [उ०] गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, जाव–नो देवाउयं पकरेंति ।

७. [प्र०] परंपरोववन्नगा णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति, जाव–देवाउयं पकरेंति ? [उ०] गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेंति, मणुस्साउयं पि पकरेंति, नो देवाउयं पकरेंति ।

८. [प्र०] अणंतरपरंपरअणुववन्नगा णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति–पुच्छा । [उ०] नो नेरइयाउयं पकरेंति, जाव–नो देवाउयं पकरेन्ति, एवं जाव–वेमाणिया, नवरं पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा य परंपरोववन्नगा चत्तारि वि आउयाइं पकरेंति, सेसं तं चेव ।

९. [प्र०] नेरइया णं भंते ! किं अणंतरनिग्गया, परंपरनिग्गया, अणंतरपरंपरअनिग्गया ? [उ०] गोयमा ! नेरइया णं अणंतरनिग्गया वि, जाव–अणंतरपरंपरनिग्गया वि । [प्र०] से केणट्ठेणं जाव–अणिग्गया वि ? [उ०] गोयमा ! जे णं नेरइया पढमसमयनिग्गया ते णं नेरइया अणंतरनिग्गया, जे णं नेरइया अपढमसमयनिग्गया ते णं नेरइया परंपरनिग्गया, जे णं नेरइया विग्गहगतिसमावन्नगा ते णं नेरइया अणंतरपरंपरअणिग्गया, से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव–अणिग्गया वि, एवं जाव–वेमाणिया ।

१० [प्र०] अणंतरनिग्गया णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति, जाव–देवाउयं पकरेंति ? [उ०] गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, जाव–नो देवाउयं पकरेंति ।

माटे ते हेतुथी हे गौतम ! नैरयिको पूर्व प्रमाणे यावत्–*'अनन्तरपरम्परानुपपन्न छे–'त्यां सुधी कहेवुं. ए प्रमाणे निरन्तर यावत्–वैमानिको सुधी कहेवुं.

अनन्तरोपपन्न नारको आयुषनो बन्ध.

६. [प्र०] हे भगवन् ! अनन्तरोपपन्न (प्रथम समये उत्पन्न थयेला) नैरयिको शुं नैरयिकनुं आयुष बांधे, तिर्यंचनुं आयुष बांधे, मनुष्यनुं आयुष बांधे, के देवनुं आयुष बांधे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ नैरयिकनुं आयुष न बांधे, यावद्–देवनुं आयुष पण न †बांधे.

परंपरोपपन्न नैरयिकोने आयुषनो बन्ध.

७. [प्र०] हे भगवन् ! परंपरोपपन्न नैरयिको शुं नैरयिकनुं आयुष बांधे, यावद्–देवनुं आयुष बांधे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ नैरयिकनुं आयुष बांधता नथी, तिर्यंचनुं आयुष बांधे छे, मनुष्यनुं आयुष पण बांधे छे, देवनुं आयुष बांधता नथी.

अनन्तरपरंपरानुपपन्न नैरयिको.

८. [प्र०] हे भगवन् ! अनन्तरपरंपरानुपपन्न (विग्रहगतिने प्राप्त थयेला) नैरयिको शुं नैरयिकनुं आयुष बांधे–इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओ नैरयिकनुं आयुष न बांधे, यावत्–देवायुष पण न बांधे. ए प्रमाणे यावद् वैमानिको सुधी जाणवुं. परन्तु एटलो विशेष छे के परंपरोपपन्न पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिको अने मनुष्यो चारे प्रकारना आयुष बांधे छे. बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे कहेवुं.

अनन्तरनिर्गतादि नैरयिको.

९. [प्र०] हे भगवन् ! शुं नैरयिको अनन्तरनिर्गत (नरकादिथी नीकळी भवान्तर प्राप्त थयेला जेओने प्रथम समय वर्ते छे, समयादिना अन्तरनो अभाव छे)–परंपरनिर्गत (नरकादिथी नीकळी भवान्तरने प्राप्त थयेला जेओने बे–त्रण–इत्यादि समयोनुं अन्तर छे) अने अनन्तर–परम्परानिर्गत (जेओ नरकथी नीकळी विग्रहगतिमां वर्तता होय छे, अने ज्यां सुधी उत्पत्ति क्षेत्रने प्राप्त न थाय त्यांसुधी ते अनन्तरभावे अने परंपरभावे अनिर्गत एवा) छे ? [उ०] हे गौतम ! नारको अनन्तरनिर्गत पण होय छे, यावत्–अनन्तरपरम्परानिर्गत पण होय छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे शा हेतुथी कहो छो के यावत्–'नारको अनन्तरपरम्परानिर्गत छे' ? [उ०] हे गौतम ! जे नैरयिको नरकथी प्रथम समये नीकळेला छे तेओ अनन्तरनिर्गत, जेओ प्रथमसमय व्यतिरिक्त द्वितीयादि समयथी निकळेला छे तेओ परंपरनिर्गत, अने जेओ विग्रहगतिने प्राप्त थयेला छे तेओ अनन्तरपरंपरानिर्गत छे. माटे ते हेतुथी हे गौतम ! एम कहेवाय छे के नैरयिको यावत्–अनन्तरपरम्परानिर्गत छे. ए प्रमाणे यावद्–वैमानिको सुधी [ए त्रण त्रण आलापको] कहेवा.

नारको अनन्तरनिर्गतादि केम कहेवाय छे ?

अनन्तरनिर्गतादिने आयुषनो बन्ध.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! अनन्तरनिर्गत नारको शुं नरकायुष बांधे, के यावद्–देवायुष बांधे, [उ०] हे गौतम ! तेओ नारकायुष न बांधे, यावत्–देवायुष न बांधे.

---

५ * जेओनी अनन्तर अने परम्पर–ए बन्ने प्रकारनी उत्पत्ति नथी एवा विग्रहगतिमां वर्तमान जीवो 'अनन्तरपरंपरानुपपन्न' कहेवाय छे, केमके अनन्तर उत्पत्ति भवना प्रथमसमये होय छे, परंपरोत्पत्ति द्वितीयादि समये होय छे, अने विग्रहगतिमां बन्ने प्रकारनी उत्पत्तिनो अभाव छे.

६ † अहिं अनन्तरोपपन्न अने अनन्तरपरंपरानुपपन्न नैरयिको चारे प्रकारना आयुषनो बन्ध करता नथी, केमके ते अवस्थामां तेवा प्रकारना अध्यवसायना अभावे सर्व जीवोने आयुषनो बन्ध थतो नथी. पोताना आयुषना तृतीय भागादि बाकी होय त्यारे आयुषनो बन्ध थाय छे; तेथी परंपरोपपन्न नैरयिको पोताना आयुषना छ मास बाकी होय त्यारे अने मतान्तरे उत्कृष्टथी छ मास अने जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त बाकी होय त्यारे भवनिमित्तक तिर्यंच अने मनुष्यायुष बांधे छे, ते सिवाय देव अने नारकना आयुष्यनो बन्ध करता नथी.–टीका.

११. [प्र०] परंपरनिग्गया णं भंते ! नेरइया किं नेरइयाउयं०–पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नेरइयाउयं पि पकरेंति, जाव–देवाउयं पि पकरेंति ।

१२. [प्र०] अणंतरपरंपरअणिग्गया णं भंते ! नेरइया–पुच्छा । [उ०] गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेंति, जाव–नो देवाउयं पकरेंति, एवं निरवसेसं जाव–वेमाणिया ।

१३. [प्र०] नेरइया णं भंते ! किं अणंतरखेदोववन्नगा, परंपरखेदोववन्नगा, अणंतरपरंपरखेदाणुववन्नगा ? [उ०] गोयमा ! नेरइया०, एवं एएणं अभिलावेणं तं चेव चत्तारि दंडगा भाणियव्वा । 'सेवं भंते ! सेवं भंते !'त्ति जाव–विहरइ ।

चोद्दसमसए पढमो उद्देसो समत्तो ।

परंपरनिर्गत.

११. [प्र०] हे भगवन् ! परंपरनिर्गत नारको शुं नारकायुष बांधे–इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओ नारकायुष पण बांधे, यावत्–देवायुष पण बांधे.

अनन्तरपरंपरानिर्गत.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! अनन्तरपरंपरानिर्गत नारको शुं नारकायुष बांधे ?–इत्यादि प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! तेओ नरकायुष न बांधे, यावद्–देवायुष पण न बांधे. [कारण के अनन्तरपरंपरानिर्गत नारको विग्रहगतिने विषे होय छे अने त्यां आयुषनो बन्ध थतो नथी.] ए प्रमाणे समग्र यावद्–वैमानिको सुधी जाणवुं.

अनन्तरखेदोपपन्न-वगेरे.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! नैरयिको शुं अनन्तरखेदोपपन्न (समयादिना अन्तररहित–प्रथम समये जेओनो दुःखयुक्त उत्पाद छे एवा) छे, परंपरखेदोपपन्न (जेओना खेदयुक्त उत्पादमां बे–त्रण इत्यादि समयो थयेला छे एवा) छे के अनन्तरपरंपरखेदानुपपन्न (जेओनी उत्पत्ति अनन्तर–तुरतज अने परम्पर खेदवडे नथी तेवा) छे? [उ०] हे गौतम! ए नैरयिको अनन्तरखेदोपपन्न–इत्यादि त्रणे प्रकारना छे. ए प्रमाणे ए अभिलापथी पूर्व प्रमाणे *चार दंडको कहेवा 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे,' एम कही [भगवान् गौतम] यावद्–विहरे छे.

चतुर्दशशतके प्रथम उद्देशक समाप्त.

१३ * १ खेदोपपन्न दंडक, २ खेदोपपन्नने आश्रयी आयुषना बन्धनो दंडक, ३ खेदनिर्गतदंडक, अने ४ खेदनिर्गतने आश्रयी आयुषना बंधनो दंडक–ए प्रमाणे चार दंडक जाणवा.

बीओ उद्देसो।

१. [प्र०] कतिविहे णं भंते! उम्मादे पण्णत्ते? [उ०] गोयमा! दुविहे उम्मादे पण्णत्ते, तंजहा–जक्खावेसे य मोहणिज्जस्स य कम्मस्स उदएणं। तत्थ णं जे से जक्खाएसे से णं सुहवेयणतराए चेव सुहविमोयणतराए चेव। तत्थ णं जे से मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं से णं दुहवेयणतराए चेव दुहविमोयणतराए चेव।

२. [प्र०] नेरइयाणं भंते! कतिविहे उम्मादे पण्णत्ते? [उ०] गोयमा! दुविहे उम्मादे पण्णत्ते, तंजहा–जक्खावेसे य मोहणिज्जस्स य कम्मस्स उदएणं। [प्र०] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–'नेरइयाणं दुविहे उम्मादे पण्णत्ते, तंजहा–जक्खावेसे य मोहणिज्जस्स जाव–उदएणं'? [उ०] गोयमा! देवे वा से असुभे पोग्गले पक्खिवेज्जा, से णं तेसिं असुभाणं पोग्गलाणं पक्खिवणयाए जक्खाएसं उम्मादं पाउणेज्जा, मोहणिज्जस्स वा कम्मस्स उदएणं मोहणिज्जं उम्मायं पाउणेज्जा, से तेणट्ठेणं जाव–उम्माए।

३. [प्र०] असुरकुमाराणं भंते! कतिविहे उम्मादे पण्णत्ते? [उ०] एवं जहेव नेरइयाणं, नवरं देवे वा से महिड्ढीयतराए असुभे पोग्गले पक्खिवेज्जा, से णं तेसिं असुभाणं पोग्गलाणं पक्खिवणयाए जक्खाएसं उम्मादं पाउणेज्जा, मोहणिज्जस्स वा, सेसं तं चेव, से तेणट्ठेणं जाव–उदएणं, एवं जाव–थणियकुमाराणं। पुढविकाइयाणं जाव–मणुस्साणं एएसिं जहा नेरइयाणं, वाणमंतर–जोइस–वेमाणियाणं जहा असुरकुमाराणं।

द्वितीय उद्देशक.

उन्मादना प्रकार.

१. [प्र०] हे भगवन्! केटला प्रकारनो उन्माद कह्यो छे? [उ०] हे गौतम! बे प्रकारनो [1]उन्माद कह्यो छे, ते आ प्रमाणे–१ यक्षना आवेशरूप, अने २ मोहनीयकर्मना उदयथी थयेलो. तेमां जे यक्षावेशरूप उन्माद छे ते सुखपूर्वक वेदी शकाय अने सुखपूर्वक मूकी शकाय तेवो छे, अने तेमां जे मोहनीयकर्मना उदयथी थयेलो उन्माद छे ते दुःखपूर्वक वेदवा लायक अने दुःखपूर्वक मूकी शकाय तेवो छे.

नारकोनो उन्माद.

२. [प्र०] हे भगवन्! नैरयिकोने केटला प्रकारनो उन्माद कह्यो छे? [उ०] हे गौतम! तेओने बे प्रकारनो उन्माद होय छे, ते आ प्रमाणे–१ यक्षावेशरूप उन्माद अने २ मोहनीयकर्मना उदयथी थयेलो उन्माद. [प्र०] हे भगवन्! आप एम शा हेतुथी कहो छो के, 'नैरयिकोने एक यक्षावेशरूप अने बीजो मोहनीयकर्मजन्य एम बे प्रकारनो उन्माद होय छे'? [उ०] हे गौतम! देव ते नैरयिकना उपर अशुभ पुद्गलोनो प्रक्षेप करे अने ते अशुभ पुद्गलोना प्रक्षेपथी ते नारक यक्षावेशरूप उन्मादने प्राप्त थाय; अने मोहनीय कर्मना उदयथी मोहनीयजन्य उन्मादने पामे; माटे हे गौतम! ते हेतुथी यावत्–'मोहनीयजन्य उन्माद कह्यो छे.'

नारकोने शा हेतुथी उन्माद होय?

असुरकुमारोने उन्माद.

३. [प्र०] हे भगवन्! असुरकुमारोने केटला प्रकारनो उन्माद कह्यो छे? [उ०] हे गौतम! नैरयिकनी पेठे यावत् बे प्रकारनो उन्माद कह्यो छे. परन्तु विशेष ए छे के तेनाथी महर्द्धिक–महासामर्थ्यवाळो देव ते [असुरकुमारो उपर] अशुभ पुद्गलोनो प्रक्षेप करे, अने ते अशुभ पुद्गलोना प्रक्षेप करवाथी ते यक्षावेशरूप उन्मादने प्राप्त थाय. अथवा मोहनीयकर्मना उदयथी मोहनीयजन्य उन्मादने प्राप्त थाय. बाकी बधुं पूर्वप्रमाणे 'ते हेतुथी यावत्–मोहनीयजन्य उन्माद कह्यो छे' त्यां सुधी जाणवुं. ए प्रमाणे यावत्–स्तनितकुमार सुधी जाणवुं. पृथिवीकायिकथी आरंभी यावत् मनुष्योने नैरयिकनी पेठे जाणवुं. जेम असुरकुमारोने कह्युं तेम वानव्यंतर, ज्योतिषिक अने वैमानिक संबन्धे पण कहेवुं.

---

[1] * उन्माद–स्पष्ट चेतनानो (विवेकज्ञाननो) भ्रंश, तेना बे प्रकार छे–१–यक्ष–देवविशेषना प्रवेश करवाथी चेतनानो भ्रंश थाय ते यक्षावेशरूप उन्माद, अने मोहनीयकर्मना उदयथी आत्मा पारमार्थिक सत्–असत्ना विवेकथी भ्रष्ट थाय ते मोहनीयजन्य उन्माद. २ मोहनीयजन्य उन्मादना बे भेद छे–१ मिथ्यात्वमोहनीयजन्य अने २ चारित्रमोहनीय जन्य. मिथ्यात्वमोहनीयना उदयथी प्राणी अतत्त्वने तत्त्व माने अने तत्त्वने अतत्त्व माने छे; चारित्रमोहनीयना उदयथी विषयादिनुं स्वरूप जाणतां छतां पण तेमां अज्ञानीनी पेठे वर्ते छे. अथवा वेदमोहनीयना उदयथी हिताहितनुं भान भूली उन्मत्त थाय छे. टीका.

४. [प्र०] अत्थि णं भंते ! पज्जुन्ने कालवासी वुट्ठिकायं पकरेति ? [उ०] हंता अत्थि ।

५. [प्र०] जाहे णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया वुट्ठिकायं काउकामे भवति से कहमियाणिं पकरेति ? [उ०] गोयमा ! ताहे चेव णं से सक्के देविंदे देवराया अब्भितरपरिसाए देवे सद्दावेति, तए णं ते अब्भितरपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा मज्झिमपरिसए देवे सद्दावेंति, तए णं ते मज्झिमपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा बाहिरपरिसए देवे सद्दावेंति, तए णं ते बाहिरपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा बाहिरबाहिरगे देवे सद्दावेंति, तए णं ते बाहिरबाहिरगा देवा सद्दाविया समाणा आभिओगिए देवे सद्दावेंति, तए णं ते जाव–सद्दाविया समाणा वुट्ठिकाइए देवे सद्दावेंति, तए णं ते वुट्ठिकाइया देवा सद्दाविया समाणा वुट्ठिकायं पकरेंति, एवं खलु गोयमा ! सक्के देविंदे देवराया वुट्ठिकायं पकरेति ।

६. [प्र०] अत्थि णं भंते ! असुरकुमारा वि देवा वुट्ठिकायं पकरेंति ? [उ०] हंता अत्थि । [प्र०] किंपत्तियं णं भंते ! असुरकुमारा देवा वुट्ठिकायं पकरेंति ? [उ०] गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवंता एएसि णं जम्मणमहिमासु वा निक्खमणमहिमासु वा णाणुप्पायमहिमासु वा परिनिव्वाणमहिमासु वा एवं खलु गोयमा ! असुरकुमारा वि देवा वुट्ठिकायं पकरेंति, एवं नागकुमारा वि, एवं जाव–थणियकुमारा । वाणमंतर–जोइसिय–वेमाणिया एवं चेव ।

७. [प्र०] जाहे णं भंते ! ईसाणे देविंदे देवराया तमुकायं काउकामे भवति से कहमियाणिं पकरेति ? [उ०] गोयमा ! ताहे चेव णं से ईसाणे देविंदे देवराया अब्भितरपरिसाए देवे सद्दावेति, तए णं ते अब्भितरपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा एवं जहेव सक्कस्स जाव–तए णं ते आभिओगिया देवा सद्दाविया समाणा तमुकाइए देवे सद्दावेंति, तए णं ते तमुकाइया देवा सद्दाविया समाणा तमुकायं पकरेंति, एवं खलु गोयमा ! ईसाणे देविंदे देवराया तमुकायं पकरेति ।

८. [प्र०] अत्थि णं भंते ! असुरकुमारा वि देवा तमुकायं पकरेंति ? [उ०] हंता अत्थि । [प्र०] किं पत्तियं णं भंते ! असुरकुमारा देवा तमुकायं पकरेंति ? [उ०] गोयमा ! किड्डा–रतिपत्तियं वा पडिणीयविमोहणट्ठयाए वा गुत्तीसारक्खणहेउं वा अप्पणो वा सरीरपच्छायणट्ठयाए, एवं खलु गोयमा ! असुरकुमारा वि देवा तमुकायं पकरेंति, एवं जाव–वेमाणिया । 'सेवं भंते ! सेवं भंते !' त्ति जाव–विहरइ ।

बीओ उद्देसो समत्तो.

इन्द्र वृष्टि करे ?

४. [प्र०] हे भगवन् ! शुं एम छे के काले वरसनार पर्जन्य (मेघ) वृष्टिकाय (जलसमूह)ने वरसावे ? [अथवा जिन जन्ममहोत्सवादिकाले वृष्टि करनार पर्जन्य–इन्द्र वृष्टि करे ? [उ०] हा, गौतम ! वृष्टि करे.

इन्द्र वृष्टि केवी रीते करे ?

५. [प्र०] हे भगवन् ! ज्यारे देवेन्द्र अने देवनो राजा शक्र वृष्टि करवानी इच्छावाळो होय त्यारे ते वृष्टि केवी रीते करे ? [उ०] हे गौतम ! [ज्यारे ते वृष्टि करवानी इच्छावाळो होय] त्यारे देवेन्द्र अने देवनो राजा शक्र अभ्यन्तर परिषदना देवोने बोलावे छे, अने बोलावेला ते अभ्यन्तर परिषदना देवो मध्यम परिषदना देवोने बोलावे छे, मध्यम परिषदना बोलावेला ते देवो बहारनी परिषदना देवोने बोलावे छे, त्यार पछी बहारनी परिषदना बोलावेला ते देवो बहारबहारना देवोने बोलावे छे, अने बोलावेला ते बहार बहारना देवो आभियोगिक देवोने बोलावे छे, अने बोलावेला ते आभियोगिक देवो वृष्टिकायिक (वृष्टि करनारा) देवोने बोलावे छे, पछी ते बोलावेला वृष्टिकायिक देवो वृष्टि करे छे. ए प्रमाणे हे गौतम ! देवेन्द्र देवनो राजा शक्र वृष्टिकाय करे छे.

शुं असुरकुमार देवो वृष्टि करे छे ?

६. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमार देवो पण शुं वृष्टि करे छे ? [उ०] हे गौतम ! हा, करे छे. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमार देवो शा हेतुथी वृष्टि करे छे ? [उ०] हे गौतम ! जे आ अरिहंत भगवंतो छे, एओना जन्मोत्सवनिमित्ते, दीक्षोत्सवनिमित्ते, ज्ञानोत्पत्तिनिमित्ते अने निर्वाणना उत्सवनिमित्ते ए प्रमाणे असुरकुमार देवो वृष्टि करे छे. ए प्रमाणे नागकुमारो अने यावत्–स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. वानव्यंतर ज्योतिषिक अने वैमानिक संबन्धे पण ए प्रमाणे जाणवुं.

ईशानेन्द्रादि तमस्काय करे ?

७. [प्र०] हे भगवन् ! देवेन्द्र अने देवना राजा ईशान ज्यारे तमस्कायने करवाने इच्छे त्यारे ते तेने केवी रीते करे ? [उ] हे गौतम ! त्यारे देवेन्द्र अने देवना राजा ईशान अभ्यन्तर परिषदना देवोने बोलावे छे, त्यार बाद बोलावेला ते अभ्यन्तर परिषदना देवो–इत्यादि पूर्वोक्त बधुं शक्रनी पेठे यावत्–बोलावेला ते आभियोगिक देवो तमस्कायिक (तमस्काय करनार) देवोने बोलावे छे, अने त्यार पछी बोलावेला ते तमस्कायिक देवो तमस्काय करे छे. हे गौतम ! ए प्रमाणे देवेंद्र अने देवना राजा ईशान तमस्काय करे छे.

असुरकुमार तमस्काय करे ? शा हेतुथी तमस्काय करे ?

८. [प्र०] हे भगवन् ! शुं एम छे के असुरकुमार देवो पण तमस्कायने करे ? [उ०] हे गौतम ! हा, करे छे [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमार देवो शा हेतुथी तमस्काय करे छे ? [उ०] हे गौतम ! क्रीडा के रतिनिमित्ते, शत्रुने मोहपमाडवा निमित्ते, छुपावेला द्रव्यने साचववा निमित्ते अथवा पोताना शरीरने ढांकी देवा निमित्ते हे गौतम ! ते असुरकुमार देवो पण तमस्काय करे छे. ए प्रमाणे यावत्–वैमानिको सुधी जाणवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'–एम कही यावद् [भगवान् गौतम] विहरे छे.

चतुर्दशशतके द्वितीय उद्देशक समाप्त.

तईओ उद्देसो।

१. देवे णं भंते! महाकाए महासरीरे अणगारस्स भावियप्पणो मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा? [उ०] गोयमा! अत्थेगइए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा। [प्र०] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–'अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा'? [उ०] गोयमा! दुविहा देवा पण्णत्ता, तंजहा–मायीमिच्छादिट्ठीउववन्नगा य अमायीसम्मदिट्ठीउववन्नगा य, तत्थ णं जे से मायीमिच्छद्दिट्ठीउववन्नए देवे से णं अणगारं भावियप्पाणं पासइ, पासित्ता नो वंदति, नो नमंसति, नो सक्कारेति, नो सम्माणेइ, नो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं जाव–पज्जुवासति, से णं अणगारस्स भावियप्पणो मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा। तत्थ णं जे से अमायीसम्मद्दिट्ठिउववन्नए देवे से णं अणगारं भावियप्पाणं पासइ, पासित्ता वंदति, नमंसति, जाव–पज्जुवासति। से णं अणगारस्स भावियप्पणो मज्झंमज्झेणं नो वीयीवएज्जा, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ–जाव–नो वीइवएज्जा।

२. [प्र०] असुरकुमारे णं भंते! महाकाये महासरीरे–? [उ०] एवं चेव, एवं देवदंडओ भाणियव्वो जाव–वेमाणिए।

३. [प्र०] अत्थि णं भंते! नेरइयाणं सक्कारे ति वा, सम्माणे ति वा, किइकम्मे इ वा अब्भुट्ठाणे इ वा, अंजलिपग्गहे ति वा, आसणाभिग्गहे ति वा, आसणाणुप्पदाणे ति वा, इंतस्स पच्चुग्गच्छणया, ठियस्स पज्जुवासणया, गच्छतंस्स पडिसंसाहणया? [उ०] नो तिणट्ठे समट्ठे।

४. [प्र०] अत्थि णं भंते! असुरकुमाराणं सक्कारे ति वा, सम्माणे ति वा, जाव–पडिसंसाहणया वा? [उ०] हंता अत्थि, एवं जाव–थणियकुमाराणं। पुढविकाइयाणं जाव–चउरिंदियाणं एएसिं जहा नेरइयाणं।

तृतीय उद्देशक.

महाकाय देव भावितात्मा अनगारनी वच्चे थईने जाय?

१. [प्र०] हे भगवन्! महाकाय–मोटा परिवारवाळो अने मोटा शरीरवाळो देव भावितात्मा अनगारनी वच्चे थईने जाय? [उ०] हे गौतम! केटला एक देव जाय, अने केटला एक देव न जाय. [प्र०] हे भगवन्! आप एम शा हेतुथी कहो छो के, 'केटला एक देव जाय अने केटला एक न जाय'? [उ०] हे गौतम! देवो बे प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे–१ मायीमिथ्यादृष्टिउपपन्न अने २ अमायीसम्यग्दृष्टिउपपन्न; तेमां जे मायीमिथ्यादृष्टिउपपन्न देवो छे ते भावितात्मा अनगारने जुए छे अने जोइने वांदतो नथी, नमतो नथी, सत्कार करतो नथी, सन्मान करतो नथी, अने कल्याणरूप अने मंगलभूत देवचैत्यनी पेठे यावत्–तेनी पर्युपासना करतो नथी, तेथी ते देव भावितात्मा अनगारनी वच्चे थईने जाय. तेमां जे अमायीसम्यग्दृष्टिउपपन्न देवो छे, ते भावितात्मा अनगारने जुए छे, जोइने वांदे छे, नमे छे, यावत्–तेनी पर्युपासना करे छे, तेथी ते भावितात्मा अनगारनी वच्चे थईने न जाय, माटे ते हेतुथी हे गौतम! एम कह्युं छे के, 'कोइ जाय अने कोइ न जाय.'

महाकाय असुरकुमार भावितात्मा अनगारनी वच्चे थईने जाय?

२. [प्र०] हे भगवन्! घणा परिवारवाळा अने महाशरीरवाळा असुरकुमारो [भावितात्मा अनगारनी वच्चे थइने जाय?] इत्यादि प्रश्न. [उ०] पूर्ववत् जाणवुं. ए प्रमाणे *देवदंडक यावत्–वैमानिको सुधी कहेवो.

नारकोमां सत्कारादि विनय होय छे?

३. [प्र०] हे भगवन्! नारकोमां सत्कार (विनय करवाने योग्य व्यक्तिनो आदर करवो), सन्मान (तथाविध सेवा करवी) कृतिकर्म (वंदन), अभ्युत्थान (गौरव करवाने लायक व्यक्तिने जोता आसननो त्याग करी उभा थवुं), अञ्जलिकरण (बन्ने हाथ जोडवा), आसनाभिग्रह (आसन आपवुं), आसनानुप्रदान–गौरवने योग्य व्यक्तिमाटे आसनने एक स्थानेथी बीजे स्थाने लाववुं, गौरव योग्य मनुष्यनी सामा जवुं, बेठेलानी सेवा करवी, अने जाय त्यारे तेनी पाछळ जवुं–इत्यादि विनय छे? [उ०] हे गौतम! ए अर्थ समर्थ–युक्त नथी. अर्थात्–नैरयिकोने सत्कारादि विनय नथी.

असुरकुमारोमां सत्कारादि विनय.

४. [प्र०] हे भगवन्! असुरकुमारोमां सत्कार, सन्मान यावत्–जनारनी पाछळ जवुं–वगेरे विनय छे? [उ०] हे गौतम! हा छे. ए प्रमाणे यावत्–स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. जेम नैरयिकोने कह्युं तेम पृथिवीकायिकथी आरंभी यावत्–चतुरिन्द्रिय जीवो संबन्धे पण जाणवुं.

---

१ * नारक अने पृथिवीकायिकादि जीवोने उपरना कार्यनो असंभव होवाथी अने मात्र देवोने ज संभव होवाथी आ प्रसंगे मात्र देवदंडक कहेलो छे–टीका.

५. [प्र०] अत्थि णं भंते! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं सक्कारे इ वा, जाव–पडिसंसाहणया वा? [उ०] हंता अत्थि, नो चेव णं आसणाभिग्गहे इ वा, आसणाणुप्पयाणे इ वा। मणुस्साणं जाव–वेमाणियाणं जहा असुरकुमाराणं।

६. [प्र०] अप्पड्ढीए णं भंते! देवे महड्ढियस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा? [उ०] नो तिणट्ठे समट्ठे।

७. [प्र०] महड्ढीए णं भंते! देवे समड्ढियस्स देवस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा? [उ०] णो इणट्ठे समट्ठे, पमत्तं पुण वीइवएज्जा।

८. [प्र०] से णं भंते! किं सत्थेणं अक्कमित्ता पभू, अणक्कमित्ता पभू? [उ०] गोयमा। अक्कमित्ता पभू, नो अणक्कमित्ता पभू।

९. [प्र०] से णं भंते! किं पुव्विं सत्थेणं अक्कमित्ता पच्छा वीयीवएज्जा, पुव्विं वीईवएज्जा पच्छा सत्थेणं अक्कमेज्जा? [उ०] एवं एएण अभिलावेणं जहा दसमसए आइड्ढीउद्देसए तहेव निरवसेसं चत्तारि दंडगा भाणियव्वा जाव–'महड्ढिया वेमाणिणी अप्पड्ढियाए वेमाणिणीए०'।

१०. [प्र०] रयणप्पभापुढविनेरइया णं भंते! केरिसयं पोग्गलपरिणामं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति? [उ०] गोयमा! अणिट्ठं, जाव–अमणामं, एवं जाव–अहेसत्तमापुढविनेरइया, एवं वेदणापरिणामं, एवं जहा जीवाभिगमे बितिए नेरइयउद्देसए जाव–[प्र०] अहेसत्तमापुढविनेरइया णं भंते! केरिसयं परिग्गहसण्णापरिणामं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति? [उ०] गोयमा! अणिट्ठं, जाव–अमणामं। 'सेवं भंते! सेवं भंते'! त्ति।

चोद्दसमसए तईओ उद्देसो समत्तो।

पंचेन्द्रिय तिर्यंचोमां सत्कारादि विनय होय छे? अल्पऋद्धिवाळो देव महाऋद्धिवाळा देवनी वच्चे थईने जाय? समानऋद्धिवाळो देव समानऋद्धिवाळा देवनी वच्चे थईने जाय? वच्चे थईने जनार देव शस्त्रप्रहार करीने जाय के कर्या शिवाय जाय? प्रथम शस्त्रप्रहार कर्या पछी जाय के गया पछी शस्त्रप्रहार करे? नारको केवा प्रकारना पुद्गलपरिणामने अनुभवे छे?

५. [प्र०] हे भगवन्! पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिकोमां सत्कार, यावत्–जनारनी पाछळ वळावा जवुं–इत्यादि विनय होय छे? [उ०] हे गौतम! हा, होय छे. परन्तु आसनाभिग्रह–आसन आपवुं, आसनानुप्रदान–आसनने एक स्थानथी बीजे स्थानके लाववुं–इत्यादि विनय होतो नथी. मनुष्यो अने यावद्–वैमानिकोने जेम असुरकुमारने कह्युं तेम कहेवुं.

६. [प्र०] हे भगवन्! अल्पऋद्धिवाळो देव महाऋद्धिवाळा देवनी वच्चे थइने जाय? [उ०] हे गौतम! ए अर्थ समर्थ–यथार्थ नथी.

७. [प्र०] हे भगवन्! समानऋद्धिवाळो देव समानऋद्धिवाळा देवनी वच्चे थईने जाय? [उ०] हे गौतम! ए अर्थ यथार्थ नथी. पण जो ते [समानऋद्धिवाळो देव] प्रमत्त होय तो तेनी वच्चे थईने जाय.

८. [प्र०] हे भगवन्! (वच्चे थईने जनार ते देव) शुं शस्त्रथी प्रहार करीने जवा समर्थ थाय के प्रहार कर्या शिवाय जवा समर्थ थाय? [उ०] हे गौतम! शस्त्रप्रहार करीने जवा समर्थ थाय, पण प्रहार कर्या शिवाय जवा समर्थ न थाय.

९. [प्र०] हे भगवन्! शुं ते [देव] प्रथम शस्त्रप्रहार करे अने पछी जाय के पहेलां जाय अने पछी शस्त्रप्रहार करे? [उ०] इत्यादि आ प्रकारना अभिलापथी *दशम शतकना आइड्ढिअनामे (आत्मर्द्धिक) उद्देशकमां कह्या प्रमाणे समग्रपणे †चार दंडको (‡त्रण आलापकसहित) कहेवा, यावद् 'मोटी ऋद्धिवाळी वैमानिक देवी अल्पऋद्धिवाळी वैमानिक देवीनी वच्चे थईने जाय.'

१०. [प्र०] हे भगवन्! रत्नप्रभापृथिवीना नारको केवा प्रकारना पुद्गलपरिणामने अनुभवता विहरे छे? [उ०] हे गौतम! तेओ अनिष्ट, यावत्–मनने नहि गमता पुद्गलपरिणामने अनुभवता विहरे छे. ए प्रमाणे यावत्–सातमी नरकपृथिवीना नारको सुधी जाणवुं. ए रीते यावत्–वेदनापरिणामने पण अनुभवे छे–इत्यादि जेम जीवाभिगम सूत्रना बीजा ¶नैरयिक उद्देशकमां कह्युं छे ते प्रमाणे अहिं कहेवुं. यावत्–[प्र०] हे भगवन्! सातमी नरकपृथिवीना नैरयिको केवा प्रकारना परिग्रहसंज्ञापरिणामने अनुभवे छे? [उ०] हे गौतम! तेओ अनिष्ट, यावत्–मनने नहि गमता परिग्रहसंज्ञापरिणामनो अनुभव करता विहरे छे. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे'–एम कही [भगवान् गौतम] यावद् विहरे छे.

चतुर्दशशते तृतीय उद्देशक समाप्त.

---

९ * भग० खं० ३ श० १० उ० ३ पृ० १९३.

† अल्पर्द्धिक अने महर्द्धिकनो प्रथम आलापक, समर्द्धिक अने समर्द्धिकनो बीजो आलापक, तथा महर्द्धिक अने अल्पर्द्धिकनो त्रीजो आलापक. तेमां अल्पर्द्धिक अने महर्द्धिकनो आलापक तथा समर्द्धिकालापक–ए बे आलापक साक्षात् कह्या छे, केवल समर्द्धिकालापकने अन्ते बाकीना सूत्रनो अंश आ प्रमाणे जाणवो–"प्रथम शस्त्रथी हणीने जाय, पण पूर्वे जईने पछी न हणे. हे भगवन्! महर्द्धिक देव अल्पर्द्धिक देवना मध्यमां थईने जाय? हा जाय. ते महर्द्धिक देव शस्त्रथी हणीने जवा समर्थ होय के हण्या शिवाय जवा समर्थ होय? हे गौतम! हणीने पण जवा समर्थ होय अने हण्या शिवाय पण जवा समर्थ होय. हे भगवन्! पूर्वे शस्त्रवडे हणीने पछी जाय के पूर्वे जईने पछी हणे? हे गौतम! पूर्वे शस्त्रवडे हणीने पछी जाय, अथवा पूर्वे जईने पछी शस्त्रवडे हणे."

‡ १ देव अने देवनो प्रथमदंडक, २ देव अने देवी संबन्धे बीजो दंडक, ३ देवी अने देव संबन्धे त्रीजो दंडक, अने ४ देवी अने देवी संबंधे चोथो दंडक–ए रीते चार दंडक जाणवा.

१० ¶ नैरयिकसंबंधे हकीकत जीवाभिगमसूत्र प्रति० ३ उ० १–२–३ प० ८९–१२९ सुधीमां छे, परन्तु उपरना सूत्रने लगतो थोडो पाठ आ प्रति० ३ नैरयिक उ० ३ प० १२९ मां छे.

चउत्थो उद्देसो ।

१. [प्र०] एस णं भंते ! पोग्गले तीतमणंतं सासयं समयं लुक्खी, समयं अलुक्खी, समयं लुक्खी वा अलुक्खी वा ? पुव्विं च णं करणेणं अणेगवन्नं अणेगरूवं परिणामं परिणमति ? अह से परिणामे निज्जिन्ने भवति, तओ पच्छा एगवन्ने एगरूवे सिया ? [उ०] हंता गोयमा ! एस णं पोग्गले तीतं तं चेव जाव–एगरूवे सिया ।

२. [प्र०] एस णं भंते ! पोग्गले पडुप्पन्नं सासयं समयं० ? [उ०] एवं चेव, एवं अणागयमणंतं पि ।

३. [प्र०] एस णं भंते ! खंधे तीतमणंतं० ? [उ०] एवं चेव, खंधे वि जहा पोग्गले ।

४. [प्र०] एस णं भंते ! जीवे तीतमणंतं सासयं समयं दुक्खी, समयं अदुक्खी, समयं दुक्खी वा अदुक्खी वा ? पुव्विं च णं करणेणं अणेगभावं अणेगभूयं परिणामं परिणमइ ? अह से वेयणिज्जे निज्जिन्ने भवति, तओ पच्छा एगभावे एगभूए सिया ? [उ०] हंता गोयमा ! एस णं जीवे जाव–एगभूए सिया, एवं पडुप्पन्नं सासयं समयं, एवं अणागयमणंतं सासयं समयं ।

चतुर्थ उद्देशक.

पुद्गलपरिणाम. अतीतकालने विषे एक समयमां पुद्गलनो परिणाम.

१. [प्र०] हे भगवन् ! आ पुद्गल [परमाणु के स्कन्ध] अनन्त–अपरिमित अने शाश्वत अतीतकालने विषे एक समय सुधी रुक्षस्पर्शवाळो, एक समय सुधी अरुक्ष–स्निग्धस्पर्शवाळो, तथा एक समय सुधी रुक्ष अने स्निग्ध–बन्ने प्रकारना स्पर्शवाळो हतो ? अने पूर्वे करण–प्रयोगकरण अने विस्रसाकरणथी अनेक वर्णवाळा अने [अनेक गन्ध, रस, स्पर्श अने संस्थानना भेदथी] अनेकरूपवाळा परिणामरूपे परिणत थयो हतो ? [परमाणुनो भिन्न भिन्न समये अनेक वर्णादिरूपे परिणाम थाय छे, अने स्कन्धनो एकसमये अनेक वर्णादिरूपे परिणाम थाय छे.] हवे ते अनेक वर्णादिपरिणाम क्षीण थाय त्यार पछी ते पुद्गल एकवर्णवाळो अने एकरूपवाळो हतो ? [उ०] हा, गौतम ! आ पुद्गल अतीतकालने विषे–इत्यादि यावत्–'एकरूपवाळो हतो'–त्यां सुधी समग्र पाठ कहेवो.

वर्तमानकाळे पुद्गलपरिणाम. अनागतकाळ.

२. [प्र०] हे भगवन् ! आ पुद्गल (परमाणु के स्कन्ध) शाश्वत वर्तमान काळने विषे (एक समय सुधी रूक्षस्पर्शवाळो, स्निग्धस्पर्शवाळो, तथा स्निग्ध अने रूक्ष–बन्ने स्पर्शवाळो होय ? अने प्रयोग अने विस्रसाथी अनेक वर्णादिरूपे परिणत थाय ? ते परिणामना क्षीण थया बाद एकवर्णवाळो अने एकरूपवाळो होय ?) [उ०] पूर्वप्रमाणे उत्तर जाणवो, ए प्रमाणे अनागतकाल संबन्धे पण जाणवुं.

पुद्गलस्कन्ध.

३. [प्र०] हे भगवन् ! अनन्त–अपरिमित अने शाश्वत अतीतकालने विषे पुद्गलस्कन्ध (एक समय सुधी रूक्षस्पर्शवाळो, स्निग्धस्पर्शवाळो तथा स्निग्ध अने रूक्ष–ए बन्ने स्पर्शवाळो हतो ? अने अनेकवर्ण अने अनेकरूपवाळा परिणामरूपे परिणत थयो हतो ? पछी ते परिणामना क्षीण थवाथी तेनो एकवर्णवाळो अने एकरूपवाळो परिणाम थयो हतो ?) [उ०] ए प्रमाणे जेम पुद्गलसंबन्धे कह्युं तेम स्कन्धसंबन्धे पण जाणवुं.

अतीत, वर्तमान अने अनागतकाळे जीवपरिणाम.

४. [प्र०] हे भगवन् ! आ जीव अनन्त–अपरिमित अने शाश्वत अतीतकालने विषे एक समय (दुःखना हेतुथी) दुःखी, एक समय (सुखना हेतुथी) अदुःखी–सुखी, तथा *एक समय [सुख अने दुःखना हेतुथी] दुःखी के सुखी हतो ? अने पूर्वे करणथी–कालस्वभावादि कारणवडे शुभाशुभकर्मबंधना हेतुभूत क्रियाथी–अनेक प्रकारना सुखिपणुं अने दुःखिपणुं–इत्यादि भाववाळा, अने अनेकरूपवाळा परिणामरूपे परिणत थयो हतो ? त्यारपछी वेदवा लायक ज्ञानावरणादि कर्मनी निर्जरा थया बाद जीव एकभाववाळो अने एकरूपवाळो हतो ? [उ०] हा, गौतम ! आ जीव यावत्–एक रूपवाळो हतो. ए प्रमाणे शाश्वत एवा वर्तमानसमयसंबन्धे तथा अनन्त अने शाश्वत भविष्यकाळ संबन्धे पण जाणवुं.

---

४ * सुख अने दुःखना कारणो एकसमये विद्यमान होय छे, परन्तु सुख अने दुःखनुं वेदन एकसमये होतुं नथी, कारण के जीवने एकसमये एकज उपयोग होय छे.

५. [प्र०] परमाणुपोग्गले णं भंते ! किं सासए, असासए ? [उ०] गोयमा ! सिय सासए, सिय असासए। [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'सिय सासए, सिय असासए' ? [उ०] गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासए, वन्नपज्जवेहिं, जाव–फासपज्जवेहिं असासए, से तेणट्ठेणं जाव–सिय सासए, सिय असासए।

६. [प्र०] परमाणुपोग्गले णं भंते ! किं चरिमे, अचरिमे ? [उ०] गोयमा ! दव्वादेसेणं नो चरिमे, अचरिमे, खेत्तादेसेणं सिय चरिमे, सिय अचरिमे, कालादेसेणं सिय चरिमे, सिय अचरिमे, भावादेसेणं सिय चरिमे, सिय अचरिमे।

७. [प्र०] कइविहे णं भंते ! परिणामे पण्णत्ते ? [उ०] गोयमा ! दुविहे परिणामे पण्णत्ते, तंजहा–जीवपरिणामे य अजीवपरिणामे य। एवं परिणामपयं निरवसेसं भाणियव्वं। 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति जाव–विहरति।

चोद्दसमसए चउत्थो उद्देसो समत्तो।

परमाणुपुद्गल शाश्वत के अशाश्वत ?

५. [प्र०] हे भगवन् ! परमाणुपुद्गल शाश्वत छे के अशाश्वत छे ? [उ०] हे गौतम ! ते कथंचित् शाश्वत छे अने कथंचित् अशाश्वत छे. [प्र०] हे भगवन् ! आप एम शा हेतुथी कहो छो के 'कथंचित् शाश्वत छे अने कथंचित् अशाश्वत छे' ? [उ०] हे गौतम ! द्रव्यार्थरूपे ते परमाणुपुद्गल शाश्वत छे, अने वर्णपर्यायवडे यावत्–स्पर्शपर्यायवडे अशाश्वत छे, माटे ते हेतुथी हे गौतम ! एम कह्युं छे के 'परमाणुपुद्गल कथंचित् शाश्वत छे अने कथंचित् अशाश्वत छे.'

परमाणु चरम के अचरम ?

६. [प्र०] हे भगवन् ! शुं परमाणुपुद्गल चरम छे के अचरम छे ? [उ०] हे गौतम ! (परमाणुपुद्गल) द्रव्यनी अपेक्षाए *चरम नथी, पण अचरम छे. क्षेत्रादेशथी कदाचित् चरम छे अने कदाचित् अचरम छे. कालादेशथी कदाचित् चरम छे अने कदाचित् अचरम छे. भावादेशथी कथंचित् चरम अने कथंचित् अचरम छे.

सामान्य परिणाम.

७. [प्र०] हे भगवन् ! †परिणाम केटला प्रकारनो कह्यो छे ? [उ०] हे गौतम ! परिणाम बे प्रकारनो कह्यो छे, ते आ प्रमाणे–जीवपरिणाम अने अजीवपरिणाम. ए प्रमाणे अहिं [प्रज्ञापना सूत्रनुं] परिणामपद संपूर्ण कहेवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'–एम कही [भगवान् गौतम] यावद् विहरे छे.

चतुर्दशशतके चतुर्थ उद्देशक समाप्त.

---

६ * जे परमाणु विवक्षित परिणामथी रहित थईने पुनः ते परिणामने पामशे नहि ते परमाणु ते परिणामनी अपेक्षाए चरम कहेवाय छे, अने जे परमाणु पुनः ते परिणामने पामशे ते अपेक्षाए ते अचरम कहेवाय छे. द्रव्यनी अपेक्षाए परमाणु चरम नथी, पण अचरम छे, कारणके द्रव्यथी–परमाणुपरिणामथी रहित थयेलो परमाणु संघातपरिणामने पामी कालान्तरे पुनः परमाणुपरिणामने पामशे. क्षेत्रनी अपेक्षाए परमाणु कथंचित् चरम अने कथंचित् अचरम छे, ते आ प्रमाणे—जे क्षेत्रमां केवलज्ञानी समुद्घातने प्राप्त थयेला छे, अने त्यां जे परमाणु रहेलो छे, हवे समुद्घातने प्राप्त थयेला तेकेवलज्ञानीना संबन्धविशिष्ट ते परमाणु कोइ पण समये ते क्षेत्रनो आश्रय नहि करे, केमके ते केवलीनुं निर्वाण थवाथी ते क्षेत्रमां पुनः कदि आववाना नथी, माटे ए प्रमाणे क्षेत्रथी परमाणु चरम कहेवाय छे, विशेषणरहित क्षेत्रनी अपेक्षाए परमाणु फरी ते क्षेत्रमां अवगाढ थशे, माटे 'अचरम' कहेवाय छे. कालनी अपेक्षाए कथंचित् चरम छे अने कथंचित् अचरम छे, ते आ प्रमाणे–जे पूर्वाह्नादि कालने विषे जे केवलीए समुद्घात कर्यो, ते कालने विषे जे परमाणु रहेलो छे ते परमाणु ते केवलिसमुद्घातविशिष्ट ते काळने कदि पण प्राप्त नहि करे, कारण के ते केवलज्ञानी मोक्षे जवाथी पुनः समुद्घात करवाना नथी, माटे तेनी अपेक्षाए कालथी चरम, अने विशेषणरहित कालनी अपेक्षाए परमाणु अचरम छे. भावनी अपेक्षाए परमाणु चरम अने अचरम छे. ते आ प्रमाणे–केवलिसमुद्घातने अवसरे जे परमाणु वर्णादिभावविशेषने प्राप्त थयो हतो ते परमाणु विवक्षित केवलिसमुद्घातविशिष्ट वर्णादिपरिणामनी अपेक्षाए चरम छे, कारण के केवलज्ञानीना निर्वाण थवाथी पुनः ते परमाणु विशिष्ट परिणामने प्राप्त नहि थाय. आ व्याख्यान चूर्णिकारना मतने अनुसरी करेलुं छे.–टीका.

७ † द्रव्यनी अवस्थान्तरप्राप्ति ते परिणाम, कह्युं छे के–"परिणाम–अर्थान्तरप्राप्ति, द्रव्यनुं सर्वथा एकरूपे अवस्थित रहेवुं, तेमज तेनो सर्वथा नाश थवो ते परिणाम नथी." तेमां जीवपरिणाम दश प्रकारनो छे–१ गति, २ इन्द्रिय, ३ कषाय, ४ लेश्या, ५ योग, ६ उपयोग, ७ ज्ञान, ८ दर्शन, ९ चारित्र, अने १० वेद. अजीवपरिणाम पण दश प्रकारनो छे–१ बन्धन, २ गति, ३ संस्थान, ४ भेद, ५ वर्ण, ६ गन्ध, ७ रस, ८ स्पर्श, ९ अगुरुलघु अने १० शब्दपरिणाम.—टीका.

पंचमो उद्देसो।

१. [प्र०] नेरइए णं भंते ! अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ? [उ०] गोयमा ! अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा। [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ- 'अत्थेगइए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा ?' [उ०] गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा- विग्गहगतिसमावन्नगा य अविग्गहगतिसमावन्नगा य, तत्थ णं जे से विग्गहगतिसमावन्नए नेरतिए से णं अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा। [प्र०] से णं तत्थ झियाएज्जा ? [उ०] णो तिणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ। तत्थ णं जे से अविग्गहगइसमावन्नए नेरइए से णं अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं णो वीइवएज्जा, से तेणट्ठेणं जाव-'नो वीइवएज्जा'।

२. [प्र०] असुरकुमारे णं भंते ! अगणिकायस्स पुच्छा। [उ०] गोयमा ! अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा। [प्र०] से केणट्ठेणं जाव-नो वीइवएज्जा ? [उ०] गोयमा ! असुरकुमारा दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-विग्गहगइसमावन्नगा य अविग्गहगइसमावन्नगा य। तत्थ णं जे से विग्गहगइसमावन्नए असुरकुमारे से णं-एवं जहेव नेरतिए जाव-'कमति'। तत्थ णं जे से अविग्गहगइसमावन्नए असुरकुमारे से णं अत्थेगतिए अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं वीतीवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइ-

पंचम उद्देशक.

नारक अग्निकायना मध्यभागमां गमन करे ?

१. [प्र०] हे भगवन् ! नारक अग्निकायना मध्यभागमां थईने जाय ? [उ०] हे गौतम ! कोइ एक नारक जाय अने कोइ एक नारक न जाय. [प्र०] ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के, 'कोइ एक नारक जाय अने कोइ एक नारक न जाय' ? [उ०] हे गौतम ! नैरयिको बे प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे-विग्रहगतिने प्राप्त थयेला, अने अविग्रहगतिसमापन्न-उत्पत्तिक्षेत्रने प्राप्त थयेला. तेमां जे विग्रहगतिने प्राप्त थयेल नारक छे ते अग्निकायना मध्यमां थईने जाय. [प्र०] ते त्यां बळे ? [उ०] आ अर्थ यथार्थ नथी, केमके तेने *अग्नि-रूप शस्त्र असर करतुं नथी. तेमां जे †अविग्रहगतिने प्राप्त थयेल नारक छे ते अग्निकायनी मध्यमां थईने न जाय. माटे हे गौतम ! ते हेतुथी एम कह्युं के, 'कोइ एक नारक जाय अने कोइ एक न जाय'

असुरकुमारो.

२. [प्र०] हे भगवन् ! असुरकुमारो अग्निकायनी वच्चे थईने जाय ?-ए प्रश्न. [उ०] हे गौतम ! कोइ एक ‡(असुरकुमार) जाय अने कोइ एक न जाय. [प्र०] हे भगवन् ! एम आप शा हेतुथी कहो छो के, 'कोइ एक जाय अने कोइ एक न जाय' ? [उ०] हे गौतम ! असुरकुमारो बे प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे-विग्रहगतिने प्राप्त थयेला अने अविग्रहगतिने प्राप्त थयेला. तेमां जे विग्रहगतिने प्राप्त असुरकुमारो छे-इत्यादि बधुं नारकनी पेठे जाणवुं. यावत्-'तेने (अग्नि वगेरे) शस्त्र असर करतुं नथी.' तेमां जे अविग्रहगति प्राप्त असुर-कुमारो छे तेमांना कोइ एक अग्निनी वच्चे थईने जाय अने कोइ एक न जाय. [प्र०] जे अग्नि वच्चे थईने जाय ते त्यां बळे ? [उ०] ए

---

१ * विग्रहगतिने प्राप्त थयेलो जीव कार्मणशरीरयुक्त होवाथी अने ते सूक्ष्म होवाथी तेने अग्निवगेरे शस्त्र असर करतुं नथी.-टीका.

† अविग्रहगतिसमापन्न-उत्पत्ति क्षेत्रने प्राप्त थयेलो नारक समजवो, 'परन्तु ऋजुगतिने प्राप्त थयेलो'-ए अर्थ अहिं विवक्षित नथी, कारण के तेनो अहिं अधिकार नथी, उत्पत्तिक्षेत्रने प्राप्त थयेलो नारक अग्निकाय मध्ये थईने जतो नथी, केमके नारक क्षेत्रने विषे बादर अग्निकायनो अभाव छे, अने मनुष्यक्षेत्रने विषेज बादर अग्निकायनो सद्भाव छे.-टीका.

२ ‡ विग्रहगति प्राप्त असुरकुमार विग्रहगति प्राप्त नारकनी पेठे जाणवो, अविग्रहगति प्राप्त-उत्पत्तिक्षेत्रने प्राप्त थयेल असुरकुमार, के जे मनुष्यलोकमां आवे ते अग्निनी वच्चे थईने जाय, जे (मनुष्यलोकमां) न आवे ते अग्निकायनी वच्चे थईने न जाय, जे वच्चे थईने जाय छे ते पण बळे नहि, कारण के वैक्रिय शरीर सूक्ष्म छे अने तेनी गति अति शीघ्र छे.-टीका.

वएज्जा। [प्र०] जे णं वीतीवएज्जा से णं तत्थ झियाएज्जा? [उ०] नो तिणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमति, से तेण-ट्ठेणं०, एवं—जाव थणियकुमारे। एगिंदिया जहा नेरइया।

३. [प्र०] बेइंदिया णं भंते! अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं०? [उ०] जहा असुरकुमारे तहा बेइंदिएवि, नवरं—[प्र०] जे णं वीयीवएज्जा से णं तत्थ झियाएज्जा? [उ०] हंता झियाएज्जा, सेसं तं चेव, एवं जाव—चउरिंदिए।

४. [प्र०] पंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते! अगणिकाय—पुच्छा। [उ०] गोयमा! अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा। [प्र०] से केणट्ठेणं०? [उ०] गोयमा! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—विग्गहगतिसमा-वन्नगा य अविग्गहगइसमावन्नगा य। विग्गहगइसमावन्नए जहेव नेरइए, जाव—'नो खलु तत्थ सत्थं कमइ'। अविग्गहगइस-मावन्नगा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—इड्ढिप्पत्ता य अणिड्ढिप्पत्ता य। तत्थ णं जे से इड्ढिप्पत्ते पंचिंदिय-तिरिक्खजोणिए से णं अत्थेगइए अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं वीयीवएज्जा, अत्थेगइए नो वीयीवएज्जा। [प्र०] जे णं वीयीव-एज्जा से णं तत्थ झियाएज्जा? [उ०] नो तिणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ। तत्थ णं जे से अणिड्ढिप्पत्ते पंचिंदिय-तिरिक्खजोणिए से णं अत्थेगतिए अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं वीयीवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा। [प्र०] जे णं वीयी-वएज्जा से णं तत्थ झियाएज्जा? [उ०] हंता झियाएज्जा, से तेणट्ठेणं जाव—'नो वीयीवएज्जा' एवं मणुस्से वि। वाणमंतर—जो-इसिय—वेमाणिए जहा असुरकुमारे।

५. नेरतिया दस ठाणाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तंजहा—१ अणिट्ठा सद्दा, २ अणिट्ठा रूवा, ३ अणिट्ठा गंधा, ४ अणिट्ठा रसा, ५ अणिट्ठा फासा, ६ अणिट्ठा गती, ७ अणिट्ठा ठिती, ८ अणिट्ठे लावन्ने, ९ अणिट्ठे जसो—कित्ती, १० अणिट्ठे उट्ठाण—कम्म—बल—वीरिय—पुरिसक्कारपरक्कमे।

अर्थ यथार्थ नथी. केमके तेने अग्नि वगेरे शस्त्र असर करतुं नथी. ते हेतुथी हे गौतम! एम कह्युं छे के 'कोइ एक [असुरकुमार] जाय अने कोइ एक न जाय.' ए प्रमाणे यावत्—स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं. एकेन्द्रियो *संबन्धे नैरयिकनी पेठे जाणवुं.

एकेन्द्रियो.

बेइन्द्रिय.

३. [प्र०] हे भगवन्! बेइन्द्रिय जीवो अग्निकायनी मध्यमां थईने जाय? [उ०] जेम असुरकुमारो संबन्धे कह्युं तेम बेइन्द्रिय संबन्धे कहेवुं. परन्तु विशेष ए छे के, [प्र०] 'जे बेइन्द्रिय अग्नि वच्चे थईने जाय, ते त्यां बळे? [उ०] हा, ते त्यां बळे'—एम कहेवुं. अने बाकी बधुं पूर्वे कह्या प्रमाणे यावत्—चउरिन्द्रिय सुधी जाणवुं.

पंचेन्द्रिय तिर्यंच अग्निनी वच्चे थईने जाय?

४. [प्र०] हे भगवन्! पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीव अग्निनी वच्चे थईने जाय?—ए प्रश्न. [उ०] हे गौतम! कोइ एक जाय अने कोइ एक न जाय. [प्र०] हे भगवन्! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के 'कोइ एक जाय अने कोइ एक न जाय'? [उ०] हे गौतम! पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिको बे प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे—विग्रहगतिने प्राप्त थयेला अने अविग्रहगतिने प्राप्त थयेला. तेमां जे विग्रहगतिने प्राप्त थयेला पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिको छे ते नैरयिकनी पेठे जाणवा, यावत्—'तेने शस्त्र असर करतुं नथी.' जे पंचेन्द्रियतिर्यंचो अविग्रहग-तिने प्राप्त थयेला छे ते बे प्रकारना कह्या छे, ते आ प्रमाणे—ऋद्धिप्राप्त (वैक्रियलब्धियुक्त) अने ऋद्धिने अप्राप्त (वैक्रियलब्धिरहित). तेमां जे पंचेन्द्रियतिर्यंचो ऋद्धिने प्राप्त थयेला छे, तेमांथी कोइ एक अग्निनी वच्चे थइने जाय अने कोइ एक अग्निनी वच्चे थईने न जाय. [प्र०] जे अग्निनी वच्चे थईने जाय छे ते त्यां बळे? [उ०] ए अर्थ समर्थ—यथार्थ नथी, केमके तेने शस्त्र असर करतुं नथी. तेमां जे पंचेन्द्रिय तिर्यंचो ऋद्धिने प्राप्त थयेला नथी तेमांथी कोइ एक अग्निनी वच्चे थईने जाय अने कोइ एक न जाय. [प्र०] जे जाय ते बळे? [उ०] हा, बळे; माटे हे गौतम! ते हेतुथी एम कह्युं छे के, यावत्—'कोइ एक अग्निनी वच्चे थइने जाय अने कोइ एक न जाय' ए प्रमाणे मनुष्य संबन्धे पण जाणवुं. जेम असुरकुमारो संबन्धे कह्युं, तेम वानव्यंतर, ज्योतिषिक अने वैमानिक संबन्धे पण कहेवुं.

नारको दश स्थानोने अनुभव करे छे.

५. नारको दश स्थानोने अनुभवता विहरे छे, ते आ प्रमाणे—१ अनिष्ट शब्द, २ अनिष्ट रूप, ३ अनिष्ट गंध, ४ अनिष्ट रस, ५ अनिष्ट स्पर्श; ६ †अनिष्ट गति, ७ अनिष्ट स्थिति, ८ अनिष्ट लावण्य, ९ अनिष्ट यशःकीर्ति अने १० अनिष्ट उत्थान, कर्म, बल, वीर्य तथा पुरुषकारपराक्रम.

---

२ * विग्रहगतिप्राप्त एकेन्द्रिय जीवो अग्नि वच्चे थईने जाय, अने सूक्ष्म होवाथी ते बळे नहि. अविग्रहगतिप्राप्त एकेन्द्रियो अग्नि वच्चे थईने जता नथी, कारण के तेओ स्थावर छे. तेजः (अग्नि) अने वायु गतित्रस होवाथी तेनुं अग्निमध्यमां थईने जवुं संभवे छे, परन्तु ते अहिं विवक्षित नथी, अहिं तो स्थावरपणानी विवक्षा छे अने तेथी तेओमां गतिनो अभाव छे. तथा वाय्वादिनी प्रेरणाथी पृथिव्यादिनुं अग्निमध्यमां गमन संभवित छे, परन्तु अहिं स्वातन्त्र्यकृत गमन विवक्षित होवाथी तेनुं स्वतंत्रपणे अग्निने विषे गमन संभवित नथी—टीका.

५ † अनिष्टगति नारकोनी अप्रशस्तविहायोगतिरूप के नरकगतिरूप अनिष्ट गति, नरकमां रहेवारूप अथवा नरकायुरूप अनिष्ट स्थिति, अनिष्ट लावण्य—शरीरनो बेडोळ आकारविशेष, अपयश अने अपकीर्तिरूप अनिष्ट यशःकीर्ति, वीर्यान्तरायना क्षयोपशमादिथी उत्पन्न थयेल उत्थानादिवीर्यविशेष अनिष्ट—निन्दित छे.

६. असुरकुमारा दस ठाणाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तंजहा–१ इट्ठा सद्दा, २ इट्ठा रूवा, जाव–इट्ठे उट्ठाण–कम्म–बल–वीरिय–पुरिसक्कारपरक्कमे, एवं जाव–थणियकुमारा।

७. पुढविक्काइया छ ट्ठाणाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तं जहा–इट्ठाणिट्ठा फासा, इट्ठाणिट्ठा गती, एवं जाव–परक्कमे एवं जाव–वणस्सइकाइया।

८. बेइंदिया सत्त ट्ठाणाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तंजहा–इट्ठाणिट्ठा रसा, सेसं जहा एगिंदियाणं।

९. तेंदिया अट्ठ ट्ठाणाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरन्ति, तं जहा–इट्ठाणिट्ठा गंधा, सेसं जहा बेंदियाणं।

१०. चउरिंदिया नव ट्ठाणाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तंजहा–इट्ठाणिट्ठा रूवा, सेसं जहा तेंदियाणं।

११. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया दस ठाणाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तंजहा–इट्ठाणिट्ठा सद्दा, जाव–परक्कमे, एवं मणुस्सा वि, वाणमंतर–जोइसिय–वेमाणिया जहा असुरकुमारा।

१२. [प्र०] देवे णं भंते ! महिड्डीए जाव–महेसक्खे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू, तिरियपव्वयं वा तिरियभित्तिं वा उल्लंघेत्तए वा पल्लंघेत्तए वा ? [उ०] गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे।

१३. [प्र०] देवे णं भंते ! महिड्डीए जाव–महेसक्खे बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू, तिरिय० जाव–पल्लंघेत्तए वा ? [उ०] हंता पभू। 'सेवं भंते ! सेवं भंते'त्ति।

चोद्दसमसए पंचमो उद्देसो समत्तो.

६. असुरकुमारो दश स्थानोने अनुभवता विहरे छे, ते आ प्रमाणे–१ इष्ट शब्द, २ इष्ट रूप, यावत्–१० इष्ट उत्थान, कर्म, बल, वीर्य अने पुरुषकार पराक्रम–ए प्रमाणे यावत्–स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं। असुरकुमारो.

७. पृथिविकायिको छ स्थानोने अनुभवता विहरे छे, ते आ प्रमाणे–१ *इष्टानिष्ट स्पर्श, २ इष्टानिष्ट गति, यावत्–६ 'इष्टानिष्ट पुरुषकार–पराक्रम'–ए प्रमाणे यावत्–वनस्पतिकायिक सुधी जाणवुं। पृथिवीकायिको.

८. बेइन्द्रिय जीवो सात स्थानोने अनुभवता विहरे छे, ते आ प्रमाणे–१ इष्टानिष्ट रस–इत्यादि समग्र एकेन्द्रियोनी पेठे अहिं कहेवुं। बेइन्द्रियो.

९. तेइन्द्रिय जीवो आठ स्थानोने अनुभवता विहरे छे, ते आ प्रमाणे–१ इष्टानिष्ट गन्ध–इत्यादि बाकी बधुं बेइन्द्रियोनी पेठे कहेवुं। तेइन्द्रियो.

१०. चउरिन्द्रिय जीवो नव स्थानोने अनुभवता विहरे छे, ते आ प्रमाणे–१ इष्टानिष्ट रूप–इत्यादि बाकी बधुं तेइन्द्रिय जीवोनी पेठे जाणवुं। चतुरिन्द्रिय जीवो.

११. पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिको दश स्थानकोने अनुभवता विहरे छे, ते आ प्रमाणे–१ इष्टानिष्ट शब्द–इत्यादि यावत्–पराक्रम सुधी कहेवुं. ए प्रमाणे मनुष्यो पण जाणवा. जेम असुरकुमार संबन्धे कह्युं तेम वानव्यंतर, ज्योतिषिक अने वैमानिक संबन्धे कहेवुं। पंचेन्द्रिय तिर्यंचो.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! मोटी ऋद्धिवाळो यावत्–मोटा सुखवाळो देव बहारना–भवधारणीय शरीर व्यतिरिक्त पुद्गलोने ग्रहण कर्या शिवाय तिर्छा पर्वतने के तिर्छी [प्राकारनी] भींतने उल्लंघवा के वारंवार उल्लंघवा समर्थ थाय ? [उ०] हे गौतम ! ए अर्थ यथार्थ नथी, [अर्थात् भवधारणीय शरीर व्यतिरिक्त बीजा बहारना पुद्गलोने ग्रहण कर्या शिवाय पर्वतादिने उल्लंघवानुं सामर्थ्य प्रवर्ततुं नथी.]

महर्द्धिक देव बहारना पुद्गलोने ग्रहण कर्या शिवाय पर्वतादिने उल्लंघी शके ? बहारना पुद्गलोने ग्रहण करी पर्वतादिने उल्लंघवा समर्थ छे.

१३. [प्र०] हे भगवन् ! मोटी ऋद्धिवाळो यावत्–मोटा सुखवाळो देव बहारना पुद्गलोने ग्रहण करी तिर्छा [पर्वतने के तिर्छी प्राकारनी भींतने उल्लंघवा समर्थ छे ? [उ०] हा, गौतम ! समर्थ छे. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'–एम कही [भगवान् गौतम यावद् विहरे छे.]

चतुर्दश शतके पंचम उद्देशक समाप्त.

---

७ * एकेन्द्रियोनी शुभाशुभ क्षेत्रमां उत्पत्ति थवानो संभव होवाथी तेने साता अने असाताना उदयनो संभव छे माटे तेने इष्टानिष्ट स्पर्शादि होय छे. यद्यपि तेओ स्थावर छे तेथी तेने स्वभावथी गमनरूप गतिनो संभव नथी तो पण तेओमां परप्रेरित गति होय छे, अने ते शुभाशुभरूप होवाथी 'इष्टानिष्ट' कहेवाय छे. इष्टानिष्ट लावण्य मणि अने पत्थरने विषे जाणवुं. स्थावर होवाथी एकेन्द्रियने विषे उत्थानादि होता नथी, परन्तु पूर्वभवमां अनुभवेला उत्थानादिना संस्कारनिमित्ते तेनुं इष्टानिष्टपणुं जाणवुं.–टीका.

छट्ठओ उद्देसो।

१. [प्र०] रायगिहे जाव-एवं वयासी-नेरइया णं भंते ! किमाहारा, किंपरिणामा, किंजोणीया, किंठितीया पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! नेरइया णं पोग्गलाहारा, पोग्गलपरिणामा, पोग्गलजोणिया, पोग्गलट्ठितीया, कम्मोवगा, कम्मनियाणा, कम्मट्ठितीया, कम्मुणामेव विप्परियासमेंति, एवं जाव-वेमाणिया।

२. [प्र०] नेरइया णं भंते ! किं वीयीदव्वाइं आहारेंति अवीचिदव्वाइं आहारेंति ? [उ०] गोयमा ! नेरतिया वीचिदव्वाइं पि आहारेंति, अवीचिदव्वाइं पि आहारेंति। [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-'नेरतिया वीचि० तं चेव जाव-आहारेंति' ? [उ०] गोयमा ! जे णं नेरइया एगपएसूणाइं पि दव्वाइं आहारेंति, ते णं नेरतिया वीचिदव्वाइं आहारेंति, जे णं नेरतिया पडिपुन्नाइं दव्वाइं आहारेंति ते णं नेरइया अवीचिदव्वाइं आहारेंति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-जाव-आहारेंति, एवं जाव-वेमाणिया आहारेंति।

३. [प्र०] जाहे णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजिउंकामे भवति से कहमियाणिं पकरेंति ? [उ०] गोयमा ! ताहे चेव णं से सक्के देविंदे देवराया एगं महं नेमिपडिरूवगं विउव्वति, एगं जोयणसयसहस्सं आयाम-विक्खंभेणं, तिन्नि जोयणसयसहस्साइं, जाव-अद्धंगुलं च किंचिविसेसाहियं परिक्खेवेणं। तस्स णं नेमिपडिरूवगस्स उवरिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पन्नत्ते, जाव-मणीणं फासे, तस्स णं नेमिपडिरूवगस्स बहुमज्झदेसभागे तत्थ णं महं एगं पासायवडेंसगं विउव्वति पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं विक्खंभेणं, अब्भुग्गय-मूसिय० वन्नओ जाव-पडिरूवं।

षष्ठ उद्देशक.

नारकोने आहार परिणाम, योनि, स्थिति वगेरे.

१. [प्र०] राजगृहमां [भगवान् गौतम] आ प्रमाणे बोल्या के हे भगवन् ! नारको शो आहार करे, अने ते [आहारनो] शो परिणाम थाय, तेनी योनि (उत्पत्तिस्थानक) केवी होय, अने तेनी स्थिति-अवस्थानुं कारण शुं छे ? [उ०] हे गौतम ! नारको पुद्गलनो आहार करे, अने तेनो पुद्गलरूपे परिणाम थाय, [शीत अने उष्ण स्पर्शवाळा] पुद्गलो एज तेनी योनि-उत्पत्तिस्थानक छे, [आयुषकर्मना] पुद्गलो ए तेनी नरकमां स्थितिनुं कारण छे. तथा ते [बन्धद्वारा] कर्मने प्राप्त थयेला छे, ते नारकपणानुं निमित्तभूतकर्मवाळा छे, कर्मपुद्गलथी तेओनी स्थिति छे, अने कर्मने लीधे अन्य पर्यायने प्राप्त थाय छे. ए प्रमाणे यावद्-वैमानिको सुधी जाणवुं.

नारको वीचि अने अवीचिद्रव्योनो आहार करे छे.

२. [प्र०] हे भगवन् ! नारको वीचिद्रव्योनो आहार करे छे के अवीचि द्रव्योनो आहार करे छे ? [उ०] हे गौतम नारको *वीचिद्रव्योनो पण आहार करे छे अने अवीचिद्रव्योनो पण आहार करे छे. [प्र०] हे भगवन् ! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के, 'नारको वीचिद्रव्यो अने अवीचिद्रव्योनो पण आहार करे छे' ? [उ०] हे गौतम ! जे नारको एक प्रदेश पण न्यून द्रव्योनो आहार करे छे तेओ वीचिद्रव्योनो आहार करे छे, अने जे नैरयिको परिपूर्ण द्रव्योनो आहार करे छे तेओ अवीचि द्रव्योनो आहार करे छे, ते हेतुथी हे गौतम ! एम कह्युं छे के, 'नारको वीचि तथा अवीचि ए बन्ने प्रकारना द्रव्योनो आहार करे छे.' ए प्रमाणे यावद्-'वैमानिको आहार करे छे' त्यां सुधी जाणवुं.

ज्यारे इन्द्र भोग भोगववा इच्छे त्यारे ते शुं करे ?

३. [प्र०] हे भगवन् ! देवोनो इन्द्र अने देवोनो राजा शक्र ज्यारे भोगववा योग्य दिव्य [मनोज्ञ स्पर्शादिक] भोगोने भोगववाने इच्छे त्यारे ते तेने ते वखते केवी रीते भोगवे ? [उ०] हे गौतम ! त्यारे ते देवोनो इन्द्र अने देवोनो राजा शक्र एक मोटुं चक्रना जेवुं (वृत्ताकार) स्थान †विकुर्वे छे, तेनी लंबाइ अने पहोळाइ एक लाख योजननी अने तेनी परिधि त्रण लाख [सोळ हजार बसो सत्यावीश योजन त्रण कोश, एकसो अठ्यावीश धनुष अने कंइक अधिक साडातेर] आंगुल छे. ते चक्रना आकारवाळा स्थानानी उपर बरोबर सम अने रमणीय

---

२ * जेटला पुद्गलद्रव्यना समुदायथी संपूर्ण आहार थाय ते अवीचिद्रव्य, अने संपूर्ण आहारथी एकादिप्रदेश न्यून आहार ते वीचिद्रव्य.

३ †अहिं शक्रने सुधर्मासभा भोगस्थान छे, तो पण ते चक्रना आकारवाळुं स्थान विकुर्वे छे ते जिननी आशातनानो त्याग करवा माटे छे. कारण के सुधर्मा सभामां माणवक स्तम्भने विषे डाभडामां जिनना अस्थिओ छे, अने तेनी पासे (मैथुननिमित्त) विषयोपभोग करवामां जिननी आशातना थाय, माटे मैथुन निमित्तक विषयोपभोगमाटे चक्रना आकारवाळुं बीजुं स्थान विकुर्वे छे.-टीका.

तस्स पासायवडिंसगस्स उल्लोए पउमलयाभत्तिचित्ते, जाव–पडिरूवे। तस्स णं पासायवडेंसगस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे, जाव–मणीणं फासो, मणिपेढिया अट्ठजोयणिया जहा वेमाणियाणं। तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं महं एगे देवसयणिज्जे विउव्वइ, सयणिज्जवन्नओ, जाव–पडिरूवे। तत्थ णं से सक्के देविंदे देवराया अट्ठहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं, दोहि य अणिएहिं नट्टाणिएण य गंधव्वाणिएण य सद्धिं महयाहयनट्ट० जाव–दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ।

४. [प्र०] जाहे ईसाणे देविंदे देवराया दिव्वाइं० ? [उ०] जहा सक्के तहा ईसाणे वि निरवसेसं, एवं सणंकुमारे वि, नवरं पासायवडेंसओ छ जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, तिन्नि जोयणसयाइं विक्खंभेणं, मणिपेढिया तहेव अट्ठजोयणिया। तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं एत्थ णं महेगं सीहासणं विउव्वइ सपरिवारं भाणियव्वं। तत्थ णं सणंकुमारे देविंदे देवराया बावत्तरीए सामाणियसाहस्सीहिं जाव–चउहिं बावत्तरीहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहि य बहूहिं सणंकुमारकप्पवासीहिं वेमाणिएहिं देवेहि य देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे महया० जाव–विहरइ। एवं जहा सणंकुमारे तहा जाव–पाणओ अच्चुओ, नवरं जो जस्स परिवारो सो तस्स भाणियव्वो, पासायउच्चत्तं जं सएसु २ कप्पेसु विमाणाणं उच्चत्तं, अद्धद्धं वित्थारो, जाव–अच्चुयस्स नवजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धपंचमाइं जोयणसयाइं विक्खंभेणं, तत्थ णं गोयमा ! अच्चुए देविंदे देवराया दसहिं सामाणियसाहस्सीहिं जाव–विहरइ, सेसं तं चेव। 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति।

चोद्दसमसए छट्ठओ उद्देसो समत्तो।

भूमिभाग कहेलो छे. [तेनुं वर्णन] यावत्–'मनोज्ञ स्पर्श होय छे' त्यां सुधी जाणवुं. ते चक्राकारवाळा ते स्थाननी बरोबर मध्यभागे एक मोटो प्रासादावतंसक–भूषणरूप सुन्दर प्रासाद विकुर्वे छे. ते उंचाइमां पांचसे योजन उंचो अने तेनो विष्कंभ–विस्तार अढीसो योजननो छे. ते प्रासाद अभ्युद्गत–अत्यन्त उंचो [अने प्रभाना पुंजवडे व्याप्त होवाथी जाणे हसतो होयनी !]–इत्यादि *प्रासादवर्णन जाणवुं, यावत्–ते प्रतिरूप–सुंदर अने दर्शनीय छे. तथा ते प्रासादावतंसकनो उल्लोच–उपरनो भाग पद्म अने लताओना चित्रामणथी विचित्र अने यावद्–दर्शनीय छे. वळी ते प्रासादावतंसकनो अंदरनो भाग बराबर सम अने रमणीय छे, यावत्–'त्यां मणिओनो स्पर्श होय छे'–त्यां सुधी वर्णन जाणवुं. वळी त्यां आठ योजन उंची एक मणिपीठिका छे, अने ते वैमानिकोनी मणिपीठिका जेवी जाणवी. ते मणिपीठिकानी उपर एक मोटी देवशय्या विकुर्वे छे, ते देवशय्यानुं वर्णन यावत् 'प्रतिरूप' छे त्यां सुधी कहेवुं. त्यां देवनो इन्द्र अने देवनो राजा शक्र पोतपोताना परिवारयुक्त आठ पट्टराणीओ साथे गन्धर्वानीक अने नाट्यानीक ए बे प्रकारना अनीकनी साथे मोटेथी आहत–वगाडेला नाट्य, गीत अने वादित्रना शब्दवडे यावत्–भोगववा योग्य दिव्य भोगोने भोगवतो विहरे छे.

ईशानेन्द्र भोग भोगववा इच्छे त्यारे ते केवी रीते भोगवे?

४. [प्र०] हे भगवन् ! देवेन्द्र अने देवनो राजा ईशान दिव्य भोगोने भोगववा इच्छे त्यारे ते केवी रीते भोगवे ? [उ०] जेम शक्र संबन्धे कह्युं तेम ईशान संबन्धे पण समग्र कहेवुं. ए प्रमाणे सनत्कुमारने विषे पण जाणवुं, परन्तु विशेष ए छे के, ए प्रासादावतंसक उंचाईमां छसो योजन अने पहोळाइमां त्रणसो योजन छे. तथा ते मणिपीठिकानी उपर एक मोटुं †सिंहासन सपरिवार–पोताना परिवारने योग्य आसनो सहित विकुर्वे छे–इत्यादि कहेवुं. तेमां देवेन्द्र अने देवनो राजा सनत्कुमार बहोंतेर हजार सामानिक देवो साथे, यावत्–बे लाख अठ्याशी हजार आत्मरक्षक देवो साथे, अने सनत्कुमार कल्पमां रहेनारा घणा वैमानिक देवो अने देवीओ साथे ‡परिवृत थइ [मोटा गीत अने वादित्रना] शब्दोवडे यावत्–विहरे छे. ए प्रमाणे जेम सनत्कुमार संबन्धे कह्युं, तेम यावत्–प्राणत तथा अच्युत देवलोक सुधी जाणवुं. परन्तु विशेष ए छे के, जेनो जेटलो परिवार होय तेनो तेटलो अहिं कहेवो. पोत पोताना कल्पना विमानोनी उंचाइना जेटली प्रासादनी ¶उंचाइ जाणवी, अने उंचाइना अडधा भाग जेटलो तेनो विस्तार जाणवो, यावत्–अच्युत देवलोकनो प्रासादावतंसक नवसो योजन उंचो छे, अने साडा चारसो योजन पहोळो छे. तेमां हे गौतम ! देवेन्द्र देवराज अच्युत दश हजार सामानिक देवो साथे यावद्–विहरे छे. बाकी बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'–एम कही यावद्–[भगवान् गौतम] विहरे छे.

चतुर्दश शतके षष्ठ उद्देशक समाप्त.

---

३ * प्रासादवर्णन संबन्धे जुओ–भग० खं० १ पृ० ३००.

४ † सनत्कुमारेन्द्र मात्र सिंहासन विकुर्वे छे, परन्तु शक्र अने ईशाननी पेठे देवशय्या विकुर्वतो नथी, कारण के ते स्पर्शमात्रथी विषयोपभोग करतो होवाथी तेने शय्यानुं प्रयोजन नथी.

‡ सनत्कुमारेन्द्रनो परिवार कह्यो छे, माहेन्द्रने सीत्तेर हजार सामानिक देवो अने बे लाख एंशी हजार अंगरक्षक देवो होय छे, ब्रह्मदेवलोकने साठ हजार, लान्तकने पचास हजार, शुक्रने चाळीश हजार, सहस्रारने त्रीश हजार, आणत–प्राणतने वीश हजार अने आरण–अच्युतने दश हजार सामानिक देवो होय छे, अने तेथी चारगुणा आत्मरक्षक देवो जाणवा.

¶ सनत्कुमार अने माहेन्द्र देवलोकना विमान छसो योजन उंचा छे, माटे तेना प्रासादनी उंचाइ पण छसो योजन जाणवी, ब्रह्म अने लान्तकने विषे सातसो योजन, शुक्र अने सहस्रारने विषे आठसो योजन, आनत–प्राणत अने आरण–अच्युतेन्द्रना प्रासादो नवसो योजन उंचा छे, अने तेनो विस्तार तेथी अरधो छे. यावत्–अच्युतनो नवसो योजन प्रासाद उंचो छे, अने तेनो विस्तार साडा चारसो योजन छे. आ अच्युत देवलोकने विषे अच्युतेन्द्र दश हजार सामानिक देवोनी साथे यावत् विहरे छे. अहिं एटलो विशेष छे के सनत्कुमारादि इन्द्रो सामानिकादि देवोना परिवार सहित चक्रना आकारवाळा स्थानने विषे जाय छे, कारण के तेओना समक्ष स्पर्शादि विषयोनो उपभोग करवो अविरुद्ध छे, शक्र अने ईशानेन्द्र परिवार सहित त्यां जता नथी, कारण के ते कायसेवी होवाथी तेओना समक्ष कायप्रतिचारणा (कायद्वारा विषयोपभोग) सेववो लज्जनीय अने अनुचित छे.—टीका.

सत्तमो उद्देसो ।

१. [प्र०] रायगिहे जाव-परिसा पडिगया। 'गोयमा'! दी समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी-'चिर संसिट्ठोऽसि मे गोयमा! चिरसंथुओऽसि मे गोयमा! चिरपरिचिओऽसि मे गोयमा! चिरज्झुसिओऽसि मे गोयमा! चिराणुगओऽसि मे गोयमा! चिराणुवत्ती सि मे गोयमा! अणंतरं देवलोए अणंतरं माणुस्सए भवे, किं परं? मरणा कायस्स भेदा, इओ चुत्ता दो वि तुल्ला एगट्ठा अविसेसमणाणत्ता भविस्सामो ।

२. [प्र०] जहा णं भंते! वयं एयमट्ठं जाणामो, पासामो, तहा णं अणुत्तरोववाइया वि देवा एयमट्ठं जाणंति, पासंति? [उ०] हंता गोयमा! जहा णं वयं एयमट्ठं जाणामो, पासामो तहा अणुत्तरोववाइया वि देवा एयमट्ठं जाणंति, पासंति। [प्र०] से केणट्ठेणं जाव-पासंति? [उ०] गोयमा! अणुत्तरोववाइयाणं अणंताओ मणोदव्ववग्गणाओ लद्धाओ, पत्ताओ, अभिसमन्नागयाओ भवंति, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ-जाव-'पासंति'।

३. [प्र०] कइविहे णं भंते! तुल्लए पण्णत्ते? [उ०] गोयमा! छव्विहे तुल्लए पण्णत्ते, तंजहा-१ दव्वतुल्लए, २ खेत्ततुल्लए, ३ कालतुल्लए, ४ भवतुल्लए, ५ भावतुल्लए, ६ संठाणतुल्लए ।

सप्तम उद्देशक.

केवलज्ञाननी अप्राप्तिथी खिन्न थयेला गौतम स्वामीने आश्वासन.

१. राजगृहमां यावत्-परिषद् वांदीने पाछी गई. [भगवान् श्री महावीर स्वामी केवलज्ञाननी अप्राप्तिथी खिन्न थयेला गौतम स्वामीने आश्वासन आपवा माटे पोतानो तेमनी साथेनो लांबा काळनो परिचय बतावी भविष्यमां पोतानी साथे तेमनी तुल्यता बतावे छे-] श्रमण भगवंत महावीरे 'हे गौतम!' एम भगवान् गौतमने बोलावी आ प्रमाणे कह्युं-"हे गौतम! तुं मारी साथे घणां काळ सुधी स्नेहथी बंधायेल छे, हे गौतम! तें घणा लांबा काळथी [स्नेहने लीधे] मारी प्रशंसा करी छे, हे गौतम! तारो मारी साथे घणा लांबा काळथी परिचय छे, हे गौतम! तें घणा लांबा काळथी मारी सेवा करी छे, हे गौतम! तुं घणा लांबा काळथी मने अनुसर्यो छे, हे गौतम! तुं घणा लांबा काळथी मारी साथे अनुकूलपणे वर्त्यो छे, हे गौतम! अनन्तर (तुरतना) देवभवमां अने तुरतना मनुष्यभवमां [ए प्रमाणे तारी साथे संबन्ध छे,] वधारे शुं? पण मरण पछी शरीरनो नाश थया बाद अहींथी च्यवी आपणे बन्ने सरखा, एकार्थ-एकप्रयोजनवाळा, (अथवा एक सिद्धिक्षेत्रमां रहेवावाळा) विशेषता अने भेदरहित थईशुं.

अनुत्तरौपपातिक देवो जाणे छे अने जुए छे?

२. [प्र०] हे भगवन्! जेम आपणे बन्ने आ (पूर्वोक्त) अर्थने *जाणीए छीए अने जोइए छीए, तेम अनुत्तरौपपातिक देवो पण ए वातने जाणे छे अने जुए छे? [उ०] हा, गौतम! जेम आपणे बन्ने पूर्वोक्त वातने जाणीए छीए अने जोइए छीए तेम अनुत्तरौपपातिक देवो पण ए वातने जाणे छे अने जुए छे. [प्र०] हे भगवन्! ए प्रमाणे आप शा हेतुथी कहो छो के 'जेम आपणे जाणीए छीए तेम अनुत्तरौपपातिक देवो पण जाणे छे अने जुए छे'? [उ०] हे गौतम! अनुत्तरौपपातिक देवोए मनोद्रव्यनी अनंत वर्गणाओ (अवधिज्ञाननी लब्धिथी) [ज्ञेयरूपे] मेळवी छे, प्राप्त करी छे, अने [गुण-पर्यायना ज्ञानथी] व्याप्त करी छे, माटे हे गौतम! एम कहेवाय छे के ते (अनुत्तरौपपातिक देवो) जाणे छे अने जुए छे.

तुल्यता.

३. [प्र०] हे भगवन्! केटला प्रकारे तुल्य कहेल छे? [उ०] हे गौतम! तुल्य छ प्रकारे कहेलुं छे, ते आ प्रमाणे-१ द्रव्यतुल्य, २ क्षेत्रतुल्य, ३ कालतुल्य, ४ भवतुल्य, ५ भावतुल्य अने ६ संस्थानतुल्य.

---

२ * गौतमस्वामी महावीर भगवंतने कहे छे-"हुं भविष्यकाळमां आपना तुल्य थइश" एम आप केवलज्ञानथी जाणो छो, अने ते वात हुं आपना उपदेशथी जाणुं छुं, तेम अनुत्तरौपपातिक देवो पण आ वात जाणे छे अने जुए छे?-ए प्रश्ननो आशय छे-टीका.

४. [प्र०] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–'दव्वतुल्लए' २? [उ०] गोयमा! परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलस्स दव्वओ तुल्ले, परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलवइरित्तस्स दव्वओ णो तुल्ले, दुपपसिए खंधे दुपपसियस्स खंधस्स दव्वओ तुल्ले, दुपपसिए खंधे दुपपसियवइरित्तस्स खंधस्स दव्वओ णो तुल्ले, एवं जाव–दसपपसिए, तुल्लसंखेज्जपपसिए खंधे तुल्लसंखेज्जपपसियस्स खंधस्स दव्वओ तुल्ले, तुल्लसंखेज्जपपसिए खंधे तुल्लसंखेज्जपपसियवइरित्तस्स खंधस्स दव्वओ णो तुल्ले, एवं तुल्लअसंखेज्जपपसिए वि, एवं तुल्लअणंतपपसिए वि, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ–'दव्वतुल्लए' २।

५. [प्र०] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–'खेत्ततुल्लए' २? [उ०] गोयमा! एगपपसोगाढे पोग्गले एगपपसोगाढस्स पोग्गलस्स खेत्तओ तुल्ले, एगपपसोगाढे पोग्गले एगपपसोगाढवइरित्तस्स पोग्गलस्स खेत्तओ णो तुल्ले, एवं जाव–दसपपसोगाढे, तुल्लसंखेज्जपपसोगाढे तुल्लसंखेज्ज०, एवं तुल्लअसंखेज्जपपसोगाढे वि, से तेणट्ठेणं जाव–'खेत्ततुल्लए' २।

६. [प्र०] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–'कालतुल्लए' २? [उ०] गोयमा! एगसमयठितीए पोग्गले एगसमयठितियस्स य पोग्गलस्स कालओ तुल्ले, एगसमयठितीए पोग्गले एगसमयठितीयवइरित्तस्स पोग्गलस्स कालओ णो तुल्ले, एवं जाव–दससमयट्ठितीए, तुल्लसंखेज्जसमयठितीए एवं चेव, एवं तुल्लअसंखेज्जसमयट्ठितीए वि, से तेणट्ठेणं जाव–'कालतुल्लए' २।

७. [प्र०] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–'भवतुल्लए' २? [उ०] गोयमा! नेरइए नेरइयस्स भवट्ठयाए तुल्ले, नेरइयवइरित्तस्स भवट्ठयाए नो तुल्ले, तिरिक्खजोणिए एवं चेव, एवं मणुस्से, एवं देवे वि, से तेणट्ठेणं जाव–'भवतुल्लए' २।

८. [प्र०] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–'भावतुल्लए' २? [उ०] गोयमा! एगगुणकालए पोग्गले एगगुणकालस्स पोग्गलस्स भावओ तुल्ले, एगगुणकालए पोग्गले एगगुणकालगवइरित्तस्स पोग्गलस्स भावओ णो तुल्ले, एवं जाव–दसगुणकालए, एवं तुल्लसंखेज्जगुणकालए पोग्गले, एवं तुल्लअसंखेज्जगुणकालए वि, एवं तुल्लअणंतगुणकालए वि, जहा कालए एवं नीलए, लोहि-

४. [प्र०] हे भगवन्! द्रव्यतुल्य ए 'द्रव्यतुल्य' एम केम कहेवाय? [उ०] हे गौतम! एक परमाणुपुद्गल बीजा परमाणुपुद्गलनी साथे द्रव्यथी तुल्य छे, पण परमाणुपुद्गल परमाणुपुद्गल शिवायना बीजा पदार्थ साथे द्रव्यथी तुल्य नथी; ए प्रमाणे द्विप्रदेशिक स्कन्ध (बीजा) द्विप्रदेशिक स्कन्धनी साथे द्रव्यथी तुल्य छे, पण द्विप्रदेशिक स्कन्ध द्विप्रदेशिक स्कन्ध सिवायना बीजा पदार्थ साथे द्रव्यथी तुल्य नथी. ए प्रमाणे यावत्–दशप्रदेशिक स्कन्ध सुधी कहेवुं. तुल्यसंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध (तेना) तुल्यसंख्यातप्रदेशिक स्कन्धनी साथे द्रव्यथी तुल्य छे, पण तुल्यसंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध तुल्यसंख्यातप्रदेशिक स्कन्ध शिवायना बीजा पदार्थ साथे द्रव्यथी तुल्य नथी, ए प्रमाणे तुल्यअसंख्यात प्रदेशिक स्कन्ध तथा तुल्यअनन्तप्रदेशिक स्कन्ध संबन्धे पण जाणवुं. माटे हे गौतम! ते कारणथी द्रव्यतुल्य ए 'द्रव्यतुल्य' कहेवाय छे. *द्रव्यतुल्य.*

५. [प्र०] हे भगवन्! क्षेत्रतुल्य ए 'क्षेत्रतुल्य' शा कारणथी कहेवाय छे? [उ०] हे गौतम! आकाशना एक प्रदेशावगाढ–एक प्रदेशमां रहेल पुद्गल द्रव्य एक प्रदेशमां रहेल पुद्गलद्रव्यनी साथे क्षेत्रथी तुल्य कहेवाय छे; पण एक प्रदेशमां रहेल पुद्गलद्रव्य शिवायना द्रव्य साथे क्षेत्रथी तुल्य नथी. ए प्रमाणे यावत्–दशप्रदेशावगाढ–दश प्रदेशमां रहेल पुद्गल द्रव्य संबन्धे पण जाणवुं. तथा तुल्यसंख्यातप्रदेशावगाढ स्कन्धनी साथे तुल्यसंख्यातप्रदेशावगाढ स्कन्ध तुल्य होय, ए प्रमाणे तुल्यअसंख्यातप्रदेशावगाढ स्कन्ध संबन्धे पण जाणवुं. माटे हे गौतम! ते हेतुथी क्षेत्रतुल्य ए 'क्षेत्रतुल्य' कहेवाय छे. *क्षेत्रतुल्य.*

६. [प्र०] हे भगवन्! कालतुल्य ए 'कालतुल्य' शा हेतुथी कहेवाय छे? [उ०] हे गौतम! एक समयनी स्थितिवाळुं पुद्गलद्रव्य एक समयनी स्थितिवाळा पुद्गलनी साथे कालथी तुल्य छे. एक समयनी स्थितिवाळुं पुद्गलद्रव्य एक समयनी स्थिति सिवायना पुद्गलद्रव्यनी साथे कालथी तुल्य नथी. ए प्रमाणे यावत्–दशसमयनी स्थितिवाळा पुद्गलद्रव्य संबन्धे जाणवुं. तुल्यसंख्यातासमयनी स्थितिवाळा अने तुल्यअसंख्यात समयनी स्थितिवाळा पुद्गलद्रव्य संबन्धे पण ए प्रमाणे जाणवुं. ते हेतुथी ए प्रमाणे कालतुल्य ए 'कालतुल्य' कहेवाय छे. *कालतुल्य.*

७. [प्र०] हे भगवन्! शा हेतुथी एम कहेवाय छे के–भवतुल्य ए 'भवतुल्य' छे? [उ०] हे गौतम! नारक जीव नारकनी साथे भवरूपे तुल्य छे, नारक नारक सिवायना बीजा जीव साथे भवरूपे तुल्य नथी. ए प्रमाणे तिर्यंचयोनिक, मनुष्य अने देवसंबन्धे पण जाणवुं. माटे हे गौतम! ते हेतुथी यावत्–'भवतुल्य' कहेवाय छे. *भवतुल्य.*

८. [प्र०] हे भगवन्! शा हेतुथी एम कहेवाय छे के–भावतुल्य ए 'भावतुल्य' छे? [उ०] हे गौतम! एकगुण काळावर्णवाळुं पुद्गलद्रव्य एकगुण काळावर्णवाळा पुद्गलद्रव्यनी साथे भावथी तुल्य छे, परन्तु एकगुण काळावर्णवाळुं पुद्गलद्रव्य एकगुणकाळा वर्ण शिवायना बीजा पुद्गलद्रव्य साथे भावतुल्य नथी. ए प्रमाणे यावद् दशगुण काळावर्णवाळा पुद्गल संबन्धे जाणवुं. तुल्यसंख्यातगुणकाळा, तुल्यअसं- *भावतुल्य.*

एए, हालिद्दे, सुक्किल्लए, एवं सुब्भिगंधे, एवं दुब्भिगंधे, एवं तित्ते, जाव-महुरे, एवं कक्खडे, जाव-लुक्खे, उदइए भावे उदइयस्स भावस्स भावओ तुल्ले, उदइए भावे उदइयभाववइरित्तस्स भावस्स भावओ नो तुल्ले, एवं उवसमिए, खइए, खओवसमिए, पारिणामिए। संनिवाइए भावे संनिवाइयस्स भावस्स, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ-'भावतुल्लए' २।

९. [प्र०] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ-'संठाणतुल्लए' २? [उ०] गोयमा! परिमंडले संठाणे परिमंडलस्स संठाणस्स संठाणओ तुल्ले, परिमंडलसंठाणवइरित्तस्स संठाणओ नो तुल्ले, एवं वट्टे, तंसे, चउरंसे, आयए, समचउरंससंठाणे समचउरंसस्स संठाणस्स संठाणओ तुल्ले, समचउरंसे संठाणे समचउरंससंठाणवइरित्तस्स संठाणस्स संठाणओ नो तुल्ले, एवं जाव-परिमंडले वि, एवं जाव-हुंडे, से तेणट्ठेणं जाव-'संठाणतुल्लए' २।

१०. [प्र०] भत्तपच्चक्खायए णं भंते! अणगारे मुच्छिए जाव-अज्झोववन्ने आहारमाहारेति, अहे णं वीससाए कालं करेति, तओ पच्छा अमुच्छिए अगिद्धे जाव-अणज्झोववन्ने आहारमाहारेति? [उ०] हंता गोयमा! भत्तपच्चक्खायए णं अणगारे तं चेव। [प्र०] से केणट्ठेणं भन्ते! एवं वुच्चइ-'भत्तपच्चक्खायए णं तं चेव'? [उ०] गोयमा! भत्तपच्चक्खायए णं अणगारे मुच्छिए जाव-अज्झोववन्ने आहारे भवइ, अहे णं वीससाए कालं करेइ, तओ पच्छा अमुच्छिए जाव-आहारे भवइ, से तेणट्ठेणं गोयमा! जाव-आहारमाहारेति।

ख्यातगुणकाळा अने तुल्यअनंतगुणकाळा पुद्गलद्रव्य संबन्धे पण ए प्रमाणे जाणवुं. जेम काळावर्णवाळा पुद्गलद्रव्य संबन्धे कह्युं, तेम नील (लीला) राता, पीळा अने शुक्ल पुद्गलद्रव्य संबन्धे पण जाणवुं. ए प्रमाणे सुगंधी, दुर्गंधी, कटुक यावद् मधुर द्रव्य संबन्धे तथा कर्कश (बरसठ) यावद्-रूक्ष पुद्गलद्रव्य संबन्धे जाणवुं. औदयिक भाव *औदयिक भावनी साथे भावथी तुल्य छे. औदयिक भाव सिवायना बीजा भाव साथे भावथी तुल्य नथी. ए प्रमाणे औपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक तथा पारिणामिक भावसंबन्धे जाणवुं. सांनिपातिक (अनेक भावना मळवावडे थयेला) भाव सांनिपातिक भावनी साथे भावथी तुल्य छे. ते हेतुथी हे गौतम! एम कहेवाय छे के भावतुल्य ए 'भावतुल्य' छे.

औदयिकादि भाववडे तुल्य.

संस्थानतुल्य.

९. [प्र०] हे भगवन्! शा हेतुथी एम कहेवाय छे के-संस्थानतुल्य ए †'संस्थानतुल्य' छे? [उ०] हे गौतम! (१) परिमंडल-संस्थान परिमंडलसंस्थाननी साथे संस्थानवडे तुल्य छे, परिमंडलसंस्थान ते शिवायना बीजा संस्थाननी साथे संस्थानवडे तुल्य नथी. ए प्रमाणे (२) वृत्त (गोळ) संस्थान, (३) त्र्यस्र (त्रिकोण) संस्थान, (४) चतुरस्र-चोरससंस्थान अने (५) आयत-लांबुं संस्थान पण जाणवुं. तथा समचतुरस्र संस्थान समचतुरस्र संस्थाननी साथे संस्थानथी तुल्य छे, पण समचतुरस्र सिवायना बीजा संस्थाननी साथे संस्थानथी तुल्य नथी. ए प्रमाणे न्यग्रोधपरिमंडल, अने यावत्-हुंड संस्थान सुधी जाणवुं. माटे हे गौतम! ते हेतुथी यावत्-संस्थानतुल्य ए 'संस्थानतुल्य' कहेवाय छे.

आहारनो त्यागी अनगार मूर्छित थई आहार करे अने पछी मरणसमुद्घात करी अनासक्त थई आहार करे? शा हेतुथी एम कहेवाय छे?

१०. [प्र०] हे भगवन्! भक्तप्रत्याख्यान करनार (आहारनो त्यागी) अनगार मूर्छित, यावत्-अत्यन्त आसक्त थईने आहार करे, अने पछी स्वभावथी काल-मारणांतिक समुद्घात करे, त्यार पछी अमूर्छित-मूर्छा विना, अगृद्ध-लालच विना यावत्-अनासक्त थई आहार करे? [उ०] हा, गौतम! भक्तप्रत्याख्यान करनार अनगार-इत्यादि पूर्व प्रमाणे आहार करे. [प्र०] हे भगवन्! शा हेतुथी एम कहेवाय छे के भक्तप्रत्याख्यान करनार अनगार-इत्यादि [पूर्व प्रमाणे] आहार करे? [उ०] हे गौतम! भक्तप्रत्याख्यान करनार अनगार (प्रथम) मूर्छित, यावत्-आहारने विषे आसक्त होय छे, त्यार पछी स्वभावथी ते काल-मारणांतिक समुद्घात करे छे अने त्यार बाद यावद् आहारने विषे अमूर्छित-रागरहित थई आहार करे छे. माटे हे गौतम! ते हेतुथी भक्तप्रत्याख्यान करनार अनगार पूर्व प्रमाणे यावद्-'आहार करे छे.'

---

८ * १ कर्मनो उदय, अथवा कर्मना उदयथी थयेलो जीवनो परिणाम ते औदयिक भाव, २ उदयप्राप्त कर्मनो क्षय अने उदयमां नहि प्राप्त थयेला कर्मना उदयने अमुक काळसुधी रोकवो ते औपशमिक भाव एटले उपशमक्रिया, अथवा कर्मना उपशम वडे थयेलो आत्मानो परिणाम ते औपशमिक भाव; ३ कर्मनो क्षय अथवा कर्मना क्षय थवा वडे उत्पन्न थयेलो भाव-परिणाम ते क्षायिक भाव. ४ क्षय-उदय प्राप्त कर्मना नाश साथे उपशम-उदयने रोकवो ते क्षायोपशमिक भाव, अथवा क्षयोपशमवडे थयेलो जे आत्मपरिणाम ते क्षायोपशमिकभाव. अहिं औपशमिक अने क्षायोपशमिक भावनी व्याख्या एक प्रकारनी छे, तो पण एटलो विशेष छे के क्षायोपशमिक भावने विषे मात्र विपाकवेदन नथी, पण प्रदेशवेदन छे, अने औपशमिक भावने विषे प्रदेशवेदन पण नथी. ५ कर्मना क्षयादि शिवाय अनादि काळनो स्वाभाविक भाव ते पारिणामिक भाव. ६ औदयिकादि बे त्रण भावोनो संयोग ते सांनिपातिक भाव कहेवाय छे—टीका.

९ † संस्थान-आकारविशेष, तेना बे प्रकार छे-१ जीवसंस्थान अने २ अजीवसंस्थान. तेमां अजीवसंस्थान पांच प्रकारे छे-(१) परिमंडलसंस्थान चुडीनी पेठे बहारथी गोळ अने मध्यमां पोकळ होय छे. तेना घन अने प्रतरना भेदथी बे प्रकार छे. (२) वृत्त-कुंभारना चक्रनी पेठे बहारथी गोळ अने अंदरथी पोलाणरहित. तेना घन अने प्रतर-ए बे भेद छे, वळी एक एकना बबे भेद छे-समसंख्यावाळा प्रदेशयुक्त अने विषमसंख्यावाळा प्रदेशयुक्त. ए प्रमाणे (३) त्र्यस्र (त्रिकोणाकार), (४) चतुरस्र (चतुष्कोण), (५) आयत-दंडनी पेठे लांबुं, तेना त्रण प्रकार छे १ श्रेण्यायत, २ प्रतरायत अने ३ घनायत. वळी एक एकना बे प्रकार छे-समसंख्यप्रदेशवाळुं अने विषमसंख्यप्रदेशवाळुं. आ पांच प्रकारना संस्थान विस्रसा अने प्रयोगथी थाय छे. संस्थाननामकर्मना उदयथी जीवोनो आकारविशेष थाय ते जीवसंस्थान कहेवाय छे. तेना समचतुरस्रादि छ प्रकार छे.—टीका.

११. [प्र०] अत्थि णं भंते ! लवसत्तमा देवा २ ? [उ०] हंता अत्थि । [प्र०] से केणट्ठेणं भन्ते ! एवं वुच्चइ–'लवसत्तमा देवा' २ ? [उ०] गोयमा ! से जहानामए–केइ पुरिसे तरुणे जाव–निउणसिप्पोवगए सालीण वा, वीहीण वा, गोधूमाण वा, जवाण वा, जवजवाण वा, पक्काणं, परियाताणं, हरियाणं, हरियकंडाणं तिक्खेणं णवपज्जणएणं असिअएणं पडिसाहरिया २ पडिसंखिविया २ जाव–इणामेव २ त्ति कट्टु सत्त लवए लुएज्जा, जति णं गोयमा ! तेसिं देवाणं एवतियं कालं आउए पहुप्पते तो णं ते देवा तेणं चेव भवग्गहणेणं सिज्झंता जाव अंतं करेंता, से तेणट्ठेणं जाव–'लवसत्तमा देवा' २ ।

१२. [प्र०] अत्थि णं भंते ! 'अणुत्तरोववाइया देवा' २ ? [उ०] हंता अत्थि । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'अणुत्तरोववाइआ देवा' २ ? [उ०] गोयमा ! अनुत्तरोववाइयाणं देवाणं अणुत्तरा सद्दा, जाव–अणुत्तरा फासा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ–जाव–'अणुत्तरोववाइया देवा' २ ।

१३. [प्र०] अणुत्तरोववाइया णं भंते ! देवा णं केवतिएणं कम्मावसेसेणं अणुत्तरोववाइयदेवत्ताए उववन्ना ? [उ०] गोयमा ! जावतियं छट्ठभत्तिए समणे निग्गंथे कम्मं निज्जरेति एवतिएणं कम्मावसेसेणं अणुत्तरोववाइया देवा देवत्ताए उववन्ना । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' त्ति ।

चोद्दसमसए सत्तमो उद्देसो समत्तो ।

लवसत्तम देवो.

११. [प्र०] हे भगवन् ! शुं *लवसत्तम देवो ए लवसत्तम देवो छे ? [उ०] हा, गौतम ! छे. [प्र०] हे भगवन् ! लवसत्तम देवो ए 'लवसत्तम देवो' एम शा हेतुथी कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! जेम कोई जुवान पुरुष यावत्–निपुण शिल्पनो ज्ञाता होय, अने ते पाकेला, लणवाने योग्य थयेला, पीळा थयेला अने पीळीनाळवाळा शालि, व्रीहि, घउं, जव अने जवजव (धान्यविशेष) ने [हाथथी] एकठा करी, मुठिवडे ग्रहण करी 'आ काप्या' ए प्रमाणे शीघ्रतापूर्वक नवीन पाणी चडावेल तीक्ष्ण दातरडावडे सात लव (कोळी) जेटला समयमां कापी नाखे, हे गौतम ! जो ते देवोनुं एटलुं (सात लव जेटलुं) आयुष्य वधारे होत तो ते देवो तेज भवमां सिद्ध थात, यावत् सर्व दुःखोनो अन्त करत. माटे ते हेतुथी हे गौतम ! ते लवसत्तम देवो ए 'लवसत्तम' एम कहेवाय छे.

अनुत्तरौपपातिक देवो.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! अनुत्तरोपपातिक देवो २ छे ? [उ०] हा गौतम ! छे. [प्र०] हे भगवन् ! शा हेतुथी अनुत्तरौपपातिक देवो 'अनुत्तरौपपातिक' एम कहेवाय छे ? [उ०] हे गौतम ! अनुत्तरौपपातिक देवोनी पासे अनुत्तर शब्दो, यावत्–अनुत्तर स्पर्शो होय छे, माटे हे गौतम ! ते हेतुथी यावद् तेओने अनुत्तरौपपातिक देवो कहेवामां आवे छे.

केटलुं कर्म बाकी रहेवाथी अनुत्तर देवपणे उत्पन्न थाय ?

१३. [प्र०] हे भगवन् ! केटलुं कर्म बाकी रहेवाथी अनुत्तरौपपातिक देवो अनुत्तरौपपातिकदेवपणे उत्पन्न थाय ? [उ०] हे गौतम ! श्रमण निर्ग्रन्थ छट्ठ भक्तवडे जेटला कर्मनी निर्जरा करे तेटलुं कर्म बाकी रहेवाथी अनुत्तरौपपातिक देवो अनुत्तरौपपातिकदेवपणे उत्पन्न थाय छे. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'–एम कही [भगवान् गौतम] यावद् विहरे छे.

चतुर्दश शतके सप्तम उद्देशक समाप्त.

---

११ * शालि वगेरे धान्यनी एक कोळी लणता जेटलो काळ लागे तेने 'लव' कहे छे. तेवा सात लव सुधीनुं आयुष ओछुं होवाथी जे विशुद्ध अध्यवसायवाळा मनुष्यो मोक्षे न गया, पण सर्वार्थसिद्ध विमानमां उत्पन्न थया ते लवसत्तम देवो कहेवाय छे.—टीका.

अट्ठमो उद्देसो।

१. [प्र०] इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए सक्करप्पभाए य पुढवीए केवतियं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते? [उ०] गोयमा! असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

२. [प्र०] सक्करप्पभाए णं भंते! पुढवीए वालुयप्पभाए य पुढवीए केवतियं०? [उ०] एवं चेव, एवं जाव-तमाए अहेसत्तमाए य।

३. [प्र०] अहेसत्तमाए णं भंते! पुढवीए अलोगस्स य केवतियं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते? [उ०] गोयमा! असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

४. [प्र०] इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए जोतीसस्स य केवतियं०-पुच्छा। [उ०] गोयमा! सत्तनउए जोयणसए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

५. [प्र०] जोतिसस्स णं भंते! सोहम्मी-साणाण य कप्पाणं केवतियं-पुच्छा। [उ०] गोयमा! असंखेज्जाइं जोयण० जाव-अंतरे पण्णत्ते।

६. [प्र०] सोहम्मी-साणाणं भंते! सणंकुमार-माहिंदाण य केवतियं०? [उ०] एवं चेव।

अष्टम उद्देशक.

रत्नप्रभा अने शर्कराप्रभानुं अन्तर.

१. [प्र०] हे भगवन्! आ रत्नप्रभा पृथिवी अने शर्कराप्रभा पृथिवीनुं अबाधावडे-व्यवधानवडे केटलुं अन्तर कहेलुं छे? [उ०] हे गौतम! असंख्यलाख योजन [अबाधाए] अंतर कहेलुं छे.

शर्कराप्रभा अने वालुकाप्रभानुं अन्तर.

२. [प्र०] हे भगवन्! शर्कराप्रभा अने वालुकाप्रभा पृथिवीनुं केटलुं अबाधावडे अंतर कह्युं छे? [उ०] हे गौतम! पूर्ववत् जाणवुं. ए प्रमाणे यावत्-तमा-छट्ठी नरकपृथिवी अने अधःसप्तम-सातमी नरक पृथिवी सुधी जाणवुं.

सप्तम नरक पृथिवी अने अलोकनुं अन्तर.

३. [प्र०] हे भगवन्! सातमी नरक पृथिवी अने अलोकनुं केटलुं अबाधावडे अंतर कह्युं छे? [उ०] हे गौतम! असंख्य लाख योजन अबाधाए अन्तर कह्युं छे.

रत्नप्रभा अने ज्योतिषिकनुं अन्तर.

४. [प्र०] हे भगवन्! आ रत्नप्रभा पृथिवी अने ज्योतिषिकनुं (सूर्य-चन्द्रादिनुं) केटलुं अबाधावडे अंतर कह्युं छे-एम प्रश्न करवो. [उ०] हे गौतम! सातसो ने नेवुं योजन अबाधावडे अंतर कह्युं छे.

ज्योतिषिक अने सौधर्म-ईशानदेवलोकनुं अन्तर.

५. [प्र०] हे भगवन्! ज्योतिषिक अने सौधर्म-ईशानकल्पनुं केटलुं अन्तर कह्युं छे? [उ०] हे गौतम! असंख्याता योजन यावत्-अन्तर कह्युं छे.

सौधर्म-ईशान अने सनत्कुमार-माहेन्द्रनुं अन्तर.

६. [प्र०] हे भगवन्! सौधर्म-ईशान अने सनत्कुमार-माहेन्द्रनुं केटलुं अन्तर कह्युं छे? [उ०] पूर्वप्रमाणे जाणवुं.

७. [प्र०] सणंकुमार–माहिंदाणं भंते ! बंभलोगस्स कप्पस्स य केवतियं० ? [उ०] एवं चेव ।

८. [प्र०] बंभलोगस्स णं भंते ! लंतगस्स य कप्पस्स केवतियं० ? [उ०] एवं चेव ।

९. [प्र०] लंतयस्स णं भंते ! महासुक्कस्स य कप्पस्स केवतियं० ? [उ०] एवं चेव, एवं महासुक्कस्स कप्पस्स सहस्सारस्स य, एवं सहस्सारस्स आणय–पाणयकप्पाणं, एवं आणय–पाणयाण य कप्पाणं आरण–च्चुयाण य कप्पाणं, एवं आरण–च्चुयाणं गेविज्जविमाणाण य, एवं गेविज्जविमाणाणं अणुत्तरविमाणाण य ।

१०. [प्र०] अणुत्तरविमाणाणं भंते ! ईसिपब्भाराए य पुढवीए केवतिए ?–पुच्छा [उ०] गोयमा ! दुवालसजोयणे अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

११. [प्र०] ईसिपब्भाराए णं भंते ! पुढवीए अलोगस्स य केवतिए अबाहाए ?–पुच्छा । [उ०] गोयमा ! देसूणं जोयणं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।

१२. [प्र०] एस णं भंते ! सालरुक्खे उण्हाभिहए, तण्हाभिहए, दवग्गिजालाभिहए कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिति, कहिं उववज्जिहिति ? [उ०] गोयमा ! इहेव रायगिहे नगरे सालरुक्खत्ताए पच्चायाहिति, से णं तत्थ अच्चिय–वंदिय–पूइय–सक्कारिय–सम्माणिए, दिव्वे, सच्चे, सच्चोवाए, सन्निहियपाडिहेरे, लाउल्लोइयमहिए यावि भविस्सइ, से णं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गमिहिति, कहिं उववज्जिहिति ? [उ०] गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति, जाव–अंतं काहिति ।

१३. [प्र०] एस णं भंते ! साललट्ठिया उण्हाभिहया, तण्हाभिहया, दवग्गिजालाभिहया कालमासे कालं किच्चा जाव–कहिं उववज्जिहिति ? [उ०] गोयमा ! इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विञ्झगिरिपायमूले महेसरिए नगरीए सामलिरुक्खत्ताए पच्चायाहिति, सा णं तत्थ अच्चिय–वंदिय–पूइय० जाव लाउल्लोइयमहिए यावि भविस्सइ । से णं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता० सेसं जहा सालरुक्खस्स, जाव–अंतं काहिति ।

७. [प्र०] हे भगवन् ! सनत्कुमार–माहेन्द्र अने ब्रह्मलोक कल्पनुं केटलुं अन्तर होय छे ? [उ०] पूर्व प्रमाणे जाणवुं.

सनत्कुमार–माहेन्द्र अने ब्रह्मदेवलोकनुं अन्तर.

८. [प्र०] हे भगवन् ! ब्रह्मलोक अने लांतककल्प वच्चे केटलुं अंतर छे ? [उ०] पूर्ववत् जाणवुं.

ब्रह्मलोक अने लांतकनुं अन्तर.

९. [प्र०] हे भगवन् ! लांतक अने महाशुक्र कल्पनुं केटलुं अंतर होय छे ? [उ०] पूर्ववत् जाणवुं. ए प्रमाणे महाशुक्र कल्प अने सहस्रारनुं अन्तर जाणवुं, तथा सहस्रार अने आनत–प्राणतकल्पोनुं, आनत–प्राणतकल्प अने आरण–अच्युतकल्पनुं, आरण–अच्युतकल्प अने ग्रैवेयकनुं, अने ग्रैवेयक अने अनुत्तरविमाननुं अन्तर पूर्ववत् जाणवुं.

लांतक अने महाशुक्रनुं अन्तर.

१०. [प्र०] हे भगवन् ! अनुत्तरविमान अने ईषत्प्राग्भारा पृथिवीनुं केटलुं अन्तर होय छे ? [उ०] हे गौतम ! बार योजननुं अबाधावडे अन्तर कह्युं छे.

अनुत्तरविमान अने ईषत्प्राग्भारा पृथिवीनुं अन्तर.

११. [प्र०] हे भगवन् ! ईषत्प्राग्भारा पृथिवी अने अलोकनुं केटलुं अबाधावडे अंतर कह्युं छे ? [उ०] हे गौतम ! कंइक न्यून एक योजन अबाधाए अन्तर छे.

ईषत्प्राग्भारा अने अलोकनुं अन्तर.

१२. [प्र०] हे भगवन् ! [सूर्यनी] गरमीथी पीडित थयेलो, तृषाथी हणायेलो अने दावानळनी ज्वाळथी बळेलो आ शालवृक्ष काळमासे–मरणसमये काळ करी क्यां जशे अने क्यां उत्पन्न थशे ? [उ०] हे गौतम ! आज राजगृह नगरमां शालवृक्षपणे फरीथी उत्पन्न थशे, अने ते त्यां अर्चित, वंदित, पूजित, सत्कारित, सम्मानित अने दिव्य–प्रधानभूत थशे. तथा सत्यरूप–सत्यावपात–जेनी सेवा सफल थाय छे एवो, [पूर्वभवसंबन्धी देवोए] जेनुं प्रतिहारपणुं–सांनिध्य कर्युं छे एवो, तथा जेनी पीठ–चोतरो लींपेलो अने धोळेलो छे एवो ते (पूजनीय) थशे. [प्र०] हे भगवन् ! [ते शालवृक्ष] त्यांथी मरण पामी क्यां जशे अने क्यां उत्पन्न थशे ? [उ०] हे गौतम ! महाविदेह क्षेत्रमां सिद्ध थशे, तथा यावत्–सर्व दुःखोनो अन्त करशे.

शालवृक्ष मरीने क्यां जशे ?

१३. [प्र०] हे भगवन् ! सूर्यनी गरमीथी हणायेल, तृषाथी पीडित थयेल तथा दावानळनी ज्वाळथी बळेली आ शालयष्टिका–शालवृक्षनी न्हानी शाखाओ काळमासे–मरण समये काळ करी क्यां जशे अने क्यां उत्पन्न थशे ? [उ०] हे गौतम ! आ ज जंबूद्वीपना भारतवर्षमां विन्ध्याचलनी तळेटीमां 'माहेश्वरी' नगरीमां ते शाल्मली वृक्षरूपे उत्पन्न थशे, अने ते त्यां अर्चित, वंदित अने पूजित थशे, तथा यावत्–तेनो चोतरो लींपेलो, धोळेलो अने पूजित थशे. [प्र०] हे भगवन् ! ते त्यांथी मरण पामी क्यां जशे अने क्यां उत्पन्न थशे ?–इत्यादि बधुं शालवृक्षनी पेठे जाणवुं, यावत्–ते सर्व दुःखोनो अन्त करशे.

शालयष्टिका.

१४. [प्र०] एस णं भंते! उंबरलट्ठिया उण्हाभिहया ३ कालमासे कालं किच्चा जाव-कहिं उववज्जिहिति? [उ०] गोयमा! इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पाडलिपुत्ते नगरे पाडलिरुक्खत्ताए पच्चायाहिति। से णं तत्थ अच्चिय-वंदिय-जाव-भविस्सति। से णं भंते! अणंतरं उव्वट्टित्ता-सेसं तं चेव जाव-अंतं काहिति।

१५. तेणं कालेणं तेणं समएणं अम्मडस्स परिव्वायगस्स सत्त अंतेवासीसया गिम्हकालसमयंसि० एवं जहा उववाइए, जाव-आराहगा।

१६. बहुजणे णं भंते! अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ, एवं खलु अम्मडे परिव्वायए कंपिल्लपुरे नगरे घरसए, एवं जहा उववाइए अम्मडस्स वत्तव्वया जाव-दढप्पइण्णो अंतं काहिति।

१७. [प्र०] अत्थि णं भंते! अव्वाबाहा देवा २? [उ०] हंता अत्थि। [प्र०] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ-'अव्वाबाहा देवा' २? [उ०] गोयमा! पभू णं एगमेगे अव्वाबाहे देवे एगमेगस्स पुरिसस्स एगमेगंसि अच्छिपत्तंसि दिव्वं देविड्ढिं, दिव्वं देवजुतिं, दिव्वं देवाणुभागं, दिव्वं बत्तीसतिविहं नट्टविहिं उवदंसेत्तए, णो चेव णं तस्स पुरिसस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएइ, छविच्छेयं वा करेति, एसुहुमं च णं उवदंसेज्जा, से तेणट्ठेणं जाव-'अव्वाबाहा देवा' २।

१८. [प्र०] पभू णं भंते! सक्के देविंदे देवराया पुरिसस्स सीसं पाणिणा असिणा छिंदित्ता कमंडलुंमि पक्खिवित्तए? [उ०] हंता पभू। [प्र०] से कहमिदाणिं पकरेति? [उ०] गोयमा! छिंदिया छिंदिया च णं पक्खिवेज्जा, भिंदिया भिंदिया च णं पक्खिवेज्जा, कोट्टिया कोट्टिया च णं पक्खिवेज्जा, चुण्णिया चुण्णिया च णं पक्खिवेज्जा, तओ पच्छा खिप्पामेव पडिसंघाएज्जा, नो चेव णं तस्स पुरिसस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएज्जा, छविच्छेदं पुण करेति, एसुहुमं च णं पक्खिवेज्जा।

उंबरयष्टिका मरण पामी क्यां जशे?

१४. [प्र०] हे भगवन्! [सूर्यनी] गरमीथी हणायेल, तृषाथी पीडायेल अने दवाग्निजाळथी बळी गयेल आ उंबरवृक्षनी शाखा मरणसमये काळ करी क्यां जशे, क्यां उत्पन्न थशे? [उ०] हे गौतम! ते आज जंबूद्वीपना भारतवर्षमां पाटलिपुत्र नामना नगरमां पाटलिवृक्षपणे उत्पन्न थशे. अने त्यां ते अर्चित, वंदित अने यावत्-पूजनीय थशे. [प्र०] ते त्यांथी मरण पामी क्यां जशे, क्यां उत्पन्न थशे? [उ०] ए बधुं पूर्वनी पेठे जाणवुं, यावत्-सर्व दुःखोनो अन्त करशे.

अंबड परिव्राजक.

१५. ते काळे, ते समये अंबड परिव्राजकना सातसो शिष्यो ग्रीष्म काळना समयने विषे विहार करता-इत्यादि बधुं *औपपातिक सूत्रमां कह्या प्रमाणे अहिं कहेवुं. यावत्-'तेओ आराधक थया'-त्यां सुधी जाणवुं.

१६. हे भगवन्! घणा माणसो परस्पर आ प्रमाणे कहे छे के, 'अंबड परिव्राजक कांपिल्यपुर नगरमां सो घेर जमे छे'-इत्यादि बधुं †औपपातिक सूत्रमां कह्या प्रमाणे अंबडनी बधी वक्तव्यता कहेवी, यावत्-‡दृढप्रतिज्ञनी पेठे यावत्-'ते सर्व दुःखोनो अन्त करशे.'

अव्याबाध देव.

१७. [प्र०] हे भगवन्! शुं एम छे के अव्याबाध देवो ए 'अव्याबाध देवो' (पीडा नहि करनारा) कहेवाय छे? [उ०] हा गौतम! एम छे. [प्र०] हे भगवन्! शा हेतुथी एम कहेवाय छे के अव्याबाध देवो ए 'अव्याबाध देवो' छे? [उ०] हे गौतम! एक एक अव्याबाध देव एक एक पुरुषनी एक एक पांपण उपर दिव्य देवर्धि, दिव्य देवद्युति, दिव्य देवानुभाव अने बत्रीश प्रकारना दिव्य नाट्यविधिने बतावी शकवा समर्थ छे, परन्तु ते पुरुषने स्वल्प के अधिक दुःख थवा देतो नथी, तेम तेना अवयवनो छेद पण करतो नथी. एवी सूक्ष्मतापूर्वक (नाट्यविधि) बतावी शके छे, ते हेतुथी अव्याबाध§ देवो ए 'अव्याबाध' (पीडा नहि करनार देवो) एम कहेवामां आवे छे.

इन्द्र कोइना माथाने तरवारथी कापी कमंडलमां नांखे तोपण तेने जरा पण दुःख न थाय.

१८. [प्र०] हे भगवन्! देवना इन्द्र अने देवना राजा शक्र (कोइ) पुरुषना माथाने हाथवडे तरवारथी कापी नाखी कमंडलुमां नाखवा समर्थ छे? [उ०] हा, समर्थ छे. [प्र०] ते ते वखते कमंडलमां केवी रीते नांखे? [उ०] ते शक्र माथाने छेदी छेदीने, भेदी भेदीने, कूटी कूटीने अने चूर्ण करी करीने कमंडलुमां नांखे, अने त्यार पछी तुरतज (ते माथाना अवयवोने) मेळवे-एकठा करे, एटलुं सूक्ष्म करी कमंडलमां नांखे, तेना अवयवोनो छेद करे तो पण ते पुरुषने जरा पण पीडा उत्पन्न न थाय.

---

१५ * जुओ औपपा० प० ९३. "ग्रीष्मकाळे अंबडपरिव्राजकना सातसो शिष्योए गंगानदीना बंने कांठा उपर आवेला कांपिल्यपुरथी पुरिमताल नगर तरफ प्रयाण कर्युं. त्यार पछी तेओए ज्यारे अटवीमां प्रवेश कर्यो त्यारे पूर्वे साथे लीधेलुं पाणी थइ रह्युं, त्यार बाद तरसथी पीडायेला तेओ पाणीनो आपनार कोइ पण नहि मळवाथी अदत्तने नहि ग्रहण करतां अरिहंतने नमस्कारकरवापूर्वक अनशन लईने काळ करीने ब्रह्मदेव लोकमां गया अने परलोकना आराधक थया.

१६ † अंबडपरिव्राजक वैक्रियलब्धिना सामर्थ्यथी मनुष्योने विस्मय करवा माटे सो घेर जमे छे अने सो घेर पोते रहे छे. जुओ-औपपा० प० ९६.

‡ दृढप्रतिज्ञ संबन्धे जुओ राजप्र० प० १४९.

१७ § जे परने पीडा न करे ते अव्याबाध. १ सारस्वत, २ आदित्य, ३ वह्नि, ४ वरुण, ५ गर्दतोय, ६ तुषित, ७ अव्याबाध, ८ आग्नेय अने ९ अरिष्ट-ए नव लोकान्तिक देवोमांना सातमा अव्याबाध नामे लोकान्तिक देव छे. तत्त्वार्थसूत्रमां वरुणने बदले अरुण अने आग्नेयने बदले मरुत् ए नाम आपेलां छे. "सारस्वता-दित्य-वह्न्य-रुण-गर्दतोय-तुषिता-व्याबाध-मरुतोऽरिष्टाश्च (तत्त्वा० अ० ४ सू० २६.)

१९. [प्र०] अत्थि णं भंते ! जंभया देवा २ ? [उ०] हंता अत्थि । [प्र०] से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–'जंभया देवा' २ ? [उ०] गोयमा ! जंभगा णं देवा निच्चं पमुइय–पक्कीलिया कंदप्परतिमोहणसीला, जे णं ते देवे कुद्धे पासेज्जा, से णं पुरिसे महंतं अयसं पाउणिज्जा, जे णं ते देवे तुट्ठे पासेज्जा, से णं महंतं जसं पाउणेज्जा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! 'जंभगा देवा' २ ।

२०. [प्र०] कतिविहा णं भंते ! जंभगा देवा पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, तंजहा–१ अन्नजंभगा, २ पाणजंभगा, ३ वत्थजंभगा, ४ लेणजंभगा, ५ सयणजंभगा, ६ पुप्फजंभगा, ७ फलजंभगा, ८ पुप्फ–फलजंभगा, ९ विज्जाजंभगा, १० अवियत्तजंभगा ।

२१. [प्र०] जंभगा णं भंते ! देवा कहिं वसहिं उवेंति ? [उ०] गोयमा ! सव्वेसु चेव दीहवेयड्ढेसु, चित्त–विचित्त–जमगपव्वएसु, कंचणपव्वएसु य, एत्थ णं जंभगा देवा वसहिं उवेंति ।

२२. [प्र०] जंभगाणं भंते ! देवाणं केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ? [उ०] गोयमा ! एगं पलिओवमं ठिती पण्णत्ता । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति जाव–विहरति ।

चोद्दसमसए अट्ठमो उद्देसो समत्तो ।

जृंभक देवो.

१९. [प्र०] हे भगवन् ! शुं एम छे के जृंभक देवो ते जृंभक (स्वच्छन्दचारी) देवो छे ? [उ०] हा, गौतम ! एम छे. [प्र०] हे भगवन् ! कया हेतुथी जृंभकदेवो ए 'जृंभकदेवो' (स्वच्छन्दचारी देवो) कहेवाय ? [उ०] हे गौतम ! जृंभकदेवो हंमेशा प्रमोदवाळा, अत्यन्त क्रीडाशील, कंदर्पने विषे रतिवाळा अने मैथुन सेववाना स्वभाववाळा होय छे, जे ते देवोने गुस्से थयेला जुए छे, ते पुरुषो घणो अपयश पामे छे, तथा जेओ ते देवोने तुष्ट थयेला जुए छे तेओ घणो यश पामे छे, माटे हे गौतम ! ते हेतुथी जृंभकदेवो ए 'जृंभकदेवो' एम कहेवाय छे.

जृंभक देवो शाथी कहेवाय छे ?

जृंभक देवोना प्रकार.

२०. [प्र०] हे भगवन् ! जृंभक देवो केटला प्रकारना कह्या छे ? [उ०] हे गौतम ! दश प्रकारना कह्या छे–१* अन्नजृंभक, २ पानजृंभक, ३ वस्त्रजृंभक, ४ गृहजृंभक, ५ शयनजृंभक, ६ पुष्पजृंभक, ७ फलजृंभक, ८ पुष्प–फलजृंभक, ९ विद्याजृंभक अने १० अव्यक्तजृंभक.

जृंभक देवो क्यां रहे छे ?

२१. [प्र०] हे भगवन् ! जृंभक देवो क्यां वसे छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओ (जृंभकदेवो) बधा दीर्घ वैताढ्योमां, चित्र, विचित्र, यमक अने समक पर्वतोमां तथा कांचनपर्वतोमां वसे छे.

जृंभक देवोनी स्थिति.

२२. [प्र०] हे भगवन् ! जृंभक देवोनी स्थिति केटला काळनी कही छे ? [उ०] हे गौतम ! तेनी एक पल्योपमनी स्थिति कही छे. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'–एम कही भगवान् गौतम यावद् विहरे छे.

चतुर्दश शतके अष्टम उद्देशक समाप्त.

---

२० * भोजनविषे तेनो अभाव करवो के सद्भाव करवो, तेने अल्प करवुं के घणुं करवुं, सरस करवुं के नीरस करवुं–इत्यादि चेष्टा करे ते अन्नजृंभक देवो कहेवाय छे. ए प्रमाणे पानादिजृंभक देवो पण जाणवा. अन्नादिना विभाग सिवाय सामान्यरूपे जे चेष्टा करे ते अव्यक्तजृंभक कहेवाय छे.—टीका.

नवमो उद्देसो ।

१. [प्र०] अणगारे णं भंते! भावियप्पा अप्पणो कम्मलेस्सं न जाणइ, न पासइ, तं पुण जीवं सरूविं सकम्मलेस्सं जाणइ, पासइ ? [उ०] हंता गोयमा! अणगारे णं भावियप्पा अप्पणो जाव-पासति ।

२. [प्र०] अत्थि णं भंते! सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासंति ४ ? [उ०] हंता अत्थि ।

३. [प्र०] कयरे णं भंते! सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासंति, जाव-पभासेंति ? [उ०] गोयमा! जाओ इमाओ चंदिम-सूरियाणं देवाणं विमाणेहिंतो लेस्साओ बहिया अभिनिस्सडाओ ताओ ओभासंति, पभासेंति, एवं एएणं गोयमा! ते सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासेंति ४ ।

४. [प्र०] नेरइयाणं भंते! किं अत्ता पोग्गला, अणत्ता पोग्गला ? [उ०] गोयमा! नो अत्ता पोग्गला, अणत्ता पोग्गला ।

नवम उद्देशक.

जे भावितात्मा अनगार पोतानी कर्मलेश्याने जाणतो नथी ते सशरीर जीवने जाणे छे?

१. [प्र०] हे भगवन्! [संयमभावनावडे] *भावितात्मा अनगार जे पोतानी कर्मलेश्याने [विशेषरूपे] जाणतो नथी, अने [सामान्यरूपे] जोतो नथी ते सरूपी- सशरीरी अने कर्म-लेश्यासहित जीवने जाणे अने जुए ? [उ०] हा, गौतम! भावितात्मा अनगार जे पोताना कर्मसंबन्धी लेश्याने जाणतो अने जोतो नथी ते शरीरसहित अने कर्म-लेश्यावाळा पोताना आत्माने यावत्-जुए छे.

रूपी पुद्गलस्कन्धो प्रकाशित थाय छे?

२. [प्र०] हे भगवन्! रूपी-वर्णादियुक्त सकर्मलेश्य-कर्मने योग्य कृष्णादि लेश्याना पुद्गलस्कन्धो प्रकाशित थाय छे? [उ०] हा, गौतम! तेवा पुद्गलस्कन्धो प्रकाशित थाय छे.

ते पुद्गलो प्रकाशित थाय छे ते केटला छे?

३. [प्र०] हे भगवन्! रूपवाळा अने कर्मने योग्य अथवा कर्मसंबन्धी लेश्याना जे पुद्गलो प्रकाशित थाय छे, यावत् प्रभासित थाय छे ते केटला छे? [उ०] हे गौतम! चंद्र अने सूर्यना विमानोथी जे आ बहार नीकळेली लेश्याओ (प्रकाशना पुद्गलो) छे तेओ अवभासित थाय छे, प्रभासित थाय छे, ए प्रमाणे हे गौतम! ए बधा रूपयुक्त, †कर्मने योग्य लेश्यावाळा पुद्गलो प्रकाशित थाय छे.

नैरयिकोने आत्त-सुखोत्पादक पुद्गलो होता नथी.

४. [प्र०] हे भगवन्! शुं नैरयिकोने आत्त-सुखकारक पुद्गलो होय छे के अनात्त-दुःखकारक पुद्गलो होय छे? [उ०] हे गौतम! तेओने आत्त पुद्गलो नथी पण अनात्त पुद्गलो होय छे.

---

१ * भावितात्मा अनगार छद्मस्थ होवाथी ज्ञानावरणादि कर्मने योग्य अथवा कर्मसंबन्धी कृष्णादि लेश्याने जाणतो नथी, कारण के कर्मद्रव्य अने लेश्याद्रव्य अतिसूक्ष्म होवाथी छद्मस्थना ज्ञानने अगोचर छे, परन्तु ते कर्म अने लेश्यावाळा तथा शरीरयुक्त आत्माने जाणे छे, कारण के शरीर चक्षुथी ग्राह्य होवाथी अने आत्मानो शरीरनी साथे कथंचित् अभेद होवाथी [तथा ते स्वसंविदित होवाथी] तेने जाणे छे—टीका.

२ † यद्यपि चंद्रादिविमानना पुद्गलो पृथिवीकायिक होवाथी सचेतन छे अने तेथी ते कर्म-लेश्यावाळा छे, पण तेथी नीकळेला प्रकाशना पुद्गलो कर्म-लेश्यावाळा नथी, तोपण तेथी नीकळेला होवाथी प्रकाशना पुद्गलो उपचारथी कर्मलेश्यावाळा कही शकाय छे.—टीका.

५. [प्र०] असुरकुमाराणं भंते ! किं अत्ता पोग्गला, अणत्ता पोग्गला ? [उ०] गोयमा ! अत्ता पोग्गला, णो अणत्ता पोग्गला, एवं जाव–थणियकुमाराणं ।

६. [प्र०] पुढविकाइयाणं–पुच्छा । [उ०] गोयमा ! अत्ता वि पोग्गला, अणत्ता वि पोग्गला । एवं जाव–मणुस्साणं । वाणमंतर–जोइसिय–वेमाणियाणं जहा असुरकुमाराणं ।

७. [प्र०] नेरइयाणं भंते ! किं इट्ठा पोग्गला, अणिट्ठा पोग्गला ? [उ०] गोयमा ! नो इट्ठा पोग्गला, अणिट्ठा पोग्गला, जहा अत्ता भणिया, एवं इट्ठा वि, कंता वि, पिया वि, मणुन्ना वि भाणियव्वा । एए पंच दंडगा ।

८. [प्र०] देवे णं भंते ! महड्ढिए जाव–महेसक्खे रूवसहस्सं विउव्वित्ता पभू भासासहस्सं भासित्तए ? [उ०] हंता पभू ।

९. [प्र०] सा णं भंते ! किं एगा भासा भासासहस्सं ? [उ०] गोयमा ! एगा णं सा भासा, णो खलु तं भासासहस्सं ।

१०. तेणं कालेणं, तेणं समएणं भगवं गोयमे अचिरुग्गयं बालसूरियं जासुमणाकुसुमपुंजप्पकासं लोहितगं पासइ, पासित्ता जायसड्ढे जाव–समुप्पन्नकोउहल्ले जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, जाव–नमंसित्ता जाव–एवं वयासी–[प्र०] किमिदं भंते ! सूरिए, किमिदं भंते ! सूरियस्स अट्ठे ? [उ०] गोयमा ! सुभे सूरिए, सुभे सूरियस्स अट्ठे ।

११. [प्र०] किमिदं भंते ! सूरिए, किमिदं भंते ! सूरियस्स पभा ? [उ०] एवं चेव, एवं छाया, एवं लेस्सा ।

५. [प्र०] हे भगवन् ! शुं असुरकुमारोने आत्त–सुखकारक पुद्गलो होय छे के अनात्त पुद्गलो होय छे? [उ०] हे गौतम ! तेओने आत्त पुद्गलो होय छे, पण अनात्त पुद्गलो होता नथी. ए प्रमाणे यावत् स्तनितकुमारो सुधी जाणवुं.

असुरकुमारोने आत्त पुद्गलो.

६. [प्र०] हे भगवन् ! शुं पृथिवीकायिकोने आत्त पुद्गलो होय छे के अनात्त पुद्गलो होय छे ? [उ०] हे गौतम ! तेओने आत्त पुद्गलो पण होय छे, अने अनात्त पुद्गलो पण होय छे. ए प्रमाणे यावत्–मनुष्यो सुधी जाणवुं. वानव्यंतर, ज्योतिषिक अने वैमानिकोने असुरकुमारोनी पेठे जाणवुं.

पृथिवीकायिकोने आत्त अने अनात्त पुद्गलो.

७. [प्र०] हे भगवन् ! शुं नारकोने इष्ट पुद्गलो होय छे के अनिष्ट पुद्गलो होय छे? [उ०] हे गौतम ! तेओने इष्ट पुद्गलो होता नथी, पण अनिष्ट पुद्गलो होय छे. जेम आत्त पुद्गलो संबन्धे कह्युं, तेम इष्ट, कांत, प्रिय तथा मनोज्ञ पुद्गलो संबन्धे पण कहेवुं. वळी ए प्रमाणे अहिं पांच दंडक कहेवा.

नारकोने इष्ट के अनिष्ट पुद्गलो होय छे ?

८. [प्र०] हे भगवन् ! महर्द्धिक यावत्–मोटा सुखवाळो देव हजार रूपोने विकुर्वीने हजार भाषा बोलवा समर्थ छे ? [उ०] हा, गौतम ! तेम करवा समर्थ छे.

महर्द्धिक देवनुं हजार रूपो विकुर्वीने हजार भाषा बोलवानुं सामर्थ्य.

९. [प्र०] हे भगवन् ! ते एक भाषा छे के हजार भाषा छे? [उ०] हे गौतम ! ते *एक भाषा छे, पण हजार भाषा नथी.

एक भाषा के हजार भाषा?

१०. ते काळे, ते समये भगवंत गौतमे तुरतनो उगेलो अने जासुमणाना पुष्पना पुंज जेवो रातो बालसूर्य जोयो, ते सूर्यने जोइने श्रद्धावाळा, अने यावत्–जेने प्रश्ननुं कुतूहल उत्पन्न थयुं छे एवा भगवंत गौतम स्वामी ज्यां श्रमण भगवंत महावीर छे त्यां आव्या, अने यावत्–नमीने यावत्–आ प्रमाणे बोल्या–[प्र०] हे भगवन् ! सूर्य ए शुं छे अने हे भगवन् ! सूर्यनो अर्थ शो छे? [उ०] हे गौतम ! सूर्य ए शुभ पदार्थ छे, अने सूर्यनो अर्थ पण शुभ छे.

सूर्यनो अर्थ.

११. [प्र०] हे भगवन् ! सूर्य ए शुं छे अने सूर्यनी प्रभा ए शुं छे? [उ०] पूर्व प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे छाया–प्रतिबिंब अने लेश्या–प्रकाशना समूह संबन्धे पण जाणवुं.

सूर्यनी प्रभा ए शुं छे ?

---

९ * एक समये बोलाती सत्यादि कोइ पण प्रकारनी भाषा एक जीवत्व अने एक उपयोग होवाथी ते एक भाषा कहेवाय छे, पण हजार भाषा कहेवाती नथी—टीका.

१२. [प्र०] जे इमे भंते! अज्जत्ताए समणा निग्गंथा विहरंति, एते णं कस्स तेयलेस्सं वीतीवयंति? [उ०] गोयमा! मासपरियाए समणे निग्गंथे वाणमंतराणं देवाणं तेयलेस्सं वीईवयति, दुमासपरियाए समणे निग्गंथे असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं तेयलेस्सं वीयीवयति, एवं एएणं अभिलावेणं तिमासपरियाए समणे निग्गंथे असुरकुमाराणं देवाणं तेयलेस्सं वीईवयइ, चउम्मासपरियाए समणे निग्गंथे गहगण—नक्खत्त-तारारूवाणं जोतिसियाणं देवाणं तेयलेस्सं वीतीवयइ, पंचमासपरियाए य समणे निग्गंथे चंदिम—सूरियाणं जोतिसिंदाणं जोतिसरायाणं तेयलेस्सं वीईवयइ, छमासपरियाए समणे निग्गंथे सोहम्मी-साणगाणं देवाणं०, सत्तमासपरियाए समणे निग्गंथे सणंकुमार—माहिंदाणं देवाणं०, अट्ठमासपरियाए बंभलोग—लंतगाणं देवाणं तेय०, नवमासपरियाए समणे निग्गंथे महासुक्क—सहस्साराणं देवाणं तेय०, दसमासपरियाए आणय—पाणय—आरण—च्चुयाणं देवाणं०, एक्कारसमासपरियाए गेवेज्जगाणं देवाणं०, बारसमासपरियाए समणे निग्गंथे अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं तेयलेस्सं वीयीवयति, तेण परं सुक्के सुक्काभिजाए भवित्ता तओ पच्छा सिज्झति, जाव—अंतं करेति। 'सेवं भंते! सेवं भंते'! त्ति जाव—विहरति।

चोद्दसमसए नवमो उद्देसो समत्तो।

श्रमणोना सुखनी तुल्यता.

१२. [प्र०] हे भगवन्! जे आ श्रमण निर्ग्रंथो आर्यपणे—पापकर्मरहितपणे विहरे छे, तेओ कोनी तेजोलेश्याने—सुखने अतिक्रमे छे? अर्थात्—तेमनुं सुख कोनाथी चडीयातुं छे? [उ०] हे गौतम! एक मासना दीक्षा पर्यायवाळो श्रमण निर्ग्रंथ वानव्यंतर देवोनी तेजोलेश्याने—सुखने अतिक्रमे छे, (अर्थात्—वानव्यंतर देवो करतां अधिक सुखी छे.) बे मासना पर्यायवाळो श्रमण निर्ग्रंथ असुरेंद्र सिवायना भवनवासी देवोनी तेजोलेश्याने—सुखने अतिक्रमे छे. ए प्रमाणे ए पाठ वडे त्रण मासना पर्यायवाळो श्रमण निर्ग्रन्थ असुरकुमार देवोनी तेजोलेश्याने अतिक्रमे छे, चार मासना पर्यायवाळो श्रमण निर्ग्रन्थ ग्रहगण, नक्षत्र अने तारारूप ज्योतिषिक देवोनी तेजोलेश्याने अतिक्रमे छे, पांच मासना पर्यायवाळो श्रमण निर्ग्रन्थ, ज्योतिष्कना इन्द्र, ज्योतिष्कना राजा चंद्र अने सूर्यनी तेजोलेश्याने अतिक्रमे छे, छ मासना पर्यायवाळो श्रमण निर्ग्रन्थ सौधर्म अने ईशानवासी देवोनी [तेजोलेश्याने अतिक्रमे छे], सात मासना पर्यायवाळो श्रमण निर्ग्रन्थ सनत्कुमार अने माहेन्द्र देवोनी, आठ मासना पर्यायवाळो श्रमण निर्ग्रन्थ ब्रह्मलोक अने लांतक देवोनी, नव मासना पर्यायवाळो श्रमण निर्ग्रन्थ महाशुक्र अने सहस्रार देवोनी तेजोलेश्याने अतिक्रमे छे, दश मासना पर्यायवाळो श्रमण निर्ग्रन्थ आनत, प्राणत, आरण अने अच्युत देवोनी तेजोलेश्याने अतिक्रमे छे, अगीयार मासना पर्यायवाळो श्रमण निर्ग्रन्थ ग्रैवेयक देवोनी अने बार मासना पर्यायवाळो श्रमण निर्ग्रन्थ अनुत्तरौपपातिक देवोनी तेजोलेश्याने अतिक्रमे छे. त्यार बाद शुद्ध अने शुद्धतर परिणामवाळो थइने पछी सिद्ध थाय छे, यावत्—सर्व दुःखोनो अन्त करे छे. 'हे भगवन्! ते एमज छे, हे भगवन्! ते एमज छे'—एम कही यावद् विहरे छे.

चतुर्दश शतके नवम उद्देशक समाप्त.

दसमो उद्देसो।

१. [प्र०] केवली णं भंते! छउमत्थं जाणइ, पासइ? [उ०] हंता जाणइ, पासइ।

२. [प्र०] जहा णं भंते! केवली छउमत्थं जाणइ, पासइ, तहा णं सिद्धे वि छउमत्थं जाणइ, पासइ? [उ०] हंता जाणइ, पासइ।

३. [प्र०] केवली णं भंते! आहोहियं जाणइ, पासइ? [उ०] एवं चेव। एवं परमाहोहियं, एवं केवलिं, एवं सिद्धं, जाव–जहा णं भंते! केवली सिद्धं जाणइ, पासइ, तहा णं सिद्धे वि सिद्धं जाणइ, पासइ? [उ०] हंता जाणइ, पासइ।

४. [प्र०] केवली णं भंते! भासेज्ज वा वागरेज्ज वा? [उ०] हंता भासेज्ज वा, वागरेज्ज वा।

५. [प्र०] जहा णं भंते! केवली भासेज्ज वा वागरेज्ज वा तहा णं सिद्धे वि भासेज्ज वा वागरेज्ज वा? [उ०] णो तिणट्ठे समट्ठे। [प्र०] से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–'जहा णं केवली भासेज्ज वा वागरेज्ज वा णो तहा णं सिद्धे भासेज्ज वा वागरेज्ज वा'? [उ०] गोयमा! केवली णं सउट्ठाणे, सकम्मे, सबले, सवीरिए, सपुरिसक्कारपरक्कमे, सिद्धे णं अणुट्ठाणे जाव–अपुरिसक्कारपरक्कमे, से तेणट्ठेणं जाव–वागरेज्ज वा।

६. [प्र०] केवली णं भंते! उम्मिसेज्ज वा, निम्मिसेज्ज वा? [उ०] हंता उम्मिसेज्ज वा, निम्मिसेज्ज वा, एवं चेव, एवं आउट्टेज्ज वा पसारेज्ज वा, एवं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएज्जा।

दशम उद्देशक.

१. [प्र०] हे भगवन्! केवलज्ञानी छद्मस्थने जाणे अने जुए? [उ०] हा, जाणे अने जुए.

केवलज्ञानी छद्मस्थने जाणे.

२. [प्र०] हे भगवन्! जेम केवलज्ञानी छद्मस्थने जाणे अने जुए तेम सिद्ध पण छद्मस्थ जीवने जाणे अने जुए? [उ०] हा, गौतम! जाणे अने जुए.

सिद्ध पण छद्मस्थने जाणे.

३. [प्र०] हे भगवन्! केवलज्ञानी आधोवधिकने–प्रतिनियतक्षेत्रविषयक अवधिज्ञानवंतने जाणे अने जुए? [उ०] हा, गौतम! जाणे अने जुए. एम परमावधिज्ञानीने पण जाणे अने जुए. ए प्रमाणे केवलज्ञानी अने सिद्धने पण जाणे, यावत्–[प्र०] जेम 'हे भगवन्! केवलज्ञानी सिद्धने जाणे अने जुए तेम सिद्ध पण सिद्धने जाणे अने जुए? [उ०] हा, जाणे अने जुए.

केवली अवधिज्ञानीने जाणे.

४. [प्र०] हे भगवन्! केवलज्ञानी बोले अथवा प्रश्ननो उत्तर कहे? [उ०] हा, गौतम! केवली बोले अथवा प्रश्ननो उत्तर कहे.

केवलज्ञानी बोले?

५. [प्र०] हे भगवन्! जेम केवलज्ञानी बोले अथवा प्रश्ननो उत्तर कहे तेम सिद्ध पण बोले अथवा प्रश्ननो उत्तर आपे? [उ०] हे गौतम! ए अर्थ समर्थ–युक्त नथी, अर्थात् सिद्ध बोले नहि. [प्र०] हे भगवन्! क्या हेतुथी एम कहो छो के–'जेम केवलज्ञानी बोले अथवा कहे तेम सिद्ध बोले नहि अथवा प्रश्नोत्तर न कहे'? [उ०] हे गौतम! केवलज्ञानी उत्थान–उभा थवुं, कर्म–गमनादि क्रिया, बल, वीर्य अने पुरुषकार–पराक्रम सहित होय छे पण सिद्धो उत्थानरहित, यावत्–पुरुषकार–पराक्रमरहित होय छे, माटे हे गौतम! सिद्धो केवलीनी पेठे यावत्–प्रश्नोत्तर कहेता नथी.

केवलीनी पेठे सिद्ध बोले के नहि? केवलज्ञानीनी पेठे सिद्ध केम न बोले?

६. [प्र०] हे भगवन्! केवलज्ञानी पोतानी आंख उघाडे अने मींचे? [उ०] हा, गौतम! आंख उघाडे अने मींचे, एज प्रमाणे शरीरने संकुचित करे अने प्रसारे, उभा रहे, बेसे अने आडे पडखे थाय, तथा शय्या (वसति) अने नैषेधिकी (थोडा काळ माटे वसति) करे.

केवलज्ञानी आंख उघाडे अने मींचे?

७. [प्र०] केवली णं भंते ! इमं रयणप्पभं पुढविं रयणप्पभापुढवीति जाणति, पासति ? [उ०] हंता जाणइ, पासइ।

८. [प्र०] जहा णं भंते ! केवली इमं रयणप्पभं पुढविं रयणप्पभापुढवीति जाणइ, पासइ, तहा णं सिद्धे वि इमं रयणप्पभं पुढविं रयणप्पभापुढवीति जाणइ, पासइ ? [उ०] हंता जाणइ, पासइ।

९. [प्र०] केवली णं भंते ! सक्करप्पभं पुढविं सक्करपभापुढवीति जाणइ, पासइ ? [उ०] एवं चेव, एवं जाव-अहेसत्तमा।

१०. [प्र०] केवली णं भंते ! सोहम्मं कप्पं जाणइ, पासइ ? [उ०] हंता जाणइ, पासइ एवं चेव, एवं ईसाणं, एवं जाव-अच्चुयं।

११. [प्र०] केवली णं भंते ! गेवेज्जविमाणे गेवेज्जविमाणेत्ति जाणइ, पासइ ? [उ०] एवं चेव, एवं अणुत्तरविमाणे वि।

१२. [प्र०] केवली णं भंते ! ईसिपब्भारं पुढविं ईसीपब्भारपुढवीति जाणइ, पासइ ? [उ०] एवं चेव।

१३. [प्र०] केवली णं भंते ! परमाणुपोग्गलं परमाणुपोग्गलेत्ति जाणइ, पासइ ? [उ०] एवं चेव, एवं दुपएसियं खंधं, एवं जाव-[प्र०] जहा णं भंते ! केवली अणंतपएसियं खंधं अणंतपएसिए खंधेत्ति जाणइ, पासइ तहा णं सिद्धे वि अणंतपएसियं जाव-पासइ ? [उ०] हंता जाणइ, पासइ। 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति।

चोद्दसमसए दसमो उद्देसो समत्तो।

समत्तं चोद्दसमं सयं।

केवलज्ञानी रत्नप्रभा पृथिवीने जाणे?

७. [प्र०] हे भगवन् ! केवली रत्नप्रभा पृथिवीने आ 'रत्नप्रभा पृथिवी' ए प्रमाणे जाणे अने देखे? [उ०] हा गौतम ! जाणे अने देखे.

सिद्ध पण रत्नप्रभा पृथिवीने जाणे ?

८. [प्र०] हे भगवन् ! जेम केवलज्ञानी रत्नप्रभा पृथिवीने आ 'रत्नप्रभा' एम जाणे अने देखे तेम सिद्ध पण रत्नप्रभा पृथिवीने 'रत्नप्रभा'-एम जाणे अने देखे? [उ०] हा, गौतम! जाणे अने देखे.

केवली शर्कराप्रभाने जाणे?

९. [प्र०] हे भगवन् ! केवलज्ञानी शर्कराप्रभा पृथिवीने 'शर्कराप्रभापृथिवी' ए प्रमाणे जाणे अने देखे? [उ०] पूर्व प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे यावत्-सातमी नरकपृथिवी सुधी जाणवुं.

केवली सौधर्मादि कल्पने जाणे?

१०. [प्र०] हे भगवन् ! केवली सौधर्मकल्पने 'सौधर्मकल्प' एम जाणे अने देखे ? [उ०] हा, गौतम ! जाणे अने देखे. ए प्रमाणे ईशान अने यावत् अच्युतकल्प सुधी जाणवुं.

ग्रैवेयकादिने जाणे?

११. [प्र०] हे भगवन् ! केवलज्ञानी ग्रैवेयकविमानने 'ग्रैवेयकविमान' ए प्रमाणे जाणे अने देखे ? [उ०] पूर्व प्रमाणे जाणवुं. ए प्रमाणे यावत्-अनुत्तरविमान संबन्धे पण जाणवुं.

ईषत्प्राग्भारा पृथिवीने जाणे ?

१२. [प्र०] हे भगवन् ! केवलज्ञानी ईषत्प्राग्भारा पृथिवीने 'ईषत्प्राग्भारा पृथिवी' ए प्रमाणे जाणे अने देखे? [उ०] ए प्रमाणे जाणवुं.

परमाणु पुद्गलने जाणे ?

१३. [प्र०] हे भगवन् ! केवलज्ञानी परमाणुपुद्गलने 'परमाणुपुद्गल' ए प्रमाणे जाणे अने देखे ? [उ०] हा, गौतम ! जाणे अने देखे. ए प्रमाणे द्विप्रदेशिक स्कन्ध, अने यावत्-जेम-[प्र०] हे भगवन् ! केवलज्ञानी अनन्तप्रदेशिक स्कन्धने 'अनन्तप्रदेशिक स्कन्ध'-एम जाणे अने देखे तेम सिद्ध पण अनन्तप्रदेशिक स्कन्धने यावत्-जुए? [उ०] हा, जाणे अने जुए. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'.

चतुर्दश शतके दशम उद्देशक समाप्त.

चतुर्दश शतक समाप्त.

पन्नरसमं सयं ।

नमो सुयदेवयाए भगवईए ।

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नामं नगरी होत्था, वण्णओ । तीसे णं सावत्थीए नगरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए तत्थ णं कोट्ठए नामं चेइए होत्था, वण्णओ । तत्थ णं सावत्थीए नगरीए हालाहला नामं कुंभकारी आजीवियोवासिया परिवसति, अड्ढा जाव-अपरिभूया, आजीवियसमयंसि लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अट्ठिमिंजपेम्माणुरागरत्ता, अयमाउसो ! 'आजीवियसमये अट्ठे, अयं परमट्ठे, सेसे अणट्ठे'त्ति आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ । तेणं कालेणं तेणं समएणं गोसाले मंखलिपुत्ते चउव्वीसवासपरियाए हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि आजीवियसंघसंपरिवुडे आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अन्नदा कदायि इमे छ दिसाचरा अंतियं पाउब्भवित्था, तंजहा–१ साणे, २ कलंदे, ३ कणियारे, ४ अच्छिद्दे, ५ अग्गिवेसायणे, ६ अज्जुणे गोमायुपुत्ते । तए णं ते छ दिसाचरा अट्ठविहं पुव्वगयं मग्गदसमं सतेहिं २ मतिदंसणेहिं निज्जुहंति, स० २–हित्ता गोसालं मंखलिपुत्तं उवट्ठा

पंचदश शतक.

भगवती श्रुतदेवताने नमस्कार.

श्रावस्ती नगरी. कोष्ठक चैत्य. हालाहला कुंभारण.

१. ते काले अने ते समये श्रावस्ती नामे नगरी हती. वर्णन. ते श्रावस्ती नगरीनी उत्तर-पूर्व दिशाए (ईशानकोणमां) कोष्ठक नामे चैत्य हतुं. वर्णन. ते श्रावस्ती नगरीमां आजीविक मतनी उपासिका हालाहला नामे कुंभारण रहेती हती. ते ऋद्धिवाळी यावत्-कोइथी पराभव न पामे तेवी हती. तेणे आजीविकना सिद्धांतनो अर्थ (रहस्य) ग्रहण कर्यो हतो, अर्थ पूछ्यो हतो अने अर्थनो निश्चय कर्यो हतो. तेना अस्थिनी मज्जा प्रेम अने अनुरागवडे रंगाएली हती. 'हे आयुष्मान्! आजीविकना सिद्धांतरूप अर्थ तेज खरो अर्थ छे अने तेज परमार्थ छे, बाकी सर्व अनर्थ छे'–ए प्रमाणे ते आजीविकना सिद्धांतवडे आत्माने भावित करती विहरती हती. ते काले अने ते समये चोवीश वर्षना दीक्षा पर्यायवाळो मंखलिपुत्र गोशालक हालाहला नामे कुंभारणना कुंभकारापण–हाटमां आजीविकना संघवडे परिवृत थई आजीविकना सिद्धांतवडे आत्माने भावित करतो विहरे छे. ते वखते ते मंखलिपुत्र गोशालकनी पासे अन्य कोइ दिवसे आ छ *दिशाचरो आव्या. ते आ प्रमाणे–१ शान, २ कलंद, ३ कर्णिकार, ४ अछिद्र, ५ अग्निवेश्यायन अने ६ गोमायुपुत्र अर्जुन. त्यार पछी ते छ दिशाचरोए पूर्वश्रुतमां कहेला आठ प्रकारना निमित्त, (नवमा) गीतमार्ग अने दशमा नृत्यमार्गने पोतपोतानी मतिना दर्शनवडे (पूर्वश्रुतमांथी) उद्धरी मंखलिपुत्र गोशालकनो (शिष्यभावे) आश्रय कर्यो. त्यार बाद ते मंखलिपुत्र गोशालक ते †अष्टांग महानिमित्तना कइंक (स्वल्प) उपदेशवडे सर्व प्राणीओ, सर्व भूतो, सर्व जीवो अने सर्व सत्त्वोने आ छ बाबतना अनतिक्रमणीय–अन्यथा न थाय तेवा उत्तर आपे छे, ते छ बाबत आ प्रमाणे–१ लाभ, २ अलाभ, ३ सुख, ४ दुःख, ५ जीवित अने ६ मरण. त्यार पछी ते मंखलिपुत्र गोशालक अष्टांग

गोशालकनुं संघसहित हालाहला कुंभारणने घेर आगमन. गोशालकने छ दिशाचरोनुं आवी मळवुं.

---

१ * आ छ दिशाचरो पासत्था (पतित) थयेला महावीर स्वामीना शिष्य हता–एम प्राचीन टीकाकार कहे छे अने पार्श्वनाथनी परंपरामां थयेला छे–एम चूर्णिकार कहे छे.–टीका.

† निमित्तना आठ प्रकार छे–१ दिव्य, २ औत्पात, ३ आंतरिक्ष, ४ भौम, ५ आंग, ६ स्वर, ७ लक्षण अने ८ व्यंजन.

इंसु। तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तेणं अट्ठंगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोयमेत्तेणं सव्वेसिं पाणाणं, सव्वेसिं भूयाणं, सव्वेसिं जीवाणं, सव्वेसिं सत्ताणं इमाइं छ अणइक्कमणिज्जाइं वागरणाइं वागरेति, तं जहा "१–लाभं २ अलाभं ३ सुहं ४ दुक्खं ५ जीवियं ६ मरणं तहा"। तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तेणं अट्ठंगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोयमेत्तेणं सावत्थीए नगरीए अजिणे जिणप्पलावी, अणरहा अरहप्पलावी, अकेवली केवलिप्पलावी, असव्वन्नू सव्वन्नुप्पलावी, अजिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ।

२. तए णं सावत्थीए नगरीए सिंघाडग–जाव–पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ, जाव–एवं परूवेति–'एवं खलु देवाणुप्पिया! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव–पकासेमाणे विहरति, से कहमेयं मन्ने एवं'? तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे, जाव–परिसा पडिगया। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती णामं अणगारे गोयमगोत्तेणं जाव–छट्ठंछट्ठेणं–एवं जहा बितियसए नियंठुद्देसए जाव–अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेति, बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४–'एवं खलु देवाणुप्पिया! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव–पगासेमाणे विहरति, से कहमेयं मन्ने एवं'? तए णं भगवं गोयमे बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म जाव–जायसड्ढे जाव–भत्तपाणं पडिदंसेति, जाव–पज्जुवासमाणे एवं वयासी–"एवं खलु अहं भंते! छट्ठं० तं चेव जाव–जिणसद्दं पगासेमाणे विहरति'; से कहमेयं भंते! एवं? तं इच्छामि णं भंते! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स उट्ठाणपरियाणियं परिकहियं। 'गोयमा'! दी समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी–जण्णं गोयमा! से बहुजणे अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४–'एवं खलु गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव–पगासेमाणे विहरइ' तण्णं मिच्छा। अहं पुण गोयमा! एवमाइक्खामि जाव–परूवेमि–'एवं खलु एयस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स मंखलिनामं मंखे पिता होत्था। तस्स णं मंखलिस्स मंखस्स भद्दानामं भारिया होत्था, सुकुमाल० जाव–पडिरूवा। तए णं सा भद्दा भारिया अन्नदा कदायि गुव्विणी यावि होत्था। तेणं कालेणं तेणं समएणं सरवणे नामं सन्निवेसे होत्था, रिद्ध–त्थिमिय० जाव–सन्निभप्पगासे, पासादीए ४। तत्थ णं सरवणे सन्निवेसे गोबहुले नामं माहणे परिवसति, अड्ढे जाव–अपरिभूए, रिउव्वेद० जाव–सुपरिनिट्ठिए यावि होत्था। तस्स णं गो-

महानिमित्तना कोइक एवा उपदेशमात्रवडे श्रावस्ती नगरीमां अजिन छतां 'हुं जिन छुं' एम प्रलाप करतो, अर्हत् नहि छतां 'हुं अर्हत् छुं' एम मिथ्या बकवाद करतो, केवली नहि छतां 'हुं केवली छुं' एम निरर्थक बोलतो, सर्वज्ञ नहि छतां 'हुं सर्वज्ञ छुं' एम मिथ्या कथन करतो अने अजिन छतां जिन शब्दनो प्रकाश करतो विचरे छे.

श्रावस्ती नगरीमां घणा माणसो कहे छे के–'गोशालक पोताने जिन कहेतो विचरे छे' ते केम मानी शकाय?

२. त्यार बाद श्रावस्ती नगरीना शृंगाटकना आकारवाळा त्रिक अने यावत्–राजमार्गोने विषे घणा माणसो परस्पर ए प्रमाणे कहे छे, यावत्–एम प्ररूपे छे के 'हे देवानुप्रिय! ए प्रमाणे खरेखर मंखलिपुत्र गोशालक जिन थईने पोताने जिन कहेतो, यावत्–जिन शब्दनो प्रकाश करतो विचरे छे, तो ए प्रमाणे केम मानी शकाय'? ते काले ते समये महावीर स्वामी समोसर्या; यावत्–पर्षदा (वांदीने) पाछी गइ. ते काले–ते समये श्रमण भगवंत महावीरना ज्येष्ठ अंतेवासी (शिष्य) गौतमगोत्रीय इन्द्रभूति नामे अनगार यावत्–छट्ठ छट्ठने पारणे–इत्यादि बीजा शतकना [2]निर्ग्रन्थ उद्देशकमां कह्या प्रमाणे यावत्–गोचरी माटे फरता घणा माणसोनो शब्द सांभळे छे, घणा माणसो परस्पर आ प्रमाणे कहे छे के, 'हे देवानुप्रिय! खरेखर मंखलिपुत्र गोशालक जिन थईने पोताने जिन कहेतो, यावत्–जिन शब्दनो प्रकाश करतो विचरे छे, तो ए प्रमाणे केम मानी शकाय'! त्यार बाद भगवान् गौतम घणा माणसो पासेथी आ वात सांभळीने अने अवधारीने श्रद्धावाळा थई यावत्–भातपाणी देखाडी यावत्–पर्युपासना करता आ प्रमाणे बोल्या–'ए प्रमाणे खरेखर हे भगवन्! हुं छट्ठ छट्ठने पारणे इत्यादि पूर्वोक्त कहेवुं, यावत्–ते गोशालक जिन शब्दनो प्रकाश करतो विहरे छे, तो हे भगवन्! ए प्रमाणे केम होय! माटे हे भगवन्! मंखलिपुत्र गोशालकनो जन्मथी आरंभीने अन्त सुधीनो आपनाथी कहेवायेलो वृत्तान्त सांभळवा इच्छुं छुं.' 'हे गौतम'! ए प्रमाणे कही श्रमण भगवान् महावीरे भगवंत गौतमने आ प्रमाणे कह्युं–'हे गौतम! जे घणा माणसो परस्पर आ प्रमाणे कहे छे के ए प्रमाणे खरेखर मंखलिपुत्र गोशालक जिन थईने अने पोताने जिन कहेतो यावत्–जिन शब्दनो प्रकाश करतो विचरे छे, ते मिथ्या–असत्य छे.' हे गौतम! हुं आ प्रमाणे कहुं छुं, यावत्–प्ररूपुं छुं–'ए प्रमाणे खरेखर आ मंखलिपुत्र गोशालकनो मंखलिनामे मंखजातिनो पिता हतो. ते मंखलिनामे मंखने भद्रा नामे स्त्री हती. ते सुकुमाल हाथपगवाळी, यावत्–प्रतिरूप–सुंदर हती. त्यार बाद ते भद्रा नामे स्त्री अन्य कोइ दिवसे गर्भिणी थइ. ते काले अने ते समये सरवण नामे गाम हतुं. ते ऋद्धिवाळुं, उपद्रवरहित, यावत्–देवलोक समान प्रकाशवाळुं अने मनने प्रसन्नता आपनार हतुं. ते सरवण नामे गामने विषे गोबहुल नामे ब्राह्मण रहेतो हतो. ते धनिक, यावत्–कोइथी पराभव न पामे तेवो अने ऋग्वेद–इत्यादि यावत्–ब्राह्मणना शास्त्रोने विषे निपुण हतो. ते गोबहुल ब्राह्मणने एक गोशाळा हती. ते वखते ते मंखलि नामे मंख-

भगवंते कहेलो गोशालकनो वृत्तान्त.

मंखलि पिता.

भद्रा स्त्री.

सरवणग्राम.

गोबहुल ब्राह्मण.

---

२ * भग० खं० १ श० २ उ० ५ पृ० २८१.

बहुलस्स माहणस्स गोसाला यावि होत्था। तए णं से मंखली मंखे अन्नया कयाइ भद्दाए भारियाए गुव्विणीए सद्धिं चित्तफलगहत्थगए मंखत्तणेणं अप्पाणं भावेमाणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव सरवणे सन्निवेसे जेणेव गोबहुलस्स माहणस्स गोसाला तेणेव उवागच्छइ, ते० २-च्छित्ता गोबहुलस्स माहणस्स गोसालाए एगदेसंसि भंडनिक्खेवं करेति, भंड० २ करेत्ता सरवणे सन्निवेसे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे वसहीए सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेति, वसहीए सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणे अन्नत्थ वसहिं अलभमाणे तस्सेव गोबहुलस्स माहणस्स गोसालाए एगदेसंसि वासावासं उवागए। तए णं सा भद्दा भारिया नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाण राइंदियाणं वीतिक्कंताणं सुकुमाल० जाव-पडिरूवगं दारगं पयाया। तए णं तस्स दारगस्स अम्मा-पियरो एक्कारसमे दिवसे वीतिक्कंते जाव-बारसाहे दिवसे अयमेयारूवं गोणं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति-"जम्हा णं अम्हं इमे दारए गोबहुलस्स माहणस्स गोसालाए जाए तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं 'गोसाले' 'गोसाले'त्ति। तए णं तस्स दारगस्स अम्मा-पियरो नामधेज्जं करेंति 'गोसाले'त्ति। तए णं से गोसाले दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णायपरिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सयमेव पाडियक्कं चित्तफलगं करेति, सयमेव० २ करेत्ता चित्तफलगहत्थगए मंखत्तणेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरति।

३. तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा! तीसं वासाइं आगारवासमज्झे वसित्ता अम्मा-पिईहिं देवत्तगएहिं एवं जहा भावणाए जाव-एगं देवदूसमादाय मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए। तए णं अहं गोयमा! पढमं वासं अद्धमासंअद्धमासेणं खममाणे अट्ठियगामं निस्साए पढमं अंतरावासं वासावासं उवागए। दोच्चं वासं मासंमासेणं खममाणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव रायगिहे नगरे, जेणेव नालंदा बाहिरिया, जेणेव तंतुवायसाला, तेणेव उवागच्छामि, ते० २-च्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हामि, अहा० २-ण्हित्ता तंतुवायसालाए एगदेसंसि वासावासं उवागए। तए णं अहं गोयमा! पढमं मासक्खमणं उवसंपज्जित्ता णं विहरामि। तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते चित्तफलगहत्थगए मंखत्तणेणं अप्पाणं भावेमाणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव-दूइज्जमाणे जेणेव रायगिहे नगरे, जेणेव नालंदा बाहिरिया, जेणेव तंतुवायसाला तेणेव उवागच्छइ, ते० २-च्छित्ता तंतुवायसालाए एगदेसंसि भंडनिक्खेवं करेति, भं० २ करेत्ता रायगिहे नगरे उच्च-नीय० जाव-अन्नत्थ कत्थ वि वसहिं अलभमाणे तीसे य तंतुवायसालाए एगदेसंसि वासावासं उवागए, जत्थेव णं

भिक्षाचर अन्य कोइ दिवसे गर्भिणी एवी भद्रा नामे स्त्री साथे चित्रनुं पाटीउं हाथमां लइ भिक्षाचरपणावडे आत्माने भावित करतो अनुक्रमे विचरतो एक गामथी बीजे गाम जतो ज्यां शरवण नामे सन्निवेश-ग्राम छे अने ज्यां गोबहुल नामे ब्राह्मणनी गोशाला छे त्यां आव्यो; त्यां आवीने गोबहुल नामे ब्राह्मणनी गोशालाना एक भागमां पोतानुं राचरचीलुं मूक्युं, मूकीने शरवण नामे गाममां उच्च, नीच अने मध्यम कुळना घर समुदायमां भिक्षाचर्या माटे फरतो रहेवा माटे चोतरफ स्थाननी गवेषणा करवा लाग्यो, चोतरफ गवेषणा करतां कोइ पण स्थळे रहेवानुं स्थान नहि मळतां तेणे गोबहुल ब्राह्मणनी गोशालाना एक भागमां वर्षाऋतु माटे आवास कर्यो. ते वखते ते भद्रानामे स्त्रीए पूरा नवमास अने साडा सात दिवस वीत्या पछी सुकुमालहाथपगवाळा अने यावत्-सुन्दर एवा पुत्रने जन्म आप्यो. त्यार बाद ते बाळकना मात-पिताए अगियारमो दिवस वीत्या पछी यावत्-बारमे दिवसे आ आवा प्रकारनुं गुणयुक्त अने गुणनिष्पन्न नाम पाड्युं. कारण के 'आ बाळक गोबहुलनामे ब्राह्मणनी गोशालामां उत्पन्न थयो छे, ते माटे आ बाळकनुं नाम गोशालक हो'-एम विचारी मातापिताए ते बाळकनुं 'गोशालक' एवुं नाम पाड्युं. त्यार बाद ते गोशालक नामे बाळक बाल्यावस्थानो त्याग करी विज्ञानवडे परिणतमतिवाळो थइ यौवनने प्राप्त थयो अने पोतेज स्वतंत्र चित्रपट हाथमां लइ मंखपणावडे आत्माने भावित करतो विहरवा लाग्यो.

गोशालक नाम.

३. ते काले अने ते समये हे गौतम! में त्रीश वर्ष सुधी गृहवासमां रहीने मातापिता देवगत थया पछी ए प्रमाणे-(आचारांगना *बीजा श्रुतस्कंधना पंदरमा) भावना अध्ययनने विषे कह्या प्रमाणे 'मातापिता जीवता दीक्षा नहि लउं' आवो अभिग्रह पूर्ण थयो जाणी सुवर्णनो त्याग करी, बळनो त्याग करी-इत्यादि यावत्-एक देवदूष्य वस्त्रने ग्रहण करी मुंड-दीक्षित थईने गृहस्थावासनो त्याग करी प्रव्रज्यानो स्वीकार कर्यो. ते वखते हे गौतम! हुं पहेला वर्षने विषे अर्धमास अर्धमासक्षमण करतां अस्थिग्रामनी निश्राए प्रथम वर्षाकालमां रहेवा माटे आव्यो, बीजा वर्षे मास मासक्षमण करतां करतां अनुक्रमे विहार करतो, एक गामथी बीजे गाम जतां ज्यां राजगृह नगर छे, ज्यां नालंदानो बाह्य भाग छे अने ज्यां तंतुवाय-वणकरनी शाळा छे त्यां आव्यो, आवीने यथायोग्य अवग्रहने ग्रहण करी तंतुवायनी शालाना एक भागमां वर्षाऋतुमां रह्यो. त्यार बाद हे गौतम! हुं प्रथम मासक्षमणनो स्वीकार करी विहरवा लाग्यो. ते समये मंखलिपुत्र गोशालक चित्रपट हाथमां ग्रहण करी मंखपणावडे-भिक्षाचरपणावडे आत्माने भावित करतो अनुक्रमे विचरतो, यावत्-एक गामथी बीजे गाम जतो ज्यां राजगृह नगर छे, ज्यां नालंदानो बाह्य भाग छे अने ज्यां वणकरनी शाळा छे त्यां आव्यो, त्यां आवीने तंतुवायनी शाळाना एक भागमां राचरचीलु मूक्युं. मूकीने राजगृह नगरमां उच्च, नीच अने मध्यम कुळमां आहारने माटे जतो, यावत्- बीजे क्यांइ पण वसति नहि

भगवान् महावीरे मातापिता देवलोक गया पछी दीक्षा लीधी.

प्रथम वर्षे अस्थिग्राममां चातुर्मास. बीजा वर्षे राजगृह नगर.

१ * आचाराङ्ग द्वि० श्रुत० भावनाध्ययन प० ३९९-२।

अहं गोयमा ! । तए णं अहं गोयमा ! पढममासक्खमणपारणगंसि तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमामि, तंतु० २–क्खमित्ता णालंदाबाहिरियं मज्झंमज्झेणं जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छामि, रायगिहे नगरे उच्च–नीय० जाव–अडमाणे विजयस्स गाहावइस्स गिहं अणुपविट्ठे । तए णं से विजए गाहावती ममं एज्जमाणं पासति, पासित्ता हट्ठतुट्ठ० खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, खि० २–ट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पा० २–हित्ता पाउयाओ ओमुयइ, पा० २ ओमुइत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेति, करेत्ता अंजलिमउलियहत्थे ममं सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, २ ममं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति, २ ममं वंदति नमंसति, २ ममं विउलेणं असण–पाण–खाइम–साइमेणं पडिलाभेस्सामित्ति कट्टु तुट्ठे, पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभिते वि तुट्ठे । तए णं तस्स विजयस्स गाहावइस्स तेणं दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेणं पडिगाहगसुद्धेणं तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं दाणेणं मए पडिलाभिए समाणे देवाउए निबद्धे, संसारे परित्तीकए, गिहंसि य से इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तंजहा–१ वसुधारा वुट्ठा, २ दसद्धवन्ने कुसुमे निवातिए, ३ चेलुक्खेवे कए, ४ आहयाओ देवदुंदुभीओ, ५ अंतरा वि य णं आगासे 'अहो दाणे दाणे' त्ति घुट्ठे । तए णं रायगिहे नगरे सिंघाडग० जाव–पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ, जाव–एवं परूवेइ–'धन्ने णं देवाणुप्पिया ! विजए गाहावती, कयत्थे णं देवाणुप्पिया ! विजये गाहावई, कयपुन्ने णं देवाणुप्पिया ! विजए गाहावई, कयलक्खणे णं देवाणुप्पिया ! विजये गाहावई, कया णं लोया देवाणुप्पिया ! विजयस्स गाहावइस्स, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले विजयस्स गाहावइस्स, जस्स णं गिहंसि तहारूवे साधु साधुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तंजहा–१ वसुधारा वुट्ठा, जाव–'अहो दाणे दाणे'त्ति घुट्ठे, तं धन्ने, कयत्थे, कयपुन्ने, कयलक्खणे, कया णं लोया, सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले विजयस्स गाहावइस्स, विज०' २ । तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोचा निसम्म समुप्पन्नसंसए समुप्पन्नकोउहल्ले जेणेव विजयस्स गाहावइस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता पासइ विजयस्स गाहावइस्स गिहंसि वसुहारं वुट्ठं, दसद्धवन्नं कुसुमं निवडियं, ममं च णं विजयस्स गाहावइस्स गिहाओ पडिनिक्खममाणं पासति, पासित्ता हट्ठतुट्ठे जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ममं तिक्खुत्तो

मळतो ते तंतुवायनी शालाना एक भागमां ज्यां हुं रहेलो हतो त्यां वर्षाऋतुमां रहेवा माटे आव्यो. त्यार बाद हे गौतम ! हुं प्रथम मासक्षमणना पारणाने दिवसे तंतुवायनी शालाथकी बहार नीकळी नालंदाना बहारना भागना मध्य भागमां थई ज्यां राजगृह नगर छे त्यां आव्यो.

प्रथम मासक्षमणना पारणाने दिवसे विजयगाथापतिना घेर भगवंतनो प्रवेश.

राजगृह नगरमां उच्च, नीच अने मध्यम कुळमां यावत्–आहार माटे फरता में विजयनामे गाथापतिना घरमां प्रवेश कर्यो. ते वखते ते विजयनामे गाथापतिए मने आवतो जोयो, मने आवता जोईने प्रसन्न अने संतुष्ट थइ ते तुरत आसनथी उठ्यो, उठीने जलदी सिंहासनथी उतरी पादुकानो त्याग करी एक साडीवाळुं उत्तरासंग करी, अंजलिवडे हाथ जोडी सात आठ पगलां मारी सामो आव्यो, मारी सामो आवीने मने त्रण वार प्रदक्षिणा करी, वंदन अने नमस्कार कर्या, वंदन अने नमस्कार करी 'मने पुष्कळ अशन, पान, खादिम अने स्वादिम आहारथी प्रतिलाभीश–सत्कारीश'–एम विचारी ते संतुष्ट थयो, प्रतिलाभतां पण संतुष्ट थयो, प्रतिलाभ्या बाद पण संतुष्ट थयो, अने त्यार पछी ते विजयगाथापतिए द्रव्यनी शुद्धिथी, दायकनी शुद्धिथी अने पात्रनी शुद्धिथी तथा त्रिविध–मन, वचन, कायानी शुद्धिथी अने त्रिकरण शुद्धिथी

विजयगृहपतिने घेर पांच दिव्यनुं प्रगट थवुं.

दानवडे मने प्रतिलाभवाथी देवनुं आयुष बांध्युं, संसार अल्प कर्यो अने तेना घरमां आ पांच दिव्यो प्रगट थयां, ते आ प्रमाणे–१ वसुधारानी वृष्टि, २ पांच वर्णना पुष्पोनी वृष्टि, ३ ध्वजारूप वस्त्रनी वृष्टि, ४ देवदुंदुभिनुं वागवुं अने ५ आकाशने विषे 'आश्चर्यकारी दान, आश्चर्यकारी दान'–एवी उद्घोषणा. त्यार बाद राजगृह नगरमां शृंगाटक–त्रिकमार्ग, यावत्–राजमार्गमां घणा माणसो परस्पर एम कहे छे, यावत्–एवी प्ररूपणा करे छे के 'हे देवानुप्रिय ! विजयगाथापति धन्य छे, हे देवानुप्रिय ! विजयगाथापति कृतार्थ छे, हे देवानुप्रिय ! विजयगाथापति पुण्यशाळी छे, हे देवानुप्रिय ! विजयगाथापति कृतलक्षण छे, हे देवानुप्रिय ! विजयगाथापतिना उभय लोक सार्थक छे अने विजयगाथापतिनुं मनुष्यसंबन्धी जन्म अने जीवितनुं फल प्रशंसनीय छे, जेना घरने विषे तेवा प्रकारना साधु–उत्तम अने सौम्य आकारवाळा–श्रमणने प्रतिलाभवाथी आ पांच दिव्यो प्रगट थयां; ते पांच दिव्यो आ प्रमाणे–१ वसुधारानी वृष्टि, यावत्–५ 'आश्चर्यकारी दान, आश्चर्यकारी दान'–एवी उद्घोषणा. ते माटे ते धन्य छे, कृतार्थ छे, कृतपुण्य छे, कृतलक्षण छे, अने तेना बन्ने लोक सार्थक छे, तेमज विजयगृहपतिनुं मनुष्यसंबन्धी जन्म अने जीवितनुं फल प्रशंसनीय छे.' त्यार बाद ते मंखलिपुत्र गोशालक घणा माणसो पासेथी आ वात

गोशालकनुं विजयगृहपतिने घेर आगमन.

सांभळी, अवधारी जेने संशय अने कुतूहल उत्पन्न थया छे एवो ते विजयगृहपतिना घेर आव्यो. आवीने तेणे विजयगृहपतिना घरने विषे वर्षेली वसुधारा, नीचे पडेलां पांच वर्णोना पुष्पो, तथा घरथी बहार नीकळतां मने अने विजयगृहपतिने जोया; जोईने प्रसन्न अने संतुष्ट थइ ते गोशालक ज्यां हुं हतो त्यां आव्यो, त्यां आवी मने त्रणवार प्रदक्षिणा करी, वंदन अने नमस्कार करी तेणे आ प्रमाणे कह्युं–'हे भगवन् ! तमे मारा धर्माचार्य छो अने हुं तमारो धर्मशिष्य छुं.' ते वखते हे गौतम ! में मंखलिपुत्र गोशालकनी आ वातनो आदर न कर्यो, तेम स्वीकार न कर्यो; परन्तु हुं मौन रह्यो. त्यार बाद हे गौतम ! हुं राजगृह नगर थकी नीकळी नालंदाना बहारना मध्य भागमां थई ज्यां तंतुवायनी शाला छे त्यां आव्यो, त्यां आवी बीजा मासक्षमणनो स्वीकार करी विहरवा लाग्यो. त्यार पछी ते

आयाहिणपयाहिणं करेइ, करेत्ता ममं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता ममं एवं वयासी–'तुज्झे णं भंते ! ममं धम्मायरिया, अहं णं तुज्झं धम्मंतेवासी' । तए णं अहं गोयमा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमट्ठं नो आढामि, नो परिजाणामि, तुसिणीए संचिट्ठामि । तए णं अहं गोयमा ! रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता णालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं जेणेव तंतुवायसाला, तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता दोच्चं मासक्खमणं उवसंपज्जित्ता णं विहरामि । तए णं अहं गोयमा ! दोच्चंमासक्खमणपारणगंसि तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमामि, तं० २–क्खमित्ता नालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं जेणेव रायगिहे नगरे जाव–अडमाणे आनंदस्स गाहावइस्स गिहं अणुप्पविट्ठे । तए णं से आणंदे गाहावती ममं एज्जमाणं पासति–एवं जहेव विजयस्स, नवरं ममं विउलाए खज्जगविहीए 'पडिलाभेस्सामी'ति तुट्ठे, सेसं तं चेव, जाव–तच्चं मासक्खमणं उवसंपज्जित्ता णं विहरामि । तए णं अहं गोयमा ! तच्चंमासक्खमणपारणगंसि तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमामि, तंतु० २–क्खमित्ता तहेव जाव–अडमाणे सुणंदस्स गाहावइस्स गिहं अणुपविट्ठे । तए णं से सुणंदे गाहावती एवं जहेव विजयगाहावती, नवरं ममं सव्वकामगुणिएणं भोयणेणं पडिलाभेति, सेसं तं चेव जाव–चउत्थं मासक्खमणं उवसंपज्जित्ता णं विहरामि । तीसे णं नालंदाए बाहिरियाए अदूरसामंते एत्थ णं कोल्लाए नामं सन्निवेसे होत्था, सन्निवेसवण्णओ । तत्थ णं कोल्लाए संनिवेसे बहुले नामं माहणे परिवसइ, अड्ढे जाव–अपरिभूए, रिउव्वेय० जाव–सुपरिनिट्ठिए यावि होत्था । तए णं से बहुले माहणे कत्तियचाउम्मासियपाडिवगंसि विउलेणं महुघयसंजुत्तेणं परमण्णेणं माहणे आयामेत्था । तए णं अहं गोयमा ! चउत्थमासक्खमणपारणगंसि तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमामि, तंतु० २–क्खमित्ता णालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव कोल्लाए संनिवेसे तेणेव उवागच्छामि, ते० उवागच्छित्ता कोल्लाए सन्निवेसे उच्च–नीय० जाव–अडमाणस्स बहुलस्स माहणस्स गिहं अणुप्पविट्ठे । तए णं से बहुले माहणे ममं एज्जमाणं तहेव जाव–ममं विउलेणं महुघयसंजुत्तेणं परमन्नेणं पडिलाभेस्सामीति तुट्ठे । सेसं जहा विजयस्स, जाव–बहुले माहणे बहु० २ ।

४. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं तंतुवायसालाए अपासमाणे रायगिहे नगरे सब्भितरबाहिरियाए ममं सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेति, ममं कत्थ वि सुतिं वा खुतिं वा पवत्तिं वा अलभमाणे जेणेव तंतुवायसाला तेणेव उवागच्छइ, ते० २ उवागच्छित्ता साडियाओ य पाडियाओ य कुंडियाओ य वाहणाओ य चित्तफलगं च माहणे आयामेति, आयामेत्ता सउत्तरोट्ठं मुंडं कारेति, स० २ कारेत्ता तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमति, तं० २–क्खमित्ता णालंदं बाहिरियं

गौतम ! बीजा मासक्षमणना पारणाने विषे तंतुवायनी शालाथी नीकळी नालंदाना बहारना मध्य भागमां थई ज्यां राजगृह नगर छे त्यां यावत्–भिक्षा माटे जतां आनंदगृहपतिना घेर प्रवेश कर्यो. त्यार बाद ते आनंदगृहपति मने आवतो जोई–इत्यादि बधो वृत्तांत विजयगृहपतिनी पेठे (सू० ३.) जाणवो, परन्तु एटलो विशेष छे के 'मने अनेक प्रकारनी भोजन विधिथी प्रतिलाभीश'–एम विचारी ते आनंदगृहपति संतुष्ट थयो–इत्यादि बाकीनुं वृत्तान्त पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवुं, यावत्–हुं त्रीजा मासक्षमणनो स्वीकार करी विहरवा लाग्यो. त्यार बाद हे गौतम ! में त्रीजा मासक्षमणना पारणाने विषे तंतुवायनी शालाथी बहार नीकळी यावत्–भिक्षाए जतां सुनन्दगृहपतिना घेर प्रवेश कर्यो. त्यार बाद ते सुनन्दगृहपतिए–इत्यादि सर्व वृत्तान्त विजयगृहपतिनी पेठे (सू० ३) जाणवो, परन्तु एटलो विशेष छे के तेणे मने सर्वकामना गुणयुक्त भोजनवडे प्रतिलाभ्यो. बाकीनुं बधुं पूर्व प्रमाणे जाणवुं. त्यार पछी हुं चोथा मासक्षमणनो स्वीकार करी विहरवा लाग्यो. हवे ते नालंदाना बहारना भागथी थोडे दूर एक कोल्लाक नामे सन्निवेश हतो. अहीं सन्निवेशनुं वर्णन जाणवुं, ते कोल्लाक सन्निवेशने विषे बहुल नामे ब्राह्मण वसतो हतो. ते धनिक, यावत्–कोइथी पराभव न पामे तेवो हतो. ते ऋग्वेद–इत्यादि ब्राह्मणोना शास्त्र तथा रीत–रीवाजमां कुशळ हतो. त्यार बाद ते बहुल नामे ब्राह्मणे कार्तिक चातुर्मासनी प्रतिपदने विषे पुष्कळ मधु–खांड अने घी–संयुक्त परमान्न–क्षीरवडे ब्राह्मणोने जमाड्या. ते वखते हे गौतम ! हुं चोथा मासक्षमणना पारणाने विषे तंतुवायनी शालाथी नीकळी नालंदाना बहारना मध्यभागमां थई ज्यां कोल्लाक नामे सन्निवेश हतो त्यां आव्यो, त्यां आवी कोल्लाक संनिवेशने विषे उच्च, नीच अने मध्यम कुळमां यावत्–भिक्षाचर्याए जतां में बहुल ब्राह्मणना घेर प्रवेश कर्यो. त्यार पछी ते बहुल ब्राह्मणे मने आवतां जोयो–इत्यादि पूर्व प्रमाणे कहेवुं, यावत्–'मने मधु अने घृत संयुक्त परमान्नवडे प्रतिलाभीश' एम धारी ते संतुष्ट थयो–बाकी बधुं विजयगृहपतिनी पेठे (सू० ३) जाणवुं, यावत्–'बहुल ब्राह्मण धन्य छे'.

४. त्यारबाद मंखलिपुत्र गोशालके मने तन्तुवायनी शाळामां नहि जोवाथी राजगृह नगरनी बहार ने अंदर चोतरफ मारी गवेषणा–तपास करी, परंतु मारी क्यांइ पण श्रुति, क्षुति–शब्द के प्रवृत्ति नहि मळवाथी ज्यां तन्तुवायनी शाळा हती त्यां ते गयो, त्यां जईने तेणे शाटिका–अंदरना वस्त्रो, पाटिका–उपरना वस्त्रो, कुंडीओ, उपानह–पगरखां अने चित्रपटने ब्राह्मणोने आपीने दाढी अने मुंछनुं मुंडन कराव्युं. त्यारबाद तन्तुवायनी शाळा थकी नीकळी नालंदाना बाहेरना मध्य भागमां थई ज्यां कोल्लाक नामे सन्निवेश छे त्यां आव्यो. त्यार पछी कोल्लाक सन्निवेशनी बहारना भागमां घणा माणसो परस्पर आ प्रमाणे कहे छे, यावत्–प्ररूपे छे के–'हे देवानुप्रियो ! बहुल नामे

बीजुं मासक्षमण.

भगवंतनो बीजा मासक्षमणना पारणाने दिवसे आनंदगृहपतिना घेर प्रवेश.

त्रीजुं मासक्षमण. त्रीजा मासक्षमणना पारणाने दिवसे सुनन्दगृहपतिना घेर प्रवेश. कोल्लाक सन्निवेश. बहुल ब्राह्मण.

चतुर्थ मासक्षमणना पारणाने दिवसे बहुल ब्राह्मणना घेर प्रवेश.

भगवंते करेलो गोशालकनो शिष्यतरीके स्वीकार.

मज्झंमज्झेणं निगच्छइ, निगच्छित्ता जेणेव कोल्लागसन्निवेसे तेणेव उवागच्छइ । तए णं तस्स कोल्लागस्स संनिवेसस्स बहिया बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खति, जाव–परूवेति–'धन्ने णं देवाणुप्पिया! बहुले माहणे, तं चेव जाव–जीवियफले बहुलस्स माहणस्स ब०' २ । तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोचा निसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव–समुप्पज्जित्था–'जारिसिया णं ममं धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स इड्ढी जुत्ती जसे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए, नो खलु अत्थि तारिसिया णं अन्नस्स कस्सइ तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा इड्ढी जुत्ती जाव–परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए; तं निस्संदिद्धं च णं एत्थ ममं धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे भगवं महावीरे भविस्सतीति कट्टु कोल्लागसन्निवेसे सब्भिंतरबाहिरिए ममं सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेइ, ममं सव्वओ जाव–करेमाणे कोल्लागसंनिवेसस्स बहिया पणियभूमीए मए सद्धिं अभिसमन्नागए । तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते हट्ठ–तुट्ठे ममं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं जाव–नमंसित्ता एवं वयासी–'तुज्झे णं भंते! मम धम्मायरिया, अहन्नं तुज्झं अंतेवासी' । तए णं अहं गोयमा! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेमि । तए णं अहं गोयमा! गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं सद्धिं पणियभूमीए छव्वासाइं लाभं अलाभं सुहं दुक्खं सक्कारमसक्कारं पच्चणुब्भवमाणे अणिच्चजागरियं विहरित्था ।

५. तए णं अहं गोयमा! अन्नया कदायि पढमसरदकालसमयंसि अप्पवुट्ठिकायंसि गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं सद्धिं सिद्धत्थगामाओ नगराओ कुम्मगामं नगरं संपट्ठीए विहाराए । तस्स णं सिद्धत्थगामस्स नगरस्स कुम्मगामस्स नगरस्स य अंतरा एत्थ णं महं एगे तिलथंभए पत्तिए पुप्फिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अतीव २ उवसोभेमाणे २ चिट्ठइ । तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तं तिलथंभगं पासइ, पासित्ता ममं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–'एस णं भंते! तिलथंभए किं निप्फज्जिस्सइ नो निप्फज्जिस्सति? एए य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता २ कहिं गच्छिहिंति, कहिं उववज्जिहिंति'? तए णं अहं गोयमा! गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी–'गोसाला! एस णं तिलथंभए निप्फज्जिस्सइ, नो न निप्फज्जिस्सइ, एए य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता २ एयस्स चेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाइस्संति' । तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एवं आइक्खमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहति, नो पत्तियति, नो रोयइ, एयमट्ठं असद्दहमाणे, अपत्तियमाणे, अरोएमाणे ममं पणिहाए 'अयं णं मिच्छावादी भवउ' त्ति कट्टु ममं अंतियाओ सणियं २ पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता जेणेव से

ब्राह्मण धन्य छे'–इत्यादि पूर्वे कह्या प्रमाणे कहेवुं, यावत्–'बहुल ब्राह्मणनो जन्म अने जीवितव्यनुं फळ प्रशंसनीय छे.' ते वखते घणा माणसो पासेथी आ वात सांभळीने अने अवधारीने मंखलिपुत्र गोशालकने आवा प्रकारनो आ विचार यावत्–उत्पन्न थयो–'मारा धर्माचार्य अने धर्मोपदेशक श्रमण भगवान् महावीरने जेवी ऋद्धि, द्युति–तेज, यश, बल, वीर्य अने पुरुषकार–पराक्रम लब्ध छे, प्राप्त थएल छे, सन्मुख थयेल छे, तेवा प्रकारनी ऋद्धि, द्युति–तेज, यावत्–पुरुषकार–पराक्रम अन्य कोई तेवा प्रकारना श्रमण या ब्राह्मणने लब्ध, प्राप्त के सन्मुख थएल नथी, ते माटे अवश्य अहिं मारा धर्माचार्य अने धर्मोपदेशक श्रमण भगवंत महावीर हशे'–एम विचारी ते कोल्लाक सन्निवेशनी बहार अने अंदर चोतरफ मारी मार्गणा अने गवेषणा करवा लाग्यो. चोतरफ मारी गवेषणा करतां कोल्लाक सन्निवेशना बहारना भागमां मनोज्ञ भूमिने विषे ते मने मळ्यो. त्यारबाद ते मंखलिपुत्र गोशालक प्रसन्न अने संतुष्ट थई मने त्रणवार प्रदक्षिणा करी यावत्–नमस्कार करी आ प्रमाणे बोल्यो–"हे भगवन्! तमे मारा धर्माचार्य छो, अने हुं तमारो शिष्य छुं". त्यारे हे गौतम! में मंखलिपुत्र गोशालकनी ए वातने स्वीकारी. त्यारबाद हे गौतम! हुं मंखलिपुत्र गोशालकनी साथे प्रणीतभूमीने विषे छ वर्ष सुधी लाभ, अलाभ, सुख, दुःख, सत्कार अने असत्कारनो अनुभव करतो अने तेनी अनित्यतानो विचार करतो विहरवा लाग्यो.

भगवंतनो गोशालक साथे सिद्धार्थ ग्रामथी कूर्मग्राम तरफ विहार अने मार्गमां तलना छोडनुं जोवुं. गोशालकनो भगवंत महावीरने प्रश्न–तलनो छोड नीपजशे के नहि? गोशालकनुं भगवंतनी वातने मिथ्या करवा माटे तलना छोडने उखेडी नांखवुं.

५. त्यारबाद हे गौतम! अन्य कोई दिवसे प्रथम शरद काळना समयमां ज्यारे वृष्टि थती न होती त्यारे में मंखलिपुत्र गोशालकनी साथे सिद्धार्थ ग्रामनामे नगरथी कूर्मग्राम नामे नगर तरफ जवा माटे प्रयाण कर्युं, सिद्धार्थ ग्रामनामे नगर अने कूर्मग्राम नगरनी वच्चे अहिं एक मोटो तलनो छोड पत्रवाळो, पुष्पवाळो, हरितपणाथी अत्यंत शोभतो अने शोभावडे अत्यंत अधिक अधिक दीपतो हतो. हवे ते मंखलिपुत्र गोशालके ते तलना छोडने जोयो, जोइने मने वंदन अने नमस्कार करी आ प्रमाणे कह्युं के 'हे भगवन्! आ तलनो छोड नीपजशे के नहि नीपजे? आ सात तलना पुष्पना जीवो मरी मरीने क्यां जशे अने क्यां उपजशे'? हे गौतम! त्यारे मंखलिपुत्र गोशालकने में आ प्रमाणे कह्युं–'हे गोशालक! आ तलनो छोड नीपजशे, नहि नीपजे एम नहि, आ सात तलना पुष्पना जीवो मरी मरीने आज तलना छोडनी एक तलफळीने विषे सात तलरूपे उपजशे.' त्यारे ए प्रमाणे कहेतां मारी आ वातनी मंखलिपुत्र गोशालके श्रद्धा, प्रतीति तेम रुचि न करी, आ वातनी श्रद्धा नहि करतां, प्रतीति नहि करतां अने अरुचि करतां 'मारा निमित्ते आ मिथ्यावादी थाओ'–एम समजी मारी पासेथी धीमे धीमे गयो, अने ज्यां ते तलनो छोड छे, त्यां आवीने तेणे ते तलना छोडने माटीसहित मूळथी उखेडी नांख्यो, उखेडीने तेने एकान्ते मूक्यो. हे गौतम! तत्काळ ज आकाशमां दिव्य वादळ थयुं, अने ते दिव्य वादळ जल्दी गाजवा ल

तिलथंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं तिलथंभगं सलेडुयायं चेव उप्पाडेइ, उप्पाडेत्ता एगंते एडेति। तक्खणमेत्तं च णं गोयमा! दिव्वे अब्भवद्दलए पाउब्भूए। तए णं से दिव्वे अब्भवद्दलए खिप्पामेव पतणतणायति, खिप्पामेव पविज्जुयाति, खिप्पामेव नच्चोदगं णातिमट्टियं पविरलपप्फुसियं रयरेणुविणासणं दिव्वं सलिलोदगं वासं वासति, जेणं से तिलथंभए आसत्थे पच्चायाए, तत्थेव बद्धमूले, तत्थेव पतिट्ठिए। ते य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता २ तस्सेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाया।

६. तए णं अहं गोयमा! गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं सद्धिं जेणेव कुम्मग्गामे नगरे तेणेव उवागच्छामि, तए णं तस्स कुम्मग्गामस्स नगरस्स बहिया वेसियायणे नामं बालतवस्सी छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय २ सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे विहरइ, आइच्चतेयतवियाओ य से छप्पदीओ सव्वओ समंता अभिनिस्सवंति, पाण–भूय–जीव–सत्त–दयट्ठयाए च णं पडियाओ २ तत्थेव भुज्जो २ पच्चोरुभेति। तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते वेसियायणं बालतवस्सिं पासति, पासित्ता ममं अंतियाओ सणियं २ पच्चोसक्कइ, ममं० २ पच्चोसक्कित्ता जेणेव वेसियायणे बालतवस्सी तेणेव उवागच्छति, ते० २–च्छित्ता वेसियायणं बालतवस्सिं एवं वयासी–'किं भवं मुणी, मुणिए, उदाहु जूयासेज्जायरए'? तए णं से वेसियायणे बालतवस्सी गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमट्ठं णो आढाति, नो परियाणति, तुसिणीए संचिट्ठति। तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते वेसियायणं बालतवस्सिं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी–'किं भवं मुणी, मुणिए, जाव–सेज्जायरए'। तए णं से वेसियायणे बालतवस्सी गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते जाव–मिसिमिसेमाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभति, आ० २–रुभित्ता तेयासमुग्घाएणं समोहणइ, तेया० २ समोहणित्ता सत्तट्ठपयाइं पच्चोसक्कइ, स० २–क्कित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स वहाए सरीरगंसि तेयं निसिरइ। तए णं अहं गोयमा! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अणुकंपणट्ठयाए वेसियायणस्स बालतवस्सिस्स तेयपडिसाहरणट्ठयाए एत्थ णं अंतरा अहं सीयलियं तेयलेस्सं निसिरामि, जाए सा ममं सीयलियाए तेयलेस्साए वेसियायणस्स बालतवस्सिस्स सा उसिणा तेयलेस्सा पडिहया। तए णं से वेसियायणे बालतवस्सी ममं सीयलियाए तेयलेस्साए सीओसिणं तेयलेस्सं पडिहयं जाणित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स

गर्जना करवा लाग्युं, एकदम वीजळी चमकवा लागी, अने तुरतज अत्यंत पाणी अने अत्यंत कादव न थाय तेवी थोडा पाणीनां बिंदुवाळी, रज अने धूळने शांत करनार एवी दिव्य उदकनी वृष्टि थई. (अथवा सीतादिक महानदीओना पाणी जेवा पाणीनी वृष्टि थई.) जेथी करी ते तलनो छोड स्थिर थयो, विशेष स्थिर थयो, उग्यो अने बद्धमूल थई त्यां ज प्रतिष्ठित थयो. ते सात तल पुष्पना जीवो मरण पामी पामीने तेज तलना छोडनी एक तलफळीमां सात तलरूपे उत्पन्न थया.

६. त्यार बाद हे गौतम! हुं मंखलिपुत्र गोशालकनी साथे ज्यां कूर्मग्राम नामे नगर छे त्यां आव्यो. ते वखते ते कूर्मग्राम नगरनी बहार वेश्यायन नामे बालतपस्वी निरंतर छट्ठ छट्ठना तप करवावडे पोताना बन्ने हाथ उंचा राखी राखीने सूर्यना सन्मुख उभो रही आतापनाभूमिने विषे आतापना लेतो विहरतो हतो. सूर्यना तेजवडे तपेली यूकाओ चोतरफथी नीकळती हती, अने ते सर्व प्राण, भूत, जीव अने सत्त्वनी दयाने माटे पडी गयेली ते यूकाओने पाछी त्यां ने त्यां मूकतो हतो. हवे ते मंखलिपुत्र गोशालके वेश्यायन नामे बालतपस्वीने जोयो, जोईने मारी पासेथी ते धीमे धीमे पाछो गयो. पाछो जईने ज्यां वेश्यायन नामे बालतपस्वी छे त्यां आवी वेश्यायन नामे बालतपस्वीने ए प्रमाणे कह्युं– 'शुं तमे *मुनि छो के मुनिक–वसकेल छो, अथवा यूकाना शय्यातर छो'? त्यारे ते वेश्यायन नामे बालतपस्वीए मंखलिपुत्र गोशालकना ए कथननो आदर अने स्वीकार कर्यो नहि, परन्तु मौन धारण कर्युं. त्यार बाद ते मंखलिपुत्र गोशालके वेश्यायन नामे बालतपस्वीने बीजी वार अने त्रीजी वार पण ए प्रमाणे कह्युं के 'तमे मुनि छो, वसकेल छो, के यूकाना शय्यातर छो'? ज्यारे मंखलिपुत्र गोशालके बीजी वार अने त्रीजी वार ए प्रमाणे कह्युं त्यारे ते वेश्यायन नामे बालतपस्वी एकदम कुपित थयो अने यावत्–क्रोधे धमधमायमान थई आतापनाभूमिथी नीचे उतर्यो. नीचे आवीने तेजःसमुद्घात करी सात आठ पगला पाछो खसी मंखलिपुत्र गोशालकना वधने माटे तेणे शरीरमांथी तेजोलेश्या बहार काढी. त्यारबाद हे गौतम! मंखलिपुत्र गोशालकना उपर अनुकंपाथी वेश्यायन बालतपस्वीनी तेजोलेश्यानुं प्रतिसंहरण करवा माटे आ प्रसंगे में शीत तेजोलेश्या बहार काढी, अने मारी शीत तेजोलेश्याए वेश्यायन बालतपस्वीनी उष्ण तेजोलेश्यानो प्रतिघात कर्यो. त्यार पछी ते वेश्यायन बालतपस्वीए मारी शीततेजोलेश्याथी पोतानी उष्णतेजोलेश्यानो प्रतिघात थयेलो जाणीने अने मंखलिपुत्र गोशालकना शरीरने कंइ पण थोडी के वधारे पीडा अथवा अवयवनो छेद नहि करायेलो जोईने पोतानी उष्ण तेजोलेश्याने पाछी खेंची लीधी, पोतानी उष्ण तेजोलेश्याने पाछी खेंचीने ते आ प्रमाणे बोल्यो–'हे भगवन्! में जाण्युं, हे भगवन्! में जाण्युं.' त्यार पछी मंखलिपुत्र गोशालके मने ए प्रमाणे कह्युं के 'हे भगवन्! आ यूकाना शय्यातर बालतपस्वीए आपने 'हे भगवन्! में जाण्युं, हे भगवन्!

गोशालकने वेश्यायन बालतपस्वीनो समागम, तेमने गोशालकनुं उपहासपूर्वक कथन, तेमनुं गोशालक उपर तेजोलेश्यानुं मूकवुं, शीतलेश्या मूकी भगवंते करेलुं गोशालकनुं रक्षण.

---

१ * अहीं टीकाकारे 'मुणी' शब्दनो जाणीने तत्त्वनो अर्थ, अने मुणिक शब्दनो तपस्वी अर्थ–एम बीजो अर्थ पण कर्यो छे.

सरीरगस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा छविच्छेदं वा अकीरमाणं पासित्ता सीओसिणं तेयलेस्सं पडिसाहरए, सीओ० २–साहरित्ता ममं एवं वयासी–'से गयमेयं भगवं ! से गयमेयं भगवं' ! । तए णं गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एवं वयासी–'किं णं भंते ! एस जूयासिज्जायरए तुब्भे एवं वयासी–'से गयमेयं भगवं ! से गयमेयं भगवं' ? तए णं अहं गोयमा ! गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी–'तुमं णं गोसाला ! वेसियायणं बालतवस्सिं पाससि, पासित्ता ममं अंतियाओ सणियं २ पच्चोसक्कसि, जेणेव वेसियायणे बालतवस्सी तेणेव उवागच्छसि, ते० २–च्छित्ता वेसियायणं बालतवस्सिं एवं वयासी–'किं भवं मुणी, मुणिए, उदाहु जूयासेज्जायरए' ? तए णं से वेसियायणे बालतवस्सी तव एयमट्ठं नो आढाति, नो परिजाणति, तुसिणीए संचिट्ठइ । तए णं तुमं गोसाला ! वेसियायणं बालतवस्सिं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी–'किं भवं मुणी, मुणिए, जाव–सेज्जायरए' ? तए णं से वेसियायणे बालतवस्सी तुमं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते जाव–पच्चोसक्कति, पच्चोसक्कित्ता तव वहाए सरीरगंसि तेयलेस्सं निस्सिरइ । तए णं अहं गोसाला ! तव अणुकंपणट्ठयाए वेसियायणस्स बालतवस्सिस्स सीयतेयपडिसाहरणट्ठयाए एत्थ णं अंतरा सीयलियं तेयलेस्सं निस्सिरामि, जाव–पडिहयं जाणित्ता तव य सरीरगस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा छविच्छेदं वा अकीरमाणं पासेत्ता सीओसिणं तेयलेस्सं पडिसाहरति, सी० २–साहरित्ता ममं एवं वयासी–'से गयमेयं भगवं ! से गयमेयं भगवं' ! तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं अंतियाओ एयमट्ठं सोच्चा, निसम्म भीए जाव–संजायभये ममं वंदति नमंसति; ममं वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–'कहन्नं भंते ! संखित्तविउलतेयलेस्से भवति' ? तए णं अहं गोयमा ! गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी–'जेणं गोसाला ! एगाए सणहाए कुम्मासपिंडियाए एगेण य वियडासएणं छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय २ जाव–विहरति, से णं अंतो छण्हं मासाणं संखित्तविउलतेयलेस्से भवति' । तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एयमट्ठं सम्मं विणएणं पडिसुणेति ।

७. तए णं अहं गोयमा ! अन्नदा कदाइ गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं सद्धिं कुम्मगामाओ नगराओ सिद्धत्थग्गामं नगरं संपट्ठिए विहाराए, जाहे य मो तं देसं हव्वमागया जत्थ णं से तिलथंभए । तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एवं वयासी–'तुज्झे णं भंते ! तदा ममं एवं आइक्खह, जाव–परूवेह–गोसाला ! एस णं तिलथंभए निप्फज्जिस्सइ, नो न निप्फज्जिस्सइ, तं चेव जाव–पच्चायाइस्संति' तण्णं मिच्छा, इमं च णं पच्चक्खमेव दीसइ–'एस णं से तिलथंभए णो निप्फन्ने, अनिप्फन्नमेव । ते य

में जाण्युं'–एम शुं कह्युं ? त्यारे हे गौतम ! मंखलिपुत्र गोशालकने में आ प्रमाणे कह्युं के–हे गोशालक ! तें वेश्यायन बालतपस्वीने जोयो अने जोईने मारी पासेथी धीमे धीमे तुं पाछो गयो, पाछो जईने ज्यां वेश्यायन बालतपस्वी हतो त्यां गयो, अने त्यां जईने तें वेश्यायन बालतपस्वीने एम कह्युं के–'शुं तमे मुनि छो, चसकेल छो के यूकाना शय्यातर छो' ? तो पण वेश्यायन बालतपस्वीए तारा ए कथननो आदर–स्वीकार न कर्यो अने ते मौन रह्यो. त्यारबाद हे गोशालक ! तें वेश्यायन बालतपस्वीने बीजीवार अने त्रीजीवार पण ए प्रमाणे कह्युं के–'तमे मुनि छो, चसकेल छो के यूकाना शय्यातर छो' ? त्यारबाद ज्यारे तें बीजीवार अने त्रीजीवार ए प्रमाणे कह्युं एटले ते वेश्यायन बालतपस्वी गुस्से थयो, अने यावत्–पाछो जईने तारो वध करवा माटे तेणे शरीरमांथी तेजोलेश्या बहार काढी. त्यार पछी हे गोशालक ! में तारी दयाथी वेश्यायन बालतपस्वीनी तेजोलेश्यानुं प्रतिसंहरण करवा माटे ए अवसरे में शीत तेजोलेश्या मूकी, यावत्–तेणे तेनी उष्ण तेजोलेश्या प्रतिघात थएली जाणीने अने तारा शरीरने कंइ पण थोडी के वधारे पीडा अथवा अवयवनो छेद नहि करायेलो जोईने पोतानी उष्ण तेजोलेश्या पाछी खेंची लीधी, अने पाछी खेंचीने मने ए प्रमाणे कह्युं के–'हे भगवन् ! में जाण्युं, हे भगवन् ! में जाण्युं.' त्यार बाद मंखलिपुत्र गोशालक मारी पासेथी आ वात सांभळी, हृदयमां अवधारी भय पाम्यो, यावत्–भयभीत थई मने वंदन अने नमस्कार करी आ प्रमाणे बोल्यो–'हे भगवन् ! (अप्रयोगकाळे) संक्षिप्त अने (प्रयोगकाळे) विपुल तेजोलेश्या केम प्राप्त थाय' ? त्यारे हे गौतम ! मंखलिपुत्र गोशालकने में ए प्रमाणे कह्युं–'हे गोशालक ! जे नखसहित वाळेली अडदना बाकळानी मुठीवडे अने एक विकटाशय–एक चुलुक पाणी वडे निरन्तर छट्ठ छट्ठनो तप करी उंचा हाथ राखी राखीने यावत्–विहरे तो तेने छ मासने अन्ते (अप्रयोगकाळे) संक्षिप्त अने [प्रयोगकाळे] विस्तीर्ण एवी तेजोलेश्या प्राप्त थाय'. त्यार पछी मंखलिपुत्र गोशालके मारा आ कथननो विनयवडे सारी रीते स्वीकार कर्यो.

भगवंते गोशालकने तेजोलेश्यामाप्तिनो विधि बताव्यो.

भगवंतनुं गोशालकनी साथे सिद्धार्थग्राम तरफ प्रयाण अने भगवंतना वचनने मिथ्या करवा माटे तलना छोडनी गोशालकनी तपास.

७. त्यार बाद हे गौतम ! अन्य कोई दिवसे मंखलिपुत्र गोशालकनी साथे कूर्मग्रामनगरथी सिद्धार्थग्रामनगर तरफ जवा माटे में प्रयाण कर्युं. ज्यारे अमे ज्यां ते तलनो छोड हतो ते प्रदेश तरफ तुरत आव्या त्यारे मंखलिपुत्र गोशालके मने ए प्रमाणे कह्युं–'हे भगवन् ! तमे मने ते वखते ए प्रमाणे कह्युं हतुं, यावत्–एम प्ररूप्युं हतुं के 'हे गोशालक ! आ तलनो छोड नीपजशे, नहि नीपजे एम नहि–इत्यादि यावत्–तलरूपे उपजशे' ते मिथ्या–असत्य थयुं. आ प्रत्यक्ष देखाय छे के आ पेलो तलनो छोड उग्यो नथी, अने तेथी ए सिवाय ते सात तल पुष्पना जीवो मरण पामी पामीने आज तलना छोडनी एक तलफळीमां सात तलरूपे उत्पन्न थया नथी. त्यार पछी मंखलिपुत्र गोशालकने में ए प्रमाणे कह्युं के 'हे गोशालक ! ते वखते ए प्रमाणे कहेतां, यावत्–प्ररूपणा करता मारा ए कथनथी तुं अ

सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता २ नो एयस्स चेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाया'। तए णं अहं गोयमा! गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी–'तुमं णं गोसाला! तदा ममं एवं आइक्खमाणस्स, जाव–परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहसि, नो पत्तियसि, नो रोयसि, एयमट्ठं असद्दहमाणे, अपत्तियमाणे, अरोएमाणे ममं पणिहाए 'अयणं मिच्छावादी भवउ'त्ति कट्टु ममं अंतियाओ सणियं २ पच्चोसक्कसि, पच्चोसक्कित्ता जेणेव से तिलथंभए तेणेव उवागच्छइ, ते० २–गच्छित्ता जाव–एगंतमंते एडेसि। तक्खणमेत्तं गोसाला! दिव्वे अब्भवद्दलए पाउब्भूए। तए णं से दिव्वे अब्भवद्दलए खिप्पामेव तं चेव जाव–तस्स चेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाया; तं एस णं गोसाला! से तिलथंभए निप्फन्ने, णो अनिप्फन्नमेव। ते य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता २ एयस्स चेव तिलथंभयस्स एगाए तिलसंगलियाए सत्त तिला पच्चायाया। एवं खलु गोसाला! वणस्सइकाइया पउट्टपरिहारं परिहरंति। तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एवमाइक्खमाणस्स, जाव–परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहति ३, एयमट्ठं असद्दहमाणे जाव–अरोएमाणे जेणेव से तिलथंभए तेणेव उवागच्छति, ते० २–गच्छित्ता २ ताओ तिलथंभयाओ तं तिलसंगलियं खुडुति, खुड्डित्ता करयलंसि सत्त तिले पप्फोडेइ। तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स ते सत्त तिले गणमाणस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव–समुप्पज्जित्था–'एवं खलु सव्व-जीवा वि पउट्टपरिहारं परिहरंति'–एस णं गोयमा! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स पउट्टे, एस णं गोयमा! गोसालस्स मंखलि-पुत्तस्स ममं अंतियाओ आयाए अवक्कमणे पन्नत्ते।

८. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते एगाए सणहाए कुम्मासपिंडियाए य एगेण य वियडासएणं छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय २ जाव–विहरइ। तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते अंतो छण्हं मासाणं संखित्तविउलतेयलेस्से जाए।

९. तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अन्नया कया वि इमे छ दिसाचरा अंतियं पाउब्भवित्था, तंजहा १–साणे तं चेव, सव्वं जाव–अजिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरति, तं नो खलु गोयमा! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे, जिणप्पलावी जाव–जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ, गोसाले णं मंखलिपुत्ते अजिणे, जिणप्पलावी जाव–पगासेमाणे विहरइ। तए णं सा

करतो न होतो, प्रतीति करतो न होतो, रुचि करतो नहोतो, ए कथननी श्रद्धा नहि करतां, प्रतीति नहि करतां अने रुचि नहि करतां मने आश्रयी–मारा निमित्ते आ मिथ्यावादी थाओ'–एम समजी मारी पासेथी धीमे धीमे तुं पाछो गयो, पाछो जईने ज्यां ते तलनो छोड हतो त्यां आवी यावत्–तेने माटीसहित उखाडीने एकांते मूक्यो. हे गोशालक! ते वखते तत्क्षणमां आकाशमां दिव्य वादळ प्रगट थयुं, त्यार बाद ते दिव्य पाणीनुं वादळ एकदम गर्जना करवा लाग्युं–इत्यादि यावत्–ते तलना छोडनी एक तलफळीमां सात तलरूपे उत्पन्न थया छे. ते माटे हे गोशालक! ते तलनो छोड निष्पन्न थयो छे, अनिष्पन्न छे–एम नथी. ते सात तलना पुष्पना जीवो मरीने आज तलना छोडनी एक तलफळीमां सात तलरूपे उत्पन्न थया छे. ए प्रमाणे हे गोशालक! वनस्पतिकायिको मरीने प्रवृत्त परिहारनो परिहार–उपभोग करे छे. अर्थात्–मरीने तेज शरीरमां पुनः उपजे छे. त्यार पछी मंखलिपुत्र गोशालके ए प्रमाणे कहेतां यावत्–प्ररूपणा करतां मारा आ कथननी श्रद्धा, प्रतीति अने रुचि न करी, आ कथननी अश्रद्धा, यावत्–अरुचि करतां ज्यां ते तलनो छोड हतो त्यां जईने तेणे ते तलना छोडथी ते तलनी तलफळीने तोडीने हस्ततलमां मसळी सात तल बहार काढ्या. त्यार बाद मंखलिपुत्र गोशालकने ते सात तलने गणतां आवा प्रकारनो आ संकल्प यावत्–उत्पन्न थयो के 'ए प्रमाणे खरेखर सर्व जीवो पण प्रवृत्त परिहार परिहरे छे.' अर्थात्–मरीने तेज शरीरमां उत्पन्न थाय छे. हे गौतम! मंखलिपुत्र गोशालकनो आ परिवर्तवाद छे. अने हे गौतम! मारी पासेथी (तेजोलेश्यानो उपदेश) ग्रहण करीने मंखलिपुत्र गोशालकनुं आ अपक्रमण (जूदा पडवुं) छे.

गोशालकनो परिवर्तवादस्वीकार अने भगवंतथी तेनुं जूदा पडवुं.

८. त्यार पछी मंखलिपुत्र गोशालक नखसहित एक अडदना बाकुळानी मुठीवडे अने एक विकटाशय–चुलुक पाणीवडे निरन्तर छट्ठ छट्ठनो तप करी उंचा हाथ राखी राखीने विचरे छे. त्यार बाद ते मंखलिपुत्र गोशालकने छ मासने अन्ते संक्षिप्त अने विपुल तेजोलेश्या उत्पन्न थई.

गोशालकने तेजोलेश्यानी प्राप्ति.

९. त्यार पछी ते मंखलिपुत्र गोशालकने अन्य कोई दिवसे आ छ दिशाचरो आवी मळ्या. तेना ना०. आ प्रमाणे–१ शान–इत्यादि सर्व पूर्वोक्त यावत्–'जिन नहि छतां जिन शब्दने प्रकाशित करतो ते विहरे छे' त्यां सुधी कहेवुं. माटे हे गौतम! मंखलिपुत्र गोशालक खरी रीते जिन नथी, परन्तु जिननो प्रलाप करनारो, यावत्–जिन शब्दनो प्रकाश करतो विहरे छे. मंखलिपुत्र गोशालक अजिन छे, तो पण पोताने जिन कहेतो यावत्–जिन शब्दनो प्रकाश करतो ते विहरे छे. त्यार बाद अत्यन्त मोटी पर्षदा *शिवराजर्षिना चरित्रने विषे कह्युं

गोशालकना छ दिशाचरो शिष्य थया अने ते हवे जिन तरीके विख्यात थयो.

९. * भग० खं० ३ श० ११ उ० ९ पृ० २२९ सू० ९.

महतिमहालया महच्चपरिसा जहा सिवे जाव–पडिगया । तए णं सावत्थीए नयरीए सिंघाडग० जाव–पहेसु [illegible] जाव–परूवेइ–'जं णं देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव–विहरइ' तं मिच्छा । समणे भगवं महावीरे एवं आइक्खइ–जाव–परूवेइ–'एवं खलु तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स मंखली नामं मंखे पिता होत्था । तए णं तस्स मंखलिस्स एवं चेव तं सव्वं भाणियव्वं, जाव–अजिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ; तं नो खलु गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे, जिणप्पलावी जाव–विहरइ, गोसाले मंखलिपुत्ते अजिणे जिणप्पलावी जाव–विहरइ, समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव–जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ' । तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा, निसम्म आसुरुत्ते, जाव–मिसिमिसेमाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, आया० २ पच्चोरुहित्ता सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि आजीवियसंघसंपरिवुडे महया अमरिसं वहमाणे एवं यावि विहरइ ।

१०. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी आणंदे नामं थेरे पगइभद्दए, जाव–विणीए, छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तए णं से आणंदे थेरे छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए एवं जहा गोयमसामी तहेव आपुच्छइ, तहेव जाव–उच्च–नीय–मज्झिम० जाव–अडमाणे हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स अदूरसामंते वीइवयइ । तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते आणंदं थेरं हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स अदूरसामंतेणं वीइवयमाणं पासइ, पासित्ता एवं वयासी–'एहि ताव आणंदा ! इओ एगं महं उवमियं निसामेहि' । तए णं से आणंदे थेरे गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे, जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छति । तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते आणंदं थेरं एवं वयासी–"एवं खलु आणंदा ! इतो चिरातीयाए अद्धाए केइ उच्चावया वणिया अत्थत्थी, अत्थलुद्धा, अत्थगवेसी, अत्थकंखिया, अत्थपिवासा, अत्थगवेसणयाए णाणाविहविउलप-

गोशालक जिन नथी–एवुं भगवंतनुं कथन.

छे तेम वांदीने पाछी गइ. त्यार पछी श्रावस्ती नगरीमां शृंगाटक–त्रिक मार्ग, यावत्–राजमार्गमां घणा माणसो परस्पर यावत्–प्ररूपणा करे छे के हे 'देवानुप्रियो ! मंखलिपुत्र गोशालक जिन थई जिननो प्रलाप करतो यावत् विहरे छे, ते मिथ्या–असत्य छे. श्रमण भगवान् महावीर एम कहे छे, यावद्–प्ररूपे छे के ए प्रमाणे खरेखर ते मंखलिपुत्र गोशालकने मंखलिनामे मंख (भिक्षाचरविशेष) पिता हतो. हवे ते मंखलिने–इत्यादि सर्व यावत्–जिन नहि छतां जिन शब्दनो प्रकाश करतो विहरे छे–त्यां सुधी कहेवुं. ते माटे मंखलिपुत्र गोशालक जिन नथी, परन्तु जिननो प्रलाप करतो यावद्–विहरे छे. श्रमण भगवान् महावीर जिन छे, अने जिनप्रलापी, यावत्–जिन शब्दनो प्रकाश करता विहरे छे.' त्यार बाद ते मंखलिपुत्र गोशालक घणा माणसो पासेथी आ कथन सांभळी, विचारी, अत्यन्त गुस्से थयो, यावत्–अतिशय क्रोधे बळतो ते आतापना भूमिथी नीचे उतर्यो, आतापनाभूमिथी नीचे उतरी श्रावस्ती नगरीना मध्य भागमां थईने ज्यां हालाहला कुंभारणनो कुंभकारापण–हाट छे त्यां आव्यो, आवीने हालाहला कुंभारणना कुंभकारापण–हाटमां आजीविक संघवडे सहित अत्यन्त अमर्षने धारण करतो ए प्रमाणे विहरवा लाग्यो.

उपरनुं कथन सांभळी गोशालकने गुस्सो थयो. आनंदने गोशालकनो समागम, भगवंतने बाळी भस्म करवानी तेणे आपेली धमकी, ते माटे तेणे कहेलुं वणिकोनुं दृष्टान्त.

१०. ते काळे अने ते समये श्रमण भगवान् महावीरना शिष्य आनन्द नामे स्थविर प्रकृतिना भद्र अने यावद्–विनीत हता. तेओ छट्ठ छट्ठना निरन्तर तपकर्म करवावडे अने संयमवडे आत्माने भावित करता विहरता हता. हवे ते आनंद स्थविरे छट्ठक्षपणना पारणाने दिवसे प्रथम पौरुषीने विषे–इत्यादि गौतम स्वामीनी *पेठे रजा मागी, अने यावत्–ते उच्च, नीच अने मध्यम कुळमां यावत्–[illegible] जता हालाहला कुंभारणना कुंभकारापण–हाटथी थोडे दूर गया. ते वखते मंखलिपुत्र गोशालके हालाहला कुंभारणना हाटथी थोडे दूर जता आनन्द स्थविरने जोया, जोईने तेणे ए प्रमाणे कह्युं के 'हे आनन्द ! अहिं आव, अने एक मारुं दृष्टान्त सांभळ, ज्यारे मंखलिपुत्र गोशालके ए प्रमाणे कह्युं एटले ते आनन्द स्थविर ज्यां हालाहला कुंभारणनुं कुंभकारापण छे, अने ज्यां मंखलिपुत्र गोशालक छे त्यां आव्या.' हवे ते मंखलिपुत्र गोशालके आनंद स्थविरने आ प्रमाणे कह्युं–'हे आनन्द ! ए प्रमाणे खरेखर आजथी घणा काळ पहेलां अनेक प्रकारना धनना अर्थी, धनना लोभी, धननी गवेषणा करनारा, धनना कांक्षी अने धननी तृष्णावाळा केटला एक वणिकोए धन मेळववा माटे अनेक प्रकारना पुष्कळ प्रणीत–सुन्दर भांड–वस्तुओ (अथवा करीयाणारूप भांडने) लईने तथा गाडी अने गाडाओना समूहवडे पुष्कळ [illegible] अने पाणीरूप पाथेय ग्रहण करीने एक मोटी गामरहित, पाणीना प्रवाहरहित, सार्थादिकना आगमनरहित अने लांबा मार्गवाळी अटवीमां प्रवेश कर्यो.' त्यार पछी ते वणिकोनुं गामरहित, पाणीना प्रवाह रहित, सार्थादिकना आगमनरहित अने लांबा रस्तावाळी ते अटवीनो [illegible] भाग गया पछी पूर्वे लीधेलुं पाणी अनुक्रमे पीतां पीतां खूट्युं. त्यारे पाणिरहित थयेला अने तृषाथी पीडाता ते वणिकोए परस्पर [illegible] आ प्रमाणे कह्युं–'ए प्रमाणे खरेखर हे देवानुप्रियो ! आ गामरहित–इत्यादि यावत्–अटवीमां कंइक भाग गया पछी पहेलां लीधेलुं [illegible]

* १० भग० खं० १ श० २ उ० ५ पृ० २६१.

णियभंडमायाए सगडीसागडेणं सुबहुं भत्तपाणं पत्थयणं गहाय एगं महं अगामियं, अणोहियं, छिन्नावायं, दीहमद्धं अडविं अणुप्पविट्ठा । तए णं तेसिं वणियाणं तीसे अगामियाए, अणोहियाए, छिन्नावायाए, दीहमद्धाए अडवीए किंचि देसं अणुप्पत्ताणं समाणाणं से पुव्वगहिए उदए अणुपुव्वेणं परिभुंजेमाणे परिभुंजेमाणे खीणे । तए णं ते वणिया खीणोदगा समाणा तण्हाए परिब्भवमाणा अन्नमन्नं सद्दावेंति, अन्न० २–सद्दावित्ता एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमीसे अगामियाए जाव–अडवीए किंचि देसं अणुप्पत्ताणं समाणाणं से पुव्वगहिए उदए अणुपुव्वेणं परिभुंजेमाणे परिभुंजेमाणे खीणे, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमीसे अगामियाए जाव–अडवीए उदगस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेत्तए'त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, अन्न० २–सुणेत्ता तीसे णं अगामियाए जाव–अडवीए उदगस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेंति, उदगस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेमाणा एगं महं वणसंडं आसादेंति, किण्हं किण्होभासं जाव–निकुरंबभूयं पासादीयं जाव–पडिरूवं । तस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महेगं वम्मीयं आसादेंति । तस्स णं वम्मियस्स चत्तारि वप्पुओ अब्भुग्गयाओ, अभिनिसढाओ, तिरियं सुसंपग्गहियाओ, अहे पन्नगद्धरूवाओ, पन्नगद्धसंठाणसंठियाओ, पासादियाओ जाव–पडिरूवाओ । तए णं ते वणिया हट्ठतुट्ठ० अन्नमन्नं सद्दावेंति, अ० २ सद्दावेत्ता एवं वयासी–'एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे इमीसे अगामियाए जाव –सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेमाणेहिं इमे वणसंडे आसादिए, किण्हे, किण्होभासे, इमस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाए इमे वम्मीए आसादिए, इमस्स णं वम्मीयस्स चत्तारि वप्पुओ अब्भुग्गयाओ, जाव–पडिरूवाओ, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमस्स वम्मीयस्स पढमं वप्पिं भिन्दित्तए, अवियाइं ओरालं उदगरयणं अस्सादेस्सामो । तए णं ते वणिया अन्नमन्नस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेंति, अन्न० २–सुणेत्ता तस्स वम्मीयस्स पढमं वप्पं भिंदंति । ते णं तत्थ अच्छं पत्थं जच्चं तणुयं फालियवन्नाभं ओरालं उदगरयणं आसादेंति । तए णं ते वणिया हट्ठतुट्ठ० पाणियं पिबंति, पा० २ पिबित्ता वाहणाइं पज्जेंति, वा० २ पज्जेत्ता भायणाइं भरेंति, भा० भरेत्ता दोच्चं पि अन्नमन्नं एवं वदासी–'एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं इमस्स वम्मीयस्स पढमाए वप्पाए भिन्नाए ओराले उदगरयणे अस्सादिए, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमस्स वम्मीयस्स दोच्चं पि वप्पं भिंदित्तए, अवियाइं एत्थ ओरालं सुवन्नरयणं आसादेस्सामो' । तए णं ते वणिया अन्नमन्नस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेंति, अन्न० २–सुणेत्ता तस्स वम्मीयस्स दोच्चं पि वप्पं भिंदंति, ते णं तत्थ अच्छं जच्चं तावणिज्जं महत्थं महग्घं महरिहं ओरालं सुवन्नरयणं अस्सादेंति । तए णं ते वणिया हट्ठतुट्ठ० भायणाइं भरेंति, पवहणाइं भरेंति, भरेत्ता तच्चं पि अन्नमन्नं एवं वयासी –'एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे इमस्स वम्मीयस्स पढमाए वप्पाए भिन्नाए ओराले उदगरयणे आसादिए, दोच्चाए वप्पाए भिन्नाए ओराले सुवन्नरयणे अस्सादिए, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमस्स वम्मीयस्स तच्चं पि वप्पं भिंदित्तए । अवि-

पाणी अनुक्रमे पीतां पीतां खूटी गयुं छे, ते माटे हे देवानुप्रियो ! आ गामरहित, यावत्–अटवीने विषे आपणे पाणीनी चोतरफ गवेषणा करवी श्रेयस्कर छे'–एम विचार करी एक बीजानी पासेथी आ वात सांभळीने तेओए गामरहित यावत्–अटवीमां पाणीनी चोतरफ तपास करी. पाणीनी चोतरफ तपास करतां तेओने एकमोटुं वनखंड प्राप्त थयुं. जे वनखंड श्याम अने श्याम कान्तिवाळुं यावत्–महामेघना समूह जेवुं, प्रसन्नता उत्पन्न करनार अने यावत्–सुन्दर हतुं. ते वनखंडना बराबर मध्य भागमां तेओए एक मोटो वल्मिक–राफडो जोयो. ते वल्मिकने सिंहनी केशवाळी जेवां अवयवोवाळां उंचां चार शिखरो हतां, ते तीर्छां–विस्तीर्ण, नीचे अर्ध सर्पना जेवां, अर्ध सर्पनी आकृतिवाळां, प्रसन्नता उत्पन्न करनार अने यावत्–सुन्दर हतां. ते वल्मिकने जोइने प्रसन्न अने संतुष्ट थयेला ते वणिकोए एक बीजाने बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं के 'हे देवानुप्रियो ! ए प्रमाणे खरेखर आपणे आ गामरहित–एवी अटवीमां यावत्–चोतरफ तपास करतां आ श्याम अने श्याम कान्तिवाळुं वनखंड जोयुं, अने आ वनखंडना बराबर मध्य भागमां आ वल्मिक जोयो. आ वल्मिकने चार उंचां यावत्–प्रतिरूप–सुन्दर शिखरो छे, ते माटे हे देवानुप्रियो ! आ वल्मिकनुं पहेलुं शिखर फोडवुं ए श्रेयस्कर छे, के जेथी आपणे पुष्कळ उत्तम पाणी प्राप्त करीए'. त्यार पछी ते वणिकोए एक बीजा पासेथी आ कथन सांभळीने ते वल्मिकना प्रथम शिखरने फोड्युं. तेथी तेओने त्यां स्वच्छ, हितकारक, उत्तम, हलकुं अने स्फटिकना वर्ण जेवुं, पुष्कळ अने उत्तम पाणी प्राप्त थयुं. त्यार पछी प्रसन्न अने संतुष्ट थयेला ते वणिकोए पाणी पीधुं, अने (बळद वगेरे) वाहनोने पाणी पायुं, पाणी पाईने पात्रो भर्यां, पात्रो भरीने बीजी वार तेओए परस्पर आ प्रमाणे कह्युं– 'हे देवानुप्रियो ! आपणे ए प्रमाणे खरेखर आ वल्मिकना प्रथम शिखरने भेदवावडे पुष्कळ उत्तम पाणी प्राप्त कर्युं, तो हे देवानुप्रियो ! हवे आपणे आ वल्मिकना बीजा शिखरने भेदवुं श्रेयस्कर–योग्य छे, के जेथी आपणे अहिं उदार अने उत्तम सुवर्ण प्राप्त करीए.' त्यार बाद ते वणिकोए एक बीजानी पासेथी आ कथन सांभळीने ते वल्मिकना बीजा शिखरने पण फोड्युं. तेथी तेमां स्वच्छ, उत्तम, तापने सहन करनार महाअर्थवाळुं–महाप्रयोजनवाळुं–अने महामूल्यवाळुं पुष्कळ उत्तम सुवर्ण प्राप्त कर्युं. सुवर्णने प्राप्त करवाथी प्रसन्न अने संतुष्ट थयेला ते वणिकोए पात्रो भर्यां, पात्रो भरीने वाहनो भर्यां, वाहनो भरीने त्रीजी वार तेओ परस्पर ए प्रमाणे बोल्या–'हे देवानुप्रियो ! आपणे आ वल्मिकना प्रथम शिखरने भेदतां उदार एवुं उत्तम जळ प्राप्त कर्युं, अने बीजुं शिखर भेदतां उदार एवुं उत्तम सुवर्ण प्राप्त

थाइं पत्थ ओरालं मणिरयणं अस्सादेस्सामो' । तए णं ते वणिया अन्नमन्नस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेंति, प०२–सुणेत्ता तस्स वम्मीयस्स तच्चं पि वप्पं भिंदंति । ते णं तत्थ विमलं निम्मलं नित्तलं निक्कलं महत्थं महग्घं महरिहं ओरालं मणिरयणं अस्सादेंति । तए णं ते वणिया हट्ठतुट्ठ० भायणाइं भरेंति, भा० २ भरेत्ता पवहणाइं भरेंति, भरेत्ता चउत्थं पि अन्नमन्नं एवं वयासी–'एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे इमस्स वम्मीयस्स पढमाए वप्पाए भिन्नाए ओराले उदगरयणे अस्सादिए, दोच्चाए वप्पाए भिन्नाए ओराले सुवण्णरयणे अस्सादिए, तच्चाए वप्पाए भिन्नाए ओराले मणिरयणे अस्सादिए, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमस्स वम्मीयस्स चउत्थं पि वप्पं भिंदित्तए, अवियाइं उत्तमं महग्घं महरिहं ओरालं वइररयणं अस्सादेस्सामो' । तए णं तेसिं वणियाणं एगे वणिए हियकामए, सुहकामए, पत्थकामए, आणुकंपिए, निस्सेसिए, हिय–सुह–निस्सेसकामए ते वणिए एवं वयासी–'एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे इमस्स वम्मीयस्स पढमाए वप्पाए भिन्नाए ओराले उदगरयणे जाव–तच्चाए वप्पाए भिन्नाए ओराले मणिरयणे अस्सादिए, तं होउ अलाहि पज्जत्तं, एसा चउत्थी वप्पा मा भिज्जउ, चउत्थी णं वप्पा सउवसग्गा यावि होत्था' । तए णं ते वणिया तस्स वणियस्स हियकामगस्स सुहकाम० जाव–हिय–सुह–निस्सेसकामगस्स एवमाइक्खमाणस्स, जाव–परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति, जाव–नो रोयंति, एयमट्ठं असद्दहमाणा जाव–अरोएमाणा तस्स वम्मीयस्स चउत्थं पि वप्पं भिंदंति । ते णं तत्थ उग्गविसं चंडविसं घोरविसं महाविसं अतिकायमहाकायं मसिमूसाकालगयं नयणविसरोसपुण्णं अंजणपुंजनिगरप्पगासं रत्तच्छं जमलजुयलचंचलचलंतजीहं धरणितलवेणिभूयं उक्कडफुडकुडिलजडुलकक्खडविकडफडाडोवकरणदच्छं लोहागरधम्ममाणधमधमेंतघोसं अणागलियचंडतिव्वरोसं समुहिं तुरियं चवलं धमंतं दिट्ठीविसं सप्पं संघट्टेंति । तए णं से दिट्ठीविसे सप्पे तेहिं वणिएहिं संघट्टिए समाणे आसुरुत्ते जाव–मिसिमिसेमाणे सणियं २ उट्ठेति, उट्ठेत्ता सरसरसरस्स वम्मीयस्स सिहरतलं दुरूहेइ, सि० २ दुरूहेत्ता आइच्चं णिज्झाति, आ० २ णिज्झाइत्ता ते वणिए अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोएति । तए णं ते वणिया तेणं दिट्ठीविसेणं सप्पेणं अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समंता समभिलोइया समाणा खिप्पामेव सभंडमत्तोवगरणमायाए एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासी कया यावि होत्था । तत्थ णं जे से वणिए तेसिं वणियाणं हियकामए, जाव– हिय–सुह–निस्सेसकामए से णं अणुकंपयाए देवयाए सभंडमत्तोवगरणमायाए नियगं नगरं साहिए" । एवामेव आणंदा ! तव वि धम्मायरिएणं धम्मोवएसएणं समणेणं नायपुत्तेणं

कर्युं. ते माटे हे देवानुप्रियो ! आपणे हवे आ वल्मिकनुं त्रीजुं शिखर पण फोडवुं श्रेयस्कर छे, के जेथी अहिं उदार एवुं मणिरत्न प्राप्त करीए.' त्यार पछी ते वणिकोए एक बीजानी पासेथी आ कथन सांभळीने ते वल्मिकनुं त्रीजुं शिखर पण भेद्युं. तेथी तेओए त्यां विमल, निर्मळ, अत्यन्त गोळ, निष्कल–त्रासादिदोषरहित, महाअर्थ–महाप्रयोजनवाळुं, महामूल्यवाळुं अने उदार एवुं मणिरत्न प्राप्त कर्युं. मणिरत्नने प्राप्त करवाथी हृष्ट अने संतुष्ट थयेला ते वणिकोए पात्रो भर्यां, पात्रो भरीने वाहनो भर्यां, वाहनो भरीने तेओए चोथी वार पण एक बीजाने कह्युं के 'हे देवानुप्रियो ! ए प्रमाणे खरेखर आ वल्मिकना प्रथम शिखरने भेदवाथी पुष्कळ अने उत्तम पाणी प्राप्त कर्युं, बीजुं शिखर भेदवाथी पुष्कळ सुवर्ण प्राप्त कर्युं, त्रीजुं शिखर भेदवाथी उदार मणिरत्न प्राप्त कर्युं, तो हे देवानुप्रियो ! आपणे हवे आ वल्मिकना चोथा शिखरने पण भेदवुं योग्य छे, के जेथी आपणे उत्तम, महामूल्य, महाप्रयोजनवाळुं, महापुरुषने योग्य अने उदार एवुं वज्ररत्न प्राप्त करीए.' त्यार पछी ते वणिकोना हितनी इच्छावाळो, सुखनी इच्छावाळो, पथ्यनी इच्छावाळो, अनुकम्पावाळो, निश्रेःयस–कल्याणनी इच्छावाळो, तेमज हित, सुख अने निःश्रेयसनी इच्छावाळो एक वणिक हतो, तेणे ते वणिकोने ए प्रमाणे कह्युं–'हे देवानुप्रियो ! आपणे आ वल्मिकना प्रथम शिखरने भेदवाथी उदार अने उत्तम जल प्राप्त कर्युं, यावत्–त्रीजुं शिखर भेदवाथी उदार मणिरत्न प्राप्त कर्युं, एटलुं बसुं छे, हवे आपणे आ चोथुं शिखर भेदवुं योग्य नथी, कारण के चोथुं शिखर कदाच आपणने उपद्रव करनार थाय'. त्यारे ते वणिकोए हितनी इच्छावाळा, सुखनी इच्छावाळा यावत्–हित, सुख अने निःश्रेयसनी इच्छावाळा तथा उपर प्रमाणे कहेता, यावत्–प्ररूपणा करता एवा ते वणिकना कथनमां श्रद्धा न करी, यावत्–रुचि न करी, तेना कथननी श्रद्धा नहि करता, यावत्–रुचि नहि करता ते वणिकोए ते वल्मिकना चोथा शिखरने पण भेद्युं. तेथी तेओए त्यां उग्रविषवाळो, प्रचंडविषवाळो, घोरविषवाळो, महाविषवाळो, अतिकायवाळो, मोटा शरीरवाळो अने मषी तथा मूषाना समान काळावर्णवाळो, दृष्टिना विष अने रोषवडे पूर्ण, मषीना ढगलाना जेवी कान्तिवाळो, लाल आंखवाळो, जेने चपल अने साथे चालती बे जीभो छे एवो, पृथिवीतलमां वेणिसमान, उत्कट स्पष्ट वक्र जटिल–*केशवाळीयुक्त अने विस्तीर्ण फणानो आटोप करवामां दक्ष, आकर–खाणने विषे अग्निथी तपावेला लोढाना जेवो धमधमायमान शब्द छे जेनो एवो, नहि जाणी शकाय तेवो उग्र अने तीव्र रोषवाळो, श्वानना मुखपेठे त्वरित अने चपल शब्द करतो एवो दृष्टिविष सर्प स्पर्श्यो. त्यार बाद ते वणिकोए ते दृष्टिविष सर्पनो स्पर्श कर्यो एटले अत्यन्त गुस्से थयेला, अने यावत्–क्रोधथी बळता तेणे धीमे धीमे उठी सरसराट करता वल्मिकना शिखर उपर चढीने सूर्यने जोइने ते वणिकोने अनिमिष दृष्टिवडे चोतरफ जोया. त्यार पछी ते दृष्टिविष सर्पे चोतरफ जोई ते

१० * स्कन्धना भागमां सिंहनी पेठे सर्पोने पण केशवाळीनो संभव छे–टीका.

ओराले परियाए आसाइए, ओराला कित्ति-वन्न-सद्द-सिलोगा सदेवमणुयासुरे लोए पुव्वंति, गुव्वंति, थुव्वंति इति खलु 'समणे भगवं महावीरे' इति २। तं जदि मे से अज्ज किंचि वि वदति तो णं तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेमि, जहा वा वालेणं ते वणिया। तुमं च णं आणंदा! सारक्खामि, संगोवामि, जहा वा से वणिए तेसिं वणियाणं हियकामए, जाव-निस्सेसकामए अणुकंपयाए देवयाए सभंड० जाव-साहिए। तं गच्छ णं तुमं आणंदा! तव धम्मायरियस्स धम्मोवएसगस्स समणस्स नायपुत्तस्स एयमट्ठं परिकहेहि'। तए णं से आणंदे थेरे गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे भीए, जाव-संजायभए गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अंतियाओ हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता सिग्घं तुरियं सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, तेणे० २-गच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेति, करेत्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-'एवं खलु अहं भंते! छट्ठक्खमणपारणगंसि तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय० जाव-अडमाणे हालाहलाए कुंभकारीए० जाव-वीयीवयामि, तए णं गोसाले मंखलिपुत्ते ममं हालाहलाए० जाव-पासित्ता एवं वयासी-'एहि ताव आणंदा! इओ एगं महं उवमियं निसामेहि'। तए णं अहं गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे, जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते, तेणेव उवागच्छामि। तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एवं वयासी-एवं खलु आणंदा! इओ चिरातीयाए अद्धाए केइ उच्चावया वणिया० एवं तं चेव सव्वं निरवसेसं भाणियव्वं, जाव-'नियगनगरं साहिए'। तं गच्छ णं तुमं आणंदा! धम्मायरियस्स धम्मोवएसगस्स जाव-परिकहेहि।

११. [प्र०] तं पभू णं भंते! गोसाले मंखलिपुत्ते तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेत्तए, विसए णं भंते! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स जाव-करेत्तए, समत्थे णं भंते! गोसाले जाव-करेत्तए? [उ०] पभू णं आणंदा! गोसाले मंखलिपुत्ते तवेणं जाव-करेत्तए। विसए णं आणंदा! गोसाल० जाव-करेत्तए। समत्थे णं आणंदा! गोसाले जाव-करेत्तए,

वणिकोने पात्र विगेरे उपकरणसहित एक प्रहारवडे कूटाघात-पाषाणमययंत्रना आघातनी पेठे जल्दी भस्मराशिरूप कर्या. ते वणिकोमां जे वणिक ते वणिकोना हितनी इच्छावाळो, यावत्-हित, सुख अने निःश्रेयस-कल्याणनी इच्छावाळो हतो तेना उपर दयाथी ते देवे पात्र वगेरे उपकरण सहित तेने पोताना नगरे मूक्यो''. ए प्रमाणे हे आनन्द! तारा पण धर्माचार्य अने धर्मोपदेशक श्रमण ज्ञातपुत्रे उदार पर्याय-अवस्था प्राप्त कर्यो छे, अने तेनी देवो, मनुष्यो अने असुरोसहित आ जीवलोकमां 'श्रमण भगवान् महावीर, श्रमण भगवान् महावीर'-एवी उदार कीर्ति, वर्ण, शब्द अने श्लोक-यश व्याप्त थया छे, व्याकुल थया छे, अने स्तवाया छे. तो जो मने ते आज कंइ पण कहेशे तो मारा तपना तेजवडे एक घाए कूटाघात-पाषाणमययन्त्रना आघातनी पेठे जेम सर्पे वणिकोने बाळ्या तेम बाळीने भस्म करीश. हे आनन्द! जेम ते वणिकोनुं हित इच्छनार यावत्-निःश्रेयस-कल्याण इच्छनार ते वणिकने देवताए अनुकंपाथी पात्रो वगेरे उपकरण सहित पोताने नगरे मूक्यो तेम हुं तारु संरक्षण अने संगोपन करीश, ते माटे हे आनन्द! तुं जा, अने तारा धर्माचार्य अने धर्मोपदेशक श्रमण ज्ञातपुत्रने आ वात कहे. त्यार बाद मंखलिपुत्र गोशालाए ते आनन्द स्थविरने आ प्रमाणे कह्युं एटले ते भय पाम्या, अने यावत्-भयभीत थयेला ते मंखलिपुत्र गोशालानी पासेथी अने हालाहला कुंभारणना कुंभकारापणथी पाछा वळीने शीघ्र अने त्वरित श्रावस्ती नगरीना मध्य भागमांथी नीकळीने ज्यां कोष्ठक चैत्य हतुं अने ज्यां श्रमण भगवान् महावीर हता, त्यां आव्या. त्यां आवीने श्रमण भगवान् महावीरने त्रणवार प्रदक्षिणा करी वंदन अने नमस्कार करी आ प्रमाणे बोल्या-'हे भगवन्! खरेखर ए प्रमाणे हुं छट्ठ खमणना पारणाने विषे आपनी अनुज्ञाथी श्रावस्ती नगरीमां उच्च, नीच अने मध्यमकुळमां गोचरीए जतां हालाहला कुंभारणना घर पासेथी यावत्-जतो हतो, त्यां मंखलिपुत्र गोशालाए मने हालाहला कुंभारणना घरथी थोडे दूर जतां यावत्-जोइने ए प्रमाणे कह्युं-'हे आनन्द! अहीं आव, अने मारुं एक दृष्टान्त सांभळ.' त्यार पछी मंखलिपुत्र गोशालके ए प्रमाणे कह्युं एटले ज्यां हालाहला कुंभारणनुं कुंभकारापण हतुं, अने ज्यां मंखलिपुत्र गोशालक हतो, त्यां हुं आव्यो, त्यारे मंखलिपुत्र गोशालके मने आ प्रमाणे कह्युं-'हे आनन्द! खरेखर आजथी घणा काल पूर्वे अनेक प्रकारना केटलाएक वणिको-इत्यादि पूर्वोक्त सर्व कहेवुं, यावत्-देवताए पोताना नगरे मूक्यो.' ते माटे हे आनन्द! तुं जा अने तारा धर्माचार्य अने धर्मोपदेशकने यावत्-कहे.

गोचरीथी पाछा फरतां आनंदनुं गोशालकनी पासेथी थयेलुं वृत्तांतनुं निवेदन.

११. [प्र०] हे भगवन्! मंखलिपुत्र गोशालक पोताना तपना तेजवडे एक घाए कूटाघातनी पेठे भस्मराशि करवाने प्रभु-समर्थ छे, हे भगवन्! मंखलिपुत्र गोशालकनो यावत्-तेम करवानो *विषय छे, हे भगवन्! गोशालक यावत्-तेम करवाने समर्थ छे? [उ०] हे आनन्द! मंखलिपुत्र गोशालक तपना तेजवडे यावत्-तेम करवाने प्रभु-समर्थ छे, हे आनन्द! गोशालक मंखलिपुत्रनो तेम करवानो यावत्-

गोशालक तपोजन्य तेजोलेश्या वडे बाळी भस्म करवा समर्थ छे ते संबन्धे प्रश्नोत्तर.

११ * प्रभुना बे प्रकारे छे-विषयमात्रनी अपेक्षाए अने करवानी अपेक्षाए, माटे पुनः प्रश्न करे छे के विषयनी अपेक्षाए समर्थ छे के करवानी अपेक्षाए समर्थ छे।

नो चेव णं अरहंते भगवंते, परियावणियं पुण करेज्जा। जावतिए णं आणंदा! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवतेए, एत्तो अणंत-गुणविसिट्ठयराए चेव तवतेए अणगाराणं भगवंताणं, खंतिखमा पुण अणगारा भगवंतो। जावइए णं आणंदा! अणगाराणं भग-वंताणं तवतेए एत्तो अणंतगुणविसिट्ठयराए चेव तवतेए थेराणं भगवंताणं, खंतिखमा पुण थेरा भगवंतो। जावतिए णं आणंदा! थेराणं भगवंताणं तवतेए एत्तो अणंतगुणविसिट्ठयतराए चेव तवतेए अरहंताणं भगवंताणं, खंतिखमा पुण अरहंता भगवंतो। तं पभू णं आणंदा! गोसाले मंखलिपुत्ते तवेणं तेएणं जाव-करेत्तए, विसए णं आणंदा! जाव-करेत्तए, समत्थे णं आणंदा! जाव करेत्तए, नो चेव णं अरहंते भगवंते, पारियावणियं पुण करेज्जा।

१२. तं गच्छ णं तुमं आणंदा! गोयमाईणं समणाणं निग्गंथाणं एयमट्ठं परिकहेहि-'मा णं अज्जो! तुब्भं केइ गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएउ, धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेउ, धम्मिएणं पडोयारेणं पडोयारेउ, गोसाले णं मंखलिपुत्ते समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विपडिवन्ने। तए णं से आणंदे थेरे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव गोयमादिसमणा निग्गंथा तेणेव उवागच्छइ, तेणे० २-गच्छित्ता गोयमादिसमणे निग्गंथे आमंतेति, आमंतेत्ता एवं वयासी-'एवं खलु अज्जो! छट्ठक्खमणपारणगंसि समणेणं भगवया महा-वीरेणं अब्भणुन्नाए समाणे सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय० तं चेव सव्वं जाव-नायपुत्तस्स एयमट्ठं परिकहेहि, तं मा णं अज्जो! तुब्भं केई गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएउ, जाव-मिच्छं विपडिवन्ने।

१३. जावं च णं आणंदे थेरे गोयमाईणं समणाणं निग्गंथाणं एयमट्ठं परिकहेइ, तावं च णं से गोसाले मंखलिपुत्ते हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता आजीवियसंघसंपरिवुडे महया अमरिसं वहमाणे सिग्घं तुरियं जाव-सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, ते० २-गच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं वयासी-

विषय छे, हे आनन्द! तेम करवाने यावद्-गोशालक समर्थ छे, परन्तु अरिहंत भगवंतने बाळी भस्म करवा समर्थ नथी, तो पण तेमने परिताप-दुःख उत्पन्न करवा समर्थ छे. हे आनंद! मंखलिपुत्र गोशालकनुं जेटलुं तपनुं तेज छे, तेथी अनगार भगवंतनुं अनन्तगुण विशिष्ट तपतेज छे, कारण के अनगार भगवंत क्षमा-क्रोधनो निग्रह-करवामां समर्थ छे. हे आनन्द! अनगार भगवंतोनुं जेटलुं तपोबल छे, तेथी अनन्त गुण विशिष्ट तपोबल *स्थविर भगवंतोनुं छे; केमके स्थविर भगवंतो क्षमा करवामां समर्थ होय छे. हे आनंद! स्थविर भगवंतोनुं जेटलुं तपोबल होय छे, तेथी अनन्तगुण विशिष्ट तपोबल अरिहंत भगवंतोनुं होय छे, कारण के अरिहंत भगवंतो क्षमा करवामां समर्थ होय छे. हे आनन्द! मंखलिपुत्र गोशालक पोताना तप-तेजवडे यावत्-भस्मराशि करवाने समर्थ छे, हे आनंद! यावत्-तेम करवानो तेनो विषय (शक्ति) छे, हे आनन्द! तेम करवाने यावत्-समर्थ छे. परन्तु अरिहंत भगवंतने तेम करवाने समर्थ नथी, मात्र तेमने दुःख उत्पन्न कर-वाने शक्तिमान् छे.

भगवंते आनंदने कह्युं के-तुं गौतमादि मुनिओने कहे के गोशालकनी साथे कंइपण वादविवाद न करे.

१२. हे आनंद! ते माटे तुं जा, अने गौतमादि श्रमण निर्ग्रन्थोने आ वात कहे के-'हे आर्यो! तमे कोई मंखलिपुत्र गो-शालकनी साथे धर्मसंबन्धी प्रतिचोदना-तेना मतथी प्रतिकूल वचन न कहेशो, धर्मसंबन्धी प्रतिसारणा-तेना मतथी प्रतिकूलपणे अर्थनुं स्मरण न करावशो, अने धर्मसंबन्धी प्रत्युपचार-तिरस्कार वडे तेनो तिरस्कार न करशो. मंखलिपुत्र गोशालके श्रमण निर्ग्रन्थो साथे मि-थ्यात्व-म्लेच्छपणुं अथवा अनार्यपणुं विशेषतः आदर्युं छे'. त्यार पछी श्रमण भगवान् महावीरे ए प्रमाणे कह्युं एटले ते आनन्द स्थविर श्रमण भगवंत महावीरने वांदी अने नमी ज्यां गौतमादि श्रमण निर्ग्रंथो छे त्यां आवीने तेणे गौतमादि श्रमण निर्ग्रन्थोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं के-'हे आर्यो! छट्ठ क्षपणना पारणाने दिवसे श्रमण भगवंत महावीरे अनुज्ञा आपी एटले हुं श्रावस्ती नगरीमां उच्च, नीच अने मध्यमकुलमां गोचरीए जतो हतो-इत्यादि सर्व यावत्-ज्ञातपुत्रने आ अर्थने कहे जे'-त्यांसुधी कहेवुं, ते माटे हे आर्यो! तमे कोइ मंखलिपुत्र गोशालकने धर्मसंबन्धी तेना मतने प्रतिकूल वचन न कहेशो, यावत्-तेणे निर्ग्रन्थोनी साथे विशेषतः अनार्यपणुं आदर्युं छे.

भगवंत प्रति गोशालकनो उपालंभ.

१३. जेटलामां आनन्द स्थविर गौतमादि श्रमण निर्ग्रन्थोने आ वात कहे छे तेटलामां हालाहला कुंभारणना कुंभकारापण-हाटथी नीकळी आजीविकसंघसहित घणा अमर्षने धारण करतो मंखलिपुत्र गोशालक शीघ्र अने त्वरित गतिए यावत्-श्रावस्ती नगरीना मध्यभागमांथी नीकळी ज्यां कोष्ठक चैत्य छे अने ज्यां श्रमण भगवंत महावीर छे त्यां आव्यो. त्यां आवीने तेणे श्रमण भगवंत महावीरथी थोडे दूर उभा रही श्रमण भगवंत महावीरने आ प्रमाणे कह्युं-"हे आयुष्मान् काश्यपगोत्रीय! मने ए प्रमाणे सारुं कहो छो, हे आयुष्मान् काश्यप! तमे मने एम ठीक कहो छो के 'मंखलिपुत्र गोशालक मारो धर्मसंबन्धी शिष्य छे' २. जे मंखलिपुत्र गोशालक तमारो धर्म

गोशालकनो गोशालकपणे इनकार.

* ११ स्थविर-वृद्ध तेना त्रण प्रकार छे १ वयःस्थविर-उमरमां वृद्ध, २ श्रुतस्थविर-शास्त्रज्ञानमां वधेला, अने ३ पर्यायस्थविर-जेनो दीक्षापर्याय वीश वर्षथी अधिक होय ते.

बहु णं आउसो कासवा! अम्हं एवं वयासी, साहु णं आउसो कासवा! ममं एवं वयासी–गोसाले मंखलिपुत्ते ममं धम्मंतेवासी, गोसाले०' २, जे णं से मंखलिपुत्ते तव धम्मंतेवासी से णं सुक्के सुक्काभिजाइए भवित्ता कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने, अहण्णं उदाइनामं कुंडियायणीए, अज्जुणस्स गोयमपुत्तस्स सरीरगं विप्पजहामि, अ० २ विप्पजहित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, गो० २ अणुप्पविसित्ता इमं सत्तमं पउट्टपरिहारं परिहरामि। जे वि याइं आउसो कासवा! अम्हं समयंसि केइ सिज्झिंसु वा सिज्झंति वा सिज्झिस्संति वा सव्वे ते चउरासीतिं महाकप्पसयसहस्साइं, सत्त दिव्वे, सत्त संजूहे, सत्त सन्निगब्भे, सत्त पउट्टपरिहारे, पंच कम्मणि सयसहस्साइं सट्ठिं च सहस्साइं छच्च सए तिन्नि य कम्मंसे अणुपुव्वेणं खवइत्ता तओ पच्छा सिज्झंति, बुज्झंति, मुच्चंति, परिनिव्वाइंति, सव्वदुक्खाणमंतं करेंसु वा करेंति वा करिस्संति वा। से जहा वा गंगा महानदी जओ पवूढा, जहिं वा पज्जुवत्थिया, एस णं अद्धा पंचजोयणसयाइं आयामेणं, अद्धजोयणं विक्खंभेणं, पंच धणुसयाइं उव्वेहेणं, एएणं गंगापमाणेणं सत्त गंगाओ सा एगा महागंगा, सत्त महागंगाओ सा एगा सादीणगंगा, सत्त सादीणगंगाओ सा एगा मच्चुगंगा, सत्त मच्चुगंगाओ सा एगा लोहियगंगा, सत्त लोहियगंगाओ, सा एगा आवंतीगंगा, सत्त आवंतीगंगाओ सा एगा परमावती, एवामेव सपुव्वावरेणं एगं गंगासयसहस्सं सत्तर सहस्सा छच्च गुणपन्नं गंगासया भवंतीति मक्खाया। तासिं दुविहे उद्धारे पण्णत्ते, तंजहा–सुहुमबोंदिकलेवरे चेव, बायरबोंदिकलेवरे चेव। तत्थ णं जे से सुहुमबोंदिकलेवरे से ठप्पे। तत्थ णं जे से बायरबोंदिकलेवरे तओ णं वाससए २ गए २ एगमेगं गंगावालुयं अवहाय जावतिएणं कालेणं से कोट्ठे खीणे, णीरए, निल्लेवे, निट्ठिए भवति सेत्तं सरे सरप्पमाणे। एएणं सरप्पमाणेणं तिन्नि सरसयसाहस्सीओ से एगे महाकप्पे, चउरासीइं महाकप्पसयसहस्साइं से एगे महामाणसे। अणंताओ संजूहाओ जीवे चयं चइत्ता उवरिल्ले माणसे संजूहे देवे उववज्जति १। से णं तत्थ दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ, विहरित्ता ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं, भवक्खएणं, ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता पढमे सन्निगब्भे जीवे पच्चायाति १। से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता मज्झिल्ले माणसे संजूहे देवे उववज्जइ २। से णं तत्थ दिव्वाइं भोगभोगाइं जाव–विहरित्ता ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं

संबन्धी शिष्य हतो ते शुक्ल–पवित्र अने शुक्लाभिजातिवाळो–पवित्रपरिणामवाळो* थईने मरणसमये काळ करी कोइपण देवलोकने विषे देवपणे उत्पन्न थयो छे, हुं कौंडिन्यायनगोत्रीय उदायी नामे छुं, अने में गौतम पुत्र अर्जुनना शरीरनो त्याग करी मंखलिपुत्र गोशालकना शरीरमां प्रवेश करीने आ सातमो प्रवृत्तपरिहार–शरीरान्तर प्रवेश कर्यो छे. वळी हे आयुष्मन् काश्यप! जे कोई अमारा सिद्धान्तने अनुसारे मोक्षे गयेला छे, जाय छे अने जशे ते† सर्वे चोराशी लाख महाकल्प (काळविशेष), सात देवभवो, सात संयूथ निकायो, सात संज्ञीगर्भ–मनुष्यगर्भवास, सात प्रवृत्तपरिहार–शरीरान्तरप्रवेश अने पांच लाख, साठ हजार, छसो त्रण कर्मना भेदोनो अनुक्रमे क्षय कर्या पछी सिद्ध थाय छे, बुद्ध थाय छे, मूकाय छे, निर्वाण पामे छे, अने सर्व दुःखनो अन्त कर्यो छे, करे छे अने करशे. जेम गंगा महानदी ज्यांथी नीकळे छे अने ज्यां समाप्त थाय छे ते गंगानो अद्धा–मार्ग आयाम–लंबाइवडे पांचसो योजन छे, विष्कंभ–विस्तार अर्ध योजन छे, अने ऊंडाइमां पांचसो धनुष छे–ए रीते गंगाप्रमाणे सात गंगाओ मळीने एक महागंगा थाय छे, सात महागंगाओ मळीने एक सादीन गंगा थाय छे, सात सादीन गंगाओ मळीने एक मृत्युगंगा थाय छे, सात मृत्युगंगा मळीने एक लोहितगंगा थाय छे, सात लोहितगंगाओ मळीने एक अवंतीगंगा थाय छे, सात अवन्ती गंगाओ मळीने एक परमावती गंगा थाय छे. ए प्रमाणे पूर्वापर मळीने एक लाख, सत्तर हजार, छसो अने ओगण पचास गंगा नदीओ थाय छे–एम कह्युं छे. ते गंगानदीनी वालुकाकणनो बे प्रकारे उद्धार कह्यो छे, ते आ प्रमाणे–१ सूक्ष्मबोंदिकलेवररूप अने २ बादरबोंदिकलेवररूप. [जेमां वालुकाकणना सूक्ष्मबोंदि–सूक्ष्मआकारवाळा कलेवरो–असंख्यात खंडो कल्पेला छे ते सूक्ष्मबोंदिकलेवररूप उद्धार कहेवाय छे, अने जेमां बादरबोंदि–बादरआकारवाळा कलेवरो–वालुकाकणो छे ते बादरबोंदिकलेवररूप उद्धार कहेवाय छे.] तेमां सूक्ष्म बोंदिकलेवररूप उद्धार छे ते स्थापी राखवा योग्य छे. [अर्थात् निरूपयोगी होवाथी तेना विचारनी आवश्यकता नथी.] तेमां जे बादरबोंदिकलेवररूप उद्धार छे तेमांथी सो सो वर्षे एक एक वालुकाना कणनो अपहार करीए अने जेटला काळे गंगाना समुदायरूप ते कोठो क्षीण–खाली थाय, नीरज–वालुकारहित थाय, निर्लेप थाय, अने निष्ठित–समाप्त थाय त्यारे सरप्रमाण काल कहेवाय छे. एवा प्रकारना त्रण लाख सरप्रमाण काळवडे एक महाकल्प थाय छे, चोराशी लाख महाकल्पे एक महामानस थाय छे. अनन्त संयूथ–अनन्तजीवना समुदायरूप निकायथी जीव च्यवी संयूथ–देवभवने विषे उपरना मानस–सरप्रमाण आयुषवडे उत्पन्न थाय छे १, अने ते त्यां दीव्य अने भोग्य एवा भोगोने भोगवतो विहरे छे. हवे ते देवलोकथी आयुषनो क्षय थवाथी, भवना क्षयथी अने स्थितिना क्षयथी तुरतज च्यवीने प्रथम संज्ञी गर्भज पंचेन्द्रिय मनुष्यपणे उत्पन्न थाय छे १. त्यारबाद ते त्यांथी च्यवीने तुरतज मध्यम मानस–सरप्रमाण आयुषवडे संयूथ–देवनि-

गोशालकनुं पोतानुं स्वरूप निवेदन अने ते द्वारा स्वमतप्रदर्शन.

चोराशी लाख महाकल्पनुं प्रमाण.

सात दिव्यभवान्तरित सात मनुष्य भवो.

११ * जेम लेश्या–परिणामना कृष्णादि छ प्रकार छे, तेम तेवा परिणामवाळा आत्माना पण कृष्ण, कृष्णाभिजातीय, नील, नीलाभिजातीय, शुक्ल–शुक्ल, शुक्लाभिजातीय–ए छ प्रकारो होय एम जाणे छे.

† अहिं चूर्णिकार कहे छे के 'गोशालकनो सिद्धान्त अप्रसिद्ध होवाथी ते संबन्धे अमे कांई कहेता नथी.' पण अहिं टीकाकारे व्याख्या करी छे.

-३ जाव–चइत्ता, दोच्चे सन्निगब्भे जीवे पच्चायाति २। से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता हेट्ठिल्ले माणसे संजूहे देवे उववज्जइ ३। से णं तत्थ दिव्वाइं जाव–चइत्ता तच्चे सन्निगब्भे जीवे पच्चायाति ३। से णं तओहिंतो जाव–उव्वट्टित्ता उवरिल्ले माणुसुत्तरे संजूहे देवे उववज्जिहिति ४। से णं तत्थ दिव्वाइं भोग० जाव–चइत्ता चउत्थे सन्निगब्भे जीवे पच्चायाति ४। से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता मज्झिल्ले माणुसुत्तरे संजूहे देवे उववज्जति ५। से णं तत्थ दिव्वाइं भोग० जाव–चइत्ता पंचमे सन्निगब्भे जीवे पच्चायाति ५। से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता हिट्ठिल्ले माणुसुत्तरे संजूहे देवे उववज्जति ६। से णं तत्थ दिव्वाइं भोग० जाव–चइत्ता छट्ठे सन्निगब्भे जीवे पच्चायाति ६। से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता बंभलोगे नामं से कप्पे पन्नत्ते, पाईणपडीणायते उदीणदाहिणविच्छिन्ने, जहा ठाणपदे जाव–पंच वडेंसगा पन्नत्ता, तंजहा–१ असोगवडेंसए, जाव–पडिरूवा। से णं तत्थ देवे उववज्जइ ७। से णं तत्थ दस सागरोवमाइं दिव्वाइं भोग० जाव–चइत्ता सत्तमे सन्निगब्भे जीवे पच्चायाति ७। से णं तत्थ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाण० जाव–वीतिक्कंताणं सुकुमालगभद्दलए मिउकुंडलकुंचियकेसए मट्ठगंडतलकन्नपीडए देवकुमारसप्पभए दारए पयाति। से णं अहं कासवा! तए णं अहं आउसो कासवा! कोमारियपव्वज्जाए कोमारएणं बंभचेरवासेणं अविद्धकन्नए चेव संखाणं पडिलभामि, सं० २–लभित्ता इमे सत्त पउट्टपरिहारे परिहरामि, तंजहा–१ एणेज्जस्स, २ मल्लरामस्स, ३ मंडियस्स, ४ रोहस्स, ५ भारद्दाइस्स, ६ अज्जुणगस्स गोयमपुत्तस्स, ७ गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स। तत्थ णं जे से पढमे पउट्टपरिहारे से णं रायगिहस्स नगरस्स बहिया मंडिकुच्छिंसि चेइयंसि उदाइस्स कुंडियायणस्स सरीरं विप्पजहामि, उदा० २–जहित्ता एणेज्जगस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, एणे० २–प्पविसित्ता बावीसं वासाइं पढमं पउट्टपरिहारं परिहरामि। तत्थ णं जे से दोच्चे पउट्टपरिहारे से णं उद्दंडपुरस्स नगरस्स बहिया चंदोयरणंसि चेइयंसि एणेज्जगस्स सरीरगं विप्पजहामि, एणे० २–जहित्ता मल्लरामस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, मल्ल० २–विसित्ता एकवीसं वासाइं दोच्चं पउट्टपरिहारं परिहरामि। तत्थ णं जे से तच्चे पउट्टपरिहारे से णं चंपाए नगरीए बहिया अंगमंदिरंमि चेइयंसि मल्लरामस्स सरीरगं विप्पजहामि, मल्ल० २–जहित्ता मंडियस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, मंडि० २ प्पविसित्ता वीसं वासाइं तच्चं पउट्टपरिहारं परिहरामि। तत्थ णं जे से चउत्थे पउट्टपरिहारे से णं वाणारसीए नगरीए बहिया काममहावणंसि चेइयंसि मंडियस्स सरीरगं विप्पजहामि, मंडि० २–जहित्ता रोहस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, रोह० २–प्पविसित्ता एकूणवीसं वासाइं

कायविषे उत्पन्न थाय छे. २. त्यां दिव्य भोगववा योग्य भोगोने भोगवी यावत्–विहरी ते देवलोकथी आयुषना क्षयथी ३ यावत्–च्यवीने बीजा संज्ञीगर्भ–गर्भज मनुष्यने विषे जन्मे छे. २. त्यार पछी त्यांथी नीकळी तुरत हेठेना मानस प्रमाण आयुष वडे संयूथ–देवनिकायने विषे उपजे छे. ३. त्यां दिव्य भोगोने भोगवी त्यांथी च्यवी त्रीजा संज्ञीगर्भ–गर्भज मनुष्यने विषे जन्मे छे. ३. त्यांथी यावत्–नीकळी उपरना मानसोत्तर–महामानस आयुषवडे संयूथ–देवनिकायने विषे उपजे छे. ४. त्यां दिव्य भोगोने भोगवी यावत्–त्यांथी च्यवी चोथा संज्ञीगर्भ–गर्भजमनुष्यने विषे उपजे छे. ४. त्यांथी च्यवीने तुरत मध्यम मानसोत्तर आयुषवडे संयूथ–देवनिकायमां उपजे छे. ६. त्यां दिव्य भोगो भोगवी यावत्–त्यांथी च्यवी पांचमां संज्ञीगर्भ–गर्भज मनुष्यमां उत्पन्न थाय छे. ५. त्यांथी च्यवीने तुरत हेठेना मानसोत्तर आयुसहित संयूथ–देवनिकायमां उपजे छे. ६. त्यां दिव्य भोगो भोगवी यावत्–च्यवी छठ्ठा संज्ञी गर्भज मनुष्योमां उपजे छे. ६. त्यांथी नीकळी तुरत ब्रह्मलोक नामे कल्प–देवलोक कह्यो छे, ते पूर्व तथा पश्चिम लांबो छे, अने उत्तर तथा दक्षिण विस्तारवाळो छे, जेम प्रज्ञापना सूत्रना *स्थानपदने विषे कह्युं छे तेम अहिं जाणवुं, यावत्–तेमां पांच अवतंसक विमानो कह्यां छे, ते आ प्रमाणे–१ अशोकावतंसक, यावत्–प्रतिरूप–सुन्दर छे; ते देवलोकमां उत्पन्न थाय छे. ७. त्यां दश सागरोपम सुधी दिव्य भोगो भोगवीने यावत्–त्यांथी च्यवीने सातमा संज्ञीगर्भ–गर्भज मनुष्यमां उपजे छे. ७. त्यां नव मास बरोबर पूर्ण थया पछी अने साडासात दिवस व्यतीत थया बाद सुकुमाल, भद्र, मृदु अने दर्भना कुंडलनी पेठे संकुचित केशवाळो, कर्णना आभूषणवडे जेना गालने स्पर्श थयो छे एवो, देव कुमारसमान कान्तिवाळो बाळक जन्म्यो; हे काश्यप! ते हुं छुं. त्यार पछी हे आयुष्मन् काश्यप! कुमारावस्थामां प्रव्रज्यावडे, कुमारावस्थामां ब्रह्मचर्यवडे अविद्धकर्ण–व्युत्पन्न बुद्धिवाळा एवा मने प्रव्रज्या ग्रहण करवानी बुद्धि थई अने सात प्रवृत्त परिहार–शरीरान्तरने विषे संचार कर्यो, ते आ प्रमाणे–१ एणेयक, २ मल्लराम, ३ मंडिक, ४ रोह, ५ भारद्वाज, ६ गौतमपुत्र अर्जुन अने ७ मंखलिपुत्र गोशालकना शरीरमां प्रवेश कर्यो. तेमां जे प्रथम प्रवृत्तपरिहार–शरीरान्तर प्रवेशमां राजगृहनगरनी बहार मंडिकुक्षिनामे चैत्यने विषे कुंडियायन गोत्रीय उदायनना शरीरनो त्याग करी ऐणेयकना शरीरमां प्रवेश कर्यो. प्रवेश करी बावीश वर्ष सुधी प्रथम शरीरान्तरमां परावर्तन कर्युं. बीजा शरीरान्तरप्रवेशमां उद्दंडपुर नगरनी बहार चन्द्रावतरण चैत्यने विषे ऐणेयकना शरीरनो त्याग करी मल्लरामना शरीरमां प्रवेश कर्यो, अने प्रवेश करीने एकवीश वरस सुधी बीजा शरीरान्तरमां परावर्तन कर्युं. त्रीजा शरीरान्तरप्रवेशमां चंपानगरीनी बहार अंगमंदिरनामे चैत्यने विषे मल्लरामना शरीरनो त्याग करी मंडिकना शरीरमां प्रवेश कर्यो, अने त्यां वीश वर्ष सुधी त्रीजुं शरीरान्तर परावर्तन कर्युं. तेमां जे चोथुं

सात शरीरान्तरप्रवेश.

प्रथमशरीरप्रवेश.

द्वितीयशरीरप्रवेश.

तृतीयशरीरप्रवेश.

चतुर्थशरीरप्रवेश.

१३ * प्रज्ञा० पद २ प० १०२–१.

कुमारं पउट्टपरिहारं परिहरामि । तत्थ णं जे से पंचमे पउट्टपरिहारे से णं आलभियाए नगरीए बहिया पत्तकालगंसि चेइयंसि रोहस्स सरीरगं विप्पजहामि, रोह० २-जहित्ता भारद्दाइस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, भा० २ प्पविसित्ता अट्ठारस वासाइं पंचमं पउट्टपरिहारं परिहरामि । तत्थ णं जे से छट्ठे पउट्टपरिहारे से णं वेसालीए नगरीए बहिया कोंडियायणंसि चेइयंसि भारद्दाइस्स सरीरं विप्पजहामि, भा० २-जहित्ता अज्जुणगस्स गोयमपुत्तस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अ० २ -प्पविसित्ता सत्तरस वासाइं छट्ठं पउट्टपरिहारं परिहरामि । तत्थ णं जे से सत्तमे पउट्टपरिहारे से णं इहेव सावत्थीए नगरीए हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि अज्जुणगस्स गोयमपुत्तस्स सरीरगं विप्पजहामि, अज्जुण० २ विप्पजहित्ता । गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं 'अलं थिरं धुवं धारणिज्जं सीयसहं उण्हसहं खुहासहं विविहदंसमसगपरीसहोवसग्गसहं थिरसंघयणं' ति कट्टु तं अणुप्पविसामि, तं० २-प्पविसित्ता सोलस वासाइं इमं सत्तमं पउट्टपरिहारं परिहरामि । एवामेव आउसो कासवा! एगेणं तेत्तीसेणं वाससएणं सत्त पउट्टपरिहारा परिहरिया भवंतीति मक्खाया, तं सुट्ठु णं आउसो कासवा! ममं एवं वयासी, साधु णं आउसो कासवा! ममं एवं वयासी-'गोसाले मंखलिपुत्ते ममं धम्मंतेवासि'त्ति गोसाले० २।

१४. तए णं समणे भगवं महावीरे गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी-'गोसाला! से जहानामए तेणए सिया, गामेल्लएहिं परब्भमाणे प० २ कत्थ य गड्डं वा दरिं वा दुग्गं वा णिन्नं वा पव्वयं वा विसमं वा अणस्सादेमाणे एगेणं महं उण्णालोमेण वा सणलोमेण वा कप्पासपम्हेण वा तणसूएण वा अत्ताणं आवरेत्ता णं चिट्ठेज्जा, से णं अणावरिए आवरियमिति अप्पाणं मन्नइ, अप्पच्छण्णे य पच्छण्णमिति अप्पाणं मन्नति, अणिलुक्के णिलुक्कमिति अप्पाणं मन्नति, अपलाए पलायमिति अप्पाणं मन्नति, एवामेव तुमं पि गोसाला! अणन्ने संते अन्नमिति अप्पाणं उपलभसि, तं मा एवं गोसाला! नारिहसि गोसाला! सच्चेव ते सा छाया नो अन्ना' ।

१५. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते ५ समणं भगवं महावीरं उच्चावयाहिं आउसणाहिं आउसति, उच्चा० २ आउसित्ता उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसेति, उद्धंसेत्ता उच्चावयाहिं निब्भं-

शरीरान्तर परावर्तन छे ते वाराणसी नगरीनी बहार काममहावन नामे चैत्यने विषे मंडिकना शरीरनो त्याग करी रोहकना शरीरमां प्रवेश कर्यो, प्रवेश करीने त्यां ओगणीश वर्ष सुधी चोथुं शरीरान्तर परावर्तन कर्युं. तेमां जे पांचमुं शरीरान्तर परावर्तन छे ते आलभिका नगरीनी बहार प्राप्तकाल नामे चैत्यने विषे रोहना शरीरनो त्याग करी भारद्वाजना शरीरमां प्रवेश कर्यो, प्रवेश करीने अढार वर्ष सुधी पांचमुं शरीरान्तर परावर्तन कर्युं. तेमां जे छठ्ठं शरीरान्तर परावर्तन छे ते वैशाली नगरीनी बहार कुंडियायननामे चैत्यने विषे भारद्वाजना शरीरनो त्याग करी गौतमपुत्र अर्जुनना शरीरमां प्रवेश कर्यो, प्रवेश करीने त्यां सत्तर वर्ष सुधी छठ्ठं शरीरान्तर परावर्तन कर्युं. तेमां जे सातमुं शरीरान्तर परावर्तन छे ते आज श्रावस्ती नगरीने विषे हालाहला कुंभारणना कुंभकारापण-हाटने विषे गौतमपुत्र अर्जुनना शरीरनो त्याग करी मंखलिपुत्र गोशालकनुं शरीर समर्थ, स्थिर, ध्रुव, धारण करवा योग्य, शीतने सहन करनार, उष्णताने सहन करनार, क्षुधाने सहन करनार, विविध डांस मच्छर वगेरे परिषह अने उपसर्गने सहन करनार, तथा स्थिरसंघयणवाळुं छे'-एम समजी तेमां में प्रवेश कर्यो, अने तेमां सोळ वरससुधी आ सातमुं शरीरान्तरपरावर्तन कर्युं छे. ए प्रमाणे हे आयुष्मन् काश्यप! में एकसो तेत्रीश वर्षमां सात शरीरान्तर परावर्तन कर्या छे-एम में कह्युं छे. ते माटे हे आयुष्मन् काश्यप! तमे मने ए प्रमाणे सारुं कहो छो, हे आयुष्मन् काश्यप! तमे मने ए प्रमाणे ठीक कहो छो के 'मंखलिपुत्र गोशालक मारो धर्मान्तेवासी छे'. २.

पंचमशरीरप्रवेश.

षष्ठशरीरप्रवेश.

सप्तमशरीरप्रवेश.

१४. [उपर प्रमाणे गोशालके कह्युं एटले] श्रमण भगवान् महावीरे मंखलिपुत्र गोशालकने आ प्रमाणे कह्युं-'हे गोशालक! जेम कोइ चोर होय अने ते ग्रामवासी जनोथी पराभव पामतो २ कोइ गर्ता-खाडो, गुफा, दुर्ग-दुःखे जवा योग्य स्थान, निम्न-नीचाण प्रदेश, पर्वत के विषम-खाडा अने टेकरावाळा प्रदेशने नहि प्राप्त करतो एक मोटा ऊनना लोमथी, शणना लोमथी, कपासना लोमथी अने तृणना अग्रभागथी पोताने ढांकीने रहे, अने ते नहि ढंकाया छतां हुं ढंकायेल छुं एम पोताने माने, अप्रच्छन्न-नहि छूपाया छतां पोताने प्रच्छन्न-छूपायेल माने, नहि संताया छतां पोताने संतायेल माने, अपलायित-गुप्त नहि छतां पोताने गुप्त माने, ए प्रमाणे हे गोशालक! तुं पण अन्य नहि छतां हुं अन्य छुं-एम पोताने देखाडे छे. ते माटे हे गोशालक! एम नहि कर, हे गोशालक! एम करवाने तुं योग्य नथी. तेज आ तारी प्रकृति छे, अन्य नथी.

भगवन्ते कह्युं के हे गोशालक! तुं तारा आत्माने छूपावे छे.

१५. श्रमण भगवान् महावीरे ए प्रमाणे कह्युं एटले ते मंखलिपुत्र गोशालक एकदम गुस्से थयो अने श्रमण भगवान् महावीरने अनेक प्रकारना अनुचित वचनोवडे आक्रोश करवा लाग्यो, आक्रोश करीने अनेक प्रकारनी उद्धर्षणा-पराभवना वचनोवडे तिरस्कार करवा लाग्यो, तिरस्कार करी अनेक प्रकारनी निर्भर्त्सना वडे निर्भर्त्सित करवा लाग्यो, निर्भर्त्सना करी अनेक प्रकारनी निश्छोटना-कर्कश

गोशालकना अनेक तरेह आक्रोशयुक्त वचनो कहेवां.

वयणेहिं निब्भंछेति, उ० २ निब्भंछेत्ता उच्चावयाहिं निच्छोडणाहिं निच्छोडेति, उ० २ निच्छोडेत्ता एवं वयासी–'नट्ठे सि कदाइ, विणट्ठे सि कदाइ, भट्ठे सि कयाइ, नट्ठ–विणट्ठ–भट्ठे सि कदापि, अज्ज न भवसि, नाहि ते ममाहिंतो सुहमत्थि'।

१६. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी पाईणजाणवए सव्वाणुभूती णामं अणगारे पगइभद्दए, जाव–विणीए, धम्मायरियाणुरागेणं एयमट्ठं असद्दहमाणे उट्ठाए उट्ठेति, उ० २ उट्ठेत्ता जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, ते० २–गच्छित्ता गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी–'जे वि ताव गोसाला! तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतियं एगमवि आयरियं धम्मियं सुवयणं निसामेति, से वि ताव वंदति नमंसति, जाव–कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासइ, किमंग पुण तुमं गोसाला! भगवया चेव पव्वाविए, भगवया चेव मुंडाविए, भगवया चेव सेहाविए, भगवया चेव सिक्खाविए, भगवया चेव बहुस्सुतीकए, भगवओ चेव मिच्छं विप्पडिवन्ने, तं मा एवं गोसाला!, नारिहसि गोसाला! सच्चेव ते सा छाया नो अन्ना। तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सव्वाणुभूतिणामं अणगारेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते ५ सव्वाणुभूतिं अणगारं तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेति। तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सव्वाणुभूतिं अणगारं तवेणं तेएणं एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासिं करेत्ता दोच्चं पि समणं भगवं महावीरं उच्चावयाहिं आउसणाहिं आउसइ, जाव–सुहं नत्थि।

१७. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी कोसलजाणवए सुणक्खत्ते णामं अणगारे पगइभद्दए, जाव–विणीए, धम्मायरियाणुरागेणं जहा सव्वाणुभूती तहेव जाव–स च्चेव ते सा छाया नो अन्ना। तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सुणक्खत्तेणं अणगारेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते ५ सुनक्खत्तं अणगारं तवेणं तेएणं परितावेइ। तए णं से सुनक्खत्ते अणगारे गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेणं तेएणं परिताविए समाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, ते० २–गच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता सयमेव पंच महव्वयाइं आरुभेति, स० २ आरुभेत्ता समणा य समणीओ य खामेइ, सम० २ खामेत्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए।

वचनो वडे हल्का पाडवा प्रयत्न करवा लाग्यो, अने तेम करी ते गोशालक आ प्रमाणे बोल्यो–"कदाचित्–हुं एम मानुं छुं के तुं नष्ट थयो छे, कदाचित् विनष्ट थयो छे, कदाचित् भ्रष्ट थयो छे, अने कदाचित् नष्ट, विनष्ट अने भ्रष्ट थयो छे, कदाचित् तुं आजे हयात नहि, तने माराथी सुख थवानुं नथी".

सर्वानुभूति अनगारनुं गोशालकने सत्य कथन.

१६. ते काळे अने ते ते समये श्रमण भगवंत महावीरना अन्तेवासी–शिष्य पूर्व देशमां उत्पन्न थयेला सर्वानुभूति नामे अनगार भद्र प्रकृतिना अने यावत् विनीत हता. ते पोताना धर्माचार्यना अनुरागथी आ गोशालकनी वातनी अश्रद्धा करता उठ्या, उठीने ज्यां मंखलिपुत्र गोशालक हतो त्यां आवी मंखलिपुत्र गोशालकने आ प्रमाणे कह्युं–"हे गोशालक! जे तेवा प्रकारना श्रमण के ब्राह्मणनी पासे एक पण आर्य–निर्दोष अने धार्मिक सुवचन सांभळे छे ते पण तेने वंदन अने नमस्कार करे छे, यावत्–ते कल्याणकर अने मंगलकर देवना चैत्यनी पेठे तेनी पर्युपासना करे छे; पण हे गोशालक! तारे माटे तो शुं कहेवुं!!! भगवंते तने दीक्षा आपी, अर्थात् शिष्यरूपे स्वीकार कर्यो, भगवंते तने मुंड्यो, भगवंते तने व्रतसमाचार शीखव्यो, भगवंते तने शिक्षित कर्यो अने भगवंते तने बहुश्रुत कर्यो, तो पण तें भगवंतनी साथे अनार्यपणुं आदर्युं छे; ते माटे हे गोशालक! एम नहि कर, हे गोशालक तुं एम करवाने योग्य नथी. आ तेज तारी प्रकृति छे, अन्य नथी." ए प्रमाणे सर्वानुभूति अनगारे कह्युं एटले ते मंखलिपुत्र गोशालक गुस्से थयो, अने सर्वानुभूति अनगारने पोताना तपना तेजथी एक प्रहारे करी कूटाघात–पाषाणमय यंत्रना आघातनी पेठे बाळी भस्म कर्यो. त्यार बाद मंखलिपुत्र गोशालके सर्वानुभूति अनगारने पोताना तपना तेजथी एक घाए कूटाघातनी पेठे भस्मराशि करीने बीजी वार पण श्रमण भगवंत महावीरने अनेक प्रकारनी आक्रोशना वडे आक्रोश कर्यो, यावत्–'माराथी तमने सुख थवानुं नथी.'

गोशालके सर्वानुभूति अनगारने बाळी भस्म कर्यो.

सुनक्षत्र अनगारनुं गोशालकने कथन.

१७. ते काळे अने ते समये श्रमण भगवान् महावीरना अन्तेवासी कोशलदेश–अयोध्यादेशमां उत्पन्न थयेला सुनक्षत्र नामे अनगार भद्र प्रकृतिना अने यावत्–विनीत हता. ते धर्माचार्यना अनुरागथी–इत्यादि जेम सर्वानुभूति संबन्धे कह्युं तेम अहिं यावत्–'आ तारी प्रकृति छे अन्य नथी' त्यांसुधी कहेवुं; सुनक्षत्र अनगारे ए प्रमाणे कह्युं एटले ते मंखलिपुत्र गोशालक अत्यंत गुस्से थयो, अने सुनक्षत्र अनगारने तेणे तपना तेजथी बाळ्या. मंखलिपुत्र गोशालकवडे तपना तेजथी बळेला सुनक्षत्र अनगारे ज्यां श्रमण भगवंत महावीर छे त्यां आवी श्रमण भगवंत महावीरने त्रणवार प्रदक्षिणा करी वन्दन अने नमस्कार कर्या. वन्दन अने नमस्कार करी स्वयमेव पांच महाव्रतोनो उच्चार करी साधुओ अने साध्वीओने खमाव्या, खमावीने आलोचना अने प्रतिक्रमण करी समाधिने प्राप्त थई ते अनुक्रमे कालधर्मने पाम्या.

गोशालके सुनक्षत्र अनगारने पण बाळ्या.

तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सुनक्खत्तं अणगारं तवेणं तेएणं परितावेत्ता तच्चं पि समणं भगवं महावीरं उच्चा-वयाहिं आउसणाहिं आउसति, सव्वं तं चेव जाव-सुहं नत्थि। तए णं समणे भगवं महावीरे गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी-जे वि ताव गोसाला! तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा तं चेव जाव-पज्जुवासति, किमंग पुण गोसाला! तुमं मए चेव पव्वाविए, जाव-मए चेव बहुस्सुतीकए, ममं चेव मिच्छं विप्पडिवन्ने? तं मा एवं गोसाला! जाव-नो अन्ना, तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते ५ तेयासमुग्घाएणं समोहणइ, तेया०-हणित्ता सत्तट्ठ पयाइं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स वहाए सरीरगंसि तेयं निसिरति। से जहा-नामए वाउक्कलिया इ वा वायमंडलिया इ वा सेलंसि वा कुड्डंसि वा थंभंसि वा थूभंसि वा आवरिज्जमाणी वा निवारिज्जमाणी वा सा णं तत्थ णो कमति, नो पक्कमति, एवामेव गोसालस्स वि मंखलिपुत्तस्स तवे तेए समणस्स भगवओ महावीरस्स वहाए सरीरगंसि निसिट्ठे समाणे से णं तत्थ नो कमति, नो पक्कमति, अंचियंचियं करेति, अंचि० २ करेत्ता आयाहिण-पयाहिणं करेति, आ० २ करेत्ता उड्ढं वेहासं उप्पइए, से णं तओ पडिहए पडिनियत्ते समाणे तमेव गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं अणुडहमाणे २ अंतो अणुप्पविट्ठे। तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते सएणं तेएणं अन्नाइट्ठे समाणे समणं भगवं महावीरं एवं वयासी-'तुमं णं आउसो कासवा! ममं तवेणं तेएणं अन्नाइट्ठे समाणे अंतो छण्हं मासाणं पित्तज्जरपरिगय-सरीरे दाहवक्कंतीए छउमत्थे चेव कालं करेस्ससि'। तए णं समणे भगवं महावीरे गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी-'नो खलु अहं गोसाला! तव तवेणं तेएणं अन्नाइट्ठे समाणे अंतो छण्हं जाव-कालं करेस्सामि, अहन्नं अन्नाइं सोलस वासाइं जिणे सुहत्थी विहरिस्सामि, तुमं णं गोसाला! अप्पणा चेव सएणं तेएणं अन्नाइट्ठे समाणे अंतो सत्तरत्तस्स पित्तज्जरपरिगय-सरीरे जाव-छउमत्थे चेव कालं करेस्ससि'।

१९. तए णं सावत्थीए नगरीए सिंघाडग- जाव-पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ, जाव-एवं परूवेइ-'एवं खलु देवाणुप्पिया! सावत्थीए नगरीए बहिया कोट्ठए चेइए दुवे जिणा संलवंति, एगे वयंति-तुमं पुव्विं कालं करेस्ससि, एगे वयंति तुमं पुव्विं कालं करेस्ससि, तत्थ णं के पुण सम्मावादी के पुण मिच्छावादी? तत्थ णं जे से अहप्पहाणे जणे से वदति-'समणे भगवं महावीरे सम्मावादी, गोसाले मंखलिपुत्ते मिच्छावादी, 'अज्जो'त्ति समणे भगवं महावीरे समणे निग्गंथे आमंतेत्ता एवं

१८. त्यार बाद मंखलिपुत्र गोशालक सुनक्षत्र अनगारने तपना तेजथी बाळीने त्रीजीवार श्रमण भगवंत महावीरने अनेक प्रकारना अनुचित वचनोथी आक्रोश करवा लाग्यो-इत्यादि पूर्वोक्त सर्व कहेवुं, यावत्-"तारे माराथी सुख थवानुं नथी." त्यारे श्रमण भगवान् महावीरे मंखलिपुत्र गोशालकने आ प्रमाणे कह्युं के 'हे गोशालक! जे तेवा प्रकारना श्रमण अने ब्राह्मणनुं-[आर्य अने धार्मिक सुवचन सांभळे छे-इत्यादि] पूर्वोक्त कहेवुं, ते तेनी यावत् -पर्युपासना करे छे, तो हे गोशालक! तारे माटे तो शुं कहेवुं!! में तने प्रव्रज्या आपी, यावत्-में तने बहुश्रुत कर्यो, अने तें मारी साथे मिथ्यात्व-अनार्यपणुं आदर्युं छे. ते माटे हे गोशालक! एम नहि कर, यावत्-ते आ तारी ज प्रकृति छे, अन्य नथी." श्रमण भगवंत महावीरे ए प्रमाणे कह्युं एटले ते मंखलिपुत्र गोशालक अत्यंत गुस्से थयो, अने तैजस समुद्घात करी, सात आठ पगला पाछो खसी तेणे श्रमण भगवंत महावीरनो वध करवामाटे शरीरमांथी तेजोलेश्या बहार काढी. जेम कोइ वातोत्कलिका (जे रही रहीने वायु वाय ते) के वंटोळीओ होय ते पर्वत, भींत, स्तंभ के स्तूपवडे आवरण करायेलो के निवा-रण करायेलो होय तो पण तेने विषे समर्थ थतो नथी, विशेष समर्थ थतो नथी, ए प्रमाणे मंखलिपुत्र गोशालकनी तपोजन्य तेजोलेश्या श्रमण भगवंत महावीरनो वध करवा माटे शरीरमांथी बहार काढ्या छतां तेने विषे समर्थ थती नथी, विशेष समर्थ थती नथी, पण गमना-गमन करे छे, गमनागमन करीने प्रदक्षिणा करे छे, प्रदक्षिणा करी उंचे आकाशमां उछळे छे, अने त्यांथी स्खलित थईने पाछी फरती तपोजन्य तेजोलेश्या मंखलिपुत्र गोशालकना शरीरने बाळती बाळती तेना शरीरनी अंदर प्रविष्ट थाय छे. त्यार बाद पोतानी तेजोलेश्यावडे पराभवने प्राप्त थयेला मंखलिपुत्र गोशालके श्रमण भगवंत महावीरने आ प्रमाणे कह्युं-'हे आयुष्मन् काश्यप! मारी तपोजन्य तेजोले-श्याथी पराभवने प्राप्त थई छ मासने अन्ते पित्तज्वरयुक्त शरीर छे जेनुं एवो तुं दाहनी पीडाथी छद्मस्थ अवस्थामां काळ करीश.' त्यारे श्रमण भगवंत महावीरे मंखलिपुत्र गोशालकने ए प्रमाणे कह्युं के 'हे गोशालक! हुं तारी तपोजन्य तेजोलेश्याथी पराभव पामी छ मासने अन्ते यावत्-काळ करीश नहिं, पण बीजा सोळ वरस सुधी जिन-तीर्थंकरपणे गन्धहस्तीनी पेठे विचरीश, परन्तु हे गोशालक! तुं पोतेज तारा तेजथी पराभव पामी सात रात्रिने अन्ते पित्तज्वरथी पीडित शरीरवाळो थई छद्मस्थावस्थामां काळ करीश.'

१९. त्यार पछी श्रावस्ती नगरीमां शृंगाटकना आकारवाळा त्रिकोण मार्गमां यावत्-राजमार्गमां घणा माणसो परस्पर आ प्रमाणे कहे छे, यावत्-आ प्रमाणे प्ररूपे छे-"हे देवानुप्रियो! ए प्रमाणे खरेखर श्रावस्ती नगरीनी बहार कोष्ठक चैत्यने विषे बे जिनो परस्पर कहे छे, तेमां एक आ प्रमाणे कहे छे के 'तुं प्रथम काळ करीश' अने बीजा एम कहे छे के 'तुं प्रथम काळ करीश.' तेमां कोण सम्यग्वादी-सत्यवादी छे, अने कोण मिथ्यावादी छे? तेमां जे जे प्रधान-मुख्य माणसो छे ते बोले छे के श्रमण भगवान् महावीर सम्यग्वादी छे,

गोशालकनो भगवंत प्रति त्रीजी वारनो आक्रोश.

गोशालके भगवंतनो वध करवामाटे शरीरमांथी तेजोलेश्या बहार काढी.

तेजोलेश्या गोशालकना शरीरमां पेठी. हुं तारा तपना तेजथी पराभूत थई छ मासने अन्ते काळ करीश नहि, पण तुं सात रात्रिने अन्ते काळ करीश-एवुं गोशालकने भगवंतनुं कथन.

श्रावस्तीमां [illegible] लोकोनो [illegible] सम्यग्वादित्व [illegible].

वयासी–'अज्जो'! से जहानामए तणरासी इ वा कट्ठरासी इ वा पत्तरासी इ वा तयारासी इ वा तुसरासी इ वा भुसरासी इ वा गोमयरासी इ वा अवकररासी इ वा अगणिझामिए अगणिझूसिए अगणिपरिणामिए हयतेए गयतेए नट्ठतेए भट्ठतेए लुत्ततेए विणट्ठतेये जाव–एवामेव गोसाले मंखलिपुत्ते मम वहाए सरीरगंसि तेयं निसिरेत्ता हयतेए गयतेए जाव–विणट्ठतेए जाए, तं छंदेणं अज्जो! तुब्भे गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएह, धम्मि० २ पडिचोएत्ता धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेह, धम्मि० २ पडिसारेत्ता धम्मिएणं पडोयारेणं पडोयारेह, धम्मि० २ पडोयारेत्ता अट्ठेहि य हेऊहि य पसिणेहि य वागरणेहि य कारणेहि य निप्पट्ठपसिणवागरणं करेह।

२०. तए णं ते समणा निग्गंथा समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ता समाणा समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएंति, ध० २ पडिचोएत्ता धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेंति, ध० २ पडिसारेत्ता धम्मिएणं पडोयारेणं पडोयारेंति, ध० २ पडोयारेत्ता अट्ठेहि य हेऊहि य कारणेहि य जाव–वागरणं करेंति।

२१. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते समणेहिं निग्गंथेहिं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोतिज्जमाणे जाव–निप्पट्ठपसिणवागरणे कीरमाणे आसुरुत्ते जाव–मिसिमिसेमाणे नो संचाएति समणाणं निग्गंथाणं सरीरगस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएत्तए, छविच्छेदं वा करेत्तए। तए णं ते आजीविया थेरा गोसालं मंखलिपुत्तं समणेहिं निग्गंथेहिं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएज्जमाणं, धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारिज्जमाणं, धम्मिएणं पडोयारेण य पडोयारेज्जमाणं, अट्ठेहि य हेऊहि य जाव–करेमाणं, आसुरुत्तं जाव–मिसिमिसेमाणं समणाणं निग्गंथाणं सरीरगस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा छविच्छेदं वा अकरेमाणं पासंति, पासित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अंतियाओ आयाए अवक्कमंति, आयाए अवक्कमित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेंति, आ० २ करेत्ता, वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता समणं भगवं महावीरं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति, अत्थेगइया आजीविया थेरा गोसालं चेव मंखलिपुत्तं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति।

अने मंखलिपुत्र गोशालक मिथ्यावादी छे." श्रमण भगवान् महावीरे 'हे आर्यो!' ए प्रमाणे निर्ग्रन्थोने बोलावी एम कह्युं के 'हे आर्यो! जेम कोइ तृणनो राशि, काष्ठनो राशि, पांदडानो राशि, त्वचा–छालनो राशि, तुष–फोतरानो राशि, भुसानो राशि, छाणनो राशि अने कचरानो राशि अग्निथी दग्ध थयेलो, अग्निथी युक्त अने अग्निथी परिणमेलो होय तो ते जेनुं तेज हणायुं छे, जेनुं तेज गयेलुं छे, जेनुं तेज नष्ट थयुं छे, जेनुं तेज भ्रष्ट थयुं छे, जेनुं तेज लुप्त थयेलुं छे अने जेनुं तेज विनष्ट थयेलुं छे एवो यावत्–थाय, ए प्रमाणे मंखलिपुत्र गोशालक मारो वध करवा माटे शरीरमांथी तेजोलेश्या बहार काढीने जेनुं तेज हणायुं छे एवो, तेजरहित अने यावत्–विनष्टतेजवाळो थयो छे, माटे हे आर्यो! तमारी इच्छाथी तमे मंखलिपुत्र गोशालकनी साथे धार्मिक प्रतिचोदना–तेना मतथी प्रतिकूल वचन कहो, धार्मिक प्रतिचोदना करी धार्मिक प्रतिसारणा–तेना मतथी प्रतिकूलपणे विस्मृत अर्थनुं संस्मरण करावो, धार्मिक प्रतिसारणा करी धार्मिक वचनना प्रत्युपचारवडे प्रत्युपचार करो, तेमज अर्थ–प्रयोजन, हेतु, प्रश्न, व्याकरण–उत्तर अने कारण वडे पूछेला प्रश्ननो उत्तर न आपी शके तेम निरुत्तर करो'.

श्रमणोए गोशालकने प्रश्नो पूछी निरुत्तर कर्यो.

२०. ज्यारे श्रमण भगवंत महावीरे ए प्रमाणे कह्युं त्यारे ते श्रमण निर्ग्रन्थो श्रमण भगवंत महावीरने वांदे छे, नमे छे. वंदन–नमस्कार करी ज्यां गोशालक मंखलिपुत्र छे त्यां आवी मंखलिपुत्र गोशालकने धर्मसंबन्धी प्रतिचोदना–तेना मतथी प्रतिकूल वचनो कहे छे, धर्मसंबन्धी प्रतिचोदना करी धार्मिक प्रतिसारणा–तेना मतने प्रतिकूलपणे अर्थनुं स्मरण करावे छे, धर्मसंबन्धी प्रतिसारणा करी धर्मसंबन्धी वचनना प्रत्युपचारवडे प्रत्युपचार करे छे अने अर्थ–प्रयोजन, हेतु अने कारणवडे यावत्–तेने निरुत्तर करे छे.

निरुत्तर थवाथी गोशालकनुं गुस्से थवुं अने तेना केटला एक शिष्योनुं भगवंतने आश्रयी रहेवुं.

२१. त्यार बाद श्रमण निर्ग्रन्थोए धार्मिक प्रतिचोदना–तेना मतथी प्रतिकूल प्रश्नो करी अने यावत्–तेने निरुत्तर कर्यो एटले मंखलिपुत्र गोशालक अत्यन्त गुस्से थयो अने यावत्–क्रोधथी अत्यंत प्रज्वलित थयो, परन्तु श्रमण निर्ग्रन्थोना शरीरने कंइपण पीडा के उपद्रव करवाने तथा तेना कोइ अवयवनो छेद करवाने समर्थ न थयो. त्यार पछी आजीविक स्थविरो श्रमण निर्ग्रन्थो वडे धर्मसंबन्धी तेना मतथी प्रतिकूलपणे कहेवायेला, धर्मसंबन्धी प्रतिसारणा–तेना मतथी प्रतिकूलपणे स्मरण करावायेला, अने धर्मसंबन्धी प्रत्युपचार वडे प्रत्युपचार करायेला तथा अर्थ अने हेतुथी यावत्–निरुत्तर करायेला, अत्यन्त गुस्से करायेला, यावत्–क्रोधथी बळता, श्रमण अने निर्ग्रन्थना शरीरने कंईपण पीडा–उपद्रव के अवयवोना छेद नहि करता एवा मंखलिपुत्र गोशालकने जोईने तेनी पासेथी पोते नीकळ्या, अने त्यांथी नीकळी ज्यां श्रमण भगवंत महावीर छे त्यां आव्या, त्यां आवीने श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार प्रदक्षिणा करी, वांदी अने नमीने श्रमण भगवान् महावीरनो आश्रय करी विहरवा लाग्या, अने केटला एक आजीविक स्थविरो मंखलिपुत्र गोशालकनोज आश्रय करी विहरवा लाग्या.

२२. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते जस्सट्ठाए हव्वमागए तमट्ठं असाहेमाणे, रुंदाइं पलोएमाणे, दीहुण्हाइं नीससमाणे, दाढियाए लोमाए लुंचमाणे, अवडुं कंडूयमाणे, पुयलिं पप्फोडेमाणे, हत्थे विणिद्धुणमाणे, दोहि वि पाएहिं भूमिं कोट्टेमाणे, 'हा हा अहो! हओऽहमस्सि'त्ति कट्टु समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सावत्थी नगरी, जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि अंबकूणगहत्थगए, मज्जपाणगं पियमाणे, अभिक्खणं गायमाणे, अभिक्खणं नच्चमाणे, अभिक्खणं हालाहलाए कुंभकारीए अंजलिकम्मं करेमाणे, सीयलएणं मट्टियापाणएणं आयंचणिउदएणं गायाइं परिसिंचमाणे विहरति।

२३. 'अज्जो'त्ति समणे भगवं महावीरे समणे निग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी—'जावतिए णं अज्जो! गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं ममं वहाए सरीरगंसि तेये निसट्ठे, से णं अलाहि पज्जत्ते सोलसण्हं जणवयाणं, तं जहा—१ अंगाणं, २ वंगाणं, ३ मगहाणं, ४ मलयाणं, ५ मालवगाणं, ६ अच्छाणं, ७ वच्छाणं, ८ कोच्छाणं, ९ पाढाणं, १० लाढाणं, ११ वज्जाणं, १२ मोलीणं, १३ कासीणं, १४ कोसलाणं, १५ अवाहाणं, १६ संभुत्तराणं घाताए, वहाए, उच्छादणयाए, भासीकरणयाए। जं पि य अज्जो! गोसाले मंखलिपुत्ते हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि अंबकूणगहत्थगए, मज्जपाणं पियमाणे, अभिक्खणं जाव—अंजलिकम्मं करेमाणे विहरइ, तस्स वि य णं वज्जस्स पच्छादणट्ठयाए इमाइं अट्ठ चरिमाइं पन्नवेति। तंजहा—१ चरिमे पाणे, २ चरिमे गेये, ३ चरिमे नट्टे, ४ चरिमे अंजलिकम्मे, ५ चरिमे पोक्खलसंवट्टए महामेहे, ६ चरिमे सेयणए गंधहत्थी, ७ चरिमे महासिलाकंटए संगामे, ८ अहं च णं इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसाए तित्थंकराणं चरिमे तित्थंकरे सिज्झिस्सं, जाव—अंतं करेस्सं ति। जं पि य अज्जो! गोसाले मंखलिपुत्ते सीयलएणं मट्टियापाणएणं आयंचणिउदएणं गायाइं परिसिंचमाणे विहरइ, तस्स वि य णं वज्जस्स पच्छादणट्ठयाए इमाइं चत्तारि पाणगाइं चत्तारिऽपाणगाइं पन्नवेति।

२४. [प्र०] से किं तं पाणए? [उ०] पाणए चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा—१ गोपुट्ठए, २ हत्थमद्दियए, ३ आयवतत्तए, ४ सिलापब्भट्ठए, सेत्तं पाणए।

गोशालकनुं भगवंत पासेथी हालाहला कुंभारणने घेर जवुं.

२२. त्यार बाद मंखलिपुत्र गोशालक जेने माटे शीघ्र आव्यो हतो ते कार्यने नहि साधतो, दिशाओ तरफ लांबी दृष्टिथी जोतो, दीर्घ अने उष्ण नीसासा नांखतो, दाढिना वाळने खेंचतो, अवटु—डोकनी पाछळना भागने खजवाळतो, पुतप्रदेशने प्रस्फोटित करतो, हाथने हलावतो अने बने पग वडे भूमिने कूटतो, 'हा हा! अरे! हुं हणायो छुं'—एम विचारी श्रमण भगवंत महावीरनी पासेथी अने कोष्ठक चैत्यथी नीकळी ज्यां श्रावस्ती नगरी छे, अने ज्यां हालाहलनामे कुंभारणनुं कुंभकारापण—हाट छे त्यां आव्यो. त्यां आवीने हालाहला कुंभारणना कुंभकारापणमां जेना हाथमां *आम्रफल रहेलुं छे एवो, मद्यपान करतो, वारंवार गातो, वारंवार नाचतो, वारंवार हालाहला कुंभारणने अंजलि करतो अने माटीना भाजनमां रहेला शीतल माटीना पाणी वडे गात्रने सींचतो विहरे छे.

तेजोलेश्यानुं सामर्थ्य.

२३. 'हे आर्यो'! एम कहीने श्रमण भगवान् महावीरे श्रमण निर्ग्रन्थोने आमंत्रीने ए प्रमाणे कह्युं के हे आर्यो! मंखलिपुत्र गोशालके मारो वध करवा माटे शरीरथकी तेजोलेश्या काढी हती, ते आ प्रमाणे—१ अंग, २ वंग, ३ मगध, ४ मलय, ५ मालव, ६ अच्छ, ७ वत्स, ८ कौत्स, ९ पाट, १० लाट, ११ वज्र, १२ मौली, १३ काशी, १४ कोशल, १५ अबाध अने १६ संभुक्तर—ए सोळ देशनो घात करवा माटे, वध करवा माटे, उच्छेदन करवा माटे, भस्म करवा माटे समर्थ हती. वळी हे आर्यो! मंखलिपुत्र गोशालक हालाहला कुंभारणना कुंभकारापणमां आम्रफल हाथमां ग्रहण करी मद्यपान करतो, वारंवार यावत्—अंजलिकर्म करतो विहरे छे ते अवद्य—दोषने प्रच्छादन—ढांकवामाटे आ आठ चरम—छेल्ली वस्तु कहे छे. ते आ प्रमाणे—१ चरम पान, २ चरम गान, ३ चरम नाट्य, ४ चरम अंजलिकर्म, ५ चरम पुष्कल संवर्त महामेघ, ६ चरम सेचनक गन्धहस्ती, ७ चरम महाशिलाकंटक संग्राम अने ८ हुं आ अवसर्पिणीमां चोवीश तीर्थंकरोमां चरम तीर्थंकरपणे सिद्ध थईश, अने यावत्—'सर्व दुःखोनो अन्त करीश'. वळी हे आर्यो! मंखलिपुत्र गोशालक माटीना पात्रमां रहेला माटीमिश्रित शीत पाणीवडे शरीरने सींचतो विचरे छे ते अवद्यने पण ढांकवाने माटे आ चार प्रकारना पानक—पीणां अने चार नहि पीवा योग्य (शीतल अने दाहोपशमक) अपानक जणावे छे—

चार प्रकारना पानक.

२४. [प्र०] पाणी केटला प्रकारे कह्युं छे? [उ०] पाणी चार प्रकारे कह्युं छे, ते आ प्रमाणे—१ गायना पृष्ठथी पडेलुं, २ हाथथी मसळेलुं, ३ सूर्यना तापथी तपेलुं, अने ४ शिलाथी पडेलुं. ए प्रमाणे पाणी कह्युं.

---

२२. * गोशालके तेजोलेश्याजनित दाहना उपशमन माटे चूसवा माटे हाथमां आम्रफल (गोटली) राख्युं हतुं.

२५. [प्र०] से किं तं अपाणए? [उ०] अपाणए चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा–१ थालपाणए, २ तयापाणए, ३ सिंबलिपाणए, ४ सुद्धपाणए।

२६. [प्र०] से किं तं थालपाणए? [उ०] था० २ जण्णं दाथालगं वा दावारगं वा दाकुंभगं वा दाकलसं वा सीयलगं उल्लगं हत्थेहिं परामुसइ, न य पाणियं पियइ; सेत्तं थालपाणए।

२७. [प्र०] से किं तं तयापाणए? [उ०] त० २ जण्णं अंबं वा अंबाडगं वा जहा पओगपदे जाव–बोरं वा तिंदुरुयं वा, तरुणगं वा, आमगं वा आसगंसि आवीलेति वा पवीलेति वा, न य पाणियं पियइ, सेत्तं तयापाणए।

२८. [प्र०] से किं तं सिंबलिपाणए? [उ०] सिं० २ जण्णं कलसंगलियं वा, मुग्गसिंगलियं, वा माससंगलियं वा सिंबलिसंगलियं वा तरुणियं आमियं आसगंसि आवीलेति वा, पवीलेति वा, ण य पाणियं पियति, सेत्तं सिंबलिपाणए।

२९. [प्र०] से किं तं सुद्धपाणए? [उ०] सु० २ जण्णं छमासे सुद्धखाइमं खाइति, दो मासे पुढविसंथारोवगए य, दो मासे कट्ठसंथारोवगए, दो मासे दब्भसंथारोवगए, तस्स णं बहुपडिपुण्णाणं छण्हं मासाणं अंतिमराईए इमे दो देवा महिड्ढिया जाव–महेसक्खा अंतियं पाउब्भवंति, तंजहा–पुन्नभद्दे य माणिभद्दे य। तए णं ते देवा सीयलएहिं उल्लएहिं हत्थेहिं गायाइं परामुसंति, जे णं ते देवे साइज्जति, से णं आसीविसत्ताए कम्मं पकरेति, जे णं ते देवे नो साइज्जति तस्स णं संसि सरीरगंसि अगणिकाए संभवति, से णं सएणं तेएणं सरीरगं झामेति, झा० २ झामेत्ता तओ पच्छा सिज्झति, जाव–अंतं करेति, सेत्तं सुद्धपाणए।

३०. तत्थ णं सावत्थीए नयरीए अयंपुले णामं आजीविओवासए परिवसइ, अड्ढे, जाव–अपरिभूए, जहा हालाहला, जाव–आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरति। तए णं तस्स अयंपुलस्स आजीविओवासगस्स अन्नया कदायि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव–समुप्पज्जित्था–'किंसंठिया हल्ला पण्णत्ता'?

अपानकना चार प्रकार.

२५. [प्र०] अपानक केटला प्रकारे छे? [उ०] अपानक चार प्रकारे छे, ते आ प्रमाणे–१ स्थालनुं पाणी, २ वृक्षादिनी छालनुं पाणी, ३ शींगोनुं पाणी अने ४ शुद्ध पाणी (देवहस्तना स्पर्शनुं पाणी).

स्थालपाणी.

२६. [प्र०] स्थालपाणी केवा प्रकारे कह्युं छे? [उ०] जे उदकथी भींजायेलो स्थाल, पाणीथी भीनो वारक–करवडो, पाणीथी भीनो मोटो घट, पाणीथी भीनो न्हानो घट, अथवा पाणीथी भीना माटीना वासण, तेनो हाथथी स्पर्श करे पण पाणी न पीए ते स्थाल पाणी, ए प्रमाणे स्थालपाणी कह्युं.

त्वचापाणी.

२७. [प्र०] त्वचापाणी केवा प्रकारनुं छे? [उ०] जे आंबो, अंबाडग–इत्यादि *प्रयोगपदमां कह्या प्रमाणे यावत्–बोर, तिंदुरुक सुधी जाणवा, ते तरुण–अपक्व अने आम–काचा होय, तेने मुखमां नांखी थोडुं चावे, विशेष चावे, पण पाणी न पीए ते त्वचापाणी. ए प्रमाणे त्वचापाणी कह्युं.

शींगनुं पाणी.

२८. [प्र०] शींगोनुं पाणी केवा प्रकारनुं छे? [उ०] जे कलायसिंबली–वटाणानी शींग, मगनी शींग, अडदनी शींग के शिंबलीनी शींग वगेरे तरुण–अपक्व अने आम–काची होय तेने मुखमां थोडुं चावे के विशेष चावे, पण तेनुं पाणी न पीए ते शींगोनुं पाणी कहेवाय. ए प्रमाणे शींगनुं पाणी कह्युं.

शुद्ध पाणी.

२९. [प्र०] शुद्ध पाणी केवा प्रकारनुं छे? [उ०] जे छ मास सुधी शुद्ध खादिम आहारने खाय, तेमां बे मास सुधी पृथिवीरूप संस्तारकने विषे रहे, बे मास सुधी लाकडाना संस्तारकने विषे रहे, अने बे मास सुधी दर्भना संस्तारकने विषे रहे, तेने बरोबर पूर्ण थयेला छ मासनी छेल्ली रात्रीए महर्द्धिक अने यावत्–महासुखवाळा बे देवो तेनी पासे प्रगट थाय, ते आ प्रमाणे–पूर्णभद्र अने माणिभद्र; त्यार पछी ते देवो शीतळ अने आर्द्र हस्त वडे शरीरना अवयवोनो स्पर्श करे, हवे जे ते देवोने अनुमोदे, एटले तेना आ कार्यने सारुं जाणे ते आशीविषपणे कर्म करे, जे ते देवोने न अनुमोदे, तेना पोताना शरीरमां अग्निकाय उत्पन्न थाय, अने ते पोताना तेज वडे शरीरने बाळे, अने त्यार पछी ते सिद्ध थाय, यावत्–सर्व दुःखोनो अन्त करे, ते शुद्ध पानक कहेवाय. ए प्रमाणे शुद्ध पानक कह्युं.

आजीविकोपासक अयंपुलनो गोशालकनी पासे जवानो संकल्प.

३०. ते श्रावस्ती नगरीमां अयंपुलनामे आजीविकमतनो उपासक–श्रावक रहेतो हतो. ते धनिक, यावत्–कोइथी पराभव न पामे तेवो अने हालाहला कुंभारणनी पेठे यावत्–आजीविकना सिद्धान्त वडे आत्माने भावित करतो विहरतो हतो. त्यार पछी ते अयंपुल नामे आजीविकोपासकने अन्य कोइ दिवसे कुटुंबजागरण करता मध्यरात्रिना समये आवा प्रकारनो आ संकल्प यावत्–उत्पन्न थयो के–[illegible]

२७ *प्रज्ञा० प० १६ प० ३२८–१.

तए णं तस्स अयंपुलस्स आजीवियोवासगस्स दोच्चं पि अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव–समुप्पज्जित्था–'एवं खलु ममं धम्मायरिए, धम्मोवएसए गोसाले मंखलिपुत्ते उप्पन्ननाणदंसणधरे जाव–सव्वन्नू सव्वदरिसी इहेव सावत्थीए नगरीए हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि आजीवियसंघसंपरिवुडे आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तं सेयं खलु मे कल्लं जाव–जलंते गोसालं मंखलिपुत्तं वंदित्ता, जाव–पज्जुवासेत्ता इमं एयारूवं वागरणं वागरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेति, एवं संपेहेत्ता कल्लं जाव–जलंते ण्हाए, कय० जाव–अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे, साओ गिहाओ पडिनिक्खमति, सा० २ पडिनिक्खमित्ता पायविहारचारेणं सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता गोसालं मंखलिपुत्तं हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि अंबकूणगहत्थगयं जाव–अंजलिकम्मं करेमाणं सीयलएणं मट्टिया० जाव–गायाइं परिसिंचमाणं पासइ, पासित्ता लज्जिए, विलिए, विड्डे, सणियं २ पच्चोसक्कइ। तए णं ते आजीविया थेरा अयंपुलं आजीवियोवासगं लज्जियं जाव–पच्चोसक्कमाणं पासइ, पासित्ता एवं वयासी–'एहि ताव अयंपुला! एत्तओ'। तए णं से अयंपुले आजीवियोवासए आजीवियथेरेहिं एवं वुत्ते समाणे जेणेव आजीविया थेरा तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता आजीविए थेरे वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासन्ने जाव–पज्जुवासइ। 'अयंपुला'इ आजीविया थेरा अयंपुलं आजीवियोवासगं एवं वयासी–'से नूणं ते अयंपुला! पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि जाव–किंसंठिया हल्ला पण्णत्ता'? तए णं तव अयंपुला! दोच्चं पि अयमेया० तं चेव सव्वं भाणियव्वं, जाव–सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे, जेणेव इहं तेणेव हव्वमागए। से नूणं ते अयंपुला! अट्ठे समट्ठे? हंता अत्थि। जं पि य अयंपुला! तव धम्मायरिए धम्मोवदेसए गोसाले मंखलिपुत्ते हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि अंबकूणगहत्थगए जाव–अंजलिं करेमाणे विहरति, तत्थ वि णं भगवं इमाइं अट्ठ चरिमाइं पन्नवेति, तंजहा–चरिमे पाणे, जाव–अंतं करेस्सति'। जे वि य अयंपुला! तव धम्मायरिए धम्मोवदेसए गोसाले मंखलिपुत्ते सीयलएणं मट्टिया० जाव–विहरति, तत्थ वि णं भगवं इमाइं चत्तारि पाणगाइं, चत्तारि अपाणगाइं पन्नवेति। से किं तं पाणए? २ जाव–तओ पच्छा सिज्झति, जाव–अंतं करेति। तं गच्छ णं तुमं अयंपुला! एस चेव तव धम्मायरिए धम्मोवदेसए गोसाले मंखलिपुत्ते इमं एयारूवं वागरणं वागरिहिए'त्ति।

आकारे हल्ला (कीटविशेष) कहेली छे"? त्यार पछी ते अयंपुलनामे आजीविकोपासकने बीजी वार आवा प्रकारनो आ संकल्प उत्पन्न थयो के "ए प्रमाणे खरेखर मारा धर्माचार्य अने धर्मोपदेशक मंखलिपुत्र गोशालक उत्पन्न थयेला ज्ञान–दर्शनने धारण करनारा, यावत्–सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी छे, तेओ आज श्रावस्ती नगरीमां हालाहला कुंभारणना कुंभकारापण–हाटमां आजीविकसंघसहित आजीविकना सिद्धान्त वडे आत्माने भावित करता विहरे छे. ते माटे मारे आवती काले यावत्–सूर्योदय थये मंखलिपुत्र गोशालकने वंदन करी, पर्युपासना करी आवा प्रकारनो आ प्रश्न पूछवो श्रेयरूप छे"–एम विचारी काले यावत्–सूर्योदय थये स्नान करी, बलिकर्म करी, अल्प अने महामूल्य आभरणवडे शरीरने अलंकृत करी, पोताना घर थकी बहार नीकळी, पगे चाली, श्रावस्ती नगरीना मध्यभागमां थई, ज्यां हालाहला नामे कुंभारणनुं कुंभकारापण छे, त्यां आवी ते हालाहला नामे कुंभारणना कुंभकारापणमां जेना हाथमां आम्रफल रहेलुं छे एवा यावत्–हालाहला कुंभारणने अंजलिकर्म करता अने शीतल माटीमिश्रित जळवडे यावत्–शरीरना अवयवने सिंचता मंखलिपुत्र गोशालकने जुए छे; जोइने ते लज्जित, विलखो अने व्रीडित थई धीमे धीमे पाछो जाय छे. त्यार पछी ते आजीविक स्थविरोए लज्जित यावत्–पाछा जता आजीविकोपासक अयंपुलने जोई ए प्रमाणे कह्युं–'हे अयंपुल! अहिं आव'. ज्यारे आजीविक स्थविरोए ए प्रमाणे कह्युं त्यारे ते अयंपुल ज्यां आजीविक स्थविरो हता त्यां आव्यो, अने त्यां आवी आजीविक स्थविरोने वंदन–नमस्कार करी अत्यन्त पासे नहि तेम अत्यंत दूर नहि एम बेसी पर्युपासना करवा लाग्यो. 'हे अयंपुल'! एम कही आजीविक स्थविरोए आजीविकोपासक अयंपुलने ए प्रमाणे कह्युं–"हे अयंपुल! खरेखर तने मध्यरात्रिना समये यावत्–केवा आकारवाळी हल्ला कहेली छे? [एवो संकल्प थयो हतो?] त्यार पछी तने बीजीवार आवा प्रकारनो आ संकल्प थयो हतो'?–इत्यादि पूर्वोक्त सर्व कहेवुं, यावत्–श्रावस्ती नगरीना मध्यभागमां ज्यां हालाहला कुंभारणनुं कुंभकारापण छे अने ज्यां आ स्थान छे, त्यां तुं शीघ्र आव्यो. हे अयंपुल! खरेखर आ वात सत्य छे? हा सत्य छे. हे अयंपुल! वळी तारा धर्माचार्य अने धर्मोपदेशक मंखलिपुत्र गोशालक हालाहला कुंभारणना कुंभकारापणमां आम्रफल हाथमां लइ यावत्–अंजलि करता विहरे छे, तेमां पण ते भगवान् आठ चरमनी प्ररूपणा करे छे. ते आ प्रमाणे–१ चरमपानक०, यावत्–सर्व दुःखनो अन्त करशे. वळी हे अयंपुल! तारा धर्माचार्य अने धर्मोपदेशक मंखलिपुत्र गोशालक शीतल माटीना पाणी वडे यावत्–शरीरने छांटता यावत्–विहरे छे, तेमां पण ते भगवान् चार पानक अने चार अपानक प्ररूपे छे. पानक केवा प्रकारे छे? यावत्–त्यार पछी ते सिद्ध थाय छे, यावत्–'सर्व दुःखोनो अन्त करे छे'. ते माटे हे अयंपुल! तुं जा, अने आ तारा धर्माचार्य अने धर्मोपदेशक मंखलिपुत्र गोशालकने आवा प्रकारनो आ प्रश्न पूछजे.'

अयंपुलनुं आगमन, गोशालकनी विचित्र अवस्था जोइ पाछुं जवुं, स्थविरोए अयंपुलने पाछा बोलावी तेना मनना संकल्पनुं निवेदन अने तेना मननुं समाधान.

३१. तए णं से अयंपुले आजीवियोवासए आजीविएहिं थेरेहिं एवं वुत्ते समाणे हट्ठ-तुट्ठे उट्ठाए उट्ठेति, उ० २ उट्ठेत्ता जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तए णं ते आजीविया थेरा गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अंबकूणगएडावणट्ठयाए एगंतमंते संगारं कुव्वंति। तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते आजीवियाणं थेराणं संगारं पडिच्छइ, पं० २ पडिच्छित्ता अंबकूणगं एगंतमंते एडेइ। तए णं से अयंपुले आजीवियोवासए जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवा-गच्छित्ता गोसालं मंखलिपुत्तं तिक्खुत्तो० जाव-पज्जुवासति। 'अयंपुला' ती गोसाले मंखलिपुत्ते अयंपुलं आजीवियोवासगं एवं वयासी-'से नूणं अयंपुला! पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि जाव-जेणेव ममं अंतियं तेणेव हव्वमागए। से नूणं अयंपुला! अट्ठे समट्ठे? हंता अत्थि, तं नो खलु एस अंबकूणए, अंबचोयए णं एसे। किंसंठिया हल्ला पन्नत्ता? वंसीमूलसंठिया हल्ला पण्णत्ता। वीणं वाएहि रे वीरगा वी० २। तए णं से अयंपुले आजीवियोवासए गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं इमं एयारूवं वागरणं वागरिए समाणे हट्ठ-तुट्ठे जाव-हियए गोसालं मंखलिपुत्तं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता पसिणाइं पुच्छति, पसिणाइं पुच्छित्ता अट्ठाइं परियादियइ, अ० २ परियादिइत्ता उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठाए उट्ठेत्ता गोसालं मंखलिपुत्तं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता जाव-पडिगए।

३२. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते अप्पणो मरणं आभोएइ, आभोइत्ता आजीविए थेरे सद्दावेइ, स० २ सद्दावेत्ता एवं वयासी-'तुब्भे णं देवाणुप्पिया! ममं कालगयं जाणेत्ता सुरभिणा गंधोदएणं ण्हाणेह, ण्हा० २ ण्हावित्ता पम्हलसुकुमालाए गंधकासाईए गायाइं लूहेह, गा० २ लूहेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपह, स० २ अणुलिंपित्ता महरिहं हंसलक्खणं पडसाडगं नियंसेह, मह० २ नियंसित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेह, स० २ करेत्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहेह, पुरि० २ दुरूहित्ता सावत्थीए नयरीए सिंघाडग० जाव-पहेसु महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा एवं वदह-'एवं खलु देवाणुप्पिया! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे, जिणप्पलावी, जाव-जिणसद्दं पगासेमाणे विहरित्ता इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसाए तित्थयराणं चरिमे तित्थयरे, सिद्धे, जाव-सव्वदुक्खप्पहीणे'-इड्ढिसक्कारसमुदएणं मम सरीरगस्स णीहरणं करेह। तए णं ते आजीविया थेरा गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति।

अयंपुलनुं गोशालक पासे आगमन.

३१. त्यार बाद ते अयंपुल आजीविक स्थविरोए ए प्रमाणे कह्युं एटले हृष्ट अने संतुष्ट थई उठ्यो, उठीने ज्यां मंखलिपुत्र गोशालक हतो त्यां जवा तेणे विचार कर्यो. त्यारे ते आजीविक स्थविरोए मंखलिपुत्र गोशालकने आम्रफल एक स्थळे मूकाववा माटे संकेत कर्यो. त्यार बाद ते मंखलिपुत्र गोशालक आजीविक स्थविरोनो संकेत जाणी आम्रफलने एक स्थळे मूके छे. त्यार पछी ते आजीविकोपासक अयंपुल ज्यां मंखलिपुत्र गोशालक हतो त्यां आवी मंखलिपुत्र गोशालकने त्रण वार प्रदक्षिणा करी यावत्-पर्युपासना करे छे. 'हे अयंपुल'! ए प्रमाणे कही मंखलिपुत्र गोशालके आजीविकोपासक अयंपुलने आ प्रमाणे कह्युं-'अयंपुल! खरेखर तने मध्यरात्रिना समये यावत्-तने संकल्प थयो हतो, अने ज्यां हुं छुं त्यां मारी पासे तुं शीघ्र आव्यो, हे अयंपुल! खरेखर आ वात सत्य छे'? हा सत्य छे. ते माटे खरेखर आ आम्रनी गोटली नथी, परन्तु ते आम्रफलनी *छाल छे. "केवा आकारवाळी हल्ला होय छे" [आवो जे संकल्प थयो हतो तेना उत्तरमां] वांसना मूलना आकार जेवी हल्ला होय छे. [वळी वच्चे गोशालक उन्मादमां कहे छे-] "हे वीरा! वीणा वगाड, हे वीरा! वीणा वगाड." त्यार बाद मंखलिपुत्र गोशालके आवा प्रकारनो आ प्रश्ननो उत्तर आप्यो एटले प्रसन्न-संतुष्ट अने जेनुं चित्त आकर्षित थयुं छे एवो आजीविकोपासक अयंपुल मंखलिपुत्र गोशालकने वंदन-नमस्कार करी प्रश्नो पूछे छे, प्रश्नो पूछीने अर्थ ग्रहण करे छे, अर्थ ग्रहण करी उठी [पुनः] मंखलिपुत्र गोशालकने वंदन अने नमस्कार करी यावत्-ते [स्वस्थानके] पाछो जाय छे.

गोशालके अयंपुलना संकल्पनुं निवेदन अने तेना मननुं समाधान.

पोताना मरण बाद देहने उत्सवपूर्वक बहार काढवा संबन्धे गोशालकनी आज्ञा.

३२. त्यार बाद मंखलिपुत्र गोशालके पोतानुं मरण [नजीक] जाणीने आजीविक स्थविरोने बोलाव्या, अने बोलावी तेणे ए प्रमाणे कह्युं-"हे देवानुप्रियो! ज्यारे मने कालधर्म प्राप्त थयेलो जाणो त्यारे सुगंधी गन्धोदक वडे स्नान करावजो, स्नान करावी छेडावाळा अने सुकुमाल गन्धकाषाय (सुगंधी भगवा) वस्त्रवडे शरीरने साफ करजो, शरीरने साफ करी सरस गोशीर्षचन्दनवडे शरीरने विलेपन करजो, विलेपन करी महामूल्य हंसना चिह्नवाळा पटशाटकने पहेरावजो, पहेरावी सर्वालंकारथी विभूषित करजो, विभूषित करी हजार पुरुषोथी उपाडवा लायक शीबिकामां बेसाडजो, शीबिकामां बेसाडी श्रावस्ती नगरीमां शृंगाटकना आकारवाळा यावत्-राजमार्गमां मोटा मोटा शब्दथी उद्घोषणा करता आ प्रमाणे कहेजो-"ए प्रमाणे खरेखर हे देवानुप्रियो! मंखलिपुत्र गोशालक जिन, जिनप्रलापी, यावत्-जिनशब्दने प्रकाश करता विहरीने आ अवसर्पिणीना चोवीश तीर्थंकरोमां छेल्ला तीर्थंकर थईने सिद्ध थया, यावत्-सर्वदुःखरहित थया-आ प्रमाणे ऋद्धि अने सत्कारना समुदायथी मारा शरीरने बहार काढजो." त्यारे ते आजीविक स्थविरोए मंखलिपुत्र गोशालकनी ए वातनो विनयपूर्वक स्वीकार कर्यो.

---

३१ * गोशालक अयंपुलने कहे छे के तुं जे आम्रफलनी गोटली धारे छे ते नथी, पण आम्रफलनी छाल छे, अने तेनुं पान निर्वाणकाले पीवा योग्य छे. टीका—

१३. तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सत्तरत्तंसि परिणममाणंसि पडिलद्धसम्मत्तस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव–समुप्पज्जित्था–'णो खलु अहं जिणे, जिणप्पलावी, जाव–जिणसद्दं पगासेमाणे विहरति (विहरिते), अहं णं गोसाले चेव मंखलिपुत्ते समणघायए, समणमारए, समणपडिणीए, आयरिय–उवज्झायाणं अयसकारए, अवण्णकारए, अकित्तिकारए, बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाणं वा परं वा तदुभयं वा वुग्गाहेमाणे, वुप्पाएमाणे विहरित्ता सएणं तेएणं अन्नाइट्ठे समाणे अंतो सत्तरत्तस्स पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए छउमत्थे चेव कालं करेस्सं। समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव–जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ'–एवं संपेहेति, एवं संपेहित्ता, आजीविए थेरे सद्दावेइ, आ० २ सद्दावेत्ता उच्चावयसवहसाविए पकरेति, उच्चा० २ पकरेत्ता एवं वयासी–'नो खलु अहं जिणे, जिणप्पलावी, जाव–पकासेमाणे विहरइ (विहरिए), अहण्णं गोसाले मंखलिपुत्ते, समणघायए, जाव–छउमत्थे चेव कालं करेस्सं, समणे भगवं महावीरे जिणे, जिणप्पलावी, जाव–जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ, तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया! ममं कालगयं आणेत्ता वामे पाए सुंबेणं बंधह, बा० २ बंधित्ता तिक्खुत्तो मुहे उट्ठुहह, ति० २ उट्ठुहित्ता सावत्थीए नगरीए सिंघाडग० जाव–पहेसु आकड्ढविकड्ढिं करेमाणा महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं वदह–'नो खलु देवाणुप्पिया! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे, जिणप्पलावी, जाव–विहरिए, एस णं गोसाले चेव मंखलिपुत्ते, समणघायए, जाव–छउमत्थे चेव कालगए। समणे भगवं महावीरे जिणे, जिणप्पलावी, जाव–विहरइ'–महया अणिड्ढी–असक्कारसमुदएणं ममं सरीरगस्स नीहरणं करेज्जाह'–एवं वदित्ता कालगए।

१४. तए णं आजीविया थेरा गोसालं मंखलिपुत्तं कालगयं जाणित्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स दुवाराइं पिहेंति, दु० २ पिहेत्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स बहुमज्झदेसभाए सावत्थिं नगरिं आलिहंति, सा० २ आलिहित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं वामे पादे सुंबेणं बंधति, बा० २ बंधित्ता तिक्खुत्तो मुहे उट्ठुभंति, उट्ठुभित्ता सावत्थीए नगरीए सिंघाडग० जाव–पहेसु आकड्ढविकड्ढिं करेमाणा, णीयं २ सद्देणं उग्घोसेमाणा २ एवं वयासी–'नो खलु देवाणुप्पिया! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे, जिणप्पलावी, जाव–विहरिए, एस णं गोसाले चेव मंखलिपुत्ते समणघायए, जाव–छउमत्थे चेव कालगए। समणे भगवं महावीरे जिणे, जिणप्पलावी जाव–विहरइ, सवहपडिमोक्खणगं करेंति, स० २ करेत्ता दोच्चं पि पूया–सक्कार–थिरीकरणट्ठयाए गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स वामाओ पादाओ सुंबं मुयंति, सुं० २ मुइत्ता हालाहलाए

१३. हवे ते मंखलिपुत्र गोशालकने सात रात्री परिणमतां–व्यतीत थतां सम्यक्त्व प्राप्त थयुं, अने तेने आवा प्रकारनो अध्यवसाय–संकल्प उत्पन्न थयो–"हुं खरेखर जिन नथी, तो पण जिनप्रलापी, यावत् जिन शब्दने प्रकाशतो विहर्यो छुं. हुं श्रमणनो घात करनार, श्रमणने मारनार, श्रमणनो प्रत्यनीक–विरोधी, आचार्य अने उपाध्यायनो अपयश करनार, अवर्णवादकारक अने अपकीर्ति करनार मंखलिपुत्र गोशालक छुं. तथा घणी असद्भावना वडे अने मिथ्यात्वाभिनिवेश वडे पोताने, परने अने बन्नेने व्युद्ग्राहित–भ्रान्त करतो, व्युत्पादित (मिथ्यात्वयुक्त) करतो विहरीने मारा पोतानी तेजोलेश्या वडे पराभव पामी सात रात्रीना अन्ते पित्तज्वरथी व्याप्त शरीरवाळो थई दाहनी उत्पत्तिथी छद्मस्थावस्थामां ज काळ करीश. श्रमण भगवान् महावीर जिन छे अने जिनप्रलापी यावत्–जिनशब्दने प्रकाशित करता विहरे छे–"एम विचारी ते (गोशालक) आजीविक स्थविरोने बोलावे छे, बोलावीने अनेक प्रकारना सोगन आपे छे, सोगन आपीने ते आ प्रमाणे बोल्यो–"हुं खरेखर जिन नथी, पण जिनप्रलापी यावत्–जिनशब्दने प्रकाश करतो विहर्यो छुं, हुं श्रमणनो घात करनार मंखलिपुत्र गोशालक छुं, यावत्–छद्मस्थावस्थामां काळ करीश. श्रमण भगवान् महावीर जिन, जिनप्रलापी, यावत्–जिनशब्दनो प्रकाश करता विहरे छे; ते माटे हे देवानुप्रियो! तमे मने काळधर्म पामेलो जाणीने मारा डाबा पगने दोरडावती बांधी त्रणवार मुखमां थूंकजो, थूंकीने श्रावस्ती नगरीमां शृंगाटकना आकारवाळा, यावत्–राजमार्गने विषे घसडता अत्यन्त मोटे शब्दे उद्घोषणा करता करता एम कहेजो के 'हे देवानुप्रियो! मंखलिपुत्र गोशालक जिन नथी, पण जिनप्रलापी अने जिनशब्दने प्रकाशित करतो विहर्यो छे. आ श्रमणनो घात करनार मंखलिपुत्र गोशालक यावत्–छद्मस्थावस्थामां ज काळधर्म पाम्यो छे. श्रमण भगवान् महावीर जिन अने जिनप्रलापी थई यावत्–विहरे छे, एम ऋद्धि अने सत्कारना समुदाय शिवाय मारा शरीरने बहार काढजो"–एम कहीने ते (गोशालक) काळधर्म पाम्यो.

गोशालकने सम्यक्त्व थयुं, 'हुं जिन नथी' एम पोतानी वास्तविक स्थिति प्रकाशित करवी, तेनो पश्चात्ताप अने महावीरजिन छे –एवुं तेनुं निवेदन.

मने काळधर्म पामेलो जाणी मारा डाबा पगने दोरडावती बांधी घसडजो अने मुखमां थूंकजो, तथा 'हुं जिन नथी' एम उद्घोषणा करता मारा शरीरने विनयपूर्वक बहार काढजो–एवी गोशालकनी पोताना शिष्योने आज्ञा.

१४. त्यार पछी आजीविक स्थविरोए मंखलिपुत्र गोशालकने काळधर्म पामेल जाणीने हालाहला कुंभारणना कुंभकारापणना द्वार बन्ध कर्यां. बारणा बन्ध करीने हालाहला कुंभारणना कुंभकारापणना बरोबर मध्य भागमां श्रावस्ती नगरीने आळेखीने मंखलिपुत्र गोशालकना शरीरने डाबे पगे दोरडा वडे बांधीने त्रणवार मुखमां थूंकीने श्रावस्ती नगरीना शृंगाटकना आकारवाळा, यावत्–राजमार्गने विषे घसडता धीमा धीमा शब्दथी उद्घोषणा करता करता आ प्रमाणे बोल्या–"हे देवानुप्रियो! मंखलिपुत्र–गोशालक जिन नथी, पण जिनप्रलापी थईने यावत्–विहर्यो छे, आ श्रमणघातक मंखलिपुत्र गोशालक यावत् छद्मस्थावस्थामां ज काळधर्म पाम्यो छे. श्रमण भगवान् महावीर जिन, अने जिनप्रलापी थईने यावत्–विहरे छे." ए प्रमाणे तेओ शपथथी छूटा थाय छे, अने बीजी वार तेनी पूजा अने सत्कारने स्थिर करवामाटे मंखलिपुत्र गोशालकना डाबा पगथी दोरडुं छोडी नांखे छे, छोडी नांखी हालाहला कुंभारणना कुंभकारापणना द्वार उघाडे छे, उघाडीने मंखलिपुत्र

आजीविक स्थविरोनुं हालाहला कुंभारणना द्वार बन्ध करी श्रावस्ती आळेखी गोशालकना कथन प्रमाणे करवुं.

कुंभकारीए कुंभकारावणस्स दुवारवयणाइं अवगुणंति, अवगुणित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं सुरभिणा गंधोदएणं ण्हाणेंति, तं चेव जाव–महया इड्ढि–सक्कारसमुदएणं गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरस्स नीहरणं करेंति।

३५. तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कदायि सावत्थीओ नगरीओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ। तेणं कालेणं तेणं समएणं मेंढियगामे नामं नगरे होत्था, वण्णओ। तस्स णं मेंढियगामस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एत्थ णं साण(ल)कोट्ठए नामं चेइए होत्था, वण्णओ, जाव–पुढविसिलापट्टओ। तस्स णं साण(ल)कोट्ठगस्स णं चेइयस्स अदूरसामंते एत्थ णं महेगे मालुयाकच्छए यावि होत्था, किण्हे किण्होभासे, जाव–निकुरंबभूए, पत्तिए, पुप्फिए, फलिए, हरियगरेरिज्जमाणे, सिरीए अतीव २ उवसोभेमाणे चिट्ठति। तत्थ णं मेंढियगामे नगरे रेवती नामं गाहावइणी परिवसति, अड्ढा, जाव–अपरिभूया। तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कदायि पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव–जेणेव मेंढियगामे नगरे जेणेव साण(ल)कोट्ठए चेइए जाव–परिसा पडिगया। तए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स सरीरगंसि विपुले रोगायंके पाउब्भूए, उज्जले जाव–दुरहियासे, पित्तज्जरपरिगयसरीरे, दाहवक्कंतीए यावि विहरति, अवियाइं लोहियवच्चाइं पि पकरेइ, चाउवण्णं वागरेति–'एवं खलु समणे भगवं महावीरे गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स तवेणं तेएणं अन्नाइट्ठे समाणे अंतो छण्हं मासाणं पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए छउमत्थे चेव कालं करेस्सति'। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी सीहे नामं अणगारे, पगइभद्दए, जाव–विणीए मालुयाकच्छगस्स अदूरसामंते छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खित्तेणं २ तवोकम्मेणं उड्ढंबाहा जाव–विहरति। तए णं तस्स सीहस्स अणगारस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अयमेयारूवे जाव–समुप्पज्जित्था–'एवं खलु ममं धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स सरीरगंसि विउले रोगायंके पाउब्भूए, उज्जले जाव–छउमत्थे चेव कालं करिस्सति, वदिस्संति य णं अन्नतित्थिया–'छउमत्थे चेव कालगए'। इमेणं एयारूवेणं महया मणोमाणसिएणं दुक्खेणं अभिभूए समाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ

गोशालकना शरीरने सुगन्धी गन्धोदक वडे स्नान करावे छे–इत्यादि पूर्वोक्त कहेवुं, यावत्–अत्यन्त मोटी ऋद्धि अने सत्कारना समुदायथी मंखलिपुत्र गोशालकना शरीरने बहार काढे छे.

मेंढिकग्राम. सानकोष्ठक चैत्य. मालुकावन.

३५. त्यार पछी श्रमण भगवान् महावीर अन्य कोइ दिवसे श्रावस्ती नगरीथी अने कोष्ठक चैत्यथी नीकळी बहारना देशोमां विहरे छे. ते काले ते समये मेंढिकग्राम नामे नगर हतुं. वर्णन. ते मेंढिकग्राम नामे नगरनी बहार उत्तर–पूर्व दिशाने विषे अहिं साणकोष्ठक (सानकोष्ठक ?) नामे चैत्य हतुं. वर्णन. यावत्–पृथिवीशिलापट्ट हतो. ते साणकोष्ठक चैत्यनी थोडे दूर अहिं मोटुं एक मालुकाना (एक बीजवाळा) वृक्षनुं वन हतुं. ते श्याम, श्यामकान्तिवाळुं, यावत्–महामेघना समूहना जेवुं हतुं. वळी ते पत्रवाळुं, पुष्पवाळुं, फळवाळुं, हरितवर्णवडे अत्यन्त देदीप्यमान अने श्री–शोभावडे अत्यन्त सुशोभित हतुं. ते मेंढिकग्राम नामे नगरमां रेवतीनामे गृहपत्नी (घरधणियाणी) रहेती हती. ते ऋद्धिवाळी अने कोइथी पराभव न पामे तेवी हती. ते समये श्रमण भगवान् महावीर अन्य कोइ दिवसे अनुक्रमे विहार करता यावत्–ज्यां मेंढिकग्राम नामे नगर छे, अने ज्यां साणकोष्ठक नामे चैत्य छे त्यां आव्या, यावत्–पर्षदा वांदीने पाछी गई. ते वखते श्रमण भगवंत महावीरना शरीरने विषे महान् पीडाकारी, उज्ज्वल–अत्यन्त दाह करनार, यावत्–दुःखे सहन करवा योग्य, यावत्–जेणे पित्तज्वर वडे शरीर व्याप्त कर्युं छे एवो अने जेमां दाह उत्पन्न थाय छे एवो रोग पेदा थयो, अने तेथी लोहीवाळा झाडा थवा लाग्या. चार वर्णना मनुष्यो कहे छे के–"ए प्रमाणे खरेखर श्रमण भगवान् महावीर मंखलिपुत्र गोशालकना तपना तेजवडे पराभव पामी छ मासने अन्ते पित्तज्वरयुक्त शरीरवाळा थईने दाहनी उत्पत्तिथी छद्मस्थावस्थामां काळ करशे." ते काले ते समये श्रमण भगवान् महावीरना अन्तेवासी–शिष्य सिंहनामे अनगार प्रकृति वडे भद्र, यावत्–विनीत हता. ते मालुकावनथी थोडे दूर निरन्तर छट्ठनो तप करवावडे बाहु ऊंचा राखी यावत्–विहरे छे. ते वखते ते सिंह अनगारने *ध्यानान्तरिकाने विषे वर्तता आवा प्रकारनो आ संकल्प यावत्–उत्पन्न थयो–"ए प्रमाणे खरेखर मारा धर्माचार्य अने धर्मोपदेशक श्रमण भगवंत महावीरना शरीरने विषे अत्यन्त दाह करनार, महान् पीडाकारी रोग पेदा थयो छे–इत्यादि यावत्–ते छद्मस्थावस्थामां काळधर्म पामशे, अन्यतीर्थिको कहेशे के ते छद्मस्थावस्थामां काळधर्म पाम्या"–आवा प्रकारना आ मोटा मानसिक दुःखवडे पीडित थयेल ते (सिंह अनगार) आतापना भूमिथी नीचे उतरी ज्यां मालुकावन छे त्यां आवीने मालुकावननी अंदर प्रवेश करीने तेणे मोटा शब्दथी कुहुकुहु (ठुठवो मूकी)–ए रीते अत्यन्त रुदन कर्युं. श्रमण भगवान् महावीरे "हे आर्यो ! ए प्रमाणे श्रमण निर्ग्रन्थोने बोलावी ए प्रमाणे कह्युं–"हे आर्यो ! ए प्रमाणे खरेखर मारा अन्तेवासी सिंहनामे अनगार प्रकृतिवडे भद्र छे–इत्यादि पूर्वोक्त कहेवुं, यावत्–तेणे अत्यन्त रुदन कर्युं, ते माटे हे आर्यो ! जाओ, अने तमे सिंह अनगारने बोलावो." ज्यारे श्रमण भगवंत महावीरे ए प्रमाणे कह्युं एटले ते श्रमण निर्ग्रन्थो श्रमण भगवंत महावीरने वंदन करे छे, नमे छे, वंदन करी नमीने श्रमण भगवंत महावीरनी पासेथी अने साण-

भगवंत महावीरना शरीरमां पीडाकारी रोगनुं थवुं.

"भगवंत रोगनी पीडाथी छद्मस्थावस्थामां काळ धर्म पामशे"–एवी सिंह अनगारनी आशंका.

भगवंतनुं सिंह अनगारने बोलाववुं.

---

३५ * एक ध्याननी समाप्ति थया पछी ज्यां सुधी बीजा ध्याननो आरंभ न थाय त्यां सुधी ध्यानान्तरिका कहेवाय छे.—टीका.

तेणेव उवागच्छइ, ते० २ उवागच्छित्ता मेंढियगामं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव रेवतीए गाहावइणीए गिहे तेणेव उवागच्छइ, ते० २ उवागच्छित्ता रेवतीए गाहावतिणीए गिहं अणुप्पविट्ठे। तए णं सा रेवती गाहावतिणी सीहं अणगारं एज्जमाणं पासति, पासित्ता हट्ठतुट्ठ० खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सीहं अणगारं सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छइ, स० २ अणुगच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेति, आ० २ करेत्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—'संदिसंतु णं देवाणुप्पिया! किमागमणप्पयोयणं'? तए णं से सीहे अणगारे रेवतिं गाहावइणिं एवं वयासी—'एवं खलु तुमे देवाणुप्पिए! समणस्स भगवओ महावीरस्स अट्ठाए दुवे कवोयसरीरा उवक्खडिया, तेहिं नो अट्ठो, अत्थि ते अन्ने पारियासिए मज्जारकडए कुक्कुडमंसए एयमाहराहि, तेणं अट्ठो'। तए णं सा रेवती गाहावइणी सीहं अणगारं एवं वयासी—'केस णं सीहा! से णाणी वा तवस्सी वा, जेणं तव एस अट्ठे मम ताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए, जओ णं तुमं जाणासि? एवं जहा खंदए, जाव—जओ णं अहं जाणामि। तए णं सा रेवती गाहावतिणी सीहस्स अणगारस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ—तुट्ठा जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता पत्तगं मोएति, पत्तगं मोएत्ता जेणेव सीहे अणगारे तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता सीहस्स अणगारस्स पडिग्गहगंसि तं सव्वं सम्मं निस्सिरति। तए णं तीए रेवतीए गाहावतिणीए तेणं दव्वसुद्धेणं जाव—दाणेणं सीहे अणगारे पडिलाभिए समाणे देवाउए निबद्धे, जहा विजयस्स, जाव—जम्मजीवियफले रेवतीए गाहावतिणीए रेवती० २। तए णं से सीहे अणगारे रेवतीए गाहावतिणीए गिहाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता मेंढियगामं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जहा गोयमसामी जाव—भत्तपाणं पडिदंसेति, पडिदंसेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स पाणिंसि तं सव्वं सम्मं निस्सिरति। तए णं समणे भगवं महावीरे अमुच्छिए जाव—अणज्झोववन्ने बिलमिव पन्नगभूएणं अप्पाणेणं तमाहारं सरीरकोट्ठगंसि पक्खिवति। तए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स तमाहारं आहारियस्स समाणस्स से विपुले रोगायंके खिप्पामेव उवसमं पत्ते, हट्ठे जाए, आरोग्गे, बलियसरीरे, तुट्ठा समणा, तुट्ठाओ समणीओ, तुट्ठा सावया, तुट्ठाओ सावियाओ, तुट्ठा देवा, तुट्ठाओ देवीओ, सदेवमणुयासुरे लोए तुट्ठे 'हट्ठे जाए समणे भगवं महावीरे' हट्ठे० २।

३६. 'भंते'त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—'एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी पाईणजाणवए सव्वाणुभूतीनामं अणगारे पगतिभद्दए जाव—विणीए, से णं भंते! तदा गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेणं तेएणं भासरासीकए समाणे कहिं गए, कहिं उववन्ने? [उ०] एवं खलु गोयमा! ममं अंतेवासी पाईणजाणवए सव्वाणुभूतीनामं अणगारे पगइभद्दए जाव—विणीए, से णं तदा गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं भासरासीकए समाणे उड्ढं चंदिम—सूरिय० जाव—बंभ—लंतक—महासुक्के कप्पे वीइवइत्ता सहस्सारे कप्पे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं अट्ठा-

कह्या प्रमाणे अहिं कहेवुं, यावत्—जेथी (भगवंतना कथनथी) हुं जाणुं छुं. त्यारे ते रेवती गृहपत्नी सिंह अनगारनी ए वात सांभळी, हृदयमां अवधारी हृष्ट अने संतुष्ट थई ज्यां भक्तगृह—रसोडुं छे त्यां आवीने पात्र नीचे मूके छे, पात्र नीचे मूकीने ज्यां सिंह अनगार छे त्यां आवे छे, त्यां आवीने सिंह अनगारना पात्रने विषे ते सर्व (बीजोरा पाक) आपे छे. ते समये ते रेवती गृहपत्नीए द्रव्यशुद्ध एवा यावत्—ते दानवडे सिंह अनगारने प्रतिलाभित करवाथी देवायुष बांध्युं, यावत्—*विजयनी पेठे रेवतीए 'जन्म अने जीवितव्यनुं फळ प्राप्त कर्युं २'—एवी उद्घोषणा थई. हवे ते सिंह अनगार रेवती गृहपत्नीना घरथी नीकळी मेंढिकग्राम नगरना मध्यभागमां थईने नीकळे छे, नीकळी †गौतमस्वामीनी पेठे भात—पाणी देखाडे छे. देखाडी श्रमण भगवंत महावीरना हाथमां ते सर्व सारी रीते मूके छे. त्यार बाद श्रमण भगवंत महावीर मूर्छा—आसक्तिरहित, यावत्—तृष्णारहितपणे सर्प जेम बिलमां पेसे तेम पोते ते आहारने शरीररूप कोष्ठमां नाखे छे. हवे ते आहारने खाधा पछी श्रमण भगवंत महावीरनो ते महान् पीडाकारी रोग तुरत ज शान्त थयो. ते हृष्ट, रोगरहित अने बलवानशरीरवाळा थया. श्रमणो तुष्ट थया, श्रमणीओ तुष्ट थई, श्रावको तुष्ट थया, श्राविकाओ तुष्ट थई, देवो तुष्ट थया, देवीओ तुष्ट थई, अने देव, मनुष्य अने असुरो सहित समग्र विश्व संतुष्ट थयुं के 'श्रमण भगवान् महावीर हृष्ट—रोगरहित थया.'

सर्वानुभूतिमुनि मरण पामी क्यां गया—ते संबन्धे प्रश्नोत्तर.

३६. [प्र०] भगवान् गौतमे 'भगवन्'! एम कही श्रमण भगवान् महावीरने वंदन अने नमस्कार करी ए प्रमाणे कह्युं—ए प्रमाणे खरेखर देवानुप्रिय एवा आपना अन्तेवासी पूर्वदेशमां उत्पन्न थयेला सर्वानुभूति नामे अनगार जे प्रकृतिना भद्र हता, यावत्—विनीत हता, हे भगवन्! ज्यारे तेने मंखलिपुत्र गोशालके तपना तेजथी भस्मराशिरूप कर्या त्यारे ते मरीने क्यां गया, क्यां उत्पन्न थया? [उ०] "ए प्रमाणे खरेखर हे गौतम! मारा अन्तेवासी पूर्वदेशोत्पन्न सर्वानुभूतिनामे अनगार प्रकृतिना भद्र यावत्—विनीत हता, तेने ज्यारे मंखलिपुत्र गोशालके भस्मराशिरूप कर्या त्यारे ते ऊर्ध्वलोकमां चन्द्र अने सूर्यने, यावत्—ब्रह्म, लान्तक अने महाशुक्र कल्पने ओळंगी सहस्रार कल्पमां देवरूपे उत्पन्न थया. त्यां केटला एक देवोनी अढार सागरोपमनी स्थिति कही छे. त्यां सर्वानुभूति देवनी पण अढार सागरोपमनी

३५ * भग० खं० ३ श० १५ सू० ३ पृ० ३७०. † भग० खं० १ श० २ उ० ५ पृ० २८२.

इस सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता, तत्थ णं सव्वाणुभूतिस्स वि देवस्स अट्ठारस सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता। से णं सव्वाणुभूती देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं, ठिइक्खएणं, जाव-महाविदेहे वासे सिज्झिहिति, जाव—अंतं करेहिति।

१७. [प्र०] एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कोसलजाणवए सुनक्खत्ते नामं अणगारे पगइभद्दए जाव—विणीए, से णं भंते! तदा णं गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेणं तेएणं परिताविए समाणे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए, कहिं उववन्ने? [उ०] एवं खलु गोयमा! ममं अंतेवासी सुनक्खत्ते नामं अणगारे पगइभद्दए जाव-विणीए, से णं तदा गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं तवेणं तेएणं परिताविए समाणे जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छइ, ते० २ उवागच्छित्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता सयमेव पंच महव्वयाइं आरुभेति, सयमेव० २ आरुभेत्ता समणा य समणीओ य खामेति, खामेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम-सूरिय० जाव-आणय-पाणया-रणकप्पे वीईवइत्ता अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं बावीसं सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तत्थ णं सुनक्खत्तस्स वि देवस्स बावीसं सागरोवमाइं, सेसं जहा सव्वाणुभूतिस्स, जाव-अंतं काहिति।

१८. [प्र०] एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी कुसिस्से गोसाले नामं मंखलिपुत्ते से णं भंते! गोसाले मंखलिपुत्ते कालमासे कालं किच्चा कहिं गए, कहिं उववन्ने? [उ०] एवं खलु गोयमा! ममं अंतेवासी कुसिस्से गोसाले नामं मंखलिपुत्ते समणघायए, जाव-छउमत्थे चेव कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम-सूरिय० जाव-अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं बावीसं सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता। तत्थ णं गोसालस्स वि देवस्स बावीसं सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता।

१९. [प्र०] से णं भंते! गोसाले देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं ३ जाव-कहिं उववज्जिहिति? [उ०] गोयमा! इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विंझगिरिपायमूले पुंडेसु जणवएसु सयदुवारे नगरे संमुतिस्स रन्नो भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिति। से णं तत्थ नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं जाव-वीतिक्कंताणं जाव-सुरूवे दारए पयाहिति।

स्थिति छे. ते सर्वानुभूति देव ते देवलोकथी आयुषनो क्षय थवाथी अने स्थितिनो क्षय थवाथी यावत्-महाविदेह क्षेत्रमां सिद्ध थशे, यावत्-सर्व दुःखोनो अन्त करशे.

सुनक्षत्र अनगार काळ करी क्यां गया?

१७. [प्र०] ए प्रमाणे खरेखर देवानुप्रिय एवा आपना शिष्य कोशल देशमां उत्पन्न थयेला सुनक्षत्र नामे अनगार प्रकृतिना भद्र, यावत्-विनीत हता, तेने ज्यारे मंखलिपुत्र गोशालके तपना तेजथी परिताप उत्पन्न कर्यो त्यारे ते मरणसमये काळ करीने क्यां गया, क्यां उत्पन्न थया? [उ०] हे गौतम! ए प्रमाणे खरेखर मारो शिष्य सुनक्षत्र नामे अनगार प्रकृतिनो भद्र यावत्-विनीत हतो, तेने ज्यारे मंखलिपुत्र गोशालके तपना तेजथी परिताप उत्पन्न कर्यो त्यारे ते मारी पासे आव्यो, मारी पासे आवी वन्दन-नमस्कार करी स्वयमेव पांच महाव्रतोनो उच्चार करी श्रमण अने श्रमणीओने खमावी, आलोचना अने प्रतिक्रमण करी, समाधिने प्राप्त थई मरणसमये काळ करीने ऊर्ध्व लोकमां चन्द्र अने सूर्यने तथा यावत्-आणत, प्राणत अने आरण कल्पने ओळंगी अच्युत देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थयो. त्यां केटलाएक देवोनी बावीश सागरोपमनी स्थिति कही छे. तेमां सुनक्षत्र देवनी पण बावीश सागरोपमनी स्थिति छे. बाकी बधुं सर्वानुभूति संबन्धे कह्युं छे तेम अहिं जाणवुं; यावत्-सर्व दुःखोनो अन्त करशे.

गोशालक काळ करी क्यां थयो?

१८. [प्र०] ए प्रमाणे खरेखर देवानुप्रिय एवा आपनो अन्तेवासी कुशिष्य मंखलिपुत्र गोशालक छे, ते मंखलिपुत्र गोशालक मरण समये काळ करीने क्यां गयो, क्यां उत्पन्न थयो? [उ०] ए प्रमाणे खरेखर हे गौतम! मारो अन्तेवासी कुशिष्य मंखलिपुत्र गोशालक जे श्रमणनो घातक अने यावत्-छद्मस्थ हतो, ते मरणसमये काळ करीने ऊर्ध्वलोकमां चन्द्र अने सूर्यने ओळंगी यावत्-अच्युत कल्पने विषे देवपणे उत्पन्न थयो. त्यां केटला एक देवोनी बावीश सागरोपमनी स्थिति कही छे, त्यां गोशालक देवनी पण बावीश सागरोपमनी स्थिति छे.

गोशालक देवलोकथी च्यवी क्यां जशे?

१९. [प्र०] ते गोशालक देव ते देवलोकथी आयुषना क्षय थवाथी ३ यावत्-क्यां उत्पन्न थशे? [उ०] हे गौतम! आ जंबूद्वीपनामे द्वीपमां भरत क्षेत्रने विषे विन्ध्याचळ पर्वतनी तळेटीमां पुंड्रनामे देशने विषे शतद्वारनामे नगरमां संमुति (सम्मूर्ति) नामे राजाने भद्रा नामे भार्यानी कुक्षिने विषे पुत्ररूपे उत्पन्न थशे. ते त्यां नव मास बरोबर पूर्ण थया बाद अने साडा सात दिवस वील्या पछी यावत्-सुन्दर बाळकने जन्म आपशे.

४०. जं रयणिं च णं से दारए जाइहिति, तं रयणिं च णं सयदुवारे नगरे सब्भिंतरबाहिरिए भारग्गसो य कुंभग्गसो य पउमवासे य रयणवासे य वासे वासिहिति। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते जाव-संपत्ते बारसाहदिवसे अयमेयारूवं गोण्णं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं काहिंति-'जम्हा णं अम्हं इमंसि दारगंसि जायंसि समाणंसि सयदुवारे नगरे सब्भिंतरबाहिरिए जाव-रयणवासे वुट्ठे, तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं महापउमे महा०' २। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेहिंति 'महापउमे'त्ति। तए णं तं महापउमं दारगं अम्मापियरो सातिरेगट्ठवासजायगं जाणित्ता सोभणंसि तिहि-करण-दिवस-नक्खत्त-मुहुत्तंसि महया २ रायाभिसेगेणं अभिसिंचेहिंति। से णं तत्थ राया भविस्सति, महयाहिमवंत० वण्णओ, जाव-विहरिस्सइ। तए णं तस्स महापउमस्स रन्नो अन्नया कयाचि दो देवा महिड्ढिया जाव-महेसक्खा सेणाकम्मं काहिंति। तंजहा-पुन्नभद्दे य माणिभद्दे य। तए णं सयदुवारे नगरे बहवे राईसर-तलवर० जाव-सत्थवाहप्पभिईओ अन्नमन्नं सद्दावेहिंति, अ० २ सद्दावेत्ता एवं वदेहिंति-'जम्हा णं देवाणुप्पिया! अम्हं महापउमस्स रन्नो दो देवा महिड्ढिया जाव-सेणाकम्मं करेंति, तंजहा-पुन्नभद्दे य माणिभद्दे य, तं होउ णं देवाणुप्पिया! अम्हं महापउमस्स रन्नो दोच्चं पि नामधेज्जे 'देवसेणे दे०' २। तए णं तस्स महापउमस्स रन्नो दोच्चे वि नामधेज्जे भविस्सति 'देवसेणे'त्ति २।

४१. तए णं तस्स देवसेणस्स रन्नो अन्नया कयाइ सेते संखतलविमलसन्निगासे चउदंते हत्थिरयणे समुप्पज्जिस्सइ। तए णं से देवसेणे राया तं सेयं संखतलविमलसन्निगासं चउदंतं हत्थिरयणं दूरूढे समाणे सयदुवारं नगरं मज्झंमज्झेणं अभिक्खणं २ अभिजाहिति, निज्जाहिति य। तए णं सयदुवारे नगरे बहवे राईसर० जाव-पभिईओ अन्नमन्नं सद्दावेहिंति, अ० २ सद्दावेत्ता वदेहिंति-जम्हा णं देवाणुप्पिया! अम्हं देवसेणस्स रन्नो सेते संखतलसन्निकासे चउदंते हत्थिरयणे समुप्पन्ने, तं होउ णं देवाणुप्पिया! अम्हं देवसेणस्स रन्नो तच्चे वि नामधेज्जे 'विमलवाहणे वि०' २। तए णं तस्स देवसेणस्स रन्नो तच्चे वि नामधेज्जे 'विमलवाहणे'त्ति।

४२. तए णं से विमलवाहणे राया अन्नया कदायि समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवज्जिहिति, अप्पेगतिए आउसेहिति, अप्पेगतिए अवहसिहिति, अप्पेगतिए निच्छोडेहिति, अप्पेगतिए निब्भत्थेहिति, अप्पेगतिए बंधेहिति, अप्पेगतिए निरुं-

महापद्म अने देवसेन नाम पाडवानुं कारण.

४०. जे रात्रिने विषे ते बाळकनो जन्म थशे, ते रात्रिने विषे शतद्वार नामे नगरमां अंदर अने बहार अनेक *भारप्रमाण अने अनेक कुंभप्रमाण वृष्टिरूप पद्मनी वृष्टि अने रत्ननी वृष्टि थशे. ते वखते ते बाळकना मात-पिता अगीयारमो दिवस वीत्या पछी बारमे दिवसे आवा प्रकारनुं गुणयुक्त अने गुणनिष्पन्न नाम करशे-"जे हेतुथी अमारा आ बाळकनो जन्म थयो एटले शतद्वार नगरने विषे बहार अने अंदर यावत्-रत्ननी वृष्टि थई, ते माटे अमारा आ बाळकनुं नाम 'महापद्म' २ हो." त्यार पछी ते बाळकना मात-पिता 'महापद्म' एवुं नाम पाडशे. त्यार पछी ते महापद्म बाळकने मातापिता कइंक अधिक आठ वर्षनो थयेलो जाणीने सारा तिथि, करण, दिवस नक्षत्र अने मुहूर्तने विषे अत्यन्त मोटा राज्याभिषेकवडे अभिषेक करशे. हवे ते राजा थशे, ते महाहिमवान् आदि पर्वतनी जेम बळवाळो थशे-इत्यादि वर्णन जाणवुं, यावत्-ते विहरशे. हवे अन्य कोई दिवसे ते महापद्म राजानुं महर्द्धिक यावत्-महासुखवाळा बे देवो सेनाकर्म करशे. ते देवोना नाम आ प्रमाणे-पूर्णभद्र अने माणिभद्र. त्यार पछी शतद्वार नगरने विषे घणा मांडलिक राजाओ, युवराजा, तलवर, यावत्-सार्थवाह प्रमुख परस्पर बोलावीने ए प्रमाणे कहेशे के-हे देवानुप्रियो! 'जे हेतुथी अमारा महापद्म राजानुं बे महर्द्धिक देवो यावत्-सेनाकर्म करे छे, ते देवोना नाम आ प्रमाणे-पूर्णभद्र अने माणिभद्र, ते माटे हे देवानुप्रियो! अमारा महापद्म राजानुं बीजुं नाम 'देवसेन' २ हो, ते वखते ते महापद्म राजानुं 'देवसेन' एवुं बीजुं नाम थशे.

महापद्म.

देवसेन.

विमलवाहन नाम पाडवानुं कारण.

४१. त्यार बाद ते देवसेन राजाने अन्य कोई दिवसे श्वेत, निर्मल शंखना तळीयासमान अने चार दन्तवाळुं हस्तिरत्न उत्पन्न थशे, त्यारे ते देवसेन राजा श्वेत, निर्मल शंखना तळसमान अने चार दन्तवाळा हस्तिरत्न उपर चढीने शतद्वार नगरना मध्यभागमां थईने वारंवार जशे अने नीकळशे. ते वखते शतद्वार नगरने विषे घणा मांडलिक राजाओ, युवराजा यावत्-सार्थवाह प्रमुख एक बीजाने बोलावशे, बोलावीने कहेशे के 'हे देवानुप्रियो! जेथी अमारा देवसेन राजाने श्वेत, निर्मल शंखतळना जेवो अने चार दांतवाळो उत्तम हस्ती उत्पन्न थयो छे, ते माटे हे देवानुप्रियो! अमारा देवसेन राजानुं त्रीजुं नाम 'विमलवाहन' हो. त्यारे ते देवसेन राजानुं 'विमलवाहन' एवुं त्रीजुं नाम पडशे.

४२. त्यार बाद ते विमलवाहन राजा अन्य कोइ दिवसे श्रमण निर्ग्रन्थोनी साथे मिथ्यात्व-अनार्यपणुं आचरशे, केटलाएक श्रमण निर्ग्रन्थोनो आक्रोश करशे, केटलाएकनी हांसी करशे, केटला एकने जूदा पाडशे, केटलाएकनी निर्भर्त्सना करशे, केटलाएकने बांधशे,

४० * वीश पल अथवा सो पलने भार कहे छे, अने सात आढक प्रमाण, एंसी आढक प्रमाण अने सो आढक प्रमाण अनुक्रमे जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट कुंभ कहे छे.

रोहिति, अप्पेगतियाणं छविच्छेदं करेहिति, अप्पेगतिए पमारेहिति, अप्पेगतियाणं उद्दवेहिति, अप्पेगतियाणं वत्थं, पडिग्गहं, कंबलं, पायपुंछणं आच्छिंदिहिति, विच्छिंदिहिति, भिंदिहिति, अवहरिहिति, अप्पेगतियाणं भत्तपाणं वोच्छिंदिहिति, अप्पेगतिए निन्नगरे करेहिति, अप्पेगतिए निव्विसए करेहिति। तए णं सयदुवारे नगरे बहवे राईसर० जाव–वदिहिंति–एवं खलु देवाणुप्पिया! विमलवाहणे राया समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ने अप्पेगतिए आउस्सति, जाव–निव्विसए करेति, तं नो खलु देवाणुप्पिया! एवं अम्हं सेयं, नो खलु एवं विमलवाहणस्स रन्नो सेयं, नो खलु एयं रज्जस्स वा रट्ठस्स वा बलस्स वा वाहणस्स वा पुरस्स वा अंतेउरस्स वा जणवयस्स वा सेयं, जण्णं विमलवाहणे राया समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ने, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं विमलवाहणं रायं एयमट्ठं विन्नवित्तए, त्तिकट्टु अन्नमन्नस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेंति, प० २ पडिसुणित्ता जेणेव विमलवाहणे राया तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं विमलवाहणं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति, ज० २ वद्धावेत्ता एवं वदिहिंति–'एवं खलु देवाणुप्पिया समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ना अप्पेगतिए आउस्संति, जाव–अप्पेगतिए निव्विसए करेंति, तं नो खलु एयं देवाणुप्पियाणं सेयं, नो खलु एयं अम्हं सेयं, नो खलु एयं रज्जस्स वा जाव–जणवयस्स वा सेयं, जं णं देवाणुप्पिया! समणेहिं निग्गंथेहिं मिच्छं विप्पडिवन्ना, तं विरमंतु णं देवाणुप्पिया! एयस्स अट्ठस्स अकरणयाए।

४३. तए णं से विमलवाहणे राया तेहिं बहूहिं राईसर० जाव–सत्थवाहप्पभिईहिं एयमट्ठं विन्नत्ते समाणे 'नो धम्मो'त्ति 'नो तवो'त्ति मिच्छा विणएणं एयमट्ठं पडिसुणेहि(हि)ति। तस्स णं सयदुवारस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एत्थ णं सुभूमिभागे नामं उज्जाणे भविस्सइ। सव्वोउय० वन्नओ। तेणं कालेणं तेणं समएणं विमलस्स अरहओ पउप्पए सुमंगले नामं अणगारे जाइसंपन्ने० जहा धम्मघोसस्स वन्नओ, जाव–संखित्तविउलतेयलेस्से, तिन्नाणोवगए, सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं जाव–आयावेमाणे विहरिस्सति।

४४. तए णं से विमलवाहणे राया अन्नया कदायि रहचरियं काउं निज्जाहिति। तए णं से विमलवाहणे राया सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते रहचरियं करेमाणे सुमंगलं अणगारं छट्ठंछट्ठेणं जाव–आयावेमाणं पासिहिति। पासित्ता

केटलाएकने रोकशे, केटलाएकना अवयवोनो छेद करशे, केटलाएकने मारशे, केटलाएकने उपद्रव करशे, केटलाएकना वस्त्र, पात्र, कांबल अने पादपुंछन छेदशे, विशेष छेदशे, भेदशे, अपहरण करशे; केटलाएकना भात–पाणीनो विच्छेद करशे, केटलाएकने नगरथी बहार काढशे अने केटलाएकने देशथी बहार काढशे. ते समये शतद्वार नगरने विषे घणा मांडलिक राजाओ अने युवराजाओ यावत् परस्पर–कहेशे के 'हे देवानुप्रियो! ए प्रमाणे खरेखर विमलवाहन राजाए श्रमण निर्ग्रन्थोनी साथे मिथ्या–अनार्यपणुं स्वीकार्युं छे, यावत्–केटलाएकने देशथी बहार काढे छे, ते माटे हे देवानुप्रियो! ए आपणने श्रेयरूप नथी, आ विमलवाहन राजाने श्रेयरूप नथी, तेमज आ राज्यने, आ राष्ट्रने, बलने, वाहनने, पुरने, अन्तःपुरने के देशने श्रेयरूप नथी के जे विमलवाहन राजाए श्रमण निर्ग्रन्थोनी साथे मिथ्या–अनार्यपणुं स्वीकार्युं छे. ते माटे हे देवानुप्रियो! आपणे विमलवाहन राजाने आ वात जणाववी योग्य छे.'–एम विचारी एक बीजानी पासे आ वातनो स्वीकार करे छे, स्वीकार करीने ज्यां विमलवाहन राजा छे त्यां आवेछे, त्यां आवीने करतल परिगृहीत करीने–हाथ जोडीने विमलवाहन राजाने जय अने विजयथी वधावेछे. वधावीने एम कहेशे के 'हे देवानुप्रिय! आप श्रमण निर्ग्रन्थोनी साथे मिथ्या–अनार्यपणाने आचरता केटलाएकनो आक्रोश करो छो, यावत्–केटलाएकने देशथी बहार काढो छो, ते देवानुप्रिय एवा आपने श्रेयरूप नथी, ए अमने पण श्रेयरूप नथी, तेमज आ राज्यने, यावत्–देशने श्रेयरूप नथी के जे देवानुप्रिय एवा आप श्रमण निर्ग्रन्थोनी साथे मिथ्यात्व–अनार्यपणुं आचरो छो, ते माटे हे देवानुप्रिय! आप नहि करवा वडे आ कार्यथी अटका पडो'.

विमलवाहन राजानुं श्रमण निर्ग्रन्थोनी साथे अनार्यपणानुं आचरण.

४३. ज्यारे ते घणा मांडलिक राजाओ, युवराजाओ यावत्–सार्थवाहप्रमुख आ बाबत विनति करशे त्यारे ते विमलवाहन राजा 'धर्म नथी, तप नथी'–एवी बुद्धिथी मिथ्या विनय वडे आ वात कबूल करशे. हवे ते शतद्वार नगरनी बहार उत्तर–पूर्व दिशाए अहिं सुभूमिभाग नामे उद्यान हशे. ते सर्व ऋतुना पुष्पादिकयुक्त–इत्यादि वर्णन जाणवुं. ते काले ते समये विमलनामे तीर्थंकरना प्रपौत्र–शिष्य परंपरामां थयेला सुमंगल नामे अनगार हशे. ते जातिसंपन्न–इत्यादि *धर्मघोष अनगारना वर्णन प्रमाणे वर्णन जाणवुं, यावत्–संक्षिप्त अने विपुल तेजोलेश्यावाळा, त्रण ज्ञान वडे सहित ते सुमंगल नामे अनगार सुभूमिभाग नामे उद्यानथी थोडे दूर निरन्तर छट्ठनो तप करवावडे यावत्–आतापना लेता विहरशे.

सुमंगल अनगार.

४४. हवे ते विमलवाहन राजा अन्य कोई दिवसे रथचर्या करवा निकळशे त्यारे सुभूमिभाग नामे उद्यानथी थोडे दूर रथचर्या करतो ते विमलवाहन राजा निरंतर छट्ठनो तप करता यावत्–आतापना लेता सुमंगल अनगारने जोशे. जोइने कोपायमान थयेलो यावत्–

४१ * भग० खं० १ श० ११ उ० ११ पृ० २७५.

आसुरुत्ते जाव–मिसिमिसेमाणे सुमंगलं अणगारं रहसिरेणं णोल्लावेहिति । तए णं से सुमंगले अणगारे विमलवाहणेणं रण्णा रहसिरेणं णोल्लाविए समाणे सणियं २ उट्ठेहिति, उट्ठेत्ता दोचं पि उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय २ जाव–आयावेमाणे विहरिस्सति । तए णं से विमलवाहणे राया सुमंगलं अणगारं दोचं पि रहसिरेणं णोल्लावेहिति । तए णं से सुमंगले अणगारे विमलवाहणेणं रण्णा दोचं पि रहसिरेणं णोल्लाविए समाणे सणियं २ उट्ठेहिति, उट्ठेत्ता ओहिं पउंजेहिति, ओ० २ पउंजित्ता विमलवाहणस्स रण्णो तीतद्धं ओहिणा आभोएहिति, आभोएत्ता विमलवाहणं रायं एवं वइहिति–'नो खलु तुमं विमलवाहणे राया, नो खलु तुमं देवसेणे राया, नो खलु तुमं महापउमे राया, तुमण्णं इओ तचे भवग्गहणे गोसाले नामं मंखलिपुत्ते होत्था, समणघायए, जाव–छउमत्थे चेव कालगए, तं जति ते तदा सव्वाणुभूतिणा अणगारेणं पभुणा वि होऊणं सम्मं सहियं, खमियं, तितिक्खियं, अहियासियं, जइ ते तदा सुनक्खत्तेणं अणगारेणं जाव–अहियासियं, जइ ते तदा समणेणं भगवया महावीरेणं पभुणा वि जाव–अहियासियं, तं नो खलु ते अहं तहा सम्मं सहिस्सं, जाव–अहियासिस्सं, अहं ते नवरं सहयं सरहं ससारहियं तवेणं तेएणं एगाहचं कूडाहचं भासरासिं करेज्जामि ।

४५. तए णं से विमलवाहणे राया सुमंगलेणं अणगारेणं एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते जाव–मिसिमिसेमाणे सुमंगलं अणगारं तचं पि रहसिरेणं णोल्लावेहिति । तए णं से सुमंगले अणगारे विमलवाहणेणं रण्णा तचं पि रहसिरेणं णोल्लाविए समाणे आसुरुत्ते जाव–मिसिमिसेमाणे आयावणभूमीओ पचोरुभइ, आ० २ पचोरुभित्ता तेयासमुग्घाएणं समोहन्निहिति, तेया० २ समोहणित्ता सत्तट्ठ पयाइं पचोसक्किहिति, सत्तट्ठ० २ पचोसक्कित्ता विमलवाहणं रायं सहयं सरहं ससारहियं तवेणं तेएणं जाव–भासरासिं करेहिति ।

४६. [प्र०] सुमंगले णं भंते ! अणगारे विमलवाहणं रायं सहयं जाव–भासरासिं करेत्ता कहिं गच्छिहिति, कहिं उववज्जिहिति ? [उ०] गोयमा ! सुमंगले अणगारे णं विमलवाहणं रायं सहयं जाव–भासरासिं करेत्ता बहूहिं छट्ठ–ट्ठम–दसम–दुवालस० जाव–विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहूइं वासाइं सामन्नपरियागं पाउणेहिति, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए जाव–छेदेत्ता आलोइय–पडिक्कंते समाहिपत्ते उड्ढं चंदिम० जाव–गेविज्जविमाणावाससयं वीयी-

विमलवाहन सुमंगल अनगार उपर रथ चलावी तेने पाडी नांखशे.

क्रोधथी अत्यन्त बळतो एवो ते राजा रथना अग्रभाग वडे सुमंगल अनगारने अभिघात करी पाडी नांखशे. ज्यारे विमलवाहन राजा रथना अग्रभागवडे ते सुमंगल अनगारने पाडी नांखशे त्यारे ते सुमंगल अनगार धीमे धीमे उठशे, उठीने बीजीवार ऊंचा हाथ करी करीने आतापना लेता विहरशे; त्यारे ते विमलवाहन राजा सुमंगल अनगारने बीजीवार रथना अग्रभागवडे अभिघात करी पाडी नांखशे. ज्यारे विमलवाहन राजा सुमंगल अनगारने बीजीवार रथना अग्रभागवडे अभिघात करी पाडी नांखशे त्यारे ते सुमंगल अनगार धीमे धीमे उठशे, उठीने अवधिज्ञान प्रयुंजशे, अवधिज्ञान प्रयुंजीने विमलवाहन राजाने अतीतकाळे अवधिज्ञान वडे जोशे, जोईने विमलवाहन राजाने एम कहेशे–"तुं खरेखर विमलवाहन राजा नथी, तुं खरेखर देवसेन राजा नथी, तुं खरेखर महापद्म राजा नथी, तुं आ भवथी त्रीजा भवमां मंखलिपुत्र गोशालकनामे हतो, अने श्रमणनो घात करनार तुं छद्मस्थावस्थामां काळधर्म पाम्यो हतो, जो के ते वखते सर्वानुभूति अनगारे समर्थ छतां पण तारो अपराध सम्यक् प्रकारे सहन कर्यो, तेनी क्षमा करी, तितिक्षा करी अने तेने अध्यासित कर्यो; जो के ते वखते सुनक्षत्र अनगारे पण यावत्–अध्यासित–सहन कर्यो, जो के ते समये श्रमण भगवान् महावीरे समर्थ छतां पण यावत्–सहन कर्यो, परन्तु खरेखर हुं ते प्रमाणे सम्यक् सहन नहिं करुं, यावत्–अध्यासिश नहि, हुं घोडा, रथ अने सारथिसहित तने मारा तपना तेजथी एकघाए, कूटाघात–पाषाणमय यंत्रना आघातनी जेम भस्मराशिरूप करीश."

सुमंगल अनगार विमलवाहनने तपना तेजथी भस्म करशे.

४५. ज्यारे ते सुमंगल अनगारे ए प्रमाणे कह्युं त्यारे अत्यन्त गुस्से थयेलो अने यावत्–अत्यन्त क्रोधथी बळतो ते विमलवाहन राजा सुमंगल अनगारने त्रीजी वार पण रथना अग्रभाग वडे अभिघात करी पाडी नांखशे. ज्यारे विमलवाहन राजा रथना अग्रभागवडे त्रीजीवार ते सुमंगल अनगारने अभिघात करी पाडी नांखशे त्यारे अत्यंत गुस्से थयेला अने यावत्–क्रोधथी बळता एवा ते सुमंगल अनगार आतापना भूमिथी उतरी तैजस समुद्घात करशे, तैजस समुद्घात करीने, सात आठ पगलां पाछा जइ घोडा, रथ अने सारथिसहित विमलवाहन राजाने भस्मराशिरूप करशे.

सुमंगल अनगार काळ करी क्यां जशे ?

४६. [प्र०] हे भगवन् ! सुमंगल अनगार घोडासहित, यावत्–विमलवाहन राजाने भस्मराशिरूप करीने [काळ करी] क्यां जशे, क्यां उत्पन्न थशे ? [उ०] हे गोतम ! सुमंगल अनगार विमलवाहन राजाने घोडासहित यावत्–भस्मराशिरूप करीने घणा प्रकारना छट्ठ, अट्ठम, दशम (चार उपवास), द्वादश भक्त (पांच उपवास) यावत्–विचित्र तपकर्म वडे आत्माने भावित करता घणां वरस सुधी श्रमणपर्यायने पाळशे. पाळीने मासिक संलेखना वडे साठ भक्त अनशनपणे वीतावीने आलोचना अने प्रतिक्रमण करी समाधिने प्राप्त थई ऊर्ध्व

वइत्ता सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति । तत्थ णं देवाणं अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता । तत्थ णं सुमंगलस्स वि देवस्स अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिती पन्नत्ता । से णं भंते! सुमंगले देवे ताओ देवलोगाओ जाव-महाविदेहे वासे सिज्झिहिति, जाव-अंतं काहिति ।

५७. [प्र०] विमलवाहणे णं भंते! राया सुमंगलेणं अणगारेणं सहए जाव-भासरासीकए समाणे कहिं गच्छिहिति, कहिं उववज्जिहिति? [उ०] गोयमा! विमलवाहणे णं राया सुमंगलेणं अणगारेणं सहये जाव-भासरासीकए समाणे अहेसत्तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरयंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति । से णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता मच्छेसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा दोच्चं पि अहेसत्तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठितीयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति । से णं तओऽणंतरं उव्वट्टित्ता दोच्चं पि मच्छेसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे जाव-किच्चा छट्ठीए तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति । से णं तओहिंतो जाव-उव्वट्टित्ता इत्थियासु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाह० जाव-दोच्चं पि छट्ठीए तमाए पुढवीए उक्कोसकाल० जाव-उव्वट्टित्ता दोच्चं पि इत्थियासु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे जाव-किच्चा पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए उक्कोसकाल० जाव-उव्वट्टित्ता उरएसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे जाव-किच्चा दोच्चं पि पंचमाए जाव-उव्वट्टित्ता दोच्चं पि उरएसु उववज्जिहिति, जाव-किच्चा चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठितीयंसि जाव-उव्वट्टित्ता सीहेसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे तहेव जाव-किच्चा दोच्चं पि चउत्थीए पंक० जाव-उव्वट्टित्ता दोच्चं पि सीहेसु उववज्जिहिति, जाव-किच्चा तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए उक्कोसकाल० जाव-उव्वट्टित्ता पक्खीसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे जाव-किच्चा दोच्चं पि तच्चाए वालुय० जाव-उव्वट्टित्ता दोच्चं पि पक्खीसु उववज्जिहिति, जाव-किच्चा दोच्चाए सक्करप्पभाए जाव-उव्वट्टित्ता सिरीसवेसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थ० जाव-किच्चा दोच्चं पि दोच्चाए सक्करप्पभाए जाव-उव्वट्टित्ता दोच्चं पि सिरीसवेसु उववज्जिहिति, जाव-किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठितीयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति । जाव-उव्वट्टित्ता सण्णीसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे जाव-किच्चा असण्णीसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे जाव-

लोकमां चन्द्र अने सूर्य, यावत्-सो ग्रैवेयक विमानावासने ओळंगी सर्वार्थसिद्ध महाविमानमां देवपणे उपजशे. त्यां देवोनी जघन्य अने उत्कृष्टरहित एवी तेत्रीश सागरोपमनी स्थिति कही छे. त्यां सुमंगल देवनी पण जघन्य अने उत्कृष्टरहित एवी तेत्रीश सागरोपमनी स्थिति हशे. ते सुमंगल देव ते देवलोकथी यावत्-भवना क्षय थवाथी महाविदेह क्षेत्रमां सिद्ध थशे, यावत् सर्व दुःखोनो अन्त करशे.

४७. [प्र०] हे भगवन्! ज्यारे सुमंगल अनगार घोडासहित विमलवाहन राजाने यावत्-भस्मराशिरूप करशे त्यार बाद ते क्यां जशे, क्यां उत्पन्न थशे? [उ०] हे गौतम! सुमंगल अनगारे घोडासहित यावत्-भस्मराशिरूप कर्या पछी ते विमलवाहन राजा अधःसप्तम पृथिवीमां उत्कृष्ट काळनी स्थितिवाळा नरकने विषे नारकपणे उत्पन्न थशे. त्यांथी च्यवीने तुरत मत्स्योने विषे उत्पन्न थशे. त्यां पण शस्त्रवडे वध थवाथी दाहनी पीडावडे मरणसमये काळ करीने बीजीवार पण अधःसप्तम नरकपृथिवीमां उत्कृष्टस्थितिवाळा नरकावासने विषे नारकपणे उत्पन्न थशे. त्यांथी अन्तररहितपणे च्यवी बीजीवार पण मत्स्योमां उत्पन्न थशे. त्यां पण शस्त्रवडे वध थवाथी यावत्-काळ करीने छट्ठी तमा नामे नरकपृथिवीमां उत्कृष्ट काळनी स्थितिवाळा नरकमां नैरयिकपणे उत्पन्न थशे. त्यांथी नीकळी तुरतज स्त्रीने विषे उत्पन्न थशे. त्यां पण शस्त्रद्वारा वध थतां दाहनी पीडाथी यावत्-बीजीवार छट्ठी तमा पृथिवीमां उत्कृष्ट काळनी स्थितिवाळा नरकमां नारकपणे उत्पन्न थशे. यावत्-त्यांथी नीकळीने बीजीवार पण स्त्रीओमां उत्पन्न थशे. त्यां पण शस्त्रवडे वध थवाथी यावत्-काळ करीने पांचमी धूमप्रभाने विषे उत्कृष्ट काळनी स्थितिवाळा नरकावासमां यावत्-उत्पन्न थशे. त्यांथी नीकळीने उरःपरिसर्पमां उत्पन्न थशे. त्यां पण शस्त्रवडे वध थवाथी काळ करीने बीजीवार पांचमी नरकपृथिवीमां उत्पन्न थइ, त्यांथी नीकळी यावत्-बीजीवार उरःपरिसर्पोमां उत्पन्न थशे. त्यांथी यावत्-काळ करीने चोथी पंकप्रभा पृथिवीमां उत्कृष्ट काळनी स्थितिवाळा नरकने विषे नारकपणे उत्पन्न थइ, यावत्-त्यांथी नीकळी सिंहोमां उत्पन्न थशे, त्यां पण शस्त्रवडे वध थवाथी ते प्रमाणेज यावत्-काळ करीने बीजीवार चोथी पंकप्रभामां उत्पन्न थई, यावत्- त्यांथी नीकळी बीजीवार सिंहोमां उत्पन्न थशे, त्यांथी यावत्-काळ करीने त्रीजी वालुकाप्रभामां उत्कृष्टकाळनी स्थितिवाळा नरकावासमां उत्पन्न थई, त्यांथी नीकळी पक्षीओमां उत्पन्न थशे. त्यां पण शस्त्रवडे वध थवाथी यावत्-काळ करी बीजीवार त्रीजी वालुकाप्रभामां उत्पन्न थई यावत्-त्यांथी नीकळी बीजीवार पक्षीओमां उत्पन्न थशे. यावत्-काळ करी त्यांथी बीजी शर्कराप्रभामां उत्पन्न थई, यावत्-त्यांथी नीकळी सरीसृप (शीकारी पशुओ)ने विषे उपजशे. त्यां शस्त्रवडे वध थवाथी यावत्-काळ करी बीजीवार शर्कराप्रभाने विषे यावत्-उत्पन्न थशे. अने त्यांथी नीकळी बीजीवार सरीसृपमां उत्पन्न थशे. यावत्-काळ करीने आ रत्नप्रभापृथिवीने विषे उत्कृष्ट काळनी स्थितिवाळा नरकावासमां नैरयिकपणे उत्पन्न थशे. यावत्-त्यांथी नीकळीने संज्ञीने विषे उपजशे. त्यां पण शस्त्रवडे वध थवाथी यावत्-काळ करीने असंज्ञीमां उत्पन्न थशे. त्यांपण शस्त्रवडे वध थतां यावत्-काळ करीने बीजीवार पण आ रत्नप्रभापृथिवीमां पल्योपमना असंख्यातमा भागनी स्थितिवाळा नरकावासमां नारकपणे उत्पन्न थशे. हवे त्यांथी यावत्-

विमलवाहन मरण पछी क्यां जशे?

किच्चा दोचं पि इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति । से णं तओ जाव–उव्वट्टित्ता जाइं इमाइं खहयरविहाणाइं भवंति, तं जहा–चम्मपक्खीणं, लोमपक्खीणं, समुग्गपक्खीणं, वियय-पक्खीणं, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता २ तत्थेव २ भुज्जो २ पच्चायाहिति । सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा जाइं इमाइं भुयपरिसप्पविहाणाइं भवंति, तंजहा–गोहाणं, नउलाणं, जहा पन्नवणापए जाव–जाहगाणं, चउप्पाइयाणं, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो० सेसं जहा खहचराणं, जाव–किच्चा जाइं इमाइं उरपरिसप्पविहाणाइं भवंति, तं-जहा–अहीणं, अयगराणं, आसालियाणं, महोरगाणं, तेसु अणेगसयसह० जाव–किच्चा जाइं इमाइं चउप्पदविहाणाइं भवंति, तंजहा–एगखुराणं, दुखुराणं, गंडीपदाणं, सणहपदाणं, तेसु अणेगसयसहस्स० जाव–किच्चा जाइं इमाइं जलचरविहाणाइं भवंति, तं जहा–मच्छाणं, कच्छभाणं, जाव–सुसुमाराणं, तेसु अणेगसयसहस्स० जाव–किच्चा जाइं इमाइं चउरिंदियविहाणाइं भवंति, तं जहा–अंधियाणं, पोत्तियाणं, जहा पन्नवणापदे, जाव गोमयकीडाणं, तेसु अणेगसय० जाव–किच्चा जाइं इमाइं तेइंदियविहाणाइं भवंति, तंजहा–उवचियाणं, जाव–हत्थिसोंडाणं, तेसु अणेग० जाव–किच्चा जाइं इमाइं बेइंदियविहाणाइं भवंति, तं जहा–पुलाकि-मियाणं, जाव–समुद्दलिक्खाणं, तेसु अणेगसय० जाव–किच्चा जाइं इमाइं वणस्सइविहाणाइं भवंति, तंजहा–रुक्खाणं, गुच्छाणं, जाव–कुहणाणं, तेसु अणेगसय० जाव–पच्चायाइस्सइ । उस्सन्नं च णं कडुयरुक्खेसु, कडुयवल्लीसु, सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे जाव–किच्चा जाइं इमाइं वाउकाइयविहाणाइं भवंति, तंजहा–पाईणवायाणं, जाव–सुद्धवायाणं, तेसु अणेगसयसहस्स० जाव–किच्चा जाइं इमाइं तेउकाइयविहाणाइं भवंति, तंजहा–इंगालाणं, जाव–सूरकंतमणिनिस्सियाणं, तेसु अणेगसयसहस्स० जाव–किच्चा जाइं इमाइं आउकाइयविहाणाइं भवंति, तंजहा–उस्साणं, जाव–खातोदगाणं, तेसु अणेगसय० जाव–पच्चायातिस्सइ । उस्सण्णं च णं खारोदएसु, खातोदएसु, सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे जाव–किच्चा जाइं इमाइं पुढविकाइयविहाणाइं भवंति, तंजहा–पुढवीणं, सक्कराणं, जाव–सूरकंताणं, तेसु अणेगसय० जाव–पच्चायाहिति, उस्सन्नं च णं खरबायरपुढविकाइएसु, सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे जाव–किच्चा–रायगिहे नगरे बाहिं खरियत्ताए उववज्जिहिइ । तत्थ वि णं सत्थवज्झे जाव–किच्चा दोच्चं पि रायगिहे नगरे अंतो खरियत्ताए उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे जाव–किच्चा इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विंझगिरिपायमूले

नीकळीने जे खेचरना भेदो छे, ते आ प्रमाणे–चर्मपक्षीओ (चामडानी पांखवाळा), लोमपक्षीओ (पिंछानी पांखवाळा), समुद्गकपक्षीओ [जेनी सर्वदा उडतां पण पांखो बीडायेल होय ते] अने वितत पक्षीओमां [जेनी हमेशां विस्तारेली पांख होय तेमां] अनेक लाख वार मरण पामी पामीने त्यां वारंवार उत्पन्न थशे. सर्वत्र शस्त्रवध थवाथी दाहनी उत्पत्तिवडे मरणसमये काळ करी जे आ भुजपरिसर्पना भेदो छे, ते आ प्रमाणे–घो, नोळीआ–इत्यादि प्रज्ञापना सूत्रना *प्रथम प्रज्ञापना पदने विषे कह्युं छे ते प्रमाणे जाणवुं, यावत्–जाहक अने चउप्पाइअ जीवोमां अनेक लाखवार मरण पामी पुनः त्यां वारंवार उत्पन्न थशे. बाकी बधुं खेचरनी पेठे जाणवुं. यावत्–काळ करी जे आ उरःपरिसर्पना भेदो होय छे, ते आ प्रमाणे–साप, अजगर, आशालिका अने महोरग; तेमां अनेक लाखवार मरण पामी यावत्–काळ करी जे आ चतुष्पदना भेदो होय छे; ते आ प्रमाणे–१ एकखरीवाळा, २ बेखरीवाळा, ३ गंडीपद अने ४ नखसहित पगवाळा, तेमां अनेक लाखवार उत्पन्न थशे, त्यांथी यावत्–काळ करी जे आ जलचरना भेदो होय छे, ते आ प्रमाणे–कच्छप (काचबा), यावत्–†सुसुमार, तेओमां अनेक लाखवार उपजशे, यावत्–काळ करी जे आ चउरिन्द्रिय जीवोना भेदो छे, ते आ प्रमाणे–अंधिक, पौत्रिक–इत्यादि–जेम प्रज्ञापनासूत्रना ‡प्रथम प्रज्ञापनापदमां कह्या प्रमाणे यावत्–गोमयकीडाओमां अनेक लाखवार उपजशे. त्यां उत्पन्न थई काळ करी जे आ तेइन्द्रिय जीवोना भेदो छे, ते आ प्रमाणे–उपचित, यावत्–हस्तिशौंड, तेओमां उत्पन्न थइ यावत्–काळ करी जे आ बेइन्द्रियोना भेदो छे, ते आ प्रमाणे–पुलाकृमि यावत्–समुद्रलिक्षा, तेओमां अनेक लाखवार उपजशे. उपजी यावत्–काळ करी जे आ वनस्पतिना भेदो छे, ते आ प्रमाणे–वृक्षो, गुच्छक, यावत्–कुहुना; तेओमां अनेक लाखवार मरण पामी उत्पन्न थशे. विशेषे करीने कटुक वृक्षोमां अने कटुक वेलीमां उपजशे, अने सर्व स्थळे शस्त्रवडे वध थवाथी यावत्–काळ करीने जे आ वायुकायिकना भेदो छे, ते आ प्रमाणे–पूर्वनो वायु, यावत्–शुद्ध वायु; तेमां अनेक लाखवार उत्पन्न थशे. यावत्–काळ करी जे आ तेउकायिकना भेदो छे, ते आ प्रमाणे–अंगारा, यावत्–सूर्यकान्तमणि निश्रित अग्नि, तेमां अनेक लाखवार उत्पन्न थशे. उत्पन्न थई जे आ अप्कायिकना भेदो छे, ते आ प्रमाणे–अवश्याय–झाकळनुं पाणी, यावत्–खाईनुं पाणी; तेमां अनेक लक्षवार यावत् उत्पन्न थशे. बहुधा खारा पाणीमां अने खाईना पाणीमां उत्पन्न थशे; अने सर्वस्थळे शस्त्रवडे वध थवाथी यावत्–काळ करीने जे आ पृथिवीकायिकना भेदो छे, ते आ प्रमाणे–पृथिवी, शर्करा–कांकरा, यावत्–सूर्यकान्तमणि, तेओमां अनेक लाखवार उत्पन्न थशे. विशेषतः खरबादरपृथिवीकायिकने विषे, सर्वत्र शस्त्रवडे वध थवाने लीधे यावत्–काळ करीने राजगृह नगरनी बाहेर वेश्यापणे उत्पन्न थशे. त्यां पण शस्त्रवडे वध थतां यावत्–काळ

४७ * प्रज्ञापनासूत्रमां उपर कहेलो पाठ मळतो नथी, पण तेने बदले आवो पाठ मळे छे–"से किं तं भुयपरिसप्पा ? भुयपरिसप्पा अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा–नउला, सेहा, सरडा, सल्ला, सरंठा, सारा, खोरा, घरोइला, विस्संभरा, मूसा, मंगुसा, पयलाइया, छीरविरालिया, जहा चउप्पाइया, जे यावन्ने तहप्पगारा ।" प्रज्ञा० १ प० १ प० ४६.

† प्रज्ञा० प० १ प० ४३–२. ‡ प्रज्ञा० प० १ प० ४२–२.

[illegible] माहणकुलंसि दारियत्ताए पच्चायाहिति । तए णं तं दारियं अम्मापियरो उम्मुक्कबालभावं जोव्वणगमणुप्पत्तं पडिरूवएणं सुक्केणं, पडिरूवएणं विणएणं, पडिरूवयस्स भत्तारस्स भारियत्ताए दलइस्सति । सा णं तस्स भारिया भविस्सति इट्ठा, कंता, जाव-अणुमया, भंडकरंडगसमाणा तेल्लकेला इव सुसंगोविया, चेलपेडा इव सुसंपरिग्गहिया, रयणकरंडओ विव सुसारक्खिया, सुसंगोविया, मा णं सीयं, मा णं उण्हं, जाव-परिस्सहोवसग्गा फुसंतु । तए णं सा दारिया अन्नया कयाइ गुव्विणी ससुरकुलाओ कुलघरं निज्जमाणी अंतरा दवग्गिजालाभिहया कालमासे कालं किच्चा दाहिणिल्लेसु अग्गिकुमारेसु देवेसु देवत्ताए उववज्जिहिति ।

४८. से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति, माणुस्सं २ लभित्ता केवलं बोहिं बुज्झिहिति, के० २ बुज्झित्ता मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइहिति । तत्थ वि य णं विराहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा दाहिणिल्लेसु असुरकुमारेसु देवेसु देवत्ताए उववज्जिहिति । से णं तओहिंतो जाव-उव्वट्टित्ता माणुसं विग्गहं तं चेव जाव-तत्थ वि णं विराहियसामण्णे कालमासे जाव-किच्चा दाहिणिल्लेसु नागकुमारेसु देवेसु देवत्ताए उववज्जिहिति । से णं तओहिंतो अणंतरं० एवं एएणं अभिलावेणं दाहिणिल्लेसु सुवण्णकुमारेसु, एवं विज्जुकुमारेसु, एवं अग्गिकुमारवज्जं जाव-दाहिणिल्लेसु थणियकुमारेसु, से णं तओ जाव-उव्वट्टित्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति । जाव-विराहियसामण्णे जोइसिएसु देवेसु उववज्जिहिति । से णं तओ अणंतरं चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति । जाव-अविराहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति । से णं तओहिंतो अणंतरं चयं चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति, केवलं बोहिं बुज्झिहिति, तत्थ-वि णं अविराहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा ईसाणे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति । से णं तओ चइत्ता माणुस्सं विग्गहं लभिहिति । तत्थ वि णं अविराहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा सणंकुमारे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति । से णं तओहिंतो एवं जहा सणंकुमारे तहा बंभलोए, महासुक्के, आणए, आरणे । से णं तओ जाव-अविराहियसामण्णे कालमासे कालं किच्चा सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति । से णं तओहिंतो अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे जाइं इमाइं कुलाइं भवंति-अड्ढाइं जाव-अपरिभूयाइं, तहप्पगारेसु कुलेसु पुत्तत्ताए पच्चायाहिति । एवं जहा उववाइए दढप्पइन्नवत्तव्वया सच्चेव वत्तव्वया निरवसेसा भाणियव्वा, जाव-केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जिहिति ।

करी बीजीवार राजगृह नगरनी अंदर वेश्यापणे उत्पन्न थशे. त्यां पण शस्त्रवडे वध थवाथी यावत्-काळ करीने आज जंबूद्वीपमां भारतवर्षने विषे विन्ध्याचलपर्वतनी पासे बिभेल नामे गाममां ब्राह्मणकुळने विषे पुत्रीपणे उत्पन्न थशे. ते पुत्री ज्यारे बाल्यभावनो त्याग करी यौवनने प्राप्त थशे त्यारे तेना मातापिता उचित द्रव्य अने उचित विनयवडे योग्य भर्ताने भार्यापणे आपशे. ते पुत्री तेनी स्त्री थशे. ते इष्ट, कान्त, यावत्-अनुमत, घरेणाना करंडीया जेवी, तेलनी कुल्लीनी पेठे अत्यंत सुरक्षित, वस्त्रनी पेटीनी पेठे सारी रीते (निरुपद्रव स्थाने) राखेली अने रत्नना करंडीयानी पेठे सारी रीते रक्षण करायेली हशे. ते शीत, उष्ण, यावत्-परिषह अने उपद्रवो न स्पर्शे माटे अत्यंत संगोपित-रक्षण करायेली हशे. हवे अन्य कोई दिवसे ते ब्राह्मणपुत्री गर्भिणी थशे, अने श्वसुरगृहथी पीयेर जतां रस्तामां दवाग्निनी ज्वालावडे बळी मरणसमये काळ करी दक्षिणदिशाना अग्निकुमार देवोमां देवपणे उत्पन्न थशे.

हवे त्यांथी च्यवी मनुष्यदेह धारण करी सम्यग्दर्शन पामशे.

४८. त्यांथी अन्तररहितपणे च्यवीने मनुष्यना देहने धारण करी मात्र बोधि-सम्यग्दर्शन पामशे. केवळ सम्यग्दर्शन पामी मुंड थई गृहवासनो त्याग करी अनगारिता-दीक्षा ग्रहण करशे. त्यां पण श्रामण्य दीक्षाने विराधी दक्षिण दिशाना असुरकुमार देवोमां देवपणे उत्पन्न थशे. त्यार पछी ते त्यांथी यावत्-नीकळी मनुष्य शरीर प्राप्त करी-इत्यादि पूर्वोक्त कहेवुं, यावत्-त्यां पण श्रमणपणुं विराधी मरणसमये काळ करी दक्षिण निकायना नागकुमार देवोमां देवपणे उत्पन्न थशे. हवे ते त्यां अन्तररहितपणे च्यवी-इत्यादि ए पाठ वडे दक्षिण निकायना सुवर्णकुमारने विषे, ए प्रमाणे विद्युत्कुमारने विषे, एम यावत्-अग्निकुमार सिवाय दक्षिण निकायना स्तनित कुमारने विषे उत्पन्न थशे. यावत्-ते त्यांथी निकळी मनुष्य शरीर प्राप्त करशे, यावत्-श्रमणपणुं विराधी ज्योतिषिक देवमां उत्पन्न थशे. हवे ते त्यांथी अन्तररहितपणे च्यवीने पुनः मनुष्यशरीर प्राप्त करशे, यावत्-श्रमणपणुं विराध्या सिवाय मरणसमये काळ करी सौधर्म देवलोकने विषे देवपणे उत्पन्न थशे. ते त्यांथी अन्तररहित च्यवीने मनुष्यशरीर प्राप्त करशे, अने केवळ सम्यग्दर्शननो अनुभव करशे. त्यां पण श्रमणपणुं विराध्या सिवाय मरणसमये काळ करी ईशानदेवलोकमां देवपणे उत्पन्न थशे. त्यांथी च्यवी मनुष्यशरीर प्राप्त करशे. त्यां पण श्रमणपणुं विराध्या शिवाय मरणसमये काळ करी सनत्कुमार देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थशे. त्यांथी च्यवी जेम सनत्कुमारने विषे कह्युं तेम ब्रह्मदेवलोक, महाशुक्र, आनत अने आरण देवलोकने विषे जाणवुं. हवे ते त्यांथी च्यवी यावत्-श्रमणपणाने विराध्या सिवाय मरणसमये काळ करीने सर्वार्थसिद्ध महाविमानने विषे देवपणे उत्पन्न थशे. त्यांथी अन्तररहित च्यवी महाविदेहक्षेत्रने विषे जे आ आवा प्रकारना धनिक, यावत्-कोइथी पराभव नहि पामे तेवां कुळो छे, तेवा कुळोमां पुत्ररूपे उत्पन्न थशे. ए प्रमाणे जेम *औपपातिकसूत्रने विषे दृढप्रतिज्ञनी वक्तव्यता कही छे ते सघळी वक्तव्यता अहीं कहेवी, यावत्-तेने उत्तम केवळज्ञान अने केवळदर्शन उत्पन्न थशे.

केवळज्ञान-दर्शन उत्पन्न थशे.

* [illegible]

[illegible]

४९. तए णं से दढप्पइण्णे केवली अप्पणो तीयद्धं आभोएहिइ, अप्प० २ आभोएत्ता समणे निग्गंथे सद्दावेहिति, सद्दा० २ सद्दावेत्ता एवं वदिहिइ–'एवं खलु अहं अज्जो ! इओ चिरातीयाए अद्धाए गोसाले नामं मंखलिपुत्ते होत्था, समणघायए–जाव छउमत्थे चेव कालगए, तम्मूलगं च णं अहं अज्जो ! अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टिए, तं मा णं अज्जो ! तुब्भं केयि भवतु आयरियपडिणीयए, उवज्झायपडिणीए आयरियउवज्झायाणं अयसकारए, अवण्णकारए, अकित्तिकारए, मा णं से वि एवं चेव अणादीयं, अणवदग्गं, जाव–संसारकंतारं अणुपरियट्टिहिति जहा णं अहं । तए णं ते समणा निग्गंथा दढप्पइण्णस्स केवलिस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म भीया, तत्था, तसिया संसारभउव्विग्गा दढप्पइण्णं केवलिं वंदिहिंति, नमंसिहिंति, वंदित्ता नमंसित्ता तस्स ठाणस्स आलोएहिंति, निंदिहिंति, जाव–पडिवज्जिहिंति । तए णं से दढप्पइण्णे केवली बहूइं वासाइं केवलपरियागं पाउणिहिति, बहूहिं० २ पाउणित्ता अप्पणो आउसेसं आभोएत्ता भत्तं पच्चक्खाहिति, एवं जहा उववाइए जाव–सव्वदुक्खाणमंतं काहिति । 'सेवं भंते ! सेवं भंते' ! त्ति जाव–विहरइ ।

तेयनिसग्गो समत्तो ।

समत्तं पन्नरसमं सयं ।

दृढप्रतिज्ञ केवली घणा वरससुधी चारित्र पाळी मोक्षे जशे.

४९. त्यार बाद ते दृढप्रतिज्ञ केवली पोतानो अतीत काळ जोशे, जोईने श्रमण निर्ग्रन्थोने बोलावशे, बोलावीने ए प्रमाणे कहेशे–'हे आर्यो ! ए प्रमाणे खरेखर आजथी घणां काळ पहेलां हुं मंखलिपुत्र गोशालक नामे हतो, अने हुं श्रमणोनो घात करी यावत्–छद्मस्थावस्थामां काळधर्म पाम्यो. हे आर्यो ! ते निमित्ते हुं अनादि, अनन्त अने दीर्घमार्गवाळा चारगतिरूप संसाराटवीमां भम्यो. ते माटे तमे कोई आचार्यना प्रत्यनीक–द्वेषी न थशो, उपाध्यायना प्रत्यनीक न थशो, आचार्य अने उपाध्यायना अयश करनारा, अवर्णवाद करनारा अने अकीर्ति करनारा न थशो, अने ए प्रमाणे मारी पेठे अनादि, अनन्त यावत्–संसाराटवीमां न भमशो. त्यार पछी ते श्रमण निर्ग्रन्थो दृढप्रतिज्ञ केवलीनी पासे ए वात सांभळी, अवधारी भय पामी, त्रस्त थई, त्रास पामी अने संसारना भयथी उद्विग्न थई दृढप्रतिज्ञ केवलीने वंदन करशे, नमस्कार करशे, वंदन–नमस्कार करी ते पापस्थानकनी आलोचना अने निन्दा करशे, यावत्–चारित्रनो स्वीकार करशे. त्यार पछी दृढप्रतिज्ञ केवली घणा वर्ष पर्यन्त केवलपर्यायने पाळी पोतानुं आयुष थोडुं बाकी जाणीने भक्त प्रत्याख्यान करशे, ए प्रमाणे *औपपातिकसूत्रमां कह्या प्रमाणे यावत्–सर्व दुःखोनो अन्त करशे. 'हे भगवन् ! ते एमज छे, हे भगवन् ! ते एमज छे'–एम कही [भगवान् गौतम] यावत्–विहरे छे.

तेजोनिसर्ग समाप्त.

पंचदश शतक समाप्त.

---

४९ * औप० पृ० ९९–१.